

সমাচার দর্পণ

১৩৩২/৩৩

শনিবার ১৪ নবেম্বর মন ১৮৮৮ ৩০ দ্বিতিক মন ৪১২৫।

দর্পণে মধ্যমোদ্যমিষ কাণ্ডবিরচনাঃ। দ্ব্যাদ্যনিক জলদ্য সমাচারদর্পণঃ।

সমাচার দর্পণ।

কোম্পানির কাণ্ড।

১৪ অক্টোবর বুধবার মন ১৮৮৮ মনঃ।
কোম্পানির শতকরা চম্পা টাকার সুদে
কাণ্ড জম্মা পড়িতে হইবে। শতকরা
চম্পা টাকার অর্ধে আদ্য তির্যকোঃ। বিহু
পড়িতে হইবে। শতকরা অর্ধে টাকার
তির্যকোঃ।

কম্পা হের দর্পণঃ।

কম্পা হের দর্পণঃ।	কম্পা হের দর্পণঃ।	কম্পা হের দর্পণঃ।
১৪ অ	১৪ অ	১৪ অ
১৫ অ	১৫ অ	১৫ অ
১৬ অ	১৬ অ	১৬ অ
১৭ অ	১৭ অ	১৭ অ
১৮ অ	১৮ অ	১৮ অ
১৯ অ	১৯ অ	১৯ অ
২০ অ	২০ অ	২০ অ

আমেরিকা ও ইংল্যান্ড।

যে আর্থিক আমেরিকার মুদ্রা দর্পণ হইল
সেই তথ্যি তথ্যি তিন শত বৎসর ইও
কোম্পানির লোকেরা অন্য নবদ্বার
শেতে গিয়া আর্থিকের লোকেরা সির
করিজে। এবং অনেক তথ্যি গিয়া
বসতি করিতেছে। এই মত ইংল্যান্ডের
মধ্যে মম্ম দুতরম এই জয় বেশী
আর্থিক ইংল্যান্ড ও ফ্রান্স ও ইতালী
বোম্বাই ও ফ্রান্স ও পোর্কালীশী ইহা
পৃথিবীর নানা স্থানে লুতন রাজ্য স্থাপন
করিয়াছে। এই লুতন রাজ্যের নাম কম্পা
নী। এই মত অন্য দেশে গিয়া আর্থিক

রাজ্য স্থাপন করিলে স্বদেশে এই দুই
লাতন যের তদ্ব্যপ্তি মতি বসিয়া
হই এবং অনেক লোকেরা আর্থিকের
কম্পাতে নিযুক্ত হইয়া অলেক লোক
কম্পা হের ও মম্ম ও ইহা হইতে বসিয়া
মম্ম লোকেরা মম্ম লোকেরা
মত মম্ম। অন্য লোকেরা
অর্থিক লোকেরা অর্থিক
মম্ম হইতে ইংল্যান্ডে লোকেরা অর্থিক
কম্পা হের।

যে শত বৎসর মম্ম হইতে
মম্ম এই বসিয়া করিলে যে তহ
কম্পার মতি অর্থিকের আর্থিক
তিন জন লোক দেশের আর্থিক বসি
আর্থিক নী সেই বসতির তথ্যি
এই যে ইংল্যান্ডের লোকেরা অর্থিক ও
এক দেশে যে দুই বসতি হইতে
অন্য দেশের অর্থিক আর্থিক। এবং

সেই মম্ম ও মম্ম দুই তথ্যি
অন্য দেশে যার মত এই বসতি
হইলে সেই লোকেরা ও মম্ম দুই অন্য
দেশে যে লোক ইংল্যান্ডের আর্থিক
লোক যাইতে গিয়া অর্থিক
লোকের আর্থিকের অলেক কর্ম বাসিল।

ও মম্ম আমেরিকার লোক ইংল্যান্ডের
দেব অর্থিক অলেক ও মম্ম অর্থে সেই
ও মম্ম রমমর ও তথ্যি ও ও
বিস্তর অন্য এবং সেই ও মম্ম হইতে
পুতি মম্ম আমেরিকা দেশে অলেক লোক
মোম রমমর ও তথ্যি ও ও
অন্য অলেক দুই মম্ম যায়। কিন্তু

যে লোক ইংল্যান্ডের আর্থিক এই মম্ম
মম্ম লোক যাইবার মম্ম
আমেরিকার দেশের এক আর্থিক
বসতির কর্ম যাইতে পারে। এবং
আমেরিকার অর্থিক ও মম্ম
এক আর্থিক মম্ম হইতে
আমেরিকার এই বসতি পড়িতে হয়
মোম হইতে যে মোম মম্মের
তহাৎ মোম এই আর্থিক মোম
এক এক মম্ম বসতি করিলে
মোমের আর্থিক তহাৎ মোমের
ও মম্ম হইতে মোম দুই লোক
মম্মের লোক তহাৎ মোম
ইহা হইতে ইংল্যান্ডের বসতি মম্ম
লোক হইবে। এই মম্ম করিতে
মতি হইতে কিন্তু ইহা হইতে
হইতে হইতে

ইংল্যান্ডের অর্থিক মোম
কম্পার এই বসতি তহাৎ
মম্ম মতি হইতে যে মোম
বসতি কম্পার ইংল্যান্ডে আমেরিকা
এক অর্থিক মোম যে ইংল্যান্ডের
এক মম্ম হইতে হইতে যে তহাৎ
এই মম্ম বসতি কম্পার ইংল্যান্ডে

ও মম্ম অর্থিক
আমেরিকা ও মম্ম আমেরিকা
যে মম্ম মম্মের আর্থিক
বাদশাহের মতি হয় করিয়া
এই আর্থিক মম্মের দেশে পড়িতে
কর্ম নিযুক্ত করিয়া মম্ম
বাদশাহ সেই আর্থিক

সম্রাটের দপণ।

কিতে ও পুত্রত্যাগের নাম পরিবর্ত
কিতে কামা ছিল যেহেতু কবিয়ার
নামেরা অন্য মত ঈশ্বরায়ীনা করে
এখন এই কর্মকর্তে লোকেরা তাহাতে
গেল তখন তাহার বেছিল যে তাহা
তের তলা পতা এবং সেই আঁহকে কোন
কর্মের নর ও নমুনের ওপর ঘুরান ও
চুক্ত ও নয়। কবিয়ার ব্যবসার এই
আঁহাজ কিনিবার পুর্বে সেই আঁহাজ
কাল মনে বিচার করিতে কোন আনখান
লোককে গেলন নাই অতএব তাহার
এত ঈশ্বর ব্যাখ্যিল।

কবিয়ার লুতন পায়।

এখন কলিকাতাহইতে এক জন ইং
ল্যান্ডের লোক মুন্সী পদে কালব্য যাত্রা
করিবে সে কবিয়ার পুর্বে কালবেছে যায়
নাই তিনি মুন্সী মারনি বেশে ঘাইলেন
এখন মেঘানহইতে মেঘানমান দিয়া
বলগা নদী পর্যন্ত গন্তব্যলেন সেই নদী
কবিবেশের মধ্যে।

লোকপুত্রের রাজা :

এখন লোকপুত্রের রাজা ইংল্যান্ডের
দেব ইংলহইতে পলাইয়াছিলেন তখন
তিনি ক্ষুদ্র কান্তান গেলের আশ্রয়ে
ছিলেন। এই নিমিত্ত ঐ কান্তান এই বিষয়ে
বিচারিত হইয়া ওভার পর্দায় নানির
প্রমাণ পাওয়া গেলন অতঃপর নির্দোষী
হইলেন।

তাকর গোপা :

মার্কোর পত্রবরা এই স্থান গেল যে
মেঘানে এক কবিয়ার বৌকালির তের বৎ
সর ব্যক্ত এক বালকের তাকর হইয়াছিল
এখন সে অনেক দিনাবধি তাহাতে দুঃখ
গেলন পরে তাহার শিতা ভরত পুরহইতে

এক জন মুন্সী-মিত চিকিৎসককে ডাকিয়া
আনি মুন্সীকে তাহার হাতে সমর্থন
করিল। ঐ চিকিৎসক বলিল যে তাহা
মদি না কর তবে আমি ইহার চিকিৎসা
করি। ইহাতে তাহার শিতা নমত হইল।
পরে ঐ চিকিৎসক তৈলচর্চায় সেই স্থান
লম্বা করিয়া গুরু দিয়া চিহ্নিল ও ইমো
ঐ পাত্র লিপ্ত করিল। সেই বালক পুর্বে
তখন বামোহইতে এখন নুনায়ে
পাইলেন। অনুমান হয় যে তাহার মা
কৃত বিষের মাখা ভান হইবেক। এই
ততিশু নাকসিক ও আনহানের মর্মা
এখন ইহাতে তদ্রূপ ইংল্যান্ডের ততি
এখন কৃত হইয়াছে। সে চিকিৎসক
কবিয়ার আতি।

বেশের।

বেশেরের বংশধরের এক দরবারের
নম্বর এক ব্যক্তি তাহাকে মুন করির
নিমিত্ত গেলনমানে কবিয়ার মধ্যে গেল
কিন্তু বারশাহের তত্ত্বাবধি লোকেরা তা
হাকে বেচিয়া নাপেছ করিয়াছিল ও
তাহার স্থান নকল তত্ত্ব পাইল। এখন
কবি লোকেরা কহে যে সে ব্যক্তি তা
নের হৈম্য ছিল না।

কলিয়া :

কলিয়াহইতে ১০ কুন তাহিরে শের
সম্রাটের আইল তখন সে দেশে ওয়াবুর
ভায় ছিল। সে বেশের বারশাহ আশন
পুত্রের ওপর ততিশু দুঃখ দিতেল।
১৮০৭ সাল অবধি ১৮১৩ সাল পর্যন্ত তিনি
দুঃখ বেশের কবর জিলেন এবং ম্যানিসে
রা ঐ এক বৎসর কলিয়া বেশে আশন
অপন করিল সে সময়ে কলিয়ার বেশের
কতক আনখান ও সাহসিক লোক মৈদ্যা
একত্র করিয়া মরাদিনদের সহিত

কতক মুন করিয়া তাহারদিগকে মারিয়া
হইতে কু করিল সে সময় মৈদ্যা
কলিয়ার বারশাহকে মুন করিল। এই
তিনি পুত্রের আশন শিতার নিম্নস্থান
বলিয়া আশন পুত্র লোকের ওপর
অনেক তনায় করিতে ন্যাগার্মন এবং
যে সাহসিকেরদের নানা তিন তা
রাআপুণ্ড হইলেন তাহারদিগকে তিনি
পুত্র কবর করলেন এবং সেই
কল ব্যক্তির আরাধি দেখানো করে
আছে।

বাকিয়া :

ইংল্যান্ডের নানা দুঃখ এখনো যে
মূল্য বিধা হইতেছে এই সময়
ইংল্যান্ডে পঁচতিন্জো এবং এখনো লোক
পাওয়াইতে তাহারদের মত বানস পাই
সে বানস এই সময়েরতারা তখন
মুন হইয়াছে ইহার পর এত দুঃখ তা
এখনো আনিবে না।

আমেরিকা :

আমেরিকাহইতে ২০ কুন তাহিরে
পার্বতের সম্রাট নিরজিয়ারে ডাকা
এই আশা ছিল যে আমেরিকা বেশের
পাওয়া ওভার আমেরিকা মেনাপতি
কলিয়ারদেরহইতে এক শতা ১৪ যে তাঁরা
যে জোর করিয়া লইল সে শহর তা
করিয়া কলিয়ার লোকেরা তাহার নিল
ঐ এক গাভের মধ্যে লালন করিল এবং
মেঘানে তিন দিবস পর্যন্ত আমেরিকা
মেনাপতি অনেক গুলি মারিয়া ঐ গাভ
লইল। অনুমান হয় যে এই কর্মের
নিমিত্ত সেই দুই দেশের মধ্যে অশ
গুরু গাভ হইবেক।

আমেরিকার সম্রাটগণ এই শ্রু
গেল যে মলিন আমেরিকাতে এক মহ

উদ্ভিজ্জি যে তাহার সহিত কতক
কথা ঘাইবে।

কুমিল্লা জেলার পূর্ব প্রান্তের সমস্ত
ঘটনা কর্ম সমাধান করিয়া পুনঃস্থিতি বি-
দায় পাইল তখন তাহার শ্রুত ভা-
স্যাংয়ের নিমিত্ত পুলিশের বিধান এক ম-
নস্ক ছিল তাহাতে এই লোক সমস্ত যে
কলিকাতার সম্মত বৈদ্যতন এবং পোতা ও
ঐশ্বর্য বৃদ্ধি হইতেছে তাহা হইতে দুর্দ্বার্য
বৃদ্ধি অধিক হইতেছে; ফিউর গিভ
বর্ধিকাৎ কলিকাতার হাট ও লন্দন
নগর এমন গণিত জিল যে তাহার দুর্গ
যেতে অনেক লোকের প্রাণী হইয়া
ছিল। অতএব পুলিশের সম্মত এবং
কর্ম সমাধান এই সময় পণ্ডিত শ্রুত
তথ্যের পরিচয়। অতএব তাহা
এই হাটের মধ্যে যতন নাহক
প্রাণীত্ব এই সকল বিষয় আত্ম
কাজ যেগুলি হইয়া লোকের হাট
দেখ।

ক্ষুণ্ণ নর তমসঃ দ্রাক্ষণ্য নারদঃ এই
 ওঁতকোষে বসিয়া এখন এই কোষে আসেন
 কিন্তু দুই মণ্ডলের মধ্যে তিনি দেহাভ্যাস
 ঘিহিয়া যায়েন তিনি আশ্রম মধ্যে এক
 টা শ্রেণ ও জনাধিপতির মন্ত্রণায় লইয়া
 যায়েন এবং য মন্ত্র অন্তর্ভুক্ত যে তা
 হার ইচ্ছা কাজে সেই ওঁতকোষ ও তমি
 সটেই ওঁতকোষ যে ডাক কহা যায় তেঁ
 সনান ভাষে এই-পুণ্ডরীকধরদেব
 পুণ্ডরীকধর জগৎ হইয়া য ওঁতকোষ
 আশ্রমের বিরুদ্ধে গিহিত হয় আর ও

শুনিয়াছি যে তাহার সহিত কতক
কেনা ঘাইবে।

वि.प्र. वि.प्र. १

[illegible]

दंड नमो निवेदिता -

অনুভূত এম এম দলুদি মাহেব মোকাম
মহিউল কালভারের পোস্তার ইছদ
জেন।

उत्प्रेक्षितः भवति ।

অসম চৰকাৰে উন্নয়নৰ ক্ষেত্ৰত যথেষ্ট গুৰুত্ব দিছে।
এ অঞ্চলত পৰিণত অসমীয়া যন্ত্ৰণাৰ ক্ষেত্ৰত প্ৰায় নিৰামল
হাইড্ৰক এম এছএল চৌমন্তক পোৰাওঁতৰ প্ৰকল্প
চৰকাৰীভাৱে অনুমোদিত। লক্ষ্যমূলক কাৰ্য্যক্ৰমে
হাইড্ৰক

जुलै २०१७ मध्ये

3-11-2017 10:10:10 AM

[illegible][illegible]

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

1990 年 12 月 15 日 星期一

“我 這 些 話 是 不 是 有 什 麼 不 對 的 地 方 呢 ？”

2011年12月10日

[illegible]

በጊዜያዊ ምርመራ፣ በጊዜያዊ ምርመራ ላይ የሚገኝ ምርመራ

2013年12月31日

१६५३ ई. १२०० = १२०० ई. १२०० ई. १२०० ई. १२०० ई. १२०० ई.

1. *Journal of the American Medical Association*, 1997; 277: 1033-1036.

1. The first step is to identify the problem or question that needs to be answered. This involves understanding the context and the specific requirements of the task.

11. $\frac{1}{2} \log \frac{1}{2} = -\frac{1}{2} \log 2 = -\frac{1}{2} \log 2^1 = -\frac{1}{2} \cdot 1 = -\frac{1}{2}$

1. *Chlorophyll a* and *Chlorophyll b* content of the leaves was determined by the method of Arnon and Whistler (1940).

[illegible]

1. *Journal of Management Studies*, 1996, 33, 1, 1-14.

पुस्तक संख्या: १२३ (२०१५-१६) विद्यार्थी नाम: १२३४५६

ସମ୍ପର୍କ ସୂଚକ ଗୋଟିଏ ଗୁଣାବଳି ହେଉଛି

ਸਾਹਿਬਜੀਤ ਸਿੰਘ ੭੦ ਸਾਲਾ ਦਾ ਜਨਮ ੧੯੧੫ ਈ. ੧੬

• इत्यथ नमो भूतनाम् ।

ମୌଳିକ ସମ୍ପର୍କ ୫ ଟି ଥିବାରୁ କର ୧୦-୧୫ ଟି ୨୦ ଥର

मम १२ २४ रा० कः।०७५३३ कः।०७५३३।

[illegible]

এই সময়ের স্বপ্নে শ্রীরামপুরের জনাখ্যানেতে প্রতিমস্তাহে শনিবারে জনা হয়। যাঁহাঁর লওনের আশঙ্ক থাকে তিনি শ্রীরামপুরে জনাখ্যানেতে জনান নাম পাঠাইলে মস্তাহে কাণ্ডাজ তাঁহার নিকটে পাঠান যাবেক তাহার মূল্য যামে এক টাকা। যিনি স্বাস্থ্য করিছেন যদি তাহার নিকটে না পৌঁছে তবে তিনি শ্রীরামপুরের জনাখ্যানেতে সমাচারে দিবসান্ত তাঁহার নিকটে পাঠান যাবেক

সমাচার দর্পণ

১২ নং-খণ্ড।

শনিবার ১ ১৪ নবেম্বর মঙ্গল ১৮৬৮। ৭ তম বর্ষাব্দ মঙ্গল ১১৭৭।

দেব মুনীন্দোদয়নবিদ্যকাণ্ডেবদেবগণঃ বৃত্তান্তবিদ্যাকালন্ত সমাচারানাং বর্ণনাম্।

সমাচার দর্পণ।

কোয়ানির কাণ্ডঃ—

১৮ নবেম্বর বুধবার মঙ্গল ১৮৬৮ মংগল।
কোয়ানির শতকরা জয় টাকার মূদ্রের
কাণ্ড হয় করিতে হইলে শতকরা
জয় টাকার আট আনা ভিন্দোকে। বিহার
মহিতে হইবে শতকরা মাত্ৰ পঞ্চাশ
ভিন্দোকে।

সম্প্রদায়িক বিবরণ।

| | | | | |
|----|---|------|---|---|
| ১১ | ১ | ১৮৬৮ | ১ | ১ |
| ১২ | ২ | ১৮৬৮ | ২ | ২ |
| ১৩ | ৩ | ১৮৬৮ | ৩ | ৩ |
| ১৪ | ৪ | ১৮৬৮ | ৪ | ৪ |
| ১৫ | ৫ | ১৮৬৮ | ৫ | ৫ |
| ১৬ | ৬ | ১৮৬৮ | ৬ | ৬ |
| ১৭ | ৭ | ১৮৬৮ | ৭ | ৭ |

পশ্চিম দেশের মসজিদঃ

পশ্চিম দেশেইহতে ১৭১ মসজিদ
আনিয়াছে যে মসজিদমুখ্য পুষ্করিণীর
দক্ষিণে যে হইবে এমত বুঝা যায় না এবং
তাঁহাদের মধ্যে পুষ্করিণী জমিতে
গোপীনাথ মহারাজ ইংল্যান্ডেরদের। তা
হু বংশীভূত হইয়া মহারাজ দেশ বিদেশ
মাগো গিয়াছেন ইহা বেদিয়া মহারাজ
রা নিতান্ত হতাশ হইয়াছেন।

জম্মুত বৌদ্ধ-প্রাণে দিল্লিরা এমত
মহারাজাদের মধ্যে পুষ্করিণী
জম্মুত কোয়ানি বাহাদুরের সহিত
মল্লিকার্কসে উপবিষ্টেন। এবং মাগো
১৮৬৮ মসজিদ মসজিদ ১১ তম

কর আজি তাহার অপারদেরের লিক
টে দিল্লিরা আসা করিয়াছেন যে সে
মসজিদে জম্মুত মসজিদ মালিকম
হইবে কাজে আসিবে। তখন এক জন
প্রবন্ধী দিল্লি। ১৭১ তাহার বেশের
মসজিদ মালিকম মসজিদে জম্মুত
হইতে তাহার তাহার মালিকম মসজিদে
জম্মুত মসজিদে মসজিদে মসজিদে
জম্মুত মসজিদে মসজিদে মসজিদে

মসজিদ মসজিদ প্রাণে হইলমসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে

জম্মুত মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে

মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে

এমত কবি বাবদায় করিতে। ১৭১
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে

মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে

মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে

জম্মুত মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে

জম্মুত মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে
মসজিদে মসজিদে মসজিদে মসজিদে

নগাঁচাঁর দর্পণ।

দেশ অধিকার করিয়াছে। চিক্‌হোলীর জাি জঁয়ুত ঘোড়ি সিংহ এখন লংগের আছে লোক কহে যে সে ততি হইল ও আনবান। এই রাজা ঘোড়ি সিংহ কয়েক মাস হইল জঁয়ুত রাজ্য সিংহ বাহাদুরের আওতে মুলতান পো অধিকার করিয়াছে। এবং রাজ্য সিংহ বাহাদুর এখন অনেক সৈন্য মুসুত হইতেছেন যে এই সৈন্য ঘোড়ি সিংহের সৈন্য দ্বারা কাশ্মীর দেশ অধিকার যেন।

বিকানিয়ারের রাজা মুমত সিংহ যদি যে কিছু সে দেশ আমায়বের আশুয় পায়ে অতএব সেখানে কোন ওপাতি স্থিরে না আমরা সেখানে না থাকিলে হারয়ের ওপর কত ওপদু হইত। মুমত সিংহের ওপর কিসকো এখন সিংহান্নে বসিবে। তখন

রর অধিকার আশন রাজার মহিত অনেক বিবাদ বুদ্ধি করিত এখন নর অধি আক্রমণে নাই হইবে তাহার বর পরের নিষিদ্ধি করিয়াছেন তাহাতে ন বেশ মুদির হইয়াছে। এবং ঘোড়ি হরের রাজা আশন বেশ মুদির রাজ্যের নো আক্রমণে নাই হইবে নিকটে থাকা করিতেছে ও তিনি সেখানে গিয়া গাঁহা দেশ মুদির করিবেন। অলম্যান য়ে যে জঁয়ুত রাজার ও পোশায়া নির্দর্শন মা হুতে ১৫ নবেম্বরে পঁচ রহেন। এবং তিনি ওয়াইহইতে অন্য গোলে নিজিয়া মারাতে ঘাইবেন যে হতুক দুই জনে একত্র মিলিতে চাহেন। নিখিয়ায় ওয়ায় গোলে পানক দাবল বান করিতেছে অতএব তাহার দেশের নান্দিকার তমাসজনা ওয়াহিত ইয়াছে অলম্যান হয় যে শেষে সে সকল ওয়াই হুতে হইবে।

মান্দরা জ।

১৮ অক্টোবরের মনোটার পাওয়া গেল যে মান্দরাজে বত রাত হইয়াছিল তাহা তে জয় আহাজ ভূমিয়াছে তাহার মধ্যে দুই তিনটা লোক মমতে ভূমিয়াছে এই জয় আহাজ ছাড়া আর এক আহাজের হালি ভাঙ্গিয়াছিল সে আহাজ কোন শ্রুতের রমারমি দ্বারা মান্দরাজে পঁচিয়া য়াছে।

সিংহল ওপদীল।

যে সৈন্য এ দেশ হইতে লঙ্কা ওপদীল ঘাইবে এমত বন্ধু জিল তাহার তিন ভাগের এক ভাগ গারামাণার পাঁচ হই য়াছে এবং তাহার দ্বিতীয় ভাগ গত মেমবার ঘোড়ি চেনকহইতে রাহী হই য়াছে।

জঁয়ুত সন্মতি বিয়াছুন।

অন্যামাণের ন পতিতাসুয় মহাম হোণকায়া মহারাজ ওর জঁয়ুত বন্ধু মনি বিয়াছুন ভঙ্কাচায়া এতাব কাল বিয়াছুন লুভ করিয়া সন্মতি স্থাপন পুত্র স্বকীয় পন সন্মতি শিয়ারি সমর্থন করিয়া কাশী বাসভিলায়ী হইয়া পুত্রান করিয়াছেন।

বেশায়ায় ওপদীল।

বিদ্বীর বাদশাহ আওরঙ্গজের অতি মোহা জিলেন অতএব তাহার কালে মহারাজেরদের তাদ্ধন পরামম জিল না। সেই সময়ে পুণ্ডাচা তাহা বাইয়ের অশীল জিল কিছু পুত্ৰ রাজা শাহজাদা নামে এক মহারাজ জিলেন তিনি জুবাহর শাহায়ের তর্শীন লম্বা জিলেন পরে আওরঙ্গজের মরিলে পর তিনি অনেক ধন দ্বারা কাশ্মীর হইতে মুক্ত হইলেন। পরে অনেক সৈন্য মারা

করিয়া গৌরাবরী নদী পাঁচ হইয়া তাহা বাইয়ের সৈন্যকে মারিলেন এবং পো মেতায়া অধিকার করিলেন তাহাতে সকল মহারাজ ঘোড়ি তাহার রাজ্যে স্থির হইল। তৎকালে বালাজী বিশ্বনাথ ও শাহজাদা সৈন্যের অধীক্ষ জিল। তৈবর পুত্র নামে এক জন গড়ের অধীক্ষ জিল ও পরে সৈন্য পুত্র রাজার পুত্র লোক জিল।

এ শাহজাদা মহারাজ পুত্র সকল রাজ্য অধিকার করিয়া জিলেন কিন্তু নম্বরের তাদ্ধন তাহা বাইয়ের অশীল অনেক গড় জিল এ তাহার সেনাপতি কানোজী আশায়া নামে জিল। এই সেনাপতি শাহজাদা রাজার লোহার নামে এক গড় লইল। তৈবর পুত্র নামে হরিয়া নহিল। ইহাতে শাহজাদা মহারাজ অতিশয় ভূমি হইয়া আশন চাকরের মধ্যে আশি অন পুত্র কে তাকিল। এই ব্যক্তি আশায়াইল এ তাহার দ্বিগকে কহিলেন যে তাহারে যার মহিত পুত্র করিতে তোমারের এক জনকে ঘাইতে হইবেক। পরে আশন পুতিনিহিকে কহিলেন যে তুমি ঘাইতে পারিবা কি না। সে কহিল যে সৈন্যের ওপরে আমার পরামম না আমি কি কহে ঘাই। পরে বাশজাদা বিশ্বনাথকে কহিলেন। সে কহিল যে ঘাই মহারাজ আমাকে সৈন্য দেন তবে আমি ঘাইব। ইহাতে শাহজাদা মহারাজ সন্মত হইয়া তাহার মন্তকোণি হস্তা পণ করিলেন ও মুখা পুণ্ডিনার আশি বেশায়ায় তাহাকে দিলেন এই বালাজী বিশ্বনাথ ও আশায়ায় এ ওভয়ের পর পুত্র বত সন্মতি জিল তৎপুত্র অল্প সৈন্য নকর করিয়া বালাজী বিশ্বনাথ আশায়ায় নিকটে গেল ও নানানিহী নাগাঁচা তাহা বাইয়ের পক্ষ হইতে

সমাচার দর্পণ ।

[illegible]

উপরে উল্লিখিত কাজের।
 আর বলা গেল যেখানে ডাক্তারী ডাকের
 দাক্তরে এসে বসিলেই স্বাধীন ইজারা
 দেওয়া হয়।

গত শোভা।
 ৩. অমরতর শ্রীমত জেনেরাল বট্টম
 মাহার গভর্নমেণ্টের গভর্ন অফিসার করে
 সে গভর্নমেণ্টে মাহারের বসিন পুর্ন
 নন্দী। নন্দী ওরো বই ডিন মোশ।
 ইহার পুর্ন জয় দিন তোঁগলিয়া জয়
 দিন পর্বত তাহার ওরো গুলি মারিল।
 গরো তরুণ লোকেরা অতি ভীত হইয়া
 এইসে মজিন্ত করিল যে তাহার। অতি
 নারদের অমরতর বটম আপনা। অমর
 নন্দীর গভর্নমেণ্টের বটম। ইহাও গভ
 নন্দী মোশ।

এই গড় জমির মিশ্রের জিল বৃষ্টি
মান মার্কিনের নিকট তাহার স্বতন্ত্র
এক অধিকাংশ জিল কিছু নগরবাসীর রাজ্য
বাহারের প্রাচীর নিত্য অস্বাভাবিক
ইহাতে জমির মিশ্র-ই সিদ্ধার্থের নিকট
প্রকারে জমির। সিদ্ধার্থ তাহার প্রা
কারণে জমির মিশ্রের জিল বৃষ্টি
মান মার্কিনের নিকট তাহার স্বতন্ত্র
এক অধিকাংশ জিল কিছু নগরবাসীর রাজ্য
বাহারের প্রাচীর নিত্য অস্বাভাবিক
ইহাতে জমির মিশ্র-ই সিদ্ধার্থের নিকট
প্রকারে জমির। সিদ্ধার্থ তাহার প্রা

ডাঙের অভয়নাথী এ গড় জিল : গড়
 বন্দরে ঘন ইংলিশ মৈন্য পশিয়ে
 গেল সেই ওপরাবর ময়য়ে অর্জুন সিংহ
 সে গড় বুর্জার আগন অধীন করিয়া
 জিল । গড় অধিকার করিবার ময়য়ে
 অর্জুন সিংহ গড়ে জিল না ।

কাবোনে ।
কাবোনের বাদশাহ মহম্মদ শাহ মরি
মাজে তাহার ভ্রাতা শাহশাহ লুধি
মালিকিতে প্রবর্তন নাবাল পঞ্চ
মাজে তাহার মরণে ততি অনু মৈনা
গিয়াছে সে অতি শিখ লোক কিছু
তাহার ভ্রাতৃপুত্রদের তদিত নকল
রাশা তাহার অতি কনিষ্ঠ তাহার
মহা কাবোনে বাই মুর আমল তিতর
ওয়েল হিল ও লম্বা যাওলা দিয়া
দুই ওহ বরক কিয় তাহারে মালিক ।

দেশোদয় ।
অদম্য দেশের রাজসারসের এক রাজ
নীতি-জ্ঞান (সে অন্য দেশেইতে অতি
শুদ্ধ তাহা এই ।) রাজ-নিঃসামান্য
রাজ-অনুষ্ঠিত রাজ্যেইতে রাজ্য-পার্শ্ব
যে রাজসার্য জাতি হয় তাহার নিক
নয় রাজ্য-পার্শ্ব অতিএব রাজ্য ইহাতে
এবংই করেন । যে রাজসার্যের
বের মধ্যে জোড়কে রাজ্য-জিহ্বা করি
বার জন্যে রাজ্যের তাহার কনিষ্ঠ রাজ্যের
তাহার-জিহ্বা রাজ্য-পার্শ্বইতে ন্যূন
এক রাজ্যেরেও নহিয়া তাহার-বের এক নর
নিম্ন এক রাজ্য-নিম্না ন্যূন-পাশ্ব এক জগ
হীন রাজ্যের রক্ষা দিয়া সে ন্যূন-পাশ্ব তা
হীন কনিষ্ঠ তাহার অল্প বহু রাজ্য
কণে রাজ্যের করিতে নহি এ রাজ্য রাজ্য
বর্ণন অনেক আছে তাহার কোন কালে
রাজ্য ইহাতে নহি ন্যূন-কেননা সেই দেশের

রাজনীতি ক্ষুদ্র মত এই যে
 নিম্না অধিকাংশ যে রাজনৈতিক
 ক্ষেত্র গোপন হইবে না অতএব
 বিবাদ করিয়াও উহার রাজ্য
 হইবে না। ন্যূনাংশ করিবার কাল

তাৎপর্য মূঢ়।
 তদাশতাকীর পক্ষিহৃদয়িত
 মের দায় বসু নগম এক ব্যক্তি
 হায়ন দ্বিবার পুত্ৰহাসল অসি
 পুত্রাদি পরিঅন্তে তক্ষিহা ন হল
 আজি ততীর পুত্রহের সময়ে
 মূঢ়। হইবে। ইহা শুনিম তাহার
 নরিঅন লোক ও পুত্রবানী লোক
 যে কি তাৎপর্য ইহার শব্দিত।
 যোগি অনা নাই উরে অসম
 ইলি একা হইল বৃদ্ধি ইলি
 হইয়া থাকিবে। অন্য
 লোকেরা কহিল যে ইহাতে
 কহিও না ইহাতেও পার
 নান দুই আছে অতএব
 কহল তাহার মত কর।
 পিতা তাহার
 পতিঅন্তে যে কথিতে
 কহিল। পরে ইহা শুনি
 আপনার সভ্যতায়
 ভোজন করিয়া
 সহিত ইহা শুনি।
 পুত্রের পর
 গানের
 গন্ধিহা
 গন্ধিহা
 কহিতে।

পারস্য দেশ।
পারস্য দেশ হইতে যে শেষ রাজার
আমিয়ারে সে অতি আদর্শ নহে
কিন্তু জানা গেল যে পারস্য মহা রাজার

সমাচার দর্পণ ।

ପ୍ରତି ଡାକ୍ତରୀ ୧୦ ମାତ୍ରେଷ୍ଟର ମଧ୍ୟ ୧୦ ୧୦ ଇଂ (ସଂଗ୍ରହ କରା)

সমাচার দর্পণ

467

১৮ নং পৃষ্ঠা

শনিবার

১৮ নবেম্বর সন ১৩৮৮। ১৯ অক্টোবর সন ১৯১৭

দাঁধে মুখ সোন্দর্য্যের কাব্যবিত্তকণাঃ বৃদ্ধাঢ্যের আসক্ত সমাচারের কাব্যবিত্তকণাঃ

সমাচার দর্পণ

সোনারি র কাব্য।

১৮ নং পৃষ্ঠা। সন ১৩৮৮ সালে।
সোনারি শতকরা ভাৱ টাকার সুব্যা
কাজে হয় করিতে হইল শতকরা
ভাৱ টাকার ভাৱ ভাৱ। বিহার
নিয়েত হইল শতকরা ভাৱ টাকার
ভাৱ।

সমাজের গুরুত্ব।

| ১৮ নং পৃষ্ঠা | ১৯ নং পৃষ্ঠা |
|--------------|--------------|
| ১৮ | ১৯ |
| ১৮ | ১৯ |
| ১৮ | ১৯ |
| ১৮ | ১৯ |
| ১৮ | ১৯ |
| ১৮ | ১৯ |
| ১৮ | ১৯ |
| ১৮ | ১৯ |
| ১৮ | ১৯ |

সোনারি ও বসন্তের গুরুত্ব।

আমেরিকা দেশের হাটবার শহরে এই
পুকার এক গণেশের আছে তাহাতে গণত
কটকটিকি যে মনে এই শহরের বসন্ত নাহে
হের ও বাহ্যিক সমাজ ও জনতা
বোঝায় সমাজে এই গণেশের শিখরে
আগুন ইত্যাদি ছিল। ঈশ্বরের দিক
টে পূর্ণাঙ্গ হইলে গণ ক্লান্ত নাহে নহে
এক জন গণেশের শিখর নেওড়া
এক বসন্ত সে লিখনিত সঙ্কেতকার
এক লিখনের অঙ্গ প্রকাশ করিল। পরে
গণতন্ত্র নাহেব সেমাজের গুণান
শিখর তিনি নাহেব বোঝায় দিকটে

লিখনের গুণান। তাহা শ্রী র নাহে
ব বোঝায় দিকটে

গণতন্ত্র নাহেব এই নাহেব
লিখনে গুণান ও বসন্তের গুণান
বিহার যে শিখরে গুণান সেই শিখর
এই। তাহাৎ বসন্ত ও বসন্ত
শিখর না নাহেব ইত্যাদি। বিহার
গণেশের গুণান নহে বসন্তের গুণান
সঙ্কেতকার এক ভাৱ নহে বসন্তের গুণান
এই সঙ্কেতকার ভাৱ। গুণান
ও বসন্তের গুণান গুণান। গুণান
লিখনের গুণান আশ্রয় মনে নহে
নাহে করিতে পারে। ইত্যাদি এই গুণান
ও বসন্তের গুণান নহে বসন্তের গুণান
আশ্রয় মনে বসন্তের গুণান
ও ঈশ্বরের গুণান ও গুণান
গুণান। এই সঙ্কেতকার ভাৱ
শিখর তাহে তাহা। তাহা
কালেক গুণান ভাৱ করিতে

গণতন্ত্র নাহেব বসন্তের গুণান
গণতন্ত্র নাহেব সঙ্কেতকার
শিখর ভাৱ। তাহাৎ নাহেব
সঙ্কেতকার ভাৱ। সেই সঙ্কেতকার
মত নাহা গুণান বিহার কর্তব্য লিখন।

গণ ক্লান্ত নাহেব আশ্রয় শিখর
কম্পিতের লিখনে লিখনে সঙ্কেত
তাহাৎ তাহা লিখন। গণ সে নাহে
হাৎ জিহ্বা। লিখন যে কম্পিত
তাহাৎ লিখন যে নাহে। সে
জিহ্বা লিখন যে তাহাৎ
লিখন। তাহাৎ লিখন

তাহাৎ এই গুণান
তার গুণান বিহার যে
তার গুণান বিহার যে
তার গুণান বিহার যে
তার গুণান বিহার যে
তার গুণান বিহার যে
তার গুণান বিহার যে
তার গুণান বিহার যে

এই গুণান
তার গুণান
তার গুণান
তার গুণান
তার গুণান
তার গুণান
তার গুণান
তার গুণান

তার গুণান
তার গুণান
তার গুণান
তার গুণান
তার গুণান
তার গুণান
তার গুণান
তার গুণান

সমাচার দর্পণ ।

[illegible]

এবং প্রতিদিন যোজন টাকার ও আয়ের
ও ঘাইবার রাখা হয় ও প্রতি দিনের
আয়ের হয়।

আর এক জন ঢিলি নারী যৌন হা
জর টীকা ও তাহার বাসনাযুক্ত ও
তাঁহার রহস্যযুক্ত ও তাহার গোপন।
আর এক জন নারী আশ্রয় লুতার
নারী ও আশ্রয় ছিন্নলুতার কাঁধে না
নো মধ্যম জীবনযাত্রা লুতা করিবে ই
হাতে মাসে চিরি হাঁড়ার অর্থাৎ শটকা
ও ঘাইবার সময় চিরি হাঁড়ার টীকা ও
অতি দুঃখের বাসনা কর ও অতি দুঃখের
হাঁড়ার। আর এক জন ঢিলি চরিত্র
হাঁড়ার টীকা ও রহস্যযুক্ত ও বাস
নাযুক্ত।

ଆମେ ଏହି ସମସ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟକୁ ଆମର ସମସ୍ତ ଶକ୍ତି ସହିତ କରିବାକୁ ପ୍ରତିଜ୍ଞା କରୁଛୁ ।

ডালুক বিহীন ।
 ৩০ বিজয়পুর জিলাসিদ্দিকুল হাট সীমান্তের
 জেলার দ্বারা হওয়া এই ডালুক বিহীন
 হইবে ।

খ্যাতিতে ১৪ বৎসরে জাতীয় পরিষদে
 যেন যে ভারত বর্ষের মধ্যে স্বাধীনতার
 খোঁজ দিত ইমারত এদিল্লী রাজ্য তা
 হারি মুখ্য বিরক্তি ন্যায়ের আইনে।
 এবং সেই স্থানের নৈশাতি সাহে
 বো আশিকারা নফল এক কোমো
 হইয়া এই কথা নিম্ন করিবেন এবং এ
 নরন ওয়াহিদ ৩০ আশিকারের মধ্যে
 নিশাশ হইবে।

আহাজ আমদানী।
 ১৫ বুধবারে প্রাঙ্গণেই হতে ঘরানী
 শ্রীমতের এক আহাজ ১০ তলাই আন

দেশ জাতিয়া যোঃ কলিকাতায়
 যাজে।

যেদি মি-ই।
 শ্রীযুত এনেকান আরনলু ম-ই।
 যেদি মি-ইকে রমান করিয়া আনন মিন।
 লইয়া মো-ই করলান শহর আনন।
 ম-ইজিযানে।

শ্রীযুত মহারাজাও হোলকার-জি
হাট বারিষদ লোকেরা যো-রাম-
জাতিয়া ইত্যাদে গিয়াছেন সে ইত্যাদে
ঐ হোলকারের প্রাচীন রাজধানী ।

গিত লম্বাটার দরজা খোলা গেল।
গিড়াকোঠা গিড় ইংল্যান্ডের অফিসার
কমরেডে এমন শুনা গেল যে ডাকের
কথা অজুঁন নিঃস্ব ইংল্যান্ডের লি.
কটে নমু হইয়া প্রভুত তেলোল "টন
নাঃবের জাওলিতে অনিয়াজ।

ଡି. ଅଭିନିବ ନାୟକ ପ୍ରତିକୃତକର ୩
 ଆପଣଙ୍କ ।

১। ইতিমধ্যেই জাতিগত দেশ ত্যাগ করি
 য়া আত্মসম্মান অর্জন ও সেখানে এক
 জাতীয়তাবাদের নিকটে পার্শ্বার্থ গেল। - পর
 ঐ আত্মসম্মান এক দণ্ড নইয়া ইতিমধ্যে
 মঙ্গল ত্যাগের দ্বারা হইলে ইতিমধ্যে
 নিন্দিত হইল যে তুমি আমাকে মুখ্য কর
 কতি নাই কিন্তু তুমি এমন বড় দণ্ড করে
 পাঠাবে যে তাহা দ্বিগুণা আমি নই হইব
 তাহাতে ঐ এক তুমি হইয়া পলায়ন
 আনি নিঃস্বার্থদের মধ্যে গণিত করিয়া
 সে এক দিন হস্তিহীন এক গুরুত্ব এক
 গীত হইতে পাতা পাত করে উঠে
 য়া বিবেচনা করিল যে এই তুমি হইয়া
 তে কোন থাকিবক ও কি করিব হইয়া
 কোন তুমি নাই বড় এক হইয়া
 ও মঙ্গল ত্যাগ করিয়া এই তুমি হইয়া

সমাচার দর্পণ

১৯ নং-৩৫।

শনিবার।

৫ দিসেম্বর সন ১৮৩৮। ১৪ আগষ্টাব্দ সন ১৩৩৫।

বর্ণনো মণ্ড সোনার্ণ্যমিব কার্যবিভক্ত্যঃ। বৃন্দাশ্রমিহ জ্ঞানকু সমাচারস্য বর্ণনো

সমাচার দপণ।

কোম্পানির কার্য।

১ দিসেম্বর বুধবার সন ১৮৩৮ সাতাঃ।
কোম্পানির শতকরা চার টাকার সুদের
কার্যজ প্রদ করিতে হইবে। শতকরা
চার টাকার দশ আনা ভিকোকে। বিহয়
করিতে হইবে। শতকরা দাঁড় টাকার
দুই আনা ভিকোকে।

নন্দীহারে বক্তব্য।

| ৫ দিসেম্বর | শনিবার | ১১ | অগ্রহায়ণ |
|------------|--------|----|-----------|
| ৬ | ২ | ১১ | ২ |
| ৭ | ৩ | ১০ | ৩ |
| ৮ | ৪ | ৯ | ৪ |
| ৯ | ৫ | ৮ | ৫ |
| ১০ | ৬ | ৭ | ৬ |
| ১১ | ৭ | ৬ | ৭ |
| ১২ | ৮ | ৫ | ৮ |

দুই বেলের সমাচার।

টাইটস নাম যে দুইয় তাহাঃ ২
দেখাইতে পাইজিগাজ তাহাতে সমা
চার বিস্তর নাই ওখানি যে আছে তাহা
লিখা গাইতেছে। এক জন স্বী লোক
বোঃর্ডী নামে শহরে বলুলে ওটিয়াছিল
কিন্তু বলুল ওপরে ওপলে পরে আপনি
মাটিয়া গেল তাহাতে এক নদীতে ঐ স্বী
লোক পড়িল পরে এক জন জেনেরাল
তাহাকে ওটিয়া রক্ষা করিল।

অন্য এক জন জরিবাহিতা স্বী ও সেই
মত তার এক দিন বলুলে আকাশে
ওটি ও মেঘানহইতে এক প্রদ গিয়া

ছেলিয়া দিল তাহাতে লিখিয়াছিল যে
আমি যেখানে ওটিয়াছি সেখানে ততি
কর শত। ঐ পত্র মোকাম মেঘ হানে
নিমিত।

পাণ্ডিত শহরের লিকটে এক বারদখানা
তে তপ্তি লাগিল তাহাতে বেত শত
লোক বহু আপনি মাটিয়া গেল তাহাতে
অনেক প্রাণী মারা গড়িল।

পুলোনিয়ার।

করক মান হইল পুলোনিয়ার শহরে
এক কুটিয়ালা মোহাঃনের দুই ইয়ার হ
সেনে পায়ে সে মুহুরি ওখানি ওখার
আপনি মোকামে গিয়া আপনি বুঝির দৌ
পলে নিজ ব্যবসায়ের মোকামে গিয়া
হইল পরে পুলোনিয়ার মোকামে গিয়া
কে দুই করিল ওখানি তাহাতে তাহা
অনেক বশতাব্ধি মোকামে হইতে
দে দুই রাজার পায়ে ওখানি বিবাহ
হইতেছে এবং অনেক প্রাণী তাই
ডেকে।

ইন্দ্রদ স্বঃসন আপন ওতার করত
অবদুল রহীমকে বিশ হাজার টাকা
পারিতোষিক দিতে স্বীকার করিয়া
পুটিল ওখার চাকর টু পাইকারকে
আন করিবার জন্য তাহাকে পাঠিয়া
দিল। সে সেখানে গিয়া আপন কি
বৃত্ত বাহির করিয়া তাহাকে বাহু করিল
কিন্তু টু পাইকারের লোকেরা ইহা দেখা
য়া হাজী অবদুল রহীমকে ও তাহার
মঙ্গল লোককে দিয়া। আল বদিল ও

তাহারবে শহর মোকামে কাহিয়া
দেখায়ে দেখাইল।

আহাজ আমবান।

ইংলণ্ডের লিবার লুন্ডনে গিয়ে
আহাজ বাইনার্য আপনিবার
পুতুত আছে।

রাকসমি নিয়োগ।

ঐঞ্জিযুত কোর্দান বাইনুর ঐঞ্জিযুত
কেজ টেলর নাহেবকে কোর্দান
সীসের পদবিভক্ত করিতে স্বীকার করি
য়াছেন ওখন ঐঞ্জিযুত মোকামে
সেই তার জরিবহন ওখন সেই কাম
তিনি নিযুক্ত হইবেন।

দুজন বন্য মোকামের বেতন।

৬ সেপ্তম্বর তারিখে দুজন ও মেরি
এই দুই আহাজ দুই নাগরের এক ওলট
গের লিকটে মোহর করিল সে সময়
সেই ওখানির অনেক লোক টুতা ও
রে বসিয়াছিল এবং নত মন পরে
অন লোক একটা ভোজিতে পারিকেন
কতগুলি ওখানি ও আপনিয়ার তাহাতে
টকিল কিন্তু তাহাজের লিকটে
ভয় করিল পরে ঐ আহাজের
এক লোককে তাহারবে লিকটে
ময়বিক্ত গিয়া লিল সে কামে তাহাজ
ঐ ভোজিতে এক বাগানিকে
ইহা শুনিয়া পর দিবসে দুই
আহাজ ও তাহার ও লোক
লোক আনিতে লোক দোহন

সমাচার দপণ।

কালে পাঁচঘণ্টার মধ্যে সেই বাগানি
ককে আশন তাহাজে আসিল সে
নের নাম শেখ তুমান। সে তখন
হাওয়ারদিকের নিকটে এই মকল
হাস্ত করিল।

চারি বৎসর এই ব্যক্তি মুলিন-স্তায়
হুয়ে এক তাহাজের নিব্বন মাংসাহের
কর জিল। সে তাহাজে পোষ্ট অফিস না
। শহর জাকিয়া আসন পথে চলিয়া
ল অন্মুদান হয় সে তাহাজে চলি
ন লোক জিল। এক রাত্রি সে তাহাজে
ক পাঁচাত্তর ওখরে জেলি তৎকাল
পতান মাংসের আশন দুই নোকা ও
ক ভোলা নামাইয়া তাহার মধ্যে দুই
পাঁচ জল ও চাল তুলিয়া মকল লোক
নই লোকায় গেল। তাহাজে এক
গায়া ও এক লাক্কর এই দুই মাংস থাকিল।
কাপতান মাংসের নোকা ও ভোলা ম
এত ই ওপদীপের নিকটে তিন দিন ভ্র
ন করিল তৃতীয় দিবস রাতে এক ওপ
ইনের নিকটে নোকা লোকায় করিল এবং
লোকহইতে পোনার অন ওয়া তাহা
দিল রতিন তাহার মধ্যে এই এক জন।
হাওয়ারদিকের ওয়া মাংস (যে
নোকা ভাসাইয়াছে ইহা) অনেক তাহিল
হাও নোকা লাগান করিল না তাহারা
শেখেরা রোজ পর্যন্ত এখানে থাকিয়া
হুয়া বিহিয়া অগ্নি লাগাওতে হোদু
ওক করিয়া ভক্ষণ করিল। তাহার মধ্যে
শ জন কাঙ্ক মরিতে করিয়া মাড় ব্যক্তি
য়া কোল দিকে চলিয়া গেল পাঁচ জন এই
খানে থাকিল। পরে এক দিন পাঁচটা
ভোলা ই ওপদীপের নিকটে আইল সে প্র
ডাক ভোলাতে স্থানলোক ও ঘুরা ও বালক
অন্মুদান বিশ জন বলা লোক জিল তাহা
দেখিয়া এই পাঁচ জন পলাইয়া গাঁওতে

চড়িল ও সেইখানে রাতে নিদ্রা গেল।
ভোলায় বলা লোকেরা কাঙ্ক কাঙ্ক
ঘর্ষন করিয়া অগ্নি তুলিয়া মাংস ও
নানা জল দগ্ধ করিয়া ভোজন করিয়া
এই ভোলাতে শয়ন করিল পাঁচকালে ও
য়া এই পাঁচ জনকে অন্মুদন করিতে বনের
মধ্যে গেল তখন এই পাঁচ জন গাঁওহইতে
নাগিয়া পলায়ন করিতে তাহারা তাঁর
মাগিল তাহাতে এক জন পড়িল তাহাকে
বিহিয়া তাহার মাথা কাটিল পরে আর
এক জনের পায়ে বাঁধা হইল তাহাকে
ও বিহিয়া তাহার মাথা কাটিল পরে আর
এক জনকে বিহিয়া তাহার মাথা কাটিল
অবশিষ্ট দুই লোক পরহাস্য করিয়া পরি
পাল বহু খনাইয়া গেল দিয়া এই বলা লো
কেরদিকের পায়ে পড়িল কিন্তু কেহ কা
হার লাগা বুজিতে পারিল না। পরে বলা
লোকেরা চিহ্নহারা তাহারদের কাঁড়ত্যা
অন্মুদান করিয়া ঘুরাঝি হইয়া মনে লই
য়া দগ্ধ মাংস ভোজন করিতে দিল পরে
ভোলাতে আরোহন করিয়া মকলে আর
এক ওপদীপে ঘাইয়া কিছুদিন বাস করিল
তাহারদের ঘর নাই এক প্রকার টোল
মাঠ আছে এক ওপদীপে টোল ছে
লিয়া দুই চারি দিন থাকিয়া মাংস
বিহিয়া খাইয়া পুনর্বার অন্য ওপদীপে
যায়। এক দিবস এক ভোলাতে অন্য
কতকগুলি বলা লোক অন্মুদনে তাহার
দিকের নিকটে আইল পরে ইহাদের
সহিত মলা করিয়া জল ও মাংসাদি
খাওয়া দুরা বহল করিল। এই মাংস তুমান
স্থলিতে পাইল যে ইহাদের মাংস লৌহ
আছে তাহা লইতে অন্মুদিসময়ে ইহা
রা আনিয়াছিল পরে লৌহ নাই আনিয়া
মলা করিল। পরে দুজন বলা লোকে
রা এই ব্যক্তিকে চাহিয়া লইয়া পুঁর

নামে এক জনের সঙ্গে যাইতি ওপ
দীপে গেল সেখানে পর্যটন সমাপ্ত
প্রস্তুত করিয়া মকলে বাসিয়া ভোজন
করিল। পরে তাহার নিকটে মহাওপদীপ
একটা আছে সেখানকার লোকেরা
স্থলিল যে বাগানি লোক আনিয়াছে
তাহাকে দেখিতে মকল লোক সেই
ওপদীপে আইল। পরে পুঁর তাহাকে
লইয়া বড় ওপদীপে লইয়া গেল তিন বৎ
সর পর্যন্ত সেই বলাহরের সহিত সে
রহিল পরে পুঁর দুই অর্থাৎ বলা লো
কেরদের হাতহইতে ওপদীপে বিহিয়া এই
পালি লোককে বলিষ্ঠতা তুলিয়াছে।

এ বলা লোকেরদের বিবাহের বিধা
এই বর যে কন্যাকে বিবাহ করিবে সে
বর হঠাৎ সে কন্যাকে ঘরহইতে
বাহির করিয়া আসন ঘরে লইয়া যায়
পর দিন প্রাতঃকালে সে কন্যার পক্ষীয়
মকল লোক মনস্ত্র হইয়া তন্মুদনে
যুক্ত করিতে আইনে এবং বর পদীয়
লোকেরাও মনস্ত্র থাকে। পরে ওভয়
পক্ষের যুক্ত হয় যদি বর পদীয় লোক
অগ্নি হয় তবে এই বিবাহ সিদ্ধ এবং পর
দিবস মকলে একত্র হইয়া ভোজনাদি
করে। যদি কন্যা পক্ষীয় লোকেরা অগ্নি
হয় তবে কন্যাকে কাঁড়িয়া লইয়া যায়
বিবাহ সিদ্ধ হয় না। সেই বর পদীয়
লোকেরা আসিল পরে শোভার নিমিত্ত
রায়া মাটি ও খেত মাটি শস্যের লেপন
করে এবং তাহাতে নান প্রকার ফাঁড়
চুল নির্মাণ করে।

সে বলা লোকেরদের স্বীর কারন
মর্দন বিরোধ হয় যেহেতু তাহারদের
ঘর স্বীর নাই এক জনের স্বী অন্য জন
হরন করে এবং অন্য হরন করিলে
তাহাতে যে মন্ত্যলোপত্তি হয় সে অগ্নি

নগাচাঁর দপন।

যদি তাহার মস্তক জেদন করে এবং
হুলন করিলে পশুর কাটাকাটা করে।
তখন কোন লোক মরে তখন তাহাকে
হুইতে বাহির করিয়া মাতেডে ফেলিয়া
হুইকে সকল জাতি মাত ঘণাঘণিত
দিন রাত পুরে ওয়াবিলে কোন বনে
ইয়া কালের মতো করিয়া তাহার ওপর
বিয়া নাই। তাহারদের ভাগ্য মতে
হলন মাও গাং এই মাত্র বংশালি ভাগ্য
হই।

পশ্চিম দেশের সমাচার।

শ্রীমত বাসিন্দাও মহাদাজের মায়া
বিস্ময়কর কোন সমাচার আইসে নাই
নবাবের ভরতপুরের নিকটে মোকিয়া
জায়ে তিনি জিলেন শ্রীমত নর জন মা
কিম মাংসহবের জাণিনিহিতে মাংস খুড়া
কি আসিতে তাহার তিন মাস লাগিল।
মাংস এত বিলম্ব হওয়ার কারণ এই দুই
দুই কারণ বলা যেহেতুক বলায়ুকে
দুই নরিতে এমত জলবদ্ধ হইতেন
য তাহার সকল পাং হইতে না পারিয়া
অনেক বিলম্বিত এই নরিতে তাঁর বিনয়
জালফে নতিন। দ্বিতীয় মহাদাজের
বহু অনেক পুকার পুকা ও মহাদাজের
নেই সময়ে হইল তাহার প্রত্যেক ও
করে অনেক কাল বিলম্ব হইল। অতি
শ্রীমত শ্রীমত বাসিন্দার যে এত বিল
ম্ব হইল ইহাতে বুঝা যায় যে তাঁহার
প্রতি শ্রীমতের অনেক আনুহুই কাজে
যেহেতুক শ্রীমত বাসিন্দাও আশার ইয়া
মত আসিতেছেন শ্রীমত তাঁহার প্রতি
কোন শাসন করেন নাই। আনুহুই
শ্রীমত বাসিন্দাও তেওলাশি চৌমাশি বং
নরবয়স্ক হইবেন।

যে ইংল্যান্ড সেনাপতিরা তাহার মতে
তৈলন আসিতেছে তাহার মাতৈ তৈতু

রী শিত ভিন্ন অন্যত্র কোথাও কোন আশ
যা দেখে নাই এই তৈতু গভ পুরকালীন
বৃত্তান্তের মধ্যে অতি পুশংসনীয় এবং
হিন্দুনা কহে যে হিন্দুমানের মধ্যে অযোধি
নাও গরি গভ তাহার মধ্যে এই তৈতু
গভ এক। এই গভ এক শ্রীমতের ওপরে
পতি গরি দিকেটারি কোশ এবং সে গভ
নাভাধিক শক্ত ও গাণ্ডনদারা আরা অ
তিশ্রী শক্ত করা গিয়াছে। কিন্তু এক
বৎসরের মধ্যে তাহার ওপরে বসত ইয়া
রত পুশ নত হইয়া গাইতেছে।

লোকেরা কহে যে ভরতপুরের চতুর্দি
কের ভূমি অতি ওষ্ঠা এবং ভরতপুরের
রাজার দেশ ওয়ালের মত শস্যদি
শোভাযুক্ত ও দ্রুত এবং গাণ্ডনদারের
দারা নতপুত্র রজপুতেরদের দেশ দিয়া
আসিতে ইংল্যান্ড সেনাপতিরা যে
দুগ্ধানুভব করিয়াছিল ভরতপুরের অধি
কারে আনিবামাত্র তাহারদের নে দুগ্ধ
যোজন হইল। পিতারদের নাপ
হেতুক রজপুথানাতে লোকেরা এখন
কমে দুগ্ধানুভব করিতেছে এবং এক
বৎসরের পূর্বে যে দেশ লিপ্ত ছিল সে
দেশে এখন মল্লতি মল্লি ও গাং ও
লাঙ্গল ও গাং ও স্বী পুত্র পুত্র সকল
দেখা গাইতেছে এবং যে দ্বৈত গাং
মাত্র জিল দেখানে কমে লোক নরার
হইতেছে। পিতারদের কেবল এক
বৎসরের ওষ্ঠাতে নে দেশের এমত
দুহবনা হইয়াছিল সে লয় কিন্তু তাহার
প্রশি চল্লিশ বৎসর পর্যন্ত পুত্রবৎসর
আসিয়া সে দেশে এইমত দোরাভা
করিত।

যে মাংসহবেরা অজুর শহর দেখি
যাছে, তাহার কহে যে হিন্দুমানের
মধ্যে অজুরের মত শ্রীমত শহর

তার নাই দেখানে পুত্র সকল
পুত্রবিন্যাসিত এবং সেই শহরে এক
রাজপুত্র আসে সে এক কোশ লগে
তাহার ওপর দেখে শ্রীমত অতি
এই পুত্রবয়স্ক। এবং ওষ্ঠার
নে শহরে লোকবদ্ধ হইতেছে
যখন গাংকাঠ অতি মাহার তৈতু
কেবল পুত্রবয়স্ক পুত্রবিন্যাসিত করে
আগার শহর ব্যতিরেক গাং কাঠ
বার তার নিকট দান নাই এইহেতু
তদংশেরা পতিহইতে পুত্রের কাটা
আল ও তাহাতে ঘরের জাতও নির্দিষ্ট
করে।

রজপুতেরদের সকল দেশ দ্বির হই
যাছে সেই দেশের গাংকোরা অর্থাৎ
যাংকোরা কমে আমারদের বশীভূত হই
তেছে তাহারদের মধ্যে এক জন ইয়া
মধ্যে আমারদের মহিত পুত্র বংশ
কিন্তু আমারদের বংশ তেঁদের সময়ে
তাহার দ্বির হইতে পারিল না।

রজপুতেরদের দেশে যেহেতু লোকেরা
দুগ্ধভোগ করিয়াছে তাহা লোকেরা
লে বিশ্বাস করে না। তাহারদের মধ্যে
যাহারা অতিশয় দুগ্ধ তাহার অনেক
বার গোময় পুস্তত করিয়া তখন বহিল
এই এক জন ইংল্যান্ড লোক আসন
চলুতে দেখিয়াছে নতুবা অলরব মাংস
আজ্ঞা বিশ্বাস করিতাম না। যখন ইং
ল্যান্ডেরদের জাণি এক দান ত্যাগ
রিয়া মানান্তের গোল তখন শ্রীমত
দুগ্ধা লোক দেখানে আসিয়া যে
ময় পাইল তাহাই পুস্তত করিয়া
করিল। দেখ ইংল্যান্ডেরদের মৈন
পুস্তত থাকিতেও পিতারদের দোরাভা
পুস্তত প্রাণলোক এমত দুগ্ধ ভোগ
যাছে যখন সে দেশে ইংল্যান্ড সেনা

ইতি তঃরিখ ১ দিঃজ্যৈষ্ঠ মন ১৮১৮ ইং বোর্ডবিদ্যালয় ঘর

সমাচার দর্পণ

৩০-১৮৮১

শনিবার ১১ দিবেস্বর মল ৪৮৪৮ ১৮ আশ্বিন মল ১১৫১

দর্পণে মুখ্য নোদর্য্যগ্রহ কার্যবিবরণঃ দ্ব্যস্তাভিহ আস্ত সমাচারদর্পণঃ

সমাচার দর্পণ।

কল্লানির কাণ্ড।

৯ দিবেস্বর বুধবার মল ৪৮৪৮ মল
কল্লানির শতকরা জয় টাকার সুবের
কাণ্ড হয় করিতে হইলে শতকরা
আট টাকা তিনকোথ। বিসয় করিতে
হইলে শতকরা আট টাকা আট আনা
তিনকোথ।

মসজিদে নব্বিজ।

| | | | |
|-------------|--------|----|----|
| ১১ দিবেস্বর | শনিবার | ১৮ | মল |
| ১০ | ২ | ১১ | ২ |
| ১৪ | ২ | ১০ | ১ |
| ১৫ | ২ | ১১ | ২ |
| ১৬ | ২ | ১০ | ৩ |
| ১৭ | ২ | ১১ | ৩ |
| ১৮ | ২ | ১০ | ৩ |

ওগাধা।

মহানরাজ ১৭ নবেস্বর মল ৪৮৪৮
টার আনা গেল যে দিকিণে ওগাধা
গোণের তত্ত্ব হয় হইতে এবং
মুদ্রণের শব্দে অনেক লোক এই গোণে
মহিয়াজে ও মহিভেতে।

মুদ্রা।

সাধারণ শব্দে পত্রিকা সমাচার আসি
গেল যে এই শব্দে লিখিত তাকাত্তি
অনেক কালপাশ্বে পুত্র লোকেরিণিক
দুই দিবেস্বর মল ৪৮৪৮ মল
আমুত মল ৪৮৪৮ মল ৪৮৪৮ মল
১ নবেস্বর তাহার আমাভেদে দেশে

আমি তাকাত্তি করিয়াছিল এবং কতক
মুদ্রাইতে গোণেদি হরন করিয়াছিল।
ইহা শুনিয়া আমুত লেখক কিস্তন
মাহের আশী জন যোদ্ধা লইয়া তাহার
দেহ পক্ষাতে এমত বেগে দৌড়িল যে
তাহার তাহার কিছু তুলনামূলক পাইল
না ও এই লেখক মাহের তাহারদেহ
জাতিতে পাইল। তাহার আমাভেদে
দেহ ইন্দ্রা দেহিয়া এক জন ও দাঁড়া
ইল না ও তৎক্ষণাৎ পলায়ন করিল।
তাহার এমত শীঘ্র পলাইল যে তাহার
দেহ মর্যে আশু লোকমাত্র মার্যে গেল
তাহারদেহ মর্যে পদাতিক ইন্দ্রা দাঁড়া
ও যোদ্ধা মার্যে আট শত জিল তাহার
দেহ অর্ধাৎ রাণীভেদে আমুত তত্ত্ব
সিহ।

ইষ্টকলমে।

কয়েক দিন হইল বার্লিন বাকি
ইষ্টকলমে কৃত এক নোট এই মল মার্যে
গেল। বার্লিন তাহার এক বার্লিনের
কুটুম্বারদেহে হিন্দুদান বাকি টাকা
দাখিল করিয়া প্রয়োজন জিল এবং
তাহার মর্যে কতক লোক টাকা ও কিছু
নোট দাখিল করিল তাহার মর্যে এই
আল নোট জিল। কিছু দিন পরে এই
নোট টাকার কারণ হিন্দুদান বাকি হইতে
বার্লিন বাকি গেল। পরে তাহার এক
জন কেরানী এই নোট দেহিয়া করিল যে
এই নম্বরে একজন নোট তাহারদেহে
মল আসে এই কথা এই আল নোট দিয়া
পতিল পুলিশহইতে লোক আনিয়া

হিন্দুদান বাকি এই বিষয় তত্ত্ব করিল
যে এই নোট কোথা হইতে আসিল।
যাকি এই নোট দাখিল করিয়াছিল কিছু
মল বার্লিনের মাহের তাহার নাম
লয় নাই। বিহ এই মাহের বিহ
ভারিয়া তুলনামূলক তাহার মাহের
মলে করিয়া করিল পরে মাহের
লিমে লইয়া গিয়া তাহার তত্ত্ব হইল
কিন্তু যে বাকি এই মাহের করিয়াছে তাহার
লিখ্য অর্ধাৎ হয় নাই। মাহের
জন মল জনহইতে নোট লয় তাহার
হা নাম এই নোটের পুত্র লিখ্য
হয় যেহেতু যদি কোন লোক
হয় তবে হস্তকলমে লোক ইষ্টকলমে

মহারাজ কুটুম্বার।

ওগাধা বিধানী বার্লিনের বিধানী
জাতিয়া মোক কল্লানির দাঁড়া
লিখক লিখক জল তাকাত্তি এই
জিল যে বার্লিন পত্রিকা লিখক
তেন তাহার। গামকল লিখক
বিদায় টাকা ও গাও ও শব্দ
ও মাহের কারণ লোক ও
তাহার এক সময় বার্লিনের
কির বিদায় পাইতে বিদায়
মহারাজ কুটুম্বারের লিখক
দারা এই করিয়া পাইলেন
রাজ আমি বিদায় পাইলেন
পাইলেন ও মাহ।
মহারাজ ও তাহার
মদ্যুর করিলেন যে
বিদায় না দেয়া
এই বিধানী

সম্রাটের দর্শন।

শুল্লিমা ও আশিয়ার ইচ্ছাশক্তি হওয়াতে
ইসম হুইইলেন ও ফরাসি পরে তাহার
বিবাহি তাঁরা ও বর্ডা ও শাল প্রভৃতি
ও আফ্রোহায়া নৌকা গাইয়া আপন
বাটীতে জাইলেন।

ওলাসিয়ার মুক্তারাম মুখোপাধ্যায়
নামে এক মহাকুলীন মহতা ছিলেন
তাহার সহিত মহারাজ কৃষ্ণদুয়ার
দুর্ভা বসুনাং করতেন ও তাহাকে
যথেষ্ট ভর্তুকাই করিতেন। এক দিন
ঐ মুখোপাধ্যায় মহারাজকে ভোজন
করিতে আপন বাটীতে নিমন্ত্রণ করি-
লেন ও তাঁর দুয়া লেহা পেরদন তরুণির
ভাতিয়ার নামেই পুস্তক করিলেন।
মহারাজ ভাতিয়ারই বনিয়াছেন মুখো-
পাধ্যায়ের নামেই তরুণি হইয়া আসেন
তাহারাজ অনেক বাঞ্ছন দেখিয়া কৌতুক
করিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন যে হে মুখোপা-
ধ্যায় কোন বাঞ্ছন তুমি চাইয়া ভাল
কর। মুখোপাধ্যায় উত্তর করিলেন
যে মহারাজকে বেগুন খেতে অসুখ হইলে
লাভা মুখে ঘাইয়া গাইবেন তাহাই
ভাল লাগিবেক। এই কথা শুনি মদ-
র শুল্লিমা মহারাজকে দস্তুর হইলেন।
ঐ কথা অনেক কাল আছে।

যে দৈবজ্ঞানিমের কথা পূর্বে লিখা গি-
য়াছে তাহার শেষ কথা।

ঐক দিন তাহার চারি পলকিয়া গেল
গাছাতে তাহার কোন বস্তু লোক ঐ
কিছুকে পিড়িয়া তালিতে তাহাকে করি-
ল। দৈবজ্ঞানিম কহিল যদি আমার
চক্রের আশ্রয়ভিত্তিকে ইচ্ছিতে পারে
যে আমি কি তাহা বিনা বাটীতে গাইব
না।

ঐ দৈবজ্ঞানিম এক দিন এক বাড়ি
গাইয়া নিমটে এক তালি চাইল।

আশ্রয় বাড়ি কহিল যে তুমি অনেক
কাজে একটী পয়সা ঢুকিয়া লইতেছ
আমার কাজে কেন এক তালি চাইতেছ।
দৈবজ্ঞানিম উত্তর করিল যে আমার
কাজে পুষ্কীর গাইবার ভরসা আছে
তোমার কাজে আর গাইবার ভরসা
নাই।

এক দিন ঐ দৈবজ্ঞানিমকে হাট ভে-
জ করিতে দেখিয়া এক জন জিজ্ঞাসা
করিল যে তুমি কেন হাটে গাইতেছ।
সে উত্তর করিল যে হাটে কেন আমার
কল্লা লাগিল।

এক দিন এক বাড়ি তাহাকে জিজ্ঞাসা
করিল যে হে দৈবজ্ঞানিম মরিলে পর
তোমাকে কোথা ফেলিবে। সে উত্তর করি-
ল মায়ে। পুষ্কীর সে জিজ্ঞাসা করিল
যে সেখানে তোমাকে ফেলিবে গঙ্গা ও
শৃণালী প্রভৃতির তোমাকে গাইবে।
দৈবজ্ঞানিম কহিল তবে আমার লাঠি
আমার কাজে রাখ। তলা কহিল সে
নাময়ে তোমার আন থাকিবে না। সে
কহিল যদি জান না থাকে বল তবে
গঙ্গা ও শৃণালীর কি ভয়।

এক দিন তাহাকে এক জন কহিল যে
তোমার পুত্র বেশ কিছুমান নাই তত
এর তুমি মরিলে তোমাকে কে ফেলি-
বে। তখন সে উত্তর করিল যে বাড়ি
আমার ঘান লইবে সেই আমাকে
ফেলিবে।

ঐ দৈবজ্ঞানিম এক দিন এক ক্ষুদ্র শা-
রের ওর পুত্রের ও অতি ওর তাহার চার
দেখিয়া শহরের কর্তারদিককে কহিল
যে তোমরা চার কল কর নতুবা শহর
পনায়া গাইবে।

দৈবজ্ঞানিম ন হুই বৎসর বরষক হইয়া
যে দিন মরিল সেই দিন দেশের শাহ

মহাপালে মৃত হইয়া বাবেল নগরে
মরিল।

জবির বিষয়।

ইংলণ্ড দেশে জবির পুস্তক করিতে ও
তাহার মৌকর্য করিতে শিদিবার কারন
ইংলণ্ডের বাদশাহ এক মহাপাণ্ডালি দ্বি-
করিয়াছেন সেই পাণ্ডালিতে বৎসর
যে জবির পুস্তক হয় সে সকল জবির লগ্নে
শহরের লোকেরদের দেখিবার কারন এক
বড় ঘর রাখা যায়। প্রথম দিন কেবল
বাদশাহ দেখিতে গান তাহার পর দিন
তাহার লীচে যে লোক তাহার দেখে
তাহার পর দিন সকল লোক তাহা দেখি-
তে যায় ও দেখে। সে সময়ে যে
জবিরাল লোকেরা জবির জলদান করে
ত হারা সেই হায়ে জবির কয় করিয়া লই-
য়া যায়। গত বৎসরে এক হাজার
তেরাশি জবির করিয়া সেই বড় ঘরতে
রাখিয়াছিল তাহা সকল লোকেরা ঐ
কাল দেখিয়াছে।

রাজকর্ম নিয়োগ।

শ্রীযুত মোঃ জে টি সেক্সনার সাহেব
কলিকাতা কোর্ট ও ঢাকা কোর্টে ও মুরশে
দাবাদ কোর্ট ও পাটনা কোর্টে এই চারি
কোর্টের প্রতিজেলার পুলিশের কর্মের
মোক্তিয়ার হইয়াছেন।

শ্রীযুত মোঃ তবলিও ইউবর সাহেব বা
নারদ ও বরেনি এই দুই কোর্টের প্রতিজ-
লার পুলিশের মোক্তিয়ার।

শ্রীযুত মোঃ শি বারবেল সাহেব কলি-
কাতা ও চব্বিশ পরগণা ডিষ্ট্রিক্ট কলিকাতার
ডেপুটি কমিশনারের অজ ও আলিপুরের
জেলখানার মোক্তিয়ার।

শ্রীযুত সি এচ হালের সাহেব চব্বিশ
পরগণার অজ।

সমস্যাচার দর্পণ।

ঐযুত এ জে কলবিন সাহেব অর্জন
মহলেব জজ।

ঐশ্ব্যুতের ভার্যা।

আমরা শ্রীমন্দির যে ঐশ্ব্যুতের ভার্যা
লিখরপুল নামে যুদ্ধ তাহাৎ ইংলুও
হইতে আনিয়া মোং গরানাগরে পঁত
জিয়াছেন।

অহমদ গড়।

ইংলুওয়েরদের অধিকৃত গড়তে
যেমন ইংলুওয়েরদের ব্যবহার আছে
অহমদগড়তে সেইমত ব্যবহার করিতে
ঐশ্ব্যুত আভা করিয়াছেন। সেই গড়
গড় বন্দরে ইংলুওয়েরদের অলিকারে
আনিয়াছে। এবং পূর্ব বন্দরে পুলা
শহরের নিকটে মোং কড়িয়ায় পেশা
য়ার সহিত ইংলুওয়েরদের যে মহাযুদ্ধ
হইয়াছিল সেই যুদ্ধ যে সাহেব পেশা
য়ারে দুঃ করিয়াছিলেন সেই নজ্জমের
কালে সেই ঐযুত খল্লন সাহেব এই অহ
মদগড়ের অধিক ইয়াছেন।

সিংহলদ্বীপ।

সিংহলদ্বীপ হইতে যে শেষ সমস্যার
আইল তাহাৎ আনা গেল যে সেখানে
যে দুই জন পুতান ইয়া ইংলুওয়েরদের
সহিত যুদ্ধ করিতেছিল তাহারা বেরা
পড়িয়াছে। ঐযুত সন্নর বট্ট কোলদিগ
সাহেব নামে ঐ সিংহলদ্বীপের বড় সা
হেব যেখানে যুদ্ধ হইয়াছে সেখানে
গিয়া সকল বিষয় খির করিতেছেন।

হিম্মাহাদ।

হিম্মাহাদ হইতে সমস্যার আনিয়াছে
যে নাপপুরের রাজা ঐযুত আনামাহেব
পর্ভের ওপরে দুই হাজার সৈন্য লইয়া
আছেন কিন্তু তাহার সকল সৈন্যদ্রব্য

সেই পর্ভের নিকটে যে ইংলুওয়েরদের
সৈন্য আছে সে সৈন্যের সহিত যুদ্ধ ক
রিত তিনি আইসেন না এখন ইংলুও
সৈন্য যুদ্ধার্থে গিয়াছে তখন তিনি
বন্দায়ন করেন কিন্তু গোন্দ লোকেরদি
গকে যুদ্ধার্থে পাঠান এখন যুদ্ধের সময়
ওপতি হইয়াছে অতএব সেখানে
ঐযুত আদমস সাহেবের অর্জন যে
সৈন্য আছে তাহারা তাহাকে বহিয়া
অবশ্য আনিবে।

বিটুল মোকামে কয়েক দিন অবধি কোন
আবশ্যক কথ্য হয় নাই কিন্তু গোন্দ পর্ব
তীর লোকেরা কোন দিন ইংলুওয়ের
দের তৎপ্রাণারদিগকে পথচালা মা
রিয়া ছেলিতেছে।

কতক দিন হইল সেখানে এক ভা
কথ্য কথ্য হইল এক জন ইংলুও
নাগতি আর দুই জন সিংহা মোং বিটুল
হইতে হিম্মাহাদ বাইতেছিল পথে
দুই পর্ভের মধ্যে রাহা দিয়া বাইতে
নার্থকালে তাহারা সম্মুখে এক জন
গোন্দীয় লোককে দেখিল এবং তাহারা
ভীত হইল যে পাঁচ ঐ ব্যক্তি আমাদের
দিগকে গুলি মারে। সিংহা হারা জিহাদ
করিল যে তুই কে। পরে ওস্তর না গা
ইয়া ঐ সিংহা হারা গুলি মারিল কিন্তু
সে ব্যক্তি নড়িল না পরে তাহার নিক
টে গিয়া সিংহা হারা দেখিল যে সে গোঁদ
দেওয়া এক জন গোঁদ। পরে তাহারা
চতুর্দিকে আব্দুসসাফ করিয়া জলিল যে
ঐ জন ইংলুওয়ের এক জন হরকারকে বধ
করিয়াছিল তৎপুত্র ইংলুওয়ের তাহা
কে গোঁদ দিয়াছে।

দিনমারের আহাজ।

এখন দিনমারেরদের শহর শ্রীরা
পুর ইংলুওয়েরা লইয়াছিল এখন দিন

মারেরদের যে ঠিক ইংলুওয়ের
কাছিয়া রাগিয়াছিল সে ঠিক পুলা
নামারেরদিগকে দেওয়া গিয়াছিল
ঐ ঠিকতে জিনিস ক্রয় করিয়া বড়
তাড়া করিয়া দেওয়া শহরে প
জিল সে আহাজ সে শহরে এই বন্দ
জুন মাসে বঁধিয়াছে। এই সমস্যার
কথ্য পাওয়া গিয়াছে। এক কোন্
আহাজের দ্বারা এই শুনা গেল যে
আনিহার সময়ে দিনমারেরদের এ
বড় তাড়াই ও দুই কোন্ আহাজ ঐ
কোন্ দিনমারের সহিত লোকেরা
জিল ইহাতে অনুমান হয় যে ঐ বড়
আহাজের ওপরে তেলের কারের বড়
নাহেব আনিতেছেন এমন হইলে ঐ
তিন আহাজ দ্বারা তেলের কারের

দিনাজুর।

আমরা শ্রীমন্দির যে দিনাজুর মা
সময়ে অমীরের ও ইজারারদার
সে পুলা লোকেরদের ওপরে নানাবিধ
দুঃখ দিতেছে এই যুদ্ধের মধ্যে
পুলা ওস্তা ইয়া গিয়াছে যে পুলা
পূর্ব অলক লোক বসতি ছিল সেখানে
সম্পত্ত অমীরেরদের দ্বারা বৈধব্য
মহিম পুত্রিত অনেক গুণ তাহা বসতি
হইয়াছে। যে পুলাতে পূর্ব অমীর
পত ঠাক ওস্তা হইতে সে পুলা
এখন জয় পত ঠাক ওস্তা হইতে

পাথরের ওপরে যেমন।

কয়েক বন্দরের মধ্যে ইংলুও
কোন্ দিনমারের ওপরে অলক পুলা
জলিত আরক্ত করিয়াছে এবং অলক
এ পুলা বেশে এমন অনেক জাতি
বসতি হইয়াছে যে সেখানে পেশ
খরের ওপরে জাতি হয় এবং পেশ

সমাচার দর্পণ।

পাণ্ডুর অধরে জাগি হয় সে নয় কিন্তু
পাণ্ডুতে নানা পুকার ওৎকৃৎ জবিও
যদিতেছে সে পিতলের ওপরে ঘোনি
রবিহইতেও ওৎকৃৎ হইতেছে। এবং
অতিসুন্দর মুখ্য দাগও পাণ্ডরের ওপরে
ওঠে, এবং চক্কিশ হাজারবার তাহার
ওপরে জালিলেও তাহার এক দাগও নুগু
য় না কিন্তু পিতলের ও সীসার ওপরে
চক্কিশ হাজারবার জালিতে হইলে তাহার
অক্ষরের দাগমাত্র থাকে না এই পুকার
রানী ছাত্র ও অজমনি বেশে মর্দন ব্যাপ্ত
হইয়াছে কিন্তু ইংলণ্ডে তবাবি আইসে
নাই এক জন আনবান ইংলণ্ডে গিয়া ক
হিতেছে যে এই পুকার জাগি ইংলণ্ডে হয়।

নবহলাও।

পূর্ব কাগজের মধ্যে নবহলাও নামে
এক ওপনিদ আছে সেই ওপনিদ সকল
হিন্দুনাহইতে তিনগুন বড় তাহার পূর্ব
ভাগে ইংল্যান্ডের গিয়া বসতি করিয়া
ছে কিন্তু তাহার নামের তিহইতে
পঞ্চাশ কোশের অধিক ভিতরে গারু নাই
সে ওপনিদের মধ্যে কি আছে তাহ
জানিবার নবন আমায়দের অনেক চেষ্টা
জিল এখন সেখানে হইতে সমাচার পা
ইল যে সেখানকার বড় মাছর অনেক
জানবান পোষকরাইকে সে তদুপ
কোশে পাঠিয়ে দেয় তদুপ এক লুতন
নদী বেয়ে গিল তিল সেই নদীর
দূর বৎস তাহার জালিতে ঢাকিলেন পরে
ই জানবান পোষকরা গিয়া দেখিল যে সে
নদী জর পাত কোশ পর্যন্ত বাহ তাহার
পর ক্রিয়মত বেগ যায়। তাহার সেই

খানহইতে পুনান করিয়া এই দেশের পাঁচ
শত কোশ পর্যন্ত গিয়া অনেক আনস
জান করিয়া আনিয়াছে পরে বড় মা
ছেব আদ্য লোকের দিকে এই দেশ অনু
সন্ধান করিতে পাঠাইবেন।

শ্রীযুত মৃত্যুঞ্জয়বিদ্যালকার।

কুমারকোটের পণ্ডিত শ্রীযুত মৃত্যুঞ্জয়
বিদ্যালকার তত্ত্বার্থ শ্রীযুত বিচারক
মাংসবরদেবের নিমিত্তে গরি মানের বিদ্যায়
লইয়া কাশী তথি দর্শনার্থ যাত্রা কর
িয়াছেন।

কাশ্মীর দেশ।

পঞ্জাব দেশের পত্রদ্বারা শুনা যাঁহতে
ছে যে পঞ্জাব দেশাধিপতি শ্রীযুত রণ
ত্রি সিং বাহাদুর কাশ্মীর দেশ তথি
কার করিয়াছেন এবং যে কাশ্মীরে হুজু
নোয়া স্বদেশধিনিতি মুলময়ানদের
ভয়ে নানা দেশ আশুর কমিাজিনেন
তাঁহারা এই সমাচার পাইয়া পুস্তক
বন্ধ রাখিয়াছেন ইহা শুনে। এই
সমাচার শুনা হইতে পারে যেহেতুক
পূর্বে শ্রীযুত রণত্রি সিংহ শ্রীযুত ফেরি
সিংহের কাশ্মীর দেশ ভয়ের দারুন
ই পাঠিয়াছেন। তাহা হিন্দুদের
আজ্ঞার নীচে দৃঢ় প্রত্যয় হয় না।

আটলি।

পূর্বে আমরা লিখিয়াছিলাম যে যো
কটিলে তাহারদের পত্রদ্বারা শুনা হইয়া
আমগত মাদামারি হইয়াছিল এখন
শ্রুতিতে পাঠ্যেছে যে ইংল্যান্ডের এই
আটলি তাহারদের অধিকার করিতে

ওয়াত হইয়াছে এবং দুই তন মাসের
পর এই যোখাম তদার্থে ফেলা ঘাইবে।

অমী বিকল্পের ইস্তহার।

অনেক লোকের জ্ঞান নাহিল জেনাযত রোজ ও তারিখ
সকল পিঠের কপালি মজিত নবহাতির বালী আহার কার
জেনাযত মজুর কালেকরি কাজারিত পুকার খালে নিমিত্ত
কিন্তু হইকে কমা ও জমিরে ইমতিয়ত কোমারি নত
নুগের কালেকরি কাজারিত নালু হইকে।
বেলিশুর কোমারি ১৮ বিতম্বর সন ১৮১৮ ইং ১৫ লৌ
সন ১১১৫ বাৎ কালেকরি কাজারিত।
চাকা কোমারি ১৮ বিতম্বর সন ১৮১৮ ইং ১৫ লৌ
করি কাজারিত।

বিক্রি কোমারি ১৮ বিতম্বর সন ১৮১৮ ইং ১৫ লৌ
সন ১১১৫ বাৎ কালেকরি কাজারিত।

ইতি তারিখ ১৪ মঘবে সন ১৮১৮ ইং বোতরিনবু মাসের
জানক কোমারি অমী সকল মালি জেনাযত রোজ ও তা
রিখ পিঠের কপালি মজিত নবহাতির বালী আহার কার
পুকার খালে নিমিত্তে কিন্ত হইকে কমা ও জমিরে ইমতিয়ত
কোমারি নত নুগের কালেকরি কাজারিত নালু হইকে।
করি কাজারিত।
নবহাতির বালী আহার কার।

রাজধানি কোমারি ১৮ বিতম্বর সন ১৮১৮ ইং ১৫ লৌ
সন ১১১৫ বাৎ বোতরিনবু মাসের মজুর কালেকরি
কাজারিত।

রাজধানি ও নদী ও বোতরিনবু কোমারি ১৮ বিতম্বর
১৮১৮ ইং ১৫ লৌ সন ১১১৫ বাৎ কালেকরি কাজারিত।
মজুর কালেকরি কাজারিত বালী আহার কার।

নদী কোমারি ১৮ বিতম্বর সন ১৮১৮ ইং ১৫ লৌ
সন ১১১৫ বাৎ বোতরিনবু মাসের মজুর কালেকরি
কাজারিত।

বিক্রি কোমারি ১৮ বিতম্বর সন ১৮১৮ ইং ১৫ লৌ
সন ১১১৫ বাৎ বোতরিনবু মাসের মজুর কালেকরি
কাজারিত।

কালেকরি কোমারি ১৮ বিতম্বর সন ১৮১৮ ইং ১৫ লৌ
সন ১১১৫ বাৎ বোতরিনবু মাসের মজুর কালেকরি
কাজারিত।

চাকা কোমারি ১৮ বিতম্বর সন ১৮১৮ ইং ১৫ লৌ
সন ১১১৫ বাৎ বোতরিনবু মাসের মজুর কালেকরি
কাজারিত।

এই সমাচার দর্শন পূর্ব আমায়দের জাণিগনাতে প্রতিনস্তা হে শনিবারে জাগি হয়। তাহার লওনের আদ্যশন থাকে তিনি জরামপুরে
জাণিগনাতে জাগি নাম পাঠাইলে সমস্তই কাগজ তাহার নিমিত্তে পাঠান যাবে তাহার মূল্য মাসে এক টাকা। যদি স্বাক্ষর
করিয়াছেন যদি তাহার নিমিত্তে না পাঠ্যে তবে তিনি জরামপুরের জাণিগনাতে সমাচার দিয়ারাত্র তাহার নিমিত্তে পাঠান যাবে

সম্মান দর্পণ

৩৮-৩৯

পরিষদ: ১৯ দিবেশ্বর মন ৪৮৪৮ ৩ পৌষ মন ১৯৫৫

দর্পণে মনোনিবেশিত কার্যবিবরণী: স্বাধীনতা সঙ্গীত সম্মানিত দর্পণে

সম্মান দর্পণ

কোম্পানি কার্যবিবরণী:

৩৮-৩৯ মনোনিবেশিত কার্যবিবরণী: স্বাধীনতা সঙ্গীত সম্মানিত দর্পণে

সম্মানিত দর্পণ

| ১৯ | ২০ | ২১ | ২২ | ২৩ | ২৪ | ২৫ | ২৬ | ২৭ | ২৮ | ২৯ | ৩০ | ৩১ | ৩২ | ৩৩ | ৩৪ | ৩৫ | ৩৬ | ৩৭ | ৩৮ | ৩৯ | ৪০ | ৪১ | ৪২ | ৪৩ | ৪৪ | ৪৫ | ৪৬ | ৪৭ | ৪৮ | ৪৯ | ৫০ | ৫১ | ৫২ | ৫৩ | ৫৪ | ৫৫ | ৫৬ | ৫৭ | ৫৮ | ৫৯ | ৬০ | ৬১ | ৬২ | ৬৩ | ৬৪ | ৬৫ | ৬৬ | ৬৭ | ৬৮ | ৬৯ | ৭০ | ৭১ | ৭২ | ৭৩ | ৭৪ | ৭৫ | ৭৬ | ৭৭ | ৭৮ | ৭৯ | ৮০ | ৮১ | ৮২ | ৮৩ | ৮৪ | ৮৫ | ৮৬ | ৮৭ | ৮৮ | ৮৯ | ৯০ | ৯১ | ৯২ | ৯৩ | ৯৪ | ৯৫ | ৯৬ | ৯৭ | ৯৮ | ৯৯ | ১০০ | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| ১ | ২ | ৩ | ৪ | ৫ | ৬ | ৭ | ৮ | ৯ | ১০ | ১১ | ১২ | ১৩ | ১৪ | ১৫ | ১৬ | ১৭ | ১৮ | ১৯ | ২০ | ২১ | ২২ | ২৩ | ২৪ | ২৫ | ২৬ | ২৭ | ২৮ | ২৯ | ৩০ | ৩১ | ৩২ | ৩৩ | ৩৪ | ৩৫ | ৩৬ | ৩৭ | ৩৮ | ৩৯ | ৪০ | ৪১ | ৪২ | ৪৩ | ৪৪ | ৪৫ | ৪৬ | ৪৭ | ৪৮ | ৪৯ | ৫০ | ৫১ | ৫২ | ৫৩ | ৫৪ | ৫৫ | ৫৬ | ৫৭ | ৫৮ | ৫৯ | ৬০ | ৬১ | ৬২ | ৬৩ | ৬৪ | ৬৫ | ৬৬ | ৬৭ | ৬৮ | ৬৯ | ৭০ | ৭১ | ৭২ | ৭৩ | ৭৪ | ৭৫ | ৭৬ | ৭৭ | ৭৮ | ৭৯ | ৮০ | ৮১ | ৮২ | ৮৩ | ৮৪ | ৮৫ | ৮৬ | ৮৭ | ৮৮ | ৮৯ | ৯০ | ৯১ | ৯২ | ৯৩ | ৯৪ | ৯৫ | ৯৬ | ৯৭ | ৯৮ | ৯৯ | ১০০ |

ইতিহাস

৪৮-৪৯ মনোনিবেশিত কার্যবিবরণী: স্বাধীনতা সঙ্গীত সম্মানিত দর্পণে

বিত্ত মনোনিবেশিত কার্যবিবরণী: স্বাধীনতা সঙ্গীত সম্মানিত দর্পণে

অবিবাহিত দর্পণ

পুষ্টিময় ইতিহাসময়কার্য বিবরণী

এই পুষ্টিময় ইতিহাসময়কার্য বিবরণী

এই পুষ্টিময় ইতিহাসময়কার্য বিবরণী

এই পুষ্টিময় ইতিহাসময়কার্য বিবরণী

এই পুষ্টিময় ইতিহাসময়কার্য বিবরণী

এই পুষ্টিময় ইতিহাসময়কার্য বিবরণী

ইতিহাস

এই পুষ্টিময় ইতিহাসময়কার্য বিবরণী

এই পুষ্টিময় ইতিহাসময়কার্য বিবরণী

সমাচার দর্পণ।

এবারেই ঘটিত। পরে মহম্মদ শাহ
বান্দাশাহের অধিকার লগ্নে আবদালী
নামে কাবোলের বান্দাশাহ দিল্লীতে তাই
লগ্নে তাই হইতে মহম্মদ শাহ লঙ্কাপুর্ক
আন লগ্না দুর্গাদা শাহআদিকে আর
দালীক বিবাহার্থে দিলেন ও আন
লগ্নার পুত্রাণি মতে কাশ্মীর শহর যৌতুক
দিলেন। তদবধি এই দেশ কাবোলের অধি
কৃত হইল পরে বাদীর বেশে মুসলমান
গুন হইয়া হিন্দুদিগকে বধ দিতে লা
গিল। মুসলমানেরা বুদ্ধপ্রেরদের হানে
যজ্ঞবাহিতের মান্দন লইতে লাগিল ও
সেখানে পুর্বে হিন্দুদের প্রাণনাশক
গোবর্ধন স্থান হয় নাই কিন্তু দুঃ মুসল
মানের অধিকার হওয়া ত মঙ্গল গৌর
ধারিত হইতে লাগিল এবং হিন্দুদের ঘে
বেত তাহা ও ব্রাহ্মণদিগের জিহা
কাজিতা লগ্নি এবং হিন্দুদের সনন বা
বলম্বের আদর করিল হান্দুল লইতে
লাগিল। এই কা কালাবর্ষে দ্বারাড্যা
চুতুকা ভাঙ্গল বুদ্ধপ্রেরা ও অন্য
হিন্দু মগধিবারে মোদর্শ ত্যাগ করিয়া
লঙ্কালী ও কাশী ও বিদ্যা ও মুরশেদাবাদ
এবং কলিকাতা আসিয়া করিয়া কালক্ষে
পন করিতেছেন এবং এই কাশ্মীর দেশ ই
প্লান্ডি বান্দুরদের অধিকৃত হয় এই
পুত্রাণি করিতেছে এই চুতুকা এই দেশ
এখন আরও হইয়াছে পুর্বে এই কাশ্মীর
শহরহইতে পুত্রিয়ার বার শত পালনী
বাধিত হইত এখন একও দেখা পাওয়া
ভার হইয়াছে।

সুদ্রীম কোট।

শ্রীযুত ডেমপুর সাহেব বলিবার তার
মি ইয়াহার দিয়াছেন যে ১৮৬৯ সা
নের ৭ জানুয়ারিতে আগামি বন্দ-দের

কোঁকরার অবসরের সুস্থামিগিল যে
পায়াইবে।

পশ্চিম দেশের সমাচার।

১১ নবেম্বের শ্রীযুত করকর সাহিব সা
হেব হিন্দীদিগের জাতিয়া মোঃ বেবকা
হাতি প্রকাশ করিয়াছেন। ১২ তারিখে
শ্রীযুত লেফ্‌টেন্যান্ট ব্রাউন সাহেব বরত
সৈন্য লইয়া গোঁদান মোকামে গিয়াছেন
জেন এবং সেখানে দেখিলেন যে ই
প্লান্ডিয়ারদের বিপক্ষ দুই তিন হাজার
লোক প্রস্তুত আছে। তিনি তখনই জেন
সৈন্য সমেত তাহারদের ওয়া আসিয়া
করিলেন। তাহার ফলস্বরূপ ব্রাউন সা
হিব পলায়ন করিল। তিনি তখনই
লক্ষ্যে পাছাতে ১২ জুন করিয়া তাহার
বিপক্ষ সমস্ত হারিলেন যে তাহারদের
মাসী দুই শত লোক মারা গেল ও অ
ন্য লোক মৃত্যুর হইল ও অবশেষে
সোহরাগ প্রাণ লইয়া পলায়িল। পুর্বে
এক লোক ইংল্যান্ডের সৈন্যহইতে
গিয়া কাপাসাবো বসতি মিলিয়াছিল
সেও এই সঙ্গে মারা গেল দেখা গেল।
ইংল্যান্ডের সৈন্যের এক জন মরিল
ও আর আত্মত্যাগ প্রাপ্ত হইল।
যে দিন পুত্র হইল তাহার পর দশ শত
লেফ্‌টেন্যান্ট সাহেব মোঃ গোঁদান
গেলেন। হাতির পুঙ্খ যে চেটে-২ ডোন
জোতা যায় তাহা বহিয়া পাছাতে ওয়া
বার করণ শ্রীযুত ডিম্বু সাহেব হাওয়ার
মত কাজের এক পুকার পাগ্ন করিয়াছেন।

কাবোল।

পুর্বে আমরা লিখিয়াছিলাম যে কা
বোলের বান্দাশাহের সন্তা বার্তা পাইয়া
তাহার ভৃত্য শাহ শুভা কাবোলে ঘাই
তেছিলেন এখন শুনিলাম যে তিনি লুধি

কাবোলেই বসতি করিয়াছেন।
তাহার অধিকার বিলা লুধিয়ার
পশ্চিম ১৪ বার কাবোল গিয়াছেন
পথে মোঃ বেবকাহা তিন শত
দিন ছিলেন। মোহানকারি মোহান
বান্দা তাহার নামে ব্রাহ্ম মর্দ
বলিল যেহেতু এই শাহ শুভা
পুর্বে কাবোলের শিখসৈন্য বসতি
তখন এই বহমান এই তাহার অধিকার

বাঁকি আম বার্তা।

সকল লোক অধিক হইল বাঁকি
বার্তার ডাইরেক্টর নামে ব্রাহ্ম
বলি সমস্ত ১০ দিনের ১০১৯
তারিখেই বৈধে যে কলকাতা করিয়া
জেন তাহার লগ্নি পাছা ঘাইতে
সকল বুদ্ধি নোঁট আসার অধিক
কাহিনে তৈয়ার হইয়াছে তাহ
কর্তা বার্তার পৌর হত যোগ
এক এই বার্তা লোক মরণ
বহুত পাছা হইল তখনই
যাঙ্ক বার্তা তাহারদিগের পাছা
হয় এমত আন যায় সে সকল
টাকা বাঁকি আম বার্তাহইতে
ঘাইবে।

বাঁকি আম বার্তার ডাইরেক্টর সাহে
বাল্লু তাবক বুটা নোডের টাকা
কিট বুটা নোঁট লুধিয়ার
হইল তাহার ওয়া তাহার
বান ইয়াদি হইয়া তবর্তা
পরে টাকা দেওয়া ঘাইবে।

ডাইরেক্টর সাহেবাল দিগ হা
যে এই সকল খবর তাবক
অধিকার লগ্নি প্রকাশ করা
ডাইরেক্টর সাহেবাল
পুকার হইল। ৩০-৪১

সম্মাচার দর্পণ ।

ਭਾ 1

গত শনিবারেতে আদ্যিরাষ্ট্রিক মন্থনা
স্বাধর্গত লোকেরা চৌরসিঙে ঐ মন্থনা
য়ের ব্যয় কর্ম করিতে এসব ইহলৈ সে ম
ময়ে প্রযুক্ত তাঁসর বালিক সাহেবের এক
পত্র পড়া গেল তাহাতে তিনি লিখেন
যে লোকদের রাজধানী নগর হউমু
তে ইংল্লণ্ডেরদের ওলি প্রযুক্ত গাঁ
র নাহিহ আছেন তিনি এই সমত
কেনে করিখলেন যে ছাউমুতে চার
অতিমুদ্রা এক দ্বক অজ্ঞে সে দ্বক দাত
মাত ওর বেসে সেমুদ্র মাস করি নবে
কর মানসম্মত ওহাতে অতিমুদ্রা মল
অন্যে সে দ্বক মাল কোট ছিল ওখন
তীন বেশইহাতে আদ্যিরাষ্ট্রিক এখন এক
ব্যক্তি কাম্বাণীর বাণিজ্যতে আছে এবং
ঈশ্বর পানকর নাহিহ তাহা তল বা
ত্রিা যোগেন করিখলিল কিছুটা ইহলৈ
মদ্রা গেল আস হয় যেত দ্বক কিছুই
পের ওস্তর ভাণে পঠিত্য কাল এহিতে
গেল। পরি এইহর তবে ঐ মন্থনা
ডাঙ ওহাণে এইহর যোগেতু পান দেশ
হিতে ইংল্লণ্ডের মাল লোক বসসহ
নাকর ওস্তর তা ক্র কয়ে এবং এই
বসসহতা চৌর বারশীহ আসি যের
যে পুঁ দীর্ তাই কোন কাল তা অজ
না ইহাতে তাহাঁর অজিষ্টের শৈ
লই ওইখেরেই লাল আভীর লোক
চৌর বালিকার কাল তীন বেশ দিতা
যাঁর তাহাঁদের সহিত ঐ বারশীহ এম
ত অহাণী বাবহার করে যে তাহা। সু
হাতি করা যোগ। দুই দ্বক বসস
ইহলৈ ইংল্লণ্ড দেশে কোন দ্বক তা গাঁ
তল এখন যোগে এমত বাবহার হই

যাচ্ছে যে অতিদুঃখী লোক ও চা ব্যক্তি
কেহে আহা! করিতে পারে না।

[illegible]

उत्तर दिक्-पुत्र मेजु इति ।

[illegible]

কৃষ্ণাঙ্গি ৩ নদী ও হাটখিল্লি মোহনাব ২৮ ফিটের নল
 ১৮১৬ ইং ৩৪ পৌর ২৯ ১১ ১০ বর্গ কিলোমিটার কমান্ডারিঃ
 সরকারী ওয়ারেন্ডার বাকী থাকবে কখন।
 নদীঃ মোহনাব ২৮ ফিটের নল ১৮১৬ ইং ৩৪ পৌর ২৯
 ১১ ১০ বর্গ কিলোমিটার কমান্ডারিঃ
 ফিউজি মোহনাব ৪ ফিটের নল ১৮১৬ ইং ২২ পৌর
 নল ১১৫ ৪ বর্গ কিলোমিটার কমান্ডারিঃ।
 হাটখিল্লি বরপাড়া ৩ ফিটের নল ১৮১৬ ইং ১০ পৌর

ମନ ୧୧୧୬ ଟାଙ୍କି କାଲେନ୍ଦରି କାଞ୍ଚାମିଠ ।

ঢাকা সৌমহাট ৪ আগস্ট মন ১৮১৯ ইং ২২ পৌষ মন ১২১১
বঙ্গাব্দ ১২১১

मिपुत्रा ५३४६११ मिपुत्रा मज २७१० ई० २९ उ०

৯টি টা: ১৫ ১ দিনে ১৮ ১৮ ইং বোর্ডনিবন্ধন হক্কুয়ে।

অনেক লোকের অশীল মামিল জেলাফার রেজি. এ ও প্রেরিত
লোক শীঘ্র উপলব্ধি হইবে সরকারের বাকী আদায় করা
পুস্তকখান দিল্লীতে যিহাজ হইবে করা ও ওশীলের ইষ্ট
চত বোহরীফার লোকের দ্বারা যিহাজ অথবা জেলাফার
সংগ্রহ করা হইবে।

ਸਰਕਾਰੀ ਫਾਈਲਾਂ ੭ ਅਭਿਵਿਕਾਸਕ ਫਾਈਲਾਂ ਆਦਿ। ਕਾਗਜ਼।

ଟଙ୍କା ୬ ହାଜାରରୁ (ମାସପାଠ ୧୫ ଆଡ଼ରୁ ମନ ୧୫ ୧୬ ଇଂ ୬
 ମାସ ମନ ୧୧ ୧ ଟା ୧୦ ଡ଼ାଲିରୁ ମାଲିକୀରୁ ଦସ୍ତଖତାମାତ୍ର :

मेदिनीपुर, मार्च १८ दिनांक १८१८ ई. १३ अंश

ਸਰ ੧੬੨੬ ਟਾ: ਪਾਤਿਸ਼ਾਹੀ ਦੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਵਿਚਲੀਆਂ।

ਦੀ: ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ !

[illegible]

20. 5. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20.

ପ୍ରାକ୍ତନ ମୁଦ୍ରା : ପ୍ରାକ୍ତନ ମୁଦ୍ରା ୧୫୧୧ ଓ ୧୫୧୨ ମସିହା

[illegible]

प्राप्तकर्ता का पता: २०, कल्याण नगर, २०-२१ ई. १७, पौड, नए

SA ५४.३: कण्ठमणि कण्ठमणि कण्ठमणि ।

... ..

সংস্কৃতি, সোমবার ১১ জানুয়ারি ২০১৬ ১১:২৬

१२२४ नं० कायानुसंगि कायानुसंगि ।

মুদ্রণের তারিখ: ১৮ অক্টোবর ১৯৯৯ খ্রিঃ ৩ নং

नमः १२२६ रात्रिः क्षणिकः प्रकाशः ।

प्राप्तिका संख्या: ७१ दिनांक: २५-१२-२०१४ ई. ११

मन १११६ रतः कलकत्ता-वि काकाशिरुड ।

ଅନୁଷ୍ଠାନ ସେବିକାର ୧୫ ଆଦେଶ ନମ୍ବର ୧୫ ୧୧ ଇ. ନମ୍ବର ୧୧

১৫ নং ক লেভারি ক্রান্তিতে ।

दिनांक: दृष्टिगत ७० दिनांक: मंग १८ १८ ई. ११ पौष सं

१९६५-६६ : ७००० रु।

মিঃ ডঃ সত্যজিৎ ৩১ বিঃসর নম ১৮১৮ ইং ১৮ পৌঃ

मन ११, १६ वा. मीलकृति खंडः ३।

বর্ষাবলি ১৯৫৬-৫৭ ৮ অক্টোবর ১৯৫৬ খ্রিঃ ১৬ মেঘালয় নং ১৫৫

बो. का.म.क. सं. १३३।

३३ उद्दिष्ट ८ दि'अपु नम १६१८ ई' हो'उद्दिष्ट ७

कह्ये ।

এই সময়কার বর্ষা ঈশ্রামুন্ডের জন্মস্থান। তখন শুধুই শনিবার জন্ম হয়। ঘাটার শনিবার আর শনির মতো তিনি ঈশ্রামুন্ডে জন্মস্থানটিতে জন্ম নাশ পাঁচটাইলে মজাই। বর্ষাক উপহার লিখে পড়ান পাঁচের উপহার মূল্য মাসে এক টাকা। তিনি স্বামীর কর্তৃপক্ষের ঘনিষ্ঠ উপহার লিখে না বর্ষাক উপহারে তিনি ঈশ্রামুন্ডের জন্মস্থানটিতে মাসের দ্বিগুণ উপহার লিখে পাঁচ পাঁচের।

সমাচার দর্পণ

১২ নং পৃষ্ঠা

শনিবার। ১৬ ডিসেম্বর মন ৪৮৪৮। ৪৩ পৌষ মন ১১৫৫।

দর্পণে মুখ্য সৌন্দর্য্যমির কার্যাবিচ্ছেদ্যঃ। বৃত্তান্তনিহ জ্ঞানত সমাচারসা দর্পণঃ।

সমাচার দর্পণ।

কৌশলানির কাণ্ডঃ।

১১ ডিসেম্বর বুধবার মন ৪৮৪৮ মাসে
কান্টনীর শতকরা জয় টাকার সুদের
গণিত করা করিতে হইলে শতকরা
গত টাকা বার আশ ভিন্নকৌণ্ড। বিকল্প
কিতে হইলে শতকরা আট টাকা আট
মাস ভিন্নকৌণ্ড।

সম্ভাঃ নক্ষত্র।

| | | | |
|-------------|--------|----|-----|
| ১১ ডিসেম্বর | শনিবার | ১০ | পৌষ |
| ১১ | ২ | ২১ | ২ |
| ১২ | ৩ | ২২ | ৩ |
| ১৩ | ৪ | ২৩ | ৪ |
| ১৪ | ৫ | ২৪ | ৫ |
| ১৫ | ৬ | ২৫ | ৬ |
| ১৬ | ৭ | ২৬ | ৭ |
| ১৭ | ৮ | ২৭ | ৮ |
| ১৮ | ৯ | ২৮ | ৯ |

ইন্ত হাঃ দেওয়া ঘাইতেছে।

এই সমাচার দর্পণ নব্বই নম্বর
কাল ভক্তের মাসুলের বিষয় অগ্রপুত
নাহেব আঁকা করিয়াছেন যে নব্বইকার
ভক্তের মাসুল মোঃ শ্রীমামুরের ভক্ত
বারে দাখিল হইবেক তৎপুত্র নব্বই
বার মাসুল ই শ্রীমামুরে দাখিল করা
ঘাইতেছে কিন্তু মর্যো শ্রীমামুর যে
মফস্বলের ডাকমুনসীরা কাহারো
দ্বানে কিছু চাহে সে ডাকবেজায় যদি
ডাকমুনসীরা কাহারো দ্বানে কিছু লয়
ও চাহে কিম্বা সমাচার দর্পণ দিতে গা
জিলী করে তবে শ্রীমামুরের জাণিয়া

নাতে সমাচার দিলে তাহার পুতীকার
হইবেক।

আহাজ আমদানী।

এই সম্ভাঃ কোন আদেশক সমাচার
পায় নাই এক আহাজ ৪১ জুনই ইংল্ড
জাতিয়া এই সম্ভাঃ এখানে পঁছরিয়াছে
বটে কিন্তু সে তারিখের পরের সমাচার
ইহার পূর্বে এখানে আনিয়াছিল অত
এব এই আহাজে কোন নতুন সমাচার
নাই।

নিং-হলদী।

৭ জুনই তারিখের এক পত্র নিং-হল
দীনহইতে এখানে পঁছরিয়াছে তাহাতে
জানি গিয়া যে নিং-হলদীনের মকল বি
রোহিদি নিবৃত্ত হইয়াছে বিরোহিকারি
ইংগ্ৰাণীয়েরদের হস্তগত হইয়াছে তাহার
দের মধ্যে এক জন দণ্ডযোগ্য পুঁধান লোক
ইংগ্ৰাণীয়েরদের হইতে দণ্ড লাপ্য এই
নিমিষে আপনি আগে আকৃষাতি হইয়া
মরিয়াছে। অন্য এক পুঁধান নিং-হলদীশকে
গুলি মারিতে ইংগ্ৰাণীয়েরা আঁকা করি
য়াছে ও আর দুই জনের মুস্তের অন্য
লতে বিচার করিতে আঁকা করিয়াছে
ইহাতে অলুমান হয় যে সেই দুই জনের
পুঁধানও হইবেক নিং-হলদীনের বিরোধি
মিগ্রিয়াছে কিন্তু তাহার মূল মকল
আত নহে অতএব তাহার মূল বিস্তার
করিয়া লিখা ঘাইতেছে।
তিন শত বৎসর হইল পোর্তুগীশেরা
আনিয়া নিং-হলদীপ আপনাদের অ

বিস্তার করিল কিন্তু মকল বিস্তার
করে নাই কেবল সমুদ্র তীরে দে
পল অধিকারে আনি। পরে ইল
অর্থাৎ ওলন্দেজেরা পোর্তুগীশের
কে মুক্ত রাখি করিয়া তাহারদের মকল
বিশ্বাসিকারী হইল। গত যুদ্ধকালে
ইলগ্ৰীয়েদের স্বদেশ ভিন্ন যে অধিকার
জিল ইংগ্ৰাণীয়েরা সে মকল আপনাদের
দের অধিকারে আনি তাহাতে এই
ওলাপও ইংগ্ৰাণীয়েরদের অধিকৃত হইল
কিন্তু ইংগ্ৰাণীয়েরা কেবল সমুদ্র তীরে
যে নিআধিকার করিল নিং-হলদীনের
তারি তারি তারি তারি তারি তারি তারি
নী লোকেরদের সে হইলে আইন
বহি স্বরাজ বিচার জিল সমত ইংগ্ৰাণী
য়েরদের অধিকারকালে রাখিল। পরে
ই রাজা আপন প্রাধিকারের তত্ত্বাধীনা
দিত লিখিল তত্ত্বাধীনাই কাহারে কল ও
কাহারো নানিহা ও কাহারো হক নকদি
হেদন করিতে ও ইংগ্ৰাণীয়েরদের অধি
নায়ে ও কল ও ওলাপের দিতে লিখিল।
এই মকল হোঁকা ইংগ্ৰাণীয়েরা অনেক
দিন লিখিয়াছিল কিন্তু দুই দিন
হইল ইংগ্ৰাণীয়েরা অনেক চেষ্টা
তাহার ওলাপের আকমল করিয়া তাহার
মুক্ত রাখি করিয়া যাকরাজের নি এই এক
কিছাতে কয়েক মকল এবং তাহার
হলদীপ আপনাদের অধিকারে আনি
ও আপনাদের মৃত্যবধর ও ঘণা বিচার
হারা পুজালাকেবিকারকে সুদির করিল
কিন্তু সেমানকার পুঁধান লোকের পুঁধান
দের ওলাপের পুঁধান হইল তাহার

সম্রাচার দর্পণ।

পারিয়া ইংল্যান্ডের বিচারের অনন্মত
হইয়া পুনরায় ইংল্যান্ডের সহিত
যুদ্ধ করিল এবং তাহারদের মধ্যে এক
জন আলাক বাদশাহ করিয়া সকল
বিবাদিরাগিরে অক্ষয় হইল। এমন
নে সকল বিবাদে ন দূর ইয়া মুখ্য
হার হইয়াছে। সেনান্যার লোকের
নির্ভর্য রূপে যেহেতুক বুঝাইয়া
সম্মত জিল নুয়াহাদের অনন্মত ইয়া
নালা বুঝাইয়া করিল রামন স্বতঃ
না হইল এবং হার না।

মৃত্যু।

গত পলিয়ার মৃত্যুগী চৌদশার
এই পুকারে মারা গেল। সে এক দ্য
রাত্রি থাকিতে কলিকাতার চুনা গলিতে
চৌকি দিতেছিল। সে মময়ে দুই জন
আরব অনিয়া তাহাকে তৎক্ষণাৎ বাইতে
কহিল। চৌকিবার তাহা শুনিয়া না। পরে
এক জন আরব অনিয়া তাহাকে ধিয়া
মৃত্যুকাতে ফেলিল। পরে চৌকিয়ার
ওপরি সে দুই আসে কহিল যে তোমরা
খলয় নেহ। ইহাতে কলকাতার
এক জন আরব আপন দুই দ্বিহা করি
য়া তাহার পেটে মারিল। তাহাতে সে
মরিল। সে দুই জন তৎক্ষণাৎ ধর
হইল অগামি মিলিলে তাহারদের
উদ্ধৃত হইবেক।

মরণ।

কয়েক দিন হইল এক আরমানী আ
পন পরিস্রম সঙ্গে করিয়া লোকোপোগ
কলিকাতায় আসিতেছিল কলিকাতার
লিকটে লোকা ওলিয়া তাহার পরিস্রম
ও আর অনেক লোক সম্মত মারা গেল
তাহারদের মধ্যে কেবল তিন জন
লোক রক্ষা পাইয়াছে।

পশ্চিম দেশের সম্রাচার।

শ্রীযুত করনাল আদমু মাংহেব হিন্দী
বান জাতিয়া দেবগাহিতে আপন মৈল
লইয়া গিয়াছেন তাহার অভিপ্রায় এই
যে তিনিমাংহেবকে শুদ্ধির্কি ঘেরিয়া তা
হার আহারদি কর করেন তাহাতে অণ
তা তিনি আপন ইংল্যান্ডেরের হস্ত
গত হইবে। নবের মাংহেব শেষ
দিনে তাঁর মাংহেব মৈলারা চৌকি
গত অস্থির বহিতে বিস্তর পশ্চিম
করিল কিন্তু সেখানে ইংল্যান্ডেরের
বহু শত সেনা জিন তাহার তাহাকে
দূর করিয়া দিল।

কয়েক দিন হইল শ্রীযুত করনাল
দেবগাহিতে শ্রীযুত আদমু মাংহেবের
নতর মৈলার সহিত যুদ্ধ করিয়া তা
হার দিকে মারিল কিন্তু পরিত্রস্ত নিম্ন
তাহার লিকটে না থাকিতে তিনি তাহার
দিককে মংহার করিতে পারিলেন না।

যে ব্যক্তি এখন লগিপুরের রাজতিন
হানলে বসিয়াছেন সে ব্যক্তি এই আশা
করিয়াছেন যে কয়েক মাস হইল যে সে
নগর ও মোক্কা তৎক্ষণাৎ তরিকার
করিল তাহারদের জয়মংসর মাহিয়া
তাহার দিকে পশ্চিমের দেওয়া বাই
বেশ লগিপুরের রাজার এ নগর অতি
শীঘ্র গুপ্তম ও ঘরায়। চৌকিগে যে
সে লগি টাঙ্কা পশ্চিম গিয়াছিল সে
টাঙ্কা ইংল্যান্ডেরা আপনরা না লইয়া
লগিপুরের রাজার থাকার হাতে দিল
অতো যদি এ টাঙ্কা গতিত তবে রামন
লগিপুরের রাজার হাতে দিত না আপন
হাতে রাখিত।

পুণ্ডীল কথা।

চাৰদহের গুপ্ত পুণ্ডী অনুমান চারি

ফৌজ অস্তরে দেবগাহি নামে এক গুপ্ত
আছে সেখানে একটা লুপ্ত গুপ্ত বাটী
আছে তাহার আয়তন অতিবহু গুপ্ত
এক ফৌজ তাহার চারি কোনে মালিয়ার
ইত্যাদি নামে চারিটা পরিত্রস্ত মৃত
কার বুঝ ও বাটের মাথা চারি পশ্চিম
মুকোঙ তাহার গুপ্তমু কহে তাই দুই
সকল বুঝ পুণ্ডুরিনী আছে এবং বা
নে মৃত্যুকার মাথা ইত্যাদি ও গুপ্তর
আছে। এই বাটী বিধে লোক কহে
যে এখানে লুপ্ত দেবগাহি নামে এক রাজা
ছিল। তাহার রাজা হওয়ার পুণ্ডী
এই।

ঐ দেবগাহি দেবগাহি নামে এক
কুস্তকার জিল একদিন এক মন্যামী তা
হার বাটীতে অতিথি হইল পরে ঐ মন্যামী
আপন কুলা চালর বাটার টাঙ্কাইয়া
মুনায়ে গেল এই সময়ে বৃষ্টি হওয়াতে
সেই কুলায় মধ্যে পুৰণ করিয়া বৃষ্টির
জল লোভে পড়িতে লাগিল কুলায় মধ্যে
লুপ্তমি জিল তাহার জল দীর্ঘ কোদালি
তে পড়িলে কোদালি স্বর্ণ হইল। ইহা
দেখিয়া কুস্তকারের স্বী আপন স্বামিকে
কহিল। কুস্তকার সেই মনি হরন করিল।
মন্যামী ঐ মনি না পাইয়া কুস্তকারকে
অভিসম্মত করিল যে তুমি যেমন আ
মার মনি হরন করিল ঐ মনি তোর কিছু
তোর বংশের জোগালা হওক ও তুমি
ও তোর বংশ শীঘ্র শুভিম হবি। ইহা ক
হিয়া মন্যামী গেল। কুস্তকার ঐ লুপ্তমি
মুনায়ে ত গিবাল রাজা হইয়া অসংখ্য
বন মংগ করিল পরে বাটীর চারি কোনে
চারিটা কুদ করিয়া বিধেতে পুণ্ডী করিয়া
চারি মনে চারি আঁতর চারি বালক বই
করিয়া ঐ বিলম্বাৎ কুদ মধ্যে রাখিয়া
তাহার ওপর মৃত্যুকার চারি বুঝ

সমাজের দর্পণ।

নির্মাণ করিল তাহাতে যে স্থানে মালির
ঘর রাখিল এই কল চারি আঁতের চারি
দুই অংশ রাখিল। কিছুদিন পরে এই
দলক বৃত্তান্ত শুনিয়া দিল্লীর বাদশাহ মুক্ত
হইয়া তাহাকে কয়েক করিয়া লইয়া যা
তে ইন্দ্রা পাঠাইলেন। সে যখন কয়েক
হইয়া দিল্লী যায় তখন আত্ম পরিত্রের
দশকে কহিল যে যদি দরবারে আমার
সম্মিলন হয় তবে এই দুই কলোত তপ্তে
এখানে আনিবো ইহা আনিবামাত্র
তামরা সকল পুনর্জাগ করি। যদি
একল হয় তবে এই দুই কলোত আমার
নগরে আনিবো। এই করিয়া আনি
হয়েই হইয়া দিল্লীতে গেল। সেখানে
গিয়া অনেক দিন বায়হারা বাদশাহকে
তুল করিয়া মঙ্গলপুঙ্ক বাটী আনি
তেছে বৈবাহ এই দুই কলোত ওড়িয়া
বাটী আনিবামাত্র তাহার সকল গোষ্ঠী
গোষ্ঠীতে গিয়া তুলিয়া পুনর্জাগ কর
িল। দেবাল ও কলোত ওড়িয়া বাইরা
এক ওড়ম ঘোড়া তাহারোহন কর
িয়া বাটী আনিয়া দেখে যে সকল পরি
জন ভূরিয়া মরিয়াছে। পরে বিবেচনা
করিল যে তবে একেলা আমার জল
লিপ্ত আমি পুনর্জাগ করি। ইহা ভা
র্যা আনিও এই পুষ্করীতে তুলিয়া
যরিল। এই কল কথা অনেক কহে
কিন্তু এ অমূলক কথা প্রমাণ হয় না কিন্তু
সে স্থানে যেমত বাটীর সন্ধান আছে
তাহাতে জানা যায় যে এ বাটী বাহার
জিল সে অতিবড় লোক এ অনুমান হয়
যে অতিবিস্তর দিলেরও নয় এবং লৈ
করা পুণ্য কথায় এই দেবপাল রাজার
দৃষ্টান্ত দেয় অতএব ইহার মূল আদার
অত্যাধিক যদি ইহার মূল কেহ আনে
তবে অনুগ্রহ করিয়া শ্রীমায়ুরে জাগ

খালাতে পাঠাইলে তাহার মূল আদা যায়।

রাজকর্মে নিয়োজ।

শ্রীমত শ্রীমদ মাহিনাতেন মাহার বৃত্তা
নি গুণমের মোক্ষদারের বিচার আনি
দেহ।

হেডিংস আইজ।

যে হেডিংস আইজ এই দেশের
প্রথম মানে ভাষণ গিয়াছিল তাহার
মহাতার পাওয়া গেল যে সে আইজ
৪৮ আগন্ত মোক সেরা পুষ্করীতে।

মুক্ত সমাজ।

চৌতালীতে আহমদ কলিতে গোন্ধের
যে ওড়ম করিয়াছিল তাহার বৃত্তান্ত
এখন লিখিতেছি। গোন্ধেরদের অধিক
নেপাতি চৈনশাহ নামে এক জন ছিল।
এই কলি বর্ষকালে জতিশয় দুঃখদায়ক
হয় এইহেতু এই কলির নেপাতি ইং
গ্লণ্ডীয় এক মাহেব কয়েক দিন এই কলি
জতিয়া আশনারদের জাগলিতে বহিত।
এই অনুদান পাওয়া গোন্ধেরা তিন
হাজার লোক সময়েত অক্ষক সে
কিছু পুষ্করীতে সে কালে কলির লিকট
এক প্রায়ে এক হাওলদার ও ঘোল তল
নিয়াহী জিল কলির মাঠে কেবল দেহ
শত নিয়াহী জিল। গোন্ধেরা পুষ্করী আ
নিয়া এই পুষ্করের মাঠে পুষ্করী করিল। পরে
হাওলদার ঘোল জন নিয়াহী সময়েত কি
লার মাঠে যাঁতে ছেদা করিল তাহা না
পারিয়া একটা পালা ঘরে পুষ্করী হইয়া সেই
খানে থাকিয়া যুদ্ধ করিবে এই নিশ্চয়
করিয়া মনস্ত হইয়া যাবৎ বাকদ জিল
তাবৎ গোন্ধেরদের সহিত যুদ্ধ করিল
সে যুদ্ধে এক জন নিয়াহী মরিল ও হা
ওলদার ও নিয়াহী চারি জন আঘাত

হইল ইহারদের বাকদের ঘেই হল
গোন্ধেরা ইহারদিগকে অশ্রয়
প্রিতে লাগিল এই সময়ে কলি
কয়েক জন ঘোড়সওয়ার বহির
তলারওয়ার গোন্ধের ইন্দ্রা
পাথ করিয়া আনিয়া এই পাথ ঘরে
করিয়া কয়েক নিয়াহীর হাত
দিয়া তাহারদিগকে মৃত লইয়া
কিল্লীতে পুষ্করী করিল। এই সময়ে
কয়েক তাহারদের ওড়ম পালা অক্ষ
করিল তাহাতে তাহারদের বিচার
ইল না কিন্তু তাহার কিল্লীতে যাঁতে
উল্লিখিত জন গোন্ধেরে কাটিয়া কিল্লী
করিল। সে দিন ওড়ম এই কিল্লী
বার কারন গোন্ধেরা পালা ওড়ম
ল কিন্তু সেই দেহ শত নিয়াহীর
হার তাহার লিকটে আনিতে
না। পরদিন পুষ্করীতে লেস্ত
এক মাহেব পাঁচ শত মলা সময়ে
যা যুদ্ধ করিয়া গোন্ধেরদিগকে দুই
হাওলদার সে যুদ্ধে গোন্ধেরদের দুই
শত সৈন্য আন লোক মরিল ও চারি
লোক আঘাত হইল।

পরে ১৮ মাহেবের জয়ত কাপড়
চল মাহেব হত পুর মোক্ষায়ে গোন্ধের
দের সহিত যুদ্ধ করিলেন সে স্থান
তি বর্ষা অঙ্গলময় ও যে স্থান
হাল সেখানেও পালা ও তের
বাগু তাহাতি তিনি আনি মৈন
ইয়া সে শহরে গিয়া মঙ্গল
গকে তাড়াইয়া দিলেন কিন্তু সে
রাজা যুদ্ধ কালে এক ঘোড়া
এই পুষ্করী আনা গেল না যে
ইংগ্লণ্ডীয়দের সহক
নি আশা মাহেবের সহিত
পারেন এই কারন পুষ্করী

সম্রাটের দর্পণ।

সাহেব অনেক সৈন্য সেখানে পাঠাইয়াছেন। যে সৈন্য এ দুই সময়ে ইংল্যান্ড য়েরদের সহিত যুদ্ধ করিল তাহারাই তাঁর হাজার লোক পাঠান ও আরও এগোদ তাহারদের মরদার এই চৈদশাহ ও মতি খোয়া ও মাহারামু সেনাপতি এক জন এই সকল লোক আনামাহে বের পক্ষীয়।

৪ দিহেম্বর তারিখে জীবুত কান্টন রবার্টস সাহেব পুনর্বার আনামাহেবের পক্ষীয় লোকদেরদের সহিত যুদ্ধ করিয়া তাহারদের পুস্ত তাহারদির সামান্য কাফিয়া লইলেন ও তাহারদিগের অনেক লোককে মারিলেন তাহাতে ইংল্যান্ডীয় সেনার মধ্যে কেবল তের জন লোক আ বাতী হইয়াছে।

কলিকাতার মেসিয়াস।

পাঁচর সাহেবের কুঠীর অন্তর্গত জীবুত মেসিয়াস সাহেব অগ্নিপ্রাণীভবন রের মেসিয়াসের নব নিযুক্ত হইয়াছেন এবং জীবুত বুএর সাহেব তাহার নব কর্মে নিযুক্ত হইয়াছেন।

মহম্মদ।

কলিকাতার জীবুত রামমোহনপুর মহম্মদের বিষয়ে এক কেতাং করিয়া মর্শ্ব প্রকাশ করিয়াছে। তাহাতে অনেক নিমিত্তের কিছু বুল এই নিমি য়াজে যে মহম্মদের বিষয় যথার্থ বিচার করিলে শাস্ত্র কিছু পাওয়া যায় না।

যাত্রা।

শ্রীযুত হারিফিল সাহেব মদর দেওয়া

নী আম্রাভের পুর্ধান বিচারকর্তা অনেক দিন অবধি ঐ আম্রাভের যথার্থ বিচার করিয়াছেন এমন তিনি সে কর্ম ত্যাগ করিয়া স্বদেশে পুর্ধান করিবেন শুনা যাই তেছে ৪৫ পৌনরই আলুজারি তারিখে কলিকাতাহইতে তাহাতে আরোহণ করি বেল মে তাহাতে পুর্ধান কৌমলের অস্ত গতি শ্রীযুত চান্দ্র রিকেন্স সাহেব ইংল্যান্ড যাবিবেন শ্রীযুত জন আদাম সাহেব সেই পদাভিষিক্ত হইবেন।

ইতিহাস।

যখন রোমান লোকেরা বর্জিত হইতে লাগিল তখন পির্দম নামে গ্রীক দেশের এক রাজা অতিশয় জনবান ও সাহসী ও বিজিত্ত করনোভ জিল। তাহার এক জন অতিশয় বিচক্ষণ মন্ত্রী জিল। এক দিন ঐ রাজা মন্ত্রীকে আপন কর্তব্য কর্মের মঙ্গল পণ্ডুলেখ বিস্তার করিয়া রাখিয়াছিল যে পুণ্ডুলেখ গ্রীক দেশের সকল লোককে একত্র করিয়া রোমান দেশের সকল লোককে মারিব তাহার নব রোমানের ওত্তর দেশীয় সকল লোককে মারিব নব অন্য দেশ তয় করিয়া আপন দেশে ফিরিয়া আনিব। মন্ত্রী জিজ্ঞাসা করিল যে তুমি ঘরে ফিরিয়া আসিয়া কি করিবা। রাজা ওত্তর করিলেন যে সূচ্যোগী করিব। মন্ত্রী ওত্তর করিল যে তুমিরা নান দেশে ভ্রমণ অন্য পরিশ্রম ছাড়িবা করিয়া সূচ্যোগী করিবা কি মঙ্গ এমন কেল ঘরে বসিয়া সূচ্যোগী কর না।

অমী বিক্রেতার ইচ্ছা হার।

অনেক লোকের অমী সালি জেনারার রোগ ও তারিখ

লক্ষ লোকের নীচের তপালি পুষ্কানপালে নিলামে বিক্রয় লোক জ্ঞা ও জমিদার ইকবীর খোজরিপুর লোকেরি বরা আদার অমী জেনারার কালেকরি কালেকরিতে নানু হই তেছে।

লরকারের বাতী আদার করণ।

মর্শেহর লোকের ১৫ জানের মল ১৮ ১৮ ইং ১০ মল ১১ ১৫ বাৎ বোজরিপুর লাকুটরি বরমাদার।

লরকারের বাতী ও জরিমানার টাকা আদার করিবা।

মর্শেহর লোকের ১৮ জানের মল ১৮ ১৮ ইং ৯ বাৎ মল ১১ ১৫ বাৎ কালেকরি কালেকরি।

জিলপালগাও লোকের ১২ জানের মল ১৮ ১৮ ইং ১০ মল ১১ ১৫ বাৎ কালেকরি কালেকরি।

মহম্মদপুর লোকের ১৮ জানের মল ১৮ ১৮ ইং ১৫ মল ১১ ১৫ বাৎ কালেকরি কালেকরি।

বিপুল লোকের ৪ জানের মল ১৮ ১৮ ইং ১১ মল ১১ ১৫ বাৎ কালেকরি কালেকরি।

মুন্সের লোকের ১৫ জানের মল ১৮ ১৮ ইং ১০ মল ১১ ১৫ বাৎ কালেকরি কালেকরি।

অনেক লোকের অমী সালি জেনারার রোগ ও তারিখ লক্ষ লোকের নীচের তপালি পুষ্কানপালে নিলামে বিক্রয় লোক জ্ঞা ও জমিদার ইকবীর খোজরিপুর লোকেরি বরা আদার অমী জেনারার কালেকরি কালেকরিতে নানু হই তেছে।

লরকারের বাতী আদার করণ।

মর্শেহর লোকের ১৫ জানের মল ১৮ ১৮ ইং ৯ বাৎ মল ১১ ১৫ বাৎ বোজরিপুর লাকুটরি বরমাদার।

মহম্মদপুর লোকের ১৮ জানের মল ১৮ ১৮ ইং ১১ মল ১১ ১৫ বাৎ কালেকরি কালেকরি।

লরকারের ওজরিমানের বাতী আদার করণ।

জিলপালগাও লোকের ১৫ জানের মল ১৮ ১৮ ইং ১১ মল ১১ ১৫ বাৎ কালেকরি কালেকরি।

মুন্সের লোকের ১৫ জানের মল ১৮ ১৮ ইং ১০ মল ১১ ১৫ বাৎ কালেকরি কালেকরি।

ইতি তারিখ ১১ দিহেম্বর ১৮ ১৮ ইং বোজরিপুর লাকুটরি

এই সম্রাটের দর্পণ শ্রীমামপুরের জাণাখানাতে প্রতিমন্তাহে শনিবারে জাণ হয়। পাঁচর লওনের আদার্যাক থাকে তিনি শ্রীমামপুর জাণাখানাতে আপন নাম পাঠাইল মন্তাহে। কাজি ওঁহার নিকট পাঠল যাতে তাহার সূচ্যোগী এক চোকা। যিনি স্বাক্ষর করিয়াছেন যদি তাহার নিকট না পৌছে তবে তিনি শ্রীমামপুরের জাণাখানাতে সম্রাটের দিব্যামাত্র তাহার নিকট পাঠল যাতে।

সমাচার দর্পণ

৩৩ সংখ্যা।

শনিবার। ১ জানুয়ারি সন ১৮৮৩। ১০ নৌব সন ১১১৭।

দর্পণে মুখ্য নোদর্য্যমিব কার্যবিচরণঃ। স্বাভাসিহ জানিত সমাচারমা দর্পণে।

সমাচার দর্পণ।

কোল্লানির কাণিজ।

৩০ দিসেম্বর বুধবার সন ১৮৮৩ সালে কোল্লানির শতকরা জয় টাকার সুদের কাণিজ করা করিতে হইলে শতকরা সাত টাকার বার আনা ভিত্তিকোণ। বিস্ময় করিতে হইলে শতকরা চাট টাকার আট আনা ভিত্তিকোণ।

মস্তাহের পঞ্জিকা।

| ১ | জানুয়ারি | ১০ | লিঃ |
|---|-----------|----|-----|
| ৩ | ২ | ১১ | ২ |
| ৪ | ৩ | ১২ | ৩ |
| ৫ | ৪ | ১৩ | ৪ |
| ৬ | ৫ | ১৪ | ৫ |
| ৭ | ৬ | ১৫ | ৬ |
| ৮ | ৭ | ১৬ | ৭ |

বোনাপার্ত।

মোং নেস্ত হেলিপাইইতে ৪ আগষ্ট। সমাচার আমিনরূপে তাহাতে আনা গেল যে মোনাপার্তের অধিক্ষেত্র। বোনাপার্তকে আরও দুইজন রাযিবার চোড়া করিতেছে। যে মোনাপার্তের মধ্যে জিয়াতে তিন জিলে ন তাহারবিগকে অসম্মান বিলাতে পাঠা ইয়া তাহাকে পুনর্বার যে লুতন দেয়া পতিতদের জিন্দা করিয় জল তাহারদের পরাবর্ত করিয়া পুনর্বার লুতন মোনাপার্তদের জিন্দাও তাহাকে রাযিয়াজ ইহার হেতু আমরা এত দূরে থাকিয়া জানিতে পারি না কেবল কথ্য দেখিতে পাই।

ইওরোপ দেশের বাদশাহেরদের একত্র সম্মান।

শুনা গেল যে এই সনের ১৩ সেপ্টেম্বর ইওরোপের চারি পুর্ববাস দেশের বাদশাহেরা একত্র হইবেন অন্য দুই দেশের বাদশাহেরা তাহার মধ্যে ঘাইতে পারি যেন না। ইহা তাহার। নিশ্চয় করিয়া জেন। ইংলণ্ড দেশের বাদশাহ ঘাইবেন না কিন্তু তিনি আপন গুণীকে পাঠাই যেন তদুপস্থিত হয় যে ঐ বোনাপার্তকে তাড়াইলে পরে ফ্রান্স দেশ আর দিয়া। চৌশদীরের মত যে দৈত লক্ষ নৈন্য হা। দিয়া। জলেন সেই নৈন্য মোমায়ে থাকি বে কি না এই প্রার্থনা ঐ বাদশাহেরা করিবেন।

অরমনি দেশের রাজধানী নগরহইতে সমাচার আমিনরূপে যে তুরকী দেশের বাদশাহ আনন দেশের চতুর্দিকে গতি প্রস্তুত করিতেছেন এবং তিনি মোমায়ে কার নৈন্য এ তরফে বাতাইতেছেন তাহার কারণ কিছুই বুঝা যায় না অনুমান হয় যে কম্বুয়ার ও অরমনির বাদশাহের সহিত যুদ্ধ করিবেন যেহেতু তাহার দেশের গুণের কম্বুয়া দেশ ও পশ্চিমে অরমনি দেশ। এবং সেই সমাচারে আরো শুনা গেল যে বালিক সমুদ্র ও অরমনি সমুদ্র খালদারা মঙ্গল্য করিতে লোকেরদের চোড়া আজ।

আহাজ আমদানী।

এই মস্তাহে বেলিগুন নামে আহাজ

এখন ইংল্যান্ডে নে আহাজ দুইটি দেশের মধ্যে ত্রিভুজের শহর। গন্ত তদ্রিমে জাতিয়া ৪৯ অংক। গুণমাণী অরুণী অংক। কেল চতুর্দশ যখন ঐ আহাজ কোন জল তখন আর এক আহাজ ৪১ অংক। ইংলণ্ড তদ্রিমে মোনে ইংল্যান্ড সেই আহাজ। ইংল্যান্ড না গেল যে ইংল্যান্ডের রাণী অতিশয় শক্তিতা জিলেন এবং ইংল্যান্ড দেশের চতুর্দশ কর সুদীর্ঘ হত আরায় হইতেছে।

ত্রিভুজের।

ঐ বেলিগুন আহাজের দ্বারা কলিক দেশ হইতে দুই লক্ষ বিশ হাজার ত্রিভুজ কলিকাতায় ইংল্যান্ডে সেই তাল। ত্রিভুজের। বালিকের কুণীর গৌরব। এদেশে পাঠাইয়াছে যদি তাহার। নিয় আহাজ পাঠাইত তবে দক্ষিণে রাণী লোকেরা কাঁড়ান নইত এই প্রার্থনা। গুণীত অহাজ পাঠাইন।

টাকার আমদানী।

বালিক আহাজ পুর্ব দেশ হইতে ইংল্যান্ডে তাহাতে বোল্লানির কাণিজ। লক্ষ তালর আমিনরূপে এবং ইংল্যান্ড আহাজ বালিকাতার নানা কাণিজ করণ অনেক তালর আমিনরূপে।

শ্রীশ্রীযুত বাজিয়াও পেশোঁ।

৪১ নবেম্বরের পত্র মথুরাই ইংল্যান্ডে জিয়াছে তাহাতে আনা গেল যে ইংল্যান্ড

সমাচার দর্পণ।

ওক্সল শ্রীযুত যেতনাম নাহর ১৯ নং
মহা বিদ্যা কলকাতা আদিয়ে
এক শ্রীযুত নর বেদন অক্সলেনি
নাহর ৩৭ বর্জিত হইবে শ্রীযুত
বর্জিত ১৯ তম্বর তারিখে মোঃ
মুহাম্মদ ৩৭ জরাজেন মেখানহীতে
কালপুর লিকট মোঃ বাতুত ঘাইবে
যে নৈন্য ও হার সহিত মালুয়া আনি
হাজেন তাহার দ্বিগুণ রতনুপদিত
গিয়াছে কিন্তু টেন্দ শত বোতনোয়ার
তাহার হাম্মাও বাতুত ঘাইবে।

রাজহাঙ্গা দিগন্ত।

১৩ বিজয়ত শ্রীযুত হাম্মাওন এরাহমি
নাহর ৩৭ জরাজেন লিকটহাঙ্গা
কর্তৃ হইয়াছে। শ্রীযুত হাম্মাওন
একদ্বিগুণ নাহর লিকট ও অক্সল
জিলার অধিকারের আদিয়ে হইয়া
ছেন

মহা বিদ্যা।

কুমার নন্দুর হইতে সমাচার আনি
যাত্রা যে আলেক্স দিগন্ত ও আল
বর্জিত নৈন্য এমত মালুয়া হইয়াছে
যে প্রতিদিন অনেক লোক ঘাইতেছে
এক মেখানহীতে পক্ষিম ভূমিগদ
নন্দুরা তাপদিত ঘত দিশ আজ
মেখানহীতে মালুয়া অতিশয় বাড়ি
য়াছে ই দেশে ইষ্ট্রাও দেশীয় ও অন্য
দেশীয় লোকদের যে ঘাইয়াত জিল
তাং ইহাতে রহিত হইয়াছে সে বে
শের লিকট দিয়াও লোক যায় না যে
বাড়ি সে দেশে যায় সে তখন মরে এই
পুণ্ড মকল দেশের সহিত ই দেশের
যে বাড়িই ইহাউজিল তাং রহিত
হইয়াছে।

নিং-হলদুগ।

নিং-হলদুগ যে দুই মেখানহীত আমার
বের বিপদিত পুন্ড করিয়াছিল তাহারদের
বিতার হইয়া তাহার লোক হইয়াছে
কিন্তু তাহারদের দশ কি হইবে তাহা পু
না হইয়া লাই অন্য দুই জন মেখানহীত
বিতার হইতে সমাচার আইনদ বাল
বিতার মাল হইয়াছিল না এইমুত তা
হার শের আল যায় লাই। যে নৈন্য
মালদহ হইতে ও বালিল হইতে দুই
দ্বিগুণ জিল মেখানহীত আনি
তোস যেহেতুক মেখানহীত হই
য়া মকল দিগ হইয়াছে।

এনাগা।

মালদহে এনাগা লিবারনার্থী শ্রী
যুতর আক্সলুমান হিমা মুল্য দুই
লোকদের রেখা তিহানার দ্বারা যে
তিহানার প্রস্তুত হইয়াছিল তাহা
ওনাগা গিয়াছে যেহেতুক তখন প্রদেশ
এক এনাগা রেখা লিবার্টি হইয়াছে।

শ্রীযুত বর্জিত ও মেখানহীত।

পুন্ড লিবার্টি গিয়াছিল যে শ্রীযুত বর্জি
র ও মেখানহীত বালিল দেশে আদিয়ে
বান করবেন কিন্তু এখন তাহার দৈন্য
বর্জিত শ্রীযুত জাতি করিয়াছেন যে ই
মেখানহীত কালপুর লিকটে বান কর
বেন।

শ্রীযুত বর্জিত-নিং-হ বাহাদুর।

অক্সল হইয়াছে যে কাবাল দেশের
রাহবিলি পেন্দীর শহর শ্রীযুত বর্জিত
নিং-হ অপিকার করিয়াছেন এবং সে
শহর দ্বন্দ্ব করিতে চেতা করিতেছেন কিন্তু
কি কারণ সে চেতা করিতেছেন তাহা
বুঝতে পারি না। এবং কাবাল শ্রীযুত
বাহাদুর জাতি শ্রীযুত শাহ মুজা মোঃ

বহাবলুর জাতি মিলু লদী পার হই
য়া পেন্দীরের এদিকে ঘাইতেছেন বিন
পুন্ড কাবালের বাহাদুর জিলেন কিন্তু
তাহার জাতি তাহা দূর করিয়া আ
পনি বাহাদুর হইয়াছিলেন এখন তিনি
মালুয়া ৩৭ শ্রীযুত তাহার জাতি
শাহ মুজা কাবাল অপিকার করিতে
চেতা গাইতেছেন।

বালু।

কালক দিন হইল কলিকাতার দমর
মাল লিকট পেন্দীর নাম মুঃ এই
মুকার এক বাণু মাল গিয়াত সে বাণু
কুর বন জাতিয়া শুভিচাল ও বাণ
মালি ও বেগমিচী এই তিন গুণ বর্জিয়া
গোবিন্দ গুণে এক তন জাতি লোককে ই
দ্বিগুণ হইল। পরে কে তন দুইগুণ লো
কের ঘরে কুর বর্জিল। সে ব্যক্তি ভা
পাইয়া ঘরের বাহর হইয়া ঘরের দ্বার
দেখি করিয়া মদমমাত সমাচার দিল
মেখানহীত নাহর লোকের আপন তা
কর ও অশু শঙ্ক লইয়া গোবিন্দ গুণ
গুলি মালিয়া তাহা হইতে করিল। তনু
মান হয় যে সে বাণু গান্ধীনাগর হইতে
আদিয়েছিল। যদি গান্ধীনাগরের বন
কাটায়া বাণু দূর করিয়া মেখানহীত
ঘেরবে বনতি হয় এবং সেই বাণু এ
দেশে আদিয়ে মালুয়া দিগকে দূর কর
িয়া বনতি করে তাহে দেবল বাণু ও মালু
ঘোরদের দান পরীক্ষমান।

ভোগিরা দেশ।

হিমালয় পর্বতের ওপরে হরিহারের
ওপরে ভোগিরা নামে এক দেশ আছে
মেখানহীত লোকেরা আহারা দি প্রস্তুত
করিবার কারণ কাছ কখন ও পোড়ার

সমাচার দর্পণ।

ল। যেহেতুক সে পণ্ডিতের কোন এক প্রমাণ এমত আশ্রয় করিতে পারিলেন যে সেখানে এষ্টটুকু স্থান দ্বারা উত্তর নির্ণয় হয় তাহার ওরে জন ও তুলনা দিলে পাঁক হয় যে স্থান এমত হয় সে স্থান ততী বড় নহে কিন্তু তল্প। হিমালয় পর্বত পৃথিবীর মধ্যে সকল পর্বতহইতে ওঃ। পূর্বে লোকেরা জানিত যে দক্ষিণাঘের কার এতি নামে পর্বত সঙ্কলহইতে ওঃ কিন্তু হিমালয়ঃ তালি গিয়াছে যে হিমালয় পর্বত এতি পর্বতহইতে পাট হাঁকাঃ তারি শত হাঁত ওঃ। সেই হিমালয়ের ওঃবে এমত স্থান আজ যে শীতল স্থানহইতে জয় ঘণ্টা ইংলিঃ গিয়া স্থান পাওয়া যায় এবং গিয়া স্থানহইতে জয় ঘণ্টা ইংলিঃ পুরাতন শীত স্থান পাওয়া যায়। ইংলিঃ দেশে যে বৃক ও মেঃ ঘন জনা সে সকল ঐ পর্বতে ওঃলা এবং পণ্ডিত লোক সে স্থানে গেলো তাহার পীতপাণ্ডিত হয় যেহেতুক এখানহইতে পণ্ডিত হইয়া শীতপুত্রিলক দেশ ইংলিঃ আদিয়া দেখানে ঘাইয়া পীতপুত্র হয় ইংলিঃহইতেও হিমালয় শীতপুত্রিলক স্থান ও শীতঘরা যে দেশে নির্বাচন হয় সে দেশে দেখানে গেলেন নিবৃত্ত হয়।

টাকশাল।

টাকশালে টাকা প্রস্তুত কারন ১৪ দিকে মর তরিতে পঞ্চমত এক ব্যবস্থা আঁকা করিয়াছেন সে ব্যবস্থা অনুসারির প্রথম অধিকারাবধি কার্যে আনিবের। কলিকাতাতে যে মিঃ টাকা প্রস্তুত হইবেক পুরান টাকাতে যে ওজনে রণা ধরিত সেই ওজন ঐ টাকাতেও রণা থাকিবেক কিন্তু যে ওজনে মোলাতে মোহর

হইত তাহার সিধিঃ দুইন এজনে মোহর হইবেক এবং পলিঃ মল টাকার ও মোহরের যে মূল্য তালি জিল এই দুইন টাকার ও তুলন মোহরের সেই মূল্য। তালি এই বেক। এবং যদি কোম্পানির এতদেশীয় কোন টাকার এই দুইন টাকা ও দুইন মোহর লইতে কোন ওজর করে তবে তাহারদের প্রাচীন আয়িতালুদার বণ হইবে। যদি কোন ব্যক্তি টাকা করিবার কারন হ্যা টাকশালে পাঠায় তবে শত করা মিহনঃ তালি দুই টাকা দিতে হইবে এবং যদি সেই রণা দিলে হিমাল আদল করিতে চাহে তবে শতকরা তিন টাকা দিতে হইবেক। এবং লাগিদি নন ১৮৮৮ পর্যন্ত যে টাকা ওঃপন্ন হইয়াছে সে টাকা যদি মল ১৮৮৮ মালের দুইন টাকা করিতে চাহে তবে শতকরা এক টাকা দিতে হইবেক। জয়ঘূতর এই সকল আজা শ্রীযুত তথ্যিঃ বি বেলি সাহেবদারঃ প্রকাশ হইল।

বর্মার দেশ।

বর্মার দেশ রাজ্যঃ যেপুকার অলায় বারবার সে পুকার অলায় দেখা যায় না। ও শুনা যায় না সে দেশে আত স্বীকে কখনও জলা বেশে ঘাইতে দেয় না। যদি জলা বেশিঃ পুত্র দেখানে গিয়াঃ তদাশ আত স্বীকে বিবাহ করে ও তাহাতে মন্তব্য অন্য তালিঃ সে স্বীকে কিম্বা সে মন্তব্যেরদ্বিগকে কখনও দেশের বাহির করিতে দেয় না এবং দেখানকার ইতর লোকহইতে পুত্রিল লোকেরদের এই বিশেষ যে পুত্রিল লোক ঘাসন যেখানে যায় কিম্বা থাকে তখন তাহার পক্ষাঃ পিঃ দ্বিঃ হাতে করিয়া এক চক্কর করে থাকে। এবং এক পুকার

কটি আজ সে তাহারদের অতি মূল্য উল্লেখ্য হয়।

এবং দেখানে রাজা মন্তব্যেরদের মনে অত্যন্ত দুঃখঃ জন্মায় যে দেশে কোন লোক কোন জনাবধি সে দেশে তাহার এইঃ রণ বণ করে গিয়া কাটে কিম্বা কুপে হত করে কিম্বা কার্যে রাধি করে কিম্বা পেট চিরে ফিঃ তাঃ শরীর খণ্ড করে কিম্বা শরীরে জিয়াঃ মল করে কিম্বা প্রাণত্যাগ করিঃ বদমূল প্রতঃ মারঃ কিম্বা মারিয়াঃ প্রতঃ দিলঃ তাহার লা কিম্বা পেটঃ কিম্বা বাহিরের চাঁদঃ করে কিম্বা মলঃ গলাইয়া মুখঃ ঢালঃ কিম্বা তন্তুঃ জৈঃ মলঃ দেখিয়া দেয় কিম্বা দুইঃ মলঃ দুইঃ মলঃ রাখিয়া তাঃ পক্ষাঃ রাখিয়া যে বৃক ঐ মলঃ ভিতরঃ পুত্রিলঃ হয় কিম্বা তল্পঃ জৈঃ তাহারঃ করে।

যখন ইহা হইতে তল্পঃ মলঃ হয় তখন কিম্বা গালঃ কিম্বা ভিঃ ইতঃ করেঃ অঃ কাটে কিম্বা দুইঃ তল্পঃ বাহিরঃ করেঃ কিম্বা পুত্রের বিকে দুইঃ বণঃ এমতঃ করেঃ যে দুইঃ বাঃ মলঃ একঃ মলঃ রাখিয়া ওঃপন্ন করিয়া বাহিরঃ রাখিয়া গিয়াঃ লিতঃ মলঃ রাখিয়া ওঃ টাকিঃ দেয়ঃ দেখানে রণাঃ আঃ দ্বিঃ দ্বিঃ লোকঃ দেঃ বণ করে না কিন্তু আনিঃ ইতঃ রাখঃ কখনও আনিঃ রাধিঃ ওঃ মলঃ রাখঃ কাঃ রাধিঃ ওঃ তল্পঃ করে।

যখন কোন স্বীঃ কোন পুত্রঃ মলঃ বাঃ ভিতরঃ ফিঃ করিতে গিয়াঃ ঐ স্বীকে ঐ পুত্রঃ ওঃপন্ন করেঃ মলঃ রাখিয়া শহরের চতুঃদিকে গিয়াঃ এবং এক জন তাহারদের দেঃ ওঃ করে কিহিঃ যায় ওঃ শহরেরঃ

সম্পাদার দর্পণ।

জোরদার দুই তলকে একবার মাড়ে।
এই পুকার ঐ দেশের ব্যবহার ইহাতে
সকল লিখা যাওয়া অবসর ক্রমে লিখা
যাইবে।

পুস্তক কথা

এক প্রকার দুই মিত্র জিল তাহারদের
এক অঙ্গের নাম হইবে আর এক অঙ্গের
নাম নিদিষ্ট দুই জনের মধ্যে সম্প্রতি
জিল। কিছু দিন পরে নিধি নির্ধন হইল
হইর বিন্দন রহিল। এক দিন হরি নিধি
কে কহিল যে যে মিত্র ভূমি কেন কহ
নাও তোমার বিন নাই। মাথি কি আমার
হানে নীত শত টাকা লও তাহাতে বানি
স্বাক্ষর যেন ত হইবে তাহাতে তোমার
সম্পদের ব্যয় হইবেক এবং সর্ব
আমার টাকাও পরিচরিত করিও। নিধি
তৎকালে বস্তুর মাথিবার করিয়া হইর
হানে নীত শত টাকা লইল এবং কোন
বানিআদি না করিয়া ঐ আদান টাকা
ব্যয় করিয়াই সম্পদের তলহিতে লাগিল
কিন্তু কিছুটাশত নীত শত পয়সা করি
য়া এক ক্ষুদ্রীত অভিনববিন্দন হই
যিল। হরি সন্ধান পাইল যে নিধি বা
নিজ দিক কিছু করে না। তাহাল টাক ই
মুদ্রত করে। ইহাতে ওড়িয়া ইহা এক
নি-নিধি কহিল যে যে মিত্র ভূমি বা
বিজিদি বর না আত দেহি। মরচা
কি তব দূরী আহার আদান টাকা মুদ্রত
করিতেম। নিধি কহিল যে না মিত্র
তোমার টাকা যেমন তেমনি আঁজ।
নিধি ইহা কহিয়া হরকে সুরে পরিয়া
আদান বাটীতে গিয়া ঐ নীত শত পয়সার
নিম্নক মূলবায়ন শ্রেয় করিতে লাগিল

হা বিধিত। আমার কেমন কল্যাণ নীত
শত টাকা রাখিলাম নীত শত পয়সা হই
ল দেখ মিত্র পুত্রাক নিম্নক দেখ। হরি
নিধির শ্রুতিতে মনে বিস্ময় হইয়া
কোন কথা না কহিয়া আদান ঘরে গেল।
কিছু দিন পরে হরি নিধিকে কহিল যে হ
মিত্র তোমার পুত্রকে আমার দ্বী দেখিতে
চাহন আত লইয়া ঘাই। ইহা কহিয়া
নিধির পুত্রকে হরি লইয়া আদান ঘরে
গিল এবং এক বানিরহেও গিলে দত
দিয়া এক বর ব্যক্তিয়ার রাখিল। দুই তল
বিনের পরে নিধি আদান পুত্রকে দেখিতে
আইল। তখন হরি তাহাকে তৎকালে
বাটার ভিতরে লইয়া তাহার পুত্র ক
কহিয়া ঐ বর ব্যক্তির দৃষ্টিয়া কহিল
যে যে বন্ধু তোমার পুত্র বন্দন ইচ্ছাক্রমে
নিধি কহিল যে যে মিত্র মৃত্যু ক হাম
বানর হয়। হরি ওর লিল যে যে মিত্র
তবে টাকাও কখন পয়সা হই না। ঐ
কথা ওড়ার শ্রুতি ওড়ার বৃদ্ধের স্বাক্ষর
হইল।

ইত্তাহার দেওয়া যাইতে মা।

অঙ্গের লোকের জীবন সাধিন বেসাহার গৌর ও অধিন
সকল মতিন শীতের বসন্তের পুণ ল সাধিন বিনামে বিক
হইলেক অঙ্গ ও অধিনের ইতিবৃত্ত বোর্ডবিশ্ব লেখক
কল্যাণ অঙ্গের জেলাগরি কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণ হই
কে।

বোর্ডবিশ্ব লোকের ১৫ জানুয়ারি ১৮১৬ ইং ১০ মাস
সন ১৮১৬ বঙ্গ কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণ হই

লোকের বাকী ওড়ার অধিন করি।
বোর্ডবিশ্ব লোকের ১৫ জানুয়ারি ১৮১৬ ইং ১০ মাস
সন ১৮১৬ বঙ্গ কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণ হই

বোর্ডবিশ্ব লোকের ১৫ জানুয়ারি ১৮১৬ ইং ১০ মাস
সন ১৮১৬ বঙ্গ কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণ হই

বোর্ডবিশ্ব লোকের ১৫ জানুয়ারি ১৮১৬ ইং ১০ মাস
সন ১৮১৬ বঙ্গ কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণ হই

বোর্ডবিশ্ব লোকের ১৫ জানুয়ারি ১৮১৬ ইং ১০ মাস
সন ১৮১৬ বঙ্গ কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণ হই

লোকের বাকী ওড়ার অধিন করি।

বোর্ডবিশ্ব লোকের ১৫ জানুয়ারি ১৮১৬ ইং ১০ মাস
সন ১৮১৬ বঙ্গ কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণ হই

বোর্ডবিশ্ব লোকের ১৫ জানুয়ারি ১৮১৬ ইং ১০ মাস
সন ১৮১৬ বঙ্গ কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণ হই

বোর্ডবিশ্ব লোকের ১৫ জানুয়ারি ১৮১৬ ইং ১০ মাস
সন ১৮১৬ বঙ্গ কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণ হই

বোর্ডবিশ্ব লোকের ১৫ জানুয়ারি ১৮১৬ ইং ১০ মাস
সন ১৮১৬ বঙ্গ কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণ হই

বোর্ডবিশ্ব লোকের ১৫ জানুয়ারি ১৮১৬ ইং ১০ মাস
সন ১৮১৬ বঙ্গ কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণ হই

অঙ্গের লোকের জীবন সাধিন বেসাহার গৌর ও অধিন
সকল মতিন শীতের বসন্তের পুণ ল সাধিন বিনামে বিক
হইলেক অঙ্গ ও অধিনের ইতিবৃত্ত বোর্ডবিশ্ব লেখক
কল্যাণ অঙ্গের জেলাগরি কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণ হই

লোকের বাকী ওড়ার অধিন করি।
বোর্ডবিশ্ব লোকের ১৫ জানুয়ারি ১৮১৬ ইং ১০ মাস
সন ১৮১৬ বঙ্গ কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণ হই

বোর্ডবিশ্ব লোকের ১৫ জানুয়ারি ১৮১৬ ইং ১০ মাস
সন ১৮১৬ বঙ্গ কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণ হই

বোর্ডবিশ্ব লোকের ১৫ জানুয়ারি ১৮১৬ ইং ১০ মাস
সন ১৮১৬ বঙ্গ কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণ হই

বোর্ডবিশ্ব লোকের ১৫ জানুয়ারি ১৮১৬ ইং ১০ মাস
সন ১৮১৬ বঙ্গ কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণ হই

বোর্ডবিশ্ব লোকের ১৫ জানুয়ারি ১৮১৬ ইং ১০ মাস
সন ১৮১৬ বঙ্গ কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণের কল্যাণ হই

এই নম্বরের দর্শন শ্রীমদ্ভগবতের জ্ঞানীয়নাতে প্রতিক্ষা হে শনিবারে জাণ হয়। তাহার পল্লের আশীশ থাকে তিনি শ্রীমদ্ভগবতের
জ্ঞানীয়নাতে আদান নাম পাঠাইলেন সমস্তই পাঠাই তাহার নিবট পাঠাই মাংসক তাহার মূল্য মাসের এক টাকা। যিনি স্বাক্ষর
করিয়াছেন যদি তাহার নিবট না পৌছে তবে তিনি শ্রীমদ্ভগবতের জ্ঞানীয়নাতে সম্যকতার দ্বিবার্ষিক তাহার নিবট পাঠাই মাংসক।

সমাচার দর্পণ

৩৪ নং-খ্যা]

শনিবার। ৯ জানুয়ারি মন ৪৮৩৯। ১৭ পৌষ মন ১২১৪।

দর্পণে মুখ্য নৌকর্ধ্যমির কার্যবিবরণীঃ। বৃত্তান্তনিহ আনন্দ সমাচারমা দর্পণঃ।

সমাচার দর্পণ।

কোম্পানির কার্যজ।—

৩ জানুয়ারি বুধবার মন ৪৮৩৯ মাল কোম্পানির শতকরা জয় টাকার সুদের কার্যজ হয় করিতে হইলে শতকরা মাত্র টাকার পরিমাণ ভিন্নকোণে। বিফল করিতে হইলে শতকরা আট টাকার ভিন্ন কোণে।

মস্তাহের পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|-----------|------------|----|-----|
| ৯ | জানুয়ারি | শনিবার | ১৭ | পৌষ |
| ১০ | ২ | রবিবার | ১৮ | ৩ |
| ১১ | ৩ | সোমবার | ১৯ | ৪ |
| ১২ | ৪ | মঙ্গলবার | ২০ | ৫ |
| ১৩ | ৫ | বুধবার | ২১ | ৬ |
| ১৪ | ৬ | বৃহসপতিবার | ২২ | ৭ |
| ১৫ | ৭ | শুক্রবার | ২৩ | ৮ |

নিম্ন-হলগণ।

১৮ নবেম্বরের পত্র নিম্ন হলগণ হইতে আনিয়াছে তাহাতে সমাচার আনা গেল যে যে দুই নিম্ন-হলগণের সেনাপতি আমায়দের আভ্যন্তিক প্রতিশ্রুত্যাচরণ করিয়াছিল তাহার। বিচারে সমাচার নিশ্চয় হইলে তাহারদের মস্তকচ্ছেদ করা গিয়াছে তাহার বিবরণ এই।

ঐ দুই জনের মধ্যে এক জনের নাম কাশিতিপোলা ও অন্যের নাম মাদুগালি তাহার। আপন। ইচ্ছানুসারে প্রথম বাতি পহরের মধ্যমিকের গিয়া আপনায়দের পুরোহিত ডাকিয়া তাহার সম্মুখে

আপনায়দের পারলৌকিক কর্ম করিয়া কাশিতিপোলা বাহিরে আনিয়া এক কুঠরীর মধ্যে গিয়া সএম সাহেবের সহিত নির্ভয়ে এই কথা কহিতে লাগিল যে কোন ব্যক্তি আপন অর্দ্ধ অশ্রম্য করিতে পারেন না যেহেতুক বুদ্ধের নানা গুণেতে ইহার প্রমাণ আছে। এই প্রকার বুদ্ধ মত নিদ্ধ অনেক কথা কহিল এই কথা কহিতেই মস্তকের মধ্যে এক মশার পুত্র গেল পরে দেখা গেল যে মাদুগালি ভীত হইয়া সে মেহমদির দেহমুখের নিকটে আগুনের কারন গেল কিন্তু সেখান হইতে তাহাকে ধরিল পরে সে দুই জনকে লইয়া মৈনাময়েতে দৃষ্টান্ত লইয়া গেল।

তাহার। হওয়াতে পশ্চিমা কিশিং জল চাহিয়া আপন হাত ও পা ইলিল পরে কাশিতিপোলা এক বৃক্ষের নীচে বসিয়া নির্ভয় রূপে কেশ বাজিয়া তাহার দেহে গুলির শৌক পড়িতছিল। ঘটক ব্যক্তি দুইবার অশ্রদ্ধাঘাত করিয়া তাহার মস্তক ছেদন করিল। কিন্তু মাদুগালি এমত ভীত ছিল যে আপন কেশ ও বাজি ল না সে তাহান নামে আপন বুদ্ধকে মনে করিতে পড়িল ঘটক তাহার শিরে দিল করিল।

শ্রীযুত রণজিৎ-সিংহ।

শ্রীযুত রণজিৎ-সিংহ বাহাদুর কাবালের রাজধানী শহর আপন তবীন করিয়াছেন। লাহোরের অধিবাস

আমরা পাইয়াছি তাহাতে এই প্রকার বিবরণ এই মত লিখিয়াছে যে প্রায় দুই তরিতে তৎপরিণাম লোকের। আপনায়দের তদন্তে মৈনাম লইয়া প্রায় তিন-চারের অধিমুখে আনিতে গিয়াছিল। ইহাতে রণজিৎ-সিংহ তাহাকে কারনে আনিতেই ইহা জাত হইবার নিমিত্তে বর্তক মৈনাময়েতে এক সেনা তাকে তাহারদের নিকটে পঠাইলেন। তাহার। রণজিৎ-সিংহ পুরিত মৈনাম ও সেনাপতির গুলির আঘাত করিয়া তাহারদিকে ডাকিয়া দিল। তাহার পর দিবস রণজিৎ-সিংহের পুত্রান সেনাপতি নরনার বাহাদুর তাহান মৈনামের এক ভাগ লইয়া কিছু দূর পাহ হইল এবং আপনায়দের। তাহার। মুক্তি অনেক যত্ন করিল। ১৬ নবেম্বর তারিখে শিখায়দের নকল মৈনাম লইয়া ঐ মহাবীর বাহাদুর পুনর্বার সিংগুন দ্বারা পাহ হইয়া আপনায়দের সহিত দুই প্রহর রাত্রি পর্যন্ত ঘোরতর যুদ্ধ করিল। দুই প্রহর রাত্রি পরে আপনায়দের মহাবীর বাহাদুরের মৈনামের গুলিরে জতি শব্দ পরাক্রমে আঘাত করিল তাহাতে অল্প পরাক্রমে কিছুই হইল না কিন্তু অনেক শিখা মরিল। ১৭ তারিখে ঐ মহাবীর বাহাদুর দুই প্রহর তিন প্রহর সময়ে পুনর্বার যুদ্ধ করিয়া আপনায়দের পুত্রান সেনাপতিকে পরলোকে পঠাইল। তাহাতে অবশিষ্ট আপনায়দের। কাবুর হইয়া তাহারদিকে গড় পাহা পলায়ন করিল। মহাবীর বাহাদুর তা

সম্রাটের দর্পণ

হাজারের পক্ষাৎ ঘাইয়া এই আহাঙ্গীর গড় ও মোকাম গড় ত্বরিকার করিল। এই যুদ্ধের পর অশ্রুত রক্তাৎ দিনেই জগু ঘাইয়া পোশার শহর অধিকার করিলেন এবং অধিকার করিয়া অতিশয় আনন্দিত হইয়া তাঁহা করিতে আজ্ঞা করিলেন। ইত্যবসরে আগাশেরা শিখার ঘের নৈলোৎ পক্ষাৎ দিকে গেল। ইহা শুনিয়া রক্তাৎ দিনেই ভাবিলেন যে তাহা যদি এমত করে তবে আমায়দের আগল দেশে ঘাইবার নয় হইবে করিবে। এই নিমিত্ত আজ্ঞা পহারি এক আকে পোশার শহর কর্তৃক হইয়া রাখিয়া আগল নৈলা নগরে অটক নদী জিরিয়া সেই নদীর তীরে থাকিলেন।

বিদ্রো।

ইংল্যান্ডেরদের ওরীল অশ্রুত মোকাম নাহব বিদ্রো জাতিয়া মোকাম কলিকাতা আসিতেছেন এবং অশ্রুত মর দেবির আভালোশী নাহব তৎকর্মী তরিক হইয়াছেন পুস্তালে তরিকুরে নরল কর্মী অলাহার হইতে কিছু অশ্রুত আজ্ঞা করিয়াছেন যে মর দেবির আভালোশী দিল্লিতে ওকালতি কর্ম করিবেন ও তরিকুরের বন্দোবস্ত পুস্তি তবরিক করিবেন এবং এক ভাগ নৈলোৎ দেশপতি থাকিবেন এই তিন কর্ম তাঁহার অঙ্গল হইল।

তরমল দেশ।

তরমলির এক পুস্তাৎ এক জন লাক্তিক মতলিঙ্গ এক পুস্তা করিয়া জাগিয়াছেন তাহাতে লাক্তিকের মতের অতিপুস্তা না করিয়াছেন ইহাতে তৎদর্শায় অধীক্ষেরা তাহাকে এক বন্দুর করদ রাখিতে দ্বির করিয়াছে।

ভাঙ্গিয়া।

১০ দিকের তরিকো মোকাম কলিকাতায় অশ্রুত কোল্লানি বাহাদুরের তৌদ শত তৌহতর দিল্লীক আদায় মাটাইশ লক্ষ আটঘড়ি হাজার এক শত পঞ্চাশ টাকা তে বিক্রয় হইয়াছে।

দোহার লোকা।

ইংল্যান্ড দেশ এক ব্যক্তি এক পুস্তার তুলন লোকা মুক্তি করিয়াছেন সে কেবল ইংরাজীর দোহার দার দিল্লিতে ওতর হেন্দু দর্শন করিবার নিমিত্ত যে আহাজ ইহার পর ঘাইবেক তাহারদের নগর এই লোকা পাটাইতে দ্বির করিয়াছেন যে হেতুহ সে লোকা পুস্তিতে টেকিলেও ভাঙ্গি না ওলেও তব লোকা।

শাহজাদা বাদশাহ।

দিল্লীর বাদশাহ অকবরশাহের পৌত্র শাহজাদা বাদশাহ আগল বাদশাহীর মহৌ মাড় তিন কোটি টাকা ইমারতী কর্মে ব্যয় করিয়াছিলেন আগাহাতে এক কোটির অধিক মুস্তামজাদ তর লক্ষ টাকা ও তাম্রমহলে পঞ্চাশ লক্ষ টাকা ও দৌলখানাতে ও বাগানে জটিল লক্ষ টাকা ও দিল্লীর রাজগৃহে পঞ্চাশ লক্ষ টাকা ও তুয়ায়মজাদ দর্শ লক্ষ টাকা ও লাহোরের রাজগৃহে পঞ্চাশ লক্ষ টাকা কাবোলের রাজগৃহে বার লক্ষ টাকা ও কাশ্মীরের রাজগৃহে আট লক্ষ টাকা রাওহোর রাজগৃহে আট লক্ষ টাকা ও আজিমুর ও তাহমদাবাদে দর্শ লক্ষ টাকা ব্যয় করিয়াছিলেন।

১
বাঙ্গাল ব্যক্তি।

অশ্রুত বাঙ্গাল ব্যক্তির অধীক্ষেরা ৭ আন

আগিতে ইস্তাহার দিয়াছেন যে গড় জয় মাস শত দর নাহব বার টাকার হিন্দা বে মর দেওয়া ঘাইবে অর্থাৎ জয় মাসের পুতে কভাগির মর জয় শত পচিশ টাকা অশ্রুত অধীক্ষেরা ইস্তাহার দিয়াছেন যে ১৪ আনকারি বৃন্দ তবার এই ব্যক্তির অধুর্গত লোকেরা ব্যক্তির একর হয় ও সেই সময়ে এই ব্যক্তির বিষয় লাল কথা তাহারদিগকে বহ ঘাইবে।

ঘুচ্ছোদোণের অন্যতর।

ওতমাপা অধুর্গত অর্থাৎ কোল্লাই তে যে আশ্রয় মোকাম কলিকাতায় গৈ জিয়াছেন তাহার দার অলর হইয়াছেন যে ইংল্যান্ডের লোকেরদের সহিত আমে দিল্লীর লোকেরদের ঘুচ্ছোদোণ হইতেছে এবং ইংল্যান্ডের সকল মুজ আহাজ পুস্তিত করিতেছেন কিন্তু ইহা দ্বির লবে অলব্রম্য।

ঘুচ্ছের সময় তার।

লক্ষী নদীর তীর হইতে সম্রাটের আনিয়াছেন যে অশ্রুত কাপতান পৌলের নাহব তরিকট পুস্তায় লোকেরদের সহিত যুদ্ধ করিয়াছেন তিনি তৌদ কোশ তনিয়া গিয়া বিকলুটারিদের সহিত দিল্লিলেন তাহার অতিদুর্গম স্থানে জিল তামাপ তিনি তাহারদের ওরীল আহমদ করিয়া তাহারদের এক শত লোক করদ করিলেন অবশিষ্ট লোকেরা পলায়ন করিল।

পুলার পলাগি।

যেমত কলিকাতায় লোকেরা গড় ঘুচ্ছের পর অশ্রুতের এক পুস্তা-মাগত্র দিল্লিল সেমত পুলাগিলারিহ লোকেরা অশ্রুতের এক পুস্তা-মাগত্র দিল্লিয়া

ਸ੍ਰੀਮਤਿ ।

दशम्यनि विद्याङ्गम् ।

উৎসাহ বিমূঢ় (অসোচ্চ)।

विद्या। तल्लु ब्रह्म छिल मन्दाकिनीतीरे ।

अलङ्कितं विराजितं कर्तुं शक्याम् ।

इहैल ब्रह्मांड उक्त निहाल ए बाः ॥

सुत उवाच ननु शास्त्रं साक्ष्यं ह त ।

महर्षिः कुरुते उक्तं पञ्चनामं ॥

ਦਿਸ਼ਾਵਾਂ ਵਿਚ ਦਿਖਾਏ ਗਏ ਅਨੁਸਾਰ ਹੋਵੇਗਾ।

ଅଗାଧିତ ଶିକ୍ଷା ଗାନ୍ଧିଜୀଙ୍କ ଯେତେବେଳେ

হীমাংশুনা করিতে পারে হীমাংশু. তাহা

অসংখ্য মণ্ডলীত দুঃখঃ কাল লঃ আইয়্য

କର୍ତ୍ତା, ସ୍ୱର୍ଗୀୟ ଓ ଉଦ୍ଦିଷ୍ଟାରେ ତଳ ।

ଉତ୍ତୋର ଆମ୍ଭେ ବହୁ କଟାହିବ କାନ ।

যান যেদ দরে .দন ই ইং ইতালি ।

ମୋଡ଼ିବି ମିହିରି କରୁଛା ମିହିନ ।

ਜੀਤੀਨ ਕੁਝ।

পূর্ব কাম্বোজ দেশইহতে ঘেটকরা
পাখির দ্বিতীয় অঙ্গশাখ বংশশাখ
নিকটে বিস্তৃত হওয়া সম্ভব। বংশশাখ
সে ঘেটক ওপকৃত মূল্য বিক্রয় লইলে
ও ব্যাপারবিদগকে কহিলেন যে আর দুই
লক্ষ টাকা লও কাম্বোজইহতে ভাল ঘে
টক আমাকে অর্পিয়া দিও। ইহা কহি
য়া ঐ ব্যাপারবিদগকে দুই লক্ষ টাকা

১৯৪৬ সালে ১৯৪৬ সালে ১৯৪৬ সালে
 ১৯৪৬ সালে ১৯৪৬ সালে ১৯৪৬ সালে
 ১৯৪৬ সালে ১৯৪৬ সালে ১৯৪৬ সালে
 ১৯৪৬ সালে ১৯৪৬ সালে ১৯৪৬ সালে
 ১৯৪৬ সালে ১৯৪৬ সালে ১৯৪৬ সালে

པཎ་ཏཱ་ལའི།

[illegible]

কাউচু।
যখন বাঙালি বেশ মূৰোপভাষায়
নবাবের অধীন ছিল তখন কাউচু গাছ
নবাবের বোম-খাল জিল এবং বাউ
লায় থাকারিঁর টাকী সেইখানে তখন
ইহই এই হেতুক নবাব ঐ মোকামে এক
টা মুন্সিফার গড় করিয়াছিলেন তখন
সে গড় অনেক লুণ্ঠ হইয়াছে তখন
হার দক্ষিণ দিকে গড়ের কিছিং বাল
হয় এবং একটা ডোণ অ্যান্ডালি
আছে।

ਗੰਗਾਨਾਗਰ

গঙ্গাসাগর উপহীনের দল ১৯৩৩

সমাচার দর্পণ

৩৪ সংখ্যা]

শনিবার ১ ৪৩ জানুয়ারি মন ৪৮১৯। ৪ মাঘ মন ১২২১।

দর্পণে মুখ্য সৌকার্যমিব কার্যবিবরণীঃ। বৃত্তান্তনিহ জিনত্ব সমাচারসা বর্ণনঃ।

সমাচার দর্পণ।

কোল্লানির কাণ্ডঃ।

১৩ জানুয়ারি বুধবার মন ৪৮১৯ মাল
কোল্লানির শতকরা জয় টাকার সুদের
কাণ্ড হয় করিতে হইলে শতকরা
জয় টাকার বার আনা ডিম্বকোষ্ঠ। বিহু
নরিতে হইলে শতকরা মাত টাকার চারি
ডিম্বকোষ্ঠ।

মস্তাহের গণ্ডিকা।

| ১৬ জানুয়ারি | শনিবার | ৪ | মাল |
|--------------|--------|---|-----|
| ১৭ | ২ | ৪ | ২ |
| ১৮ | ৩ | ৪ | ৩ |
| ১৯ | ৪ | ৪ | ৪ |
| ২০ | ৫ | ৪ | ৫ |
| ২১ | ৬ | ৪ | ৬ |
| ২২ | ৭ | ৪ | ৭ |

৪ তুল।

আটার শত চৌদ্দ মনে যখন ঋযুত
কোল্লানি বাহাদুরের বিশাল্য বন্দে বস্ত
হইল তখন এ দেশের যে বানিত্য পূর্বে
কেবল কোল্লানির অধীন জিল সে বানিত্য
আনা। লোকেরা ও করিতে পারিলেক এই
আজ্ঞা ইংলণ্ডের মাহামত। দিয়াছেন
সেই অবধি এ দেশের বানিত্য তত্বে
গে চলিতেছে এবং অন্য ব্যবসায় হই
তে কেবল তুলার বানিত্য অধিক বন্ধি
হইয়াছে। আটার শত মতের মাল
এই দেশ হইতে মাল লক্ষ মাল তুল।
ইংলণ্ড দেশে গিয়াছে সে তুল। সেখানে

আট কোটি টাকাত বিক্রয় হইয়াছে এই
পুকারে বানিত্যের দ্বারা এ দেশের মঙ্গল
বৃদ্ধি হইতেছে যেহেতুক যে দেশ হইতে
আলেক মুল্যের দুব্য রপ্তানি হয় এবং তত
মুল্যের দুব্য আমদানি হয় সেই দেশ
অতিশয় মঙ্গল হয়। যেমত কোল্লানি
শহরে যদি দশ হাজার টাকার দুব্য
আমদানি হয় তবে সে শহর হইতে দশ
হাজার টাকা নির্গত হয় এবং অন্য
দেশ হইতে লোকেরা আনিয়া যদি সে
শহর হইতে এক লক্ষ টাকার দুব্য ক্রয়
করিয়া লইয়া যায় তবে সে শহরে লক্ষ
টাকা পুর্বেপ্ত করে সুতরাং তাহার
লবই হাজার টাকা শহরেই থাকে।
এই মত যদি প্রতি ২৫ মন হয় তবে সে
শহর অতিশয় মঙ্গল হইতে পারে
সেই গণনাতে বহু দেশের মঙ্গল
হুস নিম্না বৃদ্ধি হয়। এই কারণে
দেশের দুব্যের রপ্তানি আলেক ও তা
হার আমদানি অল্প এই দুয়ক এ দেশের
বিন বানিত্য দ্বারা। অতিশয় বাড়িতেছে
এবং পূর্বে নবাবের অধিকার কাল হইতে
এখন মালে দেশের মঙ্গল বৃদ্ধি হইতে
ছে এখন যত ভাগিহান লোক বাঙ্গালী
তে আছে পূর্বে নবাবের অধিকার কালে
এত ভাগিহান জিল না হইতে নিশ্চয়
বুঝা যায় যে কেবল এখন বানিত্য দ্বারা
লোকেরা ভাগিহান হইতেছে।

শন।

দুগ্ধ দেশের মধ্যে এক ব্যক্তি দিয়া
বান এক পুকার কলম্বি করিয়াছেন

তাঁহাতে শন পটাইহার সময়ে তাঁহার
সাঁতারিক বর্ন লম্বা হয় না পূর্বে
পাখাটী বস্ত্র করিবার বাল
বর্ণের বানি হইত কিন্তু এই কলম্বি
সাঁতারিক গিরি বর্ণের হইত হয়

আনার গিত।

গত যুদ্ধে সিদ্ধিয়ার সহিত
দের মঙ্গল হইল হইল কাল
অসীকার করিয়াছিলেন যে তম
আমারদের হাতে বহু দেশের
মঙ্গলিত করা গাইবে। সে গিত
আমারদের হাতে আইনে নাই
দার আমারদের হাতে গত দিতে
ক ওকোর করিতেছে ওকহে যে সে গিত
কখন আমারদের অধীন করিবে না
এবং সে সিদ্ধিয়ার সিদ্ধিয়ার চাকর হই
য়াও তাঁহার আফগান-ঘন করে
নিমিত্ত সে গত আরও করিতে
যেরা অনেক মৈল। সেখানে গাই
য়াছেন।

ইংগোর।

ইংগোর হইতে পত্র আনিয়াছে
তে শ্রীল গেল যে যুবা হোলব
রাত তালন রাজধানী ইংগোর
পাঁছিয়াছেন ও ইংগোরের
ঋযুত বেঙ্গল সাহেব তাঁহার
অজেল।

তরমনি।

আমনির দেশের মধ্যে এক

সমাচার দর্পণ।

লোক ঐ প্রদেশের লোক সংখ্যা গুণতঃ
করিয়া এক পুস্তক জাপাইয়াছেন তা
হাতে তিনি লিখিয়াছেন যে যে লোকে
রা তরমিণ দেশের মধ্যে গণিত আছে
তাহারা তিন কোটি হিন্দু এই মতল
লোক চল্লিশ হাজারের মধ্যে বিভক্ত তা
হার মধ্যে মতলহইতে বড় রাজ্যে
চৌরনহই লক্ষ গুণা ও মতলহইতে ক্ষুদ্র
রাজ্য পাঁচ হাজার পাঁচ শত গুণা আ
ছে কিন্তু সেখানকার বড় রাজ্যের রা
জার যেমত আপন দেশে ঐশ্বর্য প্রকাশ
সেই মত ক্ষুদ্র রাজ্যের রাজাও আপন
দেশের মধ্যে আপন বিভবানুসারে ক
রেন :

অরমিণ দেশের এক ব্যবহার।

অরমিণ দেশের এক প্রাচীন নগরে এই
ব্যবহার আছে যদি কোন বালক পুত্র
মধ্যে শিক্ষা মাগে তখন ঐ শহরের
লোকেরা তাহাকে বিনা মূল্য বিদ্যার
স্থানে লইয়া তাহার ভ্রম্য সামগ্রীর ও
বিদ্যা শিক্ষা করার দক্ষতি করিয়া দেয়
এবং মলিন জিন বস্ত্র সমেত তাহার এক
জুবি করে। তাহার বিদ্যা শিক্ষা সমাপ্ত
হইলে সেই জুবি তাহার হাতে দিয়া
তাহাকে বিদ্যার হস্ত তাহার কারন এই
যে সে যাবজ্জীবন মনে রাখে যে সে কি
প্রকার দুর্য্যহইতে ওদ্ধার পাইয়াছে এবং
কোন স্থানে মতল প্রকার সন্মতি পাই
য়াছে।

বহির্ন।

যে জন এখন কলিয়া মহারাজে রাজ
নিবাসনে আছেন তিনি অতিশয়
উঁহার নাম আলেক্সান্দ্র তিনি যেমন
শিব ভাতে মূগাড উঁহার শিতা তেমন
দুষ্ট ভাতে অসত্যিযুক্ত ছিলেন তিনি

আগন রাজ্যের সভ্যতা অতিশয় চেষ্টা
করিতেছেন। এক শত বৎসর পূর্বে ইউ
রোপীয় লোকেরা কলিয়ারদিগকে আপ
নারদেরমধ্যে গণিত করিত না কেবল
বন্য আতি আন করিত।

গত বৎসরে কলিয়া দেশে এক জন কাব্য
বেত্তা অতিমুদ্রর এক কাব্য করিয়াছেন
তৎপুস্তক ঐ দেশের বাদশাহ ঐ বাজকে
যাবজ্জীবন মান্য পাঁচ শত টাকা পরি
তোষিক দিতে স্বীকার করিয়াছেন।
কলিয়া দেশে এমন নিরুদ্ধ আছে যে
তাহার দ্বারা লোকেরা বিনামূল্যে বিদ্যা
ও অন্য বিষয়ের পুস্তক পায়। গত
বৎসরে সে নিরুদ্ধের লোকেরা আলেক্সা
ন্দ্র বাদশাহের নিকটে প্রার্থনা করিয়াছিল
যে কলিয়া দেশে কাগজ অতি দুর্লভ
অতএব বাদশাহের স্বকুম্ব হইলে হলও
দেশহইতে কাগজ আন করিয়া আনা
যায় তাহাতে লায়ারদের পোলের হাজার
টাকা লাভ হইতে পারে। তাহাতে বাদ
শাহ কহিলেন যে বিদেশহইতে কাগজ
কিনিয়া আনিলে স্বদেশীয় কাগজ বিক্রয়
কর্তাদের অনেক ক্ষতি হয় অতএব মর
কারহইতে পোলের হাজার টাকা লাও।
ইহা কহিয়া আলেক্সান্দ্র আপন ভাণ্ডার
হইতে পোলের হাজার টাকা তাহার
দিগকে দিয়া অন্য দেশে কাগজ ক্রয় করেন
করিলেন।

পুস্তকলৈ এমন ব্যবহার জিল যে
যাহারা কোন দোষ করিত তাহারদিগ
কে শিবিরদেশে পাঠান যাইত সে দেশে
এমত অনিবার্য শীত যে সেখানে ঘাও
রাহইতে বরং মরন শ্রাব্য। যাহার
দিগকে সে দেশে পাঠান যাইত তাহার
দের নামিকার ওভয় পাশ্ব ছেদন করিত
কিন্তু আলেক্সান্দ্র বাদশাহ আঁতা করি
য়াছেন যে ঐ কাগজ আর কর্তব্য নহে।

বোনাপার্ট।

তাঁতার দেশের এক মহাজন গত
বৎসরে কলিয়াতে আসিয়া কহিলেন যে
আমি তাঁতার দেশে আদবি ভাষায়
জাপান বোনাপার্টের মতল বিবরণের
এক পুস্তক দেখিলাম সেই পুস্তক যুদ্ধ
দেশের রাজধানী শহরে আটটা শত দশ
মালৈ জানা হইল তাহার কারন এই যে
আসিয়ার মতল লোক বোনাপার্টের
কীর্তি আনিতে যায়।

রাজকর্মের নিয়োগ।

১৩ দিনের প্রযুক্ত জন আম্বট্টী মা
হেব কাচার কোর্ট আদালতের পুণ্ডিত বিচার
কর্তা।

প্রযুক্ত ওলাম বৃন্দ মাহেব ঐ কোর্ট আ
দালতের দ্বিতীয় বিচারকর্তা।

প্রযুক্ত ওলাম পাটন মাহেব ঐ কোর্ট
আদালতের তৃতীয় বিচারকর্তা।

প্রযুক্ত নিচেল মাহেব ঐ কোর্ট আদা
লতের চতুর্থ বিচারকর্তা।

প্রযুক্ত আর এড ব্রুন্ড মাহেব বাবার
মের কোর্ট আদালতের চতুর্থ বিচারকর্তা।

প্রযুক্ত মন্সেগু হেলির টর্নবল মাহেব
মাজোরুর বিচারকর্তা।

প্রযুক্ত লিবার্ন মাহেব চাট্টগুয়ের বি
চারকর্তা।

প্রযুক্ত দোরিন মাহেব কলিকাতার
মদরদেওয়ানি ও নিজামত আদালতের
রেজিষ্টার।

প্রযুক্ত ওলাম ক্রি- মাহেব জিলা রায়
গড়ের আদালতের রেজিষ্টার।

প্রযুক্ত ওলাম মন্সন মাহেব জিলা
মাহারানপুরের রেজিষ্টার।

১ জানুয়ারি প্রযুক্ত অর্জ মেলবেরির
মাহেব চব্বিশশরণার আদালতের রে
জিষ্টার।

সম্মাচার দর্পণ।

ঐযুত ওলাম ওলেন সাহেব কলিকাতার কোর্ট হাউসের রেজিষ্টার।

৮ আশ্বিন ঐযুত জন ব্রডর সাহেব কলিকাতার ল্যাটরির অধীক্ষ।

ইংল্যান্ডের অধিবাস্তব নানাদেশের বিচারস্থান।

এই হিন্দুস্থান ইংল্যান্ডের অধিবাস্তব হওয়াতে বিচারস্থান এই কএকটা নিষ্কণিত হইয়াছে ইহার কারণ এই যে মহল লোক নিষ্কণিতে বিচারস্থান পায় যেহেতুক পুত্র লোকেরদের পরদ্বার দৌড়াইতে হইলে উদ্ভাবনার্থ বিস্তর দূর যাইতে না হয়। বাঙ্গালার মধ্যে তিন স্থানে কোর্ট আদালত আছে কলিকাতা ও ঢাকা ও মুরশেদাবাদ। আর পশ্চিমেও তিন স্থান আছে। পাটনা ও বালারস ও বরেন। এই জু কোর্টের অধীন তাবৎ হিন্দুস্থানের বিচারস্থান এই পুত্র দে বিস্তর আছে।

কলিকাতার অস্ত্রপাতি নয় বিচারস্থান। বর্ধমান ও কটক ও নবদ্বীপ ও হুগলি ও ঘাশোঁহর ও অঙ্গলমহল ও মেদিনীপুর ও কলিকাতার নিষ্কণিবর্ত্ত পুত্রদেশ ও উদ্ভাবিত পরগণা।

চাঁপার অস্ত্রপাতি মাত বিচারস্থান। বাগেরপাড়া ও চট্টগ্রাম ও নিজ ঢাকা। শহর ও ঢাকা জলাশুর অর্থাৎ ঢাকার জিলা ও মহামসিন্দেহ ও জাহ্নু ও ত্রিপুরা।

মুরশেদাবাদের অস্ত্রপাতি একাদশ বিচারস্থান। বীরভূমি ও ভাগলপুর ও ভাগলপুরের অস্ত্রপাতি মুরগের ও দিনাজপুর ও দিনাজপুরের অস্ত্রপাতি মালদহ ও নিজ মুরশেদাবাদ ও মুরশেদাবাদের নিষ্কণিবর্ত্ত পুত্রদেশ ও পূর্ণিয়া ও রাণসাহী ও রঙ্গপুর দুই।

পাটনার অস্ত্রপাতি নয় বিচারস্থান।

বাহার ও নিজ পাটনা শহর ও রামগড় ও মাহরন ও শাহাবাদ ও তীরখত।

বালারসের অস্ত্রপাতি দশ বিচারস্থান।

ইলাহাবাদ ও ইলাহাবাদের অস্ত্রপাতি দশ হুতু ও বন্দেলখণ্ড ও বন্দেলখণ্ডের অস্ত্রপাতি কুলি ও নিজ বালারস শহর ও গৌরকানুর ও গৌরকানুর অস্ত্রপাতি আজমগড় ও বৈতলপুর ও বৈতলপুরের অস্ত্রপাতি গাজীপুর ও মোতালপুর।

বরেনির অস্ত্রপাতি নয় বিচারস্থান। আদিলাবাদ ও আলিগড় ও নিজ বরেনি ও কালাবু ও ইটায়া ও হরদাবাদ ও মুহাবাদ ও দক্ষিণ মাহারনপুর ও ওত্তর মাহারনপুর।

হানোল দপ্তরস্থান।

কলিকাতার পুরানা কিল্লায় যে অধিবাস্তব ছিল তাহা এখন ভাঙ্গা গিয়াছে এবং সেই স্থানে একটা নতুন হানোলদপ্তর খান পুস্ত হইবে তাহার পুত্র পাথর পত্তন করিবার সমুদ্র কাহার হইবে তাহার নিষ্কণি হয় লাই যেহেতুক ইওরেনীয়েদের এইত ব্যবহার আছে যে খান বৎ গৃহাদি নির্মাণ হয় তখন যে বাড়ি সম্ভ্রান্ত তিন পুত্র এক ইচ্ছা কিম্বা এক পুস্তর গাঁথেন। ঐ পুস্তর এই মাসের মধ্যে গাঁথ যাইবে এই ঘর হইলে শহরের তত্ত্ব ওৎকা র হইবে। যে শহরে যাহা ভারতবর্ষের বাণিজ্যের বস্ত্র একত্র হয় এমত মহা শহরে যে ইহার পূর্বে ইহার ওৎকাফ ঘর না ছিল ইহাও শহরের অতি অসমুদ্র যেহেতুক কলিকাতার ঐখণ্ডের মূল বাণিজ্য।

গৃহাদি।

গত শনিবার হাঙ্গিয়ারে বিচারের ঘাটে ঐযুত হুইটম্যান সাহেবের তুল্য কলিকাতার কলে অধ্যাপনা মমুদার দক্ষি হইল কিন্তু ঐযুত হুইটম্যান সাহেবের লগিত পাইল না। কলিকাতার মধ্যে যে ঘরের ওৎকাফ বিয়া নাই এ আশ্চর্য ইংল্যান্ড দেশে মর্দু ঘরের ওৎকাফ বিয়া আছে বিয়া হইলে যদি কোন ঘর দাঁহ হয় তবে সে ঘরের টাকা বিয়াওয়াল অংশ দেয় ইহাও বাণিজ্যের অতিশয় ওৎকাফ হয় যেহেতুক এমত না হইলে লক্ষ টাকার দুখ অধির কোন গাফিত কলিকাতার বাণিজ্য বিলাই হইতে যে এবং অধিবাস্তব জিনিসের ওলাম সেইমত বাড়িতে অতএব ঘরের ওৎকাফ যদি বিয়ার এক নিবন্ধ দি হয় তবে শহরের বৎ ওৎকাফ হয়।

বিবাহ।

আমরা শুনিয়াছি যে এই মাসের মধ্যে ঐযুত বাবু গোপাল মল্লিকের পুত্রের বিবাহ হইবে তাহাতে যেমত আত্মম্বর শুভ যাইতেছে ইহাও অল্প ভর হয় যে এমত বিবাহ কলিকাতায় কখন হয় লাই কিন্তু মঙ্গল হইলে দ্বীপা যাবে। এবং তাহার বিশেষ্য বিবরণ জানিল যাইবে।

ঐশ্বর্য ইংল্যান্ডের হানি।

অগাধি মোমবারে ঐশ্বর্য ইংল্যান্ডের হানির তুল্যদিল ওৎকাফ সেই দিলে বাদশাহের চাকর ও কোর্টের চাকর লোকেরা ও ভাগ্যবান ইংল্যান্ডের মোম বালিকাতায় ঐশ্বর্যের বর্ধিত

সমাচার দর্পণ।

জাঙ্গল ও ন্যস্ত পুষ্কতি আনন্দ বর্ষা করি
বেন।

সুখীমকোট।

গত মঙ্গলঃই নুখীমকোট এই বন্দন
রেখা বৃন্দা মাজল হোলা গিলেছে ও
গুদুতুরি কর্ম চাইতে বনিন এই
মিলিল কোব অরশাক মোকদ্দা নাই
কেনন কুই তন আরব লোকেরদের পুন
র বিঘর মোকদ্দা হইবেক।

আশাখ্য ওকার।

ইংলণ্ড দেশে এর ভাগিবাণ লোক
চল্লিগ বন্দনপাঠক ধারন দ্বারা একদ
জিলেন কিন্তু গত বন্দনের তিনি এই পু
কারে তাহাইতে মুক্ত হইলেন ও
দেশে তাহার মোত অমরাণী ও আর
জিল যে তাহাতে বন্দনর তিন লক্ষ
টাকা ওন্দন হইত কিন্তু চল্লিগ বন্দন
হইল অত বিরাগেই হইয়া আত্মার ঘাব
বিঘর নইন বেনা যে জিন তাহা তাঁহার
হুসিন তাহার তিন লক্ষ হইলেন ও
তাঁহার ঐ ভুক্ত বন্দন দ্বারা মৃত্যে গেল
পারে চল্লিগ বন্দনের পর তিন আশন
ঐ ভুক্ত আশন বুরিয়া গাইলেন ও ধর্মমু
হইয়া একদহইতে মুক্ত গাইলেন।

প্রশ্নের কথা।

শাহ অকবর বাদশাহের পৌত্র শাহ
বুদ্ধান মামদার শাহজাহান জাঙ্গল বাদ
শাহ হইয়া আবদুল্লাহ নামে এক ব্যক্তি
কে আশনার মন্ত্রী করিলেন এই আবদুল্লা
হই এমারা মন্তন জিলেন না কিন্তু বিরা
পাতিতা নবনদীরবনেতে মন্তন জিলেন

তৎপুত্র বাদশাহ তাঁহাকে তৎ পরাতি
যিক করিলেন তিনি অন্য মন্তন মন্ত্রির
দের মধ্যে ও এমারাদের মধ্যে পুশিন
জিলেন এবং রাতকীর ঘাট বাশনার
ইহারি পরামর্শাখীন জিল। মন্ত্রী হইলে
অতিজীর্ণ ও মলিন পুষ্করদার পরিধেয়
বস্ত্র যত্নপূর্বক এক মিন্দুসর মধ্যে রাখি
তেন যখন বাদশাহের লিখেট ঘাইতেন
তখন ঐ বস্ত্র দর্শন করিয়া ঘাইতেন।
ইহা তৎপুত্র গাইয়া অন্য মন্ত্রী
সিঁথিপুত্র বাদশাহের লিখেট লিবেদন
করিলেন যে আবদুল্লাহ মন্তন বাদশ
হের মাজল আইনেন তখন এক মিন্দু
কে কি আছে তাহাই দেখিয়া আইনেন
ইহাতে অন্য মন্তন বিতর্ক হয়ে যেহেতু
মন্তকরের ঘাববিঘর তাহার ভবীন ইহা
শুনিয়া বাদশাহ নবিরেই হইয়া লোক
হারা ঐ মিন্দু আশন সম্মুখে কানাইয়া
দেখিলেন যে কেবল একমণ আশ
বস্ত্রমাত্র। পরে আবদুল্লাহীকে জি
জান করিলেন যে এ কি। আবদুল্লা
হী লিবেদন করিলেন যে এ তাহার
পুষ্করদার স্মারক বস্ত্র। বাদশাহ
আজ্ঞা করিলেন ইহার জল কি। আর
দুর্গা শী করিলেন যে বাদশাহের তপসুহ
অন্য মন্তকর অকুশলমান এই বস্ত্র
যেহেতু পুন বিঘর মরে মন্ত কটিল
অপুষ্কতি হয় অপুষ্ক হইলে মদন
দ্বিবেদনাথকে না মদনদ্বিবেদনা না পসি
লে মদনশীল হয় অতএব শুভম পুঙ্কদের
এই কর্তব্য যে সিঁথি চাপুপুত্র তাল হওক
সিঁথী মদনই হওক তাহাতে মন্ত ও বিদগ
না হইয়া মদন আশনার স্বপন মনে
রাখিলেন। ইহা শুনিয়া বাদশাহ আর

দুর্গা শীর্ষ পুষ্কি আশ্রয় সম্মু হইয়া
ওতোষিক শুভম পদাশ্রিত করিলেন।

ইস্লামীর দেওয়া ঘাইতেছে।

অনেক লোকের অশীদ নামিক জোহাফর কোজ ও তারি
মন্তন শীর্ষে তপসী নামিক জোহাফর কোজ ও তারি
জোহাফর কোজকরি ক জাহিরে পুশাপ খাল শিলে
বিকর হইবেক অন্য ও অশীদে টমমাত বোরিগনুর লে
টরি দরদারদার অন্য জোহাফর কোজকরি জাহাফি
মন্তন হইবেক।

মামনদিগ লোহাফর ১৫ জোহর লম ১৮১০ ইং ১০ মাস
লম ১১৫৫ বর্ষ।

সিঁথিপুত্র পুশাপ ও বিঘরল লম ১৮১০ ইং ১১ মাস লম
১১৫৫ বর্ষ।

ইতি তাং ১৫ জোহর লম ১৮১০ ইং বোরিগনুর মন্তন।
অনেক লোকের অশীদ নামিক জোহাফর কোজ ও তারি
মন্তন শীর্ষে তপসী নামিক জোহাফর কোজ ও তারি
জোহাফর কোজকরি ক জাহিরে পুশাপ খাল শিলে
বিকর হইবেক অন্য ও অশীদে টমমাত বোরিগনুর লে
টরি দরদারদার অন্য জোহাফর কোজকরি জাহাফি
মন্তন হইবেক।

মন্তন শীর্ষে বাকী আশ্রয় করি।

সিঁথিপুত্র লোহাফর ১৫ জোহর লম ১৮ ১১ ইং ১০ মাস
লম ১১৫৫ বর্ষ বোরিগনুর লম ১৮১০ ইং ১০ মাস লম
১১৫৫ বর্ষ।

মন্তকরের বাকী জাহিরে আশ্রয় করি।

সিঁথিপুত্র লোহাফর ১৫ জোহর লম ১৮১০ ইং ১০ মাস লম
১১৫৫ বর্ষ। জাহিরকরি জাহাফি।

ইতি তাং ১৫ জোহর লম ১৮১০ ইং বোরিগনুর মন্তন।

অনেক লোকের অশীদ নামিক জোহাফর কোজ ও তারি
মন্তন শীর্ষে তপসী নামিক জোহাফর কোজ ও তারি
জোহাফর কোজকরি ক জাহিরে পুশাপ খাল শিলে
বিকর হইবেক অন্য ও অশীদে টমমাত বোরিগনুর লে
টরি দরদারদার অন্য জোহাফর কোজকরি জাহাফি
মন্তন হইবেক।

সিঁথিপুত্র লোহাফর ১৫ জোহর লম ১৮ ১১ ইং ১১ মাস লম
১১৫৫ বর্ষ বোরিগনুর লম ১৮১০ ইং ১০ মাস লম
১১৫৫ বর্ষ।

সিঁথিপুত্র লোহাফর ১৫ জোহর লম ১৮ ১১ ইং ১১ মাস লম
১১৫৫ বর্ষ। জাহিরকরি জাহাফি।

মন্তকরের বাকী জাহিরে আশ্রয় করি।

ইতি তাং ১৫ জোহর লম ১৮ ১১ ইং বোরিগনুর মন্তন।

এই সময়ের বর্ষন শ্রীরামপুরের জাংগলনাতে পুতমস্তাছে শনিবারে জাণা হয়। ঘাছার লওনের আশাখ্য থাকে তিনি শ্রীরামপুরে
জাংগলনাতে আশন নামে পাঠিলেন নস্তাছে কাগজ তাহার লিখেট পাঠিল যাবেক তাহার মূল্য মোসো এক টাকা। যিনি স্বাক্ষর
করিয়াছেন ঘরি তাহার লিখেট না পৌছে তবে তিনি শ্রীরামপুরের জাংগলনাতে সমাচার দিবামাত্র তাঁহার লিখেট পাঠিল যাবেক।

সংগীত দর্পণ

७५९॥

अंकित : १७ अक्टूबर १९७१ / १९७१

[illegible]

সমাচার দপণ ।

ବୌଦ୍ଧାନ୍ତିକ କାଳ ।—

কোম্পানির অভিজ্ঞতা এবং উৎসাহ মূল্যে
সমাজের প্রতিটি স্তরে ছড়িয়ে পড়বে।
নতুন উৎসাহে উদ্ভাসিত হবে।
শ্রমের মূল্যবোধ। আরও উৎসাহে
শ্রমের মূল্যবোধ। আরও উৎসাহে
শ্রমের মূল্যবোধ।

Figure 1

| Year | Age | Sex | Height (cm) | Weight (kg) | Body Mass Index (kg/m ²) |
|------|-----|-----|-------------|-------------|--------------------------------------|
| 1970 | 20 | M | 170 | 65 | 22.6 |
| 1975 | 25 | F | 160 | 55 | 21.5 |
| 1980 | 30 | M | 175 | 70 | 22.6 |
| 1985 | 35 | F | 165 | 60 | 21.8 |
| 1990 | 40 | M | 170 | 65 | 22.6 |
| 1995 | 45 | F | 160 | 55 | 21.5 |
| 2000 | 50 | M | 175 | 70 | 22.6 |
| 2005 | 55 | F | 165 | 60 | 21.8 |

天... ..

[illegible]

附註 四

মানুষের সংস্কৃতি - একটি হওয়া।
 সে সংস্কৃতিতে মানুষকে সংস্কৃত
 হতে হয়।

१. संस्कृत-संज्ञा-संग्रहः - १००
 २. संस्कृत-संज्ञा-संग्रहः - १००
 ३. संस्कृत-संज्ञा-संग्रहः - १००
 ४. संस्कृत-संज्ञा-संग्रहः - १००
 ५. संस्कृत-संज्ञा-संग्रहः - १००
 ६. संस्कृत-संज्ञा-संग्रहः - १००
 ७. संस्कृत-संज्ञा-संग्रहः - १००
 ८. संस्कृत-संज्ञा-संग्रहः - १००
 ९. संस्कृत-संज्ञा-संग्रहः - १००
 १०. संस्कृत-संज्ञा-संग्रहः - १००

1. 2000年1月1日起，凡在我国境内销售货物的单位和个人，均应按销售额的一定比例缴纳增值税。

[illegible]

... ..

1. *Journal of the American Medical Association*, 1990; 263: 1025-1028.

1. *Chlorophyll a* and *Chlorophyll b* were determined by the method of Arar and Collins (1971).

1. *Chlorophyll a* and *Chlorophyll b* were determined by the method of Lichtenthal and Whistler (1973).

DOI: 10.1002/for

1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 26

— — — — —

2000-2001, 2001-2002, 2002-2003, 2003-2004, 2004-2005, 2005-2006, 2006-2007, 2007-2008, 2008-2009, 2009-2010, 2010-2011, 2011-2012, 2012-2013, 2013-2014, 2014-2015, 2015-2016, 2016-2017, 2017-2018, 2018-2019, 2019-2020, 2020-2021, 2021-2022, 2022-2023, 2023-2024, 2024-2025, 2025-2026, 2026-2027, 2027-2028, 2028-2029, 2029-2030, 2030-2031, 2031-2032, 2032-2033, 2033-2034, 2034-2035, 2035-2036, 2036-2037, 2037-2038, 2038-2039, 2039-2040, 2040-2041, 2041-2042, 2042-2043, 2043-2044, 2044-2045, 2045-2046, 2046-2047, 2047-2048, 2048-2049, 2049-2050, 2050-2051, 2051-2052, 2052-2053, 2053-2054, 2054-2055, 2055-2056, 2056-2057, 2057-2058, 2058-2059, 2059-2060, 2060-2061, 2061-2062, 2062-2063, 2063-2064, 2064-2065, 2065-2066, 2066-2067, 2067-2068, 2068-2069, 2069-2070, 2070-2071, 2071-2072, 2072-2073, 2073-2074, 2074-2075, 2075-2076, 2076-2077, 2077-2078, 2078-2079, 2079-2080, 2080-2081, 2081-2082, 2082-2083, 2083-2084, 2084-2085, 2085-2086, 2086-2087, 2087-2088, 2088-2089, 2089-2090, 2090-2091, 2091-2092, 2092-2093, 2093-2094, 2094-2095, 2095-2096, 2096-2097, 2097-2098, 2098-2099, 2099-2100, 2100-2101, 2101-2102, 2102-2103, 2103-2104, 2104-2105, 2105-2106, 2106-2107, 2107-2108, 2108-2109, 2109-2110, 2110-2111, 2111-2112, 2112-2113, 2113-2114, 2114-2115, 2115-2116, 2116-2117, 2117-2118, 2118-2119, 2119-2120, 2120-2121, 2121-2122, 2122-2123, 2123-2124, 2124-2125, 2125-2126, 2126-2127, 2127-2128, 2128-2129, 2129-2130, 2130-2131, 2131-2132, 2132-2133, 2133-2134, 2134-2135, 2135-2136, 2136-2137, 2137-2138, 2138-2139, 2139-2140, 2140-2141, 2141-2142, 2142-2143, 2143-2144, 2144-2145, 2145-2146, 2146-2147, 2147-2148, 2148-2149, 2149-2150, 2150-2151, 2151-2152, 2152-2153, 2153-2154, 2154-2155, 2155-2156, 2156-2157, 2157-2158, 2158-2159, 2159-2160, 2160-2161, 2161-2162, 2162-2163, 2163-2164, 2164-2165, 2165-2166, 2166-2167, 2167-2168, 2168-2169, 2169-2170, 2170-2171, 2171-2172, 2172-2173, 2173-2174, 2174-2175, 2175-2176, 2176-2177, 2177-2178, 2178-2179, 2179-2180, 2180-2181, 2181-2182, 2182-2183, 2183-2184, 2184-2185, 2185-2186, 2186-2187, 2187-2188, 2188-2189, 2189-2190, 2190-2191, 2191-2192, 2192-2193, 2193-2194, 2194-2195, 2195-2196, 2196-2197, 2197-2198, 2198-2199, 2199-2200, 2200-2201, 2201-2202, 2202-2203, 2203-2204, 2204-2205, 2205-2206, 2206-2207, 2207-2208, 2208-2209, 2209-2210, 2210-2211, 2211-2212, 2212-2213, 2213-2214, 2214-2215, 2215-2216, 2216-2217, 2217-2218, 2218-2219, 2219-2220, 2220-2221, 2221-2222, 2222-2223, 2223-2224, 2224-2225, 2225-2226, 2226-2227, 2227-2228, 2228-2229, 2229-2230, 2230-2231, 2231-2232, 2232-2233, 2233-2234, 2234-2235, 2235-2236, 2236-2237, 2237-2238, 2238-2239, 2239-2240, 2240-2241, 2241-2242, 2242-2243, 2243-2244, 2244-2245, 2245-2246, 2246-2247, 2247-2248, 2248-2249, 2249-2250, 2250-2251, 2251-2252, 2252-2253, 2253-2254, 2254-2255, 2255-2256, 2256-2257, 2257-2258, 2258-2259, 2259-2260, 2260-2261, 2261-2262, 2262-2263, 2263-2264, 2264-2265, 2265-2266, 2266-2267, 2267-2268, 2268-2269, 2269-2270, 2270-2271, 2271-2272, 2272-2273, 2273-2274, 2274-2275, 2275-2276, 2276-2277, 2277-2278, 2278-2279, 2279-2280, 2280-2281, 2281-2282, 2282-2283, 2283-2284, 2284-2285, 2285-2286, 2286-2287, 2287-2288, 2288-2289, 2289-2290, 2290-2291, 2291-2292, 2292-2293, 2293-2294, 2294-2295, 2295-2296, 2296-2297, 2297-2298, 2298-2299, 2299-2300, 2300-2301, 2301-2302, 2302-2303, 2303-2304, 2304-2305, 2305-2306, 2306-2307, 2307-2308, 2308-2309, 2309-2310, 2310-2311, 2311-2312, 2312-2313, 2313-2314, 2314-2315, 2315-2316, 2316-2317, 2317-2318, 2318-2319, 2319-2320, 2320-2321, 2321-2322, 2322-2323, 2323-2324, 2324-2325, 2325-2326, 2326-2327, 2327-2328, 2328-2329, 2329-2330, 2330-2331, 2331-2332, 2332-2333, 2333-2334, 2334-2335, 2335-2336, 2336-2337, 2337-2338, 2338-2339, 2339-2340, 2340-2341, 2341-2342, 2342-2343, 2343-2344, 2344-2345, 2345-2346, 2346-2347, 2347-2348, 2348-2349, 2349-2350, 2350-2351, 2351-2352, 2352-2353, 2353-2354, 2354-2355, 2355-2356, 2356-2357, 2357-2358, 2358-2359, 2359-2360, 2360-2361, 2361-2362, 2362-2363, 2363-2364, 2364-2365, 2365-2366, 2366-2367, 2367-2368, 2368-2369, 2369-2370, 2370-2371, 2371-2372, 23

[illegible]

3. 证明: $\lim_{n \rightarrow \infty} \frac{1}{n} \sum_{k=1}^n f\left(\frac{k}{n}\right) = \int_0^1 f(x) dx$

ਦੇਸ਼ ਪਾਤਿਸ਼ਾਹ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਰੋਵਰ

[illegible]

1. The first step in the process is to identify the problem or issue that needs to be addressed. This involves gathering information and understanding the context of the problem.

1. The first step is to identify the problem or question that needs to be answered. This involves understanding the context and the specific requirements of the task.

1. The first step is to identify the problem. This involves understanding the current situation and what needs to be changed.

१. यह कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने अधिकारों का उपयोग करने का अधिकार है।
२. यह कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने अधिकारों का उपयोग करने का अधिकार है।
३. यह कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने अधिकारों का उपयोग करने का अधिकार है।

१. १९५३-५४
 २. १९५४-५५
 ३. १९५५-५६
 ४. १९५६-५७
 ५. १९५७-५८
 ६. १९५८-५९
 ७. १९५९-६०
 ८. १९६०-६१
 ९. १९६१-६२
 १०. १९६२-६३
 ११. १९६३-६४
 १२. १९६४-६५
 १३. १९६५-६६
 १४. १९६६-६७
 १५. १९६७-६८
 १६. १९६८-६९
 १७. १९६९-७०
 १८. १९७०-७१
 १९. १९७१-७२
 २०. १९७२-७३
 २१. १९७३-७४
 २२. १९७४-७५
 २३. १९७५-७६
 २४. १९७६-७७
 २५. १९७७-७८
 २६. १९७८-७९
 २७. १९७९-८०
 २८. १९८०-८१
 २९. १९८१-८२
 ३०. १९८२-८३
 ३१. १९८३-८४
 ३२. १९८४-८५
 ३३. १९८५-८६
 ३४. १९८६-८७
 ३५. १९८७-८८
 ३६. १९८८-८९
 ३७. १९८९-९०
 ३८. १९९०-९१
 ३९. १९९१-९२
 ४०. १९९२-९३
 ४१. १९९३-९४
 ४२. १९९४-९५
 ४३. १९९५-९६
 ४४. १९९६-९७
 ४५. १९९७-९८
 ४६. १९९८-९९
 ४७. १९९९-००
 ४८. २०००-०१
 ४९. २००१-०२
 ५०. २००२-०३
 ५१. २००३-०४
 ५२. २००४-०५
 ५३. २००५-०६
 ५४. २००६-०७
 ५५. २००७-०८
 ५६. २००८-०९
 ५७. २००९-१०
 ५८. २०१०-११
 ५९. २०११-१२
 ६०. २०१२-१३
 ६१. २०१३-१४
 ६२. २०१४-१५
 ६३. २०१५-१६
 ६४. २०१६-१७
 ६५. २०१७-१८
 ६६. २०१८-१९
 ६७. २०१९-२०
 ६८. २०२०-२१
 ६९. २०२१-२२
 ७०. २०२२-२३
 ७१. २०२३-२४
 ७२. २०२४-२५
 ७३. २०२५-२६
 ७४. २०२६-२७
 ७५. २०२७-२८
 ७६. २०२८-२९
 ७७. २०२९-३०
 ७८. २०३०-३१
 ७९. २०३१-३२
 ८०. २०३२-३३
 ८१. २०३३-३४
 ८२. २०३४-३५
 ८३. २०३५-३६
 ८४. २०३६-३७
 ८५. २०३७-३८
 ८६. २०३८-३९
 ८७. २०३९-४०
 ८८. २०४०-४१
 ८९. २०४१-४२
 ९०. २०४२-४३
 ९१. २०४३-४४
 ९२. २०४४-४५
 ९३. २०४५-४६
 ९४. २०४६-४७
 ९५. २०४७-४८
 ९६. २०४८-४९
 ९७. २०४९-५०
 ९८. २०५०-५१
 ९९. २०५१-५२
 १००. २०५२-५३
 १०१. २०५३-५४
 १०२. २०५४-५५
 १०३. २०५५-५६
 १०४. २०५६-५७
 १०५. २०५७-५८
 १०६. २०५८-५९
 १०७. २०५९-६०
 १०८. २०६०-६१
 १०९. २०६१-६२
 ११०. २०६२-६३
 १११. २०६३-६४
 ११२. २०६४-६५
 ११३. २०६५-६६
 ११४. २०६६-६७
 ११५. २०६७-६८
 ११६. २०६८-६९
 ११७. २०६९-७०
 ११८. २०७०-७१
 ११९. २०७१-७२
 १२०. २०७२-७३
 १२१. २०७३-७४
 १२२. २०७४-७५
 १२३. २०७५-७६
 १२४. २०७६-७७
 १२५. २०७७-७८
 १२६. २०७८-७९
 १२७. २०७९-८०
 १२८. २०८०-८१
 १२९. २०८१-८२
 १३०. २०८२-८३
 १३१. २०८३-८४
 १३२. २०८४-८५
 १३३. २०८५-८६
 १३४. २०८६-८७
 १३५. २०८७-८८
 १३६. २०८८-८९
 १३७. २०८९-९०
 १३८. २०९०-९१
 १३९. २०९१-९२
 १४०. २०९२-९३
 १४१. २०९३-९४
 १४२. २०९४-९५
 १४३. २०९५-९६
 १४४. २०९६-९७
 १४५. २०९७-९८
 १४६. २०९८-९९
 १४७. २०९९-१०
 १४८. २१००-१०१
 १४९. २१०१-१०२
 १५०. २१०२-१०३
 १५१. २१०३-१०४
 १५२. २१०४-१०५
 १५३. २१०५-१०६
 १५४. २१०६-१०७
 १५५. २१०७-१०८
 १५६. २१०८-१०९
 १५७. २१०९-११०
 १५८. २११०-१११
 १५९. २१११-११२
 १६०. २११२-११३
 १६१. २११३-११४
 १६२. २११४-११५
 १६३. २११५-११६
 १६४. २११६-११७
 १६५.

সমীচারণ দর্পণ।

তিয়কাল জিলেস তাহারদের কতৃক তাঁহার প্রাণসংলগ্নভাবে সুতরাং ওয়ার হইল।

হেডিংস্‌ম্যানের অভিযুক্ত মুক্ত জিলেস তাঁহার বিনয়িত কথা ও বাক্যের কহিলেন ও তিনি নহিলেন; কহিয়া তাঁহার ওয়ার ওত্তর করিলেন না।

আহাজ আমেরানী।

এই সমুদ্রে খালি নাই এক আহাজ জ ইংলণ্ডে হাজার পঞ্চাশতম তাহার হাজার দুই মাসের সমাচার একবারে পা ওয়া গিয়াছে তাহার মধ্যে দুই সমাচার এই যে ইংলণ্ডে হাজার একতম হইয়াছে যে ইংলণ্ডে হাজার দুইতম হইয়াছে যে ইংলণ্ডে হাজার তৃতীয়তম হইয়াছে।

এই সমুদ্রে ইংলণ্ডের অধুনা দুইতম হাজার আফ্রিকার হাজার একতম হইয়াছে। এই সমুদ্রে ইংলণ্ডের অধুনা দুইতম হাজার আফ্রিকার হাজার একতম হইয়াছে। এই সমুদ্রে ইংলণ্ডের অধুনা দুইতম হাজার আফ্রিকার হাজার একতম হইয়াছে।

লোহের নৌকা।

ইংলণ্ডে এক নৌকা কেবল লোহেরে নির্মিত হইয়াছে। সে তিন হাত লম্বা ও নাত জয় হাত ডোঁতা তাহার মধ্যে কতক লোকের নাই।

বাহুর আহাজ।

ইংলণ্ডে এক বাহুর আহাজ এক মাসের আহাজ প্রাপ্ত করিয়াছেন। সে আহাজ বেশ বাহুর আহাজ চলে তাহারে পালের প্রয়োজন নাই। এই আহাজ বাহুর আহাজ লোহেরে নির্মিত হইয়াছে। তাহারে পালের প্রয়োজন নাই।

বাহুর আহাজ আহাজ চলে নাই কেবল নৌকা চলাইয়াছে। আহাজের দেশে কোন বাহুর নৌকা জয় প্রাপ্ত হইয়াছে। তাহারে পালের প্রয়োজন নাই। তাহারে পালের প্রয়োজন নাই।

ওত্তর কেন্দ্র দর্শনের ওয়ার।

আমরা ইহার বিষয়ে পূর্বে অনেক বিবরণ লিখিয়াছি। পৃথিবীর আকার কমলা লবঙ্গ মত গোল ও কমলা লবঙ্গ মত গোল ও তাহারে পালের প্রয়োজন নাই। তাহারে পালের প্রয়োজন নাই।

দাঁড়ানু।

ইতালি দেশে দাঁড়ানু নামে এক বাহুর আহাজ প্রাপ্ত করিয়াছেন। সে আহাজ বেশ বাহুর আহাজ চলে তাহারে পালের প্রয়োজন নাই।

কলকাত্তা দর্শন।

কলকাত্তা দর্শন নামে এক বাহুর আহাজ প্রাপ্ত করিয়াছেন। সে আহাজ বেশ বাহুর আহাজ চলে তাহারে পালের প্রয়োজন নাই।

বাহুর আহাজ আহাজ চলে নাই কেবল নৌকা চলাইয়াছে। আহাজের দেশে কোন বাহুর নৌকা জয় প্রাপ্ত হইয়াছে। তাহারে পালের প্রয়োজন নাই। তাহারে পালের প্রয়োজন নাই।

জুলাই বাহিনী।

আটটার শত তৈম্ম মাল কোম্পানির বাহিনী নামে এক বাহুর আহাজ প্রাপ্ত করিয়াছেন। সে আহাজ বেশ বাহুর আহাজ চলে তাহারে পালের প্রয়োজন নাই।

আমেরিকা দেশ।

আমেরিকা দেশের মধ্যে তৈম্ম মাল নামে এক বাহুর আহাজ প্রাপ্ত করিয়াছেন। সে আহাজ বেশ বাহুর আহাজ চলে তাহারে পালের প্রয়োজন নাই।

সমাচার দপণ।

অতিশয় সহজ ও সুকরবার। সে কল
চলাইলে কর্ম শীঘ্র হয় ও যত কম
পণ্ড। ইংগুও ও আমেরিকাতে মকল
লোক দিবারাত্রি ওয়াগী করিতেছে। যে
কোন পুকারে নৃতন কলম্ভি করিতে
পারে ও নতুন কলম্ভি করিলে তাহার
দেয়যক্ষ লাভ হা।

যে কল আমাদের পূর্ন পুরুষেরা
মনেও ভাবেন নাই তাহা আমরা এখন
চকুরারা দেখিতেছি এবং বিশবৎসরের
পর এমত আশ্চর্য্য কলম্ভি হইবে যে
আমাদের মনে এখন আইসে না।

ইংগুও হইতে আমেরিকাগিমলশাল
পণ্ডিত।

আমেরিকা হইতে সমাচার আসি
আছে তাহাতে শুনা গেল যে ইংগুও
হইতে এক জন মাহেব একজন জন পরি
জন লইয়া আমেরিকাতে গিয়াছেন সে
খানে গিয়া বলের মধ্যে ওঠর ভূমি কি
নিয়া বাস করিবেন তিনি আপনাদের সহিত
কৃষ্টি কর্মের ঘাৰৎ বস্তু ও আট লক্ষ নগর
টাকা লইয়া গিয়াছেন। আমেরিকাতে
যেমত লোক বাড়ে এমত স্থান পৃথিবীর
মধ্যে পুণ্য আর নাই। আমেরিকার
এক পুবেশ পূর্ন কালে বন ছিল কিন্তু এক
মাহেব সেখানে গিয়া বসতি করিল
ও ভাবিল যে এখানে লিফনুবে বাস
করিত কিন্তু সেই পুবেশ এখন জিলা বর্ধ
মানের মত পুণ্য লোকেতে পূর্ণ হইয়াছে
ইহা দেখিয়া তিনি অন্য স্থান নিরাবিল
ভাবিয়া সেখানে গেলেন ও সেখানেও
এখন ঘটি হাজার লোক হইয়াছে।

জিলা বর্ধমান।

আটটার শত ওর ও চৌদ্দ মালে

অপুত বেলিমাহেব জিলা বর্ধমানের মক
ল বিবরণ অনেক ওয়াগী একজন করিয়া
ছেন সে এই। জিলা বর্ধমানের মধ্যে
জল নাই মকল স্থানেই বসতি আছে।
সেখানে দুই লক্ষ বাঘদি হাজার জয়
শত চৌত্রিশ ঘর আছে তাহার মধ্যে দুই
লক্ষ আটটার হাজার আট শত তিন্লি
ঘর হিন্দু। এবং তেতাঞ্জি হাজার
মাত শত একাশী ঘর মুসলমান। যদি
পুতিবাগীতে অনুমানে মাড়ে পাঁচ জন
মানুষ দিরা যায় তবে বর্ধমান জিলায়
মধ্যে চৌদ্দ লক্ষ চৌত্রাঞ্জি হাজার চারি
শত মাতাশী জন লোক আছে এবং
সে জিলাতে চকুরমু বার শত কোশ
আছে সেখানে মুসলমান অপেক্ষায়
হিন্দু পাঁচ ওন অধিক। সেখানে অনু
মান তাভালুমারে এই গিননাতে এত
লোক আছে।

| | |
|---------------|-------|
| বাহুল্য | ১০০০০ |
| ক্ষত্রিয় | ৯৭১ |
| ব্রাহ্মণ | ১০৩৯১ |
| বৈদ্য | ৪৪০৪ |
| কায়স্থ | ৮০৯৪ |
| গন্ধর্ব্ববলিক | ৫৫৫১ |
| কর্মসবলিক | ৬৩৩৬ |
| শর্ম্মবলিক | ৪৮০০ |
| অগ্ণিহারী | ৪৭৭৬৬ |
| মাল্যাহার | ৩৭৪৪ |
| নাগিত | ১৫৫০ |
| কুটুম্ব | ১০৭৪ |
| ময়ূক | ৪৭০৪ |
| তত্ত্ববাহ | ১৭৪০ |
| কর্মকার | ৩০১৩ |
| বাহই | ৫৭৬ |
| তাঁমুলী | ১৮৩৯১ |
| মদ্যোপ | ১০৭৪৪ |

| | |
|---|-------|
| গোশ | ১০৬৫১ |
| বৈকব | ৪৮৫৮ |
| মহন্ত | ৫৪ |
| তাট | ৭৩৩১ |
| পাঁচের | ৫৪ |
| বৈবজ | ৮০৬৩ |
| কৈবর্ত | ৯০০৩ |
| কর্ণবলিক | ১১০৫১ |
| কর্ণকার | ১৫০০ |
| তিলি | ৪৭৭০৪ |
| কলু | ৩৩৫৭১ |
| আলিগু | ১০৩০৮ |
| জুতায় | ১০০৩ |
| রক্ত | ৮১৮ |
| যোগী | ৩৫৩৩ |
| বাইতি | ৩০০৪ |
| মারখী | ১০০ |
| লোহার | ১৫০০ |
| বাগরী | ১৫০০০ |
| কোতাল | ১৫০০৩ |
| হাজী | ১৫০০০ |
| বাগরী | ১৫০০০ |
| মুলে | ১৫০০১ |
| মাল | ১৫০১ |
| চতাল | ১৫০ |
| ভোম | ৩১১৪ |
| শ্রুতী | ১৫০০ |
| মুতী | ১৮৮০৪ |
| অন্য দেশে পুরুষ অপেক্ষায় স্ত্রী লোকের | |
| সংখ্যা অধিক যেখানে বার পুরুষ সে | |
| খানে তের স্ত্রী কিন্তু বর্ধমানের মধ্যে স্ত্রী | |
| অপেক্ষায় পুরুষ অধিক যেখানে বিবাহী | |
| হাজার দুই শত চৌত্রাশী পুরুষ সেখানে | |
| একাশী হাজার এক শত ওনব্বাশ স্ত্রী | |
| ভাগিহান লোকেরদের মধ্যে পুরুষ আর | |
| ফায় স্ত্রী অধিক কিন্তু সামান্য লোকের | |

সমাচার দর্পণ।

দেব মণ্ডো স্ত্রী অপেক্ষায় পুরুষ অধিক।

কলিকাতাতে তুলসের মূল্য বৎসরের

মধ্যে বিস্তর বিশেষ হয় না। কিন্তু বারী

নার পশ্চিম ভাগে পৌষ মাসে তুলসী তুল

মূল্য ও আশ্বিন মাসে অতিশয় দুর্মূল্য হয়।

ইহাতে সোধানকার মহাভক্তেরা ততি

শয় ভাগ্যবান হয়। আশ্বিন মাসে যখন

কৃষ্ণকোরা আপন পরিজন পোষকের নিমিত্ত

ও ক্ষেত্রে বুলিবার বক্তের নিমিত্ত তাহার

দেব অতিশয় পুন্ডোজন হয় তখন মহা

জনেরা অধিক মূল্যে ধান্য বিক্রয় করে

ও তাহার মূল্যে ধান্য লইবার ক্ষমতা

পৌষ মাসে কলিকাতায় যখন পৌষ মাসে

ধান্য অনেক তখন মহাজনের দোলা

পৌষ না করিয়া অন্যত্র বিক্রয় করিতে

পারে না। পৌষ মাসে তাহারদের আপন

কার্য্য সাধনের নিমিত্ত ধান্য বিক্রয় করা

র আবশ্যক অতএব তাহার তুলসী মূল্য

ধান্য বিক্রয় করে এবং মহাজন লোক

সেই সময়ে তুলসী মূল্যে ধান্য ক্রয় করিয়া

রাখে।

—

শ্রীত রিক্লেম সাহেব।

সূর্য্য কৌমল্যের অন্তর্গত শ্রুত

রিক্লেম সাহেবের ইংলণ্ডে যাত্রা করি

বার পূর্ব্বে গত শনিবার রাত্রিতে কলিকাতার

তার বণিজ্যকারি সাহেবেরা ভৌন

হলে তাঁহাকে আত্মন করিয়া ভোজন

করাইলেন ও সেখানে বেতশত সাহেব

লোক একত্র ভোজন করিলেন ও নান

প্রকার আয়োজ করিলেন গত যাত্রার

বার শ্রুত রিক্লেম সাহেব কলিকাতা

হইতে পুদান করিলেন ও তাহার পদ

সারে মোক্ষ কলিকাতার গাভে ভো

হইল।

—

কলিকাতার আহাজ।

। আনুসারিতে কলিকাতায় নানা ভাড়া

লোকেরদের একশত একত্রিশ তাহার

জিল তাহারদের মধ্যে শ্রুত কোম্পানি

বাহাদুরের তিন আহাজ ও ইংল্যান্ড অন্য

লোকের পণ্ডিত ও এতদেশে গঠিত হইয়া

ভাড়া ঘাইতে পুস্তক ও পণ্যপত্র ও এত

দেশে গঠিত তাহার ভাড়া না হইয়াছে

এমত একত্রিশ ও আনুসারিতের জয় ও

আট ও আনুসারিতের জয় ও স্মিয়ারদের

এক ও পোষ্যগণেরদের চারি ও দ্বিমা

বেরদের এক ও আনুসারিতের তৈশি।

—

পশ্চিম দেশের সম্রাট।

গত বৎসরে যখন মহারাষ্ট্রেরদের

সহিত ইংল্যান্ডেরা যুদ্ধ করিলেন তখন

যে সময়ে বড় যুদ্ধ হওয়াতে তাহার

গিকে ইংল্যান্ড যুরোপীয়দের সে এখন

এক বৎসর হইল এবং যে দিনে সে

নে বড় যুদ্ধ হইয়াছিল এবং বৎসর

সহিত সেই দিনে মাদ্রাজ ও নাগপুর

বড় যুদ্ধের মধ্যে হইল। নাগপুর

আটার শত মতের মালে ও লেঘের

শ্রুত আশা সাহেবের সহিত যুদ্ধ হইয়া

তিনি তাহারদের সহিত পরাজিত হইলেন।

ঐ তার মধ্যে তাহার পর বৎসরে নাগ

পুরতে বড় যুদ্ধ হইল এবং যে দুই

পর্বতে যে তার মধ্যে পূর্ব বৎসরে যুদ্ধ

হইয়াছিল ঐ তার মধ্যে ঐ পর্বতে নানা

প্রকার রৌশনাই করিল যেহেতু ঐ

কন কম্পেই ইংল্যান্ড সেনাপতিদের

সাহস বৃদ্ধি হয়।

—

ইংল্যান্ডের দেওয়া যন্ত্রোক্ত।

অনেক লোকের জীবন নান্নিম কোম্পানি রোজ ও তারিখ

নগর মারিক শীতের তপস্বী নগরোত্তর বারী আহার কার

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

কোম্পানির নগরোত্তর কোম্পানির পুস্তক নান্নিম কোম্পানির

এই সমাচার দর্পণ শ্রীমামুন্দের জাণাখানাতে প্রতিমস্তাহে শনিবারে জাণা হয়। যাহার লওনের আবশ্যক থাকে তিনি শ্রীমামুন্দের জাণাখানাতে আপন নাম পাঠাইলে সমস্তাহে কাগজ তাহার লিখিত পাঠান যাবেক তাহার মূল্য মাসে এক টাকা। যিনি স্বাস্থ্য

সমাচার দর্পণ

৩৭ নং খণ্ড।

শনিবার। ৩০ জানুয়ারি মন ৪৮১৯। ৪৮ মাস মন ৪১২৫।

দর্পণে মুখ্য মৌল্যবান্দিব কার্যবিবরণঃ। বৃত্তান্তনিহি জনিত সমাচারমা দর্পণে।।

সমাচার দর্পণ।

কৌশলিয়ার কাণ্ড।

কৌশলিয়ার শতকরা জয় টাকার মুদ্রের কাণ্ড। কয় করিতে হইলে শতকরা টারি টাকার আট আনা তিনশোভ। বিসয় হইলে শতকরা দাঁড় টাকার আনা তিনশোভ।

মস্তাহার পঞ্জিকা।

| ৩০ জানুয়ারি | শনিবার | ১৮ | মাস প্রপঞ্জী |
|--------------|-------------|----|--------------|
| ৩১ | রবিবার | ১৯ | ২ |
| ১ | সিদ্ধিয়ারি | ২০ | ৩ |
| ২ | ২ | ২১ | ৪ |
| ৩ | ৩ | ২২ | ৫ |
| ৪ | ৪ | ২৩ | ৬ |
| ৫ | ৫ | ২৪ | ৭ |

দক্ষিণ আমেরিকা।

দক্ষিণ আমেরিকার এক প্রদেশের নাম শিক তাহার মর্যাদা স্বর্ণ ও রৌপ্যের অতিমুদ্রার আকার আছে সে আকার হইতে পুতি বসন্তের দুই কোটি টাকা ওৎপন্ন হয় কিন্তু তাহার হারা সে দেশের, তাদেক ওৎপন্ন হয় না। যেহেতুক যেখানে বিনা ওৎপাদে বিনালাভ হয় সেখানে লোক রা দিবা বিবেচনাতে ব্যয় করে কিন্তু যেখানে লোকেরা অনেক আয়্যাসে বিনো পার্জন করে সেখানে লোকেরদের মল দ্বির থাকে ও বিবেচনা পূরক ব্যয় করে। প্রায় চারি বসন্তের হইল ইওরোপের মর্যাদা

যুদ্ধ নিবৃত্ত হইয়াছে এখন কেবল দক্ষিণ আমেরিকাতে যুদ্ধ আছে ইহাতে ইওরোপীয় তাবৎ লোকেরদের দুষ্টি সেই যুদ্ধের ওৎপরে আছে সেইখানকার লোকেরা স্বাধীন হইতে বাসনা করে এবং কলিয়ারা অভিলষ করে যে যেমত দিন শত বসন্তের পূর্বে সেলোকেরা তাহার দের অধীন ছিল এখনও তাহার সেই মত অধীন হইয়া থাকে এইপ্রযুক্ত ওৎপদের যুদ্ধ হইতেছে। দক্ষিণ আমেরিকাতে অনুমান দুই কোটি লোক আছে এবং তাহারদের নহিত বানিজ্য করিলে অন্য দেশী লোকেরদের বানিজ্য বৃদ্ধি হইতে পারে যেহেতুক সেই দেশে টাকা অনেক আছে কিন্তু দুঃবার অভাব অতএব সে দেশে যুদ্ধাদি নিবৃত্ত হইলে অন্য দেশ হইতে দুঃবা লইয়া সেখানে গৌলে অনেক লাভ হইতে পারে ইহাতে ওৎপদ দেশের ওৎপন্ন হইবেক।

বিবাহ।

কএক দিবস হইল কলিকাতার মর্যাদা এক বড় বিবাহ হইয়াছে তাহার বিবয় আমরা শুনিয়াছি যে সে অতিসমারোহ ও অনেক পুকার রৌশনাই হইয়াছিল এবং কলিকাতায় ও তাহার চতুর্দিক দৈনন্দিক লোকেরা দেখিয়া অপর্যায়নোর যুগ করিয়াছে। ও তাহাতে মত লিন নাচভূতি অতিমুদ্রের হইয়াছিল। এই বিবাহের পূর্বে শুনা গিয়াছিল যে বর কর্তার কোনও অন্তরঙ্গ লোক পরামর্শ

দিয়াছিলেন যে রৌশনাইপুজিতে ব্যয় অনু করা যায় এবং যে দুষ্টি যুদ্ধেরো অধিক বিনোতিবেরে বিবাহ করিতে পারে না। কিন্তু করিয়া তাহারদের বিবাহ দিলে অতিভালো হয়। বরকর্তা ও হা করিলেন না। যদি এই মত করিয়া আপন পুত্রের বিবাহ দিতেন তবে অতি মুদ্রের হইত যেহেতুক অনেক লোকের ওৎপন্ন হইত তাহারো বসন্ত বিনোতিবেরে বিবাহ করিতে পারেন না। তাহারদের এত বিনোপার্জন কোথায় হয় এইপ্রযুক্ত অনেকের বিবাহ হয় না। যদ্যপি তাহারো হয় তথাপি তাহারো অতিক্রমে ভূম্যাদি বসন্ত দিয়া স্বর্ণ হারা বিবাহ নিবৃত্ত হয় পরে এই স্বর্ণহার্য আশেব ধ্বংস হয়। যদ্যপি এমন দুই তিন শত লোককে ডাকিয়া তাহারদের বিবাহ দেওয়া যায় তবে এ দেশের অনেক ওৎপন্ন হইত। যদি বর কর্তা সুখ্যাতি চাহিতেন তবে এমত কর্ম করিলে তাঁহার নাম ও এই বিবাহের নাম অক্ষয় হইত যেহেতুক রৌশনাইর গন্ধ যেমন আকাশে বিস্তরফল থাকে না তেমন লোকেরদের মনেও বিস্তরফল থাকে না যদি এমত দুষ্টি যুদ্ধেরদের বিবাহ দেওয়া যায় তবে তাহারদের বসন্ত যাবে। থাকিত তাবৎ এই কর্মের সুখী থাকিত। এই কথা লিখিবার পরে সমাচার পাওয়া গেল যে এই বিবাহে কলিকাতার জেট অধ্যাপক জেলের কএদা অনেক দুষ্টি লোকেরদিকে আপন বিনোতিবেরা মুদ্র করিয়াছেন এ অতি ওৎপদ কর্ম এই কর্মের

সম্রাটের দণ্ড।

অন্য প্রথম ও দ্বিতীয় সপ্তাহের।

শ্রীশ্রীযুত দিনামহারী বাদশাহের তন্ময় দিন
পর্যন্ত ১৮ আনুষ্ঠানিক তারিখে শ্রীশ্রীযুত
দিনামহারী বাদশাহের তন্ময় দিন সেই দি
নে শুভকাল এক প্রকার প্রত্যেক বার
১৭ তোল হইয়াছে ও এখন পর্যন্ত হই
য়াছে। দিনামহারীর এই ব্যবহার
আছে যে তাহারদের বাদশাহের তন্ময়
দিনে ও বাদশাহী কোন কর্মে ১৭ তোল
হয় কিন্তু ইংরাজী বাদশাহের তন্ময় দিন
ও বাদশাহী কোন কর্মে ১৭ তোল হয়
এই মত ব্যবহার আছে। এবং অশ্রী
যুত বক সাংহের বিষয়ে তোল করিতে
হইল ১৭ তোল হয় শ্রীযুত সুমিহ কে
রোর প্রিন্স অতঃ পরে ও প্রিন্স সেনা
পতির বিষয়ে ও বাদশাহী আনুষ্ঠানিক
দিন অধিকারে ছিল ১৭ তোল হইয়া
থাকে। সুমিহকেরোর সিংহ ও তৃতীয়
অতঃ পরে বিষয়ে ও সুমিহকেসনের অস্ত
গত লোকের বিষয়ে ও অলেকসান্ডারের
বিষয়ে ১০ তোল হয় এই মতল তোল করা
কেবল সম্রাটের এবং ইহার নাম আন
যায় যে প্রত্যেক আসের পরেই প্রিন্স
কি বৈলকলা শ্রীশ্রীযুত যুবরাজ বিশেষ
করিয়া প্রত্যেক আসের পরে বিশাণ বরি
য়াছেন।

গঙ্গানগর ও নদী।

গঙ্গানগর ও নদীতে যে কর্ম হইতেছে
তাঁহা অতিশয় উল্লেখ্য আন হয় যে
অতিশয় সম্রাট হইবে ও যে মতল
বাদশাহের ভয় পূর্ণ নদী গিয়াছিল
তাঁহা সম্রাট লুণ্ঠ হইতেছে। যে কোন
স্থান প্রথম পরিদৃষ্ট হইবে সেখানে গী
তিত লোকেরদের কাণে এক ঘর গুহা
পুস্তক করিতে সাংহেরদের ইচ্ছা আছে

এবং সাংহেরদের তাহার আসন আছে
যে সেখানে এক তেলপুত্র বসান যায়
যে সেখানে হইতে সম্রাটের শত্রু কলিক
তাঁহা বিষয়ে। সে তিনটি হয় তাহার
হারা আট মিনিটের মধ্যে গঙ্গানগরের
সম্রাটের কলিকাতার বিষয়ে ও কোন
আজ্ঞা সেখানে পরিচিহ্নিত তাম্র
তাঁহার সম্রাটের কলিকাতার বিষয়ে
ইহাতে বাঁজের অতিশয় ওপার
হইবে।

বেলাপাট।

শেষ সম্রাটের আন গোল যে
বেলাপাটের ক্ষয় রশ লক্ষ টাকার অল
কর কোন ব্যক্তিদের করিয়া লইয়া গিয়া
ছে ও বেলাপাটের পুস্তকে বই করিবার নি
মিত পোষ্ট ছুই মারিয়াছিল কিন্তু পো
ষ্টের মধ্যে পুস্তক না করিয়া এক পুস্তক
গত হইল তাহাতেই ক্রিয়াল সেই
বালক পুত্র আট বৎসরকে তাহার
বিষয় অতি সুন্দর সম্রাটের শ্রুতি ঘাই
তেছে। এই বালক ও তাহার মাতা ইও
রোপের মধ্যে তরফি দেশে আছে কিন্তু
বেলাপাট দেখান হইতে এক হাজার
কোণ অল্পের এক ও দাঁড়ি বদর
আছেন। তাঁহার এমত ভরদা নাই
যে তিনি সেখানে হইতে কখন খালান
পাইবেন। ইহার বিষয় এই যেদ হয়
যে তিনি আপন স্বাধীনকে দেখিতে
পাইবেন না।

নদী নদীতীরের সম্রাট।

৭ আনুষ্ঠানিক তারিখের সম্রাটের নদী
বা তীরে হইতে আসিয়াছে যে হিন্দু
বাদ ও গারবোনা এই দুই শব্দের মধ্যে
যে গা আছে সেখানে গোল লোকের
বক ওপার করিতে ও তাহারালার

দিকের নিতা মারিতেছে কিন্তু শ্রীযুত
করল তাহারমত সাংহের তলক নৈনা
লইয়া তাহারদের মনোমত গিয়াছেন।
যখন গোষ্ঠী গচ্ছ হইতে শ্রীযুত লে
ফেল্ড প্রিন্স সাংহের তিন হাজার গোল
লোকের বাক্যে তাহা হইয়া দিলেন তখন
তাঁহার শ্রীযুত করিতে রাবর্তন সাংহে
রের ওপার আহমদ গিয়ে করিতে নদীর
উন সাংহের হেলখাতের যোক্তকো
রোপের মধ্যে তাহার দিককে ছাড়া করিয়া
বিস্ময় গিত এই গুহা তিন আপন
আজ্ঞা বালক শ্রীযুত করল তাহার
সাংহের সেখানে অনেক নৈনা পাঠাই
তেছে তাহাতেই তাহারদের সাংহের
হইবে।

শ্রীযুত শাহশুজা।

সম্রাটের শ্রুতি গিয়াছে যে শ্রীযুত
শাহশুজা তরফি কাবোলে গিয়াছেন
নাই কিন্তু ঘাইতেছেন। বহরানপুরের
রাজা শ্রীযুত বহরানপুর লুণ্ঠাল শাহ
শুজার টাকার জিল কিন্তু এখন পরাক্রম
হইয়াছে তাপন আপন শ্রীযুত হুসৈবের
বিষয় হয় নাই। এই শাহ শুজার সাংহে
ঘায়ে আপন অনেক নৈনা তাহার
সঙ্গে গিয়াছে সে নৈনা গত প্রদেশে নদীর
ও বটক নদী পার হইয়া কাবোলের দূর
নিবর্তে ঘাইতেছে। মোটা তরফ
নিবর্তে শ্রীযুত কামরান শাহশুজার
মহিউ সুন্দর করিল কিন্তু শাহশুজা তা
হাকে সুন্দর পরাক্রম করিলেন এবং এই
সাম্রাজ্য আপন নৈনা সময়ে পরাক্রম
করিল।

শ্রীযুত রজিৎ-দিন-হাওয়াদুর।

আমরা পূর্বে লিখিয়া যে শ্রীযুত
রজিৎ-দিন-হাওয়াদুর আপন

সমাজের দর্পণ।

সৈয়দ লইয়া গেলেন তিনি এমন শীঘ্র
সে দেশে আসিয়া করিলেন যে আপন
নোরা তাহাৎ মুক্কাইল হইল কিন্তু যখন
তাহারা সেই মুক্কাইলতে গেল তখন
শিখেরদিগকে এমন মারিল যে শিখেরা
যেমন শীঘ্র আসিয়াছিল তেমন শীঘ্র
আনি দেশে পলাইয়া গেল।

রাজ কর্মে নিয়োগ।

শ্রীমত এন মালভর নাহেব পুনর্নির্ভর
কলেভর।

শ্রীমত আরতিবানু সের্বেল নাহেব
বন্দেলভেরে বান্দার কলেভর।

শ্রীমত ই আর বাহেব নাহেব যেদি
নাহেবের কলেভর।

শ্রীমত তামস বোন নাহেব বরেন্দর
হামালভেরে কর্তা।

শ্রীমত বেদির কত নাহেব মহামন
নিংহের কলেভর ইইগাজেল।

ফাল্ল কাগজ।

আমরা শুনিয়াছি যে শ্রীশ্রীমত সূর্যম
কৌশলের নাহেবেরা বাসনা করিয়াছেন
যে কলিকাতার মধ্যে সকল আনিংস ম
কল কর্মে ফাল্ল কাগজে নিয়া পড়া হয়
ও সূর্যম কোর্টের দরখাস্ত প্রভৃতি ফাল্ল
কাগজে হয়।

তুলা।

আমরা ইহার পূর্বে সমাজের দর্পণে লি
খিয়াছিলাম যে এই তুলাইতে অনেক
তুলা বৎসর অন্য দেশে যায় কিন্তু কে
বল এই বাইরাইতেই তুলা যায় এমন
নহে বোধইহইতেও তুলা অন্য দেশে যায়
সম্ভব শুনা গেল যে গত বৎসরে বাঘাই
ইহইতে এত তুলা অন্য দেশে গিয়াছে।

ইংলণ্ডে পঁচাত্তরই হাজার আট শত
গাঁটি। ও দুই দেশে মোট হাজার গাঁটি।
ও পোতুগীলে চৌদ্দ হাজার নয় শত
গাঁটি। ও আমেরিকা দেশে বত্রিশ হাজার
নয় শত গাঁটি। এ টিন দেশে পঁচাত্তর
হাজার এক শত গাঁটি। সকল স্থান দুই
লক্ষ চৌদ্দশ হাজার মাত শত গাঁটি।

রাজ্যে বালক সেন শিবসিংহ যন্ত্রিকা এক হাজার পঁচাত্তর দুই
শত মাত্র ভক্তিগণের। ও তাহা পঁচাত্তর পঁচাত্তর
দুইশত সেন আনিংস বিনামূল্যে দিতে না পারিলে সাইর
জনে অসমর্থ এক এক পেরিয়ারসেন দে এই।

শৈত্যালম গুণ্ডারব সহস্র হাজা
বিকী স্বভূতঃ হিংস্রাণ্ডা শুভি ভবতি
শুভয়ঃ কুশল যম্যগণঃ। হিংস্রাণ্ডা
কাম্যমি তে কৃতিগণঃ স্বা অবিদ্যা
অবলম্ব্য কুশলকলমে গচ্ছসি পরঃ
কস্মিন্ নিমেষকুঃ ক্ষমঃ।

পট।

তোমার স্বভাবনিম্ন শীতলতা গুল।
নির্মলত। তোমার যে স্বভাবে অনুন্ন।
পবিত্রত। তব সে বাসের অগোচর।
তোমা দূর্গ করিলে গমিত্র হয় নয়।
কি স্তুতি করি জন ভীরের অবল।
তুমি নাচগীয়াই হইলে কে করে বারণ।

হরামলোর ওয়াহ ওয়াহ করিলেন।

ডাণা লাগাওতুলা নত কৃষ্ণা বীলা নবী
ডাণা স্বচক্ৰমহারি কদম্ববলঃ কা নামি
কেন্দ্রার্থ। দুর্গোক্ষিত করণে হস্ত ক
রিনঃ দুর্গা নবা প্লামী পুত্রকো মধুপৈর
কারণমহো স্বাকারকোলাইলঃ।

পট।

না গেল তবু ডাণ তুলা না মূল।
শরীরে যেমন বীলা তেমন রহিল।

বহুদন হইবে কিনে ম্যালভকন।
সীতাকথ্য কোথায় হইবে মণ্ডন।
হাট বিস্তার করিয়া দূরে কর।
পদ্মিনীকে কুশল করি করিবর।
মধুকর মধুপৈর হইয়া বিভূষ।
তাকারন করিল স্বাকারকোলাইল।

সহস্র সেন আনিংস ওয়াহ করিলেন।

পদীরামসুখ্যঃ ভবতি বিতরণী বাপি ম
হতঃ তপস্বীঃ পুণ্ড্রিয়ারঃ হরতি মহিমামন
সনরবঃ। তুলাইনিমানি পুণ্ড্রিয়ারঃ
তালেশবতমোঃ যবক্কাহ তেজো নহি
ভবতি কল্যাণীতবতঃ।

পট।

সত্য কিম্বা মিথ্যা যদি পদীরাম হয়।
অনরবে মহতের হয় তেজঃক্ষয়।
কল্যাণি গমন করিলে মিলকর।
লোকে বলে কল্যাণিত হইলেন ভাকর।
এই মিথ্যা অনরবে হয় তেজোহানি।
পদীরাম করিতে তুলা যান মনে মানি।
তুলাতে শুভার রহি হইলে পরে আর।
তথ্যনি তেমন তেজ না হয় তাহার।

হরামলোর পুত্রক।

সূর্যম কোর্টায়তঃ কাম্যমি কলক্ষ
কলিকা বিদ্যাতুদোয়াইয়ঃ নত গুলনিই
স্তন্য কিম্বা। ম কিং নাত্রে পুত্রো ন কি
মু হরতুর্গুনমির্নিবা হস্তি গুলঃ জা
দুর্গার কিম্বা ন বসতি।

পট।

সূর্যকর কলক্ষলার যে আধার।
এ ঘোষ তাঁহার নহে ঘোষ বিদ্যার।
তিনি কি নহেন অস্ত্র মুনির সন্তান।
জগতের ঙ্গারে কি নহে তাঁর স্থান।

সমাচার দর্পণ।

অজ্ঞানকার-সংহার কি না করেন তিনি।
তিনি কি নহেন চন্দ্রবুজ দুঃখিনি ॥

সমহারণ।

সমহারণ শ্রুতি গৌল যে মোক্ষ কাশী
তে সমহারণোদাত। এক হ্রী তিতারোহিন
করিয়া আশ্রিত পুত্রদির সুখ দুঃখ কিম্বা
অপিতৃক। অমহিষতাপুত্র তিতাহইতে
গলিতে পড়িল তাহাতে তাহার কণ্ঠ
ও কটন লোকের। তাহাকে বহিরাগ্নি পূর্ব
চিতার নিকটে অনিল কিন্তু সে হ্রী
তখন সমহারণে লিখিত অমমতা হইল।
ইহা দেখিয়া গোবীন্দর তাহাকে
ঘরে পুত্র হইল।

শীত।

হিম্মানে অন্যত্র বৎসরহইতে এই
বৎসর অধিক শীতালুভর হইতেছে।
ইংল্যান্ডেরদের এক যন্ত্র আছে তাহাতে
শীত ও গুণিয়ার পরিমাণ বরা যার সে
যন্ত্র পারাবলিত ইংলান্ড গুণিয়ার হইলে
ওক্টে ওক্টে শীত হইলে লীট নামে
ও সেই যন্ত্রের গার বরাবর ও অর্ধ ১২
পার্বত অর্ধ দেওয়া আছে সেই অক্ষের
চারা শীত ও গুণিয়ার নিম্নের পরিমাণ
আনা যায়।

এই বৎসর এমন শীত হইয়াছে যে এক
দিন অতিশীতের এই বছর পারা নীচে ৪৪
অর্ধ পার্বত নামিয়াছিল এবং জৌলুর
হইতে বস্ত্র আনিয়াছে যে সেখানে ই
যন্ত্রের পারা ৩০ অর্ধ পার্বত নামিয়াছিল
এবারে এমত শীতের দু বৃত্তির যেসবিকা
তার নিমিত্তে কোম্পানির বাণীনে শীত পু

মুক এক পুষ্করিনীর খানিক অল অমিয়া
পাখির হইয়াছিল।

লণ্ডন নগরের বিবরণ।

ইংল্যান্ড দেশের রাজধানী নগর লণ্ডন।
ইংল্যান্ডের সকল নদীহইতে পুঙ্খিন তেমন
তাহার। তারে ই লণ্ডন নগর ঘূর্ণিত
আছে। রোমানেরা যখন ইংল্যান্ড তর
করিয়া আসনারদের তখন নরিন তখন
এ ই নগরের নাম লন্ডন ছিল কিন্তু
এক সময়ে বৎসর হইল ইংল্যান্ডের অতি
বড় মাদারাজ আনন্দেতা অধিকার
অধি সে নগর ইংল্যান্ডের রাজধানী
হইল। গত দুইশত বৎসরের মধ্যে
লণ্ডন নগর দুই তিনগুন বর্ধিত হইয়া
ছে। সে সময়েই হইতে বিশ কোশ অস্তর
ও তিন ভাগে বিভক্ত তাহার দুই ভাগ
তেমন নদীর দুই ভাগে এক ভাগ
স্তর ভাগে। লণ্ডনের দুইটি মাঝে
তিন কোশ তাহার তত্ত্বতা মস্ত
মমান নহে কেন হলে এক কাশী কোন
হলে দুই কোশ তাহার নয় অতিশীত
আমত পুণ্যদী অন্য নগরের পথহইতে
সেখানকার নয় মর্হেপকারক সেখান
কার পুষ্করিনীর তিন ভাগ আছে যশী
খান বৎসর পুষ্করে গুণিত সে কেবল
ভোগ ও গাভীটনের নিমিত্ত ও ওয়
নাশ্বত অতিশীতের পুষ্করে গুণিত নয় সে
কেবল মনুষ্যদের লিবার সাধন।
সেই ওয় নাশ্বের পথের নীচে বড় নর
দুখিয়া আছে তাহার দ্বারা নগরের মল
তেমন নদীতে পড়ে। লণ্ডন নগর
রে অতি হাজার রাশা ও গলি পুজিত
আছে।

ইন্ডোহার দেওয়া ঘাইতেছে।

অনেক লোকের অশীল সানিল জেলায় গৌর ও ভারি
সকল মাঝে গীতে তপসীল সানিলের বাকী আদায় করে
পুষ্কর মাঝে সানিলের বিস্ত হইতে। অর্থাৎ অশীল ইন্দো
চত বোস্ত্রিকনু লেট্রিকনু মস্তমারাজ অমরা জেলায়
কালকট্রি কালকট্রি মালু হইতে।

দেখিলে বৃহত্তর ১৮ মাসের ১৮ ১১ ই ৬ টম
ল ১১ ১১ ১১ বোস্ত্রিকনু লালুটার মস্তমারাজ।

টাক-এট্রিকনু বৃহত্তর ১৬ বিবরণ ল ১৮ ১১ ই ১৬
মাসের ১১ ১১ ১১ কালকট্রি কালকট্রি।

দেখিলে বৃহত্তর ১৮ ১১ ১১ বিবরণ ল ১৮ ১১ ই
৬ টম ল ১১ ১১ ১১ কালকট্রি কালকট্রি।

ইতি ১৮ ১১ অস্তর ল ১৮ ১১ ই বোস্ত্রিকনু মালু।

অনেক লোকের অশীল সানিল জেলায় গৌর ও ভারি
সকল মাঝে গীতে তপসীল সানিলের বাকী আদায় করে
পুষ্কর মাঝে সানিলের বিস্ত হইতে। অর্থাৎ অশীল ইন্দো
চত বোস্ত্রিকনু লেট্রিকনু মস্তমারাজ অমরা জেলায়
কালকট্রি কালকট্রি মালু হইতে।

দেখিলে বৃহত্তর ১৬ বিবরণ ল ১৮ ১১ ই ১৬
মাসের ১১ ১১ ১১ বোস্ত্রিকনু লালুটার মস্তমারাজ।

দেখিলে ও দেখিলে ও দেখিলে বৃহত্তর ১৬ বিবরণ ল
১৮ ১১ ই ১৬ মাসের ১১ ১১ ১১ কালকট্রি কালকট্রি।

ইতি ১৮ ১১ অস্তর ল ১৮ ১১ ই বোস্ত্রিকনু
মালু।

অনেক লোকের অশীল সানিল জেলায় গৌর ও ভারি
সকল মাঝে গীতে তপসীল সানিলের বাকী আদায় করে
পুষ্কর মাঝে সানিলের বিস্ত হইতে। অর্থাৎ অশীল ইন্দো
চত বোস্ত্রিকনু লেট্রিকনু মস্তমারাজ অমরা জেলায়
কালকট্রি কালকট্রি মালু হইতে।

দেখিলে বৃহত্তর ১৬ বিবরণ ল ১৮ ১১ ই ১৬
মাসের ১১ ১১ ১১ বোস্ত্রিকনু লালুটার মস্তমারাজ।

দেখিলে বৃহত্তর ১৬ বিবরণ ল ১৮ ১১ ই ১৬
মাসের ১১ ১১ ১১ কালকট্রি কালকট্রি।

দেখিলে বৃহত্তর ১৬ বিবরণ ল ১৮ ১১ ই ১৬
মাসের ১১ ১১ ১১ কালকট্রি কালকট্রি।

দেখিলে বৃহত্তর ১৬ বিবরণ ল ১৮ ১১ ই ১৬
মাসের ১১ ১১ ১১ কালকট্রি কালকট্রি।

দেখিলে বৃহত্তর ১৬ বিবরণ ল ১৮ ১১ ই ১৬
মাসের ১১ ১১ ১১ কালকট্রি কালকট্রি।

এই সমহারণে দুই জরামপুরের জাশীনাতে প্রত্নমস্তাহে শনিবারে জাশী হয়। তাহার লণ্ডনের আশ্রয় থাকে তিনি জরামপুরে
জাশীনাতে আশীল নাম পাঠাইলে মস্তাহে কণিচ তাহার নিকটে পাঠান যাবে তাহার মূল্য মাসে এক টাকা। যিনি স্বাহ
করিয়াছেন যিনি তাহার নিকটে না পৌঁছিতে পারে তিনি জরামপুরের জাশীনাতে মস্তাহে কণিচ তাহার নিকটে পাঠান যাবে।

সমাচার দর্পণ

৮৮ নং

শনিবার : ৬ ফেব্রুয়ারি মন ১৮:১৯। ২৫ মাস মন ১২৫।

দর্পণে মুখ্য বৈশিষ্ট্যবিশিষ্ট কার্যবিবরণ : স্বাধীনতা আন্দোলন সমাপ্তি

সমাচার দর্পণ।

কল্যাণীয়া কাগজ।

কল্যাণীয়া শতাব্দী জয় উপলক্ষে শতাব্দী জয় করিতে হইলে শতাব্দী জয় উপলক্ষে। বিজয় করিতে হইলে শতাব্দী জয় উপলক্ষে আদি আদি ভিত্তি।

সংবাদ পত্রিকা।

| | | | | |
|---|---------------|-------------|----|-----|
| ১ | ৬ ফেব্রুয়ারি | শনিবার | ১৫ | মাস |
| ২ | ৭ | রবিবার | ১৬ | ২ |
| ৩ | ৮ | সোমবার | ১৭ | ৩ |
| ৪ | ৯ | মঙ্গলবার | ১৮ | ৪ |
| ৫ | ১০ | বুধবার | ১৯ | ৫ |
| ৬ | ১১ | বৃহস্পতিবার | ২০ | ৬ |
| ৭ | ১২ | শনিবার | ২১ | ৭ |

আশীর্বাদ লুটন বস।

আমরা শুনিয়াছি যে ইংল্যান্ড দেশের এক নগরে এক ব্যক্তি এই মত এক ঘর সৃষ্টি করিয়াছে যে তাহার মধ্যে এক কল ঘুরাইল তাৎক্ষণিক কালই বসন্তের মাসের তাড়িয়া ও তিমি ও সূর্যের ওষধিও তাহার ও জোয়ার তাড়ির নিয়ম ও সূর্য্য কোল রাশি পূর্ণাঙ্গ করেন ও অন্য অনেক কর্ম্ম অক্ষম্য দেখা যায়।

মুজ।

লক্ষ্য নদীর নিকটে বহই গুম্বাহইতে সমাচার আনিয়াছে যে ইহার পূর্বে যে গোম্বাহ ও ঐতিহাসিক অনেক কালাবধি গোম্বাহ লুট করিতেছে তাহারদের ও

রে শ্রীযুত মেজর জনকেন সাহেব অকস্মাৎ আক্রমণ করিয়া ও নেককে মারিয়া তাহাশির অনেককে তাড়িয়া দিয়াছেন ও তাহারদের বর্ষি ও চাল ও তরোয়া প্রভৃতি অনেক অস্ত্র শস্ত্র হাতিয়া লইয়া গেলেন।

কুমুদী আর্মি মুখীন কৌশল।

কুমুদী কৌশলের অন্তর্গত শ্রীযুত রিক্ত সাহেব ইংল্যান্ডে গিয়াছেন তাহার পর ১৯ জানুয়ারি শুক্রবার শ্রীযুত জন আব্রাহাম সাহেব লিঙ্কন হইয়াছেন এবং সেই সময়ে সেই কর্ম্মের সমাপ্তি করিয়া তে হোণ হইয়াছে ও সেই দিলে শ্রীযুত আব্রাহাম সাহেবের যে দুই কর্ম্ম পূর্ণ জিল সেই কর্ম্ম এই দুই সাহেব লিঙ্কন হইয়াছেন শ্রীযুত বেলি সাহেব ও শ্রীযুত মেজর সাহেব।

গার্মানিয়ার ওষধি।

গার্মানিয়ার যে কর্ম্ম হইয়াছে তাহা যেদিবার কাল গণিত বৃদ্ধিবার কতক সাহেব লোকেরা দেখাশোনা গেলেন। তাহার আরলের লিষ্ট পীছজিবার্মা এক ভয়ানক বায়ু অরলহইতে বাহিরে আনি সে সময়ে গারি জন সাহেব এক ব্রজিলেন তাহারদের মধ্যে এক সাহেব ওলী মারিয়া বায়ুর ক্ষয় দেখে আঘাত করিলে ই বায়ু গণ্ডাইয়া এক নগর মধ্যে পড়িল সেখানে সাহেবেরা এক দুই ওলি মারিলেন কিন্তু সেখানেই

ই বায়ু ওষধি বনপুবেশ করিল ওমন মজা হইল ও শ্রীযুত সাহেবেরা তাহার নিকটে ঘাইতে পারিলেন না।

শ্রীযুত রামচরণাল মল্লিকের পুত্রের বিবাহ।

ই বিবাহেতে অনেক কার্যলি লোক তম্বারত হইয়াছিল তাহারদের বিবাহের সময়ে এক বাটীতে তাহারদিগকে পুরিতে দুই জন কার্যলি মরিয়াছে আর এক জন আঘাত হইয়াছে।

তাহার।

যোশ বিপ্লবের এক ব্রাহ্মণ কলিঙ্গ ইনবান জিল এক দিন হইল তাহার বাটীতে হস্তিতে অনেক ভাঙতি পড়িল এ বাটীর রক্ষক যে চৌকিদার জিল সে পুণ্যম অনেক পুকার তাহারদের সহিত যুদ্ধ করিয়াছিল পরে তাহাশির অন্তর্গত ইয়া পানয়ন করিলে সমুদায় তাহাতি বাটীর মধ্যে পুর্ণাঙ্গ করিয়া ই ব্রাহ্মণের যখনবর্ষ দুয় লইল পরে ই ব্রাহ্মণকে ধরিয়া জ্বাল ওষধিয়ারীতে জ্বাল দিতে লাগিল। ই ব্রাহ্মণ দাহজ্বালা সহিতে না পারিয়া আশ্রয় লভ্য পীছ হাতির টাঙ্গা যে জিল তাহাই ওষধিয়ারী ভাঙতি দিগকে দিল। তাহাতিয়া লইয়া পলাইল। ই ব্রাহ্মণ ইনপোর্টক এখন ওষ্যত হইয়াছে।

মর।

মোহাম কলিকাটার বাণিজ্যিক

সমীচীর দর্পণ।

দুর্গাচরণ মুখোপাধ্যায় মহাশয়ের আশ্রয়
পুত্র বাবু শিবচন্দ্র মুখোপাধ্যায় বিদ্যুৎ
কর্মকারী অনেকের ওপকার করিয়াছেন
ও আশ্রিত অনেক লোকেরদিগের গুণিত
পালন করিয়াছেন এবং আপনিও এইক
মুখোভোগী যথেষ্ট করিয়াছেন সঙ্গতি
ও মেধুআরি ১০ মাস সোমবার গুণিত
কালে তিনি জগদীশ বন্দরবয়স্ক হইয়া
পরলোকগন্ত হইয়াছেন তাঁহার কারণ
অনেকে শ্রদ্ধা করিতেছেন।

নয়মহর্ন।

কতক দিন হইল যোগে চন্দন নগরে এক
বর কল্যাণ বিবাহ সম্বন্ধ ঘিরে হইয়া পত্রা
দি হইয়াছিল বিবাহ মাসের দুই মাস
পরে হইবে এমন কল্প হইয়া আয়োজন
হইতেছিল বৈবাহিক বরের পাঁচ হইয়া
মুখ্য হইল পরে ঐ কল্যাণ বরের সহিত
সংগঠন করিল তাহারদের বিবাহার্থ
যে মাগণী পুস্ততা হইয়াছিল সে মা
গণীকতক তাহারদের আশ্রয় দিয়া
ও কতক শ্রদ্ধেতে ব্যয় হইল।

নন্দীমহর্ন।

৪৪ আনুআরি তারিখের পত্র হারা আন।
গেল যে শ্রীযুত কাণ্ডাল ওয়াটসন
সাহেব জয় শত গোদ লোকেরদিগকে
ভাড়াইয়া দিয়াছেন। পুর্বে আনুআ
রিতে তিনি শুনিয়াছিলেন যে গোদ লো
কেরা হিন্দুগণের নিকটস্থ গায়া লুট
করিতেছে ইহাতে তিনি আপন মন
সৈন্য লইয়া বার কোশপাশ্চাত্য তাহারদের
পশ্চাতে গমন করিয়া সেই গ্রামে পঁচ
জিয়া দেখিলেন যে তাহার মনুষ্য
গণ লুটফারা চিরভিন্ন করিয়া পলাই
য়াছে পরে ঐ কাণ্ডাল সাহেব আর দুই
কোশ পশ্চাত্য গিয়া দেখিলেন যে তাহার

একটা নানার ওপকার করিতেছে। সেখানে
কার ঘাট অতিবৃষ্টি এই নিমিত্ত পান
হইতে বিলম্ব হইল। তাহার ইংলণ্ডী
য়েবের সৈন্য দেখিবামাত্র পলায়ন
করিল। ইংলণ্ডীর সৈন্য পান হইয়া
তাহারদের পশ্চাত্য দৌড়িয়া মজা
কাল পর্যন্ত তাহারদিগকে মারিল তাহা
তে এক শত ত্রিশ লোক মারা পড়িল।
ইংলণ্ডীর সৈন্যের মধ্যে কেবল দুই তিন
জন মারা পড়িল ও আর দুই তিন জন
আঘাতী হইল।

শ্রীযুত গড বন্দর যখন পশ্চিম
দেশে গিয়াছিলেন তখন তাম্রশীল দুই
মুকুদি মিটাইয়া জানিয়াছেন কিন্তু এক
শত বন্দর তদাশি নে দেশে লুট বাব
নার দুখান কর্ম এই নিমিত্ত এখনও মনে
সেই দুই লোক কতক ভয় হইয়া
নে দেশে পদার্থ ও পুত্র তদমুখ্য
এক বার মনল শান্তি হয় না। তত
এই পশ্চিম দেশে দান ইংলণ্ডী
য়েবের সৈন্য ও সেনাপতিরা আছেন
যখন যেখানে কোন দুই লোকেরা লুট
ও চাকতি পুষ্টি করে তাহা শুনিবা
মাত্র ঐ সৈন্য ও সেনাপতিরা তৎক্ষণাৎ
সেখানে গিয়া তাহা নিবারণ করেন।

সে দেশে এই রকম আশঙ্ক্য যে স্বা
শ্রী লোকেরা লুট করে কিন্তু বিদেশীয়
লোকেরা তাহা হারু করে।

দিল্লীর ওকাল।

শ্রীযুত যোগে কাণ্ড সাহেব দিল্লীর ওকা
লতী কর্ম জাতিয়া শ্রীযুতের নিজের
সেক্টারি কর্মে নিযুক্ত হইলে দিল্লীর তা
বৎ ভাগ্যবান লোকেরা শ্রীযুত যোগে
কাণ্ড সাহেবের এক প্রশংসা পত্র লিখিয়া
ও তাহাতে সকলে স্বাক্ষর করিয়া যোগে
কলিকাতায় তাহার নিকটে পাঠাইয়া

ছেন এবং তিনি তাহার ওকাল ওক
পাঠাইয়াছেন।

পুর্নিত্যে বঙ্গদেশীয় মন্তাল হওয়ার ওকাল।

বঙ্গ মাস হইব জিন্দা পুর্নিত্য
যোগে গোয়ালপাড়াতে এক মাসের নীতি
জাতিয়া হার ওকালের পত্র করিল।
গুণিতকাল সকল লোক এখন হইয়া
মহানমোহে করিয়া মৃত্যুর ওকাল
অর্থাৎ হাত গড়ার ও এক হাত চোকা
এবং হাত লম্বা এক গাট করিল
ও তাহার ওকাল পাত্র বাস্তব জিন্দা
সেই গাটের ফেলিয়া দিন এবং যে ব্যক্তি
তাহারদের মন্তাল সে আশ্রয় আশ্রয়
হাত ওকাল হইতে ঐ গাট জিন্দা
করিল ও পুর্নিত্য করিল সময়ে ঐ মহন্ত
দুই তিনবার ওকাল করিল। তাহার
দেখিয়া সকল অশ্রম লোকেরা দাঁত
যে ঐ মহন্তের মধ্যে দেহের আশ্রয়
হইয়া পান তাহার মন্তাল লোকেরা
দুই তিন লোটা দুই চালিল এবং দুই
তিন লোটা অল চালিল ও দুই তিন জন
তাহার ওকাল করিল পরে হইল
বৎ বঙ্গ পত্র দুই তিন লোকের ওকাল
ভর দিয়া সেই অশ্রম ওকাল ঐ মহন্ত
গমনাগমন করিল। এবং সেই অশ্রম
পুর্নিত্য দুই তিন হাত ওকাল করিল
করিয়া তাহার ওকাল ঐ মহন্ত দাঁত
ইল। এবং বঙ্গা জিন্দা ওকাল
ও মহন্তের সম্মুখে দাঁত মন্তে দাঁত
হাতে করিয়া দাঁত হইয়া দাঁত হইল।
ঐ মহন্ত বাহকেরা ডাকিল সেই বঙ্গা
অশ্রম ওকাল দিয়া গিয়া পুণ্য করিয়া
সম্মুখে দাঁত করিল। ঐ মহন্ত তা
হারদের মন্তকে দুই চালিল ও দাঁত দিল
এবং আপন ইচ্ছা মন্ত এক ক্রিয়া দুই

সমাজের দর্শন।

কিন্তু তিন বক্তৃতাতে তাহারদের পুণ্ডরাকস
দিল। তাহার নিম্ন এই যে বাহ্যিক
যে কয়েকটা বক্তৃতা দেয় তাহার সেই
কয় মন্তান হয়। যে স্ত্রী মেথানে
ঘাইতে না পারে তাহার প্রতিশ্রুতি অন্য
সেই ঘাইয়া এই পুণ্ডরাক বক্তৃতা আনিয়া
তাঁহাকে দেয়।

ঐশ্বর্য কোল্লানী বাহ্যিকঃ।

এ দেশে সকল রাজস্বের কর্ম কোল্লানী
বাহ্যিকদের আভ্যন্তরে উপস্থিত
এই কোল্লানীর মূল বিবরণ অন্য
সকলের তত্তাবধায়ক তৎপুত্র তাহার
মূল মন্তকে আঁত করিবার নিমিত্ত নিম্ন
ঘাইতেছে।

এ কোল্লানী পুর্বে কেবল বাহ্যিকের নি
মিত্ত হির ইয়াত্রিলেন এবং এই দেশের
বাহ্যিক করিবার নিমিত্ত ইংল্লও দেশে
অনেক লোক আনিয়া তাঁহা এক মানে
যোজিত করিয়া ইংল্লওর পলিমেন্ট আ
র্দ্র মাহানতাইতে এই দেশের বহি
জের এক পরওয়ানা লইলেন এবং তা
হার তত্তাবধায়ক কোল্লানী নামে খ্যাত
হইলেন এবং এই সকল টাকারোলা লো
কেরা এক পুণ্ডরাক হইয়া এই বাহ্যিক তা
লাইবার কারন তঁহা লোকের দিকে
গমন করিলেন এবং অনেক কালব্যাপ্ত
এ কোল্লানী কেবল বাহ্যিক কর্মে রহি
লেন। পরে কালক্রমে এদেশীয় অধ্য
করেরদের বুদ্ধি বিবর্তন এই সকল দেশ
এ কোল্লানীর অধীন হইল তখন কোল্লানী
র পুণ্ডরাক দ্বারা দ্বির থাকিল এবং এই
কোল্লানী রাজস্বসন ও বাহ্যিক এই দুই
কর্ম চালাইতে লাগিলেন। এই তঁহা
অন লোক কর্মকারী ছিলেন তাহারদের
মধ্যে বৎসর এক জয় অন বলাই হইয়া

অন্য জয় অন তাহারদের মধ্যে ভাড়া
হয় তাহাতে তারি বৎসর তত্তরে এই তঁহা
অন পরিবর্ত হয়। যে অন কোল্লানীর
বাহ্যিক টাকারিয়া এক স্ত্রী লোক
পায় সে কোল্লানীর মধ্যে পলিত হয় ও
সেই লোক কর্মে তাহারদের কারন এই তঁহা
অনকে নিযুক্ত করে কিন্তু সেই বৎসর
বিক্রয় করিলে তাহার কর্তৃত্ব থাকে না
যে ব্যক্তি সে কাণ্ড কর বরেন সে এই
মুদ্রায়ের তত্তাবধায়ক হয়।

এ তঁহা অন সকল কর্মকার এবং
এই সকল দেশের সকল বিদ্যে তাহার
দেয় তঁহা। এতদ্ব্যতীত ও কল
ক্রি পুত্র তাহার কর্মে ও টাকারিয়া কর্মে
ও মুদ্রা যে সকল ইংল্লওর নিযুক্ত হইল
তাঁহারা এই তঁহা অন কর্মকারদের
মমতাতে পুত্র হইলেন এবং এই দেশে
আইলে ঐশ্বর্য তাহার দিকে হান
বিশেষে ও কর্মবিশেষে নিযুক্ত করেন এবং
এই তঁহা অন যে বস্তু এখন পাঠান এ
খানকার কর্মকারীরা তাহা হির করেন
এবং এখনকার কর্মকারীরাও যে কর্ম
করিয়া সেই তঁহা অনের নিমিত্ত আঁত
করেন তাহারও তাহা হির রাখেন।

অন্যান্য পুত্র বৎসর হইল ইংল্ল
ওর মাহানতা আঁত করিলেন যে এমন
এক মণ্ডুরা হির হইয়া কোল্লানীর
সকল কর্মের তত্তাবধায়ক এবং বাদ
শাহের পুত্র ও তাহার এই মণ্ডুরার
অন্তর্গত হইয়া থাকেন যেহেতু কো
ল্লানীর সকল কর্ম সেই ওজীরেরদের
চক্ষুরেণু হয় এই মণ্ডুরার নাম
তত্তাবধায়ক ও কোল্লানীর তাহা কর্ম
তাহারদের আঁতমার করা যায়।

এই দেশ কোল্লানীর অধীন হইয়া
ইংল্লওর বাদশাহের অধিকৃত আছে ও

ইংল্লওর মাহানতা বিবর্তন করিয়া
এই ইংল্লওর নিমিত্ত এই দেশ কো
ল্লানী হির সমর্থন করেন সেই বক্তা
বক্ত সময়ে এই দেশে বহু আদম হির
করিয়া আদম নামে বিখ্যাত হিয়া
এই ইংল্লওর বক্তা হির সেই কো
ল্লানী সেই ময়োর পর্যন্ত সেই আদম
আদমের কর্ম চালায়।

এ আদমের অধিক ও পর্যন্ত মো
কলিকাতাইতে অন্য দেশ এই সকল
বাহ্যিকের জিনিস গিয়াছে।

| | | |
|--------|------|------|
| তুর্কি | ৫৮৯৪ | গাঁট |
| চীন | ৫৫৭৬ | মোন |
| নীন | ৪৬৪৭ | এ |
| সোরা | ৮৯৯৪ | এ |
| আদি | ৯৪৯৬ | এ |

তাঁহা।

যেহুজারি মাসের ও তাহা এই এক শত
তারি তাঁহা গিয়াছে জিল।

আমেরিকা।

আমেরিকা পুর্বে নিলাম যে আমেরিকা
দেশে মণ্ডুরার বক্তা হইতে
এখন কারো শ্রম। গোল যে সেখানকার
পুত্র বাহ্যিকের নগরে দুই হাজার
লোকের অধিক এখন পুত্র হই
তেছে তাহাতে বহু হাজার লোক কর্ম
করিতেছে অন্যান্য হয় যে ৪৫ টাকার
করিয়া তাহারদের পুত্রকে মাহিয়ানা
দিতে হয় এই হিসাবে সেখান প্রতি
দিন ইয়ারতী কর্মে ঘাতি হাজার টাকার
ব্যয় হইতেছে।

রাজকর্মের নিয়োগ।—

ঐশ্বর্য বলাই বি বেদি সাহেব পুত্র
সেক্টারি।

সম্রাটের দর্পণ ।

ସ୍ବତନ୍ତ୍ର ନିର୍ଦ୍ଦେଶାବଳୀ ମାଧ୍ୟମରେ ପ୍ରଦତ୍ତ
ଓ ଶାସ୍ତ୍ରମାନଙ୍କ ଦ୍ବାରା ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ।—

ঐযুত মেজর জেনারেল সন্ন দেবির
আকর্ষণীয় সাহেব হোয়াং বিল্লাতে ইংরেজ
প্রিয়েরদের ওকাল :—

ଅବୁତ ଯଦ୍ବାତ୍ତ ହିକ୍ସେନ ମାହେବ ଯୁତ୍ତ
 ଶେଦାବାଦେ ମିଶ୍ରାବୁତର ଦାମ୍ବ ।—

ସ୍ମୃତ ମି ଟି ସେ କାଳ ନାହେଁ ଅତି
ସ୍ମୃତ ମି ତ ସେହିଠି ।

ଅସୁତ ଲବଣା ଦେହାନ୍ତ ନାଶୀ ହୁଏ ।
 ଦଣ୍ଡାନ୍ତ ନିର୍ମଳେ ।

सुखदः उत्तरः ॥

এই নষ্ট হইয়াছিল হইতে কোন দূরী
আহাৎ এই দোষ নষ্ট হইয়াছে হইয়াছে
কাজীরা নষ্ট হইয়াছে হইতে এক
আহাৎ হইয়াছে আহাৎ হইতে এক
মে তাহা হইয়াছে এক আহাৎ

ਭਾਗ ਦੇਵ : 1

এক বৃহস্পতিবার কোন বন্ধু মুক্তি গেলেন।
 ঘাটারদের মুক্তি সংগ্রহে হ'ল তাহারদের
 জন্মস্থান এক প্রকার ভাণ্ডার। কাঞ্চী
 লুট করিয়া এ ভাণ্ডার হইতে অনেক
 প্রকার দ্রব্য লইয়া ওহাইল যে তাহার
 নিকটবর্তী এক বুদ্ধি বহির যে তাহার বন্ধ
 সঙ্গসহিতে থাকিলে। পিতৃ সংগে তা
 হার ঘরে গেলেন যে মুক্ত হইলে তা
 হার কাঞ্চী তাহারই থাকিবে। কহা করিল
 নত্রে এ দুইজন্য সংগে কাঞ্চী তাহার
 ঘাটার কাঞ্চী করিল তাহারে তাহার পিতৃ।

इमुद्राः ।

জমাটার দেওয়া যাইতেছে।

১৫. জলজীবী প্রাণীর এলাকা

সময় কোৱালি। পুৱানী বুটীয়া যথো
 আতাৰাচীত মে' ১০ বন্ধা আমবাণীমন
 না আহাজ মোলতরন আইমে তাহা।
 নবপথে বিষয় ইহীকে নীচে দক্ষাৱতী
 নিমিত্ত মত আনিব।

ଉତ୍କଳ

৩০০ যোনি স্ত্রী ।

ਦਲ ਸੋਮਰ ਦਰਸ਼ ੬੦੩

১৫ম, এক টোকা ব্যয়নাও জামানত
 ১৬ শত ৪০ বৎস টাকার হিসাবে যান।
 ১৭ শত ৪০ বৎস টাকার ওপর দিতে হইবেক
 ১৮ বৎসের সময় দ্রাষ্টব্যকালীন তাহাতে
 কোন ক্ষতি হইতে পারে ই ১৮৫০ সালের
 বিধান হইবেক বিধান করিতে কোন
 কোনদান হয় তাহা প্রমাণিত হইলে
 দিতে হইবেক সুদান হইলে শ্রেণিক
 হইবেক।

[illegible]

৪ দয়া খুদায় মকলেক জাত করা
 ঘাইতেছে ঘদানি কেই নীলিয়ারে জি
 লিয় হুজি নি কারন মদ্রির নয়ে ডেই
 মদ্রাদার নিলিয়ার ডাংরা ইক্ক এক মা
 হার মাদী নাজীমিগিটো দরদার
 করিয়ে ডাংহকে মাদ্রিগিটো রেওর
 ঘাইতেক !

৫ দফা মঙ্গল।) নমুনা খাতাবাটীতে
ডায়েরী দেখিবে স্বল্পম বোর্ড আশ্রিত
একমণ্ডলটি এএর হৌন।

દત્ત ૧૭ આજ્ઞાપાલક ।

ইয়াহা'র দেওয়া যাইতেছে :

অনেক লোকের তরঙ্গিত মাঝি ডোলায় রোজ ও তরঙ্গিত
নদীর মাঝি নদীর তরঙ্গিত নদীর মাঝি নদীর
নদীর মাঝি নদীর তরঙ্গিত নদীর মাঝি নদীর
নদীর মাঝি নদীর তরঙ্গিত নদীর মাঝি নদীর
নদীর মাঝি নদীর তরঙ্গিত নদীর মাঝি নদীর

प्रमाणित करवावे १० नोवेंबर १९५५ ई. ७ दिवस
मस ११ १५ वा. १२ नोवेंबर १९५५ ई. ७ दिवस

[illegible]

(मदविष्णु दृष्टि) २०१३ १० मा १० ११ ई. ३ ई. २०
 ११ ११ ई. ३ ई. २० ११ ई. ३ ई. २०

[illegible][illegible]

१०५४ १० २७

[illegible]

सुभाषचंद्र बोस १८ मार्च १८९७ ई. ३ टि
मन ११ ई. ११ (मार्च ११) मंगलवार ११ मार्च १९४७

डिजिटल दस्तावेज़ १८-२०१८ मम १८-१९ ई० ३ देखें
१८-२०१८ कागज़ी कानूनी कार्य।

उडि उडिश्च पिटर (१२) मन १७ १७ ई. (१०) उडिश्च
पुनः ।

এই সমাচার বর্ণনা শুধুমাত্রের জন্য থাকতে প্রতিজ্ঞা হইল শনিবার জাণ হয়। বাহার লওনের আবশ্যক থাকে তিনি আরাম্য
 ছান থাকতে অংশ নাম পাঠাইল মস্তাহা, নগাঁও উইহার দিকট পটল যাবেক তাহার মুখা ঘাসে এক টোনা। যিনি স্বাস্থ্য

ଅନୁବାଦ : ଶ୍ରୀ ପ୍ରଫୁଲ୍ଲଚନ୍ଦ୍ର ମହାପାତ୍ର । ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟ ସମିତି ।

वसन्तस्य शुभं मानवाश्चिद कार्यादिउक्तानां दृष्टान्तादिह जानन्तु मयाऽहंमा प्रवर्त्तेन ॥

সমাচার দর্পণ ।

হেঁদাশিদি দা. ১২।—

কেন্দ্রীয় শতকরা জর টাকার সুদের
কমান্ডার করিয়ে হওয়া শতকরা মুদ্রা
টাকা বরাবর আলাদাভাবে বিক্রয়
করিয়ে দেওয়া শতকরা ভিন্ন টাকার পরি
কমান্ডার করিয়ে দেওয়া ।

ମହାବିହାର ଚିତ୍ରଣ ।

| ୧୦ | ସିଦ୍ଧିଚାରି | ନାମିଦାଃ | ୦ | ପାଠ୍ୟସ୍ତବ |
|----|------------|---------|----|-----------|
| ୧୩ | ଐ | ନିଦିଦାଃ | ୫ | ଐ |
| ୧୪ | ଐ | ନୋଦାଃ | ୬ | ଐ |
| ୧୫ | ଐ | ନୋଦାଃ | ୭ | ଐ |
| ୧୬ | ଐ | ନୋଦାଃ | ୮ | ଐ |
| ୧୭ | ଐ | ନୋଦାଃ | ୯ | ଐ |
| ୧୮ | ଐ | ନୋଦାଃ | ୧୦ | ଐ |
| ୧୯ | ଐ | ନୋଦାଃ | ୧୧ | ଐ |

दुष्का। देवर्षि रावहादि ।

যেহাত হিন্দুনাগর মাঝী মৃত মানুষকে
দাহ করে সেই যত বুকাই দেশেও মৃত
মানুষকে দাহ করে কিন্তু দাহ করানত
অনেক ব্যয় হয় তৎপক্ষে দুর্ভিক্ষ লোকেরা
মুনোমানি না হয়ে যত মৃতকে নৃসিকতার
শৌচ দিয়ে গোলাকার বাঁ করে তাহার
এ ঘোরন্ত মৃত দাহ করে না কিন্তু একটা
নিষুক প্রস্তত করিয়া তাহার মাঝী পর্ব
রাখিয়া ওড় বন্ধ না করিয়া নিতে উত্তর
কাণ্ড দিয়া অতি বেয় তাহাতে মৃত
কোন কর্ম্মী গরিব না কেহ তাহার
কোন কার্য বিমিত্ত কেহ দুই তিন
মান মৃত পত্রীর রাখে ই মৃত পত্রী

রেবের রস দুধে করি: লালশুভ্রকার মুগজি
 দুগ্ধতে ঘূর্ণ করিয়া রাখি তাহার
 মৃত শরীরের মুখজিহব শরীরের মুখের
 মত অবিন্দিত থাকে ঘনান ইল্লা হয়
 তখন তাহারক শব্দ করে এবং তাহার
 রেব পুষ্টিহিত নষ্টনে অপকার শরীর
 কর্তৃক প্রভে মধ্যকিয়া নান্য প্রকার মুগজ
 দুগ্ধতে ঘূর্ণ করিয়া দুই তিন মাস
 রহিয়ায়: কামিষ্ট সমগ্রবদন করিয়া ততি
 শস্য সমগ্রবদন প্রদাহ করে

काष्ठीदेव उक्तेन ।

গীত রচনায় জ্ঞাতব্য রহস্যই সিংহ-
বাহাদুর সহিত নাক-৭ কুড়িবার
কারণ কাণ্ডার দেশের ওঠাল অঙ্গে
পারিতোষিক নাথিলে লইয়া গেল বনে
শ্রুতিয় রহস্যনিপুণ তাহাকে জিভানি
বরলেন যে তাম্রা বেণের বদশপুহের
নল্লভি কৃত। তাহাতে সে ওত্তর করি
ল যে আয়ার বেণের বদশপুহের এক
হাতের অঙ্গিট দুই শত ব্রহ্ম।

ভূকম্প দেও :

ভুক্তকি বৈশিষ্ট্য এক জন প্রাকৃতিক লোক
জানন পরিবারের মহিতি বিবেচনা করিয়া
দর্শনীয় ইহা যখনমানবের মত প্রকৃতি
ইহাও পরে দর্শন দূর ইহাও যখন
করিয়া পুনর্বার প্রিয়মতে ঘাইতে হইত।
করিন কিন্তু সেখানে যখনমানবের
এমত শাসন আছে যে যে কেহ যখন
মানবের মত প্রকৃতি ইহাও যখন
দর্শনীয়। অন্য মতে প্রকৃতি হয় তাহাও
ভাষ্যে শিল্পকর্মের দৃষ্টি ইহা তাহাও

তনেক কহিল এ শিরদ্বন্দনের স্থান ও
অঙ্গুণ্যবাস্তুও দোণাইল তথানি মেই
বাড়ি তুবকের বাদশাহের নিকট ঘাইয়া
কহিল যে আমি পুন্নার গৃহিক যতে
ঘাইব। বাদশাহ দুই তিনবার বারন
কহিলেন তথানি যানিল না। ইহাতে
ই বাদশাহ এই অনরাধি ক্ষমা না করিয়া
তাহার শিরদ্বন্দন করিতে আজ্ঞা দিলেন।
মাছাড়া এমন এই দেশের অধীক্ষ ইহার
বের ঘদি এমন বাহায়া হইত তবে
বাংলি লোকেরদের কি হইত।

नवः ५३३३३३३३ ।

এদেরোর দুই মকল লোক নবাব ওজী
রাণীর নাম এ বৃত্তান্ত জাত হইয়া
যেন কিছু তাহার বিবরণ বিবরণ মুক্ত
হিত জি: তিনি লক্ষ্মণীর নবাব আনন্দ
দৌলার পক্ষ বৃদ্ধ জিলেন তাহার মায়া
এক ছোনের স্ত্রী জিলেন ই নবাব ওজী
দৌলার পক্ষ পিতা নবাব আনন্দদৌল
অতঃপর বায়শীল জিলেন সুদৃত কো
দানী বহাদুরের অনুগ্রহে লক্ষ্মণীর
নিঃস্বামনে বসিলেন একারণ মর্দর কো
দানী বহাদুরের অনুগ্রহ জিলেন এবং
মকল লোকের সহিত অগ্নে পুয়ায়
করিলেন তাঁহার কিছুমান অহরীর
জিল না কিছু অতি আনন্দ ও জিল
না কেহল মর্দর দৈবায়র ওয়েই
যাকিলেন। তিনি ইং প্রত্যয় শিল্পকর্ম
পুত্রবৎসর যৌন লক্ষ টাকা ব্যয় কর
তেন তাঁহার এক শত ওদান ছিল ও কু

সমাচার দর্পণ।

চৌর্য্য জিন এবং বার শত হস্তী ও তিন হাজার লোক সোআরিং ঘোড়া ও পৌলশত বহু হাতি বস্কু ও মাত শত গ্লাসের কাচ ও তিন শত বহু আয়না ও ঘড়ী জিন তিনি ইংল্যান্ডীয় এমত অনেক কন আলাইয়াজিলেন যে একবার কল না ভিয়া দিলে দুই তিন ঘণ্টাব্যাপ্ত বান্য হইত এমত বল এত জিন যে দিবা রাত্রি বান্য হইত এক ঘণ্টাও বিরাম জিন না তাঁহার যেজিৎ ঘড়ী জিন সে মনিমুকতে অভিত তিনি আতাই লক্ষ টাকায় দুই ঘড়ী খরিদ করিয়াছিলেন তিনি গান ও বান্য এমত পুত্রিততে অনেক বৃদ্ধার লুত পিয়া করিয়াছিলেন সে পিয়া গান বান্যবিতে এখন মর্দুই পুরেজবে চলিতে যে তিনি কিছু লগিত ও কজাতীয় মৌল বিবাদের তুল্য সম্মার করিতেন ইত্যাদি তাঁহার অনেক মুকীর্তি বৃদ্ধার আসে: ওঁহার ওরম সুন ও কলা জিন না তৎকালে এই নবাব ওজরালাকে পোতা পুণ্য রাহিয়াজিলেন নবাব ওজরালা তাঁহার নিবটে মর্দুই গাজিতন এবং হান্দা গরি হানেতে নবাব তাঁহার পুত্র তুত ইয়া আদান দি-হামনে বনাইতে গুর করি যাজিলেন। পরে নবাব আমদাদ্দোলা মইলে কোল্লালী বাহাদুরের সহায় যেতে ওজরালা লক্ষ্যলোর নবাব হইলেন কিন্তু তল্প দিন পরে ইংল্যান্ডেরদের পুত্রিলে ওয়েস্টী করিতে লগিলেন সেই হেতু সেই সময়ের বহু সমাহব তাহাকে কলিকাতায় আনিতে নিশ্চয় করিয়া আমদাদ্দোলায় জ্ঞাত নবাব সাজাতালীকে এই দি-হামনে বনাইয়া ওজরালাকে আনিয়া মোং কাশীতে রাখিলেন এবং তাঁহার বঙ্গের কারন পুত্রবঙ্গের দুই লক্ষ টাকায় মশহুরা নির করিয়া দিলেন। নবাব ওজরালা কিছু দিন কাশীতে থা

কেন কিন্তু কলিকাতা আসিতে নিতা শু অমমত জিলেন কিছু দিন পরে কলিকাতার বহু নাহেবের আভাতে কাশীর বহু নাহেব ও-ওরী মা-হই এই নবাব নাহেবকে কলিকাতা পাঠাইতে তুরা করিলেন নবাব ওজরালা এক মান মেয়া দ করিলেন এবং এই মেয়ামেয়া শু শু কন ইংল্যান্ডেরদের সহিত মুক্ত করি বার ওয়েস্টী করিতে লগিলেন ও অ লেকা জোট বহু লোকেরদের সহিত এক পরামর্শ হইলেন। পরে মেয়ায় দুই হাজার দিন প্রাতঃ কালে কলিকাতা ঘন্টার জল মুক্ত ন জ্ঞাত গিফ্রাফাং বহু নাহেব মোং ওরী মা-হই বহু ক জিরা ওখার অজ শ্রমুত ঘোষন মাহইবকে মুক্ত করিবার কারন অমমান দুই শত ঘোড়েনারারের রাহা তুরার বাগান গিরিহিবন কিছু লগুনে যেমন মা-হই আদান বুন: কোশনে আদান বৈড়িলেন। পরে কাশীতে আদান অপির হওয়ায় তেঁজাং বেওয়া হইলেন কিন্তু এ সকল কেবল আদানার বা লকতমাত্র বৃদ্ধার করিলেন। তৎকালে কাশীর বঙ্গের বেতের নামে গুয়ে দি-ইংল্যান্ডীয় সৈন্য জিন আর সকল সৈন্য তৎকালে মুহুরা পলিকমে গিয়াছিল। পরে এই সময়ের সাইবামগ্ন মোং বেটা বহুহইতে ইংল্যান্ডীয় সৈন্য কাশীতে আইলে মুক্ত আরক্ত হইবামাত্র নবাব ওজরালা মুক্ত তরী দিয়া পলাইলেন। পরে এই তৎকালে ওজরালাবীর সহিত এক পরামর্শ যত লোক জিল তাহারদিগের আ পরাধি অনুমান করিয়া কোল্লালী বাহাদুর অনেককে ফাঁদী দিলেন ও বাহাকেও বেধিলেন পাঠাইলেন। নবাব ওজরালা এই পলায়নে অনেক পর্ত বন গহন ভ্রমণ করিলেন কিন্তু কোথায় রত্ন গাইলেন না

শেষে মোং অদানগিরে বহু গিয়া মোং কলিকাতার কিন্নাতে বহু হইয়া অনেক কাল গিলেন কিছু দিন হইল ঐহিক সকল দায়গুত হইয়া তিনি লোকান্তর গত হইয়াছেন।

—

ইংল্যান্ড আশায়া মোকদ্দমা।

গিত যেমানে ইংল্যান্ডীয় এক দুরতি অরি বাহিয়া স্ত্রী আপন নগরের সমাচারপত্রে জানাইলেন যে সেই নগরের অজ মা-হই আপন কাজ্য নিমিত্ত মুক্ত দেশে পলা ইয়াছিলেন পুত্রার আনিয়া আপন কার্যে নিযুক্ত হইয়াছেন ততঃ সেই স্ত্রী নগরের লোকেরদিগকে আদান করিলেন যে এই ব্যক্তি কল বহু ঘণ্টা বিতার করি নের ঘোণা হইতে পরেন। ইহাতে সেই অজ মা-হই বহু তদািতে তাহার নামে গিলগাশিলি জুরা বান্দিল করিলেন। যে ঘিল সে মোকদ্দমার অদালত হইল সেই দিন এই স্ত্রী লোক আদান অদালতে আনিয়া ওরীল না রাখিয়া আপনি মও দাল জবাব করিলেন এবং দুই ঘণ্টাব্যাপ্ত আপনি নির্দোষী হইবার নিমিত্ত তুতঃ ঘের নিবটে বহুতা করিলেন। তাপা বা অজ মা-হই এই স্ত্রী লোকের বিচার হইলে ও তুতরা তাহাকে নির্দোষী নরিলেন সে অদালতে হাজার লোক একর হইয়াছিল তাপা সেই স্ত্রী লোকানর্গ যেতে আপনি মোকদ্দমার মওদাল জবাব করিয়া নির্দোষী হইলেন।

—

বালকের বিধবুদ্ধার।

মন আশির শত দুই মালের মার্মা মে এক জয় মালের বালকের হাতে থেলার নিমিত্ত একমাল তুরি মে মধ্য গিয়া জিল। এই বালক সে তুরী গিয়াছিল জেল মে মাসে সেই তুরীর লোই এই বালকের

সম্মাচার দর্পণ ।

মুখাইতে নির্গত হইল কিন্তু সেই লোকের
দ্বার নব্বাতের মত হইল যেনই কুল
তারিখে সেই বালক অতিশয় চটখট
করিতে লাগিল পরে সেই ছুরির দ্বারাও
আজ্ঞার মতন মুখাইতে নির্গত হইল ঃ
অর্থাৎ তাহার মুখই বালকের অতিশয়
যন্ত্রণাবদ্ধি হওয়াতে মুখ কাণ হইল তা
হাতে তাহার পিতা মাতা ভয় করিল যে
বালক হুগা খাইল না কিন্তু কিছুক্ষণ
পরে সেই ছুরির তাহার ঘেঁষিয়া সে
সমুদায় নির্গত হইল বালক হুগা খাই
য়া অত্যাধি আনন্দপাশে আসিল।

ਸਾਹਿਬ ਤਾਂਹੀ ਘੋਲ ।

এবং নর মাথা। ভারী মাংসের মোহন।
পায় শুদ্ধ হইয়াছে তৎপুত্র ভারী ধোঁ
কাই নৌকা তাহার ওপর কোল মাত
গম্ভাংগম্ভাং করিতে পাঁরে না দেখা
কাহা ভেতে অনেক ধোঁকাই নৌকা
আটক হইয়া রহিয়াছে এবাং জোতা
নৌকা ত তিনিস বাহির করিতেছে তা
হতে তিনিসের ভার্যর ঘাঘো মদ্য
তপিক ও কাঁল দিম্ভুও হইতেছে।
সুন্দরীরা গোপী বিন্দা গাঢ়রূপ হইতে
শলিকায়া তিনিত্তিল তাহার। এর
মানসার্থ দেখান বন্ধ আছে।

ਨੂਤਨ ਹਾਮੀਨ ਦਫ਼ਤਰੀਆਂ।

কলা চারি ঘণ্টার সময়ের কলিকাতার
চার-ইংল্যান্ডের এক কোর্স ঘর এক
ইয়া মারি, ইয়া চলিয়া পুরানো কু
পাতি গোলেন এবং সেইখানে নুত
হাসিলদস্তুর ঘরের পুখ ইডক তাঁ
হাং গাঁথিলেন এই নুত হাসিলদস্তুর
খানা কলিকাতার প্রার্থা মদন ইইবেক।

युद्ध ।

[illegible][illegible]

আপানাহেবৰ পুত্ৰ সম্ৰাটৰ জন্ম
 ঘূত কৰনাল আদাম নাহেবৰ ঘাণী
 পাণ্ডা ঘাণীৰে যে হেতুৰ জন্ম কৰিব
 নল আদাম নাহেব আপানাহেবৰ
 মজান কৰিবৰ কাৰণ আপানাহেব এক
 পাণীয়াইজন ইতৰ মজল বহেৰ মণীয়া
 অতিশয় জোনবান ও মজান। নদৰ
 দিবম হইল ইতৰ তেওঁৰে ভাণ্ড

করতেন। এক স্থানে কথক শোকেদের
গীত দেখিল যে তাহার। এক মুখ
লুট করিয়া আনিয়া এক জঙ্গলে বসিয়া
আপনার নানাবিধার আয়ের আয়ের কর
তেছে। ইহা দেখিয়া সে তর মনে
বিরেচনা করিল যে এই পণ্ডিত্য আমার
দেও ইন্দ্রা যাইবে ততই অগোচর আমি
যাহার সম্মুখীন হই। ইহা ভাবিয়া
ই তর ইন্দ্রিয়ের সেনাপতির লিফট গিয়া
আত্ম করিল যে আমার মনে পঞ্চাশ
তন নিম্নস্বামী দেও আমি এক তাহা
দেখি। ইহা করিয়া পঞ্চাশ তন নি
ম্নস্বামী তাহা মনে লইয়া ই জঙ্গলে গিয়া
হাসিত হইত তাহা করিল। পরে ই
পঞ্চাশ তন নিম্নস্বামী দ্বৈতীকর হইয়া
এক স্থানে পঞ্চাশ গুলি মালি ই পঞ্চাশ
গুলিও অনেক গৌরব শোকে যাহা গুলি
করিয়া শোকে পলাইয়া গেল।

ਅੰਤ :-

এই বৎসর সর্বত্র কৃতিত্ব শীত হই
 তেছে ইহার প্রায় সর্বত্র পাওয়া যায়
 তেছে যোগ্য হস্তাধীনাও এতেহা
 তেছে এনস্থানেতে এইমত শীত হইয়া
 তেছে যে কোনদিকার সকলহইতে প্রাচীন
 লোকেরা কহে অতরা এমন শীত
 আর কখনও দেখি নাই এবং এই শীত
 প্রকৃত সেই দেশের দীর্ঘায়িত শমা
 নহে ইহাচারে ওহাতে সকল দূর
 দূর হইয়াছে। এক জন সাহেব
 যোগ্য মেজাখারহইতে গল্প লিখিয়াছেন
 যে আমি এক দিন প্রাচীনকালে গিয়া
 যিলাম যে সকল দূরত তল প্রান্ত
 হইয়া পাখর হইয়াছেন এবং সেখানে
 শীত প্রকৃত দীর্ঘায়িত পাখর হইয়া
 এত খারাপ যে দূর মানবের পাখর
 হত দেখা যায়। ৪০ আশ্রিত্তে আমি

সমাচার দর্পণ ।

দেবীনাথ যে আত্মা যখন নুন্নর হই
 যাহে বিহু হই তেঁও দেবীনাথ সকল
 লক্ষ্য হই গেল। আমি দেবীনাথ যে
 কোষ নুন্নর হইয়াছে লক্ষ লোকের
 গণিষ যে যিখা কোষের মাথা কিছু
 লক্ষ্য নাই আমিও ভাবিলাম সেইনাথ, দুখ
 লক্ষ্য। সেই কোষের মুখাবের মত এখের
 শান। হইয়াছে যেহেতু মুক্ত হইবর বাহ্য
 দেহেতে ভাল দেখে যায় কিন্তু অন্তর
 দুখ। যু তখন এখা কারিলা। লোকের
 আশা ব্যবসায়বাহিত হইয়াছে বস
 দিবসের মাথা দানবর বস ঘির্ন হইয়া
 গে। তলি ও পতাই ওইলুও সেই মত
 এখাই হইতেও মরণে মুক্ত নাহি
 এই লক্ষ্যনাথ। অসংসার আম
 রেবদেখাই ইত্যাদি দুখ বিচারে তাহা
 গুণ হইল। দুখ করিবে না।

মোঃ লক্ষ্মণুল্লাহ ইতি তদন্তের তালিকা
 ফাঁদের সোমবারে এক টাকার বাণ পেয়ে
 গিয়ে ওকশোজ পাহার এক টাকার বাণ
 পেয়ে গিয়ে ওকশোজ পাহার জেতার এই
 মত ন্যায় বিবেচনকরণ বুঝ বুঝ
 হইয়াছে কেবল এই বেগুন লক্ষ্য।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

৪৮-৭ মাসে জীবিত নেওড়াল বহন
আলমেন না হা বোদাইইহতে ইং.
গে মুন্সী বাদি বিচারক নী নি ও
ঘিয়া ও প্রতিবেশ বিয়া সত মা
তিলা ইং গুণ্ডাষ্টালেন তাহার
১৮২৩ সনের শত টাকার দ্রব্যইহতে।

न विन्दुः ।

নাগিন্দ্রহীতে সমাধি ত নিম্নে
 যে ১০ জনে সমাধিতে দুই শত নিম্নে

সিদ্ধান্তের সিনট্যাক্স এক প্রকার লুপ্ট কাল
ওয়েল ইংরেজি বৈজ্ঞানিক এক শত লেখা
তাহারদেব ১৯৬০ গি ১৭৩৯ আনন্দ
মূল কলিল আর এগার অলঙ্কারে বহিল
তৎপরিঃ লোক বলাইল ।

२१०४.५५५ १८५५।

१२. उद्भावः श्रीगुरुदेव कृपया साधु
कृपया विचार वदन्तुकाः ।

ଅନୁତ ମହମ୍ମଦ ତମାମ ଗୋବିନ୍ଦ ନା ହସ
 ନରା ଦଞ୍ଜାଳ ଚନ୍ଦ୍ରାବତ ଓ ନିଆରା
 ଚନ୍ଦ୍ରାବତର ଶ୍ରୀ ବିଦ୍ୟାବତ !

श्री ५ पुनः तदा च ईति म'हव मा
मा.अ. तर्क ईति तथा.वा. क.अ. वि.व.
तार्किक'य तर्क ।

ଶ୍ରୀ ୩ ହାରି ହରନା ମାହର ଏ କ୍ରମେ
ନିତ ନିତ ।

ਪੰਨਾ ੩੨ ਦੇ ਸਮੇਤ ੩ ਕਾਮਰਾਂ ਦੇ
ਭੰਡਾਰੀ।

[illegible]

स.प्र. नं. १२४ (१९९०-९१)

ইংল্যান্ড দেশের দূর জায়গায় এখন লোকের
সংখ্যা ২৫০ কোটি। ইংল্যান্ড দেশে এখন লোকের

১৭.৩ রাষ্ট্র লক্ষ্য লোক উন্নয়ন লক্ষ্য
 ১৭.৩ রাষ্ট্র লক্ষ্য লোক উন্নয়ন লক্ষ্য

ଜଣେ ମହିଳାଙ୍କୁ ନିଜ ଉପରୁ ଓହ୍ଲାଇ ଦେଇ
ସେ ମହିଳାଙ୍କ ଉପରୁ ଓହ୍ଲାଇ ଦେଇ ନିଜ
ଜଣେ ମହିଳାଙ୍କୁ ନିଜ ଉପରୁ ଓହ୍ଲାଇ ଦେଇ

১৭। ৪৩ নং বিধিঃ ম পী এক ২৫৮০
১৭। ৪৩ নং বিধিঃ ম পী এক ২৫৮০

ইংল্যান্ড তিন সাত মেল লোক মরিয়াছে।
এই বন গিন্‌গা বৎসর। কড়া যার।

ମିଶ୍ର ହ'ଇ ଦେଉଳ ଯାନ୍ତି ତାଜେ ।

[illegible]

१. श्री गुरु दशमिस्तोत्र २७ मंत्र मन १८ १९ ई ३ ई:
२. श्री गुरु दशमिस्तोत्र २८ मंत्र मन २० २१ ई ४ ई:

[illegible][illegible]

१. ...
 २. ...
 ३. ...
 ४. ...
 ५. ...
 ६. ...
 ७. ...
 ८. ...
 ९. ...
 १०. ...

[illegible]

पत्रिका क्र. २५३३/१९७३ दि. २५/११/७३

[illegible][illegible][illegible]

1947-48

[illegible]

१७ मार्च १९११ ई. ७ दिवस का १९१० का कालगणिका

3. 5. 1

[illegible]

॥ एक शीतल उषः नल मङ्गलार्कः ॥ २॥ उषः नल ॥

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्री केशवशिरः मङ्गल इति ।

[illegible]

विशाल न. प्रतिष्ठान ८ मार्च सन १८९९ ई. ७ दिवस :

१५००० नालेकडि क'छादिउ ।

১. প্রতি উক্ত প্রকল্পের নথি ১৯৯৯ খ্রিঃ বঙ্গাব্দে

এই সমাজে বহিঃপ্রাঙ্গণের উপস্থিতিতে প্রতিদ্বন্দ্বিবে শক্তিরে জাণী হয়। তাহার লওনের আশ্রয় থাকে। তিনি শ্রমায়
জনগণনাতে জাণ নাগে পাণ্ডিত্যে সন্তোষে রাখা। তাহার লিখিত পাণ্ডিত্যে থাকে তাহার মূল্যে মাগে এল চাক। যিনি মাগে

ਸੰਨਿਵੰਤੁ ! ੨੦ ਫ਼ਰਵਰੀ ੧੯੭੨ । ੪੦ ਫ਼ਰਵਰੀ ੧੯੭੨ ।

[illegible][illegible][illegible]

শ্রীমদেবং ওহর বেসুদু নিমটে এমত
 সাতমাত হু অগি-বুদু জমে যে

আমেরিকা দেশ।
 ওডরমেরিকার এক সুন্দর দিকের দিকে ই-
 ন্দ্রিয় এক কুঠি আবার গোনের লক্ষ টাক।
 মাইলন লক্ষের কারন কর্তৃক ক্রিয়াজন
 তাইল দেশে কারন ওদার্য কতিতায়।
 লক্ষ লক্ষ গিয়াছে যে ওডরমেরিকার

[illegible]

৩ মেম্বারি ডিরিজে স্থানিগ হানিগ
দস্তাহইতে ইয়াহাৰি কেরা গিরায়ে যে
৪৪ তিনমুর জরাম্মুর লিটে নাও
মোন ডোরা নীন ইয়া গিগুজে মনেহ
হয় যে নেই নীন লিগিহাতাইতে কোন
খকি দুৰি করিয়া জানিগিগি এইমুর
খকম ইয়াহে যে ও মার ডিরিগ

সম্রাটের দপণ।

পূর্ব্বদিক কোন ব্যক্তি এই লিপির বিষয়ে
দরখাস্ত না করে তবে এই লিপির নিলামে
বিক্রয় হইয়া কোরানী বাহাদুরের ঘরে
থাক্য হইবেক।

ইংলণ্ডের ঘুরাজের কথা।

পূর্ব্ব নিম্ন গিয়াছে যে কোন নতের
মান হইল ইংলণ্ড দেশের ঘুরাজের
কন্যামরিয়াছেন। তন্মধ্যে বৃথিতোৎপ
থানে যত ইংলণ্ড লোক আছে সেসক
সেই শোক করিয়াছেন এবং তাহার
সেই রাজকন্যার বিবাহ সম্বন্ধ করিতে
তাহা দেখাইবার বারন ইংলণ্ড দেশে
একটা মনস্তর গাঁথিতে দ্বিগ্ন করিয়াছেন
এক সেই কর্মের ব্যয়ের কারণ ইংলণ্ড
দেশে ঘাইয়া সেই কর্মে আসিল নাম
স্বাক্ষর করিবেন তাহার অষ্ট টকর
অধিক স্বাক্ষর করিতে পারিবেন না এবং
দ্বিতোৎপ পারিবেন না যেহেতু এত না
করিলে দুই তিন জনই এই কর্মে লিপ্ত
করিতে পারিতেন সে কর্মে বাহাদুর
মধ্যে গুরুত্ব অন স্বাক্ষর করিয়াছেন।

ইস্তাহার।

ঐযুত কোরানী বাহাদুর ইস্তাহার
দিয়াছেন যে ১০ ফেব্রুয়ারি তারিখে কো
রানীর ঘরে ইস্তাহার কার্য্য এতদ্ভ
শিয় কাগজের তলক আবশ্যক হইবেক
অতএব যে কোন ব্যক্তি এই কাগজ বেও
নের কারণে দুর্ভাগ করিতে চাহে সেই ব্য
ক্তি এই তারিখে ঐযুত লমসদেন মাছেরের
লিফট দরখাস্ত করিবেন ঐযুত কোরানী
বাহাদুর আরও ইস্তাহার দিয়াছেন যে
কোরানীর রক্ত গুণায়ে আগাত মার্চ
মানের ১ বৈশাখ তারিখে মালদহের
টারি শত মাইলিঙ্গ মোন ও চাহার এর
শত নতর মোন ও চাহারের টারি শত

নতর মোন ও চাহারের টারি শত নয়
মোন ও চাহারের এক শত মোন মোন
শেন বিষয় হইবেক।

পণ্ডিত বামির ইতিহাস।

হএর বৎসর ইল ইংলণ্ড দেশে এক
অন পুত্র আসিলার যে নতর তিন তাহা
দিয়া কিছু কিছু দ্রব্য করিয়া কিছু দিন
অবসে সে মজিল। পরে তাহার বী তার
এক ব্যক্তিকে বিবাহ করিল সেই ব্যক্তির
বামি সেই জুয়াত যৌজ বলিয়া মজিল
পরে এই বী বৃদ্ধার আর এক ব্যক্তিকে
বিবাহ করিল সেই জুয়াত বামি সেই
জুয়াত মজিল ব্যক্তি মজিল পরে সেই
বী তার এক ব্যক্তিকে বৃদ্ধার বিবাহ
করিল সেই জুয়াত বামি সেই মজিল
পুত্র নতর মজিল সেই বী আর এক
ব্যক্তিকে বিবাহ করিয়া সেই বৎসর বামি
লইল সে শস্য জোগ করিল। তাহার
মানের মধ্যে তাহার পণ্ডিত বামি হইল।

অক্ষয় বালক।

ঐযুত অক্ষয়বালক মন ১৮৭৭ মানের
১০ তুল তারিখে এক অক্ষয় বালক আসি
ল সে বালক অক্ষয়বালক নামে তিন শের
এক জিল গাত বৎসরের ৩০ অক্টোবরের
সম্রাট কোরানী হইতে জানিয়াছে ত হা
তে আসা গেল যে সে সময় সে বালক
গোলের মান থলক হইয়া তাহার এক
এক মোন এবং ৩৪ দুই হাত এবং
তাহার ওদের বেত দুই হাতের তরিক
তাহার ওদের বেত গোলে এক হাত
তাহার বাহুর বেত দুই গোলা। এ
অক্ষয় বালক তদাগতি দুই পাঁচ
করে তাহার শরীরের যেমত সুস্থ তদ
লুনার তাহার সর্বাঙ্গ সুস্থ এবং ওদ
লুনার বলবান। তাহার মাথা খিত

অতিদুর্গা তাহার সর্বাঙ্গ এই বালক লই
য়া গিয়া সকলকে দেখাইতেছে যত
লোক দেখিতেছে সকলেই তাটাই জলা
দিতোছে। ইহাতে তাহারের প্রাণ
পালন হইতেছে।

এই বালকের পরে যে সম্রাটের পাঁচ
ঘাইবে তাহা লোকেরদের আলিবার কা
রন জানান ঘাইবেক।

ব্রহ্মা দেশ।

ব্রহ্মা দেশে খেত হস্তি অতিশয় মাল্য
সে হস্তি সমুদায় খেত নহে কিন্তু এত
দেশীয় হস্তি হইতে কিছু বিশেষ সেই
খেত হস্তি ব্রহ্মা দেশের অতিমোহর তর
নের মধ্যে পাওয়া যায়। এল ও শ্যাম
দেশের তরনোতেও পাওয়া যায়।

যখন কোন খেত হস্তি পাওয়া যায়
তৎক্ষণাৎ ব্রহ্মার বাদশাহের নিবর্ত
সম্রাটের প্রেরণ করা যায় এবং যে মাল
পাওয়া যায় সেমালকার অধিকারী ও
কর লোকেরা ঘাইবে বাদশাহের নিবর্ত
সম্রাটের না পাইলে তাহা অতিশয় না
বহীল এই হস্তি কে রাখা যদি সে হস্তি
প্রকৃত খেত হস্তি আসা যায় তবে বাদশা
হের অধারে সে হস্তিকে অমরপুর পাঠা
ন যায় সেখানে লিখিবামাত্র রাতে ছুটি
ত হয় এবং রাজকোষের মত এক টুক
তাহার চানর লিপিত হয়।

এই সময় অমরপুরে যে খেত হস্তি
আছে সে অন্য এক খেত হস্তি হইতে কিছু
অধিক খেত তাহার ঘর রাজকোষের
তুল্য এবং বাদশাহের ও বাদশাহের
পুত্রের মত তাহার চারি জন ওজার এবং
অন্য কিছু চাকরও আছে সে দেশের
প্রধান মাল্যকার হস্তি পালের বাটা এইহ
তুক এই খেত হস্তির পালের বাটা স্বর্গে
নির্মিত ও মনুষ্যজাত অতি এবং তা

সমীচীর দর্পণ।

হার শিকারী কর্তব্য যে প্রাপ্তোত্তে তাহার করে ওয়াল মুদ্রা তাঁর করে সেপাত্ত কর্তব্য। সে বেপার প্রবীল লোক চিত্র বিশেষ আনা যায় যে যেমত মানা তাহার সেই মত চিত্র সে চিত্র বাদ শাহের আতা বিনা কেহ বিচারিতে পারে না। সেখানকার বাদশাহের যেমত চিত্র সেই মত সেই খেত হস্তীর চিত্র ও তাহার গলায় নানা পুকার মন মুক্তা মু বালের মালা দেয় ও নানা পুকার ওয়াল খালা সামগ্রী আহীর করিতে দেয় তাহার ওপরে কখন কেহ কোয়ার হয় না। রাজগৃহইতে গুলু কাল বহির্মিল করে না। সমুদ্রকম বাদশাহ তাহার লিখটে আনিয়া পুণায় করে ও অন্য লোকেরাও আনিয়া অতিভক্তকমে পুণায় করে এবং অতিমুদর বস্ত্র তাহার শরীরের বিচার নার কারন লিখিত আছে। যে কোন বাদশাহ খেত হস্তী পায় সে বাদশাহ সম্রাটের শেখবর্জিত পায় এবং যে বাদ শাহ তাঁনি বাদশাহী কালের মধ্যে একটা খেত হস্তী না পায় তবে তাহার সম্রাট তাদৃক হয় না। এবং ব্রহ্মার বাদশাহের বিশেষ এই খ্যাতি যে ব্রহ্মা দেশে সকল খেত হস্তীর অধীক।

ব্রহ্মা দেশে যত হস্তী থাকা যায় সে সকল রাজার ও রাজ্যের বিনা কোন কেহ নোয়ারির হস্তী রাখিতে পারে না এই হেতু বাদশাহ জননাকে এই খেতাব দিয়াছে যে জম্বুদ্বীপের সকল হস্তীর অধীক।

জম্বুদ্বীপের হইল এক খেত হস্তীধারী বাদশাহের লিখটে সম্রাটের গেল বাদশাহ ওখনি হস্তীর কারন আপন নৌকা পাঠাইল সেই নৌকাতে হস্তীকে ওঠাইয়া যুদ্ধের নৌকার সহিত বন্ধ করিয়া আপন

হস্তি আলাইগেন আইদল সময়ে যে হস্তি রাষ্ট্রনৌকা রাখিল সেই হস্তি ও তার ওপর রাজগৃহ নির্মাণ হইয়া সেই গৃহ হস্তী শরীর করিল এবং যে প্রবর্তী নবীদ্বারা হস্তীর নৌকা গেল তাহাতে যে দেশ দিয়া গেল সেই দেশের অধীক আ মনা সময়ে লিখটে আনিয়া হস্তীকে পুণায় করিল সেই হস্তীর জন্ত বয়স প্রবৃত্তি পাঠি নতর জন দুইতরী হীর শুভা দুই বোহন করিয়া নিত্য হস্তীর আহীর দিতে লাগিল।

হিন্দু লোকেরা কহে যে পুর্কালে ইন্দু জিন সে সময় এবং তাহার খালা খেত হস্তী। ব্রহ্মার রাজদলী দ্বালের নাম সময়ের এবং খেত হস্তীও সেখানে পাওয়া যায় ইহাতে অনুমান হয় যে ইন্দু র রাজা ব্রহ্মা দেশে ছিল।

পুতুক জানান।

গত বৎসরে দুইদেশে তিন হাজার দুই শত জাপান পুতুক জানা হইয়াছে। যে দেশে জানার কর্ম্য থিত না হইয়াছে সে দেশকে পুতুকতলে সভা বলা যায় না এই দেশে পুতুকাল কতক লোকের ঘর পুতুক ছিল এবং জন্তু লোক বিবাহভাস করিত অন্য সকল লোক অফকারে থাকিত এখন এই দেশে কয়েক জন পুতুক গুলু জেট বড় ঘর সকল খাটু হই তেছে।

গত বৎসরে বৎসরের মধ্যে আনন্দ দশ হাজার পুতুক জানা হইয়াছে কিন্তু সকল পুতুক এক স্থানে নাই নানা লোকের ঘরে বিলি হইয়াছে এবং যে ব্যক্তি এক পুতুক লইয়াছে তাহার অন্য পুতুক দ-ও লের চেষ্টা জন্য এই বৎসে এ দেশে দিয়া গুলুগিতা হইতেছে।

লুতন মনুসর।

গত দুই তিন বৎসরের মধ্যে অনেক ইংলণ্ডের লোক এ দেশে আসিয়াছে ও তাহারিণীর এখানে ভাসিয়া কর্ম্য পাওয়া বড় করিল হইয়াছে এই কারণ অনেক লোক দুইখ পাঠিতেছে তদ্বিধিতে করিকা তাঁহু ভাণ্ডারান ইংলণ্ডেরা একটা নি বন্ধ করিতে ছির করিয়াছে তাহার দ্বারা যাহার এ দেশে আনিয়া কর্ম্য পাঠিতে পারে না তাহার মধ্যে যাইরা কর্ম্য পাঠিতে পারিবেন স্বদেশে যাওয়ার ব্যবসার তাহা এখান হইতে পারি এমনতরু করিয়াছে।

ইতিহাস।

কুলগির মোকামে এক ময়রা দশহা পাঁচের সময়ে ঘণ্টা মদেপ বিকল্প করিয়া অনেক টাকা অমা করিয়া আপন মোকামে আপন লিখটে রাখিয়াছিল। পরে এক দুই লোক ঐ টাকার সম্ভাল পাওয়া মদেপ কয় করবার জন্যে আসিয়া দুই চারি আনার মদেপ কয় করিয়া ঐ টাকা লইয়া যাইতে ময়রা তাহাকে ধরিল। পরে ওভয়ে বহিল যে আমার টাকা ইহা করিয়া বড় বিরোধী হইতে লাগিল কিন্তু ওভয়ের সাহা নাই। পরে তথাকার মহারাজ কহেচু রায় বাহাদুরের মধ্যম পুত্র রাজা সম্ভচন্দ্র রাণের লিখটে ঐ টাকার মোকদমা ওপহিত হইল কিন্তু ওভয়ের মধ্যে সাহা কেহই দিতে পারে না। মোকদমার শেষও হয় না পরে রাজপুত্র আপন চাকরের দ্বারা এক বাটী জল আনায়া সেই জল ঐ টাকা জেলিলেন জেলিবারান্ত্রে মদেপের মৃত ভাসিয়া ওঠিল ইহাতে ময়রার টাকা মাঝে হইয়া বিরোধী নিযুত হইল।

[illegible]

[illegible]

সমাজের দর্পণ।

এ হলওয়েদের বিশালত তে মণ্ডিততায়।
মুম্বাই ও নগরীর রাজধানী থেকে কলকাতা
তে এই মাহার ঐ ওপারী পুত্র তে গো ই-
ওয়েদের প্রাচীর বর্ষা রাইবার করণ
কতক মাহেবেরিগকে পটাইয়াজিল
তাঁহাতে হলওয়েরা তাঁহাধিগের দূর
লগ্ন ইন্দোর মত কএব করিয়া তাঁহা প
হীন পাটাইয়াজিল পর তঃ পৈত্বে
হলওয়ে অক্ষয় আলক পুত্রিগের এক
আহা জ করিয়া তাঁহাধিগের পুত্র
বেকুলেদে প গিয়াছেন।

শীত।

জোনপুরহইতে শতবিষয় যে সমাজের
আমিয়াজিল পুত্র তাঁহা জাপান গিয়া
রে এখন জোনপুরহইতে ১০ আশুজরি
তারিখের পত্র আমিয়াজিলে তাঁহাতে জা
না গেল যে সেই তাখি ইপ্পোই য
জের অর্থাৎ শীতোষ্ণমার্গ যজের ৩০
নম্বরপাতি নগর আমিয়াজিল সে যজের
পুত্র এই। এ-টা লক্ষ্য দ্বারা যত
তাঁহার মধ্য পাঁচ থাকে তাঁহার গাত্র
সংখ্যার চিহ্ন থাকে যত শীত অধিক
হয় সেই পাঁচ তত নীচে আইসে এবং
যত গুণ্য অধিক হয় তত ওড়ে যায়। তা
হার হারা জানা গিয়াছে যে পুত্র ৩০
নম্বর পর্যন্ত ঐ পাঁচা জিল পর অধিক
শীতযুগ ৩০ নম্বরপাতি লামিয়াজিল
এক- যত নীহার পতিয়াজিল সে মকল
অমিয়া মাটে কেবল ময়দার ওঁড়ার মত
যেখা গেল পর ময়দায় হইলে তাট
মিলিটর মধ্যে মকল গনিয়া গেল-সেই
নীহার অর্থাৎ ঘর গোঁয়া ইত্যাদি শস্য
মকল লক্ষ হইয়াছে এখন জোনপুর
যোঁকায় গোঁয়া চারি টাকা মোল বিসয়
হইতেছে।

পুত্রিগ।

পুত্রিগ-নর মাহারমে পুত্রিগ তাঁহা মল
কো দেপীয় লোক আমিয়া মল বনদি
করে ও তাঁধিন করে এই ব-নর তিন
তন লোক বিবিবোদিত বনে গিয়া পুত্রিগ
করিয়া পুত্রিগেরি করিয়াছে।

ওজ বেহাউ।

হিন্দাব করিয়া লিময় আল গিয়াছে
যে ওজ বেহাউ পুত্রিগ-নর লিময়
তাঁহাতে তিন লক টাকা আনন দেশ
লিয়া মার ও তাঁহার বিবি-ও গিয়া
আনন না।

আহা জ আমিয়া।

এই মস্তাহ ই-গুওহইতে এক তাহা
জ পুত্রিগের তাঁহাতে ২০ সেপ্তেম্বর
জের মমতার পাওয়া গেল ইহার এক
মান পুত্রিগ সেপ্তেম্বরপাতির মমতার
আমিয়াজিল অতঃপর ইহাতে লুতন ম
মাটার কিছু নাই।

মহায়া বাকি।

গত জয় মাত ব-নরের মাধ্য ইপ্পো
কতক ভাল মাগুর লোকেরিগের ওপার
লিমিত এক পুত্রিগ লুতন বাকি বিব কর
য়াছে তাঁহার করণ ও পুত্র এই।
যে কোন দুর্গম লোক আনন পরিষদ
নাগর য-কিহি- টাকা পাওয়া লিডা
বায় করিয়া অর্থাৎ যে কিছু থাকে
তাঁহা রাখিবার স্থানভাব-পুত্রিগ অন্যক
বায় করে ইহাতে তাঁহারিগের কোন
পুত্রিগের কিছু মস্তাহ হইয়া দূর দূর হইতে
পাঁচ না এবং অক্ষয় কোন দায় পতি
লেও অন্যায়মে ওজার হইতে পাঁচ না
এ কাণন এই বাকি বিব করিয়াছে যজের
ক তাঁহাতে দুর্গমলোদের লিডা বায়র

মস্তাহইতে পতি-২২ গনিয়া মস্তাহ কর
তে পতিবের এ বাকির মাধ্য যে কোন
বাকি কেচুমা টাকা মাধ্য এবং সে
টাকা বাকি তমা ইহা শুধ চলিতে
থাকে সে বাকি কেচু মাতে শুধ মমতে
টাকা বাহির করিয়া লইতে পারে এবং
এই মকল লোদের টাকা হিন্দাব ও
শুধে হিন্দাব করিতে আকিহন না হয়
এই লিমিত কেবল গোটা টাকা ঐ বাকি
পার এবং গোটা টাকাভিন্ন আনা ও
পাইর শুধ বিব না ইহাতে টাকাওয়া
নারিগের ঘটি হয় না হিন্দাবেও কোন
আকিহন হয় না। এ পুত্রিগ বাকি ই-গুও
ব-শ পুত্রিগের মলিত ইহায়াছে
সে মকল বাকি এক টাকা অধি যত
টাকা ইহা তাহাই রাখা যায়।

মাধ্য বিচার।

মাধ্যর এক বাবশাহ এক আমিন আ
পন নগর বিব করিয়াছিলেন যে কোন
বত গহিত পান ঘদি কেহ করে তবে
তাঁহার দুই চক্ষু ও-পাটন করা যাই
বেক। পরে সেই বাবশাহের পুত্র বৈ
বাং সেই গহিত করা করিল তাহা মকল
লোকে আমিন ও বাবশাহ তাঁহা আমিয়া
তাঁহা ক লিডে আমিয়া মনে বিবেচনা
করিলেন যে আমিন আমিন করিয়া আন
নি তাগিলে মক হইবেক ইহাতে সেই
পুত্রের এক চক্ষু ও আননার এক চক্ষু ও-পা
টন করিলেন। ইহা দেখিয়া মকল লোক
তাঁহা ক মাধ্য ক আমিয়া তাঁহার আ
মিন ওতম মকল পুত্র করিল।

পঞ্জিকা।

এতদর্শে নবহীন ও মৌল ও বারই
মাণি ও বাহাদ ও খানাবুল ও বজার

সমাচার দর্পণ ।

‘ও বন্ধি ও গাংনু এই মকল দুয়ো পক্ষ
কা বুনুত হয় ইহার মাঝে কতক আমার
দোষ লিখিও নৌজিয়াজে মকল পক্ষ
আইনে আশাশী বংশরের গুহনাদি
স্বাধীন থাকুক।’

যেহে জলপথান বিহয়।

যেহ হইতে বৃষ্টি হয় ইহার মূল সমুদ্র
 হইতে জল দ্বিগুণ যোগে বৃষ্টি হইয়া
 পুনর্বার যেহ হইতে নিষ্কৃতি হয় ইহার
 কারণ কেহ কেহ ইন্দ্রোঃ হস্তী প্রপঞ্চঃ
 সমুদ্রা তল ভাগঃ দেখে কহে সূর্য্যারশ্মিতে
 জল আকাশে ওঠে কহে যাহার আঁহা
 দ্বারা সমুদ্র হইতে জল করে তাহার
 ইহার মূল বুঝাও দেখিয়া লোকের দি
 গাংকহইয়া য়ে। তাহাই বুঝাও এই।

সমুদ্রের মাঝি হুগো ২৯শ পশ্চিম হাতে
দুর্গনা ইয়াহা তল বাকুল নথ ওঠে
দুর্গহইতে কাল কলহে নারী বেণী ঘর
এবং অতিশয় শূন্য হয়ে এখন সমুদ্রের
যে স্থান হইতে নে ওঠে সে স্থানের তল
ওৎসাহিত হয় ও প্রাণী অগ্নে নে জল ইহা
ঘট ওঠে ওঠে তত কয়ে পাঁচজন বিধু
ইয়াহা মেঘ ঘন বৃষ্টিপালে মেঘ ইয়াহা
বাঁধাঘাট গিয়ায় ভোয় ঘন নেন
আহাজ তাহার নিষ্কর্তব্য। হয় তাল
আহাজ নে কেরা অতিশয় বাকুল
ইয়াহা তাহার দুই হস্তে মারে তাহা
নে ভাঙ্গিয়া জন সমুদ্রের মাঝি নত
ইহাতে তাহাজের বিদু হয় না খরি দলী
ঘাট নী ভাঙ্গা ঘর ও ব তাহার মধো
আহাজ নতল তাহার নীত ভণ্ড ইয়াহা
ওপরিষ তল আহাজ পশ্চিম আহাজ
তখন নথ হয়।

उत्तरांश :-

মন ৮৮৯৯ নাল ইং ১ মাঠ (মোঃতাবাক
 বা' মন ১১১১ নাল ১৭ মাঠ (মোঃ
 মালিক) ১১০০০০ মোন লবন যুক্ত
 কল্যাণি ইং রেজ বাঁধাধুরে মরহা
 হাজি ও তমালোজ ও চন্দ্র ন. গিণ
 ও কুলা ও চন্দ্রিমা ও শনিয়া ও হক
 ও মালিজ ও মাল ও তুলা ও কুশী
 নায়াগ ও মাল মোঃ মোঃ চিহ্ন
 হোদা মিল ৮০০০ মোন ইইন সি
 ইইন মোঃ চিহ্ন চোলা বাল্লা গিয়া
 হোদা মোঃ পাণি কবিদ

ଆନନ୍ଦି ଗଡ଼ ।

যে অস্বাভাবিক আশঙ্কায় গীতিকাতে এজন
আজ্ঞা দেন আপন মূখের জ্বলন্ত মৌল-
রাও সিদ্ধিয়া মহাদেবের আদেশ পাঠিয়া
এই গীত ইন্দ্রদেবের বিপক্ষে দেয়া না
এই সিদ্ধি শুদ্ধতর অর্থাৎ কোন অধিকার
অন্যায় আদৃত (অন্যায়) হইতে পারে
কে আশঙ্কিত হইল। কহেতেন যেমন
ইন্দ্রদেব। 'ও শাহিদর সময়ে সিদ্ধিয়া
মহাদেব স্বর্গের বসিয়াছিলেন যে
শ্রী গীত ও হিতিয়া এই দুই গীত বহু
দিন ইন্দ্রদেবের অধীন থাকিবে বহু
কাল পরের পর পুনর্বার লগ্না যাই
বেক।

ইংল্যান্ডের বাদশাহের নিকট।

ইংল্যান্ডের বাদশাহ গিট এক শত ২০
সরের মধ্যে রাজ্য ম্য চলাইবার কারণ
ইংল্যান্ডের নানা লোকের হাত টাকা বর্ত
করিয়াছেন এই টাকা ক্রমে মুদ্রার বাতি
রাজ এক গিট বহুসরের অনুজারি
মামে ৬০০০০০০০ বাদশাহের দর্জ

ସୌରାଜିନ ଏ ଟାକାର ମୁଖ୍ୟ ବ୍ୟବସାୟ ହେଉଛି
 ଯାହାକି ଓ ଏହାକୁ ଆମର ଟାକା ଓ
 କିଛି ମୋଟା ହୁଏତେଜ । ଏହି ଟାକାର
 ସ୍ଥିତି ବ୍ୟବସାୟର ମୁଖ୍ୟ ଏ ଆମର ମୋଟା ନି
 ଯାହାକି ଟାକା ଏହାକୁ ଯୋଗାଣମାନ ଟାକା
 ହୁଏତେଜ ହୁଏତେଜ ଏ ଦେଖାହୁଏତେଜ ହୁଏତେଜ
 ଯାହାକି ।

हेसांहाव (दुःख) पाईलोज

অসেক কোকিল তবীশ সারিহে অসোয়ায় রেখে ও তারিখ
মাহিহে গীতের তপসিহে নরনারীর মাহী অসাদর কার
শুনাশ হারান দিগাহে বিহর হইবেক তবী ও তমার 'অসোয়া'
বোঝাইবনু। লাহোরি দপ্তর-দালাত অথবা তেজগে কামেজ
রি কাজাইতে হারান হইবেক।

१३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

[illegible]

सं. ११६ अ. २०, विभाग : वृद्धाश्रम, १७ मार्च १९७७ ई. ४ पृष्ठ

১২ ২০ ২০ কাগজেরি কাগজ দিতে ।
 মুদ্রণেরি কাগজ ২০ কাগজ নম ১০০০ ইং ১০ টি কাগজ
 ১২ ২০ ২০ কাগজেরি কাগজ দিতে ।

খ্রিঃ ৩৭৯ খ্রিঃাব্দে মন ১৮১৯ ইং. বোর্ডবিদ্যালয় স্থাপন।

কোনকালে জাতির জীবন যাত্রায় যোগদান করাও এ সময়
 প্রবল মনস্কি পুত্রের অশ্রুপূর্ণ মুখের দৃশ্যে বিলাপ বিলাপ
 হয়েছিল তখন এ সময়ের কৈশিকের বোধের প্রকাশ
 দর্শন জীবনের অর্থ, যোগদান জীবনজিৎ অর্থের
 হইবেক।

निर्देशित दस्तावेजों पर २० मार्च १९५७ को ३० दिनों में
११, २६ मार्च निर्दिष्ट मंजूरी दी गई।

असनीय दृष्टिः, ४ अष्टमस नन १३११ ई० २९ २०

১০ ইংরেজী ১৯৬৬ বাংলাদেশের স্বাধীনতা দিৱস।

১৯৩৩ সালের ১২-১২-৩৩ তারিখ
 ১৯৩৩ সালের ১২-১২-৩৩ তারিখ

सन् १९१६ ई. १२१२ ग्रे. २० दिस.

ইতি তত্রিঃ ১৩ মেঘনাদেব জন্ম ১৮৬৯ ইং বোড়ারিবাসী অসুখ

এই সমস্যার দর্শন শ্রীরামপুরের জাণিখানাত উক্ত সমস্যাঃ শলিবার জাণি হয়। যাঁহঁর লওনর আধ্যাত্ম থাকে তিনি শ্রীরামপুর জাণিখানাত জাণি নাম পাঁাইলে সমস্যাঃ কাণ্ডঃ তাঁহঁর লিষ্ট পাঁাণি যাবক তাঁহঁর মূল্য মাত্রে এন হাঁক।। তিনি স্বাহঁর করিয়াছেন যদি তাঁহঁর লিষ্ট নাঁ পৌঁছে তবে তিনি শ্রী রামপুরের জাণিখানাত সমস্যার দিখায়াত্রীতাও লিষ্ট পাঁাণি যাবক

পূর্ব জাতিগণ শিয়ালে যে লক্ষ্যকে তর্ক
কার করিতে ইচ্ছা, তাহাও সে লক্ষ্যকে
ইংগ্ৰাণীয়েরদের নয়, কিন্তু লক্ষ্যবাহীদের
লক্ষ্য নিত্যমানী পূর্ব তর্ককারদের মতো
তাহার যে ইচ্ছা তাহাও তাহার লক্ষ্য
নবাব নিত্যমানী পূর্ব দেন কিন্তু সে ইচ্ছা
ইংগ্ৰাণীয় সেনাপতিও অধীন । ই নিত্য

সমাচার দর্পণ

৪৩ সংখ্যা

শনিবার। ১০ মার্চ মল ১৮৬৯। ৪ চৈত্র মল ১২৫১।

দর্পণে মুখ্য মোদর্যমিহ কার্যবিবরণঃ। ব্রাহ্মসমিতি আলভ সমাচারমা দর্পণে।

সমাচার দর্পণ।

কোম্পানির কাগজ।

কোম্পানির শতকরা জয় টাকার সুদের কাগজ কয় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা চারি আনা ভিজকোথ। বিস্ময় করি তে হইলে শতকরা এক টাকা বার আনা ভিজকোথ।

মণ্ডিহার পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|-------|------------|---|------|
| ১০ | মার্চ | শনিবার | ১ | ১৮৬৯ |
| ১১ | ২ | রবিবার | ২ | ২ |
| ১২ | ৩ | সোমবার | ৩ | ৩ |
| ১৩ | ৪ | মঙ্গলবার | ৪ | ৪ |
| ১৪ | ৫ | বুধবার | ৫ | ৫ |
| ১৫ | ৬ | বৃহসপতিবার | ৬ | ৬ |
| ১৬ | ৭ | শনিবার | ৭ | ৭ |

কলিকাতা কলমোমাটাইটি।

আমরা শুনিয়াছি যে কলিকাতা কলমোমাটাইটি মঙ্গল বারলা পাঠশালায় ওপকারার্থে চেষ্টা করিতেছেন এবং কলিকাতা শহরের মধ্যে যেখানে যত পাঠশালা আছে তাহার তদারকাদি সকল শ্রমিক গৌরবোহন পতিত করি বেল ও গুরু মহাশয়ের আশীর্বাদে গৌরবোহন পতিত করি না। এ জাতি ও শিষ্যসংখ্যা ও শিষ্যের দ্বিগুণ পঠি পড়িতের নিকট নিম্নাই হইবে। বোধি হয় যাহা তাহারদের সাধি তদনুসারে অভিধান ও গণিত এবং আর্য প্রকার পুস্তক সকল দ্বারা পতিত গুরু মহাশয়ের দ্বিগুণ সাহায্য করিবেন।

মরন।

গত ১৭ জ্যৈষ্ঠ আদি ইং ৪৭ জ্যৈষ্ঠ বং যশোরহরের রাজা বালীকণ্ঠ রায় যশোর জেন উহার বয়স্ক অন্মান ব্রিষ্ট

মর হইয়াছিল। ইহার পিতা শ্রীকণ্ঠ রায় এতদ্রূপে অভিযান্ত্রিক এবং সংস্কৃত ও পারস্যী ও হিন্দী ও ইংরাজীতে বিদ্যাবান ছিলেন এবং তাহার গান্ধীশক্তি ও কবিতা শক্তি অতিশয় ছিল তাহার রচিত অনেক গুরুত্ব গান গায়কেরা অধ্যয়ন করিলে।

ঐশ্বর্য্যুত।

ঐশ্বর্য্যুত এই হিন্দুধর্মের বতসাহেব হইয়া আসিয়া এই রাতের যথার্থ বন্দোবস্ত করাত এবং নিরাধিকারের দ্বারা মুখ্য মন্ত্রীর বিশুদ্ধিগুরু পক্ষিম হিন্দুধর্মের সেই বিশুদ্ধতার করণশক্তি সম্পূর্ণ করা তে ঐশ্বর্য্যুত ইংগুণের যুবরাজ গণিত অক্ষর যানে নৃত্য মন্ত্রের চিহ্ন তাহারে দিয়াছেন এই মন্ত্র যুবক কেবল শ্রীশ্রীযুত শর্তমারিধনের ভ্রাতার জিন সম্পত্তি এই বত সাহেব বর হইয়াছে।

শ্রীশ্রীযুত যুবরাজ পুত্র রাজার মত এই মন্ত্র যমিলেন ইংগুত দেশে শ্রীশ্রীযুতের বার বৎসরব্যয় এক বালক আছেন তিনি পাঠশালাতে পাঠ করেন তাঁহাকে এক দিন শ্রীশ্রীযুত ইংগুতের যুবরাজ ভাষ্করিয়া আপন গলাহইতে সেই মন্ত্রের চিহ্ন ধুলিয়া এই বালকের গলেতে দিলেন ও কহিলেন এই মন্ত্রের চিহ্ন তুমি আপন পিতার নিকটে পাঠাও।

বাহুবুর।

পাঠনা জিলায় বাহুবুর গুণমহইতে সমাচার আসিয়াছে যে যো-বুতা মনরর অমীহার ইংগুণীয়েদের সহিত বিরোধ করিয়া নানা কুচেষ্টা করিতে লা

গিল। ইহাতে দানাপুরের ইংগুণীয়ে মেনাপতি তাহার গুতিকুলে মেনা পাঠাইল এবং তাহার এই অমীহারের ওপর এইমত আক্রমণ করিল যে এই অমীহার আপন পুত্রের ওপর পলাইবার মাত্র অবকাশ পাইল তাহার পুত্র তাহাও হইল সে অমীহারের নাম অতল সিংহ কিন্তু এই কর্মোতে এই অতল সিংহ আপন দুই নামের বিশুদ্ধি করিল যেহেতু সে শ্রীশ্রীযুতের মত পলায়ন করিল। সেই দেশে ইংগুণীয়েদের অধিকারের ক্ষমতা পক্ষিম শ্রীমতে দেখানকার পুত্র পাঠনার লবাবের ইংগুত ওপাশ লবাবের অনুবোধি না করিয়া এই অতল সিংহের অনুগামী হইয়াছে।

ইহারদের মন করিতে রামগুণের নিম্নাহীদের অতি সাহসিক কর্ম দেখা গিয়াছে। নীচ জন নিম্নাহী ও এক জন বর্গীয় ইংগুণীয়ে মেনা থরদের কাশন গাঁড়ীর দ্বারা দানাপুর ঘাইতেছিল ইতোমধ্যে এক গুণম দ্বারা ঘাইতে এই গুণমের মঙ্গল লোক আসিয়া এই নীচ জনের ওপর পড়িল ও দানাপুরে ফিরাইল। পরে এই নীচ জন নিম্নাহী আপনাদিগের চতুর্দিকে এই দানাপুর চারি দিক দানাপুর গাঁড়ি রাখিয়া আপনাদিগের মুখ করিতে পুত্র হইয়া বন্দুক জাতিতে লাগিল এই গুণমীয়ে দুই শত লোক এই নীচ জনের প্রতি দুরহইতে তীর মারিতে লাগিল এই পুত্রের এই নীচ জন নিম্নাহী ব্রিষ্টপুত্রপুত্রপুত্র এত লোকের সহিত মুখ করিল পরে বাহব ওয়াইল তাহাতে তাহার নিকট হইলে গুণমের লোকেরা

সমাচার দর্পণ।

এ নীচজনেকে খুন করিল। পূর্বে যখন ইংগুতীয় সৈন্য এই গুপ্তাঘর দখল করিয়াছিল তাহা হইতেছিল তখন ইংগুতীয় সৈন্যপত্ৰিরা এই গুপ্তাঘরের লোকেরদিগকে নানা প্রকার আশ্বাস বাক্যের দ্বারা আশ্বাসিত করিয়া এবং মুখ্য লোকেরদিগকে কিছুই বিদ্যা গিয়াছিল কিন্তু এই গুপ্তাঘর কৃত্রিম লোকেরা ইংগুতীয় সৈন্যের পুতি তাহার বিপরীত ব্যবহার করিল।

বোনাপার্ত।

গণ্ড অফুর মাসে অরমান দেশের এক নগরে ইংগুতীয়দের সকল মহাবাদশাহেরা একত্র হইলেন তৎকালে কবিয়ার বাদশাহ সকলের মাফাংকারে আনাইলেন যে বোনাপার্ত যে ওপহীশে আসিলেন সে স্থান মদ্য তৎপুরু অন্য ওভম স্থানে তাঁহাদের রাখিলে ভাল হয়।

বোনাপার্তকে প্রত্যক্ষ দেখাইতে তাড়িয়া দিলে পর সে দেশ দ্বির করিয়া রাখিবার নিমিত্ত যে মেড লক্ষ সৈন্য সেখানে স্থাপিত করা গিয়াছিল সেই সৈন্য আশ্রয় লইয়া পুনরায় ঘাইবে এই পরামর্শ এই বাদশাহদের সভাতে দ্বির হইয়াছিল। তাহাতে ইংগুতীয়দের যে সৈন্য প্রত্যক্ষ দেখিল তাহার মধ্যে জয় হাজার এই দেশে আসিবে অবশিষ্ট ইংগুতীয় ঘাইবে।

ওত্তর কেন্দু।

আমরা পূর্বে জাঙ্গিয়াজিলায় যে ওত্তর কেন্দু দর্শনার্থ বাদশাহের খরচে আইত গিয়াছিল এখন শুনা গেল যে সে আশ্রয় ওত্তর কেন্দু পর্যন্ত ঘাইতে না পারিয়া পথহইতে জিঙ্গিয়া আসিয়াছে। সে আশ্রয় আসিলে দূর গিয়াছিল কিন্তু সমুদ্রে অবশিষ্ট নাড়িতে তিন শত কোশ দূর হইতে জলজমা-পুরু আর ঘাইতে পারিল না সেখানে অনেক জলজমা-অর্থাৎ বহু

খুলিয়া আসিয়াছে তথাপি এখনও এত জলজমা-সেখানে আছে যে অসম্য পর্বতের ন্যায় দেখা যায়। তাহার মধ্যে এক আশ্রয়ের ওত্তর পার্শ্বে দুই বরষের পর্বত পুর্বল বায়ুপুরু লাগিল তাহাতে এই আশ্রয় জল জাতি হইয়া গেল এবং আশ্রয়ের দুই পার্শ্বে এত চাপা গেল যে পুণ্য আশ্রয় মারা পড়িয়াছিল।

পুণ্ডিত আশ্রয়মাহেব।

আমরা শুনিয়াছি যে আশ্রয়মাহেব আশ্রয় আশ্রয় গণ্ডের মধ্যেই গিয়াছেন তৎপুরু ইংগুতীয়েরা আশ্রয় গণ্ডের চতুর্দিকে জেদিয়াছে পূর্বে যে সৈন্য আশ্রয় গণ্ডে গিয়াছিল তাহাই হইতেও অধিক দুই হাজার সৈন্য সংপুতি সেখানে গিয়াছে এবং ইন্দিরাবাবে তেঁা পুণ্ডিত করা গিয়াছে পুণ্ডিতজন ওপস্থিত হইয়াছেন।

আশ্রয় গণ্ড পর্বতের ওত্তর গুপ্তিত সে গণ্ড নদী নদীর দক্ষিণে ত্রিশ কোশ এবং ন্যাংচুরের পশ্চিমে এক শত কোশ তাহার দক্ষিণে বুলানপুর নামে এক মহা কিল্লা আছে এবং তাহার দক্ষিণে ওত্তরী নদী বহে। তাহার বিঘ্নে লোকের বলে যে এই গণ্ড কেহ লইতে পারিবেক না তথাপি ৪০৩ মাসে করনাল স্ত্রীবনসন মাহেব সেই গণ্ড অধিকার করিল কিন্তু তখন লোকেরা তাহিল যে কিল্লাদারের শর্তাঙ্গুতীয় এত হইয়াছে।

হিন্দুস্থানীয় কোল বাদশাহ সে গণ্ড লইতে পারে নাই। সে গণ্ডের লোকেরা কহে যে অতি ওত্তরপুরু ও বেবতায়ের অন্তর্গতপুরু এই গণ্ডের মধ্যে কখনও পশুরদের গলি পাইতে পারে নাই। কিন্তু ইংগুতীয়েরা প্রথম গিয়া গলি ফেল করিলে গলি এই গণ্ডের কিল্লাদারের দ্বার হস্তে পড়িয়াছিল তাহার হস্ত লক্ষ হইল

ইহাতে সেই লোকেরা ততি আশ্রয় আশ্রয় করিতেছে।

ঐযুত করনাল আদাম মাহেবের আশ্রয় গণ্ডে যাঁহা কালে সকল লোক তাহার অনুকূল হইল কেহই তাহার মদ্যকারী হইল না এবং আশ্রয় মাহেবের দুই জন সরদার আশ্রয়মাহেব আসিয়া তাহার শরণার্থী হইল এবং আশ্রয় মাহেবের ঘাৎ কুমদনার মূলভূত যে মোহল সিংহ নামে এক সরদার সে ইংগুতীয়দের হাতে পড়ে নাই সে আশ্রয় পর্বত ও অরোহ পলাইয়া আছে। আশ্রয় মাহেব পূর্বে মহাদেব পর্বতের যে স্থানে ছিলেন সে স্থান অতিমুদ্র তাহার নাম পঞ্চমূল এবং সেখানে এক স্থান হইতে জল নির্গত হয় ও মুদ্রার মতীভূতের মত সে স্থান সে দেশে তথি স্থানে অতিপুষ্টি।

৪০ জেজুয়ারি তারিখে ঐযুত মোহর ওবুয়েন মাহেব এই আশ্রয় মাহেবের পর্বত চৈন শাহেবের ওত্তর অক্ষমা-আশ্রয় মন করিয়া তাহার মেড গণ্ড লোকেরে মারিল চৈন শাহ ও তাহার দুই ভাইগণ পলায়ন করিল। এখন আশ্রয় মাহেবের পর্বত লোকের মধ্যে চৈন শাহ ও গণ্ড রাও ও মোহল সিংহ এই তিন জন বাড়িরকে সকল ইংগুতীয়দের হস্ত গণ্ড হইয়াছে।

আশ্রয় মাহেব আশ্রয় গণ্ডে পুণ্ডিত আশ্রয় কিল্লাদার ঘণ্টাবিহুতাও মারিল কন্যাকে বিবাহ করিয়াছে।

হয়দরাণী।

গণ্ড মস্তাহের সমাচার দর্পণে হয়দরাণীর বিবরণ ও তাহার প্রাচীন মিত্র খবরও এই পর্বতে লিখা গিয়াছে এই মস্তাহে তাহার শেষ বিবরণ লিখা যায় ডেকে।

সমাজের দর্পণ।

হয়দরানী মহাসুর রাজ্যে আপন পরাক্রম প্রদর্শন করিয়া পশ্চিম দেশ লুণ্ঠ করিবার কারণে পুন্দ্রান করিল ও বিদ্রোহ পশ্চিমের রাজ্যকে পরিবর্তন করিয়া নতুন রাজ্যকে তৎপদাভিষিক্ত করিল বিদ্রোহ ঘটিলে ইতোপূর্বের কিংবদন্তি তাহার পুত্রি গৌলিয়ারিল ইহাতে সে কিংবদন্তি এক শত সৈন্য বহিরাগত নগর ও বর্ন ভেদন করিয়া ছাড়িয়া দিল। পরে অনন্তপুরের মহারানী আপন সম্বন্ধবন্ধন করণে তাহাকে ছাড়িয়া লক্ষ টাকা নগদ দিতে চাহিল কিন্তু হয়দরানী তাহা লইল না। পরে ঐ মহারানী আপন বাটীতে অগ্নি দিয়া পলায়ন করিল। হয়দরানী তৎক্ষণাৎ তথায় গিয়া অগ্নি নির্বাহন করিয়া বাটী লুণ্ঠ করিল তাহাতে আট কোটি টাকা পাইল যখন সে বিদ্রোহ রাজ্যে ছিল তখন তাহার কল্প রোণ হইয়াছিল সে সময়ে তাহার নিজ চাকর জন কএক মহাসুরের রাজ্যের চাকরের সহিত মিলিয়া তাহার লান চেষ্টা করিয়াছিল। তাহা জানিয়া সে সকল লোককে আপন কারে ডাকিয়া ঘর-আপনার কল্প রোণ জিল তাহা তাহার দিককে বাকচলে নিকটে রাখিয়া কল্প দূর হইলে তৎক্ষণাৎ গিয়া আপন দরবারে বসিয়া সকল চাকরেরদের দোষ গন বিচার করিয়া তিন শত চাকরকে দোষী করিয়া পশ্চিমের রাজ্যে ঐ সৈন্য দিল। পরে অন্য রাজ্যের নিদুর মত নির্ভাবনায় নিদুর করিল। পরে স্থানিক তের রাজ্যের সম্বন্ধ লুণ্ঠ করিবার উদ্দেশ্যে করিলে কলিকতের রাজ্যে বার লক্ষ টাকা দিতে স্বীকার করিল তাহাতে হয়দরানী পুণ্যমত সম্মত হইল কিন্তু গৌলিয়ারিল ইতো সৈন্য পাঠাইয়া এককালে অধিকার করিল এবং টাকা লইবার কারণে তাহার

মন্ত্রী লোককে লানপুকার যন্ত্রণা দিতে লাগিল। ঐ রাজ্যে আপন ঘরে অগ্নি দিয়া আপন পুণ্যমত করিল। হয়দরানী লুণ্ঠ করিয়া সে বার লক্ষ টাকা না পাইয়া তাহার লান পাইল পরে মলয়বারের লোকেরা তাহার পুত্রিকুল চেষ্টা করিল তাহা শুনিয়া সেখানে গিয়াছিল তাহা লোকের মন্তক চেনন করিতে ও সৈন্য দিতে আসা করিল। পরে তাহাতে ফাঁস হইয়া গৌলিয়ার রাজ্যের লোক বহিরাগত রের সম্বন্ধ করিতে মহাসুর রাজ্যে পাঠাইয়া তাহার মধ্যে দুই শত লোক সেখানে গিয়াছিল অবশিষ্ট লোক পড়েই মরিল।

পরে হয়দরানীর নবাব নিজামানী গাঁও মহম্মদানী ও মহারাজের একত্র হইয়া মহাসুর অধিকার করিতে আইল তখন হয়দরানী তাহারদের আসিবার পথে যে গাঁয়ে আসে তাহার ঘর ও বৃক্ষ ও খাদ্য সামগ্রী সকল এককালে দগ্ধ করিতে আপন লোককে ডাকিল যে বিপক্ষেরা আসিয়া আহা হা হা ও থাকি বার স্থান না পায়। তখন ঐ মহারাজী যেরা পশ্চিমের নগর রাজ্যের মধ্যে পড়িয়া লুণ্ঠ ও দগ্ধ করিতে লাগিল। তখন হয়দরানী তাহার দিককে গিয়া লক্ষ টাকা দিয়া সম্মত করিয়া বিদায় করিল।

পরে মহাসুরের রাজ্যের পুত্রি ওজীর নগর ও মহারাজী মাদিবর ও নিজামানীয়ার সহিত এক প্রহর হইয়া হয়দরানীর বিরুদ্ধ করিতে লাগিল তাহাতে হয়দরানী নগর ওজীর পুত্রি আলমদার চেষ্টা অনেক করিল কিন্তু নগর ও তাহার পুত্রি আসিয়া পুত্রি সন্তান আপন সৈন্য সম্মত যে ঘাইবে ও আপন বর্ন থাকিবে ও হয়দরানীর সহিত বর্ণোপকরণ করিবে এবং

যে হয়দরানী কোন দুষ্কৃত না করিবে এমত কোরাণের ওপর হাত রাখিয়া হয়দরানীর দিয়া লইল। নগর ও তাহার নিকটে গিয়াছিল তাহাকে স্বপ্ন করিয়া তাহার সম্বন্ধ অসম্মত করিল ও করিল যে আমি কোরাণ বলিয়া যে দিয়া করি যাজিলাম সে কোরাণ নহে সে মিথ্যা কাণ্ড ইহা বলিয়া কাণ্ড যোহাইল।

কিন্তু হয়দরানীর তাহা দুষ্কৃত না গিয়া অশার অভ্যর্থনা আর দুই তিন পুনর লিখিয়া মানি কর। ১৭৭৩ সালে হয়দরানী কুবদেহ আক্রমণ করিলে সেখানে তার লোকেরা পদাধি পড়ত আশুর করিয়া করিল। পরে হয়দরানী আঁকা করিল যে ঐ সকল লোকের মাথা যে আনিতে পারিবে তাহার দিককে এক মন্তক পুত্র পাঁচ টাকা দিব। ও রাজলি তে বসিয়া আপন মাথা গণিতে ও টাকা বীজিতে লাগিল। এই আঁকাতে সৈন্যেরা কয়েক মাত শত মন্তক কাটিয়া আসিল। পরে অভিমুদর দুইটা কিন্ন মন্তক দেখিয়া তাহার দয়া অনিয়া মন্তক কাটিতে বারন করিল কিন্তু হয়দরানীর অন্যের মধ্যে ঐ একবারমাত্র তাহার দয়া অল্প মাজিল। গৌলিয়ারানী নামে এক জন হয়দরানীর আক্রমণ করিল। কোল সময়ে হয়দরানী নিদুরমত চেষ্টা করে ইহা সে দেখিয়া তাহাকে জিজ্ঞাসা করিল যে আপনার কি কারণে নিদুরমত এমত ভাব হয়। পরে হয়দরানী করিল যে আমি যে এই ভুক্তে বসিয়াছি ইহাতে সহস্র কণ্ড আঁকে কিন্তু আমার পদ ইহাতে যোগীর পদ ভাল তাহারা শয়ন করিলে মুখে নিদুর মাথ ও গুলি বিপক্ষ দে যে না আমার সম্বন্ধ বিপক্ষমণি হয়। ১৭৮১ সনে হয়দরানীর মৃত্যু হইল

সম্মানিত দর্পণ ।

তাহার প্রকৃত শরীর জিল ও বল ও তাড়ক
জিল এবং এক শত হাত দীর্ঘ বেশী
পাশা মস্তকে হাঁটতে যখন বাহিরে যাতে
তখন এক হাজার লোক স্বর্ণমণ্ডিত
বর্ষা হাতে করিয়া আসে। যাইতে তলা
মার হাতে তাহার তুল্য ছিল না যে
কনোয়ার ও তাহার লক্ষা ছিল না তাহার
হস্তের গুলি কখন লুপ্ত ভিন্ন যায় নাই
কিন্তু কোন ভাষার লিখা পড়া জানিত না।
যখন মহা দ্বিত তখন কেবল নিশান মহা
মাত্র করিত চয় প্রকার ভাষা তিনমুদ্র
কহিতে পারিত তাহার প্রায় তিন দিন
যে এক সময়ে গাণ শ্রুতি ও মূল্যে
পত্র লিখাইতে যেখানে হিমার ও গা
দ্বার কথা শ্রুতিয়া ও প্রকৃত উত্তর দিত এবং
কোন স্থানের পত্র আদর এক জন পতি
যা শুনাইতে এবং আর এক জনকে তা
হার উত্তর লিখিতে কহিত সে প্রত্যয়ের
পত্র আদর। শ্রুতি যদি কিছু অন্য
মত হইত তখন লোকের মতগুণ
কহিত এবং তাহার ইন্দ্রিয় প্রায় বশ ছিল
যে অন্যমন্যে কথাও কহাই করিত না।
সুতরাং গুণিয়া দুই সুহৃৎপাধ্যাক্ষ রাক্ষস
কহিত পরে তাহার করিয়া এক দক্ষ
নিদ্রা যাইত পরে গুণিয়া অশ্বারোহন করি
য়া দৈত্য রোহিত পরে মল্লানাময়ে বসি
য়া দুই হস্তে রাশি দক্ষ রাক্ষস কহিত।
পরে নিদ্রাতে রাশি প্রত্যক্ত করিত।

ଦ୍ରାଞ୍ଜକର୍ମେ ନିଯୋଗ ।

ଏ ଯାଏଁ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ଶ୍ରୀ ଦରଲିଂ ମେଜ ମାନ୍ଦବ
ଗାଞ୍ଜିପୁରର ହାମିଲ ଦଣ୍ଡର ଛୋଟ କାଳ
କର ।

স্বপ্নত ডায়ম যেনও গ্রি- মাংস
জোনপরের হানেকর ।

শ্রীযুত দ্বলিঙ জে হার্ডিন সাহেব এল।
হাঁবাদের হামিলের কালেড়র।

শ্রীযুত হেনরি মণ্ডি নাহেব ত্রিপুরার
কালেক্টর ।

ଅପୃଥ ଦ୍ଵାଦଶେ ବାର୍ଷିକ ମାଂସିବ ମାଂଜୀପୁରସ୍କାର
କାଳେକ୍ରମ ।

ଆପ୍ତ ଓଳାସ ଯେ ବୋଲେ ମାହେବ ବୀର
ଭୟିବ କାଳେକବ ।

শ্রীযুত গুণম ফেন মাহের মুজাহিদ

ঐযুত বাৰী মানদেৱ সাহেব
লিখ হামোলেৰ কালেক্টৰ।

শ্রুত যে ই গুলিন্‌নন্‌মাংসেব বাত
 রূপে হাম্বীল দ্রব্যেরে ছোট্ট কালেফর

ଅଧିକୃତ ଜାତ୍ରା ନି ବିମରବେଶେ ମାହେଶ୍ଵରୀ
 ଗଢ଼େଇ କାଳେନ୍ଦ୍ର ।

অখুত বেহ্মন ডেলৰ সাহেব মৃত
ফৰাৰেৰ কালেক্তেৰে পোন্ধাৰ ।

শ্রীযুত এচ এম পার্কার সাহেব নিম্ন
ও আর্থীম দস্তুরের মেম্বারের পুখ-
লেকার।

শ্রীযুত আবু ওদদা'দ'জাহেদ বাই
৩ বালাইমেদ বনোবনুকারি মা'হেদে
দেহ পঙ্কার।

ইস্লাম্‌হা'ব দেওয়া যাইতেছে।

অনেক লোকের জীবন লাভের জন্যেই রোবটের আবিষ্কার
 মানব গণের ভগবান জগদীশ্বর বাবী আবার কখন
 দুশান বাসন দিলে। বিজ্ঞান হইতে কই এ জগৎ সৈন্যের
 আবিষ্কার। মানুষ দিগন্তপাশের জগৎ জেনেবার কার্যে
 দিগন্তপাশের মানুষ হইবে।
 জগদীশ্বর বাবী আবার কখন।

জলস্রব বৃহৎ: ১৫ অংশতঃ মন ১৬ ১৯ ইঞ্চি ৪ টৈনাই
মন ১৫ ১৬ - ৭' বোতলিৎসর লাকটাইরি বড়ই খানায় ।

[illegible]

महाराष्ट्र राज्यी २००० ई. आदिवासी कायदा ।

অন্যদিকে বৃহত্তর ১৫ ও ১৬ নং সেক্টর ১৯ : ১ ইঞ্চি ৪ ইঞ্চি
সন ১৯ ১৯ নং সেক্টর ১৯ : ১ ইঞ্চি ৪ ইঞ্চি ।

জিম্বাওয়ে বৃহত্তমিকার ৮ আশ্রয়ন মন ১৮ ১৯ ইং ২১ টম
মন ১২ ২৪ ২১৮ কার্যকরিত কাছাকাছি।

ଉତ୍ତରାଞ୍ଚଳର ଶ୍ରୀରାମପୁର ୧୫ ଅଗଷ୍ଟ ୧୯୫୫

मिनांकपुर दहशुबिहार ८ जगद्विजय नम १८ १९ ई० १९१८

ইতি তারিখ ১ বাট সন্ধ্যা ১৮-১৯ ইং বোতলিংনুর হকুম্ ।

উন্নত লোকের উন্নত মানের উন্নয়ন ও উন্নয়ন

কল সামগ্রিক শীত্রে তপসীল পুষ্করী হানে দিলার বিক-
হইবেক উমা ও ভবীনের নৈমিত্তিক বোঝিবেক সেহই
বহুশ্রমের অধরে জেনাহার কামেজি কাজাইকে দান
হইবেক।

शिवजी दत्तजीद्वारा १६ मार्च १९७७ ई. १० टैक्स नं.

মেসার্স ডব্লিউবিএচ এ অফিস নং ১৮১৯ ইং ২৯

মহোদয় বৃহস্পতিবার ১ জানুয়ারি সন্ধ্যা ১৮১৯ ইং ২০ টি

সন ১২২৫ বাং কাসেকরি কাঞ্জারিতে।
ইতি তারিখ ১৩ মেঘস্কেন সন ১৮১৯ ইং বোতরিবদুর বহুদুর

অনেক লোকের জমিদারি জমায়ায় হোত এ তাহা

সকল শীঘ্র তপসীল মতাবক লরকার দ্বারা এতদ্রূপ
দায় কার্য পূর্ণার্থ স্থান নিলাম বিক্রয় হইবেক জমা এ ত
পের জৈমি ত বোর্ড রিডম্বর সাফ্টোয় পদার্থদান্য অম
জেলোহার কমেডরি কাজারিত হাঙ্গন হইবেক ।

महर्षिभ्यो नमः ।

मम १२ २६ दां. बौद्धिदमूह माङ्गुलि दृष्टश्रीमाय ।

सहकारिता वकील अ. उद्दिष्टांतर्गत ठेका आदिना कोटि ।
वांछितानुसार दृष्टीविषय १६ माई मन १७ १८ ई. १९ ई.

मम १६६ दान का मङ्गल लिखित ।
 मङ्गलपात्र दानलिखित ६ अङ्गुल १० ११ ई. २१

जन १६ वां कालकृति कांतिरिते ।
 दिनदा वृद्धतिवारि १६ वां जन १६-१७ ई० १० केव

১২ ১৬ বাঁ কামেচুড়ি কাটাওঁতে :

বৈশাখ ১২ ১৯ কাশিকরি কাকারিবে।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

এই মসজিদে রফিক আব্রাহামপুরের জাণাখানাতের পুত্রমন্ডরে শহিদ হওয়ার জাণি হয়। যাঁহঁর ল'এনদর আদশিক থাকে তিনি আব্রাহামপুর জাণাখানাতের আপন নাম পাঠাইলে মন্ডরেই কাণ্ডাও তাঁহঁর নিকটে পাঠান যাবেক ওঁহঁর মূল্য মাসের এক টাকা। যিনি মন্ডর কর্তৃকছেন যদি তাঁহঁর নিকটে না পৌঁকে তবে তিনি আব্রাহামপুরের জাণাখানাতের মসজিদে খিরায়াত তাঁহঁর নিকটে পাঠান যাবেক।

সমাচার দর্পণ

৪৪ নং-খান

শনিবার । ১০ মার্চ মল ১৮৮১ । ৮ চৈত্র মল ১১৭৫ ।

দর্পণে মুখ্য সৌন্দর্য্যমিব কার্য্যবিতরণাঃ । বৃত্তান্তনিহ আনন্দ সমাচারস্য দর্পণে ॥

সমাচার দর্পণ ।

কোম্পানির কাণ্ড ।

কোম্পানির শতকরা জয় টাকাগুলি সুদের কাণ্ড করা করিতে হইলে শতকরা এক টাকা চারি আনা ত্রিঘণ্টা । বিকল্প করিতে হইলে শতকরা এক টাকা বার আনা ত্রিঘণ্টা ।

মস্তাহার পঞ্জিকা ।

| | | | | |
|----|-------|-------------|----|-------|
| ১০ | মার্চ | শনিবার | ৮ | চৈত্র |
| ১১ | ২ | রবিবার | ৯ | ২ |
| ১২ | ৩ | সোমবার | ১০ | ৩ |
| ১৩ | ৪ | মঙ্গলবার | ১১ | ৪ |
| ১৪ | ৫ | বুধবার | ১২ | ৫ |
| ১৫ | ৬ | বৃহস্পতিবার | ১৩ | ৬ |
| ১৬ | ৭ | শুক্রবার | ১৪ | ৭ |

ইস্তাহার ।

জিলা বর্ধমানের ডায়মন্ড মারিয়াম সাহেব মারিয়ামের ডায়মন্ড এই শিল্পের কৃতী ও তাঁহার লহনা বাকী বিক্রয় হইবে ।

জিলা বর্ধমানের পরগণা গোপীকৃষ্ণমিত্তে গোবিন্দপুরের কৃতী তাঁহার লহনা বাকী দুই হাজার আট শত পঞ্চাশ টাকা ।

জিলা বর্ধমানের এই গোপীকৃষ্ণ পরগণাতে বোম্বাইলগঞ্জ কৃতী তাঁহার লহনা বাকী এক হাজার জয় শত অষ্টাশী টাকা ।
এই বর্ধমান জিলাতে চালক কৃতী তাঁহার লহনা বাকী দুই হাজার চারি শত তিন টাকা ।

এই তিন কৃতীতে অল্প দিন কর্ম্ম বন্ধ হইয়াছে তাহাতে মেহমুদী খরত আস্তে তেই হইবেক ।

আরো শহর বর্ধমানহইতে এক কোশ অন্তরে কানাই নাথদাস কৃতী ।

জিলা বর্ধমান দুয়াক পরগণাতে বেল গাঁড়িয়া কৃতী ।

এই বর্ধমানের নলই পরগণাতে চাঁচাই কৃতী ।

এই বর্ধমানের বাগপুর পরগণাতে গোপীনাথপুর কৃতী ।

এই চারি কৃতীতে কতক বৎসর হইল কর্ম্ম বন্ধ আছে । কিন্তু সে কৃতীর হৌত ও পার্শ্বের হৌত ও মোহনীর হৌত যেরা মতীর পুণ্য আবশ্যক লাই এবং এই চারি কৃতীর লহনা বাকী আদ্যাজ জয় হাজার মাত শত টাকা ।

এই মাত কৃতী তাঁহার লগ্নের বাসনা থাকে তিনি আশেপাশে কোম্পানির ঘরে দরখাস্ত করিবেন ।

কলিকাতা ৪৭ মার্চ ।

বাকী ।

/ইংলণ্ডের এক প্রদেশে এক বলবতী বোম্বাইলগঞ্জের স্বী বোম্বাইলগঞ্জে এই বাকী হুগলিয়াতে যে ডায়মন্ড সহিত যে স্বী বোম্বাইতে সম্মান বোম্বাইতে পারিবে সে ডায়মন্ড হুগলিয়াতে আট শত টাকা পাইবে যদি সে না পারি তবে সে ডায়মন্ড আট শত টাকা দিবে । নানা দেশে নানা ব্যবহারে বোম্বাই দেশে স্নাতক সর্বদা আবরণে থাকে কোন দেশে পুলাপকরণ থাকে ।

ইহাতে যেখানে আবরণে থাকে সেখানে অনেক মন্দ প্রকার হয় যেখানে পুলাপকরণ থাকে সেখানে মন্দ প্রকার তত হয়

না যেহেতুক মানুষের স্বভাব এই যে যে বস্তু আকৃষ্ট হয় তাহা দেখিতে অনেক চেষ্টা করে কিন্তু পুলাপিত বস্তুর পুলাপ করিতে বড় চেষ্টা হয় না ।

বোম্বাইলগঞ্জ ।

বোম্বাইলগঞ্জের বুদ্ধা মাডা ইউরোপ দেশে অধ্যাপিত আছেন । তিনি স্থানিলেন যে আশান পুণ্য বোম্বাইলগঞ্জ পণ্ডিত হইয়া জেন এইমুখ্য তিনি আশান পুণ্যকে যে খিতে সেখানে ঘাইবার কারণ ইউরোপ দেশের সকল বাম্বাইলগঞ্জের নিকট পুলাপ করিলেন কিন্তু বাম্বাইলগঞ্জ তা হাতে সম্মত হইলেন না । বোম্বাইলগঞ্জ যেখানে আছেন সেখানেকার অধ্যাপিত আশান বাম্বাইলগঞ্জের আশানসম্মত বোম্বাইলগঞ্জের অপস্রীতা করিতে যেন কিন্তু সে অল সমুদ্রমণ্ডল এইমুখ্য সমুদ্র মণ্ডলগঞ্জে একটা নৌবাহর আবরণ দিয়াছেন তাহার কারণ এই যে বোম্বাইলগঞ্জে সমুদ্রদ্বারা পলায়ন করেন ।

বোম্বাইলগঞ্জের এক ভ্রাতা রোম দেশে আছেন তিনি রোম দেশে এসে এক স্থান করিয়াছেন যে সেখানে গুহ লক্ষ্যধির মণ্ডলানুগ্রহ করণ আনা যায় এবং তিনি ইংলণ্ড দেশহইতে ঘোলা হাজার টাকা দিয়া এক ঘুরণি কর করিয়া লইয়াছেন ।

আলজাজ ।

আমরা পূর্বে লিখিয়াছিলাম যে আলজাজ শহরে মুসলমানী ইজাতি বন্দ পহর পুণ্য এতদূর হইয়াছে এখন কলি

সম্রাটের দর্পণ।

গৌল যে সেখানেকার তবীহ আঁকা করি
 হুজেন যে সেখানে যত আবিহাতি লে
 ক আছে তাহার শিশু বিবাহ করক যে
 কেহ বিবাহ না করিবে সে মাজা পাইবে।
 ইহার জল এই যে সে রাখে শিশু মল্লয়া
 হুজি হয়।

জয় অন সিফাহীর মাজা।

ই-গুণীয়ার আঁদীর গাভ লইবার নি
 মিত তাহার চতুর্বিহ আঁদীরে অযুত
 আঁদীরে সেই গাভ প্রবণ করিয়া
 জেন যখন আঁদীরে ই-গুণীয়ারদের
 হাত হইতে পলাইয়াছিল তখন ই-গু
 ণীয়ার পক্ষের এতদ্দেশীয় জয় অন সিফাহী
 তাহার সঙ্গে মিলিয়া পলাইয়াছিল। তাহা
 রা আঁদীর গাভে ঘাইতে পথের মাঝে
 বীরা পড়িয়াছে। ই-গুণীয়ার মুখ ব্যবসা
 এই আছে যে ব্যক্তি আঁদীরে নৈনা
 পড়িয়া গিয়া তাহার বিপক্ষ নৈনা সহিত
 মিলিত হয় তাহার পুনঃপত্তন কর্তব্য। অত
 এত যখন এই জয় অন বীরা গৌল তখন
 মুখ তখন ত তাহারদের বিচার হইয়া
 তাহার বৌদি নির্দয় হইল। তাহার
 কহিল যে আমরা যত দিন ই-গুণীয়ার
 ছাড়াইয়া যত দিন আমরা কোন
 সুখ পাই নাই। পরে সেই জয় অনকে
 ব্যক্তির আদ্য এক কামাল গৌলা
 পুরিয়া তাহা বিগাও কামালের সম্মুখে
 দীক্ষ করিয়া গৌলা জড়িল তাহাতে ই
 জয় অন স-হার হইল। ইহাতে নৈনার
 আর সিফাহীরা কহিল যে এই জয় অন
 অত্যন্ত সাহসী এবং যোদ্ধা ছিল তাপনি
 ইহারে এ অতি শুশুক।

ই-গুণীয়ার নৈনা এখন আঁদীর গাভ
 আঁদীরে করিতে গিয়াছে সেই নৈনার
 লোক সেই দেশের কিসি বিবরণ লিখি

যাছে সে এই আঁদীর গাভের চতুর্বিহ
 যে পর্বত আছে সে অতিভয়ালক ও সে
 পর্বতে গুণীয়ার ই-গুণীয়ার পর্ব
 তের পথ হইতে অতিদুর্য্য। এবং সেখানে
 পঞ্চমূল নামে যে এক গুণীয়ার আছে সে চতু
 র্বিহ পর্বতে বেষ্টিত সে গুণীয়ার গৌলে
 পর্বত ব্যতিরেকে আর কিছু দৃষ্টিতে আই
 সে না। এই সকল পর্বত বড় গুণীয়ার
 সেই ই-গুণীয়ার চতুর্বিহ হইতে হিন্দু লোক
 রা গুণীয়ার করিতে আইসে। এবং সেই
 পর্বত মাঝে এক পর্বত অতি বৃহৎ ও
 আছে যেটির ঠা মাঁদুল তাড়িয়ে নি
 বের নামে আঁদীর ই-গুণীয়ার সেই পর্বত
 হইতে পড়িয়া পুণ্ডাণী করে।

পুণীয়ার ভাঙাতি।

এক দিবস হইল পুণীয়ার জিলায় নাম
 পুরের নিকট মোকাম সাহেবগাওঁ অ
 নেক ভাঙাতি একত্র হইয়া শ্রুতিত শ্যাম
 গিরি নামে মহাশয়ের ঘরে ভাঙাতি করি
 ল। সে দিন ই-গুণীয়ার এক জনের
 সহিত কাঁকড় বিক্রয়ের কথা কহিতেছিল
 তাহাতে অনুমান হয় যে ভাঙাতিরা সেই
 কথা শুনিয়া অনুমান করিল যে শ্যাম
 গিরি কাঁকড় বিক্রয় করিয়া রোজ টাকা
 ঘরে কমা করিয়া রাখিয়াছে। ইহা তা
 হিরা তাহার ঘরে পড়িল কিন্তু তাহাতে
 ভাঙাতিরদের কিছু লাভ হইল না যেহে
 তুঃ শ্যামগিরি কাঁকড় বিক্রয়ের টাকা
 আদায় পঠিয়াছিল। আর এত
 বড় তাহার ঘরে ছিল সে সকল লইল
 ও এক জনকে ধূল করিল ও ডিল অন
 কে আঁদীর করিয়া পলাইল। যেখানে
 ভাঙাতি হইল তাহার নিকটে পুণীয়ার
 তখন থানা আসে এবং দুই ডিল সাহেব
 লোকের বাটীতে নিকটে আছে ও গুণীয়ার
 ও বর্জিত তাপনি দূরিয়ে ভাঙাতি করিয়া

পলাইল ইহাতে বুঝা যায় যে ভাঙাতির
 ঘরে মাঝে কোন সাহসী ও ভালবাস
 কর্তা আছে।

ই-গুণীয়ার দেশের রানী।

ই-গুণীয়ার দেশের মহারানীর বাঁদলের
 কোন অরুমা নাই তিনি অশ্রুত বৃদ্ধা
 হইয়াছেন। রানীর বৎসর হইল
 তাঁহার বিবাহ হইয়াছিল সেই সময়ে
 ই-গুণীয়ার মহানকা ই-গুণীয়ার মহারানী
 বৎসর আট লক্ষ টাকা নিকশন করি
 য়াছিলেন অনুমান হয় যে ই-গুণীয়ার
 অর্ধেক তিনি ব্যয় করিয়া থাকিবেন ইহা
 বের দ্বারা বুঝা যায় যে তাঁহার আঁদীর
 কোটি টাকা এখন ন্যস্ত আছে এত
 দ্বিগুণ তাঁহার অলঙ্কার আছে সে অল
 ঙ্কারের মূল্য অনুমান হেত কোটি টাকা
 হইতে পারে। কিন্তু বৎসর হইল তিনি
 যখন ইহা শ্রুতি করিতে শুভোগ করি
 লেন তখন সকল দেশের অধিকারী ই-গু
 ণীয়ার নিকটে লালচুর হইয়া পঠাইতে
 লাগিল। মহারানী রাআর রাজধানী পুর
 ণপত্তন হইতে মুক্তার দ্বারা লিখিত এক
 পত্র আইল এবং হে-ফ্রিম সাহেব
 তাঁর লক্ষ টাকা ব্যয় করিয়া মুক্তার দ্বারা
 তেঁজরা করিয়া ই-গুণীয়ার নিকটে পঠাই
 লেন এই মুক্তার তাঁহার হেত কোটি
 টাকার অলঙ্কার থাকতে বাধা নাই।

স্বয়ং মৃত্যু।

গাভ বুঝি বারো মোকাম কর্তার শিশু
 লেতে গৌলকব্দের বাটীর নিকটে রা
 মরতুলী নামে এক তাঁতি লিখ বৎসর
 ব্যয় আপন ঘরের বাঁশে ঘড়ী বাঁধিয়া
 আপনি আপনাকে কীসী ছিল। তাহার
 বিষয়ে এই শুনা গৌল যে পুণীয়ার
 কোন প্রবণ দোষ দেখা যায় নাই ও

সমাজের দর্পণ।

আপন আতি ও কল্যাণের সহিত কথ
ন্য বিবাহ করিত না। অতএব তাহার
মরণের কারণ কিরূপে জানা যায় নাই।
সে আশাশি একা এক ঘরে রাখিত শুইয়া
ছিল পর দিন পুত্রকালে এই কল্যাণ মরা
যেখা গেল।

শ্রীরামপুরের টোল।

শ্রীরামপুর নামেরা মো- শ্রীরামপুরে
এক কালের অর্থ বিক্রয় স্থাপিত করিয়া
হেন তাহাতে কয়েক বিবাহি গণ নিম্নক ইই
ভেবে এই কালের নানালকার বিদ্যা ও বহু গু
কার পুত্রক ও বিবিধ পুকার শিল্পিদি বহু
খাতিবে ও পুতলাদের একজন পণ্ডিত কয়েক
বিদ্যক ইইবেন যেহেতুক এই মহাবিশ্বায়ন
এককালে পুত্রক হওয়া তার তৎপুত্রক ন্যায় ও
বর্ষণীয় পুত্রক পণ্ডিত কয়েক বিদ্যক ইইবেন
এখন কেবল জ্যোতিষশাস্ত্রের পণ্ডিত নিম্নক
ইইরাবেন।

এই বাঙ্গালা দেশে অনেক শাস্ত্রের টোল
টোলাই নব্বই বাহুল্যমূল আছে এবং অনেক
লোক বরেনার করিয়া বিদ্যাবান ইইতেন
কিত পুত্রক জ্যোতিষশাস্ত্র শীলবজী ও বীজ ও
নৃসিদ্ধান্ত ও শিলাভিলাষিনি পুত্রকি ভাঙ্গরা
গাংগাশি পুত্রক গুহের পাঠ ও বরেনার এই
বাঙ্গালা দেশে নাই কিত পশ্চিমে কালীপুত্রকি
দেশে আছে ভবিষ্যিত শ্রীরামপুরের নামের
লোকেরা পুত্রক জ্যোতিষশাস্ত্র পারদর্শি পুত্রক
কালিদাস নভাপণ্ডিত ভট্টাচার্যক এই কালের
পুত্রক স্থাপিত করিয়াছেন।

অতএব যদি কাহার জ্যোতিষ শাস্ত্র পাঠ
কিতে ইচ্ছা হর তবে মো- শ্রীরামপুরে আই
বে জ্যোতিষশাস্ত্র পাঠ করিতে পাইবেন।

আশ্চর্য্য চারী।

ইংল্যান্ডেইতে এক আশ্চর্য্য চারীনির্ম্মাণ
হইয়া আনিয়াছে সে লৌহ ও শিল্পে নি

র্ম্মিত তাহার মোড়ান কাঠী নাই তাহার
বদ্ধ করা ও খোলা কোনে আনন মনো
হারা হয় সে চারী মোট বড় নানাকণ
আছে। একটা লৌহ ধাতুশলাকার গায়
স্থানে সমাননে মোটী পেরেক আছে
এবং শিল্পের নীচটা চুরী আছে তাহার
মধ্যেও সমাননে এই পেরেকের ওপমুত্র
একটি ঘাট আছে সে চুরীর ওপরে ইং-
রেজী ইস্তক কক্ষের লাগানো ফলপাত
মকল অক্ষর ও একাদি নমুনাও আছে
আছে এই নীচ চুরীর অক্ষর ও তৎক সম্ম
মিলাইলে দেখ শত কোটি ভদ হয় যে
কেহ যখন বদ করে আপন মনে নীচ চু
রীর অক্ষর মিশাইয়া একটা লম্বা কিয়া
কোন অঙ্ক মিলাইয়া দ্বির করিয়া আপন
মনে দৃঢ় করিয়া রাখিয়া এই ধাতুশলাকাতে
সম্ম এই চুরী পরাইয়া বদ্ধ করিয়া চুরী
ঘুরাইয়া ঘের তখন শুল্লিতে কাহারো
সাধা হয় না যেহাতি আপন মনে যে
দ্বির করিয়া রাখিয়া থাকে সেই অক্ষর
কিয়া সেই অঙ্ক মিলাইলে তখনি খোলা
যায় কিন্তু যদি সে হাতি সে অক্ষর কিয়া
সে অঙ্ক বিস্মৃত হয় তবে সে চারী কখন
খোলা যায় না সে কেবল মিথ্যা হয় যে
হেতুক দেখ শত কোটি অক্ষর ভদ ও
অঙ্ক ভদ ইহার ঠিক না আনিয়া মিলা
ইতে কেহ পারে না।

✓ আহাৎ আয়মানী।

গত মস্তাহে বাদশাহের এক আহাৎ
মো- হলিকাডায় নৈখজিয়াছে কিন্তু তা
হার পরে যে আহাৎ ইংল্যান্ডে চাতিয়া
ছিল সে আহাৎ এই আহাৎের পূর্
আনিয়াছে অতএব এই আহাৎ কোন
দুলন সমাচার নাই।

মানদ্রোজের অঙ্গশীর্ষী লুন্ড হুন্ড দেশ।
মানদ্রোজের অঙ্গশীর্ষী লুন্ড হুন্ড দেশ।

মলয়াবাহ এই ওভয় দেশের মাঝে পো
নের কোশ দীর্ঘ আট কোশ পুত্র এক
স্থান আছে সেই স্থান পুত্র কেহই আ
নিত না সেই স্থানকার তত্ত্বিকের মো
কোশ সে স্থানকে শীলগাম্যন কহে কিন্তু
সেখানকার লোকেরা সেই স্থানের এক
ওত্র পণ্ডিতের পুত্রকে শীলগাম্যন কহে।
গত বৎসরের আনুভূতি মাসে দুই
মাহেব দৈবান পথ যোগী এই দেশে
গেল ও সেখানকার মকল বিবরণ আনিয়া
এই দুই মাহেব মানদ্রোজের আরা মাহে
বেগদের নিম্নকট্টে কহিলে তাহার মাহেবেরা
সে স্থানে গেল ও এই বিষয় আত হইল
সে স্থান এই মত শীতল যেরা দ্রিভে নিত্য
অন্যমন হয় এবং সেখান শত সূর্য
ইংল্যান্ডে মত সে স্থান আভির্শয় ওত্র
অনুমান হয় যে সম্মদুহ অলহইতে
শাত তাহার নীচপণ্ডিত হাত ওত্র ইংল্যান্ড
দেশে যে ওত্রকাল জন্মে সে মকল
জন্ম এই স্থানে জন্মে সেখানে দাকটিনী
ও মডিচও আনে সেখানকার লোকেরা
তিন পুকার আতি সূখায় তুম্বারি বিজয়
কট্টী তৃতীয় বরণী তাহারদের তুম্বারি
ওত্রম আতি। এই তুম্বারি কেবল রাখা
লের বর্ম্ম করে। অত লু স্থানে থাকি
য়াও এই তিন আভির ভাষা ও ব্যবহার
ভিন্ন ও তাহার দেশের লোকেরদের
মত তাহারদের বাসস্থানের বৈধ্য নাই।
তাহার অঙ্ক চন্দ্রকৃতি ঘর করে ও সেই
ঘরের দ্বার মুক্তিকার নীচ করে তাহাতে
আপনারা যাওয়াতে করে এ ইয়ু নির্ভাত
হয়। তাহারদের গোষ্ঠীর মাঝে এক
জনেরমাত্র বিবাহ হয় তাহাতে মকলে
ই মকল হয় এই মকল-সম্মার কোন
কর্ম্ম করে না পুত্রদেরা রজনাদি পার্শ্ব
গৃহকার্য করে সে স্থান যদি কোথাও যা
ইতে ইচ্ছা করে তবে এই পুত্রেরা বে
হাচার মত শীলকট্ট করিয়া তাহাকে বহে

সমাচার দর্পণ।

ইত্যাদি পুকার সম্বন্ধে ঐ স্বীকৃত হইবে।
ঐ স্বী যে দিন বাহার পুতি ইষ্টা হয় সেই
দিন তাহাকে বামি ভাঙ্গ করে ইহাতে
তাহারদের পরস্পর বিবাদ কখন হয় না
কিন্তু ঐ স্বীর বিবাহ ইহবার পূর্বে সেই
ঘরের সকল পুরুষের সম্মতি হইলেই বি
বাহ ইহাতে পারে নতুবা এক জনের অ
সম্মতি হইলে সে স্বীকে ঘরে আনিতে
পারে না।

বট বৃক্ষ।

বৃক্ষের মধ্যে ভারত বর্ষের প্রচীন জ্ঞান
বট বৃক্ষ। নন্দীনা নদীর মধ্যে এক গুপ
বটন এমন বট বৃক্ষ আরে যে অমূল্য
পের মধ্যে ডেমন বৃক্ষ নাই তাহার নাম
কুবেরবট। যেহেতুক সেখানকার লোকেরা
বলে যে কুবের নামে এক জন মহাধ্যাত
বৈষ্ণব সেখানে ছিলেন তিনি এখানে
আপন ইষ্টাশ্রম করিলে পর ঐ বট বৃক্ষে
র নীচে তাহাকে মাটি দিয়াচল তৎ
সমুদ্রে তাহার নাম কুবেরবট ইহাচার
ঐ নদীর তীরদেশে ঐ গুপতী অনেক
ভাঙ্গা গিয়াছে এবং ঐ বৃক্ষের শিখড়
অনেক গিয়াছে ও তাহার জলও এখন
অনেক অল্প ইহাচারে তাহার গোঁড়ার
প্রতিখানা বেচে ডের শত হাত। ঐ
বৃক্ষের বড় বোড়া তিন শত বর্গাণ এবং
জোটে বোড়া তিন হাজারের অধিক।
এক ঐ তিন হাজার বোড়া মৃতিকাতে
সুন্দর ইহাচারে ও তাহাইহাউও
আর বোড়া লিখিত ইহাচারে ঐ কুবেরবট
ভারত বর্ষের মধ্যে পুসিদ্ধ তাহার নীচে
দশ শোনের হাজার মৈলা জংঘল করিয়া
থাকিতে পারে ও তাহার নানা পুকার

তালের মধ্যে লক্ষ পক্ষি লিখা বাস করে
সেখানকার চতুর্দিকের লোকেরা সেই
বৃক্ষে এক উর্ধ্বদল আন করে ও দর্শন
করিতে অনেক লোক যায় এবং সেখান
কার ঐ গুপ্তগুহা নামী মারিবার কারন
সেখানে গিয়া তাহার নীচে দুই তিন
সন্তাই বাস করে।

মূল।

গত সন্তাই মো পেনেরিতে এক
বৃক্ষের বালককে লইয়া ঐ গুহায়ের
এক আলো মূল করিয়া তাহা অল্প কীর
লইয়াছে এবং ঐ দিন মাঝে-কালে সে
আর এক আশের স্বীকৃত কহিল যে তা
মাত্র মাংস। তোমাকে দেখিতে ঘাটে
আসিয়াছে তুমি আমার সঙ্গে আইন।
তাহাতে সে তাহার সহিত সেখানে
গিয়া দেখিল সকল মিয়া। আসা
কহিল তবে তোমার মাতা এখানে গিয়া
কে তোমার লোকের আইন। ইহা কহিয়া
লোকের লইয়া মধ্য গিয়ায় তাহার অল
কীর লইয়া তাহাকে সঙ্গে ছেলিয়া দিল।
তাহার যায় ছিল এ সারন অন্য লোক
এলাদা তাহাকে তুলিয়া লইল। সেই
স্বীর প্রমাণ তাহা বৃত্তান্ত পুকার ই
য়া ঐ লোকের জমি ইহাচারে।

অমী বিষ্ণুর ইষ্টাহার।

অনেক লোকের অমী নামিন ভোমারো রোজ ও তারিখ
নামক গীতের কপলি লসকার হানী আশের ভার
পুকার ছায়ে নিম্নের বিবরণ ইহাচারে ও ওভার সম্বন্ধিত
বোড়গিন্দু লাক্ষ্মীর বটমণ্ডল কখন ভোমারো কাক
কি কারাতিতে লক্ষ্মী ইহাচারে।
মার্গের বৃহস্পতি ১৫ আশ্বিনে সন ১৮১৬ ইং ৪ ইশ্বিন
সন ১৮ ১৬ বর্ষ বোড়গিন্দু লাক্ষ্মীর বটমণ্ডল।
মার্গের বৃহস্পতি ৮ আশ্বিনে সন ১৮১৬ ইং ৫ ইশ্বিন
সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

মার্গের বৃহস্পতি ১৫ আশ্বিনে সন ১৮ ১৬ ইং ৪ ইশ্বিন
সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

মার্গের বৃহস্পতি ৮ আশ্বিনে সন ১৮ ১৬ ইং ৫ ইশ্বিন

সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

মার্গের বৃহস্পতি ১৫ আশ্বিনে সন ১৮ ১৬ ইং ৪

ইশ্বিনে সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

মার্গের বৃহস্পতি ৮ আশ্বিনে সন ১৮ ১৬ ইং ৫ ইশ্বিন

সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

মার্গের বৃহস্পতি ১৫ আশ্বিনে সন ১৮ ১৬ ইং ৪ ইশ্বিন

সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

মার্গের বৃহস্পতি ৮ আশ্বিনে সন ১৮ ১৬ ইং ৫ ইশ্বিন

সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

মার্গের বৃহস্পতি ১৫ আশ্বিনে সন ১৮ ১৬ ইং ৪ ইশ্বিন

সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

মার্গের বৃহস্পতি ৮ আশ্বিনে সন ১৮ ১৬ ইং ৫ ইশ্বিন

সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

মার্গের বৃহস্পতি ১৫ আশ্বিনে সন ১৮ ১৬ ইং ৪ ইশ্বিন

সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

মার্গের বৃহস্পতি ৮ আশ্বিনে সন ১৮ ১৬ ইং ৫ ইশ্বিন

সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

মার্গের বৃহস্পতি ১৫ আশ্বিনে সন ১৮ ১৬ ইং ৪ ইশ্বিন

সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

মার্গের বৃহস্পতি ৮ আশ্বিনে সন ১৮ ১৬ ইং ৫ ইশ্বিন

সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

মার্গের বৃহস্পতি ১৫ আশ্বিনে সন ১৮ ১৬ ইং ৪ ইশ্বিন

সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

মার্গের বৃহস্পতি ৮ আশ্বিনে সন ১৮ ১৬ ইং ৫ ইশ্বিন

সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

মার্গের বৃহস্পতি ১৫ আশ্বিনে সন ১৮ ১৬ ইং ৪ ইশ্বিন

সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

মার্গের বৃহস্পতি ৮ আশ্বিনে সন ১৮ ১৬ ইং ৫ ইশ্বিন

সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

মার্গের বৃহস্পতি ১৫ আশ্বিনে সন ১৮ ১৬ ইং ৪ ইশ্বিন

সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

মার্গের বৃহস্পতি ৮ আশ্বিনে সন ১৮ ১৬ ইং ৫ ইশ্বিন

সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

মার্গের বৃহস্পতি ১৫ আশ্বিনে সন ১৮ ১৬ ইং ৪ ইশ্বিন

সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

মার্গের বৃহস্পতি ৮ আশ্বিনে সন ১৮ ১৬ ইং ৫ ইশ্বিন

সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

মার্গের বৃহস্পতি ১৫ আশ্বিনে সন ১৮ ১৬ ইং ৪ ইশ্বিন

সন ১৮ ১৬ বর্ষ কাকেরি কারাতিতে।

এই সমাচার দর্পণ ঐরাবতপুরের জাণাখানাত পুতিসন্তাই পশ্চিমের জাণা হয়। তাহার লগনের আশাশ্রম থাকে তিনি ঐরাবতপুর
জাণাখানাত আপন নাম পাঠাইলে সন্তাই। তাহার তাহার লিখিত পাঠান যাবক তাহার মূল্য মানে। এক টাকা। যিনি স্বাক্ষর
করিয়াছেন যদি তাহার লিখিত না পৌছে তবে তিনি ঐরাবতপুরের জাণাখানাত সমাচার দিব্যাত তাহার লিখিত পাঠান যাবক।

সমাচার দর্পণ

৪৫ সংখ্যা।

শনিবার।

১৭ মার্চ সন ১৮৭৯।

১৫ চৈত্র সন ১৯১৪।

দর্পণে মুখ্য সৌন্দর্য্যমিহি কার্য্যবিচক্ষণাঃ। বৃত্তান্তাদিহ আনন্দ সমাগারস্য দর্পণে ॥

কোম্পানির কার্য্য।

কোম্পানির শতকরা চয় টাকার সুদের
কর্তা কর করিতে হইলে শতকরা এক
টাকা আট আনা ভিন্নকোষ। বিসয়
করিতে হইলে শতকরা দুই টাকা ভিন্ন
কোষ।

সম্ভাতির পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|-------|----------|----|-------|
| ১১ | মার্চ | শনিবার | ১৫ | চৈত্র |
| ১২ | ১ | রবিবার | ১৬ | ১ |
| ১৩ | ২ | সোমবার | ১৭ | ২ |
| ১৪ | ৩ | মঙ্গলবার | ১৮ | ৩ |
| ১৫ | ৪ | বুধবার | ১৯ | ৪ |
| ১৬ | ৫ | শুক্রবার | ২০ | ৫ |
| ১৭ | ৬ | শনিবার | ২১ | ৬ |
| ১৮ | ৭ | রবিবার | ২২ | ৭ |
| ১৯ | ৮ | সোমবার | ২৩ | ৮ |
| ২০ | ৯ | মঙ্গলবার | ২৪ | ৯ |
| ২১ | ১০ | বুধবার | ২৫ | ১০ |
| ২২ | ১১ | শুক্রবার | ২৬ | ১১ |
| ২৩ | ১২ | শনিবার | ২৭ | ১২ |
| ২৪ | ১৩ | রবিবার | ২৮ | ১৩ |
| ২৫ | ১৪ | সোমবার | ২৯ | ১৪ |
| ২৬ | ১৫ | মঙ্গলবার | ৩০ | ১৫ |
| ২৭ | ১৬ | বুধবার | ৩১ | ১৬ |

ইস্তাহার।

জিলা বহুমানের ডায়াল মায়িয়ু সা
হেব ময়িয়াজেন তাঁহার এই শীশর কুটী
ও তাঁহার লহনা বাঁকী বিসয় হইবে।

জিলা বহুমানের পরগণা গোঁপীভূমিতে
গোঁপীভূমির কুটী তাহার লহনা বাঁকী
দুই হাজার আট শত শকান টোকা।

জিলা বহুমানের এই গোঁপীভূমি পর
গণাতে মোকিরলগু কুটী তাহার লহনা
বাঁকী এক হাজার চার শত অষ্টাশী টোকা।

এই বহুমান জিলাতে চানক কুটী তাহার
লহনা বাঁকী দুই হাজার চার শত তিন
টোকা।

এই তিন কুটীতে অল্প দিন কর্ম্ম বহু
হইয়াছে তাহাতে মেরামতী মরত অল্প
ডেই হইবেক।

আরো শহর বহুমানের এই কোম্পানির
কর্ম্মের কার্য্যবিচক্ষণাঃ।

জিলা বহুমানের পরগণাতে বেল
গোঁপীভূমি কুটী।

এই বহুমানের নলই পরগণাতে টোকা
কুটী।

এই বহুমানের বালগুর পরগণাতে গোঁ
পীনাথপুর কুটী।

এই চার কুটীতে কতক বহুমানের হইল
কর্ম্মবন্দ আছে। কিন্তু সেই কুটীর হৌজ
ও পানির হৌজ ও মোহলীর হৌজ মেরা
মজীর মুগ আশরক নাই এবং এই চার
কুটীর লহনা বাঁকী আশরক চয় হাজার
মাত শত টোকা।

এই মাত কুটী মায়ীর লতনের বাসনা
থাকে তিনি আলেক্সান্দ্র কোম্পানির ঘরে
হয়মান করিবেন।

কলিকাতা ১৭ মার্চ।

শুভ্র কোটর হরিনাথের বাহাদুরের
বিবাহ।

মুর্শেদাবাদের কানীমবাজারে শুব্র কোটর
হরিনাথের বাহাদুরের উত্তবিবাহ ১৬ কালক
হইয়াছে তাহার ব্রতও দুই লক্ষ টাকা সময়
মত জিনিসের কমায়ে অধিক বয়ের মেহত
বিবাহ হইয়াছে এবং বিবাহ ভঙ্গে কোম্পানির
হয় নাই ও কেহ কেহে নাকি ইহার বিচারিত
রক্তাক্ত বাহ বাসীনা কাশের ও আশরক ও
দুই বাসীনা ও নানাবাতি বহু লক্ষ আশু
কালস আশরক কামরাহা হাতিম আতা ও
কুল নানাবাতি নির্মিত হইরাহিল বিল মন
বেহেত চারি হও দুই করিলে জান করিত
হে নির্মিত দুই নতুন বৌটো লোকে শুব্র
কাল করিয়াছে এবং উত্তম করিয়াহি। ইহার

দিনের একই বাসীনার দুই তিন শত চারি লক্ষ
জাহাজে মোমবাতি লোহা এবং পাঁচ লক্ষ
বাসীনা গোলাপী বাহ তিন হাজার গোলাপী বাসী
না এক হাজার মোমবাতি দুই শত মন রক্তা
গোলাপী হয়। নাকি মনুসি ইহক ৫ কালক
লগায়া ১৫ রোজ বশ জাহাজ বাই ও তিন তার
কা তাঁহ ইহা নেওয়ার কালও তিন গোলাক
অনেক এই তারিখে শুব্র কোম্পানির বাহাদুর
আইবহ থান পর কামে বেখানে নিমন্ত্রণ
যান নানাবিহ বাহ ও নানাবিহ লক্ষ
এবং রক্তাক্তের দ্বিত অল্প রক্তাক্ত
নানাবিহ করিয়া গমনায়ন করিতে বিব
হের মনসি এক দিন এক বেহেত লোহের
গমন হইরাহিল তাহার বিচারিত শুব্র মন
নিমন্ত্রণমতে বেহি বিচারি মন শুব্র
বাহ মনসি ও অনুসোক ই কুটীর মন
লগায়া অতি মন ১০ কালক পর কাম
বাসীনা আশরক আশরক আশরক ও কোম্পানির
বাসী ও কালেক্তরি ও পানি ও কোম্পানির
কুটীর আশরক ও কোম্পানির আশরক ও পন্থের
বাহাদুর মনসি আশরক ও বহুমান ও
গরহ মনসি লোক ও বিচারিত ও বাহ
লোক একক এবং শুব্র মনসি মনসি
বাহাদুর একক মনসি বাহ ও গান ও বাহ
ও আশরক নানাবিহ লক্ষ আশরক দুই করি
য়া পরমাণু হইরাহিল। পর ১০ তারিখে
মুর্শেদাবাদের বাহাদুর ও শুব্র
কাম বেট মনসি মনসি আশরক করিয়া
পিন করিয়া গান বাহ শুব্র করিয়া
হইলেন এবং বেট মনসি রক্তাক্ত থানা বি
চারিত মনসি গমন করিয়া শুব্র দুই করিয়া
কুটীর মনসি পর ১০ তারিখে হত মন

সমীচারণদপণ।

কোন হর শ্রীযুত রায়কমারমুনানপুত্রের
আবদান হইয়াছিল ১৬ তারিখে তত বিবাহ
ইহার রত্নমালা এবং নলডল ও নানাবিধ বাবু
ও নানাবিধ গুণ্ডারি ও হস্তী ও খোঁটাকারি
অন্য এবং পাত্তিক বর্ণরূপ নির্দিষ্ট হইত
হস্তে অর্থাৎ গোঁটবরার আসাবরার ও বাণ
বরার ও গুরুবরার ও নওরত্ন ইত্যাদি নল
ডল অনেক রত্ন নির্দিষ্ট এবং কলিকাতার
কারিগর নানাবিধ হবি নির্মাণ করিয়া রত্নমালা
গলে নইয়া গিয়াছিল এই সকল সরঞ্জাম সেই
বার মুক্তিয়া মকর ও বেহারা দশ হাজার হই
লক্ষ লোক পথে জমায়েত চলনশক্তি না হইয়া
মিলন যাকিক ঐ রাক্ষবাতীর বার আর কোম্পানীর
করীর নব্বই রাক্ষবীয়া কালিকাশ্রী হইয়া ঐ
হই কোণ কিরীয়া পূর্ববর্তী রাক্ষবাতীর বার
পরন্তে মিলনবন্দী হইল ইহার মধ্যে আভরণের
নানা ভাতি কারখানাতে আশ্রয় পোতা হই
য়াছিল ভাসমানগিরি মর্বভাসময়ী ওমরা এবং বেশ
বিশেষীর লোক জমায়েত হইরাছিল পর বিবল
করা পাণ বাকী আইলে কাপালি তিচ্ছ ও
বিশু ও অকীর ওগরহ রত্নদি হাকার লোক
কোম্পানির বাসকধানার বাগীতে পুত্রী ধাণ্য
জাম্বুগী যথোযোগ্য এবং মুগু ও যথোযোগ্য
পুনার করাতে ভুই হইয়া সকলেই আশীর্বাদ
করিয়া হু হুানে যেন আর ভগ্নেশের ব্রাহ্মণ
ও ভু লোক মহানন্দ ও কাশান ও গরীর আসা
ফল সাধারণ এবং পিতলের বড়া ও তৈল ও তেলী
ও মট্টারার পাণ্ডী ও অন্যান্য ও মলা ও গার
রহ ও এক পিতলের ধান পুত্রেয় নলকে
জোতা লেন। এবং আয়লা ওগরহেরগিন
কে পোশাক দান ও বোশা ও যথোযোগ্য
কুলে নিরাহেন এবং ওবান লোকের ৬৬ বিবে
জনা করিয়া ভগ্নেশীয় পারিতোষিক নিরাহেন
বেশ বিশু নকলের বুঝ হইয়াছে ইহাতেই
এ কার্যে সকলেই যথেষ্ট অনুগ্রহ করিতেছেন
আলাদার সাধারণ লোক নানাবিধ ভক্ষণ সামগ্রী
তে বৃত্ত হইয়াছে এ কার্যে অসংখ্য লোক

নন্দ বাবু নিযুক্ত হওয়াতে কার্যের সকল ব্যাধি
হইয়াছে বাবুর পুত্রের পরিণাম নাই বাবুর
বৈদগ্ধ্য ও ভবিষ্যে সকল লোক ভুই হইয়াছে।
শ্রীযুত কোর হািমাথ রায় বাহাদুরের
বিবাহ যেরূপ হইয়াছে ইহা হইতে আরিক
হইলেও আশ্রয়ের বিবরণ নহে যেরূপে তিনি
কাত বাবুর পৌত্র ও রাজা দোকনাম রায় বাহা
দুরের পুত্র নিজে অভিনুশীল ও ওবান ও
নাভা ও অনুভূতপুত্রিলাস এত অল্প বয়সে
এত ওপ হওয়া অনেকের দুর্ভট।

সমীচারণদপণ।

কলিকাতা নৌবাহিনী শহর।

কলিকাতা নৌবাহিনী শহরে দুই প্রকার আশ
নারা দুর্ভট করিয়া মাঝে। শহর দাঁহ
কর। ইহাতে ওখাকার সুবেদি বাহাদর
এ ওজীর আদালত করিয়া খির করিলেন
যে ঐ শহর দাঁহ করা অসমর্থ কর্মনাহে
কেবল ইচ্ছাই হইতে হয়। ইহা বিবেচনা
করিয়া শহরে ইচ্ছার মিলাছেন যে
কোন ইচ্ছা শহরে থাকিতে না পায়।

দুর্ভট পুস্তক।

শ্রীযুত রায়মহাশয়রায় অধ্যক্ষ বেদের মণু
কোশনিধর এ শঙ্করাচার্য্য কৃত তাহার
টীকা বাকী লগা ভাষাতে উজ্জ্বল করিয়া
ছাপাইয়াছেন।

মাথাভাঙ্গা।

মাথাভাঙ্গা আল এখন প্রায় শুদ্ধ হই
য়াছে ভারি হোয়াই নৌকা আনিবার
কোন পথ নাই। গত মঙ্গলহে পল্লিম
হেঁশেই হইতে কথক ভুলা আশিয়া যো
কলিকাতায় নৈবরিয়াক কিং সে ফুদ
লোভাচার্য্য হই তিন গাঁটি করিয়া আভি
বস্ত্র আনিয়াছে সকল মহাত্মন এই
প্রকারে আনিতে পারিবে না। অনুমান

হয় যে পর্যন্ত আল না (Alana) যায় তাহা
কোন জিনিস এতদ্দেশে আনিতে পারিবে
না।

ভুলা।

পল্লিম দেশেই হইতে ভুলা পুত্রের যেম
মাঠার আনিয়াছে সে মন্দ কেহ নিখে
ভুলায় কৃষি অল্প হইয়াছে এবং সর বৃদ্ধি
না হওয়াতে নীলের এ অনেক ক্ষতি হই
তেছে অন্য ২ বৎসর এ মাঠে নীলের
চঁরা এক বিঘ্রত মুখাম হইতে এই বৎসর
ফালে নীল বঁজ বপন করা যায় নাই।

রোণ।

বুজা দেশের রুদ্র শহরে অতিশয় এসা
ওঁগর বৃদ্ধি হইয়া অনেক লোক মরিতেছে
ইহাতে অনুমান হয় যে এলাখাঁ রোণ
মহা দিবস হয় করিতে সকল পৃথিবী ভূমণ
বরিতেছে এবং পুর্বার এতদ্দেশে
মাঝে। প্রকাশিত হইতেছে কিন্তু এবং
সর এলাখাঁ বনভুক্ত মহায় করিয়া
আনিয়াছে বনভুক্ত হারাও মাঝে। লোক
মরিতেছে।

আমীর গড়।

আমীর গড় হইতে কিছু খির সমীচারণ
পঁছরে নাই শ্রীযুত আশানাহেব ঐ আ
মীর গড়ের মাঝে নিযুক্ত পুর্বে করি
য়াছেন এবং অনরব হইয়াছে যে নিযুক্ত
রিবরের অবশিষ্ট যে চিত্র নামে এক অল
জিল তাহাকে সম্রাট হাণ্ডু খাইয়াছেন।
এবং তাহার পুত্র মহম্মদ পান্না আশনি
শ্রীযুত সর ওল মালমহা সাহেবের পুত্র
পালম হইয়াছে।

আমিয়ার ওপাশী।

আমিয়ার পুত্র নিখিলমণি যে শ্রীযুত সর তা
মস রামচন্দ্র সাহেব পুত্র সমুদ্রের সমীচারণ
ওপাশীর ইং প্রাচীরের মের পক্ষ অতি

সমাচার দর্পণ।

হুইয়াছেন তিনি সেখানে ঘাইতে পূনা
লিলাই শহরে রহিয়াছেন পূর্ন সমুদ্রের
ওপাশী সমুদ্রের পশুর বাণিজ্য আতি
আকাংক্ষণীয় হস্তাধারের আশা নারদের আ
ধিকৃত ওপাশী পুনঃস্থিতি পাইয়া অন্য ওপ
শীর বাণিজ্য কুঠী ও আশনারদের পরা
ক্রম ক্রমে স্থির করিতেছে এবং প্রাপ্ত
চ্যামস রাজ্যে সাহেব ইংল্যান্ডেরদের
কারন সেই ওপাশী ও অন্য ওপাশী
বাণিজ্যের কুঠী বনাইতেছেন। শেষে
জ্ঞান চাঞ্চল্যে যে তিনি সিংহাসন
নায়ে এক ওপাশী ইংল্যান্ডের নতুন
জাইয়াছেন তথাকার বারশাহ সেই
ওপাশী ইংল্যান্ডের নতুন জাইয়াছেন।
সে স্থান এখান হইতে আশাভাষার গান
বোনে ঘাইতে পথে বসে। সেখানে ইংল
ণ্ডেরদের বসতি হইয়া অনেক পুরা
বাণিজ্য হইতে পারে সেই ওপাশী ও তা
হার চতুর্দিকে ওপাশী হইতে ক্রমাৎ
আয়াজ ও লবন ও তৈল ইত্যাদি সমস্ত
পুরা গিন্না মসানা সহ দেশে যায়
অন্য দেশে ঐ মসানা মসানা আনু না
ঐ মসানা মসানা মসানা দেশের প্রয়োজন
যোগ্য অতএব সেই ওপাশীর বাণিজ্য
মসানার আকাংক্ষণীয়।

সহযাত্রী।

শহর কলিকাতায় এক ব্রাহ্মণ মরি
য়াছেন অসুস্থতা তাহার স্ত্রী সহ
যাত্রী করিয়াছে আশ্রয় স্থানিয়ায় যে
দুই দিন পর্যন্ত আশ্রয় মৃত স্বামীকে
রক্ষিয়া তৃতীয় দিন সহায়ক করিয়াছে
এত বিলম্বে সহায়ক করিতে পূর্বে স্থিতি
নাই। তাহার কারণ এই স্ত্রীর যত্নে বি
বেচনা করিতে এত কাল বিলম্ব হইল। ক
থক বঙ্গের হইল শ্রীশ্রীমত নানাবর্ণীয়
ইহা সহায়ক পাইয়া পতিদেরদের দিক

তে হিন্দু শাস্ত্রানুসারে সহায়ক বিবয়ে
যথার্থ বারম্ভা লইয়া আশ্রয় স্থানিয়ায় যে
যেও শ্রমবল্লব করিয়া গতিবর্তী হি
য়া তাহার অশ্রিত বালক থাকে সে স্ব
সহায়ক করিতে পাইবেক না।

এক হিন্দু শাস্ত্র ইহাও কহে যে সহ
যাত্রী দিকন কর্মে নিষিদ্ধ মুক্তি হইতে
পারে না কিন্তু মুখ্য ভোগ্যায় হয়। অত
এব হিন্দু শাস্ত্রের মতে নিষিদ্ধমাত্র
কর্মের পুণ্য-না করিয়াছেন।

অধিক সহযাত্রী বাগীনা দেশে হয় প
লিম্ব দেশে তাহার চতুর্দিক হয় না
এক বাগীনার মধ্যে ও কলিকাতার কোট
আশ্রয়ের অধীন জিলাতে অধিক হয়
আরো হিন্দু বান যত সহযাত্রী হয়
তাহার মাত অংশের একাংশ কেবল
জিলা স্থগলিতে হয়।

অসুস্থ।

অসুস্থ শহর অন্য মসল শহর হইতে
শৌখিন স্বপ্ন নির্মিত সে শহর এক শত
বঙ্গের হইল মহারাজ অসুস্থ গিয়া
য়াছেন সেখানকার বঙ্গ আশ্রয়িকা
কাঁচ বিনা গৃহিত কেবল খাশান দ্বারা।
সেখানে যে রাজবাড়ী আছে সে ইউ
রোপীয় রাজবাড়ীর রূপান সে রাজ
বাড়ী অতিশয় বৃহৎ তাহার মধ্যে অ
নেক মহল ও বাগীচা ও পুষ্করিণী আছে
তাহার মধ্যে এক খানে এক পুষ্করিণী
বেত কোশ আয়ত ও ঐ পুষ্করিণীতে সু
ন্দর এক নৌকা থাকে মহারাজ ইচ্ছা
মত কখন ঐ নৌকারোহন করিয়া
সরণ ভ্রমণ করেন। অসুস্থের লোকেরা
অন্য কর্মে নিষিদ্ধ ও তাহার কেবল
স্বথের কারণ মনোনিবেশ করে সে নয়
কিন্তু অজান হওয়ার শিথিল। এবং
সেখানকার লোকেরা পদদ্বার কর্মে এমত
পতিত যে অন্য দেশীয় লোক তাহারদের

নিকটে পরাক্ত হয়। তাহার অন্য হিন্দু
লোক হইতেও ঘোণীনি ও ভিকীনি ও
নাগিকা ও সিদ্ধ পুষ্করিণী ভয় অনেক
রাখে এবং সেখানে যাওয়ারদের পাঁচ
চল এমন বৃদ্ধরাও কহে যে ঘোণীনি
পুষ্করিণীর সহিত তাহারদের ঘোণা ও
আলাপ হইয়া থাকে এবং তাহার কহে
যে আদুরার কোন লোক কোন বালকের
ওপরে দৃষ্টি দিলে ঐ বালক তিনবার দু
গিয়া পড়িয়া মরে। ইত্যাদি নির্দেহি
বাহার তাহারদের অনেক আছে।

কবুতরদ্বারা সমাচার পাঠান।

পূর্বে কালে যখন মুসলমানদের অধি
কার ছিল তখন বাগদাদ শহর অবধি
আলোপাশী শহর পর্যন্ত কবুতরের দ্বারা পত্র
পাঠান ঘাইত। সে দুই শহর অনেক
দিনের পথ অস্তর। তাহার পূর্বে কবুতরে
রাজস্বক ইমত শিখাইত যে তাহাতে
কবুতর শিক্ষিত হইয়া যেখানে পাঠাইত
সেইখানে ঘাইয়া পত্র বহুজাইত। এখান
জ্ঞান ঘাইতেছে যে ইংল্যান্ডের রাজবিনী
লণ্ডন শহর হইতে ফ্রান্সের রাজবিনী
পারিস শহরে পত্র পাঠাইবার কারণ
কবুতরের দ্বারা শিখাইতেছে।

কবুতর পুষ্করিণী।

কথিয়া দেশের সমাচার পাঠান গেল যে
সেখানে এক ব্যক্তি আশ্রয় পুষ্করিণীতে
এক কবুতর সবে করিয়া স্থানান্তর
ঘাইতেছিল পথে অকস্মাৎ এক ভাঙা
আসিয়া ঐ ব্যক্তিকে বধ করিয়া তাহার
স্থান ঘাড়া ছিল তাহা লইল। পরে ঐ
কবুতর ওসমান ভাঙাতিতে বধ করিয়া
মৃত মূর্খদের নিকটে আসিয়া
পৌঁছাইল।

সমাচার দর্পণ

অতএব হিন্দু গোত্রে কুব্জের যে জয় ওন
কহিয়াজেন তাহার মতই প্রবান ওন এই।

আনেক আহার করে অল্পে ভুজ্য হয়।
শীঘ্র নিদ্রা যায় আর শীঘ্র নিদ্রা ক্ষয়।
শুভ্রভক্ত আর যথাক্রমে পরাক্রম।
কুব্জের জয় ওন শাস্ত্রের নিয়ম।

আমির গাত।

কল্যাণ সমাচারে শ্রদ্ধা গৌল যে প্রযুক্ত
মহর অল মালকম সাংহেরে নিরুটে আ
কীর গাতের কিল্লাদার স্বীকার করিয়া
জিল যে ই মাংহেরে গোয়ালিয়র যাই
বার সময় ই কিল্লাদার তাহার সহিত
সাক্ষাৎ করিতে আনিবে তাহাতে সে আ
ইনে নাই এই নিয়ম ইংল্যান্ডের
কাসীর গাতের পুত্র পুত্রীর যুদ্ধাযোগ
করিতেছেন। ইংল্যান্ডের মকল
কামান সেখানে যাইতে অনেক বিলম্ব
হইবে সেহেতু সেখানেকার পথ অতিদূ
রম। আশীর গাতের তেওরিহ্ব দেশে
এ মার্চ তাখিখপার্ব্য অতিশয় শীত
ছিল এবং সম্রাট নদীর যেখানে জল
কম আছে সেখানে জল একবারে পা
থর হইয়াছিল। এবং অতঃপর মাস
অধি সে দেশে কিছু বৃষ্টি হয় নাই।
কম সাগর শহরহইতে পলু আইল
তাহাতে আনা গৌল যে সেখানেহইতে
অনেক সৈন্য ও কামান পুত্রি আসীর
গাত্রে যাইতেছে কিন্তু এই মাসের তৃতীয়
দিনে তাহার গাতের পুত্রি কামান থা
না যাইবে কিন্তু অনুমান হয় সেই সৈন্য
পথভ্রমণ করে সে গাত অধিকার হই
বেক যেহেতু সে এক মাসের পথ।

চিপুসুলতান।

মহাসুলতান রাজা হুয়দারালির পুত্র চিপু
সুলতান জিল ই হুয়দারালির বিবরণ
পূর্বে আমরা লিখিয়াছি হুয়দারালি অতি
শয় দুরন্ত অথচ আনবান ছিল কিন্তু
তাহার পুত্র চিপুসুলতান কেবল আনব
লিতাই দুরন্ত স্বভাব পাঁইয়াছিল। চিপু
সুলতান নগর প্রায় কিল্লাও বন্দর মান
দিন পুত্রি তাহা ঘুরেঘুরে নাম বদল
করিয়া নুতন নামেরাখিয়াছিল। সে যে
তামিল করিয়াছিল সেই তামিল মহাবা
মানে রাখিতে মকলৈর পুত্রি আনা দিত
এবং যে বিষয় তামিলে ছিল না করিয়া
ছিল সে বিষয় গুপ্তি হইলে চিপুসুল
তানের নিকটে পঠিত হইয়াসুত করিতে হ
ইত। এক দিন এক পুত্রার ইস্তুর ঘেহে
অগ্নিলাগিয়াসকল ঘাই হয় ইহা দেখিয়া
ই পুত্রা অত্যন্ত ব্যস্ত হইয়া ইঁপাইহইতে
আমিলের নিকটে আস্ত করিল। আমিল
কহিল যে দেখি তামিলের পুস্তকে এ
বিষয় কি লিখা আছে। ইহা কহিয়া অ
নেক বিলম্বে তামিলের পুস্তক পলিয়া দে
খিল যে সে বিষয় কিছু লিখা নাই। পরে
চিপুসুলতানের নিকটে গিয়া আমিল পর
খাস্ত করিল। পরে চিপুসুলতান বহিল
যে আমিল ভাল ডয়ারককাগী। ভাল
মুহারকে তাক ইস্তুরে অগ্নিলাগিলে
কি কর্তব্য তাহার নুতন এক ব্যবস্থা হইল
এই মকল বিবেচনা করিতে পুত্রার মন্তব্য
হইল হইল।

অমী বিক্রমর ইস্তার।

অনেক লোকের অণি লামিন কোমারি গৌল ও তারি
নকল পীরত লামিন লরকার হাণী অগার অ
হার লামিন লামিন লরকার হাণী হইবে অ
এ অ

পের ইকিহির কোট চিপুসুলতান হুয়দারালির অম
কো লাহার কামকরি তাহারি লামিন হইবে।

চিপুসুলতান হুয়দারালির ১৯ আগস্টের লম ১০:১৫ ইং ১৬ ইং

পার লম ১৬ ইং ১৭ ইং গোয়ালিয়র লাহারি হুয়দারালির

হুয়দারালির হুয়দারালির ১৯ আগস্টের লম ১০:১৫ ইং ১৬ ইং

লম ১৬ ইং ১৭ ইং গোয়ালিয়র লাহারি হুয়দারালির

ইতি তারিখ ১০ মার্চ লম ১০:১৫ ইং গোয়ালিয়র লাহারি

অনেক লোকের অণি লামিন কোমারি গৌল ও তারি

নকল পীরত লামিন লরকার হাণী অগার অ

হার লামিন লামিন লরকার হাণী হইবে অ

এ অ

চিপুসুলতান হুয়দারালির ১৯ আগস্টের লম ১০:১৫ ইং ১৬ ইং

পার লম ১৬ ইং ১৭ ইং গোয়ালিয়র লাহারি হুয়দারালির

হুয়দারালির হুয়দারালির ১৯ আগস্টের লম ১০:১৫ ইং ১৬ ইং

লম ১৬ ইং ১৭ ইং গোয়ালিয়র লাহারি হুয়দারালির

ইতি তারিখ ১০ মার্চ লম ১০:১৫ ইং গোয়ালিয়র লাহারি

অনেক লোকের অণি লামিন কোমারি গৌল ও তারি

নকল পীরত লামিন লরকার হাণী অগার অ

হার লামিন লামিন লরকার হাণী হইবে অ

এ অ

চিপুসুলতান হুয়দারালির ১৯ আগস্টের লম ১০:১৫ ইং ১৬ ইং

পার লম ১৬ ইং ১৭ ইং গোয়ালিয়র লাহারি হুয়দারালির

হুয়দারালির হুয়দারালির ১৯ আগস্টের লম ১০:১৫ ইং ১৬ ইং

এই সমাচার দর্পণে প্রায়শঃই যে সকল লোকের প্রতিমূর্তি লিখিত হইয়াছে তাহার লক্ষণের আশ্রয় থাকে তিনি প্রায়শঃই
সমাচার দর্পণে প্রায়শঃই যে সকল লোকের প্রতিমূর্তি লিখিত হইয়াছে তাহার লক্ষণের আশ্রয় থাকে তিনি প্রায়শঃই
সমাচার দর্পণে প্রায়শঃই যে সকল লোকের প্রতিমূর্তি লিখিত হইয়াছে তাহার লক্ষণের আশ্রয় থাকে তিনি প্রায়শঃই

সম্মাচার দর্পণ

৪৩ সংখ্যা

শনিবার। ৩ এপ্রেল সন ১৮৭৯। ২২ চৈত্র মন ১২১৪।

দর্পণে মুখ্য সৌন্দর্য্যমিব কার্য্যবিচক্ষণাৎ। স্বাভাৱিক আনন্দ সম্মাচারমা দর্পণে॥

কোলাণির কাণ্ড।

কোলাণির শতকরা জয় টাকার সুদর
কাণ্ড করা করিতে হইলে শতকরা এক
টাকা আট আনা ভিয়কোষ্ট। বিহয়
করিতে হইলে শতকরা দুই টাকা ভিয়
কোষ্ট।

চালকের কুটী ও তাহার লহনা বাধী দুই
হাজার চারি শত তিন টাকা।
কালহিনাথ মালের কুটী।—
বেলগাঁজিয়ার কুটী।
টীচাই কুটী।

গৌণীনাথপুরের কুটী।
এই চারি কুটীর লহনা বাধী জয় হাজার
শত শত টাকা।

কোন ব্যক্তি রবিবার ব্যতিরিক্ত সমস্তাহের
কোন দিনে এক টাকা পর্য্যন্ত রাখিতে পারে
কিন্তু এক টাকার ন্যূন কিম্বা তিন টাকা
রাখা যাইবে না।

১ দফা। এই ব্যক্তি যাহা পণ্ড টাকা
ন্যস্ত হয় তাহার সুদ দেওয়া যাইবে। কো
লাণীর কাণ্ডের ওপরে যে সুদ পাওয়া
যায় তাহার কম সুদ দেওয়া যাইবে না।
এখন শতকরা নয় টাকার হিসাবের
বাকী সুদ দেওয়া যাইবেক না কিন্তু বা
জার ভাণ্ডে সুদের কমি বেশী পুঙ্ক
গণ্ড বৎসরের টাকার সুদ যে ত্রয়ো
ঐয়া যাইবেক তাহা পুঙ্ক বৎসর ৩০ এক
রোলে পুঙ্ক হইবেক।

৩ দফা। টাকা ন্যস্ত করবার সময়
কোন ব্যক্তিইতে পুঙ্ক কিম্বা লওয়া
যাইবেক না এখন যে ব্যক্তি কোন মা
সের ১৫ তারিখে কিম্বা তাহার পুঙ্ক টাকা
রাখে তাহার সুদ তাহার পর মাসের ১
থম তারিখে অবধি গণবেক।

৪ দফা। যে টাকা এই ব্যক্তি ন্যস্ত
হয় সে টাকা কোলাণির কাণ্ডে রাখা
যাইবেক কিম্বা বাধীল ব্যক্তি কে কিম্বা
অন্য কুটীতে রাখা যাইবে। যে ব্যক্তি
রা এই ব্যক্তির অধিক আছেন তাহার
ব্যক্তি ন্যস্ত পুঙ্কট টাকার দায়িক। কিন্তু
এই ব্যক্তির এই অংশনীয় ব্যবস্থা যে
এই ব্যক্তির ন্যস্ত টাকার মধ্যে এক টাকা
বাণিজ্যমিতে নিয়োগ করা যাইবেক না।

৫ দফা। ইংলিশ সেনে এই মত ব্যক্তি
যে বিষয় লক্ষ্য এই ব্যক্তিরে সেই বিষয়

সমস্তাহের পঞ্জিকা।

| ০ | জমিদার | ১২ | টকা |
|---|--------|----|-----|
| ১ | ১ | ১০ | ২ |
| ২ | ২ | ১০ | ২ |
| ৩ | ৩ | ১০ | ২ |
| ৪ | ৪ | ১০ | ২ |
| ৫ | ৫ | ১০ | ২ |
| ৬ | ৬ | ১০ | ২ |
| ৭ | ৭ | ১০ | ২ |
| ৮ | ৮ | ১০ | ২ |
| ৯ | ৯ | ১০ | ২ |

ইন্ডিয়ায় দেওয়া যাইতেছে।

জিলা বহ্মানে ময়দান সাহেব
ময়দান তাহার নীলের কুটী ও বাসা
র ওইলের একদিকটির সাহেবেরদের
স্বল্প নন্দনারে আশায় বহুস্বত্ববাদের
একজন তারিখে দুই পুঙ্কের সময়ে
ঈদুত ডালা সাহেবের নিলাম ঘরে
বিফর হইবেক।

পুঙ্ক লষ্ট।

জিলা বহ্মানে এই নীলের কুটী ও
তাহার মরগুম ও তাহার লহনা বাধী
ইন্ডে লিখিত মতে।

গোবিন্দপুরের কুটী ও তাহার লহনা
বাধী দুই হাজার আট শত পঞ্চাশ টাকা।
বৌকরলগঞ্জের কুটী ও তাহার লহনা
বাধী এক হাজার জয় শত অষ্টাশী
টাকা।

বিভিন্ন লষ্ট।

সুদর ও শক্ত গুণিত এক পাঁচা মো
ডালা বাসাঘর তাহার মাহী দশটা ও
কম্ব কুটী ও এক মালার ঘর ও দুই মো
লা বারান্দা ও এক নিতীর ঘর ও সেই
ঘরের ওপুঙ্ক বাহিরে নালান্দার ঘর
আছে। এই ঘরের সহিত এক বিঘা
বাগানের ভূমি আছে ও তাহার জমা
পুঙ্ক বৎসর অত্যন্ত। এই ঘর কোন
ব্যক্তির মগরিবার বাস করিবার ওপুঙ্ক
হয়। এখন যে পাঁচোছারা শহর
বহ্মানে গভায়াত করে তাহার নিকটে
অভিমানেয় স্থানে এই ঘর আছে।

এই ঘরের পাঁচা পুঙ্কট মাল
সাহেবের নিলাম ঘরে আছে যে ব্যক্তির
বাঁসা হয় নিলামের দিলের পুঙ্ক সে
খালে গোল দেখিতে পাইবেন।

সম্মাচার দর্পণ।

শ্রীমন্তপুরের সম্মাচার ব্যক্তি।

৪ দফা। ৪ মার্চ ১৮৭৯ সালে সঞ্চিত টাকা
নির্ভাবনাতে ন্যস্ত করিবার নিমিত্ত যে
ব্যক্তি শ্রীমন্তপুরের দ্বির হইয়াছে তাহাতে

সন্ধ্যাচার দর্পণ

১৫০০। যে হিসাব এইমত সহজ হয় যে অত্যন্ত কালে বাকির হিসাব আদি করা যায় এই নিমিত্ত এই বাকি পূর্ণমান ব্যতিয়েক ভাঙ্গা মাসের মূহ দেওয়া যাইবে না। এবং বৎসরাঙ্কে হিসাবের সময়ে আলা ও পাইর মূহ দেওয়া যাইবে না। এবং মূহ কথিলে পাই বরা যাইবে না।

১৬০০। বৎসরাঙ্কে ৩০ বছরের বা কীর হিসাব করা যাইবে এবং সে কালে যে ব্যক্তির নামে যত মূহ হইবেক সেই মূহ আমলের সহিত সম্পন্ন হইয়া ঐ মূহের ওপর আশীমি বৎসরের কারণ মূহ চনিবেক।

১৭০০। কোন ব্যক্তি সেই ৩০ বছরের ডায়রি অথবা ৩০ যে পর্যন্ত এই এক মাসের মধ্যে আপন টাকার কতক কিছা মূহ সময়ে সময়ে বাহির করিয়া লইতে পারিবেক এই মাস ব্যতিরেকে অন্য সময়ে পাঠিতে পারিবেক না। এবং যখন কেহ টাকা লইতে চাহে তাহার ডিন মাস অগ্রে বাকি সমাচার দিবেক কিন্তু যদি সমাচার দিয়া দুই মাসের মধ্যে তাহার মন দ্বির তব বাকি পুন কর্ত সমাচার দিলে তাহার টাকা সেই বৎ বাকি থাকিবেক।

১৮০০। বাকিহইতে কোন লোকের ঘের বাকি তাহারদের নিজ বিষয়ে বাকির কোন সমাচার পাঠাইতে হইলে তাহার তাকের ষরত ঐ ব্যক্তিরদের নামে পতি বেক।

১৯০০। মরকার ও মুখর পুত্তি ও হিসাবের কেতা ও কাণ্ড ও অন্য যে ষরত বাকির বিষয়ে হইবে তাহার কারণ শতকরা আদি টাকার হিসাবে পু তোমক অনেক টাকাহইতে বৎসরাঙ্কে বাদ যাইবেক।

২০০০। বাকির অধিকারদের হুকুম

বিনা কোন ব্যক্তি অন্য ব্যক্তিকে বাকি আপন নামে টাকার বরা দিতে পারিবেক না।

২১০০। বাকির অধিকারদের মধ্যে কোন ব্যক্তি মরিলে কিম্বা বাকিহইতে ভিন্ন হই লে কিছা আর কোন নতুন অধিক বাকি পূর্ব করিলে বাকির অঙ্গণ্ড লোকের দিগিকে সমাচার দেওয়া যাইবেক।

বাকির অধিকার এই ১।
ঐযুত ওইল্যাম কেরি সাহেব।
ঐযুত জসুআ মার্মান সাহেব।
ঐযুত ওইল্যাম ওয়ার্ড সাহেব।
ঐযুত জন মার্মান সাহেব।

যে ব্যক্তি এই বাকি টাকা রাখিতে বাসনা করেন তিনি মোক কলিকাতা আলেক্সান্ডার কোল্লানির নিকটে টাকা রাখিল করিয়া এই বাকির রসীদ লইবেক।

আহাজ হানি।

গত শনিবার মোক কলিকাতায় সমা চার নৈখজিল যে গার্সাচার ওপণীর নিকটে এক চতাবে বাধিয়া এক আহাজ গত বুধবার রাতে ভুবিয়া গিয়াছে সেই দিন প্রাতঃকালে সেখানে লরর করিয়াছিল কিন্তু সোতে লরর ওঠিয়া ছিল। সেই আহাজের কাপড়াল ও আর লোক সে আহাজ ডাড়াইয়া আহাজ ভুবি। এই আহাজ ইংল্ডহইতে মোক কলিকাতাতে আসিতেছিল তাহার মধ্যে অনেক চতকার ছিল তাহারদের সর্বশ ভুবিয়া গিয়াছে তাহার মধ্যে কেবল এক জন পৌরুগীশ নারিক যারা পতিয়াছে যখন অন্য সকল লোক আহাজ ডাড়াই তখন সে কদাচ আহাজ ডাড়াই না।

মদ্রি ওপণী।

সে ওপণীহইতে সমাচার আসি

য়াছে যে সেখানে অতি বড় ব্যত হইয়া অনেক আহাজের ক্ষতি হইয়াছে সে ব্যত প্রাতঃকালে আরক্ত হইয়া দুই পুর পর্যন্ত ছিল। আমরা শুনিয়াছি যে চালু পুত্তি বোঝাই ডিন আহাজ ভুবি য়াছে। এই ওপণী ইহার পূর্ব দুই অতিপুণ্ডে ব্যতে অনেক ক্ষতি হইয়াছিল সে ওপণী ব্যতের জমাখানের মত লাগে।

আশীর গড়পুত্তি।

নন্দা নদীর তীরে ইংল্ডীয় টৈনা হইতে পত্র আসিয়াছে যে আশীর গড়ের কিল্লায়ার শটে করিয়া ঐযুত মর জন মালকম সাহেবের সহিত মিলিতে নী কার করিল কিন্তু মিলিল না। ইংল্ডী যেরা ইহা দেখিয়া আপনাদের মুখ মজা সমুদায় পুত্ত করিয়া শীঘ্র আশীরগড় আসিতেছেন কিন্তু পত্র দুইখানার পুত্ত কিছিন্ন বিলম্ব হইতেছে।

গৌদুয়ান পুত্তহইতে ৪৪ ডায়রের সমাচার আসিয়াছে যে ঐযুত কর লন আদমস সাহেবের নিকটে সমাচার আইন যে ঐযুত আপসাহেব আশীরগড় হইতে নিগড় হইয়া পুনর্বার পুত্ত গিহা শ্রম করিয়াছেন ভূদগীশ সকল অধিকার ইংল্ডীয়েরদের পক্ষে আসিয়াছে কেবল পশ্চিমুর অধিক মোহন সিংহ জী হইয়া এ পক্ষে আইসে নাই যেহেতু সে পূর্ব আপসাহেবকে আশ্রয় দিয়া ছিল।

এই কথা লিখিবার পরে ওজুয়ানহইতে এক পত্র নৈখজিল যে ইংল্ডীয় সেনা পতি ঐযুতের আকাতে আশীরগড়ের কিল্লায়ারকে আগের শহরে আশ্রয় দিতে নীকার করিয়াছিল কিন্তু তাহাতে কি

সমাচার দর্পণ

দাঁর সম্মুখ হয়ে নাই যদি সে সম্মত হইত
 তথাপি তাহার সৈন্যেরা সম্মত হইত না
 যেরূপক তাহারা নানাদিকার আতি ও
 দুঃখ ও কষ্টগ্রাসি। সে পুত্রও জানা যায়
 যে কিছু শিশুরকে লিঙ্কায় বাবুদে খাইয়াছে
 তাহার মৃত শরীর ভিন্ন ভিন্ন পাওয়া গেল
 পং দিল তাহার সোওয়াগিরি বোকা ইং-
 গ্লান্ডিয়দের সৈন্য জানা গেল। হতহ
 দিল পরে হৈলকারের এক সম্মার ই
 তির নূর ময়মায় খাঁকে প্রদত্ত অগ্নি
 সন সারোবের হাঁড় সমর্পণ করিল।

হোলকারের মঙ্গুতি লুট।

গাও মুক্ত যখন হোলকার বিবাহ ও পুণ্য
গ্রামায় মহারাজপুত্রদের সহিত ইংগ্ৰাজী
যেহেদের বিন্দেব সন্ধিপত্র করিল তখন
মহারাজের ইংগ্ৰাজ প্রদৈন্য ও হোল
কারের দৈন্য এই উভয়ের গুরু (যে) ময়
দ্বারের গুণ্যম হইল। ইংগ্ৰাজী দৈন্য
হোলকারের দৈন্যকে তাড়াইয়া দিল
কতক দিবস পর ঐযুত মেহের গুণ্ডাম
হবে হোলকারের সন্ন্যস্তির গুণের আকমণ
করিয়া তাহার তিথুস্ গুট বোজাই মণি
মুণ্ডা পুৰাল পুণ্ডিত বিন লুটীয়া নইলেন
ও ইংগ্ৰাজী নৈনাগতিতে মারি। সেই
বিনের পুণ্য হইল তাহারই দৈন্যের পু
বিন নৈনাগতি ঐযুত হিমলয় মাহারহে
অঙ্গণ অষ্ট লক্ষ টাকার সন্ন্যস্তি পড়িল।

ହମ୍ଭାଛା ଯୋଗୀ ।

এ দেশে এই বৎসর অতিশয় বনজ রোগ
 ছড়ি হইয়া অনেক লোক মরিডেছে যে
 লোকের টীকা না হইয়াছে ঐয়ত অনেক
 লোক মরিডেছে সেই ভয়ে যে লোকের
 টীকা না ছিল তাহাদেরও টীকা দিতেছে।
 আমরা শুনিয়াছি যে গত বৎসর ওলাউরা

রোয়ানিয়ারদ্বারা বহিষ্কৃত হইয়া ইংল্যান্ড যাত্রা করিয়াছিলেন সেই
মত বসন্ত রোগেরও গুণায় চেষ্টা করিতে
ছেন। এই হিন্দুস্থানের মহাবী আশী নব্বই
বৎসর বয়স্ক লোকেরদের হস্তে টীকার
চিহ্ন দেখা যায়। এবং চন্দ্রনুপন অর্থাৎ
মান্দারাজ হিন্দুদের মতাবলম্বী এক গুরু
যোগী গিয়াছেন তাহাতেও টীকা বিষয়ে
চিহ্ন-মাশিখিয়াছেন ইহাতেও অসম্মান হয়
যে এই চিহ্ন-মা অনেক কাল পর্যন্ত এই
হিন্দুস্থানের মহাবী চলিত আছে। ইংল্যান্ড
দেশে জেনর সাহেব প্রথম এই চিহ্ন-মা
প্রকাশ করিলেন তাহাতে ইংল্যান্ডীয় মহা-
সভা বুলিলেন যে ইহাতে পৃথিবীর
লোকের আভিপ্রায় গুণাকার হইবেক এই
কারণ তাহাকে যেহেতু লক্ষ টীকা পরিভা-
ষিত ছিলেন।

दशांशति ।

গত রবিবার রাত্রে যে ব্যর্থ হয়েছিল
সেই ব্যর্থ গান্ধাগির জননীও হয়ে
ছিল সেখানে সেই দিবস বজুনাৎ হও
যাতে দুই জন মরিল আর তিন জনের
চুল খুঁড়িয়া গেল ও শরীরে আঘাত হইল
কিন্তু মরিল না।

પુસ્તક આપાતિ ।

এবশ্যের এই এক ময়লরের চিহ্ন যে না
না পুকার পুতুল জানা হইতেছে যে হ
তুল এই জানা পুতুলের গমন শ্রোতর
নাগ্ন যেমন হুদু নদী নির্গত হইয়া ক
মো বৃদ্ধি পাইয়া মরু দেশে ব্যাপ্ত হইয়া
সেই দেশকে শুষ্ক করি দেই মত জা
না পুতুল কল মলন পুতুল ব্যাপ্ত
হইয়া সকল লোকেরে বোকাগড়া ওয়া
তে ডাকারদের মন ওজ্জ্বলিগরি করে

পূর্বকালে বর্ষিষ্ণু লোকের ঘরেতেও ভাল
পাত্র অল্পের মিল। তার ছিল চাপার
আর শুই হওয়া। অবশি ক্ষুদ্র লোকের
ঘরেতেও অধিক পুস্তক সংখ্যার হই
যাচ্ছে।

এই ক্ষেত্রে যোগ্য কলিকাতার শ্রীমত
বাবু রাধাকান্তদেব এক নতুন অভিধান
করিয়া জাণী করিতেছেন। আমরা শ্রুতি
মুখি যে চারি বৎসর আরও ইয়াত
অধ্যাপি অর্থ হয় নাই। ইহাতে অনুমান
করি যে এমত অভিধান পূর্ব হয় নাই।
এ অভিধান সমুদ্র হইলেই তাহার
মঞ্চের আনিতে পারিবেন।

এবং কবিরাজ চরিত্রিকৃত ভাষা চণ্ডী
গান পুস্তক নানানুকার লিপি দোষেতে
নমঃপুণ্য হইয়াছিল তৎপুস্তক জ্ঞপ্ত
অঙ্গগোপান উল্লিখিত বৎ দেশীয় বৎ
বিশি পুস্তক একত্র করিয়া বিবেচনানুসারে
পুস্তক পুস্তক করিয়া দ্রাণ্য করিতেছেন
অনুমান হয় যে ন্যায়ী শ্রমিত ভাষা
ন্যায়ী হইতে পারে।

पुनः ।

করক যান হইল লিখা গিয়াছে যে
শুণিত কাণ্ডাল কার্জ সাহেব গোঁড়ুয়ান
সংবর্তে এক শত ঠৈয়া নয়া তিন হা
আর গোঁড় লোক এ আরবেরদের সহিত
যুদ্ধ করিয়া আপনি মরিয়াছেন তাহার
শত করক মাদান্যর্জ্য ই-গুণ্ডায়েরদের
সহিত আরবেরদের যে ক্ষুদ্র পুত্র হইল
তাহার অনেক বিবরণ পাঁছিয়াছি কিন্তু
তাঁহা লিখিতে হইলে অস্থির হয় এই
শুণ্ডক মহল লিখা গেল না তাহার কিছু
লিখা যাউক। হে এই দুই অতি
করক এ অতিশয় সম্মান এই দুই গুণ্ড
বহুশ্রুত ই-গুণ্ডার মৈনা অনেক দুখ
ভোগ করিয়াছে কোন সময়ে দূখ

সমাচার দর্পণ

জ্ঞান পথ হইতে বঞ্চিত করিয়া গমন করিল কোন সময় আট দশ ঘণ্টা পর্যন্ত অনবরত জ্বলিতে চলিল ও নদী প্রায়ে বাকীর প্রবৃত্তি পথ দিয়া গমন করিল তাহারদের যে ডাঙ্গা-জিল সে জ্বলিতে পলিল কোন সময় যুদ্ধ শয়ন স্থান পাইল না এমন দুঃখেতে সেই শব্দভর্য্য আর ও গোন্দর সহিত যুদ্ধ করিল কিন্তু কোন সময়ে পরাজিত হইল না অনেক লোক যোগে মরিল বিপ্লবের এর অশ্রুনাথও অনু। এমন স্থানের বহু সজ্জা ও আহাদের তপ্পনতা ইহাতে সৈন্যেরা বিরক্ত করিয়া সেনাপতির সহিত কোন্ বিরোধ করিল না যখন গোন্দর সহিত যুদ্ধ আরম্ভ করিল তখন ইংগ্ৰী মেনা ফ্রিড ব্যাঙ্গুর লায় গোন্দরেরের ওকে আহবান করিল। গোন্দরা যে কল বার যুদ্ধ করিল এক লক্ষা যুদ্ধ করিয়া কাতর হইয়া পরিতের প্রবৃত্তি সঙ্গাইল।

টেক্স।

কোর্ড টনিয়ন বাসার মধ্যে কলিকাতার টেক্সের স্কোটারিয় সেনা গত শনিবার ১৭ মার্চ নং ১৮১১ টোনহাল যত্নে হইয়াছিল।

এ সেনার এই মত নির্দিষ্ট হইয়াছে যে এ সেনা কলিকাতার ঘর ও বাটী ও ক্রমীর উপর এই মত টেক্স হইল তাহাতে বৎসরে ৫৭ পাণ্ডা ধরিয়া ভাষাতে শতকরা পাঁচ টাকা করি ক্রা লুন্ড বর শওড়া হাইব্রেক ইহা দৃষ্ট করিয়া লক্ষ্যে জ্ঞান হইতেছে যে বৎসি বেহ ই হুইতে কোন আশঙ্কি করে তাহারদিয়ে উচিত কে তাহার দরখাস্ত আগত ও আদালত পর্যন্ত ইহার কোর্স নাহেবের নিকট করিবে তবে চাহার বিরোধনা করা হাইব্রেক ৮ আগস্ট

অবধি পুলিশ আফিসেতে প্রতিদিন ১১ বিব কের কর্ম হইবেক বেশ্যার নম্বর দুই না হু। তাহার পর পূর্ববার ১০ জুন বৃহস্পতিবার টোনহাল ঘরে আর এক সেনা অর্থাৎ নতা মোকরর হইয়া এ বিয়ের বিরোধনা করিয়া বে মোকরর টেক্স নির্দিষ্ট করিবেন তাহাই কখন থাকিবেক এর লক্ষ্যে জানাইতেছেন যে ঘর বাটী ও ক্রমীর মালিকেরদের তত্ত্ববে যে যখন তাহারদিয়ে ঘর বাটী আদি খানি থাকে অথবা ভাড়া কমি হু তাহার পুত্র নমা টাং কানেক্স নাহেবেরে যে কিছু কালেক্ত বিদ্যা এদুর নাহেবের একত জনতা হই যে ই অলাসত হইতে যে বিবাবে টেক্স মোকরর হইবেক তাহা তদ্বি কতি ও জিহা দিতে পারিবেম সে বেল দরখাস্ত কেবল সেসি। নে রনদেবেক এর ঘর বাটী ও ক্রমীর মালি কেবলিগের জানান হইতেছে যে তাহারদিয়ে ঘর বাটী ও ক্রমীর নম্বর ও চিকানার ও মানিকা ভাড়া পার ও হত তাহার বিদ্যা থাকে তাহা পুত্রত করিয়া অবিসদ্ব এসেব নাহেবের নিকট পাঠ্য ইতি।

ঐ আদালতের হুদুম পূর্ণাণ।

কোর্স আদালত আফিস।

১৭ মার্চ নং ১৮১১।

তমী বিক্রয় ইতার।

অনেক লোকের তমী মালিক কোর্সার কোর্স ও তাহার মালিক গীরে তমিল লরকারর হাকী আদার কর্তন পূর্ণাণ খাল নিম্নে বিক্রয় হইবেক তমী তমীলইব্রিকর বোর্ডিগন লাক্টারি বরফাণার অমো কোর্সার কালেক্তি করায়িত হালু হইবেক। লরকারর হাকী আদার কর্তন। কোর্সার হুদুম পূর্ণাণ ১৭ই নং ১৮১১ ইং ১৫ ইপোই নং ১১ ১১ ১১ বোর্ডিগন লাক্টারি বরফাণার।

১৮ই নং ১১ ১১ বোর্ডিগন লাক্টারি বরফাণার।

লরকারর হাকী আদার কর্তন।

কোর্সার হুদুম পূর্ণাণ ১৭ই নং ১৮ ১৮ ইং ১৫ ইপোই নং ১১ ১১ ১১ কালেক্তি করায়িত।

কোর্সার হুদুম পূর্ণাণ ১৭ আগস্ট নং ১৮ ১৮ ইং ১৫ ইপোই

নং ১১ ১১ ১১ কালেক্তি করায়িত।

কোর্সার হুদুম পূর্ণাণ ১৭ আগস্ট নং ১৮ ১৮ ইং ১৫ ইপোই

নং ১১ ১১ ১১ কালেক্তি করায়িত।

কোর্সার হুদুম পূর্ণাণ ১৭ আগস্ট নং ১৮ ১৮ ইং ১৫ ইপোই

নং ১১ ১১ ১১ কালেক্তি করায়িত।

কোর্সার হুদুম পূর্ণাণ ১৭ আগস্ট নং ১৮ ১৮ ইং ১৫ ইপোই

নং ১১ ১১ ১১ কালেক্তি করায়িত।

কোর্সার হুদুম পূর্ণাণ ১৭ আগস্ট নং ১৮ ১৮ ইং ১৫ ইপোই

নং ১১ ১১ ১১ কালেক্তি করায়িত।

কোর্সার হুদুম পূর্ণাণ ১৭ আগস্ট নং ১৮ ১৮ ইং ১৫ ইপোই

নং ১১ ১১ ১১ কালেক্তি করায়িত।

কোর্সার হুদুম পূর্ণাণ ১৭ আগস্ট নং ১৮ ১৮ ইং ১৫ ইপোই

নং ১১ ১১ ১১ কালেক্তি করায়িত।

কোর্সার হুদুম পূর্ণাণ ১৭ আগস্ট নং ১৮ ১৮ ইং ১৫ ইপোই

নং ১১ ১১ ১১ কালেক্তি করায়িত।

কোর্সার হুদুম পূর্ণাণ ১৭ আগস্ট নং ১৮ ১৮ ইং ১৫ ইপোই

নং ১১ ১১ ১১ কালেক্তি করায়িত।

কোর্সার হুদুম পূর্ণাণ ১৭ আগস্ট নং ১৮ ১৮ ইং ১৫ ইপোই

নং ১১ ১১ ১১ কালেক্তি করায়িত।

কোর্সার হুদুম পূর্ণাণ ১৭ আগস্ট নং ১৮ ১৮ ইং ১৫ ইপোই

নং ১১ ১১ ১১ কালেক্তি করায়িত।

কোর্সার হুদুম পূর্ণাণ ১৭ আগস্ট নং ১৮ ১৮ ইং ১৫ ইপোই

নং ১১ ১১ ১১ কালেক্তি করায়িত।

কোর্সার হুদুম পূর্ণাণ ১৭ আগস্ট নং ১৮ ১৮ ইং ১৫ ইপোই

নং ১১ ১১ ১১ কালেক্তি করায়িত।

কোর্সার হুদুম পূর্ণাণ ১৭ আগস্ট নং ১৮ ১৮ ইং ১৫ ইপোই

নং ১১ ১১ ১১ কালেক্তি করায়িত।

কোর্সার হুদুম পূর্ণাণ ১৭ আগস্ট নং ১৮ ১৮ ইং ১৫ ইপোই

নং ১১ ১১ ১১ কালেক্তি করায়িত।

কোর্সার হুদুম পূর্ণাণ ১৭ আগস্ট নং ১৮ ১৮ ইং ১৫ ইপোই

নং ১১ ১১ ১১ কালেক্তি করায়িত।

কোর্সার হুদুম পূর্ণাণ ১৭ আগস্ট নং ১৮ ১৮ ইং ১৫ ইপোই

নং ১১ ১১ ১১ কালেক্তি করায়িত।

কোর্সার হুদুম পূর্ণাণ ১৭ আগস্ট নং ১৮ ১৮ ইং ১৫ ইপোই

নং ১১ ১১ ১১ কালেক্তি করায়িত।

এই সমাচার দর্পণ শ্রীমামপুরের জামাখানাতে প্রতিমস্তায়ে শনিবারে প্রকাশিত হয়। যাঁহার লওনের আদায়ক থাকে তিনি শ্রীমামপুরের জামাখানাতে আপন নাম পাঠাইলে মস্তায়ে ১৭টি তাহার লিখিত পাঠল যাবেক তাহার মূল্য ২০০০ এক টাকা। যিনি স্বাক্ষর করিয়াছেন যদি তাহার লিখিত না পৌছে তবে তিনি শ্রীমামপুরের জামাখানাতে সমাচার দিব্যামাত্র তাহার লিখিত পাঠল যাবেক।

সমাচার দর্পণ

৯ নং পৃষ্ঠা

শনিবার। ১০ এপ্রেল মল ১৮৮৯। ১৯ চৈত্র মল ১২৮৬।

দর্পণে মুখ্য মোক্ষার্থের কার্যবিবরণিকাঃ। বৃত্তান্তাদিহ আলম্ভ সমাচাৰমা দর্পণে।।

কোল্লানির কাণ্ড।

কোল্লানির শতকরা জয় টাকার মুদ্রের কাণ্ড করু করিতে হইল শতকরা এক টাকা বার আনা তিরকোঞ্চ। বিজয় করিতে হইল শতকরা দুই টাকা দুই আনা তিরকোঞ্চ।

মন্ডাহর পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|--------|-------------|----|-------------------|
| ১০ | এপ্রেল | শনিবার | ১৯ | উত্তম চন্দ্রবন্দন |
| ১১ | ২ | রবিবার | ২০ | শ্রী কালী |
| ১২ | ৩ | সোমবার | ১ | ইশ্বরি |
| ১৩ | ৪ | মঙ্গলবার | ২ | ২ |
| ১৪ | ৫ | বুধবার | ৩ | ৩ |
| ১৫ | ৬ | বৃহস্পতিবার | ৪ | ৪ |
| ১৬ | ৭ | শুক্রবার | ৫ | ৫ |

নিরুদ্বিধ জিনিষাৎ বাবর মাংস মূল্যপূর্ণ
মল ১১৫ শাল মতাপ্রসক্ত জিলা রুই রুই।

| আনামদী | জিনিষ | মূল্য |
|-------------------|--------|-------|
| মোঃ দেবিভূয়া | | |
| মাংসা চালু | | |
| ওজন ৪০১৯৮ | ১/ মোন | ৪৮ |
| মধ্যম রকম চালু | ১/ | ৪৮ |
| মোটা রকম | ১/ | ৪৮ |
| মোঃ গোয়ালপাড়া | | |
| লবন ওজন ৮৪১৮ | | |
| ওজন লবন | ১/ | ৪৮ |
| মধ্যম লবন | ১/ | ৪৮ |
| নুতন শর্বা | ১/ | ৪৮ |
| পুরাতন শর্বা | ১/ | ৪৮ |
| লবণ ওজন ৮৪১৮ | ১/ | ৪৮ |
| মোঃ মালিকদা | | |
| উত্তম ওজন ৭২ সিকা | ১/ | ৪৮ |

আমী বিক্রেতার ইচ্ছাহার।

অনেক মোক্তর অশীল লামিন কোমোহর কোম ও তারিখ
মাসিক পোরে অশীল লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
মূল্যম আশে নিম্নোক্ত বিকর হইবেক অশীল কোমোহর কোম
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

লবন মাসিক পোরে অশীল লামিন কোমোহর কোম ও তারিখ
মাসিক পোরে অশীল লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
মূল্যম আশে নিম্নোক্ত বিকর হইবেক অশীল কোমোহর কোম
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ
কোমোহর কোম লামিন লরকারে বাকী আদায় করণ

সমাচার দর্পণ।

গণসামাগিরি ওসহীল।

আমরা শুনিতেছি যে গণসামাগিরির
বন কাটিল শীঘ্র চলিতেছে দেখানে
আট শত যজুর কর্ম করিতেছে সে হা
নের গাঁত ভাগের এই ভাগ পরিভূত হই
য়াছে। এই ওসহীলের এক ভীরা অধিক
আনা জীরণার্থ যথেষ্ট এক চোড়া হাংরা
করা গিয়াছে দেখানে। যজুরের কর্ম
করে দেখানে তাহারদের তালু খাটা
আছে। মুখ্য বন কাটিতে আরম্ভ করি
বার সময় দুই বাঘু দেখা গিয়াছিল তা
হার একটা মারা গেল ও আর একটা
আঘাত হইল এতাবদা কিন্তু তারপর
একটাও দেখিতে আইসে নাই। যথেষ্ট
বন কাটিতে ইচ্ছা মুখ্য বন কাটির ভিত
দেখা যায় তাহাতে অনুমান হয় যে
গণসামাগিরি বাঘের অধিকারের পূর্বে
মনুষ্যবাহিকার ছিল।

আশীর গড়।

আশীর গড় হইতে শ্রুতিত আশী মা

সমাজের দর্পণ।

হৈবের পণায়নের যে অনুরূপ হইয়াছিল তাহা অস্বাভাবিক দিক দ্বারা যার নাহি তাহার মকল বিষয় অস্বাভাবিক যণ্ড আছে কিন্তু আর হতক দিন পাত্রে তাহার মকল বিষয় অবশ্য প্রকাশ হই বেক। ইংল্যান্ডেরা যেমন জীবনন সেনাপতিরদিক্কে সেখানে পাঠাইয়া জেনে এবং যৎসংখ্যক সৈন্য সেখানে পাঠাইতেছেন এবং যেমন কামান ও বাকবুত্তি যুদ্ধ সরঞ্জাম পাঠাই ডেছেন ইহাতে বোধ হয় যে আশীর গণ্ড বিষয় দিন বতায় থাকিতে পারিবে না। এখন শ্রীযুত জেনেরাল দরভন সাহেব ও শ্রীযুত মর জন মালবয় সা হেব এই দুই সেনাপতি সেখানে আসেন এবং তাহারদের সহিত দশ হাজার সৈন্য আসে ও হিন্দু হাবাদহইতে শ্রীযুত আদমু সাহেব আনন সৈন্যের অর্ধেক আশীর গণ্ডে পাঠাইয়াছেন শ্রীযুত দা বার সাহেব সাগরি শহরের সেনা ও যুদ্ধ সরঞ্জাম লইয়া আশীর গণ্ডে যাই তে ১৭ ডেব্রুয়ারিতে পণ্ড হসিন-হাবাদে পৌছিয়াছেন তাহার সহিত আট শত বোঝাই গাড়া আছে তাহার নন্দরা নদী পার হইয়া যাইতে হইবেক তাহার এই নদী পার হইতে দুই তিন দিন বিলম্ব হই বেক ১৭ ডেব্রুয়ারি পূর্বে নন্দরা পার হইতে পারিবেন না। শ্রীযুত জেনেরাল এ্যাট মন সাহেব আনবার সময়ে সৈন্য লই য়া ২১ ডার্বারপাছ সেখানে পৌছিবেন এমত কল্প আছে। আশীর গণ্ডে যত সৈন্য যাইতেছে তাহার মকলে সেখা নে পৌছিলে বিশ হাজার সৈন্যের লুন হইবেক না। এবং হুদরবাবাও ও নাগিনু রেতে ও হসিন-হাবাদে ইংল্যান্ডেরদের যত কামান ছিল এবং শ্রীযুত মর জন মালবয় সাহেবের সহিত যত কামান

ছিল সে নকল আশীর গণ্ডে গিয়াছে। সেখানকার কিয়দারের নাম ঘোঁরাবলু দাঁও এই মকল যুদ্ধোযোগ হইতেছে ইহাও এই ঘোঁরাবলুওর কি সাধ।

রাজধানীতে যুদ্ধ।

গত মাসে শ্রীযুত মেজর লারি সাহেব হীরা নামে এক পুত্রের অস্তিত্বে সহিত যুদ্ধ করিতে গিয়াছিলেন তাহাতে এই সাহেব সেখানে পৌছিয়াছেন তাহা হা পলায়ন করিল। এই মাসে নামে দুই আতিয়া রাজপুত্রেরা পাহারের তরঙ্গ থাকে এবং সিন্ডা ভালাতি ব্যবসায় কালক্ষেপ করে। হতক দিন হইল তা হারা আজমের শহর লুণ্ঠ করিয়াছে তা হাতে নন্দারাবাদহইতে ইংল্যান্ড সৈন্য তাহারদিক্কে ধরিতে গিয়াছিল কিন্তু তাহার বনে এমত পলাইল যে তাহার দের পদচিহ্নও পাওয়া গেল না।

ভাট্টারাও বিহানিয়ার দুইদশ বৎসর পুত্র লুণ্ঠ করিয়াছে কিন্তু তাহার আশ নারদের দান মকলুয়িত পলাইয়া গিয়া এখন ইতিমধ্যে যেহুতক তাহারদের বেশ এখন অপ দুলভ বেশ লাগু না হই লে সে দেশে সৈন্য যাইতে পারিবেন না। এই দুই আতি এবং খাওগের মধ্যে ভীলারা এই তিনজির ওত্তর দিক্ দানে আর তহাতি নাই। এবং ইংল্যান্ডেরা আনন সৈন্য এই মত কলো রাখিতেছে যে ভালাতিয়া শত্রু গুপ্ত করি যাইবে। কএক বৎসর পক্ষিয়ে ওত্তর ও মেওয়াতি এই দুই আতি এমত পুনর জিন যে কোন ব্যক্তি একাশী পথে চলিতে পারিত না কিন্তু ইংল্যান্ডের দের পুত্রাধিকৃত তাহার এমত গুপ্তি হইয়াছে যে তাহারদের নামও শুনা যায়

না। এই মত রাজপুত্রালাতে ওযোগ হই তেছে এবং সেখানকার দুই লোকের দের মনঃপুত্র সেখানে বলিঅবস্থি এমন হইয়াছে যে গণ্ড বৎসর তিনসের হামিলে এক লক্ষ প্রাণ হাজার টাকা বোলাগীর অধিক লাভ হইয়াছে অনু মাল হয় যে এই বৎসর দুই লক্ষ অধিক লাভ হইবেক।

রঙ্গুন শহর দাঁহ।

সম্রাট রঙ্গুন শহরহইতে এক আত্মা অস্তিত্বে তাহাতে শুনা গেল যে এই শ হরের অধিক ভাগ দখল হইয়াছে। শহর দাঁহ সময়ে তথাকার অধ্যক্ষেরা আর কোন ওয়া না দেখিয়া রাজার সমুদায় হাতী আনাইয়া তাহার দের ঘোড়া দাঁহা বশিষ্ঠ মকল ঘর ভরিয়া ফেলিল তাহাতে অগ্নি নিবৃত্ত হইল। এই সময় অসংখ্য দস্যুরা এই শহরে ভালাতি করিয়াছিল তৎপুত্র শর দিল তাহারদের বারো জন কে ধরিল। সে শহরের মকল ঘর সেতর কাছলিভিত তাহাতে এক দানে অগ্নি লাগিলে নির্ভুল করা দুস্থর। গত বৎসরের মধ্যে এই শহরে দুই বার অগ্নি লাগিয়া শহর নষ্ট হইয়াছিল তৃতীয়বার এই।

চিছু পিতারি।

দুহুতবাবারের সমাজগণের হারা পুত্র হার শুনা গেল যে শ্রীযুত আশী সাহেব আশীর গণ্ড আশুর করিয়াছেন ইহাতে মনেহ প্রায় হয় না এও আশী সাহেবের মনেই পিতারদের সেনাপতি চিছু পিতা যুক্তি যখন আশী সাহেব আশীর গণ্ডের কিয়দারের নিকটে আশুর চাছিল তখন ই কিয়দার ঘোঁরাবলুও চিছু

সমাচার দর্পণ।

ও তাহার পুত্র মহম্মদ পদাঙ্ক তাপ্পুর দ্বিত্ত স্বীকার করিল না। ওৎকালে ইংল্যান্ড সৈন্য নানা দিগ্‌হইতে যোগ্য আশীর গড়ে আনিতেছিল সে কালে তিতু অল্পবয়সে যেখান তাপ্পুর পুত্র মহম্মদ পদাঙ্ক এক দিগ্‌গে পলাইতে করিয়া আপনি ঘোর অগ্নিতে পলাইল। কএক দিবস পরে কেবল তাহার সোম্মারি ঘোড়া ঐ অগ্নিতে ঘাস খাইতে দেখা গেল এবং সে ঘোড়ার ওপরে তিতুর আড়াই লাও নগদ টাকা ও তাহার নিজ দুই ভিনটা মোহর ও আশি সাহেব ওপ করার্থ টাক রিতে স্বীকার করিয়া তাহার নিকটে যাঁহা নিমিয়া দিয়াছিলল সেই লিনি পাওয়া গেল ইহাতে পুত্র নিশ্চয় হইল যে তিতু মরিয়াকে কিন্তু পুত্র জন্ম হইয়াছিল যে বৃষ্টি ইংল্যান্ডের দিগ্‌গে খায়াইবার কারণ তদুপীয়া দিয়া ওল রব করিয়াছে সে যদি নিশ্চয় না মাঝে তব এই কণে তাহার ঘোড়ার ওপরে প্রিন্স পাওয়া কেন ঘাইবেক।

যখন তিতুর ঐ কণ অল্পমুহূ হইলে সমাচার পাওয়া গেল তখন ইংল্যান্ডের দর জাওলিতে সকলের প্রত্যয় হইল না খল অনুভয়ের বিষয় নহে। তিতু দোরা টা ও লুট পুত্রিত্তি কঠোর সভাবেতে এত হাল-ফাল করিয়াছে সে অনেক অঙ্গল আপনি মঙ্গলপুত্র হইতে এবং অনেক রোদনে তাহার আলস অতএব এমন ব্যক্তির যে অল্পমুহূ হইবে একজন আশ্চর্য। পূর্বে ২৫-মসরে এই সময় ত্রিশ হাজার ঘোড়ামোয়ার তাহার আর্জিবহ ছিল ও সে যেখান ঘাইতে সেখানকার লোক স্বল্পমান হইতে ও ভয় তার অল্পমুহূ ঘাইতে এই ২৫-মসরে সে ব্যক্তি এতাদী ও অতিবৃষ্টি মহাবল পলায়ন করিতে

তাঁহাকে ব্যাপ্ত আহার করিয়াছে অতএব এতাদৃশ ব্যক্তির দণ্ড ঈশ্বর আপনি দেন। তাহার পুত্র মহম্মদ পদা যে দিন আপনি পিতার নিকটে ভাগি বহিল সেই দিন ইংল্যান্ডেরদের হাতে পড়িল এবং মহম্মদ পদা আপনি পিতার ওহদেহিক ফিয়া করিবার কারণ ঘত টাকা চাহিল ইংল্যান্ডেরা তত টাকা তাঁহাকে দিল।

আহাজ আর্মহানী।

গত বুধবারে শ্রুত্ব দেশহইতে তাড়ার নাম এক আহাজ নীহজিল তাহাতে কে বল এইমাত্র সমাচার শুনা গেল যে ইও রোপের বাদশাহেরা সকলে পুর্হ এক স্থানে একত্র হইয়াছিলেন তাঁহারা আপনা নই আর্মহানীতে গিয়াছেন। এবং শ্রুত্ব দেশে তৌকীয়ারের মত যে দেত লক্ষ সৈন্য ছিল তাঁহারা ও পুর্হর আপনা দেশে গিয়াছে তিন ২৫-মসরের পরে শ্রুত্ব দেশ তাহারদেরহইতে এখন ওকার পুত্র হইল।

বানিজ্যের দুঃবার রশ্তানী।—

গত তিন মাসের মধ্যে যোগ্য কলিকাতা হইতে বানিজ্যের এই দুঃবার ইংল্যান্ডদেশে ও শ্রুত্ব দেশে ও আমেরিকা দেশে এবং অন্যান্য দেশে গিয়াছে।

| | | |
|--------|--------|--------|
| তুর্কী | ৪১৩৩৫ | গাঁড়ি |
| চিনি | ৭৬৪৮ | মোল |
| লৌহ | ৩৫৪৮ | ঐ |
| সোরা | ৫৭৪১৫ | ঐ |
| আর্দু | ১৬১১১ | ঐ |
| রেশম | ৪৫০০ | ঐ |
| চাপু | ১৭৮৩১ | বোরা |
| কাপড় | ৪১৪৩৪৪ | খান |

বেংহাই।

বেংহাইহইতে সমাচার আসিয়াছে যে

খান শমসাদিহইতে তৈল বাহির করিবার কারণ এক লুণ্ডন প্রকার ঘানি সৃষ্টি হইয়াছে সে বায়ুহারা চলে। ইংল্যান্ড দেশে এমন অনেক ঘানি আছে সেখানকার সকল ঘানি এই ডিন প্রকারে তৈল বাহির কর্তব্য ও শ্রুত্ব জলদির ভাবের দ্বারা এবং বায়ুহারা ও স্রোতাহারা চলে। ইংল্যান্ড দেশে এই দেশহইতে মতুর লোকের মজুরি তরিক তৎপুরু মজুর হারা কোন কর্ম করিতে আরক বায় হয় ততএব এই সকল মজুর হারা না চলেইয়া এই প্রকারে চলায় যেহেতুক অল্প বায়ে অধিক কর্ম চলে।

ইংল্যান্ড দেশের রাণী।

ইংল্যান্ড দেশহইতে শেব যে আহাজ আইল তাহার দ্বারা সমাচার পাওয়া গেল যে ইংল্যান্ডের মহারানী সে সময়ের জীবিতা ছিলেন কিন্তু ভরণো নাহি। ইহার পুর্হ আশী ২৫-মসর পর্যন্ত কোন রাণী ইংল্যান্ডে মরেন নাহি।

বোনাপার্ত।

ইরোপের মধ্যে জনরব হইয়াছে যে বোনাপার্ত এমন শাসনে থাকিয়াও রোম দেশের ও অরমান দেশের কোন লোকের নিকট তাহার পদ আসা যাওয়া হইতেছে।

একশেষু ঘর।

আমরা শুনিতেছি যে কলিকাতায় দু'তল একশেষু ঘর গাঁথিবার পাণ্ডেল্য পুত্ত হইয়াছে অনুমান হয় যে তাহাতে দেত লক্ষ টাকা ব্যয় হইবেক এবং সেই একশেষু ঘরে তাঁকঘর হইবেক। ইহাতে বানিজ্য কর্মের আশ্রয় ওপকার হইবেক।

সমাচার দর্পণ

পিণ্ডারিদের বিবরণ।

পিণ্ডারিদের দুই পুষ্টি যোগ্য মধ্যম হিন্দুধর্মীয় লোকদের নানাপ্রকারে অবলুভ আছে কিন্তু বাঙ্গালি লোকেরা ইংল্যান্ডের বেরগার্ডন পুস্তক অসুভাষ্য হইয়া তাহার বের নামমাত্র উল্লিখিত হইলে অতএব তাহার বের কিস্তি বিবরণ আমরা জানাই।

এই শত বৎসরের পূর্বে পিণ্ডারিদের নাম হিন্দুধর্মে পুণ্য ভবন গান তাহার আওতাবধি বাবশাহের পুরান সোনা পিণ্ডারিদের ধীরে সন্থিত যুগ বহিরাহিল এবং পাপিষ্ঠ মোকামে মহাত্মক কালে পোনের হাকার পিণ্ডারি সে হুজুরি। পিণ্ডারি গুর মল মলমল অন্তর তাহার চন্দ্র শঙ্কর লোক। তাহার বের বসতিস্থান মধ্যমীর উত্তর ভাঙ্গা ও জুলাও ও তাহার চতুর্বিধ দেশ। যে বৎসর তাহারদের বেশে শস্যবিদ্য অল্প অল্প সেই বৎসরে তাহার অন্তর বেশে গিয়া অধিক লুট করে। তাহার সোনাপিক্ত লবঙ্গিয়া করে যে ব্যক্তি তাহারদের মধ্যে লুট অভিলাষিক হয় সেই লবঙ্গিয়া হয়। সেই লবঙ্গিয়া যখন লুট করিতে যায় তখন তাহারদের আঙ্গা ও পরা জুসের পরিশ্রম থাকে না কিন্তু যখন তাহার সে কর্তব্য করিয়া পরে থাকে তখন তাহার পুত্রের জন আপন ইচ্ছানুসারে চলে যখন কোন লবঙ্গিয়া লুট করিতে ইচ্ছা করে তখন সে পিণ্ডারি লবঙ্গিয়ারের নিকটে আপন উল্লিখিত পাতার তাহাতে তাহার লবঙ্গিয়ার হইয়া যে গিঠো ও যে পণ্যদ্রব্য লুট করিতে হাইতে হইলে তাহা ছিন্ন করে পরে লবঙ্গিয়া ভাঙিয়া দিয়া আপন দীর্ঘায় যাত্রা করে জন্মগ্রহণ ভগ্নপাকীর লোকেরা সেই পুণ্ডি উল্লিখিত লবঙ্গিয়ার পণ্ডিগণ পুণ্ডি বিবিধ

পুণ্ডি অত্র শত্রু ধারণ করিয়া সুশিক্ষিত যৌত কাণ্ড হইয়া ভগ্নপাকীর গমন করে। তাহার আপনাদের ও যোড়ার আহ্বারের কারণ কেবল দুই ভিন্ন বিনের পাথর লয় এবং আপনাদের সন্থিত তাহা পুষ্টি ভাঙ্গি বহু লয় না এই হেতু তাহার এই বিনে বিশ পণ্ডি কোশ চলে। তাহারদের মধ্যে যোড় বহু পুণ্ডি লয় যখন তাহার কোন বিপদের নিকটে থাকে তখন বিপদের সোড়া এই মত ছুটি করে। তাহারদের বিপক পাকীর সোনার সোঁতে মিটেছে তখন সেখানে তাহারদের এক জন সর্পের মত মুক্তিকাম লয় শীত হইয়া যোড়ার নিব্বীট গিয়া যোড়ার বহিষ্কারিয়া বের এবং যোড়ার গলা ধরিয়া এমন থাকে যে যোড়ার পা ও তাহার পা দিলে ত হয় ইহাতে অনেক তত্ত্বিত পারে না পরে অল্পে সেই খান হইতে দুই আসিবারাম যোড়ার উপরে আয়োজন করিয়া তৎক্ষণাৎ পলায়। যখন তাহারদের উপরে কেহ আক্রমণ করিতে আসিলে ও যদি তাহার বৃকে যে আহার অসমর্থ হইব তখন তাহার গিণ্ডি বিবিধ হিহ ভিন্ন হইয়া পুত্র একত্র কাহাকেও বেধা যায় না। পরে অন্য সময়ে এই লবঙ্গিয়া ভাঙিয়া দিয়া তাহার তাহার কোন বিগহইতে একত্র হয় তাহা জানা যায় না। কোন সময়ে তাহারদের মধ্যে কোন মোকাম দুই ভিন্ন গিণ্ডি থাকে থাকে না কিন্তু তখন সময়ে কোথা হইতে আসিয়া আপনাদের সঙ্গে মিলে। যখন তাহারদের নিভাত বিপদ উপস্থিত হয় তখন তাহার বিজ্ঞানদের ওহা আশুত করিয়া থাকে যে বিজ্ঞান অগন্ত্য মুনির কীর্তি পতাকার স্থান।

তাহার আপন যোড়ার বিবরণ লবঙ্গিয়ার করে এবং উত্তম আহ্বারের দুই যোড়

কে খাওয়ার বিজ্ঞ বিপদ সময়ে যেমন আপনাদের দশা তেমনি যোড়ার দশা হয়। তাহার দিনে যোড়ার লাজ শুল্কিয়ারে কিস্তি রাখিতে লবঙ্গিয়ার যোড়ার লাজ খোদে না তাহার রাখিতে যখন শ্রম করে তখন আপন যোড় আপন কাহে রাখে ও তাহার ভিন্ন হাতে রাখিয়া নিদ্রা যায় যদি কোন লুট উপস্থিত হয় তখন ই যোড়ার উপরে চড়িয়া এক নিমেষে চক্কর অগোচর হয় পিণ্ডারিদের যে যোড় শীতল হিন্দু পুণ্ডি তাহারদের দ্বন্দ্ব মত জন্ম পোড়া তাহারদের লজ্জা থাকে তত জন্ম তাহার নিভত। তাহারদের মধ্যে যদি কাহারো যোড় হারায় তবে সে তাহার অভিলক্ষ্যকার ও তাহাকে কেহই পিণ্ডারিদের মধ্যে গণনা করে না ও তাহার বংশের এক পুণ্ডি অধঃপতি হইয়া থাকে।

পিণ্ডারিরা অভিশপ্ত সাহসিক ও আপনাদের সোনাপতির এমন বস্তুত যে সোনাপতি তাহার দিগকে দেখিলে লইয়া যায় সেখানেই যার আপনাদের মন ভাঙ করে না এবং নিত্য পরিশ্রম করিতে তাহারদের শরীর অতিজ্ঞ যে পরিশ্রমে সামান্য লোক মরে তাহাতে তাহার বের ভ্রুকোপও নাই। কোন সময়ে তাহার লবঙ্গিয়ার লুট করিতে যাত্রা করে তখন তাহার লুট মনুষ্য ভাবে তখন তাহার লবঙ্গিয়ার লুট করে না। তাহারদের সাহস ইহাতে জানা যায় যে তাহার আপন হাই হইতে এত দুই দেশে মন করে ও লবঙ্গিয়ার অনুসন্ধানের বিধান রাখিয়া বিপক সৈন্যদের মধ্যে গিয়া পাঁচ হইতে শত কোশ গমন করিয়া লুটের উদ্দেশ্যে যায় গিয়া আপনাদের অভিলাষ পূর্ণ করে।

ইহার পর অবশিষ্ট অবশ্যকমতে আশা দিগন্তে হাপান যাইবেক।

এই সমাচার দর্পণ পুণ্ডিগণের হাপাখানাতে পুণ্ডিগণের পরিবারে হাপা হয়। যাহার লগনের আবশ্যক হয় তিনি পুণ্ডিগণের হাপাখানাতে আপন নাম পাঠাইলে সমস্তই কাগজ তাহার নিকটে পাঠান হইবেক তাহার মূল্য মাসে এক টাকা। যদি লবঙ্গিয়ার করিয়াছেন যদি তাহার নিকটে সমাচার দর্পণ না পাইলে তবে তিনি পুণ্ডিগণের হাপাখানাতে সমস্তই তাহার নিকটে পাঠান হইবেক।

সমাচার দর্পণ

৪০ সংখ্যা

পনিবার। ৪৭ এপ্রিল মন ৪৮৮৯। ৩ বৈশাখ মন ১২২৩।

দর্পণ মুখ্য সৌন্দর্য্যমিহ কার্যবিচরণঃ। ব্যাখ্যানিহ আনন্দ সমাচারস্য দর্পণে।

কোম্পানির কাগজ।

কোম্পানির শতকরা ছয় টাকার সুদের
কাগজ ক্রয় করিতে হইলে শতকরা এক
টাকা দণ্ড আনা ডিক্রীকো। বিশেষ
করিতে হইলে শতকরা দুই টাকা দি
কোম্পানি।

সম্প্রদায়ের পঞ্জিকা।

| | | | |
|---|-------------|----|-------|
| ১ | শনিবার | ৬ | বৈশাখ |
| ২ | রবিবার | ৭ | ৩ |
| ৩ | সোমবার | ৮ | ৪ |
| ৪ | মঙ্গলবার | ৯ | ৫ |
| ৫ | বুধবার | ১০ | ৬ |
| ৬ | বৃহস্পতিবার | ১১ | ৭ |

মন ১৮১২ ইং মন ১২২৩ বাৎ কালেকটর কাগজিতে।

বৃহস্পতিবার ১৩ মেই মন ১৮১২ ১ বৈশাখ
মন ১২২৩ বাৎ কালেকটর কাগজিতে।

ইতি তারিখ ৩০ মার্চ মন ১৮১২ ইং বোর্ডিংবন্দু বন্ধন।

অনেক বোম্বের কলীপ লালিন কেমারের গোর ও তারিখ
লভন মাজিত গীতের কলীপ পুকার খালে গিলারে বিকর
হইবেক অর্থাৎ কলীপের কলীপের বোর্ডিংবন্দু লালিন
বোর্ডিংবন্দু অর্থাৎ কেমারের কলীপের কাগজিতে লালিন
হইবেক।

তারিখ বৃহস্পতিবার ৬ মেই মন ১৮১২ ইং ১ বৈশাখ

মন ১২২৩ বাৎ বোর্ডিংবন্দু লালিন বোর্ডিংবন্দু।

তারিখ বৃহস্পতিবার ১৩ মেই মন ১৮১২ ইং ১ বৈশাখ

মন ১২২৩ বাৎ বোর্ডিংবন্দু লালিন বোর্ডিংবন্দু।

ইতি তারিখ ৩০ মার্চ মন ১৮১২ বোর্ডিংবন্দু বন্ধন।

পূর্বে অজ্ঞাত এক পুকার নৃতন আতি হে
ছিল। এই নৃতন পুকার লোকেরা পূর্বে ভা
বিয়াছিল যে এই পৃথিবীতে আমায়দের
ভিন্ন আর কোন লোক নাই। কিন্তু এই
আহাৎ লোকেরা দিগকে দেখিয়া তাহা
রা আন করিল যে এই পৃথিবীতে অন্য
লোক আছে।

হেডিং-সু আহাৎ।

হেডিং-সু আহাৎ এখান হইতে ইংল
ণ্ডে গইয়াছে তাহার সমাচার আসি
য়াছে।

দামের সুভুক্তি গুন।

কতক দিন হইল পোলন্দ দেশে এক
জন ভাণ্ডারবান ও তাহার স্ত্রী ও তাহার
এক দাস ইহারা গাঁড়ীর ঘরা বন দিয়া
শ্রমে ঘাইতেছিল পথে মধ্য অনেক
ভালুক তাহাদের পক্ষাৎ ঘেঁড়িল যে
দেশীর ভালুক এখানকার ব্যাপুর মত
ভয়ালক। যখন সেই চাকর দেখিল যে
ভালুক তাহাদের পক্ষাৎ আসিতেছে
তখন সে আর কোন গাঁড়ী না দেখিয়া
আপন মুনীরকে কহিল যে যে পুত্র আমি
তোমার গাঁড়ীতে আরোহণ করি আ
মার সোয়ারির ঘোড়া ভালুকেরা দিগকে
বি ভালুকরা এই ঘোড়া ঘাইতে আমায়
অন্যদাসের শিশু গুণ্যে পঁথরিতে পারিব।
ইহা কহিয়া সে দাস আপন ঘোড়া দিয়া
আপনি গাঁড়ীতে চড়িল। পরে ভালুকরা
তৎক্ষণাৎ এই ঘোড়ার রক্ত মাংস খাইয়া
আরো মরল ইহারা গাঁড়ীর পক্ষাৎ যে

সমাচার দর্পণ।

বাসিন্দা।

গত সম্ভাষে য তাহার নামে এক
আহাৎ মোং কলিকাতায় আইল তাহার
ঘরা সমাচার আসিয়াছে যে ইংল
ণ্ডে তৎক্ষণাৎ দুই এক জমিয়াছে যে
তাহাতে সেখানে সেই দুই পুকার মূল্য নূন
হইয়াছে।

ওত্তর কেন্দু।

যত আহাৎ ওত্তর কেন্দু দর্পণের
মাজিল তাহার মকলেই অকৃতকার্য
হইয়া জিরিয়া আসিয়াছে সেখানে এ
মত বরষ যে ওত্তর কেন্দু পর্যন্ত বেহই যা
ইতে পারিল না কিন্তু তাহার এই ওত্তর
কেন্দুর দক্ষিণে তারিখ শত কোশ অস্তর

জমী বিক্রয় ইস্তাহার।

অনেক লোকের কলীপ লালিন কেমারের গোর ও তারিখ

মাজিত গীতের কলীপ লালিন কেমারের গোর ও তারিখ
পুকার খালে গিলারে বিকর হইবেক অর্থাৎ কলীপের কলীপের
বোর্ডিংবন্দু লালিন বোর্ডিংবন্দু অর্থাৎ কেমারের কলীপের
কাগজিতে লালিন হইবেক।

বোর্ডিংবন্দু লালিন বোর্ডিংবন্দু।

বোর্ডিংবন্দু বৃহস্পতিবার ৬ মেই মন ১৮১২ ইং ১ বৈশাখ

মন ১২২৩ বাৎ বোর্ডিংবন্দু লালিন বোর্ডিংবন্দু।

তারিখ বৃহস্পতিবার ১৩ মেই মন ১৮১২ ইং ১ বৈশাখ

মন ১২২৩ বাৎ বোর্ডিংবন্দু লালিন বোর্ডিংবন্দু।

ইতি তারিখ ৩০ মার্চ মন ১৮১২ বোর্ডিংবন্দু বন্ধন।

বোর্ডিংবন্দু লালিন বোর্ডিংবন্দু।

বোর্ডিংবন্দু বৃহস্পতিবার ৬ মেই মন ১৮১২ ইং ১ বৈশাখ

মন ১২২৩ বাৎ কালেকটর কাগজিতে।

তারিখ বৃহস্পতিবার ১৩ মেই মন ১৮১২ ইং ১ বৈশাখ

মন ১২২৩ বাৎ কালেকটর কাগজিতে।

তারিখ বৃহস্পতিবার ১৩ মেই মন ১৮১২ ইং ১ বৈশাখ

মন ১২২৩ বাৎ কালেকটর কাগজিতে।

তারিখ বৃহস্পতিবার ১৩ মেই মন ১৮১২ ইং ১ বৈশাখ

সম্রাটের দর্পণ

কিছু লাগিল। ইহাতে আর কোনও
প্রশংসা দেওয়া ই চাকর পুষ্করী আপন
মুখের কহিল যে যে পুষ্করী ত
থানি লিখু হইল না যদি আমার ভাবে
আমার পিতা মাতাকে তুমি পালন কর
তবে আমিই ভালুকদের তাহার হই
যাবে পর্যন্ত ভালুক আমাকে খাইবে তা
বৎসুমি লিখি তুমি পথচিড়ে পাইয়া।
ইহাতে তাহার মুখের তাহা স্বীকার ক
রিলে সে হাসি আপন ভালুকদের সম্মুখে
খাড়া হইল ও ভালুক আমাকে তাহাকে
খাইতে লাগিল ইত্যদনের তাহার মু
খের শিরিষা তুমি পুষ্করী হাসি কি?
মাতাকে যাবত্বাবন পুষ্করী পালন করিলেন।
এবং হিন্দুশাস্ত্রী এক ঘাসের এই বন
পুষ্করী তখন হইয়া গিয়াছে। এক জন
ইংল্যান্ডের দেশান্তর সাহসের এক হিন্দু
চাকর ছিল। এক সময়ের দুঃখবলে ই চা
কর না হইলে লিখি তাহার জিল না এই
পুষ্করী যুদ্ধাবলি সাহসে ই চাকরকে
অনেক পুষ্করী ইচ্ছাক্রমে সে তুমি বত
সিখায়া চাকর এই বিন্দু-কাল মুখী
বলে পরিচয় করিয়া কোথা পলাইয়া
ছিল। তাহাতে কৃতজ্ঞ হইয়া সে
ভক্ত করিল যে আমার সাহসে মূল্য
এই পুষ্করী মাতা পুষ্করীকে অতএব
তাঁহার মৃত শরীর পাঁচ কোল পুষ্করী
লক্ষ হয় তৎপুষ্করী তাঁহার মৃত শরীর
প্রাপ্ত সমস্ত পাইয়া আপন ক্ষেত্র করিয়া
আনিয়া তোমার ঘরে সাহসীনে রাখি
য়াছি। সাহসে ইচ্ছাক্রমে চাকরের পুষ্ক
জন্ম ও আনিয়া তাহাকে যথেষ্ট পারি
তোষিত দিলেন।

গুহন।

সন ১৮৮৯ সালের ১০ এপ্রিল ইং সন

১৮৮৫ সন ১০ চৈত্র বাৎশনিবার যে তত্ত্ব
গুহন হইয়াছিল তাহার বিস্তারিত এই।
১। ৫। দুই মত বায়ার পল দিন থা
কিতে গুহনরক্ত হয় ও ১৮৮৫ তের পল
দিন থাকিত সর্বাঙ্গ হইয়া থান সন
লোকের দুখ হইল তখন এককালে
সর্বাঙ্গ চন্দ্রবন লোকেরা দেখিলেন
কমলা গুহন বহু দূরিতে পাইলেন না ও
কলিন বর্ন ও সর্বাঙ্গের মত দর্শন করিয়া
অনেকের গুহন পুষ্করী না হওয়াতে
যেহাঙ্গুস আসে পাঁচকো গুহন কাল ক
র্তব্য কর্মসম্পন্ন করিতে পারেন নাই পদে
তিম মত এক চন্দ্র পল রাশি পর কমা
গুহন হাসি হইতে লাগিল তখন সন
লের গুহন পুষ্করী হইলে বৈদ্যর্ম তখন
কে করিলেন। পরে চয় মত দিন পল
রাশি সময়ে এককালে মুক্ত হইলেন।
গুহন সর্বাঙ্গ সমান হয় না গুহন মত
লের লালপুষ্করী বর্ন হয় তাহার পুষ্করী
শুক্লমিহাঙ্ক।

অর্দ্ধদুর্ন সর্বাঙ্গ মাংস কৃষ্ণমিহাঙ্ক
ভবেৎ। বিমুক্তও কৃষ্ণমিহাঙ্ক কলিন
সনলগ্নেহ।

ইহার আঁই যদি মতলের সর্বাঙ্গ সর্বা
লান হয় তবে মল সর্বাঙ্গ হয় এবং
যদি অর্দ্ধাতিতি গুহন করিয়া সর্বাঙ্গ
না হয় তবে মল সর্বাঙ্গ হয় এবং যদি
সর্বাঙ্গ হয় তবে মল সর্বাঙ্গ বর্ন হয়
এবং যক্ষ্মময়ে মল সর্বাঙ্গ বর্ন
হয়। হাতাঙ্গ শর সর্বাঙ্গ টীকা
কর বিস্তারিত পাঠ্যকর্ম মিস্ত্রবর্ন ব্যাখ্যা
করিয়াছেন।

আশীর গড়।

এই সময়ে তাবৎ হিন্দুশাস্ত্রের চক্ষু আ
শীর গড়ের পুষ্করী আছে এইহেতু সে

খান হইতে যে কোন সম্রাটের আইসে
তাঁহা সকল লোকের গুহন হয়। ১৮
মহুজারি তারিখে কিল্লার অধিকাংশ বা
হিনের স্থান ইংল্যান্ডের সৈন্যেরা অধিকার
করিয়াছে। যুদ্ধকালে কিল্লার সৈন্যেরা
কিল্লাহইতে প্রায় গোলাঘরিতে লাগি
ল যে তাহাতে এক তিনাঙ্ক কালও বি
রাম ছিল না। ইংল্যান্ডেরা সেই কিল্লা
অধিকার করিতে মাঝেমাঝে সাহসে যথি
লেন ও তাহা সাহসে তাহা হইল।
১৯ তারিখে আত্মবেরা কিল্লাহইতে বাঁহর
হইয়া কিল্লার বাঁহর স্থান ইংল্যান্ডের সৈ
ন্যের সহিত তৎক্ষণাৎ যুদ্ধ করিল পরে
তত্ত্ব স্থানে ই আত্মবেরা পরাভূত হইল
দিশু করল প্রত্যেক সাহসে ও অন্য এক
জন সেনাপতি সাহসে মরিলেন ও তিন
জন সেনাপতিও প্রাণত্যাগী গেল না
এবং হুদু, সেনা ও সেনাপতি অনেক
মরিল।

১০ তারিখে সেই মোকামে ইংল্যান্ড
যেহেতু বাঁহর স্থানে অগ্নি লাগিয়া
মল ভিয়া গেল ও তাহাতে অনেক
লোক মরিল।

সেই কিল্লা একটা অতিশয় উচ্চ পর্ব
তা ও পর্বত গুহন যদি দেখাশোনে কিল্লা
নির্মিত না হইত ওখানি মতাবত সে
স্থান প্রায় উচ্চ যে সে দুর্গ-বন্দীরা তা
কার কিল্লাবর্ন ঘণ্টাবধিও অনেক দ্বি
বধি দেখাশোনে আছে কিন্তু সে শ্রীযু
মোল্লারও নিষ্কায় চাকর হইয়াও তা
হার আঁকা কখনও মানে না তাহার
লিখিত অনুমান চারি হাজার লোক
আছে তাহারদের সহিত খায়া দুই পুষ্করী
আছে ওখানি প্রায় দুই হইতেই ই
তে বৃত্তা যায় যে তত্ত্ব দিলে মাঝে

সমীচ রূপদর্শন

দ্বিতীয় শীঘ্র ইংগ্ৰাণীয়েরদের অধিকাংশের জ্ঞানিবে।

ভাগীয়ধর্মী।

জানুয়ারি মাস অবধি যে মাসপর্বৎ প্রভৃতি বৎসর ভাগীয়ধর্মীতে লোকা গ্রামে অতিশয় দুর্ব্যোগ্য হইয়া থাকে তাহা মনে তাত আসেন কিন্তু এই বৎসর তাহা হইতে অধিক দুর্ব্যোগ্য হইয়াছে। গত মাসের ১৩ তারিখে শুভ্র নীচে এক সাহেবের বজ্রা চড়াতে ঠেকিয়াছিল। তাহাতে সাহেব ভাবিলেন যে এখান কল হইল তবে সন্দেহ হইয়া আসিতে হইবেক। পরে সাহেব লাল গাছ দিয়া করিয়া মাস এই দিগে করিলেন যে এখান দিয়াই যাইব। পরে যেখানে বজ্রা ঠেকিয়াছিল সেখান তিন ধারা হইয়া স্রোত আসিতেছিল। তাহা দেখিয়া সাহেব খানাদ্বয়ের নিকটে হইতে বীণ ও দড়ি ও ময়ূর আনায়া পাঠ ঘণ্টার মধ্যে তাহা দুই ধারা গোধি করিলেন তাহাতে মল জল এক ধারা তে বহিতে লাগিল সে ধারাত পুর্বে আট অঙ্গুল জল ছিল এখন দুই ধারা বহু হইল তখন অবশিষ্ট ধারাতে দেহ হাঁত জল হইল এবং শুভ্র মোহনাতে জোড় দুই গাল কাটিয়া দিলে পদ্মাবতী হইতে তথিক জন ভাগীয়ধর্মীতে আসিতে লাগিল তাহাতে অবশিষ্ট ধারাতে দুই হাঁত জল হইলে সাহেবের বজ্রা আক্কেশে চলিয়া গেল। এবং সে মাসপর্বৎ ও ঐদান তটী যত লোকা মুক্ত ছিল সে ঐদান লোকাও এক কালে চলিয়া গেল।

এই কর্ম করবার কারণ সে সাহেবের চাঁরী চৌকামাত্র ব্যয় হইল। ইহাতে তিনি বিবেচনা করিলেন যদি পুতিবৎ

সর ভাগীয় মাসে এই কর্মে নীচ শত টোকা ব্যয় করা যায় তবে দুই হাঁত জল লাল কখনও হইতে পারে না।

হিন্দুশাস্ত্রে ঐদান কথিত তাহাতে এই কলিকালে গঙ্গা বহু দিন ব্যয়িলী নহেন অতএব এইমতে মধ্যম গঙ্গার ধারা দেখিয়া অনেক তলতর করে যে তাহার বিস্তার দিলে নাই।

গঙ্গীনাগর।

সমুদ্রের তীরে গঙ্গীনাগরের দক্ষিণ দিক পরিচ্ছন্ন হইলে বিস্তার দিলে নাই তাহা হইলে কলিকাতায় সাহেব লোকেরা বাসনা আছে যে তৎস্ব লোকেরা গঙ্গীনাগরে গিয়া মনুষ্য বায়ু সেবন করিয়া মৃত্যু হয় এই কারণে সেখানে এক টা ঘর গুপিত হয়। সেখান ঘাইবার কারণ এমন এক গুপ্য হইবেক যে তাহা তে অতিশয় ও নির্ভরনায় গঙ্গীনাগর পর্য্যটন ঘাইবেক।

লক্ষ্যনোয়ের নবাব।

তিন তারি বৎসর হইল ইংগ্ৰাণীয়েরা নেপালের রাজার সহিত যুদ্ধ করিয়া নেপাল রাজ্যের তৃতীয় ভাগ লইলে লক্ষ্যনোয়ের নবাব সাহেব কোরাণি বাহাদুরকে কহিলেন যে আমার দেশ মনুষ্য লোকীয় দেশ আমাকে যেও তাহাতে কোরাণি বাহাদুরকে এক কোটি টোকা দিয়া সেই নেপালীয় দেশ নবাব সাহেব লইলেন।

মঙ্গল বাহা।

কলিকাতার ইংগ্ৰাণীয় সমাচার পত্র এক ব্যক্তি এক পত্র জাশিয়াছে তাহাতে এই

লিখ্য যে কলিকাতায় বাঙ্গালি লোকেরা গুণ্য মধ্যম বিবাহদিতে রান্নায় অনেক প্রকার বাধ্যদান রাখিত করে তাহাতে নিকটেই ইংগ্ৰাণীয় লোকেরদের দিয়া না হওয়াতে তাহারদের ব্যাঘাত হয় এবং বাহারা অসুখ তাহারদের অতিশয় ব্যাঘাত হয়। অতএব এই অসুখ হইয়া সেই ব্যক্তি এই পত্র জাশিয়াছে।

ইহাতে আমাদের পরামর্শ এই আইসে যে বাঙ্গালি লোকেরা আশনারদের সুখের সময় অন্য লোককে ব্যাঘাত দিতে কখন ইচ্ছুক নহেন অতএব এই গুণ্য হয় যে ইংগ্ৰাণীয়েরদের বাড়ির নিকটে তাহার বাধ্যদান করিয়া আশনারদের পরীতে করিলে আশনারদের আমোদ ভগ্ন হয় না অনোরও সুখভগ্ন হয় না ইহাতে হানি কি।

চড়া।

মোং শ্রমশ্রমের নীচে গঙ্গাতে চড়া পড়িয়াছে সে চড়া প্রতিবৎসর বৃষ্টি পাইতেছে সেই হেতু সেখানে গঙ্গার স্রোত ততাল্প স্থান বহু এবং পৃথিবী বায়ুগুণে গঙ্গার ততিশয় ভাগ্ন হইতেছে তাহাতে অনেকের অনেক হস্তি হইতেছে তৎস্ব শ্রমশ্রম সেই চড়া লাগ করিতে কল্ল করিয়াছেন। তাহাতে কোন লোক শ্রীশ্রীমুখের নিকটে বিবেচন করিয়াছেন যে এই চড়া অন্য প্রকারে গুণ্য হইতে অনেক ব্যয় হইবেক তাহাতে ই চড়াতে এক বড় গর্ত করিয়া গর্ত বাকদেতে পূর্ণ করিয়া পঞ্চাৎ আঁটি দিলে অতঃপূর্ব্বকালে ই চড়া গঠন ঘাইবেক যদি কিঞ্চিৎ অবশিষ্ট থাকে তবে তাহা স্রোতোদ্ধারী সময়ে নিঃশব্দ হইতে পারিবেক।

সমাচার দর্পণ

পিণ্ডারিদের বিবরণের শেষ।

পিণ্ডারিরা যখন বিপাকভরে পালন করত তখন তাহারদের আহার করণের অবকাশ ও আহারের সুবোধ অত্যন্তপুঙ্খ পলাইবার সময় পথের উত্তর পাশে উৎপল ধান্যবিদ্য পল্য লইয়া হাতে রাখিয়া যাইতে পারি যত্নপূর্ণ ভাবে খোঁজাও পাওয়া যায় তবে বোকা সমস্ত অনেক অর্থ গিয়া আপনারা ভুজ্জ হর ও খোঁজা কে ভুজ্জ করে কিন্তু পলাইয়া বিপাক ভরহইতে উঠিয়া হইবামাত্র সমুদ্রে যে গুম ও নগাপায় তাহাতে আপনাদের সমুদ্র বতাব পুঙ্খপূর্ণ করে তাহাতে বপক বিপাক বিবেচনা করে না তা হারা যে গুমহইতে যায় সেই গুমে গুমারি বুম এবং ক্রীলোকেরদের হাফাকার ও পোদন ও পুঙ্খের খোঁজা এই চিহ্ন রাখিয়া যায়। যদি তাহারা বুম বংশপাণ্ড নির্ভর নির্ভর আপনাদের বরমান হিন্দুস্থানে চালাইতে পারিত তবে এই হিন্দুস্থানের মধ্যে পায় নর স্থায় হইত।

কহাং তাহা যে তাহারা সকল দেশের সন্ধান রাখে কিন্তু সে নেহে যেহেতুক তাহারা পথে যাই তে যে লোক পায় তাহাকে জিজ্ঞাসা করিয়া মন্তন দিকানা করে। ১৮১১ সালে যখন বঙ্গপী গারি নর্থও নদী পার হইল তখন তাহারদের ইচ্ছা ছিল যে বঙ্গ ও গোবাবরা এই উত্তর নদীর মধ্যস্থিত নিম্নদেশে পুঙ্খ লুট করে কিন্তু পথে এক জন ককীরের সহিত সাক্ষাৎ হইল ও তাহার পুঙ্খপূর্ণ ভবিল যে জিনা গকীরে অল্প সৈন্য ও অনেক সন্ন্যাসি আছে। ইহা শুনিয়া দিকারের দেশে না গিয়া জিনা গকীরে উপরে আক্রমণ করিল এবং বাঙ্গালার অস্ত্র পাণ্ডা মেসৌপলম্বর্গত সাত্তে তিন শত কোশ আশিয়া লুট করিল।

এবং বাবার লুটহইতে এই সন্ধানদ্বারা ককীর কে পোদের শত টাকা মিল। এই ককীর সেই টাকা লইয়া আপনাদের জীর্জ্বানে গিয়া বাস করিতেছে। এই সময় তাহারা লুটিকা অবশ্যত সন্ন্যাসি একজন কলি ও অশ্বের দৌ রাম্য করিল তাহারদের জিজ্ঞাসা হইবার সময় ইংলণ্ডেরদের সৈন্যের সহিত সাক্ষাৎ হইলে তাহারদের সেই লুটিক সন্ন্যাসির মুদ্র হইল ও তাহারদের বলও অনেক মূল্য হইল।

তাহারদের মধ্যে যে আশাভী হর তখন তাহাকে খোঁজার উপরে রাখিয়া লইয়া যায় কিন্তু অতিশয় উপস্থিতি হইলে যেখানে সে গানে তাহাকে কেলিয়া আপনারা পলায়। কোন গুমে গুমহিলে পায় যে ব্যক্তি যাহা লুট করিতে পারে সে তাহারি অসহাৎ ও তাহারি যে গুমহই বাটা লুট করিতে যায় সে যদি আপন নরুট টাকার সন্ধান না কহে তবে যেমন খোঁজার মুখে তোপড়া বাক্ত সেইমত তাহার মুখে কাপরে তোপড়া করিয়া বাক্তিয়া তাহাতে তখন রাখে এবং এই ব্যক্তিকে পক্ষাভায়ে মারে তাহাতে সে বেঁকিল নিধান পুঙ্খাবস্থা এই তখন তাহার নাকে মুখে পুঙ্খি হইয়া সে অতি ব্যমোহ পায় এই পুঙ্খ মুখে থিয়া তাহার হানে সন্ন্যাসি বাহির করিয়া লয়। এবং তাহারা নগরের বাহিরে খোঁজা রাখিয়া নগরের মধ্যে লুট করিতে যায় সেই খোঁজা হাফারা রাখা করে তাহারা এই পুঙ্খি সন্ন্যাসি পায়।

গত দুই দিন বঙ্গ হইল সকল পিণ্ডারি বের মধ্যে বঙ্গ পিণ্ডারি পুঙ্খ ছিল তাহার বরফের পটাবিশ বঙ্গরাজ্য ও সে অতিমূল্য পণ্য ও তাহার যেমন সাহস তবনুনাগী তাহার বিবরণ ছিল সে বাস্যক্রীড়া খোঁজার উপরে করিয়াছিল। যখন ইংলণ্ডেরদের হইতে পিণ্ডারিদের মত বিপাক উপস্থিতি হইল তখন

সকল পিণ্ডারি সন্ধান এই বঙ্গের অগ্নি হইল এবং পিণ্ডারি সৈন্যেরা তাহার পুঙ্খ এমন পুঙ্খ রাখিত যে অতিরিপ সময় আপনারা অন্যভাবে মরিয়াও অনেক কঠোরে আহার সন্ন্যাসি করিয়া বঙ্গকে বাতায়িত যখন গকীর লুট করিয়া বঙ্গ জিজ্ঞাসা হইতেছিল তখন জিজ্ঞাসা নামে অর এক পিণ্ডারি আপন সৈন্য সমস্ত তাহার সহিত মিলিল কিন্তু দ্বিভাষিতে ইংলণ্ডীয় সৈন্য তাহারদের উপরে আক্রমণ করিল তাহারা সকল হিন্ন ভিন্ন হইয়া পক্ষি পড়ে বঙ্গ আপন সন্ন্যাসি কলি তাহাতে তাহার সকল সৈন্য সমস্ত স্থানে এবং হইল কিন্তু জিজ্ঞাসা সৈন্য পায় মার পক্ষি ইত্যদ্যক বঙ্গ আপন বৃষ্টি পুঙ্খের আপন সৈন্য লইয়া ইংলণ্ডের সৈন্যের মধ্যে মিল পলাইয়া আপন দেশে নির্ভর পুঙ্খহিল। গকীরের দৌতে বঙ্গের লিভাফীরা পুঙ্খবিশ লুট হাফারা টাকা বক্রি পাইল।

এই পুঙ্খের মধ্যে হিন্দুস্থানীয় লোকেরদের অনেক বিশপর্গত পুঙ্খ হইতেছিল এই বঙ্গের হইল শিশুপুঙ্খ অনেক আয়োজন করিয়া সেই লুট পিণ্ডারি রূপ ব্যস্তের মুখহইতে হিন্দুস্থানকে উদ্ধার করিয়াছেন। সন্ন্যাসি মধ্যে হিন্দুস্থানে নির্ভর নানা পুঙ্খের বাসিত্য বৃষ্টি হই তেহে ও কবিরূপ চকিতেহে ও পুঙ্খ খোঁজা পিণ্ডারি ভরপুঙ্খ লোক বাতায়িত করিতে পারি ত না এবং সেখানে অনায়াসে নির্ভর লোকেরা গঃ বাগমন করিতেহে। এখন সেই পিণ্ডারি সমুদ্র আপন বোকা হাফারাইরাহে ও আপন সন্ধান হাফারাইরাহে ও আপন পুঙ্খ হাফারাইরাহে। যেমন ভারি কাঁচাধিতে চাপা ভুপ সেই কাঁচ উঠাইলে পুঙ্খের অক্লান্ত হর তেমনি মাদ্রাস হিন্দুস্থান উদ্ধারের অক্লান্ত হইতেহে।

এই সমাচার দর্পণ শ্রীরামপুরের হাসাখানাতে পুঙ্খসমূহে পরিবারে হাসা হর। হাফার সন্ধানের আশঙ্ক্য হর তিনি শ্রীরামপুরের হাসাখানাতে আপনবাস পাঠাইলে সন্ধানের কাম তাহার নিকটে পাঠান হইবেক তাহার মূল্য মাসে এক টাকা। যদি হাফার করিয়াছেন যদি তাহার নিকটে সমাচার দর্পণ না পঠেহে তবে তিনি শ্রীরামপুরের হাসাখানাতে সমাচার বিবামাত্র তাহার নিকটে পাঠান হইবেক।

ਜਨਿਥਾਰ । ੨੪ ਅਪ੍ਰਿਲ ਸਨ ੧੮੮੨ । ੧੭ ਦਿਨੀਂ ਸਨ ੧੯੧੭ ।

दर्पणे शुभ मोक्षार्थिव कार्यविष्णुनाः । वृत्ताब्धानिह जानन् मयाचारमा दर्पणे ॥

অনেক দোকানের অধীন লাবিলা জেলাহার রোড এ তারিখে

ମକଳ ସାହିତ୍ୟ ମୀଢ଼ର ଡଳୀର ମୁକାବିଲେ ନିମାରେ ବିକାର
 ହୈଦେକ ଗଭା ଏ ଗଭୀରର କେବିତ୍ରତ ବୋହୁଁରୁ ନାହାନ୍ତି
 ବହୁଧ୍ୟାନର ଘରବା ଗୋରାହର ବାସକନ୍ତ୍ର ଶାନ୍ତାନ୍ତରେ ବାହୁଁ
 ହୈଦେକ ।

হাজিরাহি বৃহস্পতিবার ৯ বেই' লগ ১৮৭১ ই. ১৫ টোনাখ

চাটগিওর বৃহত্তরিকার ১৩ মেই লস ১৮১১ ইং ১ ট্রাক

সম ১২২৬ বা বোঁজরিদেহু লাকুটাঁর দস্তরখানার।

ইতি তারিখ ৬ মার্চ সন ১৩১৯ বোর্ডরিসেসে হকমে।

ଆନନ୍ଦି ଗଡ଼ ।

আমরা আশীর্বাদ করি যে শেখ মমতাজ শিখিলাম তাহারপর তাহার আর কোনই নতন মযাচার আইনে নাই কিন্তু আমাদের ভরোম। হয় যে আশীর্বাদ মমতাজের শুল্ক ঘাইবে যে আশীর্বাদ গড় ইংল্যান্ডেরদের অধিকারে আমি ঘাই।

দক্ষিণাফ্রিকা হইতে এই নয়টি
আমিয়ারে যে দেশানকার লোকের
দ্বিগুণের আকাই হাজার টেনা ও
অনেক মুন্সের আহাজ নহিয়াছে। এই
ই-মুগ (গেই) হইতে অসংখ্য পুঁদীল জাহা
বি দক্ষিণাফ্রিকা দ্বিগুণের সহিত যিনি
গ্যারে ইহাও তাহারদের ভরোমা ইহ
গ্যারে যে এই-আহজির হারা দ্বিগুণ
দের বানিজ্যে ও মুন্সের আহাজ নহিতে

নেপাল দেশেই হৈছে সমাচাৰ আনিয়াছে
যে নেপালের ৰাজ্যৰ এক পুৰান মেনানতি
ভীমসিংহ ময়িগাছে মে অভিমানী
ও বলবান ছিল তাহাৰ কাৰণ মেধান
কাৰ ৰাজা অত্যন্ত শোৰ কৰিছেছেন।

শ্রীযুত অম্বানারায়ণ ঘোষালি বাহা
মুরের পাঠশালা ।

মোঃ কাশীতে ঐযুত জয়নারায়ণ (বা)
ঘাল বাহাদুর এক পাঠশালা স্থাপন করি
য়াছেন তাহার ব্যয়ের কার্য চলিষ্ণু হই
আর ঠোকা দিয়াছেন সেই পাঠশালাতে
নামকৃত ও হিন্দী ও পার্শী ও বঙ্গীয়া
পুস্ত্তি বিদ্যাব্যবসায় হইতেছে ইহাতে
অনেক নিষ্ঠুর বিশিষ্ট মন্তানেরদ্বারা ও
কার হইতেছে।

পূর্বইন্ডিয়া কোম্পানীর লিখা চিঠি থেকে যে
গীর্দানীনাথের ওপর দোষ লেগে বসতে ছিল
এমত অনুমান হয়। এইস্থান গঙ্গা
পুত্রাণের অঙ্কণে ক্রিয়াযোগীনাথের দেখা
গোলে যে গীর্দানীনাথের তদুপস্থিত মূখ্য
নায়ে রাজা রাওজীনাথ করিয়াছিলেন।
তাহাতে বিদ্যাজী নামে নায়কের ওঁকর
রাজার কন্যা সুলাচনা রাওজীনাথ হইয়া
ঐ রাওজীর আশ্রয়ে পুত্র বৎসে কাল
কেন্দ্র করিয়াছিল। পরে তাড়নীয় নায়ী
রাজা হইল। যিকয়ের পুত্র যাহির খাঁ সুত্র
সময়ে রাওজী নামে আসিয়া সুলাচনাকে

[illegible]

অনেক মোহের অধীন জাতিস জেনারেল হোজ এ তারিখ

হাফিজ গীতার তপসিলা লড়াইয়ের বাকী আদায় কারন
মুন্সাম খানে নিমানে বিজয় হইবে তবু এ জীবনের বৈধতায়
শেখরিবন্দু লাক্ষারি হস্তাংশির অমরা তেদারি কাশে
রি কারাক্রিতে মাসুর হইবে।

সহকারী বাণী আদায় করিব।

চাটগাঁও ও মুরশিদাবাদ ও মেদীনা ও হালা মুরশিদাবাদ ২৭
 মেই ১৯১৬ ইং ১৫ টোকা নং ১২ ২৬ বাং হোষ্টরিবদু
 লেকটরি হাট/খাট/

महाराष्ट्र राज्य असाधारण आर्थिक कायदा ।

মুখ্যনিবাস ও জন্মস্থান ও পেশা : ব্রহ্মচাৰী ২১ মেই
 সন ১৮ ১৯ ইং ১৫ ইয়াৰে সন ১৫২৬ তাং কামেচৰি
 কামাচিৰে।

हुंका. ७ ठाणीपुत्र ब्रह्मविद्या १० वेई मग १८-१९ ई. ८
 देवाळ मग २५, २६ वाँ कावेळुरि बाजावित्तक।

ସମସ୍ତି ଏ ସହଯୋଗିତ୍ବ ଦୁଇଗୁଣିତ ୧୭ ଯେଉଁ ମନ ୨୦ ୨୦
 ୧୫ ୫୫ ମନ ୨୧ ୧୫ ୨୫ କାମେକର କାହାଣୀକେ

সম্রাটের দর্শন ।

বিবাহ করিয়া এবং এই তৎসংক্রান্তীয় সুখের
রাজার এক কন্যাকে বিবাহ করিয়া এই
জের অর্থ প্রাপ্ত হইয়া এই গণসভাগারে
রাজধানী করিলেন ও অনেক কালপর্যন্ত
বসতি করিয়া পরে পুত্রাদি রাখিয়া যাই
লেন ।

চতুর্থ

গত সপ্তাহের দিনে মোং বলিকাভায়
এমত এক প্রকার লুণ্ঠন চতক হইয়াছিল
যে তাহা শুনিতে শিশু লোকেরা কণ
হাত দেয় । এক জন হিন্দু মহাসি ও তার
এক জন স্ত্রী এই দুই জন একত্র হইয়া
এক কালে চতকে ঘুরিয়াছিল । তাহার
দেহে অস্ত্রধারণে লজ্জা হইল ও প্রহেল
করিতে পারেন নাই যেহেতু অসুখ্য
ক্লিষ্ট হাজার লোকের সাক্ষাৎকারে ও
পুত্রী সূর্য্য আবুলায়ান থাকিতেও এই
দুঃখ করিল ।

ইংগ্লেণ্ডের রাজার মরন ।

গত দুইবার বিকালে বাগদাই হইতে গত্র
শিখছিল যে সেখানে মৃতকী পথ ও
মিনেয়রপার্শ্বের ইংগ্লেণ্ডের সম্রাটের
শিখিয়াছে তাহাতে এই তৎসংক্রান্ত
তার জ্ঞান গেল যে ইংগ্লেণ্ডের মহারাজ
দীতহর বৎসর বয়স্ক হইয়া ৭৭ বর্ষ
মরে তাহিমে পরলোকপ্রাপ্ত হইয়াছেন
সেই পত্রের তদা সম্রাটের তদাশি
পুত্রান হইয়া নাই । ইংগ্লেণ্ডের এমত বার
হার আছে যে তৎসংক্রান্ত বাদশাহের
পরিজনের মধ্যে কাহারো মরন হইলে
যাহা ইংগ্লেণ্ডেরা নানাবিধ শোক চিহ্ন
বিরণ করেন ও কাল বস্ত্র পরিধান করেন
ও সম্রাটপুত্রের কাল চিহ্ন দেন ।

মহারাজার কবর যেখানে ২ মিনেয়র আ
খিল মরনের পোলের দিন পরে যত্ন
ইয়াছে তাহার বিবাহ মাড়ান বৎসর
হইয়াছিল তাহার মাত পুত্র ও পীত কন্যা
আছে তাহার মধ্যে কোন সন্তান চল্লিশ
বৎসর বয়সের নূন নহে তিনি যত স
পতি রাখিয়াছেন তাহা অদ্যাপি পুত্রান
হয় নাই ।

বানিজ্যের বাঙ্কি ।

৪ মে তারিখে মোং বলিকাভায় ঐযুত
ব্রিটিশ কোম্পানির ঘরে এক লুণ্ঠন বাঙ্কি
স্থাপন হইবে তাহার নাম বানিজ্যবাঙ্কি
মোং বলিকাভায় বাঙ্কির কর্মকরা
যাইবে । এই সাহেব লোকেরা এই
বাঙ্কির অধ্যক্ষ ।

ঐযুত জোসেফ বারোথো সাহেব ।

ঐযুত জন ওলামসন মুলতন সাহেব ।

ঐযুত ই মাংকিন সাহেব ।

ঐযুত চোট বোসেফ বারোথো সাহেব ।

ঐযুত জন মেলহিল সাহেব ।

ঐযুত লুইস বারোথো সাহেব ।

ঐযুত জন দেবুশ সাহেব ।

ঐযুত ব্রাইডমাল সাহেব ।

ঐযুত জেমস কালদর সাহেব ।

ঐযুত বারু সূর্য্যদাস ঠাকুর ।

ঐযুত ব্রিটিশ কোম্পানী এই বাঙ্কির
সেক্রেটারী ও বহুধারী । এই বাঙ্কির
ব্যক্তিগত যাহা জানিতে চাহিল তাহার
এই সাহেব লোকেরদের লিখিতে গেল
ইহার ওখ বিবরণ জানিতে পাইবেন ।

এই বাঙ্কির এই টাকার বাঙ্কিপট বাহির
হইবেক । ৫০০০ ১০০০ ৫০০ ২৫০ ।

৪০০ ২০০ ১০০ ৫০ ২০ ১০ ৫ ২ ১ ।

এই বাঙ্কিপটে সন্মতি ঐযুত বারোথো
সাহেব ও ঐযুত মুলতন সাহেব ও

ঐযুত বারু সূর্য্যদাস ঠাকুর এই ভিল
অলের সহী থাকিবেক ।

বৃষ্টি ।

গত সপ্তাহের সর্বত্র বৃষ্টি হওয়াতে
অনেক প্রকার হইয়াছে ইহার পুত্র
দেহ যান পর্যন্ত বিদ্যুৎ না হওয়াতে
ক্ষেত্রে লাগিলসমুদ্র হইয়াছিল না এবং
স্থানে এই অতঃপরোক্ত পুত্র মৃত্যু
হওয়ার পুত্রান ওপনি হইয়াছিল বিদ্যুৎ
এই বৃষ্টি হওয়াতে সর্বত্রকার ওখ
শান্তি হইয়াছে ।

তাকতি ।

২০ এপ্রিল মোং পোরাপুরে রাষ্ট্রি আট
ঘণ্টার সময়ে অনেক তাকতি এক গৃহ
ঘরে বাড়িতে পড়িয়া তাহার যথার্থ
লইয়া গিয়াছে তাকতি বহু পক্ষ নাই
যথাদায় অনেক ঘোঁ করিতেছে ।

গত বিবার রাষ্ট্রি মোং বলিতে
এক গৃহঘরের ঘরে এক জন চোর দিগ
দিয়াছিল । তাহাতে এই গৃহঘরের লোকেরা
তাকতি করিয়া তাহারদের মধ্যে
এক জনক ধরিল । সেই ব্যক্তি আর
চোরের নাম কহিল এবং দুই জন স্ত্রী
লোকের নাম কহিয়াছে ইহার মধ্যে
কতক বীর পড়িয়া ঢালান হইয়াছে ।

এবং পূর্বে মোং পোলেগিতে এক ব্যক্তির
মামি হইয়াছিল পূর্বে লিখা গিয়াছে ও
হার শরীরের আকৃতির মত এক শেহাজে
শিঞ্জিয়া করিয়া এই মোকামে রাখা গিয়াছে
এখন তাহার শরীর কালের তাহার হই
য়াছে ইংগ্লেণ্ডেরদের এমত ব্যবহার
আছে যে জন মোয়াল অতিবাদ তাকতি
করে তাহাকে এইজন সাক্ষী দিয়া তাহার
শরীর এইজন টানিয়া সেই স্থানে রাখা

সমীচর দর্পণ।

যেহতুক মনন লোকের ক্ষমানে দুঃখ
যেহতুক মনন লোকের ক্ষমানে দুঃখ

সৈন্য।

দুর্গা দেশে যে ইংল্যান্ডেরদের সৈন্য
ছিল তাহারা বিদায় হইয়া আপন দেশে
গিয়াছে। আমরা শুনিতেছি যে তাহার
মধ্যে ৩৫ হাজার গোলী সৈন্য এই দেশে
আনিতেছে।

ঐযুত লর্ড ওলিফন্টের এক কথিতি।

কনাকর ইংল্যান্ডীয় সম্রাটের লিখা
গিয়াছে যে ঐঐযুত লর্ড মরলিওনের
জ্ঞাতা যে ঐযুত লর্ড ওলিফন্ট সাহেব বো
নাতিতে আর করিয়া পুথিতে পুথি
সেনাপতি এখা খাতি হইয়াছেন তিনি
যখন ১৮৩৩ সালে ভারতবর্ষে ছিলেন
তখন মাদ্রাজের সৈন্য তাহার অধীন
ছিল ও তিনি মহারাষ্ট্রের সহিত
যুদ্ধ করিলেন সেই সময়ে নাগপুরের
রাজার এক গোয়িন্দা তাহার জাণিতে
আইল। তিনি আপন চাকরকে আজ্ঞা
দিলেন যে এই গোয়িন্দাকে আমার মন
ন নৈন্য ও যুদ্ধ সরঞ্জাম দখল ও পরে
ইহাকে আমার নিকটে আন। সাহেবের
চাকর ঐ গোয়িন্দাকে মনন জাণি যে
খাইয়া খুন্সীর সাহেবের নিকটে আনি
ল। তখন সাহেব ঐ গোয়িন্দাকে কহি
লেন যে তুমি তাহার রাজাকে কহিও
যে কল্যা প্রাণতকালে পীত ঘণ্ডার সময়ে
তাহার সহিত যুদ্ধ করিব ও নয় ঘণ্ডার
উপরকে পিড়িব। ও দশ ঘণ্ডার সময়ে তা
হারে ধরিলে দিব। ইহা কহিয়া ঐ গোয়ি
ন্দাকে বিদায় করিলেন। পরদিন প্রাতঃ
কালে পীতঘণ্ডার সময়ে যুদ্ধোদ্যোগ করি
য়া নয় ঘণ্ডার সময়ে নাগপুরের রাজাকে

হিরলেন ও প্রাণের ঘণ্ডার সময়ে তাহারকে
আপন জাণিতে আনি লেন পরে আপন
ঘড়ী বাধির করিয়া কহিলেন যে প্রাণের
ঘণ্ডা হইয়াছে ততএব ইহাকে ধরিলে দিব
না মাদ্রাজে পাঠাইব। ইহা কহিয়া
নাগপুরের রাজাকে মাদ্রাজে পাঠাই
লেন।

লবনের ইন্সাহার দেওয়া গিয়াছে।

সন ১৮৪৯ সালের ইন্তক ১৪ মে মতাবেক
বায়লা সন ১২১৩ সালের ৩০ বৈশাখ
রোজ মরলবার এবং তাহারপর ঘাৎ
মনন লবন বিক্রয় হয় মদর কলিকাতায়
একশে ৬৬ ঘরে লিলামে বিক্রয় হইবেক
১২০০০০ মতাবজি হার লক্ষ মোন লবন
ঐযুত স্ট্রিজেস হাইদ্রের মরকারে।
তাহার তফসীল নিচে লিখা যাউতেছে
লবনের মরকারি নিয়মের ঘরে লিলামে
বীরা যাউবেক জিনাট ১০০ এক হাজারের
হইবেক এজন ৮২ বিরাশী নিকু জিনাট
এক টাকা বায়লা দিয়া খরিদারানেরা
মএদ পাঠা করিবেক ও যে মোকায়ে
লবন লিলামে বিক্রয় হইবেক ও সেখান
হইতে খরিদারান লোকেরা লবন চালান
করিবেক সে মনন মোকায়েদের
তফসীলের ইন্তাহাদনামা মদর লবন
দস্তুরে লটকান গেল তাহাতে লখা
আছে যুক্তি খরিদারান লোকের যে লবন
লিলামে বিক্রয় হইবেক তাহার নিয়মিত
তফসীল।

| নাম | লবন |
|----------|----------------|
| হিজলি | — — — — ১৮০০০০ |
| ডমালোক | — — — — ২৫০০০০ |
| ১৪ পরগণা | — — — — ১১০০০০ |
| জুমরা | — — — — ১৬০০০০ |
| চতুর্দশ | — — — — ১৪০০০০ |

| | |
|------------|----------------|
| কটক পারী | — — — — ১০০০০০ |
| কটক করকট | — — — — ৩০৪২ |
| মাদ্রাজ | — — — — ১০০৪৮৮ |
| পরিমিট | — — — — ৭৩৪২ |
| মস্কাই | — — — — ১৫৮৮ |
| মকীন | — — — — ১০০ |
| ফে.কী পারী | — — — — ১০০ |

বানিজ্য।

এই বৎসরের ৪ জানুয়ারি অবধি ৭
এপ্রিল পর্যন্ত অর্থাৎ তিন মাস মাত
দিনে এই জিনস এই হিসাবে কলি
কাতাতে হিন্দুস্থানের নানা পুর্দেশ হইতে
আমদানী হইয়াছে।

তুলা ৪২৯৩ মন। শীল ১৩৭৭০ মন।
তিলি ৫৭৪০৫ মন। সোরা ৩৭৩৩ মন।
আদরক ৮৩৯৯ মন। রেশম ৪৩১ মন।
মুগারি ৭৯৪৫ মন। এবং প্রাণের লক্ষ
মাতাঞ্জি হাজার মাত শত খান
কণিত।

সমুদ্র পথ আহাজে এই জিনস
আমদানী হইয়াছে। দৌহ ৪৩৪৫ মন।
শিশা ৪৮১৫ মন। ইরাণ ১৮৭৪ মন।
ডায়া ১২৯৯৯ মন। রাতি ৫৫৮৯ মন।
দস্তা ১৯৩১৪ মন। মরিচ ৪৭৪৪০ মন
জৈরা ৪১০ মন। লবণ ৪৮৭৩ মন। মুগারি
৮৩১০ মন। ও ৯৫৩৭৩ আয়ফল মন।

কলিকাতার বিবরণ।

এক শত আটাইশ বৎসর হইল যখন আও
রঙ্গজের বাসনাধের সহিত ইংল্যান্ডের বাসিন্দার
কুঠীর সাহেবেরদের লোকহইল তখন চারক
সাহেব ইংল্যান্ডেরদের পক্ষে আদরক হিসেব
তখন হগনিত ইংল্যান্ডেরদের বসতি ছিল
সেই পুত্রিক সমে চারক সাহেব পুত্রম মো
কলিকাতার গিরা ইংল্যান্ডেরদের বসতির

সমাচার দর্পণ

বীজরোপণ করিলেন এবং মোঃ চানকে পুত্র নামেই চানক নামেব আপনায় বসতি করণ এক বাঙ্গালী করিলেন তখনই তাহার নাম চানক হইল। চানক নামেব কলিকাতার বসতি করিলে দুই বৎসর পরে আশনি মসিনে। তাহার চারি বৎসর পরে কলিকাতার পুরানা কিশু গাঁথা যেন জাহাজেই এখন পুরণা কুঠী বলে। নতর পত সাইরিশ মনে ১১ আকবরে এক মহাক্ত হইল ও কত কাশীল বৃক্ষ ভূমিকর হইল। সে সময় কলিকাতার দুই পত পাকা ঘর পড়িয়া গেল এবং কলিকাতার বড় গিলা ঘরের দুই-তালিয়া ভূমিতে পড়িল ও জাহাজ ও নৌকা পুড়তি বিশ হাজার মারা গড়িল এবং ইংলীজদেরের নর জাহাজের মধ্যে আট জাহাজ মারা গড়িল ওলন্দেদেরের চারি জাহাজে মধ্যে তিন জাহাজ নষ্ট হইল। আর অতিশয় ভারি বোকাই নৌকা এ সময় অর্ধ কোম্পানিতে ভূমিতে উড়িল তিন নক নৌকা মারা গড়িল।

ইহার পরে বিশ বৎসর গত হইলে নতর শত লাভার মালে নবাব সিরাজদৌলা দুর্গাচার অব্যয়সিন্ধু কলিকাতার আসিয়া অনেক জন ইংলীজদেরদিগকে এক অতি ক্ষুদ্র স্থানে বস করিয়া সমুদায় রাশি সেখানে রাখিল তাহাতে বাহুর গমন রোধ পুত্রক অল্প জন ব্যতিক্রিয় আর সকলে সেই রাশিতে মসিনে। সেই উপপুত্রকে কলিকাতার ক্ষুদ্র ঘর ও বাটী ও কায়দার অনেক নষ্ট হইল।

তাৎপর্য লক্ষ্য সাহেব মোঃ মাসরাজ হইতে লাভ শত গোরা ও বারো পত সিপাহী আসিয়া মোঃ কলিকাতার পাইছিলেন তখন নবাব সিরাজদৌলা মুলেশাখাবে করিয়া গিয়া ছিল। নবাব সিরাজদৌলার সৈন্যের সেনা পতি মীর কাকরাণী এই লক্ষ্য সাহেবকে

পূর্বে লিখিয়াছিল যে ভূমি মোঃ কাটোয়াতে আসিয়া আমি সেইখানে তোমার সহিত মিলি। এই লিখনানুযায় লক্ষ্য সাহেব মোঃ কাটোয়াতে গিয়া পূর্বার মীর কাকরাণী এর পর পাইলেন তাহাতে মীর কাকর এই লিখি রাখেন যে তোমার সহিত যে আমার মিলি বার কথা ছিল তাহা এখানে পূরণ হওয়াতে যাইতে পারিলাম না। ইহা শুনিয়া বহু সাহেব কলিকাতা না আসিয়া মোঃ পলাশিতে গিয়া থাকিলেন এই পলাশিতে নবাব সিরাজদৌলার সহিত ইংলীজদেরের মহাযুদ্ধ হওয়াতে গিয়া কলোলা পলাইলে ইংলীজদের মীর কাকরাণী ঐকো বাজালার নবাবি দিলেন কিছু দিন পরে পূর্বার কলিকাতা শহর দখলিত আত্ম হইল। সে বাহুর বৎসর হইল। এই বাহুর বৎসরে মধ্যে কলিকাতা শহর কত বড় হইয়াছে তাহা লিখা ভার এতকাশীল কলিকাতা বেধিয়া পূর্বাধীন কলিকাতা মনে ভাবিলে বিস্ময় বোধ হয় তখন যে স্থানে হয় হাজার টাকার ইমারত পাওয়া ভার ছিল এখন সেই স্থানে অনুমান তিন কোটি টাকা অধিকের পাকা ঘর বেধে যাই-তেহ অন্য জন সম্রাতি পুস্তির বিবরণ লিখিব।

ইতিহাস।

এক বাণশাহ্ আপন বেশ দিয়া গমন করিতে আপনায় এক পুখান নগরে গহ্নিহিলেন ও সেখানে তনিসেন যে এ নগরে এক জন সম্রাতি বহু লবনাক্ত পুতান আছে সে এ নগরের পুতী রের বাহিরে কখনও যায় নাই। পরে বাণশাহ সে আকর্ষ্য শুনিয়া সম্রাৎসরের আছা রোপন্যুক্ত বৃত্তি তাহাকে দিলেন ও কহিলেন যে যদি তুমি এ নগরের বাহির না হও তবে বৃত্তি পাইবা নতুবা এ বৃত্তি থাকিবে না। কিছু

দিন পরে সে আপনাকে বহু জ্ঞান করিয়া আপন নগরের বাহির হইল।

ইহার তাৎপর্য এই যে কথ্য সম্রাৎসর যার তাহার মিত্রের অনেক আছা দিলে সে কথ্য করা মোকোকেভার ভায়াবাহ হয়।

এক জনেরা পিতা পুত্রে এক গাথা হাতে লইয়া যাইতেছিল পিতা ও পুত্র পল্লুরে যাইতেছিল তাহা দেখিয়া এক পথিক তাহার দিগকে বলিল যে তোমরা পাগল তোমাদের সহিত গাথা থাকিতে কেহ হাটতেহ। তাহা শুনিয়া এই ব্যক্তি আপন পুত্রকে গাথার উপরে চড়াইয়া দিল। পূর্বার কতক দূর গেলেন এবং এক পথিক কহিল যে আরে দুই বাক ভোর বৃদ্ধ পিতা ইংলিষা যাইতেহে তুই গাথার উপরে চড়াইয়াছিল। ইহা শুনিয়া তাহার পিতা আপন বাককে নামাইয়া আপন গাথার উপরে চড়িল। পূর্বার কিছু দূর গেলেন আর এক পথিক কহিল যে তুমি নির্ব তোমার এক শিশু পুত্র চড়াইয়া দুই পাইতেহে তুমি সূত্রে গাথার উপরে চড়াইয়া যাইতেহ। ইহা শুনিয়া পিতা পুত্র এককালে এই গাথার উপরে চড়িল। পূর্বার আর এক জন কহিল যে এ গাথা তোমাদের নর তাহা হইলে এক বোকা ইহার উপরে গিয়া না। ইহা শুনিয়া পিতা পুত্র উভয় জন গাথাহইতে নামিয়া এই গাথার চারি পা বাঙিয়া আপনায় কত করিয়া বহিতে লাগিল। ইহা দেখিয়া অন্য সেরকরা কহিল যে ইহারা কি পাগল একটা গাথা কত করিয়া বহিতেহে। পরে সে ব্যক্তি বিরক্ত হইয়া কহিল যে সকলকে ভুটী করিতে কে পারে।

ইহার তাৎপর্য এই যে এমন কোন এক কথ্য নাই যে তাহাতে সকল লোক সম্মত হয়।

এই সমাচার দর্পণ পুরানপুস্তরে হাস্যধামাতে পুস্তিকভাবে শনিবারে হাস্য হয়। যাহার লগনের আবশ্যক হয় তিনি পুস্তিকপুস্তকের হাস্যধামাতে আপন নাম পাঠাইলে সন্তোষে কাগর তাঁহার দ্রিকটে পাঠান যাইবেক তাহার মূল্য মাসে এক টাকা। যিনি হাস্য করিয়াছেন যদি তাহার দ্রিকটে

সম্পাদক দর্পণ

৫০ সংখ্যা

শনিবার।

৪ মে মল ১৮৮৩। ১০ বৈশাখ মল ১৩১৩।

দর্পণে মুখ্য সৌকার্যমিষ কার্যবিবরণীঃ। বৃত্তান্তিহ আলস্য সম্মারসমা দর্পণে॥

কোম্পানির কার্গিজ।

কোম্পানি শতকরা অল্প টাকার সুদের কার্গিজ করা করিতে হইবে শতকরা এক টাকা উৎকোষ। বিস্ময় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা চরিত্রালা ভিত্তকোষ।

মজুরির নক্সিকা।

| | | | | |
|---|---|-------------|----|-------|
| ১ | ৫ | শনিবার | ১০ | বৈশাখ |
| ২ | ৫ | রবিবার | ১১ | ৫ |
| ৩ | ৫ | সোমবার | ১২ | ৫ |
| ৪ | ৫ | মঙ্গলবার | ১৩ | ৫ |
| ৫ | ৫ | বুধবার | ১৪ | ৫ |
| ৬ | ৫ | বৃহস্পতিবার | ১৫ | ৫ |
| ৭ | ৫ | শনিবার | ১৬ | ৫ |

ইন্ডাস্ট্রি।

লিঙ্গিহ জিনিসদাত দায়র মাই চৈত্র

মল ১১১৫ মাল মোকাম দেবীভূতা জিল রঙ্গপুর।

আমাদী জিনিস ওজন ধর
V— মোল নিম্ন উল্লি

| | |
|-----------------|--------|
| মোঃ দেবীভূতা | ১৩১১/৮ |
| আতর চালু মিহী | ১/ ১ |
| আতর চালু মোটা | ১/ ১ |
| গুলা চালু মোটা | ১/ ১ |
| মোঃ গোয়ালপাড়া | ৮৪১/৮ |
| লবন আউল | ১/ ১ |
| লবন মোম | ১/ ১ |
| লবন মোম | ১/ ১ |
| দাড়া | ১/ ১ |
| সন্ধির্দ | ১/ ১ |
| মোঃ মোলিবাতি | ৭১ |
| উল | ১/ ১ |

কলিকাতা মল ১৮৮৩ মাল ডাঃ ১৩ এপ্রিল।

৪৮৮ দেওয়া যাইতেছে। মল হালের

৪ মে ডাঃ ১৩ হইতে মোঃ মাহিন্দ (কো)

ল্লাহি নাহরানের বাহিঃতে কমরমান

বাঁকি নামে এক বাঁকি হস্তরকমের সত্তা

কর্ম করিবার নিমিত্তে মোঃ যাইবেক

ডাঃ ১৩ মালিক এইক্ষণে মোঃ বাহাদুর

হইতেছেন ডাঃ ১৩ মালিকের নাম প্রত্যেক

লিখা যাইতেছে মোঃ জোমিদ বাহাদুর

ও ডাঃ ১৩ পুণ্ড্রুতি ও মোঃ মাহিন্দ

কোম্পানি ও জল মেলবিল এবং বাবু

গোবিন্দমোহন ঠাকুরের (আজ পুণ্ড্রুতি

বাবু সুরেন্দ্রনাথ ঠাকুর।

মোঃ মাহিন্দ কোম্পানি সাংহান ১

কমরমান বাঁকির সত্তারহিকার ও

কর্মহর্তা হইলেন অতঃপর ১ বাঁকি ম

ফল কার্যের যে কোন প্রার্থনা ১ মোঃ

মাহিন্দ কোম্পানির নিকটে দাখিল

করিবেন।

পুর্মিয়ার লোটে অল প্রিন্স অর্থাৎ বে

মিআবীদুল্লার মত কমরমান বাঁকি হইতে

দেওয়া যাইবেক লোটের রকম প্রকৃত

৫০০ ১০০০ ৫০ ১৫০ ১৬০ ১৮০ ১৮০

৫০ ১০ ১৬০ ১৮০ ১৮০ ১৮০

৫০ ১০ ১৬০ ১৮০ ১৮০ ১৮০

৫০ ১০ ১৬০ ১৮০ ১৮০ ১৮০

৫০ ১০ ১৬০ ১৮০ ১৮০ ১৮০

৫০ ১০ ১৬০ ১৮০ ১৮০ ১৮০

৫০ ১০ ১৬০ ১৮০ ১৮০ ১৮০

৫০ ১০ ১৬০ ১৮০ ১৮০ ১৮০

নিবন্ধন করণী বরেন্দ্র বসন্তসিন্ধু বিধ

বাজি ৪০০ ৪০০ ৪০০ ৪০০ ৪০০ ৪০০

মুদ্রার দ্বারা বিলম্বিত ওজন লিখিত

৪৮৮ ৪৮৮ ৪৮৮ ৪৮৮ ৪৮৮ ৪৮৮

ন ম মুদ্রা মুদ্রা লিখা যাইবে নিম্নলিখিত

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

নিবন্ধন ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০

সমাচার দর্পণ

স্বা ১৮ ১৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

সম্পাদক

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

১৮৮৮ ইং ১৮ ইয়াং ১

দুই আশুর আঠি পাঠাইয়াছিল ও ক'হিয়া
ছিল যে এই দুই আশুর আঠি তুমি
আপন ছাত্রিতে রাখিও। আর এই
তে বহু হইলে যখন তাহার মল ভোগ
করিবা তখন এই আশুর গতে পুবেশ
করিবা। কিন্তু ইহার দুই দিন পরে ঐ য
শোবদনার আপনি কাতর হইয়া স্থপুণ
রকার্যে ঐযুত মর তল মালকম সাহে
বের পাঁচবিনত হইল। পরে মালকম সা
হেব তাহাকে কহিলেন যে আর কোন
পথ নাই কলা পুণ্ডরকালে জয় ঘণ্টাপাঠ
তোমাকে মেঘাদ দেওয়া গেল ইহার
যদি আশুর িত আমার হস্ত সমর্পণ
কর নতুবা তোমার রহা হইবে না। পর
দিন পুণ্ডরকালে জয় ঘণ্টায় ইংলণ্ডীয়
রে যুদ্ধ সরণীয় তর্জুই প্রস্তুত হইল
কিন্তু মাত ঘড়ীর সময়ে ইংলণ্ডীয় সেনা
পতি অত্যাচর বাদ করিতে আঁজা করিলেন
সেই কালে ইংলণ্ডীয়দের অরণ্যতাকা
সূর্য্য রথপতাকা হস্ত প্রকাশ্য নাহিতে লাগ
ল। এই অঘোনিয় কিছা লইবার সম
য়ে ইংলণ্ডীয়দের এক জন সেনাপতি
ও পাঁচ জন সিআইম্যান মরিয়াছে।

এই সমাচার লিখিবার পর আর এক
সমাচার আইল তাহা লিখা যাউতেছে।
যখন ঐ কিছাদির মালকম সাহেবের নি
কটে আইল তখন অতি ঐশ্বর্য্যেণ ত
নিয়া পুখলা করিল যে তামার সৈন্যেরা
অন্ত মনোতে কিছাইতে বাহির হওক ও
আপনকার সৈন্য কিছা অবহার করক।
ইহাতে মালকম সাহেব কহিলেন যে তা
হাতে আমার পুণ্ডরকাল কি কেবল কিছা
আমাকে দেও। কিছাদির বহিলক যে
আমার যে আরব সৈন্য আছে তাহার
যদি আলে যে কিছা তোমাকে দিয়া
ওবে তাহার আমাকে খুল করিবে তত

এব তাহার দিকে মিথ্যা ক'হিয়া অস্ত
মনোতে তাহার দিকে কিছাইতে বাহির
করি পরে তুমি তাহার দিকে আশ্রয়
কর। মালকম সাহেব ঐ কাণ্ডের বাক্য
মনোতে হইলেন না। পর দিবস ইংলণ্ডী
য়েরা কিছা পাইলে তাহার পুণ্ডরকালে এক
শত ইংলণ্ডীয় যোদ্ধা চৌকি রহিল।
এবং বিপক্ষ সৈন্যেরা পুণ্ডরকাল আপ
নই অস্ত লইয়া কিছাইতে বাহির হইল
এবং পুণ্ডরকালে লক্ষ্মীয়া ইংলণ্ডীয় সৈ
ন্যেরদের সম্মুখে আপনই অস্ত ও মস্ত্র
রাখিল। তাহারদের মাঝি যাহারা
মিজিয়ার চাকর তাহার দিকে মিছ
য়ার হস্ত সমর্পণ করা যাউবে এবং
যাহারা আরব দেশীয় তাহার দিকে
সৌর্য্যে লইয়া পরে আইতারা
আরবদেশে পাঠাইলেন।

পূর্বে মালকম লোকের আন ছিল যে
লাগপুর রাজা শ্রীযুত আপা সাহেব
ঐ কিছাতে লক্ষ্মীয়া আসেন এখন দেখা
গেল যে তিনি কখনও দেখানেন ছিলেন
না। হিন্দুদের মাঝি এখন কিছা
আর নাই যে আপা সাহেবকে আশ্রয়
দেয়। অনুমান হয় যে তিনি কোন
স্থানে গন্ত বোধে কলকাতা করিতে
ছেন।

কলকাতা

এই সমাচারে শ্রীযুতের নিকটে সমা
চার আনিয়াছে যে কলকাতা এক মহা
রাজা ইংলণ্ডীয়দের অধিকারে আসি
য়াছে সোমবার পুণ্ডরকালে ইংলণ্ডীয়
সেনাপতি আশ্রয় করিয়াছেন এবং
তথাকার রাজা ইংলণ্ডীয়ের বশীভূত
হইয়াছে।

এখন ইংলণ্ডীয়দের পরামর্শ এই তা

সমাচার দর্পণ

আশুর গতি

গত 'সম্ভার' সমাচার দর্পণে লিখা
গিয়াছিল যে আশুর গতি ইংলণ্ডীয়ের
দের অধিকারে আসিলে এই বিষয়ে অম
রা মিথ্যাবাদী হই নাই।

৯ এপ্রিল তারিখে ঐ আশুর গতি ও
পর ইংলণ্ডীয় অরণ্যতাকা গুণ্ডিয়মান
হইয়াছে। ইংলণ্ডীয়দের আশুর
গতি অধিকার করিবার দুই দিন পূর্বে ঐ গ
তে কিছাদির ঐযুত মর তল মালকম সাহে
বের পাঁচবিনত হইল। পরে মালকম সা
হেব তাহাকে কহিলেন যে আর কোন
পথ নাই কলা পুণ্ডরকালে জয় ঘণ্টাপাঠ
তোমাকে মেঘাদ দেওয়া গেল ইহার
যদি আশুর িত আমার হস্ত সমর্পণ
কর নতুবা তোমার রহা হইবে না। পর
দিন পুণ্ডরকালে জয় ঘণ্টায় ইংলণ্ডীয়
রে যুদ্ধ সরণীয় তর্জুই প্রস্তুত হইল
কিন্তু মাত ঘড়ীর সময়ে ইংলণ্ডীয় সেনা
পতি অত্যাচর বাদ করিতে আঁজা করিলেন
সেই কালে ইংলণ্ডীয়দের অরণ্যতাকা
সূর্য্য রথপতাকা হস্ত প্রকাশ্য নাহিতে লাগ
ল। এই অঘোনিয় কিছা লইবার সম
য়ে ইংলণ্ডীয়দের এক জন সেনাপতি
ও পাঁচ জন সিআইম্যান মরিয়াছে।

সমাচার দর্পণ

রক্ত বর্ষে যেমন বহু ভেদে মিলে নুতন হইল
হিন্দুমানের মধ্যে মত বড় কিল্লা জিল
সে মকল ইংল্যান্ডেরদের তবীন হই
গ্লাজে এবং রাফস দ্বাভি নিতুরিয়া
ওটুর হইয়াছে এবং পুত রাফসের
মেশ লক্সা হিন্ড ও নিবিত্ত হইয়াছে ও
মহারাষ্ট্রেরদের পরাক্রম ভগ্ন হইয়াছে
এবং মুসলমানেরদের পুণ্ডুর্ভাব পুনর্বার
স্থলনও হইবে এমত ও বুঝা যায় না। এই
কোন এতদ্দেশ্য নবিত্ত শান্তি হইয়াছে এ
খন ইংল্যান্ডেরদের কেহল এই চেষ্টা
যে যেজন বার্লিন লোকেরা ইংল্যান্ডের
দের আশ্রয়ে পরম সুখে কাল ক্ষেপ করি
তেছে সেই জন তাহারদের অন্য অধি
কৃত দেশে লোকেরা সুখে থাকে।

তদুদ্য।

আমরা পুর্বে লিখিয়াছি যে জয়পুরের
পাঠন রাজা মরিলে তাহার ওজীর আপন
হাতে রাজ্য রাখিবার কারণে সাত বৎ
সরের এক বালককে সিংহাসনে বসাই
য়াছে। এই নিমিত্ত সেখানে অনেক
বিবাদ হইতেছে অতএব সে বিবাদ ভঙ্গ
নার্থে শ্রীযুত মর বেদির আত্মপৌত্রী মা
হেব সেখানে গিয়াছেন।

এলাঙা।

কলিকাতায় ও আশপাশে ও মাদ্রাস
রাজ ও বেঙ্গাইতে ও লক্সাতে এলাঙা
পুণ্ডুর্ভাব পুনর্বার হইয়াছে তাহাতে ইং
ল্যান্ডেরদের অনেক মরিতেছে।

চতক।

মোং বারইসের তথাকার তমিয়ার
শ্রীযুত রাজবহুভরায় চৌধুরীর গাজনে
মহাবিধুর সংস্কারের দিনে এক চতক

গাজে যোন জন লোক এক কালে ঘুরি
য়াছে।

মুদ্র।

শ্রীযুত মাকিগ্রি সাহেব গবর্নমেন্টের
সেক্রেটারি ইন্সতার দিয়াছেন যে বিশা
পুলের পর যে ব্যক্তির হাট শতকরা
জয় টাকা কোম্পানির কাগজ থাকিলে
সে আপন ইংল্যান্ডেরে ঐ মকল নোটি
কিয়া কাগজ কোম্পানির তেজগতি ঘরে
লইয়া গিয়া সেইখানে তাহার বদলে
শতকরা পাঁচ টাকা মুদ্রের কাগজ লই
তে পারিলে।

আহাজ আমদানী।

এই সপ্তাহে তিন আহাজ ইংল্যান্ড হই
তে আসিয়াছে তাহার মধ্যে এক আহাজ
৩০ দিনের মধ্যে ইংল্যান্ডে আসিয়াছে তাহাতে
যে সমাচার আসিয়াছে তাহা অসম্মান
সুশাসন হয় নাই।

গরিমান্যার।

গরিমান্যার গুণহীন পণ্ডিত লোকেদের
গুণকার্যে এক ঘর করিবার গুণশ্রম হই
য়াছে তাহাতে ব্যয় অনুরূপ বিশ হা
আর টাকা হইবেক সেই কারণে লোকে
টাকার চান্দা করিয়াছে তাহাতে পণ্ড
হাজার টাকা হইয়াছে। এবং পণ্ডিত
লোকেরদের ইতস্ততে ভ্রমণের কারণ
সে ঘর হাতি ও ঘোড়া ও পাশকী পুজি
পুস্তক থাকিলে।

নুতন পুকার লোক।

যে আহাজ ওস্তর কেন্দ্র দর্শনার্থ গিয়া
ছিল সে আহাজের লোকেরা এক নুতন
পুকার লোক দেখিয়া আসিয়াছে তাহার
দের এই বিবরণ এখন শুনা গেল।

তাহারা এখন এই আহাজের লোকে
দিগকে লুণ্ঠন দেখিল তখন তাহার
কহিল যে ইহার মাংসভাজী পক্ষী শুধু
হইতে গুড়িয়া আসিয়াছে এবং তাহা
রা আহাজে আসিয়া অতিশয় চমৎকৃত
হইল ও আতঙ্কে আহাজের মানুষ
জতাইয়া বিরল এবং ভয়ে নানাপ্রকার
শরীরের আকার করিল ও ইংল্যান্ডের
দিগকে দেবতা জান করিয়া তাহারদের
পায়ে পড়িয়া বারং পুণ্য করিতে লাগিল
এবং আহাজ দেখিয়া অতিরিক্ত জান
করিয়া ওড়ুয়াই হামিতে লাগিল। আ
হাজের লোকেরা আরো দেখিল তাহার
দের মধ্যে কেহ কুকুরের গাঙিতে গুড়িয়া
থিড়িতেছে। কেহ হাড়ের অন্ধকার
ঝিমিনামে এক মহামাংস মাড়িতেছে।

বিদলুর নবাবের ওয়াল।

বিদলুর শহরের নবাবের ওয়াল মা
হেব গোলামদীন আপন মুলারের কোন
কম্মে ইংল্যান্ডে ঘাইতেছে তাহার সমাচার
পাওয়া গেল যে সে মিসর দেশদিয়া
মুল্ল দেশে পর্যটন করিতে সে যে কম্মে ঘাই
তেছে তাহার প্রকাশ হয় নাই সে অতি
ব্যয় ঐক্য পুর্ক ঘাইতেছে। একত্রিশ
বৎসর হইল এই দেশেই হইতে কোন ওয়াল
ইংল্যান্ডে যায় নাই ইহার পুর্বে টিপু সুল
তানের এক ওয়াল মুল্ল দেশে গিয়াছিল।

বালাদার ইংল্যান্ডেরদের আসিবার কথা।

অনুমান বন ১৮৩০ সালে ইংল্যান্ডের কোম্পা
নির চাকররা আসিয়া মোং হুগলিতে এক
দুখা করিয়া সে বৎসরে নানা পুকার বুঝ কল
করে ও কমে কোম্পানির বাবিশ একত বাবিশ
ল যে তাহার ১৮৩১ সালে উনিশ বছর টাকার
বুঝ জয় করিল। পুর্বে বালাদার বাবিশ

সমাচার দর্পণ।

বৈষ্ণব দ্বীপ মাধবের অতপাজী ছিল এই নর
বাণীয়ার বাসিকের দ্বীপ তাহাইতে পৃথক হ
ইরা পৃথক এক নর হইল। কিন্তু ইহার পর
একদশবার রাজকীর লোকেরের দ্বারা বাসিক
ব্রহ্মহত্য হইতে লাগিল যেহেতুক কোল্লানির
বক্স দ্বীপ ও ওয়াং বেথিরা একদশবার রাজার
বের লোক অছিল এবং মধ্যে অনেক টাকা
চাহিতে লাগিল তাহা যখন কোল্লানি না দিলেন
তখন তাহার এই মালাগা দেশের বাসিক্য ন
হইল বন্ধ করিল। এই কালে হুগলিতে ই-প্রীতির
কৌশিল বিবেচনা করিলেন যে আশানারদের
সম্বন্ধি রজা করিবার উপযুক্ত স্থান হুগলি নহে
এই নিমিত্তে হুগলির স্থানকে কলিকাতার নি
কটে হোটেলিকি নামে এক ক্ষুদ্র গ্রামে গিয়া দ্বীপী
করিয়া বসতি করিতে লাগিলেন পরে এখানকার
নবাব সাহেবের নিকটে বরখাস্ত করিলেন যে
হোটেলিকি গ্রামে আশানারদের কারণ ক্ষুদ্র তিন্দু
করেন ও সেই স্থানের অস্থানত আশানারদের অ
ধীন থাকে। তাহাতে নবাব সাহেব সম্মত হই
লেন না। কিন্তু এই সময়ে এখানকার রাজার
নবাব সাহেবের পুত্রকল্প উৎসোগ করিল তখন
নবাব সাহেব রাজার থাকেন তিনি সৈন্য ১০
গুহ করিতে রাজার সৈন্যমহল ও দুর্গেবাধা
এ-হুগলি ও তাহার মধ্যস্থিত বেশ অধিকার
করিতে লাগিল। এই সময়ে ই-প্রীতিরো ও
ও-সম্প্রেরো ও করাসিলেরো নবাব সাহেবের প
জ হইলেন। তাহাতে নবাব সাহেব তাহাদের
পূর্ব বরখাস্ত মঞ্জুর করিলেন ও তাহারদের আপ
নক স্থানে তিন্দু করিতে আজ্ঞা দিলেন। এই উ
পন্থকের সম্মানর মহারাজাবাদী দ্বীপী পঞ্চস্থিলে
আওরঙ্গজেব আলমগীর বাহাদুর-বাহাদুর বি
বাহবজ্ঞানার্থে আপন পৌত্র আকম শাহকে এখা
নে পাঠাইলেন। তিনি ও এখানে পড়াহিরা ই-
প্রীতিরদের পুত্র সেই রূপ আজ্ঞা দিলেন ও

হোটেলিকি ও মোবিলপুর ও কলিকাতা এই
তিন গ্রাম ই-প্রীতিরেরিগায়ে দিলেন পরে সন
১৮-নামে ই-প্রীতিরেরো এক তিন্দু গাঁথিলেন ও
তাহার নাম কোট উপায় রাখিলেন যেহেতুক
তৎকালে ই-প্রীতির বাহাদুরের নাম উপায়
ছিল। ইহার পর কোল্লানি আপন সৈন্য বিতণ
করিলেন এবং বালেশ্বর ও কালীমবাজার ও
টাকাতে পুনর্বর হুগলি বসাইলেন।

ইহার শেষ আশাখী সম্বন্ধে লিখা হইবে।

ইতিহাস।

এক দেশে চারি বহু ছিল তাহারদের পরস্পর
অভিযার পুত্রি ছিল। কোন সময়ে ঐ চারি
জন স্বদেশে ত্যাগ করিয়া বেশ ভূদপার্শ্বে ভনয়
বেশে গেল। সকলেই আপন স্বদেশে কিছু ধন
লাইল তাহারদের মধ্যে এক জন রাজপুত্র তাহা
র স্বদেশে এত মানিত্য হিন তাহা ঐ চারি জনের
মধ্যেই এক জন হরণ করিল। রাজপুত্র বিবে
চনা করিলেন যে আমার নকী ভিন্ন জন আমার
অতিমাখার এত। মানিক্যের কারণ পুত্রি
তরু কয় অকর্তব্য অতএব এমত কোন মজী
থাকে যে তাহার মন্ত্রণাতে আমার মানিক্য
আমি পাই কিন্তু যে হরণ করিয়াছে তাহাকে
মানিতে আমাদের মধ্যে কেহই না পারে
এমত হইলে বড় ভাগ্য হয়। পরে ঐ চারি
জন ভদ্রদেশের রাজার নিকটে গিয়া করিলেন যে
আমার এক মানিক্য ছিল তাহা এই চারি
জনের মধ্যেই এক জন হরণ করিয়াছেন কিন্তু
আমার বাসনা এই যে আমার মানিক্য আমি
পাই হরণকর্তার নাম পুকাশ না হয়। রাজা
তদ্বিয়া করিলেন ইহা। কি পুকারে হইতে পারে
ঐ রাজার এক বুদ্ধিমত্তী কন্যা তাহা তদ্বিয়া
ঐ চারি জনকে করিলেন যে তোমাদের যে
মন অতিপুণ্য সে রূপই মানিক্য পাইবা।

পরে রাজকন্যা নির্ভয়ে থাকিরা পুণ্যম রাজ
পুত্রকে ডাকিয়া করিলেন যে যে রাজপুত্র যে
রাজিতে আমার বিবাহ হইল সেই রাজির
মধ্যে আরি চারি কোশ পঞ্চ গমন করিয়া এবং
এক পুণ্যম করিয়া আপন গৃহে আইলাম
এবং আমার এই বয়স ও এই রূপ ও শরীরে
এই অনুভবর ভূগাপ আমার কোন বিপদ হই
ল না। ইহা শুনিয়া রাজপুত্র উত্তর করিলেন
যে অন্য বিপদ যে হউক তোমার স্বামী তো
মাকে এত রাজ্যে কি নাহিলে ত্যাগ করিল। রাম
কন্যা এই কথায় দ্বারা রাজপুত্রকে নিজাত
জীবন জানিয়া তাহাকে বিহার করিল। পরে
আর এক জনকে ডাকিয়া সেই রূপ অনুভবর
বলিল। তাহাতে সে উত্তর করিল যে অন্য
বিপদ যে হউক কিন্তু ভূমি একাকিনী পদম
সুন্দরী হইরা ভরণ পাইবা না। ইহাতে রাজকন্যা
তাহাকে কামুক জানিয়া তাহাকে বিহার ক
রিল। পরে অন্যকে ডাকিয়া সেইরূপ আশ
বিবরণ করিল। সে উত্তর করিল যে তোমার
অন্য বিপদ না হউক তোমার এ কোমল
মাংস ব্রহ্মদুশি তেন ধাইল না। রাজকন্যা
তাহাকে মাংসাশী জানিয়া তাহাকে বিহার করিল।
পরে কোতোয়ালের পুত্রকে ডাকিয়া সেই
রূপ নিজ বিবরণ করিল সে উত্তর করিল যে
তোমার আর আপন যে হউক কিন্তু তোমার
শরীরে এত স্বর্ণময় ও মনিস্বর অতদ্বয় থাকিতে
চোর তোমাকে কেন ত্যাগ করিল। ইহাতে
রাজকন্যা তাহাকে খনগোষ্ঠি জানিয়া করিলেন
যে মানিক্য ভূমিই নইরাহ অতএব সেও আরি
রাজপুত্রকে সেই। ইহাতে কোতোয়ালের পুত্র
লজিত হইরা মানিক্য দিল। রাজকন্যা।
ঐ মানিক্য রাজপুত্রকে দিলেন। মানিক্য
কাহাইতে বাহির হইল তাহা পুকাশ হ
ইল না।

এই সমাচার দর্পণ পুরীমপুরের হাপাখানাতে পুত্রসম্বন্ধে লিখিবারে হাপা হয়। যাহার লজনের আবশ্যক হয় তিনি পুরীমপুরের হাপাখানাতে
আপন নাম পাঠাইলে সম্বন্ধে কাগজ তাঁহার নিকটে পাঠান হইবেক তাহার দৃশ্য মানে এক টাকা। - যিনি বাসক করিয়াছেন যদি তাহার নিকটে
সমাচার দর্পণ না পঠিবে তবে তিনি পুরীমপুরের হাপাখানাতে লম্বাচাষ তাঁহার নিকটে পাঠান হইবেক।

সমাচার দর্পণ

১৪ নং-খা

শনিবার।

৮ মে মন ৪৮১৯। ১৭ বৈশাখ মন ১২১০।

দর্পণে মুখ্য সৌকর্য্যমির কার্যবিবরণী। বৃত্তান্তনিহ জ্ঞানত্ব সমাচারমা দর্পণে।।

কোম্পানির কার্ণি।

কোম্পানির শতকরা জয় চাঁকার সুদের
কর্ণি। কয় করিতে হইলে শতকরা আদ
চাঁকা তিনকোশী। বিসয় করিতে হইলে

মস্তাচের পঞ্জিকা।

| ৮ | ৯ | ১০ | ১১ | ১২ | ১৩ | ১৪ | ১৫ | ১৬ | ১৭ | ১৮ | ১৯ | ২০ | ২১ | ২২ | ২৩ | ২৪ | ২৫ | ২৬ | ২৭ | ২৮ | ২৯ | ৩০ | ৩১ |
|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| ৮ | ৯ | ১০ | ১১ | ১২ | ১৩ | ১৪ | ১৫ | ১৬ | ১৭ | ১৮ | ১৯ | ২০ | ২১ | ২২ | ২৩ | ২৪ | ২৫ | ২৬ | ২৭ | ২৮ | ২৯ | ৩০ | ৩১ |

ইস্তাহার।

খবর দেওয়া যাইতেছে যে বাটীতে এ
লাগাইব নিমক ও আখীয়ের বোর্ডের
মাহেবান বৈঠক করিতেন সেই বাটীতে
পরমিটে ও নিমক ও আখীয়ের বোর্ডের
মাহেবান বৈঠক করিবেন। রবিবার এবং
পঞ্চ দিন ব্যতিরেকে মাহেবান বোর্ডমহ
মুখ পুতাহ ইস্তক দুই পুর লাগাইব দুই
পুর তিন ঘণ্টা। পরমিটের কর্ম নিকাশ
করণ বৈঠক করিবেন। ইতি।

পরমিটে ও নিমক ও আখীয়ের বোর্ডের
দস্তুরখাল। তারিখ ১৫ মাহ মে মন ৪৮১৯

কমরমাল বাকি।

খবর দেওয়া যাইতেছে। মন হালের
১ মে তারিখ হইতে যে- মাফিকুম কোম্পা
নি মাহেবানর বাটীতে কমরমাল বাকি

লায়ে এক বাকি হররকমের সররাফি কর্ম
করিবার নিমিত্তে খোলা যাইবেক জহার
মানিক এইমানে যে- বখরাহার হইতে
জেন তাঁহারদিগের নাম মুতাহে নিখা
লকিতের যে- জোমেজ বারেরো ও
তারার মুখপুত্র ও যে- মাফিকুম কো
ম্পানি ও জন মেলবিল এবং বাব গোলা
মোহন চাকুরের জোম মুখ খয়ত বাব
মুখাকুয়ার চাকুর।

যে- মাফিকুম কোম্পানি মাহেবান ১
কমরমাল বাকির সরবরাহকার ও কর্ম
কর্তা হইলেন আতএব ১ বাকি ম-ফাক
কার্যের যে কোন প্রার্থনা ১ গো- মাফি
কুম কোম্পানির নিচটে রাখিল করিবেন।

প্রমিসরি নোট অল দিয়ান আর্থ-
বেমিআদী দস্তুর মত কমরমাল বাকি
হইতে দেওয়া যাইবেক নোটের রকম
ফিকত। ৫০০০। ৪০০০। ৩০০০। ২০০০।
১০০০। ৮০০। ৬০০। ৪০০। ২০০। ১০০।
৫০। ৩০। ১০। ৫। ২। ১।
চাঁকার হইবেক এই মকল নোট এই
মকল যে- জোমেজ বারেরো মাহেব
আখা জন উইল্যাম ফুলডন মাহেব দস্ত
খত করিবেন এবং খয়ত বাব মুখাকুয়ার
চাকুর মাআদী বলিয়া দস্তখত করিবেন।
ইতি।

কলিকাতা মন ১৮১৯ মাল তা- ১৬ এপ্রিল।

খবর দীহারীই বি মুই মাফিকুম মলিছায়ে
মিলকটে, ল খবরদীই ধরেন ইক কমরমাল নিম
বাকী হারী ধরেন ধরনবহ ধরদী বাকী
মুদববহ দীয়া বিজদিল ওসকি মাজিল জে
দকস বি ধরদী ধর দীয়া ধর দীয়া

বা মন মুদববহ দীয়া মনদীই মিলকটে
বিজ দীয়া ইক কমরমাল মিলকটে
ইক ধরদী মলিছায়ে ধর দীয়া
মলিছায়ে মলিছায়ে মলিছায়ে

মিলকটে ধরদী ধরদী ধরদী
মিলকটে ধরদী ধরদী ধরদী
মিলকটে ধরদী ধরদী ধরদী
মিলকটে ধরদী ধরদী ধরদী

ইক মিলকটে ধরদী ধরদী
মিলকটে ধরদী ধরদী ধরদী
মিলকটে ধরদী ধরদী ধরদী
মিলকটে ধরদী ধরদী ধরদী

আমি বিজদিল ইস্তাহার।

আমি নোটের আখী মলিছায়ে ধরদী ধরদী

মলিছায়ে ধরদী ধরদী ধরদী

মলিছায়ে ধরদী ধরদী ধরদী

মলিছায়ে ধরদী ধরদী ধরদী

মলিছায়ে ধরদী ধরদী ধরদী

মলিছায়ে ধরদী ধরদী ধরদী

মলিছায়ে ধরদী ধরদী ধরদী

মলিছায়ে ধরদী ধরদী ধরদী

মলিছায়ে ধরদী ধরদী ধরদী

মলিছায়ে ধরদী ধরদী ধরদী

মলিছায়ে ধরদী ধরদী ধরদী

মলিছায়ে ধরদী ধরদী ধরদী

মলিছায়ে ধরদী ধরদী ধরদী

সমাচার দর্পণ।

টাকা ও বারিপুরে বৃহস্পতিবার ১০ মেই সন্ ১৮৮১ খ্রীঃ ১৫ ইয়ারে সন্ ১৫ ১৬ বাৎ কামেরকি কামাচিতে।

বাংলি ও ময়মনসিংহ বৃহস্পতিবার ১০ মেই সন্ ১৮৮১ খ্রীঃ ১৫ ইয়ারে সন্ ১৫ ১৬ বাৎ কামেরকি কামাচিতে।
ইতি তারিখ ১০ আশ্বিনে সন্ ১৮৮১ খ্রীঃ বোরহিনবসু বসুতে।

অনেক লোকের জমিদারি কামাচিতে রোজ ও তারিখ
সকল মজির নীচের জমিদারি মুকাম খালে নিম্নোক্ত বিকর
হইবেক জমা ও জমিদারি কামাচিতে বোরহিনবসু লোকটারি
মজিরখানার জমা কামাচিতে কামেরকি কামাচিতে মাসুদ
হইবেক।

মজিরখানার জমিদারি কামাচিতে

বাহারখান বৃহস্পতিবার ১০ মেই সন্ ১৮৮১ খ্রীঃ ১৫ ইয়ারে

সন্ ১৫ ১৬ বাৎ বোরহিনবসু লোকটারি মজিরখানার।

বোরহিনবসু বৃহস্পতিবার ১০ জুন সন্ ১৮৮১ খ্রীঃ ১৫ ইয়ারে

সন্ ১৫ ১৬ বাৎ বোরহিনবসু লোকটারি মজিরখানার।

বাহারখান বৃহস্পতিবার ১০ জুন সন্ ১৮৮১ খ্রীঃ ১৫ ইয়ারে

সন্ ১৫ ১৬ বাৎ কামেরকি কামাচিতে।

বাংলি ও ময়মনসিংহ ও ময়মনসিংহ বৃহস্পতিবার ১০ জুন

সন্ ১৮ ১৯ খ্রীঃ ১৫ ইয়ারে সন্ ১৫ ১৬ বাৎ কামেরকি কামাচিতে।

মজিরখান বৃহস্পতিবার ১০ মেই সন্ ১৮৮১ খ্রীঃ ১৫ ইয়ারে সন্

১৫ ১৬ বাৎ কামেরকি কামাচিতে।

ইতি তারিখ ১০ আশ্বিনে সন্ ১৮৮১ বোরহিনবসু বসুতে।

অনেক লোকের জমিদারি কামাচিতে রোজ ও তারিখ
সকল মজির জমিদারি মুকাম খালে নিম্নোক্ত বিকর
হইবেক জমা ও জমিদারি কামাচিতে বোরহিনবসু লোকটারি
মজিরখানার জমা কামাচিতে কামেরকি কামাচিতে মাসুদ
হইবেক।

মজিরখানার জমিদারি কামাচিতে

বাহারখান বৃহস্পতিবার সন্ ১৮৮১ খ্রীঃ ১৫ ইয়ারে

১০ মেই বোরহিনবসু লোকটারি মজিরখানার।

মজিরখান বৃহস্পতিবার ১০ জুন সন্ ১৮৮১ খ্রীঃ ১৫ ইয়ারে

সন্ ১৫ ১৬ বাৎ কামেরকি কামাচিতে।

বাংলি ও ময়মনসিংহ ও ময়মনসিংহ বৃহস্পতি

বার ১০ জুন ১৮৮১ খ্রীঃ ১৫ ইয়ারে সন্ ১৫ ১৬ বাৎ কামেরকি কামাচিতে।

মজিরখান বৃহস্পতিবার ১০ জুন সন্ ১৮৮১ খ্রীঃ ১৫ ইয়ারে সন্

১৫ ১৬ বাৎ কামেরকি কামাচিতে।

সমাচার দর্পণ।

হস্তকলম।

গড় মস্তকে মোঃ কলিকাতায় আসে।

ক্রান্তি কৌশলানির কুণ্ডিতে সেই কুণ্ডির চাকর
কোন ব্যক্তি জন্মিত মাসমল মোহরদের
মহারি মত মহি করিয়া পাঁচ শত টাকার
এক মুখ্য বাখিল করিয়া টাক লইয়াছে
পরে সে বীরা পড়িয়াছে। কলিকাতার
মধ্যে অনেক লোক এই পুকার করিতে
হইলেন মাসি বিদ্যানাগরগত হইয়াছে।

মরন।

৪ মে ১৩ বৈশাখ মঙ্গলবার রাত্রে মোঃ
ঈরামপুরের কামদার শীল নামে এক
ব্যক্তির আশ্রয় মৃত্যু হইয়াছে। ঐ রাত্রে
এক জন ভাগ্যবান লোকের নিষ্ঠে এমন
কি একজন বসিয়া গেল ও বান্দা ও ইফালা
এগার ঘণ্টা রাত্রি পর্যন্ত করিল তাহার
পরে ঐ ভাগ্যবান ব্যক্তি বাটার ভিতরে
গিয়া তাহারি করিয়া শয়ন করিল আ
রু মকলে আশ্রয় হানে গেল কিন্তু কহ
পুনর্মদশীল ঐ নাচের ঘরেই তাহিয়া
সেই দিয়া বসিয়া রহিল আশ্রয় হানে
গেল না। পরদিন বুধবারে দুইটাকালে
আশ্রয় মকলে দেখিল যে সে বসিয়াই
আছে। তাহাতে তিন চারিবার তাহাকে
তাকিল কিন্তু তত্তর পাইল না। পরে গায়ে
হাত দিয়া দেখিল যে সে মরিয়াছে। ইহা
তে কেহ জনমান কর যে জাতিশয়
গণ্য পালে খান রোই হইয়া মরিয়াছে।
এই জন আশ্রয় বুদ্ধি অনুমানের তলকে
অনেক বিচর করিল কিন্তু প্রকৃত মি
কিছু হয় নাই।

বাজেজমী।

বাজে জমির বিষয়ে অনেক পুঙ্খলা
হইতেছে ইহা আমরা শুনিতেছি যাহার
শনকে এক দ্বিবা নিমিত্ত আছে তাহার
আট দশ দ্বিবা অধিকার করিয়া ভোগ

করিতেছে অন্য হানে পুঙ্খলা যে জমির
রাজ্য জন্মিত কৌশলানি বাহাদুরের
নিষ্ঠে বাখিল হইত তাহা এখন বুদ্ধি
ও দেবত ও মনুল ও মকরান ও চোরাণী
ইত্যাদি বাবেতে কৌশলানি বাহাদুরের সে
রাজ্য লুল হইতেছে যেহেতু গায়ে
মতল পুঙ্খলাদের সহিত সাহিত্য করিয়া
মাসিক বুদ্ধিবাধি বসিয়া ও মিথ্যা সাক্ষি
দ্বারা মাদুর করিয়া দখল করে। বাজার
মিথ্যা সাক্ষির অভাব নাহি কিন্তু তাহার
দায় হানে বিদ্যে নানা পুকার কোন
হানে টাকায় মিথ্যা সাক্ষি দশ জন ও
কোন হানে টাকায় খোল জন। এই
বিষয়ে সাক্ষিদের লাভ আছে ও কুম্বেরা
অল্প মূল্যে ঐ কুম্ব পাণ ইহাতে কেবল
কৌশলানির হানি হয়।

আমরা শুনিতেছি যে শ্রীশ্রীমত আজা
করিয়াছেন যে মোহর রাজারা কোন
জমী দিয়াছেন ও কোন জমী বা পুঙ্খ
লাতে দেওয়া গিয়াছে ইহা তিনিবার
কারণ শ্রীশ্রীমত মনুল দেখিতে হইবেক।
পুঙ্খলা পরমিষ্ট পুঙ্খলা ও নিমক
ও আশ্রয় এই তিন বিষয় যেকোনো
আশ্রয় আশ্রয়াদস্তরের অন্তর্গত জিল
এখন শ্রীশ্রীমত আজা করিয়াছেন যে ঐ
তিন কর্ম্ম আশ্রয়াদস্তর হইতে পুঙ্খ হই
য়া আর এক স্বতন্ত্র দস্তর হইবেক তাহার
কারণ এই যে আশ্রয়াদস্তরের সাহেবের
দের ওনার যে ভারি ও বড় কর্ম্ম পড়িবে
তাঁহা তাহার নিমিত্তকরণ করিতে পা
রেন। এই নিমিত্ত মোঃ কলিকাতায় পর
মিষ্ট পুঙ্খলা ও নিমক ও আশ্রয়ের কারণ
নতুন এক দস্তরখানা হইয়াছে। ঐ তিন
কর্ম্মের যাবদ্বিষয় ঐ দস্তরখানাতে হই
বেক এবং ঐ তিন বিষয়ে যে নালিশপুঙ্খ
করিতে হয় তাহা সেই নতুন দস্তর
মাণিক মোহরদের নিষ্ঠে করিবেক।

সমাচার দর্পণ।

রাজকর্মে নিয়োজিত।

২০ এপ্রিল।

শ্রীযুত স্যামুএল নিউলন সাহেব পরমিট পঞ্চম্বরী ও নিমক ও আখ্যায়ের নুতন দপ্তরের পুস্তিক অধ্যক্ষ।

শ্রীযুত জে নি কার্ভিন সাহেব ঐ দপ্তরের দ্বিতীয় অধ্যক্ষ।

শ্রীযুত হেনরি মারক্স সাহেব ঐ দপ্তর লেক্সিকনি।

শ্রীযুত এইচ এম পার্ক সাহেব ঐ দপ্তর দেপুটী সেক্রেটারি প্রথম পেক্টর এবং শা লিখাতে নিমক গোলাপের ওয়ারেবকারী।

শ্রীযুত জন ক্রিস সাহেব টরিশপার গোলাপের দিগের নিমকের অধ্যক্ষ।

শ্রীযুত আর সি প্রৌদন সাহেব টরিশপার গোলাপের পশ্চিম দিগের নিমকের অধ্যক্ষ।

শ্রীযুত অনারবল মি আর্থ লিঙ্গ সাহেব আর্থারের পরমিট পঞ্চম্বরীর কালেক্টর।

৩০ এপ্রিল।

শ্রীযুত জন ফোর্টসৈথ সাহেব রক্তালি ওয়ারের অধ্যক্ষের পেক্টর।

শ্রীযুত ওয়ালডর লিসবের সাহেব বা নিত্যদপ্তরের দেপুটী সেক্রেটারি।

২১ এপ্রিল।

শ্রীযুত জি বিহারী সাহেব মুরবোদা বা বের কোর্ট আদালতের রেজিস্টার।

৩০ এপ্রিল।

শ্রীযুত দবলিও এড দিক সাহেব বদেল থানের ওডর ভাগীর বিচারকর্তা।

শ্রীযুত টি সি সিয়া সাহেব বদেল থানের দেওয়ানি আদালতের রেজিস্টার এবং বদেল থানের ওডর দেশের বিচারকর্তার পেক্টর।

শ্রীযুত অনারবল দবলিও এইচ মেলি সাহেব পশ্চিম দেশের পুলিসের অধ্যক্ষের পেক্টর।

শ্রীযুত এস এম দপ্তর সাহেব বাগী লার পুলিসের অধ্যক্ষের পেক্টর।

পূজা।

২৮ বৈশাখ ৯ মে রবিবারে বৈশাখী পূর্ণিমাতে মোক্ষ ওলাগুয়ে ওলাই চৌ তলা নামে একমানে বার্ষিক চতীপূজা হই

বেল। এবং ঐ দিনে ঐ গুয়ের তিন মন্দির বারগুয়ার তিন পূজা হইবেক।

দক্ষিণ পাড়ায় মাইমদ্বিনী পূজা ও মধ্য পাড়ায় বিদ্যাবাসিনী পূজা ও ওডর পাড়ায় গোলেশজননী পূজা।

ইহাতে ঐ তিন পাড়ার লোকেরা পরস্পর জিগীষাক্ষুণ্ড আপন পাতার পূজার ঘটা বহিতে সাধারণ্যে কেইই করু করে না ও

পুণ্ডক সমারাহ অতিশয় হয়। সিন্ধ টম্ব ও দুবল অনেক লোক ডায়মা দেখি

তে আইসে এবং বলিহাতি পুজিত হন

হইতে অনেক মোক্ষালি পমারি আসিয়া দেখানে ক্রয় বিক্রয় করে ও অনেক

ভাগ্যবান লোকেরদের সমাগম হয় এবং গান ও বাঁহা ও আর পুকার ডায়মা

অনেক হয়। দিন চারি দিন পর্যন্ত সমান লোকগণনা থাকে। অনেক

হানে বারগুয়ার পূজা হইয়া থাকে কিন্তু এইকনে ওলাগু তুল্য কোথাও হয় না।

আশীর্বাদ গড়।

আশীর্বাদ গড়ের কিস্তাদার ঘণাধরভল্লার ও যত মহারাষ্ট্র বৈদ্য ঐ গড়ে জিল

তাহারা গড় গোয়ালিয়ের আপন মুলীর শ্রীযুত মোল্লার ও সিদ্ধিয়ার মহারাষ্ট্রের

লিকটে গিয়াছে এবং যে চারি শত আর ব বৈদ্য জিল তাহার ও মোল্লার দেশে

গিয়াছে। এখন লিকট আনা গিয়াছে যে সে গড় মন্দির চৌদ্দ শত বৈদ্যের

অধিক জিল না। শ্রীযুত আশীর্বাদ সাহেবের অনুমতান আদালি কিছু হয় নাই।

শ্রীযুত লক্ষ্মণোয়ার নবাব।

শ্রীযুত নবাব সাহেব ইংল্যান্ডের মহারা নীর মৃত্যু সম্বন্ধে স্ত্রিয়া আপন আমলার

দিক্কে আতা করিয়াছেন যে মকল আ মলা শৌক বন্দ পরিশীল করিবেন।

তিন দেশীয় লোকেরদের শৌক বন্দ খেত কিন্তু ইংল্যান্ডেরদের শৌক বন্দ তাহার

বিসরীত অর্থ্য্য হাল।

মেদিনাপুর।

জগন্নাথ ক্ষেত্রে ঘাইতে গথ এক ব্যক্তি আপন স্বীকে খল করিয়াছে সেই বিষয়

নাগুর হইয়া মোক্ষ মেদিনাপুর জিলাতে তাহার জীনি হইয়াছে।

নুতন টোকা।

এই মনে যে নুতন টোকা টাকশালে প্রস্তুত হইয়াছে কলিকাতা দুই লোকে

রা সেই টোকার চতুর্দিক কিলারা ওয়া দিয়া ঘঘিয়া লইয়া পুরানা কল টোকার

মত রেষ্ঠি করে ইহাতে কেবল তাহারদের লাভ হয় ও আর মকল লোকের ক্ষতি

হয়। আমরা স্ত্রিনতেজি যে এই কারন শ্রীযুত একটা নুতন মোহরের কার

ইংল্যান্ডে পত্র পাঠাইয়াছেন।

নদীতে মীতাব।

ইংল্যান্ডে দেশে এক ব্যক্তি আলিতে চাহিলেন যে মন্দিরের শরীর অলের ওপ

রে কি পর্যন্ত ভাসে। এই নিমিত্ত তিনি আপন শরীরে অনেক কাপড় জতা

ইলেন ও মোহম-যুক্ত জুতা গায়ে দিলেন ইত্যাদি হলে আপন শরীর হইতে মাত

শের অধিক বোকা দ্রিষ্ট শরীরে করিলেন

সমাচার দর্পণ।

ওচিত হইয়া আসে গা। জানান দিলেন
হস্ত পরাই দ্বন্দ্বও করিলেন না। ইহাতে
কমতে ক্রোধিলেন না। ও তীরস্থিত আপন
আত্মীয় লোকেরদের সহিত আপন
করিতেও গত ফল চাহিলেন গত ফল
কথা কহিলেন।

ই-গ্রীষ্মাষিকারের শেষ কথা।

১৭-শালের সময়ে তাহাৎ হিন্দুস্থানীর লোকেরা
আওরঙ্গজেবের বাহাদুরের বার্তায় বৈধিয়া ভীত
হইল। পরে ১৭-শালে আওরঙ্গজেব মসি
হিন্দুস্থানে অনেক দিনপর্যন্ত এমত যুদ্ধ হইল
যে হিন্দুস্থানীর লোকেরদের দিবা রাত্রি কিরণে
গেল তাহা তাহার্য জানিতে পারিল না। পরে
আওরঙ্গজেবের পুত্র মহম্মদ বাহাদুর শাহ
সি-হাসনে বসিয়া ১৭৯১ শালে মরিলেন ও
পুত্রের যুগান্ত হইল। এই সকল উপলক্ষে
তে দিল্লীর বাহাদুরের পরাক্রমের অভিশপ্ত হানি
হইল তাহাতে প্রত্যেক পুরুষের নবাবেরদের
পরাক্রম বৃদ্ধি হইল। সে কালে বাহাদুর
নবাব জাফর খাঁ ছিল সে ই-গ্রীষ্মেরদের বা
শিকের উপরে নানাপুকার পৌরোছ্য করিতে
লাগিল। সেই পৌরোছ্য নিবারণার্থ ই-গ্রী
ষ্মেরা আপনাদের পক্ষীয় অনেক উকীল দি
লিতে পাঠাইলেন এবং তিন লক্ষ টাকা উপ
ঢাকন পাঠাইলেন। তৎকালে দিল্লীর দরবারে
বাবা অলানন্দ্য ছিল তৎপক্ষ ই-গ্রীষ্মীয় উ
কীল সেখানে অনেক দুঃখ ভোগ করিল কিন্তু
সেই সময়ের দিল্লীর বাহাদুর কর্তব্য শিরেরে পা
ঠাইল তাহাতে ই-গ্রীষ্মীয় উকীলের সহবর্তী
ই-গ্রীষ্মীয় চিকিৎসক সে পাঠা পাঠি করিল।
ইহাতে বাহাদুর অত্যন্ত সন্তুষ্ট হইয়া ই-গ্রী
ষ্মেরদের পুতি অনুসন্ধান হইলেন এবং ১৭৯১ শালে

ই-গ্রীষ্মেরদিগকে এই বিজ্ঞপ্তি আপন হস্ত
একী পরবান দিলেন যে বাহাদুরের মধ্যে
কোন্মানির একাধার যত লোক তাহারদিগ
কে কোন্মানির ইচ্ছা মতে কোন্মানির হাতে মম
নন্দ করা যাইবেক এবং আমদানির চিরন্ত
নির ও জিনিসের উপরে কোন্মানির হস্তধত ধা
কিবেক সেই সকল জিনিস হাসানি বিনা হিন্দু
স্থানের মধ্যে চলিতে পারিবেক এবং কলিক
তা চতুর্বিংশ নাইশিশ গুমপার্শ্ব ই-গ্রী
ষ্মেরা চাহিলে কিসিতে পারিবেন। এখন এক শত
দুই বৎসর হইল ই-গ্রীষ্মেরা এই পরকথা
দিল্লীর বাহাদুর হাতে পাইয়াছিলেন।

কিন্তু ই-গ্রীষ্মেরা যাহার নিকটে কলিক
তা নিকটস্থ গুম কিসিতে উন্নত হইতেন বা
জানার নবাব জাফর খাঁ ই-গ্রীষ্মেরদের বিরুদ্ধ
করাই হইয়া তাহাকে বারণ করিত এবং বেমা
নুলে দিল্লিরে বানিজ্যের অনেক পুকার ব্যা
ঘাত করিতে লাগিল। এই নবাবের মধ্যে
পর তাহার জামাত সুন্দারদৌল ও আপন স্ব
রের মত করিতে লাগিল।

১৭৯১ শালে আর্দ্রকীর্ক মহাবিজ্ঞান তাহার
বেশীর এক ব্যক্তি বাহাদুর নবাবি আপন
পরাক্রমে লইল এবং পনর বর্ষপর্যন্ত নি
স্কটকে এই বাহাদুরা দ্বন্দ্ব ভোগ করিল।

সন ১৭৯৩ শালে নবাব মহাবিজ্ঞানের ভ্রাতৃপুত্র
দিয়ারদৌলা নবাব হইল সে অভিমুখ্য ও ইন্দি
য়ের অধীন সে নবাবি পাইবামাজ ই-গ্রী
ষ্মেরদের সহিত বিরোধ আরম্ভ করিল যে দি
য়ের কারণ কেহ কহে এই যেইবৎসর রাজ
বহুত দিয়ারদৌলার নিকটে কৃতপাথ্য হইয়া
যো কলিকাতায় ই-গ্রীষ্মেরদের শরণাগত হ
ইয়াছিল। ই-গ্রীষ্মেরাও তাহাকে আশুর দি
য়া রাখিয়াছিলেন। কিন্তু পুত্র কারণ এই ই-
গ্রীষ্মেরদের বানিজ্যের অধিক লাভ দেখিয়া

এই নবাবের অধিক গোত হইয়াছিল। এই সম
য়ে ই-গ্রীষ্মেরা কলিকাতার চতুর্দিকে একটা
জলময় গড় করিতে উদ্যত হইলেন। ইহা তরি
য়া নবাব দিয়ারদৌলা তাহা বারণ করিয়া পা
ঠাইলেন। তাহাতে ই-গ্রীষ্মেরা নবাবের
শাসনকারে জানাইলেন যে ইউরোপে করা
শিকেরদের সহিত আমদানের যুদ্ধ হইতেই
অতএব এখানেও কিছু পুস্ত রাখা কর্তব্য।
এই রূপ কথাতে নবাব অত্যন্ত আতঙ্কিত হই
য়া মো কামদারদের ই-গ্রীষ্মেরদের কুদ্র
লষ্ট করিয়া কালতাপস্য় আত্মন। তখন
ই-গ্রীষ্মেরদের ইন্দয় অতঃস্থ ছিল এতদ
নবাব কলিকাতায় অনিয়া ই-গ্রীষ্মেরদের স
হিত তিরমিরপার্শ্ব্যে যুদ্ধ করিল। শেষে নবাব
কিন্তু লইল এবং এক শত হতচলি জন ই-গ্রী
ষ্মেরদিগকে আত্মে গিলে আশীর হাত এক
কুঠিতে গুণিয়া কালে রাখিল। পর দিন পুাত
কালে বেলা গেল তাহারদের মধ্যে ২৩ জন
জীবৎ আছে আর অবশিষ্ট সকলে মরিয়াছে।

ইতরসর লার্ড ক্লীব লাহেব মো মাধ
রাজহইতে আসিয়া পঠিল ইহার পর নান
পুকার উদ্যোগ করিয়া ও আমীরচন্দ্র নামে এক
জন ভাগ্যবান লোকের দ্বারা মীরজাকালী খাঁর
সহিত বন্দোবস্ত করিয়া মো পলাপিতে যুদ্ধ
করিয়া দিয়ারদৌলাকে মারিয়া আপনাদা সু
স্থির হইয়া মীরজাকালীকে নবাব করিলেন।
মীরজাকালী নবাবি পাইলে তিন মাস পরে ই-গ্রী
ষ্মেরদিগকে আপনাদা স্বীকৃত টাকা দিতে
বিলম্ব করিতে লাগিল কিন্তু লার্ড ক্লীব লাহেব
নবাবের সহিত কঠোর বন্দোবস্ত করিলেন তাহা
তে নবাব জাফর খাঁ অত্যন্তে রুষ্ট হইলেন
তাহাতে ই-গ্রীষ্মেরদের পক্ষপাতী মহাজ
লোকেরদের উপরে পৌরাণীক করিতে লাগিল।

শেষ কথা আপাদি সম্বন্ধে লিখা যাবে।

এই সমাচার দর্পণ শুরামপুরের হাসানানাতে পুতিসজ্জাৎ পরিবারে হাসা হয়। যাহার সজ্জনে আবশ্যক হয় তিনি শুরামপুরের হাসানানাতে
আপন নাম পাঠাইলে সজ্জাৎ কাগজ তাঁহার নিকটে পাঠান যাইবেক তাহার মূল্য মাসে এক টাকা। যিনি বাহাদুর করিগাহেন যদি তাহার নিকটে
সমাচার দর্পণ না পঠিবে তবে তিনি শুরামপুরের হাসানানাতে সমাচার দিবারাম তাঁহার নিকটে পাঠান যাইবেক।

সমাচার দর্পণ

৫৭ সংখ্যা

শনিবার।

৪৫ মে সন ১৮৭৯। ও জ্যৈষ্ঠ মন ১২১০।

দর্পণে মুখ্য সৌন্দর্য্যমির কার্যবিবরণীঃ। বৃত্তান্তাদিহ আনন্দ সমাচারস্য দর্পণে॥

কোম্পানির কাণিজ।

কোম্পানির শতকরা অর্থ টাকার সুদে
কাণিজ করা করিতে হইবে শতকরা বার
আব। ত্রিঃকোষ। বিঃয় করিতে হইলে
শতকরা এক টাকা ত্রিঃকোষ।

মস্তাহের পঞ্জিকা।

| ম | শনিবার | ০ | ১৮৭৯ |
|----|--------|----|------|
| ১ | ১ | ১ | ১ |
| ২ | ২ | ২ | ২ |
| ৩ | ৩ | ৩ | ৩ |
| ৪ | ৪ | ৪ | ৪ |
| ৫ | ৫ | ৫ | ৫ |
| ৬ | ৬ | ৬ | ৬ |
| ৭ | ৭ | ৭ | ৭ |
| ৮ | ৮ | ৮ | ৮ |
| ৯ | ৯ | ৯ | ৯ |
| ১০ | ১০ | ১০ | ১০ |
| ১১ | ১১ | ১১ | ১১ |

ইস্তাহার।

কমরান্য বাকি।

মহর দেওয়া হইতেছে। সন হালের
৪ মে তারিখ হইতে ৫ মে মাসিক্তন কাণিজ
নি সাহেবানর বাণীতে কমরান্য বাকি
নামে এক বাকি হররকমের সরাসরি কর্ম
করিবার নিমিত্তে খোলা যাইবেক তাহার
আশিক এইফল যে বখারানার হইতে
জেন ওঁহারিদিগের নাম পুত্রকে লিখা
যাইতেছে যে জোসেফ বারেলো ও
তাহার পুত্রপুত্রিত ও যে মাসিক্তন কো
ম্পানি ও জল মেলবিল এবং বাবু গোলা
মোহন ঠাকুরের জ্যেষ্ঠ পুত্র জয়ুত বাবু
মুর্খুয়ার ঠাকুর।

যে মাসিক্তন কোম্পানি সাহেবান ঐ
কমরান্য বাকির সরবরাহকার ও কর্ম
কর্তা হইলেন অতএব ঐ বাকি সংকলিত

কার্যের যে কোন পুঁথিলা ঐ যে মাসিক
জন কোম্পানির লিফটে রাখিল করিবেন।

পুঁথিমারি নোট আনু দ্বিমাদ আর্থ
বেমিতাদী দস্তুর মত কমরান্য বাকি
হইতে দেওয়া যাইবেক নোটের রকম
মিক্ততা ৫০০ ১০০০ ৫০০ ১৫০ ১০০।

৪০০ ৮০ ৫০ ১০ ৪০ ৪০ ৮ ৫।
টাকার হইবেক ঐ সকল নোটে ঐ
ফল যে জোসেফ বারেলো সাহেব
আধা জল উইল্যাম মুলতন সাহেব দস্ত
মত করিবেন এবং জয়ুত বাবু মুর্খুয়ার
ঠাকুর আত্মার বিনিয়া দস্তমত করিবেন।
ইতি।

কলিভাতা সন ১৮৭৯ সাল তা ১৬ এপ্রিল।

অবর বীণালীকি কি মুই নাখিন গলিছায়ে
নিফটে। য খয়ালীকি ঘরো ইক কমরান্য বাকি
বাকি সাহেব বরেন স্বরনবহু সরানী কামিখি
মুহরবর ইয়া নিফকিন তলক মালিক না
মহর কি মরৌজ জীবে খিজদেব বগি তল
কা নামে মুহরবর খিজদেব সাহেব সা
সিদ্ধি বিবাতী ইক সনসিহব নিফনটো
ইক খয়ালী সানসিহব জীবে বতা ইতা
সীমসিহব তাকুরকা মুসকামা বাবু মুহরবর
তাকুর।

নিফনটো খয়ালী মুহরবরবাহার জীবে
কাহিন্দে মসকমরান্য বাকি ইকি ইকি মসকম
বরবাকি খয়ালীকি কি সা খালে মসকমরান্য
কা তলকা বরবাকি নিফটে খয়ালীকি বাকি
কাহী।

ইনসিহববরেনবরী মোত বাকি ইনসিহব
মুহরবর মসকমরান্য বাকি ইকি ইকি

সা হবজিলা মোতা খীজিলা ৫০০ ১০০০।
৫০০ ২৫০ ১৫০ ১০০ ৩০ ৫০ ২০।
১৫ ১০ ৮। জীবে যাকি বাকি ইকি
নিফকিন তলক মোত নিফবর বাকি ইকি
তা জীবে মসকমরান্য মসকমরান্য মসকমরান্য
বাকি ইকি ইকি বাবু মুহরবর মোত বাকি
মসকমরান্য মসকমরান্য বাকি ইকি।

হিন্দুস্থান বাকি।

৪৫ মে ১৮৭৯।

পতিশা টাকারি পুত্রের টাকার
মিথ্যা তিন নোট হিন্দুস্থান বাকির নোট
বিনিয়া ঐ বাকি টাকারি বাকির কারণ কোন
বাকি আনিয়াছে। ঐ কারণ ঐ বাকির
অবস্থায় আশি বাকির যে স্বত্ব
হিহ আছে যাহার দ্বারা সকল লোক
মতা হিন্দু মিথ্যা নোট আনিতে পারে
সেই হিহ পুত্রের শোকেহিহকে আনা
হইতেছে।

হিন্দুস্থান বাকির পুত্রের পুত্র নোট
এই অলের দাগ আছে যদি আলা ও
চক্ষু এই ওভরের মধ্যে ঐ নোট রাখিয়া
কেহ দেখে তবে ঐ অলের দাগ সে আলা
মাফে দেখিতে পায়। নোটের কিনারে
চারি দিকে অলের ডেইর মত লতার দাগ
আছে ও ইংরেজী বড় অক্ষরে হিন্দুস্থান
বাকি এই কথা ঐ কাণিজের মধ্যে দেখা
যায় এবং ঐ কথা ইংরেজী অক্ষরে
ওপরে হিন্দুস্থান বাকি এই কথা বাকি
লা অক্ষরে ও পাণির অক্ষরে দেখা যায়।
এবং তাহার নীচে পাণরী অক্ষরে সেই
কথা আছে। যে ডিন মিথ্যা নোট প্রকাশ

সমাচার দর্পণ।

কেবল রাজকীয় সমাচার জানিতে চাহেন কেহ
পুণীন ইতিহাস কেহ চোর ডাকাতি; সমাচার
কেহ যুদ্ধাধির বিবরণ কেহ জন্ম বিবাহ মরণ
লভুতি সমাচার কেহ নানা দেশের সমাচার
জানিতে বাসনা করেন অন্তরং নানা লোকের
নানা অভিপায় এক ব্যক্তির অভিমত সমা
চার দিলে অন্তরে অভিমত হয় এই
পুণ্যক সকলের অভিমত সকল পুণ্যের কিকিৎ
সমাচার লিখিয়াছি। এই এক বৎসরে এই
সমাচার দর্পণে যাঁহারা যে অনুগ্রহ করিয়া
হেন সে অনুগ্রহ আশা করণও বিলুপ্ত হইব
না এবং আশায়া বৎসরে পরিশ্রম করিব যে
তাঁহারা অনুগ্রহানুগ্রহ ভূক্তিপাশ হন।

হরিহারের মেলা।

গত মাসে মোঃ হরিহারে বৎসর
এক মেলা হইয়া থাকে এবং কাশী ও
কাবল ও নেশান ও রজনাতানা ইত্যাদি
নানা দেশেইতে অনেক লোক সেই মে
লা দর্শনার্থ ও গঙ্গাস্নানার্থ আসিলে এই
বৎসর মেলাসম্বন্ধে মেলায় সমাচার
লিখা যাউক। মেলায় লুপ্ত
তীর্থ স্থান আছে বিস্তর ও মনসা দেবী
ও রামকৃষ্ণ ও মাতীকৃষ্ণ ও লক্ষ্মণকৃষ্ণ ও
মুখিকৃষ্ণ ও ভীষ্মকৃষ্ণ ও স্বর্গদেব ও ভদ্রমুখি
ও গোমুখি ও কুমারী ও চণ্ডিকা দেবী ও লী
লেশ্বর মহাদেব ও বিষ্ণুতীর্থ ও সপ্তসমুদ্র
ইত্যাদি। এই সকল স্থান পরম দূর।
এবং হরিহার যাহাকে কহে (সে নীচ পুরী
মেলায় দুই হাজার ব্রাহ্মণ অধিকারী
আছে কিন্তু তথানি কোন ব্যক্তি আন
নারদের পৈতৃক পুণ্যহিত্যদ্বারা কদম্ব
করিয়া তাহাকেই মক্ষিপাশুভি দেয় ঐ
অধিকারিদিগকে দেয় না। এই বৎ
সর লোকযাত্রা মেলায় বিস্তর হয়
নাই যেহেতুক আগামি বৎসরের যে

মেলা হইবেক সে অতিশয় তাহার নাম
কৃত্তিকামেলা সে মেলা বার বৎসর
অন্তরে একবার হয়। এই বৎসর পঞ্চাব
হইতে অনেক লোক আনিয়াছিল এবং
পেশোর শহরহইতে এক হাজার ব্রাহ্মণ
আনিয়াছিল।

অনেক হিন্দুরা মেলায় আনিয়া গঙ্গার
মধ্যে স্নান মোহর ও চাঁকা ছেলিয়া দেয়
অধিকারিরা তাহা গুণাইয়া লয়। কতক
বৎসর হইল কতক চাঁমার ও মুঠিরা বৃক্ষ
কুণ্ডে স্নান করিয়াছিল। ইহাতে ব্রাহ্ম
ণেরা কহিল যে অর্ধব্রত জাতিবৃন্দে
গঙ্গা জল রক্ত বর্ন হইয়াছে ইহাতে সে
খানকার ব্রাহ্মণেরা অনেকে তাহারদিগ
কে লাঠী মারিয়া তাড়িয়া দিল তববহি
চাঁমারেরা মেলায় যায় কিন্তু সে জনহ
তারা বৃক্ষকুণ্ডে স্নানাদি করিতে পার না।

এই বৎসরে মেলায় এক হিন্দু পুণী
যে কতক পয়সা লইয়া গিয়াছিল অধি
কারিরা জন নীচ মাত ঐ পয়সা কাড়িয়া
লইতে তাহার পুতাক অঙ্গ ধরিল। তাহা
তে ঐ হিন্দু গঙ্গার মধ্যে সে সকল পয়সা
ছেলিয়া দিয়া কহিল যে তোরদিগকে
কেল দিব গঙ্গাতীকে দিলাম।

এক ভাগ্যবান তৈয়্যিক ভাগল চাঁকা
কাপড় বান্ধিয়া গঙ্গাতীরে রাখিয়া স্নান
যে জলে পুণ্য হইল। ইত্যবসরে এক
বালর আনিয়া ঐ বস্ত্র শুদ্ধ চাঁকা লইয়া
এক বস্ত্রের ওপরে সমুদায় চাঁকা এক
করিয়া গঙ্গাতে ছেলিয়া দিল। অধিকারি
রা কহিল যে ঐ বালর এই চাঁকা গঙ্গা
কে দিল ইহা করিয়া আশনারা লইতে
আলো তুহিতে লাগিল কিন্তু কেবল কদা
শাইল। মেলায় তিন-চারি মৌল পিত
লের এক মহাঘণ্টা ছিল সে ঘণ্টা এই
মেলাতে চোরে লইয়াছে।

আশীর গড়।

আশীর গড়ের মধ্যে এই জিলস
ইংল্যান্ডের পাইয়াজেন পৌলেরটা পিত
লেন কামান ও এক শত চারি লোহার
কামান ঐ লোহার কামানের মধ্যে একটা
এই মত বড় যে কলিকাতার জিল্লার মধ্যে
তাহার মত বড় কামান নাই কিন্তু সে
তৎকালে তাহার দ্বারা বিপক্ষ লোকেরদের
হালি হয় না কিন্তু যাহারা সে কামান
জোতে তাহারদের শূন্য মর্শনাশ হয়।
অতএব সে কেবল দেখিবার কারণ করা
গিয়াছে। এতদ্ব্যতিরিক্ত তের হাজার
চাঁকা নানাতরকার ভক্ষ্য মামুগু নগদ
চাঁকার যে ভরসা ছিল সে মিথ্যা হই
য়াছে। আশীর গড় ও হিন্দিয়া এই
দুই গড় চারি নীচ বৎসরপর্যন্ত ইং
ল্যান্ডেরদের হাতে থাকিবক্ এমত বন্দো
বস্ত্র আশুত মৌল-রাও সিদ্ধিয়ার সহিত
ইংল্যান্ডেরদের বির হইয়াছে।

ব্রাহ্মজী বাণিয়া।

অশ্রীযুত বাজিরও পেশোয়া মহারাজ
বাহাদুরের এক সেনাপতি অশ্রীযুত ব্রাহ্ম
জী বাণিয়া গত বৎসর ইংল্যান্ডেরদের
সহিত অনেক যুদ্ধ করিয়াছিলেন কিন্তু
শেষে যুদ্ধ পরাজিত হইয়াছিলেন পরে
ইংল্যান্ডেরা তাহাকে কদম্ব করিয়া আ
হাংসহারা মোঃ কলিকাতাতে আনিয়া
রাখিয়াছেন ও তাহার আশীর গড়
করিয়া দিয়াছেন। অশ্রীযুত বাজিরও
পেশোয়া বাণীপুরের লিষ্ট এক স্থান
আছেন।

অশ্রীযুত।

মহারাজেরদের সহিত গড় যুদ্ধে অ
শ্রীযুত মর ভায়স হিন্দল সাহেব মোঃ

সমাচার দর্পণ।

ময়মনসুরে হোলকারের বিপাকে পরাজিত
করিয়াছিলেন। এই নিমিত্ত অশ্রুযুত
ইংলণ্ডের যুবরাজ ঐ হিমসল সাহেবের
সমুদায় তাহার এক সন্তান যেভাবে দিয়া
ছেন ঐ যেভাবে পাইবার নিমিত্ত ঐ সাহেব
মামরাও হইতে হিন্দি কাটা আসিয়াছি
ছেন এবং গাও বুইবারে কলিকাতা
ভাণ্ডারান লোকের বড় সাহেবের ঘরে
এবং হইলেন সেই সময়ে অশ্রুযুত
নাংর যেভাবে পেশা করত কুখিত হইয়া
সেখানে আসিলেন ও সকল লোকের
সাক্ষাৎ করে ঐ হিমসল সাহেব এক
ইষ্ট্রী কুমার গাভিলন অশ্রুযুত তাহার
যেভাবে চিত্র তাহার গলে দিলেন ইয়া
বসরে ক্রান্তে তখন হইল।

তাকতি।

এই এক বৎসরের মধ্যে কলিকাতার চতু
র্দিক তাকতি পুষ্ট যোগে হয় এমত শুনি
তে পাইতেছি এমত রাত্রি পুষ্ট সাই যে
ওহাতে তাকতি না হয় কিন্তু এমত থাকি
বে না পূর্বে এই অংশে এমত চোর তাক
তির ভয় ছিল যে যেখানে লোক তাঁহা মাত
তখন একত্র না হইয়া পথ চলিত ও পরি
ত না এবং যোগে কলিকাতার জিন্দে অলেক
তাকতি ত্যাগ হইয়াছিল তাহারদের মর
মার বিধি পথ বাহাদুর এক দুর্ভাগ্য তাক
তি ছিল তাহার অল্পে দিলে ও রাত্রি তা
কতি হইতে অলেক দিবস হইল তাহার
ক্ষীনি হইয়াছে। এই অংশে এমত অলেক
লোক আছে যে তাহার পূর্বে মনুষ্য
হারা বিন সন্তুষ্ট করিয়া এখন ভাণ্ডারান
হইয়া ভালো মানুষ্য হইয়াছে।

ইংলণ্ডের বিপাকে পরাজিত।

পলাশির যুদ্ধের সময়ে ইংলণ্ডেরদের কলি
কাতার চতুর্দিক কতক গুমি বাকালার
মধ্যে এক বিধা কুমি ছিল না। ১৭৫৯ সালে
শাহ আলম বাহাদুর সৈন্যে বাহাদুর আই
লেন এবং বাহাদুর নবাব মীর কাসেমকে উ
দ্ধৃতিতে বাননা করিলেন কিন্তু নবাব মীর কা
সেম ও নার্ত কুমি সাহেব এই দুই জন সৈন্য
নইয়া গুমির নিকটে কলকাতা নবাবের
লেন। শাহ আলম তাহারদের সহিত যুদ্ধ
না করিয়া পশ্চিমে গেলেন। ১৭৬০ সালে মহা
রাজা বঙ্গোড়া জিন্দা বখানে আসিয়া ঐ
না নুট করিল এবং ঐ বৎসরে শাহ আলম
বাহাদুর হইয়া যোগে দিল্লীতে সিংহাসনে
বসিলেন পরে পূর্বাঞ্চল সৈন্যে বেহারে সৈন্যে আই
লেন তখন নবাব মীর কাসেমের সৈন্য পূর্বা
ঞ্চল যাপন সৈন্য ও ইংলণ্ডের সৈন্য নইয়া
পাটনার নিকটে গিয়া শাহ আলমের সহিত
যুদ্ধ করিয়া তাহাকে পরাজিত করিল। শাহ আল
ম সেখানে হইতে আসিয়া বখানার পশ্চিমে
বন ভূমিতে বঙ্গোড়ের সহিত মিলিলেন পরে
নবাবের সৈন্য ও ইংলণ্ডের সৈন্য সেখানেও
বাহাদুরকে আক্রমণ করিলে তিনি তখন হইতে
গিয়া যোগে পাটনা শহর চতুর্দিক ঘেরিলেন
কিন্তু তাহাতে কিছু করিতে না পারিয়া দিল্লী
পুস্থান করিলেন। পূর্বে পুঠানার রাজা
সেই সময়ে শাহ আলম বাহাদুরের সহিত মিলি
রাহিল তৎপুত্র মীরন ঐ রাজাকে মাতিতে
পুঠানার পথে গেল তাহাতে ঐ রাজা পুঠানায়
ইল। মীরন করিয়া বখানে আসিতেছিল
পথে বখানায় তাহার মৃত্যু হইল।

ঐ ১৭৬০ সালে নার্ত কুমি সাহেব ইংলণ্ডে
পুস্থান করিলেন এবং ঐ সালের আশ্বিন
মাসে বানসিটাজ সাহেব বাহাদুর বক সাহেব

হইয়া আইলেন সেখান হইতে বানসিটাজ
সাহেব নবাব মীর কাসেমের দুইটা কামিয়া
তাহার পরীকর্ষে তাহার কামিয়া কামিয়া
থাকে নবাব করিতে বাননা করিয়া তাহাকে
কলিকাতায় আনাইলেন। ও তাহার বিপ
এই স্থির বন্দোবস্ত করিলেন যে কামিয়া ঐ
মীর কাসেমের নামে রাখা সেখান হইবে কিন্তু
পরাক্রম নকল পাইবেন এবং বখানার ও
মেদিপুর ও হুগলি এই তিন জিন্দা ইংল
ণ্ডের বিপাকে তিনি দিবেন। এই বন্দোবস্ত ক
রিয়া কামিয়া ঐ ও বানসিটাজ সাহেব যোগে
মুর্শেদাবাদে গেল ও মীর কাসেমকে বক সাহেব
কহিলেন যে তোমার সেখান কামিয়া ঐ
থাকিবেন। ইহাতে মীর কাসেম কোন পুকারে
নয়ত হইলেন না তথাপি ইংলণ্ডের
বানসিটাজ কামিয়া ঐ বাহাদুর নবাব পাই
লেন ও মীর কাসেম মুর্শেদাবাদে থাকিতে না
চাহিয়া সেই দিন পুস্থান করিয়া যোগে কলি
কাতার আসিয়া বসতি করিলেন। ইহাতে
কামিয়া ঐ পুস্থান হইল যেহেতু কলি
কামিয়া ঐ ইচ্ছা করিয়াছিল যে আসন
বড় বড় মীর কাসেমের মত কাসেমের করে।

১৭৬১ সালে শাহ আলম আগাচীর
বাহাদুর পূর্বাঞ্চল সৈন্যে বেহারে আইলেন এবং
ইংলণ্ডের তাহাকে যুদ্ধে হস্তান্ত করিলেন
কিন্তু পুস্তক সন্তুষ্ট তাহাকে রাখিলেন। ঐ
বাহাদুর ইংলণ্ডের বিপাকে করিলেন যে বরি
তোমার আমার পক্ষে আইন তবে বাহাদুর
সেখান তোমার বিপাকে আমি বি। তাহাতে
ইংলণ্ডেরা নম্রত হইলেন না যেহেতু কলি
মলী ঐর সহিত তাহারদের বন্দোবস্ত ছিল অত
এব নুতন বন্দোবস্ত করিলে তাহার সহিত নিরক
হাতিমী ব্যবহার হয়। পরে শাহ আলম আসন
সলতন সময়ে দিল্লী পুস্থান করিলেন।

এই সমাচার দর্পণ শুরামপুরের হাণ্ডাখানাত পুস্তকখানাত পরিবারে হাণ্ডা হয়। বাহার লগনের আবশ্যক হয় তিনি শুরামপুরের হাণ্ডাখানাত
আসন নাম পাঠাইলে সন্তোষে কাল তাহার নিকটে পাঠান বাহারের কলি মাসে এক টাকা। যিনি বাহার করিয়াছেন যদি তাহার নিকটে
সমাচার দর্পণ না পাইবে তবে তিনি শুরামপুরের হাণ্ডাখানাত সমাচার দিব্যায় তাহার নিকটে পাঠান হইবে।

सदस्य/सदस्या यांची अथवा यांच्या नावांचा

সমাচার দর্পণ ।

সংশোধন ও ক্রিয়াকর্ম। এ সময়সীমা ৬ মাসের জন্য বৃদ্ধি
 করা ১০ জুন ১৮১৯ ইং ২৯ জ্যৈষ্ঠ ১২২৬ বাং। কাশেমের দ্বা
 রায়ের।

ইতি তারিখ : ৪ মে সন ১৯১৯ বোর্ডরিবনদ্বয় হইতে।

ਅੰਤਰਰਾਸ਼ਟਰੀ ਵਾਪਸੀ ਆਵਾਜ਼ ਕਾਇਮ।

বহুমান এ চাটীগ্রাম এ যথোঁচর বৃহত্তরিতার লন ১৮-১৯
১৮ জুন ইং লন ১৯৬৬ এ আতাত বাক বোঝিতবনর লেখতাকি
হুতরখানার।

जड़काष्ठर बाँकी आइह आवाइ बाँकी ।

১৭ জুন ১৯৭১ খ্রিঃ
 ১৮ জুন ১৯৭১ খ্রিঃ
 ১৯ জুন ১৯৭১ খ্রিঃ
 ২০ জুন ১৯৭১ খ্রিঃ
 ২১ জুন ১৯৭১ খ্রিঃ
 ২২ জুন ১৯৭১ খ্রিঃ
 ২৩ জুন ১৯৭১ খ্রিঃ
 ২৪ জুন ১৯৭১ খ্রিঃ
 ২৫ জুন ১৯৭১ খ্রিঃ
 ২৬ জুন ১৯৭১ খ্রিঃ
 ২৭ জুন ১৯৭১ খ্রিঃ
 ২৮ জুন ১৯৭১ খ্রিঃ
 ২৯ জুন ১৯৭১ খ্রিঃ
 ৩০ জুন ১৯৭১ খ্রিঃ
 ৩১ জুন ১৯৭১ খ্রিঃ

ইতি তারিখ ১১ বেঙ্গল ১৯১৯ খ্রীষ্টাব্দে।

অনেক লোকের অধীন নামনি জেলাসহ রোহা ও ভারি
লক্ষ্য রাখি গায়ের তলানী পুকুর নামে দিল্লীতে বিলা
হইবেক জমা ও কলিকাতা কৈলীকর বোতলিয়ার লাহা
হইবেক।

डा. विष्णु वरदाजी १ जुलाई नम १९११ ई. नम १९१२
१० आचार्य दा. (गो. वि. वि. नम १९११ ई. नम १९१२)

ଜାଣିଥିବା ଦୁଇଜଣିଙ୍କର ୩ ଗୁଣ ମଧ୍ୟ ୧୮୧୨ ଓ ୧୯୧୨
 ୧ ଜଣଙ୍କର ୧୯ କାମେଜି କାହାଣୀରେ ।

ठाकुराव दूरद्विवाह ११ जुन मन १८१३ ई. ४ आवा
मन १३३३ वी. कावेकरि काकाविते ।

ଉତ୍ତମ ଶିକ୍ଷଣ ଦୁର୍ଗାବିହାରୀ ୨୧ ଜୁନ ୧୯୮୭ ଓ ୮ ଜୁଲାଇ
୧୯୮୭ ବା. କାମେଡ଼ି କାହାରିଡ଼

ইতি ভা- ১৮ যে জন ১৮ ১৯ বোর্ড রিভার ছককে ।

যোঁ ওস্তাদুর শহরে তখকার রাজা মর
 দুজী মহারাজ আর্পন ঘরে এক ছাপা
 খানা। করিয়াছেন ও তামুল নামে আর্পন
 ভাষাতে এক সমাচারের কাগজ ছাপাই
 বেন তাহাতে এক দিগে ইংরাজী ও এক
 দিগে তামুল থাকিবেক।

ਦੀਨਲਾਡ ।

দুই মাস হইল যোঁ জরীপুৰ হৈছে
 দুই কোশ ভক্ৰে গাঁকোঁৰ নামে এক
 গাঁয়ে এক বহিৰু গাঁও আঁৰি বহেৰে নি
 কটে এক গাঁও বহিৰুৰ নামে এক
 জয় নাও হাজাৰ টোকা পাইয়াছে এই
 টোকা অতিশয় পুঠীন ও তাহাৰ মোহৰ
 দেখিয়া বুঝা যায় যে সেই গাঁ জয় শত বৎ
 সনৰে পুঠীন টোকা হইবে। এইবোঁ
 গাঁও শহৰে মুক্তিলা মুখিৰাৰ নামে
 আনেক অতিশয় টোকা পায়।

আমেরিকা দেশে সড়িগামি ।

আমেরিকা দেশের মাঝে অত্যুন্নত
রাষ্ট্র। আরে ও গাঁড়ির হারা মকল লোক
ও জাক-গ্যালা গম্যনাগম্য করে। গাঁড়ি
মাংস হইল আমেরিকার রাজধানী নগর
ব্রহ্মইতে অন্য এক নগরে যাঁহাতে গাঁ
ড়ির হারাভাক বিশ গম্বীর মাঝে এক শত
বিশ ফোঁপ গিয়াছে মোণ কলিকতা
হইতে যত দূর মালদহ এত দূর বিশ
গম্বীর নীতিল্ল এমত কোণামিত্য। কল
কত পুনি নগর।

होवा शावान ।

ইংল্যান্ড দেশের রাজার কতক ছাড়া
আছে মেহারা কেবল এক রাজার নয়
কিন্তু যখন যিনি রাজনিংহামনে বসেন
তাহারি সে ছাড়া সেই মকল ছাড়া ইংল্যান্ড

যেহে রানীর তিম্মাতে ছিল। রানীর হর
নাশহর সে হোরার আন্দোলন হইয়াছে
কিন্তু পাওয়া যায় নাই যে অর্থহীন করি
য়াছে সে দীর্ঘপক্ষে নাই যে দিক
থাকিত কিন্তু সে দিকের শূন্য পাওয়া
যায়ে !

गहदाह ।

৪৩ যে দশবাঁধের প্রবির সন্মুখে যোগ্য কন
বাতে রেজিষ্টার মাঝেবের কাটাঠিতে অগ্নি
লাগিয়া মর্ষক দাহ হইয়াছে তাহার
অনেক লোকের ক্ষতি হইয়াছে যেহেতু
শীত ঋতু শ্রম মুকন্দ্রাধর কাণিও শব্দ
ভাষ্য হইয়াছে এবং গণিণ হইয়াছে
রেকার্ষ দস্তুরের কাণিও পুড়িয়া গিয়াছে।
তাঁহার কারণ এই পূর্বে যে চাশরানী জিল
সে বিখ্যাত হইয়া আপন ঘরে গিয়াছিল
আর এক জন নতুন চাশরানী সেইঘরে
লাগিয়াছিল তাহার হঠকায় অগ্নি ঘরে
লাগিয়া এয়াত হইল।

৪৮ যোগদলবার দুই পুহর বেলায় সময়ে
যোঁ-পেনেটী গারীর তীরে রানসহকর
লিকটহু বাজারে অগ্নি লাগিয়া তাম্ব-
বাজার দক্ষ হইল সে বাজারের দুই
পার্শ্বে দুইটা নওখানা ছিল তাহা
দক্ষ হইয়াছে কিন্তু বায়ুর গতিসময়ে তদা
বাস্ত তিনখান ঘর বাঁচিয়াছে এবং
অগ্নি গুম্বার মাঝে গুম্বা হইয়া অনেক
বিশাল লোকের ঘণাসহক দক্ষ হই
য়াছে।

অশ্রুত।

গত মন্ডায়ে যোগ্য কলিকাতার বাণী
বাজারের ওপর রাস্তাতে মন্ডা কালে এক
মীড় ঘাইতেছিল এবং এক ব্যক্তিও সেই
রাহায়ে আসিতেছিল মীড় নিকটবর্তী হই
য়া ছাড়াইয়া ৩ ব্যক্তি পক্ষান্তে গেল

সম্মান দর্পণ ।

નૃડન મચાઠાર પત્ર ।

দক্ষিণদেশে কুমারী আত্মহত্যার নিকটে

সমাচার দর্পণ।

ব্যক্তি নির্ভর হইয়া যাইতেছে ইত্যংক
শে ঐ নীতি ফিরিয়া আসিয়া তাহার ওর
মূল শ্রীচাত করিয়া বিবর্তন করিল তা
হাতে ঐ ব্যক্তি তখন মরিল।

গত সপ্তাহে মোঃ কলিকাতার আতা
মাকোতে এক মহিম বাগানের ধরিয়া
রাখাতে এক যোতা ফিরাইতেছিল সেই
যোতার পক্ষাতে লোক আসিতেছিল ই
হার মধ্যে বৈবাহিক সেই যোতা অতিশয়
বিষম করিয়া পক্ষাতের দুই পা ব্যক্তি
ন তাহাতে এক ব্যক্তির চুল লাগিয়া
তখন পড়িয়া মরিল মহান সুহাৰ
তখন যোতা ছাড়িয়া দিয়া চলিল কিন্তু
কাহার যোতা তাহা নিষ্ফল হইল না।

৪৮ মে ময়লবার মোঃ কলিকাতার
নিম্নলিখিত এক কলিকের স্বী একটা পায়
রের বাটার কারন বিরোধ করিয়া গলায়
ঘড়ি দিয়া পুনর্ভাগ্য করিয়াছে।

বৈবাহিক যত।

৯ মে রবিবার শ্রীযুত রাধীচরণ মজুম
দারের পুত্র শ্রীকুমারমোহন ও শ্রী ব্রজমোহন
কুমারমোহনের ঘরে শ্রীযুত রাধামোহন রায়
শ্রীযুত মরুল বৈবাহিকের। একত্র হই
লেন এবং পরস্পর আপনাদের মতের
বিবেচনা করিলেন। আমরা শুনিয়াছি
যে সেই সভাতে আত্মিক প্রতি বিধি কিয়া
নিষেধ বিষয়ে বিচার হইল ও যাদের
শ্রুতি যে নিষেধ আছে তাহারও বিষয়ে বি
চার হইল। এবং পুত্রের স্বীর স্বামী মর
পালঙ্কর সহমরণ না করিয়া কেবল দুই
চক্ষু কাল কোণ কর্তব্য এই বিষয়েও আল
ক বিবেচনা হইল এবং বৈবাহিক কর্মের
বিষয়ে বিচার হইল সেই সময়ে বেদের

ওপনিষদহইতে আপনাদের মতানুযায়ি
বাক্য পড়া গেল ও তাহার অর্থ করা গেল
ও তাঁহারা বেদান্তের মতানুসারে গতি
গাইলেন।

অম্বুজতীয়া লিখা।

ইহার বিষয়ে গত সপ্তাহে লিখা গি
য়াছে এখন শ্রীযুত গেল যে কলিকাতার
কিন্দ্রাতে যেখানে নবাব ওজীরালী কএ
জিলেন সেই স্থানে তাঁহাকে রাখা গিয়া
ছে কিন্তু চতালগড়ে তাহার কারন এক
স্থান পুস্তত হইতেছে সেই স্থান পুস্তত
হইলে তিনি সেখানে গিয়া যাবজ্জীবন
বাস করিবেন।

দিল্লী।

কতক দিন হইল মোঃ দিল্লীর কালে
ওর ড্রেকর সাহেব কোন কর্মার্থে দিল্লীর
কিছুদূরে গিয়াছিলেন ও আপনাদের ছাউনি
ছাড়িয়া ফিরিতেছিলেন ইত্যবসরে দুই
এক ব্যক্তি আসিয়া অম্বুজারী ঐ সাহে
বকে মারিল ও সাহেব তখন ঘুরিয়া
পড়িলেন সে দুই ভাবিল যে সাহেব মরি
য়াছে ইহাতে আপন ঘাইতে লাগিল।
পুলকার সাহেবকে গুপ্তে দেখিয়া ঐ
দুই আসিয়া আপন ক্রিষ্ট বাহির করিয়া
সাহেবের হাতের অঙ্গুলি কাটিল। এই
সময়ে সাহেবের চাকররা আসিয়া ঐ
দুইকে ডলোয়ারেতে মারিল তাহাতে
বুঝা গেল না যে সে ব্যক্তি কে ছিল।

মুল।

কতক দিন হইল মোঃ মীরট শহরে
এক ইংল্যান্ডি নিম্নাহার স্বীর এই পুকারে
বই হইয়াছে অন্য কোন এক স্বী তাহার

নিকটে আসিয়া তাহাকে চাঁকা দিল ও
দর্শ ঘড়ী রাশির সময়ে আপন ঘরে গেল
ও ঐ ইংল্যান্ডি নিম্নাহার তাহাকে পঁচড়া
ইতে তাহার সহিত গেল এই সময়ে ঐ
স্বী সে চাঁকা গালায় বন্ধ করিয়া রাখিল
কিন্তু এক জন বোঁশা তাহা দেখিল ও ঐ
বোঁশা লোভনুযুক্ত ঐ স্বীকে মূল করিয়া
সে সময়ে চাঁকা লইল। তাহার
স্বামী ঘরে আসিয়া আপন স্বীকে মৃত্য
দেখিল। এবং অনুমান করিয়া
বোঁশার ঘরে গিয়া দেখিল যে বোঁশা কা
পড় ছাড়িতেছে ও ছাড়া কাপড়ে রক্তের
মাণ দেখিয়া তাহাকে কএ বরিয়া পুলি
সে চালান করিয়াছে এখন তাহার মুক
দ্রায়া হইতেছে।

লমস দেন সাহেবের মৃত্যু।

লমস দেন সাহেব এতদ্দেশে অনেক
দিন ছিলেন ও রাজকীয় কর্মে অনেক সু
খ্যাতি উপার্জন করিয়াছেন এবং ইংল্যান্ডে
গিয়া কোম্পানির কর্ম করিতেছিলেন
সম্প্রতি তিনি পরলোকগামী হইয়াছেন।

ইংল্যান্ডি নিম্নাহারী।

গত ২৮-সর যখন ইংল্যান্ডি সেনাপতি
ও নিম্নাহারী লাসেন দেশে ছিল তখন এক
জন ইংল্যান্ডি নিম্নাহারী আপন ইষ্টায়
এক জন ফরাশীকে মূল করিল। পরে ঐ
ব্যক্তির মুকদ্দমা হইয়া সে বোঁশী হইলে
তাঁহার আঁনি দিতে বন্ধ হইল তখন
ঐ ব্যক্তি আপন সেনাপতির নিকটে বোঁ
ড়িয়া গিয়া কহিল যে তোমার আঁনি
আমি যে অনেক ফরাশীকে মারিয়াছি
তাঁহার কারন কিছু হইল না কিন্তু আপন
ইষ্টায় যে এক জনকে মারিয়াছি ইহার
কারন আমাকে আঁনি দিতে বন্ধ কর
য়াছেন এ কি।

সমাচার দর্পণ ।

ই-গুণ্ডারিকারের কথা ।

কাশ্মানী ঐ নবাব হইয়া বসিযামান
আপন বড়বহিষ বৃত্তি পুষ্ণ করিতে
লাগিল পুষ্ণ যে মুর্শেবাবাহইতে আপন
শলভনং সমেত উড়িয়া গিয়া যো মুর্শে
রাজ্য পানি করিল ও সেখানে কিছু শক্ত করি
তে লাগিল ও নব্বি কামান বন্ধক পুত্ৰতি
পুত্ৰত করিতে লাগিল এবং রাজস্বের কারন
পুষ্ণারিগিকে অনেক দুঃখ গিতে লাগিল ।
পরে পাটনার হোট নবাব রাজা রামনারায়ণ
ই-গুণ্ডারেরের অতঃ পক্ষপাতী ও অতি
জান মানব ও তিনি খন নগর অনেক করিয়া
হিসেন ইহাতে কাশ্মানী ঐর সোত ভয়িয়া
তাহাকে অপবদ্যুত করণে ক্ষোভাইতে লাগিল
কিহ ই-গুণ্ডার সেনাপতি ইহাতে সম্মত হইল
না । পরে কাশ্মানী ঐ কলিকাতার বড়
সাহেবের নিকটে ঐ বিষয়ে মিথ্যা নাগিল
কহিল তাহারিতে কলিকাতার বড় সাহেব পাটনার
সেনাপত্রকে অতিক সৈন্য সূত কলিকাতার
ভাকালেন এবং অল্প সৈন্য পাটনার রহিল ।
তাহারা পাটনা ত্যাগ করিলে কাশ্মানী ঐ
আপন ইচ্ছানুসারে ঐ রামনারায়ণ হাটের
তাবৎ অর্থ লইয়া তাহাকে কারাবত করিল ।

ইহার পর কোন্মানির হাঁসিলের বিষয় কাশ
মানী ঐর সহিত বিরোধ হইতে লাগিল দিল্লী
হইতে যে পেরবান পুত্র কোন্মানি আনিয়া
হিসেন তাহাতে ঐ লিখিত ছিল যে কোন্মানির
বহুত যে তিনিসের উপর থাকিবে যে তিনি
হাঁসিল বিনা চলিবে কিন্তু কাশ্মানী ঐ
ইহা না মানিয়া তাবৎ তিনিসের উপর হাঁসিল
সইতে হুকুম দিল । ইহাতে কলিকাতাহইতে
বড় সাহেব বানসির্গাত সাহেব এবং ছেভি-স
সাহেব ১৭৭৩ সালে মুর্শেবে কাশ্মানী ঐর

নিকটে গেলেন এবং সেখানে ঐ বিষয়ে ঐ মি
থিল করিলেন যে কলশরজারি তিনিসের উপর
কোন্মানির বহুত থাকিলে তাহার হাঁসিল না
গিবে না কিন্তু এক ক্রিাহইতে অন্য জিলা না
ইতে যে হাঁসিল তাহা গিতে হবে এবং যে কো
ন্মানির গোমস্তারা কোন বোধ করিলে তাহার
যের অগলত কাশ্মানী ঐর তরফ বিচারকর্তার
করিবে ঐ বন্দোবস্তে কলিকাতার কৌন্সিল
সম্মত হইল না কিন্তু কোন্মানির সকল পুত্র
চাকর লোককে একত্র ডাকিয়া তাহারা ঐ
হির করিল যে অন্য দুই জন সাহেব কাশ্মানী
ঐর নিকটে গিয়া অন্য এক বন্দোবস্ত করেন ।

ঐ সময় মহম্মদ আলী নামে কাশ্মানী
ঐর এক জন চাকর লকীপু ও চাচিগুম
পুচ্ছিতে ই-গুণ্ডারেরের উপর অনেক
বোঝা করিলে ই-গুণ্ডারের তাহাকে খরিল
এবং কাশ্মানী ঐ মুর্শেবাবাহইতে জ্ঞাত
সেতকে ও তাহার তাইকে মুর্শেবে লইয়া গিয়া
তাহারিগকে কব করিল । ঐ দুই জন
সাহেব মুর্শেবে গহিয়া কাশ্মানী ঐর সহিত
কথোপকথন করিতে লাগিল ইতোমধ্যে কো
ন্মানির কতক নৌকা যে অত্র শত্রু লইয়া
পাটনা ঘাইতেছিল সেই নৌকা মুর্শেবে কাশ
মানী ঐ আটক করিল এবং কহিল যে ই-গু
ণ্ডারের সকল সৈন্য পাটনাইতে লইয়া হাটক
নতরা বন্দোবস্ত করিব না ইহাতে ই-গুণ্ডারী
য়ের সম্মত না হইলে কাশ্মানী ঐ ঐ দুই
জন সাহেবের মধ্যে আমিঅট সাহেবে
বিষায় করিল এবং অন্যকে কব রাখিল
আমিঅট সাহেব মুর্শেবাবাবে গহিলে কাশ
মানী ঐর চাকররা ঐ সাহেবকে এবং তাহার
চাকর লোককে মারিয়া কেলিল ঐ সময় পাট
নার যে ই-গুণ্ডার সৈন্য ছিল তাহারা কিছু
দখল করিল কিন্তু গর দিনে কাশ্মানী ঐর সৈন্য

পুনর্বার ঐ কিছু দখল করিয়া ই-গুণ্ডারের
নিকটে কব করিল কাশ্মানী ঐ ঐ ঐ
ই-গুণ্ডারেরের সহিত যুদ্ধ করিলে ১৭৭৩ সালে
ই-গুণ্ডারের মীর জাকরকে পুনর্বার বার
ও বোহর ও উড়িয়া ঐই তিনি নবাব সুবে
করিল এবং মেজর আদল সাহেব সাত
শত গোরা ও তিন হাজার সিপাহী লইয়া কলি
কাতা ও মুর্শেবাবাবের মধ্যস্থতি ছাউন কাশ
মানী ঐর কতক সৈন্য দখল করিল ।

পরে ৭ আগস্টে কাশ্মানীবাবারের নিকটে গেল
মোকাবে কাশ্মানী ঐর ১৫ হাজার সৈন্য
রায় ও দশ হাজার সিপাহীর সহিত যুদ্ধ
কিয়া তাহারিগকে মারিল । পরে সেখানহইতে
গিয়া রাজমহলের নিকটে উদুনান্না নামে
এক বড় কিল্লা দখল করিল তাহাতে এক শত
সৈন্য ছিল । কাশ্মানী ঐ মুর্শেবে থাকিয়া যে
খিল যে তাহার নব্বি নট ইহাতে এবং
আপনি হিন্দুস্থানে পলায়ন করিতে নিষ্কর
খরিল কিন্তু পলায়নের পূর্বে মুর্শেবে বড় বাঙ্গালি
একত্র ছিল রাজা রামনারায়ণ রায় এবং তা
হার দশ জন কুটুম্ব এবং রাজা রাজবুদ
এবং জমদসেত ও তাহার তাইকে ধর করিল
এবং তাহারদের পর যেন তাহারদের বিষয়
সারে বাহ না হয় ঐই কাল মাটে কেলিয়া
দিল ও সেখানে সিপাহী টোকা রাখিল সে
খ্যত পক্ষী পুচ্ছিত না গাইল ঐই ক্রিয়া ঐ
পরে পলায়ন করিল । পাটনার কোন্মানির
পুত্রান চাকর যে পক্ষী জন সাহেব লোক
এবং এক শত সামান্য সাহেব লোক কব
ছিল তাহারদের অর্থ ছেদন করিয়া তাহারদিগ
কে ধর করিল । এবং তাহারদের পর কলমে
নিক্ষেপ করিল ইহা করিয়া আপনি লক্ষ্যে
পলায়ন করিল এবং মুক্তা ও তরফতাকারে
পুর দুই কোটি আপন সবে লইয়া গেল ।

ঐ সমাচার দর্পণ পুরামপুরে হাসাখানাতে পুস্তিকভাবে পনিবারে হাসা হয় । তাহার লণ্ডনের আদলক হর তিনি পুরামপুরে হাসাখানাতে
আপন নাম পাঠাইলে সভাহে কাগজ তাহার নিকটে পাঠান হাইয়েক তাহার মূল্য মাসে এক টাকা । যিনি স্বাক্ষর করিয়াছেন যদি তাহার বিদ্যা
নমাচার দর্পণ না গহে তবে তিনি পুরামপুরে হাসাখানাতে সমাচার দিবামাত্র তাহার নিকটে পাঠান হাইয়েক ।

25

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

সমাচার দর্পণ ।

মুন্সিবাংলা ও ত্রিপুরা এজিন্ট বৃহত্তিয়ার ১ জুলাই সন
১৮১২ ইং ১৯ আশ্বিন সন ১১১৯ বাং কামেকরি কাছাখিচে।
বেলিপুর বৃহত্তিয়ার ১ জুলাই সন ১৮১২ ইং ১৯ আশ্বিন সন
১১১৯ বাং কামেকরি কাছাখিচে।

ইতি তারিখ ২৫ মে সন ১৮১৯ বঙ্গাব্দে।

অনেক মোকদ্দম জমীদারি জমাচারে গেল ও ভাণ্ডার
লক্ষ্যে দীর্ঘতর ভণ্ডারীরা দীর্ঘতর দীর্ঘতর দীর্ঘতর দীর্ঘতর
হইবেক ও জমীদারি ভণ্ডারীরা দীর্ঘতর দীর্ঘতর দীর্ঘতর
দীর্ঘতর দীর্ঘতর দীর্ঘতর দীর্ঘতর দীর্ঘতর দীর্ঘতর দীর্ঘতর
হইবেক ।

जड़कात्तु रांकी आंरां कऱुन ।

१३. २७ वां बोनरिबन्धु मांछोत्रि मठ/ध्यानाथ ।

वर्धमान ए ठाणीप्राय-ए यालोइर वृहज्जिवाइ जन ११-११

७ जुन १९६७ : आवाह दाय. बाँके जिल्ला न्यायाधीश
दफ्तरबाट ।

জাহাঙ্গীরের বাঁকী ওয়াফ়া আদায় করুন।

ଡାକ୍ତରୀ, ଶିକ୍ଷା ଓ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଓ ଚିକିତ୍ସା, ଶିଳ୍ପ ଓ ଯାହାଜି ବିକାଶ
 ୨୫ ଜୁନ ୧୯୮୫ ୧୯୮୫ ଓ ୧୯୮୬ ୧୯୮୬ ବା ୧୯୮୭
 ଡାକ୍ତରୀ ଓ ଶିଳ୍ପ ଓ ଯାହାଜି ବିକାଶ

ইতি তারিখ ১১ বৈশাখ ১৮১৯ বোম্বাইয়ে হুজুরে।

অনেক নোকেবর জমীদার নারিন জেলাদ্বার য়োক এ তারি
নামক বারিক গীতের উপলক্ষে পুকাশ ছায়ে দিলানে বিজ
হইবেক জমা এ জমীদার কৈদীরত বোহরিবলুর সাল্টা
ইত্তরগীদার আদা জেলাদ্বার কালেক্তর কার্যক্রিতে নাম
হইবেক।

ठाठिभुव वृहत्त्रिंशत् १ जुलाई म १८१६ ई. म १८१६

১৮ আয়াত্ বা- বোত্‌রিকবলু সাল্‌টো'র মউ'রখোনা' ।

डा. विष्णुभाय वृद्धाजीराव ११ जून १८१३ ई. मंग १८१३

• ଆସାଫ ବାବୁ କାବେରୀ କାନ୍ଦାରିତେ ।

हॉटेलियर गृहवर्षादि २१ जून मग १८-१९ हे. ४ जात

• १९२७ वां कावेरि काकातिथे ।

उद्दिष्ट-पत्रावली दृष्टावित्यादि ११ कुल मग १८-१९ ई. १ आदि

ଜନ ୧୧, ୧୬ ବା. ବାଲେଶ୍ଵରୀ ବାଲାରାଜିବେ

ইতি তাং ১৮ মে মন ১৮ ১৯ বোর্ড প্রিন্সিপাল হকুম।

முதலாம் பகுதி

সম্রাটের দপ্তর।

মূল মোটোমিটি।

ଆମରାଣୀ ମନିଷେଇ ଯେ କଳିକାଓର ଝୁ

1. *Journal of the American Medical Association*, 1997; 277: 1039-1043.

মৌনস্মিটীর শেষ সভাতে-নিষ্কণ্ণ কর
 ণে। যে এই মৌনস্মিটীর এক আনী পূর্বা
 লোককে কান্ডাণ্ড মূর্তি সাহেবইহতে
 পাঠশালা দিবার শিক্ষা করিবার জন্যে
 বহুমান পাঠাইয়া দিবে। কেননা মূর্তি
 সাহেবের পাঠশালায় ঘণ্টা করিয়া শ্রুতি
 জে। এই দ্বিানুসারে উইলার্ট সাহেবকে
 বহুমান পাঠাইয়া দিবে। আর এই স্থানে কত
 ক বাসিলা পণ্ডিত লোক তাহার নিচের
 শিক্ষা করিয়া থাকেন এবং তাহার
 যোগ্যতাবিধি কল্যাণে পাঠাইয়া
 বস। আমরা শুনিতে পাাইতেছি যে
 বড় আনী পণ্ডিতের মাঝে যদি কোন
 কের ইচ্ছা হয় তাহারাও যাইতে-পা
 আর পরীক্ষা সময়ে তাহারা লয় টি
 মান্য পাঠিয়ে তাহারদের মন
 পণ্ডিত লোকেরদের মাঝে যে বড়
 আনী ইহেবেক সেই মন লোক পা
 পাঠাতে উইলার্ট সাহেবের গুণকা
 করিবে ও তাহারদের যোগ্য বেত
 পাঠিয়ে।

পশ্চিম মেঘের দৌরাণ্ডা ।
কাজ মান ইহান মো' দেদলখায়ে
পশ্চিমায়ো ই-প্লায়ৈ ঈনোরে জাণনি
ইতে কিহি-অন্তরে চারি জন মহি
ধান কাটিকিহি ইহার যথো
নোরে নিকইবসি গুম্বরে লোকচা আমি
ই চারি জনের যন্তক চেদন করিল । ই
প্লায়ৈ সোনাণ্ডি ইহা জাত ইহায়া মে
নে গিয়া ই গুম্বরে মকল লোকচা
কে ডাকিলেন ও গুম্বরে পূবান পুজ
মহিত মে বিদ্যা কথা কহিহিডেন ই
যা ই দুম পুজা আদান বশুক বাহির
মহা ই সোবেরে যন্তক হুজি মারিল
ফলা-মাচের আঁপন হুজি মরাই

তাহাতে সাহেবের কোন হানি হইল না। সাহেবের সহিত উলঙ্গার জিন্দা লোক ও জিন্দা সাহেব তাঁহাকে মারিতে মারিতে পারিতেন কিন্তু তাহা না করিয়া কেবল তাহারদিকের অনুযোগ করিলেন। পরে গুমার আসক লোক দেখে নে এবং হইল তাহারদের সহিত এক বার তের বৎসরব্যক্তি বালিকা ছাড়া নে গিয়ে আছিল। পরে যে ব্যক্তি সাহেবের গুলি মারিয়াছিল সে আসন উলঙ্গার দিয়া ঐ বালিকা ছাড়া মৃতকর জেদ করিয়া সাহেবের নিকটে জেলিয়া দিয়া সাহেব বলে কহিল যে দেখা যদি আমায়দের পুষ্কালের মত পাকসম থাকিত তবে ঐ হল ভোমাকেও কাটিতাম।

অতএব পাকসম দেশীয় লোকেরা আত্মা পাণ্ড এইকন দোঁড়ায় করিতে বল হেঁচ কাঁড়িয়ে তৎপুষ্ক এইকন বর্মকাতে তাহার দোঁড়াজান করে না অন্য লোকের ক্ষুদ্র বুদ্ধি লোকটাকেও বরং বিলম্ব হয় উদ্দেশ্য লোককে হাশাশি পুনঃ বহুতে তে বিলম্ব হয় না।

হয়দরাবাদ।
হয়দরাবাদের মহিলারা এক শত ফোঁটা
অন্তরে কলীশমুখী নামে কিল্লার অধীনে
আশীশ ডালুকের হাতছাড়া দিয়ে, নম্র
করিয়ামিল তৎপুত্র হয়দরাবাদের
সৈন্য ইংল্যান্ডের সেনাপতির অধীনে
ডাহারদিগকে দেখালে পাঠাইয়া
ডাহার অধিকার করিতে গিয়া
করিভেতে অল্পনা হয় অতিশীঘ্র
কিল্লা অধিকার হইবে।

ଦିଗ୍ରାହ ।
 ଗଡ଼ ଯଶ୍ବନ୍ତରାୟ ବ୍ରାହ୍ମଣ ଯୋଗୀ ବାସି

সমাচার দর্পণ।

স্কুল মোটৈয়িটী।
আমরা পুনিভেদি যে কলিকাতার স্কুল

আমরা জানিওছি যে কলিকাতার স্কুল

সম্মাচার দর্পণ

ভাঙে অকস্মাৎ আকাশে ঐমত আলো দেখা গেল যে অগ্নি লাগিয়াছে এই জান করিয়া লোকেরা অগ্নি নির্বাহের ও পান্ন চেষ্টা করিতে লাগিল। ফলক কাল পরে সে স্থান আর দেখা গেল না। হিন্দু পণ্ডিতেরা তাহাকে দিগ্বাহি কহেন, এবং আরো কহেন যে যে দেশে ঐ স্থান দিগ্বাহি হয় সে দেশের মরল হয় না। পুণি বীর যে ওত্তর ভাগে সূর্যের তেজ অ দিগ্বাহি লাগে সেখানে সময়ানুসারে এই দিগ্বাহি অনেক স্থান থাকে ও সূর্যের মত অজ্ঞকার নশ্ব করে।

কুড়ীর।

১০ মে যো- বাগাতিতে বিকালে পাঁচ ঘণ্টার সময়ে নদীতে চৌদ্দ বন্দরের এক বালক মলন করিতেছিল পরে এক কুড়ীর আশিয়া তাহাকে ঝরিলে অনেক লোক সেখানে একত্র হইল ও মকলে অনুসন্ধান করিতে লাগিল যে কুড়ীর কোথায় বালককে লইয়া গেল। পরে ত লের মতো দেখা গেল যে সে বালককে খাইবার গুদোণী করিতেছে। পরে কুড়ীর আশিয়া হইল কিষ্কি-বিলম্বে ঐ বালককে ধুয়ে করিয়া ওগিল ও বালকের বাড়ি দ- শন করিয়া দুই দিগা আশ্রয়ান করিতে লাগিল। কিন্তু বালকের রফার নিমিত্তে ভদ্রী আনিতে ঐ এক ঘণ্টা বিলম্ব হইল পরে ভদ্রী আইলে আলোয়া আলহারা হইলকি ও বালককে ঝরিল কিন্তু কুড়ীর আশিয়া ও বালককে মৃত পাইল ও দেখা গিল যে বালকের মস্তক ও কঙ্ক খাইয়া গিয়াছে।

বাদশাহের জন্ম দিন।
আগস্ট মাসের ৪ তুন শুক্রবার

ঐশ্বপুত ইংলণ্ডীয় বাদশাহের জন্ম দিন সেই দিন সকালে যে লোকের যে ঘর খান্ড থাকে তাহা ঐশ্বপুত শুনিবেন।

শ্রুত রনজিৎ-সিংহ।

কাবোল দেশের সীমান্ত ওপরে অর্থাৎ শ্রুত রনজিৎ-সিংহের কংক কিছা আছে কিন্তু সেই কিছা যে তাঁহার অধীন নিত্য থাকিবে ঐমত ভরোনা নাই। কাবো লের রাআশাননের অধিরতাশ্রুত সে দেশের লোকেরা ঐ মকল কিছা লইতে এখন অসমর্থ আছে।

পূর্বে কাবোলের রাজা ছিলেন যে শ্রুত শাহ-শুজা তিনি আপন দেশ আপন নার অধীন করিতে গিয়াছেন কিন্তু বন ও মৈনোয় অভাবশ্রুত দিগ্বাহি নদীর পশ্চিমে পাঠে ঘাইতে পারেন নাই।

আমরা পূর্বে লিখিয়াছিলাম যে শ্রুত রনজিৎ-সিংহকে কাবোলের লোকেরা ওগিয়া আপন দেশ হইতে দূর করিয়া দিল সেই অবধি তিনি আপন মকল মৈনোশ্রুতি পুস্তক করিতেছেন। তাহার অভি লাঘ এই যে কাশ্মীর দেশ অধিকার করেন কিন্তু অনুমান হয় যে সে বিষয়ে তাহার মনোবশ দিগ্বাহি হইবে না। শতক্র নদীর নিকটে তাহার অধীন কতক মেনা পণ্ডিতগণকে ও কিছাদারেরদিগকে তিনি মৃত করিয়াছেন যেহেতুক পূর্বে তিনি যখন কাবোল জয়িত ঘাইতেছিলেন তখন ঐ মেনাপণ্ডিতরা ও কিছাদারেরা তাঁহার আ পন দেশ লুণ্ঠ করিয়াছিল।

অগ্ন্যুত্তর।

জনরব শুনা ঘাইতেছে যে অগ্ন্যুত্তর সিংহাসনে ওপবেশলোপশ্রুত এক বালক আশিয়াছে এবং অগ্ন্যুত্তর-ইস্রী তাহার

নাম রাখা গিয়াছে ঐ বালক যাবৎ পুণ্ডি বাদহাও না হইবে তাহা তাহার মাতা রাজ কর্ম করিবেন এই দ্বির হইয়াছে।

শ্রুত আশানাহব।

নাগপুরের মহারাজ শ্রুত আশানাহবের বিষয়ে হিন্দুধর্মে এই অনুরব হইতেছে যে তিনি গড় গোয়ালিয়রের নিকটে দিগ্বাহি মহারাজের আশ্রয়ে ও শুকনে কাল ফের করিতেছেন। হোলি কারের ওজীর রোশনবেরা যে গড় ব- নরে যো- ময়দানুরে পুণ্ডি হোলকা রের দ্বীকে বদী করিয়াছিল সে ব্যক্তি আ শানাহবকে আপন নিকটে রাখিতে চাহি য়াছে কিন্তু অমরা বুঝি যে তিনি কোন আশ্রয় থাকিতে পারিবেন না।

নাগর পুদেশের যে মকল তেঁওন আ শিরগড়ে গিয়াছিল সে মকল পুদেহা হ নিরাবো দিগ্বাহি আশিয়াছে।

অযোধ্য।

মোলতানপুরের নিকটে বহিয়া নামে কিছার কিছার মকলোয়ের নবাবের চাকর হইয়া ও তাঁহার পুত্রকুল চেষ্টা ক রিতেছিল এইহেতুক ঐশ্বপুত মের লোণা নাহব সে কিছা অধিকার করিতে গিয়া কৃতকার্য হইয়া আশিয়াছেন তা হাতে এক জন ইংলণ্ডীয় শিশাহী ও পাঁচ জন এতদেশীয় শিশাহী আঘাত হইল এবং বিপক্ষলক্ষী মাইত্রিশ জন মারা পড়িল।

ইংলণ্ডের রাজা।

ইংলণ্ডের রাজা শীতিত-তিনি কোন কর্ম করিতে পারেন না তাঁহার সেবা শুভ যদি কর্ম এতকাল তাঁহার জী করিতে

সমাচার দর্পণ।

সেই মুহূর্তেই রানী বৎসরে আট লক্ষ টাকা পাতিয়ে নগ্নপুত্রী রানী মহিষা জেন সেই বহুতীহার বিজয় পুষ্ট পাই যারেন তিনি এখন সাজে পীত লক্ষ টাকা পাইবেন।

হাতী বীরা।

১১ জুন হুগলি দেশে বৈশিষ্ট্যের পর রের লিফটম্ব বনে হস্তী বিজয়ার কারণে তিন হাজার লোক একত্র হইল এবং এই বনে এমন এক স্থান আছে যে তাহার তিন দিকে পর্যন্ত এক দিক (মাল) যে দি কে পর্যন্ত নাই সেই দিক লোকেরা বায়া করিতে ও গোর করিতে ও হাতীই পুত্র তি করিতে লাগিল এই পুকার সতি আ টি বন কর্তে সরল হইল ইহাতে কোন হস্তী বহির হইত না। পরে তাহার লিফটম্ব বনে দূর লইয়া বড় গভীর পাণীর কাঠিন কিন্তু হস্তি পু বেরণে পথ দ্রাঘিবার কারণে না দিক স্থান কাঠিন না। পরে সকল লোক আর এক দিকে বায়া ও গোর করিতে লাগিল ও হাতীই করিতে লাগিল তাহাতে ডেঙ্গু টা হস্তী এই পথদ্বারা সেই পাণীরে ঘি ত স্থানে প্রবেশ করিবে যত্ন যে পথ সুবিধা দিয়াছিল সেখানেও পণীর কাঠিন। অতঃপর সেই হস্তির মাথা তাঁটে পোলা ইকিনাবে লইয়া গেল এবং পুত্রি হস্তি নীর ওপর একা মাহুত এক পুকার গুহ হ ইয়া রহিল যে সেই বন্য হস্তির আশ্রিতে পাশের পরে তাঁটে পোলা হস্তির হাতী একা বন্য হস্তিকে স্বতন্ত্র স্থানে লইয়া গিয়া মাহুত অতিমাত্রায় লক্ষ্য বন্য হস্তির পায়ে বড় বড়া দিয়া এক বক্ষের

সহিত বাজিয়া পশু পলাইল এই হস্তি নীরে ক্রমশিঃ বুকিয়া সময়ে মাহুতের শিকটে আইল।

এই পুকার সময় দিনের মাঝে ডেঙ্গুপটা হস্তী বীরা গেল ও চতুর্দিকে বক্ষের ওপর থাকিয়া অনেক লোক তদ্রূপা দেখিল। ইহাতে অতিশয় হৌতুক ও মাহুতের সা হন এই যে যখন মাহুত বন্য হস্তির পায়ে বড়া দেয় তখন যদি বন্য হস্তী আশ্রিতে পায় তবে তখনি মাহুতকে ধন করে। এবং যখন হস্তী আশ্রিত বন্ধন হইল পুণ্য আশ্রিতে পায় তখন সে কি পুকার আশ্রিতল করে ও চক্ষু কর করে ও মাহু কেবলি গর্জন করে তাহা দেখিলে বড়া মাহুদী ব্যক্তিরও মুগ্ধ হয়।

লুণ ক্রিয়া।

ইংলণ্ড দেশে এমত লিখিত আছে যে যদি কো'লোক আশ্রিত বুদ্ধিহারা যে কোন লুণ সৃষ্টি করিতে পারে যে তা হাতে লোকেরদের ওপার হয় তবে সে আশ্রিত পুণ্য ও বিদ্যানুসারে পারিতো দিক পায়।

সম্মতি গত বৎসরে ইংলণ্ডে এক ব্যক্তি এমন এক পুকার ফার ও তাহার সহিত দুই দিন আর বস্তু সৃষ্টি করিয়াছে যে সে ফারও সেই বস্তু কাগজের সাজে দিয়া কাগজ করিল সে কাগজের ওপর লি খিলে সে অক্ষর কখনও লুপ্ত হয় না। এবং আর এক ব্যক্তি এক পুকার সৃষ্টি করিয়াছে সে পুকারের আলো যত পুত্র লিত হয় তত তেল কম থরত হয়। এই দুই জল পারিতোষিক পাইয়াছে।

আজমের শহর।

আজমের শহরইহাৎ সমাচার আশ্রিত যাকে যে সেখানেই পুত্রী-রদেরের হস্তি হইয়াছে যে জরুর ঘদিবার কারণে আজমের শহরে চারি জোণ ও স্বতক ইমলা পুস্তত হইয়া থাকে।

জরুর।

জরুরের মৃত রাজার বীর এক পুত্র হইয়াছে গত বৎসরের শেষ মাসে যৎ বালক সেখানেকার সিংহাসনে বসিয়া ছিল সেই বালককে ও তাহার চাকর পুত্র সনাককে সেখানেইহাতে মৃত করিয়া দিয়াছে এবং এই আত্মমাত্র বালককে সেই সিংহাসনে বসাইয়াছে।

দশহরা।

৩ জুন ১১ জ্যৈষ্ঠ বৃহস্পতিবার দশহরা সে দিনে অনেক দূর দেশইহাতে অনেক লোক গন্ধকুশল করিতে আসিবে।

পাঁহ অক্ষর।

অক্ষর পাঁহ বাহুপাঁহ বাহুদুর অক্ষর পঞ্চম বর্ষবয়স্ক ছিলেন তখন এক ছিল তাঁহার শিক্ষক তাঁহার বুদ্ধি পশীকা করিয়া কাঁচ এক স্থানে বালিয়ায় বুদ্ধিতে এক দ্যা দিল ও তাঁহাকে কহিল যে এই দ্যা তুমি স্পর্শ না করিয়া চেষ্টে কর। পাঁহ অক্ষর অতি বুদ্ধিমান ফলক কাণ তাদিয়া এই দ্যার লিফটে এই দ্যা হইতে এক লক্ষ দ্যা দিলেন। শিক্ষক ইহা দেখিয়া তাহার বুদ্ধিতে চমৎকার ভাল কহিল। জাতি তাহার বুদ্ধির অনেক কথা সে কেরা করিয়া থাকেন।

এই সমাচার দর্পণ পুরানপুত্রে হালাখানাত পুতিনভাবে পরিবারে হালা হয়। বাহার লভেরে আশ্রিত হয় তিনি পুরানপুত্রে হালা বায়া আলম বাপ পাইয়াই লভাবে কারন তাঁহার লিফটে পানন হাইবিক তাহার মৃত্যু হানে এক টাকা। যদি বাহার করিয়াছেন যদি তাহার লিফট কলার কর্তা বা লিফট তবে তিনি পুরানপুত্রে হালাখানাত সমাচার দর্পণের তাহার লিফটে পানন হাইবিক।

সমাচার দর্পণ

६६ मंथाना

ଦର୍ପଣେ ଯୁଧ୍ୟ ମୌନ୍ଦର୍ପ୍ୟସିବ କାର୍ଯ୍ୟବିଚକ୍ଷଣାଃ । ବୃତ୍ତାନ୍ତାନିହ ଆନନ୍ଦ ମୟାଚାରମା ଦର୍ପଣେ ॥

কোম্পানির দাঁড়।

কোল্লানির শতকরা জয় টাকার মুদ্রের
কাগাজ ফয় করিতে হইলে শতকরা দশ
আনা ভিষকোড়। বিফয় করিতে হইলে
শতকরা চৌদ্দ আনা ভিষকোড়।

ମଞ୍ଜୁହର ପଞ୍ଜିକା ।

| | | | | |
|----|---|----------|----|---------------|
| ५ | अ | अभिवात्र | १४ | इच्छा |
| ६ | अ | अभिवात्र | १५ | अ |
| ७ | अ | लोमवात्र | १६ | अ |
| ८ | अ | अभिवात्र | १७ | अ अग्न्युच्छा |
| ९ | अ | अभिवात्र | १८ | अ |
| १० | अ | अभिवात्र | १९ | अ |
| ११ | अ | अभिवात्र | २० | अ |

স্কুল মোটরগেট।

কলিকাতা জুন মোটমেন্টের বাজে
পটশালার ওক ও বালকেহরিদিগের পরী
ক্ষার কারণ আসলক ভাণ্ডারস্থ ই-রাস
ও শহরস্থ ভাণ্ডারস্থ বারান্দী ও পণ্ডিত
শ্রীযুক্ত তান্তা গোবিন্দমোহন দেবের বাটী
তে ১০ আশ্বিন মঙ্গলবার একত্র হইয়া
লেন পরে শ্রীযুক্ত গোবিন্দমোহন পণ্ডিত ঐ
সকল ওক ও বালকেহ ডাহারাদিগের সম্মু
খে আনিয়া পরীক্ষা লইলেন পরে তাহা
বিধিয়া সকল সাহেব লোক ও বারান্দি
গণকে মনুষ্য হইয়া সেই ঐ ওক ও বাল
কেহদিগের শরিতোষার্থে ঢাকা ও বহি
রিতে আজ্ঞা করিলেন ঐ পণ্ডিত সাহেব
লোকের আত্মানুসারে ওকহরিদিগকে
যথোপযুক্ত ঢাকা ও বালকেহদিগকে বহি
রিতে মোটমেন্টের এই কল সুপ্রা
চিন্দিতা এবং বালকেহদিগের আসল

দ্বয় দেখিয়া মর্জাষ ভাংগাৱহু বাশিনি
মকল মোটৈময়েধীৰ মাশাণা ৰঙিতে
স্বীকৃত ইহেলেন ।

আর ৭১ জনিবার স্কুল সোর্সিস্ট্রি
বিষয় দাঁড়াইছিল। তাহার মধ্যে লিখা
চিঠাখিনি যে কলিকাতা স্কুল সোর্সিস্ট্রি
৩ পাঠশালায় কর্তৃক করিতে শিক্ষা করি
বার আসা যে-ওইলিভিভিতে বহু
মান পাঠন চিঠাখনি তাহারে দেখান
করি কান্তান যুগোষ্ঠি সাহেবের পত্র
দ্বারা জানা গেল যে ঐ সাহেব বড় জানি
ও ও-কর্মোঁমুখ অতঃপর অনুমান হয়
যে ঐ সাহেব যে পাঠশালায় গণ্য কর্তৃক
করিলেন তাহার সুদীর্ঘ অধ্যাপনা হইতে
পারিল।

इसु!इरु !

ঐযুত সেন্স শিয়র সাহেব এক ইস্তা
হার দিয়াছেন যে কোম্পানির দুই হাজার
গাভি পাটনাই কোম্পানির মুদ্রাজন আছে
এবং যে ব্যক্তির বাসনা হয় তিনি যোগ্য
আলিপুর গাভী সাহেবের সহিত এই
বিষয় বন্দোবস্ত করিবেন ।

ଆମୀ ବିଦ୍ୟାୟତ୍ର ଇନ୍ଦ୍ରାହାର ।

जलजल नोकेरु जमीन जमिन जेकादाह रोज ए ठाँहि
 जलजल जलजल नोकेरु जलजल नोकेरु जलजल नोकेरु
 हईरेक जल ए जलजल नोकेरु जलजल नोकेरु जलजल नोकेरु
 जलजल नोकेरु जलजल नोकेरु जलजल नोकेरु जलजल नोकेरु
 हईरेक ।

ৱাৰ্শিক ব্ৰহ্মচৰিত্ৰঃ ১ জুলাইলৈ ১৯১৯ ইং সন ১৫১৯
 ১৯ জ্যৈষ্ঠ বাঁ বোতলিবলৈ লালটোৱি বৰ্ত্তমানলৈ ।

ଉତ୍କଳସାହିତ୍ୟ ସମିତି, କଟକ ୨୦୧୬

ପରିଷଦ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବ୍ୟବସ୍ଥାପନ ୨୧ ଜୁନ ୧୯୮୦ ଓ ୧୯୮୧ ମସିହା
ମଧ୍ୟ ୧୯୮୧ ବର୍ଷ ଆବେଦନ କରାଯାଇଥିଲା ।

ইতি ৩১-১২-১৯৪৬ ইং বোর্ড প্রিন্সিপাল মহোদয়ের।

নৌমিক নৌগে: তৎসমি: লক্ষ্যকৃত: দাবী: জাহাজ: ক্রয়:
 মুক্তাংশদানে নিম্নো: বিক: হইবে: অর্থাৎ: অঙ্গীশে: ইচ্ছা:
 বোর্ড: বিনয়: লক্ষ্য: হইবে: অর্থাৎ: অঙ্গীশে: ইচ্ছা:
 হই: জাহাজ: বিনয়: হইবে:

ନିଜାବାଦର ଦୃଷ୍ଟି ଆଦାର କରିବ ।

যেদিনিন্দুর দৃষ্টিবিদ্যার সন ১৯১৯ ৮ জুলাই ইং সন ১৯১৬ ২৪
জ্যৈষ্ঠ বা- যেদিনিন্দুর সেটোনি বসন্তকালীন।

বিশ্বনাথ দ্বন্দ্বভিয়ার লগ ১৮১৯ ১ জুলাই ইং লগ ১৯২৬ ১৮
জ্যোতিষ বাণী বৌদ্ধবিহার লক্ষ্যটোয়ি হস্তরক্ষণায় ।

महकादेव हाकी अंगदह आवाह काह ।

সুহৃৎসংবাদ এ নিম্নরূপ এ যিহা দূরত্ববিহীন ১ জুলাই ১৯৬১ ইং ১৮ আশ্বিন মাস ১৯৬১ বাং ফালগুণি কাকাদিতে :
ইতি তারিখ ২৫ মে ১৯৬১ বাং বিজয়ন্ত দ্বতমে ।

অনেক মোকদ্দম জমিদারি জমা'দারি কোর্ট ও চারি

জনন পীড়ের তখনকার মাঝিও মুকাম্ব খালে গিলাবে বিকল্প
হুইয়েক জমা ও জমীনের উচ্চিকৃত বোয়িরবনর সেক্টরি
বহুখণ্ডীয় অর্থ। জমাচার কামেকরি কামাট্রিও বাস
হুইয়েক।

विशालिङ्ग भैरव ज्योतिर्लिंग स्थानः ।

16. જાણાવે કે, લોકશિક્ષણના કાર્યકારી સંસ્થાનામાં :

जड़काइइइ बाकी आइइइ जमीन बाइइइ ।

वांछित वस्तुनिर्वाह १ जूनार्हे जन १८ १७ ई० जन १९२७

७७-आवांद् रा० कावेरुत्ति कावात्तिरे ।

डाकिंगुम दसवतियार ४ जुलाई नम १७ ११ ई० १६ कादाह
नम १११३ डा० कावेकाहि कादाहिये।

ইতি তারিখ ১ জুন ১৯১১ ইং বোম্বাইয়ের হকুমত :

সমাচার দর্পণ।

11/20/2011

पश्चिम आमेरिकाया मूलधर्म ।

দক্ষিণ আমেরিকাৰ এক প্ৰদেশ পোৰ্তুগী

1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 26

সমাচার দর্পণ।

শের দ্বারা অতীল সেই পুবেশের এক ভাগে গত বৎসর ওপল্লব হইয়াছিল পরে বাদশাহ আপন ওজীরকে সেইখানে পাঠাইলেন ওজীর তথ্যেতে নীচিয়া অনেক ওয়োগদ্বারা সে ওপল্লব দূর করিয়া সে দেশে শান্তি করিল এবং এই ওপল্লবের দ্বীপ বীল দ্বারা আয়ত্ত্ব করিল বাদশাহের অল্পম্য কাঙ্গালীর বহু করিয়া বাদশাহের নিকটে আছিল। বাদশাহ সকল বুভুক্ষু শুলিয়া এমত তুল্য হইলেন যে অমিলিত কর্ত্তবে আপন নাম দস্তখত করিয়া ওজীরের হস্তে দিয়া কহিলেন যে তোমার যাঁহা বাঞ্ছা হয় তাহাই ওপরে লিখ আমি তোমাকে দিলাম তাহাতে ওজীর আপনীর লিখিতে বিন ভ্রমাদি কিছু না লিখিয়া এই লিখিল যে সেই পুবেশে ওপল্লবের পর যে লোককে কাঙ্গালীর বহু করা গেল তাহার দ্বারা ওপল্লব দূর করিয়া লিখিয়া দিলেন বাদশাহ তাহা দেখিয়া তুষ্ট হইয়া স্বীকার করিলেন।

/ জল।

চতুর্থ বৎসর হইল যখন আমেরিকা দেশে ইংল্যান্ডেরা আমেরিকায়েরদের সহিত যুদ্ধ করিল তখন এক জন ইংল্যান্ডীয় সেনাপতি অনেক ক্লেশ সহিয়া এবং অন্য ইংল্যান্ডীয় সেনাপতির নিকটে আত্ম ক্লেশের সমাচার পাঠাইতে আর কোন ও পাণ্ডা না দেখিয়া আপন চাকর এক জনের হাতে একটা কাগজ গুলি দিল ও কহিল যে অল্পকাল নগরেতে ক্লিগন নামে ইংল্যান্ডীয় সেনাপতির হাতে এই গুলি দিবা এবং পঞ্চমধ্যে যদি তোমার কোন বিপদবৃত্তি হয় অথবা বিশঙ্করত্ব হইত হইত তবে এই গুলি গিলিয়া খেলিও। পরে সেই ব্যক্তি নগরে পঁয়ত্টিয়া ক্লিগন নামের কারন জিহাদা করিতে লাগিল

কিন্তু ইংল্যান্ডীয় সেনাপতি সেখানে ছিল না। এই নামে এক জন বিশঙ্ক সেনাপতি সেখানে ছিল। তাহার নিকটে গিয়া এই ব্যক্তি বিশঙ্ক সেনাপতি দেখিবামাত্র এই গুলি গিলিয়া খেলিল ইহা দেখিয়া সে বিশঙ্ক সেনাপতি তাহাকে বন্দন করাইয়া এই গুলি বাহির করাইল এবং দেখিল যে তাহাতে একটা বৈদ্য ছিল পরে সেই মূলিয়া দেখিল যে তাহার ভিতর ক্ষুদ্র এক চিরী ও সে চিরীতে এই লিখিত ছিল যে আমি ও আমার সৈন্য এখানে উভ্যন্ত ক্লেশ পাইতেছি অতএব তুমি আপন সৈন্য লইয়া আমার নিকটে আইস এবং বিশঙ্কদের হাত হইতে আমাকে রক্ষা কর।

/ রোম নগরের নিকটে নদী।

রোম নগরে এখন দুই হাজার বার্ষিক বৎসর পুঙ্খ হইয়াছে তাহার নিকটে তৈবর নামে নদী বহে এই আড়াই হাজার বৎসরের মধ্যে সেই নগরেতে অনেক মহাকর্ম্ম হইয়াছে ও অনেক বিন সঞ্চয় হইয়া পুঙ্খ হইয়া এই নগরমধ্যে বয় হইয়াছে এবং অনেক ভিন্ন আতিরা সেখানে আসিয়া সে নগর অধিকার করিয়াছে এই কারণ অনুমান হয় যে সেই নদীর মধ্যে অনেক বীল ও পুণ্ডীন মুদ্রা ও গুলি ওদবার পুণ্ডি অনেক আশ্র আছে। আমরা শুনিয়াছি যে এই ভরোমাত্তে রোম নগরে একটা মল্ল দায় স্থির হইয়াছে। তাহারদের এই কর্ম্ম যে সেই নদীর তলার মৃত্যিকা তালাইয়া এই সকল বসাদি একত্র করে এবং তাহাতে যে অর্থ পাওয়া যাইবে তাহা এই মল্লদায় কাছাকাড়ী লোকেরদের মধ্যে ভাগ হইবে। এই নগরগত তিন হাজার বৎসরের

মধ্যে কত অসংখ্য মুদ্রা ও নানা মুকুর মুদ্রা ভূরিয়া গিয়াছে এই সকল যদি এখন কোন মনোভিক্ষু একত্র করা যায় তবে এই ভরতবর্ষে পুঙ্খকাল যে পাওয়া যাইল এই পুণ্ডীন মুদ্রা পুণ্ডি দ্বারা তাহারদের অনেক বিবরন পাওয়া যায়।

কাবোল।

পশ্চিম দেশের সমাচার পত্রদ্বারা শুনা গেল যে শাহ শুজা কাবোল দেশে তরু করিবার নিমিত্তে পেশোয়ার নগরে পঁয়ত্টিয়া জেল সেখানে মহামুদ নামে এক ব্যক্তি এই দেশে আপন অতীল রাগিয়া কহিল যে শাহ শুজা আছিল এই দেশে তাহাকে সমর্থন করিব কিন্তু শাহ শুজা যখন পেশোয়ার নগরে ওপহিত হইলেন তখন এই মহামুদ সকল সৈন্য একত্র করিয়া তাহার সহিত যুদ্ধ করিয়া তাহাকে সেখানেই হইতে তাড়িয়া দিল। এই শাহ শুজা এখন কতক পহঁতায় লোক একত্র করিয়া পেশোয়ার নিকট পহঁতের ওপরে জাতি করিয়াছেন। সে পহঁত এই মত লিখিত যে ঘুঘর সময় যখন সৈন্য সকল সাবধানে থাকে তখন সেই পহঁত যদি এক জন অশ্বাবহ যায় তবে তাহার খোঁচার পায়ে পুণ্ডি বীল শুনিয়া সকল সৈন্য একত্র হইয়া তাহাকে লক্ষ্য করে।

শ্রীযুত রণভিক্ষু-হ।

শ্রীযুত রণভিক্ষু-হ কাশ্মীরে যখন করিতে আনল সৈন্য লইয়া গিয়াছেন তিনি লাহোরের ও কাশ্মীরের মহাবর্ষ স্থানপত্রকে পঁয়ত্টিয়াছেন। বুঝা যায় যে তাহার কাশ্মীর দেশে গতিয়াত করণ শাহ শুজার কিছু ওপল্লব হইতে পারে। এই পশ্চিম দেশের সমাচার পত্রদ্বারা ইহা

সমাচার দর্পণ ।

শ্রীনা গৌল যে আশীর গাতের কিল্লাদার
যাণেবস্ত্রাঙ্গার আশান মলিন নিষ্কিয়্যার
নিকট যাইতে ভীত হন যেহেতুক তিনি
শ্রুতিযুগেন যে গড় গোয়ালিয়রেতে বঁধ
ক্লিষ্যোত্র তিনি তাহাকে খুল করিবেন ।

দুই বৎসর হইল আগারার নিকট
বর্তি আশ্রম কিল্লা ইংল্যান্ডেরা যুদ্ধ
করিয়া লইল তাহার কিল্লাদার দয়ারাম
সে সময় পলায়ন করিয়া পরতে আশ্রয়
করিল তাহার আশ্রয়িতা এখন ইংল্যান্ড
য়েরেবর অধীন হইয়াছে এবং আমরা
শ্রুতিযুগি যে ২ দয়ারাম এখন ইংল্যান্ড
য়েরেবর শরণার্থিত হইয়াছে এবং শ্রী
মুত তাহাকে ষড়গণে রাহিয়াছেন ও
মান্য অল্প বেতন দিতেছেন ।

আজমের ।

আজমের নগর ও উৎসব এখন
ইংল্যান্ডেরদের অধীন আছে এবং তা
হারাজ আজমের নগর রাজপুতানার
রাজবাণী করিয়াছে সে নগর পূর্বে ভূষ
হইয়াছিল তাহার রাজগৃহ ও মসজিদ
ও মন্দির পুড়িত সকল নষ্ট হইয়া গিয়া
ছে কিন্তু এখন ইংল্যান্ডেরদের অধিকার
আসিয়া সেই নগর পুনর্বার বস্তু হই
তেছে । সেখানে বৎসর অন্তরে একটা
মহাফাঁট হয় হিন্দুধর্মের অতিমুদ্র দেশ
হইতে দুই মসল আসিয়া সেখানে
বিক্রয় হয় লাগার দেশহইতে গর আসিয়া
সেখানে বিক্রয় হয় তাহার এক জোকা
গর মূল্য চারি শত টাকা ।

রাজকল্যাণ নিয়োগ ।

১৩ এপ্রিল শ্রীমুত চার্লস বেগি সাহেব
বোর্ড আজ ছেঁত অর্থাৎ বাণিজ্য দপ্তরের
কর্তৃপক্ষ ।

৩ এপ্রিল শ্রীমুত মোঃ আল মোরসিম
সাহেব রক্তপাতের পেকার ।
শ্রীমুত মোঃ ওআব্দুল নিসবের সাহেব
বাণিজ্যদপ্তরের সেক্টার ।

আহাজ আমদানী ।

১ জুন তারিখে এক আহাজ ফটন
দেশহইতে কলিকাতায় ঐচ্ছজিল তাহার
পথে আসিতে পাঁচ মান গড হইল তা
হারহারা শ্রীনা গৌল যে বাদশাহের ও
জীরের মদৌ কড়ক লোক পরিবর্ত হইয়া
অন্য লোক তাঁহাদের লিখিত হইয়াছে ।

রাজবাণীসাহারক ।

ভারতবর্ষে ইংল্যান্ডেরদের অধিকৃত
এক ভণীধর এক মুদা মনুষ্য তারি কর্ম
পাইয়া আশনার সকল বিন বয় করিল
এবং সরকারী ডাইবিলহইতে সাত পাঁচ
লক্ষ টাকা বয় করিল । সে ব্যক্তিকে এখন
ইংল্যান্ড লইয়া গিয়াছে এবং তাহার
বিষয় মোকদ্দমা হইবে ।

ইংল্যান্ডীয় বাদশাহের হারা হারান ।

আমরা পূর্বে লিখিয়াছিলাম যে বাদ
শাহের অনেক টাকা হারা হারাইয়াছে
সে হারা অস্বাভাবিক ও পণ্ডিয়া যায় নাই ।

হালিয়র বিচার ।

হালিয়র দেশের রাজা পুরুলালে যে সফ
ল ভাল ও জানবান লোকেরদিগকে কারা
গীর বদ্ধ করিয়াছিল তাহারদের বিষয়ে
সেই রাজা এই নিষ্কল্য করিয়াছে যে তাহা
র স্ত্রী এখন গর্ভবতী আছে যদি সেই
গর্ভে পুত্র জন্মে তবে ঐ সকল বদ্ধ লো
কেরা খালাস পাইবে কিন্তু যদি কন্যা
হয় তবে তাহার পুত্রমতে বদ্ধ থাকিবে
এই প্রকার সে দেশের সুবিচার ।

সুনান্যত্রা ।

আগামি মঙ্গলবার ৮ জুন ১৭ জ্যৈষ্ঠ
মোঃ মাহেশ জগন্নাথদেবের সুনান
যাত্রা হইবেক । এই যাত্রা দর্শনার্থে অ
নেক তামসিক লোক আবার বৃহ
বলিতা আসিবেন ইহাতে ষ্ট্রামপুর
ও চাত্রা ও বহুভূর ও অকনা ও মাহেশ
ও গ্লিনিতা এই কএক গ্রাম লোকেতে পরি
পূর্ণ হয় এবং পুর্নদিন রাত্রিতে কলিকাতা
ও চুটু ও ময়নামতীর পুজি শহর ও
উত্তরবর্তি গুয়াহাটে বত্রা ও শিলিম
ও ভাণ্ডলে এবং আর্য লোকেতে অনেক
*দুত্বাল লোকেরা লালপুকার গান ও কা
দ্য ও লট ও অন্য পুকার ঐহিক সূচনা
বিন মাধ্যমিতে বেষ্টিত হইয়া ষ্ট্রামেন
পরিধি দুইপুর্নের মদৌ জগন্নাথদেবের
সুনান হয় । যে স্থানে আগারায় সুনান
হয় সেখানে প্রায় তিন চার লক্ষ লোক
একত্র বীড়াইয়া সুনান দর্শন করে ।
পুলকোমক্ষেত্র ব্যক্তিরকে এই যাত্রা
এমন সমারোহে অন্যত্র কোথাও হয় না ।

তাকতি ।

গড রবিবার মোঃ বোকাইয়ের নি
কটে মোঃ গারবিবপুর এক দৈবজ্ঞের
বাটীতে তাকতি পড়িয়াছিল বাটী রক্ষক
পাইক কর্ম্মদেয় সে সময়ে (সে বাটীতে
জিল না তাকতিরা আসিয়া নিষ্কল্যে
যথাসম্বন্ধ লুট করিয়া স্বল্পদে চলিয়া
গেল । পরে পাইক দুই জোকা আসিয়া
সকল বৃত্তান্ত শ্রুতিয়া তাকতিয়দের প
ক্ষাৎ ১২ ঘণ্টিল এবং সাত দিন কোণ
পথ চলিয়া অতি প্রত্যয়ে তাহারদিগকে পা
ইয়া তাহারদের পুতি আফ্রান করিতে
আর সকল তাকতিরা পলাইল কেবল
দুই জনকে জব্দাবৃত করিয়া ধরিল । ই
হাতে ঐ দুই জোকা পাইকের সাহস

সমাচার দর্পণ।

যেখানকার লোকেরা
তাঁহাদেরই হইয়াছিল।

সহায়তা।

তৃতীয় সন জেলা হাঙ্গারে এক শত
বার জী সহগামি হইয়াছে গত বৎসর
সর ১ জেলাতে দুই শত জী সহগামি
নৌ হইয়াছে কিন্তু গত বৎসর যে এত
অধিক হইয়াছে ইহার কারণ কিছু
নির্ভর্য হয় নাই। অন্য জেলাহইতে
জেলা হাঙ্গারে অধিক সহগামি নিত্য
হই।

পশ্চিম হিন্দুস্থান সহায়তা বারিলা
হইতে অতি দূর এবং সেখানে এমন
গ্রাম আছে যে সেখানকার লোকেরা কে
বল সহায়তের নামমাত্র শুনিয়াছে
কিন্তু কখন চক্ষু দেখে নাই। সেখানে
সহায়তা হইলে পর চিহ্নার্থ গরীবের
একট মত দেখিয়া রাখা কিন্তু রাজ্যের
রায়ের দিত্য সহায়তা হয় গত বৎসর
অশেষীয় এক জন রাজা মরিগেল এবং
তাহার সহিত তাহার ভ্রাতৃপুত্র দুই পুত্র
মরিগ।

গঙ্গাসাগর উপবীথ।

যাহার গঙ্গাসাগর সোমেশ্বরী ভবানী
কল্যাণী হইয়াছেন তাহারদের পুত্র ১ সো
সোমেশ্বরী সেক্টারী সাহেব এক ইন্সপেক্টর
পুলিশ করিয়াছেন যে ১০ জন ডারিংয়ে
১ সোমেশ্বরীর অন্তর্গত লোকেরা দৌল
হলে অর্থ্য সহায়তা করে একত্র হই
য়া ১ সোমেশ্বরীর বিষয় কিছু দিহ করিতে
হইবে।

এলাউগ।

দক্ষিণ দেশে ইংল্যান্ডীয় সৈন্যের জাউনি
হইতে শুনা গেল যে সেখানে এলাউগ
রোগ পুনরায় বৃদ্ধি হইতেছে মোং বিজা
পুর ও শিকরতে অন্য স্থানহইতে অ
ধিক হইয়াছে। বোম্বাইহইতে পূর্বে শুনা
গেল যে ডারিংয়ে দেশে এলাউগ রোগ
দমন হইয়াছিল কিন্তু এই বস্তার শুনা
গেল যে এলাউগ আরও বৃদ্ধি হই
য়াছে।

পাহাড়ীকর বেতন।

গত বৎসরে যখন পুনার লিকটে
যুদ্ধ হইতেছিল সেই সময়ে প্রযুক্ত
বাস্তান চান্দন সাহেব সাত আট শত
তৈয়া লইয়া দুই বার ঘণ্টা পর্যন্ত বাজি
রাও পেশওয়ার মকল সৈন্যের সহিত
যুদ্ধ করিল। এমন সাহস ও পরিশ্রম পুনা
গত যুদ্ধে অন্য স্থানে পূর্ণ হয় নাই
এবং এই সময়েও বিলাতে পৌরিলে
কোলালি এই সকল শুনিয়া আশ্চর্য
ভুক্ত হইয়া ১ কস্তানকে বন্দুকা এক
তলবার ও চার হাজার টাকা পারিতো
ষিক দিয়াছেন। এবং ১ দেশে প্রাপ্ত
১ কস্তানকে দুইশ অধিক এক কিস্তি
কিস্তিয়ার করিয়াছেন।

// নতুন পুস্তক।

প্রযুক্ত বাবু রামকমল সেন হিন্দুস্থানী
জাণীখানাতে এক নতুন পুস্তক জাণী
য়াছেন তাহার নাম ওষধীসারসংগ্রহ
অথবা মস্তারের ব্যবহৃত ওষধি নির্ণয় ১
পুস্তক অতি ওৎকরক এবং ১ পুস্তকের
মধ্যে জাণী পুস্তক ওষধীর বিবরণ ও
তাহা খাইবার ক্রম সকল লিখিত

আছে এবং বেশ পড়ায় বেশ ওষধি
সেবন করা ওৎকর তাহাও লিখিত
আছে। ইংল্যান্ডীয় বৈদ্যক শাস্ত্র বারিলা
ভাষায় কেহ ওৎকর করে নাই এমন
এই এক পুস্তক পুস্তক হওয়াতে আমায়
দের ভরসা হইয়াছে যে সময়ে ওৎকর
ইংল্যান্ডীয় বৈদ্যক শাস্ত্র বারিলা ভাষায়
পুস্তক হইতে পারিবে এবং যদি এই
ভরসা সফল হয় তবে এতদেশীয়
লোকেরদের যথেষ্ট উপকার হইবে।

কাটাওয়ার কত।

দুই হস্তা হইল মোং কাটাওয়াতে এক
মহাকত হইয়াছিল তাহাতে শিলাবৃষ্টি
হইয়া সেখানকার কৃষিকর্মের বিস্তর
ব্যাহত হইয়াছে এবং বজ্রপাত হইয়া
সেখানকার এক খান বড় লোক মার
ইয়া গিয়াছে। এবং কত এমন হইয়া
ছিল যে তাহাতে একটা পাখা গাথিল
মানস পড়িয়া গিয়াছে। অন্য দুই
তিন খান লোকও মারা গেল ও সেই লো
কতে দুই জন শিশুও ছিল তাহাদেরও
তুহিয়া মরিয়াছে।

অয়পুর।

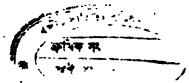
প্রযুক্ত মর দেবব অস্তরলোনি সাহেব
এখন অয়পুরে আসিলেন এবং সেখান
বন্দোবস্ত দিহ করিতেছেন তিনি অনেক
সৈন্য আয়ের হইতে অয়পুর আনাই
য়াছেন।

দিল্লী।

দিল্লীহইতে অনেক টাকা কোলালির
সৈন্যের ব্যয়ার্থে লুণ্ঠিয়ালাতে দিহিয়া
দিতে সৈন্য দিল্লীতে পৌঁছিয়াছে।

এই সময়েও পুনারপুত্রে হাঙ্গাখানাতে পুত্র সন্তান পরিবারে হাঙ্গা হয়। যাহার লগনের আশ্রয় হয় তিনি পুনারপুত্রে হাঙ্গাখানাতে
আগন নাম পাঠাইলে সন্তান, কাশর তাহার নিকটে পাঠান হইবে তাহার মূল্য মানে এক টাকা। যিনি বাস্তব করিয়াছেন যদি তাহার দিহ
নগার পুত্র ১ পুত্রের ভবন, তিনি পুনারপুত্রে হাঙ্গাখানাতে নগার দিবানি তাহার নিকটে পাঠান হইবে।

সমাচার দর্পণ



১৯ নংখ্যা

শনিবার।

৪১ জুন মন ১৮৭৯।

৩৪ আশ্ব. মন ৪১২৩।

দর্পণে মূল্য দোদগ্ধমিহে স্বার্থবিহীনঃ।

ব্রাহ্মসানিহ আনন্দ সমাচারমা দর্পণে।।

কোম্পানির কাণ্ড।

কোম্পানির শতকরা জয় টাকার সুদর
গণিত হয় করিতে হইলে শতকরা তিন
হীক্ষণী। বিক্ষয় করিতে হইলে শত
দুই আনা তির্যকোক্ষ।

মঙ্গলহর শঙ্কর।

| | | | | |
|---|-----|-------------|----|--------|
| ১ | জুন | শনিবার | ৩১ | আশ্ব |
| ২ | ২ | রবিবার | ৩২ | শ্রাবণ |
| ৩ | ৩ | সোমবার | ১ | আষাঢ় |
| ৪ | ৪ | মঙ্গলবার | ২ | ৫ |
| ৫ | ৫ | বুধবার | ৩ | ৬ |
| ৬ | ৬ | বৃহস্পতিবার | ৪ | ৭ |
| ৭ | ৭ | শনিবার | ৫ | ৮ |

জমী বিক্রয়ের ইস্তাহার।

অনেক মোকর জমী নারিন কোম্পানির গৌর ও তারিখ
কন মজির পিঠের তপশীল মুকাম খানে নিম্নোক্ত বিকর
ইয়েক জমা ও জমীনের ইস্তাহার বোম্বাইবন্দু লাক্ষ্টারি
বর্তমানীয় অথবা কোম্পানির কামেরকরি কার্যক্রমে নান্দুর
হইবে।

১) হাকিমপুর ব্রহ্মবিহার ১ কুয়াই মন ১৮৭৯ ইং মন ১১১৬

২) আশ্ব. বং বোম্বাইবন্দু লাক্ষ্টারি বর্তমানীয়।

৩) ব্রহ্মবিহার ১ কুয়াই মন ১৮৭৯ ইং মন ১১১৬

৪) আশ্ব. বং কামেরকরি কার্যক্রমে।

৫) হাকিমপুর ১ কামেরকরি ব্রহ্মবিহার ১ কুয়াই মন ১৮৭৯ ইং

৬) আশ্ব. বং ১১১৬ বং কামেরকরি কার্যক্রমে।

৭) হাকিমপুর ব্রহ্মবিহার ১৫ কুয়াই মন ১৮৭৯ ইং ১ শুবন

৮) ১১১৬ বং কামেরকরি কার্যক্রমে।

৯) জং ৮ কুয়াই মন ১৮৭৯ ইং বোম্বাইবন্দু বর্তমান।

অনেক মোকর জমী নারিন কোম্পানির গৌর ও তারিখ

পিত পিঠের তপশীল মুকামের বাকী আশ্ব. বং

কামেরকরি নিম্নোক্ত বিকর হইবেক জমা ও জমীনের বোম্বাইবন্দু

লাক্ষ্টারি বর্তমানীয় অথবা কোম্পানির কামেরকরি কার্যক্রমে

নান্দুর হইবে।

১০) ব্রহ্মবিহার বাকী আশ্ব. বং

বোম্বাইবন্দু ব্রহ্মবিহার মন ১৮৭৯ ইং মন ১১১৬ ইং

আশ্ব. বং বোম্বাইবন্দু লাক্ষ্টারি বর্তমানীয়।

১১) হাকিমপুর ব্রহ্মবিহার মন ১৮৭৯ ইং মন ১১১৬ ইং

আশ্ব. বং বোম্বাইবন্দু লাক্ষ্টারি বর্তমানীয়।

১২) হাকিমপুর বাকী আশ্ব. বং

১৩) হাকিমপুর ১ কুয়াই মন ১৮৭৯ ইং ১৫ আশ্ব. মন

১৮৭৯ ইং ১৬ আশ্ব. মন ১৮৭৯ বং কামেরকরি কার্যক্রমে।

১৪) বোম্বাইবন্দু ব্রহ্মবিহার ১ কুয়াই মন ১৮৭৯ ইং ১৫ আশ্ব. মন

১৮৭৯ বং কামেরকরি কার্যক্রমে।

১৫) ইতি তারিখ ১৫ মে মন ১৮৭৯ বোম্বাইবন্দু বর্তমান।

অনেক মোকর জমী নারিন কোম্পানির গৌর ও তারিখ

পিত পিঠের তপশীল মুকাম খানে নিম্নোক্ত বিকর

হইবেক জমা ও জমীনের বোম্বাইবন্দু লাক্ষ্টারি

বর্তমানীয় অথবা কোম্পানির কামেরকরি কার্যক্রমে নান্দুর

হইবে।

১৬) ব্রহ্মবিহার বাকী আশ্ব. বং

১৭) হাকিমপুর ব্রহ্মবিহার ১ কুয়াই মন ১৮৭৯ ইং মন ১১১৬

১৮) আশ্ব. বং কামেরকরি কার্যক্রমে।

১৯) হাকিমপুর ব্রহ্মবিহার ১ কুয়াই মন ১৮৭৯ ইং মন ১১১৬

২০) আশ্ব. বং কামেরকরি কার্যক্রমে।

২১) হাকিমপুর ব্রহ্মবিহার ১ কুয়াই মন ১৮৭৯ ইং ১৫ আশ্ব. মন

১৮৭৯ বং কামেরকরি কার্যক্রমে।

২২) ইতি তারিখ ১ জুন মন ১৮৭৯ ইং বোম্বাইবন্দু বর্তমান।

সমাচার দর্পণ।

বোনাপার্ড।

গত মঙ্গল বারের সমাচার পত্রে লি
খিত আছে যে বোনাপার্ডের কঙ্গের
দান মাহ্লেহলিনা ওপদীয়হইতে এক
মাহ্লেহ এই সমাচার আনিয়াছে যে এক
আমেরিকীয় আইনজ্ঞর মান্দুল ভাণ্ডিয়া

ইষ্টাংকোরে সে ওপদীয় আনিয়া পঁয়ছিল
এক জাহাজ মোরামে করিবার জলে
দুই তিন দিন সেখানে ছিল সেই আই
জ বোনাপার্ডকে লইতে আসিয়াছিল।
বোনাপার্ডের নিকটে আইজ পঁয়ছনের
সমাচার গেল পরে বোনাপার্ডের চিঠি
সকলো তাঁহার আনুকূল্য করিবার কারণ
সর্ব প্রকাশ করিল যে বোনাপার্ড এমন
পণ্ডিত যে অনেকের সহিত মাফাং হইবে
না। এই কথা প্রকাশ করিতে সকল
হারিরা সে কথা সভা আন করিল পরে
এক দিন রাতে অভিগুস্তহণে বোনা
পার্ড আপন ঘরহইতে নির্গত হইয়া
মাত হারের হারিরদিগকে জুলাইয়া
সমুদ্রতীরে গিয়া ওপদিত হইলেন কিন্তু
সেখানে এক জন চৌকীদার ছিল সে ও
ফাং সে কথা প্রকাশ করিল তাহাতে
সকলে আসিয়া তাঁহাকে পুনর্বার তাহার
ঘরে লইয়া গেল। সে আইজকে সকল
পুস্তক ছিল তিনি যদি আইজকে ওঠিতে
পারিতেন তবে ওফাং আইজখুলিলে
তাঁহার অভিনাশ পূর্ণ হইত।

বোনাপার্ডের চিঠি-সকল।

গত বঙ্গের ইংরেজ যান ইংরো
পীয় বাহাদারহো একত্র হইলেন তখন
বোনাপার্ডের পরিআলহা ৩ বাহাদার
মের নিকটে দরখাস্ত করিয়াছিল যে
অনেক গুস্ত চিঠি-সকল বোনাপার্ডের
চিঠি-সমার নিমিত্ত তাহার কঙ্গ দান মা
হ্লেহলিনা ওপদীয় পাঠান যায় যেহেতু
তাঁহার জুনিয়াছিল যে বোনাপার্ড পণ্ডি

সমাচার দর্পণ।

ত আছেন। অতএব বাধাশহরে এক জন বোনাশার্দের মনোনাও চিহ্নসম্বন্ধে তাঁহার লিখতে পাঠাইয়াছেন।

আজ্ঞাহত্যা।

দুই তিন বৎসর হইল কলিকাতার দেশে সেখানকার রাজার পুত্রকুলে হতল লোক একশতাব্দী হইয়াছিল পরে সে বিষয় রাজা আতা হইয়া সেই লোকেরদের মতো ঘাহাকে বিরিতে পাঁচিল তাহাকে ওপুত্র হত করিল কিন্তু তাহারদের এক জন অভিমান্য ও বিনবান এমরা ছিল সে সেই ভয়ে আপনাদর মকল সন্মতি ও তালুকপুত্রিত পরিভাষা করিয়া ইংলণ্ড দেশে গলিয়া আসিয়াছিল তাহার কোন কিছু সন্মতি না থাকিতে পরের দ্বারা অল্প বঙ্গাবি তিফা করিয়া কিছু কালক্ষেপ করিল পরে এক ধর্মু মহাত্মার নিকটে অল্প ধর্মমাহাত্ম্যে চাকর হইল কিন্তু তাহাতেও তাহার কিছু হয় না। সন্মতি এক দিন আপনাদর পুত্র কালীন দশা ক্ষরল করিয়া ও তৎকালীন দশা অনুভব করিয়া আত্ম মিত্যমান হইল ও আপন মরল শ্রেয়ো আন করিয়া আপন মুনীর ঐ মহা মার নিকটে পাঠাই ইহা যখন তুমি পাঠ করিয়া তখন আমি আর থাকিব না। এই পত্র লিখিয়া পাঠাইয়া আপনি আপনা কে পিতল মস্তক শ্রুণতাগা করিয়াছে। ইংলণ্ড দেশে এই বাবহার আছে যে চোরাদ্বায়ে একটা গরু করিয়া আত্ম ঘাতি ব্যক্তকে সেই গরু জেলিয়া তা হার ওপরে মৃত্যিকা যায়।

আমেরিকা দেশে আশ্চর্য্য।

আমেরিকা দেশে এক কাম্বির খী কল্যা

বদি চল্লিশ বৎসর ব্যয়কর্মণ্যন্ত স্বভা বত অতিগাঢ় কৃৎসর্বা ছিল সন্মতি সেই স্ত্রী অকল্যাণে ইংলণ্ডীয়েরদের মত অতি পায় ওপরে গৌরবর্ণা হইয়াছে। এই আশ্চর্য্য দেখিয়া অনেক চিহ্ন মকেরা ও আনবান লোকেরা বিস্ময়া পন্ন হইলেন। ইহার কারণ কেহ কিছু দ্বির করিতে পারেন নাই।

কপালমুণ্ডা কিল্লা।

৪৪ মে তারিখে মঙ্গল দেশস্থ কপাল মুণ্ডা নামে কিল্লা ইংলণ্ডীয়েরদের হস্ত গত হইয়াছে। সে কিল্লা লইতে ছয় লোক মারা পড়িল ও একজন অন আ ঘাতি হইল। বিক্ষ লোকেরা কিল্লাই ইতে পুথ্যে পাথর জেলিয়া মারিয়াছিল তাহাতে ইংলণ্ডীয়েরদের চিহ্ন বায়ো হ হইয়াছিল।

আশীরগড়।

আশীরগড়ে যে ডোণ পাওয়া গিয়াছে তাহার মধ্যে মকলহইতে বত ডোণের মুখ ডিল পাওয়া হাত পরিমাণ। কিন্তু মাঝে পর্যন্ত ইংলণ্ডীয়েরা ঐ গড় খের য়াছিল তাৎকাল বিশেষত্বা ঐ ডোণ জুড়িতে পারেন নাই। এবং সেখানে যে পিতলের ডোণ ছিল সে অতিসুন্দর কিন্তু সে ডোণ জোড়লে কেবল আত্ম হিন্দা হইল।

বৈমাত্তিক।

৩০ মে তারিখে মোং মিরপুরে যেও যান মোতিচাঁদের ঘরেতে অনেক বৈমাত্তিকেরা একত্র হইলেন ও মকলে আপ নারদের মস্তের অনেক বিবেচনা ও পুণ্য না করিলেন ও স্বয়ত নিম্ন গান করি

লেন। ঐ তারিখে ঐ স্থানে যত বৈমাত্তিক লোক একত্র হইয়াছিলেন এত বৈমাত্তিক লোক কখনও অন্যত্র একত্র হয় নাই।

দুশানগ্রা।

মোং মাহেশের দুশানগ্রাতে পুং বৎসরে যে পুকার লোকগ্রা হইয়া থাকে এই বৎসর সেই পুকার হয় নাই অমান হয় এই বারে নিকী লোক কম হইয়াছে।

কুতীর।

গত সপ্তাহে খেলের লীচে গরীতে এক দিনে দুই জনকে কুতীরে লইয়াছে। এই কুতীর গরীতে সর্বা থাকে না কিন্তু মতো দেখা যায়।

চাঁকা শহরে স্বত।

৪ জুন তারিখে মোং চাঁকাশহরে অতি বৃহৎ এক বড় হইয়াছিল তাহাতে অনেক পাঁকাঘর পড়িয়া গিয়াছে ক্ষুন্ন মকল কাটা ঘর ওড়িয়া গিয়া এমত দুরে পড়িয়াছে যে সে মকল ঘর অনেক করিয়াছে যে পাওয়া ভার ও বৃহৎ অনেক বৃক্ষ জুড়ে শুইয়াছে সে শহরের লোকেরদের বিস্তর ক্ষতি হইয়াছে। বিশেষ সৈন্য আসিয়া লুট করিলে শহর যে পুকার জিম ভিন্ন হয় এই স্বত হওয়াতে চাঁকা শহর সেই বণ হইয়াছে।

ঐশ্বর্য্যোত্তমকেন্দ্র।

অন্য বৎসরহইতে এই বৎসরে অনেক লোক ঐশ্বর্য্যোত্তম কেন্দ্রে রথযাত্রা দর্শনার্থ গিয়াছে কিন্তু এ বৎসর যে বৎসর অনবদ্বি ও তৎপুত্র অতিশয় গুণ্য এবং খায়া দুয় দুখীয়া হইতে অনুমান

সমাজের দর্পণ।

হয় যে তাহারদের মধ্যে সকল খিদি
য়া আনিবে না।

/কথিয়ার বাদশাহ:

গত বৎসরে খান কথিয়ার বাদশাহ
আলেক্সান্দ্র আলী বাদশাহেরদের সহিত
মিলিলে বসিবার কারণ আইলেন সেই
সময়ে এক ক্ষুদ্র বালক আলেক্সান্দ্রের
গাতি না আনিয়া তাহার ওপরে চড়িল।
পরে তালেক্সান্দ্র তাহাকে জিজ্ঞাসা করি
লেন যে তুমি কি চাহ। সে কহিল যে
আমি আলেক্সান্দ্রকে দেখিতে চাই। পরে
শহরের মধ্যে আলেক্সান্দ্র খঁজিলেন শহ
রস্থ লোক তাহার সন্ধ্যায় সেলাম প্র
ভৃতি করিতে লাগিল ইহাতে বড় কৌতু
হ হইল। ইহাতে ঐ বালক আলেক্সান্দ্র
নু ক জিজ্ঞাসা করিল যে এই কোনাহল
কেন হইতেছে। তাহাতে তিনি ওত্তর
করিলেন যে আলেক্সান্দ্র ঘাইতেছেন ও
মিলিত কোনাহল হইতেছে। ইহাতে
ঐ বালক আলেক্সান্দ্রকে স্বকপ্তে আনি
য়া অভিভূত হইল। তাহা দেখিয়া
আলেক্সান্দ্র তাহাকে আশ্রয় করিয়া কহি
লেন যে তুমি কি চাহ। সে কহিল আমি
তোমার সহিত তোমার ঘোষে গিয়া
তোমার নিকটে থাকিতে চাই। ইহাতে
বাদশাহ তুষ্ট হইয়া তাহা স্বীকার করি
লেন ও তাহাকে আশ্রয় লিখ চাকর
করিয়া নিকটে রাখিলেন।

এই পুথিবীর মধ্যে মনুষ্যেরদের কাহার
কি পুকারে খল কার্যসিদ্ধি হয় তাহা
আনা যায় না। যেহেতু দশ ব্যক্তি একত্র
যাত্রা করিলে তাহার মধ্যে অনেক দুই
অনেক কার্যসিদ্ধি হয় অন্যের হয় না।

সম্মতি।

গ্রীক ঘোষে এক ওপরাই আছে সেখানে

মুসলমানেরদের অধিকার। সে স্থানে
এক ব্যক্তির এক পরামর্শদারী কন্যা ছিল
তাহাকে বিবাহ করিবার নিমিত্ত সেখান
কার এক পুত্র অনেক কালপর্যন্ত অনেক
কোঁচা করিল ও ঐ কন্যার বিস্তর
খোঁসামোহ করিল ডাখলি কন্যা তাহার
সহিত বিবাহ করিতে কোন পুকারে স
ক্ষমতা হইল না বরং আরো ঐ পুত্রকে
অধিক হেয়জান করিল ইহাতে ঐ
পুত্র খিদামান হইয়া আপনি বিঘণান
করিয়া মরিল। ডাখলি উর্খাকার পুলিশের
খানাদার ঐ কন্যার পিতাকে ইরিয়া কএব
করিল এবং কহিল যে তুমি এই বিষয়ে
অপরোধী যেহেতু তুমি যদি এই কন্যাকে
অন্য না দিও তাহে এই কন্যাকে ঐ পুত্র
ঘেরে প্রেম হইত না যদি প্রেম না হইত
তবে বিবাহ করিতে চাহিত না যদি বিবাহ
করিতে না চাহিত তবে ঐ কন্যা তা
হাকে হেয়জান করিত না যদি হেয়জান
না করিত তবে সে বিঘণান করিত না
যদি বিঘণান না করিত তবে সে মরিত
না ওতএব ইহাতে সর্বত্র ঘোষ তোমার।
বিচারকর্তা এই পুকারে মোকদ্দমা করি
য়া কন্যার পিতাকে নিষ্কর ঘোষ করিল
কিন্তু ভাগ্যে তাহাকে মৃত না করিয়া
আশী টাকা ওলাহগীর করিল।

/ঘণ্টারের বায়ু মারন।

দুই সপ্তাহ হইল মোং কসবাতে এক
জন গৃহস্থ লোক সেখানকার সাহেবের
ঘরে নিকটে দোড়িয়া আনিয়া সমাচার
দিল যে আয়ার ঘরে এক বায়ু অকস্মাৎ
পুড়িল হইয়াছে আজিও ওতএবনা সেই
ঘরের ঘরে চাবি দিয়া আটকাইয়া আ
নিয়াছি যদি ইচ্ছা হয় তবে আশানারা
গিয়া দেখুন ও তাহাকে মারিবার চেষ্টা

করুন। ইহা শুনিয়া দুই সাহেব আশ
নারদের অল্প লইয়া ওতএব গিয়া দেখিল
যে অনুমান দশ হাজার লোক অগ্নি হই
য়াছে। তাহারদের মধ্যে দুই তিল অল
ভাগ্যবান লোক ছিল তাহার সাহেবের
দিক্কে কহিল যে হে সাহেব আমরা
এই বায়ু মারিতে পারি কিন্তু তোমার
দের বায়ু নিকার করণে যথেষ্ট আয়োজ
তৎপুত্র তোমাদের কারন রাখিয়াছি।
পরে সে ঘরের দেওয়ানে ওপরি পুতল
করিতে পারে এমন এক জিন্দু করিয়া এক
সাহেব বন্ধকের এক গুলিতে বায়ুকে মা
রিল। সে বায়ু কোথাহইতে আনিয়াছিল
তাহা কেহই জানিতে পারে নাই অক
স্মাৎ বাজার আনিয়া দুই অনেক-সরীর
আঁচড়াইয়াছিল পরে বাজারের লোকেরা
তাঁতাতাতি করিলে ঐ গৃহের ঘরে
পুড়িল হইয়াছিল।

নুতন পুস্তক।

অপুত জিলিও কেরি সাহেব ইংলী
পুস্তকহইতে সংগ্রহ করিয়া বিদ্যাহারা
বলী নামে এক নুতন পুস্তক বাঙ্গালি ভা
ষায় করিয়া মোং গ্রাম্যগুরে জাপি করি
তেছেন ইহাতে নানা পুস্তক বিচার করা
আছে ঐ পুস্তকের মধ্যে আটচল্লিশ কিহা
জাপান যুদ্ধ একাকার কাণ্ডেতে এবং
অন্ধরেতে মানং জাপি হইবেক। ঐ
আটচল্লিশ কিহা জাপান যুদ্ধেতে এক
নম্বর দেয়া ঘাইবেক ঐ এক নম্বরের
মূল্য দুই টাকা।

কাশীর রাজা চেমি-হ।

কাশীর রাজা মহারাজ চেমি-হ
বিবরণ অনেক অল্প আসিল কিন্তু তা
হার বিশেষ বিবরণ আমরা নিমি।
সত্তর শত চৌত্তর সালে লক্ষনৌয়ে

সম্ভাচার দৰ্শন ।

নবাব জাওঙ্গোলা কানী ও গাঁজীপুর ও চণ্ডালগড়ের অম্বাচারি, সৈন্য খরচের কারণ ইংল্যান্ডের বিরুদ্ধে গিলেন ঐ তিন পরগণার বংশসূত্রী লক্ষ টাকা মাল গুজারি নবাব সরকারে চেংসিংহ করি ডেন। ১৭৭৮ সনে হেঞ্চিংস সাহেব ঐ অম্বাচারি পাঁচিয়া হাজা চেংসিংহের নি কটে পাঁচ লক্ষ টাকা অধিক মালগুজারি চাইলেন। হাজা চেংসিংহের অনেক বিন ছিল কিন্তু তিনি পুতান্না করিয়া কহি লেন যে আমার বিন নাই আমি (কো) হইতে অধিক টাকা দিব। এবং আপনা নির্বনতা প্রকাশ করিবার কারণ বাজারে মুক্তা ও হারানুভূতি বিক্রয় করিয়া সাহে বকে আনাইলেন এই রূপ অনেক এজোর করিলেন কিন্তু শেষে অধিক পাঁচ লক্ষ টাকা ও মালগুজারি দিলেন এবং তা হার পর বংশসূত্রী গিলেন কিন্তু জুড়ায় বংশসূত্রী করিলেন যে আমি পাঁচলক্ষ টাকা আর দিতে পারি না বরং পাঁচ শত বরাক দ্বারা ও পাঁচ শত ঘোড়সোয়ারের ডোকায়ে দি। ইহা শুনিয়া হেঞ্চিংস সাহেব আপনি কাশীতে গেলেন ও সেখানে শুসিলেন যে চেংসিংহ আপন পিতা বলবন্তসিংহহইতে অনেক বিন পাঁচিয়া লভিযুপ্ত ও বিজয়গড়ের জিল্লাতে লাভ করিয়া রাখিয়াছেন। এই কথা হেঞ্চিংস সাহেব গুণ্য করিলেন। হে ঙ্গিংস সাহেব বেত মাসে মোঃ কাশী তে পৌঁছলেন। চেংসিংহের বিপক্ষ অধ্য কুটুম্ব আশানসিংহ নামে এক জন হেঞ্চিংস সাহেবের কুচিত কলি কাডাতে মিলিয়া সেও ঐ সঙ্গে গেল। ইহা শুনিয়া হাজা চেংসিংহ হেঞ্চিং-

ভীত হইয়া মোঃ বংশসূত্রীকে আসি য়া বত সাহেবের সাহিত মিলিলেন ও অ নেক জনসংঘ বত সাহেবের সহিত ক যোগদান করিলেন। এই কালে চেংসিং হ বত সাহেবের নিকটে অনেক বিনয় বাক্য কহিলেন যে আমার যে কিছু আছে সবকিছু কোল্লানি বাহাদুরের অধীন ইহা কহিয়া আপন পাণ্ডা বত সাহে বের হাতে সমর্পণ করিলেন। পরে দুই জনই বংশসূত্রীহইতে কাশীতে গেলেন। কাশীতে পৌঁছলেন বত সাহেব চেং সিংহের অন্য পুত্র শত্ৰু দেহিয়া তাহাকে আপনায় নিকটে আসিতে বারন করিলেন এবং এক জন ইংল্যান্ডীয় ওকীল তাহার নিকটে পাঠাইলেন এবং চেংসিংহের শত্ৰু বিজয় তাহার নি কটে ঐ ওকীলদ্বারা কহিয়া পাঠাইলেন। পরে বিবসে আপন সৈন্য হাজা চেংসিং হের কাশীশহরস্থ ঘর ঘেরিলেন কিন্তু সে খানে অভাব সৈন্য রাখিলেন।

কাশীর অন্য পাঁচের রায়সদার নামে চেংসিংহের এক কুটুম্ব জিল্লা জিল সে খানে তাহার পরিজন লোক থাকিত। পরে রায়সদারহইতে অনেক সৈন্য আ মিয়া যুদ্ধ করিল এবং চেংসিংহের লো কেরা আপন পাণ্ডার দ্বারা শিক্ষা করিয়া সেই শিক্ষাতে চেংসিংহকে বশাইয়া গরাজীরস্থ গুপ্ত কোঠাহইতে নৌকাতে চেংসিংহ রায়সদারের লইয়া গেল। সেই কালে বত সাহেবের জেট বত যত চাকর লোক জিল তাহারদের নানা দুত বন্দা করিল কেহ আপন মাথা মুড়াইয়া ও গোয়াক বন্দা পরিয়া দণ্ডী হইয়া খান বৈ চাইল। এই রূপ চেংসিংহ পলাইলে

পর হেঞ্চিংস সাহেব চেংসিংহের তমী দ্বারি আশান সিংহকে দিয়া আপন চ ণ্ডালগড়ে গিয়া জেটবর্কহইতে সৈন্য আনিতে প্রয়াণ্য করিলেন। পরে সৈন্য সমুদায় একত্র করিয়া লভিযুপ্তের পাঠাই লেন। চেংসিংহ তাহাতে ভীত হইয়া বিজয়গড়ে পলাইলেন। পরে কাশীর রাজস্থ বত সাহেবের অধীন হইল তিনি মহারাজমহাপতি নারায়ণকে রাজসিং হাসনে বসাইলেন ও রাজসর পুর্নহইতে দিগুন আটকল্লি লক্ষ টাকা বন্দোবস্ত করিলেন।

অনন্তরে ইংল্যান্ডের বিজয়গড় ঘেরি লেন। হাজা চেংসিংহ অনুপায় দেহিয়া পলায়ন করিলেন। চেংসিংহের মাতা বিজয়গড়ে থাকিলেন। তিনিও কোল ওপায় না দেহিয়া ঐ গড় হেঞ্চিংস সাহে বের হস্তে সমর্পিত করিলেন ও আপন ইচ্ছাযতে বিন সন্নতি লইয়া বত সাহে বের আভাষাতে আপন পুত্র চেংসিংহের নিকটে গেলেন। এই কালে মতুর শত একাশী সনে হাজা চেংসিংহ হাজা ভুজ হইলেন। বিজয়গড় ইংল্যান্ড য়েরদের অধীন হইল ঐ গড়ে লগায় পঠি লক্ষ টাকা ও মাল মুক্তা প্রবাল হীরক অনেক পাওয়া গেল ও অন্য সন্ন তির কথা বত লিখা যাইবেক। ইং ল্যান্ডের সেনাপতিরা ও সৈন্যেরা সেই সন্নতি ভাগ করিয়া লইল তাহাতে পুণিল সেনাপতি তিন লক্ষ ও দিডার সেনাপতি আড়াই লক্ষ টাকা পাইল এবং সিংহাসী পুতিজন পঞ্চাশ টাকা করিয়া পাইল। ইতি চেংসিংহ হাজার বিবরন সমাপ্ত হইল আসিবেন।

এই সম্ভাচার দৰ্শন পুরানসুত্রে হাশাখানাতে পুতি লভায়ে পরিবারে হাশা হয়। যাহার লভনের আশঙ্ক হয় তিনি পুরানসুত্রে হাশাখানাতে আপন নাম পাঠাইলে লভায়ে কামাল ভীহার নিকটে পাঠান যাইবেক তাহার দ্ব্যং মাসে এক টাকা। তিনি থাকি করিয়াছেন যদি তাহার নিকট সম্ভাচার দৰ্শন না পাইবে তবে তিনি পুরানসুত্রে হাশাখানাতে সম্ভাচার বিবরণ ভীহার নিকটে পাঠান যাইবেক।

সমাচার দর্পণ

৫৭ নং-১৮৮

শনিবার।

১৯ জুন মল ১৮৬৯।

৩ আষাঢ় মল ১২১৩।

দর্পণে মুখ্য সৌন্দর্যমিব কার্যবিবরণী। বৃত্তান্তনিহিত আলস্য সমাচারময় দর্পণে॥

কোম্পানির হাণ্ডা।

কোম্পানির শতকরা জয় টাকার সুদের
কাজ করা করিতে হইলে শতকরা দুই
আনা ভিন্নকৌণ্ড। বিক্রয় করিতে হইলে
শতকরা চারি আনা ভিন্নকৌণ্ড।

মস্তাহের পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|-----|-------------|----|-------|
| ১০ | জুন | শনিবার | ৩ | আষাঢ় |
| ১১ | ৪ | রবিবার | ১ | ৪ |
| ১২ | ৫ | সোমবার | ৮ | ৫ |
| ১৩ | ৬ | মঙ্গলবার | ১০ | ৬ |
| ১৪ | ৭ | বুধবার | ১১ | ৭ |
| ১৫ | ৮ | বৃহস্পতিবার | ১২ | ৮ |
| ১৬ | ৯ | শুক্রবার | ১৩ | ৯ |

তম্রী বিক্রয় ইচ্ছাচার।

অনেক লোকের অশ্লীল নাসিন (কোম্বার) রোগ ও ভাঙ্গিল
লোক মারিত পীড়ের তদানীল পুলাশ খাদ্য পিলায়ে বিকর
হইবেক অন্য ও অশ্লীল ইচ্ছাচার বোম্বাইবন্দুর লোকটরি
বস্ত্রাশাণ্ডা অম্বা কোম্বার কামেজরি কামাটিকে নাসিন
হইবেক।

হাটবিল্লুর বৃহস্পতিবার ৮ জুলাই মল ১৮৬৯ ইং মল ১২১৩
১৫ আষাঢ় বাং বোম্বাইবন্দুর লোকটরি বস্ত্রাশাণ্ডা।
হাটবিল্লুর বৃহস্পতিবার ৮ জুলাই মল ১৮৬৯ ইং মল ১২১৩
১৮ আষাঢ় বাং কামেজরি কামাটিকে।

হাটবিল্লুর ও বিনাটিল্লুর বৃহস্পতিবার ৮ জুলাই মল ১৮৬৯ ইং
১৫ আষাঢ় মল ১২১৩ বাং কামেজরি কামাটিকে।
বৃহস্পতিবার বৃহস্পতিবার ১৫ জুলাই মল ১৮৬৯ ইং ১ শ্রুতি
মল ১২১৩ বাং কামেজরি কামাটিকে।

ইতি ৮-৮ জুন মল ১৮৬৯ ইং বোম্বাইবন্দুর বস্ত্র।

অনেক লোকের অশ্লীল নাসিন (কোম্বার) রোগ ও ভাঙ্গিল
লোক মারিত পীড়ের তদানীল পুলাশ খাদ্য পিলায়ে বিকর
হইবেক অন্য ও অশ্লীল ইচ্ছাচার বোম্বাইবন্দুর লোকটরি
বস্ত্রাশাণ্ডা অম্বা কোম্বার কামেজরি কামাটিকে নাসিন
হইবেক।

শনিবার বাঙা আষাঢ় কার্য।

বোম্বাইবন্দুর বৃহস্পতিবার মল ১৮৬৯ ৮ জুলাই ইং মল ১২১৩ ১৫

আষাঢ় বাং বোম্বাইবন্দুর লোকটরি বস্ত্রাশাণ্ডা।

বিন্দুর বৃহস্পতিবার মল ১৮৬৯ ১ জুলাই ইং মল ১২১৩ ১৮

আষাঢ় বাং বোম্বাইবন্দুর লোকটরি বস্ত্রাশাণ্ডা।

মলকারের বাঙা আষাঢ় কার্য।

বৃহস্পতিবার ও বিন্দুর ও বিন্দুর বৃহস্পতিবার ১ জুলাই মল

১৮৬৯ ইং ১৮ আষাঢ় মল ১২১৩ বাং কামেজরি কামাটিকে।

বোম্বাইবন্দুর বৃহস্পতিবার ১ জুলাই মল ১৮৬৯ ইং ১৫ আষাঢ়

মল ১২১৩ বাং কামেজরি কামাটিকে।

ইতি ৮ জুলাই ১৫ মল ১৮৬৯ বোম্বাইবন্দুর বস্ত্র।

অনেক লোকের অশ্লীল নাসিন (কোম্বার) রোগ ও ভাঙ্গিল

লোক মারিত পীড়ের তদানীল পুলাশ খাদ্য পিলায়ে বিকর
হইবেক অন্য ও অশ্লীল ইচ্ছাচার বোম্বাইবন্দুর লোকটরি
বস্ত্রাশাণ্ডা অম্বা কোম্বার কামেজরি কামাটিকে নাসিন
হইবেক।

বিন্দুর বাঙা আষাঢ় কার্য।

বোম্বাইবন্দুর বৃহস্পতিবার ৮ জুলাই মল ১৮৬৯ ইং মল ১২১৩

১৫ আষাঢ় বাং বোম্বাইবন্দুর লোকটরি বস্ত্রাশাণ্ডা।

মলকারের বাঙা আষাঢ় কার্য।

বাকবিল্লুর বৃহস্পতিবার ১ জুলাই মল ১৮৬৯ ইং মল ১২১৩

১৮ আষাঢ় বাং কামেজরি কামাটিকে।

হাটবিল্লুর বৃহস্পতিবার ৮ জুলাই মল ১৮৬৯ ইং ১৫ আষাঢ়

মল ১২১৩ বাং কামেজরি কামাটিকে।

ইতি ৮ জুলাই ১ জুন মল ১৮৬৯ ইং বোম্বাইবন্দুর বস্ত্র।

ইচ্ছাচার।

মল ১৮৬৯ মাল ১৯ জুন মালবান

দশ ঘণ্টার সময় যোশ্রী শ্রীমন্তপুর

দিনমায় কোম্পানির গুণ্যে দিনমায়

কোম্পানির অল্পপ্রাপ্তি সাহেবেরা দিলা

মায় কোম্পানির জাহাজ কুণ্ডলিনসেনেন

কাম্পানি ওয়াগার ইচ্ছাচারে যোশ্রী

স আদিত্যকে তাহার কতক বিক্রয় করি

বেল

অর্থাৎ।

জীন মরণ পুত্ৰক নিম্নক ১৫ বোতল।

লিন্দিনিহ তৈল পুত্ৰক নিম্নক ১৫ বো

তল।

কোম্পানির হাণ্ডা মরণ পুত্ৰক নিম্নক

৫ বোতল।

বিনাভী নরনের দহী ১০ ইঞ্চ অম্বি

১৮ ইঞ্চ অম্বি।

নানানুকার কর্তে যেত ইঞ্চ অম্বি

দুই ইঞ্চ অম্বি।

তাম্রার পাণ্ড।

দোম্বাকতকা।

সে সময়ের বিলাতী মোমবাতি ২৮

নানানুকার অন্য বিলাতী জিনিস বিক্র

য় হইবেক।

এই নিলামের এই দস্তুর নির্ধারণ হইল

নিলামের পর ত্রিশ দিনে নিলামের জি

নিম খালান করিতে হইবে অন্যথা পুন

র্জায় সেই জিনিস বিক্রয় হইবেক কিন্তু

পুনর্বার বিক্রয় করিলে যদি লাভ হয় তবে

কোম্পানির হইবেক যদি লোকমান হয়

তবে তাহার। নিলামের অন্য বিবরণ

নিলামের দিনে পুলাশ হইবেক ও নিলা

মের জিনিস যদি কেহ দেখিতে চাহে

তবে নিলামের পূর্বে আট দিনের মধ্যে

কোন দিনে কোম্পানির গুণ্যে গিয়া যে

খিতে পাইবেন।

সমাচার দর্পণ।

সময়গণ।

বালিয়া পরগণার যদুগাঠী গ্রামের

সমাচার দর্পণ।

পুত্রিয়ার চন্দ্রনাথ এক জন কায়স্থ ময়িরা ছিল তাহার স্ত্রী সহগমন করিতে ও মাতা হইলে মোক্ষ আভিযাত্রার গুমের খানিতে হুকুম বাহির করিতে চারি দিন বিলম্ব হইল পরে দিনমার কোণা নির শহর স্ক্রামপুরে আশিয়া সহ গমন করিয়াছে।

রথযাত্রা।

১১ আষাঢ় ১৪ জুন বৃহস্পতিবার রথযাত্রা হইবেক। অনেক স্থানে রথযাত্রা হইয়া থাকে কিন্তু তাহার মতব্য অগাধক্ষেত্রে রথযাত্রাতে যে জন সমারোহ ও লোক যাত্রা হয় মোক্ষ মাহেশ্বর রথযাত্রাতে তাহার বিস্তার নুল নহে এখানে পুণ্য দিনে অনুমান এক দুই লক্ষ লোক দর্শনার্থে আইসে এবং পুণ্য রথ অবধি শেষ রথপর্যন্ত নয় দিন অগাধা যের মোক্ষ বজ্রতুর রথিবল্লভ যেরের ঘরে থাকেন তাহার নাম গুণ্ডাবাতি এই নামে মাহেশ গুমাবধি বজ্রতুরপর্যন্ত নানাপ্রকার দোহান পমার বসে এবং সেখানে বিস্তার হয় বিক্রয় হয়। ইহার বিশেষত্ব কত লিখা যাইবেক। এমত রথযাত্রার সমারোহ অগাধক্ষেত্রে ব্যতিক্রম অ ন্যত্ব বুঝানি নাই।

এবং এই যাত্রার সময়ে অনেক স্থান হইতে অনেক লোক আশিয়া অয়া খেলা করে হইতে কাহারো লাভ হয় ও কাহারো সর্বনাশ হয়। এই বার সুনামাত্রার সময়ে দুই জন অয়া খেলাতে আপন যথাসম্বল হারিয়া পরে অন্য গুণায় না দেখিয়া আপন পুত্রি স্ত্রী বিক্রয় করিতে প্রমত্ত হইল এবং তাহার মতব্য এক জন খালিকের নিকটে দশ টাকাতে আপন স্ত্রী বিক্রয় করিল। অন্য ব্যক্তির স্ত্রী বিক্রয় হইতে সম্মত হইল

না তৎপুত্র এই ব্যক্তি খেলার দেনার কারণ বন্দ হইল।

খুল।

মোক্ষ কলিকাতার চিতপুরে এক জন মালী অন্য এক জোকরাকে আমু পাতি বার কারণ আমুবন্ধে গুটাইয়া দিল। পরে এই জোকরা এই বন্ধের কোঠরে কিছু আমু লুকাইয়া রাখিয়া তার আমু পাতিয়া মালীকে দিল। মালী আমু লইয়া আপন ঘরে গেল ইহা দেখিয়া এই জোকরা বৃক্ষহইতে আপন লুক্কায়িত আমু পাতিয়া লইয়া যায় ইহা দেখিয়া এই মালী আশিয়া এই জোকরাকে এমত পুহার করিল যে তাহাতে এই জোকরা পুনঃত্যাগ করিল পরে মোক্ষমা হইয়া এই ব্যক্তির মালী হইয়াছে আশিয়া বলিয়াছিল।

জেলা বঙ্কমানের মোক্ষ একডোলা গুমের এক লালিকের বালক একদিন প্রাতঃকালে গরিয়া খেলিতে গেল কিন্তু দুই পুহরের মতব্য আপন ঘরে না আইলে তাহার বাটীর লোকেরা চতুর্দিক অন্বেষণ করিতে লাগিল পরে সম্মানপর্যন্ত অন্বেষণ করিয়া কোন স্থানে তাহার সম্মান না পাইয়া খানায় সম্মার দিল। খানার অনেক উদারক করিয়া সে দিনে কিছুই রিকান করিতে পারিল না। পর দিনে প্রাতঃকালে এই গুমের লিকটব এক বৃদ্ধ এত এই বালককে মৃত পাইল কিন্তু বালকের পরগরে যে সকল আল কিরা দি ছিল তাহা কিছু পাইল না। পরে খানাদার এই বিষয়ে জেলা বঙ্কমানে রিপোর্ট করিলে জেতুরহইতে চান্দ্রনাথ আশিয়া এই গুমের সুরক্ষা করিল। তাহাতে গুমের লোকেরা এক ব্যক্তিকে সম্মহ করিয়া ওঠা ইয়া দিয়াছে তাহার শেষ কিছুই হয় নাই।

সম্ভার্য বাকি।

ইংলণ্ড দেশে সম্ভার্য বাকির বৃদ্ধি অতিশয় হইতেছে এই বাকি গরীব লোকেরা এক আনা দুই আনা সম্ভার্য করিয়া লাভ করে তাহাতে এক কোটি বিশ লক্ষ টাকা বাকি সম্ভার্য হইয়াছে। এই টাকা এক বাকি লাভ হয় নাই কিন্তু পুত্রিগুমের ও পুত্রিগার এক বাকি আছে সেই সকল বাকি মিলিয়া এক কোটি বিশ লক্ষ টাকা আভিপার্য লাভ হইয়াছে ও প্রবর্ত্তার এই টাকা বৃদ্ধি হইতেছে।

জুয়ত লার্ড এলিংডন।

লার্ড এলিংডনের ভ্রাতা লার্ড এলিংডন সাহেব বোনাপার্ডকে অয় করিয়া দুই ঘণ্টার বাইশাহের লি-হানলে বসিতে সাহায্য করিয়াছিলেন তৎপুত্র এই বার সাহেব সম্ভার্য হইয়া তাহার সম্ভার্যের এক পুকার তাহার পারিতোষিক দিয়াছেন তাহার মূল্য দুই লক্ষ টাকা। এই সম্ভার্যের তাহার বাহার আর তিন সম্ভার্য বিশেষ এই তাহার আপন বঙ্কমানে বীরণ করেন।

বৃক্ষলোক।

ইংলণ্ড দেশে এক ব্যক্তি এক শত এক বৎসর বয়স্ক ময়ুর আছে সে ব্যক্তি অমোক্ষ আপন ময়ুর করিয়া দিলপার্ড করে।

ইন্ডোপের সৈন্য।

ইন্ডোপের লাল্য রাজ্যের মতব্য সত্তর লক্ষ আটশত দুই হাজার শত সৈন্য এই বৎসর দুই হাজার শত সৈন্য যার মোট বৎসর তাহার আছে।

সম্মাচার দর্পণ।

পূর্বে যখন মুন্স জিল তখন তাহারদের
দৈন্য জমিদারি লক্ষ আট হাজার জিল।

আনজীর্জ দেশ।

আফ্রিকার অংশগীর্জী আনজীর্জ শহরে
অতিশয় মরু হইয়াছে তাহাতে পূর্বে
সম্মাচার স্থান গিয়াছিল যে প্রতিদিন
চার শত লোক মরিত কিন্তু সম্মতি স্থান
গোন যে দিন ১২০০ শত লোক মরিতেছে।

মরন।

মুন্স জিল বিদ্যালয়কার ভাড়াচার্য নানা
শাস্ত্রীয় বিদ্যোপার্জন করিয়াছিলেন ও
পার্সানন্দারে বিদ্যা বিতরণ করিয়াছেন
এবং যোগ্য কলিকাতায় কোলাসির কালে
জের আরম্ভাবধি তাহার পুর্বান পাতিত
কর্ম পাইয়া অনেক বিশিষ্ট সম্মানেরদের
অনোপাধিক ওংকার করত বহুফল ফল
করিয়াছিলেন এবং দুই তিন বৎসর
হইল কালেক্টরের পাতিত কর্মেতে যশ
দুর্গ পুর্বে অভিজিত করিয়া আশানি সু
পুয়া কোর্টর পাতিত কর্ম করিতেছিলেন
পরে আট মাস হইল সুপুয়া কোর্টর না
হেবেরদের নিকট বিদায় হইয়া তাঁর
নাথ গিয়া কাশী পুয়া গিয়া পুজি তাঁর
দর্শন করিয়া বাটী আসিতেছিলেন পথে
যোগ্য মুরশোদারের নিকটে গঙ্গাতীরে
আনপূর্বে পরলোকান্ত হইয়াছেন।

রজপুতানা।

রজপুতানাকে ইংল্যান্ডেরা যে নতুন
বসতি স্থান করিয়াছে তাহার নাম ননী
রাবার সেখানে তাহার সর্বা ওয়োগ
করিয়া দিব্যাদ্রাশ আশনা ঘর পুস্তক
করিতে সেখানে অনেক ঘর পুস্তক হই
য়াছে অশিষ্ট যে আছে তাহাও বর্ষার

পূর্বেই পুস্তক হইবেক এবং সেখানে
রাধা অতিমুন্দর পুস্তক হইয়াছে। সে
স্থানের এই মহা ওয়োগ ওয়োগ
বাধ ও দিল্লী ও কানপুর পুজি স্থান
হইতে অতি পুয়া কালেও পুয়া অধিক
নহে। পূর্বে কলিকাতায় সম্মাচার আ
মিয়াছিল যে তাহার সোমানে জলাভাব
পুস্তক কর্ম পায় এখন সেখানে তাহার
অনেক কুন পুজি মনন করিতেছে সে
খানে কোন স্থান যোগ হাত মৃতিকা
মুখিয়া তাহার জল পাইয়াছে। এখন
কর কুন হইতে সেমানকার কুন অতি
শক্ত যেহেতু সেমানকার কুন পায়ের
পুজি।

নদীর পথেরদি।

পশ্চিম দেশ হইতে অনেক আদ্য মা
মিগি ও বানিজ্য আর দুয়া যে পথে
কলিকাতা পুর্বেশ আনা বৎসর আসিত
এই বৎসর সে পথ রোধ হইয়াছিল ও
পুস্তক এতদেশে সে সকল দুয়া আসিতে
পারে নাই সেইহেতু সকল মাগিগি
দুয়া আজে এবং সেই জন্য যোগ্য
কলিকাতায় কুড়টা আহাজ নাগান আ
জে বানিজ্য দুয়া না পাইলে কি হলে সে
সকল আহাজ বোঝাই হইয়া মলিতে
পারে। এখন ভরসা হয় যে সে পথ
অতিশয় মুক্ত হইবেক তাহা হইলে
আদ্য দুয়া দি সুলভ হইবেক।

গঙ্গাসাগর।

গঙ্গাসাগর ওপদীর বন কাটা হইয়া
লোক বসতি করা হইবার যে সম্মুখায় থির
হইয়াছে পূর্বে লিখা গিয়াছে সেই সম্মু
খায় গঙ্গাও সকল লোকেরা ও জলাই তা
করিয়া এবং হইবেক ও অশিষ্ট বৎস

হেবের দত্ত পরবান সেই তারিখে আ
ত হইবেন। সেই ওপদীর অশুভ শো
কোরদের থানিকবার ঘর করিতে লোক
গিয়াছে এবং সেই ঘর করিবার জমিন
হাজার টাকা মতী হইয়াছে।

ভূমিকল্প।

১৬ জুন ও আশ্বাধ বুধবার রাত্রিতে
আট ঘড়ীর সময়ে অর্থাৎ ১২০০ দত্ত রাত্রির
সময়ে ভূমিকল্প হইয়াছে। ভূমিকল্পের
কারণ ইংল্যান্ডেরা এই কহে যে পৃথিবীর
মধ্যে বায়ু আছে কোন সময়ে সেই বায়ু
হারা ভূমিকল্প হয়।

বারিগার সিংহানন।

শ্রী বারিগার নবাবের যে সিংহানন
জিল সে সিংহানন মুন্সের সময়ে যে
জিৎস সাহেবের হস্তগত হইয়াছিল সে
সিংহানন মলি মুক্তা পুর্বেতে ভূমিত
হেংজিস সাহেব যখন ইংল্যান্ডে গেলেন
তখন ঐ সিংহানন ইংল্যান্ডের রাণীকে
নাকর দিলেন সে সিংহানন ঐ রাণীর
ঘরে অধ্যাপি আছে।

আহাজ আয়মানি।

গত বুধবারে এক আহাজ ইংল্যান্ড হই
তে তিন মাস একইখিনি যোগ্য কলি
কাতাতে পুঁথিখান্না তাহাতে এই সম্মা
চার স্থান গেল।

অশিষ্টপুত্রের স্বী কলিকাতায় আসিবার
কারণ যেহেতু আসি মানে ইংল্যান্ড হইতে পু
স্থান করিয়াছেন পুঁথি পুঁথিখনি।

দ্রাষ্টিন। দ্রাষ্টিন সাহেব পূর্বে এখানে
হেংজিস সাহেবের কালে কৌমিলে জি
লেন তিনি এ দেশে হেংজিস সাহেবের
অশুভল ছিলেন না এবং ইংল্যান্ডে যে

সমাচার দর্পণ ।

‘হেম্ফ্রিস সাহেবের নামে নামিন হইয়া ছিল তাহার মুখোত্তমিতিলি। সেই দুই জন পরস্পর বিরোধী ছিলেন ও অন্য লোকহইতে ঐ দুই জন দ্বন্দ্বকালজীবী ছিলেন সে দুই জন চয় মাসের মধ্যে এই পৃথিবী পরিত্যাগ করিলেন।

লমসুদেন সাহেব। লমসুদেন সাহেব অনেক কালপর্যন্ত এতদ্দেশে কৌশিলে ছিলেন পরে ইংগ্লেণ্ডে গিয়া সেখানে যে চর্চিশ জন ক্রীষ্টিয়ান অধিকারী আছেন তাহার এক জন তিনি হইয়াছিলেন সম্প্রতি তিনি মরিয়াছেন এবং তাহার কর্মে বোম্বের, বড় সাহেব যে মনি সাহেব ছিলেন তাহার ভবিত হইয়াছে।

জানিয়ার রাণী। জানিয়ার রাণী বা ইশ বংশের বয়স্ক হইয়া মরিয়াছেন। তাহার মরণ সময়ে তাহার গর্ভ ছিল ভিলি মরিগে ওরহইতে তিন মাসেরা আর বাকি লিখিত করিলে দুই দিন পনের পর ঐ বালক ও মরিল।

মহানভা। ইংগ্লেণ্ডে নূতন মহানভা বসিয়াছে ও তাহার কর্ম করিতে পুস্ত হইয়াছে এবং ইংগ্লেণ্ডের এক পুস্তকেশ্বর, কতক লোক মহানভার নিকটে বরখাস্ত করিল যে অন্য বহিঃ পুস্তকহইতে ইংগ্লেণ্ডে যে চানু আইমে তাহার হামিল অধিক লওয়া গড়ক। এই বরখাস্ত শুনিয়া মহানভার অন্য লোকও কহিল যে এই বরখাস্ত তোমাদের নিকটে অনেক পড়িবে। ইহাতে বাদশাহের ডাক্তার কহিলেন যে হামিল অধিক ভগান কহাট কর্তব্য নহে যদি কেহ এ বিষয়ে ভেড়া করেন তবে আমি প্রতিবাদী হইব।

এখন লণ্ডন শহরে চানুর মূল্য অসামান্য পাঠ টাকা পাঠ আনা।

শ্রীশ্রীযুত বড় সাহেব। নূতন মহানভা বনিবার সময়ে বাদশাহের কর্ম কারী বাদশাহের আন্তঃ পুত্র মহানভার নিকটে শ্রীশ্রীযুতের এই দেশে গড় বং মরে যুদ্ধের অনেক পুস্তক রাখিলেন এবং বাদশাহের ডাক্তার মহানভার নিকটে কহিলেন যে মহানভা এখানে শ্রীশ্রীযুতের পুস্তকাদি রাখিলেন।

পারসী দেশ।

পারসী দেশের নিকটবর্তী শ্রীশ্রীযুত কহিয়া বাদশাহ এক জন ওকীল ও চার জন মুখ্যর ও আরও তাহারদের সঙ্গী লোক পারসী দেশে পাঠাইয়াছেন তাহার অভিপ্রেতি কিছুই জানা যায় না।

জগন্নাথ মঙ্গল।

যেহা বনিকাতো জগন্নাথ মঙ্গল নামে এক নূতন পাঁচালি গান মধ্য হইয়াছে তাহাতে জগন্নাথ দেবের মঙ্গল বিবরণ আছে এবং রাণী ও রাণালী ও তাল মালতে পুণ্য অর্থাৎ মর্ষন প্রকাশ হয় নাই।

হস্তহীন জাত।

ঐলও দেশে বিনা হস্তে জাত এক ব্যক্তি আছে সে ব্যক্তি হাতের তাহা কর্ম আন পায়ের দ্বারা করে সে জন হাতী দ্বারা বসিয়া পায়ের অঙ্গুলি দিয়া পেশোলা তুলিয়া থায়া ইত্যাদি কর্ম সে এমত মহাজে করে যেমন হস্তে করা যায়। এবং

সে বাম পায়ের অঙ্গুলি দিয়া কাগজ ও দিয়া দ্বিগুণ পায়ের অঙ্গুলি দিয়া কলম দিয়া অতিবেগে লিখিতে পারে সে কোন মুহুরির না রাখিয়া আপন মঙ্গল বিল আপনি লিখে ও আপন ঘোনা পাওয়ার হিসাব আপনি করে সে ক্ষুর আপন পায়ের অঙ্গুলি দিয়া দ্বিগুণ আপনি ফোঁড়ী হয় সে আপন পোশাক পরারহইতে আপনি খুলে ও আপনি পোশাক পরে সে আপন জুতা আপনি পরিষ্কার করে ও আপন আহারের দুখা তপনি পরিষ্কার করে এবং ঘরের ঘড় কর্ম সে মঙ্গল আপনি করে। এবং আপন পায়ের অঙ্গুলি দ্বারা গোমোহন করে ও আপন দাঁত আপনি বাটে ও এক মূলহইতে অন্য মূল লইয়া যায়। তাহার ঘোড়া যদি অসামান্য ঘর তবে সে আপনি দ্বিগুণ আশিয়া তাহার জিন ও আরও মাজ আপন দস্ত ও পায়ের অঙ্গুলি দ্বারা ঘোড়ার ওপরে দিয়া আপনি মোয়ার হয়। যদি তাহার মেয়ের মধ্যে কোন মেয়ের রোগ ঘর তবে আপনি মেয়ের পালের মধ্যে কণা মেঘকে অন্য স্থানে লইয়া গিয়া তাহার ওরহিদি দেয়। তাহার দস্ত এমত পক্ষ যে তাহার দ্বারা দশ বার পের জিনিস গড়া ইতে পারে অন্য লোক হস্তের দ্বারা যেমন করে তেমন সে আপন পায়ের দ্বারা করে ইচ্ছাক্রমে কোন ভার বস্তু ঘুরে ফের করিতে পারে অন্য লোক হস্ত দ্বারা যে কর্ম করে সে কেবল পায়ের দ্বারা সে মঙ্গল কর্ম করে। ঐশ্বর এমত করিয়াছে যে তাহার এক ইন্দ্রিয় হীন হয় তাহার অন্য ইন্দ্রিয় অতিশক্ত হয়।

এই সমাচার দর্পণ শ্রীশ্রীমন্দের হাসাধারাত পুতি লভ্যে পরিবার হাসা হর। যাঁহর লভের কাশিহর হর তিনি শ্রীশ্রীমন্দের হাসাধারাত আপন বার পাঠাইলে লভ্যে কাশিহর দিকটে পাঠান হইবেক তাহার মূল্য মাসে এক টাকা। তিনি কাশি করিয়াছেন বহি তাহার নিকটে সমাচার দর্পণ পাঠহে তবে তিনি শ্রীশ্রীমন্দের হাসাধারাত সমাচার বিবরণ তাহার নিকটে পাঠান হইবেক।

সমাচার দর্পণ

৪৮ সংখ্যা

শনিবার। ১৩ জুন মল ১৮৬২। ৪৩ আশ্বিন মল ১২২৩।

দর্পণে মুখ্য সৌন্দর্য্যমিহ কার্যবিহীনগণ। বৃদ্ধাঙ্কিহ আলস্য সমাচারস্য দর্পণে॥

কোল্লানির সাগীজ।

কোল্লানির শতকরা জয় টাকার মুদ্রের
কাগীজ কয় করিতে হইবে শতকরা জয়
আনা ত্রিশকোড়। বিস্ময় করিতে হইবে
শতকরা বার আনা ত্রিশকোড়।

সম্রাটের পাঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|-----|-------------|----|--------|
| ১৬ | জুন | শনিবার | ১০ | আশ্বিন |
| ১৭ | ৩ | রবিবার | ১১ | ৩ |
| ১৮ | ৪ | সোমবার | ১২ | ৪ |
| ১৯ | ৫ | মঙ্গলবার | ১৩ | ৫ |
| ২০ | ৬ | বুধবার | ১৪ | ৬ |
| ১ | ৭ | বৃহস্পতিবার | ১৫ | ৭ |
| ২ | ৮ | শুক্রবার | ১৬ | ৮ |

অমী বিক্রয়ের ইস্তাহার।

অনেক লোকের অতীশ দামিন কোমোটার রোড ও চার্লি
নকশ দামিন পীঠের তপনীয় মুলাশ খানে দিল্লিতে বিক্রয়
হইবেক অর্থাৎ ও কলোরে কলোরে বোম্বাইবন্দু লাক্ষ্যটি
বর্তমানকার অর্থাৎ কোমোটার কামোটারি কারাগারে মালুম
হইবেক।

রাফালি বৃহস্পতিবার ১ জুলাই মল ১৮৬২ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

৩১শ্রাবণ বৃহস্পতিবার ১ জুলাই মল ১৮৬২ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

বোম্বাইবন্দু লাক্ষ্যটি বর্তমানকার অর্থাৎ কোমোটার কামোটারি
কারাগারে মালুম হইবেক।

৩১শ্রাবণ বৃহস্পতিবার ১ জুলাই মল ১৮৬২ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

১৬ আশ্বিন মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩ ইং মল ১২২৩

ইস্তাহার।

মল ১৮৬২ মাল ১২ জুন মঙ্গলবার
দশ ঘণ্টার মধ্যে মোঃ শুরামপুরে দিল্লী
মার কোল্লানির ওয়ায়ে দিল্লীমার কোল্লানি
নির অষ্টাশ্রুতি মোহিবেরা দিল্লীমার
কোল্লানির আহাঁজ কুশিনমেসেন কাপ
ডান ওয়া গার্ডি আহাঁজে যে জিনিস
আদিয়েছে তাহার কতক বিক্রয় করিবেন।
অর্থাৎ।

জীন মরণ পুতাক সিদ্ধকে ১৫ বোতল।
লিনসিহ উতল পুতাক সিদ্ধকে ১৫ বো
তল।

কোল্লানিক বুড়ি মরণ পুতাক সিদ্ধকে
৫ মজন।

দিল্লী নবরের ঘণ্টা ৪০ ইঞ্চ অর্থাৎ
৪৮ ইঞ্চ পর্যন্ত।

নানাপ্রকার কর্বেজ দেক ইঞ্চ অর্থাৎ
দুই ইঞ্চ পর্যন্ত।

তাহার পাঁচ।

দেবদাক্তাক।

এ সময়ের বিনাতি মোহিবেরা ২৫-
নানাপ্রকার অলা দিল্লী জিনিস
বিক্রয় হইবেক।

এই দিল্লীমার এই দস্তুর নিরূপিত হই
ল দিল্লীমার পর ত্রিশ দিনে দিল্লীমার

জিনিস ধাওয়া করিতে হইবে অলাখ
পুলবার মেই- জিনিস বিক্রয় হইবেক

কিন্তু পুলবার বিক্রয় করিলে যদি লাভ হয়
তবে কোল্লানির হইবেক যদি নোকমান

হয় তবে তাহার। দিল্লীমার অলা
বিবরণ দিল্লীমার দিনে পুকার হইবেক

এ দিল্লীমার জিনিস যদি কেহ দেখিতে

সমাচার দর্পণ।

চাহে তবে নিলামের পূর্বে আট দিনের মধ্যে কোন দিনে কোম্পানির ওয়ার্মে গিয়া দেখিতে পাইবেন।

সমাচার দর্পণ।

শ্রীমন্মথের বাঁক।

শ্রীমন্মথের যে মস্তকটি বাঁক দ্বিহ্ন হইয়াছে তাহার বিষয়ে গত মস্তকে এক মস্তকটি জানান গিয়াছে তাহাতে হিন্দব করিয়া এই লিখা গিয়াছে যে মাস্ত্র বাঁকি কত টাকা লাভ করিলে কত বৎসরে কত টাকা হয় বৎসরাতে যে টাকার ওপরে যত মুদ্র হয় তাহা আমলের সহিত মস্তকটি হইয়া ওভয়ের ও পুরে মুদ্র চল তাহাতে মুদ্রা নীত হয় বৎসরে কত লাভবোধ হয় না কিন্তু দশ কুড়ি বৎসর টাকা থাকিলে অধিক লাভ বোধ হয়। যাহা এক টাকা করিয়া দিলে দশ বৎসরে এক শত চৌহতর টাকা হয় বিশ বৎসরে পাঁচ শত একত্রিশ টাকা হয় এবং ত্রিশ বৎসরে বার শত চেষ্ট্রি টাকা হয়। এই ত্রিশ বৎসরের মধ্যে আমল টাকা তিন শত চাট্টি ও ঐ তিন শত চাট্টি টাকার মুদ্র নয় শত চল টাকা। এবং যদি দশ টাকা করিয়া মাস্ত্র বাঁকি লাভ করা যায় তবে ইহার দশগুন অধিক লাভ হয়। এই মস্তকটি ইংল্যান্ডে জানা হইয়াছে আশীমি মস্ত্র হে বাঙ্গালি লোকের আঁত কারন বাঙ্গালি অক্ষরে জানা পাইবক।

কালোজ।

মোঃ কলিকাতার কোম্পানির কালোজ

আটটার জন ইংল্যান্ডি মাহেবেরদের ইচ্ছা হইয়াছে তাঁহারা ইচ্ছা হইয়াছে মুদ্রের ওভার হইয়াছেন এবং কালোজ হইতে বিদায় হইয়াছেন আশু দিনের মধ্যে তাঁহারা কোম্পানির ওপুত্র মত কর্ম পাইবেন। এই বৎসর দুই জন মাহেব মস্ত্র বিদ্যাতে প্রস্তুত হইয়াছেন।

বৎসর এই নিয়ম আছে যে ইচ্ছা হইলে যের পর যে তিন জন পুত্রকে তাহাতে সকল হইতে অধিক গুনবান হন তাঁহারা নিরুপিত সময়ের কোন এক খণ্ডের বিষয়ে কথোপকথন করেন সে সময়ের অশ্রুত ও কলিকাতা ইংল্যান্ডি তাবৎ ভাগিহান এবং অন্য তাবৎ মস্ত্র ও ভাগিহান লোক ও পতিত লোকেরা মকল একমুদ্র হন। এবং তাহাদের ইচ্ছা হইয়া থাকে অশ্রুত তাহাদের দ্বিতিক তাক্রি মস্ত্রের চিক্র দেন এবং তাহারা অশ্রুত হইতে ঐ সময়ের কাল জের সহী পান। তাহারা কালোজ হইতে বাহির হন তাহারা এই মস্ত্র ওপুত্র কর্ম পান। অশ্রুতের মাফা কারি যে দিন কথোপকথন হইবে তাহার দিন দ্বিহ্ন হয় নাই কিন্তু দুই এক মাসের মধ্যেই হইবেক দিন দ্বিহ্ন হইলে সমাচার দেখা পাইবক।

মাগী।

কটোয়ার নামে দক্ষিণ হিন্দুস্থানের এক পুদ্রমে কেরগোম মরক হইয়াছে। সেখানে মরক এক ব্রাহ্মণীর দ্বারা এই মস্ত্র আইল। সে ব্রাহ্মণী সে রোগেতে পীড়িতা হইয়া গাঁড়িতে সেই গুণ্যে আইল যে দুই জন তাহাকে গাঁড়িহইতে নামাইয়া ঘরে লইয়া গেল সে দুই জন

ঐ পীড়িতে মরিল পরে সে ব্রাহ্মণী ও মরিল এবং ঐ ব্রাহ্মণীকে তাহারা পৌড়িহন তাহারা ঐ পীড়িতে মরিল এবং তাহাকে দেখিবার কারন তাহার এক কুট্রি আশ্রিতা তাহাকে ঐ রোগে ধরিল তাহাতে সে যন্ত্র হইয়া আপন গুণ্যে গেল সেখানকার লোকেরা তাহাকে ঐ রোগগুস্ত দেখিয়া সে গুণ্য হইতে দূর করিয়া দিল।

তাক্রি।

এক ব্যক্তি মস্ত্র লোক মোঃ কলিকাতা হইতে ঘাইতেছিল গত মোমবার রাত্রিতে মোঃ চাট্রার ঘাটে লোকা লা গাঁত করিয়া ছিল ঐ রাত্রিতে জন কতক চোর তাহার লোকাতে পড়িয়া মারিল করিয়া তাহার ঘাংরা ছিল তাহা লইয়াছে পরে খানাদারের নিকটে দিলে তাহা হওয়াতে খানাদারের তদারকে কেহ দ্বারা পড়িয়াছে জিলিস এ অনেক পাওয়া গিয়াছে।

বস্ত্রাণ্ড।

১৪ জুন ৪৪ আশাৎ বৃহস্পতিবার রাত্রে মোঃ শ্রীমন্মথের নিশানঘাটেতে দিলা মার কোম্পানির নিশানের ওপরে বস্ত্রাণ্ড হওয়াতে ঐ নিশান অগুস্তা অবধি গোড়ানবর্ষে তাড়িয়া গিয়াছে।

রাজবংশ দ্বিহ্ন।

গত বৎসরে ইংল্যান্ডের বাহশাহের চারি পুত্র বিবাহ করিয়াছেন এবং যুবরাজের নিকটে সমাচার গিয়াছে যে বাহশাহের চারি পুত্রের জীরদের গাঁত হইয়াছে। বাহশাহের পৌত্র কিম্বা পৌত্রী এখন নাই কিন্তু মস্ত্রবান হইয়াছে।

সম্রাচার দর্পণ।

মৃতরাণী।

ইংলণ্ডের রাণী গভব-মন্ডের পরলোক
গতা হইয়াছেন তাঁহার ওইলে দেখা
গেল যে তাঁহার নগর নাম্ব এগার
লক্ষ টাকা ছিল তিনি আপন বাড়ী আপন
কন্যাদিগকে দিয়া গিয়াছেন তাঁহার ন
কান্ন যোকা জিল তাহা জন্মি হাজার
টাকাতে বিক্রয় হইয়াছে এবং আটার গা
তী জিল আট হাজার টাকাতে বিক্রয় হ
ইয়াছে এবং অক্ষয়ণা যোকা ওলির হারা
মারিয়া ফেলিয়া রে

শ্রীশ্রীমুন্ডের স্বীর আশ্রয়।

গত শুক্রবার কলিকাতাতে সম্রাচার
আছিল যে ইংলণ্ডহইতে ওয়াটসলুল্যে
আহাজ যোনা গরানাগারের নৈখরিয়াজে
সে আহাজ ৪ মার্চ তারিখে ইংলণ্ড জাতি
য়াজিল আমিতে পথে কেবল তিন মাস
গেল দিন লাগিল। সেই আহাজে শ্রী
মুন্ডের স্বী আমিয়াছেন অনেক দিনপর্যন্ত
লোকেরদের মনে ভরোনা দিলে। হইতে
জিল যে তিনি অমুক আহাজে আমিবেন
সে ভরোনা ওপন্ন হইয়াই নক্ষ হইতে
জিল কিন্তু তিনি এইবার মতা ওয়াটসলুল
আহাজে আমিন্ত নৈখরিয়াজে।

গত শনিবার শ্রীশ্রীমুন্ড সেই সম্রাচার
শ্রীনিবাসী তাঁহার সহিত নাম্বা ৮৩
তে গেলেন গরানাগারের অর্ন্তক পথে
ঘাইতে ওভয়ও মদর্পন হইল। সোম
বার তাহারা দুই জন কলিকাতার সমু
থে নৈখরিলেন ও দুই পুহর এক ঘড়ীর
সময়ে শ্রীশ্রীমুন্ড ও তাহার স্বী গাতিতে
আরোহণ করিয়া আপন ঘরে নৈখরিলেন
তিনি যখন কলিকাতার মুক্তিলাভে পুথ্য
পারাবার করিলেন তখন কলিকাতা ভোণ
হইল।

মুন।

কেতবুদ্ধীন নামে এক মুসলমান মার্চ
মাসে যোনা ঘণ্টাহারে মুন হইয়াছিল
ইহাতে তাহার স্বী ও সেই স্বীর ওপাড়ির
পুতি মকল লোকের সম্মুখে হইয়াছিল
অতএব সেই দুই জনকে ধরিয়া কয়েদ
করিয়া আদালতে লইয়া গেল তদালতের
লোকেরা তাহারদিগকে জিজ্ঞাসা করিলে
তাঁহারদের মাথো এক জন বলিল আমি
মুন করি নাই ইনি করিয়াছেন এই হলে
দুই জনেই পরদের দোষী বহিতে লাগিল
তৎপুক্ষ ই মোকদ্দমা দারনায়েদের
অধীন হইল দারনায়েদের মাথের মেথানে
গিয়া মকল মোকদ্দমার কথা শুনিয়া
যথার্থ আদালত করিয়া ঐ দুই জনকে
জািনা দিতে হকুম দিলেন। পরে ঐ
স্বী কহিল যে আমি গর্ভবতী আছি।
তাহাতে ঐ স্বীর কথাতে মাথের সম্মুখে
করিয়া ঐ গর্ভের বিষয় ইচ্ছা হইল লইলেন
তাহাতে ঐ স্বী যে সয় মাসের গর্ভ কহি
য়াছিল তাহা মতা হইল না কিন্তু তাহার
গর্ভ লিঙ্ক হইল। পরে মাথের স্বীকে
কতক কাল মেয়াদ দিলেন ও ঐ পুঙ্কের
শিশু জন্মি দিতে হকুম দিলেন। অত
এব গত সোমবার ঐ পুঙ্কের জািন হই
য়াছে।

৭ জুন সোমবার রাত্রিতে হরিহর নগর
র গুয়ে দুই জন লোক মুন হইলে পর
দিন বুড়কালে ঐ গুয়ের লিকটে এক
রিলে ঐ দুই মৃত ব্যক্তি পাওয়া গেল
ও তাহারদের ঘাট মোচড়ান দেখা গেল
এবং অনুমান করা গেল যে তাহারা
বিদেশী মুসলমান। তাঁকাতিরা তাহার
বিগায়ে মারিয়া তাহারদের মাথের মাথা
জিল তাহা লইয়াছে এই কুপ মকলে
কনুমান করিল।

এবং যোনা ঘণ্টাহারে এক মিথ
হির ঘরে নগর মতর শত টাকা পাওয়া
গিয়াছে এবং মেথানে কোঁদারি
মাআনও তত টাকা হারান গিয়াছে।
ইহাতে অনুমান হয় যে ঐ মিথাহী
ঐ টাকা চুরি করিয়াছিল ইহা আশ্রা
শ্রীমিয়াছিল।

চৌধ্য।

কতক দিন হইল ঐ নগর দেশের দরলিন
নগর এক জন ওকীল মাথেরদের ঘরহই
তে কতক বন্ধ পুত্তি চুরি গেল পরদিন
পাণ্ডকালে অনুমান করিল কিন্তু তা
হাতে কিছু পাইল না পরে একখান চিঠী
পাইল সে চিঠী ঐ চোর লিখিয়াছিল। তা
হার পাঠ এই যে আমি চৌধ্যবুতি হারা
কালকো করি তুমি আপন ঘরের হার
বন্ধ করিয়াছিল। বটে কিন্তু সে বন্ধ জিল
না খোলা জিল এই নিমিত্ত আমি তো
মার কুতি ও কাপড় লইয়াছি কালকে
আমার পুয়াজন জিল যেহেতুক মূর্খের
ওপা আমার ওপরে বত ব্যামুহ দিত।
তোমার আদালতের কেতাব আমি লই
লে লইতে পারিতাম তাহা লইয়া আমার
কি পুয়াজন আমি স্বাভাবিক চোর।

যাহামাসা।

আটার শত গেল মাল জুন মাসে
ইংলণ্ডহইতে এক আহাজ ভারত বর্ষ
আমিতেজিল কিন্তু অতিশর দক্ষিন সমু
দ্রে তাহার ঘাইবার আশ্রয় হইল তৎ
পুক্ষ সে আহাজ দক্ষিন সমুদ্রে গেল
মেথানে আহাজের লোকেরা কিছুদূর
একটা চিনির মত সমুদ্রের মাথো দেখিয়া
ভাণ করিল যে স্বনা আছে এখানে এক

সমীচীর দর্পণ ।

টা পৰ্বত আছে সেই এই পৰ্বত । পরে
নিকটে গিয়া আর একটা সেইকন দে
খিয়া মনে করিল যে বৃষ্টি আরো এক ন
বৃত্ত আছে । পরে কিছু দূরে গিয়া নমুখে
আর একটা সেইকন দেখিল । পরে তা
হার আঁহাও লইয়া তাহার নিকটে
গিয়া দেখিল যে আঁহাওয়ের চেতর আলতে
এ তিনটা, আল তুহিয়া গোল ও তাহার
যের পুরুভূতি দেখা গোল তাহাতে আ
না গোল যে সে মহামনসা তাহার এ
কটা বেতেতে ঘটি হাত ও ওর বার হাত ।

ইংগ্ৰেড ঘেরের পুস্তক বিক্রয় ।

যেহেতু কলিকাতায় লোকেরা পুস্তক
পুস্তক করিয়া রাখিয়া বিক্রয় করে সে
যত ইংগ্ৰেড হয় না । ইংগ্ৰেডের এই
বিশ্বাস আছে যে যে ব্যক্তি কোন নতুন গ্ৰন্থ
মুদ্রিত করে সে গ্ৰন্থ বিক্রয়কারীর নিকটে
দেখায় । সে ব্যক্তি এই গ্ৰন্থের দোষ
ও বিবেচনা করিয়া ও লোকেরদের
প্রশংসা করিয়া তাহার ওপস্থিত মুদ্রা
দ্বিয়া লয় । পরে তাপাওগারের নিকটে জা
নার থরত দিয়া এই গ্ৰন্থ রাখিয়া আপনি
বিক্রয় করে । কোন গ্ৰন্থের মুদ্রা বিপ
হাওয়ার কোন গ্ৰন্থের মুদ্রা বিশ হাওয়ার
টাকা বিক্রয়কারী গ্ৰন্থকর্তাকে দিয়া গ্ৰন্থ
লয় । গত বৎসরে ইংগ্ৰেডে এক ব্যক্তি
গ্ৰন্থবিক্রয়কারী গ্ৰন্থকর্তাদের স্থানে তিন
লক্ষ বিপ হাওয়ার টাকা দিয়া নানা পুস্তক
কিনিয়া লইয়াছে । ইংগ্ৰেডে এই কন
বিষায় চলন ও উদ্বিগ্নে লোকেরদের
আয়োদ ।

দুইয় মর্শ

আমেরিকা দেশে এক প্রকার মর্শ আছে

তাহার অভিমুখের দিক সে মনুষ্যকে ঘ
শন করিল সে মনুষ্য কখনও বোঁচো না তা
হার শরীরে মনুষ্যের আঁহেবের মত আঁ
ইহ আছে সেই আঁহে গমন কালে কুল
কুল শব্দ করে তৎপুঙ্ক তাহার নাম
কুল কুল মর্শ লোকের কহে । সে মর্শের
এমত গুল আছে যে সে মর্শ যখন আ
হার করিতে বাসনা করিয়া যে পক্ষিপু
ত্রি দিকে দৃষ্টি পাত করে সে পক্ষিপুত্র
সেই দৃষ্টি অমান নিশ্চেষ্ট হইয়া থাকে
কহা অলম্বন পলাইতে পারে না । এই
অলম্বন ইহার কারণ কেহই উল্লিখে
নাহে নাই কিন্তু মনুপ্রতি আমেরিকা দে
শের এক ব্যক্তি ইহার কারণ অনুভব এই
করিয়াছে যে এই মর্শের যখন আহার ক
রিতে ইচ্ছা হয় তখন তাহার শরীরেইতে
শক্তি গাঞ্জ শক্তি হয় সে গাঞ্জ ঘুলন করি
বাধ্য তাহারোপস্থিত পক্ষাদির ইন্দ্রিয়
চলন হয় তৎপরে তাহার চলিতে পারে
না অসামান্য এই মর্শ তাহার দিকে দৃষ্টি
পা আহার করে । ঐশ্বর যদি এক ন না
করিতেন তবে এই মর্শের আহার অতিদু
র্ঘট হইত যেহেতুক তাহার শব্দ্যাত্রতে
আহারীয় পক্ষাদি পলায়ন করিত । সে
মর্শের জোর মনুষ্যের ওপস্থিত ল্যাণ্ডিকি
যেমন পক্ষাদির ওপরে তেমন মনুষ্যের
ওপরে নহে । আমেরিকা দেশে এক
ব্যক্তি সীতার করিবার কতন বলে গিয়া
ছিল এই কুলকুল মর্শের দৃষ্টি সে ব্যক্তির
ওপরে পড়িল তাহার সকল ইন্দ্রিয় অ
বশ হইয়া সে অজ্ঞান হইল । আর
এক মনুষ্য ক্ষেতে কর্ম করিতেছিল অক
স্মাৎ সে মহাঘোর শব্দ করিয়া মূর্খ
পন্ন হইয়া পড়িল । ইহা দেখিয়া সকল

সেখানে গোল ও দৃষ্টিল যে এই ব্যক্তি সে
মর্শের মস্তক হস্তিয়াছে তাহার গাঞ্জে
এই মনুষ্যের এই বশ হইয়াছে । আর এক
ব্যক্তি আমেরিকা দেশে আছে তাহার
এমত ঘুলন পক্ষি যে সে যেত শত হাত
দূর হইতে গাঞ্জ পায় । সে কহিয়াছে
যে আমি যখন এই কন গাঞ্জ শাইয়াছি ত
খন তাহার নিকটে গিয়া দেখিয়াছি যে
এ কন পক্ষি বজ্র আছে । ইহাতে নিশ্চয়
বোধ হয় যে এই মর্শ আপন শরীরের গাঞ্জ
বাঁধা আহারীয় পক্ষাদি বোধ করে ।

শীত নিবারণ ।

ইংগ্ৰেড ও উল্লিখিত সকল শীত
পূহীনক দেশে শীতকালে শীতনিবারণার্থ
ঘরে অগ্নি জ্বালায় । যে ঘরে অগ্নি
জ্বালায় সেখানে বীষ নিগত হইলে
অন্যে উর্জ ভাণে এক ঘরোকা রাখে
তাহার বাঁধা বুঝ বাহিরে যায় এই অগ্নির
উত্তাপেত ঘর উত্তপ্ত থাকে সুতরাং শীত
নিবারণ হয় এই ব্যবহার আছে কিন্তু
কতক বৎসর হইল ইংগ্ৰেডে এই বিষয়ে
অন্য এক ব্যবহার হইয়াছে ও সে চলিতে
ছে সে এই যে ঘর উত্তপ্ত করিতে বাসনা
করে তাহার কতক দূরে এক স্থানে বৃহৎ
অগ্নি করে সেই অগ্নিতে বহু চুই
লাগাইয়া এই ঘরের মধ্যে চুইর অগ্নি
ভাণে লাগিয়া তাহাতে এই চুইর বাঁধা
এ অগ্নির উত্তাপ এই ঘরে লাগে তাহাতে
এই ঘর উত্তপ্ত হইয়া শীত নিবারণ হয় ।
এই পুকারে একস্থানে অগ্নি করিয়া দশ
কুতি ঘরের শীত নিবারণ করা যায় ।
ইহাতে এই উপকার হয় যে আপনাদেবের
নিজ ঘরে অগ্নি জ্বালাইতে না ও বৃহৎপুঙ্ক
ঘর মন্দ হয় না ।

এই সমীচীর দর্পণ পুরানসময়ের হাস্যকথানতে পুতি নতাবে পরিবর্তে হাস্য হয় । বাহার লগনের আশপক হর তিনি পুরানসময়ের হাস্যকথানতে
আপন নাম পাঠাইলে নতাবে হাস্য তাহার নিকটে পাঠান বাইবেক তাহার মূল্য মানে এক টাকা । যিনি হাস্য করিয়াছেন যদি তাহার নিকটে
নগদার দর্পণ না পাইলে তবে তিনি পুরানসময়ের হাস্যকথানতে সমস্তের দিব্যামণি তাহার নিকটে পাঠান বাইবেক ।—

সমাচার দর্পণ

৩৩ সংখ্যা

শনিবার। ৩ জুলাই সন ১৮৮১। ২০ আষাঢ় সন ১২২৬।

দর্পণে মুখ্য সৌকর্য্যমির কার্যবিবরণীঃ। বৃত্তান্তাদিহ আন্তঃ সমাচারসম্বন্ধে।

কোম্পানির কাগজ।

কোম্পানির শতকরা চয় টাকার সুদের
কাগজ সয় করিতে হইলে শতকরা দশ
আনা ভিষকোঞ্চ। বিসয় করিতে হইলে
শতকরা চৌদ্দ আনা ভিষকোঞ্চ।

সম্মতের পঞ্জিকা।

| | | | | |
|---|-------|-------------|----|-------|
| ১ | জুলাই | শনিবার | ১০ | আষাঢ় |
| ২ | ২ | রবিবার | ১১ | ২ |
| ৩ | ৩ | সোমবার | ১২ | ৩ |
| ৪ | ৪ | মঙ্গলবার | ১৩ | ৪ |
| ৫ | ৫ | বুধবার | ১৪ | ৫ |
| ৬ | ৬ | বৃহস্পতিবার | ১৫ | ৬ |
| ৭ | ৭ | শুক্রবার | ১৬ | ৭ |

অমী বিসয়ের ইস্তাহার।

অনেক লোকের অমী লালিন কোম্পানির চৌক ও তারিখ
লম্বন দ্বারা পীড়িত ভগ্নশিল্প শুল্কপন যাহে নিম্নোক্ত বিবরণ
হইবে তাহা ও অমীসহ ইন্টারেক্ট কোম্পানির লোকটাই
বিস্তারিত অমী কোম্পানির কামাচারিত নাস্ত
হইবে।

১৮ জুলাই বৃহস্পতিবার ৮ জুলাই সন ১৮৮১ ইং সন ১২২৬
১৫ আষাঢ় বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বৃহস্পতিবার ১ জুলাই সন ১৮৮১ ইং সন ১২২৬
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।

অনেক লোকের অমী লালিন কোম্পানির চৌক ও তারিখ
লম্বন দ্বারা পীড়িত ভগ্নশিল্প শুল্কপন যাহে নিম্নোক্ত বিবরণ
হইবে তাহা ও অমীসহ ইন্টারেক্ট কোম্পানির লোকটাই
বিস্তারিত অমী কোম্পানির কামাচারিত নাস্ত
হইবে।

কোম্পানির লোকটাই বিস্তারিত অমী কোম্পানির চৌক ও তারিখ
লম্বন দ্বারা পীড়িত ভগ্নশিল্প শুল্কপন যাহে নিম্নোক্ত বিবরণ
হইবে তাহা ও অমীসহ ইন্টারেক্ট কোম্পানির লোকটাই
বিস্তারিত অমী কোম্পানির কামাচারিত নাস্ত
হইবে।

১৮ জুলাই বৃহস্পতিবার ৮ জুলাই সন ১৮৮১ ইং সন ১২২৬
১৫ আষাঢ় বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বৃহস্পতিবার ১ জুলাই সন ১৮৮১ ইং সন ১২২৬
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।

অনেক লোকের অমী লালিন কোম্পানির চৌক ও তারিখ
লম্বন দ্বারা পীড়িত ভগ্নশিল্প শুল্কপন যাহে নিম্নোক্ত বিবরণ
হইবে তাহা ও অমীসহ ইন্টারেক্ট কোম্পানির লোকটাই
বিস্তারিত অমী কোম্পানির কামাচারিত নাস্ত
হইবে।

১৮ জুলাই বৃহস্পতিবার ৮ জুলাই সন ১৮৮১ ইং সন ১২২৬
১৫ আষাঢ় বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বৃহস্পতিবার ১ জুলাই সন ১৮৮১ ইং সন ১২২৬
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।

১৮ জুলাই বৃহস্পতিবার ৮ জুলাই সন ১৮৮১ ইং সন ১২২৬
১৫ আষাঢ় বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বৃহস্পতিবার ১ জুলাই সন ১৮৮১ ইং সন ১২২৬
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।

১৮ জুলাই বৃহস্পতিবার ৮ জুলাই সন ১৮৮১ ইং সন ১২২৬
১৫ আষাঢ় বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বৃহস্পতিবার ১ জুলাই সন ১৮৮১ ইং সন ১২২৬
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।

১৮ জুলাই বৃহস্পতিবার ৮ জুলাই সন ১৮৮১ ইং সন ১২২৬
১৫ আষাঢ় বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বৃহস্পতিবার ১ জুলাই সন ১৮৮১ ইং সন ১২২৬
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।
১৮ জুলাই বঙ্গ-মোহিতকর লোকটাই বিস্তারিত।

ইস্তাহার দেওয়া যাইতেছে।

যে ১০০ এক হাজাৰ্জিয় পাটনাই কাগজ
অ সরবরাহ কার্জন কলকাতার দরখাস্ত
যে বহু করিবেন দরখাস্তের মাধ্যমে মো
হর করিয়া ও নিম্নলিখিত কাগজের দর
খাস্ত সমস্ত লিখিয়া পাঠাইবে ১০ জুলাই
আগন্তব্যতা দ্বারা আশীশের মোহিতকর
কার শুরুরোধেও সাহেবের লিখিত
দরখাস্ত দাখিল করিতে হইবেক যাহিহ
উদ্দেশ্য।

১ দফা। কাগজের রকম নমুনা মাফিক
দিতে হইবেক ঐ নমুনা মোকামে আসি
পুরে ঐ নমুনা আশীশের দরখাস্ত করিলে
দেখিতে পাঠাবেক।

২ দফা। একত্রিংশ লিখন সহি করণের
পর আর্দ্রে ৫০০ পাঁচ শত রিয়্য আশীশের
আগন্ত পাঁচ দিবসের মধ্যে করিতে হই
বেক বাকী আর্দ্রে ৫০০ পাঁচ শত রিয়্য
বাকী মাতে দুই মাস অধিক দাখিল করি
তে হইবেক।

৩ দফা। দরখাস্তের সহিত এক একত্রিংশ
লিখন এক হাজাৰ্জিয় লোকের দরখাস্তে
দাখিল করিতে হইবেক কার্জন ঐ হাজাৰ্জিয়
লোক করুন রাখেন যাহা কলকাতার
অন্য মাতে করে দ্বিধা খতরা করে তবে
ঐ হাজাৰ্জিয় লোক দাখিল হইবেক।

৪ দফা। কলকাতার জুজীয়া অংশের এক
অংশ টাকা একত্রিংশের দরখাস্ত হই
লে কলকাতার দরখাস্ত দেওয়া যাইবেক আর
বাকী জুজীয়া অংশের দুই অংশ টাকা
কলকাতার বাকী সরবরাহ হইলে দেওয়া
যাইবেক।

সমাচার দপণ।

৫ দফা। শূন্যকোণে সাহেব যে সকল কাগজ লম্বাকার ও মাগে নীরম মাল্য করিবেন তাহা খিরাইয়া দিবেন শুক্য বোধিবলুর।

সমাচার দপণ।

রাষ্ট্রকর্ম নিয়োগ।

শ্রুত অর্জ যেনবেরি সাহেব জেলা সুলতানপুরের রেজেন্ট।

শ্রুত আর এচ কং সাহেব চিফ পণ্ডার রেজেন্ট।

শ্রুত এ মালদা সাহেব জেলাবদ্ধ মাগের রেজেন্ট।

ভূমিকল্প।

মুর্বে অধ্যাপার মূলতানপুরহইতে ১৭ জুন পত্র আসিয়াছে তাহাতে জানা গেল যে ১৩ জুন রাষ্ট্রত সেখানে ভূমিকল্প হইয়াছে ই ভূমিকল্প অনেক স্থান পর্যন্ত ছিল এবং লোকেরদের ভয় জন্মা ইয়াছিল। সেখানকার অনেক বারাদা ঘর দোলায়মান হইয়াছিল এবং মিছা হীরদের ছোট ঘরের অনেক ক্ষতি হই য়াছে তাহার পূর্বে কত দিন সেখানে অতিশয় গিয়া হইয়াছিল ও বহির বিলুপ্ত পাত ও হয় না।

এক মীরজাপুর ও চণ্ডালগড়হইতে সমাচার আসিয়াছে যে ১৩ জুন তারিখে এখানে ভূমিকল্প হইয়াছিল সেই তারিখে সেই সময়ে সেখানেও ভূমিকল্প হই য়াছে এবং চণ্ডালগড় আরো পুলা গেল যে ভূমিকল্পের সময়ে অনেক পক্ষী একত্র হইয়া ওড়বার সময়ে যেমন শব্দ করে সেই মত শব্দ হইয়াছিল। জোন

পুরেও সেই দিন সেই সময়ে ভূমিকল্প হই য়াছে কিন্তু সেখানে কোন শব্দ হয় নাই। এবং জোনপুরেতে ডিন বার পৃথক কর হইয়াছিল।

ডকর রুবিমন সাহেবের মরণ।

গত সমস্তাহে রুবিমন সাহেব মোং কলিকাতায় মরিয়াছেন তিনি কোল্লানির চিকিৎসক ও অতিবক্ষ জিলেন তিনি অনেক গরিব লোকের হিন্দু মূল্যে রোগী সুতীকার করিয়াছেন এবং গত বৎসরে কুষ্টি লোকেরদের বিনামূল্যে চিকিৎসার কারণ যে এক চিকিৎসালয় হইয়াছে তাহার মূলভূত ইনি জিলেন।

রথ।

১১ আশাৎ ১৪ জুন বৃহন্নতিবার মোং কলিকাতার পাটোপাড়ার যে ব্যক্তি রথ করিয়াছিল তাহার ভ্রাতৃপুত্র রথ চাপন মারা পড়িয়াছে। লোকের ভিত্তি সে ব্যক্তি পড়িলে রথ তাহার ওপর দিয়া গেল তাহাতে তাহার হাত ও পা ও নীড়তা ভাঙ্গিল পরে তাহাকে চিকিৎসালয়ে লইয়া গেল চিকিৎসক অনেক চেষ্টা করিল তাহাতে সে দিন জীব জিল পর দিন সে মরিল।

এক বহু বাতীর এক ব্যক্তি কুঠার রথের নীচে পড়িয়াছিল তাহাতে তাহার এক পাশত ভাঙ্গিয়াছে জানুমান হয় যে সে বঁটিতে পারে।

আর এক বালকও পড়িয়াছিল কিন্তু সে রথের চাকার মধ্যেই যে স্থান আছে সেখানে রহিয়া সে বঁটিয়াছে।

মোং মারামতিয়ার রথে এক কল্ল জল মরিয়াছে ও মোং জিলে আকলার রথে এক জন পুরাতা করিয়াছে।

এলাঙা।

ভারত বর্ষের তদুর্ধ্বহইতে সমাচার আসিয়াছে যে এলাঙা রোগের পুনরী প্রাদুর্ভাব হইতেছে মোং মাদ্রাজে প্রতি দিন চল্লিশ পঞ্চাশ জন মরিতেছে এবং বোম্বাইয়ের নিকটে বাদশাহের এক জাহাজের ওপর এই রোগে অনেক লোক মরিয়াছে।

সুন্নিমকোর্ট।

১৩ জুন তারিখে সুন্নিমকোর্টের এই বৎসরকার মিছিল গোলা গিয়াছে সেই সময়ে এই আদালতের হত্যায় জ্ঞাত শ্রুত মর মুসলিম মাকলাতন সাহেব এই মিছিলে যে কর্তব্য তাহা পূর্ণমুত্তির নিকটে করিলেন। তিনি অন্য দ্বিগুণ মনোযোগে করিলেন কিন্তু হস্তকলমের বিষয়ে মিথ্যা সাক্ষির বিষয়ে বিস্তারিত করিলেন যেহেতু হস্তকলমে লোক মিলে ব্যক্তি তেজে এই নিমিত্ত সেই দোষ নিবারণ অত্যাশঙ্ক যেমত কলিকাতা এক ম হাদিনিস্থান এই বানিজ্য কেবল পর পর লোকেরদের খাফেরে পুতায় করিয়া ত নিতেছে অতএব ঘরানি ইহার মধ্যে হস্ত কলমে প্রবিশ্টি হয় তবে সে পুতায় ভরি হইয়া বানিজ্য বাণিজ্য হইতে পারে। ইংলুও দেশে ব্যবস্থানকার হস্তকলমে ব্যক্তির মীমা নিতা দেওয়া যায় কিন্তু এ দেশে সে ব্যবস্থা নাই ও তদনুসারে সে কল দ্রুত নাই কিন্তু হস্তকলমে সাধু হইলে পর বেকুলে অন্য সমুদুর অন্য এক দূর দোষ তাহাকে পাঠিয়া দেয় কিন্তু তাহার সেখানে পঁঠজিলে কলিকাতাহইতেও অধিক মূল্যে কলক্ষেপ করে অতএব সেখানে পাঠাইলে লোকের দেহ কিছু শক্তি হয় না। তৎপুত্র শ্রুত মাকলাতন সাহেব করিলেন যে যদি হস্ত

সমাচার দর্পণ।

কলমে ব্যক্তি হইলেন তাহাতে কএক রাশি যায় কিবা। এমন কোন দান করা যায় যে সেখানে অন্য মানুষের যাওয়াত না থাকে ও সেখানেইতে বাইর হইবার পথ না থাকে এমন স্থানে একাকী কএক রাশি যায় তবে তাহারদের ওপকৃত হয়।

আরো তিনি কহিলেন কলিকাতার জেটী অদ্বৈত তনকী, কলিকাতার স কল বিজয়র তমারক ভাল হয় না। আটাই শত টাকার নীচের মোকদ্দমা সেখানে হয় সেখানে মিথ্যা মান্তি এত হইয়াছে যে তাহারদের সঙ্গে মুখ্য কর্ম। এবং এ অদ্বৈতের এমন অকর্তৃ হইয়াছে যে যদি কেহ সেখানে সভা সাহায্য দেয় তাহা তাহার অখ্যাতি লোকেরা করে।

অত্যাচার।

মাহেশ্বর রথ দশ বার দিনপাতি লোকযাত্রা থাকে ও লোকেরা নানাপ্রকার অত্যাচার করে ইহা পূর্বে লিখা গিয়াছে। মল্লভি সেখানকার এক অত্যাচারি লিখা যাউতেছে। গত সেমবার এক ব্যক্তি আপন গৃহস্থ হইতে পরের এক বালককে রথ দেখাইবার জন্যে ডুকায়ী বস্ত্রবস্ত্রের রথখোলাতে আসিল এবং ঐ বালককে সঙ্গে করিয়া এক অত্যাচারি ঘোড়ার গাড়িতে বসিল। সেই ঘোড়ার গাড়িতে সে অনেক টাকা হারিল। পরে উক্ত টাকা হারানোর সময় না থাকতে সে কহিল যে আমার সঙ্গে টাকা এত নাই আমার এই বালক তোমাদের নির্যাসে বদ্ধ থাকিল আমি শীঘ্র টাকা আনিয়া দিয়া আপন বালককে লইয়া যাইব। সে অত্যাচারি ইহা কহিলে ঐ বালক বড় অফান ছিল না অতএব সে কহিল যে আমি তাহার বালক নহি আ

মি অন্য আতি কিছু এক গুণে ঘর করি আমার শিতামাতাকে না কহিয়া আমাকে দুই চারি পরমা দিয়া রথ দেখাইতে না নিয়াছে। ইহা শুনিয়া অত্যাচারি লোকেরা পুলিশের থানার সমাচার দিয়া ঐ অত্যাচারিকে কএক করিল। মোকদ্দমা হইলে তাহার ওপকৃত হয় ইহাও। এইজন্য অত্যাচারি রথের সময়ে অনেক হইয়া থাকে।

দিল্লী।

দিল্লীর পত্র আনিয়াছে তাহাতে জানা গেল দিল্লীর লোকেরা শ্রীযুত মর দেবির আফরলানী সাহেবের মুখোপাধিকারী তেজ তিন অঙ্গুরের বন্দোবস্ত করিয়া শীঘ্র দিল্লীতে আসিবেন। শ্রীযুত আপা সাহেবের বিষয় আর কিছু লক্ষ্যে শুনা যায় নাই।

দানাপুর।

দানাপুর হইতে ১৮ জুনর পত্র আনিয়াছে তাহাতে জানা গেল যে সেখানে অনেক ইংল্যান্ডীয় লোক যত্রিভূতে এক দিনের মধ্যে মাত জনের কবর দেওয়া গিয়াছে এবং দানাপুর হইয়া পঞ্চম যে নৌকা যাউতেছিল তাহার অনেক লোক যত্রিগারে।

লখাপুর হইতে সমাচার আনিয়াছে যে সেখানে ১৯ মে তারিখে অতিবৃষ্টি হইত ও বন্যা এককালে হইয়াছিল এত বড় ও বন্যা পাঁচ মাত বৎসরের মধ্যে দেখা যায় নাই এবং বন্যা এত ব্যক্তিগণকে যে জোয়ারের সময়ে যে জল বৃষ্টি হয় তাহা হইতে চারি হাত অধিক জল বৃষ্টি হইয়াছিল। তাহাতে অনেক লোকের মৃত্যু হইয়াছে ও গৌরবাহিদ্র পুস্ত্রদের অনেক অপায় হইয়াছে। বন্যা কালে

ভেতে বড় নৌকা নদীর সীমা জাতিয়া ওপরে ওঠিয়াছিল এবং বৃষ্টিতে বদ্ধ করিয়া রাখিয়াছিল পরে জল কমিলে সে সকল নৌকা সেইজন্য সেখানেই বদ্ধ আছে যাবৎ এমন বন্যা না হয় তাবৎ সে সকল নৌকা নদীতে আসিতে পারিবে না।

ইংল্যান্ডের সমাচারপত্রের বিষয়ে।

পৃথিবীর অন্য সকল পুস্ত্রদেশ হইতে ইংল্যান্ডে অনেক সমাচারপত্র প্রাপ্ত হয় এবং লখন শহরের তৃতীয় পৃথিবীর মধ্যে আর কোন শহর নাই যে সেখানে হইতে এত সমাচারপত্র নির্গত হয়। এই সমাচারপত্রের দ্বারা এই হইয়াছে যে পৃথিবীর মধ্যে যেখানে যখন যে বিষয় ও পণ্ডিত হয় সে সকল বিষয় ইংল্যান্ডের দৈনিক পত্রিকায় প্রাপ্ত থাকে। ইংল্যান্ডের সকল পুস্ত্রদেশে পুস্ত্রসত্তাহে চারি শত তেইশ পুস্ত্র সমাচারপত্র প্রকাশ হয় এবং পুস্ত্রসত্তাহে এই সকল সমাচারপত্র পাঁচ লক্ষ অর্ধ প্রাপ্ত হয় এবং সমস্তের দুই শত ঘণ্টি লক্ষ অর্ধ প্রাপ্ত হয়। ইহার পুস্ত্রসত্তাহে বারশাহের দ্বারা আছে দ্বারা বিনা কেহ প্রাপ্ত হইতে পারে না এবং পুস্ত্রসত্তাহের ওপরে দুই আলা মাসুল। ইহাতে রাজকরের অধিক বৃদ্ধি হয় ও লোকেরদের ও অনেক গুণ করে। এ সকল ব্যক্তির অত্যাচার সেখানকার লোকেরা আপন ইচ্ছানুসারে রাজকর্ম বিষয়ে ভদ্রভদ্র প্রাপ্ত হইয়া প্রকাশ করে। এই পুস্ত্রের ও অনেক লক্ষ প্রাপ্ত হয়।

যোড়ার শীঘ্র গতি।

ইংল্যান্ড দেশে গত বৎসর এক যোড়ার চলন বিষয়ে বাণী হইয়াছিল তাহাতে

সমাচার দর্পণ ।

এক জনের ঘোড়া দুই গল কম চারি ঘণ্টে দশ কোশ চলিয়াছে ইহাতে ঐ বাজির প্রকৃ বাজির বাজিতে জয়ী হইয়া বাজীর টাকার পাইয়াছে।

গর্ভভের বৃদ্ধি।

ইংলণ্ড দেশে এক চোর এক জনের গর্ভভ চুরি করিয়া লইয়া অন্যের বাটীতে গিয়া তাহার কতক ভুজি দুখা চুরি করিয়া ঐ গর্ভভের ওপরে বোকাই করিয়া আপন ঘরে আনিতেছিল। পরে ঐ সুবোধ গর্ভভ সে চোরের নিকট হইতে পলাইয়া শীঘ্র আপন মনিবের ঘরে গেল। সে ব্যক্তি আপন গর্ভভের ওপরে বোকাই করা ডুত দুখা পাইয়া তাহার দুখ তা হাতে দিল।

আকর্ষণ জীবন।

ডিন চারি বৎসর হইল অর্থাৎ দেশে এক যুদ্ধে এক জন নিখোঁদী গুলির দ্বারা আঘাতী হইয়াছিল পরে এগার মাস পর্যন্ত বৈজিয়াছিল কিন্তু তাহার মস্তকের মধ্যে যথেষ্ট বেদনাইতে এগার মাস পরে তাহার মৃত্যু হইলে তাহার মস্তকের ম জ্ঞার মধ্যে এক গুলি পাওয়া গেল অতএব এই অত্যাকর্ষণ যেহেতুক এগার মাস পর্যন্ত এমন গুলি মস্তকের মধ্যে থাকিলেও লোক বাঁচে।

অর্জুন দেশে।

অর্জুন দেশে এক জন অভিনুষ্ঠাণী ঐ

হার তিন পুত্র ছিল সে এমন অনুভূত গুরু যে দিনা আহায়ে যথেষ্ট দিনপাত করিত। এক দিন সে ব্যক্তি ঐ শহরস্থ আপন স্বহাঁসর ভ্রাতার নিকটে গিয়া কহিল যে আমি আমার ঘরে আহাঁরীয় দুখ কিছু নাই তৎপুত্র আমার তিনটী শিশু ভালক দুগ্ধ পাইতেছে। ইহা শুনিয়া তাহার ভ্রাতা তাহাকে আপন স্বীর নিকটে ঘাইতে কহিল। পরে সে আপন ভ্রাতৃস্বীর নিকটে গেল। ঐ স্বী আপন স্বামীর ভ্রাতাকে আনিতে দেখিয়া আপন ঘরে কপটি বহু করিল। ইহা দেখিয়া ঐ ব্যক্তি লজ্জা ও ধৈর্য ও দুঃখে তে মগ্ন হইয়া মনে বিবেচনা করিল যে ভাল আপন পুত্রেরদিগকে আহাঁর দিতে পারিলনা না সৎহার দি। ইহা কহিয়া তিনপুত্রেরদিগকে একত্র বাঁধিয়া এক কুশের মধ্যে ফেলিয়া দিল ও পক্ষী আপন ও কুশের মধ্যে পড়িয়া চারি জন তৎক্ষণাৎ মরিল। তাহার ভ্রাতা আপন স্বীর নিকটে গিয়া জিজ্ঞাসা করিল যে আমার ভ্রাতা আনিয়াছিল তাহাকে আহাঁরীয় সামগ্রী কিছু দিয়াছে। সে কহিল যে আমি তাহাকে আনিতেও দি নাই। ঐ ব্যক্তি ইহা শুনিয়া ক্রুদ্ধ হইয়া আপন ভ্রাতার নিকটে তাহার ঘরে দিগুন আহাঁরীয় সামগ্রী পাঠাইল। পরে শুনিল যে তাহার ঐ কুশ মরিলে মরিয়াছে। ইহাতে তত্ত্বান্ত কৌশলিঙ্ক হইয়া মরল অন্যের কারন আপন স্বীকে আনিয়া তাহাকে গুলির দ্বারা মারি গেল। ইহাতে অদলতে তাহার মোকদ্দমা হইল তাহাতে সে ব্যক্তির প্রীসী হইবেক।

শিল্পকর্ম।

পৃথিবীর স্বাভাবিক ওৎপন্ন বস্তু শিল্প কর্মদ্বারা ক্রিপণ্যে বৎসুয়া হয় এবং তাহাতে কত লোকের কর্ম হয় এবং পৃথিবীর ওৎপন্ন কত দূরপর্যন্ত ভ্রমণ করে তাহার ক্ষিপ্র বিবরণ কহা যাইতেছে। লণ্ডন শহরের মধ্যে এক টুকরা অতি মেহি কাণ্ড বিকয়ের নিমিত্ত লোকের ঘের কাছে আনা গেল তাহার ওজন আদ শের তাহার প্রত্যুত করিবার ব্যক্তি এই। প্রথম ভারতবর্ষ হইতে তুল্য আইল পরে ইংলণ্ড মাঠের নগরে ঐ তুলার মূতা কাটা গেল এবং সেখান হইতে স্কটলণ্ড দেশের পেনসিলভা গিয়া সেই মূতার কাণ্ড বুনা গেল এবং সেখান হইতে অন্য কোন গুণে গিয়া ঐ কাণ্ডে মূল প্রভুত করা গেল পরে সে খান হইতে পুনর্বার পেনসিলভে আনিয়া অন্য গুণে ফারদারা তাহার বৈলগ্নি হইল। সেখান হইতে ব্রাসেলিয়া নাম শহরে নইয়া গিয়া তাহার শেষ সৎকার করা গেল পরে সেখান হইতে গীতীদ্বারা লণ্ডনে গিয়া বিক্রীত হইল। এই প্রকার ভারতবর্ষ হইতে যাওয়া অর্থাৎ লণ্ডন নগরে কাণ্ড বিকয় হওয়া পর্যন্ত তিন বৎসর লাগিল এবং যৎক্ষিণ তুল্য শেষ পর্যন্ত প্রস্তুত হইতে সমগ্র পৃথি আদ ই হাজার কোশ ও ভূমি পৃথ পৃথ লণ্ডন কোশ গমনাশ্রম করিল এবং ক্রমাৎ যত শত লোকের হস্তগত হইল। ঐ তুলার যে ওজনে যে মূল্য দ্বির ছিল তাহার ওৎপন্ন কেবল শিল্পকর্মদ্বারা সেই ওজনে তাহার মূল্য দুই হাজার গুন বাড়িল।

এই সমাচার দর্পণ পুরানপুত্রে হাসাখানাতে পুত্রি নগ্নাৎ পরিবারে হাসা হয়। বাহার লগনের বাহনক হর তিনি পুরানপুত্রে হাসাখানাতে জ্ঞানন নাম পাঠাইলে নগ্নাৎ কানক তাহার নিকটে পাঠান হইবেক তাহার দুখ্য রাসনে এক টাকা। যিনি কানক করিয়াছেন বহি তাহার নিকটে নগ্নাচার দর্পণ না পহুৎ তবে তিনি পুরানপুত্রে হাসাখানাতে নগ্নাচার দ্বিবাধন তাহার নিকটে পাঠান হইবেক।

সমাচার দর্পণ

৩০ সংখ্যা

২০ জুলাই

২৭ আষাঢ়

১৯১৩

দর্পণে মুখ্য সৌন্দর্যমিহ কার্যবিবরণী। বৃত্তান্তনিহ কালক্ৰম সমাচারমা দর্পণে।

কোল্লানির কাণ্ড।

কোল্লানির শতকরা জয় টাকার সুদের কাণ্ড হয় করিতে হইলে শতকরা পাঁচ আনা ভিত্তিকোণ। বিফল করিতে হইলে শতকরা নয় আনা ভিত্তিকোণ।

সন্তোষের পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|-------|-------------|----|-------|
| ১০ | জুলাই | পরিবার | ১১ | আষাঢ় |
| ১১ | ২ | রবিবার | ১২ | ৩ |
| ১২ | ৩ | সোমবার | ১৩ | ৪ |
| ১৩ | ৪ | মঙ্গলবার | ১৪ | ৫ |
| ১৪ | ৫ | বুধবার | ১৫ | ৬ |
| ১৫ | ৬ | বৃহস্পতিবার | ১৬ | ৭ |
| ১৬ | ৭ | শনিবার | ১৭ | ৮ |

অমী বিস্ময়ের ইস্তাহার।

অনেক লোকের জীবন সন্নিহিত জেনারেল রোড ও হাটিক লকম সন্নিহিত পীরের জমীল পুলাপ খানে নিম্নোক্ত বিকর হইবেক অর্থাৎ জমীলের ইকতিয়ত বোয়ট্রিমপুর লোকট্রি বটকট্রিয়ার অধরা জেনারেল রোডকট্রি কাকট্রিভে মাস্তুর হইবেক।

শতকরা শতকরা বাকী ওরফে আদার কারণ।

বোয়ট্রিমপুর বৃহস্পতিবার ১১ জুলাই ১৯১৩

৮ শতক ২৭ বোয়ট্রিমপুর লোকট্রি বটকট্রিয়ার।

রাজস্বী বৃহস্পতিবার ১১ জুলাই ১৯১৩ ১৮ শত শতক ১১১৬ ২৭ বোয়ট্রিমপুর লোকট্রি বটকট্রিয়ার।

শতকরা শতকরা বাকী ওরফে আদার কারণ।

বোয়ট্রিমপুর ও হাটিক লকম বৃহস্পতিবার ১১ জুলাই ১৯১৩ ১৮ শত শতক ১১১৬ ২৭ বোয়ট্রিমপুর লোকট্রি বটকট্রিয়ার।

রাজস্বী ও হাটিক লকম বৃহস্পতিবার ১১ জুলাই ১৯১৩ ১৮ শত শতক ১১১৬ ২৭ বোয়ট্রিমপুর লোকট্রি বটকট্রিয়ার।

১৮ শত শতক ১১১৬ ২৭ বোয়ট্রিমপুর লোকট্রি বটকট্রিয়ার।

অনেক লোকের জীবন সন্নিহিত জেনারেল রোড ও হাটিক লকম সন্নিহিত পীরের জমীল পুলাপ খানে নিম্নোক্ত বিকর হইবেক অর্থাৎ জমীলের ইকতিয়ত বোয়ট্রিমপুর লোকট্রি বটকট্রিয়ার অধরা জেনারেল রোডকট্রি কাকট্রিভে মাস্তুর হইবেক।

রাজস্বী বৃহস্পতিবার ১১ জুলাই ১৯১৩ ১৮ শত শতক ১১১৬ ২৭ বোয়ট্রিমপুর লোকট্রি বটকট্রিয়ার।

৮ শতক ২৭ বোয়ট্রিমপুর লোকট্রি বটকট্রিয়ার।

বোয়ট্রিমপুর বৃহস্পতিবার ১১ জুলাই ১৯১৩ ১৮ শত শতক ১১১৬ ২৭ বোয়ট্রিমপুর লোকট্রি বটকট্রিয়ার।

শতকরা শতকরা বাকী ওরফে আদার কারণ।

বোয়ট্রিমপুর বৃহস্পতিবার ১১ জুলাই ১৯১৩ ১৮ শত শতক ১১১৬ ২৭ বোয়ট্রিমপুর লোকট্রি বটকট্রিয়ার।

ইতি কাকট্রি ৬ জুলাই ১৯১৩ ১৮ বোয়ট্রিমপুর লোকট্রি বটকট্রিয়ার।

ইস্তাহার দেওয়া যাইতেছে।

যে ১০০ এক হাজার রিম পাটনাই কাণ্ড অঁ মরবরাহ কারণ কলক্ৰাফটের দরখাস্ত যে কেহ করিবেক দরখাস্তের খামে মোঁ ইন্স করিয়া ও শিরনামায় কাণ্ডজের দর খাস্ত মত লিখিয়া লগাঁই ১০ জুলাই আশুতিপর্ণ্যন্ত ফল আশ্রমের মোজিয়ারি কার শুরুরোঁতেওঁ মাহেবের দিকট দরখাস্ত দাখিল করিতে হইবেক মাখিক তজসিল।

৪ দফা। কাণ্ডজের রকম নমুনা মাখিক দিতে হইবেক ১ নমুনা মোকাম আলি পুর ফল আশ্রমের দরখাস্ত করিলে দেখিতে পাইবেক।

৫ দফা। একরারি লিখেন সছি করণের পর অর্কেক ৫০ পাঁচ শত রিম আমদানি আরক পাঁচ দিবসের মধ্যে করিতে হইবেক বাকী অর্কেক ৫০ পাঁচ শত রিম দাঁড়া মত দুই মাস অর্কেক দাখিল করিতে হইবেক।

৩ দফা। দরখাস্তের সহিত এক একরারি লিখেন এক মাতবর লোকের দস্তখত দাখিল করিতে হইবেক কারণ ১ মাতবর লোক কল রাখেন যদাশি কলক্ৰাফটের অন্য মত করে লিখা মাতবর করে তত ১ মাতবর লোক দাখিল হইবেক।

৪ দফা। কলক্ৰাফটের জুড়ীয় অংশের এক অংশ টোকা একরারনামা দস্তখত হইলে কলক্ৰাফটের দেওয়া যাইবেক আর বাকী জুড়ীয় অংশের দুই অংশ টোকা কলক্ৰাফট বোকা মরবরাহ হইলে দেওয়া যাইবেক।

৫ দফা। উপরোঁতেওঁ মাহেব যে মক ল কাণ্ডজ নমুনার ও মাশে লীরস মাশুম করিবেন তাহা ছিরাইয়া দিবেন শুকু বোড়িরবর।

লবন বিস্ময়ের ইস্তাহার।

ইস্তাহার দেওয়া যাইতেছে ১৮ ৪৯ মাল ইস্তাহ ৪০ জুলাই বাপ মন ৪১ ১৬ মাল ৩০ আষাঢ় মঙ্গলবার ১৮৩ তা হার পর যে তত সকল বিফল হয় মোশ কলিকাভায় একশেজুয়ের নিলাম বিফল হইবেক যোগ্যজি ৪১০০০০ মোল নমাজি যি লাট ৪০০০ মোনের হইবেক ওজন ৮৭ বিরাশী সিন্ডা যি লাট ৪ এক টোকা বায় লা দিয়া সওদা পাঁচা করিবেক।

| | | |
|-----------|---------------|-------|
| জেনা নমাজ | পেবাশী পেবাশী | টোকার |
| কাণ্ডজ | রোহ | মুদত |
| হিজলী | ১৮০০০০ | |
| তমালোক | ৪৭০০০০ | |

সমাচার দর্পণ।

| কোলা | নমক | পেবলী | পেবলী | টাকার |
|-------------------|--------|-------|-------|-------|
| কাগজ প্রাক মুদ্রত | | | | |
| ১৪ পত্রাংশ | ২০০০০ | | | |
| ভূমিকা | ১২০০০ | | | |
| চলুগুণ | ৩০০০ | | | |
| সালিমা | ০ | | | |
| কটকশাখা | ১৬৪০০০ | | | |
| কটক করক | ৫০০০ | | | |
| মাকদুআ | | | | |
| পরিমিট | ১৮৫৮০৭ | | | |
| ফোকা | ১৯৩ | | | |
| | ১২০০০০ | | | |

ইস্তাহার দেওয়া যাইতেছে।

ইয় শন ১৮১৯ সালের চারি দিলদায়ে
৪৮০০০০ লক্ষ মোঁদর বেশী লম্বক বিক্রয়
হইবেক না। নীচের ডব্বশীল মাথিক মাঠ
ও যে ও জুলাই ও সেডব্বর মাহাতে মুক্ত
হইবেক।

১ দিলদায়ে মুক্ত ১৮১৯ ৯ মাঠ ১১০০০০ মোঁদ

২ দিলদায়ে মুক্ত ১ ১১ মে ১২০০০০ ১

৩ দিলদায়ে মুক্ত ১ ১০ জুলাই

৪ দিলদায়ে মুক্ত ১ ২০ সেডব্বর ১৫০০০০ ১

৪৮০০০০

কাগজ বিক্রয়ের ইস্তাহার দেওয়া যাইতেছে।

১৮১৯ সাল ১১ জুলাই মোঁদরবার ১১১১১
ডব্বির সময় কোঁদানির খাভাবাটী পুরাণা
কুটীর ভিতর নীরম ও দাগী রেমনমী
কাঁকড় মূতার কাঁকড় রেমনম ও কই দাগীর
হরেক রকম জিলিস দিলদায়ে বিক্রয় হই
বেক নীচে বেওয়ালা লেখা যায়।

| নীরম | দাগী | একুল |
|----------------|------|-----------|
| খান | খান | খান |
| মোঁ কাশীমবাজার | | |
| হররকম | ৭৪৫ | ১০৮৫ ১৮৩০ |

| নীরম | দাগী | একুল |
|----------------------|------|----------|
| খান | খান | খান |
| নয়ানুর মূতার কাঁকড় | | |
| হররকম | ১১৪৫ | ১১৪৫ |
| মোঁ বাবানস | | |
| হররকম | ৪৯ | ৪৬০ ৫০৯ |
| মোঁ চাটীগুণ | | |
| হররকম | ৭১২ | ৭১২ |
| মোঁ পাঠনা | | |
| হররকম | ৩৮২৩ | ৮২৯ ৪৬৯৫ |

| জুলা খান | | |
|-----------------------------------|------|-------------|
| রেমনম ফেলটর | | |
| ৩৮৭৫ | ৩৮৯৬ | ৭৭৪ |
| মোঁ ফেরত খাতার ফেরত মোঁ দাগী একুল | | |
| মোঁ জরীপুর | | |
| ৪৪৭৩৭ | ০ | ৪৪৭৩৭ |
| মোঁ রাবানগর | | |
| ০ | ৬৮১/ | ৪১৩১৬ ৫২ |
| এজন কুটী মল | | |
| ৪৪৭৩৭ | ৬৮১/ | ৪১৩১৬ ২০/৫৭ |

| ইষ্টাও | মালবুটী |
|------------------------------|----------|
| কই মোঁ ফেরত | ৪০/ মোঁদ |
| গাটীবদী কই | ১/ টা |
| বেটল টুকরা | ১৮৯ খান |
| মোঁমজামা টুকরা | ১১৩ খান |
| ভাঙ্গা বাঙ্ক কাশীমবাজার | ১০ টা |
| পুরাণা প্রোঁল | ১০ খান |
| ভাঙ্গা শিলা | ৩ টা |
| পুরাণা লোহার খাঁচ | ১ লাট |
| চৌর কাঙ্ক চাকাইতে আইসে ৫ খান | |
| পুরাণা কপাট মোঁরা ওদাম | ১ লাট |
| পুরাণা মোঁরার খৈলা | ২৫০ টা |

সমাচার দর্পণ।

ইংল্যান্ডের মহাবাকি।

ইংল্যান্ড রাজ্যের এক বাকি আছে তাহার

নাম ইংল্যান্ডের বাকি সে বাকি ইংল্যান্ডের
মধ্যে সকল বাকিইতে বস সে বাকির
অনেক নোটি বাজারে চলে চল্লিশ টা
কার ডব্বের নোটি পোনার কোটি ডিরা
নহই টাকার পর্যন্ত বাজারে চলিতেছে।
এবং চল্লিশ টাকার নীচে আট কোটি পতি
শ লক্ষ টাকার নোটি পর্যন্ত বাজারে
চলে। সর্ব মুক্ত চল্লিশ কোটি আটটার
লক্ষ টাকার নোটি ইংল্যান্ড দেশে বাজারে
চলিতেছে। এই মহাবাকি এক শত বিন
বৎসরের অধিক স্থাপিত হইয়াছে তাহা
ও এগার শত জন কেরানি প্রতিদিন
হাজার হইয়া লিখা পড়া করে। এই
বাকির ডেইন হাজার মিথ্যা নোটি বেরা
পড়িয়াছে।

রাজকর্ম নিয়োগ।

ঋণ্ডুত কাঁতান জন কালিঁ-সাহেব
হুদরদারদের আভরণিতি আওরদারদের
ইংল্যান্ডেরদের পক্ষীয় ওকীল।

বানিলবাকি।

৩ জুলাই তারিখে বানিলবাকির সে
কুটারি ঋণ্ডুত মারলি সাহেব ইস্তাহার
দিয়াছেন যে গণ্ড চমু মানের কারণ
বাকিলবাকিতে তাহারদের টাকার আছে
তাহার শতকরা নয় টাকার হিসাবে
মুদ পাইবেক অর্থাৎ পুতোক দশ হাজার
রি ভাগের মুদ চারি শত পঞ্চাশ টাক।

সমুদ্রা ওপদীশ।

সমুদ্রা ওপদীশ পূর্ব কালে ইংল্যান্ডের
যের কর্ক ওভাল্ড আভ ছিল সেখান য়ে
ইওরাণীয় লোকেরদের বসতি সেবেল
সমুদ্রের তীরে ছিল সে ওপদীশের মধ্যে
কেইখ পুর্বা করেন নাই কিন্তু ঝাল গণ্ড

সমাচার দর্পণ।

বৎসরে জীবুত মর ডামস রাষ্ট্রদূত নাহে
সেখানে বত সাংহরি কর্ম্মে অভিভিক্ত
হইলেন তখন তিনি সেখানে গৈলিয়া
ইহা করিলেন যে তাহার মরো পুত্র
করিয়া ঐ দেশে বেগেন। পরে তিনি ঐ
সুমাত্রা ওপহীলের মরো পুত্র করিয়া
তিন হাজার কোশ পদযুগে চলিলেন
এবং সে দেশে ভ্রমণ করিয়া দেখিলেন
যে ঐ দেশ লোকেরে পরিপূর্ণ ও সেখানে
অনেক বহুমূল্য বীজের অধিক আছে
পূর্বে কালে সে ওপহীলের মরদ্বন্দ্বীয়
লোকেরা ইংল্যান্ডেরদের বসতি স্থান
দ্বন্দ্ব ও কপূর ইত্যাদি বিক্রয়ার্থে আনিত
সে দুই কোথাইহেতে আনিত তাহা পূর্বে
জানি ছিল না। ঐ বত সাংহরি দেখিলেন
যে মীনা কাব নামে এক মহারাজবিনী
ও তাহার চতুর্দিকে দশ কোশের মরো
দশ লক্ষ লোকের বসতি এমন সে দেশ
লোকেরে পূর্ণ। এমন তাহারদের
সহিত ইংল্যান্ডেরদের বানিজ্য সুদের
মত চলিতে পারে যেহেতুক ইংল্যান্ডে
ওপহীল দুই তাহারদের পুথলিও ও সে
খানে ওপহীল দুই অর্থাৎ টাকা ইংল্যান্ড
য়োরদের পুথলি।

পঞ্জাব।

হিন্দুস্থানের মরো এমত অনুর হইতে
রে যে আর্মী শীত কালে পঞ্জাবের
রাজার সহিত ইংল্যান্ডেরদের যুদ্ধ হই
বেক। এই সমাচার লিখ্য জানা যায়
নাই।

সাঁজা বারন।

পঞ্জাবের গোয়ালন্দিন্দ নামে এক
জন নিম্নাধী আশন পুত্রের বিবাহ
যে আশন ঘরে বাইতে সেনাপতির
নিকটে বিদায় চাহিয়াছিল। তাহাতে

সেনাপতি বিদায় দিতে অসম্মত ছিলেন
না কিন্তু বিদায় করিতে কাল বিলম্ব করি
য়াছিলেন। তৎপুত্র ঐ গোয়ালন্দিন্দ
বিলম্ব সহিতে না পারিয়া সেনাপতির
সম্মতিবুদ্ধিয়া তাহাকে না করিয়া আশন
বাঁচিতে গিয়াছিল। পরে আশন পুত্রের
বিবাহ দিয়া আইল। তাহাতে সেনা
পতি মোকদ্দমা করিয়া তাহার অপরাধ
নিষ্পত্তি করিয়া তাহার সাজা নয় শত
বেত দিহ করিলেন যেহেতুক সৈন্যের
মরো এমত ব্যবস্থা আছে যে ব্যক্তি সেনা
পতিকে না করিয়া অন্যত্র যায় তাহার
এমত সাজা নিষ্পত্তি আছে। পরে
সেনাপতি ঐ সাজার বিষয় শ্রীশ্রীযুতের
নিকটে রিপোর্ট করিলে তিনি সুদের
মত বিবেচনা করিলেন যে ঐ গোয়াল
ন্দিন্দ যদি না গাইত তবে ইহার পুত্রের
বিবাহ ব্যাঘাত হইত তাহাতে ইহার
কৌলিক মর্যাদা হানি হইত এবং সে
নাগতির ঐ বিষয়ে অসম্মতিও ছিল না
এবং যখন ঐ ব্যক্তি গিয়াছিল তখন স
কলের সাক্ষ্য করে গিয়াছিল এইপুত্র
ইহার কোন মতে নয় শত বেত সাজা
হইতে পারে না বরং যত দিন জাঙলি
জাফা হইয়া বাহিরে ছিল তত দিনের মত
হিয়ানা পাইতে পারিবে না। অশ্রুত
এই সুবিবেচনা করিয়া ঐ গোয়ালন্দিন্দ
কে ঐ সাজাহইতে রক্ষা করিয়াছেন।

গীন।

ইংল্যান্ড দেশে এমন এক স্থান আছে
যে সেখানে নানা পুকার গীন ও বামাল
জুতি হয় সেখানে বাইয়া গীনাদি শ্রবণ
কণ আয়োজ করিবার কুটিল অনেক ভা
গাঁদান লোকেরা টাকা দেন ও ওপহীল
সময়ে সেই ঘরে অনেক একত্র হইয়া
গীন বাজাদি শ্রবণ করেন। ইংল্যান্ড

দেশে এমন গাঁদিকা এক স্ত্রী আছে যে
তাহার মত গাঁদিকা যে পূর্বে ছিল এমন
পুণ্ড্র নরেনে আইনে না ইংল্যান্ডে এমন
বাদশাহ পুণ্ড্র নাই যে তাহার গীন
আদরপূর্বক না শুনিয়াছেন। সেই ঘ
রের কর্ত্তার ঐ গাঁদিকার নিকটে বহিয়া
পাঠাইলেন যে তুমি আমারদের এই
স্থানে কত বেতন পাইলে আনিতে পার।
সে ওত্তর করিল যে আমি বৎসর আট
চল্লিশ হাজার টাকা দ্বারা ও সেখানে
যাবৎ থাকিব তাবৎ তাহার কারন এক
গাঁদী ও তাগাঁদান লোকের ওপহীল ভা
জীয় দুই ইহা পাইলে তোমাদের
নিকটে বাইতে পারি। ঘরের কর্ত্তার এত
টাকা দিতে অসম্মত হইল তৎপুত্র সে
সেখানে আইল না।

বানিজ্য।

এই বৎসর কলিকাতায় অত্যন্ত তুল
আমদানি হইয়াছে। লোকেরা তাহার
কারণ এই দিহ করিয়াছিল যে মাথাভাঙ্গা
খাল বন্ধ ছিল কিন্তু এখন মাথাভাঙ্গা
খোলা গিয়াছে তাহালি তুল আমদানি
আর হইল না ইহাতে বুঝা যায় যে সে
অঞ্চলে তুলার ফসল অল্প হইয়াছে। সন্ম
তি কলিকাতায় তুলার যোন ওজন টাকা
হইয়াছে। যে তুল ঐ বৎসর ঐ দেশে
আনিয়াছে তাহাও ঐদেশের ঋকে কুলা
ইবে না অন্য দেশে পাঠাইবার কল্প কি।
যত তুল পশ্চিম দেশেইহেতে কলিকাতায়
আনিতেছে সে সকল কলিকাতাচার্জ
পুণ্ড্র পৈতছে না পথেই বিক্রয় হইতেছে।
বোধহইতেও এই মত তুল মহাখর হই
য়াছে।

সম্মতি তিনি ও তুলের মূল্য কিছু
অল্প হইয়াছে ও আর্মীমের মূল্য কিছু
অধিক হইয়াছে ও নীলের দাম এক শত

সমীচীর দর্পণ ।

চল্লিশ অবধি এক শত পয়তাল্লিশ পর্যন্ত যোনিবরা তাঁরা এক শত বৎ অবধি এক শত বিনশতাল্লিশ যোনিবরা তাঁসি ভেজে ।

বিলতি তিনিসের দ্বায় ছিলে বীতি ভেজে যে কণ পুর্ন বিলাতি জিনিস আয় হানি হইত সে কণ আর হয় না সে কণ আর ঐশানি আনিলে নী বুঝা যায় ।

৪ যুগাই মোঃ কলিকাতার একইশ আইনজি বিলাতে যাইবার করন পুস্তক ছিল । মাওচল্লিশ আইনজি ভাড়া কিস্তি বিক্রয় করন পুস্তক আছে ।

আশীরাতি ও আশীরাতি কল্লা ।

আশীরাতি ও আশীরাতি কল্লার বিষয়ে জ্ঞানযুক্ত এই আশা করিয়াছেন যে এই দুই কল্লাতে দুই জন কল্লারের অবশ্যই সর্বত্র নিযুক্ত থাকিবেন তাহারদের দর মাহাঁ পুতিজনের নীচ নত টাকা করিয়া দেয়া যাইবেক ।

লেনাপা ।

১৪ কুলপতি মোঃ লেনাপা বাব্বিক যুক্তি হয় নাই ও সে দেশে পুর্নবীর ওলাও টাংলার আশ্রয় হইয়াছে । এবং এত দেশে যে ভূমিকল্প হইয়াছিল সে ভূমি বন্ধ সেই ভূমিতে সেই সময়ে সেই দণ্ডে লেনাপার রাজধানী শহর কাঁটকাপ্ত ও হইয়াছে ।

মুদ্রাণ ।

মুদ্রাণ তথ্য হিন্দু লোকেরদের তথ্য মাসা স্থান । অকবর শাহ বাদশাহ পোলের শত একশী মনে যখন বসিলা

দেশ আশ্রিত করিতে আসিতেছিলেন তখন এই মুদ্রাণে গাঁরা ও ময়না ও মর স্বতী এই জিনের মনয় স্থানের ওপরে পুস্তরদ্বারা দৃঢ় গৃহিত করিয়া এক অতি চমৎকৃত কল্লা করিলেন ও তাহার মধ্যে আশ্রয় এই মুদ্রাণের আশ্রয় বসে জির করন অতিমানোহর স্বত পুস্তরময় এক পুরী নির্মাণ করিলেন এই পুরীতে তি নি বারটা পৃথক মহল করিলেন এবং পুতিমহলের সম্মুখে এক ফোআরা নি স্থিত হইল এবং পুস্তরদ্বারা গৃহিত প্রায় সুন্দর নরদামা করা গোল যে এই ফো আরাহইতে জন গুটিয়া এই পুরীর প্রতি ঘরের দ্বার নরদামাচার্য যাইত তাহাতে সেখানকার মকল লোকের অনেক কথা লিখিই হইত এবং পুতিমহলের সম্মুখ প্রায় টাকরপুতিয় বীম স্থান পুতিমহলের পক্ষাণে ভাগে নিরুপিত করা গেল । এই কণ মকল মহল হইল । কল্লার পুতি মহল কোন পৃথক স্থানের স্থান ছিল সেখানে স্থানের অন্য দুই কুঠারী ও স্থান করিয়া বন্দাদি পরিবীল করিতে হয় কুঠারী ছিল পুতিমহলের ওপরে খালিলা ও ওপরে এক কল্লাকা ছিল তাহার দ্বারা আলো আসিত ও এই কুঠারী মধ্যে প্রায় চুনকাম করা যে সে অতিমাত্র ও সে নানা পুকার রস্মিশ্রুতি । এবং এই কুঠারীতে ফোআরা দ্বারা জন গুটিত তাহাতেই স্থান হইত কোন স্থান পুস্তর দ্বারা ওক জন ফোআরাতে গুটিত সে জন স্থানের ইচ্ছা হইলে স্থান করা যাই ত এবং পুতিমহলের পরদ্বার যে পথ ছিল সে পথ গুটি বিন হাত ও তোকা নীত হাত সে বার মহল পৃথক উদ্যান মধ্যে প

থের দ্বারা বার মহল পরদ্বার সংলগ্ন । এবং এই পুরীর ওপরে গুটিবার পথ ছিল তাহার দ্বারা ওপরে গুটিয়া চতুর্দিকের নানা শোভা অতিশয় দেখা যাইত । এবং সে পুরীর মধ্যে এক প্রমোজ পথি হাত গুটি আছে সে অতি গুটি তাহাতে পুরীনা সম্প্রদত্ত কথা গোদা আছে এক আর এক পুকার অক্ষর লিখা আছে তাহা এখন কেই পড়িত পাঠে না । এবং তাহাতে একস্থানে পারসী অক্ষর লিখা আছে যে উম্মুরবেগ অবধি শাহ অক বর পরদ্বার যে বাদশাহ যত কাল দিল্লীর বাদশাহী করিয়াছেন । লোক বহে যে মহারাণ পুতিমহলের এক মন্ডান রাশা যমুনালী তিনি এই প্রমোজ করিয়াছি লেন । পরে এলা কোরিতে কলনকারী নামে এক কল্লাতে এই প্রমোজ ছিল তখন সে অতি গুটি ছিল কালক্রমে এই প্রমোজ ভিত নষ্ট হইয়া পড়িয়াছিল সেখানহই তে অকবর শাহ পুগারীর কল্লাতে আ নিলেন । সেখানে এক বৈঠকখানা করিয়া জিলেন তাহার নাম চিল্লিশকুতব আশা চিল্লিশটা স্তম্ভদ্বারা গৃহিত এবং এই বৈঠক খানার নীচ স্থান অতিশীতল সেখানে গুটি কাল বৈঠক করিতেব সে নীচের ঘর স্বভাবতো মৃতিকাহইতে নীচ । এবং সে কল্লার মধ্যে এক বট বৃক্ষ আছে তাহাকে অক্ষর বট কহে । অকবর শাহ এই অক্ষর বটের স্থান এক পথ করিতে ইচ্ছা করিয়াছিলেন কিন্তু হিন্দু লোকেরদের অনুবাদে তাহা করিলেন না । সেই অক্ষর বটের নিকটে অনেক মূর্তি আছে সে অকবরের কাল ছিল না ও নুয়াম হয় যে পরে লোকেরা আনিয়া রাখিয়াছে ।

এই সমীচীর দর্পণ পুরামপুরের হাসপাখানার পুতিমহলে বসিবার হাসা হয় । দ্বারের দণ্ডের আবরণ হয় তিনি পুরামপুরের হাসপাখানাত আসন নাম পাঠাইলে সম্রাট কালক তাহার নিকটে পাঠান হাইকোট তাহার দৃশ্য মানে ওক টাকা । যিনি বাব্বর কুরায়েন বসি তাহার নিকটে সমীচীর দর্পণ না গহে তব তিনি পুরামপুরের হাসপাখানার সমীচীর দ্বিবাগত তাহার নিকটে পাঠান হাইকোট ।

1

সমাচার দর্পণ।

নিম্ন হইয়াছে। কলার বয়স্ক অসুস্থান
নয় দশ বৎসর ও তিনি ওত্রম গৌর
বর্ণা। ইহাতে অল্পভবে এই আইসে যে ঐ
ওত্রম আতি কলার সহিত মহারাজের
যে বিবাহ হইল সে কেবল রাজর
পুত্রক এবং ঐ রাজকৃত্তর বাল্যমূলক অত
এব ওত্রবালের সহিত বিবাহ হইল। বিবা
হের পর মহারাজ ও তাঁহার অভিবল
পত্নী এই ওত্রয়ে সভাতে আসিয়া বসিলেন
এবং সে দিনে সকল লোকের সহিত
যথোযথায় আয়োজ করিলেন। তাহার
পর দিন মাহেব লোকেরদের খালা
করাইলেন। তাহার পর দিবস নানাবিধ
মিষ্টান্ন পায়সাদি দ্বারা অনেক ব্রাহ্মণ
ভোজন করাইলেন। তাহার পর দিন
আতি বহু কষ্টে প্রভুতরিকাকে বহু
বিধ সামগ্রীর দ্বারা ভোজন করাইলেন।
তাৎপর্য দিন কাশীনা গৌর অল্প অল্পের
দ্বিগুণে ভোজনীয় দ্রব্যাদি ও বিবিধ
বন ও নানা বস্তাদি দ্বারা ভূক্ত করিলেন
এই আয়োজে আট দশ দিন কালযাপন
করিলেন।

পশ্চিম দেশের সমাচার।

মহাধা নদীর নিকটস্থ দেশের পশ্চিম
দ্বারা ইহা আলা গিয়াছে যে সে দেশে পূর্ব
কাল হইতে এখন যে বৈলক্ষণ্য হইয়াছে
সে অজ্ঞাত। এখন ইংল্যান্ডেরা পুণ্য
সেখানে গেলেন ওখান পিত্তিরদের
ভয়ে তাহার। আপন। দ্রাওলির বাহির
হইতে পারিতেন না এবং সেখানকার
কুম। গুম্বস্ত পুজারী ও পিত্তিরদের ভ
য়ে গুম্বস্তের নিকট ভূমিতে কুণ্ডিত কর
করিত দূর ভূমিতে ঘাইতে পারিত না
যেহেতুক তাহার। গুম্বস্তের মধ্যে কোন
স্থানে ওত্র কাণ্ড পুতিয়া রাখিয়াছিল তা
হার ওত্রের চক্ষিয়া তাহার। চক্ষুদ্বিধ নীর

হল বয়িয়া দেখিত যখন পিত্তিরদের ম
স্থান পাইত ওখান কৃষিকর্ম ছাড়িয়া গু
ম্বস্তের মধ্যে পলাইত মাঠে কবচ থাকিত
না। সম্প্রতি ঐ পুজারী অকৃতোভয়
হইয়া ঘাটার যেখানে ইচ্ছা সে সেখানে
হুতাদি করিয়া আপন। পিত্তিরদের ভয়ন
পোষণ করিতেছে এবং তাহার। বিন
সঙ্কল্প হইলে তাহার। মৃত্যুর নীচে
পৌঁতে না এবং তাহারদের স্বা কল্যা
দ্বারা এখন নির্ভাবনাতে বাহিরে গমন
গমন করিতেছে। ওখানি সে দেশের
মুখ্য সক্তি অথচ কৃত্তম লোকেরা আপন
স্বভাব পদ্ধতিগণ কর নাই যেহেতুক
তাহার। ইংল্যান্ডেরদের লিকটে কেল
আহারীয় দ্রব্য বিক্রয় করে না তাহার
দের মধ্যে এক জন পুখীন পুজা মান
সিদ্ধ নামে তাহার। এত বীনা সন্ধিত
আছে যে তাহার। দ্বারা ইংল্যান্ডে মৈন্যের
অনেক দিনের পরে চলিতে পারে সে
তাহার। স্ত্রী-ও বিক্রয় করে না।

শ্রীযুত হারি-ওন পুত্রুতির সমাচার।

ঈযুত হারি-ওন মাহেব ও শ্রীযুত
রিকেন্স মাহেব যে তাহাজে যো
কলিকাতাহইতে পুখান করিয়াছিলেন
সে তাহাজে সাহেবহিনা ওপদ্বীপে পঁছ
জিয়াছে সে স্থান ইংল্যান্ডে ঘাইবার
অস্বল্প পথের অধিক এবং সাহেবহি
নাইতে বোনাগাঁও বসতি করেন অতএব
শ্রীযুত রিকেন্স মাহেব বোনাগাঁওর
সহিত অভিযুক্তে সাক্ষ্য করিয়াছেন
যেহেতুক বোনাগাঁও মকলের সাক্ষ্য
সাক্ষ্য করিতে সম্মত হন না বর
কহেন যে আমি শিশুরে বহু আশ্রয়
পক্ষী নহি যে সকলে আমাকে ওকী
মারিয়া দেখিবেক। ঐ বোনাগাঁওর
পুখানবাহী শেখমহাউল অনলাসাবীরন

কৃত্তিম বোদ্ধ শোয়া বারী পরাক্রমাদির
বিবরণ শুনিয়া আশ্চর্যকালে মকলের
বাসনা হয় যে তাহাজে যেথো ক্রিষ্ট তিনি
তাহাজে অত্যন্ত অনন্যত তাহার সাহ
হেলিনা ওপদ্বীপে অবস্থিতি অবস্থিতি
কণ্ড ভাগীবান ইওরোপীয়েরা দর্শনার্থ
গিয়া পরাক্রম হইয়া আসিয়াছেন।

ইংল্যান্ডের সমাচার।

আমরা পূর্বে মিথিয়াজিলাম যে লমস
দেন মাহেব ইংল্যান্ডের চর্চিণ্ড তল কোদা
নির অধীক্ষের মধ্যে এক জন ছিলেন পরে
তিনি মরিয়াছিলেন এখন সমাচার পাও
য়া গেল যে শ্রীযুত মলি মাহেব লমস
দেন মাহেবের পক্ষে অভিযুক্ত হইয়া
যাচ্ছে তাহাজে তাহার যথায় যায় তিনি
লক্ষ বিশ হাজার টাকা হইয়াছে।

বিন সংকল্প।

ইংল্যান্ডে দেশে গত বৎসরে এক লাখ
মহিল পরে তাহার সন্নতি উদারক করা
গেল ও যেখা গেল যে তাহার বিশ লক্ষ
টাকা সন্ধিত ছিল সে টাকা সে কেবল
আপন ব্যবসায় দ্বারা অর্জিত করিয়াছিল।

আশ্চর্য ঘটনা।

অগনি দেশের বহুরিয়া প্রদেশহইতে
এই সমাচার আসিয়াছে যে সেখানকার
বাদশাহের এক জন প্রিয় চাকর মহিল
ও বাদশাহ অভিযুক্ত হইয়া পুত্রক তাহার
কবর দেখাইলেন। সেখানে ভাগ্য
বান লোকেরদের কবরের ওপর মৃতিকা
দেওয়া ব্যবহার নাই কেবল এক বার
মৃত ব্যক্তিকে নিশ্চুকের মধ্যে রাখিয়া
ঘরের ঘর বন্ধ করে। এইরূপ কবর
দিলে দুই দিন পরে তার এক জনকে
কবর দিবার কারণ ঐ ঘরের চাবি খুলিয়া

সমাচার দর্পণ।

দেখিল যে ঐ বাদশাহের চাকর সর্দারের
রক্তলিপ্ত হাতের ময়িরা রহিয়াছে। তা
হাতে সকলে দেখিয়া অনুমান করিল
যে যখন ঐ ব্যক্তিকে ধরার দেওয়া গি
য়াছিল তখন সে ময়িরাগুলি না গোঁগের
শাবলাপুষ্পে অজান হইয়া মৃতবৎ হইয়া
ছিল, বুঝিতে না পারিয়া তাহাকে সিন্দূরের
মধ্যে পুরিয়া ধরার দেওয়া গিয়াছিল পরে
তাহার আলোদয় হইলে ঐ সিন্দূর তাপনি
ভাঙ্গিয়া বাহির হইয়াছিল সে ধরার হার
মুণ্ডিতে না পারিয়া খেদেতে আপন মাথা
ভাঙ্গিয়া শেষে মরিয়াছে।

বিবাহদান।

বহুমান মোকামে এবং তাহার তেজ
দিক্‌শ সোনা গায়ে শূণ্যত কাড়ান
ধূয়াস্ত নাহেদের জিয়া যে বংশে কুল
আছে ঐ কুলেতে মুশিক্ষিত ও গুণবান
হইয়াছে যে দেশে জন বালক তাহার
দিক্‌গে ইন্-রাজী পড়াইবার কারণ ঐ
নাহের মাইনপুর মোকামে ইন্-রাজী
কুল পুস্তক করিয়া তাহারদিক্‌গে ৭ তু
লাই তারিখে ইন্-রাজী পড়াইতে আরম্ভ
করিয়াছেন। এবং ইহাতে এক নাহের
কুলমন্দের হইয়াছেন।

দান।

মোঃ বক্রমাল জমীন্দার মহারাজ তেজ
শুদ্ধদার বাহাদুর পুতিমানের পুতিন-
ফাঙ্কতে দুই শত টাকা বিতরণ করেন ঐ
দুই শত টাকার মধ্যে কাহাকে এক টাকা
কাহাকে বা চারি আনা করিয়া ওপুত্র
মতে বিতরণ করেন ইহাতে বুঝিতে পা
রা যায় যে ঐ কপ দান অবিকাল করি
বেল।

নূতন গঞ্জ।

জমীন্দার মহারাজ তেজশুদ্ধদার বাহা

দুর আপন বাটীর পক্ষিয়ে নূতন এক
গঞ্জ করিয়াছেন সেখানে মোকামি পনা
রি অনেক লোককে মোকামি করিবার
কারণ জয়মান সুখ বাড়িরকে টাকা
কর দিতেছেন ইহাতে পুতিদিন মোকামি
বাড়িতেছে এবং তিনি আপন দেশে
যে দুখ পাওয়া যাইত না তাহাও কলি
কাতা মোকামিহইতে আনাইয়া তাহার
মোকামি করাইয়াছেন। ঐ গঞ্জের নাম
রাতিগঞ্জ ঐ গঞ্জের দক্ষিণ বক্‌শের নামে
নদী আছে সেই নদী নার হইবার কা
রন পাঁকা এক পুস্তক করাইতেছেন
অদ্যাপি পুস্তক হয় নাই।

পুতানি লোক।

কথিয়া দেশে এক জন বৃদ্ধ আছে তা
হার বয়স্ক্রম এক শত চৌদ্দ বৎসর
তাহার কনিষ্ঠ পুত্রের বয়স্ক্রম ষাট বৎ
সর সে ও তাহার সন্তানেরা কৃষক
করে।

মুসলমানেরদের ব্যবহার।

মুসলমানেরদের মধ্যে আরব দেশে
কতক দিন হইল এক নূতন মত হইয়াছে
সে মতগরিরা ওআহবি নামে খ্যাত
তাহারা মহম্মদকে মালেক কিন্তু কোরা
নের মতে চল না ও অন্য মুসলমানের
দের নিত্য বিকলচাচারী ও অন্য মুসল
মানেরদের সহিত সর্বদা যুদ্ধকারী তাহা
রা একবার মহম্মদের অনুমান আট
মুসলমানেরদের তীর্থ যাত্রা শহর আফ
ঘন করিয়া যুদ্ধদার ওখানকার তাবৎ বিনা
দি লইয়া আপন স্থানে গিয়াছিল। পরে
গত দিনেরদের মাসে মুসলমানেরদের
পুতানি রাজ কলসান্তালোলের বাদশাহ
তাহারদের ওপরে আক্রমণ করিয়া তা

হারদের পুতানি সেনাপতি আবদুল্লা ও
তাহার মুখতি ও তাহার খাজাতি এই
তিন জনকে ধরিয়া কএম করিয়া কলসান্তালো
নোপল শহরে লইয়া গেল সেখানে
পঁয়তালি ওখানকার বাদশাহ অজ্ঞকার
ময় কারাগারে তাহারদিক্‌গে বন্ধ ক
রিয়া রাখিতে আজা ছিলেন তাহারপর
দিন বাদশাহ আপন সিন্-হামনে বসিয়া
তাহারদিক্‌গে আপন সম্মুখে আনিতে
আজা ছিলেন ও বাহারা তাহারদিক্‌গে
ধরিয়াছিল তাহারদিক্‌গে সন্তোষের
কারণ খালিতে বাদশাহী ছিলেন ও আ
পন সম্মুখে আজা দিয়া তাহারদের
মস্তক ছেদন করিলেন। আরো আ
জা ছিলেন যে তিন দিনপক্ষ তাহার
দের মস্তক ও শরীর পুতানি শহরের দা
মায় পড়িয়া থাকিবেক। বাদশাহের হা
রবার এই কর্ম সমাপ্তি হইলে পরে সমা
চার আইল যে মক্কাভূমি যে সকল মু
সলমান মক্কাযি দিয়া যাইতেছিল তা
হারা লিঙ্কি মক্কাযি পঁয়তালি। এবং
সেই সময়ে মক্কাভূমিহইতে বাদশাহ
হের কাছে তিন চারি কলস তীর্থ জল
আইল।

আশঙ্ক্য বিবরণ।

সত্তর শত বিরাশী মনে ইংল্যান্ডীয়
বাদশাহের এক আহায আয়েরকা
দেশহইতে পুশান্তনগরের এক ওপনি
যাইতে আহাযের নাগিকেরা অজ্ঞান
দুস্ততা করিয়া কাপতান ও আহাযের
আর্য অজ্ঞেকেরদিক্‌গে লিঙ্কি-২ আহা
রের সামগ্রী মনে দিয়া এক জেট নৌ
কাতে করিয়া আহাযহইতে দূর করিয়া
দি। ঐ কাপতান ধনু নৌকাতে আ
টার শত কোশ চলিয়া ওলেন্দেজের

সমাচার দর্পণ ।

এক যুগে ওপহীনে পঁচতিয়া রুহ্ম পাইল ।
ঐ নারিকেরা তাহাজ লইয়া এটাঁহিত না
য়ে ওপহীনে চলিয়া গেল সেখানে ইংল
গায়েরদের গমলাগমন ছিল সেই ভয়ে
এটাঁহিত ওপহীনহইতে অন্য এক ওপহীনে
গেল সেখানে তাহারা আঁনারদের কা
রন ঘর ও কেল্লা করিতে ওয়াত হইলে তা
হাদের পরস্পর বিরোধি হইল তাহাতে
তাহারা পুনরায় এটাঁহিতে আইল পরে
তাহাদের মধ্যে তাট জন তাহাজ লই
য়া এবং ঐ ওপহীনের কতক স্ত্রীলোকের
দ্বিগৈক হুগি করিয়া লইয়া অন্য ওপহীনে
গেল যাহারা সেখানে থাকিল তাহারা
ইয়া পড়িল । ঐ আট জন ও কতক স্ত্রী
লোক লোকহাল পিন্ধকর্ণ নামে ওপহীনে পঁ
ছত্য়া সেখানে বসতি করিবর ও দাংগ
করিল । সে সময়ে লোকেরা মনে করিয়া
ছিল যে তাহারা তুঘিয়া মরিয়া গিয়াছে ।

দুই তিল বৎসর হইল এক তাহাজ
মাইতেছিল দূরহইতে সেখানে লোক
বসতি দেখিয়া তাহার নিকটে গেল এবং
দেখিল যে তাহাদের চাঁদ্র পাঁচ জন ভ্রা
পাতে চড়িয়া তাহাজে আইল ও ইংরাজি
ভাষাতে কহিল যে আমরাদের ভোগি বা
জিবর কারণ রসি দ্বিবা না । তাহার
দের মুখে ঐ ইংরাজি ভাষা শুলিয়া ঐ
আহাজের লোকেরদের আশ্চর্য্য হোধি
হইল । পরে তাহারা তাহারদ্বিগৈকে
জিভাসা করিল যে তোমরা কে ও কোথ
হইতে আইসা । তাহারা উত্তর করিল
যে পঁচশ বৎসর হইল এটাঁহিত ওপহীনে
হইতে যে তাহাজ আনিয়াছিল
সেই তাহাজের লোকেরা ঐ ওপহীনে
বসতি করিয়াছিল তাহাদের সন্তান

আমরা । পরে তাহারা যখন ঐ আহা
জে গর দেখিল তখন তাহারা মনে
করিল যে ঐ বুঝি বড় জাগল কিয়া
শূরবিশিষ্ট শুরুর হইবেক । যেহেতুক
তাহারা ঐ ওপহীনহইতে কখন অন্যত্র
যায় নাই এবং সেখানে ও গর কখন
ছিল না ।

পরে তাহাজের বসতিতান পুজুতরা ঐ
ওপহীনের ওপরে গেল ও দেখিল যে তা
হারা আঁনারদের বসতিতান ও শমা ফে
ব্রাহি অতিসুন্দর রূপে করিয়াছে ও তাহর
মাংসারিক কর্ম বন্দোবস্ত রূপে চলাই
তেছে । তাহাদের মধ্যে সকলহইতে
বৃহ আদম্ম নামে এক ব্যক্তি ঐ মাংস
বেরদের সহিত মাংসা করিল ও ঐ
পুর্বে ব্রাহ্ম কহিল ।

আমরা অনেক ঐ ওপহীনে পুশ্ম
আনিয়াছিলম আর সকলে মরিয়াছে
আমি কেবল জীব ও আজি যাহারা মরি
য়াছে তাহাদের সন্তানলো ঐ আহাজে
আমরা । এখন পয়তাল্লিশ জনমান ঐ
খানে আজি ।

সেখানে যাহারা অনিয়াছে তাহারা
বড় ভেজসী ও তাহাদের তাম্ব বন ও
স্ত্রীলোকেরা অতিশয় সুন্দরী যাহারা পুশ
ম ঐ ওপহীনে আনিয়াছিল তাহাদের
অনেক দুঃখ ছিল কিন্তু সেখানে তাহার
দেরহইতে যাহারা অনিয়াছে তাহার
দের দুঃখের লেশও নাই তাহারা আ
পন্য ক্ষেত্রে দ্বিগৈ কর্ম করে তাহাজে
পশমাছি ভাল অন্নিমে ফিফি সইয়
হয় তবে স্ত্রী পুত্র ও ভয়ে বিবাহার সম্মত
হইয়া ঐ কুলবৃদ্ধ আদম্মর নিকটে কহিলে
সেই তাহাদের বিবাহ দেয় ।

তাহাদের মধ্যে দ্বিগৈ দ্বিগৈ বিনমায় পুশ
হয় না যদি কোনদিন হয় তবে ঐ আদম্ম
তাঁহা নিশ্চিন্তি করে । ঐ আদম্মের এমন
ইহা পরিজন আছে তিনি ও তাহার অ
স্থা অথচ বৃদ্ধা এক স্ত্রী ও তিন সন্তা ও
এক পুত্র ইহারা আঁপল শিতার ক্ষেত্রে
কৃষি কর্ম করে । পুর্বার তাহাজে
যে লৌহ পাইয়াছিল তাহার দ্বারা তাহা
রা ব্যবহারের দা কুচালি পুজুতি করে সে
লৌহ অতিমুড়ে রাখে যেহেতুক তাহা
আর পাইবার ভরসা নাই । তাহাদের
টান্না নাই যখন যাঁহার কিছু কয়ক
দ্বিতে হয় তখন এক শমা দিয়া অন্য
শমা লয় । তাহাদের মধ্যে একটা স্ত্রী
করি ওদামের মত আছে যখন যাঁহার
কিছু দুঃবার অনুভূত হয় তখন ঐ আদম্ম
ঐ ওদামহইতে তাহাকে দেয় । এবং
আদম্ম এমন হিসাব রাখে কোন বৎ
সরে কয়ক শমা হয় ও কে অল্পা ও
কে মরে ইত্যাদির দ্বিগৈ হিসাব রাখে ।
আদম্ম তাহারদ্বিগৈকে ঐ দ্বিগৈ ব্যবহার ও
পারমাণিক ব্যবহার সমস্ত শিমিয়াছে যে
তাহারা তাহার অন্য পথ কছাৎ চলে
না ।

সে ওপহীনে দ্বিগৈ তিন কোশ ও পুশ কো
কোশ সেখানে শুয়ি ওঁরা এবং যদি ক
করা যায় তবে সেখানে ইংরাজী
স্মাথি অন্নিতে পাঁচ । সন্ততি কলিকাতা
ইংলণ্ডিয়ারা দুই হাজার টাক দিয়াছেন
এবং তাহাতে তাহাদের শিল্প কর্মকে
হাতিয়ার ও কেতাব ও গোমোফদি ইত্য
তাহাদের ওপকারী বস্তু তাহাজের দ্বি
সেখানে পাঠাইয়াছেন ।

এই সমাচার ১০/৪ পুরানপুত্র হাঙ্গাখানতে পুতিনজাবে শরিবর হাঙ্গা হয় । যাহার লগনের আশপাশে বর তিনি পুরানপুত্র হাঙ্গাখানতে
আপন মন পাঠাইলেন সন্তানে কথক তাঁহার নিকটে পাঠান হইবেক তাহার দূর্য মানে এক টাক । যিনি বাসন করিবেন বহি তাহার নিকট

বোনাপার্ড অন্য লোকের সহিত
 সাক্ষাৎ করেন না ও হাটারো সহিত
 আলাপ করেন না এবং তাঁহাকে অন্য
 কেহই দেখিতে পায় না। কেবল তাঁহার

সূমাচার দর্পণ।

টোকেতে যে ইংল্যান্ডেরা আছে তাহার।
কথাটিও কখনও যেথা পায়মান।

ইংল্যান্ডের মোকদ্দমা।

ইংল্যান্ড দেশে এক জন নিলামওয়াল।
নাহেবের কোর্সীর সহিত এক জন
জুয়াচোরের প্রতি হইল এবং ঐ কোর্সী
ঐ জুয়াচোরের নিকটে ম্যাদ্য যাগ জুয়া
খেলাও করে এইকণে ঐ কোর্সী জুয়া
খেলা সত্তত করিতে লাগিল। কিছু দিন
পরে ঐ কোর্সী খেলাতে চারি হাজার
টাকা হারিলেন তাহার মূল্যের অনু-
সন্ধান পাইয়া ঐ কোর্সীর নিকটে
হিসাব চাহিল। হিসাব কোর্সীর
চারি হাজার টাকা দেনা হইল। পরে
তাহার মূল্যের কোর্সীর নামে নালিস
না করিয়া ঐ জুয়াচোরের নামে নালিস
করিল। তাহাতে জুড়িরা অবাগত
করিয়া দ্বির করিলেন যে ঐ জুয়াচোর
কোর্সীর স্থানে যে চারি হাজার টাকা
খেলায় জিতিয়া লইয়াছে সে টাকা
কোর্সীর নহে কিন্তু সেই টাকা তাহার
মূল্যের অন্তর্ভুক্ত ঐ জুয়াচোরের স্থানই
তে কোর্সীর মূল্যবকে সে চারি হাজার
টাকা দেওয়াইয়া দিলেন।

ওত্তর কেন্দু।

ইংল্যান্ড দেশে এই পৃথিবীর বিষয়ে এই
দুই আশঙ্কা আছে তাহার প্রথম এই
যে কোন আর্জাত ওত্তর কেন্দুর্ধ্য
যায়। দ্বিতীয় আর কোন আর্জাত আ-
মেরিকার ওত্তর দিয়া ঘুরিয়া আইসে।
গত বৎসর এই দুই কর্মের নিমিত্ত ইং-
ল্যান্ডের বাহ্যশীল অনেক বিন ব্যয় করিয়া
আর্জাত পাঠিয়াছিলেন কিন্তু ঐ আর্জাত
অনেক দূর গিয়া শেষে ঘিরিয়া আইল

এখন এই দুই কর্ম কোন পুরাত্নে নিদ্রম
করিবার কারণ ইংল্যান্ডের মহানতা
আজা করিয়াছেন যে আমেরিকা দেশের
ওত্তরে যে অজোয় অর্থাৎ অগ্ন্যম পথ
আছে সে পথে যে আর্জাত যত দূর যাই
তে পারিবক সে সেই বন বাহ্যশীল পাই-
বেক এবং যে তাহাইহাতে অধিক দূর
যাইতে পারিবক সে তাহাইহাতে অধিক
পাইবেক। এই পুরাত্নে চারি স্থান নিক
পন করা গিয়াছে যে আর্জাত পুণ্য স্থান
পর্যন্ত যাইবেক সে চল্লিশ হাজার টাকা
বাহ্যশীল পাইবেক এবং যে আর্জাত তাহা
ইহাতে অধিক দূর যাইবেক সে আশী
হাজার টাকা পাইবেক এবং যে তাহা
ইহাতে অধিক দূর যাইবেক সে এক লক্ষ
বিশ হাজার টাকা পাইবে যে আমেরিকা
ঘুরিয়া আসিতে পারিবক সে এক লক্ষ
ষাতি হাজার টাকা পাইবেক। এবং ওত্তর
কেন্দুর্ধ্য যাইতেও এই বন ক্ষয়
করিয়া চারি স্থান নিকপন করা গিয়াছে।
ওত্তর কেন্দু পৃথিবীর দুই শত দশ কোশ
পথ বাকী থাকার স্থানপর্যন্ত যে যাই
বেক সে আট হাজার টাকা পাইবেক
এবং দেড় শত কোশ পথ বাকী থাকার
স্থান পর্যন্ত যে যাইবেক সে ষোল হাজার
টাকা পাইবেক এবং যে ওত্তর কেন্দু যাই
বার নহই কোশ পথ বাকী থাকিতে ঘিরি-
বেক সে ১৩ হাজার টাকা পাইবেক
এবং যাহার ষাটি কোশ বাকী থাকিবক
সে দ্বিশ হাজার টাকা পাইবেক যে
সেখানে পৃথিবীরক সে চল্লিশ হাজার পা-
ইবেক। এই যে বাহ্যশীল কল কল গি-
য়াছে এইমাত্র লাভের নিমিত্তে লোকে
রা আর্জাত লইয়া যাইবেক সে নয় কিন্তু
বৎসর দুই তিন শত আর্জাত সেই আ-
শঙ্কে বৎসর না যাবিতে যায় সেই বৎসর
ইহাতে উল বাহির করিয়া বিক্রয় করে

অতএব তাহারদের ওত্তর কেন্দুর্ধ্য যাই
ইতে স্বতন্ত্র যাত্র হইল এবং যদি যা
ইতে পারে তবে বাহ্যশীল পাইতে
পারে।

শুশীমুত আশা নাহেব।

যোঁ বরেলিহাতে এই সমাচার
আনিয়াছে যে সেখানে অনরত হইতেছে
শুশীমুত কাপ্তান ফিনর নাহেব শুশীমুত
আশা নাহেবকে ধরিয়াছে। এবং সে
পত্রে আরো শুনা গেল যে সেখানে শশা
দ্বির মূল্য কয়েক অধিক হইতেছে এবং
সেখানে ওলাউরা রোগ আঘাতি আছে।

জুমিকল্প।

যে জুমিকল্পের বিষয় আমরা পূর্বে লিখি
য়াছিলাম এখন শুনা যাইতেছে যে সে
জুমিকল্প তাবৎ ভারতবর্ষে হইয়াছে
কিছু কোন পুর্বে অধিক কোন পু-
র্বে অল্প। যোঁ বাহ্যইতে ঐ জুমি
কল্প লোকেরদের এমত জান হইয়াছিল
যে মহাপুণ্ডর কাল ওপস্থিত।

অমর্যদ্বার মোকামে ঐ ৪০ জন
তারিখে সাগর-কলে জুমিকল্প হইয়াছিল
তাহাতে সে শহরের অনেক ক্ষতি হই-
য়াছে সেখানে মুনলমানেরা এমত
সুস্থ-শ্রমমজির করিয়াছিল যে তাহা
হোমিও সকলে আশঙ্ক্য জান করিত
সে সকল মসজিদ ঐ জুমিকল্প জুমি
পতিত হইয়াছে সে শহরের দরবার
পতিয়া গিয়াছে ও সেখানকার অর্থাৎ
তের ঘর এমত ঘটিয়া গিয়াছে যে সে
খানে আর বসা যায় না। ভারত
দিন পুত্ৰকালে সেখানে দুইবার জুমি
কল্প হইয়াছিল।

ঐ তারিখে যোঁ সুরাটে জুমিকল্প হ

সম্রাটের দর্পণ।

ইয়াজিল তাহাতে সুরাঠি ও তাহার নীচ
ব্রহ্মীণী তান্ত্রি নামে নদী ও তাহার পা
ক্রেণ্ডিয়া মকল দোলারমানের মত দে
খা গেল। সেখানে এক সাহেব আসিল
ঘরে খাটে শয়ন করিয়া ছিল ঐ ভূমিকম্পে
তাহার শয়নের খাট দুটিতে লাগিল ও
যেহে দেখালে আঘাত করিতে লাগিল
তাহাতে সে সাহেব ভীত হইয়া ঘরের
বাহিরে গিয়া দেখিল যে শহরের সকল
লোক ঐ সাহেবের ঘরের দোলন দেখি
তেছে। অনেক ঘরে গ্লাসের তৈল ও
প্লাম্পের তৈল ওজনিয়া ভূমিতে পড়িল
এবং কুপের তল যে আটাই হাত মৃত্তি
কার নীচে ছিল তাহাও ভূমিতে গড়িল
ও হুই তিল পুষ্করিনীর তল মৃত্তিকাতে ব
হিতে লাগিল।

বোম্বাইয়ের নিকটবর্তী ব্রুয়াস শহরে
শুণ্য পূর্বে কখনও ভূকম্প হইত না কিন্তু
ঐ ভূমিকম্প সেখানেও এমত হইয়াছে
যে সেখানে অনেক ঘর দোলারমান
হইয়াছিল। এবং যাহারা দাঁড়াইয়া
বেড়াইতেছিল তাহারা ঐ ভূমিকম্পের
সময়ে কিছু অবলম্বন না করিয়া দাঁড়াই
য়া থাকিতে পারিল না। এক সাহেব সেই
নয়নে শালকীতে ঘাইতেছিল সে কিছু
জানিতে পারিল না কিন্তু লোকেরদের
মোড়ামোড়ি দেখিল ও পাঁক ঘরের ওপর
হইতে বড় টাইল ইট পড়িতে দেখিল।
এবং সেমানকার লোকেরদের মস্তক ও
গাত্র ঘূর্ণনতে তাহারা ওলাঙা হইয়াছে
জান করিয়া হাছাকার করিতে লাগিল ও
আপনারাই মৃত্যুতে পড়িল।

ক্যানিয়াদের কুআজ।

ক্যানিয়া দেশের লোকেরা শ্রুণ্য পুরী
হিতের অধীন এবং সেখানে বাদশা
হের নিয়মিত এক অদালত আছে কিন্তু

তাহার অধীক্ষ পুরোহিতেরা তাহারা ম
কল লোকের ঈশ্বরারাবিন্দ বিখ্যে বিচার
করে এবং তাহাদের আকালমুরের ঈশ
রারাবিন্দ না করিলে লোকেরদিগকে অ
শেষ যত্না দেয় তাহাতেও যদি সে তা
হার মতাবলম্বী না হয় তবে তাহাদিগে
কে দাখ করে ও কহে যে তোমার পুণ
রফার কারণ তোমার শরীর দাখ করি।
এবং তাহারা পুস্তকের ওপরে কত্ব করে
যে তাহাদের মনের বিপরীত পুস্তক কহে
পড়িতে না পায়।

গত বৎসরে তাহারা নানা পুস্তকের
নাম জানা করিল ও আজা করিল যে
ঐই পুস্তক যাহার ঘরে পাওয়া যাইবেক
যে সে পুস্তক পাঠ করুক বা না করুক ও।
শি তাহাকে ভিন মাস একাকী করু রাখা
যাইবেক আদৌ তাহারা আজা দিল যে
যে কোন থবরের কাগজে ক্যানিয়াদের
রাজার ব্যবহার ও আজা ইত্যাদির বিষয়ে
কিছু মন্দ থাকে এমত থবরের কাগজ
যাহার ঘরে পাওয়া যাইবেক সে ঐ কল
ভিল মাসখান্ড করু থাকিবেক।

যদি এ পুকার অদালত এই দেশে হইত
তবে ইংলণ্ডীয়দের রাজসামনের বি
য়ে লোকেরা কি বুঝিত। আমরা ক্যানি
য়া দেশের কুআবহার এই কারণে লিখি
লাম যে এতদ্দেশীয় বিতফল লোকেরা
জানিতে পান যে তাহারা কিংবা মুবাব
হাদের নীচে কালযাপন করিতেছেন।
এখন চৌদ্দ বৎসর হইল ইংলণ্ডীয়েরা
ঐ বাদশা দেশ অধীশ্বর করিয়াছে
ইহার মধ্যে কোন পুণী কহিতে পারে না
যে কোন ইংলণ্ডীয় এতদ্দেশীয় লোকেরদি
গকে আশন মত ডাঙা করিয়া ইংলণ্ডী
য়েদের মতে পুণ্ডি হইতে তাহাদের
ওপরে জোর করিয়াছে এবং তাহারা

বখল ও জোর করিবেন না। যদি এদেশে
ক্যানিয়াদের অধিকার হইত তবে তাহারা
অবাণী আপনাদের মত সেই অদালতের
দ্বারা এ দেশে ঢলাইত।

আমেরিকা।

উত্তরামেরিকা দেশ যেমত বহির্ভূ হই
তেছে সেমত পৃথিবীর মধ্যে আর কোন
দেশ বহির্ভূ হয় না যেহেতু সতর শত
ঔনপঞ্চাশ মনে সেখানে তের লক্ষ লোক
ছিল সতর শত একহস্তর মানে বিশ লক্ষ
লোক হইয়াছে সতর শত নব্বই মনে ঔন
চল্লিশ লক্ষ লোক। আঠার শত মনে
বাগ্মান লক্ষ। আঠার শত মন মানে
বাহতর লক্ষ লোক এখন এক কোটি লো
ক উত্তরামেরিকাতে হইয়াছে। সেখানে
দশ বৎসর অন্তরে আবার বৃদ্ধ বনিতা
পর্যন্ত পুত্রিমল্লগণীণাযায় এবং সেখান
কার সাধিবল দস্তুরমানিতে তাহার
কাগজ থাকে যে সেমানকার অধীক্ষেরা
পুত্রিম বৎসরে লোকেরদের হিসাব
দ্বির জানিতে পায়।

জার্মানী দেশের ওকীল।

জার্মানী দেশের বাদশাহ ইংলণ্ডের বার
শাহের নিকটে এক জন ওকীল পাঠাইয়া
ছেন সে ওকীল দ্বারা দেশে নৈজর্য্যে
এবং যোগদা যে আরবীয় যোকা ওপকী
কন ঐ ওকীলদ্বারা আশিয়ায়াল তাহা
ইংলণ্ডের বাদশাহের খবুরে পৌছিয়াছে।

কাশীর পুণ্ডীন কথা।

কাশী নগরে অদ্যমল আট লক্ষ লোক
আছে। দশ বৎসর হইল কাশীতে
হিন্দু ও মুসলমানের বড় বিরোধ হইয়া
ছিল মুসলমানেরা হিন্দুদের দেবালয়
গোহত্যা করিল তাহাতে হিন্দুরা কাশী

সমাচার দর্পণ ।

বিষ্ণু হইয়া মুসলমানদের এক পুৰীষ মসজিদ ইয়াহা সেখানে এক শুল্করকে মাগিয়া জেলিল তাহারদের যিস্তর ভাঙ্গিয়া জেলিল ও তাহারদের কোরাণ দ্বিত্বিয়া আপন পায়ের নীচে রাখিল। মুসলমানেরা ইহাতে আরো ফুজ হইয়া হিন্দুরদের পুৰীষ মন্দির ভাঙ্গিয়া জেলিল ও কাল ভৈরবের জাঁতা ভাঙ্গিয়া জেলিল ও পুন হার সেখানে আর একটা গোহত্যা করিল ও তাহার রক্ত সর্বত্র ছিটাইল ও সে যত গো এক পবিত্র পুষ্করিণীতে জেলিল। পরে হিন্দুরা আড্ডা মুজ হইয়া আপনাদের শক্তিপাখ্য মুসলমানেরদিগকে মাগিল তাহাতে ইংল্‌লণ্ডীয় সেনাপতিরা অন্য কোন ওপায় না দেখিয়া আপনাদের সৈন্যদ্বারা ওভর পক্ষে বিরোধী লিপ্ত্তি করিয়া দিলেন।

— — —
দক্ষিণ দেশের মুহা।

আওরঙ্গজেব বাদশাহের অধিকার কালে দক্ষিণ দেশ দ্বিত্বের অধীন ছিল এবং সে দেশে জয় সুবাহে বিভক্ত করা গিয়াছিল তৎপরে সেই জয় সুহা ও তাহার রাজকর ও তাহার বিশেষ বিবরণ লিখাযাইতেছে।

পুণ্ড্র মুহা আওরঙ্গজাব তাহাতে বার জিলা তাহার মধ্যে এক শত নব্বিশ পুর গণা। তাহার সাম্ব-সরিক রাজকর এক কোটি মাতাইশ লক্ষ টাকা।

দ্বিতীয় বিজয়পুর তাহাতে ওলি জিলা ও তাহার মধ্যে দুই শত বার ওর পুরগণা। তাহার সাম্ব-সরিক রাজকর মাত্ৰ এক কোটি অশ্বাশী লক্ষ টাকা। তাহার মধ্যে মহাসুর রাজ্য জিল

কেবল তাহারি সাম্ব-সরিক রাজকর তিন কোটি আটশ লক্ষ। এবং বিজয়পুর দেশে এক কোটি টাকা সাম্ব-সরিক রাজকর।

তৃতীয় মুহা অহমদাবাদ তাহাতে মাত্ৰ জিলা তাহার মধ্যে মাত্ৰ ওর পুর গণা তাহার রাজকর মাত্ৰ ওর লক্ষ টাকা।

চতুর্থ মুহা বিজয় ইলিচপুর তাহার মধ্যে চত্বিশ জিলা তাহাতে দুই শত বার ওর পুরগণা তাহার রাজকর এক কোটি একইশ লক্ষ টাকা।

পঞ্চম খাওশ দুচানপুর তাহাতে জয় জিলা তাহার মধ্যে এক শত বত্রিশ পুর গণা তাহার রাজকর মাত্ৰ লক্ষ টাকা। তাহার মধ্যে কেবল আশীশ জিলা তে তেত্রিশ লক্ষ টাকা।

ষষ্ঠ হুয়েরাবাদ তাহাতে বিয়াল্লিশ জিলা তাহার মধ্যে চার শত পঁচ পুরগণা তাহার রাজকর মাত্ৰ এক কোটি নব্বিশ লক্ষ টাকা তাহার মধ্যে এই দুই জিলা বড় প্রিন্সিপালী ও তজ্জবুর। প্রিন্সিপালীর রাজকর এক কোটি পচাশী লক্ষ। এবং তজ্জবুরের এক কোটি বিয়াল্লিশ লক্ষ।

হুয়েরাবাদের মধ্যে দুইশত স্থান গো লক্‌ত সেখানে হরীর ওপতি স্থান সে পুরগণীতে মাত্ৰ ওর লক্ষ টাকা রাজকর।

অতএব দক্ষিণ দেশের এই জয় সুবাহে এক শত জিলা এবং বার শত তিরিশী পুরগণা এবং রাজকর ওলি কোটি মাত্ৰ জয় লক্ষ টাকা। এই দেশের অধিক ভাগ ইংল্‌লণ্ডীয়দের অধীন সযে হইয়াছে এবং অধিশক্ত যে ভাগ তাহার রা আরও ইংল্‌লণ্ডীয়দের অধীন।

পশ্চিম দেশ।

করনালহইতে সমাচার আসিয়াছে যে সেখানে অনেক সৈন্য একত্র হইয়াছে ও জনরব হইতেছে যে শ্রীশ্রীযুত পুর্নবীর পশ্চিম দেশে ঘাইবেন তাহার কারণ এই যে শতলজ নদীর পশ্চিমে যে শীখেরদের দেশ আছে তাহা তিনি ঠিক করেন। হতভ মাস হইল এক নাল অতালু সৈন্য ছিল এখন তাহার তত্বদিকহইতে সেখানে সৈন্য আসি তেছে। ইংল্‌লণ্ডীয় সেনাপতিরা রাজপুতানা দেশহইতে শীখেরদের দেশে ঘাইতে অধিক বাসনা করে যেহেতু রাজপুতানাতে খাদ্য দুগ্ধ দুগ্ধত ও দুগ্ধনা এবং রাজপুতানাতে পক্ষাশ পাতি হাত মৃত্তি কা না মাগিলে দুগ্ধের জন পাওয়া যায় না সে জন ও মৃত্তি সেলা যে যদি কোন বাগিচাতে দেখা যায় তবে সে বাগিচা চার লক্ষশান হয়।

— — —

আহাজ আমদানী।

৪ এপ্রিল তারিখে ইংল্‌ল্ড জাতিয়া ৮ জুনাই তারিখে মোং মান্দরাজ মালবী নামে এক আহাজ ঐংলিয়াছে এই আহাজের পথে তিন মাস চার দিনমাত্র বিলম্ব হইয়াছে। তাহার দ্বারা এই সমাজ চার শতাংশ যে শ্রীশ্রীযুত কোল্লানি বাহাদুরের অধ্যক্ষেরা ১০ মার্চ তারিখে এই আভা করিলেন যে শ্রীশ্রীযুত লর্ড হেডিংস বাহাদুর এই ভারতবর্ষের অধ্যক্ষতা পাইয়া এতদ্বশে অতিদ্রুত রূপে মুশানন করিয়াছেন এই লিখিত ডিলি এই কর্মদামানে বিশ বৎসরপাখ্য পুতি বৎসর চত্বিশ হাজার টাকা পাইবেন।

এই সমাচার বর্ণন শ্রীরামপুর হাঙ্গাখানাত পুস্তিকাধায়ে পনিবার হাঙ্গা হয়। বাহার লত্তরে আশপাশ হয় তিনি শ্রীরামপুর হাঙ্গাখানাত আপন নাম পাঠাইলে লত্তায়ে কাগজ তাহার দিকটে পাঠাই বাইবেক তাহার দ্ব্য মাগে এক টাকা। যিনি বাবর করিয়াছেন যদি তাহার দিকটে

সমাচার দর্পণ।

গ্না আয়ারদের হস্তগত হইলেন এ সকল মুক্ত নিবৃত্ত হইল তখন আশীর গভের কিল্লাদার নাপীরের রাজা ক্ষুণ্ণত আপনা সাহেবের সহিত মিলিয়া ও তাহাকে ঐ গভে আশ্রয় দিয়া আয়ারদের পূর্ব বিন ক্ষতা করিতে পুস্ত হইল। অতএব আয়ারদের আর কোন ওপায় তখন ছিল না আয়ারা সিদ্ধিয়াকে কহিলাম যে ঐ কিল্লাদার সময়ে ঐ গভে আয়ারদের হাতে সমর্পণ কর। তাহাতে তিলি ঐ কিল্লাদারকে কিল্লা দিতে আজা করি বেনে তাহাও ঐ কিল্লাদার মালিন না। পরে অগত্যা আয়ারা সেখানে সৈন্য পাঠাইয়া যুদ্ধ করিয়া ঐ গভ ও তাহার কিল্লাদারকে হস্তগত করিলাম। ঐ যুদ্ধের কালে লোকেরা জান করি মাজিল যে এই গভ লইতে ইংগ্ৰাণীয়ের মের অনেক ব্যায়োহ হইবেক।

কিন্তু ঐ গভ অন্যায়সে আয়ারদের হস্তে আসিয়াছে ও ঐ গভের চতুর্দিকের লোকেরা মুক্তকালে আয়ারদের প্রতি কোন কুচক্ষা করিল না। তাহাতে আয়ারদের অয় অল্পেই লব্ধ হইল ইহাতে অনুমান হয় যে মহামহিমদুর্গে আয়ারদের পরা ভয় লক্ষণ হইল।

শ্রীশ্রীযুত ঐ পুস্তকপত্র এইকন জনে ক কথা লিখিলেন তাহা সকল চাপাই লে বাখলা হয়।

তলনের নামে কিল্লা।

পূর্বে হোলকারের অধিকৃত খান দেশ মহাবর্তী তলনের কিল্লা গভ বৎসর ইং গ্ৰাণীয়েরা যুদ্ধ করিয়া আপন অধীন করি যাজেন সে বিষয়ে কহে ইংগ্ৰাণীয়েরদের অন্যায় ভাষা করিয়াছেন কিন্তু তাহার বিশেষ বিবরণ আত হইলে অন্যায় জান দুই হইবেক।

১৮৪৭ সালে শ্রীযুত হোলকারের সহিত ইংগ্ৰাণীয়েরদের যে সন্ধিপত্র মোঃ মদ শুর শহরে হইয়াছিল। তাহাতে মহা রাজ হোলকার নন্দাদা নদীর দক্ষিণে ক তর পুরাশ ও কিল্লা ইংগ্ৰাণীয়েরদিগকে দি তে স্বীকার করিয়াছিলেন। অনন্তরে হো লকার মহারাজের পক্ষীয় লোক ইংগ্ৰাণী য়েরদের সৈন্য মরে করিয়া সেই কিল্লা দখল দেওয়াইতে গেল। প্রথমে সিন্ধু য়ারা নামে কিল্লা হোলকারের লোকের আত্মদুর্গে তাংকার কিল্লাদার ইংগ্ৰাণীয়েরদের দখল দিল। পরে তাহাই তে তলনের কিল্লাত গেল সে কিল্লা তাস্তবধীর ওপর সেখানে লখিয়া হোলকারের লোক তলনের কিল্লা ইংগ্ৰাণীয়েরদিগকে দিতে তাহার কিল্লাদারকে আজা করিল কিন্তু সে কিল্লাদার তাহা মা লিল না ও কিল্লাও ইংগ্ৰাণীয়েরদিগকে দিল না। তাহাতে হোলকারের লোক ইংগ্ৰাণীয়েরদিগকে কহিল যে কিল্লাদার যে ছাত্রিক কিল্লা দিল না তোমরা যে কলে পারহ সেই কলে কিল্লা দখল করহ। ইংগ্ৰাণীয়েরা কিল্লাদারকে কহিল যে হো লকার মহারাজ এই কিল্লা আয়ারদিগে কে দিয়াছেন তুমি বিপক্ষতা করিয়া আ মারদিগকে কিল্লা দখল দিতেছ না অত এব যদি তুমি কিল্লা দখল না দেও তবে বিপক্ষ লোককে যেমন শাস্তা দেয়া কর্তব্য তেমন শাস্তা তোমাকে দিব। পরে দুই তিন দিন যুদ্ধের পর ঐ কিল্লা দার অনুপায় দেখিল এবং অস্ত্রহ রণে কাটা গোপন করিয়া ও বাহিরে সারল্য পুরাশপূরক আসিয়া কহিল যে আমি ও আমার সৈন্য ও কিল্লা সকলি তোমার আইস কিল্লা লও। ইহা শুনিয়া ইংগ্ৰাণীয় সৈন্যের তিন দার সেনাপতি ও কতক নিম্নাহী কিল্লাদার ভিতরে ঘাইতে

লাগিল। পরে চিয়া কিল্লাদার বন্ধ যে খিল কিন্তু কিল্লাদার নিম্নাহীরা তখন দার খুলিলে কিল্লাদার যথো প্রবেশ করিবামাত্র তাহারদিগকে কিল্লাদার নিম্নাহীরা তরবার দ্বারা আঘাত করিয়া নষ্ট করিল। সে শ তাতে ইংগ্ৰাণীয়েরা অত্যন্ত আতঙ্কিত হইয়া কিল্লাদারকে ও এক শত নিম্নাহী দিগকে বধিল এবং কিল্লাদারকে ও কতক নিম্নাহী কিল্লাদারের হাতে জীন্স দিল। বেহন কিল্লাদারের আন্তরিক শততাশ্রয় তা হাকে জীন্স দেওয়া গেল নতুবা দেয়া ঘাইত না।

অনুদ্বিষ্ট বালকের পুণঃপুষ্টি।

ইং সন ১৮৪৭ সাল বাঃ ১১১৪ সালের কার্তিক মাসে শ্যামা পুত্রার পর দিবন মোঃ চাওরার নয় বৎসরবয়স্ক এক ব্রাহ্মণের পুত্র শ্যামা পুতিয়ার বিনর্জন দেখিবার কারণ চিয়াছিল পরে পুতিয়ার বিনর্জন করিয়া অন্য বালক ও আর লোক সকলে আপন ঘরে আইল কিন্তু ঐ বালক ঘরে আইল না তাহাতে বাল কের পিতা ও মাতা ও ইষ্ট বন্ধু কুটুম্ব কলে নানা স্থানে নানা পুত্রের অনুেষণ করিল কোথাও তাহার অনুেষণ না পাইয় অত্যন্ত দুঃখী হইল পরে সকলে অনুমান করিল যে শ্যামা পুতিয়া বিনর্জন দেখি বার কারণ নোকায় চিয়াছিল তাহাতে জলে ডুবিয়া মরিয়াছে।

সম্মুত ১১১৩ সাল ইং ১৮৪৯ সালের ১৮ জুলাই তারিখে ঐ বালক অকস্মাৎ এক সন্ধ্যায়ের সহিত মোঃ হরিপাল আসিয়া ঐ স্বত্বিয়ায় ঐ বালকের মাতুল লয় মোঃ হরিপাল বালকের মাতুল তা হাকে দেখিয়া অনেক ক্রন্দন পরে চিনিলা ও বালকের বিজ্ঞান দক্ষিণে যে সন্ধ্যায়

সমাচার দর্পণ।

শনার মকল ব্যাঙ কহিল ইহা দেখিয়া
সন্যাসী পলাইল।

ঐ বালক আশ্রয় ব্যাঙ এই কহিল যে
আমি শ্যামাশ্রমের বিসর্জন দেখিবার
কারণ গীতার নীচে গিয়াছিলি আর
মন্ডলে নৌকাতে ওঠিল আমি ভীয়েই
রুহিলম। পরে গীতার পরে রাহায় ঐ
সন্যাসী আমাকে অনেক মিথ্য কথা কহি
য়া কিংবা মিথ্য দিলে আমি তাহা
খাইলাম তাহাতে আমি অজানার মত
হইলাম। ঐ সন্যাসী আমাকে মনে লই
য়া কহিল দুই গিয়া আমার কান্ড
কিছুটা কৌশল করিয়া আমাকে পরাইল
ও এক পুকার যেটা মালা আমার গলে
দিল। পরে আমাকে মনে করিয়া নানা
দোষ ভুগে করিয়া এত দিনের পর এখানে
আনিয়াছিল। ইত্যাদি অনেক
কথা ও নানা দেশের কথা ঐ বালকের
মুখখান শুন্য গেল।

আশ্রম্য বিবরণ।

কলিয়ার নিকটবর্তি সমুদ্রে অকস্মাৎ
এক দীন ওৎপন্ন হইয়াছে সেখানে পূর্বে
কেবল জল কিন্তু এক দিন অতিশয়
ঝড় ও তুফান হইল এবং সেই স্থানে
সমুদ্র হইতে অকস্মাৎ অতিশয় ঝুঁম ও
অগ্নি নির্গত হইল তাহার ফলক পরে
সে মকল নিবৃত্ত হইল। পর দিনে আহাৎ
লইয়া লোকেরা সেখানে গেল ও নৃত্ত
এক দীন দেখিল ও তাহার ওপরে ওঠিল
পরে পূর্বে দিনের অগ্নি ও ধূমের বিষয়
করেন করিয়া তাহার। সেই দীনের এক
স্থানে দুই তিন হাত মৃত্তিকা খুঁদিল
তাহাতে তাহার নীচে তুলন্ত অগ্নি দেখা
গেল।

এই কল সমুদ্রের মহাবর্তি অগ্নিকে
হিন্দু লোকেরা বহুবান্ধব কহে।

গান।

গত তারি বৎসরের মধৌ ই-গুণ্ডে
শে রাহায় লোকেরদের ওপকারের নিমি
ত যে মকল দীন তুলিত সে মকল দীন
তৈলদ্বারা তুলিত কিন্তু তারি গাঁও বৎ
সরের মধৌ তৈলদ্বারা পুতীন তুলান
নিবৃত্ত হইয়াছে এবং গানদ্বারা পুতীন
তুলিতেছে। সে গান এই।

কলার নীচে অগ্নি রাখিলে তাহাই
তে এক পুকার বায়ু নির্গত হয় তাহাতে
অগ্নি সৎ ঘোণা করিলে ঘোণাভ মে
বায়ু থাকে সে পর্যন্ত বাতীর মত জলে
তাহাতেই আলো হয়। ইহার গুণ এই যে
বৃষ্টি কিম্বা ঝড় তুললেও সে আলো নি
বৃত্ত হইতে পারে না এবং লগন শহরে
রাত্রি কালে তাবৎ রাহায় ঐ গানদ্বারা
আলো হয়। প্রতিরাহায় লক্ষা মীসার
তুলি আছে এবং ঐ তুলি ঐ গানদ্বারা
পরিপূর্ণ থাকে প্রতি বাটার দরবারে সমু
খে ঐ তুলিতে জিহু আছে ঐ জিহুদ্বারা
গান নির্গত হয় তাহাতে অগ্নি সৎ ঘো
ণা করে সেই স্থানে আলো হয়।

বিন্দু মনুতি শেখ আহাৎ হারা সমা
চার পাওয়া গেল যে কইলও ঘেঁষে এক
সাহেব এই মত এক কারখানা প্রস্তুত ক
রিয়াছে ঐ গান দেশান্তরে ও খলির মধৌ
বহু করিয়া লইয়া যাউতে পারে।

লৌকাভূরি।

১৫ জুলাই তারিখে মোং পুরাণে এক
ওদরার লৌকা পাঠে ঘাইডেজিল ইতো
মধৌ মধ্যগর্ভাতে সে লৌকা ভুলিল তা
হাতে প্রায় করানাল শিল্পের সাহেবের

বোকার মহীম ও বাসুন্ড মুখতি ঘাটি
অন লোক ছিল তাহার মধৌ বার জন
মাত্র বাঁটিয়াছে আর মকল যিগায়ে।
তাহার পূর্ব কতক দিন দুই তিন লৌকা
সে স্থানে ভুবিয়াছিল তাহাতে দুই শত
লোকের মধ্য এখার লোক বাঁচিল আর
মকল মরিল।

তুর।

শুনা যাউতেছে যে দশ শোনার দিবসের
মধৌ মোকাম নমরাইয়ের খালে কাগা
নের নীচে রেনমের গাঁটি সময়ে এক
লৌকা লগান হইয়াছিল পরে রাহা
ঘোণা অন কএক দুস্ত্র লোক একত্র আসি
য়া সেই লোকের দ্বারা কাটিয়া গাঁটার
মধ্যস্থানে লৌকা আনিয়া ঐ রেনমের
গাঁটি তুর করিয়া লইয়া গিয়া পর দিবসে
নিকটস্থ দারোগা লোক খবর পাইয়া
সেই স্থানে আইল এবং মোকাম
খগলিহইতে সেইখানে লোক গিয়া
চৌবাবারের ওপরে চোর তলপ করিলে
চৌবাবার চোরের অনুসন্ধান করিতে
লাগিল। পরে বৈকাল সেই কএক জন
চোরের মধৌ আত্ম কলহ হওয়াতে এক
জন চৌবাবারের নিকটে আসিয়া সে
সমুদয় দ্বন্দ্ব ব্যাখ্য করি কহিল। চৌ
বাবার ও দারোগার তরপ লোক গিয়া ঐ
চোরকে মর্মে করিয়া মোকাম চুতুকার
এক সোনার বাজিয়ার বাটীতে গিয়া
তাহাকে পাঁকড়া করিল এবং রেশমের
গাঁটি কিছু পাইল পরে তাহাকে জিলা
মোকামে ঢালান করিল।

এখন শুনা যাউতেছে যে পূর্বে এক
মহাজনের শাল ও বনাং এক লৌকা
হইতে চুবি গিয়াছিল সে মহাজনও সে

সমাচার দপণ ।

সৈন্যগণ বান্ধিয়ার ওপরে শীল ও হলাতেও
বিধি করিয়াছে ।

হিন্দুস্থানের আদালতের মত ।

ইংল্যান্ডের অধিবাসী হিন্দুস্থানে
অবস্থান করিতে অধিবাসী হিন্দুস্থানের বরকদার
পক্ষ আদালত মন্ত্রণায় লোকেরদের
মরমাতি এবং আদালতের অন্য বিষয়
মত পুত্রবৎসর এক কোটি মিল লক্ষ
টাকা কোম্পানি বাহাদুরের দিতে হয় ।
এমত মত পুত্রবৎসর মধ্যে অন্য কোন
দেখেন নহি তথ্যনি মন্ত্রণায় হারোগি
পুত্রবৎসর দুইতাল্লুক কোম্পানি বাহা
দুরের এত মতের ও পুত্রবৎসর তেমন
কিন্তু হয় না ।

মহানীকো ।

ইংল্যান্ডের এক পুত্রবৎসর এক নীকো মন্ত্রণা
হইয়াছে এক মত দুই দিকে দুই পক্ষ
আজ তাহার মধ্যে জল দেখিলে এক
পক্ষ হইতে অন্য পক্ষে ঘাইতে লোহ
ময় নীকো করা গিয়াছে সে নীকো
অতিশয় পক্ষীয় হইত লম্বা এ অলহইতে
এক পক্ষ হইত ওয় ।

মেডেল ।

ইংল্যান্ড দেশে ৪১ মার্চ তারিখে দুই
দিন মহাবলিকার ঘর মেডেল হইয়াছে
তাহার মধ্যে এক ঘর যেন লক্ষ টাকার
দেয়ার করণ মেডেল হইয়াছে । সেখা
নে গ্রেমি ও লটার ও শহরে যে ঘর মে
ডেল হয় তখন তাহার বিষয়ে সমাচার
জাণান যায় এবং যে ব্যক্তি আনিব বুকে
যে আমায় হেনা অনেক আশি মেডেল হ

ইলাম তখন সে আশনার যথানুসার
যাহা থাকে তাহা কোন ওকালের নিক
টে কিম্বা কোন মাতবর দুই দিন লো
কের নিজে সমর্পণ করে ও আশনাকে মে
ডেল স্বাক্ষর করে । সে ব্যক্তি তাহার
সম্বন্ধ আশনারদের নিকটে রাখা ও
তাহার পাওনারদের দিগকে তাকিয়া হি
সাব করিয়া ওয়দুক মত ব্যবস্থানসারে
সকলকে কিম্বা করিয়া দেয় কিন্তু এ
মেডেল ব্যক্তি আশনার যথানুসার এ লো
কের নিকটে সমর্পণ করিলে তাহার মা
বেক পাওনারদের তাহাকে চুইতে
পারে না ।

আহাজ আমদানী ।

মোং দেশের সমাচার আইন যে মে
ডালে ইংল্যান্ডের বাহাদুরের এক আহাজ
আমিয়া লিখিয়াছে এবং হিন্দুস্থানের
করণ অনেক তালর তাহাতে আশি
য়াছে ।

সে সময়ে দেশে এমত জনরব হইয়া
ছিল যে বোনাশারের চৌকিতে লিয়ুক
ইংল্যান্ডীয় সেনাপতির সহিত বোনাশা
দের অত্যন্ত প্রতি হইয়াছে । এই যেতুক
সেই সেনাপতিতে তাহার সকল সৈন্য
সময়ে শত্রু ইংল্যান্ড পাঠান ঘাইবেক ।

বাজী ।

চাঙ্গি পাঁচ মাস হইল ইংল্যান্ড দেশে
একটা আট শত টাকার বাজী হইয়াছিল
সে বাজী এই এক গাভীতে দুই ঘোড়া
যুক্তিবেক কিন্তু এক ঘোড়ার পক্ষতে আর
এক ঘোড়া যুক্তিবেক পাশাপাশি যুক্তি
বেক না । এই বণ ঘোড়া গাভীতে যুক্তিয়া

এক ঘাড়ের মধ্যে ছয় কোণ যে ঘাইতে পা
রিতেক সে আট শত টাকা পাইবেক ।
এই বাজীতে এক সাহাব অগ্নি হইয়াছে যে
হেতুক সে এক মিলিটার এক গোয়া বাজী
থাকিতে ওয়দাশ হানে লিখিয়াছিল ।

রাজকর্ম নিয়োগ ।

১ জুলাই খ্রীষ্টাব্দে হরলিও জে ওরকান্দ
সাহাব কলিকাতার কোর্ট আশানের রে
জেকর হইয়াছেন ।

খ্রীষ্টাব্দে হরলিও ওলেন সাহাব মোং ঘোণা
হর জিলায় জেজের পেকার ।

১৬ জুলাই ।

খ্রীষ্টাব্দে এল কেনেই সাহাব মোং বেহা
রের আশীয় বক্তার অধিকার পেকার ।

চুক্তি কারো স্থানের কথা ।

মাত্রান নামে এক নাবিক মৃত লোকের
দিককে বৈতরণী নদী পার করিয়া তাহা
র মজুরি এক দুই পয়সা পায় এই জন
অনেক লোককে পার করে কিন্তু কাল
পরে এক ব্যক্তি অতিশয় স্থান ময়িলে
এ নদীতীরে গেল ও নৌকার পার হইলে
এক পয়সা বায় হইবেক এই ভয়ে আশ
নিম্নীতারিয়া পার হইল । ইহাও
সেখানকার বিচারকর্তার বিচার করিল
যে ইহার কি মাজা ওয়দুক পেছে
তুক এ ব্যক্তি পারের বেতন না দিয়া
পার হইল । তাহার মধ্যে এক জন
বিবেচনা করিয়া কহিল যে ইহাকে পুন
র্বার পুত্রবৎসর পাঠান যাকক এবং ইহার
চিরসংকিত বিন ইহার পুত্রেরা কিম্বা
বায় করিতেকে এ ব্যক্তি আশান চকুতে
বেতুক ।

এই সমাচার দপণ পুরানসারের হাস্যখানারে পুস্তিকাভে পরিবার হাস্য হয় । বাহার লভের আশা কর হয় তিনি পুরানসারের হাস্যখানারে
আশান নাম পাঠাইলে লভায়ে কামর তাহার নিকটে পাঠান ঘাইবেক তাহার দুল্য মানে এক টাকা । যিনি বাস্তব করিয়াছেন যদি তাহার নিকটে

সমাচার দর্পণ

৬৪ ফাং-লি

अनिर्वाहः ।

१ आगिन्नु मन ४८४२ ।

୧୪ ଜାଣିବି ମନ ୪୧୧୬ ।

দ্বর্পনে যথা মোদ্রার্থ্যিব কাৰ্য্যবিচক্ষণাঃ । বৃত্তান্তানিহ জানন্তু সমাচারমা দ্বর্পনে ॥

হে'স্থানিৰ কাগজ।

কেন্নানির শতকরা জয় টাকার মুদ্রের
কাগজ কয় করিতে হইলে শতকরা দশ
অনা ভিক্রয়কোষ্ঠ। বিকয় করিতে হইলে
শতকরা চৌদ্দ অনা ভিক্রয়কোষ্ঠ।

ମହାତ୍ମାଙ୍କ ପତ୍ନିକା :

| | | | | |
|----|-----|--------|----|------|
| ୧ | ଆମେ | ଅଧିକାର | ୧୫ | ଅଧିକ |
| ୨ | ଏ | ଅଧିକାର | ୧୫ | ଏ |
| ୩ | ଏ | ଲୋକାଳ | ୧୫ | ଏ |
| ୪ | ଏ | ଅଧିକାର | ୧୫ | ଏ |
| ୫ | ଏ | ଅଧିକାର | ୧୫ | ଏ |
| ୬ | ଏ | ଅଧିକାର | ୧୫ | ଏ |
| ୭ | ଏ | ଅଧିକାର | ୧୫ | ଏ |
| ୮ | ଏ | ଅଧିକାର | ୧୫ | ଏ |
| ୯ | ଏ | ଅଧିକାର | ୧୫ | ଏ |
| ୧୦ | ଏ | ଅଧିକାର | ୧୫ | ଏ |

ଭୟା ବିକ୍ରେୟର ଇଚ୍ଛାହାର ।

আলমগীরের অসীম সান্নিধ্য জেলাবার হোতা ও হুগলি
 মকল সান্নিধ্য শীতের ভণীশন লরকারেহুগলি আদার ভণীশন
 হোতাইলম লেখুগীর হুগলিআদার শূণ্য আদার শিখার হি
 মর হুগলি জমা ও জমীনের ইকায়ত হোতাইলম লেখু
 গীর হুগলিআদার আলম জেলাবার আলমজি কায়ারিত
 আলম হুগলি।

ଜରୁରୀରେ ଯାକୀ ଆହାର କର ।

विकास ७ परिवार ७ मन्त्रीय गृहविभाग जन १७१० २७
आगत है जन १२२७ ११ आनु बा. बोधिविभाग मन्त्रीय
वर्ग मन्त्रीय।

বেদিনিলুং দুয়েতিবার ১৯ আরম্ভ সন ১৮১৯ ইং ৪ তাদু
সন ১১১৯ বাং বোধিবিসদ লেকটাইরি হস্তরখানিবা।

मिन्हा वरप्रतिष्ठ २५ जुलाई जन १८१२ ई० १४ प्रव
सन् १८१२ वा० (आदिप्रवर्ग मांकोदि प्रवर्गमांकोदि ।

ইতিভারিখ ২০ জমাই মন মন ১৮১৯ বোদ্ধিবলর হুতবে ।

সমাচার দর্পণ ।

ଅନ୍ୟତ୍ର !

গত বুধবারে মোঃ হুসাইন সাহেব

પુત્ર િર્જાર મમ્મય નીતિત હરેગ્ગા આનં
 વદર િર્જારિલેન હાહાત મલન લોન
 હરિગ્ગા હરેગ્ગા િર્જાર મમ્મગ્ગા હરેતે
 હરિગ્ગા હરેતે નિરુદ્ધરેતે િર્જાર શાશ
 ગમ્મગ્ગા આનં દશ નેમ્મગ્ગા આનં
 મમ્મગ્ગા આનં યે હરિગ્ગા મમ્મ હરેગ્ગા
 હરેતે રમિગ્ગાગ્ગા દશ દુરે વદર િર્જાર
 હરેતે ગમ્મગ્ગા હરેતે હરેગ્ગા િર્જાર યે
 િર્જાર િર્જાર યેમ્મગ્ગાગ્ગા હરેતે
 આનંમ્મગ્ગાગ્ગા

नागिचंद्र ।

যে-নাগপুরহইতেও তুলাই ডরি
 ষের পত্র আনিয়াছে তাহাতে জানা গেল
 যে সেখানে অতিশয় দুর্ভিক্ষ হইয়াছে
 ও দুর্গতি লোকেরদের ওয়াস মঙ্গতি হও
 য়া ভাবি হইয়াছে। পুর্বে যে দুবা নীচ ঠা
 কাতে পাওয়া যাইত সে দুহুরে মোগা এখন
 ন ত্রিশ তাঁহা হইয়াছে কিন্তু সেখানে
 রাজা অনেক দুর্ভিক্ষ লোকেরদিগকে ওণ
 মুদ্র বেতন দি। মরকারি অনেক কৰ্ম
 করাইতেছে ইহাতে অনেকের শুল্ল রক্ষা
 হইতেছে। আর সেখানে এতদুর্ভিক্ষ
 যে কৃষকেরা বীনাঘির বাঁজ মণ্ডাই ক
 রিয়া ক্ষেতে বুলিতে পারে নাই ইহাতে অ
 নুমান হইবে যে আগামি বৎসরে দুর্ভিক্ষ
 হইবে পারে।

কৃষ্ণদেবের চিহ্নমাণয় ।

কুষ্ঠিলোকেরদের বিনা মূল্যে চিকিৎসার কারণে এক চিকিৎসালয় প্ৰস্তুত হইবে তদ্ব্যতীত অপর কালীশঙ্কর ঘোষাল

নাও হাজার টাকা দিয়েছেন ইহা আমরা
গত বৎসরে জানাইয়াছিল। সমুদ্র এই
বৎসরে সেই কর্মে বিশ্রাম হাজার
টাকা সমুদ্র হইয়াছে এবং দুই দিন শত
কৃষ্ণ লোকেরদের যুদ্ধ বাস করবার
কারণ দুই দিন শত কৃষ্ণ পুণ্ড্র করি
বার উদ্যোগ হইতেছে।

হালেজের ইস্তাহায়!

শীতকালে শরীরটিতে পুষ্ট যোগ
কলিকাতার কলেজের ইন্ডাস্ট্রি গার্ল
সেখানেই হয় নাই কিন্তু আগামী সো
যেখানেই হইবেক।

নৌকাডুবি।

যোশি কানপুর হইতে এক পাটলি নৌ
কা যোশি কানকাড। আমিভেজিল তাহা
তে মিষ্টিহরদের হাওয়ানবার দুই জন ও
তাহারদের পরজন ছিল ৭ত দুইবারের
রাতে মকল নিমুণীত ছিল শেষ রাতে
ই নৌকার তলায় থাকিলে দুইখান ডাকা
কি পুকারে অধিয়া নৌকাতে জন ওঠিলে
নাগিল পরে অর্দ্ধেক নৌকা জন ওঠিলে
তাহারদের মধ্যে এক জন আঁগিয়া মক
লকে আঁগিহিতে নাগিল কিন্তু আয়ুধশেষ
সমুদ্র তাহারদের কাল নিমুণীত হইল
না। পরে এক জন হাওয়ানবার ওঠিয়া দেখি
ল যে নৌকা দুইয় ভরা। তাহাতে সে এক
সিন্দকে আঁগনার ডোর শত টোকা ছিল
ডাকা ওঠিহিতে আঁগনার নিকটে রাখিল
ও মকলকে আঁগিহিতে মকল ওঠিল

সমাচার দর্পণ।

তাহারা সকল ঐতিহাসিক লোক তৎ-
ক্ষণে জ্বলিল। তাহাতে হাওদার পু-
ষ্টি চন্দ্রদার মণ জন ও বাঁতা তিন জন
মারিল আর সকল বাঁতা ও মাঝা মাঝা
গিয়া পলিল।

ঐযুত রুজি-সিংহ বাহাদুর।

কতক দিন হইল যোঁ দিল্লী শহরে
অনরর হইয়াছে যে ঐযুত রুজি-সিংহ
কাশ্মীর অরু করিয়াছেন তাহাতে তা-
হার অনেক সরদার ও সৈন্যের অনেক
ভাগি মারা পড়িয়াছে কিন্তু এই জন
রাব্র এমনতর বুদ্ধা যায় না যে তিনি কাশ্মীর
পুত্র করিয়াছেন এ যুদ্ধে তাঁহার অরু
হইয়াছে যেহেতু যদি তাঁহার অরু হইত
তবে তাঁহার এত সৈন্য মারা পড়িত না।

কাশ্মীরের অধির মহম্মদ আলি এখন
পেশোয়ার শহর আসিয়াছেন সেখানে
আছে। এবং পেশোয়ার সিংহাসনে
শাহজাদাকে বসাইবার কারণ পেশোয়ার
শহর শাহমহম্মদ হাওদাইতে আসিল
অধীন করিয়াছে তাহার ইচ্ছা এই যে
শাহজাদাকে পেশোয়ার শহরের সিংহা-
সনে বসাইয়া আসিল তাহার ক্রিষ্ণ-
ভাগি লয়। ইহাতে শাহজাদা ক্রুদ্ধ
হইয়া পেশোয়ারহইতে গিয়া যাবরি
নামে এক জায়গারের নিকট মিলিয়া
ছেন। এবং সৈন্য পুস্তক করিতেছেন
যে ই মহম্মদ আলি হইতে পেশোয়ার শহর আ-
গিল অধিকার করেন।

অনাবৃতি।

জিলা কুলগার ও জিলা ঘণেশ্বর ও
জিলা বঙ্গাল পুস্তক দেশ হইতে ময়া
ভার আসিয়াছে যে এই পুস্তকে শস্যে

পয়ত বৃষ্টি অম্মাণি হয় নাই ইহাতে
শস্যাদির বড় ক্ষতি হইয়াছে কোন দা-
নে অর্জক ক্ষতি কোন স্থানে শিকী হানি
হইয়াছে দুই চারি দিনের মধ্যে বৃষ্টি
হইলেও অনেক রক্ষা হয়।

রাজকর্ম নিয়োগ।

ঐযুত কাপ্তান কালি-সাহেব আ-
ব্রহ্মাবাদে ইংল্যান্ডেরদের ওকাল।
ঐযুত এ এগারি সাহেব যোঁ বেহা-
রের আধিবাস্তুর অধিকার বিচার
পেছার।

ঐযুত ওলামা নিউরি সাহেব যোঁ
ঘণেশ্বর জিলার কালেক্টরের পেছার।

ঐযুত কাপ্তান আরবিন সাহেব
হেডিম সাহেবকর্তৃক দাপিত ময়র
মার অর্থাৎ পারসী ও আরবী পাঠশা-
লার সেক্টারি হইয়াছেন।

৪ আশুত তরিতে ইংল্যান্ডের বাহাদুর
হের দক্ষলেশ নামে অহাজ ইংল্যান্ড
ইতে পঁথকিয়াছে তাহাতে ইংল্যান্ডহই-
তে পাঁচ হাজার নৈচ পত্র এতদে-
শায় ইংল্যান্ডেরদের কারণ আসিয়াছে
সে সকল পত্র গণনাচারহইতে দুই লো-
কাহার যোঁ কলিকাতাতে পঁথকিয়াছে।

নীল।

হিন্দুদের কোন পুত্রহইতে ময়া
ভার আসিয়াছে যে লীলার ফসন আতি
মন্দ হইয়াছে। কিন্তু অগা পুত্রহইতে
ময়াভার আসিয়াছে যে সে অতিসুন্দর
হইয়াছে যেমন পুত্র বৎসরে সর্বত্র মন্দ
হইয়াছিল এ বৎসর সেমন লছে।

মুন।

গাও সন্তাইহে মোকাম ময়ানভার
পক্ষিম দিকের গাওর নিকটে জুগিপুর
নামে এক স্থান এক ঘর গোমালার গুচ্ছ
আছে তাহার স্বীয় সহিত তাহার দুই
পুত্রবধূর মধ্যে ছোট পুত্রবধূর সন্ততি
নাই সহীদা বিরোধি বিসম্বাদ হইয়া থা-
কে। এক দিবস ই ছোট বধূ এক ঘড়া
অল আসিয়া রোমাকে রাখিল পরে ই
বাস ই শিতলের ঘড়া নীচে পড়িল তাহা
তে ঘড়ার এক হাতেন ক্রিষ্ণ চৌল গেল।
তাহার শাস্তকাই ইহা দেখিয়া অতিক্রান্ত
লিডা হইয়া এক লোকা জেলিয়া মারিল।
তাহার আমুক্শন সহকারে তাহাওই
তাহার শ্রুণভাগ হইল। ইহাতে
শাস্তকা ও তাহার আশু পুত্রবধূ এই
দুই জন ই মৃত বধূকে চারের ওপরে তুলিয়া
রাখিল। পরে রাশি কাল ই মৃত
শরীর লইয়া একটা কলসী তাহার গলয়
বাছিয়া বাটার নিকট এক পুষ্করীতে
জেলিয়া দিল কিন্তু কলস হাল পরে
ই মৃত শরীর কলসী সময়ে ভাসিয়া
ওঠিল। পুনরুই ই দুই জন গিয়া ই
পর তুলিয়া বাটীতে আসিয়া ওপরে
করিল যে আমায়দে ছোট বধূ সর্প
ঘাত হইয়ছে। এই কথা কহিয়া আশ-
নারদের গলবদ্ধ দুই চারি জনকে ডাতিয়া
দ্রিখা ছাড়াইল পরে তাহার সকল
গণাভীরে শব লইয়া দাঁহ করিয়া আসিল
ঘরে আইল। পরে সেই পাড়ার এক জন
গোয়দা হইয়া অমায়দার সাহেবের নিকটে
আও করিল। সাহেব আও হইবামাত্র
চাপভাসি পাঠাইলেন ও সে স্থানের দায়র
গার ওপরে খোদাশা শকুয় ছিলেন যে
সকলকে গেরেজি করিয়া সময়ে দাপিল
করে। তাহাতে ই দুজনের সকল পরি

.....

মকল এতদ্দেশে ব্যয় হইয়াছে আঁহাও
পাঠাইবার কারণ তুলা অম্যানি থরিহ
হয় নাই। এই হেতুহ তুলার মূল্য কি
ক্ষিৎ অল হইয়াছে।

ই-গ্লাউ টেক্স আদায়ের মরত।
ই-গ্লাউ দেশে ঘাহারা টেক্স আদায়
করে তাহারদের মরদার অবধি ছোট
পর্যন্ত তাহারদের দস্তায়াঁ ও বাজে
মরত পতিবৎসর নয় শত লক্ষ টাকা।

সমুদ্র ইং-গ্লুইহইতে যোঁ- জীৱায়
পূৰে এক মহাবল আনিয়াছে সে কল
হোল আনিৱ শুণ্যে যোঁৱ এই যশ আ
ন্য এক কল লক্ষ্যনোয়ুৰে নবাব সাহেব
ইং-গ্লুইহইতে লক্ষ টকা ব্যৱহাৰায়
আনিয়াছেলি কিন্তু অধ্যাপি তাহাতে কোন
কৰ্ম্য হয় নাই। এৰা ই নবাব সাহেব
আপনাৱ ৰাজবাণী লংৱেণ্ডী গৌমতী
নদীতে এক সীকা বহিৰাৱ কাণে ইং-গ্লু
ইহইতে এক লোহময় মহাসীকা আনি
ইয়াছেলি তাহা অধ্যাপি গৌমতীতে লু
কৰেদে নাই।

৪ আশ্বিন তারিখে মোঃ কলিকাতার
ঘাটে এক শত সাতাইশ আহাজ ছিল
তাঁহার মধ্যে আমেরিকীয় আট। মর
শিমের পাঁচ ও পোয়ুগানেরদের এক ও
দিনামারেরদের দুই এবং ইংল্যান্ডের
দের এক শত এগার।

যদিও দেশেই হইতে যোগ্য কলিকাতায়
যত জ্ঞান আশ্রয়ানি হইয়াছিল সে

নেপালের মহিষ্ঠ মুখকালে আন্দোলন
দেশ ও কামাণ্ড দেশ ই-গুণীয়েরা অধি
কার করিয়াছিলেন সে দুই দেশ হিম
ালয় পর্বতের ওপর পুর্নদিকে ও বাঁশবন্ধে
লির ওপর সে দেশ অতিসমৃদ্ধ্য ও পর্ব
তময় সে দেশ বেথিয়া ই-গুণীয়েরা আ
কর্ষণবোধ করেন। পঠিত বৎসর দুই
ল নেপালকার ব্রাহ্মণেরা নেপালের রা
জাকে তাকিলেন তাহাতে নেপালিগণিত
সে দুই দেশ অধিকার করিলেন এবং
ই ব্রাহ্মণেরদিগকে আয়গীরপুজিত
দিলেন। এবং সেই দুই দেশ নান
পরিণামাচার বিতক করিয়া এক পর
ণার ওপর দুই জন অধীশ নিযুক্ত করি
লেন তাহারদের স-ক্সী কামান্দ
হারা আপন পরগণার ওপর কামান্দ
স্বতঃস্ফূর্ত করিতে লাগিল ও সাল

নামানুনার বাহ্যিক করিতে লাগিল
তাহাতে রাজ্যের রাজস্ববৃদ্ধি যথেষ্ট
যাহা ওপস্থিত হয় তাহা রাজা ই. কামরায়
নেত্রদেহে ওপরে তুলন করিতে লাগিল
লেন তাহার। তাহার মরবাহি করিতে লাগিল
লাগিল ও মনুষ্যের জ্ঞানের কর্ম
কালেতদেহে কর্ম আশ্রিত্যই করিতে লাগিল
কামরায়। তাহার লোকেরদের সেখানকার
মন্ত পুকার বৌদ্ধা তাহা করিল মণ্ডল
লোক অভিযম্য ভীত। ই. কামরায়েরা যথেষ্ট

ਸਿੰ.ਹੀਯ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

সমাচার দর্পণ ।

দৌরাঙ্গা করিত তাহা পুজা লোক অগা
তা সহ্যতা করিত এবং পুজার যদি
একটাকা রোজগীর করিত তাহার বার
আনা তাহার লইত।

ঐ দুই পুদেশে তাঁদের আঁকের আছে
 সে আঁকেরের জমা আছে সেখানকার
 এক বানিক পুতিবৎসর ঐ আঁকের হাতার
 বার শত টাকায় জমা করিয়া লয়। সে
 আঁকের অতি ক্ষুদ্র ও সেখানকার তাঁয়
 আতিমদ এতৎ তাঁয় আঁকেরহইতে
 ঐহাওয়া তখনি অগ্নির দ্বারা পরিষ্কৃত করি
 য়া গয়ন। করে এবং এক আনায়া তিন প
 য়সা বিহয় করে। যখন সে দেশে সে
 পালের অধিকারেছিল তখন পুজারদের
 গুণের যে রাজপীড়া হইত তৎপুরুত তা
 হারা ভক্তিভিন্ন ছিল এমন ক্রমে তাহা
 রদের হস্তি হইতেছে। পুত্র পুজারা য
 খন খাজানা দিতে না পারিত তখন রাজ
 কায় লোকেরা ঐ খাজানার বদলে পুজার
 দের জী কিয়া পুণ লইয়া হাটে বিকয় ক
 রিত। তাহাতে তাহারাই এই কণ বার করি
 য়াছিল যে পাঁচ অবধি দশ টাকা পর্যন্ত জী
 ও বানকান্দার দাম পাইবেক। যদি
 পিতৃপুত্রিত ঐ হার মত টাকা দিয়া বান
 কছিলহইতে না পারিত তবে এক শত কিয়া
 দের শত জী ও বানক একত্র জমা করিয়া
 গোমেষাদির মত হাটে লইয়া বাহিত।
 এইকণ পুজারা জী পুণ হার হইয়া শে
 বের আপনারা দেশান্তরে লমাইয়া পুন
 রবার্ত্ত করিত।

বুজ্জা দেশের ব্যবহার

বুজ্জা দেশের বাদশাহের নিকটে কা

হাতো দাঁড়াইবার থকুয়া নাহি নকলই
আপনত ইট্টী গাতিয়া এ নমুয়াকর এ ক
ডাঙলি হইয়া বাদশাহের সম্মুখে থাকে
যদি কোন ব্যক্তি দাঁড়াইয়া থাকে এ অক
স্মানে বাদশাহই সেখানে আইসেন তব
মে ব্যক্তি পশ্চর মত ই কন ইট্টী গাতিত ।
এবং সেখানে কেহ জাড়া বিরহিতে পারে
না। যেহেতু বাদশাহ ঘাংহাকে তুলু হই
য়া থোভার নেন সে জন সে থোভারের
নহিত জাড়া পাঁয় থোভা'র চিহ্ন জাড়া
থোভার বিনা জাড়া বিরহিতে পারে না যদি
কোন লোক সূর্য্যোতপে দরুত হইয়া মরে
তখনি সে জাড়া হাখাতে দি:ত পারে
না। মে দেশের অত্যাচারীত এই যে
কোন লোক মদ্রিহা'পান করে না যদি কেহ
মদ্রিহা'পান করে ও তাহা সন্মুখান হয়
তবে বাদশাহ ত-ফ্রান্স তাহার গুণান দণ্ড
করেন। এবং বাদশাহ'র ন স্মানকারে
মদ্রিহা নাখোদারন করিলেও তাহার পা
সন করা যায়।

ইতিহাস ।

সমল লোকের মতো এমন কথা চলে
যে টাকা টাকাকে আকর্ষণ করে ইহার
অভিযাত্র এই যে টাকার হারা টাকা বৃদ্ধি
পায়। এ কথাই পুঙ্খ অভিযাত্র নাম দিয়ে
এক ব্যক্তি মুন্সে এলটো টাকা লইয়া এক
বনিকের দোকানে গেল এবং সেখানে
রাশীকৃত অনেক টাকা দেখিয়া তাহার
মধ্যে আশ্রয় পাওয়া যায়।
পরে সেখানেই বনিক আশ্রয় টাকা
কতি দোকানদার সিদ্ধান্ত করে বন্ধ
করিয়া বাটো টে পাইতে প্রয়াস করিতে

নাগিল। তখন ই ব্যক্তি আশ্রিয়া সহি
ল আয়ার টোকা ডোয়ার টোকার মাঝে
ফেলিয়াছিল সে টোকা আয়ারে যেও। ব
নিক তিখানা করিল যে কি নিমিত্তে আ
মার টোকাতে তুমি আনল টোকা ফেলিলা।
মে গুপ্ত করিল যে টোকা টোকাঙ্ক আ
কর্ষণ করে এমন কথা আরো শুভ্রক আ
মার টোকার দ্বারা ডোয়ার টোকা জাহ
ঘন করিবার কারণ ফেলিয়াছিল। ব
নিক করিল যে তুমি যেহেতু কহিলা যে
টোকা টোকাঙ্ক আকর্ষণ করে সেই হেতু
ইহল আয়ার আনক টোকাতে ডোয়ার
এক টোকা আকর্ষণ করিয়াছে তুমি কেন
মে টোকা নাহি। এই গুপ্ত ই ব্যক্তি
অপুত্ত্ব ইহল।

এ কণা আরো এক কণা আছে যে যে
পথ দিয়া জল চলে সে পথ অবশ্য ভিত্তি
হয় অতএব ঘাঁহার হস্ত দিয়া টোকা
গম্যগামিন হয়ে তাঁহার হস্তে অবশ্য
টোকার নাল্লক থাকে।

मञ्जरा :

মহারাজ বিস্ময়ান্বিতের নিকটে এক জন ময়ূর ছিল সে ময়ূরী নানা কোমল কাঁদিয়ে রাজাকে পরিতুষ্ট রাখিত। এক দিন এ ময়ূরকে জন্য কোন লোক মূল নিকটে রাখিল। তাহাতে এ ময়ূর রাজার নিকটে নাগিল করিল যে মহা রাজ অমূল্য লোক আমাকে মূল করিতে চাহে। তাহা শুনিয়া রাজা কহিলেন নৈ যদি তোমাকে মূল করে তবে তাহার এক দণ্ডের তাহাকে দাঁসি দিবে। তাহা শুনে ঐ ময়ূর উত্তর করিল যে মহারাজ এক দণ্ড পণ্য দাঁসি দিলে ভালো হয়।

এই সমস্যার দৃশ্য শ্রীমঙ্গলপুরে হাঙ্গাখানাতো পুতিসগ্ৰাহে পনিবারে হাঙ্গা হয়। যাহার মণ্ডনের আবশ্যক হয় তিনি শ্রীমঙ্গলপুরে হাঙ্গাখানাতো আপন নাম পাঠাইলে সত্তাহেৎ কাগজ তাহার নিকটে পাঠান হইবেক তাহার মূল্যঃ মাসেঃ এক টাকা। যিনি স্বাম্বের কলিগ্রাহে যথি তাহার নিকটে সমস্যার দৃশ্য নীচের অনুঃ তিনি শ্রীমঙ্গলপুরে হাঙ্গাখানাতো সমস্যার বিবরণ লিখিত নিকটে পাঠান হইবেক।

সম্মাচার দর্পণ

৩৫ সংখ্যা

শনিবার। ৪৪ আগস্ট মন ১৮৯১। ৩৪ শ্রাবণ মন ১৯১৩।

দর্পণে মুখ্য নোদুর্ঘাটমিব কার্যবিবরণ্যকীর্ণ। সম্মাচারিহ আনন্দ সম্মাচারমা দর্পণে॥

কোম্পানির কাণ্ড।

কোম্পানির শতকরা জয় টাকার সুদের কাণ্ড কয় করিতে হইলে শতকরা দশ অলা ভিত্তিকোণ। বিস্ময় করিতে হইলে শতকরা চৌদ্দ অলা ভিত্তিকোণ।

সম্মাচার পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|-------|-------------|----|-----------|
| ১৪ | আগস্ট | শনিবার | ৩১ | শ্রাবণ |
| ১৫ | এ | রবিবার | ৩২ | সংক্রান্ত |
| ১৬ | এ | সোমবার | ১ | ভাদ্র |
| ১৭ | এ | মঙ্গলবার | ২ | এ |
| ১৮ | এ | বুধবার | ৩ | এ |
| ১৯ | এ | বৃহস্পতিবার | ৪ | এ |
| ২০ | এ | শনিবার | ৫ | এ |

জমী বিক্রয়ের ইস্তাহার।

আজ্ঞে লোকের জমী লামিন জেলাচার রোড ও চারিদিক লোকের নীচের জমী লরকারের বাকি জমীর জমী মোটবিশেষ লোকের বহরজার পুস্তক 'খালি নিলামে বিক্রয় হইবেক অর্থাৎ জমীর ইকবীর মোটবিশেষ লোকের বহরজার পুস্তক জমীর জেলাচার জমীর লরকারের জমীর মোটবিশেষ লোকের বহরজার পুস্তক

মোটবিশেষ লোকের বহরজার পুস্তক ১৮৯১ ৯ সেপ্টেম্বর ইং ১৯১৩ ১৬ জুলাই।
বাকি জমীর মোটবিশেষ লোকের বহরজার পুস্তক ১৮৯১ ইং ১৬ জুলাই ১৯১৩ ২০।
বাকি জমীর মোটবিশেষ লোকের বহরজার পুস্তক ১৮৯১ ইং ১৬ জুলাই ১৯১৩ ২০।

কলকাতাসমিতির ইস্তাহার।

সম্মাচার দেওয়া যাইতেছে যে যে অঙ্গপুস্তক পূর্বে কলকাতা সমিতির দ্বারা জমা হইয়াছিল ঐ অঙ্গপুস্তক আবার লিখিত অঙ্গ আর্থার সমিতি আর্থিক করি জমা হইয়াছে ও শিখের দিগের

ওপকারার্থে তাহার বিক্রি পুস্তক বিক্রয় করা যাইবেক যে কোন লোকের লইবার আবশ্যক থাকে তবে সে কলিকাতার বিখ্যাত লোকের দ্বারা ১০০ নম্বরের বাটীতে আসিয়া এই ফল কয় করিতে হইবেক কেবল আট অলা মূল্যে পাইবেক কিছু কাল গৌণে ঐ পুস্তকের মূল্য অধিক হইবেক। ইহারপর শুনিয়াছি যে কয়েক জন লোকের লইবার দ্বারা যে সকল কেতাও জমা হইবেক সেই সকল কেতাও ঐ পুস্তক মূল্যে সেই মূল্যেই পাইবেক যে ওক কলিকাতা কলকাতাসমিতির সমিতি মিলিত আছে তাহারদের কয় করিবার পুণ্যজান নাই কেননা তাহার বিলম্বিত পাইবেক হইবে। মন ৪৮৯১ মাস।

সম্মাচার দর্পণ।

নোট দুই।

কমরমাল বাকির আর্থারী প্রদত্ত বাবু সুরেন্দ্রনাথ ঠাকুরের উন্নয়ন শোভা রের এক জন মোট বহরজারের বাকি বাকি আডি প্রবিশ্রাস্যলক্ষী মন ৪৮৯১ মাস ৯ আগস্ট সোমবার এক লক্ষ টাকার কমরমাল বাকিনোট দশ কেতা ব্রেক্রিয়েতে বদল করিয়া বাকিনোট নোট আলিতে গিয়াছিল। এবং অলা এক নাহেবের দ্বারা মতর শত লক্ষ টাকা পাওনা ছিল গমন কালে ঐ টাকার রোক এক হাজার চল্লিশ ও মাত শত কুড়ী টাকার কমরমাল বাকিনোট লইয়া রোক হাজার টাকার এক তৃতীয়া মুটের

মাথায় থিয়া ব্রেক্রিয়ে বার গোল মুটের দ্বারা হাজার টাকা নীচে রাখিয়া নোট বদল করিতে আপনি ওপরে গেল। পরে ঐ সকল কমরমালবাকি নোট বদল করিয়া বাকিনোট লইয়া অলা দ্বারা থিয়া পলাইল। মুটের দ্বারা সে হাজার টাকা রাখিল। পরে তাহার বিনম্ব হওয়াতে বাবুর উন্নয়ন লোক আসিয়া ঐ বিলম্বিত লোকের অনুমোদন করিতে লাগিল। তাহার অনুমোদন না পাইয়া ব্রেক্রিয়ে নাহেবেরদের লিখিত জিজ্ঞাসা করিলে তাহার কহিলেন যে এক লক্ষ টাকার কমরমাল বাকি নোট দ্বারা বাকি লোক নোট লইয়া গিয়াছে। ইহা শুনিয়া নীচে ঐ মুটের জিজ্ঞাসা করিলে সে কহিল যে আমি প্রায় দুই ডিন ঘণ্টা এখানে আছি তিনি যে নোট বদলিতে ওপরে গেলেন তাহার পর তাহার সাক্ষাৎ হয় নাই। পরে ঐ বাকি রোক হাজার টাকা লইয়া আসিয়া এক লক্ষ বাবু ওক বাবুকে কহিল। বাবু তাহাকে বাকি বার কারণ অনেক জেগ করিতেছেন। এবং সর্বত্র সম্মাচার দিয়াছেন যে ঐ বাকি যে ইরিয়া দিতে পাঠিয়ে সে হাজার টাকা বাকি পাইবেক। তাহার চেহারা এই তাহার বয়সকম অনুমান বত্রিশ বৎসর ও শরীর বর্ণ ও মুখে দুই একটী বসন্তের দাগ আছে ও গৌণ আছে ও মাথা টাকপতা।

সুখিকর।

৪৯ জুন তারিখে যে সুখিকর এখানে

সমাচার দর্পণ।

হইয়াছিল তাহার বিষয়ে ওয়ারট ও কল্ল
বেশইহাতে সমাচার আশিয়াছে যে ঐ
কৃষিক্ষেত্রে মোঃ আঞ্জার শহরের এক
শত জেথু লোক মূল হইয়াছে ও তিন
শত বিশ লোক আখাঁজী হইয়াছে সে
শহরে চারি হাজার পাঁচ শত ঘর জিল
তাহার মধ্যে পোনের শত ঘর একেবারে
ওড়িয়া হইয়াছে। আর এক হাজার
ঘর পড়িয়াছে আর দুই হাজার ঘর যে
অবশিষ্ট আছে তাহার মধ্যে পূণ্য লোক
থাকিতে পারে না। সেখানে যে কিল্লা
আছে তাহার তিন ভাগের এক ভাগ
নষ্ট হইয়াছে যে অবশিষ্ট আছে তাহাও
এই বর্ষতে থাকিবেক না।

কুড়ার।

এই বৎসর গরিতে বলার পূর্বাভাস
অল্প কিছু কুড়ারের পূর্বাভাস অতিশয়
১৬ শ্রাবণ ৯ আশ্বিন মোমবার প্রভৃতি
কালে সাত বর্ষার সময়ে মোঃ অরো
মস্তুরের ঘাটে একটা বহু কুড়ার এক
জন লোককে ধরিয়া তাহার অঙ্গ
গুণ্ডন করিয়া ঘাটের নিচুতে ওড়িয়াছিল।
তাহা দেখিয়া অনেক লোক কোলাহল
করিল তাহাতে সেখানহইতে পলাইল
পর সমাচার পাওয়া গেল যে অন্য
ঘাটেতেও ঐ রূপ আশন পরাম্ভ মুকাশ
করিয়াছিল। তাহাতে অনুমান হয় যে
কুড়ার ঐ বৃত্ত মানসকে আহার করিতে
জারে ওড়িতে চেষ্টা করিতেছিল যেহেতু
কুড়ার আসে আহার করিতে পারে না।

জৌনপুর।

পশ্চিম দেশে মোঃ জৌনপুরে জনা
বৃষ্টিপূরক সময় দূর্ভিক্ষ হইয়াছে যে
দুখী লোকেরা আশান পূর্ণ বিষয় করি
তেছে তাহার মূল্য আট আনা অর্থাৎ

আট টাকা পর্যন্ত। ইহাতে তাহার বিস্ময়
করে তাহারদের মূল্য লাভে ওপকার
বোধি অল্প কিছু পুণ্যদি বিষয় করিলে
তাহার দূর্ভিক্ষ সময়ে যে রক্ষা পায়
এই অধিক লাভ। সে দেশে ঐ বৎসর
দূর্ভিক্ষ পূরক মধ্য টুটি তাহাতি হই
তেছে যদি সময় দূর্ভিক্ষ থাকে তবে চোর
ও তাহাতি বৃদ্ধি অতিশয় হইবেক।

ঐযুত রনজিৎ-সিংহ।

পশ্চিম দেশের সমাচার শুনা গেল
যে কতক দিল হইল সেখানে এক শহরে
কতক গুলি মোগল নানাপ্রকারে বিকৃত
হইয়া আইল এবং সেখানকার সাহেব
লোকেরদিগকে কহিল যে আমরা ঐঐযুত
ও ত সাহেবের নিচুতে নাগিল করিতে
কলিকাতাতে গাইতেছি যে ঐযুত রন
জিৎ-সিংহের সৈন্যেরা আশিয়া আমাদের
ঘরঘর পুজি লুট করিয়া আমাদের
যে আটটার হাজার লোক মূল করিয়া
যে তাহার মধ্যে অধিক স্ত্রী লোক।
ইহা শুনিয়া ঐ সাহেবেরা তাহারদিগকে
বন্দ ও আহাতিদি দিয়া অনেক দিলেন
তাহাতে তাহারদের অতিশয় মূগ বোধি
হইল।

গরারতে কড়।

হসিংগাঁবাব ও জবলপুর এই দুয়ের
মধ্যবর্তী শহর গরারা সেখানে ১৮ টু
লাই তারিখে সময় কড় হইয়াছিল যে
কেহ কখনও শুনে নাই। কড় ও জল
ও শিলাবৃষ্টি এককালে অতিশয় হইয়া
ছিল ও হতভাগ হওয়াতে এক জন হাও
লাদার ও এক জন ভিড়িয়ারা শতিল এবং
ইংগরীয়া অনেক সেনাপতি তাখাতী হ
ইয়াছে কিন্তু কেহই মরেন নাই।

হস্তকলমে বই।

আমরা পুস্তক জাপিয়াছিল যে মোঃ
কলিকাতাতে হস্তকলমেদের দৃষ্টতা
পুস্তক কার্যের অনেক হালি হইতেছে।
সংপুতি তাহার আশনারদের অশ্বশন
ও অন্য কাহাখানা সময়ে বই পতি
য়াছে। তাহারদের নিবাস কালী ঘাটের
পূর্বা। এখন অনুসন্ধান করিয়া আনা গিয়া
ছে যে তাহার এই সংকল্প এক কোরা
নির মত হইয়াছিল তাহারদের মধ্যে
জয় জন বখরাবাই ও তাহারদের কর্মেরও
বখরা জিল তাহার তিন জন মিখা
শেট মুখিত আর দুই জন আশাইত
শে জন পোদ্দার সে বাজারে ঐ লোট
বিক্রয় করিত এই সকল কর্ম তাহার
অতিশয় গুরুত্বপূর্ণ সময় করিত যে কেহই
তাহার সম্মান পাইত না তাহারদের
সকল মরগীয়া মৃতিলার নীচে পোতা
ছিল সেখানে এই সকল জিলিন পাওয়া
গেল। কাগজের ওপরে মল্ল করিবার
কারণ এক মোহর এবং পাঁচ শত টাকার
বাগীল বাঁকি লোট করিবার কারণ একটা
পুট এবং পাঁচ শত টাকার হিন্দুদানী
বাঁকি লোট করিবার কারণ এক পুট।
ইহাতে বুঝা যায় যে সেই কোরালাই
তারি কর্ম করিতে বাসনা ছিল। সেই
কর এক জন এখন জেলখানাতে কএ
আছে তাহার তাহারদিগকে এখন বরি
য়াছে সে শোয়াবদিগকে বাঁকিল বাঁকির
অর্থক পাঁচ শত টাকা বখাশী দিয়াছে।

গ্রীন্দী ক্ষমা।

গত বৎসরে ইংগর দেশে এক জন
সিখাধী কোন মদ দিয়া করিয়াছিল ও
পুস্তক তাহাকে গ্রীন্দী দিতে আহ্বানও
থকু হইয়াছিল। পরে অল্প তাহার
গলে গ্রীন্দী দিয়া তাহার শত্রু মরেন হও

সমস্যাচার দর্পণ।

নের জন্যে তাহাকে বহিরা নীচে টোলিল তাহাতে রনী লম্বা হইয়া ঐ ব্যক্তির পা মূতিকাতে লাগিল। পরে অজ্ঞান ঐশ্বরির রূপিতে অধিক জোর লাগানের কারণ শিশু তাহার ঘাটে হুতিল। ঐ ব্যক্তি ঐ অজ্ঞান মুক্ত আপনি গুটিয়া আপন গা লার ঐশ্বরী মালিয়া ছেলিল। পরে সে মালিকার অধিক আর এক গাছ রনী আ নিতে হকুম দিলে সেখানে ওদমিলি যত লোক ছিল তাহার। সকলে পুতিবাদী হইল ও কোলাহল করিয়া কহিল যে ইহাকে ক ছাচ জীন্সি দিবা না। পরে দুই জন স্থান তান তাহাকে পুনর্বার জেলে লইয়া গেল এবং সেখানেইতে সকল সৈন্যের ক হার নিকটে এই বিষয় সমস্যাচার দিল। তিনি কহিলেন যে ঐ ব্যক্তিকে জেলে তা বৎ রাম্য ঘাবে আমি বাদশাহের কর্ম্য ক্রমি বাদশাহের পুত্র পুত্রের নিকটে ন মাচার দি। এবং সেই সময়ে অনেক লোক ঐ ব্যক্তির পুত্র রক্ষার নিমিত্ত বাদ শাহের নিকটে বরখাস্ত করিল। তিনি অনুকূল হইয়া তাহাকে ক্ষমা করিলেন।

চিকিৎসক।

দুই তিন বৎসর হইল ইংল্যান্ড দেশে জ্বর হইয়া মর্যে লোক মরিতেছিল পরে ঐযুত ডক্টর স্মিৎ সাহেব সেই জ্ব রের কারণ এক পুকার নতুন ওষধি প্রস্তুত করিয়াছেন তাহাতে অনেক লোক জ্বর হইতে মুক্ত হইয়াছে তাহাতে ডাক্তার মহানজা ডক্টর হইয়া তাহার পারিতো জিক চল্লিশ হাজার টাকা দিয়াছেন।

বিশ্বনাথ নন্দী।

পুনর্লক্ষ সমস্যাচার পাওয়া গেল যে ঐ গু নিকি বিশ্বনাথ নন্দী মোঃ কলিকাতাহই তে পলাইয়া অনেক স্থান ভ্রমণ করিয়া

কুত্রাপি আশু না পাওয়া মোঃ হুগলি তে এক মোকালে বিশ্রাম করিতেছিলেন। তাঁহার কতিও মুক্তি বিবরণ পূর্বে হুগলির সকল লোক আত হইয়াছিল ও তাঁহার অধীন যে ছিল সেও খবর দিল তৎ প্রযুক্ত ডাক্তার থানাধার আদরপুর্ক তাঁহার দুই হাত এক করিয়া ঐযুত বাবু সূর্যকুমার চাকরের নিকট সমর্পণ করি য়াছে। এখন তাহার শেখ দশা কি হই বে তাহা জানা যায় না হইলেই প্রকাশ হইবেক।

জবি।

পুলিশনির্বাহিনী ঐযুত কাপ্তান স্মিৎ সাহেব অভিযুক্তের হরিহারের এক জবি করিয়া ঐযুতের স্বীর নিকটে পা ঠাইয়াছেন। যখন ঐযুত হরিহার মোকামে ছিলেন তৎকালে হরিহারের জবি। তাহাতে এক দিগে গাফি বহিতে জেন তাহাতে নানা দেশীয় মানিক লোক স্থান দানাদি করিতেছে। এবং আর এক দিগে অভিযুক্তের বায়ুর শী কার হইতেছে। এবং অন্য দিকে ঐযুত বত সাহেব এক বৃহৎ হস্তীর গুপ্তে আরা হন করিয়া আছেন ও তাহার চতুর্দিকে সৈন্য সামন্ত সেনাপতি ও পদাতিক ও আশাবরদার ও জেটাবরদার ও বরসা বরদার ও মাসবরদার ইত্যাদি ও হাতী ও ঘোড়া ও গুট ও বহুলপুত্রি যুদ্ধের জুয। এবং আর এক দিকে উদ্দেশীয় রাণীগণ হস্তীর গুপ্তে আরাহন ক রিয়া আছেন ও চতুর্দিকে আশনা হাতী সময়ে শ্রীশ্রীযুক্ত সেনাধ্যক্ষ করিতে জেন। এইরূপ অভিযোজন জবি স্মিৎ হইয়াছে ঐ জবি মোঃ কলিকাতাতে শ্রীশ্রীযুক্তের ঘর আছেন অনেক ডাক্তার বাল ইংল্যান্ডের। দেখিতে যান।

কাননচৌধুরী।

পূর্বে ঐ দেশে কাননচৌধুরী স্থানিত ছিল মর্যে কতক দিন ঐ দস্তর গুটিয়া ছিল সৎপ্রতি ঐযুত কোল্লি বাই। দুই ঐ দস্তর পুনর্বার স্থানিত করিতে যান না করিয়া শ্রীযুত রবট চান্দলেন না হেবকে সেই কর্ম্য নিযুক্ত করিয়াছিলেন তদর্থে ঐ সাহেব পলিমাইহইতে ঐ দেশে আনিতেছিলেন পথে মোঃ বহরমপুরে তাহার পরলোক প্রাপ্তি হইয়াছে।

সুখি।

সমস্যাচার পাওয়া গেল যে মোঃ মুহ মাগরের পূর্বে ডক্টর অর্কেল অনেক দূর পর্যন্ত গাট মরিলবার আরস্ত হইয়া দুই বায়ের দ্বাশ্রিত্য অভিযুক্ত বৃদ্ধি হইয়াছে ইহাতে সে দেশের আশ্রম ধীনের অ লেক গুপ্তার হইয়াছে কিন্তু পূর্বে অন্য বৃদ্ধিশ্রুত কিংবা বৃদ্ধি হইয়াছিল।

ডক্টর মূল্য।

মোঃ কলিকাতার মহাশয় লোকেরা অন্যদৃষ্টি দেখিয়া ভাবি দুর্ভিক্ষ অন্যান্য করিয়া কেহ ততুলদি বিক্রয় করিত না তৎপ্রযুক্ত সেখানে ডক্টর অভিযুক্ত হই ইয়াছিল এক টাকার আটার শেরের অধিক পাওয়া যায় না। ইহাতে পুজাগণ শ্রীযুত অজ সাহেবের নিকট বরখাস্ত করিলে সাহেব এক টাকায় বাচি শ শের নিয়ুক্ত করিয়া ঐ শহরে দ্বৈতরা দেওয়াইয়াছেন এবং হকুম করিয়াছেন যে তাহার লুন যে বিক্রয় করবে সে পাঁচা পাইবে। এই পুকার আ পন মতালকের দারোগারদের পুতি হকুম দিয়াছেন তাহাতে সন্তুষ্ট সূচনিক হইয়াছে। এই পুকার সমস্যাচার আশ্রয় গুনিয়াছি এবং মোঃ কলিকাতার অজ

সম্রাটের দর্পণ।

সাহেবের স্বভাব অনুভব করিয়া এই কথা মত্যা জান হয়।

ব্রহ্মাণী পুত্র।

চান্দ সওদাগরের ইতিহাস অনেক কাল আগে সেই চান্দ সওদাগরের খাণিত ব্রহ্মাণীর পুত্র প্রভিবৎসর নব বীরের পক্ষিমে যোগে আন নগর গিয়াছে ইহারা থাকে তাহাতে জন্মান লক্ষ লোক অম্ম হয় এই ছিলে সে পুত্রেরে নকল ভদ্র লোক এ আর নকল ইতর লোকেরাও পুত্রা দেয় বলিদান অনেক হয় এবং ভদ্রেশীয় অধীনকরা আন না জান্ত্র মরী করিয়া সেখানে যান ও অধীনকরা ও জান্ত্রের বিচার ইহারা অগ্র পরায় নিম্নক হয়। সপ্তমুতি সে পুত্রা আগমি রবিবারে ইহাবেহ।

দুরবীন।

এমত এক দুরবীন আছে যে তাহার দ্বারা অতিসূক্ষ্ম বস্তু স্থল দেখা যায় এই কণ দুরবীন গুণ্য সকলেই খাত আসেন। ইউরোপ দেশে এক জন এই দুরবীনদ্বারা মাকড়সার মূর্তা কি পুকারে ও কোতাই ইত্যে হুগতি হয় ইহা দেখিবার কারন সূত্রী এই দুরবীনদ্বারা মাকড়সা দেখিত। সে যত্নি অনেক পরিশ্রমে ইহা দ্বির করি য়ারে যে মাকড়সার মূর্তা যে কণ দেখা যায় সে কণ নির্গত হয় না কিন্তু যেমন অনেক রত্নি একত্র করিয়া গাঁত দিলে এক মোটা রত্নি সিদ্ধ হয় সেই কণ। মাকড়সার শরীরে চারি কোণায় চারি স্থান আছে তাহার এক স্থানেতে এক হাজা রেড অরিক জিহু আছে এবং এক মূর্তির

অঙ্গাভাগেতে সে এক হাজার জিহু গা ক্রা যায়। এই হাজার জিহু ইহাতে হাজার মূর্তা নির্গত ইহারা একত্র হইলে এক মূর্তা হয় এই কণ চারি কোণায় চারি মূর্তা পুস্তত হয় পরে এই চারি মূর্তা একত্র হইলে এই মূর্তা মনুষ্যেরদের চক্ষুগোচর হয়। তা হাতে যদিও ক্ষুদ্র মাকড়সা হয় তবে তা হার মূর্তা আমাদের দৃশ্যও হয় না ও খাণি তাহাতে পূর্বাঙ্ক রীতি ক্রমে চারি হাজার মূর্তা আছে।

আরো আশ্চর্য্য এই যে মূর্তা আমাদের দের দৃশ্য হয়। গোল তাহার চারি হাজার মূর্তা একত্র করিলে মনুষ্যেরদের এক গাঁজ কেন হয়। আমাদের দৃশ্য যে মূর্তা তাহার পুতোক মূর্তাতে চারি হাজার অতিসূক্ষ্ম মূর্তা আছে। অতএব মাকড় সাহইতে পুণ্য যে মূর্তা নির্গত হয় তাহার দৈর্ঘ্য কোটি মূর্তাতে আমাদের এক গাঁজ কেন হয়। ল্যাভেলনক নামে সাহেব দুরবীনদ্বারা এইকণ সূক্ষ্মানুল জ্ঞান করিয়া মন্ত্র প্রকাশ করিয়াছেন।

কুকুরের গুন।

গত ক্রমে কটলড দেশে এক কুকুরের আশ্চর্য্য গুন প্রকাশ হইল সে এই। তাহার মূর্তা আন গাঁজী ও বোকা এ মোদাগির এক বোকা অন্যত্র গইয়া যা ইতছিল এবং তাহার সহিত অন্য এক স্বী ছিল পদ্য এক গাঁজের নীচে এই গাঁজী ও বোকা বাছিয়া এই কুকুরের সিঁহাতে রাখিয়া সে কক্ষাঙ্করে গেল। সে কক্ষি দ্বিরিয়া আসিয়া দেখিল যে সে স্বী নাই বোকাও নাই। এক জন পাখ্য কছিল যে সেই স্বী বোকার গুণে আদোহান

করিয়া চলিয়া গিয়াছে। ইহতে এই মূর্তা সে স্বীর কারন ভাবিত হইল। ইহা দেখিয়া এই কুকুর আন মূর্তার মনোবৃত্ত বুঝিয়া আনিল বোকা দুই তিন কোণাখিষ্ট গেল ও এই বোকার দেখা পাইয়া তাহার লগ্নায় কামড়াইয়া ধরিল কোনকুরে জাতিল না ও এই স্বী সময়ে বোকা আন মূর্তার কাছ হোনিয়া আনিল।

গুণযুক্ত গুণর।

পাঁহ অকবর পাঁহ বাদশাহ ও তাঁহার পুত্র এই দুই জন মৃগয়া করিতে বনে গেলেন এবং বীরবর নামে এই বাদশাহের গুণীরও সঙ্গে গেলেন। পরে বাদশাহ গুণিধা স্থানে মৃগয়ায় মাঝে নানাবিধ বন পর্যটন করিয়া এমত শূন্য হইলেন যে আন পরিবে বস্তু বহিতেও আনিল অ সমর্থ হইলেন এমত গুণীর বীরবরকে কহিলেন যে আমি অতিশূন্য হইয়াছি আমার বস্তু তুমি রাখ। ইহা করিয়া আন কিছু বস্তু বীরবরকে দিলেন। পরে বাদশাহ আদোহ ও এই কণ করিয়া বীরবরকে আন বস্তু দিলেন। দুই জনের বস্তুতে বীরবরের বস্তু বোকা হইল। ইহা দেখিয়া বাদশাহ কোতুক করিয়া কহিলেন যে বীরবর তুমি এক গাঁজীর বোকা লইয়া। ইহাতে বীরবর কহিলেন যে বাদশাহ নামদ্বার এক নয় কিন্তু গোলম দুই গাঁজীর বোকা ধরন করিয়াছে। এইকু অত সদ্ভূত গুণিয়া অকবর পাঁহ বাদশাহ অত্যন্ত তুষ্ট হইলেন। এই কণ তাহারদের অনেক কথা পুস্কি আছে।

এই সম্রাটের দর্পণ পুরাণপুরের হাসাখানাতে পড়িনকালে পড়িবারে হাসা হয়। তাহার লগ্নের আশঙ্ক হয় তিনি পুরাণপুরে হাসাখানাতে আসন দায় পাঠায়ে লগ্নায়ে, কাল তাহার দিকটে পাঠান হইবেক তাহার মূল্য মানে এক টাকা। যিনি কাল করিয়াছেন যদি তাহার দিকটে লগ্নার দর্পণ না পড়ে তবে তিনি পুরাণপুরে হাসাখানাতে লগ্নার দ্বিবার তাহার দিকটে পাঠান হইবেক।

বোনাপাতের জ্বাভা এক হায়া শ্রুতি যে
নে বিফর্য পাঠাইয়াছেন ওঁহার মূল
মেড লক্ষ টাঁকা কল্পনা হইয়াছে অদ্বাশি
বিস্ময় হয় নাই।

সমাচার দর্পণ।

রাষ্ট্র বিজ্ঞাপ্তি।

মাননীয় প্রদেশ হইতে সমাচার আনিয়াছে যে যেমত পূর্বে এখানে ওলাউরা রোগ হইয়াছিল তেমন সেখানে অনেকের হইতেছে এবং অন্যত্র সর্ব দেশে নাই। এবং এখান শুণ্য গোল মোকী বৈদ্যের লিখে যেমত প্রদেশের সময়ে হইত অর্থাৎ ওলাউরা হইয়াছিল তাহাতে তিন হাজার লোক সেখানে মরিয়াছে।

ভূমিকম্প।

১০ জুন তারিখের ভূমিকম্পের সমাচার দূর দেশ হইতে আসিতেছে। বোম্বাইয়ের নিকট সমুদ্র তীরস্থ পূর্ববন্দর নামে মহাশহর হইতে এই সমাচার আসিয়াছে যে এই ভূমিকম্পে সেখানকার এক কিল্লার দেওয়ান সমুদ্রের তীরে মত ভীষিয়াছিল ও নগরী গুল্মে ও অনেক দেওয়ান এক কালে পড়িয়াছে ও তাহার ইলিতে আকাশমণ্ডল আছন্ন হইয়াছিল সেখানকার লোকেরা সে সময়কে মহা পুনশ্চ কাল জান করিয়াছিল সে শহরের অনেক পাঁকা ঘর পড়িয়া গিয়াছে এবং যে ও না পড়িয়াছে সে ঘরও এমন ক্ষতিয়াছে যে তাহার পতন ভয়ে সেখানকার রাজা ও আদালত শহরের বাহিরে গিয়া বসতি করিতেছেন।

সেই শহরের কিষ্কিন্দুর এক দ্বানে ভূমিকম্প সময়ে মৃত্যিকা প্রাচীরা খস খস ভল গুটিয়াছিল যেদিন ভূমিকম্প হইয়াছিল তাহার পর দিন তিন তারিখ বার দুই ভূমিকম্প হইয়াছিল তাহাতে পূর্ব দিক পড়িতে অবশিষ্ট যে গৃহ পুড়িত ছিল তাহা সেই দিনে পড়িয়াছে সেই ভূমিকম্পে নবল দ্বান হইতে সমুদ্র তীরে অতিশয় হইয়াছিল এবং তাহার পরাম

পূর্বাংশ সমুদ্রের নিকটেই অনেক আছে। মঙ্গল শহরে পূর্বাংশ লোক মরিয়াছে। ভূমি শহরে যত লোক মরিয়াছে তাহার সংখ্যা নাই এক হাজার মৃত লোক যেখানে মালের নচেই হইতে বাহির করিয়াছে এবং এখান আদালত শহর বাহির হইতেছে এই শহরে সাত হাজার ঘর পড়িয়াছে। যাহা কল্প দেশে যত লোক মরিয়াছে অনুমান করি কেবল ভূমি শহরে তত লোক মরিয়াছে। মাকাদী শহরে এক শত ঘোল লোক ও লখমট শহরে দেড় শত লোক মরিয়াছে এবং কল্প দেশের ওতরে তিন কোশ আঁতে কিন্তু তাহার লম্বাই জানা নাই এমন এক দ্বানে অকস্মাৎ অল গুটিয়া বাপ্ত হইয়াছিল। কল্প দেশে যত শুষ্ক নদী ছিল সে সকল একবারে জলেতে পরিপূর্ণ হইয়াছিল।

এত কুসমাচারের পর কিষ্কিন্দুর সমাচার দিতে আমাদের অধিক সম্ভাব্য ভয়ে তাহা দি। কল্প দেশে গাত ভূমি কল্প দ্বারা সকল দেশ হইতে অধিক বিজ্ঞাপ্তি হইয়াছে তৎপূরক শ্রীশ্রী গুড কোল্লানি বাহাদুর সেখানে রাজকর বন্দ করিয়াছেন। এবং বোম্বাইয়ের তাহা ইংল্যান্ডের লোকেরা সকলে এই কল্প দেশের লোকের ঘরে ওপকার নিমিত্ত টাকা করিয়া টাকা দিতেছেন তাহাতে কোল্লানি বাহাদুর নিজে তারি হাজার ও ওপকার বড় সাহেব নিজে পাঁচ শত টাকা ইত্যাদি ধনে সকলে দিতেছেন।

মূল।

সন ১৮১৯ সালের ১০ জুলাই তারিখে ময়লা মোকামে এক গোঁদামীর শব্দ হস্তে এক রাখালের গাঠ গিয়াছিল। ইহা শুনিয়া এই গোঁদামী আপন বাটীতে এই রাখালকে ডাকিয়া আনিয়া তাহাকে

মাঝিতে আপন কথাকে ডাকা দিলেন। তাহাতে এই কথক সে রাখালকে এমন জুতা মারিল যে তাহাতেই তাহার তৎক্ষণাৎ প্রাণ বিয়োগী হইল। পরে রাখালের নিতা মাতা আনিয়া আপন বালককে মৃত দেখিয়া এই গোঁদামীর মণ্ডল ও পাইককে ডাক করিল। তাহার তৎক্ষণাৎ এই কথক ও তাহার মুনীকে কএক করিয়া মেলমাঝের খানতে সমাচার দিল। এই খানার দারোগা ও বকসী ও জমাদার এই গোঁদামী আনিয়া এই গোঁদামী ও তাহার কথককে বাজিয়া এই মূল সময়ে জেলা বজ্রমানে মেজেষ্ট্রার সাহেবের নিকটে চাণল করিয়াছে।

মরণ।

সন ১৮১৯ সালের ৫ জুলাই বেলা ছয় ঘণ্টার সময়ে শ্রীক্ষেত্রাজ কতক গণি যান্ত্রিক পুতাকাশন সময়ে অলেশ্বর পাট নার অভিনিকটবর্তি স্বর্ণরেখা নামে নদীতে ওপড়িত হইল পরে এই যান্ত্রিকেরা এই নদী পার হইবার কারণ এক নৌকায় আরোহণ করিল পরে এই নৌকা অনেক মরিয়াছিল আনিয়া হঠাৎ ভুলিল তাহাতে দশ বার জল লোক মরিল ইহাতে শঙ্ক পুত্র সেই বিবস অল্য যান্ত্রিকেরা আর কেহই পার হইল না।

সন ১৮১৯ সালের ৩ আগষ্ট এক ব্রাহ্মণ ও এক মুসলমান এই দুই জন হিজলনা গোঁদামীর নিকটবর্তি রামোদর নাম নদ পার হইতেছিল ব্রাহ্মণ অষ্ট পঞ্চাশ মুসলমান কিন্তু মুসলমান পার হইল ব্রাহ্মণ হঠাৎ ভুলিল তাহার পর ব্রাহ্মণের ওদেশ কোন পুকুরে হইল না। ইহাতে অনুমান হয় যে রামোদর নামে চোরা বাণি আছে তাহাতেই ব্রাহ্মণ কষ্ট হইয়া ভুলিয়া মরিয়াছে।

সম্মাচার দর্পণ।

বসন্ত রোগ।

মোহাম্মদ বক্কর আলী মরোহি হিজলী প্রমুখ এইমত বসন্ত রোগের প্রাদুর্ভাব হইয়াছে যে প্রায় পুতিদিন দুই এক জন লোক ঐ রোগগ্রস্তা মরিতেছে ইহাতে প্রাণহানি লোকেই শঙ্কিত হইয়াছে।

আত্মকাটের নবাব।

১ আফগানি তামিমে আত্মকাটের নবাব মরিয়াজেন। আত্মকাট শহর মান্দরা জের নিকট কর্ণাট দেশের রাজধানী। ঐ নবাবকে কেহ 'আত্মকাটের নবাব' কেহ ও কেহ কর্ণাটকের নবাব' কেহ। পূর্বে ঐ নবাব বড় পরাক্রমী ও ঐশ্বর্যশালী ছিল কিন্তু কয়েক তাহার ক্রিয় হইয়াছে।

পুণ্যাগি।

পুণ্যাগিহইতে ৭ আফগানের পত্র আনিয়াছে তাহাতে সম্মাচার পাওয়া গেল যে সেখানে সকল লোক দুর্ভিক্ষভয়ে ভীত হইয়াছে সেখানে সকলহইতে ঘোড়া তপাল টাকায় আট শের হইয়াছে কোন পুকার শস্যাদি পাওয়া যায় না যেহেতুক মহাজন লোকেরা সকল বস্তু করিয়া রাখিয়াছে এবং এই বৎসর ক্ষেত্র শস্যাদি যে অল্প তাহার ভরসাও নাই। সেখানে আমের বিঠির মধ্যে যে শস্য তাহাই খাইয়া অনেক মৃত্যুবরণ করিতেছে এবং আর কতক দুর্ভিক্ষ লোকেরা বাপির মধ্যেহইতে ওরমুজ ও অরমুজ ও খগুরী খাইয়া খাইতেছে।

আহাৎ আমদানী।

মোহাম্মদ আলী কার্ণাটক নামে আহার্য পণ্যক্রিয়াকে সে আহাৎ ১১ আশ্বিন পু ইংল্যান্ড জাহাজে সে আহাৎ বার

শত পত্র আমদিয়াছে তাহার হার ১২৫০ শতাংশ।

ঐশ্বর্য ওলফাননন সাহেব কোল্লানীবা হাদুরের নিকটে যে ৭৫ বীচতর হাজার টাকা পাওনা করিয়াছিল তাহার তবারক করিয়া কোল্লানি বাহাদুর তাহাকে দিয়াছেন।

ঐশ্বর্য ইংল্যান্ড দেশের বাহাদুরের পিতৃভাণ্ডার হয় নাই।

ঐশ্বর্য বাহাদুরের দ্বিতীয় পুত্রের হস্ত ভগ্ন হইয়া ঘরে রাখিয়াছেন।

ঐশ্বর্য বাহাদুরের তৃতীয় পুত্রের স্বীর এক কন্যা হইয়া ক্রিষ্ণকাল থাকিয়া মরিয়াজেন।

ঐশ্বর্য বাহাদুরের কনিষ্ঠ পুত্রের এক পুত্র হইয়াছে। ইংল্যান্ড দেশের বাহাদুরের পুত্র এই পৌত্র অর্জিয়াছেন।

ঐশ্বর্য বাহাদুরের চতুর্থ পুত্র আপন স্বীকে সুসংবোধ লগন শহরে আনিয়াছেন তাহার কারণ এই।

সেখানে বাহাদুরের ঘর এই মত বীরা আছে যে যখন কোন বাহাদুরের সন্তান হয় তখন সন্তান হইলে পুত্রাঙ্কে নৃত্যিকা গৃহের নিকট কুঠীতে বাহাদুরের ওজীর ও সেখানেকার অভিভাব্যবান লোকেরা থাকেন যখন সন্তান জন্মিল হয় তখন ঐ সকল লোকেরদের নিকটে ঐ আত্মাচার বালককে দেখান যায় ও তাহার দেখিয়া মহী যেন এবং তাহার ঐ বালকের রোমন্থনেন। ইহাতে কোন শততা হইতে পারে না। এবং সকল লোকেরদের মনে এমন লিঙ্ক থাকে যে ইনি আমার ঘরে বাহাদুরের ওরম সন্তান হইবে ইহার আকার নীচে আমরা নিম্নসদে থাকিতে পারি।

নৃতন পুকার নোকা।

ইংল্যান্ড দেশে ঐশ্বর্য বেল্লাসাহেব এক পুকার নোকা সৃষ্টি করিয়াছেন সে নোকা বাস্তব বীরা চলে না ও দীতর বীরা চলে না কিন্তু ক্ষুদ্র বীরা চলে সে ক্ষুদ্র নোকার মধ্যেখানে আলের মধ্যে বেওয়া যায় সেই ক্ষুদ্র বীরাইলে আপনি নোকা চলে। ইহাতে বড় ও তুফান ও জোয়ার ও ভাটতে সমান চলে ও বড় ও তুফানে তাহার ক্ষতি হয় না আরো তাহার কোন মন্দ শব্দ হয় না এবং সে সাহেব ঐ নোকার চতুর্দিকের কানারাতে বর্ষা ও তরবাল ঐ ক্ষুদ্রত নগ্ন করিয়াছেন ও তাহাতে এমন কল করিয়াছেন যে যখন কোন বিপদ লোক ঐ নোকাতে আইসে তখন ঐ ক্ষুদ্র বীরাইলে ঐ বর্ষা ও তরবাল চতুর্দিকের কানারাতে ঘোর তাহাতে কোন বিপদ লোক নোকার ওজীর আমিতে পারে না এবং ঐ ক্ষুদ্রত দুই বড় একমত লগ্ন আছে যে যে দিগে গেলি জুড়িতে ইট্টা হয় সেই দিকেই গেলি জুড়িতে পারে।

নায়কের সাহস।

ইংল্যান্ড বাহাদুরে যেমন কলিকা তাহাতে দানাপুরে বাইতেছিল মোহাম্মদ আলীর নীচে গাঁওতে তাহার এক নোকা ডুবি তাহাতে এক জন গৌরা মিশ্রী ও তিন জন বালক মরিল অথবা শিশু বাহাদুর ছিল তাহার এক নায়কের সাহসপুত্র রক্ষা পাইল। ঐ নায়ক গাঁওর জন পুরুষ ও দুই স্ত্রী ও এক বালককে রক্ষা করিল যখন নোকা ডুবি তখন ঐ চৌদ্দ লোক নোকাতেই ছিল ঐ নায়ক সীতার দিয়া এক জনকে প্রাণে ডাঁড় আনিয়া রাখিয়া আর এক জনকে আনিয়া এই কল চৌদ্দবার সীতার দিয়া চৌদ্দ

সন্মোচন দর্পণ।

অনেক রক্ষা করিয়াছে। ইহাতে ইংল্যান্ড ও হিন্দুস্থানীয় লোকেরদের মধ্যে ঐ কাগজের অতিসুখ্যাতি হইয়াছে।

ঐ ইংল্যান্ড ঐ যাত্রাতে মোঃ পাট বার পূর্ব মোঃ মুগোরের পশ্চিম মোঃ রফত বৈকুণ্ঠপুরের গীর্জাতে পুনর্বার আর এক নৌকা জরিয়াছিল তাহাতে এক জন গৌরা নিম্নাহী সেই কন করিয়া লোকেদিগকে বঁচাইতে ওয়ায় করিয়াছিল কিন্তু তাহাতে অসমর্থ হইয়া আশ্রয় চু করিয়া মরিয়াছে। ঐ স্থানে নৌকা জ্বলিলে ঐ গৌরা নিম্নাহী মীতারা দিয়া আশ্রয় চোরে আইল এবং দেখিল যে এক ইংল্যান্ডীয় স্বী আশ্রয় ভিত্তি কাপড়ের জোড় অলম্বন করিয়া আশ্রয় দুই বালকের হাত ধরিয়া অলম্বিতভাবে কিছু কৈ হইয়া যের নাই তাহা দেখিয়া ঐ গৌরা নিম্নাহী তাহারদিকেরে বঁচাইবার কারণে পুনর্বার আশ্রয় মীতারা দিয়া আশ্রয় চোলে ও তাহারদিকেরে আশ্রয় ঘাড়ে ক করিয়া মীতারা দিতে লাগিল কিন্তু পরে সে আশ্রয় অসমর্থ হইয়া মরিয়া। ও ঐ স্বী ও দুইবালক পূর্ববৎ ভাসিতে লাগিল। পরে আর এক জন নিম্নাহী মীতারা দিয়া চিয়া ঐ স্বীকে ও তাহার দুই বালককে আশ্রয় ঘাড়ের ওপরে করিয়া ভাঁরে আশ্রয় চু ভিত্তি-মা করিল তাহাতেই তাহার রক্ষা পাইল।

কাহ্ন।

এক নৌকা মোঃ রজিকাতিহাতে সুন্দরবন দিয়া মোঃ বাহারগঞ্জ যাইতেছিল যখন সে নৌকা ডীরহইতে তের হা ড় দূর অলম্বন মুকো জিল ডাল এক

বায়ু সুন্দরবনের মধ্যে ডীরহইতে এক লাফ দিয়া নৌকার ওপরে পড়িয়া এক জনকে বড় আঘাত করিল ও আর এক জনকে ঘাড়ে বঁধিয়া ঐ নৌকাহইতে আর এক লাফ দিয়া সুন্দরবনের মধ্যে পুরেশ করিল কোন পুকারে তাহাকে বঁচা গেল না ও মারা গেল না।

রজিকাতার ছোট আদালত।

রজিকাতার ছোট আদালতে আশ্রয়িরা মাসে তিন হাজার চয় শত বাহুর মোকদ্দমা জিল তাহার মধ্যে দুই হা আর তিন শত নীচহুর মোকদ্দমা আশ্রয় নিম্নান্তি হইয়াছে।

বাংলা বাকি লেট লাভ।

৯ এবং ১০ রোজ যে সকল বাংলা বাকি-লেট ১০০০০ টাকার চুরি গিয়াছিল সেই সকল বাকি-লেট পাঁচশা গিয়াছে অতএব বাংলা বাকিতে ঐ সকল লেটের টাকা বেলা যে বন্ধ করা গিয়াছিল সে বন্ধ উঠিয়াছে।

কাশীতে নিম্নহমার।

কাশী পুরমণে অনেক লবন ওপরে হয় যেহেতু সে দেশে লবনযুক্ত মৃতিকা আছে সে মৃতিকা ও কুঁহইতে যে জন গ্রান যায় সে জন অন্য মৃতিকার ওপরে চিটান যায় তাহাতে সে মৃতিকা ও লবন মুক্তা হয় ও তাহার ওপরে এক আশ্রয়িরা মিত লবন আছে সে দেশের অনেক অমি দার যে কুম্ভিতে সন্মালনা আছে তুলেন সে কুম্ভিতে ঐ কল লবন ওপরে করান ও তাহাতে লাভ হয়। হিন্দুস্থানের লব

পের লাভ নৌকামান কোম্পানি বাহুরদের তবোন। অতএব ঐই দেশে লবন ওপরে বিধয়ে ইংল্যান্ডীয় এক সাহেব সম্রাচার পত্রে জানাইয়া এই বিধয়ে কি কর্তব্য জানিতে চাহিয়াছিলেন যেহেতু ইহাতে কোম্পানির নৌকামান হয়।

ইংলান্ড দেশে টেক্স।

ইংলান্ড দেশে লবনের ওপরে যে টেক্স সে অতিবিষম সেমত এদেশে হইলে লোকে মরিয়া। এক টাকার লবনের ওপরে চৌত্রিশ টাকা টেক্স। অতএব পয়ত্রিশ টাকাতে যে লবন বিক্রয় করে তাহার এক টাকা মাত্র লাভ হয়।

গুনাংহাণ্ড।

ইংলান্ড দেশে এক ব্যক্তি অন্য সাহেবের এক স্বীর পুত্র দুইটা করিয়াছিল পরে ঐ মোকদ্দমা আদালতে গেলে চু করিয়া তাহার বিচার করিলেন তাহাতে ঐ পুত্রকে দোষী নির্দিষ্ট হইলে তাহার গুনাংহাণ্ড এই হইল যে ঐ স্বীর ব্যক্তিগে চৌত্রিশ হাজার টাকা ঐ দুইটি দিবেক।

ওপরে বক্তা।

দুর্ভিক্ষতার ও পুত্রাণী এক রাজাছিল এবং ওপরেবক্তা ঋণ অত্রোক্ত তাহার এক ওজীর ছিল। এক দিন ঐ রাজা কোন বিষয়ে ফেরিগিয়া হইয়া ঐ ওজীরকে বলিল যে তুমি বড় ভালহইত। ইহা শুনিয়া তৎক্ষণাৎ ঐ ওজীর ওজীর করি যে ঐ মহারাজ আশ্রয় পুত্রদের মধ্যে ভালহইত বটি। এই ব্যাপারটি ওপরে ওজীর শুনিয়া রাজা ওজীরের পুত্র কল না হইয়া কল হইল।

এই সম্রাচার দর্পণ পুরাণপুরের হাণ্ডাধীনাতে পুত্রিলাভের গনিবার হাণ্ডা দ্বা। বাহার লবনের আশ্রয়ক হইত তিনি পুরাণপুরের হাণ্ডাধীনাতে লবন ওপরে পাঠাইবে লবনকে লবন তাহার দিকটী পাঠান হইবেক তাহার দুশা মাসের এক টাকা। তিনি লবন করিয়াছেন ত্রি তাহার দিকটী সম্রাচার দর্পণ বাণীহইতে তবে তিনি পুরাণপুরের হাণ্ডাধীনাতে লবন দিকটী পাঠান হইবেক

সমাচার দর্পণ

৩৭ সংখ্যা।

শনিবার।

১৮ আগস্ট মন ৪৮ ৪৯। ৪৩ ভাদ্র মন ৪১৪৩।

দপণে মুখ পৌষর্ষিদিব কার্য বিজ্ঞপ্যঃ।

বৃহত্তামিহ জানন্ত সমাচারস্য দপণে ॥

কোল্লানির কার্যঃ।

কোল্লানির শতকরা চম্পা টাকার সুদের
ক্যাণ্ডিস কয় করিতে হইলে শতকরা পাঁচ
আনা তিয়কৌঞ্চ। বিক্রয় করিতে হইলে
শতকরা দশ আনা তিয়কৌঞ্চ।

মস্তাহের পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|-------|-------------|----|-------|
| ১৮ | আষাঢ় | শনিবার | ১০ | ভাদ্র |
| ১৯ | শ্র | রবিবার | ১১ | শ্র |
| ২০ | শ্র | সোমবার | ১২ | শ্র |
| ২১ | শ্র | মঙ্গলবার | ১৩ | শ্র |
| ২২ | শ্র | বুধবার | ১৪ | শ্র |
| ২৩ | শ্র | বৃহস্পতিবার | ১৫ | শ্র |
| ২৪ | শ্র | শনিবার | ১৬ | শ্র |

অমী বিসম্বের ইস্তাহার।

অনেক লোকের জলি লালি কলোহার হোজ ও তারিখ
সকল লালি পীরের কলিঙ্গ লক্কাকার বাণী আবার কারন
বোম্বিল্পু লাক্কাকার বহুমান্য পুলাপ খানি খানি
লিকর হইবে জল ও জলিলের কলিঙ্গ বোম্বিল্পু লাক্কাকার
বোম্বিল্পু লাক্কাকার জলি কলোহার কলিঙ্গ লাক্কাকার
লাক্কাকার হইবে ইতি।
সুখলন বৃহস্পতিবার ১ সেপ্টেম্বর মন ১১ ১২ ইং ১৫
ভাদ্র মন ১১ ১৫ ইং।
বাহুগঞ্জ বৃহস্পতিবার ২ সেপ্টেম্বর ১৮ ১১ ইং ১০ ভাদ্র মন
১১ ১৫ ইং।
ইতি তারিখ ১৮ ভাদ্র মন ১১ ১৫ ইং বোম্বিল্পু লাক্কাকার।

কোল্লানির ইস্তাহার।

পূর্বে যে সকল ইস্তাহারিলায়া বাণী
দারদারের অমী দিলারের বিজয় বোম্বিল্পু
বল্লুর সেক্টারি বহুমান্য ও জেলাহার
কলিঙ্গ হইবে কাজারিতে আদি হইতে মন

হারের জাপাখানায় চাম্পা ইয়া আদি
হইতে এইক্ষণে প্রযুক্ত লওয়াব গিরদার
আনোরেল বাহাদুরের কৌলমলের মাত
লিনের মন ৪৮ ৪৯ ইংরাজীর ১ মাহ
আগন্ত তারিখের অকুয় মতাবক ইস্তা
হার দেওয়া ঘাইতেছে যে কলোহার ডা
রিয়া হইতে জাপার ইস্তাহার আদি হওয়া
মহকুপ হইল মতাবক আইন এইক্ষণে
কেবল কলমের লেখা ইস্তাহার বাণী
দারদারের অমী বোম্বিল্পু বহুমান্য
জেলখানায় ও জেলাহার কলিঙ্গ
কাজারিতে আদি হইবে ইতি তারিখ
৪৩ আগস্ট মন ৪৮ ৪৯ ইংরাজী বোম্বিল্পু
বহুমান্য।

সমাচার দর্পণ।

প্রযুক্ত ব্রাহ্মকজীয়াংলিয়া।

পূর্বে জাপান চাম্পা জিলে যে প্রযুক্ত বাজি
রাও পেশওয়ার পুলা চাকর প্রযুক্ত ব্রাহ্ম
কজী দাংলিয়া নামে এক ব্যক্তির মন্ত
নাতে ইংল্যান্ডেরদের সহিত প্রযুক্ত
বাজিরাও পেশওয়ার বিরোধ ইয়া জিল
এবং জিলি পুর্বে ইংল্যান্ডেরদের অনেক
মন্ত চেষ্টা করিয়া জিলে। মন ১১ ১২ ই
দাংলিয়া ইংল্যান্ডেরদের হস্তে পতিত
হইলেন পূর্বে প্রযুক্ত বোম্বিল্পু হইতে
মোং কলিঙ্গাডায় তাঁহাকে আনিয়া
জিলে এখান তাঁহাকে মনোয়া মোং

চরনারগড়ের কিল্লাতে বন্দ করিয়া পা
ঠাইলেন।

ভুক্ত দেশ।

গত বৎসরে ভুক্তের বাধাধি আনন
সেনাপতি মোং দায়ারিহারের অধীক
মোং দায়ারিহারের দূর পুজারদের মন
নের কারণ পাঠাইয়া জিলে এই অধীক
সেনাপতি গিয়া ডাংকার দূর পুজা মন
করিয়া আনন বাধাধিহকে সমাচার সি
জিল ও এক হাজার পুজা লোকেরদের
মন্ত কলিঙ্গ পাঠাইল। বাধাধি তাঁহা
ন ইয়া মন্ত লোকের দেহিবার কারণ
সে মন্ত মন্ত আনন ঘরের চতুর্দিকে
সারি করিয়া রাখিতে অকুয় দিল। এবং
এক দিন পর্যন্ত সে মন্ত মন্ত সেই
কণ রাখিল।

রাজকর্মে নিয়োজিত।

১০ আগস্ট প্রযুক্ত বি এচ হরমল সা
হেব নোলাইতে লব্বি ক্রিয়াৎ দেশে
ইংল্যান্ডেরদের ওলিলের পেশকার।

প্রযুক্ত জলি লিজে সাহেব, হাসিল
ও লিজে ও আখীয়া দস্তুরের সেক্টারি
পেশকার।

প্রযুক্ত জন লিভ সাহেব অ্যালবু ও লিভ
লব্বি পুদেপের অধীকরদের সেক্টারি
পেশকার।

প্রযুক্ত টি জে ওর্ল সাহেব মোং দায়ারি
টের কলিঙ্গদের পেশকার।

শ্রীযুক্ত এম জোনসেন সাহেব বরেলি
কলিঙ্গদের পেশকার।

সমাচার দর্পণ।

ঐযুত এফ সাহেব পঞ্চম লিখক
মহলের অধ্যক্ষের পেকার।

ঐযুত ই হুদর সাহেব আফারার
কালেক্টরের পেকার।

ঐযুত ডি ডি ব্রাহ্মণ সাহেব কোলা
নির প্রতাপের অধ্যক্ষের পেকার।

ঐযুত ভলিও পেন সাহেব জিলা
নহিয়ার অফ সাহেবের পেকার।

ঐযুত ভলিও ব্রাহ্ম সাহেব মোকাম
বরেলির অফ সাহেবের পেকার।

ঐযুত ই বরী সাহেব সমরদেওয়ানী
ও নিয়মত অফিসের রেজিস্ট্রারের
পেকার।

শ্রীযুত ভলিও এন গার্টেট সাহেব
পাহরের অফ সাহেবের পেকার।

শ্রীযুত রবট বার্নাল সাহেব জিলা বাঘার
গাজেটের অফ সাহেবের পেকার।

শ্রীযুত জে সি ব্রৌ সাহেব বাণী শহ
রের অফ সাহেবের পেকার।

শ্রীযুত জি কুর্স সাহেব মো- কলিকা
তার অফ সাহেবের পেকার।

শ্রীযুত সি কারু সাহেব জিলা জৌনপু
রের অফ সাহেবের পেকার।

শ্রীযুত এচ মালি সাহেব জিলা বর্ধ
মানের অফ সাহেবের পেকার।

মূল।

সাল ১১১৩ সালের ১২ শ্রাবণ মাসে
মুরশেদাবাদের হৈবকাগজের খানসার
দারোগা হকুম দিয়া এক ব্যক্তি বৈরা
গীতে বুলতা মারিয়াছিলেন। তাহাতে
ই বৈরাগী আপন মনের দুখেতে এই
দারোগার ঘরের নিচে গিয়া দড়ি দিয়া
আপনি আপনাকে মূল করিরাছে। তা
হাতে ই দারোগা বরসায়েদী সোশদ্রায
হইয়াছে পক্ষাৎ আদালত হইলে যেতে
উক হইবেক।

পাটরি।

গত মঙ্গলবারে পাটরি খেলাতে যে
এক লক্ষ টাকা বাহির হইয়াছিল তাহা
শ্রীযুত এলেক্সান্দ্র কুয়াট সাহেব পাইয়া
ছেন।

বুঝা দেশের বাহাদুরের মরণ।
বুঝা শহরহইতে সমাচার আসিয়া
ছে যে বুঝা দেশের বাহাদুর মরিয়
ছেন তিনি আশী বৎসর বয়সের
অধিক ছিলেন এবং তিনি অনেক বৎ
সর রাজ্য করিয়াছিলেন। এই বাহাদুর
মরিলে পর তাঁহার পৌত্র সিংহাসনে
উৎসর্গাৎ বসিলেন কিন্তু মৃত বাহাদুর
হের অনেক মহান আত্ম তৎপ্রযুক্ত
দোকেরা ভয় করিতেছে যে বাহাদুরের
এ পৌত্রের সহিত তাহার আর মহান
রা পাছে বিরোধি করে। সিংহাসনে যে
বসিয়াছে সে তত্তি ওপযুক্ত ও পুজারদের
প্রতিপালনে তাহার অনেক চেষ্টা আছে
ও আপন দেশে বাণিত্যাগি বৃদ্ধি হয় এ
মত বাসনা তাহার অধিক আছে।

বৃদ্ধি।

পাঞ্চম দেশহইতে সমাচার আসি
য়াছে যে সে দেশে বৃদ্ধি ক্ষুর হইতেছে
দুর্ভিক্ষভয় কিহিং জলু হইয়াছে এবং
বাঙ্গালা দেশেও এই মহাভয় বৃদ্ধি হই
তেছে ওখানি পুর জলাবৃষ্টিপুত্র যে
পশ্চাতি দ্রুতি হইয়াছিল তাহাতে ইলাগ
দি কিহিং দুশুণ্য হইবেক।
পাঞ্চম দেশের সমাচার আরো পাওয়া
গেল যে পুরে মোং দাদাপুরে এক টাকায়
তের শের চাল বিক্রয় হইয়াছিল পর
আজ্ঞা সেখানে সুবৃদ্ধি হইল তাহাতে
সেখানে ততুল সন্মুখ হওয়াতে দুর্ভিক্ষ
ভয় নুল হইয়াছে।

কালপুরের সমাচার আসিয়াছে যে সে
খানেও সেই তরিতে বৃদ্ধি হইল তাহা
তে সেখানেও পশ্য মূলত হইয়াছে।

ইন্দ্র-গীর্বাদহইতে সমাচার আসি
য়াছে যে সেখানে পুর বৎসর শিতাবির
ঘের ভয় ছিল কিন্তু এই বৎসর কেবল
দুর্ভিক্ষভয় মাত্র সেখানে তাটা টাকায়
আট শের হইয়াছিল কিন্তু সবে
চায় কিছু কম হইয়াছে। ইন্দ্র-গী
বামে বৃদ্ধি হওয়াতে ততুলদি কিহিং
মূলত হইয়াছে এবং পুরে যে সেখানে
আপন মহান বিক্রয় করিত তাহা এখন
কেহই করে না। আফগের পুর
নামা নদীতে হবার গন্ধও ছিল না কিন্তু
এ তরিতে বলা আসিয়া এক বারের নাম
হা নাম পুর করিয়াছে এবং ই হলাতে
সেখানকার কুদু গুণ্ড ও গন্ধ ও মান্দ
ও আর বহু একবার ভাসিয়া গিয়াছে
কেহই গাচের ওপরে ও ঘরের চালের
ওপরে রাখিয়া রাখা পাইয়াছে আর অনেক
কে মারা পড়িয়াছে।

মোং মুরশেদাবাদহইতে ১২ শ্রাবণের
সমাচার আসিয়াছে যে সেখানেও
অধিক বৃদ্ধি হয় নাই সন্মতি কেবল ম
থোং বাসে কিহিং বৃদ্ধি হইতেছে তা
হাতে কৃষিগির অধিক ওপকার হইত
পারে না সেখানে ততুলের ভাও এক
টাকায় পাঁচ পনারি এখন পাঁচ মাল
গাণ্ডী এবং দিলে সে ভাও কমিতেছে
এক কুটর ভাও ইহাও ছিল বহু পুর
টাকায় বিশ শের ছিল এখন তের শের
হইয়াছে। এই সমাচার মুরশেদাবাদ
হইতেও আসিয়াছে।

গাজীপুরহইতে ৫ আশ্বিনের সমাচার
আসিয়াছে যে সেখানে ই তরিতে
পুর একবারও বৃদ্ধি হয় নাই ও সাল

সমাচার দর্পণ।

পুকার দুখ সেখানে দুখ লাগিল। পুকার
আমের আঁটির মাঝে যে শস্য আছে
তাঁহা বাহির করিয়া রৌদ্র শুক করিত
পরে তাঁহা ময়দার মত উঁচা করিয়া বাঁজা
রে টোকাই ত্রিশ শের দরে বিক্রয় করিত।
দুখি লোকেরা তাঁহার দ্বারা দিন পাও
করিত কিন্তু এখন সেখানে সেই বশ
নাই।

আজকাটের নবাবের মৃত্যু।

৩ আশ্বিন তারিখে আজকাটের নবা
বের বর হইয়াছে তাঁহার রাজত্ব
ইতে বর হানপাণ্ড লইয়া যাইবার
সময়ে উভয় পাশে শূণ্যস্থিত মাদরা
জের বত সাহেবের নিজের উদনের
সৈন্য শ্রেীবদ্ধ হইয়া দাখিয়া
ছিল এবং বরের বেতনের সময়ে তাঁহার
সম্মুখিই সেখানকার বিশাল কাস্তের
অর্দ্ধেক খণ্ডান গিয়াছিল এবং সেখান
কার কিল্লাতে ৩ নবাবের বহুসম্মানসূচক
ভোগ হইয়াছে। ৩ নবাব আটটার পাত
এক মাল আপনি সিংহাসনে বসিয়া
ছিল এই আটটার বঙ্গের রাজা করিয়া
ছে সে যত কাল রাজ্য করিয়াছে ততকাল
কেল তাঁহার সুখাতি বাড়িয়াছে।

এতদেশে বাহাদুর ও নবাব ও অল্য
অমরা লোক ঘাঁহাদের সহিত ইংলণ্ডী
ফেরের স্তুতি আছে তাঁহাদের কাহা
রা মরণ হইলে ইংলণ্ডের বীরানুসার
তাঁহাদের সম্মুখিই ইংলণ্ডীয়েরা ও
যুদ্ধ মত ভোগ করিয়া থাকেন।

কাপ্তানী।

কাপ্তানীহইতে সমাচার আনিয়াছে যে
অন্য শূণ্যস্থিত রুজিৎ-সিংহ বাহাদুর
গুণ্য কাপ্তানীর শহরে শুবেন করিলেন
কখন কাপ্তানীর লোকেরা রুজিৎ-সিং

হের ওপরে আকস্মিক করিয়াছিল কিন্তু
শেষে রুজিৎ-সিংহ আপন নামানুসারি
জল নাইলেন এবং এখন তাঁহা কাপ্তানীর
যেখানে তাঁহার আঁজা চমিত্তেছে ও সেখা
নকার ডাং কিল্লাতে তাঁহার নিপাতন
ওঁড়িতেছে কিন্তু নবাবের পক্ষিয যেখানে
যে অধিকার করিয়াছেন সেখানকার
লোকেরদের সহিত স্তুতি নাই কেবল
তোমার মাত্রে অধিকার করিয়াছিলেন তি
নি, যাবৎ তৎপুত্রের আসেন তাঁহা-ই
তাঁহের আঁজা তাঁহারা রাখা তিন কাপ্তানী
রে গোল না আনি তাঁহারা কি খেলা
খেলেন।

আদালত।

ইংলণ্ড দেশে সকল পুকার আদালতের
রিপোর্ট বঙ্গের মহাসভার নিকটে
দাখিল হয়। লণ্ডন শহরে এক পুকার
দেওয়ানী আদালত আছে সেই আদালতে
গত বঙ্গের সত্যাইন কোটি টাকার মো
ক দ্বারা লালিন ছিল।

দ্রাবু দেশে হানলিহস্তর।

গত বঙ্গের দ্রাবু দেশে কেবল হা
সিন ডিন কোটি ঘাটি লক্ষ টাকা ও
শত হইয়াছে।

লুতল পুকার রাজকর।

দিনায়ার দেশের নিকটেবর্তী নীয়েন
দেশে তামাকার রাজা এইকন লুতল
পুকার হানলিহস্তর শুক্য করিয়াছে। সে
নর বঙ্গের অধিক বয়স্ক যত লোক
ময় থাকিতে ইচ্ছা করিবেক তাঁহারা বঙ্গ
সর পুতিজল দ্বাং টাকা করিয়া হানলি
হিবেক। এবং যত লোক তা ও
এয়া থাকিতে বাসনা করে তাঁহারা

বঙ্গের নীচ টাকা হানলি হিবেক।
এবং যে ব্যক্তি তামাক থাকিতে ইচ্ছা
করে তাঁহারা যদি তাঁহানল হয় তবে
মানিয়ালা চাউ টাকা এবং দ্রাবু লোক
হইলে মানিয়ালা দুই টাকা হানলি
হিবেক। এবং যত লোক তামা খেলা
করিবেক তাঁহারা বঙ্গের দ্বাং টাকা
হিবেক। যে লোক দেশের বস্তু পরিবর্তন
করিবেক সে বঙ্গের চাউ টাকা হানলি
হিবেক। যে ব্যক্তি স্বদেশে কোন
বস্তু আনি ঘরে রাখিবেক সে চাউ টাকা
হিবেক।

আকর্ষ্য বৃক্ষ।

দক্ষিণাফ্রিকাতে বনে এক বৃক্ষ আছে
তাঁহার নাম দুট্রুব্রু সেই বৃক্ষের কো
ন এক স্থানে ছাতিয়া এক শাখা বিরল
বৃক্ষহইতে যথেষ্ট রস নিগড় হয় তাঁহার
বর্ণ শুভ্র সে রস লোকেরা দুট্রুব্রু
নাম পান করে তাঁহার আশ্বাসন কেবল
দুট্রুব্রু মত কিন্তু অল্প বৈশিষ্ট্য।

ইস্রায়েলের শেখ সমাচার।

পুলক সমাচার পাওয়া গেল যে বুছা
দেশের বাহাদুর মোঃ অমরাপুর আট
ত্রিশ বঙ্গের রাজা করিয়া যিয়াছেন।
৩ জুন তাঁহার পৌত্র সিংহাসনে বসি
য়াছেন। ৭ তারিখে মৃত বাহাদুরের পত্ন
মাহের কারন চন্দনকাঞ্চন স্ত্রী সুগা
দুখদাতিয়া করা গেল ও তাঁহার ওপরে
ই বাহাদুরের রাখিয়া বাড়িয়া ৩ শব
অটু দিল। পরে শবদাহ হইলে তা
হার ভক্ষণ স্বর্ণ পাণ্ডেতে করিয়া সাবধান
পূর্বক যেখানে তাঁহারদের পুত্র পুত্রের
ঘরে ভক্ষণ আছে সেইখানে রাখিল।
এই সকল বিষয়ের পর লুতল বাহাদুর
আপন সিংহাসন গ্রহণ করিয়া রাখিবার

সমাচার দপণ।

জেনা উন্মোচন করিল। সে মনে ভাবিল যে তাহার ভ্রাতৃপুত্রের পরে তাহার মন করিলে ইহা হির করিয়া সে আপন ভ্রাতা ও ভ্রাতৃপুত্র ও কুটুম্ব পুত্র যত ছিল তাহারদিগকে প্রতিজন একা একেদের যাবো পুরিয়া তাহার মুখ হাসিয়া স মুখে ব্রহ্মইয়া দিল। পরে পৌরোহিত্যে তাহার আপন ভ্রাতা তাহার ভ্রাতারদের সহিত মিলিয়াছিল ইহা ভাবিয়া তাহা কে বিরয়া দুই চাকার মধ্য রাখিয়া পুণ্য তাহার শরীরের হাত ভাঙ্গিল। পরে তাহার গলায় রশ্মির ঝাঁপ দিয়া দুই জন দুই দিকে টানিতে লাগিল তাহাতে তাহার শব্দ ভাঙা হইল। এবং এই পৌরোহিত্যের আশ্রয়ভাঙে তাহার স্বহৃদে ভিন্ন করাইল। ১৫ তারিখে সে আপন শিতামের পুত্র ও পুত্র ও আপনাদের আভিভের মধ্য পুত্র ভাগ্যবান তারিখের জনকে পুত্র করিয়া গুন করিল। এবং তাহার ভ্রাতার আভিভ লক্ষ আট চক্রি হাজার চাকার স্বর্নচাকার যত পাত্র পুত্র জিন সে সকল লইল। এবং তাহার ভ্রাতার যে সকল জিন তাহা আসন সৈন্যেরদিগকে বিলি করিয়া দিল। এই দ্বন্দ্বল বাসনা হইতে লোক হতা করি চক্রে তাহার মধ্য তাহারদের ভ্রাতা বহু কুটুম্ব ও পুত্র চাকরপুত্র চৌদ্দ পত্র এবং ইত্যর লোক পৌরোহিত্যের হাজার মাত্রা পত্রিয়ারে। অলঙ্কার ই বাসনা হইয়া আপনদের আর চারি জন ভ্রাতা ও এক ভ্রাতাকে বহু করিল যে তেমির ভ্রাতা ইও অমার সমুখে আসিও। কিন্তু সে পুত্র লোকেরদের

হইতে ভয় পাইয়া জিন বহুসরের হাত করিয়া করিয়াছে।

নৃতন হীন।

আমরা পুত্র জাপাইয়াছিল যে পিতৃকর্ণনামে ওপহীন নৃতন হীন হইয়াছে ও মেথান আদিক পুত্র ও ১৬ জন হীন জন ইংলুয় বাস করিতেছে। এখন সমাচার পাওয়া গেল যে তাহারদের কারন লোহের হাজারি ও পুত্র সাত জন হাজার চাকারে বহু করিয়া তাহার দের লিকটে পঠান গিয়াছে। ১ চাকার সফরের কারন মোঃ বলিকাতার যে ভাগি বান লোকেরা চাকার করিয়াছিলেন তাহা রা অনেক ইংলুয় লোক কিন্তু মীর আ কমানী ও অমৃত রামদুলস দে ওরফা আ কমানী এই বহু জন ভিন্ন দেশীয়।

পাণালের হাতি।

গত তারিখ মাস হইল ইংলুয় দেশে কর্তার লিখিত এক জনকে বহু করা গিয়াছিল সেই কামের কুঠীতে অন্য এক জন বহু ছিল যে ব্যক্তি বহু হইল সে দুই ডিন ঘণ্টার মধ্যে পাণালের মত হইল। ইহা না জানিয়া জেলের অধ্যক্ষ জেলের হার বহু করিয়া চলিয়া গেল। পরে এই পাণাল জেলখানায় অগ্নি জ্বল সেই অগ্নিতে এক লোহার শিক পোকাইয়া রক্তবর্ণ করিয়া অন্য এক দি ব্যক্তিকে তাহার হাতি বহু করিতে না গিল। সে ব্যক্তি চাকার পুত্র করিতে লাগিল তাহাতে কেহই তাহার রক্ষা কর্তা ওপস্থিত হইল না যেহেতু জেলের

হার চারি বহু ছিল। দুই ডিন ঘণ্টার পরে জেলের অধ্যক্ষ আসিয়া চারি মিনিট দেখিল যে সেই ব্যক্তির শরীরে বহু বিস্তৃত হোহের হাতি হইয়াছে। তাহাতে এই পাণালকে পাণালেরদের জেলখানায় লইয়া বহু করিল।

মালাইয়েরদের দুই বহু হার।

সুভার ওপহীনপুত্র ওপহীনপেতে যে সকল মালাই লোক আছে তাহারদের অভিযা নির্ণয় ব্যবহার। তাহারদের প্রতিবুল বহু যদি কেহ কখনও বহু তবে তাহার কমা বহু করে না এবং সে বিঘ্ন কখনও বিঘ্ন হয় না যখন আপন আশ্রয় পাণাল ওপহীন সে প্রতিবুল করির পুত্রিলা দেয়।

তাহারদের এই এক সমাচার সংপুতি আসিয়াছে। মেথান এক জনের পুত্র মেথানকার অনেকের কোনহ বিঘ্ন আকোশ জিন ওপুত্র তাহারক আশ্রয় পাওয়া বহু বহু হাতি করিয়া জেলের পরে তাহার স্বীকে আসিয়া এই মত স্বামির শবের ওপরে তাহারক দীত করা ইল এবং তাহারক করিল যে তোমার ডিন পুত্রকে আপন হাতে কাটি লওয়া তোমার অনেক দুঃখ দিহ। ইহাতে এই স্বীকাতা আপন মৃত স্বামির শবের ওপরে দীতাইয়া আপন ডিন পুত্রকে আপন হাতে কাটিল। পরে সেই সকল মৃত লোকেরদিগকে এক গাঁড়ীর ওপরে চড়াইয়া ও এই স্বীকে গাঁড়ীর শব্দে ভাঙা চড়াইয়া শবেরের মধ্যে দিয়া লইয়া গিয়া সমুদ্রের জেলের মধ্যে এই গাঁড়ী মুখ সকলকে ডুবায়া দিল।

এই সমাচার বর্ণন পুরানপুত্রের হাঙ্গাখাবাতে পুত্রিলাহে পরিবারে হাঙ্গা হু। হাঙ্গার লুতনের আবশ্যক হই তিনি পুরানপুত্রের হাঙ্গাখাবাতে আপন বাহনপাইয়ে লভাবে কারন তাহার দিকটে পাঠান হাইকে তাহার মূল্য মানে এক টাকা মিনি বাবুর করিয়াছেন যদি তাহার দিকটে সমাচার বর্ণন না পাইলে তবে তিনি পুরানপুত্রের হাঙ্গাখাবাতে সমাচার দিবামনি তাহার দিকটে পাঠান হাইকে

কবিবন্ধু
স্বদেশী

৪ সেউম্বুর মন ৪৫ ৪৯। ২০ ভাদ্র মন ৪১ ২৩।

वृत्तान्तानिह आनन्द मन्नाटाग्रम्य दपये ॥

কাগজ কয় করিতে ইহলে শতকরা চারি
আনা ভিন্নকোণ। বিকয় করিতে ইহলে
শতকরা আট আনা ভিন্নকোণ।

| क्र | संज्ञा | परिभाषा | १० | २० |
|-----|--------|---------|----|----|
| १ | ३ | उपनिषद् | १० | ३ |
| २ | ३ | संविदा | ११ | ३ |
| ३ | ३ | संविदा | १२ | ३ |
| ४ | ३ | संविदा | १३ | ३ |
| ५ | ३ | संविदा | १४ | ३ |
| ६ | ३ | संविदा | १५ | ३ |
| ७ | ३ | संविदा | १६ | ३ |

যে যোঁকামে বাঁহাৱা নিৰুভে এই নম্ৰা
তাৰ দৰ্শন শ্ৰুতিমন্তাহ পাঁঠাল বাইভেৰে
বুৰিভে পাৰি যে তাঁহাৱমেৰে মাৰে পুৰা
যোঁকা হেৰে এই যোঁকামে হাইভে আনল,
ঘৰে ঘাইবনে অভাৱ তাঁহাৱকিওঁ
তাৰি আন হেনে ডাকিহা অৰহি হেনে
কান্দিবপৰ্শ হেনে যোঁকামে পাঁঠাইভে
হাইবৈক তাঁহাৱ ডাকিহা বহু সময়ত
এই হৰক্কাৱ মাৱত আনিমি মন্তাহে
যোঁকামে আঁৱাযুৰে তাপাণালৰ পা
ঠাইবনে ইহা নিমিত্ত মম্যাই না পা
ইলে বাঁহাৱ কাৰ্ভে যোঁকালে পাঁঠাল ঘাই
ভেৰে তাঁহাৱ কাৰ্ভা সেইখালে পাঁঠাল
মন্তাহে ইতি।

एकदशमि मयान्तं धर्मन आदिह इहोपाक

তথ্যবি আশ্রয়। কুমিল্লিকায়ের ইন্ডাস্ট্রি
পুস্তিকাটিতে জানা যায়। ম-পুস্ত ৬
আশ্রয় জায়গা গার্লস্কে গোয়েন্দা
শুশ্রূষিত আশ্রয় করিয়াছেন যে ইন্ডাস্ট্রি
নয়। গোয়েন্দা জুড়ি বিকল্পের ইন্ডাস্ট্রি
আজ জানান যাইবে না। কিন্তু
যে জিলায় অষ্টম শতাব্দী পর্যন্তকার অমী
বিকল্প ইহাওক হ'ল। সেই জিলায় কাজ
রিভেট কিম্বা মো-কলকাতায় বোর্ডেরনয়
কাজরিভেট আনা যাইবেক। অতএব
গার্লস্কে গোয়েন্দা অমী বিকল্পের ইন্ডাস্ট্রি
জানিবার শুক্য নাই ও-শুক্য
আশ্রয়িত আশ্রয় জানাইবে না। গার
নামক গোয়েন্দা যে ইন্ডাস্ট্রি হেওয়া
হায়েক সে এই।

পূর্বে যে সকল ইচ্ছাহারদাম্য বাঁকী
দারানের অমী সিনামের বিষয় বোর্ডের
বলুর সেক্টরির দক্ষ্যমান ও সোলাহার
কালেক্টরির কাছারিতে আরি হইত
কাতের সেক্টরির দক্ষ্যমান হইত আরি
হইত এইক্ষণে শুণ্ডে লক্ষ্যে গিরনের
আলিয়েন বাঁকীপুরের সোলমণের মজ
লিনের সন ১৮ ১৯ ইংরেজির ৬ মাহ
আন্ত ডারিয়ের শুধুম মডাবক ইচ্ছা
হার (হওয়া) বাইডেজে যে আকার তা
রিয়াইতে জাণার ইচ্ছাহার আরি হওয়া
মহকু ইহল মডাবক আইন এই ক্ষণ
কেনে কলমের লেখা ইচ্ছাহার বাঁকী
দারানের অমী বোর্ডের বলুর সেক্টরির

স্বাধীনতা ও জেলাহার কালেকটরি
কাজরিভে আশ্রি হইবেক। ইতি তাম্র
১০ আশ্রিত সন ১০৮২ ইঙ্গরেজী বোর্ড
বিবরণ হইবে।

নিম্নলিখিত হইতে ইচ্ছা করি পূর্ণাঙ্গ
হইয়াছে যে মোমাংস ১০ সেপ্টেম্বর তারিখ
থ্যে ও তাহার পর দিন যে পর্যন্ত নির্ধা-
ন হয় তাবৎ মোমাংস কলিকাতার এক
কেন্দ্রে যত্নে রাখা হইবে ততঃ পর্যন্ত মোমাংস
নিম্নলিখিত বিধান হইবেক প্রতিষ্ঠানে এক
হাতীর মোমাংস হইবেক ও প্রতি
মাসে বিদ্যায় নিম্নলিখিত ওজন ও বায়না
কারণ এক টোকা রাখিলে ইচ্ছা করি হইবেক।

যে স্থানে নিম্নক বিক্রয় হইবে তাহার
বেওরা নীচের লিখিত মত দেখিবা।

| | |
|-----------------|---------|
| হিঅনি | ১০০০০০০ |
| ডায়লক | ১০০০০০০ |
| টাই শব্দগোষ্ঠী | ১০০০০০০ |
| ভূপা | ১১০০০০০ |
| চট্টোম | ১০০০০০০ |
| সালিমা | ১০০০০০০ |
| কটেশ্বরী | ১০০০০০০ |
| কটেশ্বরক | ১০০০০০০ |
| মাদ্রাস নদ্রিটি | ১০০০০০০ |
| মহলা | ১০০০০০০ |
| সম্ভবযোগ | ১০০০০০০ |
| ফোক | ১০০০০০০ |
| ফোঁনারায়ালাজ | ১০০০০০০ |

সমাচার দর্পণ।

সরল বিশিষ্ট লোকের দ্বিগত সমাচার
দেওয়া যাইতেছে।

ঐতাবদীতা সৎ সঙ্কত অধ্যাদেশ
অধীয়া এবং তাহার পুত্রিশুকের যথার্থ
অর্থপ্যার পুত্রিশুকের পৌত্রিকের নীচে
অভ্যুত্থম কণে মোঃ কলিকাতার বারিাল
গোষ্ঠি আদিসে ঐবিকুণ্ঠাৎ বন্দো
পাধায় জ্ঞাপি করিয়াছেন। সে পুস্তকের
মূল্য ৪০০ নাচে চারি টাকা পুত্রিশুকের বি
ক্রয় হইতেছে যে মহাশয়ের দিগের
ঐ পুস্তক লইতে মানস হইবেক তাঁহার
মোঃ কলিকাতার জোতাদীকারের পুত্র
জোতা পুত্রিশুকের নিবর্ত শ্রুতিয়ত অঙ্ক
বন্দোপাধিয়ারের বারিাতে উপস্থিত হইয়া
লইবেন। পুত্রিশুকের মূল্য তেলের
সময়ে লইলে ৪০০ নাচে চারি টাকা দিতে
হইবেক জেলের সময়ে না লয়ন চারি
টাকা দিলে পুস্তক পাইবেন। ইতি
তারিখ ১০ ভাদ্র মন ১২১০।

সমাচার দর্পণ।

ঐশ্বর্য।

ঐশ্বর্য ইংল্যান্ড বারিশাহ কলিকাতার
ঐশ্বর্যকে সৎ ভ্রমের দ্বারা (মাতব
এই যেভাবে অনুসারে এক তারকার
কল্পবিশেষ দিয়াছেন ঐ জ্ঞান বৈহার
পাল তাঁহার তাহা আপন বহুস্থলে বা
রন করেন তাহাতে যে যেমন সৎ ভ্রান্ত
ভ্রাহা জানা যায়।

সংপুত্রি মানস্রাজের লোকেরা ঐ তার
কার জ্ঞান হইবলিখিত করিয়া কলিক
তাতে শ্রুতিশ্রুতের নিবর্তে পাঠাইতে রপ্ত
করিয়াছিলেন। এই সমাচার শ্রুতিশ্রুত
পাইয়া তাহার দ্বিগত লিখিয়া পাঠাইলেন

যে তোমরা কোল্লানি বাহাদুরের অজাত
সারে এ বস্তু আমাকে দিবা না এবং এ
বিষয় কোল্লানিকে জাত করাও অনুযুক্ত
যদি কোল্লানি এ বিষয় আজা না দেন তবে
মন এবং যদি আজা দেন তথাপি এই
একটা রীতি হয়। অতএব তোমরা এ
বিষয়ে সজ্ঞ হইবা তোমরা যে আমাকে
পুত্রিশুকের লিখিয়া পাঠাইয়াছ ইহাতে
আমার অধিক তৃষ্ণি আছে এই বিষয়ের
প্রয়োজন নাই।

বাজী।

ইংল্যান্ড দেশে জয় মাত মাস হইল
ইতর লোকেরদের এই এক বায়ু বিশেষ
হইয়াছে যে বাজী রাখিয়া পথে হাঁটে।
তাহাতে এক জন ১০ এলিফে তারিফ
আট ঘণ্টায় পচিশ কোশ পথ হাঁটিয়াছিল
তাহার মধ্যে পথ দুই ঘণ্টায় মাত
কোশ আক্কেশ চলিল। পরে পুত্রিশুকের
দিন কোশ চলিল তাহাতে সে ব্যক্তি
বাজীতে জয়ী হইয়া বাজীর টাকা পাইয়া
ছে। অন্য প্রদেশে আর এক জন বাজী
রাখিয়াছিল যে তিন দিনের মধ্যে এক
শত এগার কোশ চলিবেক। কিন্তু সে
ব্যক্তি তাহাতে অক্ষম হইল যেহেতুক
সে ব্যক্তি একশ ঘণ্টায় এক শত কোশ
প্রায় চলিল আর চলিতে পারিল না।

রজকুখানা।

রজকুখানার পুতান হান মোঃ নমী
রাহান হইতে সমাচার আদিসারে যে সে
খানেন সেনাপতিরদের ঘর পুস্ত হইয়াছে
এবং বানিয়ারদের দোকান বসিয়াছে
সেখানে এক হস্তসরের মধ্যে অক্ষম
এক নুতন শহর হইয়াছে। সে স্থানে
ইংল্যান্ডেরদের অধিক্ত রজকুখানা যে

শের রাজধানী হইল এবং ইসনের জাও
নি সেখানে হইল। আমরা শ্রুতিশ্রুতি
যে শ্রুতিয়ত সর বেবিদ আক্কেলোনী সাহেব
দিল্লীর বাহাশাহ হইতে নমীরদোলী যে
তার পাইয়াছেন ততএব আক্কেলোনী
সাহেবের সজ্জায়া তাহার নমীরদোলী
লামানসারে ঐ স্থানের নাম নমীরাবাহ
রাখিয়াছেন।

সে স্থানে কেবল অলের অনুভূতি কিন্তু
এই বৎসরে সেখানে বৃষ্টি হইয়াছে।
আরো পুত্র বৎসরে যে ভূমিতে কেবল
নিগিরিদের দুর্গাধি যোড়ার পদচিহ্ন
পুত্রশ পাইতেছিল সে ভূমি এখন নানা
শস্যাদিবারো হান্য করিতেছে।

কতক দিন হইল সেখানে একটা যে
দেব বিলা হইয়াছে দুই জন সাহেব
এক দিন গীরা মারিতেছিল ইতোমধ্যে
একটা হাতিগালা পক্ষীর ডংগের গলি মারি
লে ঐ গলি পহিতে না লাগিয়া তাহার
কবইলো এক বালক এ বালিকা খেলা
করিতেছিল তাহার বালকের ডংগের সে
গুলি পড়িলে সে তৎক্ষণাৎ মরিল এ
বালিকা আঘাত্তি হইয়াছে।

কাশ্মীর।

সমুদ্রি শুনা ালে যে শ্রুতিয়ত রজকু
নিহ বাহাদুর আপনি কাশ্মীর দেশে অয়
করিতে যান নাই কিন্তু তিনি আপনার
অতি আত্মীয় তারক শ্রুতিয়ত দেওয়ান চন্দ্র
কে সেনাপতি করিয়া পাঠাইয়াছিলেন।
সেই কাশ্মীরে অধিকার করিয়া আপন
মুদ্রাবলক লভর দিয়াছে। যখন রজকু
নিহ আসিলেন যে কাশ্মীরে আপন অ
য়ত হইয়াছে তখন পুত্রশ করিলেন যে
আপনি কাশ্মীরে দেশে যেখানে যাইবেন
কিন্তু আপনি না গিয়া সেখানে এক জন

সমাচার দর্পণ।

ওপুত্র লোককে অবাক করিয়া পাঠাইতে চেষ্টা করিতেছেন। রণজিৎ সিংহের হাত হইতে কাশ্মীর দেশ যে যায় এমন সম্ভাবনা নাই এবং রণজিৎ সিংহ এই কাশ্মীর দেশে যে রাজ্য ওপুত্র করি বেন এত রাজ্য কাবালের অধিকার কালে কখনও ওপুত্র হয় নাই। এখন শিমেরদের রাজ্য যে বহুকি হইয়াছে সে কেবল রণজিৎ সিংহের বাহাদুরিতে নতুবা পুরু শিমেরদের এমন রাজ্য ছিল না কিন্তু অনুমান হয় রণজিৎ সিংহের অভাবে এই মহারাজ্য সহস্র খণ্ড হইবেক।

হোলকারের কামান।

১৭ ১৭ মনে ঐযুত মহারাজ মহারাজ রাও হোলকারের সহিত যুদ্ধে ইংলণ্ডী যোরা যে কামান হোলকারের দৈন্য হইতে পাইয়াছিলেন। সে কামান যোরা মাদ্রাজে রাখিবার কারন পুরী যশুয় হইয়াছিল মন্তুতি সে কামান মাদ্রাজে প'সজবার পুরী মাদ্রাজের বস মাহেব মুত্তি অনেক ইংলণ্ডী যোরা সমারোহ পুরী পথে আসিয়া এই কামানের সমুদ্রের কারন সেলম করিয়া অসুস্থিয়া ন ইয়া যোরা মাদ্রাজে স্থাপিত করিয়া জেন।

তুলা।

কতক মাস হইল ইংলণ্ডের লিবরপুল শহরে একদেশীয় তুলার দশা অতিশুল হইল ইহাতে সেখানকার মহাজনেরা অতিভীত হইয়া এখান তুলা খরিদ বা রন করিবার কারন শীঘ্র খুসকার পথে লোক পাঠাইল এবং যে দুই জন লোক পাঠাইয়াছিল তাহারা সেখানকেছিল

যে আমায়দের শুল যদি থাকে ও আমায়দের শরীরে হাত যদি না থাকে তবে তিন মাসের মধ্যেই বারিলাতে প'স জিয়া সেখানকার তুলা খরিদ বা রন করিব। কিন্তু তাহারা আসিয়া যে প'স জিয়াতে এমন সমাচার অধ্যাপি পাওয়া যায় নাই।

কলিকাতায় তুলার আমদানী।

১৯ আগস্ট অবধি ১৫ আগস্ট পর্যন্ত অর্থাৎ চয় দিনের মধ্যে কলিকাতায় পৌর হাজার দুই শত চয় মৌন তুলার আমদানী হইয়াছে।

আহাজ।

১ সেপ্টেম্বর মোং কলিকাতায় নানা অতিথির এক শত প'চিশ আহাজ ছিল। গত বৎসরে পুখম আট মাসে পচাশী আহাজ জিনিস বোকাই করিয়া মোং ইংলণ্ড হইতে বারিলাতে আসিয়াছিল। এই বৎসরের পুখম আট মাসে পচাশী আহাজ আসিয়াছে অতএব পুরী বৎসর হইতে এই বৎসরে দ্রুপ আহাজ কম আসিয়াছে ওখানি লোকেরা কহে যে এত দেশে যে তপুলাদির দখল ন্যতা সে কে বল ইংলণ্ড দেশের রজাশিপুত্র।

গরীমানগীর ওপুত্র।

গত দুইবার ১ সেপ্টেম্বর গরীমানগীর ওপুত্রের সন্ধান একত্র হইলেন ও গত বৎসরের সকল দিবস শুভিলেন ও এই সন্ধানের অন্তর্গত যে চারি জন কর্মকর্তা ছিলেন সে চারি জনের বহলিতে অন্য চারি জন পুত্র হইলেন সে চারি জনের মধ্যে তিন জন ইংলণ্ডীয় এক জন এত দেশীয় তিন ঐযুত রাজা গোপীমোহন দেব তাহার বহলে তাঁহার পুত্র ঐযুত

বাবু রাবীন্দ্রনাথ দেব তাহার এক কর্মকর্তা হইয়াছেন।

গরীমানগীর ওপুত্রের বন কাটিয়া সে স্থান সুন্দর সুন্দর হইতেছে ঐযুত জন পামর মাছেব এই ওপুত্রের দক্ষিণ ভাগ সমুদ্রায় বিশ বৎসরের কারন বিনা করে ইতারা করিয়া লইয়াছেন ও এই করার করিয়াছেন যে এই বিশ বৎসরের মধ্যে গরীমানগীরে লোকবসতি করাইব ও নানি ক্ষেত্রে শস্যাদি ওপুত্র করাইব। এবং ঐযুত রাজা গোপীমোহন দেব ও পুত্রিত বাবু হরিমোহন ঠাকুর এই দুই জনে মিলিয়া এই করার সেখানকার ওপুত্র প'চিম কোণে গরীমার তীর আড়াই কোণ পর্যন্ত ভূমি লইয়াছেন।

এই সকল কারন দেখিয়া আমায়দের এমন ভরসা হয় যে গরীমানগীর ওপুত্র অতিশীঘ্র পুত্রের মনুষ্যেরদের অধিকার আসিবে।

বলা।

এই বৎসর গরীমতে বন্যার পুত্রিত বন বুঝা যায় না কিন্তু সমাচার পাওয়া গেল যে বহু মূল পুত্রের দামোদর লবে তে বলা অতিশয় আসিয়া তপুত্রের অনপুত্রিত হইয়াছে এবং গত সম্রাট বহু ও অতিশয় হইয়াছে ওখাতে সে দেশের ওপুত্র অনেক হইয়াছে।

থরগোম ও তাহার মিত্ররা।

এক থরগোম তিরকাল এক বলে বসতি করে এই থরগোম অন্য কোন পুত্র সহিত বিরোধি বিনম্র বরেনা ও কা হারা মনের কথাতে থাকে না এবং সে বলের পাঁচ পুত্র তাহাকে ভাল বাসে ও সকলের সহিত তাহার পরম মিত্রতা এই বহুকি কাল যায়। এক দিন এই বহুকি কাহিনী শ্রীকার করিতে আইল

সমাচার দর্পণ।

ও তাহারদের সহিত অনেক কুকুর আ
ইল। ঐ শ্বারগোঁস দুহাইতে আনবার
পুলনাশক স্বাকারিদের কোলাইল শু
নিয়া ভীত হইল কিন্তু তাহার মনে ভরো
না আছে যে এই বনে আমার অনেক
মিত্র আছে তাহার অংশ এ বিপৎকালে
আমার রক্ষা করিবে। ইতোমধ্যে ভয়া
নক শব্দ করিয়া শুকুরেরা ঐ শ্বারগোঁসকে
আক্রমণ করিতে ধাবমান হইল। শ্বারগোঁ
সও পূর্ণভয়ে অনেক ক্ষণ পর্যন্ত বেঁচেিয়া
শুভ হইয়া অল্পমতল পুণ্ড আঁর চলি
তে অসমর্থ হইল ইতাবনের তাহার
পুত্রান মিত্র যোতা ঐ পথে যাইতেকে
দেখিয়া শ্বারগোঁস বতক আশঙ্ক হইয়া
কহিল যে যে মিত্র আমার এই বিপৎ
কাল উপস্থিত এ সময়ে আমাকে রক্ষা
কর তোমার পৃষ্ঠের ওপরে আমাকে আ
বাহন করিতে দেও তবে কুকুরহইতে
রক্ষা পাইব। যোতা ওত্তর করিল যে
হায় তোমার দুঃখ দেখিয়া আমার অতি
শয় ঘৃণা হয় তাবনা নাই পক্ষা- তোমার
মহল মিত্র আনিতে। পরে এক বল
বান বৃহ আঁল তাহারেও ঐ বনভিতর
বাহ্য কহিল। সে কহিল যে এই বনের
মধ্যে মহলে আনে যে আমি তোমাকে
কেমন প্রেম করি তবএব তাহার মত
তোমাকে কহি তুমি বৃক্ষের নীচে এক
গাধী আমার অশ্রুক্ষেতে আঁজনে আমি
বিলম্ব করিতে পারি না তুমি ইহাতে কুজ
হইও না তোমার সহিত আমার বড়
প্রীতি দেখে পক্ষা- চলিল আনিতেকে তা
হার পৃষ্ঠে আরোহণ কর। পরে ঐ শ্বার
গোঁস জাগিলে নিকটে গিয়া ঐ বন ক
হিল। তাহাতে চলিল কহিল যে আ

মিও শূন্য আমার চক্ষু ভারী ও আমি
মস্তক দ্বির রাখিতে পারি না কিন্তু ভয়
নাই পক্ষা- মেঘ আনিতেকে। মেঘ
কহিল আমি আপনি দুর্বল আঁপল যো
য়ের ভার সহিতে পারি না ও যেমন
কুকুরহইতে তোমার ভয় তেমন আমারও
ভয়। পরে সে দুখার শ্বারগোঁস গৌরব
নকে কহিল যে মিত্র আমাকে মুক্তহই
তে রক্ষা কর। সে কহিল যে আমি
দুর্বল হইয়া এমন বর্ষা করিব যে কর্ম্ম তা
মাইহাতে বলবানরা করিল না যদি আমি
তোমাকে ওদ্ধার করি তবে আমার ঐ
মহল মিত্রেরা কি করিবে তুমি জান যে
আমি তোমাকে কেমন প্রেম করি কিন্তু
অতিশয় বস্তি ও ভিন্ন হইবেই সেলায়
মেঘ কুকুর আঁপলপুণ্ড।

পৃথিবীর মধ্যে এমন স্থান নাই যে
ইহার অভিশূন্য না দেখা যায়।

ভূত।

ইংলণ্ড দেশে মৃতিকার মধ্যে কোন
স্থানে পাথরের কয়লা আছে তাহার
ভূমিতে ঐ পুষ্কার কয়লা থাকে সে
তাঁহা মৃদুয়া কয়লা বাহির করিয়া বিক্রয়
করে তাহাতে কোন স্থানে মৃতিকার
মধ্যে এক কোণ পর্যন্ত লোকেরা খনন
করিয়া কয়লা বাহির করে এই বন কয়
লার আঁকর অনেকের ভূমিতে আছে ও
তাঁহাতে অনেকের যথেষ্ট লাভ হয়।
ঐ কয়লার আঁকরে ভূত থাকে এমন পু
বাদ লোকে কহে। এক অনেক চাক
রেরা ঐ কয়লা বাহির করিতে পুতাহ যায়
কিন্তু ভালমাপুযুক্ত দৃষ্টতা করিয়া আঁপল

মুণীকে কহিল যে যে মহাশয় আমার
ঐ আঁকরে ঘাইতে পারিব না যেহেতু
সেখানে আজ অনেক ভূত দেখিয়া
আমরা ভয় পাইয়াছি। এই শর্ততার
কথা শুনিয়া তাহার মুণী কহিল যে
আমি নিশ্চয় জানি যে বস্তি দুঃস্থ হয় তা
হার নিকটেই ভূত আইনে কিন্তু আমার
যে চাকরের নিকটে ভূত আনিবে সে
চাকরকে অতিদ্রুত করিয়া আনিব তাহা
কে তখনি চাকরহইতে দূর করিবা।
এই কথাতে তাহার আঁর কখনও ভূত
দেখা গেল না।

আশঙ্ক্য কর।

সম্রাট আমেরিকা দেশে এক নদীর
তীর খনন করিতে এক কবরস্থান পুণ্ড
দেখা গিয়াছে সে এক পুষ্কার আশঙ্ক্য।
সেখানে যত মৃত লোক আছে তাহার
দের অঙ্গ পুতায় আবৃত আছে কিন্তু রূপ
করিবামাত্র সে মহল ঘূর্ণ হইয়া যায়।
দেখা গেল যে পুষ্কার করিয়া তাহারদি
গকে কবরে রাখা গিয়াছিল। সেখানে
যত মৃত লোক পাওয়া গেল তাহারাই
হাতের তবিক লম্বা কেহ নয় এবং তা
হারদের মস্তক ও দন্ত পুত্ৰিত মসলি ইয়া
ছাঁড়ন মালুমারদের মস্তক ও দন্তের মত
কেবল দীর্ঘতাতে নূন ইহাতে অধির
আশঙ্ক্যজন্য হয়। এই অনুমান
হয় যে তৎপুর্বেশে তৎকালীন লোকের
দের এই বন আঁকর ছিল যেহেতু
পৃথিবীর মধ্যে এমন কবরস্থান নাই যে
সেখানে কেবল মৃত বালকেরা থাকে তা
হা এবং বালকের মস্তক ও দন্ত স্বভাবতঃ
ক্ষুদ্র হয়।

এই সমাচার দর্পণ পুরীমপুত্রের ছাপাখানাতে পুতিনজাহে পনিবারে ছাপা হয়। বাহার লগনের আবশ্যক হয় তিনি পুরীমপুত্রের ছাপাখানাতে
আপন নাম পাঠাইলে সত্তায়ে কাহার তাঁহার নিকটে পাঠান যাইবেক তাহার মূল্য মানে এক টাকা যিনি বাছুর করিয়াছেন যদি তাহার নিকটে
সমাচার দর্পণ না পঁহেছে তবে তিনি পুরীমপুত্রের ছাপাখানাতে সমাচার দিবামাত্র তাঁহার নিকটে পাঠান যাইবেক।

সমাচার দর্পণ

৩৯ নং পৃষ্ঠা ।

শনিবার ।

৪৪ সেপ্টেম্বর মসল ১৮৬৯ । ১৭ ভাদ্র মসল ১২১৩ ।

দর্পণে মুখ পৌরোহিত্য কার্যবিবরণঃ ।

বৃহত্তান্ত্রিক জানকী সমাচারদ্বারা দর্পণে ॥

কোম্পানির কাণ্ড ।

কোম্পানির শতকরা চতুর্থাংশের সুদের কাণ্ড হয় করিতে হইলে শতকরা আট আনা ভিজকৌণ । বিক্রয় করিতে হইলে শতকরা বাহো আনা ভিজকৌণ ।

সমস্তের পঞ্জিকা ।

| ১১ | সেপ্তেম্বর | শনিবার | ১২ | ভাদ্র |
|----|------------|-------------|----|-------|
| ১২ | ২ | রবিবার | ১৩ | ৩ |
| ১৩ | ৩ | সোমবার | ১৪ | ৪ |
| ১৪ | ৪ | মঙ্গলবার | ১৫ | ৫ |
| ১৫ | ৫ | বুধবার | ১৬ | ৬ |
| ১৬ | ৬ | বৃহস্পতিবার | ১৭ | ৭ |
| ১৭ | ৭ | শুক্রবার | ১৮ | ৮ |

ইস্তাহার দেওয়া যাইতেছে ।

যে মোকামে যাঁহার নিকটে এই সমস্ত চার দ্বারা প্রতিমস্তাহে পাঠান যাইতেছে বৃত্তিতে পারি যে তাঁহারদের মধ্যে পূজা দেওয়া হইবে এই মোকামেই হইতে আপনাদের ঘরে যাইবেন অতএব তাঁহারদিগের কাণ্ড কোন ভাঙ্গিয়া অহবি কোন ভাঙ্গিয়াপর্ন্ত কোন মোকামে পাঠাইতে হইবেক তাঁহার ভাঙ্গিয়া বন্ধ সমাচার এই হরকরার মাধ্যমে আশ্রয়িত মস্তাহে মোকামে আশ্রয়িতের ভাঙ্গিয়াপর্ন্ত পাঠাইবেন ইহার লিখিত সমাচার না পাঠাইলে যাঁহার কাণ্ড যেখানে পাঠান যাইতে তাঁহার কাণ্ড সেইখানে পাঠান যাইবেক ইতি ।

নিমকের ইস্তাহার ।

নিমকদস্তুরইতে ইস্তাহার পূজার ইয়াতে যে মোকামে ১০ সেপ্তেম্বর তারিখে ও তাহার পর দিন যে পর্যন্ত নিমক না হয় তাৎ মোকামে কলিকাতায় এক সেক্টর ঘরে কোম্পানির ডের লক্ষ মোন নিমক বিক্রয় হইবেক পুতিলাটে এক হাজার মোন বিক্রয় হইবেক পুতি মোন বিরাশী শিকার ওজন ও বায়লার কারণ এক টাকা দাখিল করিতে হইবেক । যে স্থানে নিমক বিক্রয় হইবেক তাহার বেওয়া নীচের লিখিত মত দেখিবে ।

| | | |
|---------------|-------|--------|
| হিজলি | | ৩০০০০ |
| তামলুক | | ১০০০০ |
| চাঁদীপুয়া | | ১০০০০ |
| ভুলুয়া | | ৪১০০০ |
| চাঁদীপুয়া | | ৩০০০০ |
| মালিখা | | ০ |
| কটকপারি | | ১০১০০৪ |
| কটককরক | | ৮১২ |
| মন্দরাজ পরিঘট | | ১৬৮৮২ |
| মুকল | | ১৪০ |
| মঙ্গুরহোম | | ৪৯২ |
| ফোকা | | ৪৪৭ |
| নারায়ণগঞ্জ | | ৪৮০ |

সমাচার দর্পণ ।

জুমিকল্প ।

মো- বোম্বাইয়ের নিকটে ভূজ নামে এক শহরে ১৩ জুন অর্থাৎ ১৭ জুলাই পর্যন্ত পূর্ণ পুণ্ডিন জুমিকল্প হইতেছিল

কোন জুমিকল্প হইতে কোনটা বা হইতে হইতে গণকেরা নান। পুকার মিথ্যা বৈধী কথা কহিয়া লোকেরদিগকে পুতারনা করিয়া বিন লইয়াছে । এক দিন এক বুড়ুর কলীর ইংগিতেরদের জাওনির মধ্যে আশ্রয়িত হইতেছিল কহিল যে তোমরা শীঘ্র যাবো যে জুমিকল্প হইতেছে ইহাতে তোমাদের মৃত্যু হইবেক অতএব আমি তোমাদের কারণ প্রার্থনা করিয়া তোমাদের দিগকে বাঁচাইব । এই কথ পুতারনা বাক্য অনেক কহিয়া অনেক টাকা লইল । শেষে লোকেরা তাঁহার পুতারনা বৃত্তিয়া তাঁহাকে জাওনিহইতে দূর করিয়া দিল ।

রাজ কমেদিয়েণ ।

১৮ আগস্ট খ্রীষ্ট ১৮৬৯ সালে বন্দেলখণ্ডে ও নন্দাবানদীর ওয় পাঁচ অল্পবু বংশে ইংগিতেরদের অধিকার পেকার ।

খ্রীষ্ট জন নিমসন সাহেব বন্দেলখণ্ডে ও নন্দাবানদীর ওয় পাঁচ অল্পবু বংশে ইংগিতেরদের অধিকার দিতায় পেকার ।

ওলাঙা ।

সমাচার পাওয়া গেল যে বোম্বাই প্রদেশে ওলাঙা রোগ অতিবিক্রম হইয়াছে এবং হজিরে কোকিন দেশে ওলাঙা রোগে অনেক লোক মরিষেছে তাঁহার রূতি এই এক দিন অল্প এক দিন অতিপূর্ণ হইবে । এবং লক্ষ্যদেয় পুর্বে অনেক রক্ষন

সম্রাচার দর্পণ।

জিল এখন এলাউকাল রাহমে অনেক
লোককে খাইতেছে।

তার।

গৌদ ঘেলে পঞ্চমুনি নামে এক মহা
পণ্ডিত আছে তাহার মতে এক মহাওহা
মেখানে এক শিরমুখি আছে। এবং
ঐ পণ্ডিতে এক কুল আছে ঐ পণ্ডিতইহাতে
ঐ কুলের মতে বিদ্যু জল সর্ষা পড়ে
সেই কুলেতে সূর্য্যার্থ ও সে তীর্থদর্শনার্থ
বৎসর ১ অনেকে লোক যাত্রা হয় ও সে
তীর্থ অতিপুণিক এবং সেখানে স্কোলে
করা কেহল সুল সুজায়ে যায় না কিন্তু
তাঁহারা যদ্যে যায় তাঁহা স্থলিলে দয়াসু
লোকেরা কর্তে হাত দেয়। যখন কোন
শ্রী বন্ধ্য নিষ্ঠুর হয় তখন সে ঐ পণ্ডিতে
দিয়ে লিখে যায় ও নানাবিধ পুণ্যদি
দ্বারা শিব পূজা করিয়া শেষে পুণ্যনা
করে যে হে মহাদেব তোমার পূজার্থ
আমার যদি সন্তান তবো তবো পুণ্য
আত সন্তানকে এই পণ্ডিতইহাতে এই
কুলের মতে গড়াইয়া ফেলিয়া দিব। এই
কন মানস করিয়া সে স্ত্রীরা ঘরে যায়।
দৈববাং যদি তাঁহারদের মতে কাহারো
সন্তান জন্মে তবে ঐ কন পুণ্য আত স
ন্তানকে ঐ মহাপণ্ডিতের গুণেইহাতে গড়া
ইয়া ফেলিয়া দেয় বালক তখন মরি
য়া কুলের মতে পড়ে। এতৎ বৎসর
নাই যে সেখানে এক দুই বালক এই
কন না মরে।

কতক মান ইহল এক স্ত্রী লোক সে
খানে আইল ও কহিল যে আমার মাতা
এই স্থানে আমাকে পণ্ডিতের গুণেই ফেলি
তে মানস করিয়াছিলেন তিনি দয়াসু
ক আমাকে ফেলিতে পারেন নাই আত
এব আমি আপনি পড়িয়া মরিতে আসি
মাত্রি নতুবা আমার মাতার পান ইহাবে।

ইহা কহিয়া ঐ স্ত্রী যেখানেইহাতে কুলের
মতে পণ্ডিতে হইবে এমন স্থানে পুস্ততা
হইয়া বসিয়াছে ইতোমধ্যে তদন্তপরা
শি নাহেরো ঐ সম্রাট শুনিয়া মেখানে
গেলেন ও দেখিলেন ঐ স্ত্রীর বয়সক
ত্রিশ বৎসর ও তাঁহার হাতে এক ছুরি
ও এক আঘাত ও এক নাড়িকেল মল সে
স্ত্রী কখনও ও অতি কদাচারী এবং সে
স্ত্রী মতে দেব ভক্ততা এই শ্রুত করিয়া
ওষ্ঠিতে ঐ নাহেরো তাঁহার মরনের
কারণ জিজ্ঞাসা করিলে সে স্ত্রী ওত্তর ক
রিল যে আমার বিবাহ ইয়াছিল কিছু
দিন পরে আমার স্বামী মরিল পরে কিছু
দিন বিনম্বে আর এক স্বামী করিলাম
সেও মরিল। তাহাতে আমি পা
গল হইয়া সর্বত্র গমনাগমন করি ও যে
খানে পাই সেইখানেই খাই ইহাতে
আমার আতি গোল ও আতি কষ্টদ্বারা
আমাকে ভাগি করিল। পরে আমার
মলে পড়িল যে আমার মাতা আমার
বিষয়ে এই মহাদেবের লিখে মানস
করিয়াছিলেন কিন্তু তাহা নিছ করেন
নাই ও পুণ্য আমার এত দুরবস্থা ইহ
তেছে আতএব আমি আপন মাতার
মানস পূর্ণ করিতে ওদ্যোগ করিয়াছি।
পরে ঐ নাহের লোকেরা ও ব্রাহ্মণেরা
তাঁহাকে ঐ কলে মরিতে অনেক বার
করিল। সে তাহা মানিল না বরং সে
স্ত্রী সুদ্ধা হইয়া আপন হাতের নাড়িকেল
ফেলিয়া এক ব্রাহ্মণকে মারিল কিন্তু নাড়ি
কেল ব্রাহ্মণের গায়ে না লাগিয়া এক
পাথরে লাগিয়া ভাঙ্গিয়া গেল। পরে
নাহেরো তাঁহার নিতান্ত মরনের
বুঝিয়া ফাস হইয়া মেখানেইহাতে গ
লেন। পরে ঐ স্ত্রী মরিবার কারণ ওষ্ঠিয়া
পণ্ডিতের পুণ্যদেব পণ্ডিতের গুণেইহাতে
কুলের মতে দৃষ্টিপাত করিবারান্ত আত

কে মুর্খপন্থা হইয়া পণ্ডিতের গুণেই
পড়িল। তখন শ্রীমুখ করল আদম
নাহেরের অমাদার তাহাকে পড়িয়া নাল
শ্রুতপা দ্বারা তাঁহার মুর্খতা করা
এবং নানামিষ কথাদ্বারা তাহাকে বুরা
ইল ও অনেক পুণ্যেইহায়া গুণত
আন্ত্র নাহেরের লিখে লইয়া গেল। না
হের ও তাহাকে যথেষ্ট পণ্ডিতিক
দিয়া তাঁহার অপমৃত্যু বারণ করিলেন।
সে দেশে নারায়ণের রাজার আদী কিন্তু
ইংলণ্ডীয়েরদের অধিকৃত নহে।

কলিকাতায় স্কুল মোদামিটির ইচ্ছা।
গত সপ্তাহে শনিবারে ১০ ভাদ্র মো
কলিকাতায় গুণত রাজা গোপীমোহন
দেবের বাড়ীতে কলিকাতার বারীলা গ
শালায় বালকেরদের ইচ্ছা হইয়াছে
পূর্বে নিজ কলিকাতা ও গুণময়র ও দু
কা পুণ্ডিত নগরের পণ্ডিত ও ভাগ্যদান
লোকেরদের আত্মনার্থ এক নগ্ন গিয়া
জিল তাহাতে অনেক পণ্ডিত ও জন
বাল আত ভাগ্যদান ইংলণ্ডীয় লোক ও
বারীলা লোকেরদের সমাগম হইয়াছিল
এবং দেহ শত বালক সেখানে পুণ্ডিতে
ইচ্ছা হইয়া দিয়াছিল তাহাতে সে মর
বালকেরদিগকে গলা পণ্ডিতে ওপ
মেথিয়া মরলেন সন্তত ইহিলেন ও তাঁহার
দের শিগগেরা পুণ্ডিত মরকারইহাতে
ওপুণ্ডিত পারিতোষিক পাইয়া পণ্ডিত হ
ইল। ইচ্ছা হইয়া সাত দিন মধ্যে
সময়ে আরন্ত হইয়া জয় ঘণ্টাধাঙ্ক হ
ইয়াছিল।

শ্রীমুখ বাজিও পেশোয়া।

শ্রীমুখ বাজিও পেশোয়া মহারাজের
সহিত ইংলণ্ডীয়েরদের যুদ্ধান্ত কালে
তিনি যখন আপন দেশইহাতে পলায়ন

সমাচার দর্পণ।

করেন তখন তাঁহার হাতে ক্রিষ্ট মণি ও বিন ছিল তাহা লইয়া ঘাইতে পারি নেন না। পরন্তু গৌননে রাখিয়া ঘাইবার অনেক চেষ্টা করিত হইয়া মোক্ষ বোধই যেরূপ এক মহাজনের নিকটে গুণ তাব ন্যস্ত করিয়া আপনি গুণ হইলেন কিছু কাল পরে সে বিষয় শ্রীশ্রীমুখের নিকটে প্রকাশিত হইল তাহাতে ইংলণ্ডীয়েরদের এই ব্যবস্থা আরে যে ইংলণ্ডীয়েরদের সহিত যে যুদ্ধ করিতে প্রবৃত্ত হয় তাহার টোকা যদি ইংলণ্ডীয়েরদের অবস্থিত দেশে থাকে তাহা ইংলণ্ডীয়েরা কোক করিতে পারেন কিন্তু সে টোকা ইংলণ্ডীয়েরা বাননা করিলে লইতে পারিতেন তাহা আপনারা না লইয়া বোম্বাইয়ের অমানতে সেই মহাজনের নামে কোকালি বাহাদুর নামিন করিলেন পরে সে বিষয় ওভয় প ফায় মাস্কিরের দ্বারা কোকালি বাহাদুর অগ্নি হইয়াছিল।

মোরকুর সুন্দর বিচার।

কতক দিন হইল আমেরিকা দেশের মোরকুর নামে রাখে মোখানকার এক জন বিনবান গৃহস্থী লোক এক ব্যক্তি মুসল মান মহাজনকে আপনার কার্যপেশা কী বন্ধ আনিতে আত্ম করিল। পরে ঐ মহাজন বহুমান অরুদ রঙ্গের বন্ধ আপন টোকা কর করিয়া ঐ গৃহস্থী লোকের নিকটে গুণিত হইল। পরে সেই গৃহস্থী লোক অনেক ফলপাশ্চ ঐ কাপড় দেখিয়া অনেক বিবেচনা করিয়া সে কাপড় ফিরাইয়া দিল ও কহিল যে এই কাপড় আমার পসন্দ হইল না অতঃ এই আমার পুণ্যজন নাই। পরে ঐ মহাজন অত্যন্ত গুণিত হইল অনন্তর সে বিবেচনা করিয়া তথাকার বাহাদুরের নিকটে নামিন করিলে বাহাদুর গুণ করিলেন যে যদি গৃহস্থী লোক তোমার

কাপড় পসন্দ না করে ও না কয় করে তবে আমি তাহার ক্রি করিতে পারি। ঐ মহাজন ইহাতে আরো ভাবিত হইয়া আপন ঘরে গেল যেহেতুক সে আপন সর্বম্ব ব্যয় করিয়া সে বন্ধ কয় করিয়া আনিয়াছিল তাহা অনাত্ত বিক্রয় হওয়া জার। কিছু দিন পরে বাহাদুর ঐ গৃহস্থীর দ্বিতীয় জিরাইলেন ও আত্ম করিলেন যে অরুদ রঙ্গের পেশা ও কাল পাগজী যে গৃহস্থী লোক বিনবান করবে তাহার অবশ্য পুণ্যদত্ত হইবেক। এই আত্ম হইবামাত্র তাহা গৃহস্থী লোকেরা ঐ মহাজনের নিকটে গিয়া বরং অধিক মূল্য দিয়াও সে সমুদয় অরুদ রঙ্গের বন্ধ কয় করিয়া লইল। ইহাতে ঐ মহাজনের যথেষ্ট লাভ হইল।

লোকায় ডাক হইত।

গত ১৭ জুন তারিখে বিলাইতী জি নিম বোম্বাই এক লোকা পক্ষিম দেশে ঘাইতেছিল ও শুঁড়ের মোহনায় সেই লোকাতে রাগিছিল কতক ডাকাইতেরা আসিয়া পড়িল পুথ্য তিন জন দাঁড়িত আঘাতী করিয়া তাহারদের সর্বম্ব লইল পরে মাথি ও চোকাহারের সর্বম্ব লইয়া বিলাইতী জিনেসের সিন্ধু জাছিল তাহাতে কেবল সরাঙ্গ জিল তাহা লইয়া তাহা রা পলায়ন করিল পরে মোখানকার থানা দুরকে সমাচার দেখ্যা গেল থানাদার আসিয়া অনেক তদারক করিল ও অজ সাহেবের নিকটে সমাচার দিলে তিনি সর্বম্ব ইচ্ছা হইল দিলেন কোন পুকারে সেই ডাকাইত বেরা যায় পরে তাহার ক্রি হই য়াকে তাহা জানা যায় নাই।

গরীর ভাঙ্গন।

কতক দিন হইল এক লোকা কলি

কাঁতা হইতে পক্ষিম দেশে ঘাইতেছিল তাহাতে অনেক তদারক জিল পরে গয় নাবাদের নিকটে দাঁড়িত গুন টানিয়া ঘাইতেছিল এই সময় গরীর ভাঙ্গিলে কাঁতা ভাঙ্গিয়া পড়িল তাহাতে লোকা তথানি অলৈ তুরিয়া গেল তাহাতে এক ব্যক্তি বুজবানী মরিল ও অঙ্গুরের অনুঘন করিতেছে বটে কিন্তু অনুমান হয় সে তালবের অনুঘন কহাট পাঁহিতে পারি বেক না।

আশ্চর্য শিশু।

সুত্রি আশী বৎসর হইল এক জন শিশু ইংলণ্ডদেশে এই এক আশ্চর্য শিশু করিয়াছিল একটা খানার মেজ তাহাতে দুই জন বসিয়া আরে একটা খানার বা মন চৌয়াল্লিশমান ও তিন শত ঘাট তা মত এক দুই টারি জন মেদমুৎগার ও কতক আয়না ও ডাম খেলিবার মেজ ও তাহার সরঞ্জাম ও বারোখান চৌকী এই সকল অতিশুদু করিয়া নির্মাণ করিয়া একটা তেলের খোনার মাঝে ঐ সকল বসাইয়াছে অতঃ এই আশ্চর্য শিশু গর করিয়াছিল।

নূতন সমাচার।

গত বিবরে ইংলণ্ড হইতে দুই আত্ম মোক্ষ কলিকাতে পুণ্ডিয়ায় সেই দুই আত্ম তিন মান নয় দিন ইংলণ্ড জাতিয়াছিল তাহার অতিশুদু পুণ্ডিয়ায় তাহা আশ্চর্য বোধ হইল। ঐ আত্ম এই সমাচার আনিয়াছে যে কোকালি বাহাদুর কলিকাতার শ্রীশ্রীমুখের বিশ বৎসরপাশ্চ পুণ্ডিয়ায় চারু হাজার টোকা পারিতোষিক দিবার বন্ধ করিয়া জিলেন এই বিষয় আমরা পুণ্ডিয়া জাতি ইয়াইলাম। ঐ বিষয় ইংলণ্ডে বাহাদুরের

সমাচার দর্পণ।

ওকীলের লিষ্টে কোয়ানি বাহাদুর জিআ
মা করিয়াছিলেন তাহাতে ঐ ওকীল
কহিলেন যে বাবীলা রাডো তোমার
দেহে অবিকার আর শোনির বৎসরপর্যন্ত
আছে এই পৌনর বৎসর তোমরা দিতে
পারিবা তাহার পর পাঁচ বৎসর তোমরা
কোথায়ইতে দিবা। ইহা শুনিয়া কোয়ানি
মানে করিতেছেন যে শ্রুশ্রীযুক্তকেশি
বৎসরের দেয় টাকা হিসাব করিয়া এক
বারে মেন কিন্তু তাহার দ্বির হয় নাই।

ইন্দ্রপে লোকেরা এই বৎসর তলু
মানে করিতেছে যে এই বৎসর আটটি
কোটি টাকা কর্তব্য ব্যতিরেকে সরকারের
দ্ব্যত চলিবে না যেহেতুক রাডো যে
রাবত ৬৫-পন্ন হইতেছে তাহাতে এ
বৎসর দ্ব্যত কল্যাইবে না।

অম্মি দেশেইহাতে সমাচার আনিয়া
ছে যে মেমানার লোকেরা বোলাপাওঁর
বিষয় স্থিষ্টি সন্ধান করিয়াছে। বোলা
পাওঁ এক ওপনীপে কদমের মত আছে
নগর লিকটে কেহই পত্রাদি পাঠাইতে
পারে না ও তিনিও কাহাকেও পত্রাদি
লিখিতে পারেন না কিন্তু সমাচার কাগ
জ তাহার লিকটে পাঠাইতে শুক্কায় আছে
অতএব তিনি সমাচার পত্র পাইয়া দেশের
বৃত্তান্ত জ্ঞানিতে পারেন। ঐ সমাচার পত্র
জাগীকারদের সহিত তাহার যোগ
আছে জাগীকারিগণ সমাচারপত্র যে
জাগী করে তাহাতে দূর্য করিয়া বোলা
পাওঁর অভ্যন্ত সমাচার সঙ্কেতসম
জাগে তাহাতে মায়ালা লোকেরা
মায়ালা সমাচার জ্ঞান করে। বোলাপা
ওঁর বোলাপাওঁ পুস্তক অর্থব্রহ্ম। কিন্তু
ওঁর অযোগ্য এইকণ বুদ্ধি প্রাথম্য ঐ বৎ
সর আনয়ন হয় যে আপন মনোভাষ্য বৃত্তা
ন্ত তাহারদিক্কে অন্য কোন ওপায়

হারা তিনি আনল। অম্মিগণ লোকেরা
বোলাপাওঁর এই বৎ বুদ্ধিকৌশল বা
হির করিয়াছে।

মিথ্যা নোট বারণ।

ইংলণ্ড দেশে বাক্সনোট আট টাকার
অনেক আছে ও ঘোল টাকারও আছে
কিন্তু অন্য টাকার নোট অল্প সেখানে
অনেক দুখ লোকেরা মিথ্যা বাক্সনোট
করিয়া বাজারে বিক্রয় করে ও আপনাদ
দের লাভ করে ইহার বারণ করিবার
কারণ অনেক দিন পর্যন্ত তৎকে ওপায়
করেন ইহাতেও কিছু সন্তোষিত কতক
বুদ্ধিমান লোকেরা এই পরামর্শ দ্বির
করিয়াছে যে বাক্সনোটতে যে অলের
দাগ আছে ঐ দাগেতে এমন কোন কাঁরি
গরি করা যায় যে তাহাতে লক্ষ টাকা
বায় হয়। লক্ষ টাকা বায় ব্যতিরেকে সে
দাগ কখনও নিক্ক না হয় তবে যে ব্যক্তি
মিথ্যা নোট করবে তাহার সে নোট ঐ
দাগ বিনা পুঁহা হইবে না সে দাগও ল
ক্ষ টাকা ব্যতিরেকে হইতে পারে না অত
এব সে দুখ লোকেরা এমত নির্দোষি নয়
যে লক্ষ টাকা বায় করিয়া অল্প লাভ করি
বে। এই পরামর্শ দ্বির হইয়াছে।

আশ্চর্য্য বালক।

আমেরিকা দেশে আশ্চর্য্য এক বালক
জন্মিয়া চৌদ্দ বৎসরবয়স্ক হইয়াছে
তাহার পিতামাতা অতিদুখী ছিল ঐ
বালক সর্বদা ভাল খেলাতে আশ্রিত থা
কিত। লিখা পড়া কখন করিত না এবং
আনবান লোকের সহিত আদম্ভও করি
ত না কিন্তু তাহার মাত বৎসর বয়সের
ময়মে তাহার পিতা কোন বিষয়ের একটা

হিসাব করিতেছিল ঐ বালক তাহা শুনিয়া
মাত্র তৎক্ষণে সে হিসাব করিল ইহাতে
তাহার পিতা অতিশয় আশ্চর্য্য আন করিয়া
অনেক লোকের লিষ্টে তাহাকে লইয়া
গেল তাহাতে সকলেই আশ্চর্য্য আন
করিল যেহেতুক যে কোন ব্যক্তি তাহাকে
যে হিসাব দিত তাহা সে শুনবামাত্র
সে হিসাব দ্বির করিয়া বলিত। পর
এক দিবস সে বালক চিত্রাচার মত
খেলা করিতেছিল ও একটা নিশান হাতে
করিয়া দৌড়িতেছিল। এই কালে
এক জন মাছেব তাহাকে জিজ্ঞাসা করিল
যে আমায় বৃত্তিময় জাতিশ বৎসর হই
য়াছে ইহাতে কত বিপুল আছে। ইহা
শুনিয়া সেই বালক খেলা করিতে থাকা
যোগ্য না করিয়া তৎক্ষণে সে হিসাব
করিয়া উত্তর করিল। পর মাছেব হিসাব
করিয়া দেখিলেন যে বালক যে হিসাব
করিল সে পুস্তক হইল পর আর এক জন
মাছেব এক বিষয়ে অধিক তৎকির তত
দুখের একটা হিসাব পুস্তক করিয়া রাখিয়া
তাছাড়া বিষয়মাত্র জিজ্ঞাসা করিল। তাহা
করিয়া তৎক্ষণে সে হিসাব করিয়া দিল
সে হিসাব মাছেবের হিসাবের সহিত
তম্যাত পড়িলে মাছেব কহিল যে তুমি
জুলিয়াছ তৎক্ষণে বালক কহিল যে আমি
জুলি নাই মাছেব জুলিয়াছেন পরে মাছে
ব পুস্তক আর এক ঘণ্টা শুম করিয়া হিসাব
করিলেন। তাহাতে মাছেবের জুলি
শঙ্ক্য হইয়া বালকের হিসাব মত হইল
এমত আশ্চর্য্য দেখিয়া আমায়দের বোঁ
হয় যে আমায় যে পুস্তকের হিসাব দি
সে, কণে সে করে না কিন্তু ঐশ্বর্যমত কো
লুভ পথ পাইয়া থাকিবেক।

এই সমাচার দর্পণ শ্রীরামপুরে হাণাধানতে পুতিসভাহে পরিবারে জাগা হয়। তাহার সত্তমের আবশ্যক হয় তিনি শ্রীরামপুরে হাণাধানতে
আপন নাম পাঠাইলে সভাহে কাল তাহার দিকটে পাঠান হইবেক তাহার মূল্য মানে এক টাকা তিনি বাবুর করিবেন বাহি তাহার দিকটা
সমাচার দর্পণ না পছন্দ তবে তিনি শ্রীরামপুরে হাণাধানতে সমাচার বিদ্যাবান তাহার দিকটে পাঠান হইবেক।

সমাচার দর্পণ

৭২ সংখ্যা।

শনিবার।

৪৮ সেপ্টেম্বর সন ১৮৬৯। ৩ আশ্বিন সন ১২৯৩।

দপণে দুঃখ সৌন্দর্যমিব কাব্যবিতরণাঃ।

বৃদ্ধান্তিমহি কানন্ত সমাচারস্য দপণে ॥

কোল্লানির কাণ্ডার।

কোল্লানির শতকরা জয় টাকার সুদের কাণ্ডার করা করিতে হইলে শতকরা জয় জানা আবশ্যিক। বিক্ষয় করিতে হইলে শতকরা দণ্ড জানা আবশ্যিক।

সম্ভাহের পঞ্জিকা।

| ১০ | সেপ্টেম্বর | শনিবার | ৩ | আশ্বিন |
|----|------------|-------------|---|--------|
| ১১ | ২ | রবিবার | ৪ | ২ |
| ১২ | ৩ | সোমবার | ৫ | ৩ |
| ১৩ | ৪ | মঙ্গলবার | ৬ | ৪ |
| ১৪ | ৫ | বুধবার | ৭ | ৫ |
| ১৫ | ৬ | বৃহস্পতিবার | ৮ | ৬ |
| ১৬ | ৭ | শুক্রবার | ৯ | ৭ |

ইস্তাহার দেওয়া যাইতেছে।

যে মোকামে যাহার নিকটে এই সমাচার দর্পণ প্রতিসম্বাহে পাঠান যাইতেছে বুদ্ধিতে পারি যে তাঁহারদের মধ্যে পুত্রা যোগ্য কেহ এই মোকামইহতে আনয়ন কর যাইবেন অতএব তাহারদিগের কাণ্ডার কোন তারিখ অবধি কোন তারিখপর্যন্ত কোন মোকামে পাঠাইতে হইবেক তাহার তারিখ বন্ধ সমাচার এই হরকরার মাধ্যমে আশ্বাসি সম্ভাহে মোকামে আশ্বাসিপুরের জাণাখানায় পাঠাইবেন ইহার লিখিত সমাচার না পা ইলে যাহার কাণ্ডার যেখানে পাঠান যাইতে তাহার কাণ্ডার সেইখানে পাঠান যাইবেক ইতি।

কোল্লানির ইস্তাহার।

ইস্তাহার দেওয়া যাইতেছে যে ৫০০ পাঁচ শত রিম পাটনাই কাণ্ডার সরবরাহ করণ কলত্রাকটের দরখাস্ত যে কেহ করিবেক দরখাস্তের মাঝে মোহর কাঠিয়া ও শিরলমায় কাণ্ডারের দরখাস্ত এমত লিখিয়া নাগাইহ ১৭ আশ্বিন টাকার আশিত পর্যন্ত মূল আশ্বিনের মোক্তারকার নুখরনটেগেঞ্চ সাহিবের নিকটে দরখাস্ত দাখিল করিতে হইবেক মাফিক তদানী।

১ দফা। কাণ্ডার রক্ষা নমুনা মাফিক দিতে হইবেক ১ নমুনা মোকামে আশ্বিনপুরে মূল আশ্বিনে দরখাস্ত করিলে দেখিতে পাইবেক।

২ দফা। একরারি লিখন সাহি করণের পর অর্ধেক ১৫০ আড়াই শত রিম আমদানি আরন্ত পাঁচ দিবসের মধ্যে করিতে হইবেক বাকী অর্ধেক ১৫০ আড়াই শত রিম দাঁড়া মত এক মান অস্ত্র দাখিল করিতে হইবেক।

৩ দফা। দরখাস্তের সহিত ৪ এক একরারি লিখন এক মাতবর লোকের দস্তখতে দাখিল করিতে হইবেক করণ মাতবর লোক করুন রাখে যদান কলত্রাকটের অনামত করে কিছা কর্মের খতরা করে তবে ঐ মাতবর লোক দাইক হইবেক।

৪ দফা। কলত্রাকট জুতায় অংশের এক অংশ টাকার একরারনামা দস্তখত হইলে কলত্রাকটকে দেওয়া যাইবেক আর বাকী জুতায় অংশের দুই অংশ

টাকার কলত্রাকটের বেবাক সরবরাহ হইবে দেওয়া যাইবেক।

৫ দফা। নুখরনটেগেঞ্চ সাহিব যে সকল কাণ্ডার নমুনা ও মাণে নিরস মালুম করিবেন তাহা জিরাইয়া দিবেন। স্বল্পম হোর্ডারি দিল।

কলত্রাকট মোসদিটার ইস্তাহার। ২। কলিতার কলত্রাকট মোসদিটাই ইস্তাহার দিরায়েন যে মোকামে ঠেপনালে তে ইং ১৪ সেপ্টেম্বর রোজ মঙ্গলবার ১৬ আশ্বিন বেলা নাচে নয় ঘণ্টার সময়ে কলিতা। কলত্রাকট মোসদিটার মস্তারের মালুম মস্তারের হইবেক যাহার ইস্তাহার এমত কার্যে ঐ সময় ঐ বার্তাতে আনিয়া ওপহিত হইবেন। ইতি তারিখ ১৬ সেপ্টেম্বর বারিলা ১ আশ্বিন বৃহস্পতিবার।

সমাচার দর্পণ।

কাশ্মীর দেশ।

লাহোরের আশ্বাসিরা সমাচার পাঠ্য গেল যে কাশ্মীর দেশে অশ্বত রজিৎ দিনে বাহাদুরের অধীন হইয়াছে রজিৎ দিনে মেখানে দেওয়ানচন্দ্রকে পাঠাইয়াছেন ঐ দেওয়ানচন্দ্র কাশ্মীর দেশের সুভারদের হইতে অনেক রাজস্ব আদায় করিতেছেন। পূর্বে যখন কাশ্মীর দেশে মহম্মদ জীর খাঁয়ের অধীন ছিল তখন যত রাজস্ব ওপহিত হইত এখন

সমাচার দর্পণ ।

অত্যধিক রাজস্ব ওংশন হইতেছে ই
হাতে অধুত রক্ষা- লি-হ অতিআন
দিত হইয়াছেন ।

কারোলে দেশ ।

ঐ আধাবারের হারা ইহাও শুনা গেল
যে ঐ মহামুদ ওজীর্ঘ্য পেশীর শহর
জাতিয়া কারোলে গিয়াছেন এখন পো
শৌর শহর অধ্যক্ষ হইয়াছে এখন পো
যদ্যপি সাহ মুজা এই সমাচার পান তবে
অবশ্য তিনি সমস্ত হইয়া আসিয়া
পেশীর শহর অধিকার করিবেন ।

রাজস্বের নিয়োগ ।

১. আশুত্ব অধুত এম ডি গর্ভন সা
হেব চাকীআলাপপুরের রেজেন্ডর হইয়া
ছেন ।

বসন্তরোগ ।

শাহাবাদ পরগণার শিবপুর গ্রামে সমস্ত
ডি পুহার বসন্তরোগের প্রাদুর্ভাব হই
য়াছে তাহাতে প্রায় প্রতিদিন দুই চারি
জন মরিডেছে এই কারণ গ্রামস্থ সকলে
ওড়ি হইয়াছে ।

খুন ।

হুগলি জেলার মহাবর্তি আম গ্রাম নি
বাসী শ্রুত স্বকণ্ঠদ্বয় ও শঙ্কুচন্দ্র দত্ত
ইহারা দুই ভাই পুত্র । পরে মন ৪০ ৪১
সালে ৪১ আশুত্ব ডারিথে দ্বিতীয় পুত্র
রাজির সময়ে ঐ শঙ্কুচন্দ্র দত্ত স্বকণ্ঠদ্বয়
দত্তের বাড়ী গিয়াছিল এমত সময়ে তা
হার বাড়ীর চৌকিদার জিআনা করিল
যে কে ডুমি । শঙ্কুচন্দ্র দত্ত তাহার কিছুই
ওত্তর করিলে না । ইহাতে চৌকিদার
চোরআনে রণগণিত হইয়া ঐ শঙ্কুচন্দ্র
দত্তের অঙ্গে তরবার মারিল । তাহাতে

ঐ দত্ত ভূমিতে পতিত হইয়া কহিল যে
ওরে আমি শঙ্কুচন্দ্র দত্ত । অপর চৌকিদার
কহিল যে মহাশয় আমি কি করিব
আমি মহাশয়কে চোরআন করিয়া মারি
য়াছি । পরে গ্রামের অনেক লোক
আসিয়া দেখিল ও ঐ ভূমিপতিত শঙ্কুচন্দ্র
কে বাঁধা তাকিতে লাগিল । তাহাতে
তাহার ওত্তর না পাওয়া দেখে যে সে মরি
য়াছে । পরে তাহার পাশুয়ার দারোগা
কে সমাচার দিল । দারোগা আসিয়া
গ্রামে সকল বিবরণ শুনিয়া শঙ্কুদত্তকে
জ্বালাইতে হুকুম দিল ও ঐ চৌকিদারকে
কচা করিয়া হুগলি জেলায় চান্দান
করিল ।

বীনা লুট ।

শাহাবাদ পরগণার মোজে মুন্সল
গ্রামে ভাদু মাসের অধিক পর্য্যন্ত অন্য
বৃষ্টি পুষ্ক পুষ্ক ভূমিষ্ক ওশ্রিত হইয়া
ছিল । পরে গ্রামস্থ যে অনেক লোকের
বীনার গোলা ছিল অন্য লোকে সে
সকল গোলা ভাঙ্গিয়া আপন পান বাঁধ
নের ওশায় করিতেছিল এবং সে গ্রামের
লিফটবর্তি গ্রামেও এই কণ ব্যবহার হই
তেছিল কিন্তু সমুদ্রি বৃষ্টি হওয়াতে সে
সকল বৃষ্টি হইয়াছে ।

কড় ।

৪৪ সেতমুর ডারিথে জেলা বর্কমানের
মহাবর্তি শীখারি গ্রামে অভ্যন্ত দ্বত হই
য়াছিল । তাহাতে গ্রামের বড় বৃদ্ধ
দ্বির ওংশন হইয়াছে এবং প্রায় এক
শত ঘর ওড়িয়া গিয়াছে গ্রামের অতিশু
চীন লোকে কহিলেক যে আমরা কে
বল এক গ্রামে এমত কড় কখনও দে
খিনাই ।

টাক শালের তুরি ।

শাহাবাদ পরগণার মহাবর্তি গোবিন্দ
পুর গ্রামের গোবিন্দচন্দ্র রায় তিনি টাক
শালের মুহুরির ডিলেন গত শ্রবণ মাসে
তিনি এক দিবস টাকশালহইতে আসি
বার সময়ে কিঞ্চিৎ স্বর্ণ তুরি করিয়া তুরি
নার আঙ্গুরাখার মধ্যে বহিয়া বাটী আ
নিতকিনেন । পরে হারী এক জন সি
আই কহিল যে তুমি আপন বস্ত্র সকল
কাঁড়া দিয়া যাও । তাহাতে রায় বস্ত্র
কাঁড়া দিলে কিঞ্চিৎ স্বর্ণ তাহার আঙ্গ
রাখার মধ্যেহইতে পড়িল । তাহাতে
ঐ সিআই স্বর্ণ সমেত ঐ রায়কে হস্ত
রে লইয়া গেল তাহাতে হস্তের স্বর্ণ
মতে ঐ রায়কে কএব রাখা গিয়াছে ।

তুরি ।

কমলদাস নামে এক ব্যক্তি বৈরাগী
বদ্ধমান শহরের মধ্যে ভিক্ষা করিয়া
কাল যাপন করিত ও আশুত্ব ডারিথে
ঐ শহরের কমলাকান্ত মন্দিরের বাসায়
চারি ভাঙ্গিয়া গৃহমধ্যে পুবেশ করিয়া
বস্ত্রব্র্হতি নানা সন্নিগু লইয়া ঘাইতে
ছিল পথে দুই জন বেশী তাহাকে দেখি
য়া কহিল যে তুমি কেন চারি ভাঙ্গিয়া
সামগ্রী লইয়া ঘাইতেছ । বৈরাগী
ইহা শুনিয়া ক্ষুব্ধ হইয়া রহিল । পরে
বেশী দারোগার লিফট সমাচার দিবা
মাত্র দারোগা ঐ দুই জন বেশীর সহিত
ঐ বৈরাগীকে জমাটাহেবের লিফটে পাঠা
ইল । জমাটাহেবের সহায় করিয়া দুই
বেশীকে খালান্দ করিয়া দিয়া ঐ বৈরা
গীকে কএব রাখিয়াছেন ।

ডামু টাকার ব্যবসায় ।

বাহুবল্লভের গ্রামের কুম্ভোয়ান গোট
হার মোঃ কল্লভারের এক পোতদারের

সমাচার দর্পণ।

সহিত সাহিত্য করিয়া তাম্র টাকার ব্যবহার করিত। অল্পদিন ইহল কোন গায়ে দাঁড় দ্বারা বিন্যাস করিয়া এই দুই জন দুই জনে কবর রাখিয়াছে।



নুতন পুস্তক।

সমুদ্র দুই তিন বৎসর ইহল যোগ্য কলিকাতার হিন্দুদের শাস্ত্রসিদ্ধি সহ মরণের বিষয়ে কেহ পুতিবাহী ইহয়া জেন তদ্বিধিত কলিকাতার শ্রীযুত বাবু কাল্যাণদ বসুজ্ঞ এক নুতন পুস্তক রচনা করিয়া প্রকাশিত। সে পুস্তকে সহ মরণলিপ্তবিকের কথা ও সমতসিদ্ধি মূলি পুণীত বচন ও তাহার পুণ্যতর স্বকণ সহ মরণবিধায়কের বাহ্য ও তাহারও সমতসিদ্ধি মূলি পুণীত বচন আছে এবং বা গীতা ভাষ্যে তাহার তত্ত্ব আছে এবং সেই বিষয়ের ইংরাজী ভাষ্যে পুণ্য এক কোডা অতি সুন্দর রূপে তত্ত্ব। এই পুস্তক অত্যন্ত দিল পুস্তক ইহয়াছে।

হেষ্টিংস সাহেব বাহাদুর।

গত বৎসরে হেষ্টিংস সাহেব মরিয়াছেন যে হেষ্টিংস সাহেবের নাম এতদেশে এমত খ্যাত যে বালকবালিকা জন। গত সোমবারে কলিকাতায় যাবতীয় ভাগ্যবান ইংলণ্ডীয়েরা চৌন হলে তথায় সাধারণ ঘরে একত্র ইহয়া জিলেন তাহার কারণ এই যে হেষ্টিংস সাহেবের সমুদ্রযাত্রা মোকাম কলিকাতায় কোন চিহ্ন স্থাপিত করেন। এই দিন সেই ঘরে অনেক আনবান লোকেরা হেষ্টিংস সাহেবের শত পুণ্য সান্নিধ্য কণা করিলেন ও যেন কণ হেষ্টিংস সাহেব এই দেশ কোল্লানির অধিকারে আনি লেন ও নানান পুস্তক বিবোধী শীতি করি

লেন ও যেন ব্যবহার করিলেন সে সকল বিষয়ে তাঁহার পুণ্য সান্নিধ্য করিলেন। তাহার মধ্যে এক সাহেব এই বর্ণ করিলেন যে আমি এই দেশে না জন্ম করিয়াছি এমত হান পুণ্য নাই কিন্তু মৃত্যুই হেষ্টিংস সাহেবের নাম স্থানিয়াছি এবং আমি এক প্রাচীন লোককে দেখিয়াছি যে সে আশ্রিত বালককে হেষ্টিংস সাহেবের নাম শিক্ষা করাইতেছিল এবং কোন হান এমত বালক দেখিয়াছি যে সে আশ্রিত দেবতা নমস্কার করিবার কালে হেষ্টিংস সাহেবের নাম উচ্চারণ করিতেছে। সেই সময় শ্রীযুত পায়র সাহেব করিলেন যে আটটা শত দুই সাত ঘণ্টা হেষ্টিংস সাহেবের মোকদ্দম সাভ সাভ বৎসর পর্যন্ত ইংলণ্ডে ইহয়া মানি ইহল তখন মূর্খ অযোগ্যের দ্বারা ও তাঁর শাহ আদালতী হেষ্টিংস সাহেবকে যাবৎ জীবন বৎসর যোগ হাজার টাকা পাঠাইয়া দিতে বাসনা করিয়াছিলেন। পরে তৎকালীন কলিকাতার বড় সাহেব লর্ড মর্লিন্সন বাহাদুর ও কোল্লানি বাহাদুর তাহাতে সম্মত জিলেন কিন্তু হেষ্টিংস সাহেব আপন স্বীকৃত ইহলেন না। এই রূপে নানান পুস্তক কথোপকথন ইহয়া শেষে এই একত্র মিলিত সাহেব লোকেরা ইহা স্থির করিলেন যে এই সমুদ্র ভ্রমণের মহা রাজবিলী কলিকাতা নগর মহাধর্মী শালী হেষ্টিংস সাহেবের এক মূর্তি থাকে এবং সেই মূর্তি নির্মাণ করিতে যে ব্যয় হইবেক সেই ব্যয় পুণ্য টাকার নিমিত্ত ভ্রমণের তরফে ভাগ্যবান লোকেরদি গকে আহ্বান করেন যে তাঁহারা সেই বিষয়ের চিন্তার ফলে আপন নাম স্থাপন করিলেন।

এবং এই মত ঘণ্টা লর্ড কর্নওয়ালিস মোকাম গাতিগুর মরিয়াছিলেন তখন

তাঁহার শবের ওপর এক মহাকবর গাঁথিয়া দিলেন। তাঁহার বায়ের কারণ উদ্দেশ্য বাসী হি হিন্দু মুসলমান কি ইংলণ্ডীয় সকলেই ওৎফুরিত হইল। দিয়াছিলেন সে কবর মোকাম গাতিগুরে আদালি আধিকারী।

নিম্নোক্ত বোঝা।

রজপুণী দেশে নিমত মোকামে তৎপুদেশীয় এক নিমাই টাকার করিয়াছিল তাহার পুস্তক ইহলে শ্রীযুত মেডর বৎস সাহেব সে বিষয়ের শীতি দিবার কারণ তাহার বেত মরিতে আসা করিয়াছিলেন। এই আসা পাঠাই তাহার বেত মরিবার প্রয়োজন হইতেছিল ইত্যবসরে এই টাকার নিমাই মেডর বৎস সাহেবকে একাকী দেখিয়া আপন দোষিতা গিয়া তাহারে বিরল ও আশ্রিত লোকের কাটা দিল তাহার দ্বারা তাহারে তিনবার মারিল কিন্তু তাহাতে মেডর সাহেব মরিগেলেন না পরে তদ্বিক্রমে লোকেরা দূর হইতে তাহা দেখিয়া শীঘ্র আসিয়া এই টাকার নিমাইকে বাচিয়া রাখা করিল।

নাগপুর সমাচার।

নাগপুর মোকামে এখনও তুলুনা দু মূল্য আছে সেখানে যে দরিদ্র লোকের দিগকে পুণ্যার্থ তুলুনা দি দেওয়া যায় তেজ এই অনব স্থান। চতুর্বিধ হইতে দরিদ্র লোক সেখানে আসিতেছে।

মোঃ নাগপুর রাজদরকারে বিশ হাজারের অধিক লোক দিবারাত্রি রাখার কর্ম করিতেছে।

এবং এই মোকামে ইংলণ্ডীয়েরা প্রতি দিন যোগ শত দরিদ্র লোকেরদের আহার দিয়া দুরা দিত্তর করিতেছেন।

সম্পাদক দর্পণ।

বহরমপুর।

যে বহরমপুর হইতে সমাচার আনি
যাচ্ছে যে সেখানে অসামান্য উত্তাপ
হওয়া আছে পূর্বে যে চান্দ টাকায় চন্দ্র
শের জিল সে চান্দ এখন টাকায় আটটার
শের হইয়াছে এবং যে কুট টাকায় পচিশ
শের জিল সে টাকায় বার শের এখন
হইয়াছে।

মূল।

কতক দিন হইল যখন বহরমপুরের এক
ক্সী লোক এই রকম মূল হইল। তাহার
লিফটে পোনের শত টাকা ও ব্রিটিশ অল
ক্সার জিল সে সকল মস্তিকার নত চুড়িয়া
রাখিয়াছিল। তাহা হইতে তাহার সন্ধান
পাইয়া যে সময়ে তাহার স্বামী ঘরে
জিল না সেই সময়ে তাহারা সে ক্সী
লোকের ঘরে গোল ও তাহার গলে
হুড়ি দিয়া ও মুখে কাণ্ড অড়াইয়া তাহা
কে মূল করিয়া সে সকল লইয়া গোল।
তাহার প্রতিবাদী লোক ইহার কিছু
সন্ধান পাইল না। পরে তাহার স্বামী আ
নিয়া দেখিল যে আপন ক্সী মরিয়া রহি
য়াছে ও ঘরের মধ্যে গিঁট আছে তাহাতে
লিফট করিল যে তাহা হইতে এক ক্সী
করিয়াছে।

মূল।

এক মাস হইল পুলিসিয়ারি শহরের
বড় সাহেব করল বালেশ্বর সাহেব
মরিয়াছেন তিনি পূর্বে মফসিল দেশে
আলেক যুদ্ধ করিয়াছেন পরে ইংল্যান্ডে
গিয়া কোর্টের চিফ জন্ অ্যাডভের
দের মধ্যে এক জন হইয়াছিলেন। কুড়ি

মাস হইল পুলিসিয়ারি বড় সাহেব
হইয়া আসিয়াছিলেন।

এই বিষয়ে এক আশ্চর্য্য এই যে ইংল্যান্ডে
শিল্পের বড় সাহেব হইয়া যিনি ইংল্যান্ড
এইতে আসিয়াছিলেন তাহারদের
মধ্যে কেবল দুই জন মাত্র বীজিয়া পুন
র্বার ইংল্যান্ডে গিয়াছেন আর সকলেই
মরিয়াছেন তাহার মধ্যে কেহই সেখানে
নেই মরিয়াছেন কেহই বা সেখানে হইতে
পঁড়ত হইয়া মৃত্যু বা মৃত্যু সেবার্থ্য সমু
দে গিয়া মরিয়াছেন।

মুর্শি তিরিঙ্গ মলক।

নবহলাও দেশে ইংল্যান্ডীয় লোক ব্য
তিরেকে সকল লোক ঐশ্বর্য্য বলা যে তা
হারদের হইতে বলা নৃসিংহে অর
নাই। কতক দিন হইল সেখানে এক
জন নিম্ন হিকে মর্মে দ্বন্দ্ব করিল তাহা
তে তাহার শরীর দুই পলের মধ্যে ছুটি
ল ও সে মূর্খপন হইয়া পড়িল। তাহার
আড়ায় লোকেরা তাহাকে দেখিয়া
লিফট করিল যে এক কদম বীজিবে না।
তৎসময়ে সেই জড়নিত নব হলাড়ী
এক লোক ছিল সে তাহা স্থানিয়া তৎ
ক্ষণে সেখানে আইল ও এক গাঁজের
জাল আনিয়া ই মর্মে দ্বন্দ্ব করিলে পড়
করিয়া ঐশ্বর্য্য বাকিল যে সে জাল করিল
যে আমার পা অস্ত্রের দ্বারা কাটিয়া
যেছিল। পরে সে তিরিঙ্গ দুই দিন
পলপর্ষ্য্য তাহার পা মর্দন করিতে
নীচে টালিতে লাগিল। তাহাতে
দ্বন্দ্ব পলম্বান কুড়ি হইল। পরে সেই
দ্বন্দ্ব দুই জড়ন দিয়া বরিয়া ডাঙ্গ ভুরি

দ্বারা কাটিয়া যেছিল ও কত ঘানে দু
ঘিলে যে দুট রুম নির্গত হইল তাহা
থুড় করিয়া যেছিল ও সেই ব্যক্তিকে
হিল যে তুমি বীজিয়া বিধ নির্গত হইল।
সে ব্যক্তি ও আপনাকে মৃত্যু জান করিল
ও তুচ্ছ হইয়া আপনাকে যে মর্মে দ্বি
সন্ধিত ব্রিটিশ টাকার জিল তাহা ই তিরিঙ্গ
সকলে দিল।

জবির ওপার মূর্তি।

ইংল্যান্ড এক ব্যক্তির তত্ত্বাবধায় যোন
হাজার নানা পুকার জবির আচ্ছন্ন সে মল
লের মূল্য বার লক্ষ পচিশ হাজার টাকা
অতএব তাহা বিক্রয় করা দুষ্কর সে
ই জবির সে সময়ে জবির ওপার মূর্তি
দিয়ে তাহার চিহ্ন টাকা করিয়া এক
টুকিট হইয়াছে সকল টুকিট পুরা হই
লেই আচ্ছন্ন হইবেক।

বিদ্যুৎ অর্থাৎ মক্ষরা।

বোলশাভের প্রভু সময়ে তাহার ম
হিত এক জন ইংল্যান্ডীয় নিম্ন হইল
সে অতি মক্ষরা সে অনেক যুদ্ধে জি
য়াছে এবং দেখিয়াছে যে যে লোকের
ঘের পা কাটা যায় তাহারদের পুনর্বার
কাটার পা করিয়া দেয় তাহারা সেই পা
য়ের দ্বারা কোন পুকারে গমনাগমন
করে। পরে ই মক্ষরা নিম্ন হইয়া আপন
ক্সীর লিফটে পালিত এক শুরুরের দ্বারা
জিল তাহার ক্রিয়ণ এক পা লক্ষ হইয়া
জিল তাহাতে ই ব্যক্তি তাহার কাটার
পা করিয়া দিয়াছিল। ইদেব সে ই পায়ে
দ্বারা গমনাগমন করিতে লাগিল।

এই সমাচার দর্পণ শ্রীমঙ্গলের ছাপাখানাতে পুস্তিকাধে শিবাব্দ ছাপা হয়। তাহার লগনের আবশ্যক হয় তিনি শ্রীমঙ্গলে ছাপাখানাতে
আপন নাম পাঠাইলে সন্ধ্যাে তাহার নিকটে পাঠান হইবেক তাহার মূল্য মাসে এক টাকা তিনি ব্যয় করিয়াছেন বহি তাহার নিকটে
সমাচার দর্পণ না পড়কে তবে তিনি শ্রীমঙ্গলের ছাপাখানাতে সমাচার শিবাব্দ তাহার নিকটে পাঠান হইবেক।

সমাচার দৰ্পণ

৭৫ সংখ্যা।

শনিবার।

১৫ সেপ্টেম্বর সন ১৮৮৯। ৪০ আশ্বিন সন-১৯১৩।

দৰ্পণে মুখ লৌপৰ্য্যাসিব কাৰ্য্যবিধিৰূপায়।

বৃত্তান্তনিহিত কামবৃত্ত সমস্যাৱশ্য দৰ্পণে ॥

কোলালিৰ কাণ্ড।

কোলালিৰ শতকরা জয় টাকাৰ সুদের কাণ্ড জয় কৰিতে হইলে শতকরা জয় আনা তিবকৌণ্ড। বিফল কৰিতে হইলে শতকরা দৰ্শ আনা তিবকৌণ্ড।

সন্তাহেৰ পঞ্জিকা।

| | | | |
|----|--------|----|------------|
| ১৫ | শনিবার | ১০ | আশ্বিন |
| ১৬ | ১ | ১১ | অক্টোবৰ |
| ১৭ | ২ | ১২ | নভেম্বৰ |
| ১৮ | ৩ | ১৩ | ডিসেম্বৰ |
| ১৯ | ৪ | ১৪ | জানুৱাৰী |
| ২০ | ৫ | ১৫ | ফেব্ৰুৱাৰী |
| ২১ | ৬ | ১৬ | মৰ্চা |

কোলালিৰ ইস্তাহাৰ।

ইস্তাহাৰ দেওয়া ঘাইতেছে যে ৫০ শত শত ১০০ পাউণ্ডাই কাণ্ডজ মনৱৰাহ কৰণ কলত্ৰাকটৰ দৰখাস্ত যে কেহ কৰি বেক দৰখাস্তৰ খামি যোহৰ কৰিয়া ও শিত্ৰনমায়ে কাণ্ডজৰ দৰখাস্ত এমত লিখিয়া নাগাইদ আশি ১৭ আকটোৰ পৰ্যন্ত ধৰ্ম্ম আফিসেৰ মোজিয়াৱিকাৰ মুখৱনটোঙে সাহেবৰ লিকটে দৰখাস্ত দাখিল কৰিতে হইবেক মাঠক তপনাল।

৪ দফা। কাণ্ডজৰ বকম নমুনা মাফিক দিতে হইবেক ৩ নমুনা মোকাম আলিগুৰে ধৰ্ম্ম আফিসে দৰখাস্ত কৰিলে দেখিতে পাইবেক।

১ দফা। একৱাৰি লিখল সহি কৰণে পৰ অৰ্দ্ধেক ১৫০ আড়াই শত ১০০ আনমাণি আৱন্ত শীত দিবসেৰ মধো ক

১৫০ আড়াই শত ১০০ আনমাণি আৱন্ত শীত দিবসেৰ মধো ক

৩ দফা। দৰখাস্তৰ সহি ৩ এক একৱাৰি লিখল এক মাডবৰ শোকেৰ দস্তখতে দাখিল কৰিতে হইবেক কাণ্ডজ মাডবৰ লোক কবুল হাথে ঘঢ়াশি কলত্ৰাকটৰ অনামত কৰে কিস্তি কৰ্ম্মেৰ মাডবৰ কৰে তাৰে ২ মাডবৰ লোক দাইক হই বেক।

৪ দফা। কলত্ৰাকট তৃতীয় আশপেৰ এক আশপ টাকা একৱাৰনমায়ে দস্তখত হইলে কলত্ৰাকটৰকে দেওয়া ঘাইবেক আৱ বাকী তৃতীয় আশপেৰ দুই আশপ টাকা কলত্ৰাকটৰ বেবাক মনৱৰাহ হই বেক দেওয়া ঘাইবেক।

৫ দফা। মুখৱনটোঙে সাহেব যে সকল কাণ্ডজ নমুনা ও মাণে নিৱস মাণুয় কৰিবেন তাহা জিৱাইয়া দিবেন।

সমাচার দৰ্পণ।

১৫ সেপ্টেম্বর ১৮৮৯।

৩ সেপ্টেম্বর শ্রুত টি পাৰেনহাম মা হেৰ কটকট কালেক্টৰ।

৪৭ সেপ্টেম্বর শ্রুত জন কিলক সাহেব মনৱৰাহেৰ হানিলেৰ কালেক্টৰ।

শ্রুত নি জিল্লি সাহেব চৰিণপুৰগাল

পুৰ্ণভাণ্ডেৰ লিমক দস্তৱেৰ অধ্যক্ষৰ নে কৰ।

শ্রুত দৰলিও এন গাৰেট সাহেব বৰ্ষ মালেন কালেক্টৰৰ পেকাৰ।

শ্রুত ২৫ এণ্ডেলম সাহেব অক্টোবৰেৰ কমৰনাল ৱেনিয়েণ্ড অৰ্থাৎ বানিঅ দস্তৱেৰ অধ্যক্ষ।

শ্রুত ই মাৰ্চবাৰ্ছ সাহেব মালদহেৰ কমৰনাল ৱেনিয়েণ্ড অৰ্থাৎ বানিঅ দস্তৱেৰ অধ্যক্ষ।

কোলালিৰ কৰ্ত্ত।

৪০৮৯ সাল ১৩ ফেব্ৰুৱাৰি তাৰিখে ইংলণ্ডে শ্রীশ্রীযুত কোলালি বাহাদুৰেৰ অৱ কোলালিৰ কৰ্ত্তে বিষয় এই মুকাম হইল যে বাৰীলাতে কোলালিৰ কৰ্ত্তৰ পৰে ওপৰ চাৰিণ কোটা আটাইশ লক্ষ টাকা এবাং বিনাশ্ৰমে তিন কোটা তিৱালহই লক্ষ টাকা।

মন্ডৱাজেতে পুৰেৰ ওপৰ দুই কোৰ মাইত্ৰিশ লক্ষ টাকা ও বিনাশ্ৰমে তিৱালি লক্ষ টাকা। বোম্বাইতে পুৰেৰ ওপৰ একাশ লক্ষ টাকা ও বিনাশ্ৰমে পঁচিশ লক্ষ টাকা। মৰ্চবাৰ্ছ এই ভাৱত্ৰমে শ্রীশ্রীযুত কোলালি বাহাদুৰেৰ কৰ্ত্ত তো ত্ৰিশ কোটা টাকা।

ইংলণ্ডেৰ ৱাজৰেৰ।

ইংলণ্ড দেশতে গণ্ড ২২২২২ তিৱালি কোটা জাৰ্মান লক্ষ টাকা ৱাজৰেৰ ওপৰ হইয়াছে। তাহাৰ মৰ্চবাৰ্ছ কেবল লবণেতে তিন কোটা টাকা ওপৰ হইয়াছে ২২২২২

সমস্যাটার দলন ।

ই-গুণ্ডে বাদশাহের আশ্রিত এক
মহাসিঁপু খেলা হয় তাহাতে সকল খরচ
হইয়া বিংশ লক্ষ টাকা লাভ থাকে এই
টাকাও রাজস্বের মধ্যে গণ্য হয় ।

ই-গুণ্ডের শেষ সমাচার ।

১৩ মে তারিখে এক আশ্রিত ই-গুণ্ড জা
তিয়া এই সমস্যাতে মোকাম কলিকাতায়
সৈয়দজিগকে তাহার দার। এই শুনা গেল
যে ই-গুণ্ডের বাদশাহের চতুর্থ পুত্রের
এক কন্যা অসিয়াছে এই কন্যা অসিবার
সময় তাহার নিকটে অন্য এক কন্যাকে
ছদ্মবেশে লোক আনি তল
জিল এবং কন্যা অসিবারান্ত তাহার
গিকে যোগ্য গেল পরে তাহার এই
কন্যার বিষয় এক ক্রোড়ের লিখিল এবং
আশ্রিত বাদশাহ করিয়া মোহর করিল
যে ক্রোড় লিখিলে বাদশাহের পৌত্রী
ইহা অসিয়া যাইল ।

কলকাতায় কয়েক ই-গুণ্ড কন্যা অসিয়াছেন
ইতি পূর্বে জানা হইবে যে যেতুক এই
কন্যার পিতার আশ্রিতের সমস্ত নাই
কুতরাং বাদশাহ পরলোকগামী হইলে
পর এই লিখিলে বাদশাহ হইবে
এবং তাহার পর এই কন্যার পিতা
বাদশাহ হইবে এবং তাহার পর এই
কন্যা জানা হইতে পারিল ।

লোকা ভূমি ।

গত রবিবার নাজে দুশ ঘণ্টা হস্তির
সময় দুই জন নাহর এক ডিরিতে
আরোহণ করিয়া পাঁচ হইতেজিলেন
কিন্তু অত্যন্ত মোড়বুড় এই ডিরি এক
জায়গায় নীচে লাগিয়া ওৎপাশ
জা হইয়া উঠা গেল এবং নাহরকে
দুই আশ্রিত নীচে গেলেন পর আর
ওজিলেন না ।

আশ্রিত বদুহ :

জুই মেশে পানিস নাহর এক ব্যক্তি এক
পুকার বদুহে সমি করিয়াছে তাহার আ
কর্ষণ এই যে ডিরি দুই পুহর বেলার সময়ে
এ বদুহ আপনি আওজ হয় । এবং
যদি এমত নাও হয় যে বদুহ পকিয়া এই
বদুহের উত্তরিতে পুণ্য আদর্শন করে
উপাৎ যদি দুই পুহরের সময় সূর্য্য আপন
তেজ পুকার করে তবে বদুহ হইতে অন্য
য়ান আওজ হয় ।

হয়দরাবাদ ।

হয়দরাবাদ হইতে সমাচার অসিয়াছে
যে অন্য ২২-নর হইতে এই ২২-নর ও
মুগ্ধে বদ্যার পুত্রের হইয়াছে তাহাতে
ইতা লোকেরদের ভ্রমোৎপন্ন বানোয়
বিস্তর কতি হইয়াছে ।

এই সমাচারের আশ্রিত শুনা গেল
যে কোনাংও নামে এক ব্যক্তি বহু অমি
দার তিল হয়দরাবাদের নিকষের অতি
বিশুদ্ধ ছিলেন কিন্তু এখন তিনি সে
ভার ত্যাগ করিয়াছেন তাহাতে তদ্রূপে
পাণ্ডি হইয়াছে ।

মিরট ।

মিরটের সমাচার দার। এই জানা
গেল যে সে মেশে পুত্রের ওলাঙঠা
রোগে বৃদ্ধ হইয়াছে এবং বাদশাহী
সৈন্যের মধ্যে চলিঁ অন এক দিনে এই
রোগে মরিয়াছে ।

অযোধ্যা ।

অযোধ্যাতে বকশ মেওজান সিংহ
নামে দারকার এক জন অমিদারকে
কোন যোগে কারন নবাব ওজীর অযো
ধ্যাহইতে ডাকাইয়া দিয়াছিলেন পর

এ রাক্ষসে গীরে মেশিয়া তাহার আ
ত্মীয় লোকেরা তাহাকে পাঁচ হাতের
টাকা টাকা করিয়া দিয়াছিল । নবাব
ওজীর এই সমস্যার কলিয়া পুত্রের তাহা
কে দেহ হইতে দুই করিয়া দিয়াছেন
এই বিষয়ে ই-গুণ্ডায়েরা বহু মে দিত আ
ছেন যেহেতুক এই নবাব পুত্রের অমি
দারকে ডাকাইয়া দিয়া পুত্রের তাহার
দিশাছে অনিয়া যেমন দিতেছেন কিন্তু এ
ব্যক্তি অতি ভাল মানুষ ওখাপিও ইহার
ভাণ্ডা তিনি পুস্তক হইলেন না । এবং
সে মেশে এই এক কুয়ারহার জিল যে কা
হারা তরিক মস্তান হইলে তাহা নষ্ট
করিব কিন্তু এই ব্যক্তি সে বাহবার দুই
করিয়াছে ।

চট্টগ্রাম ।

৪৪ মেতবুর তারিখে মোকাম কলকাতায়
দুইবার ডাক্ষর হইয়াছিল কিন্তু সে
ভূমিকায়ের বিষয়ে আর কোথাও হইতে
কিছু শুনা যায় নাই ।

দানাপুর ।

মোকাম দানাপুরে ওলাঙঠা রোগের
পুত্রের হইয়াছে এবং এক রাত্রে পাঁচ
জন লোক এক বিজানায় শয়ন করিয়াছিল
কতক রাত্রে ওলাঙঠা হইয়া দুই ঘণ্টার
মধ্যে পাঁচ জনই মরিয়াছে । এবং অন্য
এক ঘরে স্ত্রীকণ দুইজন শয়ন করিয়াছিল
কতক রাত্রে এক স্ত্রীকণ মর্মানিয়া ইহা
র হস্তের অঙ্গুলিতে ও পৃষ্ঠের ওকামে
দংশন করিল তাহাতে এই স্ত্রী মরিয়াছে
ও পৃষ্ঠ বীজিয়াছে কিন্তু তাহার এই স্ত্রীকে
তিল দিন পর্যন্ত দাহ করে নাই যেহেতুক
পূর্বে তাহারদের মেশে এক ব্যক্তি চিকি
ত্সক আসিয়া তিল বিশেষ মন্ত্রকে যে বাঁটা
ইল এইকণ অনুর জিল ওৎপুস্ত তাহা
রা সে স্ত্রীকে তিল দিন কলিয়া এই চিকি

সমস্যাটার সপর্ণ।

সকল চোখের লোক পাঠাইল কিন্তু না
ইল না।

সন ১৮৭৯ সাল। বার্ষিক ৭।

৯ জুলাই সন ১৮৭৯ ইং অথবা ১৩
জ্যৈষ্ঠ ১২১৩ বাং অথবা ১ শ্রাবণ ১২১৩
কনকী অথবা ১৭ আষাঢ় ১২১৩ বিলাহিতি
অথবা ১ শ্রাবণ ১৮৭৯ সম্বৎ অথবা ১৫
রমজান ১২৩৪ শাল হিজরী তারিখে
শ্রীযুত গবর্নর জেনারেল বাহাদুর
সভাতে বসিয়া এই ব্যবস্থা স্থির করিলেন
যে অজ মাংসের হারা কতক (দোণের
দুও দেওয়া যাইবেক এবং সেই) দোণের
নিমিত্ত কিসক দুও গণ্যকৃত হইবে পুষ্কান
যে এই ব্যবস্থা স্থির করা গিয়াছে।

শ্রীযুতের নিকট সমস্যাটার পৈখ্যক্রিয়াক
যে এ রাজ্যের কোনও প্রদেশে ও নগরে ও
গণপুত্রাদিতে কোন লোকেরা গৃহস্থ
লোকেরদের স্বীকিয়া কন্যাদিগিকে স্ব
স্বগ্রহইতে হরল করবার জন্য কুইচুক
লোকেরদিগিকে অধিক স্বীরদিগিকে
পুত্র করার যেন তাহার কুমত্যাচার
এই সকল স্বীরদিগিকে বাহির করিয়া
কন্দি অথবা গুণকী করিয়া দেয় কিম্বা
আর কোন দুর্ব্যর্থলিপ্যকৃত হারা তাহাতে
এ স্বীরদের অভিন্ন দুখ ঘট এবং এ
স্বীর পিতার ও স্বামির অনেক ক্ষতি হয়
এবং তাহার বংশের যে সুখ ও শান্তি
তাঁহা নষ্ট হয়।

শ্রীযুতের নিকট আরও এই সমস্যাটার
পৈখ্যক্রিয়াক যে কোন স্বামী ও পিতার
অনেক বার আশ্রয়দেয় পরিত্রাণের
গকে তাগী করে এবং বিনবল হইয়াও
তাঁহাদের প্রতিপালনার্থ কিছু দিন যেন না
ইহাতে এ স্বী ও বালকেরদের আশ্রয়
দুখ হয় এবং পিতার আশ্রয় ও গণকী
অন্ত সমস্তেরদিগকে তাগী করিয়া
তাঁহাদের প্রতিপালনার্থ কিছু দিন যেন

না ইহাতে তাহার যথেষ্ট দুখ পায়।
অতএব এই দুই দোষদমনার্থে এই ওনার
স্থির হইল যে এ দোষের শ্রীযুত সমস্যা
এরও জেলার জজ ও শহরের জজ ও
জেষ্ঠ জজ মাংসেরের নিকটে হয় এবং
রাজসমার এই দোষের বিষয়ও আশ্রিত
হয় এবং ইহাও শ্রীযুতের বিচার
ভাল পাঠে যে স্বীরগির লোক ও মাংস
নাও তাঁকর লোকেরদের যে দোষের বিষয়ে
পুত্রকৃত ব্যবস্থাতে কিছু লিখা নাই সেই
দোষ যেমন অজ মাংসের আশ্রিত নিকটে
নষ্টকে। এবং স্বীরগির লোক ও
মাংসের তাঁকর লোকেরদের মাংসের
দানে যে যথার্থ পাঠে থাকে তাহাও
বজায় রাখে এই হেতুক শ্রীযুত সভা
তে বসিয়া এই ব্যবস্থা স্থির করিয়াছেন
এবং যেটুকু লোকের অধীন যত পুষ্কান
আছে সে সকল প্রদেশে এই ব্যবস্থা
পুষ্কান হইলেই এই যৌক্তিক হইবেক।

বিভীয়। যদি কোন ব্যক্তি কোন জেলা
কি নগরের আশ্রয়ভেদে সানসনের অধীন
থাকে এবং যদি এ ব্যক্তি এ জেলার জজ
কিম্বা নগরের জজ কিম্বা জেষ্ঠ জজের
নিকটে কোন বিবাহিতা স্বী যে আশ্রয়
স্বামির আশ্রয়ে থাকে কিম্বা তাহার অনু
মতিতে অন্যের আশ্রয়ে থাকে কিম্বা
কোন অবিবাহিতা স্বীর স্বজনবীর পুত্র
অর্থবা পোনের বংশেরের মত যে
অন্য পিতা কিম্বা আশ্রয় টেরলির যত
থাকে কিম্বা তাহারদের অনুমতিতে আর
স্বাহার ও ঘরে থাকে এই মত বিবাহিতা
কিম্বা অবিবাহিতা স্বীকে কন্দি কিম্বা
গুণকী কিম্বা আর কোন দুর্ব্যর্থ প্রকৃত
করাইবার নিমিত্ত এ বিবাহিতা কিম্বা
অবিবাহিতা স্বীর স্বামির কিম্বা পিতার
কিম্বা টেরলির যতকম ব্যক্তিরকে কুমত্যা
চার এ স্বীরদিগিকে হরল করে কিম্বা

আর কোন ব্যক্তিক বহুত করিতে প্রবৃত্ত
করায় ও সে বিষয়ে যদি এ ব্যক্তি নিশ্চয়
হয় তাহা তবু তাহার অপরাধের ও
যুক্ত অরিমানা হইবে অথবা কন্দি থাকি
বেক কিন্তু ১৮৭৭ সালে লবয় আশ্রিনের
এই পরে যে পরাক্ষম অজ মাংসেরের
গকে দেওয়া গিয়াছে তদনুসারে হও
হইবে তাহার অধিক হইবে না অর্থাৎ
জয়মান কন্দি কিম্বা দুই পত টাকা
পর্যন্ত অরিমানা হইবেক। এবং যদি সে
অরিমানার টাকা না দেয় তবে এ ব্যক্তি
আরও জয় মানপর্যন্ত কন্দি থাকিতে
পারে। যদি কোন ব্যক্তি এই বিষয়ে
যে দোষ সে ইহা হইতে অধিক দণ্ডের
ও পুত্র হয় তবে তাহার মোকদ্দমা
কেট আপিলে ও সরবেই অদালতে হই
বেক। এবং এ সরকারেই অদালতে
তাঁহার বিষয় এমত নাশিণ হইলে ১৮৭৭
সালের সন্ধ্যা আশ্রিনের জয় পরে যে
কণ নিমিত্ত আরও তদানুসারে হইবেক।

তৃতীয়। যে কোন ব্যক্তি জেলার কিম্বা
নগরের আশ্রয়ভেদে অধীন আছে কিন্তু
আশ্রয় স্বী ও সন্ধ্যারদের প্রতিপালনার্থ
গণকীরন থাকিয়াও যদি ইচ্ছাপূর্বক সে তা
হারদিগকে তাগী করে কিম্বা তাহারদের
প্রতিপালনার্থ কোন গণকী না করে তবু যে
হবে এ ব্যক্তি তাহারদিগকে তাগী করে
ও নিরাশ্রয় রাখে সেই জেলার কিম্বা নগ
রের জজের নিকটে যদি এ বিষয় পুষ্কান
হয় তবে তাহার সন্যাসনানার এ স্বী পু
ত্রের প্রতিপালনার্থ ও গণকী করিতে যতকম
দেওয়া যাইবেক। এবং যদি সে ব্যক্তি
যতকম পাঠে না দেয় তবে অদালতে
মোদি হইবে ও এক মান পর্যন্ত কন্দি থা
কিবে। এবং পুষ্কান যতবার যতকম না
মানিবে এই মত প্রমাণ হইলে প্রত্যেক
দণ্ডিত হইবেক কিন্তু যদি স্বী কুমত্যাচার

সমাচার দর্পণ।

কিন্তু অন্য কোন দুঃখান্বিতা হইয়া থাকে যে তাহাতে তাহার স্বামির লজ্জা হয় তবে এই ব্যবস্থা মত এই স্বামির দণ্ড হইবে না।

চতুর্থ। যেমত আপন বিবাহিতা স্ত্রীর সম্বন্ধে নির্দেশিত পুতিপালন না করিলে দণ্ড হইবেক ওপনত্বে আস্ত পুরুষেও পুতিপালন না করিলে সেই দণ্ড হইবে এবং যে কোন ওপনত্বে সন্তান থাকে কিন্তা তাহার শিশু বালক থাকে এমন সময়ে যদি এই ওপনত্বে ত্যাগ করে তবে অজ সাহেব আপন বিবেচনানুসারে তাহাকে পুতিপালন করিতে আজ্ঞা দিবেন।

পঞ্চম। যে কোন কাস্ত্রিগীর ইচ্ছা করুক কতক দিনের কার্যে কোন বন্দোবস্ত করিবে কিন্তা কোন কর্মের অন্য বন্দোবস্ত করিতে এবং ওপনত্বে কার্য না হইলে এই বন্দোবস্তের সময় কিন্তা এই বন্দোবস্তের কর্ম সঙ্গি না করিয়া আপন মনিবহইতে পলায়ন করে তবে তাহাকে বোঝা গণা ঘাইবে এবং কোন অজ কিন্তা চোটে অজের নিকটে এই বিষয় সুশ্রাব্য হইলে সে এক মাস কএম হইবে। আরও এই ব্যক্তিকে তাহার বন্দোবস্তের সময়ের পূর্ব করিতে ও অবশিষ্ট কর্ম সমাপ্ত করিতে এই অজ কিন্তা চোটে অজ সাহেব ওপনত্বে দুইয়্যা বহুয়্য দিবেন। আরও যদি কোন ব্যক্তি এই বহুয়্য পাইয়া তাহা পূর্ণ না করে তবে সে দুই মাস কএম থাকিবেক।

ষষ্ঠ। যদি কোন ঘরের চাকর কতক দিনের কার্যে করার করিয়া কর্মে প্রবেশ

হয় কিন্তা ঘরের কোন কর্ম নির্বাহ পণ্ডিত করার করিয়া চাকর হয় কিন্তা কোন করার না করিয়া চাকর হইয়া মাসে মাহিনা নয় ইহার ওপনত্বে কার্য না হইলে যদি করার সময় পূর্ণ না করিয়া কিন্তা যে কোন বিশেষ কর্ম নির্বাহের নিমিত্ত চাকর হইয়াছিল সে কর্ম সম্পূর্ণ না হইতে কিন্তা মাসমাহিনার চাকর পোনের দিন আগে সমাচার না দিয়া অমনি চলিয়া যায় এইজন্য সুশ্রাব্য হইলে তাহারদের দণ্ড পূর্ব কথিত মত হইবে।

ষিড়ীয়। ইহাণে কোন মনিব কিন্তা আর কোন ব্যক্তি যে কতক দিনের কার্যে কর্ম করিয়া চাকর রাখা তাহাকে ওপনত্বে কার্য না পাইলে কিন্তা চাকরের ইচ্ছা না হইলে সেই করারের মধ্যে চাকরকে জাড়াইতে পারিবে না কিন্তা যদি কোন বিশেষ কর্ম নির্বাহ কার্যে চাকর রাখা তাহাতে তাহার ওপনত্বে কার্য না দেখিয়া ও তাহার ইচ্ছা না হইলে সে কর্ম নির্বাহ পণ্ডিত তাহাকে জাড়াইতে পারিবে না কিন্তা মাস মাহিনার যে চাকর রাখা তাহাতে তাহার ওপনত্বে কার্য না দেখিয়া কিন্তা পোনের দিন আগে সমাচার না দিয়া তাহাকে জাড়াইতে পারিবে না যদি জাড়াই তবে এই চাকরকে পোনের দিনের মাহিনা দিতে হইবে।

অষ্টম। ১৮৪৪ সালে পুণ্য আগিলের আদার নব্বের অনুসারেতে আট আনা ঘরের ক্ষমতা জেতের ওপনত্বে যদি এই বিষয় লালিশ করা যায় তবে অজ সাহেব কিন্তা চোটে অজ সাহেব এই ব্যবস্থার

অনুসারে কর্ম করিবেন যদি কোন চাকরকে পুণ্ডিত মত নিরপরাধে জাড়াই তবে অজ সাহেব তাহার মনিবহইতে পোনের দিনের মাহিনা লইয়া এই চাকরকে দেওয়াইবেন ও এই চাকরের কর্ম জাড়াইর সময় যে ব্যক্তি মাহিনা থাকিবে তাহা ও দেওয়াইবেন আর নিরপিত সময় কিন্তা নিরপিত কর্মের সঙ্গি না হইতে যদি মনিব চাকরকে জাড়াই তাহাতে এই চাকরের যে ক্ষতি হয় তদনুসারে অজ সাহেব বিবেচনা মত তাহার মনিবহইতে তাহাকে টাকা দেওয়াইবেন।

চতুর্থ। যদি কোন চাকর এমত ঘোষ করে যে অজ সাহেব কিন্তা চোটে অজ না হইবেক বিচারে সে ঘোষের কার্য তাহা কে জাড়াই ওপনত্বে হয় তবে জাড়াইবের দিন পণ্ডিত তাহার যে মাহিনা পাইয়া থাকে কেবল তাহাই দেওয়াইবেন বসি পাইবেক না। কিন্তু যদি কোন কাস্ত্রিগীরে কিন্তা কোন চাকরকে মনিব অভিযুক্ত্য নিরপিত করে কিন্তা তাহার মাহিনা বাধা রাখা এমত কোন ঘোষণা করে যে তাহাতে অজ সাহেবের বিচারে তাহার মনিবের নিকটে তাহার থাকা ওপনত্বে নহে এমত কার্য হইলে যদি চাকর নিরপিত সময় পূর্ণ না করিয়া কিন্তা নিরপিত কার্য সম্পন্ন না করিয়া কিন্তা পোনের দিন আগে সমাচার না দিয়া জাড়াই যায় তবে এই চাকরকে অদ্বালিতে ঘোষা হইবে না ও হয় হইবে না।

নব্বম। এই ব্যবস্থানুসারে অজ সাহেব যে মাসের বহুয়্য দিবেন সে বহুয়্য কোর্ট আপিলের অপেক্ষা রাখিবে।

এই সম্রাটের দর্পণে শ্রীরামপুরের জাপানখানাতে পুতি সম্রাটের শনিবারে জাপান হয়। তাহার লগনাব্যাক হয় তিনি শ্রীরামপুরের জাপানখানাতে আসন নাম পাঠাইলে সম্রাটের জাপান তাহার নিকটে পাঠান ঘাইবেক তাহার মূল্য মাসে এক টাকা তিনি স্বাক্ষর করিয়া জেল যদি তাহার নিকটে সমাচার না পৌঁছায় তবে তিনি শ্রীরামপুরের জাপানখানাতে সমাচার দিবামাত্র তাহার নিকটে পাঠান ঘাইবে।

সমাচার দর্পণ



১ মার্চ ১৮৮১।

শনিবার।

১ আক্টোবর মল ৪৮ ১৯। ৪৭ আশ্বিন মল ৪৭ ১৩।

দর্পণে মুখ পৌরস্বাধিক কার্যবিবরণঃ।

বৃহত্তানিহ্ন জানকী সমাচার দর্পণে ॥

কোম্পানির কার্য।

কোম্পানির শতকরা অর্থ টাকার সুদের
গণনা করিতে হইলে শতকরা অর্থ
গণনা ভিন্নকোণে। বিক্রয় করিতে হইলে
তকরা দশ আনা ভিন্নকোণে।

মস্তাহার পঞ্জিকা।

| আক্টোবর | শনিবার | ১১ | আশ্বিন |
|---------|--------|----|--------|
| ৪ | ২ | ১৮ | ২ |
| ১ | ৩ | ১৯ | ৩ |
| ১ | ৪ | ২০ | ৪ |
| ১ | ৫ | ২১ | ৫ |
| ১ | ৬ | ২২ | ৬ |
| ১ | ৭ | ২৩ | ৭ |
| ১ | ৮ | ২৪ | ৮ |

কোম্পানির ইস্তাহার।

ইস্তাহার দেওয়া যাইতেছে যে ৫০০
শত শত হিম পাটলাই কাগজ সরবরাহ
কারণ কনট্রাক্টের দরখাস্ত যে কেহ করি
বক দরখাস্তের খামে মোহর করিয়া ও
শির্দানমায় কাগজের দরখাস্ত এমন লি
খিয়া লিখাই দেওয়া ১৭ আক্টোবর
পর্যন্ত মঙ্গল আশ্বিনের মোক্তারকার
সুপারিনটেন্ডেন্ট সাহেবের নিকট দরখাস্ত
দাখিল করিতে হইবেক যাতকী তপাল।

৪ দফা। কাগজের রকম নমুনা যা
খিক দিতে হইবেক ঐ নমুনা মোকাম
আলিপুরে মঙ্গল আশ্বিন দরখাস্ত করিলে
যেথিত পাইবেক।

১ দফা। একরাশি লিখান সহি কর
ণের পর অর্দ্ধেক ১৫০ আকাই শত হিম

আমদানি আরম্ভ পাচ দিবসের মধ্যে ক
রিতে হইবেক বাকী অর্দ্ধেক ১৫০ আকাই
শত হিম পাঁচ মাস এক মাস অর্ন্তে দাখি
ল করিতে হইবেক।

৩ দফা। দরখাস্তের সহিত ৪ এক
একরাশি লিখান এক মাসের লোকের
দস্তখতে দাখিল করিতে হইবেক কারণ
মাসের লোক কবুল রাখে যথানি কনট্রা
ক্টের অলমাত করে কিনা কর্মের খতরা
করে তবে ঐ মাসের লোক দাইক হই
বেক।

৪ দফা। কনট্রাক্ট তৃতীয় আশ্বিনের
এক অংশ টাকা। একরাশি দস্তখত
হইলে কনট্রাক্টেরকে দেওয়া যাইবেক
আর বাকী তৃতীয় আশ্বিনের দুই অংশ
টাকা কনট্রাক্টের বোকা সরবরাহ হইলে
দেওয়া যাইবেক।

৫ দফা। সুপারিনটেন্ডেন্ট সাহেব যে
মকল কাগজ নমুনা ও খামে নিরম
মানুষ করিলে ডাহা জিরাইয়া দিবেন।

অক্ষুণ্ণ বোর্ডারিলিঙ।

সমাচার দর্পণ।

চণ্ডালগণ।

১৯ সেপ্টেম্বর তারিখে চণ্ডালগণের সমা
চারবার্তা শ্রদ্ধা গেল যে মেখানে দুই অর
হর পুণ্ডিত ডাবন ভূম্মা জিলিস দুখুণ্ডা
হইয়াছে তাহাতে তদুদ্দেশ্যেরা কহে যে

অতিবৃষ্টিপূরক এই মকল দুখা ভাল জ
ন্যায় নাই কিন্তু যদি অতিবৃষ্টি কারণ হইত
ডাব ততুল এয়ারা হইত। মেখানে এখন
ততুলের মোল নাওে চারি টাকা বিক্রয়
হইতেছে। ডাহার কারণ এই যে মেখা
নকার মাহাজন লোক দুই তিন জনে
অনেক ততুল আননা গোলাপজাত করিয়া
রাখিয়াছে অতিশয় দুখুণ্ডা না হইলে
সে মকল ততুল বিক্রয় করিলে না।

আরও শ্রদ্ধা গেল যে ব্রাহ্মকাজী দাখ
লিয়া খিলি পেনোয়াকে নানা পুকার কুম
ঝা দিয়া ইংল্যান্ডেরদের সহিত বিরোধি
অন্যায়্যাজিলেন তিনি একনে ইংল্যান্ডের
কাজী বৃত্ত হইয়াছেন। এবং মোকাত্তা
লগতে শুভম এক রাজকারাগার নির্মাণ
হইতেছে সুশ্রুত হইলেই এই ব্রাহ্মকাজী
সেই কুরাণীকে বিবাহ করিবেন অনুমান
হয় যে এই ঘাশের শেষে তিনি মেখা
নে পঁথকিবেন।

রাজকর্ম নিয়োগ।

৪৭ সেপ্টেম্বর খ্রীষ্ট ১৮৮১ ম সাহেব ষা
রালার পুলিশের অধিকার পেকার।

কুমিল্ল।

কহু বেশে পুনরার ভূমিকর হইতেছে
এক এই বিষয়ে সে বেশে হান্দান্দার
হইয়াছে যেহেতু মেখানে শ্রীম লিডা
কুমিল্ল হইতেছে ইহাতে তদুদ্দেশ্যেরা
কেহ কহে যে এই কহু বেশে পুথীকা জাতি

সমাচার দর্পণ ।

এবং পৃথিবীর সহিত কেবল এক রক্তভুক্ত
কুলান সমুদয়ে ভাসিতেছে কেহ! কেহ
যে পৃথিবী জাতি কল্পে সমুদ্রে ভাসি
তে আরও বেশে ঘাইতেছে তৎসুখ
নিভা ভূমিকল্প হয় ।

কাশ্মীর ।

লাহোরের আখবার অর্থাৎ সমাচার
হারা শুনা গেল যে কাশ্মীরের রাজা শ্রী
মৃত রনজিৎ সিংহের জয়ের বিষয়ে তদে
শীয় লোকেরদের মধ্যে অদ্যাপিও জনরব
হইতেছে । যেওনিন্দ্র নামে এক ব্যক্তি
শ্রীমৃত রনজিৎ সিংহের পুত্রান সেনাপতি
সে দেশে আর করিল নন কিন্তু এখন ঐ দেও
য়ানিন্দ্র কাশ্মীরের ভালালাখ সিংহের
সহিত যুদ্ধেতে ভীত হইয়া আপন মনি
রের নিকটে পত্র লিখিলেন যে তিনি মর্সে
না আসিয়া ঐ ভালালাখ সিংহের সহিত
যুদ্ধ করিল । তাহাতে রনজিৎ সিংহ
আপনি লাহোরহইতে না বাহিরাইয়া
মতিরাম নামে এক জন সেনাপতিকে
গীত পত সিংহী দিয়া তাহার নিকটে পা
ঠাইয়াছেন ! এবং কাশ্মীরে যেখানে
সিংহ নামে এক জন মল্লোক্ত তাহার আ
খ্যায় তাহার ভ্রাতৃত্ববিরোধে কাশ্মীর শহ
রের যেওয়ান ও জোয়াহারি কর্ম্মে নিযুক্ত
করিয়াছেন এবং কাশ্মীরে শাসনার্থে যে
সকল চাকর লোক নিযুক্ত আছে তাহার
দের মাহিনা ও আরও বাজেখরতে এখন
পুণ্য পুতিয়ান দুই লক্ষ টাকা ব্যয় হইতে
ছে । রনজিৎ সিংহ দেখানে দুই হাজার
খোচনওয়ার রাখিয়াছেন তথাও তদংশী
দোরা তুল্য নহে । এবং শীকরা নিভা
আদিত্য দেখানে দোরাভ্য করিতেছে
আরও দেখানকার লোকেরা এ ভরসান
রাখে যে ঐ ভালালাখ সিংহ আদিত্য

পুনর্বার রনজিৎ সিংহকে দূর করিয়া
দিবে এই কারণ তাহার ইহার রাজ্যে
বস সম্যক নহে ।

লাহোর ও কাশ্মীরের মধ্যবর্তী যে সকল
পর্বতীয় লোক তাহার শীকরেরের পুতি
কুল এবং ঐ সকল পর্বতীয় লোকেরদের
মধ্যে অনেক ক্ষুদ্র রাজ্য আছে । শ্রীমৃত
রনজিৎ সিংহ দোরাভ্য করিয়া তাহার
দের স্থানে কর লইতেছেন এইহেতুক তা
হার রনজিৎ সিংহেরও পুতিকুল আ
ছে । এখন রনজিৎ সিংহের সৈন্য সে
খানে না থাকে তখন তাহার রাজত্ব
বন্ধ করে ।

কাবোলের বিষয় এই শুনা গেল যে
মহম্মদ ও তমখা খানি পেশবারে দখল করি
য়াছিলেন তিনি আপন আখ্যায় এক লো
কে হাতে কেন্দ্রের দেশ সমর্পণ করিয়া
আপনি কাবোল গিয়াছেন শ্রীমৃত রন
জিৎ সিংহ এখন এমন শুধরণী করিতে
ছেন যে বর্ষা গোলে তিনি পুনর্বার যুদ্ধে
পুত্ব হইয়া পেশবারে দেশ দখল করিবেন ।

হিন্দুস্থানের প্রাচীন নগর ।

আট পত বৎসর হইল মুসলমানেরা
পুণ্যম গুপ্ত ও পশ্চিম দেশহইতে আসি
য়া কয়েক দক্ষিণ দেশে আর করিল এখন
তাহার এ দেশে আইল তখন পশ্চিম
দেশে অনেক মহানগর ছিল সেই স
কল নগরের কিছু বিবরণ আদিত্য
সংক্ষেপে লিখি ।

পঞ্জাব দেশে যেখানে এখন শীকরা
বসতি করে তাহার রাজধানী নগর
লাহোর সে সময় প্রাচীন যে কেহ! অজ
য়ান করে যে সে নগর দুই হাজার দুই
শত বৎসর পুথিত হইয়াছে এবং তিন
পুতি পুতি দেশের তাবৎ বাসিন্দাদুবালা

হোর দিয়া পশ্চিম দেশে ঘাইত তাহাতে
সে নগর অতিশয় বহিষ্কৃত ও বিনাশ ছিল ।
যখন গজেননের রাজা মহম্মদ সেই
নগরের রাজ্য অধীনলকে পরাজয় করিয়া
ঐ নগর দখল করিল তখন ঐ রাজার
গিয়া যোল গাঁজ মতির মাল! পাইল
তাহার এবং গাঁজ মালার মূল্য এক
লক্ষ আশী হাজার টাকা এবং ঐ রাজ্য
মুসলমানকর্তৃক পরাজিত হইয়া অতি
শয় ধ্বংসমান হইলেন যেহেতুক সে
দেশের এই এক ব্যবহার ছিল যে যে রাজ্য
দুইবার মুসলমানের স্থানে পরাজিত
হইবে সে আর কখন রাজ্যসিংহাসনে
বসিতে পারিবে না ঐ অধীন রাজ্য দুই
একবার মুসলমানকর্তৃক পরাজিত হইলে
তাহাতে তিনি আপনাত কর্তব্য দূরী
ভাবিয়া অতিদুঃখ করিলেন ।

দিল্লীর গুপ্ত হিমালয় পর্বতে নগর
কোট নামে এক মহা পুথিক স্থান ছিল
এবং ভীম নামে মেঘানকার রাজ্য
লেন তাহারকর্তৃক পুথিত পর্বতের এক
এক মহা কিল্লা ছিল সেই কিল্লায় যাই
এক পুথিক মন্দির ছিল তাহার তত্ত্ব
অনেক টোল ছিল এবং নানা দিক বেশ
হইতে অনেক রাজ্য ও ভাগ্যবান লো
কেরা আদিত্য ঐ মন্দির পূজা করত ও
দর্শন করত এবং এই সকল রাজ্যের
দাসেতে ঐ স্থান এখন বিনাশ হইল
যে ঐ মন্দিরের প্রাক্ত পুতি স্থানে
মতি ছিল এবং ঐ কিল্লা এখন দুর্ভ
যে অলং রাজ্যের আদিত্যদের ইনাদি
আদিত্য ঐ কিল্লায় যাই রাখিয়া নিভয়ে
থাকিত এবং মন্দিরের নীচে এমন এক
গর্ত ছিল তাহাতে মলমুক্ত পুতি গাঁ
তিয়া রাখিত । গজেননের রাজ্য মহ
ম্মদ এই সকল বিষয় শুনিয়া তাহা দখল

সমাচার দর্পণ।

করিতে আইল এবং নানা প্রয়োণের পর সেখানকার মুন্সিফের আর কোন ওলয় না দেখিয়া ঐ কিল্লা তাহাকে দিল পরে ঐ মহম্মদ সেখানে বিস্তর লুট করিয়া সাত লক্ষ মোহর ও সাতশত মোন মোনা কবীর বাসন ও তল্লিশ মোন নির্মল স্বর্ণ ও দুই হাজার মোন কপা এবং মলি মুক্তা এত পাইল যে তাহা গননা করিতে না পারিয়া ওজন করিয়া লইল তাহাতে বিশ মোন হইল। গাজনের রাজা মহম্মদ এই লুটের পর আপনাব দেশে গিয়া এক মাড়ের মধ্যে ঐ সকল দ্রব্য রাখিয়া আপন দেশে লোকেরদিগে কে দেখাইল যে আমি হিন্দুরদের দোবা লয় ও ছিরা লুট করিয়া এই সকল দ্রব্য আনিয়াছি।

দিল্লী হইতে পৌর শোশ অন্তর তাল শ্বর নামে এক মহানগরে পুন্নিজ এক মন্দির ছিল যখন কুবচীওরে যুদ্ধ হইয়া ছিল তখন সে মন্দির গৃথিত ছিল এবং তাহার নাচে দিয়া সরস্বতী নদী বহে ও তাহার বিকটে কৃষ্ণেশ্বর হুদ আছে মহাভারতে যে কুবচীওরে যুদ্ধ লিখা আজিল সে যুদ্ধ এই স্থানের তত্বিকের হইয়াছিল ও ভারত রাজার রাজধানী যে হাঙ্কিনাবুর সেও ইহার নিকটে। মুসলমান লোকে যেমন মহা শহর মানে হিন্দু লোকেরা সেই নগর তালেশ্বর নগর মানে এই জন্য হিন্দুর তাৎপর্য রাজা এই মন্দির রক্ষণে ও দর্শনী হইয়াছিল কিন্তু মহম্মদ তাহার দিকে শীঘ্র জয় করিয়া তালেশ্বর বেহাল করিলেন ও দুই তিন ঘণ্টার মধ্যে সে শহর আক্রমণ করিয়া আপন মৈনোরদিগকে লুট করিতে আজ্ঞা দিলেন মৈনোররা আজ্ঞা পাইয়া তাৎপর্য মন্দির ভাঙ্গিয়া ফেলিল ও সকল মূর্তি ভাঙ্গিয়া দেখিলেন যত দ্রব্য পাইল সে সকল লুট

করিল যেমন মলি মুক্তা বুঝালাদিতে ঐ শহর পূর্বে দেখিয়া সূর্য্যোদয় হইল ততো বিক হাংকার ও প্রদন ও শোকেতে পূর্বে দেখিয়া সূর্য্য অস্ত গেলেন।

সেখানে জগৎ মোয়ের এক পুতান মূর্তি ছিল সে মূর্তি সেখানে না ভাঙ্গিয়া আপন দেশে লইয়া গিয়া অনেক লোকের সম্মুখে দাড়াইয়া ভাঙ্গিল এবং গুতোক দাড়াইয়া আপনাদের মন্দিরের মোপান করিয়া দিল। ভীম শহর হইতে তালেশ্বর অধিক দূর নাও হইল না কিন্তু অনেক মুক্তা পাইলেন এবং তাহার মধ্যে এত বড় ও বহুমূল্য এক মুক্তা পাইলেন যে তাহার বিষয় ইতিহাস বেতারী। যে জন লিখিয়াছেন তাহাতে গুণ্য প্রত্যয় হয় না।

যখন গাজনের রাজা মহম্মদ তা দেশে লুট করিতে জিলেন তখন অনেক রাজা ও মুন্সিফ আশিয়া জিলেন তাহার মধ্যে দিল্লীর রাজারও জিলেন তাহা দেখিয়া মহম্মদ দিল্লীর রাজার ওপর অতিশয় ক্ষুব্ধ হইয়া তাহার রাজ্যে চড়াও করিয়া দিল্লী শহর আক্রমণ করিতে আইলেন দুই হাজার বন্দ্য হইল দিল্লী নামে এক ব্যক্তি ঐ শহর গাঁথিয়াছিল তাহাতে তাহার নাম দিল্লী হইল এই শহর অনেক কাল মরা জাহান খাফিয়া শেখ লাহোরের রাজা পাল বংশের অধীন হইল পরে অতি রম্য স্থান দেখিয়া মুসলমানেরা সেখানে আপনাদের রাজধানী করিল।

যে স্থানে দিল্লী শহর গৃথিত হইল পূর্বে সেখানে ইন্দুপথ নামে এক নগর ছিল সে ইন্দুপথ পূর্বে হিন্দুস্থানের রাজধানী ছিল তৎকালে কলৌজ শহর অতিপুৰল ছিল যেমন হয়ে দিল্লী শহর বহির্ভূ হইতে লাগিল তখন কলৌজ

শহর স্থান হইতে লাগিল। মহম্মদ এত শীঘ্র দিল্লীতে গেলেন যে রাজা মৈনো একত্র না করিতেই তিনি শহর আক্রমণ করিলেন এবং সেখানে যে বিধুপতাকা জিল তাহা নামাইয়া আপনাব পতাকা ওয়াইয়া দিল পরে আপন মৈনোরদিগকে বহুমূল্য দিয়া রাজগাঁহ লুট করিল ও তাহাতে যে সকল বহুমূল্য দ্রব্য পাইল তাহা গাঁথি বোকাই করিয়া আপন শহর গাঁথেনে পাঠাইয়া দিল ও আরো ক্ষুদ্র ঘর সকল লুট করিয়া লইতে আপন চাকরের দিগকে আজ্ঞা দিলেন।

দুই তিন বন্দ্য পরে মহম্মদ শাহের আশা নিবৃতি না হইলে তিনি পুনর্বার ভারতবর্ষে লুট করিবার নিমিত্ত আইলেন এবং আশিয়া শূন্য মথুরা জয় করিলেন। মথুরা আশিয়া হইতে ষোল কোশ অন্তর সে নগর বন ও ঐশ্বর্য্যাদিতে পুন্নিজ ছিল যখন মহম্মদ মথুরায় গেলেন তখন সেখানেকার লোকসংখ্যা অনেক ছিল যেহেতু সে শ্রীকৃষ্ণের জন্মস্থান এই কাশ্মীর নানা দিগদেশীয় লোকেরা সেখানে গিয়া বসতি করিত এবং নানা ঐশ্বর্য্য রাজারও ভাগ্যবান লোকেরা ঐ শহরে আশিয়া বিস্তর দান করিত ও ঐ শহর অনেক কাল পর্যন্ত মুহুরি ছিল অন্য কেহ দখল করিতে আইলে নাই তাহাতে বিনোদে পরিতুষ্ট ছিল। মহম্মদ শূন্য ঐ নগর দেখিয়া বিস্ময়ান্বিত হইলেন ও ভাবিলেন যে এ ততি মনোরম ও আশ্চর্য্য স্থান কিস্তি কাল পরে তিনি আপন মৈনোরদিগকে একবারে লুট করিতে আজ্ঞা দিলেন পরে তাহার শীঘ্র নগর মধ্যে পুনির্ভ হইয়া বিপক্ষ মৈনোর দিগকে দূর করিয়া শহর আক্রমণ করিয়া লুট করিতে আরম্ভ করিল। তাহাতে শহরের মধ্যে মহাহাংকার

সম্মাচার দর্পণ।

ধ্বংস। এবং ইন্দোরা যন্ত্রিরেতে যে স
কল স্বর্ণ-কণাদি পাঠান তাহা লইয়া ক
তক ভারিয়া জেলিল ও কতক দ্বাং করিল
পুরোহিতেরদিগকে ও যন্ত্রিরের মাঝে যে
খানে যত স্ত্রী লোকেরদিগকে পাইল তা
হারদিগকে খুন করিল ও হোদায়ের নাম
ও রাখিল না। যে দিন মহম্মদ মথুরা
তে পাইল সে আশে। রাজার এই
কথা ও মরার লোকেরদের ঘর যে সব
ন বিন পাইল তদ্বিধি পাঁচ বর্ণের প্রতি
জ্ঞা পাইল তাহার এক প্রতিমার চক্রেতে
যে মুক্তা বসান ছিল তাহার মূল্য পঞ্চাশ
হাজার টাকা এবং আর এক প্রতিমার
মাঝে এক নীলময়ী পুস্তক পাইল তাহার
পরমাণ চারি শত তোলা এবং যখন তা
হার ঐ মূর্তি ভাঙিল তখন আটালই হা
জার তিন শত তোলা নিম্নলি স্বর্ণ তাহা
তে পাইলেন ইহা জানা এক শত হাজার ট
টিয়া পাইল ও সে সকল এক শত ওটের
পুঙ্খ বোকাই করিয়া গমনেন শহরে
পাঠিয়া দিল।

মহম্মদ বিশ দিনপর্যন্ত মথুরাতে রহিলেন
এবং তিনি সেখানে থাকিতেই অকস্মাৎ
এক দিন আট লাকিয়া ঐ শহরের অর্ধেক
প্রায় দহন হইয়া গেল পরে তিনি আসান
স্থানে পুহান করিলেন। যে সকল বিন
ক্রয় শহরে ও ডালেশ্বর শহরে ও মথুরাতে
পাইলেন সেই সকল বিন দিয়া আসান
শহর গমনেন অতিমুশোভিত করিলেন।
এবং মসজিদ ও রাজার প্রভৃতি
অতিমুন্দর করিয়া গঠাইলেন তাহা
দেখিয়া অন্য ভাণ্ডার লোকেরা ও
সেই যত আসান বর গাঁথিতে লাগিল

ও অল্প দিনের মাঝে ভারতবর্ষের তাৎ
বিন সেখানে যাঁওনে সে এমন বহুত্ব হইল
যে তাহার নাম স্বর্ণীয় কলা হইল ও
সেখানে তিনি আরবী বিদ্যা আশাশ্রমের
কারন অনেক ময়রসা স্থাপন করিলেন
ও অনেক আদালত লোকেরদিগকে সে
খানে আনাইয়া বেতন দিয়া রাখিলেন
ও নানা দেশহইতে নানা পুকার পুস্তক
আনাইয়া পাঠ করাইতে লাগিলেন এই
সকল যে তিনি করিলেন সে কেবল ভার
তবর্ষের লুপ্তি বিন এবং এই যে মহা
শহর তিনি গাঁথিয়াছিলেন সে শহরও
এখন লুপ্ত হইয়াছে।

কলিকাতা।

গত সপ্তাহ আমরা কলিকাতা বহিষ্কার
যে নৌকা ভূবিতে দুই জন সাহেব লোক
মারা পড়িয়াছে এই সম্বন্ধে এক জন
গোরা মিস্ত্রী এক নৌকার চকিয়া আসান
আহাজের লিফট গেল এবং ওপরহইতে
যে রসি জেলিয়া দিল তাহা ধিকিতে না
পারিতে নৌকা আহাজে লাগিয়া ওলটয়া
গেল তাহাতে ঐ গোরা মিস্ত্রী এবং
নৌকার দাঁড়ি মাজিয়া ভূবিয়া মরিয়াছে।
এই সময় কলিকাতায় নৌকাযোগে
গমনাগমন করা অতিদুঃসহ্য যেহেতু
অতিশয় স্রোত এবং অনেক আহাজ
আর তাহা মাঝে জোটে নৌকার ওপর
অনেক লোক আরোহন করিয়া সর্বথা
গমনাগমন করিতেছে ইহাতে যে
অধিক লোক নৌকাভূবিতে না মারে এই
অকস্মাৎ।

চন্দ্রপুর।

আগামী ও আশুতোর বারিগা ২৮ তা
শিন রবিবার আতিবৎ চন্দ্রপুর হইবেক
তাহার সময় রাত্রি ৩। ৪১ তিন বৎ বেয়া
ল্লিশ পল গণ্ড হইলে ঐ পানি কোনে গুণ
সাইত্ব হইয়া সাত বৎ সতের পলের স
ময় সর্গসূস হইয়া নয় বৎ এক চল্লিশ
পল পর্যন্ত থাকিয়া পরে চন্দ্র কমে দৃশ
হইয়া তের বৎ পনের পলের কালে গু
সহইতে মুক্ত হইবেক। রেবতী মাস
রাশিতে গুহন হইবেক।

যে যিখল কলিট সিংহ কলা মাস
এই রাশিতে অসরদের এগুহন দৃশ
নহে। এতদ্বিধি আর সকলের দৃশ।

আক্ষর্য চুরি।

৪১ আশ্বিন রবিবার সপ্তমী পুজার দি
বস দুই বহর প্রান্তির সময় শ্রীরামপুর
সুপ্রভ বাবু চান্দবরায় গোলাঘাটের
তে লাভে থাকিতে অনেক নিমন্ত্রিত জা
গ্যাবল লোক এক সাহেব লোকেরদের আ
গমনে বড় মজলিস হইয়াছিল সেই
মজলিশের মাঝে এক স্থানে দুইটা মো
নার গোলাপ পাস ও দুইটা মোনার তা
ওরদাল ছিল এ চারি জিনিস দুই জন
অবাসীর জিয়া ছিল তাহারদিগের মা
ফাতে একটা আতরদান চোরে লইল তা
হার মূল্য পাঁচ শত টাকা চোরে লওয়া
মাত্র হার বজ করিয়া পুতাক লোকের ও
লাশী লইল কোনজন কিছু চিকানা হই
ল না সে মজলিশে যেমত বৈশিষ্ট্য হই
সে দিবস হইতেও অধিক পুকারিত হই
তে কি হপে লইল এই আক্ষর্য।

এই সম্মাচার দর্পণে স্মারকপত্রের কাণ্ডখানাতে পুতি সম্বন্ধে শনিবারের কাণ্ড হয়। তাহার লওনাশ্রম হয় তিনি স্মারকপত্রের কাণ্ড
খানাতে আসান নাম পাঠাইল সম্বন্ধে কাণ্ড তাহার লিফট পাঠান হইবেক তাহার মূল্য আসে এক টাকা খিল স্বাক্ষর করিয়া
জেন যদি তাহার লিফটে সম্মাচার না পৌছে তবে তিনি স্মারকপত্রের কাণ্ডখানাতে সম্মাচার দিবসে তাহার লিফটে পাঠান যাইবে।

সমাচার দর্পণ

৭৩ সংখ্যা।

পলিবার।

৯ আক্টোবর মঙ্গল ১৮৬৯। ১৪ আশ্বিন মঙ্গল ১১১৩।

দুর্গমে মুখ লৌহব্যবহিত কার্যবিবরণী।

বৃত্তান্তবিহীন কান্ড সমাচারদ্যা দর্পণে ॥

কোম্পানির কাণ্ড।

কোম্পানির শতকরা। অল্প টাকার মূলের কাণ্ড কয় করিতে হইলে শতকরা বার আনা ভিজকৌশ। বিক্ষয় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা ভিজকৌশ।

মস্তক ২৮ পঞ্জিকা।

| ১ | ২ | ৩ | ৪ | ৫ | ৬ | ৭ | ৮ | ৯ | ১০ | ১১ | ১২ | ১৩ | ১৪ | ১৫ | ১৬ | ১৭ | ১৮ | ১৯ | ২০ | ২১ | ২২ | ২৩ | ২৪ | ২৫ | ২৬ | ২৭ | ২৮ | ২৯ | ৩০ | ৩১ | ৩২ | ৩৩ | ৩৪ | ৩৫ | ৩৬ | ৩৭ | ৩৮ | ৩৯ | ৪০ | ৪১ | ৪২ | ৪৩ | ৪৪ | ৪৫ | ৪৬ | ৪৭ | ৪৮ | ৪৯ | ৫০ | ৫১ | ৫২ | ৫৩ | ৫৪ | ৫৫ | ৫৬ | ৫৭ | ৫৮ | ৫৯ | ৬০ | ৬১ | ৬২ | ৬৩ | ৬৪ | ৬৫ | ৬৬ | ৬৭ | ৬৮ | ৬৯ | ৭০ | ৭১ | ৭২ | ৭৩ | ৭৪ | ৭৫ | ৭৬ | ৭৭ | ৭৮ | ৭৯ | ৮০ | ৮১ | ৮২ | ৮৩ | ৮৪ | ৮৫ | ৮৬ | ৮৭ | ৮৮ | ৮৯ | ৯০ | ৯১ | ৯২ | ৯৩ | ৯৪ | ৯৫ | ৯৬ | ৯৭ | ৯৮ | ৯৯ | ১০০ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| ১ | ২ | ৩ | ৪ | ৫ | ৬ | ৭ | ৮ | ৯ | ১০ | ১১ | ১২ | ১৩ | ১৪ | ১৫ | ১৬ | ১৭ | ১৮ | ১৯ | ২০ | ২১ | ২২ | ২৩ | ২৪ | ২৫ | ২৬ | ২৭ | ২৮ | ২৯ | ৩০ | ৩১ | ৩২ | ৩৩ | ৩৪ | ৩৫ | ৩৬ | ৩৭ | ৩৮ | ৩৯ | ৪০ | ৪১ | ৪২ | ৪৩ | ৪৪ | ৪৫ | ৪৬ | ৪৭ | ৪৮ | ৪৯ | ৫০ | ৫১ | ৫২ | ৫৩ | ৫৪ | ৫৫ | ৫৬ | ৫৭ | ৫৮ | ৫৯ | ৬০ | ৬১ | ৬২ | ৬৩ | ৬৪ | ৬৫ | ৬৬ | ৬৭ | ৬৮ | ৬৯ | ৭০ | ৭১ | ৭২ | ৭৩ | ৭৪ | ৭৫ | ৭৬ | ৭৭ | ৭৮ | ৭৯ | ৮০ | ৮১ | ৮২ | ৮৩ | ৮৪ | ৮৫ | ৮৬ | ৮৭ | ৮৮ | ৮৯ | ৯০ | ৯১ | ৯২ | ৯৩ | ৯৪ | ৯৫ | ৯৬ | ৯৭ | ৯৮ | ৯৯ | ১০০ |

সমাচার দর্পণ।

নতুন কর্তা।

১ আক্টোবর তারিখে শ্রীশ্রীযুক্ত গবর্ধন জলদেল বাহাদুর এক ইস্তাহার পুকাশ করিয়াছেন যে কোম্পানি বাহাদুরের কার্যে নতুন কর্তা লওয়া যাইবে তাহার মূল বৎসর শতকরা অল্প টাকার হিসাবে বেওয়া যাইবে। যে কোন ব্যক্তি যে কোন স্থানে এই কর্তা দিতে বাসনা করে অর্থাৎ বাস্তবীকৃত কিম্বা বোম্বাইতে কিম্বা মাদ্রাসেতে সে ব্যক্তি সেই স্থানে কোম্পানী সম্পর্কীয় সাহেব লোকেরদের নিকটে অথবা কলিকাতায় ব্রেকারিতে টাকা দাখিল করিলে কোম্পানির কাণ্ড পাইবে। এবং যেরূপ আয় এক নতুন ইস্তাহার

বাতির হইয়া এই বকুয় অনাথ্য না হইবে সে পর্যন্ত টাকা লওয়া যাইবে।

ঐশ্রুয় বত সাহেব।

৮ জুন তারিখে এক আহাজ ইংলণ্ডে জাতিয়া দেশের মাদে মোঃ বোম্বাইতে শ্রীশ্রীযুক্ত তাহার দ্বারা পুকাশ যে শ্রীশ্রীযুক্ত শ্রীশ্রীদেবের সহিত ও বাজিয়াও পেনোয়ার সহিত যুক্তিতে যে অর্থ হইয়াছেন ঐশ্রুয় কোম্পানির অধ্যক্ষেরা বৎসর চতুর্দশ হাজার টাকা শ্রীশ্রীযুক্তের পারিভোজিক দিতে নলু করিয়াছিলেন কিন্তু এখন তাহা অনাথ্য করিয়া একেবারে তারি লক্ষ আশী হাজার টাকা পারিভোজিক দিতে দিরা করিয়াছেন।

লর্ড মারিন্ডন সাহেব যখন ডিম্বদল তালের সহিত যুদ্ধ করিয়া তাহার গর্হিত করিয়া শ্রীরূপশতল অধিকার করিলেন তখন কোম্পানির অধ্যক্ষেরা এই সমাচার শুনিয়া তাহাকে বৎসর চতুর্দশ হাজার টাকা পারিভোজিক দিলেন তাহা তিনি আদায়িতও ভোগ্য করিতেছেন।

লর্ড ক্রিভ সাহেব যখন মোঃ পলানি ডে নবাবের অধিনায়ক সহিত যুদ্ধ করিয়া তাহাকে অয় করিলেন এবং ইংল্যান্ডী বেরদের প্রত্যাশ দৃঢ় করিলেন তখন কোম্পানির অধ্যক্ষেরা তাহাকে বৎসর আড়াই লক্ষ টাকার আয়গীর দশবৎসরের কার্যে দিলেন। এবং যখন ডিলি দিল্লীইতে বেওয়াসি কর্তব্য আসিলেন তখন ঐ আয়গীর আর দশ বৎসরের কার্যে দিলেন।

মান্দুল দুরি।

মোক্তায় চুক্তি শহরের কোন এক ভাণ্ডারান লোক অন্য এক জনের সহিত যোগ্য করিয়া পুকাশ মাদ্রাসের কার্যে কাঞ্চ কয় করিতে বোকাইর হাটে লোক পাঠাইলেন এবং এই প্রমাণ করিলেন যে কাঞ্চ কয় করিয়া এক পাশকী বোকাই করিয়া তারি জল বুজানী আত্মদল দিয়া আসিলে মান্দুল দিতে হইবে না ও অন্যায়মে কাঞ্চ আসিবে। এই প্রমাণ দিরা হইলে তাহার কোন বিশেষ লোক হওয়ার ক্ষম্যহৌমেতে চিয়া এই সকল বৃত্তান্ত করিয়া দিল পরে সাহেব লোকে রাই হা শুনিয়া সকল দ্বারোগীরগণকে সমাচার দিয়া মতর্ক করিয়া দিলেন। যখন শুভমের লোক হাটে চিয়া কাঞ্চ কয় করিয়া ঐ স্থান আসিতে ছিল। তখন মোক্তায় তালতাহার চৌকিয়াররা ঐ পাশকী আটক করিয়া কহিল যে তালানী দিয়া যাইতে হইবে তাহাতে বুজবানীরা কহিল যে বাবুদের বা টীর কলোকেয়া পুকাশ যাইতেছেন ঐ পাশকীর তালানী দিরা না চৌকিয়ার কহিল আমায়দের সঙ্গে হয় তালানী না দিলে যাইতে পাইবা না পরে বুজবানীরা শত শুভ করিয়া কহিল যে অনান্য মত্যাগির তালানী লইতে কে তোমাকে বকুয় দিয়াছে আমারা কহাট তালানী দিরা না চৌকিয়ার কহিল যদি অনান্য মত্যাগির তবে কোন কী লোক দারা তালানী লইবে ইহা শুনিয়া বুজ

সমাচার দপণ ।

বান্ধিয়া আর ওতর করিতে না পারিয়া
ভয়ংকর আশ্রয় মলিহের নিকটে সম্মা
চার পাঠাইল এ টেকিয়ারের নিকটে কবুল
করিল । তাহার মনব ইহা শুনিয়া
দারোগার নিকটে লোক পাঠাইয়া তাহার
সহিত ইহা করিয়া অদুমান মতের টা
কার কাপড় খানাত্তে রাখিয়া বাকী ম
কল কাপড় খানান করিয়া আসিল ।

পরে দারোগা কেবল এক এক খান কাপড়
খানিলিতে চালান করিয়া লিখিল যে এ
পালকীতে অন্যান্য সওয়ারি ছিল কিন্তু
তাঁহার বিজ্ঞাপ্তে এই এক খান কাপড়
মাত্র পাওয়া গিয়াছে ইহা শুনিয়া সা
হেব দারোগাকে তাহার পাঠা আসাইলে
দারোগা কহিল অন্যান্য সওয়ারি আটক
রাখিতে হয় নাই এ কারণ কাপড় রাখি
য়া সওয়ারি ছাড়িয়া দিয়াছি । পরে গোঁ
স্বা কহিল যে এ পালকী ঠিক বেহারার
জিহায়ে জিজানা করিলে আশ্রিতে পাই
বেন এ বেহারাদিগকে জিজানা করিলে
তাঁহারা কহিল যে এ পালকীতে মনুজ
ছিল না কেবল কাপড় ছিল এই কথা
শ্রবণে এ দারোগা কয়েক ইয়ায়ে তা
হার শেষ আলা যায় নাই ।

বান্ধিয়া ।

ভুলার কয় বিষয় এই সম্ভারের মধ্যে
শ্রুতি কিছু হয় নাই যে অনু ইয়ায়ে সে
কেবল তিন দেশের বান্ধিয়ার কারণ
কয় ইয়ায়ে এবং তাহাতে মূল্যের কিছু
অলপ হয় নাই ।

হাজিরে নিয়োগ ।

৪ আকটোবর শ্রীযুত জে হবলিও টেম
পুর্ন সাহেব মুজাপুরের অজের পেকার ।

দানিয়া ।

ইংলণ্ডের শেষ সমাচারদ্বারা শুনা
গেল যে আমেরিকার নিকটে কুবা নামে
যে অভিব্যক্ত ও ওয়া ওপদীপ সে ওপদীপ
দানিয়ার রাজার নিকটেইহাতে ইংলণ্ড
য়েরা কয় করিয়াছে কিন্তু সে কত মূল্যে
বিক্রয় করিয়াছে তাহা অজানি পূর্বাপ
হয় নাই ।

নীল ।

এই বৎসর নীলের কৃষি শ্রম্য এখন
সমাপ্ত হইয়াছে এবং নানা জেলাইহাতে
সে বিষয় সমাচার আসিতেছে কোন জে
লাতে যেখানে অল্প বৎসর ভাল নীল
অদ্বাইত সেই জেলায় এ বৎসর শ্রম্য
কিছুই জন্ম নাই কেবল লোকমান
মাত্র । এই মত ভিতর ও চাকার লিটল
বুটী ত লোকমান হইয়াছে কিন্তু কোন
জেলাতে এত নীল অদ্বিয়াছে যে দশ বৎ
সর পর্যন্ত সে সকল বুটীতে এত নীল
অদ্ব্যে নাই । এবং কোন স্থানে সকল
নীলগার কাটিয়া সন্মার করিতে পারে
নাই অল্প বৎসর যেখানে দুই শত
মোন নীল অদ্বান তার ইহাতে সেখানে এ
বৎসর আট নর শত মোন নীল অদ্বি
য়াছে তাহাতে সেই নীলকরেরদের এত
লাভ হইয়াছে যে আট দশ বৎসর পর্যন্ত
তাঁহারা যে সকল কর্তা করিয়া লোকমান
দ্বিগুণে তাহা এইবার শোধ করিতে
পারিবে কিন্তু সে বিষয়ে এই এক সন্দেহ
আছে যে এত নীল অদ্বানেতে পাঁচ তা
হার মূল্য নূন হয় । এই বৎসর অনেক
বিলম্বে বন্যা আসিয়াছে তাহাতে নির্ভর
নীল গার অদ্বিয়াছে যে সকল নীল বীজ
নিম্ন ভূমিতে বসল করিয়া তাহার এক

কাট পাইবার ও ভরসা শ্রম্য রাখিত না
কিন্তু এই বৎসর সেই সকল নিম্ন ভূমি
তে কোন স্থানে দুই কাট ও কোন স্থানে
তিন কাট হইয়াছে । অল্প বৎসর
যে কল বনার শ্রম্যভার হইয়া থাকে এ
বৎসর তাহার কিছু নূন নাই গত বৎ
সরের সমান বলা হইয়াছে ।

মথুরা ।

১৪ সেপ্টেম্বর তারিখে মথুরার পত্রদ্বারা
শুনা গেল যে শিবারিচা পূর্ববার একত্র
হইয়া ওয়ারাৎ দেশে লুণ্ঠকরিভেছে কিন্তু
এই সম্ভার শুনিবামাত্র মাদ্রাসার
যোড়মওজার ও বান্দালার যোড়মওজা
রেরদিগকে বহু মই হইয়াছে যে তাঁহারা
অতিশয় চাড়া এ দুই শিবারিচিগকে
দূর করে ।

নাগপুর ।

নাগপুরের সমাচারপত্রদ্বারা শুনা গেল
যে সেখানে যে দুখী লোকেরদের আ
দ্বায়নের অতিশয় দুখ ছিল তাহা এখন
সম্মে অবদান হইতেছে কিন্তু জোয়ার
নামে এক পুকার শস্য দুখী লোকেরদের
আহাতির নিমিত্ত হইয়া থাকে তাহা এ
বৎসর ভালরূপে জন্ম নাই কিন্তু সেখান
কার রাজা ও ইংলণ্ডেরা ওপদূর কর্তা
বিয়া তাঁহাদের দুখ বিমোচন করিতে
ছেন । এবং সেখানে দুর্ভিক্ষ হইয়া
লোকেরা ক্লেশ পাইতেছে কিন্তু দুর্ভিক্ষ
এল ওয়া রোগ ছিল তাহা এখন লিহু
হইয়াছে ।

মুরশাবাদ ।

১০ সেপ্টেম্বর ইংলিষার বান্দালার

সমাচার দর্পণ ।

গণ্ড মজায়ে হিন্দুস্থানের ঠাকুর প্রাণীন

বাংলা শব্দ বহুসংর ইহঁদ কলৌজ শব্দর
এমত পুস্তক ছিল যে সোম্যান প্রিন্স হাজার
র মৌকিন কেবল পান বিকল্প করত এক
ফিল হাজার বারাকের লোক ছিল এ
দুই দুইতে বুঝা যাও যে সে যেমন
আশ্চর্য্য নগর। আট শত বহুসংর
ইহঁদ যখন গাজনের দ্বারা মহম্মদ ই
নগর দুট করিতে বাসনা করিল তখন
অনেক সৈন্য লইয়া ডিন যানের নথ
পুষ্টিয়া কলৌজের ওড়দিহিহু গরুত ড্যা
আশ্চর্য্য নগরকে পুষ্টিয়া পুষ্টিয়া ড্যা
কালের ইতিহাসবোতারা লিখিয়াছেন

গুজরাতি শব্দের মর্ষা সোমোনাথ
নাথ্যে অতুপুনিদ্ধ এক শিব ছিলেন এবং
তাঁহার চতুর্বিধ বোশের মর্ষা আর কো
ন এখন পুনিদ্ধ মূর্তি ছিল না। ও নানা
বোশীয়ে রাজারা ঐ শিবের চতুর্বিধকে বৃহ
হাজার গুণ্য দেবোত্তর দ্বিগুজিলি তাঁহার
সেবাতে বৃহ হাজার বৃহন নিযুক্ত ছিল।
সে শিবের মর্ষির সমুদায় বোশের গুণ্যিও
মর্ষিরের মর্ষা অতুপুনিদ্ধ। বড়ী থাম্য গু
তোক থাম্য স্বর্নাতে মণ্ডিত ও স্বর্নাৎ মনি
মুকোতে খচিত। এবং রাশিকালে মর্ষি
রের মর্ষা কেবল এক পুর্নিদ তুলাইয়া
রাখিত তাহাতে ঐ সকল মর্ষির কিরনে
তে তাবৎ ঘরে আলো হইত। এই
মর্ষিরের মর্ষাখালে সোমোনাথর মূর্তি
ছিল সে বর্ষাশ হাত ওঠ ও এক পাখর
হাতিতে কিং তাঁহার মর্ষা সাতচতুর্বি
দহ মণ্ডিতার মর্ষা। পৌতা জিত ও তিন
হাত বাহিরে ছিল। জয় শত কোণ

সমীচারণ দর্পণ।

অন্তরহইতে গণ্ডাজল আনিয়া প্রতিদিন
সোমলাথের স্নান করাইত। এবং সে
খানকার ব্রাহ্মণেরা কহিত যে কলিযুগের
আরম্ভাবধি এই মূর্তি এখানে আছেন সে
সময় হিন্দুমানের মধ্যে কেবল এই যদি
র ভিন্ন সকল পুন্সিক নগরেই গজনে
র রাজা মহম্মদ লুট করিয়া আপন রাজ
বাহিনীতে লইয়া গিয়াছিল। এই মন্দির
ও লুট করিতে বাসনা ছিল কিন্তু করে
নাই। পরে যখন সোমলাথের ব্রাহ্ম
ণেরা কহিল যে দিল্লী ও কলোণ এই দুই
শহর যে লুট হইয়াছে তাহার কারণ
এই যে তাহার কখনও সোমলাথের
সেবার কারণ কিছুদেয় নাই যদি মহ
ম্মদ এখানে আসিলে তবে এক পনের মধ্যে
তাঁহার তাবৎ সৈন্য নশ্ব হইবে। এই
কথা শুনিয়া মন্দির লুট করিতে মহম্ম
দের আরও ইচ্ছা হইল এবং তাহার স
কল সৈন্য লইয়া সোমলাথ আনিয়া নষ্ট
কিল যখন মন্দিরের নিকটে গেল তখন
মন্দিরের গুপ্তহইতে এক ব্যক্তি ভূতী
বুনি করিয়া বলিল যে মহম্মদের সকল
সৈন্য নশ্ব করিবার কারণ সোমলাথ
এখানে আনিয়াছেন অতএব সকল
হিন্দুলাক তোমারা তক্ষাত হও ইহারা
ভিতরে আইলেই নশ্ব হইবে কিন্তু মহ
ম্মদ তাহা না শুনিয়া আপন সৈন্যের
হিগকে যুদ্ধ করিতে আঁজা দিল সে
খানকার ব্রাহ্মণেরদের ও আর লোকের
দের সহিত দুই দিন পর্যন্ত যুদ্ধ করিল
এই সকল ব্রাহ্মণেরা পরাজিত হইয়া
লোকান্তরোহণ করিয়া শিমলা হোলে পলা
য়ন করিল এবং মহম্মদ তদুদিকে সৈন্য
রাখিয়া আপন মন্দিরের মধ্যে পুবেশ

করিল এই পুণীন মন্দির পুবেশ করি
বার সময় প্রথম তাহার মনে ভয় ও
চমৎকার লাগিল পরে এই মূর্তির নিকটে গি
য়া আপন তলবার লইয়া তাহার নান্দিকা
কালিন ও আর মুসলমানেরা দ্বিগিকে মুর্তি
জেনে করিতে আঁজা দিল ইহাতে মুর্তি
ণেরা তাঁহাকে অনেক মিনতি করিল ও
অনেক কোটি টাকা দিতে চাহিল যেন
মূর্তি জেনে না করে কিন্তু মহম্মদ তাহা
না শুনিয়া জেনে করিতে আঁজা দিল
পরে মূর্তি জেনে করিয়া তাহার গুপ্তের
মধ্যে এত মুক্তা ও বহুমূল্য পুত্রাদি পাইল
যে তাহাতে এই ব্রাহ্মণেরা যত কোটি
টাকা দিতে চাহিয়াছিল তাহাই হইতে
অধিক হইল সে সকল লইয়া গজনে
পাঠাইয়া দিল এবং এই মন্দিরের মধ্যে যে
আর ক্ষুদ্র দুই হাজার মূর্তি ছিল সে
সকল ধর্ম্ম আপনাদের মন্দিরের
মোপান করিবার কারণ আর মুসলমা
দের দ্বিগিকে দিল। হিন্দুমানের মধ্যে
এমন পুন্সিক নগর শিমলা বেবালয় জিল
না যে মহম্মদ লুট না করিয়াছিল এবং
এই সকল লুটিত বস্তুগণা তত্ত্ব দ্বিগের
মধ্যে আপন শহর গজনে প্রেরণ করণ
শহরের তত্ত্ব ঐশ্বর্যশালি বস্তুগণা জিল।

ইতিহাস।

এক ব্যক্তি আখন ও তাহার পত্নী দুই
জনে কোন দেশান্তর ঘাইতেছিল কতক
দূরে গিয়া এক মাঠের মধ্যে বেছিল যে
অনেক লোক একত্র হইয়া কোলাহল
করিতেছে ইহা দেখিয়া এই আখন ও পত্নী

দুই জনে জিজ্ঞাসা করিল যে তোমরা
অনেক লোক এখানে এই পুণী কেন আন
তাঁহার কহিল যে আমরাওদের দেশের
বাহিনীই মরিয়াছেন সে কারণ সকল লো
কের নামে গুলি ছোট হইয়া ঘাঘর আঘাত
গুলি পড়িলে সেই বাহিনীই হইবে ইহা
শুনিয়া এই দুই জন ও আখন নাম নিখিয়া
দিল। আখন পত্নীকে জিজ্ঞাসা করিল যে
যদি ঐশ্বর তোমাকে বাহিনী করেন তবে
তুমি কি কর সে কহিল যে আমি গিগের
পতিপালন ও দুগ্ধের দমন করি এবং
মান লোকের মান রাখি ও তোমাকে
ওতম শিমলায় লইয়া অনেক পুত্র
সেবা করি। পত্নী জিজ্ঞাসা করিল
যদি তুমি বাহিনী হও তবে কি কর সে
কহিল যে যে সকল লোক আমায়ের ভোগ
করিতেছে তাঁহারদের আয়গীর সমস্ত
কাড়িয়া লই এবং ঘাঘরদের অনেক
বিন আজে সে সকল লইয়া আনবার
ঐশ্বর্যবুদ্ধি করি। ঐশ্বর্যবুদ্ধি করি এই পত্নীর
নামে গুলি পড়িল সে বাহিনীই হইল
এবং পুণী যত আপন আখনের
সুখাখিলা শিমলের পতিপালন ও দুগ্ধের
দমন করত বাহিনী করিতে লাগিল।
কিন্তু এই আখন সর্বদা তাঁহাকে স্মরণ
দিয়া কহে যে এই সকল আয়গীর কাড়ি
য়া লও এবং বিনী ব্যক্তি বিন লুটিয়া লও
যে তোমার বাহিনীই আরও ব্যক্তিবে কিছু
দিল এই পুকার কহিতে এক দিন এই
পত্নী কহিল যে মহাশয় ঘাঘা কহিত
ছেন তাহাতে ঐশ্বরের ইচ্ছা নাই যদি
ঐশ্বরের এমন ইচ্ছা হইত তবে তোমার
নামেই গুলি পড়িত এই শুনিয়া এই
আখনের অন্তরে হইল।

এই সমীচারণ দর্পণ শ্রীরামপুরের রূপাখানাত্তে পুতি সমগ্রাহ ললিবারে রূপা হয়। ঘাঘর ললিবারাহ হয় তিনি শ্রীরামপুরে রূপা
খানাত্তে আপন নাম পাঠাইলে সমগ্রাহ কাগজ তাঁহার নিকটে পাঠান ঘাইবেক তাহার মূল্য মামনে এক টাকা দিল দ্বিগের করিয়া
ছেন যদি তাহার নিকটে সমীচারণ না পৌঁছে তবে তিনি শ্রীরামপুরের রূপাখানাত্তে সমীচারণ দিবারান্ত তাঁহার নিকটে পাঠান ঘাইবে।

সমাচার দর্পণ

৭৪ সংখ্যা।

শনিবার।

১৩ আক্টোবর সন ১৮৬৯। ১ কার্তিক সন ১৯২৬।

দর্পণে পূর্ব বৌদ্ধধর্মের কার্যবিবরণ।

বৃহত্তারিখ কান্ড সমাচারে দর্পণে।

কোম্পানির কার্য।

কোম্পানির শতকরা জয় টাকার সুবের কার্য ক্রয় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা বর আনা ডিকৌন্স। বিক্রয় করিতে হইলে শতকরা দুই টাকা আট আনা ডিকৌন্স।

সম্রাটের পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|---------|-------------|---|---------|
| ১৬ | আক্টোবর | শনিবার | ১ | কার্তিক |
| ১৭ | ২ | রবিবার | ২ | ২ |
| ১৮ | ৩ | সোমবার | ৩ | পঞ্চমী |
| ১৯ | ৪ | মঙ্গলবার | ৪ | ৬ |
| ২০ | ৫ | বুধবার | ৫ | সপ্তমী |
| ২১ | ৬ | বৃহস্পতিবার | ৬ | ৮ |
| ২২ | ৭ | শুক্রবার | ৭ | ৯ |

সমাচার দর্পণ।

বোম্বাই।

বোম্বাইহইতে সমাচার আসিয়াছে যে বোম্বাইর নিকটবর্তী অমরহতী নামে স্থানেতে এলাউ গোশের প্রাদুর্ভাব হইয়াছে। যখন সেখানে অতিশয় বৃষ্টি হয় ও দক্ষিণ পশ্চিমদিকহইতে বায়ু বহে তখন সেখানে এলাউ গোশ বৃষ্টি পায় এবং এই বায়ু যখন উত্তর দিকহইতে বহে ও বৃষ্টি বন্ধ হয় তখন সে পীড়া নিবৃতি হয়।

মূলতালপুর।

আমোহিয়ার নিকট মূলতালপুরহইতে সম্রাটের পঞ্জিকা আসা গেল যে সেখানে

অনাবৃষ্টিপূর্বক সকল পুষ্কর শস্য দুই লা হওয়াতে অতিশয় দম্পা জয় হইয়াছে এবং ডাকহইতেও গুম্বা চৌকিবারেরদিককে মানে না ও তাহারদের সহিত যুদ্ধ করিয়া গুম্বা ডাকহইতে করে। কিন্তু কেবল নিশাধী দেখিলে পলায়ন করে।

নতকী।

শহর কলিকাতায় নিকী নামে এক পুষ্কর নতকী জিল কোন ভাগিহালা লোক ডাক হার গণি শ্রমিয়া ও নতকী দেখিয়া অত্যন্ত সন্তুষ্ট হইয়া এক হাজার টাকা মাসে বেতন দিয়া তাহাকে চাকর রাখিয়াছেন।

মো।

হমি-হাবাদের পত্রাবার শ্রুনা গেল যে তালিম টেবর্তি মো নামে স্থানে অতিবৃষ্টিপূর্বক সেখানকার শস্যাদি সকল নষ্ট হইয়াছে এবং তাহার দক্ষিণ-দেখেরও সে ই কর্ণ সম্রাটের শ্রুনা ঘাইতেছে তাহাতে শ্রীযুত জেনেরাল ডবলন মাহেবের সৈন্যের সঙ্গে যে সকল মুষ্টিয়া মন্তুর ইত্যাদি লোক চলে তাহারদের অতিশয় দুঃখ হইয়াছে এবং তাহারদের গণকারের নিমিত্ত এই জেনেরাল এবং অন্য ইংগ্রেজী সেনাপতিরা একটা দিবস স্থির করিয়াছেন এই নিমিত্তে জেনেরাল মাহেব প্রথম আপন নামে এক হাজার টাকা ক্ষাড়কর করিয়াছেন এবং অন্য সেনাপতিরা আপন নামের সংগতাসমুদায় দিয়াছেন। ইহা জিল যেখানে যে শস্য জিল তাহা জেনেরাল মাহেব আপন ক্রয় করিয়া সেখানে

রাখিয়াছেন এবং এক ব্যক্তিকে পুষ্টি দিন জন্মের পরিমাণ তুলি দিয়া পুষ্টি বার হাজার লোককে বাঁচাইতেছেন।

বাঁকর।

মিসর দেশেতে অনুমান চারি বৎসর হইল ইংগ্রেজহইতে অতিশয় আনবান এক ব্যক্তি সেখানকার বাদশাহের নিকট গিয়া চাকর হইল এবং সে দেশে পূর্বে অতি অসুবিধিত জিল এই ব্যক্তি গিয়া অবধি সে দেশে ইংগ্রেজহইতে ও অন্য দেশহইতে নানাপ্রকার বারিআ হইতেছে এবং অন্য দেশহইতে বন্দুক ও গুলি ইত্যাদি যুদ্ধোপকরণ সামগ্রী আনা জন করিতেছে সেখানে কাঁচ অতি দুর্লভ তাহাতে এই ব্যক্তি এমন কোন যন্ত্র করিয়াছে যে সে সূর্যের উত্তাপে অগ্নির মত গুত্তপ্ত হয় এবং তাহার দ্বারা বাঁকর পুণ্ডিত করিতেছে।

বিদ্যার চর্চা।

এক বৎসরের মধ্যে ইংগ্রেজ দেশে ইতর লোকের মধ্যে ঐমত বিদ্যার চর্চা হইয়াছে যে ইহার পূর্বে কোন দেশে এ প্রকার হয় নাই। কলিকাতায় গিয়া সকল লোককেই জ্ঞাত আছে যে হিন্দুকার দুর্গমিত্তে কেতাব বিক্রয় হয় এবং আমেরিকা-সে বিদ্যা অনুা ভাত আদি কিন্তু ইংরেজ গত এক বৎসরের মধ্যে এক কেতাব এগির হাজার বিক্রয় হইয়াছে অন্য এক কেতাব বার হাজার অন্য এক শতর হা

সমাচার দর্পণ।

আর তিন শত এবং ত্রয়োবিম্বয়ক
এক কোষ তেইশ হাজার তিন শত
এবং বালকেরদের শিক্ষার্থে ব্লেন-বুক
অর্থাৎ লিপিবদ্ধ। এক লক্ষ সাত হাজার
কোষে সমুদ্রের বিষয় হইয়াছে যদি
কলিকাতায় ইতর লোকেরদের এমত বি
চার করা হইত তবে গেরবাগান ভিন্ন
সকল বাজারেই একই কাপাখানা হইত।

আশ্চর্য্য বস্তু।

এতদ্দেশীয় লোকেরা জাত আছেন
যে ইংল্যান্ডেরা কোন কাপড়কে আঁকিট
করিয়া বলেন ঘোঁরা না আনেন তাহার
দের আঁকিট আঁকা লিখি যে আঁকার
নাথ দুই হাত ভিন্ন বুক ও শর দেশ
আঁকি থাকে। ইংল্যান্ড দেশে এক ব্যক্তি
এখন এক আঁকিট সৃষ্টি করিয়াছে যে সে
ঘোঁরা চমকে নির্মিত এবং তাহার
মধ্যে বাতাস খেল যে ব্যক্তি এই আঁকিট
পুষ্ট করিল সে পুণ্য আপনি আঁকিট
পরিয়া অনেক মধ্যে অধগাহন করিল
এবং তাহার চাকরকে আপন পুঙ্খ বনা
ইয়া অলায়ানে অনেক গুণর ঘাইতে লা
গিল।

আশ্চর্য্য পরীক্ষা।

জয় মান হইল ইংল্যান্ড দেশে এক ঘূবা
লৌক এমত আশ্চর্য্য হল এক গাড়ির ম
তে বোঁজিল যে পুণ্য এক ঘণ্টাতে সাত
চৌ কোশ বোঁজিল এবং এখন বোঁজা
বল হইল তখন সে ব্যক্তি পরীক্ষা করি
ল না বোঁজা বদল হইলেই পুনর্বার তা
হার মনে বোঁজিতে লাগিল এই মত দুই
পুহর বেশার সময় বোঁজিতে আরম্ভ
করিয়া দুই ঘণ্টা ত্রিপর্যন্ত মাত্র দুই পুহ
রেস মধ্যে ত্রি কোশ পথ বোঁজিয়াছিল।
যখন শহরে পৌঁছিল তখন সে ক্লান্ত না

হইয়া শহরের দ্বারা ও নানা পুকার ঘর
সকল দর্শন করিয়া বেড়াইতে লাগিল।
বোঁজিবার সময় সে আপন মুখে কেবল
এক জোট বেত যাত্র রাখিয়াছিল যেন
তাঁহাতে মুখ কিছু খোঁলা থাকে ও অন্য
দ্বায়ে লিখান মুখ দিয়া নির্গত হয়।

হয়দরাবাদ।

হয়দরাবাদের সমাচারদ্বারা শুনা গেল
যে ক্রিয়াক্ষম নামে কিল্লার অধীক্ষ হয়
দরাবাদের নবাবকে রাজকর দেওয়া বন্ধ
করিয়া কহিয়াছে যে আর তাহার অ
ধীন থাকিব না ইহাতে হয়দরাবাদের
নবাব পাঁচ হাজার সৈন্য দিয়া ঐ কিল্লা
দখল করিতে অনেকাল ওল সাহেবকে
পাঠাইয়াছেন। এই সমাচার শুনিয়া
সেই কিল্লাদার অনেক সৈন্য সংগ্রহ ক
রিতেছে ও সকল দেশ লুট করিয়া আর্থ
সংগ্ৰহ করিতেছে। এই কিল্লাদার পাঁচ
বৎসর অধি আপন পিতা মৃত্যুকে
কিল্লাইতে ডাকাইয়া দিয়াছে তাহার
এখন হয়দরাবাদে আছে সেই কিল্লা হ
য়দরাবাদের লিঙ্ক পশ্চিম এক শত পা
নর কোশ অন্তর পুণা শহরের নিচট সে
কিল্লা শূন্যরূপে প্রাপ্ত কিন্তু বহু লোক
নহে। এবং তদ্দেশীয়েরা অনুমান করে
যে ঐ কিল্লাদার কদাচ নবাবের সৈন্যের
সহিত যুদ্ধ করিতে পারিবে না তাহার
কিল্লায় পৌঁছিলে আপন ইচ্ছায় নবাবী
সৈন্যের হাতে কিল্লা সমর্পণ করিবে।

হয়দরাবাদের দুর্ভিক্ষের বিষয় অতি
শব্দ শ্রাব্য। ইহাতেও এ দেখিল যে সক
ল ইংল্যান্ডেরা আছেন তাহার। তদ্র
কর্তৃক দেশে খোঁলাই ধানের গোলা
আছে সেইখান হইতে ধান্য ক্রয় করিয়া
হয়দরাবাদে লাস্ত করিয়া রাখিতেছেন।

যদি দুর্ভিক্ষ হয় তবে ঐ সকল ধান্য দুখান
লোকেরদিগকে বিনামূল্যে দিবে।

আত্ম হত্যা।

৭ অক্টোবর বৃহস্পতিবার মোঃ বদিক
তার পটলভারায় নীকারি চৌলার রায়
মনি নামে এক হিন্দু কুলীক আপন ঘরে
গলায় দড়ি দিয়া মরিয়াছে ইহার পূর্বে
আটার যান তাহার পুত্র মরিয়াছিল সে
ই শোক সে মর্দা বসিত যে আমি এ
শোক মর্দা মূর্তিতে পারি না ইহাতে আ
মি আত্মহত্যা হইব পুত্র এই কথা কহা
তে লোকেরা প্রায় বিশ্বাস করিত না কিন্তু
শেষে সকলে দেখিল।

সুপ্ৰিয়াকোর্ট।

সুপ্ৰিয়াকোর্টর এক ইস্তাহার পুকার হই
য়াছে তাহারদ্বারা শুনা গেল যে সুপ্ৰি
য়াকোর্টর তৃতীয় মিসিল শ্রবণর ১২ আ
ক্টোবর তারিখে খোলা যাইবে।

আশ্চর্য্য ওদ্ভূত।

গত বৎসরে ইংল্যান্ড দেশে এক অল
সাহেবের নিচট অন্য এক ব্যক্তি ভাল
তৈল এক কলসি পাঠাইল কিন্তু তখন না
হেবের তৈল থরত করিবার আবশ্যক হি
না তাহাতে আপন গদামে জোট এক
সিন্দুকের মধ্যে কলসি মুক্ত রাখিলেন
কিন্তু তিন পরে ঐ সাহেব এক দিন আপন
গদামে গিয়া দেখিলেন যে তৈল অনেক
কমিয়াছে ইহাতে অনুমান করিলেন যে
কোন অশুভে এ তৈল খায় তাহার ম
নেহে নাই আমি অদ্য ধর্ম্মের ক্রিয়াকাল
পরে দেখিলেন যে বৎস তিনটা ওদ্ভূত
আমিয়া একটা সেই সিন্দুকের কিল্লাট

সমীচীর দর্পণ।

এবার একটা তাহার পা বারিয়ার বলমির
গলিয়া ও আর একটা তাহার গুলি চকি
দ্য আপন লেজ দিয়া উড়ল উলিয়া যা
ইতে লাগিল তাহার পাওয়া হইলে সে
ওপরে গিয়া অন্য একটাকে পাঠাইয়া দিল
এ সেই খানে আবার পাঠিল এই রূপে
পরপর সমস্তই পাঠিয়া গেল অল্প দিনে
এত উড়ল পাঠিয়াছিল যে শেষে জিনটা ও
দূরে ঘোড় দিয়াও তাহারদের লেজে
উড়ল নাগাল পাওয়া তার হইল।

শ্রীযুত রণজিৎ-সিংহ।

লাহোরের আশ্রিত আফগান সমীচীর পত্র
দ্বারা শুনা গেল যে সিক্কনদীর নিকটস্থ
আটক নামে স্থানের আফগান শ্রীযুত রণ
জিৎ-সিংহের নিকট এই সমীচীর পাঠা
ইয়াছেন যে যদি এই সময়ে পেন্দোর
শহরে কিছু সৈন্য পাঠাও তবে অন্যায়
সে পেন্দোর দখল হইতে পারে যেহেতুক
মহম্মদ ওজিমা খাঁ সে শহরে অত্যন্ত সৈন্য
রাখিয়া কারোলা গিয়াছে এবং যে সৈন্য
রাখিয়া গিয়াছে তাহারও যুদ্ধে নিপুণ
নহে কিন্তু রণজিৎ-সিংহ তাহার নিকট
নিম্নলিখিত যেন এমন বর্ষাশাল ও কা
প্তীর শহরের লোকেরা সর্বদা বাস্তব আছে
এই দুই শেষ হইলে যুদ্ধে পুঙ্খ হইবে।
পাক্তাবের দক্ষিণ পশ্চিমে ভাগে কতক
অমিদারেরা শ্রীযুত রণজিৎ-সিংহকে
রাজ্যের দেয় নাই এবং তাহার এই
কহিতেছে যে অতি দুর্বল সমীচীর দু
দর মত অসুখ নাই অতএব আমরা রাজ
কর দিতে পারিব না তাহাতে শ্রীযুত রণ
জিৎ-সিংহ সর্বদা রাজসুদের তাহারদের
খানে কর লইতেছেন অর্থাৎ একই অমি
দারের নিকট পাঁচ শত ঘোড়সওয়ার পাঠা
ইতেছেন।

খুল।

গত শনিবার ২ আক্টোবর তারিখে
পটল ভগীর মল্লারিতে মানিক নামে এক
মুলমানের কন্যা খুল হইয়াছে তাহার
বিকারিত এই মলাওলা নামে এক জন
খোয়াজগীরের সহিত ঐ কন্যার সম্বন্ধ
পত্র হইয়াছিল পোনের দিন হইল ঐ
খোয়াজগীর কন্যার মাতার নিকট
গিয়া বিবাহ দিতে চুরা করিল এবং কহি
ল যে এই পক্ষের মধ্যে শুভকর্ম করিল
করিতে হইবে তাহাতে কন্যার মাতা
কহিল যে আমি এই পক্ষের মধ্যে বিবাহ
দিতে পারি না কিন্তু দিবা করিতেছি যে
এই মহরমের মধ্যে বিবাহ দিব তাহার
মরণের দিন বৈশাখের ঐ কন্যা ও তাহার
মাতা বেড়াইয়া রাত্রি আশ্রিত ঘরে শয়ন
করিয়াছিল। কতক রাত্রে কন্যার চটপটা
লিতে ও শরীরে রক্ত লাগিতে কন্যার
মাতা ওঠিল এবং জোন্স-মুখেতে দেখিল
যে মলাওলা এক জোরা হাতে করিয়া
দাঁড়াইয়া দাঁড়াইয়াছে পরে আশ্রিত কন্যার
নিকট গিয়া দেখিল যে তাহার গলা
কাটিয়া খুল করিয়াছে। মলাওলা
খয়ন দেখিল যে কন্যার মাতা আক্টো
দেখিয়াছে ওখন জনরব না হইতে
ই বাটীতে আর এক জোটা ঘরে পুৰণ
করিয়া আশ্রিত গলায় চুরি দিল কিন্তু মরি
ল না পরে খানদার আসিয়া এই মকল
দেখিয়া ঐ ব্যক্তিকে হাঁসপাতালে পাঠা
ইয়া দিল এবং ওঘদি দিয়া তাহাকে কি
কিছু মূল্য করিয়া কলিকাতার জেলখানায়
কয়েদ রাখিয়াছে আশ্রিত মিসিনে তা
হার মোকদ্দমা হইবে।

বোম্বাইয়া।

বোম্বাইর নিকটস্থ ময়দু আরবীর (বা
মুন্ডিয়া) সর্দার বোম্বাইয়া করিয়া, বাসি

জোর আহাঁজ মকল চলিতে দেয় না
তাহারদের নাম তর্কমারী বোম্বাইয়া
তাহারা এমত বুঝে যে দুই হইতে
যদি কোন আহাঁজের লোকেরা তা হার
দিককে দেখে তবে তৎক্ষণাৎ আশ্রিত
দের আহাঁজ লইয়া পলায় যোহতু তা
হারদের সম্মুখে আহাঁজ পড়িলে কোন
লোকের বাড়িবার ভরসা থাকে না অনেক
বার ইংল্যান্ডের তাহারদিকে তাড়া
ইয়া দিয়া গা মূল্য করিয়াছিল কিন্তু য
খন শাসন করা যায় তখন তাহার গা
য় কিছু কাল পরে পুনর্বার আইসে বার
বার এই রূপ হয় তাতে ইংল্যান্ডের এই
বার অনেক আহাঁজ সমস্ত করিয়া তা
হারদিকে একেবারে উড়ি করিতে
গাইয়াছে।

বানিজ্য।

গত সপ্তাহে অন্য বোম্বাইতে কিছু
তুলা কলিকাতায় আইসে নাই এবং
গত দুই সপ্তাহের মধ্যে কেবল পাঁচ হা
আর মোল তুলা কলিকাতায় আসিয়াছে।
ইহাতেও তাহার মূল্য পুতি মোল তারি
আনা করিয়া মূল হইয়াছে।

এখানকার তুলা চীন দেশে ও ইংল্যান্ড
দেশে অধিক যায় গত বৎসর হইতে এ
বৎসর দুই দেশে অতি অল্প তুলা গি
য়াছে গত বৎসর চীন দেশে বাধ্য হইয়া
র এক শত মাতার গাঁটি গিয়াছিল এবং
মর কেবল বিশ হাজার তিন শত চতুর্দশ
গাঁটি গিয়াছে এবং গত বৎসর ইংল্যান্ডে
এক লক্ষ চত্বিশ হাজার আট শত তিরান
বই গাঁটি গিয়াছিল এবং বৎসর কেবল
তেরিশ হাজার এক শত ত্রয় গাঁটি গি
য়াছে।

এ বৎসরের ওপদ নীল অভাব বা
আরে পৌঁছিয়াছে কতক নীল এক শত

সম্পাদার দর্পণ।

চল্লিশ টাকা করিয়া মোন বিক্রয় হইয়াছে এবং হত্যক ওত্থম ন্যায়ের কারণ এক শত পঁয়ষট্টি টাকা করিয়া মোন দিতে তাহারা জিল তাহাতেও স্বীকৃত হয় নাই।

তগুলের মূল্য সমভারে আছে গামের মূল্য পুতি মোন দুই আনা অধিক হইয়াছে।

এই সমস্তই কলিকত অনেক আমদানী হইয়াছে কিন্তু তাহার মূল্য কিছু অল্পাংশ হয় নাই।

লোহার মূল্য সমভারে আছে রেশমের মূল্য পুঁহইতে কিছু নুন হইয়াছে।

গৌলমরিচের মূল্য পুঁহইতে পুতি মোন এক টাকা অধিক হইয়াছে।

ইতিহাস।

এক মাঠে অনেক ঘেব চরিভেজিল পড়িতহইতে এক অটায় পক্ষ আসিয়া একটা ঘেবকে চকুতে করিয়া লইয়া গৌল তাহা দেখিয়া এক কাক আপন পরামর্শ প্রকাশ করিবার জন্য অতিশয় করিয়া আর এক ঘেবের ওপর পড়িয়াছে ঘেবের লোমঘেতে তাহার মকল নগ্ন জড়াইয়া আপন পলাইতে অনুমর্ষ হইল পরে ঘেবের রক্তকেরা আসিয়া ঐ কাককে মারিয়া ফেলিল। এই ইতিহাসের তাৎপর্্য এই যে আপন পরামর্শমানুষের কথা করা ওড়িত।

হিংসুক ও কৃপন।

এক ব্যক্তি হিংসুক ও আর এক ব্যক্তি কৃপন এই দুই জন আতি সুবাহিয্য এক সময় তাহারা দুই জনেই ভদ্রসদর হইল

করিল অনেক দিন গৌলে এক দূত তাহাদের নিকটে ক নিয়া কহিল যে তোমাদের দুয়ান্না সিন্দ হইবে কিন্তু দুয়ান্ন ব্যক্তি মাছা দুয়ান্না করিবে দ্বিতীয় ব্যক্তির তাহাইহইতে দ্বিগুণ হইবে ইহা শুনিয়া কৃপন ভাবিল যে তাহাি আশে চাহিব না এই ব্যক্তি যত চাহিবে আমি তাহার দ্বিগুন পাইব পরে হিংসুক ভাবিল যদি আমি অর্ধ চাহি তবে আমি যত পাইব এ ব্যক্তি না চাহিয়া তাহার দ্বিগুন পাইবে এ আমার অমঙ্গল এই কৃপন অনেক বিবেচনা করিয়া কহিল যে আমার এক চক্ষু গিয়া ওঠিলে দশটা কুণ্ড হস্ত তাহাতে ইহার দুই চক্ষু গিয়া ওঠিলে বিশ কুণ্ড হইবে।

এক বাণু ও এক মনুষ্য।

এক পলাতক রাষ্ট্রীতে অতিশয় বন হইয়া সে বনে এক বাণু জিন বৈদ্য সে বাণু পলাতকে বন হইয়া লান্না পুকার চেষ্টা করিয়া আপনাকে জ্ঞাতহইতে অশক্ত হইল পরে জ্ঞানমুখ্য এক লোক ঐ স্থানে কুল পাছে গুহর জালিত ওত্থমসদর সে কুলের নিকটে গিয়া দেখিল যে এক বাণু বন্ধ আছে। বাণুও তাহাকে দেখিয়া লান্না পুকার মিলতি করিয়া কহিল যে হে মনুষ্য তুমি আমাকে বন্ধনহইতে মুক্ত কর ইহাতে তেমায়ে যথেষ্ট ধর্ম্য হইবেক ও আমি কিম্বা আমার আতি মাত্রে তোমাকে কখন ভক্ষন করিব না এই সভা করিলাম। পরে ঐ ব্যক্তি বাণুকে কাড়র দেখিয়া অনেক বিবেচনা করিয়া বাণুকে বন্ধনহইতে মুক্ত করিল। বাণু মুক্ত হইয়া ঐ ব্যক্তিকে ভক্ষন

করিতে ওড়াই হইলে ঐ ব্যক্তি কহিল যে এ তোমার ধর্ম্য নহে তুমি মতাক দিয়াছ যে আমাকে ভক্ষন করিবা না বাণু কহিল বিলক্ষণ তুমি আতি মুক্ত আমি আতি বাণু আমার ধর্ম্যই বা কি সভাই বা কি তোমার সহিত আমি থাকে মন্বর্ক জীবর মুক্তি করিয়াছেন অতএব তাহা কখন অলম্য করিতে পারি না পরে ঐ ব্যক্তি কহিল যে হে বাণু অতিশয় আমাকে ভক্ষন করিও না দ্বিগুন করিয়া যে হয় করহ এই সময় তাহা এক আনবান পুঙ্খ বৈদ্য সেই পুঙ্খ ওত্থম হইল এ তাহাকে দেখিয়া ওত্থম মর্ষমানিয়া আপন বৃত্তান্ত কহিল সে আনবান ঐ মনুষ্যকে কহিল যে তুমি বাণুর মায়া বটে বাণুকে যে বন্ধনহইতে মুক্ত করিবার এ নিমিত্ত তোমার এই ওত্থম হও। এই কথা হইয়াছে কহিয়া বাণুকে কহিল যে হে বাণু ঐ ব্যক্তি তোমার মায়া বটে কিন্তু আর এক বাণু ঐ ধর্ম্য আমাকে কহিল যে ঐ ব্যক্তি ন তোমার নিকটে আসিয়া দেহ আমি ভক্ষন করিব ইহা শুনিয়া বাণু কহিল যে সে অন্য বাণু কে মায়া ও হার নিকটে আমি ঘাইব পরে ঐ দুই জন ব্যক্তির মধ্যে ঐ কুণ্ডর দ্বিগুন হইয়া কৃপন বাণুকে দেখাইল বাণু আপন পুতিবিশ্ব দেখিয়া মহাক্ষেপে ঘোর শব্দ বলিল তাহাতে একটা পুতি বৃকিও-শ্রুতিল ও পুতিবিশ্বকে কোপিত দেখিয়া বাণু তাহার ওপর ঐ কুণ্ডর মর্ষা বলিল পরে ঐ আনবান মনুষ্য ঐ লোকের মধ্যে চটাঘাত করিয়া কহিল আমার ওত্থম কর। কখন করবা নহে।

এই সমাচার দর্পণ প্রায়শ্চরণের প্রাণীমালাতে পুতি সমস্তই শব্দবিচারে প্রাপ্য হয়। তাহার লক্ষণসমূহ হয় জিল আরামপুরে প্রাণী মালাতে প্রাণ লম্ব পঠাইলে সমস্তই বাক্যের ওত্থমের নিকটে পাঠান থাকিবেক তাহা হইয়া যাহা এক টাকা দিলি দ্বিগুন করিয়া দেল এই তাহার নিকটে সমাচার না।

সমাচার দর্পণ

৭৩ সংখ্যা।

শনিবার।

১৩ আক্টোবর সন ১৮৭৯। ৮ কাঁতক সন ১৯১৩।

দর্পণে মুখ সৌন্দর্য্যের কার্যবিবরণ্যঃ।

ব্রাহ্মসিংহ রায়চন্দ্র রায়চন্দ্র দর্পণে ॥

কোম্পানির কাঁতা।

কোম্পানির শতকরা চমু টাকার সুদের কাঁতা কয় করতে হইলে শতকরা এক টাকা বৎসর আনা তিনশোঞ্চ। বিস্ময় করিতে হইলে শতকরা চারি টাকা তিন শোঞ্চ।

সম্প্রতি হুগলী পঞ্জিকা।

| ১০ | আক্টোবর | শনিবার | ৮ | কাঁতক |
|----|---------|-------------|----|-------|
| ১১ | ১ | রবিবার | ৯ | ১ |
| ১২ | ২ | সোমবার | ১০ | ২ |
| ১৩ | ৩ | মঙ্গলবার | ১১ | ৩ |
| ১৪ | ৪ | বুধবার | ১২ | ৪ |
| ১৫ | ৫ | বৃহস্পতিবার | ১৩ | ৫ |
| ১৬ | ৬ | শুক্রবার | ১৪ | ৬ |

সমাচার দর্পণ।

ইন্ডাহার।

১৩ আক্টোবর তারিখে শ্রীশ্রীযুতের আজ্ঞাতে এক ইন্ডাহার হইয়াছে যে কোম্পানির এই দেশের কর্তৃক পরিবেশনার্থে যে সাহেব লোকেরা নিযুক্ত হইয়াছেন তাহারদের লিষ্ট যে ব্যক্তি কোম্পানির কাঁতা দাখিল করিয়া টাকা লইতে চাহে তাহার মোট কলিকাতায় শ্রীযুত রায় সাহেবের লিষ্ট ট্রিবি লিখিবে এবং সে ট্রিবি মতে এই লিখিবে যে কি দরে তাহার কোম্পানির কাঁতা বিক্রয় করিতে পারে।

শ্রীশ্রীযুত।

ইংলণ্ডের শেষ সমাচারদ্বারা শুনা গেল যে শ্রীশ্রীযুত এলেন যে এ দেশের কর্ম চলাইতেছেন তাহাতে ইংলণ্ডের তথাকথিত অত্যন্ত সমৃদ্ধ হইয়া এই অল্প দিয়াছেন যে এত দিন শ্রীশ্রীযুতের বাসনা তত দিন বাস্তবায়ন থাকিয়া বর্তমান হইয়াছে। তদানীন্তন বর্তমানের দাঁত চমু বৎসরব্যন্ত এ দেশে থাকিয়া পুনর্বার ইংলণ্ডে গিয়াছেন।

হস্তকলম।

ইংলণ্ড দেশে যে মহাবাকী আছে তাহার লেট অসংখ্য তাহার মধ্যে মিয়া লেট মুদ্রা বর্ণ হাজার পুস্তক হইয়াছে এই নিমিত্ত বাকীর অধিকার এই পরামর্শ দিরা করিয়াছেন যে আর এক পুস্তক লুণ্ডন মোহর তাহাতে করা যাইবে যে সে মোহর অন্যের করা অতি দুর্ভর এবং যদিও ততি কষ্টে করিতে পারে তবে ঐ মোহর করিতে এত ব্যয় হইবে যে তাহারদের লেট করিতে কিছু লাভ থাকিবেক না।

বোম্বাটিয়া।

আমরা পূর্বে লিখিয়াছি যে স্থান দেশের ওপারে ভূমিবাহু সমুদ্রের দক্ষিণ তীরে চারি পাঁচটা স্থান মুসলমানদের আছে তাহার সর্বদা সেখানে দমুস্তি করিত এবং আহাঙ্গম গোরাংদিগকে বহিয়া তাহারদের পায়ে জিজির দিয়া

বাতারের বিক্রয় করিত তাহাতে ঐ সকল গোরাংলোক কোলা গোলাম হইয়া পশুর মত শ্রম করিত এবং নানা পুকার দুঃখ পাইত। তাহাই বৎসর হইল ইংলণ্ডীয়েরা এই বোরাংগ আদর মন্থিত না পারিয়া বারখান পুর্বাণ যুদ্ধের আহাজ সেইখানে পাঠাইলেন এবং এই অল্প দিনে যে তাহারদের কিল্লা ও আহাজ সকল নষ্ট করিয়া তাহারদের তথাকথিত মন্থিত এই বন্দোবস্ত করে যেন তাহার আদর স্থানও এ পুকার বোরাংগ না করে। পরে ইংলণ্ডীয় আহাজ সেখানে গিয়া অধিশূন্য নয় ঘণ্টাব্যন্ত শত্রুদের ওপর গুলি মারিল তাহাতে বোম্বাটিকারদের আহাজ একে একে কাট ও থাকিল এবং যে কিল্লা ছিল তাহাতে এক ইটের ওপর আর এক ইট থাকিল না। সম্প্রতি এক কেডাব জাপা হইয়াছে তাহারদ্বারা আনা গেল যে ঐ নয় ঘণ্টা যুদ্ধে আটটা হাজার দাঁত শত চল্লিশ মোল বাকম ব্যয় হইয়াছে।

করু দেশ।

করু দেশে অধিশূন্য এক দিন ও দুই রাত্রিব্যন্ত এক মহাবাক ও অতিশয় হস্তি হইয়াছে তাহাতে সেখানকার বৃদ্ধ সকল সম্মেলন ও পাটন হইয়াছে ও অনেক লসাক্ষের ভূমিয়া গিয়াছে এবং এই কষ্টে অধিক মনুষ্য নষ্ট হয় নাই কিন্তু মহিষ মাক্রা আর পশু বিস্তর মারা পড়িয়াছে ও গাতি সকল শূন্য এক কোণ দের কোণ দূরে ওড়িয়া গিয়াছে।

সমাচার দর্পণ ।

বিদ্যার মূল ।

ইংলণ্ড দেশে এখন যে এক জন অতি সুখের জীবনযাত্রা আছে সে গণ্ড বার বৎসরের মধ্যে আপন কৃত গুণ বিকৃত হারা পীত লক্ষ সত্তর হাজার টাকা লাভ করিয়াছে । এ দেশে পুরুষ কোন ব্যক্তি কোন গুণ রচনা করিলে রাজারা কিম্বা বাদশাহারা টাকা দিবে । কিন্তু এ ব্যক্তি যে এত লাভ করিয়াছে সে রাজা কিম্বা ভাগ্যবান লোকেরদের দত্ত নহে কিন্তু সাধারণ লোকেরদের মধ্যে তাহার পুত্রের এমত জন যে গুণ তাহা লোকেই এ পুত্র কয় করিয়াছে তাহাতে তাহার এত লাভ হইয়াছে ।

বান্ধুর জাহাজ ।

সম্প্রতি ইংলণ্ড দেশে বান্ধুর জাহাজ চাশান ঘাইতেছে এবং পূর্বে যে রীতি ছিল তাহা এখন গুণ লোপ হইতেছে । ইংলণ্ড ওপহীনহইতে আইলণ্ড ওপহীন গমনার্থে এক জাহাজ বান্ধুজাহাজ চাশান ঘাইতেছে সে পুত্রদিন ইংলণ্ড হইতে আইলণ্ডে যায় এবং তাহাতে যে বান্ধুর হল আছে সে ঘাটি ঘোড়ার শক্তি বারণ করে ।

অন্য একটা বান্ধুর জাহাজ আছে সে ইংলণ্ডহইতে কোমসহোণ অর্থাৎ দিলী মারের দেশে নিত্য যাত্রায়াত করিতেছে ।

ইংলণ্ড দেশহইতে আমেরিকা দেশে যে হাজার কোটি অল্প সে পথে যে বা শ্রীর জাহাজ যাত্রা এই সকলহইতে আশঙ্ক্য । সকল বান্ধুর জাহাজের পাল্লা নাই এ রীতি নাই কেবল কলশায়াস সর জাহা সে কয়লা জ্বালাইলে তাহার বাহ হারা অন্যায়সে লেপ বাতাস না থাকি লেও রাশি দিন সমান লেপ । কখন এক সোণ নানাবিধ হয় না ।

নীলগিরিপাহাড়ী লোকেরদের বিবরণ ।

এই পর্বত মান্দারাজের নিকট মেখা নকর লোকেরা অভিআশঙ্ক্য তাহার ঘের পুরোহিতের নাম শুকাল এবং বৎসর অল্প তাহার এই শুকালকে এক কুড়াল ও একখান বস্ত্র ও একখান কোমাল দেয় যদি কেহ না দেয় তবে তাহার অনুমান করে যে এই শুকাল ব্যাপ্তকে এই লগ্নায় যেন এই লোককে সে ভক্ষণ করে । শুকাল বৎসর অল্প এক বার আসিয়া যে সকল লোকের নিকট এই দুবা যায় তাহাকে একটু বুলানড়া দেয় এখন এই পর্বতীয় লোকেরা বনের মধ্যে পুবেশ করে তখন তাহার এই বুলান আশনারদের সম্মুখে চড়াই ও বলে যে এই বুলান চড়াইলে ব্যাপ্ত নিকটে আসিতে পারে না । তাহার অভিপায় ভোঁতা এবং জন গুণ দুই সের তপুলের ভ্রম ভক্ষণ করিতে পারে । তাহারদের বিবাহ হইবার সময় সমস্ত দ্বির হইলে বর কন্যা একত্র হইয়া বলযো পুবেশ করে এবং সেখানে এক আদর্শগিরের ওপর দুই জনে হাত দিয়া সে গাছ ওপড়ায় তাহাতে তাহারদের বিবাহ সিদ্ধ হয় ।

তাহার এই জনে যে ব্যাপ্তের মুখ বন্ধ করা এবং শস্য ওপড় করা কেবল পুরোহিতের মাংস । ইহাতে তাহার ঘের দেশে পুরোহিতেরদের অতিশয় সম্ভ্রম এবং পুরোহিত যাহাকে আশীর্বাদ দেয় সে নিজের বলে ভ্রমণ করে ।

সেই পর্বতের মধ্যে এক জোড় পাঁচড় আছে তাহাহইতে এক লক্ষা লিগড়া হইয়াছে এবং আর এক স্থানে এই নদী এক জোড় পাঁচড়ের নীচে দিয়া চলে তাহার নিকট অনেক মল্লয়া ও ঘোড়া ও হস্তি প্রভৃতির পায়ের চিহ্ন আছে সেখানে রাশিকালে নানা প্রকার যজ্ঞযায়ের

নায়ক শব্দ হয় কখনও বন্ধুকের আওয়াজের মত শব্দ হয় কিন্তু সেখানে লোক নাই এবং এই পর্বতীয় লোকেরা মান্দারাজের একবার এখানে ইনবেদা লগ্নায় গিয়া গু আদি করে । তাহার জনে যে যদি শুকাল আশীর্বাদ করেন তবে সেখানকার বলপশুরা তাহারদের হিংসা করিতে পা রে না কিন্তু সে দ্রিখা কখনও তাহার এই বলে মারাপত্তিয়া থাকে । সেখানকার লোকেরা তাম্র বর্ণ স্ত্রী লোকেরা আশনার মাথার ওপর অত্যন্ত চুল বান্দে বাকি চুল কপালের ওপর দিয়া চম্পুখণ্ড আনিয়া রাখে চুল আটকাইয়া ঘাস দিয়া বান্ধে যদি অন্য পুরুষের সহিত কোন স্ত্রীর সম্মুখ হয় ও সে তাহার বাহীত গিয়া দশ পোশর দিন থাকে তবে তাহার স্বামী তাহার ওপর ক্রুদ্ধ হয় না তাহার ঘের মধ্যে দশ লোকের ওপর এক জন অধিক আছে সকলে তাহার আশা মানে । সে পর্বতে গুটিতে কেবল দুই পথ আছে সে পথ এমন অল্প গুহ যে ঘোড়া কি পালকী কিছু ঘাইতে পারে না ।

আগারর তাজ অর্থাৎ শাহজাহানের কবর ।

যে অশ্লীলতা এখন পৃথিবীমধ্যে আছে সে সকলের মধ্যে শাহজাহানের কবর অতি আশঙ্ক্যজনক গৃহিত তাহার নাম তাজমহল । সে আগারর কিলাহইতে যেত কোশ অল্প সে তাজবাটী চয় শত হাত দূর দুই শত চল্লিশ হাত পূর্ব তাহার চতুর্দিকে গুটির বেষ্টিত সে গুটি রের মধ্যদিকে লাল পাথরে গৃহিত । গুটির রের বাহইতে তেঁজ হাত অল্পের খেঁত পাথরেতে নির্মিত এক বৃহৎ মেঝে সে বার হাত ও এক চয় শত হাত চতুর্দিক

সম্রাটের দর্পণ।

তাহার চারি কোণেতে চারি প্রবেশ সে ম
কল খেতে পুস্তকদেতে নির্মিত এবং যেখানে
যেতে আছে সেইখানে নীল পাথর ব
সাইয়া দিয়াছে যেন যেতে দেখা না যায়।
পুস্তক তাই এক শত কৃতি হাত চক্ৰকান
তাহার ওপরে এক ঘিলান সে আছে
সাত চল্লিশ হাত তাহার বাহিরেতে মক
ল খেতে পাথর এবং যেখানে হার দিয়া
খিতকী আছে সেখানে নানা পুস্তক
রঙ্গের পুস্তকদ্বারা ফুলের কাড়। যখন তা
হার মধ্যে প্রবেশ করা যায় তখন মনে
চমৎকার লাগে। সে কামরা আটকোণ
তাহার বাহিরে এক কার্শিশ আছে সে
কার্শিশ নানা পুস্তকের পাথরেতে সুশোভিত
তাহার খিতকী বার হাতের কয় গুলু নহে
এবং পুস্তক খিতকীর ওপরে আরবী হরফ
দিশা সেইখানে সেই মত কলা পাথর
বনাইয়া হরফ করিয়াছে এবং সে হরফ
এমন শোশাযত ও আশ্চর্যকর নির্মিত
যে যে লোক তাহা দেখে সে চমৎকৃত
হয় এবং খিতকীর ওপরে যে মকল ফুল
আছে সে দূরহইতে পুস্তক ফুল বোধ
হয় কিন্তু লিকটে গৌল দেখা যায় যে সে
পুস্তক পাণ্ডিত্য ভিন্ন পাথরেতে নির্মিত
এবং ফুলের যেখানে যেমন রঙ্গ সেখানে
সেই রঙ্গের পুস্তক দিয়া পুস্তক করিয়াছে।
এবং দুইটি লোকের ঘরের বাসের কারণ
তাহার তরুণকে অনেক ঘর ও বাগান
আছে।

সেই মর্যাদার কামরাত, শাহ
আহা। নের বেগমের কবর সেই কবর
খেতে পাথরে নির্মিত এবং তাহার ওপরে
নানা পুস্তকের কাড় ও খোদকারী করা
তাহার লিকটে শাহজাহানের কবর সেও
সেই মত সুশোভিত। এই কামরাত

তাহার ঘরের শব নাই কিন্তু কামরার নীচে
ঘিলান আছে সেই ঘিলানের মধ্যে তা
হার ঘরের শব আছে সেখানও এই পুস্তকের
সুশোভিত। যমুনার ওপরে এই তাজের
মত আর এক তাজ নির্মাণ করিতে
আরম্ভ করিয়াছিলেন কিন্তু তাহা সমাপ্ত
হয় নাই কেবল বুনিয়াদ মাত্র হইয়াছিল
তাহা অগাধিও আছে শাহজাহানের
ইচ্ছা ছিল যে তিনি আপনার নিমিত্তে
এমন আর এক তাজ করেন কিন্তু তাহা
শেষ না হইতে তাহার বিদায় ওপস্থিত
হইল। এই তাজ তাহার বেগমের নিমিত্তে
করিয়াছিলেন ১৬৩১ সনে তাহার বেগম
মরেন এবং এই তাজ এগার বৎসরে
গৃহিত হইয়াছে তাহার পর তাহার পুত্র
আবদুল আজিজ তাহাকে সিংহাসন হইতে
নামাইয়া আপনি বাদশাহ হইল এবং
সাত বৎসরপর্যন্ত তাহাকে ঐ তাজের
সম্মুখে আগ্রার কিল্লাতে কএম রাখিল
সাত বৎসরের পর তাহার মৃত্যু হইল
এবং ঐ বেগমের তাজ তাহাকে কবর
দিল। শাহজাহান যে সাত বৎসর
কএম ছিলেন এই কারণে তিনি অন্য তাজ
আপনার নিমিত্তে আরম্ভ করিয়া সমাপ্ত
করিতে পারেন নাই কেবল বুনিয়াদ হই
য়াছিল। এই তাজমহল নির্মাণ করিতে
ঘাট লক্ষ টাকা ব্যয় হইয়াছে।

ইংলণ্ডীয় সৈন্য।

গত মাসে কতক ইংলণ্ডীয় সৈন্য মু
আবদুল হইতে কাশীপর্যন্ত গেল এবং সে
খানে কোলানি বাহাদুরের যে বহিষ্ণ
লক্ষ টাকা ছিল সে টাকা মরকারী ব্যয়ের
নিমিত্ত তাহার মর্মে করিয়া কানপুরে ল
ইয়া গেল।

নন্দীরাবাদ।

নন্দীরাবাদ হইতে ১৮ মেতম্বর তারি
খের সম্রাটের প্রহার্য স্ত্রী গেল যে সে
তম্বর মাসে সেখানকার পুণ্ড্র তাম্র লো
ক অসুস্থ ছিল তাহার কারণ তাহার ঐ
অসুস্থ্য করে যে সেখানে মকল পুস্তক
ফুল, বৃক্ষ অভিশীঘ্র বাড়ে বাদলান্তেও
দেইকণ। তাহাতে অনেক লোকের ঘর
পীড়া হয় যেহেতু বর্ষাকালে বন্যা আ
সিয়া ঐ মকল ঘাস জুড়িয়া যায় সেতম্বর
মাসে যখন বন্যা হ্রাস হয় তখন ঐ ম
কল ঘাস পচিয়া গিয়া অভিশীঘ্র দুর্গন্ধ হয়
এবং সূর্যের তেজ সে সময় অতিপুষ্ক
হইয়া মকল পরমাণু আকর্ষণ করে ও
সে মকল আকর্ষণ দ্বারা তাহাতে অনেক
লোকের পীড়া জন্মে। দিল্লীর ওপরে
পশ্চিমদিকে দ্বিবাড়ী নামে যে স্থান আছে
সেখানে ইংলণ্ডীয় সৈন্যের ছাউনি আ
ছে এবং ঐ সময় সেখানে কোন পীড়া
হয় না যেহেতু সেখানে তৃণাদি জন্মে
না ও সেখানকার জুয়ি কেবল বালিগ্রয়।

গীতগোবিন্দ।

গীতগোবিন্দ হইতে ৫ আশ্বিনের তা
রিখে সম্রাটের আশ্রিত্যে যে সেখানে
বড় দুর্ভিক্ষ হইয়াছে কিন্তু সে মকল
কেবল সেখানকার মহাজন লোকের
ঘরে ঘরে যেহেতু সেখানে অভিসুন্দর
মত শর্মা জন্মিয়াছে। যখন ইংলণ্ডী
য়েরা সেখানে পুণ্ড্র গেল তখন সেখা
নে ছি টাকার ডিন মোন পাঁচ সের
দানা ও দুই মোন ময়দা বিক্রয় হইত।
এখন সেখানে দানা আঠি সের ও ময়দা
সাত সের সের করিয়া বিক্রয় হইতেছে
এবং এই অল্পসংখ্যক মকল শর্মা
হইয়াছে কোলানি সময় তাহার পাওয়া
যায় না।

সম্মান দপন।

আকটোবর মাস ১৮৭১ সনে আর্মার
কর্ম ইয়াছে সে এই।

২ আকটোবর ১৮৮০ সনে মাদ্রাজ
এক মহাক্ত ইয়া আর্মারদের কৃতি
মান আর্জ ১৮৮০ সনে দেশীয়দের
আলেক জাহাজ কৃতিয়া গিয়াছে।

৩ আকটোবর ১৮৮৫ সনে মোকাম
গাঙ্গুর লর্ড কর্ণওয়ালিস সাহেব এত
দেশের বড় সাহেব মরেন।

৪ আকটোবর ১৮৭৮ সনে মহারা
জের মরিত ঘুড়ার হই এই
জাহাজের মরিত ঘুড়ার নামে স্থান ই-
গাঙ্গুর দিতার অধিকার করে।

৫ আকটোবর ১৮৮৬ সনে কলিকাতায়
এমত এক হুজ হয় যে কোল্লারি আট
মান জাহাজ ১৮৮৬ সনে দেশীয়দের
দ্রিণাণ জাহাজ ও দ্রিণা জাহাজ লোক
মায়া যায়।

৬ আকটোবর ১৮৮৪ সনে চান্দোর
কিনা ই-গাঙ্গুর অধিকার করে।

৭ আকটোবর ১৮৮০ সনে কটক জিলা
নাগপুরের রাজার হইত ইহাতে ই-গাঙ্গুর
অধিকার করে।

৮ আকটোবর ১৮৭১ সনে মাদ্রাজে
এমত এক হুজ হইল যে তপুল বোকাই আ
হাজ মকল ডাক্তার কৃতিয়া জেলিল তাহা
তে আলেক তপুল লোকাল ইয়া দুর্ভিক্ষ
হইল এই দুর্ভিক্ষ দশ হাজার লোক
মরিল।

৯ আকটোবর ১৮৮৫ সনে বোলাপাট
সিদ্ধিবেলনা ওপাশে আর্মারের কএর
কালে মরিল।

১০ আকটোবর ১৮৮০ সনে মাদ্রাজ
নদীর তীরে ব্রজপুর নামে কিনা ই-
গাঙ্গুর অধিকার করে।

১১ আকটোবর ১৮৮০ সনে আর্মার
কিনা ই-গাঙ্গুর অধিকার করে।

১২ আকটোবর ১৮৮০ সনে কলি
দেশ ই-গাঙ্গুর অধিকার করে।

১৩ আকটোবর ১৮৮০ সনে মাদ্রাজে
সতর ঘণ্টাখান্ড এক মহাক্ত ইয়া
জিল তাহাজে মেখানকার মকল জাহাজ
এ মকল লোক মায়া গেল।

১৪ আকটোবর ১৮৮০ সনে আর্মার
গাঁও ই-গাঙ্গুর পুণ্ডার অধিকার
করে।

১৫ আকটোবর ১৮৮৪ সনে ই-গাঙ্গুর
রা গাঙ্গুর কিনা অধিকার করে।

তাল গাঁও।

তালগাঁও ইহাতে ১৪ আকটোবর তা
রিখের সম্মতির দ্বারা স্থানা গেল যে সে
খান শীতরক্ত ইয়াছে ও বরষ পতি
তেছে। এবং মেখানকার লোকেরা এখান
ভরসা করিতেছে যে এই বরষ মেখানে
কতিশয় শস্য জন্মিবে। এবং মেখানকার
পুত্রি লোকেরা কহে যে আমরা কখনও
পুত্রি দেখি নাই যেমন এই বরষ শরী
ইত্যাদি ক্ষুদ্র শস্য জন্মিয়াছে এবং এখান
সে মকল ক্ষেত্র পুত্রি অলা বীজ বপন
করিবার গুণক ইয়াছে তথা মেখান
কোন দুখ সম্মত নহে। এবং গাঁও
লোকেরা আর্মারদের ক্ষেত্র শস্য
মকল থাইয়া জেলিয়াছে এখান বীজের

কতিশয় শস্য করা তাহারদের আতি
দুঃখের যেহেতু মহাজন লোকেরা
কতিশয় দুখ লো মকল দুখ বিক্ষ
তেছে। ইহাতে তহু হয় যে বীজ গাঁও
দুখের মত কৃষিকর্ম ইহাতে না এবং পু
ইর আরও দুর্ভিক্ষ ইহাবে।

আর্মার মরন।

গাঁও ১৪ আকটোবর শুক্রবার তারিখে
মতে গাঁও বেলার সময় মোকাম
নকে এক সাহেবের কবর হইতে জিল
তাহা দেখিতে জাহাজের আলেক
লোক গাঁওতে কমাএত ইয়াছিল এই
কালে এক জন ছিদ্দুরের মহাজন জাহাজ
মুখের বান্ধাঘাটে বসিয়া ইলিনাম
মালা জাহাজ করিতেছিল এবং চালকের জন
তা দেখিতেছিল এই সময়ে আকমা
চুলিয়া পড়িল ইহা দেখিয়া তাহার তহ
রঙ্গ লোক তাহাজে বীরিয়া গাঁওতে
কতিশয় করিলে তাহার পুত্রগাঁও হইল।

এক শিকারি আর মর্শ।

এক শিকারি বন্ধুত্বেরা এটা মর্শ
তকে মারিতে তা মর্শ করিতেছিল ইহা
মধ্যে এক মর্শের গাঁও তাহার পদাঘাত
হইবামাত্র মর্শ তাহাজে মর্শ করিল
শিকারি মর্শের মর্শ জালিতে ভিত
ভিত ইয়া তহিতে পড়িয়া মর্শ
পলায়ন করিল শিকারি বিহের কলি
মরিল।

ইহার তৎপর এই যে নিরপরাধ
কহারো হিন্দা করিতে বাসনা করিলে
আর্মার ফিত হয়।

এই সম্মতির দ্বারা জাহাজের জাণাখানিতে পুতি সম্মতি হ শনিবারে জাণা হয়। যাহার লওনাশ্যক হয় তিনি জাহাজের জাণা
খানিতে আপন নাম পাঠাইলে সম্মতি হ কাগজ তাহার লিখে পাঠান যাইবেক তাহার মূল্য মাংস এক টাকা যিনি লিখিত করি
ছেন যদি তাহার লিখে সম্মতির না পৌঁছে তবে তিনি জাহাজের জাণাখানিতে সম্মতির দ্বিমাংস তাহার লিখে পাঠান যাইবে।

সমাচার দর্পণ

৭৩ সংখ্যা।

শনিবার।

৩০ ডিসেম্বরের সন্ধ্যা ১৮৪৯। ৪৫ ক্রীষ্টীয় সন ১১১৩।

দর্পণে মুখ পৌন্দর্য্যের কার্যবিবরণ্যঃ।

দুর্ভাগ্যবিশিষ্ট সমাচারের দর্পণে ॥

কোয়ালিয়ার কাণ্ড।

কোয়ালিয়ার শতকরা চার টাকার মূলের কাণ্ড করা করিতে হইলে শতকরা এক টাকা চৌদ্দ আনা ভিস্কোয়। বিক্ষয় করিতে হইলে শতকরা দুই টাকা চারি আনা ভিস্কোয়।

সম্রাটের পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|----------|-------------|----|-------|
| ৩০ | আমৃত্যুর | শনিবার | ১৪ | মার্চ |
| ০১ | ২ | রবিবার | ১১ | ২ |
| ১ | ৩ | সোমবার | ১০ | ২ |
| ২ | ৪ | মঙ্গলবার | ১৮ | ২ |
| ৩ | ৫ | বুধবার | ১৬ | ২ |
| ৪ | ৬ | বৃহস্পতিবার | ১৫ | ২ |
| ৫ | ৭ | শুক্রবার | ১৩ | ২ |

সমাচার দর্পণ।

অযোধ্যার রাজ্য।

পূর্বে নবাব শ্রীজ্ঞানেন্দ্রের শাহ তালিম বাবাশাহের ওস্তাদী বন্দ করতেন তৎপুত্র ওস্তাদ নবাব তাহার ঋণাত নাম জিন এবং তাঁহার পুত্র নবাব আমজাদোলা ও নবাব মহম্মদালাও (সেই নামে ঋণাত জিলেন) মনুষ্য নবাব শ্রীজ্ঞানেন্দ্রের নার পৌত্র নবাব মহম্মদালাওর পুত্র নবাব গাজীউদ্দীন হযরতকে ঋণাতের অযোধ্যার রাজ্য নামে ঋণাত করিয়াছেন। এই নবাব মাহেবেরা ইহার পূর্বে ঘড় দিন এই নামে ঋণাত জিলেন তত দিন অন্যের অধীন জিলেন কিন্তু এখন নবাব গাজীউদ্দীন

হযরত অযোধ্যার রাজ্য নামে ঋণাত রাজ্য হইলেন এখন তাঁহার ওপরে অন্যের কতক থাকিল না।

যেহা লক্ষ্যকোণে এই বিষয় হইলেন অনবর পূর্বে ইংল্যান্ডের সিন্ডিষ্ট ইংল্যান্ডের অল্পাংশ ব্যতিরেকে পুস্তক লক্ষ্য ইংল্যান্ডের না পূর্বে ৯ আক্টোবরের এই নবাব মাহেব ঋণাতের অল্পাংশে সিন্ডিষ্ট ইংল্যান্ডের অযোধ্যার রাজ্য নামে ঋণাত হইয়াছেন। এই তারিখে শ্রীমুত জেনারেল ম্যার মল মাহেব ও তাহার তদীন তাহা সৈন্য ও সেনাপতির ওস্তাদ শ্রীমুত মল ওন মাহেব যোহা লক্ষ্যকোণে তাহার ওপরে আরোহন করিয়া নবাব ওস্তাদের ঘর দেব্র নামে ঋণাত রাজ্যে গেলেন এবং ইংল্যান্ডের দেব্র সৈন্য ও নবাবের সৈন্য এই রাজ্যে দুই দিকে মারিয়া দাঁড়াইল পরে ইংল্যান্ড মাহেবেরা নবাব ওস্তাদের সহিত মলিয়া করিয়া পরস্পর মিলিলেন। পরে নবাব ওস্তাদ অষ্টাদশবারে আপনারদের দরবার গেলেন ও সেনাপতি আপনারদের শাসনোক্ত করিয়া মিলিয়া আইলেন ও আপন রাজ্যে বসিয়া তাহা ইংল্যান্ডের দেব্র সহিত যথার্থভাবে আহার করিলেন। পরে আহার করিয়া তাহার সকল বাবদুয়ার ঘরে গেলেন নবাব ওস্তাদ গাজীউদ্দীন হযরত যখন আপন নতুন সিন্ডিষ্ট ইংল্যান্ডের পশ্চাৎ দাঁড়াইয়া দিয়া এই ঘরে ওপড়িত হইলে তখন তাহার এক অল পুত্রী চাকর সূর্য্যশির নামে ডেকানী নানারিহ মলি মলি নবাবদেহে ভ্রমিত এক স্বর্ণ মুকুট

লইয়া সম্মুখে ওপড়িত হইল এবং এই নবাব মাহেবের হস্তে তাহা অর্পণ করিল। তিনি এই মুকুট লইয়া সিন্ডিষ্ট ইংল্যান্ডের সেনাপতি ও আপন যন্তকে হিলেন তৎপূর্বে ইংল্যান্ডের তাহাকে সেনাপতি করিল ও তাঁহার চাকর লোক ও তাহার লোক ও লক্ষ্যকোণে তাহা লোক তাঁহাকে সেনাপতি ও সন্তুষ্ট করিল ও নানা পুত্র কাব তপন হইল। সেই দিনে দিবা রাতে এই শহরে নাচ ও গান ও বাহাদুরি পুজালোকেরদের বহুবিধ আয়োজন হইল এবং ইংল্যান্ডের ও অন্য ওস্তাদ লোকেরা তাঁহাকে অযোধ্যার রাজ্য বসিয়া সম্রাট করিয়া সম্রাট করিল তখন তিনি শ্রীম হাজার টাকার মুকুট তাহার দেহ ওপরে ডাকাইয়া দিলেন তাহার আনন্দ ইংল্যান্ডের (সে মহন মুকুট গুলন করিলেন।

নতুন গুলু সমাধি।

শ্রীমুত ওস্তাদ ওলমস মাহেব এক দিকে মলিয়া ও আর এক দিকে ইংল্যান্ডের এই বৎ এক অভয়ান গুলু অনেক গুলু পর্যালোচনা করিয়া বহু বহু গুলু পুত্র বহু দিলের পর সমাধি করিয়াছেন সে গুলু গুলু শত যোজন বহু সে অত্যাশ্রয় গুলু তাহাতে মলিয়া ঘর শত্রু ও তাহার ইংল্যান্ড ভাষা ও এক শত্রুর দুই তিন পুত্রের অর্থ ও নানা কোষ পুমান দিয়া সকল শত্রু সমুদায়ীকৃত সে গুলু লোকেরদের দ্বিগুণ গুলু হইলেই তাহার গুলু পুত্র হইবে শিথিয়া বহু আনাই। তাহার মনা

সমাচার দপণ ।

ই-প্রাণী কাগজে এক শত টাকা ও পাট লাই কাগজে আশী টাকা ।

পশ্চিম হিন্দুস্থান ।

রাজপুতানা দেশ হইতে সমাচার আসি য়াছে যে এই বৎসর সেখানে যে বর্ষা হইয়াছে তাহাতে শস্যাদির অনেক ওশ কার হইবে সেখানকার ভূমি উর্বরা কিন্তু গত বর্ষ বৎসর শিয়ারিরদের ওশাতে কৃষকেরা শস্যাদি করিয়াছিল তৎপুত্র শস্যাদি তাহাৎ ওশবৎ হইত না । শিয়ারিরা (সে দেশের নানা পুরবন্দা করিয়াছিল সেখানকার কুশী সকল বন্ধ করিয়াছিল ও অনেক নথ বন্ধ করিয়াছিল ও ওশম বৃষ্টিবি মনল কাটিয়া রক্তনের কাণ্ড করিয়াছিল এই কল নানা বোঁতায় বর্ষ বৎসরপর্যন্ত সে দেশে ছিল কিন্তু এখন তাহার ওশম হইয়াছে বটে তথাপি অনেক দিনের অপর্য্য অশুদিনে ওশম হইতে পারে না ।

গুজরাত এখন অতি দুঃখের কালে চলিতেছে যেহেতু সে দেশে যে ই-প্রাণী ও কৌলি মাহেব আজিল তাহার পরা মর্শে ওদরপুরের রাজা রাজ কর্ম্ম করিতে ছেন ইহাতে তদুর্ধ্ব হইতে প্রজারা আশিয়া তাহার রাজ্যে বসতি করিতেছে ।

দুরি ।

এক ব্রাহ্মণ যোকাং বহুত পুরে রাবী বহুত দেবের বাটতে অতিথি হইয়া তিন দিন ছিল অনন্তর ১৮ আশ্বিনীয়ার ১০ কার্তিক বৃহস্পতিবার দিনে নয় ঘণ্টা সময়ে পূজক ব্রাহ্মণ রাবাবহুত দেবকে স্মরণ করাইবার কালে তাহার তাবৎ অলঙ্কার খসাইয়া এক দ্বালে একত্র করিয়া রাখিয়া স্মরণ করাইতেছিল পরে স্মরণাবসানে

পূজক ব্রাহ্মণ কোন কর্ম্মের কারণ অন্য ঘরে গিয়াছিল ইত্যবসরে ঐ অতিথি ব্রাহ্মণ তানুমান হাজার বার শত টাকার সেই তাবৎ অলঙ্কার লইয়া পলাইল পরে তৎক্ষণাৎ তাহার অনুবোধী চতুর্দিকে অনেক লোক গিয়াছিল কিন্তু তাঁর বিরা পড়ে নাই ।

ভাগোগদয় ।

ই-প্রাণে দেশে এক মহাজনের এক কে রানী কতক দিন হইল এক ঘুহতি স্বীকে বিবাহ করিল । এবং তাহার মর্শে বস্ত্রা লক্ষ টাকা পাইল কিন্তু দিন পরে তাহার এক আতি তাহাকে আর তদ্বিশ লক্ষ টাকা দিয়া মারিল । অতঃপর সে অশুদিনের মধ্যে স্বী ও ক্রমে তা প্রায় লক্ষ টাকা পাইয়া ভাগ্যবান হইল ।

কনুজীদ্রোণাল ।

কনুজীদ্রোণাল শহর এখন বড় ওশম হইতেছে ও ওশাকার বাবশাহের পরাক্ষম কিছু লুণ হইতেছে তাহাতে ঐ বাবশাহ আপনার বিপরীতকারী এক জন ওয়ারার মন্তক ছেদন করিল ও লোকেরদের ভয় পূর্ব্বনের কারণ তাহার শব রাজপথে লটকাইয়া দিল ।

পাণলের দৌরাডা ।

ভ্রান্ত দেশে এক ব্যক্তি অভিভাগ্যবান যুগা লোক ও তাহার স্বী পুত্রদি ছিল দৈবাম সে ব্যক্তি পাণাল হইয়াছিল পরে তাহার আত্মীয় লোকেরা আসিয়া তাহাকে শহরের মধ্যে লইয়া গেল ও তাহার চিকিৎসা করিল তাহাতে ভাল হইল যে সে পাণাল ভাল হইয়াছে অতঃপর তাহাকে জাগ্রতি দিল এবং সে আপন পতিভা লইয়া আপন দেশে গেল পরে

গতি ৪০ তুল তারিখে সে আপন স্বীকে সঙ্গে লইয়া আপন গুদামে গেল ও সেখানে অনেক ফলপার্থ্য রহিল ইহাতে তাহার স্বীর ভগিনী তাহার ক্রি করিতে তাহা দেখিতে সেখানে গেল । পরে তাহার চাকর লোকেরা তাহার বিলম্ব দেখিয়া কোন মনে বিষয় বিতর্ক করিয়া সেখানে গেল এবং দেখিল যে ঐ পুত্র পাণাল ব্যক্তি আপন স্বীর ও তাহার ভগিনীর গলা ছুরি দিয়া কাটিয়া যে শিয়া ঐ গুদামের এক কোণেতে হসিয়া হানিতেছে । ইহাতে লোকের অনুভব এই তাইসে যে তাহার বাহুরোধী নিবৃতি হইয়াছিল না ।

মিথানোটি পুষ্টি ।

৪১ তুল তারিখে দুর্গ দেশের রাজধানী শহর পারিশে পুশিমের বরকন্দা মর্শে এক দিন বুধিল যে এই ঘরের মধ্যে তোঁা জিনিস আছে ইহা বুঝিয়া তাহা অনুব করিল কিন্তু সেখানে এক ঘোড়ার জিন বিনা আর কিছু পাইল না পরে তাহার মধ্যে মর্শে এক জন কৌতুক করিয়া সে জিন ওটাইল ও তাহার মধ্যে চারি লক্ষ টাকার হস্তকলমের নোট পাইল । যাহার এক কর্ম্ম করিয়াছে তাহার অমায়ণি বিরা পড়ে নাই ।

লুডন পুকার তৈল ।

ইওরাপের নানদু শহরের সমাচার আসিয়াছে যে সেখানে দুখা জলের মধ্যে যে বীতি আছে তাহাতে এক জন লুডন পুকার তৈল নিগড় করিতেছে সে তৈলের এই ওশ যে তাহাতে ১১ পুদী তুল তাহার পুয় নিগড় হয় না । অতঃপর দুখার জল মাছরা ও তাহার বীতিতে তৈল অগ্নিতেছে ।

সমাচার দর্পণ।

৪৩ শব্দ।

১৭ জুন তারিখে পাদ্রিশ শহরে এক জন ভাগ্যবান লোকের নিকটে এক ব্যক্তি আসিয়া এক ক্ষুদ্র সিঙ্কুর দিল ও কহিল যে তুমি তমুর ঘণ্টার সময়ে ইহা শুলিও। ইহাতে ঐ ভাগ্যবান ব্যক্তি বুঝিল যে ইহাতে কোন দোষ থাকিতে পারে পরে তুমি সিঙ্কুর শুলিতে ছেড়াশব্দ হইল ও সিঙ্কুর কিছু দূরে রাখিয়া অল্পে শুলিল ও দেখিল যে তাহার মধ্যে গনি ও ধাকহ আছে। সে সিঙ্কুর মত পুস্তক করিয়াছিল যে যে ব্যক্তি শুলিবেক সে তখন মারা পড়িবেক যেহেতু শুলিবার সময়ে ঐ সিঙ্কুরের মধ্যে পোহ ও পুস্তকের লাগিয়া আঁশুলিল হইয়া নীচে থাকবে পরে তাহাতেই যে খোলে তাহার সন্ধান হয় ইহাতে সে ব্যক্তি দেখিল যে খাম্বাঙ্কেই মারিবার কারণ এই প্রচার করিয়াছিল। পরে এই সমাচার পুলিশে দিবামাত্র পুলিশের লোক ঐ দুই লোককে আন্দোলন করি তেঃ।

সমুদ্রের স্রোত।

দুই বৎসর হইল যখন ইংল্যান্ডের দের আহাজ ওর কেন্দ্র দর্শনার্থে গিয়া ছিল তখন তাহার দেশব্যস্ত আসিয়া ছিল তাহার বিবরণ লিখিয়া এক বো তমের ভিতর ভরিয়া মুখ বন্ধ করিয়া সমুদ্রের মধ্যে ফেলিয়া দিয়াছিল সেই বোতল সমুদ্রের স্রোতে ভাসিতে এই বৎসর ঐলত ঘেঁষে পশ্চিমদিকে ইহাতে ফিরাই করিয়া আসা গেল যে সমুদ্রের স্রোত পুতিছিল চারি কোণ করিয়া চলি য়াছিল।

বানর আহাজ।

আমেরিকা দেশে দিনে বন কাটাওয়া লোক বসতি হইতেছে সে দেশে অতি বড় অনেক নদী আছে এবং সেই ন দীতে বানরের আহাজ বানিয়ার কারণ দিবারাত্রি চনিতেছে তাহাতেই সে দেশ ওরোঁর বর্জিত হইতেছে সেখানে বানি য়ার এক বড় স্থান হইতে এক হাজার কোশ দূর বানিয়ার অন্য বড় স্থান তাহা র মধ্যে নৌকার পথ আছে ও বানরের নৌকা সেই দুই স্থানে নিত্য গমনাগমন করে সেই এক হাজার কোশ দূর বানরের নৌকা ওজনে শিশু দিনে গুহুছে এবং ভাটায় তাহার আঁজক সময়ে তাইনে যদি এতদ্বন্দে সেই হল নৌকাসমূহ হই ত তবে এখান হইতে পাটনা শহর আ তাই পত কোশ কিন্তু সে নৌকাঘরা নাগ দিনে ওজনে ঘাইতে পারে ঘণ্ডিত ও তাহার আঁজকে তাইনা ঘাইত।

ডাক বেহারা।

পূর্বে লোকের পুয়োজনাঙ্গুরে কো র্গানি ওপক্ষ মুলা লইয়া ডাক বেহারা দিডেন তাহাতে কোনহ স্থানে দেত টোকা কোশ জিল ও কোনহ স্থানে তাহার অ দিক ও জিল কিন্তু সম্পত্তি কোর্গানি শুক্য করিয়াছেন যে এক কোশ ঘাইতে এক টোকায় অধিক লাগিবেক না এবং তা হার মধ্যে ঐতল ও মদান ইত্যাদি সকল ধরত।

ফারসী রাজার ওকীল।

ফারসী দেশের বাদশাহ ইংলণ্ডের বা দশাহের নিকটে এক ওকীল পাঠাইয়া জেল ভিলি এখন লন্ডন শহরে আসেন এবং সেখানকার লোক ঐ ওকীলকে দে

খিতে যাও তাহার মরে বরকানিয়া দেশের এক স্ত্রী আছে তিনি তাহাকে দে খিতে কোন লোককে দেন না। ঐ স্ত্রী ও কীলের সহিত আহাজ করে না কিন্তু ঐ ওকীল আহাজীয় দুবা তাহার নিকটে দুই জন লোকের দ্বারা পাঠায় সে দুই লোক সে স্ত্রীর দ্বারে আহাজ দুবা লইয়া ওপস্থিত হইলে সে স্ত্রীর নিকট হইতে দুই জন খোঁজা আসিয়া তাহা লইয়া সে স্ত্রীকে দেয়। তাহার নিকটে চারি জন খোঁজা পত্রিচারক আছে তন্মিত তাহার কাজে অ ন্য ঘাইতে পারে না তাহার পোশাক অতিবহুমূল্য এবং তাহার ঘোকার সজ্জা লগায়া তিন পুত্ৰিত সকল বহুমূল্য সে সজ্জা হারা যথিত ও স্বর্গের ঘণ্ডিত এবং তাহার ঘোকার গলার স্বর্গীয় জি গিরি আছে সে ওকীল ইংলণ্ডের বাহন হের নিকটে অত্যুত্তম এক ঘোড়া ওপটৌ হল আনিয়াছে।

বড় সাহেব।

পূর্বে আমরা লিখিয়াছিলাম যে শ্রীযুত এলজিনব্রন সাহেব মোকামা বোম্বয়ের বড় সাহেব হইবেন কিন্তু এখন হল ঘাইতেছে যে শ্রীযুত এল জিনব্রন সাহেব মান্দ্রাজের বড় সাহেব হইবেন ও শ্রীযুত তম জন মালকম সাহেব বোম্ব য়ের বড় সাহেব হইবেন।

যুদ্ধের ব্যয়।

বোনাগার্ডের সহিত যুদ্ধ এবং তা হার পূর্বে তাহার অধীক্ষকের সহিত যুদ্ধে এক হাজার ছয় শত ব্রিগি কোটি টোকা ইংল্যান্ডের দের ব্যয় হইয়াছিল এই টোকা যদি স্বর্গের ঘোহার করিয়া ওজন করা যায় তবে মতর হাজার এক শত মোল ওজন হয় ও যদি সাড়েচার মোল

সমাচার দর্শন।

স্বর্গের এক গাভী বোকাই হলো যাঁর ডব
 দিন হাওয়ায় আঁধা শব্দ গাভী বোকাই
 হয় যদি সেই টাঁকার স্বর্গের উর হলো
 যাঁর ডবের ডাবের পুখুরী স্বর্গের হলো যাঁর
 গদি সেই টাঁকার গদি গাভী ডব বোকাই
 হয় যদি যাঁর ডবের ছেলেও হাওয়া গাভী
 বোকাই হয়। একই যদি সেই মূলক
 গাভী সারি, হলুদ রাধা যাঁর ডব
 হারি শব্দ বস্ত্রি ফোঁস ভূমি বাহন। শুভ্র
 ও হালুয়া ও অমনি ও দিগমায় ও হলাও
 ও হলুদ ও আয়েসিকারদের ঐ মুখে
 হাওয়া যদি গাভী হাওয়া যাঁর ডব হলুদ হয়
 ডাঙা জালা যাঁর না।

ਨੂਤਨ ਗਾੜੀ ।

ইংল্যান্ড দেশে তাঁর মান হইল এক বা
 ত্ত্ব এক নতুন পুষ্কার গাড়ী সৃষ্টি করিয়া
 যে বিনা খোঁড়ায় সে চলল। তাহার
 মাইথারনে এক অনেকের বসিবার স্থান আ
 ত্ত্ব তাহার সম্মুখে এক জন বসিয়া
 হালি বসিয়া থাকে এবং এক জন পরমা
 জাগে এক জন বসিয়া এক কল ঘুরায়
 তাহাতে গাড়ী শব্দ শুনে সে গাড়ী
 এক হুটে চািরি কোণ চলে কিন্তু পুতিদিন
 চলিতে হইলে আড়াই হুটে চািরি কোণ
 আধাবে চলিতে পারে এবং সে প্রত্যহ
 লকে যে সে মকল মুহু পঞ্চাশ শেরের
 আটক ভাড়া নেহ।

জায়াগরি ।

ই-গ্লাউয়ের। গাউ মুক্তকালে যে মকল
 হোউমোয়ারেরদিককে চাকর রাখিয়াছিল
 লেন পরে মুক্ত নিহুতি ইহলে পুনরার তাহা
 রদের এক ভাগ বিদায় করিয়াছিল।

এবং ভাটিয়ারদের দেশে ভাটিয়ারের পুত্র
অনেকে হিন্দী রাজকরের পক্ষপাতি বিদ্যা করি
য়া অঙ্গী ভাটিয়ারের দ্বিগুণ কলিকার কারণে
কিন্তু ভাটিয়ারদের যথেষ্ট কোন লোক তা
রাই নইল না। এই নিমিত্ত ভাটিয়ার
তাঁহা হেয়াজান বলিল গুয়ায় মাঝে
কোন নুকার জল পাওয়া যায় না এবং
সেখানে জন কতিপয়েক কোন শস্যাদি
অল্প না এবং গুয়ায়াকি সেখানে বন ও
ভাটকি হান ও দিন শত হাত না খুঁদি
লে সেখানে জন পাওয়া যায় না। হি
ভীয় ঘাঘি সেখানে শস্যাদি অল্পিত ও
খাশি নিতা সেখানে দুই বরি:ত হয় যে
হেতুক সেখানকার চতুর্দিকে ডাকাই
তারা বীকশে বিলি আছে। তদ্বি তা
হেইরা এই বইল যে অশ্রয়ত গদম সে
দেশে বাতিরিজ অন্যরকম কু জুরের তুর্পা
শিভেনে তখশি আয়রা মদী হইতায়।

इतिहंम ।

এক পক্ষী এক কৃষকের খাল ক্ষেত্র
 বাসা করিয়া বাস করে এবং তাহার
 দুই তিনটা বাচ্চা থাকে। ঐ পক্ষী পুত্র
 দিন তাহারদের হারান জন্য খোলে যায়
 কিছু দিন পরে ঐ ক্ষেত্রের ধান পল্লব
 দেখিয়া ঐ পক্ষী চিন্তিত হইতে আরম্ভ করে
 আপন বাচ্চাদিগকে কহিল যে আমি
 তাহারার্থে পুত্রদিগ অন্য ক্ষেত্র ঘাই
 এখানে থাকি না যদি কোন দিন কেহ তা
 মিয়াকে কোন কথা কহে তাহা ডায়েই তা
 দিবে কোনটা। পরে এক দিন ঐ ক্ষেত্র
 কামিয়ার লিডা খুঁজে ক্ষেত্র আসিয়া ধান
 পল্লব দেখিয়া কহিল যে ধান মুগন্ধ

ইয়াতে হল। জামিয়ে লেখকরা হাফেজ
 ডাকিয়া শীর্ষা কাটিতে হইবেক। ইহা
 পক্ষির বাহারা শুলিল পরে পক্ষী বামনায়
 আইলেন সেই কথা তাহাকে কহিল।
 তাহা শুলিয়া পক্ষী ওড়িয়া না ইয়ায়
 কহিল যে ভাল ক্ষতি নহি হল্য। যে
 কথোপকথন ইহাও উহাও তোমিরা জা
 মাকে জানাইও।

পরে দিন ঐ কৃষকেরা শিতা পুণে ঐ ক্ষেত্রে আমিয়া কহিতে লাগিল যে হায় আত্মীয়েরদিগকে ডাকিয়ায় তাহারা কেইই আইন না ভাল কলা আতি কুই স্নেহিগকে ডাকিয়া বিনা কাটিতে হইল এই কথাও গফির বাহাদুর শুনিল পরে পক্ষী বাসিয়া আইল বাহাদুর। সে কাণ্ড তাহাকে শুনাইল তাহাতে পক্ষী কহিল যে হওক ওহেদোর বিষয় ভাল কহ তাহা যে কথা বার্তা হইবে তাহাও আমিয়া ডোমরা আনাইও। পরে সে দিন ঐ কৃষকেরা শিতা পুণে আমিয়া ক্ষেত্রে নিকটে কহিল যে হায় কি হইবে ডাতি কুটমেরাও আইল না দূর হওক কলা আমরা শিতা পুণেই আমিয়া এই বিনা কাটিবে। ইহাও ঐ বাহাদুর শুনিল কি কহিল পরে পক্ষী বাসিয়া আইল বাহাদুর কহিল যে কলা কৃষকেরা শিতা পুণে আমিয়া বিনা কাটিবে। ইহা শুনিয়া পক্ষী অডল ওড়িয়া হইল ও দেখানহই যে বাসা ওঠাইয়া আপন বাহুরদিগে কলইয়া অন্যত্র গেল ও দেখান বাসা করিয়া কাল ঘাপন করিতে লাগিল। এই কথাই ভাংকরা এই যে আপন কর্ম আপন হাতে করিলই নিশ্চয় হয় অন্যের দ্বারা স্বহাতে হয় না।

এই সমাচার স্বপ্নে ঐরাবতপুরের জাণাখানাতে পুতি দস্তাহে শনিবারের জাণা হয়। বাহারি লওনাশ্যক হয় তিনি ঐরাবতপুরে জাণা খানাতে জাণা লাম পাঠাইলে দস্তাহে কাণ্ড উঁহার লিকটে পাঠান যাইবেক তাহার মূল্য মাসে এক টাকা যিনি স্বাক্ষর করিয়া ছেল যদি তারার লিকটে সমাচার না পৌঁছে তবে তিনি ঐরাবতপুরের জাণাখানাতে সমাচার দিবার তারার লিকটে পাঠাইবেক।

সমাচার দর্পণ

৭৭ সংখ্যা।

শনিবার।

৬ নবেম্বর মল ১৮৬৯। ১২ ক্রিষ্টিক মল ১৯১৩।

দর্পণে মুখ সৌন্দর্য্যমির কার্য্যবিচরণঃ।

বৃহত্তানিহ জানক সমাচারসা দর্পণে ॥

কোয়ালির কাণ্ড।

কোয়ালির শতকরা জয় টাকার মূদ্রের কাণ্ড করিতে হইলে শতকরা এক টাকা দণ্ড আদ্য ডাকৌধ্য। বিফল করিতে হইলে শতকরা এক টাকা চৌদ্দ আদ্য ডাকৌধ্য।

নভাঃ পঞ্জিকা।

| ৬ | মাসের | শনিবার | ১১ | ক্রিষ্টিক |
|---|-------|--------|----|-----------|
| ১ | ৩ | ১১ | ১০ | ৩ |
| ২ | ৩ | ১০ | ৯ | ৩ |
| ৩ | ৩ | ৯ | ৮ | ৩ |
| ৪ | ৩ | ৮ | ৭ | ৩ |
| ৫ | ৩ | ৭ | ৬ | ৩ |
| ৬ | ৩ | ৬ | ৫ | ৩ |
| ৭ | ৩ | ৫ | ৪ | ৩ |
| ৮ | ৩ | ৪ | ৩ | ৩ |

ইন্ডাঃ।

কলিকাতা ৬ নবেম্বর ১৮৬৯ মাল।

পুর্ক আম্বারদের রাজসহীতে মফসুল বাকি আম্বারদের আংশের অধিক ও তাহার কমকরাই যে শ্রীযুত অর্জ বালার্ড সাহেব ইনি পুর্বে কোয়ালি বাহাদুরের ডিবিং মাকমে নিযুক্ত ছিলেন ইহাকে এক পুর্বে কোয়ালি বাহাদুরের রাজ কর্মে নিযুক্ত ছিলেন যে শ্রীযুত জেমস চার্লস কোলবুক সন্দেলার্ড সাহেব এই দুই সাহেব আম্বারদের বাকি কর্মে ও একেই কর্মে আদ্য হিন্দুদার হইয়া নিযুক্ত হইলেন।

অতঃপর আম্বারদের সম্প্রদায়ের অন্তঃ পাতি এই মকল লোক।

শ্রীযুত হেনরি আলেক্সান্দ্র সাহেব।

ও শ্রীযুত জন ডব্রাতন সাহেব।

ও শ্রীযুত জেমস য়ক সাহেব।

ও শ্রীযুত ডমস বুসেন সাহেব।

ও শ্রীযুত অর্জ বালার্ড সাহেব।

ও শ্রীযুত জেমস চার্লস কোলবুক সন্দেলার্ড সাহেব।

স্বাক্ষরকারী আলেক্সান্দ্র কোয়ালি।

ইন্ডাঃ।

কৃতক বৎসর ইংল্যান্ডের ডিক্রি মসকের নিকটে ডিক্রি মার কর্ম করিয়াছে এবং আপনাদের ডিক্রি মার পাণ্ডিত্যের লিখন দেখাইতে পারে এমন কোনই এডমেশ্যর ডিক্রি মসক যদি কোঁচবেহারে ঘাইতে বান না করে তবে সে মোকাম শ্রীরায়াড় জাণ্ডা খানাতে আইমুক অথবা মোকাম কলিকাতা শ্রীযুত জাফিন ক্লার্ক কোয়ালির নিকটে আইমুক।

সমাচার দর্পণ।

মূল।

গত শনিবার বৈকালে ময়ূরমের সময় যে মোকাম চানকে মুসলমানেরা আপনাদের মধ্যে কাজিয়া করিয়াছিল তাহাতে ঐ তারিখে তরবারদ্বারা তিন জন মূল হইয়াছে।

ওলাঃ।

গত শনিবারে মোকাম কলিকাতা মুসলমানদের মধ্যে ময়ূরমের বার জন মূল ও তিন জন মোকাম বাদকের বাধ্য করিতে আসি য়াছিল পরে তাহারদের মকলের ওলাঃ এককালে হওয়াতে এক জন ময়ূরম তৎক্ষণাৎ এক সাহেবের নিকটে সে সমাচার গেল ঐ সাহেব আদ্যিয়া ওয়াকি চারা বাকি চৌদ্দ জনকে মুখ করিয়াছে।

ভূমিকল্প।

মোকাম চাণ্ডিয়ায় ৬০ আকৌচের অবধি বিশ দিন পর্যন্ত চারিবার ভূমিকল্প হইয়াছে।

ময়ূরম।

গত বুধবারে মোকাম কলিকাতাতে শ্রীশ্রীযুতের ঘরে ময়ূরম হইয়াছিল অর্থাৎ কলিকাতায় তাৎক্ষণিক ভূমিকল্প লোক ও অন্য সুদেশীয় রাজা ও কর্মীর দ্বারা পুত্রিত্বের ওকীলরা ঐ তারিখে শ্রীশ্রীযুতের নিকটে সাফা করিতে গিয়া ছিলেন। এই পুকার ময়ূরম সময় ময়ূরম দুই এক বার হয় এই ময়ূরম বাড়িটুকু অন্য ময়ূরম হইয়া থাকে তাহাতে কেবল ঐ ময়ূরমের শ্রীশ্রীযুতের সাফা করিতে মাল।

বোম্বাই।

মোকাম বোম্বাইতে হিন্দা করিয়া

সমাচার দর্পণ ।

জাশাগোল যে গত এক বৎসর পোনের দিনে সেখানে চতুর্দশ হাজার দুই শত মাতাইশ লোকের এলাঙা হইয়াছিল তাহার মধ্যে চৌদ্দ শত পঞ্চাশ লোক কোল্লানির চিকিৎসকের চিকিৎসাব্যবস্থা নাহিয়াই হইল কিন্তু অবশিষ্ট লোক মারা পড়িল ইহাতে দেখা গেল যে বাইশ হাজার লোকের অধিক লোক কোল্লানির অনুগৃহেতে রক্ষা পাইয়াছে যদি ইহাতে কোল্লানি বাহাদুরের চেষ্টা ও মনোযোগ না থাকিত তবে অনেক লোক মরিত। ইহাতে দেখা যায় যে এতদ্বন্দ্বের পুতি কোল্লানির কি পর্যন্ত অনুগৃহ ও ওপকার চেষ্টা।

গঙ্গা সাগর।

এখন বর্ষা নিবৃত্ত হওয়াতে গঙ্গা সাগরের বন কাটিবার উদ্যোগ পুনরায় বনবান্ হইল অসুখায় হয় যে আগামী বর্ষা আগমন পর্যন্ত পুঙ্খ গঙ্গাসাগর ওপদানের বন কাটা সমাপ্ত হইবে এবং শ্রীযুত পায়র সাহেব যে ভাণ্ডা লইয়াছেন তাহার অধিক ভাণ্ডা ইহার মধ্যে কাটান হইবে।

আরোগ্যের কারণ গঙ্গাসাগরে যে স্থান দ্রুত করিতে কল্প হইয়াছে তাহা তে যে সাহেব লোকেরা চেষ্টিত আছেন তাহার গত বৃহবারে মরলে একদম এক পঞ্চাশ হইয়া সেই ঘর গাঁথিতে দ্বিত করিয়াছেন।

আজাহ।

১ নবেম্বর তারিখে যোঁ কলিকাতায় এক শত তত্ত্বান্তি আইজা জিল তাহার মধ্যে এগারু আমেরিকার আইজা ও মাত দুইয়েরদের আইজা পাঁচ পোঁ গীশেরদের দুই দিলামীরদের পোনের

আরবের পায়রদের। অবশিষ্ট ইংল্যান্ডী রেরদের তাহার মধ্যে চৌত্রিশ আইজা জের তৈয়া হয় নাই।

মামদুরাতের সৈন্য।

মকল লোক অরণ্যত আছে যে ভারত বর্ষে ইংল্যান্ডীয়েদের তিল মদুর স্থান কলিকাতা ও মামদুরাত ও বোম্বাই এবং মামদুরাত ও বোম্বাই এই দুই স্থানের অন্তর পাড়ী যত সৈন্য আছে সে মকল সেখানে কার এক জন পুঁহান সেনাপতিয় তহীন সে সেনাপতি ও কলিকাতার শ্রীযুতের অধীন এবং প্রস্তুত আপন ইচ্ছা মারে মামদুরাত ও বোম্বাইয়ের সৈন্য যেখানে সেখানে পাঠাইতে পারেন এম ন মামদুরাতে ঘোড়সোয়ার ও ডোপলারী জাকা পদাতিক সৈন্য পঞ্চাশ হাজার তারি শত আছে তাহার মদুর পুঁহামসে আট লক্ষ মাত ত্রিশ হাজার টীকা অতএব বৎসরে এক কোটি এক লক্ষ চৌত্রিশ হাজার টীকা ব্যয় হয় ইহা চাকা ঘোড়সোয়ারের ও ডোপলারীর মদুর আছে।

শ্রীযুত রণজিৎ সিংহ।

লাহোরের আকবরদারী স্ত্রী গোল যে শ্রীযুত রণজিৎ সিংহ বাহাদুরের পুঁহান লোকের দেওয়ানতদু কাশ্মীরে যাঁহে পঞ্চাষপর্যন্ত পঁথজিয়াছে। কাশ্মীরের অমীরেরদের সহিত রণজিৎ সিংহের লোকের বিজু বিবাদ হইয়াছিল ওনিমি তে দেওয়ানতদুকে তিনি সেখানে পাঠাই য়াছেন। দেওয়ানতদুর সহিত যে শী কের সৈন্য কাশ্মীরে গিয়াছিল তাহার মধ্যে কতক সৈন্য সেখানেইহেতে পলাই য়াছে তাহাতে রণজিৎ সিংহ কাশ্মীরের রাজ্য মোতিচন্দ্রকে প্রকৃত করিলেন

যে কাশ্মীরের যত পাহাড়ের ওপরে গথ আছে সেই গথে চৌকা রাখা যে শীকর সৈন্য না পলায়।

অকালকাত নামে এক নালকের যদি রে রণজিৎ সিংহ বিশ হাজার টীকা দি য়াছেন এবং কাশ্মীরে তবিকার করবার কালে রাজা মদুরদু রণজিৎ সিংহের অনেক সাহায্য করিয়াছিল ও শ্রুত তিনি তাহাকে পাঁচ হাজার টীকা ব্য শির্শ দিয়াছেন। এবং রণজিৎ সিংহ কা মানের গুলি করবার নিমিত্ত দুই হাজার ঘোঁল লৌহ খরিস করিতে প্রকৃত দিয়া ছেন।

রণজিৎ সিংহ কামানের যে লুতন গুলি করিয়াছেন প্রথম তাহার পরীক্ষা কালে বাইশ লোক আঘাত হইয়াছে।

রণজিৎ সিংহ যোঁ কাশ্মীরে আপ নার নিমিত্ত অতি সুশোভিত রাজত্ব করিবার কারণ দুই শত মদুরদাস সে খানে পাঠাইয়াছেন।

সাহিবান পাঠশালা।

১৩৩৩ সনে ইংল্যান্ডে বিখ্যাত বাঁজার পাঠশালা জিল তাহাতে আট হাজার শিষ্য ছিল এখন এই জয় বৎসরের মধ্যে চৌদ্দ শত মাতার বিদ্যার্থী পাঠশালা সেই দেশে হইয়াছে ও সে পাঠশালাতে দুই লক্ষ শিষ্য বিদ্যা মুলা বিদ্যা পাইতেছে।

গত বৎসর সাহেবের বেতন।

শ্রীযুত লর্ড মিলের পুঁহ শ্রীযুত মর জন বালী সাহেব কতক দিন পর্যন্ত মোকাম কলিকাতার বৎ সাহেবী করিয়াছেন এনি এখন ইংল্যান্ডে আছেন এখন শ্রীশ্রী যুত কোল্লানির অধীক সাহেবেরা তাহাৎ যাবজ্জীবন পুঁহামসে এক হাজার টীকা

সমাচার দর্পণ।

করিয়া থাকিবে তাহা হইতে স্বাক্ষর করি
য়াছেন।

হয়দরাবাদ।

আমরা পূর্বে লিখিয়াছি যে হয়দরাবাদ
দেব অষ্টপাদী করমিষ্ট। নামে কিল্লাত
কিল্লাতের কয়েকটি হয়দরাবাদের নবাব
কে রাজকর দেয় না ও কিল্লাত দেয় না তাহা
তে নবাব ইংল্যান্ডীয় সেনাপতির অধীন
যে নিজ ইন্দ্র তাহা সেখানে পাঠাইয়া
ছেন এখন সে কর্মের শেষ হইয়া গেল।
যে ও আকটৌর ডাট্রিয়া ই মকল ইন্দ্র
তাহার কিল্লাত সমুদ্রে নৈখিল পরে ক
য়েকটি তাহারদের লিকটে এক ওলি
হারা ইহা করিয়া পাঠাইল যে তোমরা
যদি আমার সহিত যুদ্ধ না করিয়া ছি
য়া যাও তবে চারি লক্ষ টাকা দিব যদি
ম্যাক যুদ্ধ করিতে প্রবৃত্ত হও তবে আমি
প্রাণনাশ করিয়া যুদ্ধ করিয়া তোমাদের
এক পুত্রকে ও রাখিব না। সেনাপতি
কহিল যে যদি বিনা বন্দোবস্তে তুমি আশ
নাকে ও কিল্লাত আমারদের হাতে সমর্পণ
কর তবে তোমাকে ক্ষমা করিব নতুবা
ক্ষমা ক্ষমা করিব না। পরদিন প্রত্যয়ে
কয়েকটি ও তাহার সহিত গিয়া অল খোঁচ
সোআর কিল্লাত হাতে পলায়ন করিল
এবং সেনাপতিরা ও কিল্লাত আশ
নারদের দখলে আসিল। এই কর্মে যে
এমত পর্যায়মান হইল এ অতি সৌভাগ্য
যেহেতুক সে কিল্লাত অতি শক্ত ও যদি ক
য়েকটি ও যুদ্ধ করিত তবে অনেক কাল
বিলম্ব ও অনেক ব্যয় হইত ও অনেক
লোক মারা পড়িত ও সে কিল্লাত চতুর্দিক
কেহ পুত্রের দ্বন্দ্বের নিমিত্ত ও তাহার চতু
র্দিকে বহু এক লক্ষ টাকা ছিল। কয়েকটি
এখন সিদ্ধিয়ার এক কিল্লাতে পলাইয়া

কালযাপন করিতেছে ও হয়দরাবাদের ন
বাবের লোক তাহাকে বিবির চেষ্টা ক
রিতেছে।

ইংলণ্ডে পাণাল।

ইংলণ্ডে মহানভার লিকটে মর্দদাখিল
করা গিয়াছে যে এগার, শত চাপ্পান
পাণাল হইবে আছে তাহার মধ্যে জয়
শত পঞ্চাশ পঞ্চ ও পাঁচ শত এক হই
লোক। ইংলণ্ডে বাদশাহের আওতে
পাণাল লোকের দিকিহে হইবে করিব
করিল অষ্টাশীমান ঘর আছে এবং
তাহাতে দুই হাজার পাঁচ শত পয়তাল্লিশ
লোক হইবে আছে এবং আশা আশ্রয়
ও কুটুম্বেরদের লিকটে যে পাণাল হইবে
আছে তাহারদের গণনা করিলে চারি
হাজার পাণাল ইংলণ্ডে পাওয়া যায়।

বাজারভাণ্ড।

তুলা। তুলার দাম মাঝে মত আছে
এখন তুলার দাম হইতেছে।
নীল। নীলের আমদানী কমেই হই
য়াছে কিন্তু তাহা বিস্তার বিক্রয় হয় নাই
তাহাতে মানিক সাহেবের কৃত মো
জরীনের তিন শত দিক্ক নীল গি
য়োন এক শত পয়তাল্লিশ টাকার বিক্রয় হ
ইয়াছে।
কাপড়। কাপড়ের দাম উচ্চ হয়
নাই কেবল অহল্যাবাদের শাল ও মহ
মুদী ও খালির দাম কমিয়াছে।
তুলাদি। তুলাদির দাম কিছু কম
নাই কিন্তু ওস্তম ওস্তমের দাম কিছু
বাড়িয়াছে।
মুনারি। মুনারির দাম বৃদ্ধি চারি
আনা কমিয়াছে।
চিল। চিলের দাম উচ্চ হয় নাই

কিন্তু চিলের পুয়োজন অধিক হইয়াছে।
সোরা। সোরার দাম পূর্বে আছে।

বলুন।

পাঁচ মান হইল ইটালি দেশে এক নী
লোক বলুন প্রস্তুত করিয়া সকল লোকের
সম্মুখে তাহার ওপরে আরোহন করিয়া
আকাশে ওঠিল কিন্তু বহু দূর নৈখিল
অক্ষম। সেই বলুন অর্থাৎ হইয়া বলুন
ফাটিয়া ই নীলোক রামায় পড়িল তাহা
তে তাহার মস্তক ভাঙিয়া মরিয়া গেল।
অনেক লোক তাহাকে দেখিতে আসিয়া
ছিল তাহার। তাহার এই বিশেষ দেখিয়া
তাহার সন্তানেরদের প্রতিপালনার্থে স
ল বিধি করিয়া টাকা দিল।

মুরশেদাবাদ।

শাহ আকবর বাহাদুর আশন নিতা
যমায় বাদশাহের মরণাঙ্গুর শোনের শ
ত চাপ্পান মালে দিল্লীর সিংহাসনে ব
সিয়া পঞ্চাশ বৎসর রাজ্য করিলেন তিনি
আশন অধীন দেশে মুরাত বিভাগ ক
রিয়া প্রত্যেক মুরাত আশনার তরফ
এক লক্ষের রাখিলেন কমেই তাহারই
নবাব নামে খ্যাত হইলেন। বাঙ্গালা ও
বেহার ও ওড়িশা এই তিন মুরাত রাজ
ধানী যে শহর মুরশেদাবাদ সে এখন
কালক্ষেপে ক্ষয় পাইতেছে এবং বাঙ্গালা ও
বেহার ও ওড়িশার লোকের নাজিম ও
বাঙ্গালীর আতের কর্ম ও বালেকজি কর্ম
কারী ও হেজিমন সাহেব ও চৌদেখান
হেব ও কর্ণালীন সাহেবের আমলে এই
সকল কর্মের মরবরাহকারী যে নবাব
মুরশেদাবাদ বাহাদুর তাহার লক্ষ্য অ
র্থাৎ মূল্য দিল যে মুরশেদাবাদ শহর সে
এখন নির্নাশ হইতেছে।

সমীচীর দর্পণ।

অতএব যিনি এখনকার নবাব দিলা
বজ্র বাহাদুর আজেন ইহার বাড়ীর
চত্বরে অনেক ধর্ম ও জরুল পুত্র হইয়াছে
তাঁহা কাটাছিয়া অনেক ইংগ
এই মোহেরা শহর মুশাভিত করিতে
জেন এবং শহরের মধ্যে অনেক নি
রুদ্ধ ছিল তাহার অল ওঠিয়া যে
লিয়া সমুদ্র করিতেছেন এবং পূর্বে
অনুর্গ শোভার আয়না মাল ছিল তা
হা বেয়ামতে পুর লুই হইয়াছে তৎ
পুত্র তাহার বদলে সেই বন মূর এক
আয়না মাল করিয়া দিতেছেন।

আক্ষর্য তাকাত

কতক বৎসর হইল ইংল্যান্ড দেশে যো
তার ওরে আরোহন করিয়া রাশিয়া
এই এক তাকাত রাশিয়া এক মোহের
ওরে আক্ষর্য করিয়া যেন শত টাক
লিয়া পলাইল। পরে ঐ মোহের তিন
চারি জন যোক্তামোয়ার চাকর ঐ তাক
ইতে পক্ষাতে যোক্তিল পরে এক গুম
হইতে আর এক গুম ও সে গুম হইতে
অন্য গুম এইরূপে নানা গুম তাহার
পক্ষাতে যোক্তিল পরে তাহার সে
তাকাতকে ধরিয়া কতক করিল।

পরে এক জন তাকাতবান ওকাল ঐ
তাকাতের লিফটে পাল ও তাকাতকে
ছিল যে প্রাণ তুমি যদি এই তাকাতের
বিষয় আমাকে মতা নহ তবে তোমাকে
আমি এই দার হইতে অবশ্য দক্ষা করিব
ও তোমার স্থান কিছু লইব না। পরে
ঐ তাকাত সে বিষয় আপন মতা কর
কহিল যে আমি মতা তাকাতের করিয়া

ছি ও ঐ মোহের যেন শত টাক লই
য়াছি। ওখন ঐ ওকাল কহিল যে
তোমার ঐ যেন শত টাকার মধ্য হই
তে আমাকে পোলের শত টাক দেও তো
মাকে খালাস করিয়া এই টাকার হিসাব
তোমাকে দিব। পরে সে ব্যক্তি ওকাল
কে পোলের শত টাক দিল। ওকাল টাক
পাইয়া তাহার ওকালের ওকাল চেপ
করিতে লাগিল। পরে যখন সেই
মোকদ্দমার অদালত হইতে লাগিল
ওখন অরুমো মোহের সে বিষয় বাহুর
করিবার নিমিত্ত তাঁহা চাকরের দিগকে
উদালতে বাজীর করিল। তাহারাজী
হইয়া মাফ দিল যে এই ব্যক্তিকে এক
যোক্তর ওকাল মোজার হইয়া যাইতে
দেখিলাম ও ইহার পক্ষাতে তাহার
দেখিলাম ও অনেক ফল পরে ইহাকে
ধরিলাম ও সে যোক্তা আমায়ের জানা
আজ দেখিলে চিনিতে পারি। এইরূপ
কথা হওয়াতে সকলে বুঝিল যে এই
ব্যক্তির ঘোষ লিফট হইল।

পরে তাহার ঐ ওকাল তাহার এই
কার প্রত্যুত্তর করিল যে এই মোহের যে
এমন ঘোষ ব্যক্তিকে অদালতে ও দি
করিয়া পাঁচা দেওয়ান এ অভি ওকাল
কিন্তু ইনি মোক ভুলিয়াছেন যাহাকে এই
কর্তা ঘোষ লিফট করিয়াছেন সে এ
ব্যক্তি নহে ইহার মূর্খের গুম্যান আমি
দিব। দেখ এক বন ও এক পুকার
সহস্রা যোক্তা পাঁচা যায় তত দক্ষবল
যোক্তর দক্ষা এই ব্যক্তির ঘোষ লিফট
হইতে পারে না তোমরা নীচে আসিয়া
দেখ যে নীচে চারি যোক্তা বাজা আজ
তাহার মধ্যে ঘোষ ব্যক্তির কোন ঘো

তা মাফিয়া লিফট করন। পরে ঐ
মাফিয়া নীচে গিয়া ঐ চারি যোক্তা
যিল কিন্তু ঘোষ ব্যক্তির যোক্তা লিফট
করিতে পারিল না। পরে সকলে ওরে
অদালত ঘরে আসিয়া বসিলে ঐ ওকাল
নবাব করিতে লাগিল যে দেখ মাফিয়া
কহিল যে অমুক রাত্রিতে নয় ঘণ্টার সময়
যোক্তা ওকাল এ ব্যক্তি চুরি করিয়াছে
ঐ রাত্রি নয় ঘণ্টার সময় কখনও যোক্ত
না নহে তার চারি ঘণ্টা পরে যোক্ত
না ওকাল এই পক্ষিকা দেখ ইহা করিয়া
অজ মোহের হস্তে পক্ষিকা দিল। অজ
মোহের পক্ষিকা দেখিয়া সে কথাতে বিধা
ন করিলেন পরে অজ মোহের অন্য পক্ষি
কা দেখিতে চাইলেন তাহাতে অদাল
তের মধ্যে দুই তিনজন আর পক্ষিকা
জিল তাহা ঐ ওকাল অজকে দেখা
ইল তাহাতে অজ মোহের তারো বিধা
ন করিলেন ও মাফিয়াদের কথা বেয়াম
করিলেন এবং তৃতীয় এই সকল পক্ষিকা
তাহাকে খালাস করিলেন।

তাহার মানেকের পর অজ মোহের
পক্ষিকা পাইলেন ও সেই তারো
মাফিয়াদের চন্দ্রের আলিয়া ওকালের
কথা তদুপাখা জান করিলেন কিন্তু সে
অদালত অন্যথা করিলেন না। পরে
ঐ ওকাল সেই পোলের শত টাক ঐ
ঘোষ ব্যক্তিকে এই বন হিসাব দিল যে
তোমার স্থান যে পোলের শত টাক লই
য়াছিলাম তার নতুন তিন যোক্তা
দিনিয়াজি আর কতক টাকাতে জুম্মান
নতুন মিখা পক্ষিকা জাপ করিয়াছি।
এই ওকালো তোমার রক্ষা করিয়াছি।

এই সমীচীর দর্পণ শ্রীমামুদের জামানাতের পক্ষিকা হইলিবারে জাপ হয়। তাহার লওনশাক হয় তিনি শ্রীমামুদের জাপ
খানাতে আপন নাম পাঠাইলেন সন্তোহে কাগজ তাহার লিফটে পাঠান যাহাকে তাহার মূল্য মামা এক টাক যিনি বাস্তব করিয়া

সমাচার দর্পণ

৭৮ সংখ্যা।

শনিবার।

৪৩ নবেম্বর মন ১৮৪৯। ২৯ কার্তিক মন ১২১৩।

দর্পণে মুখ পৌন্দর্য্যের কার্যবিচক্ষণাঃ।

বৃত্তান্তানিঃ আনন্ত সমাচারনা দর্পণে ॥

কোল্লানির কাণ্ড।

কোল্লানির শতকরা ছয় টাকার মূন্দের কাণ্ড করিতে হইলে শতকরা এক টাকা দণ্ড আনা তিরকৌঞ্চ। বিক্ষয় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা চৌদ্দ আনা তিরকৌঞ্চ।

মস্তাহের পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|---------|-------------|----|----------|
| ১০ | নবেম্বর | শনিবার | ১১ | কার্তিক |
| ১৪ | ২ | রবিবার | ৩ | সকরারি |
| ১৫ | ৩ | সোমবার | ১ | অম্বুজের |
| ১৬ | ৪ | মঙ্গলবার | ২ | ২ |
| ১৭ | ৫ | বুধবার | ৩ | ৩ |
| ১৮ | ৬ | বৃহস্পতিবার | ৪ | ৪ |
| ১৯ | ৭ | শনিবার | ৫ | ৫ |

ইস্তাহার।

ফলিকাতা ৪ নবেম্বর ১৮৪৯ সাল।

পূর্বে আমায়দের রাজস্বহীতে যক্ষমূল ইহাঙ্কি আমায়দের জাম্বুদ্বীপ অধিক ও তাহার কর্মকারী যে শ্রীযুত অর্জ বালার্ড সাহেব ইনি পূর্বে কোল্লানি বাহাদুরের চিকিৎসককর্মে নিযুক্ত ছিলেন ইহাঙ্কি এখন পূর্বে কোল্লানি বাহাদুরের রাজ কর্মে নিযুক্ত ছিলেন যে শ্রীযুত জেমস চার্লস কোলব্রুক সর্বেশীল সাহেব এই দুই সাহেব আমায়দের বাঙ্ক কর্মে ও একেঙ্ক কর্মে অত্র হিন্দুদ্বার হইয়া নিযুক্ত হইয়েন।

অন্তএর আমায়দের মনুদ্বার অস্তঃ পাতি এই মকল লোঙ্ক।

শ্রীযুত হেনরি আলেক্সান্দ্র সাহেব।

ও শ্রীযুত জন ফ্রান্সিস সাহেব।

ও শ্রীযুত জেমস ব্রুক সাহেব।

ও শ্রীযুত ড্যান ব্রুক সাহেব।

ও শ্রীযুত অর্জ বালার্ড সাহেব।

ও শ্রীযুত জেমস চার্লস কোলব্রুক সর্বেশীল সাহেব।

স্বাক্ষরকারী আলেক্সান্দ্র কোল্লানি।

ইস্তাহার।

কতক বৎসর ইংল্যান্ডীয় চিকিৎসকের নিকটে চিকিৎসার কর্ম করিয়াছে এখন আপনার চিকিৎসা পাণ্ডিত্যের লিখন দেখাইতে পারে এমন কোনই এতদ্দেশীয় চিকিৎসক যদি কৈঠবেহারে যাইতে বান না করে তবে সে মোকাম শ্রীরামপুর জাম্বুদ্বীপাতে আইমুক অথবা মোকাম কলিকাতা শ্রীযুত জাফর আলি কোল্লানির নিকটে আইমুক।

সমাচার দর্পণ।

পৌষপূর্ণ।

শ্রুতা যাইতেছে যে নবরীশাবিগতি যাহারাজ মহারাজ শ্রীশ্রীযুত গিরীশচন্দ্ররায় বাহাদুর আপনার ওরম মন্তালান পতি প্রযুক্ত পৌষ পূর্ণ লইয়াছেন।

মোহনা কাটা।

এই নদীর মধ্যে দুই স্থান আছে তাহার ওড় পাশে মার্গার মধ্যে মৃত্তিকা সে মৃত্তিকা ত্রিশ কোশের অধিক লম্বা নয় কিন্তু যদি কোন জাহাজ ই ত্রিশ কোশ মৃত্তিকা ঘুরিয়া আসিতে চাহে তবে তাহার দেহ হাজার কোশ ঘুরিতে হয় তাহাতে দুই মাস লাগে। যদি ই মৃত্তিকা কাটিয়া এক মোহনা করা যায় তবে দেহ হাজার কোশ ঘুরিতে হয় না এবং বানি জোরও অত্যন্ত ওড়কার হয়।

তাহার এক স্থান মিমর দেশে যখন বোনপাত মিমর দেশে ছিলেন তখন তাহার বাননা ছিল যে ই মোহনা কাটিয়া আপন মন্যাত্তি বৃদ্ধি করেন কিন্তু তাহার সে বাননা পূর্ণ না হইতে তিনি সে দেশ হইতে আপন দেশে গেলেন। মন্যুতি এই মন্তাহে শ্রুতা গেল যে ইদানীন্তন মিমর দেশের বাদশাহ সেই মোহনা কাটা হাজার নিমিত্ত নবান্ন হাজার মতুর পুতি দিন খাটাইতেছেন। এ কর্ম অতিদ্রুত এবং যদি এই কর্ম সমাধি হয় তবে এ দেশের বানিজ্যের অশেষ ওড়কার হইবে যেহেতুক এ দেশ হইতে জাহাজ ইংলণ্ড দেশে অত্যন্ত দিনে যাইতে পারিবে। এখন জাহাজ ভাড়ার অধিক প্রযুক্ত এই দেশে পণ্য যে বস্ত্র ইংলণ্ডে লইয়া যাওয়া যায় না সে বস্ত্র ইংলণ্ডে আনা য়ান লইয়া যাবে যেহেতুক গুস্তবা পথ লান হইলে জাহাজের ভাড়া লান হইবেক। এই যে স্থান কাটা হইতেছে তাহার নাম সুএত্র।

সমাচার দর্পণ।

তাহার দ্বিতীয় স্থান ওত্তর ও দক্ষিণ আমেরিকার মধ্যবর্তী সেই স্থান ত্রিশ কোশের অধিক লম্বা নহে তাহার ওত্তরে ওত্তরা মেরিকা দক্ষিণে দক্ষিণ আমেরিকা তাহার পূর্বে এক মহাদেশ ও পশ্চিমে এক মহা দেশ। আমেরিকার লোকেরা সে স্থান কাটিবার নিমিত্ত অতিশয় উদ্যোগ করি তেছে যদি সেখানে একটা খাল কাটি যায় তবে তাহার চতুর্দিকস্থ নানা দেশের বাসিন্দার অধিক উপকার হইবেক। এই দুই মোহনা যে কাটিবেক সে ব্যক্তি তির জীবী হইবেক যেহেতুক তাহাকে কেহ বিপ্লব হইবেক না।

মহরম।

মোঃ মীরজাদুর মুসলমানদের গণত মাহরমেতে অনেক রাজী পোতান গি যাজিল তাহাতে মুসলমানেরা পথ ঘা ইত্যে ক্ষুদ্র রাজী পোতাউতেছিল এবং এক রাজীর দোকান বাকর ছিল সেখা নে এক জন বন্ধু লইয়া বাকর খরিদ ক রিয়া এই বন্ধু পুরিতেছিল পরে এই ব্যক্তির স্থানে আগুন ছিল সেই আগুন বাকরে লাগিয়া এই দোকানঘর ওড়িয়া গিয়াছে তাহাতে তিন জন আঘাত হইয়াছে দুই ভালক ও দুই বৃদ্ধ মৃত্যু হইয়াছে।

মহারাণা আনন্দরাও ওইকার রাজা।

বেঙ্গলীয়ে লিটম্ব দেশের রাজা য হারাজ আনন্দরাও বাহাদুর পঞ্চদশ বৎ সরব্যক হইয়া জাকৃটোর মাসের পুণ্যম তারিখে লোকান্তরগত হইয়াছেন তাহার সম্ভ্রামণ্যে তাহার ব্যক্তিমানসারে মোঃ বেঙ্গলীতে পঞ্চদশ তোল হইয়াছে।

চন্দলি চকের বাজার।

৮ নবেম্বর তারিখে বড় আদালতের

শ্রীযুত ই সি মাকলাভন সাহেব ইষ্টা হার দিয়াছেন যে চন্দলি চকের বাজার এক বৎসরের করণ ইত্যাদি দিবেন।

আত্মহত্যা।

এই বৎসরের পুণ্যম তারি মাসে ত্রিশ দেশের রাজধানী পাশিশ শহরে এক শত তেত্রিশ জন আত্মঘাতী হইয়া মরিয়াছে। তাহার মধ্যে তেত্রিশ জন স্ত্রী লোক। এই এক শত তেত্রিশ জনের মধ্যে ত্রিশ গুণ জন বিবাহিত ঘটি জন অবিবাহিত। এবং তাহারদের মধ্যে পঞ্চাশ জন মলয়া অন্য তুর্ক জন করে আর অপরিশিষ্ট লোক কেহ জুড়ুরি করিয়া আপন মর্শ্ব হারাইয়াছে এবং কেহ বেশাগায়ে কোন পুকারে আত্মহত হইয়াছে ইত্যাদি বিবরণ পুকার। তাহারদের চতুর্দশ জন আপন ইচ্ছাপূর্বক অলপ ভূমি মরি য়াছে অপরিশিষ্ট লোক অন্য পুকারে মৃত্যু ভাগ্য করিয়াছে।

নুতন পুকার উল।

আমেরিকার সমাচার পত্রে আলা গোল যে সেখানে এমত আশঙ্কাতরা প্রস্তুত হইতেছে যে অত্যুত্তম উতলের মত তাহা বলা যায়।

আশ্চর্য্য জালোক।

ইংল্যাণ্ড দেশে লেফার নামে এক সাহে ব অনেক বৎসর পর্য্যন্ত ঘরে নুতন পুকা র আলা করিবার চেষ্টা করিতেছিল কিন্তু অনেক দিনের পর সে কর্ম সিদ্ধ হইয়াছে। তাহার পুকার এই যে ঘরে আলা করিতে হইবে সেই ঘরে দুইখান নুতন পুকার আলা পরস্পর সম্মুখীন করিয়া রাখা এবং সেই

ঘরের বাহিরে জ্বলন্ত বাতী রাখা এবং এই ঘরের দেওয়ালে অতিমুখ্য স্থানে রাখা তাহার দ্বারা এই বাতীর যৎকিঞ্চিৎ তেজ এই একখান আলোতে লাগে এবং এই আলোর প্রতিবিম্ব দ্বিতীয় আলোতে পড়ে তাহাতে এই ঘরে অত্যুজ্জ্বল আলো হয় এবং সে ঘরে কোন দুর্যের জা য়া পড়ে না সে আলোর এই গুণ যে ঘরে পুখ হইতে পাশিশ এবং সে ঘরের সকল স্থানেই এই সমান আলো লগ্নাতি রেক নাই। এই পুকার আলো গাঁড়ি তেও নরে সে গাঁড়ি চলিবার সময়ে এই পুকার আলোর আলো গাঁড়ি হইতে যে ত শত হাত জ্বলি যান ও যেত শত হা তের মধ্যে অতিমুখ্য জাণীর অক্ষর ও অ লামানে পড়া যায় অতএব তাহাতে গা ডীর অত্যন্ত উপকার হয় যেহেতুক গা ডীর চতুর্দিক তাবদন্তু দেখা যায়। এমত কার বাগীতে সম্যত আলো হয় না।

বানিজ্য।

গণত বৎসরে আমেরিকায়েরা চীন দেশ হইতে তামাকর ওপার বস্ত্র দেয় কোষ্ঠি টাকার ক্রয় করিয়া আপন দেশ লইয়া গিয়াছে এবং ইংল্যাণ্ডেরা চীন দেশ হইতে ততোধিক টাকার বস্ত্র ক্রয় করিয়া আপন দেশে আনিয়াছে। এতদ্ভিন্ন এই দেশে ও অন্য দেশে চীন দেশ হইতে জিনিস যায়। ইহাতে দেখা যায় যে চীন দেশ কত বড় ও তাহার কত জিনিস ওপার হয় ও অন্য দেশ দেশ হইতে সেখানে বানিজ্যার্থে কত টাকা যায়।

ভূমিকম্প।

১৬ কার্তিক ১০ নবেম্বর বুধবার রাতি দুই প্রহর এক ঘণ্টার সময় ভূমিকম্প হই য়াছে।

সমাচার দর্পণ।

কলার আকর।

কতক বৎসর হইল ইংলণ্ড দেশে এক জন চারি হাজার টাকাতে নয় বিঘা জমি ক্রয় করিল গত বৎসরে দেখা গেল যে সেই জমিতে এক কলার আকর আছে। এখন সমাচার পাওয়া গেল যে সেই ব্যক্তি ঐ জমি বৎসর এক লক্ষ বিশ হাজার টাকা করারে একইশ বৎসরের কারন অন্যকে ইজারা দিয়াছে।

শ্রীশ্রীযুতের ব্যবস্থা।

মোর্শে মর্ডেইল্যামে মন ৪৮ ৯৯ সা লের ১৯ আকটোবরে শ্রীশ্রীযুত মার্কু ইন্স হে-ক্লিন্স গবরনর জেনারেল বাহা দুর বলিকাভার জোট অদালতের বিষয় এই আখ্যাদিহির করিয়া প্রকাশ করিয়া দেন।

পূর্বে ঐ জোট অদালতে আতাই শত টাকার অধিক মোকদ্দমার নালিশ হইত না এখন চারি শত টাকার পর্যন্ত মোকদ্দমা হইবেক।

পূর্বে ঐ অদালতে তিন জন সাহেব অধীক্ষ হইয়া মোকদ্দমা করিতেন এখন মোথানে চারি জন সে কর্মে বসিবেন।

যখন কোন মোকদ্দমা সে অদালতে প্রস্ত করা যায় তখন যদি সে মোকদ্দমাতে ঐ চারি জন অধীক্ষ সাহেবের মের মতের বিরোধ ওপস্থিত হয় অথবা তাহারদের মতের দুই জন এক পরপাক্তী ও অন্য দুই জন অন্য পরপাক্তী হন তবে তাহারদের মতের দুইজন অধীক্ষ যে পক্ষ বলদী হইবেন সেই পক্ষ দ্বির হইবেক।

এবং পূর্বে কোন মোকদ্দমাতে কোন দিন নিশ্চিন্ত ছিল কিন্তু এখন তাহা না হইয়া ঐ চারি সাহেবেরা ইচ্ছানুসারে মোকদ্দমা যে দিন করিতে আজ্ঞা করি

বেন সেই দিন সেই মোকদ্দমা করিবেন যেন ঐ সাহেবেরদের হাতে অনেক মোকদ্দমা পড়িয়া না থাকে এবং মোকদ্দমার নিমুত্তি শীঘ্র হয়।

এবং আসামীর কত্রের বিষয় এই নিরূপিত হইল যখন যথেষ্ট মুক্ত বণ টাকার ওল্ল মোকদ্দমা না হয় তখন আসামীকে এক মাস পর্যন্ত কত্র করিতে পারিবেক ইহার অধিক দিন কত্র রাখিতে পারিবেক না। যখন যথেষ্ট মুক্ত বণ টাকার অধিক মোকদ্দমা না হয় তখন চারি মাসের ওল্ল আসামীকে কত্র রাখিতে পারিবেক না। এবং যখন যথেষ্ট মুক্ত দুই শত টাকার ওল্ল মোকদ্দমা না হয় তখন আট মাস পর্যন্ত আসামীকে কত্র রাখিতে পারে এবং যথেষ্ট মুক্ত দুই শত টাকার ওল্ল হইলে এক বৎসর কত্র রাখিবেক।

কত্রী আসামীর ধোরাচারি বিষয় এই দ্বির হইল যে যে কোন ফরিআদী তিকরী পাইয়া আসামীকে কত্র রাখা তাহার ধোরাচারি পুত্তিদিন দেত আনা করিয়া দিতে হইবেক এবং আসামীকে কত্র করিলে তিন দিনের পর কত্রী আসামীর এক মাসের ধোরাচারি অদালতে রাখিল করিতে হইবেক। এবং সে ব্যক্তি যত দিন কত্র থাকিবেক তত দিনের ধোরাচারি এই রূপে আদালত দ্বাখিল করিতে হইবেক।

যদি কোন ফরিআদী এই লিখিত সময়ের মধ্যে কত্রী আসামীকে ধোরাচারি না দেয় এবং আসামী অদালতে ফরিআদীর নামে ঐ বিষয় নালিশ কর ও মান্দ করিয়া দেয় তবে ঐ দিন অধিক আসামী খালাস পাইবেক।

এবং যদি কোন ফরিআদী অদালতে

নালিশ করিয়া আসামীর পণ্ডার তিকরী পায় ও তাহাতে যদি আসামী আসামীর যথাসমর্থ আসামী পাণ্ডারকে দেয় তাহাতে যদি তাহার মকন দেনা পাই না হয় তবে যে ব্যক্তি থাকিবেক তদনুসারে সাহেবেরদের বিবেচনায় সে ব্যক্তি কত্র রাখিবেক।

যদি কোন আসামী আসামীর বেনা দ্বির হইলে পাণ্ডারের সহিত বীত্তি বসি করে ও যতদূর আমীন দেয় তবে সে খালাস হইতে পারে।

এবং যদি কোন আসামী আসামীর মকন দেনা পাই না করিতে কোন পুকারে খালাস পায় তবে তাহার মকন সমস্ত ঐ সে যাহা তৎকালে ওপার্জন করিবে তাহাও ক্রোক রাখিতে পারে এবং পর্যন্ত তাহার সমস্ত দেনা পাই না হয়।

ইংলণ্ডের বাদশাহের যে অদালত সুপ্রিম কোর্ট তাহার অধীন পূর্বে যেমন জোট অদালত ছিল তেমন এখন ও থাকিবেক।

এই ব্যবস্থা ভিশম্বর মাসের পুণ্য তা রিখ অবধি মণ্ডুর হইবেক।

এই অদালতে ফরিআদী ও আসামীর যে যথেষ্ট হইত তাহা পরিবর্ত হইল এবং এই রূপ লুতন দ্বারা সে দ্বির হইল।

দশ টাকার নীচের মোকদ্দমা আপোসে রাখা হইলে দ্বি টাকার দুই আনা যথেষ্ট। যদি মোকদ্দমা তিন মিন হয় তবে দ্বি টাকার তিন আনা। ও মোকদ্দমার তিকরী হইলে দ্বি টাকার চারি আনা। পুতোক মণ্ডালিয় চারি আনা। পুতোক অদালতে আট আনা। আসামী

সমাচার দর্পণ।

কিন্তু অগ্নিআদির মাঝে বাহার ইন্ধুতে যোকদ্দমার বিশদ হয় সে দুই আলাথরত দিবের। দশ টাকার নীচের কোন যোকদ্দমাতে কয়লাসেন লওয়া যাইবেক না।

যদি দশ টাকা অথবা চল্লিশ টাকা পর্যন্ত যোকদ্দমা হয় এবং নালিসের খর আশে সে রজা হয় তবে ঋতর এক টাকা। যদি তিসমিস হয় তবে দেড় টাকা ও তিকরী হইলে দুই টাকা। পুতাক সপালার চারি আনা ও এয়ারিলে আট আনা এ বাহার ইন্ধুতে যোকদ্দমার ঘেরি হয় তাহার চারি আনা ঋতর পড়িবেক।

চল্লিশ টাকা অথবা আশী টাকা পর্যন্ত যোকদ্দমার নালিস হইয়া আশে সেন রজা হইলে তিন টাকা ঋতর। তিসমিস হইলে চারি টাকা। ও তিকরী হইলে চার টাকা। পুতাক সপালার আট আনা পুতাক এয়ারিলে এক টাকা এবং বাহার ইন্ধুতে যোকদ্দমার ঘেরি হয় তাহার আট আনা ঋতর।

আশী টাকা অথবা দেড় শত টাকা পর্যন্ত যোকদ্দমা আশে সেন রজা হইলে চারি টাকা এবং তিসমিস হইলে চার টাকা ও তিকরী হইলে আট টাকা ও সপালার আট আনা ও এয়ারিলে এক টাকা। বাহার ইন্ধুতে যোকদ্দমার ঘেরি হয় তাহার এক টাকা।

দেড় শত টাকা অথবা তিন শত টাকা পর্যন্ত যোকদ্দমা আশে সেন রজা হইলে আট টাকা। ও তিসমিস হইলে দশ টাকা ও তিকরী হইলে দশ টাকা ঋতর। পুতাক সপালার এক টাকা ও এয়ারিলে

দুই টাকা। যোকদ্দমার ঘেরিতে দুই টাকা।

তিন শত টাকা অথবা চারি শত টাকা পর্যন্ত যোকদ্দমা আশে সেন রজা হইলে দশ টাকা তিসমিস হইলে দশ টাকা ও তিকরী হইলে দুই টাকা। সপালার এক টাকা ও এয়ারিলে দুই টাকা। যোকদ্দমার বিলম্ব তিন টাকা।

যোকদ্দমাতে এই ঋতর জাফা আশে সেন রজা হইলে শত করা পাঁচ টাকা ঋতর লাগিবেক এবং আশে সেন রজা না হয় যে যোকদ্দমা তাহাতে এই ঋতর জাফা শত করা দশ টাকা ঋতর লাগিবেক।

ইতিহাস।

এক মালিকার এক ছান বস করে তাহার বাটীর নিকটেই এক অঙ্গলে এক মহাসর্প থাকে। মালিকার পুত্রদিন সর্পকে দুকু আহর দেয়। সর্প আশিয়া দুকু পান করিয়া সেই পাত্র পুত্রদিন একটী স্বর্ণ মোহর দেয়। কিছু কালান্তর এই মালিকার বিবেচনা করিয়া আপন পুত্রকে ডাকিয়া কহিল যে ঐ অঙ্গলের মাঝে এক মহাসর্প আছে তাহাকে পুত্র দিন দুকু আহর দিবা তাহাতে একটী স্বর্ণ মোহর পুত্রদিন পাইবে। ইহা শুনিয়া মালিকারের পুত্র এক বাটীতে দুকু লইয়া অঙ্গলের নিকটে রাখিয়া সর্পকে ডাকিলে সর্প আশিয়া দুকু পান করিয়া ঐ বাটীতে একটী মোহর দিল। পরে মালিকারের পুত্র অধিক মোহর চাহিল। সর্প তাহা না দিয়া স্বর্ণ দেন গমন করিল। ইহাতে মালিকারের পুত্রের অঙ্গরকরনে কৌণি জন্মিল।

পরে এক সময়ে মালিকার আপন স্ত্রীকে সঙ্গে লইয়া কোন মহাযোণী গঙ্গাশূন্যে গমন করিল সেই দিবস মালিকারের পুত্র দুকু লইয়া সর্পের নিকটে চলিল ও পুত্র কৌণি স্বর্ণের করিয়া একটী দত্ত হস্তে লইল। পরে দুকু রাখিয়া পুত্রমত সর্পকে ডাকিলে সর্প আশিয়া দুকু পান করিতে প্রবৃত্ত হইল। এই সময়ে মালিকারের পুত্র ঐ সর্পকে দত্ত হস্তে করিল তাহাতে সে সর্পের কিছুই হইল না কিন্তু সর্প কৌণি লুপ্ত হইয়া মালিকারের পুত্রকে দশন করিবামাত্র তাহার পুত্র ভাণ্ডা হইল। পরে তাহার স্ত্রী আশিয়া কান্দিত সহর করিয়া মহাগমিলি হইল। এই কাল মালিকার গরি দান করিয়া বাটীতে আশিয়া পুত্রের সর্পাখাতে মৃত্যু শুনিয়া অনেক শোক করিল। পরে সর্পের নিকটে গিয়া সর্পকে ডাকিলে সর্প আশিয়া সর্প কল হস্তে করিল। মালিকার ইহা শুনিয়া ডাকাতের হইয়া কহিল যে যে সর্প আমার পুত্র যেমত কর্ম করিয়াছিল তাহার মত ওপুত্র হইয়াছে অতএব এখন আপন পুত্রমত অনুগ্রহ প্রকাশ করিয়া আমাকে পুত্রপালন করহ। পরে সর্প কহিল যে মালিকার তুমি অতঃকাল তোমার সন্তিত আমার আর কখন পুত্রি অম্মো না শুন। মালিকার চিত্তাশ্রম পশ্য ভাণ্ডিয়ারা মম ভাবদেহে যা পুত্রিন্দা কলানদাধিক। এই কথিত; পাঠ করিয়া সর্প স্বহস্তে গমন করিল।

এ কথাই তাৎপর্য এই।
পুত্রিভক্ত হইলে যদি পুত্র পুত্রি হয়।
কথাই নাহি হয় তাহে শুভোদয় ॥

এই সমাচার দর্পণ প্রকাশ্যের জাণাখাতে পুত্রি সন্তান হইলিবারে জাণা হয়। বাহার লজাশ্রমক হয় তিন প্রকাশ্যের জাণাখাতে আপন নাম পাঠাইলে সন্তান হইবেক তাহার মূল্য মাসে এক টাকা যিনি বাহার করিয়া

সমাচার দর্পণ

৩০ নং পৃষ্ঠা।

শনিবার।

১০ নবেম্বর ১৮৮০। ৩৩ পুষ্কর মল ১১১১।

দর্পণে মুদ্রিতব্যক্তিগণের কার্যবিবরণ।

বৃহত্তমিহ ভান্ডার সমাচার দর্পণে ৥

কোম্পানির কাঁজ।

কোম্পানির শতকরা চতুর্দশের মূলের কাঁজ কয় করিতে হইলে শতকরা দুই টাকা ভিলেও। বিক্রয় করিতে হইলে শতকরা দুই টাকা আট আনা ভিলেও।

মস্তিষ্কের গতিবিধি।

| ১০ | ১১ | ১২ | ১৩ | ১৪ | ১৫ | ১৬ | ১৭ | ১৮ | ১৯ | ২০ | ২১ | ২২ | ২৩ | ২৪ | ২৫ | ২৬ | ২৭ | ২৮ | ২৯ | ৩০ |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| ১ | ২ | ৩ | ৪ | ৫ | ৬ | ৭ | ৮ | ৯ | ১০ | ১১ | ১২ | ১৩ | ১৪ | ১৫ | ১৬ | ১৭ | ১৮ | ১৯ | ২০ | ২১ |

ইন্ড হার।

১১ নবেম্বর তারিখে শ্রীশ্রীযুত ইন্ড হার বিরাজেন যে জুয়াড়ির মনের দুখ মর্মান্তিক অধিক বেহার ও ভাগ্যলব্ধ ও হারমণ্ড ও নার ও শাহাবাদ ও তাঁর হুজুর কালেক্টর সাহেবেরা ও ডাক্তার না কোম্পানিতে দাখিল করিবেন তাহার ভিল ভাগের এক ভাগ বাঙ্গালি বাঙালোটে দাখিল করিতে পারিবেন অবাঞ্ছিত আনা রোক টাকা দাখিল করিতে হইবেক এবং আরও কোন বিষয়ের টাকা দাখিল করিতে হইলে নগদ টাকা অথবা বাঙ্গালি বাঙালোটে যেমন ইচ্ছা তাহা দাখিল করিতে পারিবেন।

সমাচার দর্পণ।

অন্ধাভেদ্য পোশাক।

অমনি দেশে এক ব্যক্তি এমন এক পুষ্কার অশ্রুভেদ্য পোশাক সৃষ্টি করিয়াছে যে তাহাতে বন্ধুবরের গুলি লাগিবার মাত্র অমনি সরিয়া পড়ে ভিতরে পুষ্টি হয় না। পুষ্টিয়ার রাজ্য এই ব্যক্তিকে চম্পা হাজার টাকা দিয়া এই বিদ্যা বন্ধ করিয়াছে অর্থাৎ অন্যকে শিখাইতে বারণ করিয়াছে কেবল আপন পক্ষীয় দুই এক জনকে মাত্র শিখাইতে লক্ষ্য করিয়াছে।

পত্র প্রেরণ।

ইংলণ্ড দেশে বাদশাহের ওজীর এই বদলি করিয়াছেন যে ইংলণ্ড দেশের মহৌ মঙ্গল শহরেইতে রাজধানী শহরে অভিযাত্রী বাহিন্যের পত্রাদি গঁথজে তাহার লিখিত এই ওজীর এক পুষ্কার গাঁড় সৃষ্টি করিয়াছেন সে গাঁড়িতে কেবল এক জন মঙ্গল ও পত্রাদির গবরদারির কারন এক জন স্বেচ্ছাবাক্স লোক থাকে ও তাহাতে দুই ঘোড়া যুক্ত করা যায়। সে গাঁড়ি প্রতিদিন কাজেই দ্রুত মাতে গাঁড় কোণ গমন করে। এবং সে গাঁড়ি এক শত কোণ গমন করিতে হইলে আটটার বার আটটার ঘনে ঘোড়া বদল করিতে হয় তাহাতে পোনের মিলিট লাল মাত্র পথ বিলম্ব হয় এবং আটটার ঘণ্টায় সে এক শত কোণ চলে।

নেপাল।

যোশ নেপালইতে সমাচার ভানি চাছে যে তৎপুর্বে নেপালীভার ওপার ওপা রোগের বড় পুষ্কার ইয়াছে এবং তৎপুর্বে যে নেপেরা ইংলণ্ডীয়দের মিত্রা ইয়াছে সে বার শতাব্দে হার মধ্যে দুই দিনে মৃত্যি জন লোক এই রোগে মরিয়াছে ও সেখানে গোড়া রোগে মাহার ইহাতেও কোন পুষ্কার ওপার তাহারদের ওপার ইহাতেও না।

শস্য দুর্ঘটনা।

যোশ মুরশেদাবাদইতে সমাচার ভানি মিয়াছে যে সেখানে ভূমি জিনিস আ মনি দুর্ঘটনা আছে সেখানে জিনিসের অনুভব নাই কিন্তু মহাজন লোকেরা গো লাহইতে বাহির করিয়া বিক্রয় করে না কিন্তু পশ্চিম দেশে ইহা মস্তিষ্ক শস্য যথেষ্ট ইংলণ্ড ইহাতেও তাহাতে ভূমি হয় যে মহাজনেরা কল্যাণ করিলেও সেই জিনিস দুর্ঘটনা রহিলে না।

ব্রাহ্মকীর্ষা-বিদ্যা।

যোশ ওড়িশাও ইহাতে সমাচার ভানি চাছে যে এই ব্রহ্মকীর্ষা বাজিরাত পেশাদার দেওয়ান এই ব্রাহ্মকীর্ষা বিদ্যা ওড়িশাও ব্রহ্মকীর্ষায়েন এবং এই ব্রহ্মকীর্ষা বাহাদুর তাহার বাসের নিমিত্ত ওড়িশাওয়ের কিল্লাতে যে ঘর পুস্তক করিয়াছেন সে অত্যন্ত ঘর ও তাহা মেথিয়া বা-বিদ্যা অত্যন্ত মনুষ্য ইহা লেন। এই মহারাজ বাজিরাত পেশাদার

সম্ভাটার দৰ্শণ ।

ও তাঁহার যেখানে থাকিয়া এই দুই জন পূৰ্ণ ভাবে মহাপ্রভুদের মহা রাজধানী পুণা শহরে অবস্থিত করিয়া তখন মহাপ্রভুদের ওপরে পুজু করিয়া কালযাপন করিতেন তাঁহারা এখন ইংল্যান্ডের বশভাষণ হইয়া এক জন কানপুরের নিকটে দ্বিতীয় জন ভাণ্ডারকে থাকিলেন ইহাতে তাঁহার দেহ কেবল পরাম্ব হালিমাত্র হইয়াছে মুখহানি হয় নাই । কিন্তু ঘর্ষ হিন্দু স্থানীয় কোন রাজারা এই ধৰ্ম্ম আপন বিপক্ষ লোকেরদ্বিগত করিয়া উত্তর তাহাদের দ্বিধা দূরীভূত করিয়াছেন ।

আশ্চর্য্য আত্মহত্যা ।

মাস পাঁচেক হইল তখন বেশ দুই জন বন্ধু পরস্পর পরাম্ব করিয়া অন্য গ্রামে এক ভৌতিকভাবে গাঠিত গোল কি দুই দিন পরে সেখানে অভিসমুদ্র এক কল্যাণে দেখিয়া পুণ্য এক জনের বিবাহ বাসনা হইল । পরে দ্বিতীয় ব্যক্তিরও এই কল্যাণে বিবাহ করিতে ইচ্ছা হইল এই জন দুই জনই এই কল্যাণের অনুপ্রাণিত হইল । কিছু দিন পরে ওভয়ের মনোভাৱ ওভয়ে আত্ম হইয়া পরস্পর ফেঁদেতে ওভয়ের মুখ ধরিলে হইল । পরে এই দুই বন্ধু আপন-মনে বিবেচনা করিল যে বন্ধু ব্যক্তিকে এই ধৰ্ম্ম যত্ন কর্তব্য নহে । ইহা ভাবিয়া তাহার এই বন্ধু তাম খেলা ল যে আইস আয়ার দুই বন্ধু তাম খেলা করিতে বসি ইহার মধ্যে যে জন খেলাতে হারিলে সেই আপনাকে আপনি মনে করিলে অবশিষ্ট যে জন থাকিলে সেই এই কল্যাণে বিবাহ করিলে । এই নির্বন্ধ করিয়া দুই জন তাম খেলা

করিতে বসিল । পরে এক ব্যক্তি খেলাতে হারিয়া মাত্র সে আপন আশ্রয়কে গুলি করিয়া শূন্য ভাণ্ডার করিল অন্য ব্যক্তি শূন্য পাইল ।

অন্যত্ম ।

মোক্ষম বলাগতের নিকটবর্তী শূন্য প্রথম প্রতিবন্ধের কাহিনী পুনৰ্নিবেশিত করে এবং পুণ্য হইয়া থাকে । তাহাতে অনেক সমাধি হয় । এবং ব্যক্তি পোড়ালের অনেক বাহন্য হইয়া থাকে । মনোভূতি গত পুণ্যের দিন রাত্রিতে শূন্যের এক পুণ্যেরিতে লান্যপুণ্য বাস্তব হইয়া দুই আত্ম করিয়াছিল সে দুই আত্মের পরস্পর পুণ্য তাহাদের মুখের মত মুখ হইয়াছিল তাহার কোঁক কত লিখিত । যখন এই দুই আত্ম জের মুখ নিবৃত্ত হইল তখন তাহার অবশিষ্ট ব্যক্তি পুণ্যের বিবাহ লোকেরা লইয়া ঘাইতেছিল তাহার মধ্যে এক ব্যক্তি আবেগি লিখিত দুইটা বোম্ব আপন লইয়া আপনাকে কোঁকতে রাখিয়াছিল কিন্তু এই দুই বোম্বের মধ্যে অগ্নিসংযোগ হইয়াছিল তাহা বাহিরে পুণ্য জিল না । ব্যক্তি আপন কোঁকতে রাখিয়া মাত্র এই দুই বোম্ব জুটিয়া তাহার মস্তক ওভা ইয়া লইয়া গোল কবন্ধ শরীর ভূমিতে পতিয়াছিল ।

আশ্চর্য্য আত্ম ।

মাস পাঁচেক হইল ইংল্যান্ড বেশ কতক দূরগামী লোক পরের দ্বারে ময়ুরি করিতে গিয়াছিল তাহাদের মধ্যে এক জন স্বী লোক ও তাহার চারি বৎসরব্যয় এক বালক জিল এই স্বী লোক স্বয়ং করিতেছিল ইতোমধ্যে এই বালক হারাইল তাহাতে এই স্বী ভাবিল যে আপন বালক অন্য

কাহারো সহিত আপন দ্বারে গিয়াছে । ইহা নিশ্চয় করিয়া এই স্বী ঘরে গোল সেখানে গিয়া চতুর্দিকে অনুসন্ধান করিল কিন্তু বালক পাইল না । ইহাতে এই স্বী অত্যন্ত কাতর হইয়া আপন আত্মীয় লোকেরদ্বিগত এই বিষয় করিল তাহা হাও পাঁচাত্তর ওভর অনুসন্ধান করিতে লাগিল । এই কয়েকটি দিন গত হইল পরে ঘন্টা দ্বিগত তাহাদের মধ্যে এক জন বন্ধুর ওভর এক কোঁক বালকের চরন চিহ্ন দেখিল এবং কতক দূর গিয়া দেখিল যে এই বালক আপন হাত শিয়রে দিয়া বহরের ওভর শয়ন করিয়া নিদ্রা ঘাইতেছে । পরে তাহাকে আগ্রহিত এবং সে ওভল ও এই ব্যক্তির সহিত আপন নিজ মাটার নিকটে গোল ও তাহার দ্বিগত ওভল এবং জয় দিলে পর আ হার করিয়া পুণ্য হইল । সে বালক যেখানে শুইয়াছিল সেখানে যেখানে গোল যে কেবল তাহার দুই পা ভিত্তা স্থানে জিল অতএব তাহার পা মরম স্থানে জিল তাহাতেই তাহার শরীরে রম নক্ষত্র জিল তাহাতে জয় দিন অলাই রেও মরিল না ।

এই আশ্চর্য্য জীবন কীভাবে ব্যক্তি রেকে হয় না যেহেতু এই বালক চার দিন আত্ম রাত্রি বহুব্যয় স্থানে বিনা বন্ধু বিনা আইদে একাকী পাঁচাত্তর ওভর রক্ষা পাইয়াছে ।

নন্দা ।

প্রাচীন নন্দাধারী ব্যক্তি দশ মিলিট অস্ত্রের একবার নন্দা লোকে যে অস্ত্র দশ মিলিটের মধ্যে এক মিলিট তাহার নন্দা লইতে যার তাহাতে হিন্দাব করা গোল যে তাহাদের দশ দিনের মধ্যে

সমাচার দর্পণ।

এক দিন কেবল নন্দা লইতে যায় এবং
এক বৎসরের মধ্যে মাতে চতুর্দশ দিন ঐ
কর্ম্যে যায় যদি সে ব্যক্তি তপ্তিশী বৎসর
নন্দা লয় তবে তাহার চারি বৎসর কেবল
সেই কর্ম্যে যায়।

বলুন।

পূর্বে আমরাজীয়ায় যে
ইতালি দেশে এক স্থানোক্ত বনুশে ওয়া
পতিয়া ময়িল। এখান তাহার স্থিতি বিব
রন শ্রুতি গেল যে ইহার পূর্বে সে স্থান
লোক জেহুদীর বার বলুদ্বারা আ
কাশে ওঠিয়াছিল এই বারে যে সে
আকাশে ওঠিয়া ময়িল তাহার কারণ
এই ঐ স্থান লোক আগলার সহিত নানা
পুকার ফুটু বাতী লইয়া আকাশে ওঠি
তে কৌতুক প্রযুক্ত সেই ফুটু বাতীতে
আগুন দিওঁছিল সে স্থান লোক তাহার
পূর্বে দিন আকাশের গজন দেখিয়া
আগলার সঙ্গে তবিক বায়ু লইয়াছিল
সে দিন সে ক্রমে ঐ বায়ু নির্গত করিতে
ছিল তাহার মধ্যে অতিক্ষুদ্র এক জিন্দ
হইতে বায়ু নির্গত হইয়া ঐ বাতীর ভিত্তি
তে লাগিয়া যায় বলুন ফাতিয়া ঐ স্থান
লোক নোকাশু এক ঘরের ওপরে পতি
ল ও তাহার জোরে ঘর ফাতিয়া ঐ স্থান
লোক ঘরের মধ্যে পতিল তাহাতে তা
হার মাথা ফাতিয়া দুইখান হইয়া ঐ স্থান
লোক মাথা পতিল।

ওজরাত।

ওজরাত দেশের মধ্যে অনেক বাগিয়া
বৌদ্ধ আছে এবং তাহারদের মধ্যে
এক বীর আছে যে তাহার বৎসরের
মধ্যে আট দিন ওপবাস করে। দুই

দিন মান হইল তাহারদের মধ্যে এক
জন আপন মনে স্থির করিল যে আমি
এক মাসপর্যন্ত ওপবাস করিব। তাহা
তে সে ব্যক্তি প্রথম চারি দিন স্থিতি
আহার করিয়াছিল কিন্তু এক মাসের
অবশিষ্ট চারি দিন কেবল তপ্ত জল
খাইয়াছিল এক মাসের পর সে ব্যক্তি
মান করিল যে আমি তপ্ত জল বাত
রেতে খাবজীবন কিছু খাইব না। পরে
সে ব্যক্তি চেষ্টা দ্বিগুণ করিয়া ঐ নিয়মে
যাত্রা সাতঘণ্টা দিনে গুল ওগা কর
য়াছে। যখন সে ময়িল তখন তা
হার শরীরে কেবল অধিমাত্র ছিল সে
ময়িলে সকল বৌদ্ধেরা একত্র হইয়া
মহানমোহরহস্যরূপ তাহার শৈব ক্রিয়া
করিল তাহাতে ওজরাত দেশের মধ্যে
সকলেই তাহাকে নিম্ন পূজ্য করিয়া
কহে ও মানে।

নুতন বাবা।

কতক দিন হইল ইংলণ্ড দেশেইতে
এক পুকার নুতন বাবাদের যন্ত্র মো কলি
কাতায় আসিয়াছে সে বাবাদের যন্ত্র শ্রীশ্রী
যন্ত্রের ঘরের সম্মুখে থাকে তাহাতে
এক চাবি আছে সেই চাবি ঘুরাইলে
কমে দুই শত পুকার পুখ বাবোয় হয়
এবং ইংলণ্ড দেশে পুসিদ্ধ যে কতক
গান আছে সে গান পুখ ঐ বাবোয়
বাজে এবং সেই গানের মধ্যে যখন
তুরী বাজাইতে হয় তখন তুরী আপন
বাজে ও যখন বাঁশী বাজাইতে হয় তখন
আপন বাঁশীর শব্দ হয় এবং যখন ঢোল
বাজাইতে হয় তখন আপন সে ঢোল
বাজে ইত্যাদি নানা পুকার বাবা একবার
মাত্র চাবি ঘুরাইলেই বাজে। সে বাবা
যখন যে স্থানে সে তখন চমকুত হয়

যেহেতু একবারমাত্র সে যন্ত্র বর্ণ
করিলে বিভিন্ন বর্ণ করিতে হয় না
কিন্তু দুই বর্ণপর্যন্ত নানা পুকার বাবাদের
মিষ্ট স্বর নির্গত হইতে থাকে।

তবল পুর।

মহারাজু দেশের অন্তর্গত অরল
পুরহইতে সম্রাটর আসিয়াছে যে সেই
খানে সকল শাসন দুর্ভাগ্য ও দুর্ভাগ্য তৎ
প্রযুক্ত সেখানকার সৌখিনের যোজা চারি
শের দল। পূর্বেই তাই এখন তাহা হই
করিয়াছে তথানি সেখানকার সকল
যোজার তাহার একত্র কোথাও পাওয়া
যায় না।

গত মাসে তপ্তল আঁ দান টাকায়
আট শের বিক্রয় হইয়াছিল।

ইংলণ্ডেরদের ওকাল সাহেব মো
সটার শহরে ও তাহার চতুর্দিকে দশ
হাজার টাকার ধানের বীজ কয় করিবার
কারণ টাকা নষ্ট হইয়াছিলে কিন্তু তৎ
পুদ্রেশ বীজ পাওয়া গেল না।

কিন্তু কেন্দ্রে যে শাসন ওপবাস হইয়াছে
সে অযোগ্য মন্দর মত আছে এবং নন্দা
দা নবীর ওয়া পাঠে ইংলণ্ডেরদের
অধিকার যে ভূমি আসিয়াছে সে
ভূমির মধ্যে নন্দা বিদ্য ভূমিতে কথ
ন লাগিল মন্দর হইয়াছিল না ইংলণ্ডের
ওকাল সাহেব সে ভাষা ভূমিতে কথ
করাইতেছেন অতএব সেই ভূমির
ফসল যদি হয় তবে তৎপরিণে লোকের
দের আহারের বিষয় কোন ভাবনা থাকি
বেক না।

মুরশাবাদ।

মুরশাবাদহইতে সম্রাটর আসিয়া
ছে যে সেখানে ভূমিকম্পের বেগ অতি

এই সমাচার দর্পন জরায়ুর জাণালাতে তি সন্ধ্যাহ শনিবারে জাণ হয়। যাহার ৩৩১২৯-ক ২২ তিন জরায়ুর জাণালাতে জাণি নাম পাঠাইল সন্ধ্যাহ কাণি ওঁহার নিকটে পাঠান যাইবে তাহার মূল্য মাংস এক টাঙ্গা যিনি স্বাস্থ্যের করিবে।
 ছেন যদি তাহার নিকটে কাণি না পৌঁছে তবে তিন জরায়ুর জাণালাতে সমাচার দিবামাত্র তাহার নিরদৈপ্তান যাইবে।

সমাচার দর্পণ

সংখ্যা ।

পলিভার ।

১৭ নবেম্বর সন ১৩৪৯ । ৪৩ তম্ভাহ্মণ সন ১৯১৩ ।

দর্পণে মুখ বোম্বাইব কান্ট্রিবিবরণ্যঃ ।

দ্রষ্টব্যঃ অনন্ত সমাচার্য্য দর্পণে ॥

কোম্পানির কার্য্যজ ।

কোম্পানির শতকরা চয় টাকার মূলের
গাজ কয় করিতে হইলে শতকরা দুই
কো ডিগ্রীকোড় । বিক্রয় করিতে হই
শতকরা দুই টাকা তাই আনা তিন
পাঁচ ।

সম্ভাষের পঞ্জিকা ।

| নবেম্বর | পলিভার | ১০ জুলাই |
|---------|--------|----------|
| ১ | ২ | ১৪ |
| ২ | ৩ | ১৫ |
| ৩ | ৪ | ১৬ |
| ৪ | ৫ | ১৭ |
| ৫ | ৬ | ১৮ |
| ৬ | ৭ | ১৯ |
| ৭ | ৮ | ২০ |
| ৮ | ৯ | ২১ |
| ৯ | ১০ | ২২ |

ইস্তাহার ।

৪১ নবেম্বর তারিখে শ্রীশ্রীযুক্ত ইস্তা
হার দিয়াছেন যে অ নুয়ারি মানের পু
যতারিখ অবধি বেহার ও আগালপুর
ও রাহাণ্ড ও মারেল ও শাহাবাদ ও তার
ইতের কালেক্টর সাহেবেরা যত খাজা
না কোম্পানিতে দাখিল করিবেন তাহার
তিন ভাগের এক ভাগ বাঙ্গালি বাঙ্কিনোট
দাখিল করিতে পারিবেন অর্থাৎ খাজা
আনা রোক টাকা দাখিল করিতে হই
বেক এবং আরও কোন বিষয়ের টাকা
দাখিল করিতে হইলে নগদ টাকা অথবা
বাঙ্গালি বাঙ্কিনোট যেমন ইচ্ছা তাহা দাখি
ল করিতে পারিবেন ।

সমাচার দর্পণ ।

কলিকাতা ।

গণতন্ত্র সম্ভাষের মুদ্রাসঙ্কটের গুরুত্ব
সাহেবেরা মিলিল করিয়া স্মৃত্ত অজ
সাহেবের নিকটে পক্ষান্তে লিখিত বিষয়
দেখান করিয়াছেন । যে মুদ্রাসঙ্কটের
গুরুত্ব সাহেব লোকেরদের এই ধাঁড়ি
আছে যে আপন কর্ম্ম মানি করিয়া কলি
কাতার মর্দ্র যেখানে যেমত অন্যায়
যেখানে তাহা অজ সাহেবের লিখতে দুর
খাস্ত করেন ।

এই বৎসর তাহার এই এক বিষয় দুর
খাস্ত দিয়াছেন যে বাজারের ইজারদা
রেরা এই মত অন্যায় করিতেছে যে আপ
ন ইজারার মধ্যে কোন রাহ্মা দিয়া কোন
ম্বানের বালাই লোকেরা কোন দুর
বিক্রয় করিতে কোন ম্বানে লইয়া যায়
ইজারদারেরা তাহারদিগকে পাকড়া
করিয়া সেই সকল দুর্য্যের মামুল লয়
ইহাতে গুরুত্ব সাহেবেরা কামানতে
দেখিলেন যে একত্র বৎসর হইল এক
ম্বানে এইকণ তহবাজির মর্দ্র করিয়া
মামুল লইয়াছিল তাহাতে স্মৃগুত ২৫
সাহেবের জাউনার হইলে তাহার
সকল হইল যে এ কণ মামুল কেহ
লইতে আর পারিবেক না কিন্তু কাল
ক্রেম এ সকল নীতি লোণ হইল এখন
বড় বাজারে এবং অন্য বাজারে তহ
বাজির সববে এই কণ মামুল লইতেছে
কিন্তু তহবাজির এ কণ নহে অন্যত্র

হাতে দুর্য্যদিগ তাহার জুয়েতে
বনিয়া কয় বিক্রয় করে তাহার মামুল
লওয়া পক্ষান্তে কিন্তু তাহার মৃত্তিকা দিয়া
বালাইর দুরা লইয়া যায় তাহাকে
মামুল দেওনের বিষয় কি ।

ঐশ্বর্য মইজারী ও মহারাজ ।

দুই এক সম্ভাষ হইল বোম্বাইর নিকটে
ওইকার দেশের অধিপতি আনন্দরাজ
মহা রাজের মৃত্যু জাপান গিজে তাহার
পরে সেই রাজ্যে সম্প্রতি যে ব্যক্তি অতি
বিক্র হইয়াছেন তাহার সম্ভাষ দেওয়া
যাইতেছে । ঐ আনন্দরাজ মহারাজের
কলিকাতা মর্দ্রের ওইকার রাজ্যে
আভ্যন্তর হইয়াছেন কিন্তু যদি ইঙ্গ্রাণী
রোরদের ওপকার তাহার দারা না থাকিত
তবে তিনি কোন পুকারে তত্ত্বিতে পারি
তেন না যেহেতু তাহার বিপক্ষ অনেক
ও আপনকার পরিবারও অনেক ইহাতে
তাহার অনেক বিপত্তি হইত । আন
ন্দরাজ দুই কোর টাকা রাহ্মা মরিয়া
জেন সে টাকার ওপরে তাহার পরি
বারের মর্দ্রা চকু রাহ্মা দিয়াছে তৎপুত্র
ইঙ্গ্রাণীয়েরা সে টাকা আপন হাতে রাহ্মা
দাছেন তাহার পরিবারের মধ্যে যথার্থ
ভাগ করিয়া দিবেন ।

গণতন্ত্র সম্ভাষের মুদ্রাসঙ্কট ।

গণতন্ত্র সম্ভাষের সহিত গণতন্ত্র কেবল
মাত হাজার টাকামাত্র পাওয়া গিয়াছে
সেও কেবল ক্ষুদ্র মোতা ও গণতন্ত্র
দারা । এবং তাড়নিত আর যে ইলিজ

তাঁহা যে মৈন্সের লুট করিয়াছিল তাঁহা
রাই তাঁহা বৈষ্ণবা লইয়াছে অবশিষ্ট এই
মান পাওয়া গিয়াছে। এই টাকা যদি
মৈন্সের মধ্যে বৈষ্ণবা দেওয়া যাউত
তব প্রতিল আট আনা করিয়াও পা
ইত না। তৎকালে মৈন্সের মধ্যে এক
নিম্নাঙ্গি কহিয়াছিল যে নিতারিরদের প
ক্ষাৎ দৌড়িতে আয়ারদের যে পায়ে
তুতা ক্ষয় হইয়াছে এই লুট তাহার মূল্যও
আদায় হইল না।

বোম্বাই।

এই মাসের পুণ্যে বোম্বাইর শ্রীশ্রীযুত
বক সাহেবের সরকারি খরচের টাকার
কিছু অশুভ হইলে তিনি এক ইস্তাহার
দিলেন যে যে কেহ আমার এখানে টাকা
বর্ত্তা দিবক আমি তাহাকে সে টাকা
কলিকাতার বক সাহেবের গুণের স্থায়ী
দিব সে সেইখানে টাকা পাইবেক এই
ইস্তাহার দিবামাত্র তিন দিনের মধ্যে লো
কেরা ত্রিশ লক্ষ টাকা নগদ দিয়া কলি
কাতায় আসি লইল।

সিম্বলহাট।

কতক দিন হইল সিম্বলহাটের এক
জেনার কালেক্টর সাহেব কোন হ মাল
ঘাটেতে তদন্তার্থ এক জনের স্থান আ
পন মোটারির বেছারা রাখিলেন সে ব্যক্তি
বেছারা দিতে পারিলেন না। পর সাহেব
তাঁহাতে ক্ষুব্ধ হইয়া তাহাকে মারিতো।
সে মৃত হইল পরে মোমালকার আস মা
হেব সে বিষয় আদালত তাহার গুণ রাখি
লেন। কিছু দিন পরে ওখানকার বক সাহেব
শুল্কিয়া তজ ও কালেক্টরকে তদন করিয়া
অজ সাহেবকে পদত্যাগ করিলেন ও কা
লেক্টর সাহেবকে পদত্যাগ করিয়া বক

লেন এখন মিসিল হইয়া কি কিছু হয়
তাঁহা বলা যায় না।

লুণ্ডন লবন।

ইংলণ্ড দেশে এক পুকার লুণ্ডন লবন
সৃষ্টি হইয়াছে তাহার গুণ এই সে লবন
ম্যান্‌মে দিলে ম্যান্‌স দুটি হয় না অধি
ক বাণ হইলেও রসের বৈলক্ষণ্য হয় না।
এক জন এক মেঘ মারিয়া সেই লবনের
মধ্যে রাখিয়াছিল এক বৎসরের পরে
ওইয়া আনিল তাহাতে রসের বৈ
লক্ষণ্য হইল না ও দুগন্ধও হইল না।

ভাগীরথী নদী।

সকল লোক জাত জায়েন যে ভাগী
রথী নদীর জল ঘটি বৎসরের মধ্যে অ
নেক শুষ্ক হইয়াছে। ঘটি বৎসর হইল
চৌথু বৎসর দুই জাহাজ চন্দনগিরি
পর্যন্ত গিয়াছিল এখন বর্ষ বৎসর এক
জাহাজ মোট স্থানীয় পর্যন্ত গিয়াছিল
এখন স্থানীয় এমত তজা পড়িয়া শুষ্ক হই
য়াছে যে কোনো পুকারে কোলা সময়ে
বজ জাহাজ মে যত চলিতে পারে না।
এই সকল তজা পড়বার কারণ এই যে
বর্ষ গত হইলে মৎস্যধীরেরা স্থানীয়
ধাঁপ পেতে ও তাহার নিকটে মৃতিকা
আটক হয় পরে বাঁশ তুলিয়া লইলেও
সেই মৃতিকাতে হয়ে মৃতিকা আটক
হইয়া বজ তজা হয়। এখন ভাগীরথী
নৌকারা স্থানীয় ঘাটে থকা করলে তা
হাতে মৃতিকা তমা হইয়া তজা পড়ে
এই কারণে ভাগীরথী ও মায়া ভাগী
দুজির জল টেপ বৈলক্ষণ্য মাস এমন
শুষ্ক হয় যে তাহাতে নৌকা গমনের
নাও থাকে না ইহার গুণীয় কারণ পূর্বে
কলকাতা কলেক্টর সাহেব শ্রীশ্রীযুত গব

রনর জেনারেল সাহায্যের নিকটে দরখা
স্ত করিয়াছিলেন যে এখান পৌছতে লো
কতে রসী বাঞ্জিয়া জলের মধ্যে ছেলিয়া
আবরণ করিলে তজা ভাঙ্গিয়া যায়। কিন্তু
তাঁহার কিছুই হয় নাই। এই ক্ষেত্রে এই ও
পায় আছে যে এখন ঘাট ভাঙিতে হ
ইলে জলের মধ্যে কেহ না বাঞ্ছন এক
জালিয়ারাও জলের মধ্যে বাঁশ না পেতে
ইহা হইলেও যে আছে সে বজায় থাকে
এই সমাচার ইংলণ্ডের নিউসপেপার জাগ
গিয়াছে।

আক্রমণ।

তারি পতে মাস হইল ইংলণ্ড দেশের
বৎসর বৎসর এক বী আনন বৎসর
এক গায়েত তাল গায়েত দ্বিভা মত
যায়ে তাহার দৃশ্য স্থিলে আভিগম
হয়। দেত বৎসর হইল এক ব্যক্তি তাল
মুখ্য তাহার কল্যাণ বিবাহ করিতে
গিয়াছিল কিন্তু সে বিবাহের ব্যক্তি বিনয়
তৎকাল সে কল্যাণ জল যে আমি নির্ভর
তৎকাল ভায়েত বর্ষ গিয়া বিনয় নির্ভর
করিয়া আনিয়া বিবাহ করিব। ইহা কহ
য়া সে পুত্র মোট বিনয় নির্ভর আনিয়া
নাশ পুকারে বিনয় নির্ভর করিয়া বজ
পতি মনয় করিল। ইতোমধ্যে বী পুত্রের
মিথ্যা মৃত্যু মনয় মনুলি এক পত্র ইং
লণ্ডে গেল এবং সেই সমাচার স্থানীয়
পৌকামুক সে বন্যার মত আক্রমণ
করিল। তাহার পর দিবস সে পুত্রের
আনন বন্যারের পত্র মোমাল পাঠক
ইহাতে এই খবর হয় যদি সে স্থানীয়
আর এক দিবস অপেক্ষা করি তবে তা
আক্রমণ হইত না।

ফকসম্ভা মৃত্যু।

তিন মাস হইল কলিকাতার নিবাস

সমাচার দপণ।

এক আঁহাজে দুই পুহর রাতি পর্যন্ত নাচ হইয়াছিল সে দিন নাচওয়ালারা দুই পুহর রাতি পর্যন্ত নাচ করিয়া আশল ঘরে গেল পরদিবস তাহার। সকলেই পীড়িত হইল পরে দুই সপ্তাহের মধ্যে তাহার ঘরে তের জন মরিয়াছে আর জন এক পীড়িত আছে তাহার কারণ অসুস্থমান করা গেল যে সে হুজুরের মধ্যে মহি ঘরে সতর হাজার সিংহ বোঝাই ছিল তাহার দুর্ভাগ্যবশত এমত হইল যে তখন সে আঁহাজ চলিয়া গিয়াছে তাহার ফি রান কারণ অন্য আঁহাজ পাঠান গিয়াছিল কিন্তু তাহার দেখা পাওয়া যায় নাই।

নৌকো নৌকা।

সংস্কৃত ইংগত দেশে এক জন শিল্পী নৌকা নৌকা পুস্তক করিতেছে সে নৌকা পুস্তক হইল কাঁচের নৌকার মত চলিবেন এবং কাঁচের নৌকাইহতেও এতল পাতল হইবেক।

ইংগত দেশে যেখানে সমুদ্রায় নৌকা দিয়াই নৌকা পুস্তক হইয়া আসিল গি য়তে সে নৌকা দীর্ঘ বিয়্যাবসি হাত পুহ আট হাত তাহাতে তিন শত ঘটি মৌল বোঝাই হইতে পারে এবং এক হাতের দিগ্ধি অধিক জল ভাবে।

আশ্চর্য্য গাধা।

এমত বহুশ্রুতি গাধা কেহ কখনও দেখে নাই ও শুনে নাই আটটা পাত পৌলর মালের জুগাই য়াসে তাহার পিঠটা বাঁকুর হইল পরে যোল মালার যে য়াসে তিনটা বাঁকুর হইল পরে স তের মালের মাটমাসে তিনটা বাঁকুর হইল আটটা মালের যে য়াসে দুইটা

বাঁকুর হইল ও ওলিগ মালের এলি য়াসে তিনটা বাঁকুর হইল মাড়ি টারি বন্দরের য়াটা যোল মস্তান হইল তাহার মধ্যে যে শেষ তিন মস্তান তাহার। বাঁটিয়া আছে।

বড় বাঁটার।

ইংগত দেশে এটা বড় বাঁটার আছে তাহাতে নানা পুকার গাতি ও ঘোড়া ও গাধা পুত্তি অনেক বিকয় হয় এবং অনেক লোক সেখানে একত্র হয়। এক দিন বড়ক লোক কতক গুলি ঘোড়া বিকয় করিতে আনিয়া সেই বাঁটারের এক ঘা নে ঘোড়া বাঁধিল। এই কাল অতিশয় শিলাবৃষ্টি হইত আরন্ত হইল তাহাতে

মূল লোক ঘরের মধ্যে পুরেণ চলি ঘোড়া সকল ও শিলার আঘাত মহিষ্টতা করিতে লা গিয়া লাগালাগি করিয়া দুটা ঘটি জিঁটিয়া নানা দিকে চলিল পরে দুট লোকের। সেই সকল ঘোড়া বিকিতে লা গিল। তাহা দেখিয়া ঘাটারের ঘোড়া তাহার। বিবেচনা করিল যে ইহার। আয়ার ঘের ঘোড়া দুট করিতে পরিতে পারা য়া কি রক্ষা করিতে পরিব না। এই বিবে চনা করিয়া ঐ শিলাবৃষ্টির মধ্যে আনিয়া তাহার। আনিয়া ঘোড়া ইঁহল পরে ঐ দুট লোকেরের সহিত অতিশয় যুদ্ধ হইতে লাগিল এ দিকে ঘোড়া সকল চিৎকার করিয়া লাগাইতে লাগিল ঐ সম য় শিলাবৃষ্টি বেবর্তন অতিশয় হইতে লাগিল ইহাতে কামান হইল যে বহি নারদ গোমায়ী আনিয়া মিলি জিলেন।

লৌহ সিদ্ধি।

ইওরোপে মালদ্ব মিলি কাঁচের সিদ্ধি কে কবর দেওয়া যায় এমত রীতি পুর্নিলার আছে কিন্তু এখন লোকের। কবর য়াইয়া

সিদ্ধি করিয়া মৃত দেহ লইয়া চিহ্ন মক লোকেরের লিঙ্কট বিকয় করে। ইহাতে লোকের। বিকয় হইয়া এক জন লৌহ সিদ্ধিকে কবর দেওনে শ্রুত হইলে ওখার আদ্যক বারন করিয়াছে কিন্তু সেও তের করিয়াছে যে লৌহ সিদ্ধিকে অবশ্য কবর দিবেন ইহার য়েকদমা হইতেছে কিন্তু ইংগত হইতে যে শেষ সমাচার আনিয়াছে তাহাতে ইহার শেষ লিখা নাই।

পরিভ্রমণ।

ইওরোপ দেশের মধ্যে এক ঘনে এক টা মায়ায় পর্যন্ত জিল তাহার লিটে এক টা কোরা জিল তাহার দার। মর্দা জলের দ্রোত বহিত পরে তাহার লিঙ্কট এটাটা শহর পত্তন হইয়া মাল য়ালা পত্তিয়া সে কোরা কল্প হইয়া জল কল্প হইয়া জিল এখন সে পর্যন্ত যে দিকে নদী সেই দিকে কাম্য তদ্দু পিত্তেছে। এ অতি আশ্চর্য্য ইহাতে লোকের। অবমান করে যে যাবৎ জল নির্গত হওনের পথ জিল তাহা পর্যন্ত দ্বির জিল এখন সে জন কল্প হইয়া জলের জোর পর্যন্ত চিয়া এটা পুশান রাহুর গা। আনিয়াছে তাহাতে লোকের। সে রহস্য জিতিয়া দ ফিন বায় দিয়া গমলাগমন করিতেছে আর সেই পর্যন্ত এমত দ্বির কণ চলিতেছে যে তাহার গাধার বৃক ও মৃত্ত বাদি দিছু য়াশ চলিত হয়লা সে পর্যন্ত যে নদীর দিকে চলিতেছে যদি কোন কণ বদ্য না হয় তাহা শীঘ্র সেই নদীর মধ্যে পড়িবেন।

বুঝা দেশের আশ্চর্য্য আয়ু।

গত বৎসরের বুঝা দেশে এক ঘনে

সমীচারণ দর্পণ।

সাত জন তাহাইতি করিয়া একত্র ইরান
 ছিল পরে অবশেষে তাহারদের অন্যতর
 মাঝে হইয়া দুই জনের গুলিরহারা মূল
 আর পাঁচ জনের মস্তকচ্ছদন করিয়া মূল
 বক্ষম হইল বাহারদের গুলি মারিয়া মূল
 কর্তব্য হইল তাহার মধ্যে এক জন ক
 ছিল যে আয়ার মানে এমন তক্ষম বহু
 আছে যে আমি কোন কলেই মরিব না তা
 হা তোমারদিককে দেখাইব। পরে মূল
 করিবার সময়ে সে কহিল যে আমাকে
 এক বৃক্ষ বন্ধন করিয়া তারিবার তারি গুলি
 মারিবা ইহাতে যদি আমায় মৃত্যু না হয়
 তবে আমি খালাস পাইব। ইহাতে
 হাকীম স্বীকার করিল ও সেই বৃক্ষ
 বন্ধন করিল। অনন্তর ঐ তাহাইতি আ
 পন মুখহইতে খুঁতুলিয়া আপন পেটে
 একটা দাঁড়া দিয়া হানিয়া কহিল যে আ
 ইম গুলি মারহ। পরে এক গুলি মারিলে
 সে গুলি তাহার বাম দিক দিয়া গেল দি
 তার গুলি মারিল সেও তাহার দক্ষিণ দিক
 দিয়া গেল তৃতীয় গুলি মারিল সেও
 তাহার পায়ের মধ্যে দিয়া গেল তত্থ গুলি
 গুলি দিয়া গেল তাহার শরীরে এক গ
 লিও লাগিল না। তাহাতে হাকীম চমক
 কত হইয়া তাহাকে খালাস করিয়া তা
 হাকে চাকর দিল তাহার মস্তকে এক
 গুলি মারিল পরে দ্বিতীয় গুলি মারিতেই
 সে ডাঙনি মরিল। আর পাঁচ জনকে ক
 দলী বৃক্ষের মত মস্তকচ্ছদন করিয়া মা
 দিয়া দেহিল।

শ্রীযুত রাজা ওমর সিংহ।

মুর্শেদাবাদের শ্রীযুত রাজা ওমর

সিংহের মোক্ষ কলিকাতায় যে বাসি
 আের কুলী আছে তাহার তমা ও তা
 হার বাবা ও বাবিনআর মূল্য এই
 কলিকাতার মোক্ষ পুত্রিয়াত যে তা
 হার বাবা ও তাহার তমা ও নন্দ এক
 লক্ষ টাকা এই সকল সঙ্গতি মোক্ষ মূর
 শেদাবাদের শরীফপুর মোক্ষায়ে যে তা
 হার প্রমুখ্যের মন্দির আছে তাহার
 ব্যয়ের কারণ দিয়াছেন এই তিনি আ
 পন সকল দান্যাদরদিককে তাকিয়া এই
 বিষয়ে স্বাক্ষর করাইয়া দিয়াছেন।

কলিকাতা।

কলিকাতার বহুবাজারের কোল্লানির
 মদেরদার লিকটে কোল্লানির এক গিয়া
 ঘর হইবেক তাহার আয়োজন হইতেছে
 এবং সে প্রস্তুত হইলে তাহাতে এক
 জন গুরুত্বক যথিবে ও তাহার লম্বটে
 এক ইংলিশ পাঠশালা হইবেক সেখানে
 অনেক বালক বিনামূল্যে বিদ্যা পাই
 বে।

গুপ্ত পুত্র।

মোক্ষ নবাবের পক্ষিমা এক কোশ ও
 পুত্রবলীর দক্ষিণ এক কোশ বৃক্ষাণ্ডাল
 নামে এক পুসিদ্ধ স্থান আছে সে স্থান
 কোশ গুপ্তমের মধ্যে আছে ও গুপ্তমহীতে
 বিশ্বর দূর লম্ব টার দিকে মাঠ মধ্যে
 পাঁচ জমীয়া বট বৃক্ষ আছে তাহার মধ্যে
 এক ইঞ্চকময় মঠ ঐ মঠের ওপরে
 বৃক্ষাণ্ডাল ঘট স্থাপন আছে তাহাতে ব্র
 হ্মাণীর পুত্র পুত্রিহন হুঙ্গা থাকে এবং

পুত্রিহনসর সেখানে শ্রাবণ মঙ্গলদিতে
 বহু মেলা হইয়া থাকে তাহা পূর্বে জানান
 গিয়াছে।

সম্রাট ১২ কার্তিক ৪০ নবেম্বর শনি
 বার রাত্রি যোগে ঐ বৃক্ষাণ্ডাল অ
 ত্যাগ্য করি পুত্রা হইয়াছে তাহার বিব
 রন এই আচোত্তর শত জাতি ও স্বাধীন য
 হিব বলিদান ও তেলীর পাঁচ ও মূর্তার
 পাঁচ বিন পতিশাল ও পুত্রিহন নৈবেদ্য
 আটখান তাহার পুত্রকে নৈবেদ্য তুল
 যান দুই মোল আতন তুল ও তদুৎপুক
 ওপরদা। এই সকল সামগ্রী দিয়া
 গুপ্তমের পুত্র করিয়া গিয়াছে কিন্তু সে
 রা ত্রাত কেহই তাহার অনুস্থান
 নথ্য নাই পর দিনে পুত্রকাল তার
 কষ্টে গুপ্তমের লোকেরা গিয়া দেখিল যে
 সেই নৈবেদ্য ও পাঁচ ও আচোত্তর শত
 জাতি মৃত ও স্বাধীন মৃত ইত্যাদি অ
 দিত্ত আছে। এবং জাতি ও মহি
 ঘের শরীর নাই কেবল বেদির ওপরে মৃত
 মাত্র এবং হাতি না পুত্রিয়া এই সকল
 বৃক্ষ যথিযাতি বলিদান করিয়াছে। এই
 আশ্চর্য্য যে এত বৃক্ষ কর্ম এক রাত্রিতে
 লিপ্ত করিয়াছে ইহা কেহ জানিতে পারে
 নাই। এবং ভাগ্যবান লোক বাড়িতে
 কে এমন পুত্রা দিতে আনা পারে না এবং
 সে ভাগ্যবান ব্যক্তি কি নিমিত্ত অসুখাণ
 কা এমন মহা পুত্রা করিয়াছেন তাহার
 কারণ জানা যায় নাই। কিন্তু এই বি
 ঘয় মোক্ষ পুত্রবলীর দারোগা এইমাত্র স
 জান করিল যে সেই শনিবার অধিক রা
 ত্রির সময়ে এক ব্যক্তি এক মূর্তির দোকান
 হইতে লঙ্ঘন ভালাইয়া লইয়া গিয়াছিল
 আর কিছুকেহ কহিতে পারিল না।

এই সমীচারণ দর্পণ শ্রীমামুন্দের জাপানিয়ারে পুত্রিহন শনিবারে জাপ হয়। বাহার লনাবাশক হয় তিনি শ্রীমামুন্দের জাপ
 খালাতে আপন নাম পাঠাইলে মঙ্গলহে কাণ্ড তাহার লিকটে পাঠান যাইবেক তাহার মূল্য মাসে এক টাকা যিনি স্বাক্ষর করিয়া
 ছেন যদি তাহার লিকটে কাণ্ড না পৌছে তবে তিনি শ্রীমামুন্দের জাপখালাতে সমীচারণ দর্পণ তাহার লিকটে পাঠান যাইবে।

শ্রীযুত এ বি টেদ সাহেব কলিকাতার

সমাচার দপণ ।

কোর্ট আশীনের ও বাইরা কোর্টের চতুর্থ বিচারকর্তা ।

শ্রুত অনবরত এডার্ট গার্ডেন সাহেব মোঃ লোপালের রাআর নিকটে ই-গ্লাডী য়েরদের পক্ষীয় ওকীল ।

শ্রুত ডেমন মার্চবার্ক সাহেব ব কেলমথে ও মার্গারে ও নর্ম্যা নদীর ওভ য় পাংল নবুয়েশ ই-গ্লাডীয়েদের পক্ষীয় ওকীল হইয়াছেন ।

বোম্বই ।

গত শনিবারে মোঃ কলিকাতায় সমাচার আনিয়াছে যে ১ নবেম্বর তারিখে শ্রুত মোঃ মুন্সী এলফ্রিন্ডন সাহেব বোম্বইয়ের বড় সাহেবি কর্মে নিযুক্ত হইয়াছেন এই সাহেব পূর্বে গ্লাডীভি সাহেব ই-গ্লাডীয়েদের পক্ষীয় ওকীল ছিলেন শ্রুত বাজিরাও পোলায়া মহারাজ জুজির মহিত যখন ই-গ্লাডীয়েদের অকোণল হইয়াছিল তখন এই সাহেব লাল প্রকার মায়া দান সন্ধি বিবাহারা মে সনল অদামায়া সমাধাল করিয়া ছিলেন ও ওলেন্দীয়েদের ওপকারপূরক সর্বসমাদেশ করিয়াছিলেন এখন তিনি এই পুন্দেশের বোম্বই শহরের বড় সাহেব হইয়াছেন ।

লুত পুস্তক ।

সম্রুতি মোঃ কলিকাতাতে শ্রুত বাবু রামমোহনরায় পুনর্বার সহযারবিষয়ক বাঙ্গলা ভাষায় এক পুস্তক করিয়াছেন এখন তাহার ইংরাজী হইতেছে সেও শীঘ্র সমাপ্ত হইবেক ।

বসন্ত রোগ ।

গত বৎসর মোঃ সিংহল গীশে বসন্ত রোগিণ্ড হইয়া অনেক লোক পঞ্চ

পুস্ত হইয়াছে তৎপুস্তক সেখানকার বড় সাহেব তৎপুন্দেশের ভারি গুয়ে এক স্থান লিকন করিয়াছেন ও সেই স্থানে এক জন বসন্ত রোগি চিকিৎসক নিযুক্ত করিয়াছেন এবং সর্বত্র জাতি করিয়াছেন যে যখন ঘাটার বাসকের বসন্ত রোগি হইবেক সেই ব্যক্তি আপন বালক লইয়া ঐ স্থানে ঐ নিযুক্ত চিকিৎসকের নিকটে যাইবেক ও সেই ব্যক্তি তাহার চীকা দিবেক ও চিকিৎসা করিবেক এবং চীকা দিলে আট দিনের পর সেই ব্যক্তি সেই স্থানে ঐ চিকিৎসকের নিকটে আপন বালককে আনিবেক ও চিকিৎসক দেখিবেক যে চীকা যেখানেতে কিছু ওপকার হইয়াছে কি না যে ব্যক্তি আপন বালক লইয়া সেখানে না যায় ও যদি তাহার বালকের বসন্ত ভালো না হয় তবে তাহার সাজা হইবেক ।

ওলাঙী ।

মোঃ মুর্শিদাবাদহইতে সমাচার আনিয়াছে যে সে দেশে ওলাঙী রোগের প্রভুত্ব পুনর্বার হইয়াছে ঐ মোকামে সম্প্রতি এক ঘর গৃহস্থ ঐ রোগে মৰণ ওগ্রহ হইয়াছে এবং একদুশেও মর্যো ঐ রোগি হইতেছে ।

দুই বালকের সাহস ।

একদুশে যেমন লোকেরদের বাঘের ভয় ডেমন প্রাণুদেশে ভালকের ভয় মান নীচেক হইল এক বনের নিকটে এক বালক কতক গুলি মেঘ চরাইতেছিল বৈরাৎ এক ভালুক আনিয়া এক মেঘের ওপরে আফসন করিয়াছিল ঐ বালক ভালুককে শক্ত করিয়া ধরিল পরে আর এক ভালুক আনিয়া ঐ কন আর এক মেঘের ওপরে আফসন করিয়াছিল মেঘপালক

বালক একাকী কি হলে দুই ভালুককে ধরি তে পারে ইহাতে অতিশয়ত ইহাব্যাপ্ত অন্য এক মেঘপালিকা বালিকা ঐ বালকের বাস্তু দেখিয়া তাহার সহকারী হইল । পরে ঐ দুই সাহসী বালিকা আর বালক দুই ভালুককে ধরিয়া রাখিল ফলেক পরে অন্য লোকেরা আনিয়া ভালুক মারিয়া মেঘ চকা করিল ও ঐ দুই অনেক সাহস ব্যাখ্যা করিল ।

আশ্চর্য্য ডাকাইত বীরা ।

আমতা পরগনার বাউলো নামে এক গুয়ে এক জন গৃহস্থ লোক বান করে । দুই সপ্তাহ হইল এক দিন অনুমান আড়াই প্রহর রাত্রির সময়ে ঐ গৃহস্থের বাটী ডাকাইত পড়িল । পরে বাটীর পুরুষ পরস্পর পলায়ন করিল কিন্তু ঐ বাটার এক স্ত্রী অনুমান ডাকাইত বয়স্কায় বর্ষা বৎসর তাহার ঘরের দ্বারে যখন তাহা ইতরী আঘাত করিতে লাগিল সে স্ত্রী ওকালে ওলাঙীভর না দেখিয়া আপন এক শত্রু হস্তে পড়িয়া আপন ঘরের দ্বারের এক দালি কপাট খুলিয়া দিল অন্য দালি কপাটের ব্যবধানে আপন রহিল । যখন যে ডাকাইত ঐ ঘরে পুৰণ করে তখন তাহার মস্তক ছোঁন করে এবং ঐ ভিন্ন শরীর ঘরের মধ্যে টানিয়া লয় । এই কন দিন চারি জনকে সম্প্রহার করিয়া আপন বাহির হইল ও ওলাঙীর মত গড় হস্তা হইয়া চতুর্দিক ভ্রমণ করিতে যাঁহাকে সমুখে পায় তাহাকেই আঘাত করিতে লাগিল ।

ঐ বাটীর সমুখে এক আলিয়ার বাটী ছিল সে আলিয়া ঐ সময়ে এক জিলুয় গাঁটা খাইয়া ইচ্ছাকৃত করিতে লাগিল যে কি কণে ডাকাইত বীরা যায় । পরে অনেক বিবেচনা করিয়া আপন ঘরহই

সম্পাদার দর্পণ।

তে ফেলনা আল বাহির করিয়া এক বক্ষের বাহবীন রহিল। যে দুই জন ঘাঁড়ির শাইক সাফাৎ অন্ধকের মত বাটার বাহিরে খেলিতেছিল তাহার যখন খেলিতে পেরেন একত্র হইল তখন এই আলিয়া এককালে এই দুই জনের ওপরে এই ফেলনা আল খেলিল তাহাতে তাহার আলবন্ধ শাঁড়ালের মত লিঙ্কেট হইয়া পড়িল এবং আলিয়া তাহারদের ওপরে আপন শক্তনুসারে লগুত পুহার করিতে ও পৌঁছ করিতে লাগিল। তাহাতে গুম্বীন লোকেরা আইলে কতক তাকাইত আত্যাগী হইয়া বীর পড়িল ও কতক কাটা গেল ও কতক পলাইল।

আকর্ষ্য শিল্প :

ইংলুও দেশে সতর বৎসরবয়স্ক এক বলক আছে তাহার শিল্প কর্মে নৈপুণ্য অতিআকর্ষ্য সে এক নিম্নক গাড়াইয়াছে সে নিম্নক দীর্ঘ সওয়া দুই হাত ও চোকা দেহ হাত আট অঙ্গুল গুণ তাহার ওপরে একটা ছোট কাপড়ের বুটী আছে এবং তাহার নীচে কতক কাঠের পুতলি কা আছে তাহারদের স্বভাব ও এই নিম্নকে এক টাকা খুসিহলে সেই সকল পুতলিকা সম্বন্ধ করিতে আরম্ভ করে তাহাতে দেখা যায় যে এক তাঁতী মাক্ হিয়া ইত্যেতে ও চক্ষুতে তাহা দেখিতেভেদে এবং আর এক স্থানে এক নিম্বাহী এক আত্যাগী খালানির সহিত এক ভাষ্টিয়াখানাতে বসিয়া এক বাটীতে মদ্যি চালিতেভেদে ও খেল করিতেছে। এবং যেকের ওপরে করাখাত করিলে তাহার চাকর আর্পাৎ এক বন্ধ সীলকো আলিয়া ওপস্থিত হয়। ইত্যাদি অনেক শিল্প তাহাতে আছে।

গাঁৱর ওপপ্তি স্থান।

দুই দিন বৎসর হইল শ্রমুত হুস্তর মাহেব গাঁৱর ওপপ্তি স্থান দেখিবার কারণ হিমালয় পর্বতের ওপরে আরোহণ করিয়াছিলেন এই মাহেব পুণ্য দিল্লীহইতে মোং নাহান সিন্ধাতে গমন করিয়া ছিলেন পরে শম্ভুর ও ঘুরল ও হিহর এই পুদেশ দিয়া শতক্ৰ লবীপথ্যত পঁছরি লেন পরে ঘমুনীর তীরে গিয়া ঘমুনীর ওপপ্তি স্থানপথ্যত গেলেন সেখান হইতে হিমালয় পর্বতের ওপরে দুই দিন পূর্ন ভ্রমণ করিয়া সকলহইতে পুসিন্ধ ভাগীরথী নামে যে গাঁৱর বাগা তাহার লিঙ্কেট পঁছরি লেন ও তাহার তীরে গিয়া গাঁৱের পথ্যত গেলেন। তাহার ওপরে আত্যাগী কোশ বন্ধ হিমালয় সেই খানেই পুস্কৃত গাঁৱর ওপপ্তি স্থান সেখান হিমালীপুস্কৃত কেহ ঘাইতেপারে না। এই কদু হিমালয়ের পীঠ পূর্ন আছে সে হিমালয়ের অন্য পূর্নহইতে ওত্র এবং সে মুস্তিকাহইতে দুই কোশের অধিক ওত্র। এই পীঠ পূর্নহইতে চতুর্দিকে বেষ্টিত যে স্থান সে বাটার মত গোলাকার তাহাতে এই পীঠ পূর্নহইতে বহম গনিয়া পড়ে ও সেই জল সেখানহইতে আত্যাগী কোশ গাঁৱের পথ্যত আইনে। অতএব গাঁৱের পথ্যত লোকেরদের গম্য লাগিয়াক্ষত আছে কিন্তু কদু হিমালয় পথ্যত ঘাইতে কাহারো শক্তি হয় না। কদু হিমালয় ও ব্রহ্মপুর্ন ও বিষ্ণুপুর্ন ও ওত্র পুস্কৃত ও মূর্ধ্যাকর্ষ এই পীঠ পূর্নের এই পীঠ নাম। এই হিমালয়ের নানা পুকার ওপকারিণী ও পৃথিবীর মধ্যে অতিপুসিন্ধা মহানদী গাঁৱর ওপপ্তি স্থান এই। সেখান লোকেরা বলে কদু হিমালয় মহা দেবের সিংহাসন। সেখানে এমত

শীত যে এখানকার অতিপুসিন্ধ কালও সেখানে শীতপুস্কৃত লিখান পুস্কৃত কাটা তার। সেখানহইতে এক কোশ অন্ধের মুয়েব পর্বতের পূর্ন দেখা যায় ও তাহার ওপরে কৈলাস পর্বত সেখান পর্বতের বাদশাহের অধীন।

এই সমস্তাহের বাজার ভাণ্ডা আলু তুলা আটার চোকা মোন। বাকচোকা তুলা সতর চোকা জয় আনা মোন।

পট্টনাই তুলা তিন চোকা এণ্ডার আনা মোন।

পাঁজতি তুলা ওত্র দুই চোকা চৌদ্দ আনা মোন।

মধ্যম পাঁজতি তুলা দুই চোকা জয় আনা মোন।

মুণী তুলা ওত্র এক চোকা এণ্ডার আনা মোন।

মুণী তুলা মধ্যম এক চোকা দশ আনা মোন।

বাল্যম তুলা ওত্র এক চোকা তের আনা মোন।

গত সমস্তাহইতে তুলা মূল্য আট আনা অধিক হইয়াছে। তাহার কারণ বাজারে তুলা আমদানী অল্প। কেবল দশবার হাতের মোন বাজারে আছে।

লীন বিকর এই সমস্তাহে অনেক হইয়াছে কিন্তু মূল্য অধিক হয় নাই।

কাপড়ের মূল্য গত সমস্তাহইতে এই সমস্তাহে খুলাতিরক হয় নাই।

পাঁজতি ও মুণী তুলা গত সমস্তাহ হইতে এই সমস্তাহে কিছু অল্প মূল্য হইয়াছে।

চিলীর মূল্য কিছু খুলাতিরক হইয়াছে কি

সমাচার দর্পণ।

ক আদ্যবেরা অনেক তিনি কয় করিতেছে।
রেশমের মূল্য অধিক হইয়াছে তাহা
চিহ্নিত করিয়া দিয়াছে।
সেতার মূল্য সমান আছে।

লক্ষ্য।

যেমন এই দেশে বিদ্যার চলন হইতে
ছে তেমনি ভারতবর্ষের অন্য স্থানেও
হইতেছে। আমরা সমাচার পাইয়া
ছি যে মোকাম সিংহল দ্বীপে তদ্রূপীয়ের
দের নানা পুকার বিদ্যা শিক্ষার্থে সেখানে
এক বিদ্যালয় নিৰ্ম্মণ হইবেক।

দানাপুর।

মোঃ দানাপুর পুরে এলাষ্টা রোগের
তরক পুর্নবার হইয়াছিল কিন্তু এখন তা
হার অনেক শক্তি হইয়াছে এবং সেখা
নে অনেক গোরা নিয়মিত অনুষ্ঠান হইয়া
ছিল তাহারও মন হইয়াছে সেখানে
শস্যাদি দুর্ঘটনা পুষ্কর লোকেরদের কিছু
কষ্ট হইয়াছিল এখন শস্যাদি হওয়াতে
সে সমস্তও নাই। তথাকার সকল পুত্রারা
কহে যে যে বৎসর তদ্বিধাতে ইহাও
দুর্ভিক্ষের ভয়গ্রস্ত নাই।

মুন্সি।

মোঃ বায়ুই শরৎহইতে যুদ্ধের কারণ
সত্তর আশাত প্রভৃত হইয়া নৈন্য লইয়া
গিয়াছে কেই আশাত মাত হাজার
নৈন্য গিয়াছে। কিন্তু কোন স্থানে যাই
তেছে তাহার কিছু তুলনাজান পাওয়া
যায় নাই কেহ অনুমান করে যে তত
দেশীয় বোম্বাট্টারদের শাসন করিতে

গিয়াছে তাহাও বড় দ্বিধা পায় না
যেহেতুক কেবল বোম্বাট্টারদের দমন
এবং নৈন্য যাইবার বিঘ্ন নহে হইতে
পারে যে অন্য কর্মাদেশও আছে।

পুন্সেতু।

ইংলণ্ডে ও জুয়াইতে একটা দুর্ঘটক
ঘটিয়া গিয়াছে। যদি হিন্দুস্থানে দুর্ঘটক
দর্শন হইত তবে এদেশীয় লোক
দুর্ভিক্ষাদির ভয় করিত।

বঙ্গলুর শহর।

কর্ণটিকদেশের লিহটবর্ড মহাসুত্রার
আর অষ্ট গতি বঙ্গলুর শহরে যে টাকা
চলিতেছে সে টাকা কম ওখানি তথাকার
র লোকেরা অনন্ত চালাইবার নিমিত্ত
এত যে টাকা করিয়াছিল যে এক ওচর
পালানে দশ হাজার যে টাকা পাওয়া
গিয়াছে।

আম্বার্য চিহ্নিত।

লোক বহু যে ভূদানপুরগাঁওর নদিয়া
নামে গুণ্ডামর এক ব্রাহ্মণের পুত্রী স্বপ্ন
র এইরূপ পুত্রাদেশ হইয়াছে যে তাহাতে
যে রোগী তাহার নিকটে মৃত হইবার
কারণ যায় তাহারে সে হিন্দুই শ্রুত
ইয়া ও হরিবোল বলিয়া রোগমুক্ত করি
তেছে এই শব্দ মর্মে পুকার হওয়াতে
নানা দেশীয় মহারোগী কয় রোগী কাশ
শ্বাস শূল প্রভৃতি রোগবিশিষ্ট লোক ও
বন্ধা মৃতবন্দাদি কিশি পীড়িত হাজার না
না বিই লোক প্রুত দিন পাঁচ মাত দিনের
পথহইতে তাহার নিকটে যাইতেছে।

পুত্রাহ পুত্রীকালে এক রোগের শতা
বহি লোক এক মিলিল হইয়া এক স্থানে
বসে এইরূপ তিন তারি রোগের তিন তা
রি মিলিল হইয়া বসিল এই ব্রাহ্মণ পুত্র
স্থান করিয়া এক মিলিলের মধ্যে আনি
য়া পুত্রাক মিলিল হরি বোল শব্দ ওচর
করে করিলে সকল লোক কহে হরি বোল
শব্দ করে এই রূপ দুই পুত্রাদেশ হইলে
পরে তা না স্থান সমস্ত যায় কিন্তু
এই রূপ চিহ্নিত করিয়া অনেকের আন
ক রোগী মৃত করিয়াছে সে ব্রাহ্মণ কাহা
রো স্থানে কিছু বুঝা করে না বলা
তাহার পৈতৃক তিনখানি পুত্রান গৃহ
জিল তাহাও এই রোগী লোকের জনতা
পুষ্কর ওচর হইয়াছে এখন সে ব্রাহ্মণ
আপন পরিজনের সহিত এই গুণ্ডামর এর
অন ভাগ্যবান লোকের বাড়ীতে রহি
য়াছে সেখানেও এই রূপ জনতা হইতেছে
সে ব্রাহ্মণ যদি কাহারা স্থানে কিছু লই
ত তবে অনেক লইতে পারিত।

এক জন অন্যান্য বিমুক্ত ও বহির জিল
তাহার কণে ওচর হরিবোল বলা
শ্রুত হইলে এই রূপ কণে শ্রুত
তে পাঁচ মাত বার হরিবোল বলিয়া
মুন্সি হরিবোল বলিল এই রূপ অনেক
করে অনেক ব্যক্তি ভাল হইয়াছে।
ইতাদি অনেক কথা অনেক লোকের
দের পুণ্যমূল্য শ্রুত যাইতেছে।

এই পুকার জনের শ্রুতান্তে জান হয়
যে এই ব্রাহ্মণ অন্য কোন চিহ্নিত মর্মে ও
পায় পাইয়া থাকিবেক নতুবা বিনা ওচর
কেবল নামের ওচর রোগী মুক্ত হয় ইহা
বুদ্ধিতে আইসে না।

এই সমাচার দর্পণ পুণ্ডামপুরে ছাপাখানাতে পুত্রী সম্বন্ধে শনিবার ছাপা হয়। যাহার লগনের আবশ্যক হরি তিনি পুণ্ডামপুরের ছাপাখানাতে
আপন নাম পাঠাইলে সম্বন্ধে কানন তাহার নিকটে পাঠান যাইবেক তাহার মূল্য মানে এক টাকা যিনি ছাপক করিয়াছেন যদি তাহার নিকটে
কানন নাহিহে তবে তিনি পুণ্ডামপুরের ছাপাখানাতে সমাচার দিবামাত্র তাহার নিকটে পাঠান যাইবেক।

সমাচার দর্পণ

৮২ সংখ্যা।

শনিবার।

৪১ হিসেবের মূল ৪৮৬৯। ২৭ অগুহায়ন মূল ৪১১০।

দর্পণে মুখ বৌদর্শ্যাদির কার্যবিবরণ্যঃ।

দ্রষ্টব্যঃ নিম্নে আনন্ত সমাচারদ্য দর্পণে ॥

কোল্লানির কাণ্ডঃ।

কোল্লানির শতকরা জয় টাকার সুবের
কণ্ডাজ কয় করিতে হইলে শতকরা দুই
টাকা ভিকসৌ। বিক্রয় করিতে হই
লে শতকরা দুই টাকা জয় আনা ভিক
কৌণ্ড।

সম্ভাঃ হর গণ্ডিকা।

| | | | | |
|----|---------|-------------|----|----------|
| ১১ | বিঃস্বত | শনিবার | ২৭ | অগুহায়ন |
| ১২ | এ | রবিবার | ১৮ | এ |
| ১৩ | এ | সোমবার | ১৯ | এ |
| ১৪ | এ | মঙ্গলবার | ২০ | শুক্রবার |
| ১৫ | এ | বুধবার | ১ | শনিবার |
| ১৬ | এ | বৃহস্পতিবার | ২ | এ |
| ১৭ | এ | শুক্রবার | ৩ | এ |

শতহার দেওয়া হইতেছে।

বর্মিয় শকুম সাংহাল বেঁড় গরি
মিট নমক ও আখীম পুখম দ্বাঃ মন
৪৮৬৯ মাল ইংরেজী ৩১ হিসেবের মতা
বক মন ৪১২৩ মাল বাঙ্গালী ৪৭ শৌম
রোজ শুক্রবার এগার গতি দিবসের সময়ে
মোকাম কলিকাতার একশেষ বয়ে
খণ্ডত কোল্লানি ইংরেজ বাহাদুরের
মন ৪৮৬৯ মালের আখীম নাটের তণ
মৌল মাখিক বিক্রয় হইবেক।

তপসীল।

| | |
|----------|---------|
| আমদা | সিন্দুক |
| বেহারের | ৪৩৭৪ |
| বাগানসের | ৩৩৬ |
| | ২০০১ |

মকত নিলাম। ২ দ্বাঃ আখীম মজকুর
মুজলম সিন্দুকে বিক্রয় হইবেক আর পু
তোক লট পাঁচ সিন্দুকের হইবেক আর
দারান নিলামের সময় এক টাকা বায়না
দস্তবদস্ত বিবেক তার পাঁচ দিবসের মধ্যে
পুতিলাটের কিম্বাদের আদার হি শত দশ
টাকা নগদ কিনা কোল্লানির কাণ্ডাজ আ
মানত দাখিল করিবেক ইহাতে যে কেহ
দাখিল না করে তাহার দোষের আরিমা
লট পুনার বিক্রয় করা যাইবেক তাহাতে
নোকমান ও ঋণতা যে হবেক তাহা
আরিদারনকে লাগিবেক কেয়াইত যে
হইবেক সে সরকারের হইবেক।

ও দ্বাঃ আখীমের কিম্বাদের বেবাক
টাকা নিলামের তারিখ হইতে দুই মাহার
মধ্যে দাখিল করিয়া আখীম আলাস ক
রিবেক যে কেহ ইংহা তাল খা করে তবে
ঐ বায়না হি শত দশ টাকা ও বায়না মজ
কুর সরকারের জব্ব হইবেক এবং ঐ আখীম
পুনার নগদ টাকায় বিক্রয়ের ইস্তাহার
দেওয়া যাইবেক তাহার বিক্রয়ে যে নোক
মান ও ঋণতা হইবেক তাহাও পুখম আর
দারানকে লাগিবেক কেয়াইত যে হয় সে
সরকারের হইবেক।

৪ দ্বাঃ সকলকে পুত্ব রূপ আনান যাই
তেছে আখীমি মেহুআরী নগদ ৩৭
রের নিমিত্ত ভিন্ন আর আখীম বিক্রয় হ
ইবে না ঐ মেহুআরী মাসে মন ৪৮৬৮।
৪৯ মালের বীজী আখীম আদার ১০০১
সিন্দুক নিলামে বেরা যাইবেক।

সমাচার দর্পণ।

ব্রহ্মা দেশ।

ব্রহ্মা দেশের সমাচার পণ্ডিত গোলা যে
মে দেশের রাজা ও জুলাই তারিখে লো
কান্তরগত হইয়াছেন। তাহার মরকের
পূর্ব তৎপরাভিলাষি তাহার জাতিরা এ
মন পরামর্শ দি়র করিয়াছিল যে ঐ রাজা
কে ও তাহার ওতাবিকারিকে বাকদের
অগ্নির দ্বারা ওতাইয়া দেয়। এই নিমিত্ত
তাহারা সকল আয়োজন করিয়াছিল
কিন্তু ঈশ্বরের দ্বাংহাতে সে দিন এমন মহা
বৃষ্টি হইল যে তাহারদের মে মকল ও
যোগ্য বিফল হইল। তাহার তিন দিন
পরে ঐ রাজা রোগেতে লোকান্তরগত
হইলেন এবং তাহার পৌত্র সে দিন
হানলে বদিয়া রাজ্যভিধিক হইলেন
ও আশিন নিভায়মের ও আশনার পুণ
হননোয়াত বিপ্রেমের দিক জলে ডুবায়া
মারিলেন যেহেতুক সে দেশে রাজারদের
এমত ব্যবস্থা আছে যে রাজবংশীয় লো
কের দিককে আশ্বাদিহারা বধ করা অনু
পযুক্ত।

ঐ নুতন রাজা যে আশিন জাতিবর্গের
দিককে নিপাত করিয়াছে ঐই কর্ম প্রাণ
মনীয় বত নহে কিন্তু এক পুকারে বত
অশ্রুণ-মনীয়ও নহে যেহেতুক যদ্যপি
ঐ জাতিবর্গেরা অীবদর্শায় থাকিত তবে
অবশ্যই ইহারদের পরব্রর নিত্য যুদ্ধ হই
ত তবে ইহা হইতেও অবিক লোক মারা
পড়িত।

সমাচার দর্পণ ।

যে ব্যক্তি এখন নিঃসামান্যবিকারী হইয়াছেন ইনি প্রাণীকোষের পুতি সদয় হইয়া তাহারদের অনেক ওপকার চেষ্টা করিতেছেন । ইমৃত রাজা আশান ময়নের পুত্র রত্ন শহরের লোকেরদের দ্বানে পঞ্চাশ হাজার টাকা লইবার কার্য আঁকা করিয়াছিলেন তাহারও সে টাকা মোঃ অমরপুরে আনিতেছিল ইত্যবসরে ঐ রাজা মরিলেন এবং নতুন রাজা ঐ টাকার সমাচার শুনিয়া সে টাকা ফিরাইয়া দিলেন এবং ঘাটারদের স্থানহইতে সেই টাকালগ্না গিয়াছিল সেই শেখের বিগিকে তাহা পুর্ন্বার দেওয়াইলেন । ঐ নতুন রাজা আশান রাজ্যের রাজস্বের ওপরে শতকরা পঁচিশ টাকা লান লইতেছেন ।

ময়ন ।

৩ হিসেসর ভারিমে গাঁসার ওপরি পের লিকটে কর সাহেব ময়রাজেন তি নি মোঃ বলিকাডায় ময়রদেওয়ালী অদালতের এক বিচারকর্তা ছিলেন ইনি অন্য লোক অপেক্ষায় একদোশী লোকেরদের রীতি বহু ভাল জানিতেন যখন নগরপুরের রাজা রঘুজী ভোমলার দ্বানে লেফানি বহাদুর জিলা কটক পাইলেন তখন ঐ কর সাহেবকে কোর্টসিবিহা দুর মেমালকার সকল বিষয়ের মোক্তিয়ার করিয়া পাঠাইয়াছিলেন । পরে ইনি ময়রদেওয়ালী অদালতের কর্ম পাইয়াছিল তখন তাহার কতক বৎসর পরে জিলা কটকেতে জাবদুত্ত্ব কতক দুই সৈন্য লুট দৌরাডা করিলে তাহারদের ধমান করা গেল তথাপি মেমাল অনেক অনামজনা ছিল তাহাতে শূণ্যস্থিত ঐ জিলা কটকের মহা সমাবেশ করিবার কাণ এই সাহেবকে তৎপরের সমুদায়

কতক দিয়া পাঠাইয়াছিলেন ইনি তৎপরে শেখ সম্মতমরৎপাথ খাফিয়া তথাকার সকল বন্দোবস্ত স্থির করিয়া মেমালকার পুত্রদিগকে স্থির করিয়া বলিকাডায় আনিতেছিলেন পথে লোকাভ্রুগাঁও হইয়াছেন ।

চুর ।

মোঃ বলিকাডা বাগিআরের রাবায় এক মিছেখুরী পুমিছা পুতিমা আছেন তাহার লিকটে অনেক ভাগ্যবান লোক রা পুত্রা দেন এবং ব্রাহ্মন পতিদের প্রতিদিন বিশ ত্রিশ জন চমোপাও শুব কবচাদি পাঠ করেন এবং বিন্ধান লোকেরা কর্তা করাদি ঘটিতে অনেক অলঙ্কার তাহাকে দিয়াছেন এবং তাহার লিকটে অনেক লোক মানিত পুত্রা বলিমানি অনেক করেন ।

মস্ত্রি গীত মস্ত্রাহে জোয়াদু ব্রাহ্মিঃ অলুমান জয় হও রাশ্র সময়ে এক চোর তাহার ঘরের আলালা ভাঙ্গিয়া অলুমান পাঁচ মাত হাজার টাকার তাহার স্বর্ণালঙ্কার চুরি করিয়াছে । পরে থানায় থবর হইলে বরকদাতেরা অলুমান করিতে এই বেশ্যার ঘরে সেই অলঙ্কারের কতক পাইল এবং সে বেশ্যাকে তথালি করব করিল ঐ বেশ্যার পুত্রমাও শুনা গেল যে একব্যক্তি কথাকার আতি চুরি করিয়াছে ঐ বেশ্যালয়ে তাহার গমনাগমন আছে কিন্তু সে কাম্যার পলাইয়াছে সে থিরা পক লাই ।

আশ্চর্য্য অধি ।

ইংলণ্ড দেশে কতক লোক শীতকালে এক দিন রৌদ্রে বসিয়া আহার করিতে ছিল তাহারদের সমুদয়ে মেজ ছিল সে

মেজের ওপরে আহারীয় দুখ ও গোলমে মদিয়াও ছিল মকল ভোজন করিতে অকস্মাৎ দুয়ের গন্ধ পাইয়া অনুবরণ করিতে লাগিল পরে মজ্জান করিয়া আনিল যে মেজের বনাতে অগ্নি কিছু কোথা হইতে মেজের বনাতে অগ্নি লাগিল ইহা অলুমান করিতে আলা গেল যে সুদূরে রশ্মি ঐ মদিয়ার গোলমে লাগিয়া অগ্নি হইয়া বনাতে লাগিয়াছে । পরে সবলে কোঁতুর করিয়া ঐ অগ্নিতে চুরট থিরাইয়া খাইতে লাগিল ।

কুবুরের আন ।

ইংলণ্ড দেশে এক জাহাজের এক দিন মূলদে এক নদীতে গেল তাহার কুবুর তাহার মনে নদীর তীরপর্যন্ত গেল । সাহেব নদীর মাঝে অবগাহন করিয়া আদু বস্ত্র ত্যাগ করিয়া শুক্ক বস্ত্র পরাইল তুকে ঘরে আইল কিন্তু বিস্ময়ময় আশনার আদু বস্ত্র আনিল না । ঘরে আনিয়া তলেকফান পরে মলে হইয়া ঐ কুবুরের প্রতি ফরিপুরু করিল যে আমার কান্ড কোথায় আনিল নাই । এই কথা কহিবামাত্র ঐ কুবুর সাহেবের এক চাকরের কান্ড কামড়াইয়া তাহাকে গির দাসে নদীর তীরে দৌড়িয়া গেল সেখানি চিয়া বালির মাঝে পোতা কান্ড ওঠাইয়া সাহেবের চাকরকে দিল । ইহা তে বুঝা যায় যখন বিস্ময়ময় সাহেব বস্ত্র খেলিয়া আসিয়াছিল । ঐ কুবুর তথালি চৌরডয়ে মজিকার মাঝে বস্ত্র পুড়িয়া রাখিয়া আসিয়াছিল ।

অন্য এক সাহেব স্বাকার করিবার করণ আপন মিস্ত্রের লিকটে এক কুবুর চাইয়া আনিয়াছিল । সে সাহেব ঐ কুবুরদ্বারা অনেক স্বাকার করিল পরে ঐ কুবুর পায়ে বধঁক কিছু হওয়াতে

সম্রাটের দর্পণ।

ক্ষত হইল। তাহাতে ঐ সাহেব দিবে
পূনা করিল যে ইহার পংখের ক্ষত ভাল
না করিয়া আমায় মিস্ত্রের নিকটে পাঠান
হুত্ব্য নহে। অতঃপর কবিঃসভার
তাহাকে সুন্দর করিয়া আপন মিস্ত্রের নিক
টে তাহাকে পাঠাইয়া দিল। কতক
দিন পরে আর এক কুস্তুরের পায়ে ঐ বন
ক্ষত হইয়াছে তাহাকে সঙ্গে করিয়া ঐ
পুখ্য কুস্তুর ঐ কারখানার নিকটে তাইল
ও দ্বিতীয় কুস্তুরের পায়ে যে ক্ষত হইয়াছে
তাহা মুখাদির ভক্ষিত্রমে ঐ কবিঃসভাকে
জানাইল। কবিঃসভা তখন বুদ্ধিমান দ্বিতীয়
কুস্তুরের পায়ে ক্ষত দেখিল এবং যেমন
পুখ্য কুস্তুরের ক্ষত ভালো নহিয়াছিল সে
মত দ্বিতীয় কুস্তুরের পায়েও ক্ষত ওণ
ধিদিহারা ভালো করিল।

নাট্য।

গত মঙ্গলবার ৭ দিসেম্বর রাত্রিতে
যেহ কলিকাতার টোলহাউসে অর্থাৎ
সাইরন ঘরে বসে নাট্য ও থালা ইয়ায়াজিল
তাহার বিবরণ। শ্রীশ্রীযুতের স্রীপাঁচ
মান হইল ইংলণ্ডহইতে কলিকাতা মহা
রাজধানীতে আসিয়াছেন তৎপুত্র কলি
কাত্য তাহাব ভাগিবাণ ইংলণ্ডীয় মা
হেব লোকেরা তাহার মজুমার্দে আনিয়া
বন যায় করিয়া সাইরন ঘরে থালা ও
নাট্য করিয়াছিলেন। ঐ তারিখ নয় ঘণ্টা
রাত্রির সময় শ্রীযুত ও তাঁহারপত্নী সেই
স্থানে গেলেন ও তৃতীয়পুত্রের রাত্রি প
র্যন্ত সে স্থানে থাকিয়া সকলের সহিতে
আমোদ পুয়োদ অনেক করিলেন এবং
পাঁচ জয় শত সাহেব ও বিবি সেখানে এ
কত হইয়া অনেক আমোদ করিলেন।

শ্রীযুত মোদুবল সাহেব।
সুপ্রিয় কৌমল্যের অন্তঃপাতি শ্রীযুত মো

দুবল সাহেব সুপ্রিয় কৌমল্যের কর্ম
জিলেন তিনি সে কর্ম ১৮ দিসেম্বর তারি
খে তাঁনি করিবেন তাহা করিল এই যে
ঐ কর্ম তাহার পাঁচ বৎসর গত হইয়াছে
সুপ্রিয় কৌমল্য যে তিনি সাহেব শ্রীশ্রীযু
তের সহিত একত্রায়শ হইয়া তাহা
দেশের তাহা কর্ম চালাইল সে তিনি মা
হেব ঐ কর্মে পাঁচ বৎসরের অধিক থাকি
তে পারেন না কিন্তু শ্রীশ্রীযুতের বিষয় এই
কন আইন নাই কেহই জয় বৎসর থা
কেন কেহই মাত বৎসরও থাকেন।

নূতন কালেক্টর।

কলিকাতার পশ্চিমে গঙ্গার কোণ
নির বাগানের ওতরে ইংলণ্ডীয়দের পু
রান ধর্মাবলম্বী শ্রীযুত লর্ডবিশন সাহেব
এদেশীয় লোকেরদের বিদ্যাশিক্ষার কা
রন এক মহাবিদ্যালয় করিতে দিহ করিয়া
ছেন তাহার টোকা ও সাহায্যী সম্বন্ধে
হইতেছে। কোল্লানির বাগানের ওতরে
আলুমান পঞ্চাশ ঘাটি বিঘা ভূমি শ্রীশ্রীযুত
তাহার নিমিত্ত দিয়াছেন সেখানে মণ
পুতি বস এক ঘর পুস্তক হইবেক।

নূতন নোকা।

ইংলণ্ডে নূতন এক নোকা সৃষ্টি হই
য়াছে সে নোকাতে অতিপুতল তুলনেও
লোক যারা পড়ে না যেহেতুক সে নোকা
পালি ও মান্দুল সাময়ে ওলটাইয়া পড়ি
লেও পুস্তক আর তুলন পুস্তক মত হয় এবং
তাহাতে জন পূর্ণ হইলেও আটার জন
লোক অন্যায়নে ধাঁড়িতে গাঁবে অতঃপর
এই নোকা হওয়াতে অনেক লোক রক্ষা
হইতেছে।

লোনা বৃষ্টি।

তারি পাঁচ মান হইল ইংলণ্ডে এক দিন

বৃষ্টি হইয়াছিল সে বৃষ্টির জল সমুদ্রে
আলর মত লোনা আনুভব হইল। বৃষ্টি
হইলে কিছু কাল পরে যেখানে গেল যে গা
জের পাশের ওপরে ঐ বৃষ্টির জল পড়িয়া
ছিল তাহাতে লবণ কলার হইয়াছে। ইহা
র কারণ কেহই কিছু অনুমান করিতে
পারিল না।

টেঙ্ক।

ইংলণ্ডহইতে সম্রাটের আনিয়াছে যে
ইংলণ্ডীয় বাদ সাহেবের জরুরি ও তামাক
ও কাণ্ডা ও নারিকেল ও মরিচ ও নর্মম
এই জিনিষ বাদুদ দুই কোটি তরিশ
লক্ষ টাকা নূতন টেঙ্ক ইংলণ্ডীয় লোকের
ওতরে দিহ করিয়াছেন।

এই সম্রাট অধিক সম্রাটের নাই ম
ম্রাটের না আইলে কামরা কোথাহইতে
সম্রাটের দিহ তরিশতি আয়ারা অন্য
কিছু আকার্য সম্রাটের দি।

আপান দেশে ধর্মাবলম্বী।

চীন দেশের নিকটস্থ আফান নামে এক
মহাদেশ আছে তদদেশীয়েরা কতক
বৌদ্ধমতাবলম্বী কিন্তু সে দেশে ঐশ্বর্যারা
বিনা আশ্চর্য। তাহারদের মধ্যে এক
জন পুতান অধিক আছে যেমন ঐহিক
বিষয়ে বাদ সাহেবের পরাক্ষ যেমন ঐ
অধিকার পারিত্রিক বিষয়ে সেখানে পরা
ক্ষম আছে। ঐ অধিকারের জ্ঞান পর
জন ব্যক্তিরকে তাহার দর্শন অন্য কেহ
কিতে পারেন না। সম্রাটের মধ্যে এক
দিন লিখনিত আছে সেই দিনে ঐ অধিক
এক ঘরের বারপায়ে আনন ইষ্টানপুর্ক
গায়নাগায়ন করে তাহার নোচেহইতে
লোকেরা কেবল তাহার পা দর্শন করিতে
পারে সে ব্যক্তি কেবল রেশমের বস্ত্র
পরিধান করে সে বস্ত্র নূত কাটা অ

সমাচার দর্পণ।

বহিঃশেষ বৃন্দ-বর্ষাৎ অবিসাধিতা স্ত্রীর
হাতে নিধন হয়। সে নিত্য নৃতন পাণ্ডে
ভোজন করে ভোজন করিলে তথানি সে
পাণ্ডে ভাগিয়া যেনে যেহেতুক সে পাণ্ডে
অন্য ভোজন করিতে বাবদ্য নাই।
সেখানকার লোকেরদের এমত দুই
জান আছে যে সে পাণ্ডে যে ভোজন ক
রে সে তথানি মরে সে অত্যাশ্চর্য্যখনও
মৃত্যুকী জোয় না যদি কোথাও ঘাইতে হয়
ওরে আশন চাকরেরদের ক্ষেত্রে ওপরে
আরোহণ করিয়া যায়। তাহার ক্ষেত্রে
কর্ম ও নথ্য ত্রুটি কর্ম তাহার নিদ্রা
শায় হয় অন্য সময়ে শুক্ল নাই। সে
দিবরাস্ত্র এক মুকুট মাথায় দিয়া শিশু
মনে বসিয়া থাকে লোকেরা জান করে যে
সে শিরশাঙ্কিলে দ্বাভা শিরশাঙ্কিলে সে অধির
হইলে রাভা অধির হয় এবং দিনের মা
ঝে সে যে দিকে লুকে সে দিকে মৃত্যুকী
দি হয় লোকেরা এমত জান করে সে
রাভা স্ত্রী-বর্ষাৎ বিবাহ করিতে পারে সে
যাকি পুত্রদিন নৃতন কাণ্ড পরিবীল
করে তাহার ভাত কাণ্ডে তাহার চাকরে
রদের কোন ওপকার নাই যেহেতুক তা
হার জান করে যে এই কাণ্ড অমরা
পরিবীল করিলে মদো আমারদের মহা
ঘাতি হইবেক। এবং তাহার যে বার
অন পুত্রান চাকর আছে তাহারদের
এইক বক্তব্য সঙ্কম আছে।

হংগলি।

বাকিলার মধ্য অতিশুভিল শহর
হংগলি সে কলিকাতা হইতে ওত্তর ওত্তর
কোণে যখন দিল্লীর বাদশাহের অভিষার

পরাক্রম ছিল তখন হংগলি বহু পুন্নিহ
শহর ছিল যেহেতুক বাকিলার দেশের
তাবৎ বাকিলার বহু হংগলিতে আশ
দানী রক্তানী হইত এবং পূর্বে ইংলণ্ডীয়
এ হংগলি ও হংগলি ও পোতুগীশেরদের
পুণ্য কুর্গী সেখানে হইয়াছিল। পরে ইং
লণ্ডীয় পুন্নিহদের পুণ্য কুর্গী হইল। দুই শত বর্ষ
হইল ইংলণ্ডীয়েরদের বাকিলার কুর্গী
সেখানে ছিল সে সময়েতে হংগলির মত
তমিকটবর্তি মাদগাস্কার এইকন ঐশ্বর্য্য
লী শহর ছিল এখন সে সকল ঐশ্বর্য্য
লুপ্ত হইয়া কেবল কাণ্ডি লোকেরদের
বাড়া তাহার নাম শুনা যায়। এক শত
ওনআশী বৎসর হইল ইংলণ্ডীয়েরা সে
খান পুণ্য বাকিলার কুর্গী করিয়াছিলেন
কিন্তু তাহার পুর্বে আট বৎসর ইংলণ্ড
পায়েরদের মনে এতদ্দেশীয়েরদের বিরোধ
হইয়াছিল সে সময়ে ঐ হংগলি শহর
পোতুগীশেরদের অধীন ছিল। পরে
পোতুগীশেরদের প্রতি দিল্লীর বাদশাহ
কুণ্ডিত হইয়া তাহারদের দমনার্থে আন
ক সৈন্য হংগলিতে পাঠাইলেন। বাদশাহ
হের সৈন্যেরা নাফে তিন মাস হংগলি
শহর ঘেরিয়া রহিল। তাহাতে পোতু
গীশেরা বাদশাহের লোকের লিখেট নমু
হইয়া বাদশাহী খাজানা দিতে লোকের
করিল। তথানি বাদশাহী সৈন্য তাহা না
মানিয়া হংগলি শহর লুট করিল এ সে
খানে যত পোতুগীশেরদিকে পাইল
তাহারদিকে মূল করিল। সে কালে
সেখানে পোতুগীশেরদের চৌমুখি বহু
আহাও এ মাদাম ক্ষুদ্র আহাও এ দুই

শত শুল্লুজিল তাহার মধ্য এক ক্ষুদ্র
আহাও এ দুইটা শুল্লু পলায়ন করিল
অবশিষ্ট সুরল নথ্য হইল তাহার মধ্য
সকল হইতে বহু যে আহাও তাহাতে দুই
হাজার লোক ছিল সে আহাও লো
কেরা মনে ভাবিল যে এই আহাও বিন
ক্ষেত্রে হাতে পড়িলে সে ক্ষিটু নয়।
অতএব তাহার আহাও অগ্নি দিয়া আ
হাও মূল আশনারা পুড়িয়া মরিল। সে
খানে লোকের মাকো ছিল সে মাকো
সেই তপ্তিহারা পুড়িয়া গেল এই গোল
মানে ঐ ক্ষুদ্র এক আহাও এ দুই শুল্লু
পলাইল।

এক শত ত্রিশ বৎসর হইল ইং
লণ্ডীয় এক জন মিডাহী বাস্তার নবাবের
লোকের সহিত বিবাহ করিয়াছিল তাহা
তে নবাবের লোক বহুত মৈল আনিয়া
ইংলণ্ডীয় মিডাহীরদের সহিত যুদ্ধ করি
ল সে যুদ্ধে ইংলণ্ডীয় মিডাহীর অগ্নি
হইল নবাবী ঘাতি অন মিডাহী মারা
পড়িল। এতদ্দেশীয় লোকেরদের সহিত
ইংলণ্ডীয়েরদের যুদ্ধের পুণ্যকুর্গী সেই
হইল। পরে ইংলণ্ডীয়েরা হংগলির নীচে
আশনারদের আহাও আনিয়া ভোপদরা
হংগলি শহরের ঐচ শত ঘর ভালাইলেন
এ ইংলণ্ডীয়েরা হংগলি নবাবের সহিত
মিলিলেন তাহাতে দিল্লীর বাদশাহের
মনে ইংলণ্ডীয়েরদের শত্রুতা দুই হইল
কিন্তু ইংলণ্ডীয়েরা বুদ্ধিলেন যে এই অতি
কঠিন স্থান এখানে থাকা কর্তব্য নহে অ
তএব সেখান হইতে গুয়াডো কলি
কাতাতে কুর্গী করিলেন।

এই সমাচার বর্ণন শ্রীমঙ্গলপুরে ছাপাখানাতে পুত্রিনজাৎ নবাবের ছাপা হয়। বাবার লজনের আবশ্যক হয় তিনি শ্রীমঙ্গলপুরে ছাপাখানাতে
আশন নাম পাঠাইলেন সত্তাহেৎ কাশম তাহার নিকটে পাঠান যাইবেক তাহার মন্য মানে এক টাকা যিনি ছাপা করিয়াছেন যদি তাহার নিকট
কাশম না পড়ে তবে তিনি শ্রীমঙ্গলপুরে ছাপাখানাতে সমাচার দিবামাত্র তাহার নিকটে পাঠান যাইবেক।

সমাচার দর্পণ

৮৩ নংখ্যা।

শনিবার।

৪০ দিনের মূল ৪৮ ৱান। ৪ পৌষ মাস ১২৬১

দর্পণে মূল নৌদর্পণের কার্যবিবরণ।

বৃহত্তর নিম্ন কানন সমাচার দর্পণে ॥

কোম্পানির কার্য।

কোম্পানির শতকরা জয় টাকার মূলের
কাগজ কয় করিতে হইলে শতকরা দুই
টাকা তিনকোষ। বিক্রয় করিতে হই
লে শতকরা দুই টাকা জয় আনা তিন
কোষ।

সমস্তের পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|-------|-------------|----|-----|
| ১০ | বিশেষ | শনিবার | ৪ | পৌষ |
| ১১ | ৩ | রবিবার | ৫ | ৩ |
| ১২ | ৩ | সোমবার | ৬ | ৩ |
| ১৩ | ৩ | মঙ্গলবার | ৭ | ৩ |
| ১৪ | ৩ | বুধবার | ৮ | ৩ |
| ১৫ | ৩ | বৃহস্পতিবার | ৯ | ৩ |
| ১৬ | ৩ | শনিবার | ১০ | ৩ |

ইস্তাহার দেওয়া যাইতেছে।

বমজিম অকুম সাহেবান বোর্ড পরি
মিট নমক ও আখীম পুখম দফা মন
৪৮১৯ সাল ইংরেজী ৩১ দিনের মতা
বক মন ১২২৩ সাল বাঙ্গালী ৪৭ পৌষ
রোজ শুকবার এগার ঘণ্টা দিবসের সময়ে
মোক্তাম কলিকাতার এককোণ্ডি কয়ে
অণ্ডুত কোম্পানি ইংরেজ বাহাদুরের
মন ৪৮১৯ সালের আখীম নাটের ডা
নীল যাহিক বিক্রয় হইবেক।

তপসীল।

| | |
|----------|---------|
| আমদানী | সিম্পুক |
| বেহারের | ৪৬৭১ |
| বারানমের | ৩৩৬ |
| | ০০২ |

সকল নিলাম। ২ দফা আখীম মজকুর
মুজলুম সিম্পুক বিক্রয় হইবেক আর পু
ডোক লাট নাট সিম্পুক হইবেক আর
দারান নিলামের সময় এক টাকা বায়না
দস্তবদস্ত বিবেক আর নাট দিবসের মধ্যে
পুতিলাটের কিম্বাতের অন্তরে যি শত দশ
টাকা নগদ কিনা কোম্পানির কাগজ আ
মানত দাখিল করিবেক ইহাতে যে কেহ
দাখিল না করে তাহার দিগের মরিদা
লাট পুনার বিক্রয় করা যাইবেক তাহাতে
নৌকমান ও মরচা যে হবেক তাহা
মরিদার লোক লাগিবেক কেফাইত যে
হইবেক সে মরকারের হইবেক।

ও দফা আখীমের কিম্বাতের বেচাক
টাকা নিলামের ডাব্রিহইতে দুই মাহার
মধ্যে দাখিল করিয়া আখীম আশান ক
রিবেক যে কেহ ইহা আশা করে তবে
ঐ বায়না যি শত দশ টাকা ও বায়না মজ
কুর মরকারের অর্ধ হইবেক এবং ঐ আখীম
পুনার লগদ টাকায় বিক্রয়ের ইস্তাহার
দেওয়া যাইবেক তাহার বিক্রয়ে যে নৌক
মান ও মরচা হইবেক তাহাও পুখম মরি
দার লোক লাগিবেক কেফাইত যে হয় সে
মরকারের হইবেক।

৪ দফা সকলকে পুতুত বন জানান যাই
ডেকে আখীম মেরুআরীনাথ ৩৭
রের নিমিত্ত ভিন্ন আর আখীম বিক্রয় হ
ইবে না ঐ মেরুআরী মাসে মন ৪৮১৮।
৪৯ সালের বীলী আখীম আদান ২০০২
সিম্পুক নিলামে বিক্রয় হইবেক।

সমাচার দর্পণ।

জুলাল।

এই সমস্তাহ সমাচার আনিয়াছে যে ব
দেলখাতের নিকটবর্তি জুলাল দেশের ন
বার ঘুরা ও আনবান তিনি এই পুকারে
মরিয়াছেন তাহার হাতে বাবমূল এক
নিম্বল জিল এই সময়ে তাহার বালিকা
এক কন্যা আইল তাহার সহিত তিনি আ
মোদ করিতে ঐ নিম্বল কিছুকালে আশু
সংযোগ হইয়া তাহার শরীরে লাগিল
তাহাতে তাহার পুনর্জাগ হইল। তা
হার স্ত্রী গর্ভবতী আছেন যদি তাহাতে
পুত্র সম্ভান অল্পে তবে সেই নবাব হইবে
এই পুতলাপাতে সকল নৌক দ্বির আছে
তথাকার রাজকীয় কর্ম অমাত্যগণেরাই
চালাইতেছে তাহাতে কোন বিঘটিত
হয় নাই।

কৃষ্ণগিরি।

মোং কৃষ্ণগিরের অন্তর্গত পুদুপে
এলাঙা রোগের পুনরাগমন হইয়াছে
সেখানে তিন দিনের মধ্যে ঐ রোগে সা
তানহই জন মরিয়াছে।

সেরুয়ের পদ।

আখীম বৎসরের আদালতের নিমিত্ত
অণ্ডুত হরবট কলডন সাহেব সেরুয়ের
কর্ম নিযুক্ত হইয়াছেন এবং অণ্ডুত ওলা
ম কোল্ড সাহেব তাহার পেকার হইয়া
ছেন।

সমাচার দর্পণ।

নৃত্য বাহক।

ফ্রান্স দেশে এক ব্যক্তি নৃত্য পুকার বা
কর দিত্ত করিয়াছে সে দিনা অল্প দিন
যোগে জুল। গোলান অতিশয় চুপ
করে ও তাহাতে আর কোন বস্তু যি
শাল দিয়া বাহক করে সে বাহকে অতি
অন্য।

শিল্প।

ইংরেজী লোকেরদের শিল্প কর্ম নিন্দ
না দেখিয়া এতদ্দেশীয় লোকেরা তাহার
দ্বিতিকে দেবতা ভাব করে এবং ইতর
লোকেরা দ্বন্দ্ব শিল্পকারী বিশ্বকর্মা এই শ
ব্দের অর্থেও আপন জ্ঞানানুসারে কহে
যে এই দেশে বহুশিল্পকারী শিল্প দিয়া শি
ক্ষা করাইয়াছেন বিলাতে বিদ্যাপ্রিয় কর্মী
শিল্প শিক্ষা করাইয়াছেন অতএব এই যে
শহইতে বিলাতে শিল্প দিয়া বিদ্বান কেন
না হইবে। বাস্তবিক অনুভব হয়
যে ইংরেজ শহইতে এতদ্দেশে শিল্প কর্ম
বুল তাহার এক কারণ এই।

ইংরেজ মাদেই এমত নির্বাক হইয়া
ইস্তাহার দেওয়া গিয়া থাকে যে যে কোন
কর্মকাণ্ডি অথবা বস্তুকাণ্ডি বর্ম্ম যদি
কেহ কোন কলকারী দ্বিত্বা অথবা কোন
ওপনকারী সহজ কল অথবা অনুসরণে
নিদ্রিত করিতে পারে তবে সে এক হাজার
কিন্দা দুই হাজার টাকা সরকারহইতে
ব্যাশিশ পাইবেক আর সাত বৎসর
পর্যন্ত তাহার লাভ সে ভোগ্য করিবেক।
এই কল ইস্তাহার দিলে সকল লোক ঐ
লাভাক্ষেপে মর্দব মনোযোগপূর্ব্বক
সেই চিন্তা দিবারাশ্রিত করে তাহাতে অর
ণ্য অঙ্গের দুই জন তাহার এক সহজ ও
পায় করিতে পারে তাহা হইলে সে ব্যক্তি
তালক বিন পায় ইহাও ঐ বিষয়ে অ
নেক লোকের উদ্যোগবৃদ্ধি হয় ও প্রযুক্ত

ইংরেজে নৃত্য পুকার শিল্প কর্ম অধিক
হয়।

ফ্রান্স দেশে নৃত্য কর্ম বিষয়ে তথাকার
অব্যাক্রো আটলিশ হাজার টাকা বর্ম্ম
শিল্প দিবার ইস্তাহার দিয়াছেন।

যে ব্যক্তি কোন ওপনকারী সেবাই
করিবার ঐই শীঘ্র নির্মাণ করিতে পারে
সে ব্যক্তি পোনের শত টাকা ব্যাশিশ
পাইবেক।

যে ব্যক্তি না ভিআইয়া শেন পুস্তক
করিতে পারে সে সাত শত টাকা
পাইবেক।

যে ব্যক্তি হীরা ও মুক্তা কোন ওপনে
পুস্তক হীরা ও মুক্তার মত পুস্তক করিতে
পারে সে চার শত টাকা ব্যাশিশ পাই
বেক।

যে ব্যক্তি কোন লাগাইয়া কেবল অ
নের কলকারী উল বাহির করিতে পারে
সে হাজার টাকা পাইবেক।

যে ব্যক্তি হেইনার ফলের দানা হাত
না দিয়া বাহির করিতে পারে সে তিন
শত টাকা পাইবেক।

এই পুকার ইস্তাহার ফ্রান্স দেশে দেও
য়া গিয়াছে ইহাতে অরশ্য কেহ ইহার
কোন ওপন বাহির করিয়া ব্যাশিশ পাই
বেক।

আশ্চর্য্য বৃদ্ধি।

কতক মান হইল ইটালি দেশে রক্ত
অল বৃদ্ধি হইয়াছে এই কল বৃদ্ধি অল
মান যেত শত কোশের মধ্যে হইয়াছিল।
যে দুব্যাবার সেই অল রক্ত বর্ন হইল
সেই দুব্য মেথানকার আনবান লোকেরা
দ্বির করিয়াছেন কিন্তু সে দুব্য মন
যোগ্য আকর্ষণ কিসেপ হইল ইহা কেহই
দ্বির করিতে পারেন নাই।

ময়ন।

মোশ শ্রীমানপুর ১৫ দিসেম্বর ১ পৌষ
দুইবার বৈকালবেলা পাঁচ ঘণ্টার সময়
এক জন হিন্দীয়ার সাহেব আপন বাস
ঘরে আপন আপনাকে গুলি করিয়া মরি
য়াছে। শেষে তাহার বিশেষ শ্রুনা গোল
যে ঐ শহরে তাহার এক আত্মীয় লোক
আছে তাহার লিকটে আপন ময়নের
পূর্বে এক পত্র লিখিয়াছিল তাহার বয়ান
এই আছি তোমাকে যে পত্র লিখিতেছি
এই পত্র ঘটন তুমি পাঠ করিবা তখন
আমি পরলোক প্রাপ্ত হইব ও আমি আ
পন মিত্র লোকেরদের লিকটে যাইতেছি
তুমিও এমন করিও আর আমার যে সপ
পত্রি আছে তাহাতে বুঝ আমায় ক্রিয়ের
মরত হইতে পারিবেক। এই পত্র লিখিয়া
আপন আপনাকে গুলি করিয়া শুল
ভাগ্য করিয়াছে। ইহার কারণ কেহই
কিছু অনুসন্ধান করিতে পারিল না।

গান্ধীমার ওপনকারী।

গান্ধীমারের বল বাটাইবার কারণ
যে সাহেব লোক মেথানে নিমুক্ত আ
ছেন এবং অন্য যে লোক সেই কর্মে
আছে তাহারদের অনেকের পীড়া হই
য়াছে ও প্রযুক্ত সে কর্ম এখন অল্প হই
তেছে।

কাশ্মীরের জাগাল।

সকল লোক অরণ্যে আছে যে কাশ্মীর
দেশের এক পুকার জাগালের গোদে শাল
অনিয়া নানা দেশে যায়। ইংগ্রে
দের অন্তরগতি ফ্রান্স দেশের ওজারের
বাসনা ছিল যে ঐ জাগাল আপন দেশে
আনাইয়া শাল ওপন করিয়া তাহার
বাবান্য করে এই নিমিত্ত দুই এক বৎসর

সমাচার দর্পণ।

হইল তিনি আপন দেশীয় এক জন ওপ মুক লোক পন্ন করিয়া খরচ পণ দিয়া। মুদ্রাক্ষী পথে আপন দেশহইতে কাশ্মীরে পাঠাইয়াছিলেন সে ব্যক্তি সেখানে গিয়া তের শত আশী জাগিল সেখানে কয় করিয়া আনিতেছিল কিন্তু কথায়াদেশ হইতে আসিতে পথে অত্যন্ত শীতযুগে সে জাগিলের অঙ্গের মরিল অবশিষ্ট যত মূল্য দেশে পৌঁছল তাহার মধ্যে আট পুণ্ড জাগিল আর স্বী কতকও আছে সেখানে তাহারদের বস্তা হইতেছে তাহারদের চিহ্ন-মার করণ পুণ্ড এক জন নিযুক্ত হইয়াছে। যদি সেখানে নেই জাগিল বস্তারই চিহ্ন থাকে ও তাহাতে শীল জন্মে তবে এতদ্ব্যপেক্ষা শীল মূল্য হইবেক।

পুণ্ডপণিবিদ।

পুণ্ডপণিবিদ শহরহইতে সমাচার আনিয়াছে যে তাহার লিটম্ব বর্নিত নামে ওপানের এই পুণ্ডে হলাধীয়েরা তথ্য ওলন্দেজ্য বাসিন্দার স্তুতি করিয়াছিল এবং তথাকার লবার মূণ্ডান তাহার দিগকে করিয়াছিল যে আমার পরগণা কে পর আমার পুণ্ডক তাহার সিংহাসন বসাইবা। এই সময় শুনা যাতে যে ওলন্দেজ্য তাহার ভৃত্য তাই ম হিত নুতন বন্দোবস্ত করিয়া তাহাকে তাহার সিংহাসনে বসাইয়াছে।

সেই সকল ওপহীন ওলন্দেজেরদের প রায় বড় দ্বির নহে আয়ারা শুনেতে পা ই যে সে স্থানে সেই ওপানের লোকেরা ওগিয়া ওলন্দেজেরদিগকে মারিয়াছে কিন্তু ওলন্দেজেরদের সৈন্য সেই পুণ্ডে আসক আরে তাহাতে সেই পুণ্ডবাসীর ঘর কিছু ভগ্ন নাহি যে ওলন্দেজের দিগকে তাহার তাহাইতে পা।

মানরাজ।

মোঃ মানরাজে এই বৎসর অসাব্যস্থি শ্রুত লোকেরদের অধিক ভয় হইয়াছে অন্য বৎসর যে বৎসর হইয়া থাকে সেমত এই বৎসর হয় নাই সেখানে যত দ্বিগুণ পুণ্ডোজন তাহার তিন ভাগের এক ভাগমাত্র হইয়াছে সে দেশে যত পুণ্ড রিনী সে সকল পুণ্ড আজি শুদ্ধ হইয়াছে কিন্তু এক সর্ষ নহে তাহার লিটম্ব ক নটি দেশে ওপুণ্ড হইয়াছে।

শাহস্তা।

সমুত্তি সমাচার আনিয়াছে যে কাবুলের বাদশাহ শাহস্তা পূর্বে শ্রুতিয় রনজিৎ সিংহের লিটম্ব কএব জিলেন এখন তিনি কোন সর্ষতে সেখানেহইতে পণ্ডাল করিয়া বামুইয়ের লিটম্ব নিযুক্ত দেশে হরদরাবার পৌঁছিয়াছেন তিনি অতিদুখীর মত কালক্ষেপ করিতেছেন তাহার মস্তিষ্ক কেবল চিন্তা জন মাত্র আরে তাহার বাসনা এই যে তিনি নিযুক্ত দেশের রাজাকে সহায় করিয়া রনজিৎ সিংহের সহিত যুদ্ধ করেন তাহার সে চেষ্টা বস্তা হইবেক যেহেতু নিযুক্ত দেশের রাজা অতিগরী আর তাহার সময় সাহস হইবে না যে সে রনজিৎ সিংহের সঙ্গে যুদ্ধ করে।

পূর্কালে হিন্দুস্থানের মধ্যে অতিপুন্নিছ যে দুই ভীম তাহার একর নাম দ্বিতীয় লুত দিভায়ের নাম কৈতুর সে দুই হীরা এই শাহস্তার হাতে ছিল তাহার একর মূল্য বার লক্ষ টাকা আর একটর মূল্য তিন লক্ষ টাকা। পূর্কালে এই দুই হীরা দিল্লীর রাজভাগীরে ছিল যখন নাদরশাহ কাবুলের বাদশাহ দিল্লীর ওগরে আক্রমণ করিয়াছিল তখন এই দুই

হীরা সে কাবুলে লইয়া গিয়াছিল। সন্তুতি সে দুই হীরা রনজিৎ সিংহের হাতে পড়িয়াছে।

নীল।

সন্তুতি শ্রীযুত ইন্সাহা দিয়ারেন যে কোর্টানি বাহাদুর অনেক নীল খরিদ করিয়া ইংলণ্ডে চালান করিবেন।

বর্দ্ধমানের বিবরণ।

বর্দ্ধমান জিলার সীমা এই ওগর রাজ মহী ও বীরভূমি বর্দ্ধমানীয়া মেহিনীপুর ও হগলী জিলা ও পূর্কগরী ও পশ্চিমে মেহিনীপুর জিলা ও পাচিগি। পূর্কপুত্র বৎসর হইল এই জিলা মাণ গিয়াছিল তাহা তে দেখা গিয়াছে দুই হাজার পাঁচ শত সাতাশী চতুস্রু কোশ। এই বর্দ্ধমান ওপ নাটি বৎসর ইংলণ্ডীয়দের অধীন হইয়াছে সে সময় ওগরী জুঁ য়ে বারান্দা জাতি হিন্দুস্থানের মধ্যে তখন আর নাই এবং প্রভিন্স ও মেহিনীপুর ও পাচিগি ও বীরভূমি ইহা বৈ অগনের মধ্যে এই বর্দ্ধমান আরে ইহা ত জান হয় যে চতুর্দিকে মহাবল বেষ্টিত এক মহাপুণ্ডস্থান।

মহারাজার অধিকারে যেন শত চতুর্দশ কোশ জুঁ য়ে সে অসুখস্থ স্থান এবং জুঁ য়ে ওগরী লোকের পরিপূর্ণ। স ওগর শত বাইশ মন অর্থ্য মাতানহই বৎসর হইল মহারাজ খীর্জুদরায় বাহা দুর অতিপুন্নিছ রাজা জিলেন তাহার অনেক খীর্জু এতদ্ব্যপেক্ষা আছে। সতর শত নরই মনে রাজা কোর্টানিকে বত্রিশ লক্ষ টাকা দাজকর ছিলেন এবং সতর শত কোরাশী মনে তাবৎ জিলার রাজ কর মাতে তেতাগিল লক্ষ ছিল সেই জি লার মধ্যে তিন পুণ্ডি দার বর্দ্ধমান ও

সমাচার দর্পণ।

ফরিদপুরেও বিদ্যুৎ দুই পুখুরি নামী
সামান্যের ওপর। এই জিলার মধ্যে
কোন ইচ্ছাধি নির্মিত বিদ্যা নাই কিন্তু
পূর্বে যে ছিল তাহার চিহ্ন আছে। সে
জিলার মধ্যে কোন ভাগ লোকের মধ্যে
এক ভাগ মুসলমান মোখানকার রাজার
ভাবে পেরোয়া একইশ হাজার জিল পরে
লর্ড কর্ণওয়ালিস সাহেবের বন্দোবস্তে
তাহার অনেক লোক হইয়াছে।

এখন বিদ্যুৎ বর্ধমান জিলার মধ্যে
গণা ঘন কিন্তু পুরাকাল হস্ত এক মহা
রাজ্য জিল মোখানকার রাজার কয়েক
পুত্র পুত্র এক হাজার নির্যাস বর্ধমান
এক নিম্নমানের রাজ্য করে তাহারাই
হার হিমার রাখে। মতর শত পৌর
সনে লবধ জাফরী সে রাজার সম্বন্ধ
লুপ্ত করিয়া লয়। সে দেশের মধ্যে জয়
শত আটাইশ তুর্কস কোশ। তাহার
অল্প দিন লক্ষ জিয়াশী হাজার টাকার।

এক মর্নের ইতিহাস।

এক মর্ন এক কর্মকারের দোকানে
পরিষ্কৃত হইল। তখন কর্মকার মোখানে
না থাকিতে মর্ন তাহার হিন্দী করিতে
পারিলেক না কিন্তু সম্মুখে একখানি তীর
বীর ওয়া জিল তাহাকে দর্শন করিল
লোহ কর্তন হাঁড় আর ওয়া অসুখী
তাহার দর্শনে কি হইতে পারে মর্নের
ওল ওয়ার বীর কাটা রক্ত নির্গত
হইতে লাগিল তাহাতে মর্ন রক্ত দেখিয়া
লোহ অস্ত্র ওখাকে পুণী নিশ্চয় আনি

এক বারম্বার বেগুনীক দর্শন করলে
আপন দত্ত ভয় হইয়া মুখ ফুট করিল
পরে মৃতবৎ হইল।

এই জখার তাৎপর্য এই যে পরের
অপকার ক্ষেত্র করিলেই প্রথম আপনার
ক্ষতি হয় আর আপন শক্তি বিবেচনা না
করিয়া কোন কর্মে প্রবৃত্ত হইলে অপমান
হয়। অতএব মনুষ্যের উচিত হয় যে
পরের অপকার ক্ষেত্র না করে আর আপন
শক্তি বিবেচনা করিয়া কর্মে প্রবৃত্ত হয়।

বাহার ভাণ্ডা

| জিনিস | মোন | অবধি | পরিমাণ |
|--------------|-----|------|--------|
| সুগরি | ১ | ৩১০ | ৩৫০ |
| চেরগা তৈল | ১ | ২০ | ৩২ |
| গাছ মরিচ | ১ | ৫১০ | ৭১০ |
| নারিবেল তৈল | ১ | ২৪ | ২৪ |
| জুলা কাফোলা | ১ | ১৭৫০ | ১৮১০ |
| আদা রঙ্গপল | ১ | ৫১৮ | ৩১৮ |
| পাটনাই আদা | ১ | ২১০ | ২৫০ |
| চালু পাটনাই | ১ | ৩১৮ | ৩৫০ |
| পাছড়ি উত্তম | ১ | ২১০ | ২৫ |
| পাছড়ি মধ্যম | ১ | ২১০ | ২১০ |
| মুগা উত্তম | ১ | ১১৮ | ১৫০ |
| মুগা মধ্যম | ১ | ১১৮ | ১১৮ |
| বালায় | ১ | ১১৮ | ১১৮ |
| মুগা খান | ১ | ২৮ | ১৮ |
| পাটনাই বৃহৎ | ১ | ৩৮ | ৩৮ |
| অক্ষর তালি | ১ | ৫৮ | ৫৮ |
| উত্তমবারেহুত | ১ | ২০ | ১৮ |
| মধ্যম বৃহৎ | ১ | ১৩ | ১৭ |
| তৈলা বৃহৎ | ১ | ১৩ | |

| | | | |
|-------------|---|-----|-----|
| মধ্যম তৈলা | ১ | ১৫ | |
| নীল উত্তম | ১ | ১৩০ | |
| অন্য পুকার | | | |
| নীল | ১ | ১১০ | ১১০ |
| সোরা উত্তম | ১ | ৭ | ৭১৮ |
| মধ্যম | ১ | ৫৭০ | ৬৮ |
| চিনি কানীরা | ১ | ১০ | ১১০ |
| মধ্যম | ১ | ৮১০ | ১০ |
| খার চিনি | ১ | ৫৭০ | |
| তেকুন | ১ | ৫০ | ৫০ |
| তামাক | ১ | ৫১০ | ৫১০ |
| চন্দন | ১ | ১২ | ১৭ |

মোখানকারিয়ায় ২ হিসেম্বর অর্থ
৮ তারিখ পর্যন্ত এই জিনিস আমদানী
হইয়াছে। তুলা তিনশত এক ত্রিশ
মোন। চিনি নীচ হাজার জয় শত তিন
মোন। সোরা তিন হাজার চারি শত
অদুর্লভই মোন। আদা দুই হাজার
এক শত ওনলই মোন। সুগরি নীচ
শত এক মোন। কাপড় এক লক্ষ এক
হাজার দুই শত ত্রিশ খান।

৪ নবেম্বর অবধি ৩ তারিখ পর্যন্ত ভা
রওর্ষহইতে তাহা আসে অন্য দেশে রপ্তা
নী হয় এই জিনিস। তুলা চারি হাজার
মাত শত আটচাঁর গাঁঠি। চিনি বায়াম
হাজার আট শত ত্রিশ মোন। সোরা সা
তাইশ হাজার নীচ শত বিরানই মোন।
আদা বাইশ হাজার এক শত মাটানী
মোন। রেশম নয় শত মাতওত্তম
মোন। তুলা এক লক্ষ তেইশ হাজার সা
ত শত ঘাঠি মোন। কাপড় চারি লক্ষ আ
টাইশ হাজার চারি শত বাহওর খান।
নীল তের হাজার চারি শত বিশ মোন।

এই সমাচার দর্পণ শ্রীরামপুরের ছাপাখানাতে পুস্তিকাভে পরিবারে ছাপা হয়। বাহার লগনের আবশ্যক হয় তিনি শ্রীরামপুরের ছাপাখানাতে
আপন নাম পাঠাইলে সত্তাহেৎ কাগজ তাহার নিকটে পাঠান যাইবেক তাহার মূল্য মাসে এক টাকা যিনি থাকে করিছেন যদি তাহার নিকট
কাগজ না পাঠে তবে তিনি শ্রীরামপুরের ছাপাখানাতে সমাচার দিবামাত্র তাহার নিকটে পাঠান যাইবেক।

দক্ষিণ-দেশে আহম্মদাবাদে কতক দিন
হইল অকস্মাৎ একটা পীড়া উপস্থিত হ
ইয়াছিল যে কেবল মরকের নামে অহ
মদাবাদের আশুপাতি নিমজ্জি নামে এক
গোষ্ঠ্য ঐ পীড়াহারী ঐ গ্রামের পাঁচ জন

সমাচার দর্পণ ।

গের এক ভাগি লোক মরিয়াছে কিন্তু সে
'রোগ' এখন একে কালে শান্ত হইয়াছে ।

খাদেশ দেশ ।

স্বর্ঘ্যাদ নদীর ওত্তর তীরে খাদেশ নামে
এক মহাদেশ আছে সেখানহইতে সমুদ্র
সমাচার আসিয়াছে যে সে দেশ পূর্বা
লে লোকবনতিতে পরিস্রু ছিল কিন্তু গত
বৎসর বৎসর হইল যুদ্ধে ও নি
য়ারিদের ওৎপাতে ও যুদ্ধে ও দুর্ভিক্ষে
শুষ্ক লুপ্ত হইয়াছিল পরে ঐ মকল ও
পাতে ক্রমে উদ্ধেশের লোক কমিতে
লাগিল ও তাহাতে বন বৃদ্ধি হইয়া বায়ু
বাহিত লাগিল অবশিষ্ট লোক কতক
বায়ু ভক্ষণ করিল কতক স্থানভাগি করি
য়া অন্যত্র বসতি করিল । তাহাতে সে
স্থান কেবল বনভূমি ও বাঘেতে পূর্ণ হইল
এখন সে স্থান ইংল্যান্ডেরদের অধিকার
হইয়াছে সেই বায়ু মারিবার নান পু
কার চেষ্টা হইতেছে এবং গত এক বৎ
সরের মধ্যে এগারটা বায়ু ও বায়ু মারা
পড়িয়াছে ।

পুণ্ড্র বাঘে একটা সিংহহকে মুন করিল
পরে এক জন অম্বার উলোয়ার লইয়া
বাঘের সম্মুখে আসিলে বায়ু তাহার ওপ
রে আক্রমণ করিলে ও সে পলাইল না পরে
বায়ু তাহার মস্তকে পড়িয়া মস্তক চূর্ণ
করিল দ্বিতীয় বায়ু বনহইতে বাহির
হইয়া এক জনের ওপর আক্রমণ করিলে
সে না পলাইয়া বাঘের বৃত্তি ওলি মারিল
সে ওলি বাঘের মস্তকে লাগিয়া বাঘ মা
রা পড়িল । তৃতীয় বাঘ গুমের মণ্ডলকে
ধরিয়া ধাইতেছিল এই সময় লোকেরা
যাইয়া তাহাকে মারিল । এই পুরুষের
ইংল্যান্ড লোকেরা বাঘ মারিতেছে ইহা

তে তাহারদের মধ্যবোধি হইতেছে ও লো
কেরদের অনেক ওৎপাড় হইতেছে ।

তাকিতি ।

ওলন্দিশ নবম্বর তারিখে মোকাম
গোমাই ও চাউটা এই দুই স্থানের মধ্যে
কতক ওলি তাকিই তাকবাংহির
বেহারদিগকে মরিয়া তাহারদের
বাহাগি কাড়িয়া লইয়া নিষ্ঠুর এক
বনের মধ্যে মুলিল ইত বনের এক জন
ভাগিমান পাগলো ঘাইতেছিল পথ
তাহাকে দেখিয়া বাহাগি খেলিয়া তাহার
ওপরে আক্রমণ করিয়া তাহার মর্জন
লইল কিন্তু তাহাকে মারিল না পরে
সেই স্থানে তাকবাংহির আটরাটা পুলি
সি পাওয়া গেল ও স্বস্থস্থানে পাঠান
গেল ।

হরিয়াম ।

গত মঙ্গলবারে মোকাম কলিকাতার
ঐযুত স্মিথ সাহেবের আহাজের কার
খানার লোকেরদের সহিত শৌভুগী
শের গৌরা আহাজির সঙ্গে মারামারি
হইয়াছিল তাহাতে স্মিথ সাহেবের
নীচ জন অভিমান জাগিয়া হইল । সে
এই পুরুষের হইল ঐ আহাজিরা স্মিথ
সাহেবের এক নৌকার ওপরে উঠিয়া নৌ
কার টাঁড়ি মাজির সহিত বিবাদ করিয়া
তাহারদিগকে জলে ফেলাইয়া দিন খরে
কতক সাহেব ও অন্য লোক একত্র হইয়া
ঐ দুই আহাজিরদিগকে বিদ্রি়া তাহার
দিগকে হত করিল । ইহা শুনিয়া
দুই আহাজের তাবৎ গৌরা আহাজি
লোকেরা আসিয়া ঐ কয়েদী আহাজিরদি
গকে তোর করিয়া লইয়া আহাজে গেল
এই সমাচার পুলিসে দিবাশ্রম পুলিসের

তনেক লোকেরা ঐ আহাজে গিয়া তাহার
দের শ্রুত্যাক অনেক ইঙ্গিয়া পুলিসের
কাজরিতে লইয়া গেল শেষে তাহারদের
মোকদ্দমা হইয়া ওৎপুক মাজা হই
য়াছে ।

বোম্বাইটিয়া ।

কতক দিন হইল লিখা গিয়াছে যে
বোম্বাইহইতে ইংল্যান্ডীয় সাত হাজার সৈ
ন্য আহাজে আরোহণ করিয়া যুদ্ধ করিতে
গিয়াছে তাহার নিষ্ঠুর এখন জানা গেল
যে তাহার বোম্বাইর নিষ্ঠুর পারসী
থালে যে বোম্বাইটিয়ারা আছে তাহার
দিগের সহিত যুদ্ধ করিতে গিয়াছে । তা
হার কারণ এই কলিকাতার নীচে বোম্বাই
এক মহাবাহিনীস্থান এবং ঐ বোম্বাইটিয়া
রা সেই স্থানে থাকিয়া অনেকের অনেক
লটখট করিতেছে তাহার নামান্য বো
ম্বাইটিয়া নহে তাহারদের অনেক আহাজ
ও ভূমির ওপরে বসতিস্থান আছে এবং
আহাজদারা লুটিয়া দুবাদি আনিয়া সে
স্থানে বিক্রয় করে এবং ভূমির ওপরে তা
হারদিগের স্থানে কিল্লা আছে তাহার
এমত সাহসী যে যুদ্ধের আহাজ ভিন্ন বা
নিজের মহাজাহাজ হইলেও ওৎপুক
লুটিয়া লয় এবং আহাজ তাবৎ লোক
মুন করে এই দৌরাভা নিবারণ শুল্ক
যুত সেইখানে অনেক সৈন্য আহাজ ম
যেত পাগাইয়াছেন যে তাহার এক কালে
লাশ পাও ও লোকেরা নির্ভালিতে আহাজ
বরা বানিআদি ও গমনাগমন করিতে
পারে ।

এ যুদ্ধের শেষ সমাচার আইলেন
কান ঘাইবেক ।

হিমালয় ।

নেপালের সহিত ইংল্যান্ডীয়েরদের যু

সমাচার দর্পণ

ছোটে হিমালয় পর্বত শ্রেণীর অনেক ভাগ ইংল্যান্ডের অধিকাংশে আনিয়াছে তাহাতে অনেক ইংল্যান্ডীয় লোক সেখানে সর্বত্র পাখি ভ্রমণ করিয়া যেখানে গাঙ্গা ও যমুনা পুষ্টিভর ও নগ্ন স্থান তাহা দেখিতেছেন। এইক্ষেণে শুনা গেল যে পুষ্টিয়া দেশের ইংল্যান্ড নামে এক ব্যক্তি অতিজানবান ও অতি সাহসী ও মনল বিদ্যাতে নিপুণ তিনি তথাকার বাদশাহের আজ্ঞায়ে ও মন্ত্রকার্যের অতঃপর দেশের পর্বত মানিয়া নিষ্কর করিয়াছেন এখন লাগিয়া চৈত্র বৈশাখ মাসতঃ কলিকাতা আসিয়া হিমালয় শ্রেণীতে গিয়া তাবৎ পর্বত মানি করিবেন এবং পর্বতে কোন স্থানে কি আছে এই সকল নিষ্কর করিবেন তাহার সহিত পর্বত মানিবার নানা পুস্তক কল ও যন্ত্র আনিবেক ইহার সকল যন্ত্র ও খাদ্য বাদশাহ দিবেন।

মাগির শহর।

বঙ্গদেশের পশ্চিমে মাগির নামে এক মহারাজা আছে সে রাজা পূর্বে এই দেশীয় লোকেরা আনিতে নান্ন মনুতি সে দেশ ইংল্যান্ডের অধীন হইয়াছে ও পুষ্টিয়া ইংল্যান্ডীয় এক জন ওকাল সেখানে আসেন সে দেশের ভূমি অত্যন্ত এবং যে এক এদেশে শীত কালে অন্য সে সকল এক সেখানে আনিয়াছেন ও পুষ্টিয়ায় সে দেশের রাজা ইন্দী মাগির শহর তাহার চারি দিকে তিন কোশ ও তাহার মধ্যে পুষ্টিয়া নিমিত্ত গোবর হাজার বাড়ী আছে সে বাড়ীর মধ্যেও অনেক বড় ঘর আছে সেখানে আশী হাজার লোক বসতি করে তাহার রাজ্য বৃত্তিঃ পুষ্টিয়ায় লক্ষ আশী হাজার

টাকা সেখানেকার সকল লোক মহারাজা সেখানে যে বড় বাড়ী আছে তাহাতে পণ্ডিতেরা বাস করে তাহার মধ্যে যে বড় ঘর তাহাতে মাগিরের দুই শত পণ্ডিত বাস করে যে ঘরে ইংল্যান্ডীয় ওকাল বাস করিতেছেন সে ঘরে পুর্বে মাগিরের দুই শত পণ্ডিত থাকিতেন। এই মাগির শহরও পুষ্টিয়ার ঘরে দোহাওয়া বিহীন হইয়াছে এবং দুবাদি ও অতিদুর্ভোগা মিল শস্যাদি বেহই দেখিতে পাইত না। এখন ইংল্যান্ডের অধিকার হওয়াতে নিগারিরের ওপাতি দুই হইয়াছে এবং খাদ্য দুবা অল্পমূল্য হইয়াছে বলদে ও গাভীতে নানা পশু নানা স্থানে সর্বত্র গমনাগমন হইতেছে ও অতিমুন্দর হাট ও বাজার হইতেছে।

বিদ্যা শিক্ষা।

তিন বৎসর হইল পারস্য দেশের বাদশাহী আপন পুত্রদের মধ্যে পুত্র জনকে পশু করিয়া ইংলণ্ড দেশে বিদ্যা শিক্ষার কারণ পাঠাইলেন তাহার তিন বৎসর সেখানে বাস করিয়া সে বিদ্যা শিক্ষাদারা বিদ্যাবান হইয়াছে এবং তা পল দেশে পুনর্বার ঘাইতেছে তাহার মধ্যে এক জন ইংল্যান্ডীয় এক ক্রিকেট বিদ্যা করিয়াছে সে দ্বা তাহার সহিত ঘাইতেছে।

অন্য নীচে পথ।

পুষ্টিয়া হইতেছে যে ইংলণ্ড দেশে এক নদীর জলের নীচে দিয়া পথ করা যাইতেছে সে পথ পুষ্টিয়া হইলে জলের নীচে দিয়া বোকাই গাভী চাল বেক এবং জলের ওপর দিয়া নৌকা ঘাই বেক ও তাহার ওপরের নৌকা দিয়া গাভী

ঘাইবেক অতঃপর এক নদীতে তিন পথ হইবেক। নীচের পথ পুষ্টিয়ায় অল্প কষ্টময় সেখানে দিব্যাদি বাত তুলিবেক। এইমত অন্য নদীতে পথ করায় ওযোগ্য হইতেছে।

ইংল্যান্ডে ব্যাঘ্রাণ নতি।

কতক মান হইল এই দেশেইতে এক টা বাঘনী ইংলণ্ডে লইয়া গিয়াছিল সে বাঘনী এখন ইংলণ্ড দেশে দুই বাঘা পুন ব করিয়াছে এই অতিআশ্চর্য্য যেহেতুক ব্যাঘ্রাদি গৃহীয় দেশের পশু তাহাতে শীত দেশে তাহারদের বাঁচন আশ্চর্য্য কথন ও শুনা যায় নাই যে ইংল্যান্ডে বাঘ উৎপন্ন হইয়াছে।

হেংডিন সাহেব।

কোম্বলির অধ্যক্ষেরা আপনাদের সাধারণ ঘরে হেংডিন সাহেবের মন্ডপের কারণ তাঁহার মূর্তি পুস্ত্রায়ের করিয়া রাখিবেন তাহারা এই বিদ্য করিয়াছেন।

বালের নৌকা।

ইংলণ্ড দেশে একটা বালের নৌকার বড় ওপাতি হইয়াছে। বালের কলে অত্যন্ত ভয় যেহেতুক ঐ কলে যত বার ও পয়স হয় তাহার অধিক বার ঐ কলে হইলে তখন কল ভাঙিয়া তাহার নৌ পুষ্টি আকাশে ওড়িয়া যায় তাহার নিমিত্ত ঐ বালের কলে একটা জিহু রাখা যায় তাহার দ্বারা অল্পমূল্য বার নিমিত্ত হইলে সুবিধা কল কল চলে। অতঃপর ঐ নৌকার বালের কলে বার নিমিত্তের জিহু কোনকমে কল হইয়াছিল তাহাতে ঐ নৌকার কল ভাঙিয়া লয় নয় লোক মারা পড়িয়াছে।

সমাচার দর্পণ

বিনাশ ও ধ্বংস।

এক মাস হইল বিনাশ ও ধ্বংসে কাহার
চিত্র আঁকিল নায়ে এক জন আহমাদি
ঐ প্রাচীরে যেন বন্দুর নর্বাণ্ড থাকিয়া
কতক গুলি টাকা মথুর করিয়াছিল।
নেই ব্যক্তি সেইখানে যে লোক বন্দার
বাঁচন হইল জিল তাহারদের দেনা আন
নি শোধ দিয়া মঙ্গলকে ধানান করিয়া
তাহারদিকে লুতন বস্তু এখা মরতের
কোন টাকা দিয়া বিবাহ করিয়াছে।

শাহুস্তা।

সম্প্রতি সমাচার আনিয়াছে যে শাহ
জাদার কোন ওয়াংলি দেয়ি। ইংল
ওয়েদের আশুয়ে থাকিতে বাসনা করি
য়াদের তাহার দী কাশ্মীরের আফগান
দেশীয় অধীক্ষের ভাংলি তিনি এখন
মুলতানর রাজার আশুয়ে বাসবাশন
করিতেছেন।

ইতিহাস।

এক গুমে এক ব্রাহ্মণ শাহু বিদ্যাবান
জিল সে কোন কর্ম হয়ে ঐ গুমে আতি
ভুক্ত হইয়া অববহাধ্য হইল তাহার ম
হিত ঐ গুমের কেহ আহাতিদি করে
না। তাহাতে ঐ ব্রাহ্মণ অন্মানপ্ত
হওয়াতে লজ্জিত হইয়া সে দেশ ত্যাগ
করিয়া অনেক দূর গিয়া এক রাজার ম
হিত মিলিল পরে রাজা তাহার বিবাহতে
ভুক্ত হইয়া তাহাকে সময়ে ওষ্ঠানম করি
লেন কিছু দিন পরে ঐ ব্যক্তি রাজার ধর্ম
কর্মের অধীক্ষ হইল। এক সময়ে ঐ

রাজা অনেক পুকার স্বস্তায়ন করাইবেন
তাহাতে যে ব্রাহ্মণ নিযুক্ত হইবেন তা
হার ঐ অধীক্ষের নিকটে পরীক্ষা দিয়া
রাজার স্বস্তায়নে নিযুক্ত হইতেছেন। ঐ
ব্রাহ্মণ ঐ অধীক্ষ ব্রাহ্মণ যে গুমেহাতে
আতিভুক্ত হইয়া আনিয়াছিল সেই গু
মে দুই জন মুখ্য ব্রাহ্মণ ঐ রাজার নি
কটে স্বস্তায়ন করিবার প্রার্থনতে আইল
ঐ অধীক্ষ সে দুই জনকে দেখিয়া
উদ্বিগ্ন হইয়া চিন্তা করিতে লাগিল যে
আমার গুমে দুই ব্রাহ্মণ আনিয়াছে
যদি আমার বিষয় মঙ্গল হয় হুহে তবে
আমার এ পর থাকিবে না। ঐ দুই জনও
তাহাকে দেখিয়া চিনিল। পরে রাজা
আজা করিলেন যদি এই দুই জন গায়ে
শ্রদ্ধ বন পাঠ করিতে পারেন তবে ইহার
দিককে গায়েদী অপে নিযুক্ত কর। তন
স্তর ঐ অধীক্ষ আপন গুমে দুই জনকে
লইয়া এক গুস্ত ঘরে গেল। সে দুই জন
তাহাকে কহিল যে শ্রদ্ধ ভাই আমায়দের
বিবাহ স্বাধিগর যত তাহা তুমি আত তজ
এখন তুমি যে ক্রিয়া করিয়া এখানে আ
নিয়া রহিয়াছ তাহাও আমরা আত
আজি যদি আমায়দের ওপকার না কর
তবে আমরা তোমার মঙ্গল ক্রিয়া সুকাশ
করিব। ইহা শুনিয়া ঐ ব্রাহ্মণ স্বীকার
করিল পরে রাজার নিকটে ঐ দুই মুখ্যকে
লইয়া গিয়া ঐ অধীক্ষ কহিল যে হে হ
হারাজ এই দুই জন মহামহোদয়
প্রভু আমাকে ওপকল্প সময়ে গায়েদী
শ্রদ্ধায়াছেন। ইহা কহিয়া রাজাকে
পূজাধনা করিয়া দুই মুখ্যকে স্বস্তায়নে
নিযুক্ত করিল।

বাজার ভাণ্ডা

| বিনিম | মোন | অধি | পরিম |
|--------------|-----|------|------|
| বুপরি | ১ | ৩৫০ | ৪ |
| ভোগা উল | ১ | ২০ | ৩২ |
| গাহ মরিচ | ১ | ৫১০ | ৭১৮ |
| বারিকেল উল | ১ | ১৪ | ১৪ |
| হুলা কাঁচো | ১ | ১১১০ | ১৫০ |
| আশা হকপু | ১ | ৩১৮ | ৩১৮ |
| পাটনাই আন | ১ | ২১০ | ২৫০ |
| চান্দ পাটনাই | ১ | ৩ | ২১ |
| পাছতি উল | ১ | ২১০ | ২৫ |
| পাছতি মধ্য | ১ | ২১০ | ২১০ |
| মুগা উল | ১ | ১১৮ | ১৫০ |
| মুগা মধ্য | ১ | ১১৮ | ১১৮ |
| দালার | ১ | ১১৮ | ১১৮ |
| দুগা দাল | ১ | ২০ | ২৫ |
| পাটনাই দুই | ১ | ২০ | ৩৮ |
| অফরা আনি | ১ | ৫১০ | ৪৮ |
| উলমগা হুহ | ১ | ২০ | |
| মধ্যম হুহ | ১ | ১৬ | ১৮ |
| উলম হুহ | ১ | ১৬ | ১৮ |
| মধ্যম উল | ১ | ১৪ | |
| নীল উল | ১ | ১৫০ | |
| অন্য পুকার | | | |
| নীল | ১ | ১১০ | ১৫ |
| সোরা উল | ১ | ৭ | ৭৮ |
| মধ্যম | ১ | ৬১০ | ৬৫০ |
| দী কাশা | ১ | ১০ | ১১৮ |
| মধ্যম | ১ | ৮১০ | ১ |
| ধার বিনী | ১ | ৫১০ | |
| ভেতু | ১ | ৫০ | ৫০ |
| তামাক | ১ | ৪১০ | ৫১৮ |
| চন্দন | ১ | ১৪ | ১ |

এই সমাচার দর্পণ পুরীমপুত্রের ছাপাখানাকে পুতিমপুত্রের ছাপা হই। যাহার লওনের আশা কর হই তিনি পুরীমপুত্রের ছাপাখানাকে
আপন নাম পাঠ্যলেন লগ্নাহে লগ্নাহে তাহার নিকটে পাঠান যাইবেক তাহার মূল্য মাসে এক টাকা যিনি হাকুর করিয়াছেন যদি তাহার নিকটে
কোন দ্রব্য লইবে তবে তিনি পুরীমপুত্রের ছাপাখানাকে লগ্নাহে তাহার নিকটে পাঠান যাইবেক।

সমাচার দর্পণ

৮৫ সংখ্যা।

পরিবার।

৪ জানুয়ারি সন ১৮৭০। ৪৮ পৌষ মল ১৭৭৬।

দপণে দুই পৌষমাসের কার্যবিবরণ।

দুর্ভাগ্যবিশিষ্ট সমাজের দর্পণে ॥

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির শতকরা জয় টাকার সুবের
কাণ্ড ক্রয় করিতে হইলে শতকরা এক
টাকা দুই আনা তির্যক। বিস্ময় করি
তে হইলে শতকরা এক টাকা জয় আনা
তির্যক।

সন্তোহার পঞ্জিকা।

| ১ | জন্মপাতি | পরিবার | ১৮ | পৌষ |
|---|----------|--------|----|-----|
| ১ | ১ | ১১ | ১১ | ১ |
| ২ | ১ | ১১ | ১১ | ১ |
| ৩ | ১ | ১১ | ১১ | ১ |
| ৪ | ১ | ১১ | ১১ | ১ |
| ৫ | ১ | ১১ | ১১ | ১ |
| ৬ | ১ | ১১ | ১১ | ১ |
| ৭ | ১ | ১১ | ১১ | ১ |

ইন্ডোহার।

সমাজের দেওয়া ঘাইতেছে যে কানীন
ভাষেহারা মায় বাঁহাঙ্গী ও মশাণটি
দাঁগের বশীল ঘাইবে তাহার কালেবল
পাণ্ডা আসিহইতেছে জি টৌকি চারি টাকার
হিন্দাব পাঁচ বক ইহাঙ্গ জালিয়া কাছা
রো শুক্মে হইবেক না যদি কোন ভাকের
আমলা লোক ইহারদিগের দিতে কিছু
আপত্তা করে তবে অধিক আশ্বাসে পৌঁ
মাধ্যমের অধিক নিমিত্ত যে দুঃখান্ত
করবেক তাহাতে সুন্দর বিবেচনা করা
ঘাইবেক ইতি।

সমাচার দর্পণ।

বৎসরান্ত।

অম্বা ইংগায়েদের লুতল বৎসর
রক্ত হইল আওএব গাও বৎসরে দুই
যে কর্ম এই বেণে লিঙ্গ ইয়াতে তা
হা লিখি। এই বৎসর এতদেশীয় লো
কের সহায়ন বিয়ে সহমহিবেচনার
নিমিত্ত পুস্তক প্রস্তুত করিয়া জাণিয়া পর
র বাহানুবাহ করিতেছেন। পুর্বে এত
দেশীয়দের এমত ব্যবহার ছিল না
সকল লোকেই ধার্মিক ব্যবহারে
চলিতেন এখন এইরূপ বিবেচনা হওয়াতে
হিন্দু শাস্ত্রের যথার্থ ব্যবস্থা দ্বির হইবেক।
সংস্কৃতি কেবল সহায়নের বিঘ্নে এই
কণ বিবেচনা আরম্ভ হইয়াছে আমরা
অনুমান করি যে অন্য বিঘ্নেও এইরূপ
সহমহিবেচনা হইবেক। কোন বিষয়
বাধি পুতিবাধি মুখ্যতে পুনঃপুন বিবেচিত
হইলে তাহা সুন্দর হয় এবং তাহাতে
দুঃখাইলে ইতর লোকেরাও আনিত পায়।
পুর্বে শাস্ত্রীয় ব্যবস্থা কেবল পণ্ডিতেরদের
অন্তঃকরণেই গুপ্ত। যদিও সেই পণ্ডিতের
দের ওঁসিলা বাড়িতেকে অজান লোক
আনিত পায়িত না এখন এই কণ হও
য়াতে সর্ব সাধারণ উপকার হয়। ইং
গাও ও মাল ও কম্বা প্রভৃতি দেশেতে এই
কণ ধার্মিক সর্বত্র আয়।

লক্ষ্মণোয়র নবাব গাজীদীন হুসুদর
বাহাদুর পুর্বে ওঁর নবাব নামে খ্যাত

জিলেন। এই বৎসরে প্রস্তুত তা
হাৎক অযোগ্যের রাজা খেতাব দিয়া
সিংহাসনে বসাইয়াছেন। ইহাতে
তাহার এই লাভ হইল যে পুর্বে তিনি দি
ল্লীর বাহাদুরের চাকর জিলেন এখন
তিনি স্বতন্ত্র এক রাজা হইলেন।

এই বৎসরে সত দেশে ইংগায়েদের
মুখ্য কারিয়া মে দেশবাসিকার ভরসা মে
খালে রাজ্য করিতেছেন।

এই বৎসরে বুস্তা দেশের খারান রাজা
লোকান্তরগত হইয়াছেন তাহার পৌত্র
রাজা হইয়াছেন। এই বুস্তা দেশের নাম
পুর্বে বগ জিল পরে এই রাজার পুর্বে পুস্ত
এ বগ দেশ জয় করিয়া তাহার নাম বুস্তা
দেশ রাখিলেন। এই রাজারদের বৎ
সরে যথো এই ব্যক্তি অনেক কাল রাজ্য
ভোগ করিয়াছেন।

এই বৎসরে মিহলদীন প মেখান
কার দুই লোকেরা বহুক লোকেরদি
গকে ইংগায়েদের সহিত ক্র দুই মুখ্য
পুস্ত করায় জিল তাহাতে মেখানে অ
নামজনা অনেক ওপদিত হইয়াছিল
তাহা এখন শান্তি হইয়াছে।

এই বৎসর তুলমাসে এক মহাজুয়ি
কল্প হইয়াছে তাহার মত জুমিকর ও
কাল হয় নাই সে জুমিকর তাৎপারত
বর্ষে হইয়াছিল এতদেশে তাহার পর
কয় অধিক অনুভব হয় নাই কিন্তু অন্য
দেশে অতিশয় আন হইয়াছে যেমুইর
লিটবর্গ দেশে এই জুমিকরেতে ঘর বাড়ি
পতিয়া মাও আট হাজার লোক মারা
পতিয়াছে।

সমীচারণ দপণ ।

ঐযুত দেওয়ান সাহেব ।

ঐযুত দেওয়ান সাহেব কৌশিলে জিনেন তিনি সৎপুত্র ইংগুতে পুমান করিবেন তাঁহার মজুমদার কারণ তাহার আত্মীয় লোকেরা ২১ হিসেন্দর বুদীবার মোং কলিকাতাতে বড় খানা করিয়া জিনেন ।

গত রবিবারে এগার ঘণ্টার সময়ে ঐযুত দেওয়ান সাহেব চাকরীালের ঘটিহইতে পুমান করিয়া তাহারপর্যন্ত গোলেন তাঁহার পুমান কালে তাহার ৭ দানুসার কিল্লাতে ডোন হইল ।

আগাপি আমরা জ্ঞান নাই যে তাঁহার পরীযেতে কে দুস্রায় কৌশিলে নিযুক্ত হই যেন ।

সরীল ।

২৩ হিসেন্দর বুহরতিবার শুভকালে মজুর লোকেরা কলিকাতার বংশালের নিকটে পুরানা এক ঘর ভাঙিতেছিল তাহাতে এক কুঠারি মথো মীড়ারীর বার হাতার সরীল পাওয়া গেল সেই কুঠারীর তিন দিকে দেওয়ান ও যে দিক বার সে দিকেও দেওয়ান দিয়া দার বন্ধ করা ছিল এবং এক দিকের দেওয়ান দুই হাত কম ছিল তাহাতে অনুমান হয় যে সেই দিক দিয়া সরীল কুঠারি মথো জেলি যাজিল যেহেতুক সে সরীল মগি সয়ে রাখা যায় নাই কিন্তু একটীর ওপরে আরও এই পুকারে । সে মকল সরীল মনতে বাস্ত জিল ও কোনটারে ওপরে কোল্লানির চক আছে । ইহাতে আশ্চর্য্য জান এই হয় যে এত সরীল এক কুঠারিতে জিল তাহা । কাহারও জানে আইসে নাই যেহেতুক সেখানে কুঠারি যে আছে তা হাই কেহ জানিত না সেই সরীলের নীচে ১৭৯৬ সালের নিলামের কাগজ

পাওয়া গেল । এই বিষয় অনেক অনেক পুকার অনুমান করিতেছেন কিন্তু কিছু নিশ্চয় হয় না কেহ বিতর্ক করেন যে এত দেশীয় লোকেরা ইংগুতায়েরদের সহিত মুরু করিতে সে মকল সরীল মকল কর যাজিল কিন্তু সে কথা মিথ্যা । আর কেহ অনুমান করেন যে পূর্বে কোল্লানির ম সরীল পুরানা হইলে জলে জেলায় যাইত তাহা অন্য লোকেরা জলহইতে উঠাইয়া আরবীয় লোকেরদের নিকটে বিক্রয় করিত সেই বৃত্তি হইতে পারে । এই বণ অনেক অনেক বিতর্ক করে ।

কথিয়া ।

ওত্তর কেন্দু ও দক্ষিণ কেন্দুপর্যন্ত যাই বার বায়ু কথিয়াপর্যন্ত পঁছয়িয়াছে তাহা তে কথিয়ার বাদশাহ ঐ ওত্তর কেন্দু ও দক্ষিণ কেন্দু যাইবার নিমিত্ত অনেক আত্মীয় পুস্তত করিতেছেন তাহার অর্থে ক ওত্তর কেন্দু ও আর অর্ধেক দক্ষিণ কেন্দু যাইবেক । এই সমীচারণ যখন মর্দব পুকাশ হইল তখন কথিয়ার ঘাটি জন লোক আপনারা সেই দুহুর কর্মে যাইবার নিমিত্ত বাদশাহের নিকটে দর খাশ্ত করিল ।

মোকদ্দমা ।

ইংগুতদেশীয় এক জন মহাকল্লিল বিদেশে এক স্থানে ছিল সেখানে তাহার মজুর পুর্ক আন চাকরকে চারি লক্ষ টাকা দিয়া সে মজুরিয়ার । এখন তাহার ওত্তরাধিকারী সে চারি লক্ষ টাকা । সে চাকরকে দেয় না এবং কেহ যে তিনি যদু কর্মের নিমিত্ত টাকা দিয়া জেন আমি কখনও মজুর করিব না । এই বণ তাহার মোকদ্দমা হইতেছে সে কথা শুনিয়া অনেক হানা করিতেছে ।

মেটিউইলোয় কালোজ ।

এই বৎসরে কোল্লানি কালোজের শেষ ইন্তাহায়ে পাঁচ জন সাহেব মুন্সের ইন্তাহাম দিয়া তাহাতে ওটার ইয়া কোল্লানির কর্মে ওপযুক্ত হইয়াছেন ।

আশ্চর্য্য পক্ষী ।

পাঁচ মাস হইল ইংগুত দেশে বড় মজুর লোক একটা গাঁজ কাটিতেছিল ইহার মধ্যে গাঁজ কাটিতে ১ গাঁজের মধ্যে একটা পক্ষির বাসা ও তাহাতে তিন টা ডিম্ব তাহার পাঁচল ইহাতে বড় আশ্চর্য্যবোধ হইল যে পুকাশ গাঁজের মধ্যে সেখানে কোথাও ডিম্ব নাই কিন্তু সে খানে পক্ষির বাসা করিল তাহা জানা গেল না । এবং ত্রিশ বৎসর পূর্বে এই পুকাশ এক বৃক্ষের মধ্যে এক মৃত পক্ষী ও তাহার চার পাঁচটা ডিম্ব পাওয়া গিয়াছিল তাহাতে হিসাব করিয়া দেখা গেল যে সে পক্ষী নষ্টই বৎসর সে বৃক্ষের মধ্যে জিল যেহেতুক সে বৃক্ষ নষ্টই বৎসর ব্যতিরেকে ডেয়াল মেটা হয় না কিন্তু পুখাম সে পক্ষী সেইখানে কি হলে জিল তাহা জানা যায় নাই ।

মর্ন ।

কতক মাস হইল ইংগুত দেশে একটা ঘোড়া অসুস্থ হইয়া মহিল কোন ব্যক্তি তাহার রোগানুভব করিতে আসে পারি যাজিল না যখন সে ঘোড়া মরিল তখন তাহার শরীর লাঠিয়া দেখিল যে তাহার শরীরের মধ্যে দুই হাত এক মর্ন মরিয়া রহিয়াছে ।

লোকা ডুরি ।

গত মোমবার মোং চন্দনগাঁরহইতে একখান বজরা মোং কলিকাতা যাই

সমাচার দর্পণ।

তেজিল রাত্রিতে মোং চানকের নীচে
ঐশ্বর্যবৃত্ত বত মোহবের শিলিসের রসোত
বহু হইয়া ঐ বজার জ্বিয়া গেল তাহা
তে এক জন ইংলণ্ডীয় স্ত্রী লোক ও দুই
বালক যারা পড়িয়াছে আর মকল লোক
সাতার ঘরা রক্ষা পাইয়াছে।

আশ্চর্য্য বিঘা।

ইংরোলে একাদশ বৎসরবয়স্ক এক
বালিকা স্ত্রী অলঙ্কারাদি শাস্ত্রে নিখুঁত
হইয়াছে এবং সেই বালিকা পুণীন প
জিতেরদের সহিত তিন দিন পর্যন্ত নায়া
শাস্ত্রের বিচার করিয়া আর পাইয়াছে তা
হার গুণ বিরাশি বৎসরবয়স্ক এক বৃদ্ধ।

মহাঘণ্টা।

কথিয়া দেশে মফকানামে এক শহর
সে শহর ১৮১২ সালে বোলানীর্ড অধি
কার করিয়াছিলেন সেখানে এক ঘণ্টা
জিল বুদ্ধি তাহার মত ঘণ্টা পৃথিবীর মাঝে
আর নাই বোলানীর্ডের ঘুড় কালে সৈন্যে
রা সে ঘণ্টা ভাঙ্গিয়া চূর্ণ করিয়াছিল।
সমুদ্রি কথিয়ার বাদশাহ তাহার পরীর্বে
আর এক ঘণ্টা নির্মাণ করিয়াছেন তাহার
পর্যায় এক তাহার যেন শিশু সে
ওর দশ হাত আঁচে চারি হাত ও তাহার
নাথ ওতনে ত্রিশ ঘোল শিশু।

রোবাকী।

দিল্লীর নিকটে রোবাকী শহর হইতে
সমাচার আনিয়াছে যে সেখানে ১৮ নবে
র তারিখে ভূমিকম্প হইয়াছিল এই
ভূমিকম্পে পৃথিবীর আন্দোলন হয় নাই
কিন্তু একটা মহাশব্দ হইয়া একবারমাত্র
পৃথিবীর কন্ড হইয়াছিল।

আমৃত্যু।

১৭ ডিসেম্বর ১৩ নৌব মোমবার মোং
আলানা গুয়ে মুণ্ডাকলে আট ঘণ্টার
সময়ে বাগী আতি এক স্ত্রীসকল ঘরের
দেওয়ান চাপা পড়িয়া হইয়াছে তাহার
বাগীর পশ্চিমে লাগাও এক হুজুরের
বাগী ঐ বাগীর ঘরের দেওয়ান অকস্মাৎ
তাহার ঘরে পড়িল তাহাতেই তাহার
পুলতাগা হইল পরে অনেক লোক তা
নিয়া ঐ দেওয়ানের মৃত্যুক নগাইয়া
শব বাহির করিল।

নাগাবুদ।

নাগাবুদ হইতে সমাচার আনিয়াছে
যে সেখানে হইতে সমুদ্রের নিকটে মরু
পথযাত্রার বত রাতি করা ঘাইবেক ইহা
তে মরু পুকারে ওপকাই হইবেক যেহেতু
ক সে রাতি দিয়া সৈন্য ঘাইতে পারিবেক
ও বালিকার দুবা গমনাগমন করিতে
পারিবেক।

পুকুরিয়ার মহা হাট।

আজমের দেশের অন্তর্গতি পুকুরিয়া
নামে এক স্থানে বৎসরান্ত হাট হইয়া
থাকে তেমন হাট ওর হিন্দুস্থানের
মাঝে আর নাই কিন্তু সে দেশে শিতারির
দের নিকট তাহারদের দৌরাআ ও লুট
পুণ্ডু সে হাট অনেক কম হইয়াছিল
কিন্তু এখন শিতারিরদের দমন হও
য়াত কয়েম সে হাট বৃদ্ধি পাইতেছে
এবং দিল্লীতে ইংলণ্ডীয়েরদের যে ওলী
সাহেব আসেন তিন তৎপুদ্রেশেতে তে
চৌর্যেও আসেন যে এখন শিতারির ভয়
দূর হইল তেমন লিভর হইয়া সকলে
হাট বাজার কর। এবং মিছিয়া সেই
হাটে জিনিসের যে মাসুল লইতেন তা

হার অর্দ্ধেক লইতেছেন তাহাতে এ
খন সে হাট নিব্বদেগে চলিতেছে। এই
বৎসর সে হাট হইয়াছিল বটে কিন্তু
তাহাতে যত লোক ও যত জিনিস আনি
বার বিষয় তত আইসে নাই তাহার কা
রণ এই যে সে দেশে শিতারিরদের দৌ
রাআ পুণ্ডু লোক নির্বিন হইয়াছে ও
নাশ জিনিসের অল্পতা হইয়াছে কি পু
কারে কয় বিক্রয় অধিক হইতে পারে।

সকলে অবগত আছেন আজমের পু
র্বে দৌলপুর মিছিয়ার অধিকারে ছিল
তিনি ইংলণ্ডীয়েরদিকে ঐ আজমের বদল
করিয়া অন্য দেশে লইয়াছেন ইহাতে
ইংলণ্ডীয়েরদের অনেক ওপকার হইয়াছে
যেহেতু সে সৈন্য রাতিবার স্থান এবং
তাহার ঘরা রজনুতবদের দেশে বশীভূত
থাকে ইংলণ্ডীয়েরদের অধিকার ঘমুনা
নদী হইতে আজমের দেশ এক শত শো
নর কোশ দূর এবং তাহার মাঝে দুই পলা
কমী রাজা আছে যদি সেখানে ইংলণ্ডী
য়ের সৈন্য না থাকে তবে তাহার ওপকা
ত করিতে পারে।

আজমের দেশেতে বৎসরান্তে তিন
লক্ষ টাকা রাজস্ব ওপদ হয়। তাহাতে
ইংলণ্ডীয়েরদের সেখানকার মঙ্গল খরচ
পোকার নাহিক সে দেশ কয়েম ওর
হইতেছে।

হিন্দুস্থানের নদী।

পূর্বকালে হিন্দুস্থানের চারি নদী প্রসি
দ্ধা ছিল ও লোকেরা তাহাতে তত্তান্ত
ভয় করিত। পুণ্য কথনাশ নদী তা
হার অন্যতম কহে নদী দ্বিতীয় বারী
নার মাঝে করতোয়া নদী তাহাতে স্থান
নিবিজ। তৃতীয় গণ্ডকী নদী তাহাতে
মাছার দিতে নাই। চতুর্থ আটক নদী

সমাচার দপণ।

তাঁহার পাঁচ হইতে শাস্ত্রে নিষেধী আছে কিন্তু আটক নামে শহরের লিকটবর্তিনী যে সিন্দুর নদী তাঁহার পাঁচ হইতে বারন নদীয়া অন্তর্গত সে নদী সকলে পাঁচ হয় তাঁহাতে কোন বাধা নাই। এই প্রাচীন কথা আছে যে দিল্লীর বাদশাহ্ মহারাজ মানসিংহকে কাবোল শহর যারিতে আঁজা করিয়াছিলেন এবং তাঁহার সহিত অনেক সৈন্যও বিয়াজিলেন কিন্তু মহা রাজ মানসিংহ ঐ আটক নদীর লিকটে গিয়া বিবেচনা করিলেন যে হিন্দু শাস্ত্রে আটক নদী পাঁচ হওনে নিষেধী আছে ও যে হিন্দু যায় সে আতিভ্রষ্ট হয় তবে আমার এ নদী পাঁচ হইয়া কাবোল যাত্রা কর্তব্য নহে ইহাতে যদি বাদশাহ্ রক্ত হন তবে সুখি কি। ইহা বিবেচনা করিয়া সেখান হইতে জিরিয়া পুনর্বার দিল্লীতে আইলেন তাঁহাতে বাদশাহ্ তাঁহার প্রতি রক্ত না হইয়া বরং তুষ্ট হইলেন।

নূতন চিহ্ননা।

পূর্বে সমাচার দেওয়া গিয়াছিল যে মো কাম নলিয়া গুণ্যে এক বুদ্ধন হরিবোল দিয়া অনেকের রোগ প্রতীকার করিতে জেন এখন আরো শ্রদ্ধা যাইতেছে মোক সমুদেদান্যে এক গুণ্যে এক বুদ্ধন ঐ বন করিতে আরম্ভ করিয়াছিল কিন্তু তাঁহাকে সকলে মিথ্যা জান করিয়াছে তৎপুত্র তাঁহার আঁক হইতে পাঁচ নাই।

কৃপার স্বভাব।

এক নগরে এক ব্যক্তি বিনয়াল জিন

কিন্তু তাঁহার পুত্র পৌত্র পুত্রুতি ওতরাবি কাঁকী সম্মার কেহী জিল না সে এমন ক্রপণ যে তাঁহার ভূগা জিল না তাঁহার বহু বীন সমুৎ আশ্রণ পরিচর্যার কারণে অনেক ভৃত্যও রাখিত না যাঁহা ব্যাশ্রণের আশ্রণ হাউই করিত। কিন্তু কাল পরে সে সাংঘাতিক রোগী হইলে আপনাবার ঘর নগর টাঙ্কা সে সকল একত্র করিয়া শয্যার নীচে রাখিয়া তাঁহার ওপরে শয়ন করিত। তাঁহার এক মিত্র এক দিন তাঁহাকে দেখিতে আসিল ও তাঁহার তীব্র মৎস্যময় ক্রিয়া কহিল যে যে সময়ে তুমি নীচাতে আসিয়া হইয়া আশ্রণ প্রার্থনা করিলে তুমি এক জন ভৃত্য রাখ। ঐ ক্রপণ ভৃত্য তৎকালে তাঁহা স্বীকার করিয়া এক জনকে তঁহা আসাইল ও তাঁহাকে কহিল যে তুমি আমার গিক টে চাকর থাকই দরমাহা দিলাইবা। ভৃত্য কহিল যে ভাল মহাশয় তিন টাকা দরমাহা দিইবা ও আশ্রয়ও করুকরিব কিন্তু এক মাসের দরমাহা আগে দেহ। ঐ ক্রপণ তাঁহাতে দ্বিষ্ট না হইয়া তাঁহাকে রাখিল না। পরে ঐ মিত্র সময়া ন্তরে আসিয়া তাঁহাকে জিজ্ঞাসা করিল যে হে সময়ে কেন এক ভৃত্য রাখই নাই। ক্রপণ কহিল যে তাঁহাকে রাখই নাই না সে এক মাসের দরমাহা আগে চাহে যদি আমার এক মাসের মাহো মরন হয় তবে বাশ টাঙ্কা আমার নষ্ট হইবেক তত এই বিবেচনা করিয়া তাঁহাকে বিদায় করিলাম। ইহা শুনিয়া তাঁহার মিত্র বিস্ময়গণন হইল।

বাংলা ভাষা

| দিন | মাস | আগ | পর্যন্ত |
|--------------|-----|-----|---------|
| শুক্র | ১ | ৩৫০ | ৪ |
| শেহরাত | ১ | ২০ | ৩২ |
| গাছ মরিচ | ১ | ২০ | ৩৫ |
| বাটিকেল | ১ | ১৪ | ১৫ |
| তুলা কাচোরা | ১ | ১৫০ | ১৮ |
| আদা রুপ | ১ | ৩১৮ | ৩১৮ |
| পাটনাই আদা | ১ | ২১০ | ২৫০ |
| চাপু পাটনাই | ১ | ৩ | ৩০ |
| পাছড়ি উত্তম | ১ | ২১০ | ২৫ |
| পাছড়ি মধ্যম | ১ | ২১০ | ২১০ |
| মুখী উত্তম | ১ | ১১০ | ১১০ |
| মুখী মধ্যম | ১ | ১১০ | ১১০ |
| বাগান | ১ | ১১৮ | ১১৮ |
| দুগা ধান | ১ | ২৮ | ২০০ |
| পাটনাই বুট | ১ | ৩১ | ৩১ |
| অড়হর জালি | ১ | ৪১৮ | ৪১৮ |
| উত্তমমারো | ১ | ২০ | ২০ |
| মধ্যম দূত | ১ | ১৫ | ১৫ |
| উত্তম দূত | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মধ্যম উত্তম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| নীল | ১ | ১১০ | ১১০ |
| সোরা উত্তম | ১ | ১ | ১১৮ |
| মধ্যম | ১ | ৩০ | ২০ |
| চিনি কাপী | ১ | ১০ | ১১৮ |
| মধ্যম | ১ | ১১০ | ১০ |
| ধার চিনি | ১ | ৪১০ | ৪১০ |
| ভেড়ুল | ১ | ৫০ | ৫০ |
| ভামাকু | ১ | ৪১০ | ৪১০ |
| চন্দন | ১ | ১৪ | ১৪ |

এই সমাচার বর্ণনা শ্রীমামপুরের ছাপাখানাতে পুস্তিকাভাবে লিখিত হইয়াছে। যাঁহার লগনের আশংকা হয় তিনি শ্রীমামপুরের ছাপাখানাতে আসিয়া বা পাঠাইলে লগনের কাগজ তাঁহার নিকটে পাঠাইয়া দিবেন। তাঁহার মূল্য মাসে এক টাকা মিনি ছাকর করিয়াছেন যদি তাঁহার নিকটে কাগজ নাই তবে তিনি শ্রীমামপুরের ছাপাখানাতে লগনের দিবাখান তাঁহার নিকটে পাঠাইয়া দিবেন।

সমাচার দর্পণ

৮৩ সংখ্যা।

শনিবার।

৮ জানুয়ারি মন ৪৮-১০।

১৫ পৌষ মন ৪১-১৩।

দপণে মুখ বৈশ্বক্যমিব কার্যবিরহকণাঃ।

বৃত্তান্তনিহ কানন্ত সমাচারস্য দপণে ॥

কোল্লানির কাণ্ডাজ।

কোল্লানির শতকরা জয় টাকার মূবের কাণ্ডাজ করিতে হইলে শতকরা এক টাকা দুই আনা তির্যকোণ। বিক্রয় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা জয় আনা তির্যকোণ।

মস্তাহের পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|-------|-------------|----|-----|
| ৮ | কলুশা | শনিবার | ১৫ | পৌষ |
| ৯ | ২ | রবিবার | ১৬ | ২ |
| ১০ | ৩ | সোমবার | ১৭ | ৩ |
| ১১ | ৪ | মঙ্গলবার | ১৮ | ৪ |
| ১২ | ৫ | বুধবার | ১৯ | ৫ |
| ১৩ | ৬ | বৃহস্পতিবার | ২০ | ৬ |
| ১৪ | ৭ | শুক্রবার | ২১ | ৭ |

ইত্তাহার।

সমাচার দেওয়া যাইতেছে যে কলিনী ডাকের হারা মার বাহানী ও মশালি ডিগির বশীল ঘরিরে কতারা আলেরেল পৌন্ড আশিহইতে দি টোঁকি চারি টাকার হিসাবে পাইবেক ইহার অনাথা কাহা গো ছকুম হইবেক না যদি কোন ডাকের আমলা লোক ইহারিঘেরে দিতে কিছু আশা কর তবে শ্রীযুত আসেরেল পৌন্ড মাথেরের অগ্রে এ নিমিত্ত যে দরখাস্ত করবেক তাহাতে নুসর বিবেচনা করা যাইবেক ইতি।

সমাচার দর্পণ।

বারিআ।

৩৪ দিসেম্বর তারিখে কলিকাতার একশেষে ঘরে গণ্ড বৎসরের বেহারের কোল্লানির আখিয়া চৌদ্দ শত ডেইশ মিছুক বিক্রয় হইল এবং কাশীর আখিয়া দুই শত ওনআশী মিছুক বিক্রয় হইল। বেহারের আখিয়া দুই হাজার টাকা মিছুক এবং কাশীর আখিয়া দুই হাজার বার টাকা মিছুক। অতএব সেই দিন চৌদ্দিশ লক্ষ টাকার আখিয়া কোল্লানি বাহাদুর বিক্রয় করিলেন।

ছেলুয়ারি মাসের শেষে আর দুই হাজার মিছুক আখিয়া বিক্রয় হইবেক। এই দুই হাজার মিছুক আখিয়া বিক্রয় হইলে এক বৎসরের মধ্যে চৌহত্তর লক্ষ টাকার কেবল কোল্লানির আখিয়া বিক্রয় হইল।

নীল।

১২ দিসেম্বর তারিখ পর্যন্ত এই বৎসর ওংশন নীল ওনআশী হাজার এক শত ওনচল্লিশ মোল কলিকাতাতে আমদানী হইয়াছে অতএব আজি লাণ্ডাইর নীল যত আমদানী হইয়াছে তাহার হিসাবে আনা গেল যেগণ্ড বৎসরহইতে আটচিশ হাজার মোল নীল অধিক আমদানী এই বৎসর হইয়াছে।

বারীল বাতি।

৫ জানুয়ারি তারিখে বারীল বাতির খাজাতি জুযুত মরলি মাহের ইস্তাহার দিয়াছেন যে এই বাতির পুতাক সেরের গণ্ড জয় মাসের আনো শতকরা আট টাকা দুই আনা এগার পাইয়ের হিসাবে মুর দেওয়া যাইবেক। অতএব দশ হাজার টাকার পুতাক সেরের ওংশন জয় মাসের কারণ মুর চারি শত নয় টাকা এক আনা দশ পাই দেওয়া যাইবেক এই বাতির খাজাতি জুযুত মরলি মাহে ব আটো এক ইস্তাহার দিয়াছেন যে আ নুয়ারি ১০ তারিখেতে এই বাতির তত্ত গণ্ড লোকেরদের মিলিল হইবেক এবং সেই দিনে শ্রীযুত মোংলভ মাহেরের বহলিতে বাতির আর এক অধিক বিক্রয় করা যাইবেক।

বিবালয়।

গণ্ড মোম বারের কলিকাতার বিবালয়ের আর্গি হিন্দু কালজের শিষ্যেরদের ইত্তাহাম হইয়াছে। সেই সময়ে জুযুত নর এডুই ইন্ড মাহের ও অনা মাহের লোকেরা মেখানে গিয়াছিলেন তাহার ঘের মাফাকাংরে শিষ্যেরা আপনা পি ফার দিয়ে মুরের ইত্তাহাম দিয়াছে।

জুযুত লাণ্ডাইর রাজা।

যখন লাণ্ডাইর রাজা ইংলণ্ডীয়েরদের হাতহইতে লণ্ডাইর করিলেন তাহাতে ইংলণ্ডীয় সৈন্যের এক হাজায়া ও তথা বার ও কথক সিংহাই এই রাজার দ্বায়ে

সমাচার দর্পণ ।

অনেক টাকা মূল লইয়া তাহার চৌকীতে গাড়ীয়া করিয়াছিল তৎপুত্র নাগপুরের রাজা পলায়ন করিলেন সংপৃতি সে হাওসদার ও অমাদার ইরা পকিয়াছে ও মোকাম কানপুর তাহারদিকে আসা গিয়াছে ও তাহারদের বিষয়ে অদ্যত হইলে তাহারদের অগ্ৰাহ নানাভাবে সাধু হইল এবং এতদেশীয় হাওসদার ও অমাদারদের বিচারেও তাহার দাশন্য হইল তাহাতে তাহারদের বিষয়ে এই প্রকৃষ্ট হইয়াছে যে তাহারদের মুক্তাংশীক তাহারদের শরীর হইতে বিড়িয়া মেলিলে ও তাহারদের তরোণ তাহারদের মস্তকের ওপরে রাখিয়া ভাঙ্গিলে ও তাহারদের পক্ষা তে চোল মাড়িয়া তাহারদিকে সৈন্যের জাউনি হইতে দূর করিলে ।

বক্তব্য ।

ইংলণ্ড দেশে জুলাই মাসে এক শত বিশ মেঘ মাঠে চরিত জিল পরে মেঘাশ্রম বেধিয়া এক বৃষ্টির দীর্ঘ সকল প্রবাহ ইয়া দীর্ঘািল পরে তাহারদের ওপরে এক বজ্রাঘাত হইল তাহাতে সে সকল মারা গেল ।

সংবাদ ।

৪ জানুয়ারি ১১ পৌষ মোং রিসকে গুমের এক ব্যক্তি বাকই জাতি মরিয়া ছিল তাহার দী মমতা হইয়াছে ।
৪৪৮৮ মুখোনাথায় প্রান কুলি তিলি মাতিয়াহ সন্নক শ্রীমপুরের নিকটবর্তি মোং বজ্রতপুর বাস করিতে তাহার বিবাহ অনেক জিল সংপৃতি ৬ জানুয়ারি ১৩ পৌষ বহরতিবারে তাহার পর লোক পুষ্টি হইয়াছে পরে তাহার দুই পত্নী সহগাম করিয়াছেন তাহারদের মধ্যে

এক জনের বয়স্কম অল্পমান পঁচিশ ২৫ মর আর এক জনের বয়স্কম পঁচিশ ২৫ বৎসর জিল ।

চণ্ডাল গণ ।

চণ্ডাল গণ হইতে শ্রীশ দিনেহর তারিখের সম্ভার আনিয়াছে যে মেঘা নে তপুলাদি দ্বারা অনেক মৃত্যু হইয়াছে যে দুই পুরুষ আট টাকা মৌল জিল সে বটে এখন তাই টাকা মৌল দিল হইতে তাহার কারণ এই যে আলু ও গাজর তরু টাকা মৌল হইয়াছে তৎপুত্র লোকেরা মোতার দালি আলু ও গাজর দিতেছে ।

সিংহুর ।

পূর্ব সমুদ্রেতে পুলপিনারের নিকটে সিংহুর নামে এক গুপ্তদান আছে সে গুপ্তদান আরতলে দশ কোশের অধিক লহে হিন্দুরদের নামের মত তাহার নাম যখন মালিই লোকেরা পূর্ব হিন্দু জিল তখন তাহারদের রাজধানী সেই গুপ্তদান জিল পরে মালিই লোকেরা মূল মাল হইলে সেই গুপ্তদান তাহারদের রাজধানী রছিল না তাহাতে তরুণা বাণ্ড হইল সেখানে কেবল কতক ফল মালিই লোক বান করিত । গত বৎসর শ্রী মৃত মর স্তম্ভাঘর্দ রায়স সাহেব সেই গুপ্তদান ইংল্যান্ডেরদের নামে অধিকার করিলেন ও সেখানে লগর বসতি দরাই লেন সে আজ এক বৎসর হইল ইহারি মধ্যে সেখানে নানা দেশ হইতে লোক আসিয়া বসতি করিতেছে ও সে এমন সকল দেশের মদ্যবস্ত্রী ও বানিজ্য দান হইয়াছে যে পুণ্য তাহার মত নাই ঠান দেশ হইতে অনেক লোক সেখানে আসিয়া

বান করিতেছে ও বানিজ্য করিতেছে ও অন্য শহর ভারিয়া সেখানে আসিতেছে ও তৎপুত্রের মাল যে তাহার যার সে দিনেহ দুই দিন সেখানে হিন্দু মাল করিয়া যায় না তাহার দারাও তব শ্রী বানিজ্য হইতে পারে এবং সেখানে তাহার রাখিবার এমন গুপ্ত দান আছে যে সেখানে কোন পুকার কাচ ও তুলা লাগিতে পারে না তাহাতেই তাহার অমাদানি সেখানে অতিশয় । এবং ঠান পুষ্টি দেশ হইতে তিনি আসিয়া গুমের মত সেখানেই থাকে পরে সেইখান হইতে অন্য দেশের গুণি হয় ।

স্কুল সোমসিটার ইন্ডাহাম ।

মোং কলিকাতায় যে স্কুল সোমসিটার মকুর হইয়াছে তাহাতে অনেক ভাণ্ডান ইংল্যান্ড লোক ও হিন্দু লোক ও মূলমাল লোক সন্নক আসেন তাহাতে তারি তম ভাণ্ডান আনবারের বর্টা ত তারি ভাণ্ডান হইয়া তিন মাস অতঃ ২ তারি বর্টাতে আশনা নিকটবর্তি মকুর বালকেরদের ইন্ডাহাম হইয়া গা কে ও জানুয়ারি ১০ পৌষ মোমবার আর শু হইয়া কয়েক দিন দানে ইন্ডাহাম হইয়া ৬ জানুয়ারি বহরতিবার শ্রীমৃত বার রাখিবার দেবের বর্টাতে দুই প্রহর বেলায় সময় তিন ক্রমে আর শু হইয়া না গাও গাও ঘণ্টা পর্যন্ত ইন্ডাহাম হইল ইহাতে অনেক ভাণ্ডান ইংল্যান্ড ও কলিকাতায় ভাণ্ডান লোক ও পুণ্য অনেক পণ্ডিত আসিয়াছিলেন । তাহার ইন্ডাহাম বেধিয়া সকলে ভুজ হইলেন এবং তৌশ্রি অন স্কুলমকুর হা আর ইন্ডাহাম তাহারদের পরিশ্রম সাধে বেতন দিয়া তাহারদিকে ভুজ

সমাচার দর্পণ।

করিলেন এবং পূর্ণ দিবস তিন স্থানে যে ইন্ডায়া হইয়াছিল তাহার এক স্থানে ৪৪ জন মেঘের হাজার জিল আর এক স্থানে ৪৭ জন হাজার জিল আর এক স্থানে ৪৯ জন হাজার জিল মহলগে টাড়ি ভাগে ৮৪ চৌরাশী জন মেঘের হাজার জিল ইহার ৪৭ জন মহলকেই পরিপূর্ণা পুষ্ক বেতন দিয়া তুষ্ট করিলেন এই চৌরাশী জন মেঘেরের সহিত জয় মাত শ ত বালক আনিয়াছিল তাহারদের প্রত্যেক জনকে পারিতোষিক আশীর্বাদ্য দেত। ব ও মন্দেয় দিয়া তুষ্ট করিলেন মেঘেরের ৪৭ তুষ্ট হইয়া বালকেরদের শিক্ষার পুতি অধিক পরিশ্রম করিলেক ইহাতে ব। লকেরদের শীঘ্র আলোদয় হয় এমত নো পান বটে এবং তিন মাসের পূর্বে যে বালকের ইন্ডায়া যে কন আলোদয় দে খা গিয়াছিল তিন মাস পরে এই ইন্ডায়া যে তাহারদের পুর্নহইতে আলোদয় অ দিত ইহাচারে এমত জান হইল।

অগ্নিহোহ।

১৩ পৌষ ৩ আশুয়ারি মোং কলি কাতার শ্যাম বাজার অগ্নি লাগিয়া দুই পুহর পর্যন্ত দাহ হইয়াছে তাহাতে অ নেক লোকের অনেক ঘতি হইয়াছে। এবং ১ দিন সন্ধ্যা কালে মোং চানকে অগ্নি লাগিয়া অনেক ঘর পুড়িয়াছে।

আশীর্বাদ্য প্রদান।

ইংগ্লেণ্ডের শিবরঙ্গন শহরে এক লুতল প্রদায় হইয়াছে সে প্রদায় এগার তাল। তাহার মধ্যে কোন মেয়াল নাই কেবল বোতালের পরিমাণে লোহার গিল্পা করিয়া তাহার গুণের জাত করিয়াছে এই পুকার এগার তাল। হইয়াছে সে এমত শক্ত হইয়াছে যে সে কখনও পড়িবার

ভর নাই তাহাতে এগার স্থানে তিনশ রাখা যাইবেক।

মিথ্যা জনরব।

মোং কলিকাতাতে প্রায় দুই সপ্তাহ পর্যন্ত এক মিথ্যা জনরব হইয়াছিল যে রামা মুন্সীফরাম নামে এক জন পুন্নিহ মুন্সীফরাম কলিকাতাতে আছে তাহার লিখিত বীন সনতি আছে তাহার এক কন্যা বিবাহোপযুক্ত। তা হাতে সে এইকন পুকাশ করিয়াছে যে আশি জামার এই কন্যাকে ব্রাহ্মণ কিছু ইবদা বিম্বা কায়দ্ব কিম্বা মংগোল বাতি রেখে অন্যকে প্রহান করিব না এবং যা হাংকে কন্যা দিব তাহাকে লগাদ দশ হাজার টাকা ও এক বাড়ী ও এক বাগান ও তাহার পুতিপালনাথ মশাবরা পুতি মাদে ত্রিশ টাকা করিয়া দিব। তাহাতে এক জন বিশিষ্ট লোকের সন্তান সে ক ন্যা বিবাহ করিয়াছে। এই কন্য দুই লো কের মিথ্যা জনরব করিতে এ অঞ্চলের স কল লোক ওহিৎ জিল তাহাতে কলিকা তার অনেক বিশিষ্ট লোক এই বিষয়ের লনা মত অনুসন্ধান করিয়া সে বিষয় নিতান্ত মিথ্যা জানিলেন রামা মুন্সীফ রামের কন্যা নাই। কেবল কুলসকের কুসুদ্য মান্ত।

ঘরের লৌহময় নাজ।

ইংগ্লেণ্ড দেশে পূর্বে যে তিনিস কাঠে অন্নিত সে মকল তিনিস সন্মতি লৌহ ডে করিতেছে। লৌহের লৌকাঃ বিঘ্নে পূর্বে জাপান গিয়াছে এখন শুনা যাইতে ছে যে সেখানে ঘরের বরণা ও আলাদা ও টোকাঠ ও বানকাঠ ও ঘরের মধ্যে পড বিঘ ও ঘরের পোতার লিখিত যে ফুলবুজ্জি সে মকল চালা লৌহ

নির্মাল করিতেছে এই তিনিস কাঠে ত যে কন মোটা হয় সে কন লৌহে মোটা হয় না কিন্তু কন্ম সেই কন করে এবং এই তিনিস কাঠে নির্মিত হইলে মঠা বদলাইতে হয় লৌহ নির্মিত তিনিস বদলাইতে হয় না তাহা হিন্দাব করিলে কাঠের এই মকল তিনিস হইতে দৌ হের করিলে মঠাও অধিক নহে লৌহ জঙ্ক যখন ঘর ভারে তখন অন্য ঘরের কারন রাখিলে হয় নতুবা বিকয় বিশেষ হয় ততএব এই বিবেচনা করিয়া ঘরের মকল মাজ লৌহময় করিতেছে।

শর্শ।

বোম্বাইয়ের লিকট বংসর। যে শর্শ ওংগন হইয়া অন্য দেশে গিয়া থাকে এই বংসর সে শর্শের কৃষ্ণ লম্ব হইয়া ছে ওংগুস সে দেশে শর্শ অভিমূল্য হইবেক ও সেখান হইতে অন্য দেশে কি পুকার যাইতে পারিবেক।

দিল্লী।

দিল্লী নগর তাৎ হিন্দুস্থানের রাজ বানী অতএব তাহার মূল জানা হিন্দু বানীয়া লোকেরদের আচরণ তৎপুষ্ক তাহার পুথ্য বিবরণ লিখা যাইতেছে।

দিল্লী এই শব্দার্থনুসারে কোন হিন্দু কহেন যে পূর্বে রঘুবংশীয় দিল্লী নামে এক রাজা হইয়াছিলেন তিনি ঐ নগর পত্তন করিয়াছিলেন তৎপুষ্ক তাহার নামানুসারে দিল্লী নাম হইয়াছে। কিন্তু সে কাণ বড় যুক্তিনিষ্ঠ হয় না যেহেতু রামায়ণে ও অন্য মহাকাব্যাদিতে রঘু বংশীয় মহারাজেরদের রাজধানী নগর করিয়া অযোধ্যাকে অনেক বর্ণনা করিয়া ছেন তাহাতে দিল্লীর নামও লিখেন নাই এবং অযোধ্যা হইতে দিল্লী লিকটও নহে

সমাচার দর্পণ।

এবং স্বর্গীয় জমিদারগণ যুদ্ধিতির
কাজকান্ডে হস্তান্তর করিয়া এই দিল্লীকে
কেন্দ্র করিয়া সেনা সমন্বিত হইয়া না যে
হেতুক সে হস্তান্তর দিল্লীর গুপ্ত পটিকা
কোন ভিত্তর এখন সেখানে কেবল এক
দেওয়ান আছে আর সকল বিষয় লুপ্ত
হইয়া অথবা হইয়াছে কিন্তু মহাভারত
দ্বিতে যে যুদ্ধিতিরদের বান্ধবান ইন্দ্রপুত্র
লগ্নারের বর্ণনা করিয়াছেন সেই স্থান দিল্লী
পুর্বে তাহার নাম ইন্দ্রপুর ছিল। হিন্দু
স্থান ঘনানকাত হওয়ার পর এই রাশিয়া
নামে নাম দিল্লী হইল।

মুসলমানেরা দিল্লীর পুর্বে বিবরণ এই
কহন যে পুর্বে বিলুপ্ত নামে এক ক্ষুদ্র লো
কের বালক রাখালকে কলিকর্ত্তি। এক
দিন অনেক রাখাল একত্র হইয়া আশ্রয়
গত হইয়া উজল বৈদ্য। এক ব্যক্তি ঘর
বোর্ধ্ব করিয়া তাহারদের লিকট আছিল
এবং সকল রাখালের সহিত আশ্রয়
করিল এই বিলুপ্ত নামে রাখালের মৃত্যু ও যুদ্ধি
পুত্রিতত্ত্বজ্ঞিত এন দেখিয়া এই ঘরীর বারং
তাহার দিকে দেখিতে লাগিল। পরে দিন
কহিল যে যে ঘরীর ভূমি কেন আমার
দিকে বারং দেখিতেছে। ঘরীর গুপ্তর
করিল যে ভূমি বদশাহ হইবে। ইহা শু
নিয়া সকল বালক ঘরীরকে গুনাহন ক
রিতে লাগিল। পরে ঘরীর আশ্রয় স্থানে
গেল রাখালগণও আশ্রয় ঘরে গেল।
অলঙ্কারে ঐশ্বর্যবান হইয়া এই দিল্লী বাদশাহ
হইল এবং যে স্থানে গরু চরাইতেছিল ও
ঘরীরের সহিত বধোবন হইয়াছিল
এই স্থানেই রাশিয়া কলি ও আশ্রয় না
মান্দুরের তাহার নাম দিল্লী রাখিল।

এক বৃত্ত হিন্দু ও মুসলমান।

এক বৃত্ত হিন্দু ও অকপণী মুসলমান
এই দুই জন বৈদ্য। এক নথি ছিল ও
আশ্রয় বৃত্তোক্তনের নিয়ম দুই জনে এ
ক নথি উল্লিখিত নথি যাইতে এক স্থানে দু
লল মুলের এক বৃক দেখিয়া মুসলমান
ভক্তিবৃত্তিক তাহার লিকট গিয়া পুনরায়
বিকরিল। হিন্দু তাহা দেখিয়া এই গাঁজ
ওপড়াইয়া ও পায়ে দলাইয়া অনেক অশ
মান করিল। ইহাতে মুসলমান খাশা
হইল ও মনের মতো হির করিল যে আ
মিও হিন্দুরদের জন্য এক গাঁজ এই বন
করিয়া ইহার গুপ্তর দিব। মুসলমানের
এই মনোবৃত্তি বৃত্ত হিন্দু বৃদ্ধ। পরে
দুই জন একত্র হইয়া গমন করিতে লা
গিল। এক স্থানে হিন্দু এক বিলুপ্তের গা
জ দেখিয়া অত্যন্ত ভক্তিমুহুর্ত্তি পূর্ণ
ও পুণি করিল। এই মুসলমান
হিন্দুর পুর্বাশ্রয়ের পুত্রিফল দিবার ক
রন এই বিলুপ্ত গাঁজের পাড়া ও তল পু
ত্রি লইয়া হিন্দুরদের দেহতা আন করিয়া
হাতে পায়ে দলাইতে লাগিল ও অত্যন্ত
অনুভূতির কারণ গুহ্যতার পক্ষে ল্প
করাইয়া ফেলিয়া দিল। বৃত্ত হিন্দু কহিতে
লাগিল যে আমার দেহতা ভূমি যদি মৃত্য
হও তবে এইফল ইহার পুত্রিফল দেও।
এই কথা কহিবারান্ত্রই মুসলমান এই বি
লুপ্ত ভূতালির ভূমিয়ার মাটিতে পত্রি
য়া গাঁজগতি দিতে লাগিল ও তাহার ম
হিগি ঢোকার হইয়া ছিল। হিন্দু তা
হার লিকট আশ্রয় ঘরের পুত্রিফল
পুর্কার করিতে লাগিল ও অন্য পুর্কার
ওষধি দিয়া ভাল করিল।

| বান্দার ভাণ্ডা | | | |
|----------------|-----|------|-------|
| জিনিস | মোন | অবধি | ল্যাভ |
| লুপ্তি | ১ | ৩৫০ | ৪ |
| ভেড়া ঠৈল | ১ | ২০ | ৩২ |
| গাই মরিচ | ১ | ৫ | ৩১০ |
| নারিকেল ঠৈল | ১ | ১৫ | ১৩১০ |
| বুগা কাহোয়া | ১ | ১৫০ | ১৮ |
| আবান লুপ্ত | ১ | ৩১০ | |
| পাটনাই আনা | ১ | ২১০ | ২৮ |
| চাপা পাটনাই | ১ | ৩১০ | ৩১০ |
| পাছড়ি উত্তর | ১ | ২১০ | ২৫ |
| পাছড়ি মধ্যম | ১ | ২১০ | ২১০ |
| মুগী উত্তর | ১ | ১১০ | ৪৮ |
| মুগী মধ্যম | ১ | ১১০ | |
| বাগাম | ১ | ১১০ | |
| মুগা ধান | ১ | ২০ | ২০০ |
| পাটনাই বৃত্ত | ১ | ৩১০ | ৩১০ |
| অবধি জালি | ১ | ৫ | |
| উত্তরমোহর | ১ | ২০ | |
| মধ্যম দৃত | ১ | ১০ | ৪৮ |
| ঠৈল দৃত | ১ | ১০ | ১১ |
| মধ্যম ঠৈল | ১ | ১৫ | |
| নীল উত্তর | ১ | ১৫ | |
| অবধি পুকার | | | |
| নীল | ১ | ১১০ | ১৮ |
| সোরা উত্তর | ১ | ৭ | ৭১০ |
| মধ্যম | ১ | ৩৮ | ৬৫ |
| দিলী কাশীর | ১ | ১০ | ১৩৮ |
| মধ্যম | ১ | ১১০ | ১০ |
| খার দিলী | ১ | ৬০ | |
| ভেড়ন | ১ | ৫০ | ৫০ |
| ভায়াঙ্ক | ১ | ৪১০ | ৪১০ |
| দন্দন | ১ | ১৫ | ১১ |

এক সমাচার দর্পণ পুরানপুরের ছাপাখানাতে পুত্রিফলই শনিবারে ছাপা হয়। বাহির গজনের আশ্রয়ক হয় তিনি পুত্রিফলের ছাপাখানাতে
আশ্রয় নাম পাঠাইলে লগ্নার কাশর তাহার লিকট পাঠান হাইবেক তাহার দুল্ল্য মানে এক টাকা দিলি বাস্কর করিয়াছেন যদি তাহার লিকট
কাশর লগ্নারের তবে তিনি পুত্রিফলের ছাপাখানাতে সমাচার দিবারান্ত্র তাহার লিকট পাঠান হাইবেক।

সমাচার দর্পণ

৮৭ সংখ্যা।

শনিবার। ৪৫ জানুয়ারি মল ৪৮২০। ৩ মাঘ মল ১২১৬।

দর্পণে দুই পৌরোহিত্যের কার্যবিবরণঃ।

ব্রাহ্মসমিতি জ্ঞানতত্ত্ব সমাচার দর্পণে ॥

কোল্লানির কাণ্ড।

কোল্লানির শতকরা জয় টাকার মূদ্রের কাণ্ড কয় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা দুই আনা ডিকোণ্ড। বিক্রয় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা জয় আনা ডিকোণ্ড।

মস্তাহের পঞ্জিকা।

| ১৫ | জানুয়ারি | শনিবার | ০ | মাঘ |
|----|-----------|-------------|---|-----|
| ১৬ | ২ | রবিবার | ১ | ২ |
| ১৭ | ৩ | সোমবার | ২ | ৩ |
| ১৮ | ৪ | মঙ্গলবার | ৩ | ৪ |
| ১৯ | ৫ | বুধবার | ৪ | ৫ |
| ২০ | ৬ | বৃহস্পতিবার | ৫ | ৬ |
| ২১ | ৭ | শনিবার | ৬ | ৭ |
| ২২ | ৮ | রবিবার | ৭ | ৮ |

সমাচার দর্পণ।

নাগপুর।

৪৮৪৭ সাল ১৩ দিসেম্বর তারিখে মোঃ নাগপুরে ডাঃ ডাক্তার রাজার সহিত ইংলিশ বিয়েরদের দুই হইয়াছিল তাহাতে সে রাজা মুক্তে পরাজিত হইয়া রাজ্যভ্রষ্ট হইলেন ও তাহার রাজ্য ও তাহার ঘরানা বিঘ্ন সে সকল ইংলিশদেরদের হস্ত গতি হইল অতএব সেই দিনের স্মরণ

নের কারণ ৪৮৪৭ সালের ১৩ ই দিসেম্বর তারিখে মোঃ নাগপুরে ডাঃ ডাক্তার রাজার সহিত ইংলিশদেরদের দুই হইয়াছিল তাহাতে সে রাজা মুক্তে পরাজিত হইয়া রাজ্যভ্রষ্ট হইলেন ও তাহার রাজ্য ও তাহার ঘরানা বিঘ্ন সে সকল ইংলিশদেরদের হস্ত গতি হইল অতএব সেই দিনের স্মরণ

গান্ধীনাগর ওপরীণ।

আমিরা শ্রুতিতেছি যে গান্ধীনাগরের বন কাটাওয়ার যে ওয়াগি হইতেছে তাহার জল এখন দেখা যাইতেছে যেহেতু গাও বন্যের পাঁচ শত মজুর লোক তিন হাজার বিঘা জমির বন কাটিয়া পরিষ্কার করিয়াছে এবং পর্ষে মেখানে লোকেরদের অতিশয় পীড়া ও ব্যাঘ্র ভয় হইত এখন সে সকল কিছুই নাই।

এবং অন্য কতক ভাগ্যবান লোক সেই বিঘ্নের অধীক্ষ সাহেব লোকেরদের নিকট পেশদার হাজার বিঘা জমির বন কাটাইবার কারণ টীকা করিয়া লইতে চাহিয়া জিলেট কিস্ত অধীক্ষ সাহেবেরা তাহারদিগকে দিলেন না।

এক শত মণ্ড লোকেরা ই কর্মকারী সাহেব লোকেরদের নিকটে আশানারদের বনতির কারণ ই পরিষ্কৃত স্থানে জমি চাহিয়াছিল কিন্তু তাহার বিশেষ সমাচার পাওয়া যায় নাই। সেখানে যে স্থান বন কাটাইয়া পরিষ্কৃত হইয়াছে সেখানে কখনো কৃষি করিতেছে।

গান্ধীর বেগামান।

ইংলিশ দেশে লোকেরদের গান্ধীনাগর

মহুবা গান্ধীর দ্বারা নির্মিত হইয়াছে সেই গান্ধীর প্রথম বেগামান মন্দির গিয়াছে যে এক ঘণ্টার সাত ফোঁট গান্ধী তলে যদি সেই প্রথম এই দেশে হইত তবে অন্য শনিবারে প্রত্যয়ে ই গান্ধীতে আয়োজন করিলে মঙ্গলবার প্রত্যয়ে মোঃ বিহীন ইহজ্ঞান যাইত।

বাল্লের নৌকা।

ইংলিশদের সমাচার পত্রে জানা যাইতেছে যে বাল্লের নৌকা হওয়াতে লোকেরদের ওপরকার নিত্য নতুন প্রকার হইতেছে যে পৃথিবীর মধ্যে লতন শহরের তুল্য অন্য শহর নাই সেখানে লোক ও অতি বিস্তারিত ও প্রচুর পুতিদিন সেখানে মৎস্যের ব্যয় অধিক এবং কোন দিন সেখানে হুজ ও তুলা ও বাতান অধিক হইলে মৎস্য ই শহরে অতিদুর্লভ হয় এবং কোন দিন মৎস্যের প্রচুর প্রচুর পুতিদিন মৎস্য ও ব্যবহার করিতে হয় এই দুইরকম এখন বাল্লের নৌকার দ্বারা দূর হইয়াছে যেহেতু পুতিদিন এখন পুতিদিন কালে ই পৃথিবীতে বাল্লের নৌকা লইয়া মৎস্য ধরিতে যায় ও সমুদ্রে মৎস্য ধরিয়া ই বাল্লের নৌকাতে মিশ্র জল রাখিয়া বাল্লের নৌকাতে সেই মিশ্র জলে মৎস্য অধিক রাখা ও সেই দিন মৎস্যকালে বাজারে তাই মৎস্য বিক্রয় করে ইহাতে মৎস্য দুরিত হইতে পারে না ও এত বড় শহরে এক দিনও মৎস্য অল্প হইয়া

সমাচার দর্পণ ।

না। অতএব মৎস্যের বিষয়ে বাগ্দের নৌকার অধিক ওলকার দেখা যায় ডেকে।

আল্ফ্রেড ঘোষ্টিস ।

পাঁচ মাস হইল ইংলণ্ড দেশে মরোৎসব এক ঘোষ্টিস মরিল তাহার আশুর শেষ চৌদ্দ দিন থাকিতে কেবল ওতম মদিরা মাওয়াইয়া তাহাকে বাঁচাইয়া রাখিয়াছিল। বৎসরাতে এখন ঘোষ্টিস মৌত হয় তাহাতে লক্ষ টাকার বাজী সেই ঘোষ্টিস ওপরে রাখিয়াছিল।

বোম্বাইয়ী ।

বোম্বাই অঞ্চলহইতে সম্রাটর আনিয়াছে যে ১৬ নবেম্বর তারিখে কত দেশ হইতে আহাজ ভাড়া করিয়া মোং ভাটী পর্যন্ত ভাড়া বাসার কারন আশী জন বৈরাগী ঘাইতেছিল তাহারদের মধ্যে স্ত্রী ও বালক ছিল তাহারা ভাটীর সম্মুখে লীক্ষিতমাত্র বোম্বাইয়ীরা আনিয়া তাহাদের আহাজ দেখিল এবং তালি তাহাদের চক্ষিণ জনকে আহাজের বাহিরে আনিয়া একই করিয়া তাহাদের মাথা কাটিয়া সমুদ্রে তলে ফেলিয়া দিল। এবং তারি তন স্ত্রী লোককে তাহারা মরে লইয়া গেল ও অবশিষ্ট লোকেরদিকে নানা অস্ত্রাংরা আঘাতী করিল এবং আহাজের পালি লইল ও তাহাজ তুরাইবার কারন তাহার নীচে জিদ্ধ করিয়া রাখিয়া চলিয়া গেল কিন্তু ঐ আঘাতী লোকেরা ঐ জিদ্ধ কোন পুকারে বন্ধ করিল তাহাতে আহাজ ডুবিল না এবং তাহারা আনিবারা ওলস হইয়া আনিয়া বন্ধিয়া এক পালি সেলাই করিল ও তাহা ওয়াইয়া আহাজ তীরে আনিয়া মোং ভাটীতে যে ইংলণ্ডীয়েরদের ওলস

মোহেব আছেনতি নিচে সেই সকল দুর্ বদ্যাকৃত লোকেরদিকে আগল ঘরে তাহায়া তাহারদের চিহ্নিন্দার কারন টি বিন্দক ও বায়লীয় বিন লিখন করিয়া দিলেন তাহাতে অলুমান দশ জন লোক মৃত হইল অবশিষ্ট মারা গড়িল।

এই পুকারে সেই দেশে বোম্বাইয়ীরা দৌরায়া করে তৎপুত্র সে দেশের লোক সকল অধির ততএব সেই দুর্ভাগ্যে মারা মেরে মনের কারন ইংলণ্ডীয়েরা ত লোক সৈন্য পাঠাইয়াছেন।

ওতরাৎ দেশে সমুদ্রের তীরে দারতা নামে এক মন্দির আছে শুল্ক ও জরামদ্ব ভয়ে সেখানে গুপী লিখান দিয়া বাস করিয়া ছিলেন। তদবধি সে স্থান অতি পুনিদ্ধ এবং সেই স্থান দশনাগী পুতিবৎ মর পৌলর হাজার লোক সেখানে গিয়া লাগিয়ান করে। ঐ দারতা দেশের রাজা মলু মানিকা মোয়াসি ডিল ১৮৭৭ সালে ইংলণ্ডীয়েরদিকে মন্দির লিখিয়া দিয়াছিলেন যে আমার পুজারী বোম্বাইয়ীর কর্ম কখনও করবে না ও ইংলণ্ডীয়েরা ও তাহার লিখটে মতা করিয়াছেন যে তোমার এই দেশ কোন ওলগত হইবে না। এখন সেই দারতা পারত্রিক বিনতে পরিত্রু সমুদ্র তা বোম্বাইয়ীরা পরা মর্শ বহিতেছে যে ঐ দারতার বিন লুট করে।

মরন।

১৪ পৌষ তারিখে মোকাম কলিকাতা নিয়তলার ঘাটে কুণৌবিন্দ মেন পর লোকচাপ্ত হইয়াছেন অশ্রুত ওলদমান মেন ও শ্রুত শিবপুমান মেন ও অশ্রুত রাবায়োহন মেন ও অশ্রুত মদনমোহন মেন ও অশ্রুত ভুবনমোহন মেন ও অশ্রু

ত লালমোহন মেন তাহার এই চরু পুশ আছেন তিনি আগল মরনের পুর্বে তাল মল্লতির ওয়িল করিয়া গিয়াছেন তাহার টরনি অশ্রুত লালমোহন চৌধুরি ও অশ্রুত রাবায়োহন চৌধুরি ও অশ্রুত শিবপুমান মেন। এবং অশ্রুত রাবায়োহন চৌধুরির সহিত যে তাহার তমিয়া রির মোতদমা মদর দেওয়ানি অদার তে হইতেছিল সে মোকদমা বিলাত আনিয়া হইয়া মোকদমা হইতেছে সে মোকদমাও মোকদমার ঐ তিন জন।

মহামত্মা ।

বোম্বাইর লিষ্টবর্তি সমুদ্রের তীরে চিহ্ন হাট লক্ষ্য এক মহামত্মা জনহইতে ওয়ালাজিল পুষ্কার অলে পুষ্কি হইতে পাঠিল না তাহাতে লোকেরা তাহাকে মরিয়া মৃত করিয়া সকলে আনিয়া ওর পুষ্কি বরাইল।

মত্বে গড়।

১৭ দিসেম্বর তারিখের মত্বে হ গড়ের পত্রে আনা গেল যে তৎপুষ্কি পক্ষ্ম দেশে অহাশি মুম্বায় হইয়া লই সে দেশে নুষ্কি হওয়াতে বিধিৎ মুম্বা লান হইয়াছে মাত্র এখনও সেখানে পালি এক টাকায় তৌদ শের বিষয় হইতেছে সে মাদকার দুর্ভাগ্য হওয়ার কারন এই যে মোহনমোহন হইতে অনেক তৎপুষ্কি দুবা বারি লাতে আনিয়াছে।

সীকা।

ইংলণ্ড দেশে মৎপুতি সকল লবীর ও পরে চালা নৌহের সীকা হইতেছে ই

সম্পাদক দর্পণ

হাউসে নৌকায় দ্বারা পার হওয়া যায় নাহি।
এই মৌসুমের অতি নতুন মৃগা চারি লক্ষ
টাকা।

লগন বছর শেষে যে মহামৌলীক হই
 যাহে তাহাতে আশা লব তাঁক বায়
 হইয়াছে। ই-পুস্তকে মহামন্ত চাঁদা নৌ
 হেতে এস মৌলীক করিতে আজ। বরিয়া
 লেন সে মৌলীক যাহা বহু খীলানিয়া
 সে খীলান টোকা তিন শত চত্ব্বিণ্ড হই
 ও অলহেহে ও হুমেদু হাহাত হাত
 তাহাৎ বহু দিয়া বহু। হাহাত অনায়া
 সে যাহাতে পাণ্ডি বেক।

ਬਿੰਦੂ ।

সকলের অধর্মেও আয়েল যে আমেরি
কাজে স্বর্ণ ও বর্ণের আঁকর আছে সে
খান হইতে স্বর্ণ ও বর্ণ আনিয়া মাইগ্র
ব্যক্তি হয়। ১৮৯২ ইংরেজি সালে আমে
রিকা দর্শন হইয়াছে সেই অবধি ১৮৭০
মালবর্ষ এই তিন শত এটি বৎস
রের মধ্যে আমেরিকার মে আঁকর হই
তে এক হাজার তিন শত তেত্রিশ কোটি
টাকার বর্ণ ও স্বর্ণ ইংরেজি আনিয়াছে
টাকার মধ্যে এখন তাৎ ইংরেজি দুই
শত আশী কোটি টাকার স্বর্ণ ও বর্ণ
বাহু আছে ইহাতে ঘোঁসা গেল যে পুত
বৎসর দুই কোটি মাইগ্রি লক্ষ টাকার
বাহু কম হইয়াছে এই যে কম হইয়াছে
ইহার মধ্যে বৎসর সাত আশের এক
শত অলঙ্কার গিয়াছে আর তাৎসং
স্বর্ণ ও বর্ণ ভরত বয়েও চালপুত্ৰি বেশ
বাণ।

ମାଡ଼ିବୁ ଓଲଟି !

ইংলণ্ডে ওয়াশিংটন গার্ল প্রদত্ত হইয়াছে
তাহার দ্বারা এতদেশীয় ভাণ্ডার লো

সেরাও তাৎপা ন বিন ঐশ্বর্য্য মুখাঙ্গ করিতে
 ছে কিন্তু দুই শত এক চল্লিশ বৎসর পূর্বে
 ইংলণ্ডেও গাঁড়ী ছিল না। ইংলণ্ডের রাজা
 ও রাণীরাও খাল কেবল ঘোড়ার ওপরে
 চড়িতেন। দুই শত এক চল্লিশ বৎসর
 হইল এক ব্যক্তি তাৎপা বাস শ্রাঘ্য গাঁড়ী মূ
 ল্য করিয়া আপনি আরোহণ করিয়াছি
 লেন। ১৬৭৭ মালে লণ্ডন শহরে কেবল
 শুণ্ডম বর্ণে প্রুত ৫০ চরুড়া গাঁড়ীমাঠ
 ছিল। তাহার পর পোনের বৎসর দুই শ
 শত গাঁড়ী ছিল তাহারপর দুই বৎস
 রেতে তিন শত গাঁড়ী হইল তাহারপর
 মাত্ৰ বৎসরে চারি শত গাঁড়ী তাহারপর
 তেত্রিশ বৎসরেতে মাত্ৰ শত তাহারপর
 ঘোব ৫৫-মরেতে আট শত গাঁড়ী ১৭৭৭
 মালে লণ্ডন শহরে শুণ্ডম চরুড়া গাঁড়ী
 নয় শত ছিল। ১৮০৭ মালে এগার শত
 গাঁড়ী ছিল।

राजकर्म्ये नियोगः ।

১ জানুয়ারি শ্রীযুত এল ডেবিশ সাহেব
বকেনলখণ্ড ও মাগার ও নর্মদা নদীর ওভার
ভীরবর্তি দেশে ইংল্যান্ডীয়েরদের কর্মকাণ্ড
সাহেবের পেন্সার হইয়াছেন।

শ্রীযুত রিচার্ড বেল্ম সাহেব বঙ্গদেশ
ও মাদ্রাস ও নর্মদানদীর ওভর ডিরেক্টর
হোম ইন্সপেক্টরের কর্মকাণ্ড সাহে
বের পেন্সার।

जुलैकैमिल ।

মুন্সীম হোমিলেদর অধঃপতিত শ্রীযুত
দৌহুদেদর মাহেব ই-রশেদ মুদান বরিত্ত
জেন। এখন স্থান আইয়েতে যে মাহেব
গড়ের শ্রীযুত মদ্র তেমন বোলবুলক
মাহেব মুন্সীম কেমিলেদর সজে কয়ে
নিযুক্ত হইবন। পূর্বে এই দেশে যে
আশেব শাংগ পারদশী ও গদ্র বরামণী ও
হিন্দুমানপতিঃও কীর্ত শ্রীযুত কোলবরক

নাহের মদ্রেরে এগালি অদালতের পুখান
কাহ্নে লিগেন ও কিছু দিন পরে সুখান
কৌশিলে নিযুক্ত হইয়া কিছু কালকেন
করিয়া নানা অশাণিগণি মন্মুর্জনবুর
ইংল্লং যাত্রা করিয়াছেন তাহার কনিষ্ঠ
ভাতা এই শ্রাব্ত মর তেহান কোলবুরু
নাহের ৪০ দিগমদ্র তড়িথে যো-
তেহে পঞ্চ ভাড়িয়া কনিষ্ঠাত্য আশি
তেহেন।

ବାଲିଆ ।

তুল। গত মণ্ডায়ে প্রায় কিছু তুলার
আধদানী হয় নাই এবং বাজারে অ
দিক নাই।

তুলারি মূল্য এই মস্তাহে কিছু অল্প
মত হয় নাই ।

নীল। এই মস্তাহে প্রাণ নীল কিছু নয়
বিকল্প হয় নাই। তাহার কারণ এই যে
অন্য দেশীয় লোকেরা আশ্রয় পুণ্ড্রাজ
নাটুন্যে নীল হয় বহিরা লইয়া গিয়াছে
এখন গাহক অধিক নাই।

জন্ম। বৎসর হইতে পাঁচ বৎসর এই
 দেশ হইতে অল্প দেশে অতিক্রম তুল
 গিয়াছে। ৪৮৮৮ সালে ইংলণ্ড দেশে
 জয় লক্ষ টাইম হাজার এক শত ষটশত
 মোন তুল গিয়াছে। ৪৮৯৯ সালে এক
 লক্ষ পঞ্চাশ হাজার পাঁচ শত ছেত্তিশ
 মোন তুল গিয়াছে। ৪৮৮৮ সালে ঠান
 দেশে দুই লক্ষ অষ্টাশী হাজার মাত্ৰ
 পঞ্চাশ মোন তুল গিয়াছে। ৪৮৯৯
 সালে তেবন এক লক্ষ অষ্ট হাজার মোন
 তুল দেশে গিয়াছে।

হিন্দু অন্য ২৫৮২ হইতে পারস্য
দেশে এখান হইতে অধিক নীল গিয়াছে
৪৮৬৮ মনে হয় শত আটক মোন নীল
পারস্য দেশে রপ্তানি হইয়াছিল। ৪৮৬৯

সমীচারণ দর্পণ।

মনে হয় হাজার চার শত আটগির মৌল
নামে মে দেশে রক্তশী হইয়াছে।

পুত্রদান।

মোক্ষ শাস্ত্রের জীহব ও গোপেশ্বর
নামে দুই মামা ভাগিনেয় বান করিতেন
ভায়ে দিগন্ত বীজতা করিয়া বাল মা
পান করিতেন অন্য অধিকা ডাহারদের
ছিল নতুনত লোকেরদের মনে পুত্র
দানার্থে বিনোদিত করিতেন। এক
কালে দুই মামা ভাগিনেয় পরামর্শ করি
য়া দেশান্তরে গেলেন ও সেখানে এক
গোমে এক ভাগবান লোকের বাড়িতে
ওপহিত হইয়া মামা সেই ভাগবানকে
বিলয়ে করিলেন যে মহাশয় আমার সজি
এক ব্রাহ্মণবালকে আমি বিক্রয় করিব
আপনকার বাড়িতে বিপুলসেবার আছে
যদি আপনি ক্রয় করেন তবে ওপকৃত মূল্য
দিয়া ক্রয় করুন আপনকার বাড়িতে
বিপুল সেবা করিবেন। তাহাতে ভা
গবান ব্যক্তি ক্রীড়িত হইল ও ওভয় সম্ম
জিতে এক শত টাকা ডাহার মূল্য দি
হইল এবং অল্প বয়সে মদ্যকার হইতে পাই
বের। এই নিয়মে মামা ভাগিনেয়কে বি
ক্রয় করিয়া এক শত টাকা নগদ লইয়া
পুলিল করিল। ভাগিনেয় এই ভাগবানের
বাড়িতে বিপুলসেবার কর্মে নিযুক্ত হই
য়া পুত্রদান ও নীল ও জলাহরাদি সকল
কর্ম সম্বন্ধে লাগিল ক্রমে এই ব্রাহ্মণের
সহিত ভাগবান ব্যক্তির নাম প্রচারে আ
হার ব্যবহার হইল। এই বৎসে মাসিক
দুই মাস গত হইলে এই ব্রহ্ম ভাগিনেয়
সে কর্ম করাত বিরক্ত হইয়া সেখানে হ
ইতে মুক্ত হইবার এই ওপকৃত ভাবিল।

দ্বির করিল। পর দিন আতি পুত্রদান ও বিক্রয়
পুত্রদানে গেল ও অনুশীলনে পুত্র
বলে পরিক্ষা হইয়া ও কাজা মূল্য
যবনের যত লম্বা করিতে লাগিল।
এ বাড়ীর বর্তা ডাহা দেখিয়া এই ব্রাহ্মণ
কে যবন আন করিয়া আতি ওপকৃত হইয়া
ভাবিতে লাগিল যে হায় এই অত্যন্ত
কল শীল জনহিতিক ব্যক্তিকে এক শত টা
কা দিয়া ব্রহ্মণ নামে এক ব্রহ্মণ লই
এ নিত্যকৃত বৎস হায় আমার এক শত
টাকা গেল আতি ও গেল যদি আমার
আতি ব্রহ্মণের ইহা আনিতে পারি তবে
আমাকে অসংহার্য করিব। দুই তিন
দিন ডাহার এই বৎস ব্যবহার দেখিয়া বা
টী বর্তা ব্রাহ্মণকে নিষ্কণ্ড যবন আন
করিল ও শীঘ্র ডাহাকে বিক্রয় করিবার
নিমিত্ত ডাহাকে কহিল যে হে ব্রহ্মণ তুমি
আপন পিতা মাতার নিষ্কণ্ডে ঘাও। ব্রহ্ম
কহিল যে হে মাহাশয় আমার কোন
কর্ম তুমি পাইয়া আমাকে বিক্রয় করেন
আমি তোমার আগুয়ে অল্প বস্তু মুখে
আজি আপন পিতা মাতার নিষ্কণ্ডে গি
য়া দিমাছি যদি তুমি আমাকে নিরপ
রাধে বিক্রয় কর তবে সকল কথা পূর্না
শ করিব। ইহা শুনিয়া এই বর্তা ভীত
হইয়া আর এক শত টাকা দিয়া ও অনেক
বিলয় করিয়া বিক্রয় করিল এই ব্রহ্মণ
হইয়া আপন মামার নিষ্কণ্ডে গেল ও মা
মার নিষ্কণ্ডে সকল ব্রহ্মণ কহিল। মা
মা শুনিয়া বহিলেক যে না ইহা বেক কেন
মামার ওপকৃত ভাগিনেয় বটো। শীঘ্র
গোপেশ্বরের এই বৎস অনেক কথা পুসিদ্ধ
আছে।

বাঘার ভাণ্ডা

| নাম | মোন | জরি | পরিম |
|----------------|-----|------|------|
| সুপরি | ১ | ৪ | ৪০ |
| ডেরাই তৈল | ১ | ২০ | ৩২ |
| গাছ মরিচ | ১ | ৫ | ৫১০ |
| নারিকেল তৈল | ১ | ১৪ | ১৫১০ |
| জ্বা কাছো | ১ | ১০১০ | ১৫ |
| আবার রতনপুর | ১ | ৩১০ | ৩১০ |
| পাটনাই আবার | ১ | ২১০ | ২৫০ |
| চালু পাটনাই | ১ | ৩১০ | ৩১০ |
| পাছড়ি উত্তর | ১ | ২১০ | ২৫ |
| পাছড়ি মধ্যম | ১ | ২১০ | ২১০ |
| মুগা উত্তর | ১ | ১৫০ | |
| মুগা মধ্যম | ১ | ১১০ | |
| বাগাম | ১ | ১৫০ | |
| মুগা ধান | ১ | ২০ | ২০ |
| পাটনাই চুট | ১ | ৩১০ | ৩১০ |
| অহরর ভাণ্ডা | ১ | ৩১০ | |
| উত্তরমধ্যম চুট | ১ | ১০ | |
| মধ্যম চুট | ১ | ১০ | ১০ |
| চৈনা চুট | ১ | ১০ | ১০ |
| মধ্যম চৈনা | ১ | ১০ | |
| নীল উত্তর | ১ | ১০০ | |
| অন্য পুকার | | | |
| নীল | ১ | ১০০ | ১০০ |
| সোরা উত্তর | ১ | ৭ | ৭১০ |
| মধ্যম | ১ | ৬১০ | ৬০০ |
| মিনী কাপড় | ১ | ১০ | ১০০ |
| মধ্যম | ১ | ৮১০ | ১০ |
| খার চিনি | ১ | ৫১০ | |
| তেতুল | ১ | ৫০ | ৫০ |
| ডামাক | ১ | ৪১০ | ৪১০ |
| চন্দর | ১ | ১২ | ১০ |

এই সমীচারণ দর্পণ শ্রীমদম্পদের ছাপাখানাতে প্রকাশিত হইয়াছে। বাঘার কণ্ডের আবশ্যক হয় তিনি শ্রীমদম্পদের ছাপাখানাতে
আপন নাম পাঠাইলে সমস্তই কাগজ ডাহার নিষ্কণ্ডে পাঠান হইবেক ডাহার মূল্য মাসে এক টাকা চিনি থাকি করিছেন যদি ডাহার নিষ্কণ্ড
কাগজ না পাঠাইলে তবে তিনি শ্রীমদম্পদের ছাপাখানাতে সমস্তই দিব্যমাত্র ডাহার নিষ্কণ্ডে পাঠান হইবেক।

সমাচার দর্পণ

৮৮ সংখ্যা।

শনিবার। ২২ জানুয়ারি সন ১৮৭০। ৪০ মাঘ সন ১২১৩।

দর্পণে মুখ্য বৈশিষ্ট্যাবলি কার্যবিবরণঃ।

দ্ব্যস্তানিহিত মানস নান্যাত্ম্য দর্পণে ॥

কোম্পানির কাগজ।

কোম্পানির শতকরা জয় টাকার সুবের কাগজ কয় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা দুই আনা ভিত্তিকোণ। বিকয় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা জয় আনা ভিত্তিকোণ।

মন্ত্রিহর পঞ্জিকা।

| ২২ জানুয়ারি | শনিবার | ১২ | মাঘ |
|--------------|--------|----|-----|
| ১০ | ২ | ১১ | ২ |
| ১১ | ৩ | ১২ | ৩ |
| ১২ | ৪ | ১৩ | ৪ |
| ১৩ | ৫ | ১৪ | ৫ |
| ১৪ | ৬ | ১৫ | ৬ |
| ১৫ | ৭ | ১৬ | ৭ |
| ১৬ | ৮ | ১৭ | ৮ |
| ১৭ | ৯ | ১৮ | ৯ |

সমাচার দর্পণ।

যমুনা নদী।

ঐশ্বর্য বহু সাহেব যমুনা নদীর লম্বা হই ও চৌতাই পুত্রিত নির্মল করিবর করণ এক জন ইংল্যান্ড আনবান বাড়িকে সেই আশ্রম পাঠাইয়াছেন তাহার কারণ এই যে ঐশ্বর্যবতর বাসনা আছে যে ঐ যমুনা নদীর দ্বারা ইষ্টাঘাতী নদীকে আনিয়া গীরাতে মিলিত করেন যেহেতু

ঐতীর মোহনা ও মাথাভাঙ্গা বহু হইলে পদ্মাতে কোন নৌকা ঘাইতে পারে না তা হাতে অনেক কষ্ট বহু হয়। যদি যমুনা নদীর দ্বারা গীরা ও ইষ্টাঘাতীর মিলন হয় তাহে বায়ুগমন অসম্ভব নানা দেশে নৌকার দ্বারা গমনাগমন হইতে পারে।

বাঙ্গের নৌকা।

আমেরিকা দেশে এক বাঙ্গের নৌকা মুখি হইয়াছে তাহাতে জেযুটি হাজার মোন জিনিস বোঝাই হয় এবং সে কে বল বাঙ্গের জোরে চলে সে বাঙ্গের নৌকার ওপরে যে কল আছে এক হাজার ঘোড়ার দ্বারা যে কল চলে সেইজন্য ঐ কল কেবল বাঙ্গের দ্বারা চলে।

বিবাহ সমারোহ।

সংপুতি মোহন কলিকাতায় দুই দিন বিবাহের সমারোহ শুনা ঘাইতেছে তা হাতে যে কং সমারোহ সমবধানের কথা জনরব হইয়াছে তাহাতে অনুমান হয় যে এমত বিবাহ উৎসব হয় নাই কিন্তু নিশ্চয় না হইলে দ্বিগুণ আনা যায় না। অতএব তাহার শেষ দেখিলেই বিশেষ প্রসঙ্গ জন্ম করা ঘাইবেক।

কেল।

ইংলণ্ড দেশ হইতে আসিয়া লোকেরা কেলে বসতি করে ইহাতে ইংল্যান্ড বাদ শাহের বহু মন্তব্য হইয়াছে যেহেতু ইংলণ্ড দেশে লোক বাসনা পুঙ্ক

মেখান সকল লোক লক্ষ্য রাখি না। অতঃপর ইংল্যান্ড লোক যদি অন্য দেশে গিয়া বসতি করে তবে সেই দেশের দের নানা কষ্ট পাওনেতে অধিক লাভ হইয়া যাবে। নিম্নোক্ত হয় এবং ইংল্যান্ড বাদশাহের ও রাজর্ষি হয় সেই হেতু বাদশাহের ও রাজর্ষি এই দ্বিগুণ করি যাজেন যে যে লোকেরা কেলে ও অন্য স্থানে গিয়া বসতি করিবেন তাহারদের মধ্যে বাদশাহ চারি লক্ষ টাকা আশ্রম করিয়া দিবেন এই সমারোহ অনেক লোক দুই দিন শত টাকা পাইয়া অন্যত্র বসতি করিতেছে।

কারাগার।

এই দেশে এবং অন্য দেশে যে মত সকল লোক কারাগারে বহু হইয়া কে বল খোরাকি পাইয়া নাট আট বৎসর কালযাপন করে। আমেরিকা দেশে সে মত নহে সে দেশে কোন লোক যদি অপরাধী হইয়া কারাগারে বহু হয় তবে তাহার যে ব্যবসায় সেই ব্যবসায়ের তাহা কে নিযুক্ত করে তাহার সেই ব্যবসায়ের দ্বারা গাণ্ডা ও পণ্ড হয় তাহার আর্থে মরকারে লয় ও আর আর্থে খোরাকি বাবুদে সে কএক লোককে দেয়। অন্য দেশের কএক অঞ্চল আমেরিকা দেশে কএকের এই এক গুন যে অন্য দেশের অপরাধী লোকেরা যখন কএক হাজার আশ্রমজননে নিম্নোক্ত বিনিময় পাঠকে তাহাতে পুরোঁক্ষকার তাহারদের লভ্য অতিমত হয়। আমেরিকার লোক কএক

সমাচার দর্পণ ।

হইলেও আপন ব্যবসায় থাকে । এবং স্বল্পে খায়া আপনকার ঐশানে অবিক তদারক হওয়াতে সে লোকের মধ্যে সু শ্রুতক হয় । ইহাতে কোন সময়ে হা কীম লোক তুচ্ছ হইয়া দশ বৎসরের কএ মীকে নীচ বৎসর পাঠাইয়া নীচ বৎসর মাছ করিয়া খালান দেন ।

গতবৎসরে আমেরিকার এক কাগসীয়ে তিন শত তেরখি লোক কএম জিল এবং তাহার। সে কাগসীয়ে বহু থাকিয়া আপন। ব্যবসায় করিয়া বিয়াজিল হাজার টাকা ওপজন করিল সে কাগসীয়ে বহু থাকিয়াও পুতোক লোক পুতিদিন নাও সিকার লান ওপজন করে না । তাঁতী লোক কএম থাকিয়া যে বহু পুতত করে তাহাতে কাগসীয়ে সমুদায় লোকের বস্ত্রের কম নির্দী হইয় ।

বোম্বাডিয়া ।

আমরা পূর্ব সমাচার দিয়াছি যে বোম্ব প্র অধর্মে বোম্বাডিয়ারা পুত্র লোকের ঘরে বত ওপুত্র করিতেছে তাহার। কতক ছিল হইল অনেকও অভিসাহসী হইয়া রে । অশ্রুবিভ তাহারদের গিত লইয়া তা হারদিগকে ঐ দ্বিহইতে দূর করিতে আহাযারা নীচ জয় হাজার সৈন্য পাঠাইয়াছিলেন ।

এই সমস্তই আবার সমাচার পাঁইলাম যে ইংলণ্ডীয়দের ঐ ওপজন সৈন্য রস স্তলকাইয়া লম্বা বোম্বাডিয়াদের পুতিন রসতিবিল ও গিত পুঁকিয়াছে মেখানে ঐ আরব বোম্বাডিয়ারা পুত্ৰার্থ পুত্ৰত ছিল তাহার। কিছুকাল অভিসাহসীরাই ইংলণ্ডীয় সৈন্যের সঙ্গে যুদ্ধ করিল কিন্তু ইংলণ্ডীয় ভোপন সমুদায় তাহার। ভিত্তি তে পাঁইল না পরে ইংলণ্ডীয় সৈন্য তাহার

ঘের গিভের পুত্ৰীয়ে গোলা মারিয়া পুত্রাও হার করিয়া যুদ্ধ করিবার কারন লগরের মধ্যে পুবেশ করিল কিন্তু ঐ আরবের। আপন। বলুক ও ঘর ইংলণ্ডীয়দেরের নিয়ন্তে জাতিয়া মেখানেইতে লগরের মধ্যে পুথমেই পলাইয়াছিল । তাহাতে ইংলণ্ডীয়দের পক্ষাশ ঘটিত জন লোক কতক মারা পড়িল ও কতক আঁঘাউ হ ইল । পরে ইংলণ্ডীয়ের। ঐ গিভের মুত্ৰা বন্ধির ওপরে পক্ষাশ ভোপ পাঁইলেন এবং নীচ শত জন ঘোড়া ঐ লগর রক্ষার্থ র ছিল ও আর কতক সৈন্য ঐ পলায়িত বোম্বাডিয়াদের অধেষণ্য তাহারদের পক্ষাতে দৌড়িল । এমল স্থলা গেল যে সে গিত ইংলণ্ডীয়দের অধিক্ত হইয়া রে তাহাতে একজন ইংলণ্ডীয় সেনা গতি ও কতক সামান্য সেনা মারা পড়িয়াছে ।

আক্ষর্য্য দূরবীন ।

তিন চারি বৎসরের মধ্যে ইংলণ্ডদেশে এক আক্ষর্য্য দূরবীন সৃষ্টি হইয়াছে কলি কাততেও হুনে বান্ধিলি লোকেরদের নিরুটে তাহা পুক্ষপ হইয়াছে । ঐ দূর বীন আঁঘত করিলে পুতোক আঁঘ তেতে পুত্ৰী আঁঘত দেখা যায় ঐ সকল আঁঘত অভিসুদ্ধর পুত্ৰের লায় তাহ।ত ঐ দূরবীনের মধ্যে দৃষ্টি করন অভিসা কয় দূরবীনের মধ্যে যে দুয়ু গোলাস তাহ।এক সময়ে দেখিলে যে কপ দেখা যায় সেকপ আঁঘত পুত্ৰীর কখনও হয় না কিন্তু ভিন্ন। আঁকার বীরন বরে মনু ঘের সূত্র ঐ কন কখনও দ্বির লখে । ২০১ পলের মধ্যে ঐ দূরবীনের সমস্ত গোলাস কুড়ি পুক্ষর আঁঘত যদি বীরতে পাঁয়ে ওবে নীচ শত বৎসরের মধ্যেও পুক্ষাতি বীরন করিতে পাঁয়ে না কিন্তু

তাহার মধ্যে সকল হইতে আক্ষর্য্য ঐ যে ঐ দূরবীনের মধ্যে দৃষ্টি দুয়ু কুড়ি গোলাস এমত পুক্ষা অভিসুদ্ধর পুত্ৰ আঁঘত বীরন করে যে তাহা বর্জন। করা অন্যথা ঐ দূরবীনের নাম কালিহিকোপ সে মনুষ্যের অতি আক্ষর্য্য কীর্তি এবং তাহাতে অত্যন্ত সুখ বোধ হয় ।

দুয়ুলা ।

এক মানের পুক্ষর সমাচার পাঁওয়া গেল যে মোপ কাশী ও তাহার চতুর্দক দেশে মাঝ দুবের অভিমাহা হই য়াছে । চালু এক টাকার এগার শের ও অক হরের তালি জয় শের ও গোঁম ভের শের ও আট। মাতে এগার শের এবং বাজরা তালি শের ও বৃট্ট ভের শের ও কলাই চৌদ্দ শের ও হারিমাণে ঘোল শের ও তৈল তারি শের ও বৃত্ত দুই শের ও বহন নীচ শের । এবং অন্য স্থলা গেল যে কাশী হইতে পুরাণী অগ্রিক দুয়ু লা এই কন মারা ও আগরা পর্যন্ত দুয়ুলা কিন্তু তাহার পশ্চিম দেশে সমুদয় দুয়ু মুলত ।

গীন্দী ।

এক গোরা মিহাধী মোপ কানপুর অন্য এক মিহাধীকে মুল করিয়াছিল সে মোকদ্দমা মোপ কলিকাতার সুপ্রীম কোর্টে ৪৪ জানুআরি ষ্টকবার হইয়াছে তাহাতে তাহার অপরাধ নিশ্চয় হইলে তাহার জীন্দীর স্বকুম হইল এবং স্থলা যাঁহেতে যে গিত মোমবার কুনির্ঘ আঁরে তাহার জীন্দী হইয়াছে ।

ঐযুত মির্জাআবদুল

ঐযুত মির্জাআবদুল পেশোয়া মহারাজের

সমস্যাচার দর্শন।

কলিকাতা। জীবিত চিত্রশিল্পীরা এখন কালী বাসে লিখতে দিয়েছেন এবং জীবিত কল্লোলি বাহাদুর তাঁহার মশাহরা ও ন মুক্ত মত দিয়েছেন ও তাহার ওপন্থক সমালোচক রাখিয়েছেন।

বাহারি বাস।

বহরতি হার ১০ আনুআরি বাহারি বাসের অধিক সাহেবেরদের মিলিত হইয়াছিল তাহাতে এই বাসের এক অধিক জাতি যে লান্দ সাহেব এই বাসের কর্ম পরিচালনা করিয়া ইংরেজে পুথান করিবেন তাহা হইতে এই সাহেবেরা তাহার কর্মে অন্য এক জনকে নিযুক্ত করিতে পরামর্শ করিলেন।

নোট হারান।

১৩ আনুআরি বহরতিবাহারি আনুআরি হইতে কলিকাতায় আসিবার পথে ষাঁট পত টাকা এক বাহারি বাসে নোট হারান হইয়াছে তাহার লম্বা ছয় হাজার তিন পত পাঁচ তাহার তারিখ ৪ মে মাসন ১৮৮১। এই পত্রের নোটের টাকা দেওয়া এখন বন্ধ হইয়াছে। যদি এই নোট কেহ পায় তবে এই জন পেলিঞ্চনওকো সাহেবের আশীর্বাদে রাখিয়া দিলে সে ব্যক্তি ওপন্থক রাখাশি পাইবেক।

আহাজ।

১০ আনুআরি বহরতিবাহারি জাতিপিরে পীজর নামে এক আহাজ ১২ আনুআরি তাহা হইতে বহরতি পত্র জাতিয়া কলিকাতায় নৈজিয়াছে তাহাতে কোন বিশেষ সমস্যা হার নাই।

এলাহাবাদ।

এলাহাবাদহইতে সমস্যাচার আসিয়া

ছে যেআলমোতা নামে কিল্লা সমস্তই করিবার নিমিত্তে ইংল্যান্ডীয় অনেক সৈন্য িয়াছে এবং কলিকাতার কিল্লাও নক্ষ করিবেন এমন মতনব শুনা যায়।

পর্ষত দর্শন।

জিলা ভাটলপুরের করঞ্জী নামে স্থান হইতে সমস্যাচার আদিয়াছে যে ১৮ দিসে ঘর ভাটলপুরে করনল মুখাঙ্কন সাহেব পাখনায় ঈশ্বর নামে পর্ষতে ওট্টোয়াজি লেন সে পর্ষতে তিন লোকেরদের পুথান তর্ঘি স্থান সে স্থান রামচাঁদ ও বোহারের মদ্যবর্তী এবং ভাটলপুরের দক্ষিণ পশ্চিম কোণে এক পত আটহস্তর কোশ দূরবর্তী এই পর্ষতে তিন কোশ ওর তাহার পূর্বের নাম অখমাই শিম্বর তাহার ওপরে গমন পথ আতিদূর্যম তাহার ওপরে ওট্টো করনল মুখাঙ্কন সাহেবের দের পুথরকাল লগিয়া যাজিন। এই পর্ষতের পূর্ব এই মত পীতন যে দুই পুথরের কালে রাষ্ট্রীয় লায় অন্ড হইয়া আসিয়া হয় যে এই পর্ষত পারমী দেশে শিরাভান নামে পর্ষতহইতে ও ওর এই পর্ষতে করনল মুখাঙ্কন তৈলেরদের বিয়ের বিষয় বিশেষ জাত হইলেন ও তাহার পুকাশ করিবার স্থল করিয়াছেন।

ব্রহ্মদেব।

ব্রহ্মদেবের রাজধানী অমরপুর তাহার পুথান নামে এই পর্ষত সমুদ্রের তীরহইতে অনুমান দুই পত কোশ এই পর্ষতের নোচে দিয়া এইরূপী নদী বহে ও নগাল ও নথান ও প্রেমি ও ধর্মি নগর ও দলুইও এই পুথান নগরের নিচত বর্তনী হইয়া সমুদ্রে পড়ে। এই পর্ষত হাতিরিজ আরাধি অনেক পুথান রাজধানী আছে বিশেষতঃ তাহা ও নগর ও মতম্যান ও ওর ও চাগাই পুজি অ নেক পুথান রাজধানীর চিহ্ন অধ্যাপি

আছে তাহার বিশেষ বৃত্তান্ত এই স্থানে দেওয়া যায় না।

সে দেশের মাটে তৈল অনেকই ওষধি লোকে ও সে দেশে পুথি সেই তৈল জালায় এবং এই তৈল যে স্থানে ওপন হয় সেখানে এক পত কনমী তৈল পাঁচ টাকায় পাওয়া যায় তাহাতে সে দেশের দুইখি লোকের অনেক ওপকার হয়। এইরূপ বর্তী নদীর নিচতবর্তি যেখানে নামে ন গরহইতে তিন কোশ অন্তরে তৈলের কূপ মাত কিল্লা আট আছে এই কূলের অ স্থলে দশ পোনের কোশ পর্যন্ত জল দুইখি কিছুই জলো না এই দুই এক পত পুথান হাতঅবধি এক পত সত্তর হাত পর্যন্ত গভীর এই স্থানহইতে অনুমান পোনের ঘোণ কোশ অন্তরে যেখান নামে পুথরের নিচত এক পুথার পর্ষত মাত আটটা আছে সে পর্ষতের মদ্যহইতে মাসে দুই তিন বার সর্ষা পক্ষ নির্গত হয় এই পক্ষ অক্ষ কোশ পর্যন্ত ওট্টোকে বাহিয়া পড়ে। যখন এই পক্ষ নির্গত হইলে সময় হয় তখন তাহার মদ্য অতি গভীর শব্দ হয় ও তাহাতে কখনও ভুলি কল্প হয় সেই দেশের লোক এই স্থানকে নাগবিব বলে এই পক্ষ দুইয়া সে অক্ষের লোক নবন কর।

ব্রহ্মা দেশের মদ্যে ধর্মিগণের নিকল হইতে পুথান এবং সে পুথানে রাজধানী স্থান ছিল সে এইরূপী নদীর তীর হিত প্রেমি নগরহইতে দুই কোশ অন্তরে বলের মদ্যে হিত এই পর্ষতের পুথান চ চাক্টি তাহার বেক ছয় কোশ। সেই দেশে রাজাধি গুণ্ডি কহে যে যখন এই পর্ষত নির্গত হইল তখন দেবতা এই পর্ষত সমস্যাচার করিলেন ও গভতকে মর্ষতা করিয়া বাসকিরে জ্বা করিয়া দুইখিয়া চকাচার নদীর পতন করিয়াছিল।

সমাচার দর্পণ।

কৃষ্ণ বর্ণ।

এক নগরে অত্যন্ত কৃষ্ণ এক বালিক ছিল সে শিশুটির বানিজ্য করিয়া অতি শ্রম বিনবান্ হইল। এই সময়ে সে আসন্ন দুর্ভিক্ষ দেখিয়া এই চিন্তা করিল যে যদি এই দুর্ভিক্ষে আমার স্ত্রী পুত্রাদি পরিত্রাণ আমার সকল বিন ভোগ করে তবে সেই বিন শোকেতে আমার শ্রুণ বিয়োগি হইবে। বিন খুস্কের পরম মিত্র এই বিন ব্যতিরেকে মনুষ্য এবং সম্প্রদায়ঃ মর্যাদা ঘাবে দিবস সকল বিন মূলক অতএব নির্দিষ্ট হওয়া অভিপ্রেত এইন জন্য যে কৃষ্ণ দেখিতে না যায় এমন দানে গোবিন্দগুরু বিন রাখি। এই বিবেচনা করিয়া এই কৃষ্ণ অন্তরে আশ্রয় না নে আশ্রয় নকল বিন রাখিল। পরে দুর্ভিক্ষ দুর্ভিক্ষ আইলে সেই কৃষ্ণ আশ্রয় পরি ব্যতিরেকে কল্প ভাবে গোবিন্দগুরু কোম্বাংকে কিছু নিষ্কল না। তাহার পরিকল্পনা কল্পগণিত শ্রুণ ইহা কিছু বিন ঘাটা করিলে সে কহিল যে শ্রুণ পরি ব্যার সকল বিনই আমার শ্রুণ তোমরা যদি আমার বিন লইতে চাহ তবে কেন শ্রুণ না লও। অপর তোমরা যদি শ্রুণ লও তবে আমার শ্রুণ বিনের শোক পাই বেক না অতএব আমার বিনগ্রহণ করা হইতে আমার শ্রুণ গ্রহণ করা ভাল। এই কল করিয়া পরিকল্পনারিগকে বহিত করি লে তাহার উত্তরল আশ্রয় সকলই মরিল। সে কৃষ্ণ ব্যাপনিত বিনব্যয় করিয়া কিছু থাকে না তাহাতে অন্যায়ের দুর্ভল হইল। তাহাকে দেখিয়া কোন লোক কহিল যে তোমার এত বিন মরেও

তোমার শ্রুণ বিয়োগি হইবে এমত অনু ভব হইতেছে তবে তোমার এই বিনেতে কি প্রয়োজন অতএব তোমার মরনই উচিত যেহেতুক কৃষ্ণ লোক বিলম্ব কর্তন করে তে দুঃখ পায় সেই বিন ফ্রুতি হইলেও শোক পায় এবং সেই বিনব্যয় করিয়া মুখ্যভোগ করিতেও পারে না। ইহা শুনিয়া এই কৃষ্ণ কহিল যে হে আশ্রয় লোকেরা আমি শ্রুণব্যয় করিতে পরি কিন্তু বিনব্যয় করিতে পারি না। তাহার কহিল যে তোমার বিন চোর ক্রমাংগ গ্রহণ করিবেন। তাহা শুনিয়া এই কৃষ্ণ উত্তর করিল যে অন্য দুঃখিহীন জনের বিন অন্য গ্রহণ করে আমি আশ্রয় বিন গলয় বাক্য মরিব ইহা কহিয়া বিনের নৈষ্ঠিক লইয়া মণ্ডল্য গঙ্গাভীরে গেল। সেখানে এক নারিক কহিল যে হে নারিক আশ্রয়কে তলে ডুবাইয়া নষ্ট কর আমি তোমাকে এক মোহর দিব। নারিক কহিল যে তোমার ধর্ম্য বিধান হয় না মোহর দেখাও। কৃষ্ণ তাহাকে মোহর দেখাইল ও আশ্রয় ব্যার দেখিয়া নারিককে কহিল যে হে ভাই আমি এই সকল মোহর ব্যার অধি তে পোড়াইয়া অতিশ্রদ্ধ করিয়া রাখিয়া রি ইহা অন্যকে দেওয়া যায় না তুমি পূর্ণার্থেই আমাকে নষ্ট কর। নারিক সে সকল মোহর দেখিয়া কহিল যে আ ইন মাথা কি তোমাকে পূর্ণার্থেই মরিব। ইহা কহিয়া এই নারিক এই কৃষ্ণকে তলে ডুবাইয়া মরিয়া তাহার সকল মোহর লইয়া অশ্রয় বিনবান ইহা মুখে কাল ঘাপন করিতে লাগিল।

বাহার ভাণ্ড

| কিনিস | মোন | অবধি | পরিমাণ |
|--------------|-----|------|--------|
| কুপরি | ১ | ৪ | ৪০ |
| ভেঙা তৈল | ১ | ২০ | ৩২ |
| গাছ মরিচ | ১ | ৫ | ৪০ |
| নারিকেল তৈল | ১ | ১৪ | ১৪০ |
| তুলা কাহোড়া | ১ | ১৭০ | ১৮ |
| আগাঃ কপূর | ১ | ৩০ | ৩০ |
| পাটনাই আদা | ১ | ২০ | ২০ |
| চাল পাটনাই | ১ | ৩০ | ৩০ |
| শাছড়ি উত্তর | ১ | ২০ | ২৫ |
| পাছড়ি মধ্যম | ১ | ২০ | ২০ |
| দুগী উত্তর | ১ | ১৫ | |
| দুগী মধ্যম | ১ | ১০ | |
| বালায় | ১ | ১৫ | |
| দুগা দান | ১ | ২০ | ২০ |
| পাটনাই দুগ | ১ | ৩০ | ৩০ |
| অহর তালি | ১ | ৩০ | |
| উত্তমভারত | ১ | ২০ | |
| মধ্যম দুগ | ১ | ১৫ | ১৫ |
| উত্তম দুগ | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মধ্যম উত্তম | ১ | ১৫ | |
| নীল উত্তম | ১ | ১৫ | |
| অন্য পুকার | | | |
| নীল | ১ | ১৫ | ১৫ |
| বোর উত্তম | ১ | ১ | ১৫ |
| মধ্যম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| চিনি কাপার | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মধ্যম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| বার চিনি | ১ | ১৫ | ১৫ |
| ভেতুন | ১ | ১৫ | ১৫ |
| তামাক | ১ | ১৫ | ১৫ |
| চন্দন | ১ | ১৫ | ১৫ |

এই সমাচার দর্পণ শ্রীমদ্রামপুরের ছাপাখানাতে প্রিন্টগৃহে প্রিন্টবারে ছাপা হইল। বাহার লগনের আবশ্যক হয় তিনি শ্রীমদ্রামপুরের ছাপাখানাতে আপনার নাম পাঠাইলে লগনের কাল তাহার নিকটে পাঠান যাবে। তাহার মূল্য মাসে এক টাকা যদি ছাপার করিয়াছেন যদি তাহার নিকট নষ্ট করিবে তবে তিনি শ্রীমদ্রামপুরের ছাপাখানাতে সমাচার দিব্যমাত্র তাহার নিকটে পাঠান যাবে।

সমাচার দর্পণ

১৯ সংখ্যা।

পরিবার। ১৯ জানুআরি সন ১৮৭০। ৪৭ মাঘ সন ১৭১৩।

দর্পণে মুখ বোধব্যবহার কার্যবিভাগঃ।

বৃহত্তারিহ জানক সমাচার দর্পণে ॥

কোল্লানির কাণ্ড।

কোল্লানির শতকরা জয় টাকার সুদের কাণ্ড কয় করিতে হইলে শতকরা শর আনা তির্যকোণ। বিস্ময় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা দুই আনা তির্যকোণ।

সন্তানের পঞ্জিকা।

| | | | |
|----------------|-------------|----|-----|
| ৬০ জানুয়ারি | শনিবার | ১৭ | মাঘ |
| ৬১ ২ | রবিবার | ১৮ | ২ |
| ৬২ ৩ | সোমবার | ১৯ | ৩ |
| ৬৩ চিত্তোয়ারি | মঙ্গলবার | ২০ | ৪ |
| ৬৪ ৫ | বুধবার | ২১ | ৫ |
| ৬৫ ৬ | বৃহস্পতিবার | ২২ | ৬ |
| ৬৬ ৭ | শনিবার | ২৩ | ৭ |

সমাচার দর্পণ।

রাজকর্মে নিয়োগ।

১১ জানুআরি ঐযুত জর্জ বোয়বেল সাহেবের সুপ্রিম কৌন্সিলের পক্ষে ঐযুত মর জেমন্স এডর্ড কোলবুর সাহেব নিযুক্ত হইয়াছেন।

৭ জানুআরি ঐযুত আক্কা শ্রেণ্ট সাহেব ময়রুদ্বাদেবের জাজের পেকার হইয়াছেন।

ঐযুত এচ ডবল সাহেব শাহজাহান শহরের কালেক্টর হইয়াছেন।

ঐযুত এ এল জোর্ড সাহেব মোন্ট ইটাওয়ার কালেক্টর হইয়াছেন।

ঐযুত এড জে সোঁর সাহেব অয়পুস্ত ও মন্দিরপুস্তি-দেশের আমান সাহেবের সেকটারির পেকার হইয়াছেন।

১১ জানুআরি ঐযুত জে ডবলিউ লে সাহেব এলাহাবাদের পঞ্চেশ্বরের কালেক্টর হইয়াছেন।

ঐযুত ডবলিউ জে হার্ডি সাহেব শাহাবাদের কালেক্টর হইয়াছেন।

ঐযুত জন জে সাহেব কলিকাতার পঞ্চেশ্বর ও নিমক ও আর্মি মহলের পেকার এইমোন্ট শানিয়ার নিমক গোলার আমান হইয়াছেন।

ঐযুত এচ এস পাকের সাহেব বনুয়ার ও চম্পুগুয়ের নিমকমহলের অধিকার পেকার হইয়াছেন।

১১ জানুআরি ঐযুত জন ব্রডর সাহেব রিনলবার্ড দস্তুরের সেকটারির পেকার হইয়াছেন।

ঐযুত রাজেন্দ্র সাহেব।

১৪ জানুআরি তারিখে ঐযুত মর ধর্ম জোর্ড রাজেন্দ্র সাহেব বেঙ্কলন দেশে প্রবাসী নায়ে আহাতে আরোহণ করিয়াছেন এবং প্রাসা গাইতেছে যে ঐযুত কাণ্ডান এয়ার্টমেন সাহেবও কিছু দিন পরে এই বেঙ্কলনে অন্য আহাতে যাইবেন।

আজকের সমাচার।

কলিমোলিয়া আহাজ ১৫ আশ্বিন তা

বিধে ইংলুও জাকিয়া ১৫ জানুআরিতে মোকাম কলিকাতাতে পহঁচিয়াছে।

আত্মঘাতী।

এ আহাজারা সমাচার জানা গেল যে কলিয়া দেশের বরলিন নামে রাজ বাদীহইতে এই সমাচার আসিয়াছে যে সকল দেশহইতে মুখিয়া দেশে অধিক লোক আত্মঘাতী হয়। সপ্ততি বরলিন শহরের রাজদরবারী এক জন পুত্রান লোক অকস্মাৎ আপন শরীরে তিন চারি বার অস্ত্রাঘাত করিয়া আত্মনাশ হইয়া পড়িয়াছিল কিন্তু আর লোকেরা অনুমান করিল যে সে বীরচিত্তে পারে।

অন্য এক মহাবিদেতা মহাশয় আপন মস্তকে গুলি মারিয়া মরিল।

আর এক জন ব্যবসায়িক লোক মৃত্যু করিয়াছিল আত্মহত্যা করিল।

আর এক জন স্ত্রী লোকেরা ও আত্ম হত্যার চেষ্টা করিয়াছিল।

দ্বন্দ্ব দেশের পার্শ্ব শহরে গত জানুআরি মান অধি এইমরলপর্ষদ যত

লোক আত্মঘাতী হইয়াছে ও আত্ম হত্যার চেষ্টা পাইয়াছে তাহার সংখ্যা ৪০ এক শত চল্লিশ জন। তাহার মধ্যে

স্ত্রী লোক ত্রিশ জন বাকী ১০ এক শত সাত জন পুরুষ। এই স্ত্রী পুরুষের মধ্যে

কুড়িবার ৩০ হাজি জন এ সকল আত্ম ঘাতী পুত্র বনুকের দ্বারা অনেক।

অন্য মণ্ড জাহিন জন এ সকল জুয়া খেলা ও

আপন-ঘণাতে আত্মঘাতী হইল। ইহা

সমাচার দর্পণ ।

তে আলা দায় যে পূর্ব বৎসরইহাতে এই বৎসর একই জন লোক অধিক আত্ম ঘাতী হইয়াছে।

✱ অযুত লালাবাবু ।

মেঘান গঙ্গাগোবিন্দ মিন্‌হের পৌত্র অযুত কৃষ্ণদাস মিন্‌হে তিনি লালাবাবু নামে খ্যাত ছিলেন তিনি কতক বৎসর ইহলী জীবদ্দশন তীর্থ দর্শনার্থ গিয়াছিলেন এবং সেখানকার রাজার সহিত সাক্ষাত করিয়া ও প্রদানে কতক অমী দার লইয়া জীবদ্দশনেই ঐশ্বর্য্য পুরস্কৃত হইয়াছিলেন এবং সেখানে থাকিয়াই এতদ্দেশীয় তাবরিঘরের ও তদ্বাদারন করিতেন। সম্প্রতি সম্রাটর পাণ্ডা গেল যে তিনি সেখানকার ও এখানকার জন তা যাবৎবিষয় পণ্ডিতগণের নিকট প্রমাণিত হইয়া বৈরাগ্যী ধর্ম্ম আশ্রয় করিয়াছেন এবং ঐহিক লজ্জা নিবারণার্থ কেবল কৌশলমাত্র প্রয়োগ করিয়াছেন ও ক্ষুণ্ণ নিবারণার্থ এক সম্রাটের প্রদান গৃহস্থ হইতে ভিক্ষাপ্রার্থী হইয়াছেন। ইহাতে আশ্চর্য্য বোধ এই হয় যে যাহার এক সম্রাট আহারোপযুক্ত সামগ্রী সপ্ততিথকে সেও এই সম্প্রদায় মাত্র রজ্জু জেমন করিতে সমর্থ হয় না। তিনি চরিত্র বৎসরব্যয় ও গঙ্গাগোবিন্দ মিন্‌হে অসহিষ্ণু প্রকৃত্যেতে ক্রমশঃ বিন ও ঐশ্বর্য্য ও অনুমান নয় দশ লক্ষ টাকা অমীদারী এবং স্ত্রী ও পুত্র ও ইচ্ছা স্বল্প ভক্তি কষ্টমূলক পথের দ্বৈত বিসর্জন করিয়া বৈরাগ্যাপ্রাপ্ত করিয়াছেন ইহকাল এমত অন্যত্র সম্ভব হয় না। এখন তাঁহার নিকটে যদািন কোন আ আয় লোক যায় তাহারদের সহিত আলা পণ করেননা তাঁহার ঘাবরিঘরের অধিকারী তাঁহার পুত্র জেমন ।

কাশ্মীর দেশ ।

সম্রাটর পুত্র গেল যে কাশ্মীর দেশে লাহোরাবিশিষ্ট অযুত রণজিতমিন্‌হে বাহাদুরের অধিকার বহুমূল হওয়াতে যবনাস্থিকার ও খ্যাতমূল হইয়াছে সে খালে মুখ্য রাজা পুত্রাংশ এই হইয়াছে যে গৌ ব্রাহ্মণ হিন্দু কাম্য কতক নহে ইহাতে হিন্দুর ধর্ম্ম সেখানে প্রবল হই য়াছে। এইহেতু পূর্বে যবনেরা হিন্দুরদের যে কল দুরবস্থা করিয়াছিল এখন উতা বিল দুরবস্থা যবনেরা হিন্দুরদের চারি ভাগ করিতেছে। এবং যবনেরদের চারি ভাগ ভূমি ভয়ে যে ব্রাহ্মণেরা স্বস্বত্বা ভূমি কাশ্মীর দেশ ভাগ করিয়া হিন্দু হালের অস্ত্রশাস্ত্রী লক্ষ্মণী ও কান্দু ও দিল্লী ও কাশী ও অযোধ্যা ও কলিকাতা প্রভৃতি স্থানে বাস করিয়াছিলেন তাহারা এই শ্রুত সম্রাটর শুল্লিয়া পুনর্বার কা শ্মীরে যাঁহাতে সমস্ত হইয়াছেন।

দায়োদরনয় ।

দায়োদর নদের সহিত গঙ্গার মিলন ইহানে বহুমান প্রদেশের জিনিস পত্র গ রাতে পড়িয়া মরুত যাতায়াত করিতে পারে তাহাতে এই দেশের বাসিন্দা বৃদ্ধি অতিশয় হয় ও অযুত মোং সেলোয়ারা যের নিকটে দায়োদরের মোহনা কা গিয়া কান্দা নদীর সহিত সংলগ্ন করিবার উদ্যোগ ইহাতে তাহা ইহানে কালানবী মরশ্বতীর সহিত মিলিতা হইয়া গ্রিবে নীর নীচে গঙ্গার সহিত বহতা ইহ বেক। এই কর্ম্মে অনেক লোক নিযুক্ত হইয়াছে।

বসন্তরোগ ।

ইংলণ্ডদেশে বসন্তরোগে চারি মস্ত

হের যথি এক শত চরিত্র লোক মরিয়াছে ইহাতে নগরস্থ লোকেরা তাহার ওয়া চেষ্টা করিতেছেন।

বৎসকালতীর্থ ।

ইংলণ্ড দেশে গাইল্ডন গ্রামে এক জন পুত্র এক শত আট বৎসরব্যয়ক হইয়া মরিয়াছে তাহার মরনের এগার মান পূর্বে তাহার স্ত্রী এক শত বৎসরব্যয়ক হইয়া মরিয়াছিল ওজুর বিবাহের পর তিনশী বৎসর এতদ্র জিল ।

গিটারি ।

দক্ষিণ দেশে ইহাতে সম্রাটর আশ্রয় য়ে শেখা দৌল নামে এক জন গিটারির যের মরবার কাহিনী যোড়সোয়র মধ্যে লইয়া ইংলণ্ডেরদের খালা দায় পু প্রভৃতি কথক জিনিস লষ্ট করিয়া লই য়াছে।

ডাকহাতি ।

কতক দিন ইহল কোম্পানির কাশ্মী বাজারের কুণ্ডিতে ডাকহাতি হইয়াছে তা হার কতক দিন পূর্বে তথাকার চাকর কোকরা দেখিয়াছিল যে ঐ কুণ্ডির চতুর্দে দশ বার জন কোম্পানী লোক সম্মান করিয়া গিরিতেছে সে সম্রাটর ঐ চাকর লোকেরা আগে দেয় নাই পরে এক দিন রাত্রিযোগে ডাকহাতিতরা ঐ কুণ্ডিতে পড়িয়া যায় জন লোককে আঘাত করি য়াছে ও কোম্পানির দুই হাজার টাকা লইয়া গিয়াছে।

অগ্নিদাহ ।

১০ মাঘ শনিবার রাত্রি মোং কলিকাতার জোড়াসাঁকোর ওজর রাঘব পুর্

সমাচার দর্পণ।

দিকে ক'শী শখ বাবুর বাজারের নিকটে
অনি লালিয়া অনেক গাছ দাঁড়ইয়াছে।

সুদূরীকর্ষণ শস্য।

সুদূরীকর্ষণের গাও মিলিলে এক জন
ভাণ্ডারান লোকের দ্বিধা করণে আশঙ্ক
হওয়াতে তিনি কহিলেন যে গরিব
লোকেরা শস্য করিতে আমার সাধি
নহে। তাহাতে বিচার কর্তা সাহেবের
বিবেচনা করিলেন এইস্থলীয় কোয়েকর
আতিথদের ব্যবহারানুসারে সেই ব্যক্তির
কথামাত্র গৃহীত করিলেন। ইহাতে অনু
মান হইল যে অল্প দিনের পরে গরিব
লোক শস্য করা ব্যবহার লুপ্ত হইতে
পারে তাহাতে অনেক শিষ্ট লোকের ও
কার হইবেক।

কালিঙ্গের গাও।

বঙ্গদেশস্থের সুবিল স্থান কালিঙ্গের
গাও হাজার বৎসর অবধি ভারতবর্ষে
পুণিন্দ্র এবং মুনলমানেরাও তাহার ব্যা
ঘাত কখনও করিতে পারে নাই এ হিন্দু
স্থানের মধ্যে তাঁর তুল্য শক্ত কিম্বা গুণ
নাই ও ওত্তম স্থানে গুণিত এবং তৎক্ষণিক
হইতে সাত শত হাত ওত্র এবং আডে
আড়াই কোশ আয়ত ও তাহার মধ্যে
নালা বৃদ্ধিতে সুশোভিত। সে কালিঙ্গের
গাও কতক বৎসর শাস্ত্রাণুত কোল্লানি
বাহাদুরের অধীন হইয়াছিল সশস্ত্র
কোল্লানি বাহাদুর তাহা ভাঙিতে বহু
দিয়েছেন যেহেতুক সাগর শহরে যাইবা
র শস্য হাজী গাও নামে এক কিম্বা আছে
উভয়দিক্ত তৎপুর্বেশ অন্য গাও রাখা
পরামর্শ হইল না সে কিম্বা ভাঙিবার
কারণ লোক নিযুক্ত হইয়াছে। সে কিম্বা
ভাঙিয়া এমত সমভূমি করিবে যে কোন
অকাইত অথবা কোন শিগরিমেধা নে

আশুর করিয়া থাকিতে না পারে এই
মত প্রচল হইয়াছে।

আলমোড়া।

কতক দিন হইল অনরব হইয়াছিল
যে কোল্লানি বাহাদুর আলমোড়ার কিম্বা
ভাঙিতে বহু দিয়াজেন কিন্তু সে জন
রব মিথ্যা পরন্ত সে কিম্বা মোরামত করি
বার জন্যে সেখানে লোক গিয়াছে যে
কোন পুকারে সে কিম্বা বজায় থাকে
এবং তৎপুর্বেশ রোহিলখণ্ড ও আলমো
ড়া এই ওভয়স্থানের মধ্যে বস এক রাধা
করিতে কোল্লানি বহু দিয়াজেন তাহার
কারণ এই যে ঐ ওভয় দেশের বাণিজ্য সু
দুরূহ লে।

আলমদ্বীপ।

কলিকাতা পরগণার ষড়বহ গুণের
ঐযুত পুণিন্দ্র বিশ্বাস ঐ গুণের বীর
ঘাটের ওপরে চতুর্দশ ওক্ট মন্দির করি
য়াছেন এবং অনেক আর্থব্যয় করিয়া বান
কৃত হইতে বালিন্স আনায়া ঐ মন্দির
প্রিন্স বালিন্স শিব সন্মান করিয়া
ছেন এবং সে স্থানের নাম আলমদ্বীপ
পুকাশ করিয়াছেন ও ঐ আলমদ্বীপের
দক্ষিণ ভাগে এক পরবটী পুকাশ করিয়া
ছেন সে স্থান অভিযন্তে। এতদ্বন্দে
অনেক ভাণ্ডারান লোকেরা অনেক
মন্দির করিয়াছেন কিন্তু এক বালিন্স
সন্মান করহই করেন নাই।

তুল।

গাও বৎসর এখানহইতে যে তুল
ইংগুত দেশ গিয়াছে তাহা সমুদয় সে
খানে ষড় হুই নাই বাজারে অনেক
আছে এবং হিসাব করিয়া আনা গেল যে

সাড়ে ছয় কোটি টাকার তুল এই বৎ
সরের শেষে লুপ্ত হইয়া থাকিবেক।

বালিতা।

এই ভারতবর্ষহইতে তুল ও নীল ও
তুল পুত্র পুর্বাল জিনিস যে ইংগুত
পুত্র বৎসর যায় উভয়দিক্ত দুই জি
লিম ও এখান অনেক ইংগুত দেশে যাইতে
ছে অতএব সেই জিনিস গাও বৎসর
কত গিয়াছে তাহা লিখা যাইতেছে।

| জিনিস | মোল |
|-------------|---------------|
| আমুর | — — — — ১০৮৩৩ |
| ডামাক | — — — — ১০৮১৮ |
| ভেরুতা তৈল | — — — — ৩৪০৪ |
| সাওদানা | — — — — ৩১১৩ |
| মঞ্জি | — — — — ৩৩৮৮ |
| নারিকেল তৈল | — — — — ১৩৭০ |
| নিশাদল | — — — — ১৩৩৭ |

সূত্র।

গাও সমস্তই বিশ হাজার টাকার সূত্র
এক টিকটে ওঠিয়াছে তাহার বিবরণ
কিছু আশ্চর্য। এক সাহেব সূত্রের টি
কটে ষড় করিবার কারণ ঐযুত জো
মেড সাহেবের ঘরে গেল ও জোমেড
সাহেবকে কহিল যে আমি সূত্রের এক
টিকটে কিনিব। তাহাতে জোমেড না
হেব অনুমান এক শত টিকটে বাহির
করিল ও ঐ সাহেবকে কহিল যে তুমি ক
ত টাকার টিকটে নইবা তাহা পরদ কয়।
সে ব্যক্তি জোমেড সাহেবকে কহিল যে
তোমার পরদে যে টিকটে আইনে সেই
আমার গুণ। পরে জোমেড সাহেব
এক টিকটে পরদ করিয়া তাহাকে দিল।
সে ব্যক্তি সে টিকটে দেখিল না ও তাহার
নম্বর ও আলিনা লেখল সেই টিকটের
ওপরে খাম করিয়া আনি নামের পুণ্য
অঙ্কর তাহার ওপরে লিখিয়া জোমেড

সম্পাদার দর্শন।

সাহেবের দ্বায়ে গিয়েছিল। রাহিল এক-
কহিল যে এই সূর্য যে দিন ওঠবে সে দি-
ন আমাকে খবর দিও এবং এই ছাঁকাট
বিশ হাজার বিঘা পঞ্চাশ হাজার টাকার
ওঠবে। পরে গভ সন্তোষ সেই-বিশ হা-
জার টাকার টিকিট ওঠিয়েছে।

অথ হাস্যবিদ্যা।

এক নগরীর চারি চৌর এক গৃহস্থের
ঘরে হুড়ি করিয়া অনেক দিন লইয়া
মাইতে নগরীর চৌবায়েরের ঐ দিন
সময়ে চন্দ্রি চৌরকে ধরিল ও-রাজার নি-
কটে ওপস্থিত করিল। রাজা বিচারদ্বারা
ডাইনগরের দোষ মণ্ডমান করিয়া ডিন
চৌর বদি করিলে চন্দ্রি চৌর কহিল যে
জৌকীয়েরেরা আমায়েরের ডিন জনকে
লম্ব করিয়া আমাকে একবার রাজার
মহিত সাফা করাইয়া লম্ব কর।
যেহেতুক আমি অশুভ এক বিদ্যা জানি
আমি মরিলে সে বিদ্যালোণ হয় তাহা
রাজাকে শিক্ষা করাই পরে আমাকে
লম্ব করিও। এই সম্বাদ রাজার নিকটে
পুলান হওয়াতে রাজা ছোটুকায়ে
চৌরকে ডাকিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন যে
তুমি কি বিদ্যা জানিস। চৌর কহিল যে
আমি সুবর্ণকুশি বিদ্যা জানি যে মহা
রাজ এক শ্বশপরিমিত সুবর্ণের বীজ
করিয়া নিয়ম মত মৃতিকাং বুলিলে এক
হালি ঐ বীজ বহু ওল্লিবে ও ডাইতে
এক পল শ্বশ হইবে মহারাজ আপনি
ধেয়ালেই জানিতে পারিবেন। রাজা সে
কথাতে বিশ্বাস করিয়া তাহা করিতে
অনুগ্রহিত হিলেন। চৌর স্বপকারদ্বারা

সুবর্ণের শ্বশপরিমিত বীজ নিম্নাণ করি
য়া রাজার অন্তরগুর ভূমি পরিচার করিয়া
কহিল যে মহারাজ বীজ বপন কে করি
বেন আজ্ঞা করুন। রাজা কহিলেন
তুমি বীজ বপন কর। চৌর ওত্তর
করিল যে মহারাজ স্বর্ণ বীজ বুলিতে
আমায় অধিকার নাই যদি অধিকার
থাকিত তবে এমত বিদ্যা জানিয়া আমি
যুগ্মী হইতাম না যে লোক কখন কোন
দুবা তুরি না করিয়া থাকেন তিনি এই বীজ
বুলিতে পারেন অতএব মহারাজ ঐ বীজ
বপন করুন। রাজা কিঞ্চি কাল ভাবনা
করিয়া কহিলেন যে আমি সন্মানিগরি
গকে দিবার নিমিত্তে নিজার নিকটেইতে
কিছু দিন লইয়া সন্মানিগরকে কিঞ্চি
দিয়া জিলাম কিছু আপনি লইয়া জিলাম এ
কাথ্যও এক পুকার তুরি হয় অতএব আমি
বীজ বপন করিতে পারি না। চৌর এই
কথা শুনিয়া কহিল যে তবে মন্ত্রী বপন
করুন। মন্ত্রী কহিলেন আমি রাজভীর
বাণীরে নিযুক্ত আছি কি পুকারে কহিব
যে আমি কখন তুরি করি নাই। পরে
চৌর কহিল তবে বৈদ্যবিকারী বীজ বপন
করুন। পঞ্চাশ বৈদ্যবিকারী ওত্তর করি
লেন আমি বালাকলে মাতার স্থানিত
মোহক তুরি করিয়া জিলাম। চৌর এই
সকল কথা শুনিয়া কহিল হা যদি আপ
নারা সকলেই তুরি করিয়াছেন তবে কে
বল আমায় পুলাহু কেন হয়। সভায়
সকল লোক চৌরের কথা শুনিয়া হাস্য
করিতে লাগিলেন এবং রাজাও কিঞ্চি
হাস্য করিয়া কহিলেন যে চৌর চৌর
পুলাহু হইবে না।

বাংলা ভাষা

| কিনিস | মোব | অবধি | পরিমিত |
|--------------|-----|------|--------|
| মুল্লি | ১ | ৪ | ৪০ |
| ভেরকা উল | ১ | ১০ | ৩২ |
| গাহ রজি | ১ | ৫ | ৩ |
| নারিকেল উল | ১ | ১৬ | ১১ |
| বুলা কাহোকা | ১ | ১০১০ | ১৫ |
| আবা রকশুর | ১ | ০ | ৩ |
| পাটমাই আবা | ১ | ২১০ | ২৫০ |
| চান্দ পাটমাই | ১ | ৩১০ | ৩৫ |
| পাছকি উত্তম | ১ | ২৫ | ০ |
| পাছকি মধ্যম | ১ | ২১০ | ২১০ |
| মুল্লী উত্তম | ১ | ১১০ | ১ |
| মুল্লী মধ্যম | ১ | ১১০ | ১ |
| বালায় | ১ | ১৫ | ১ |
| বুলা খান | ১ | ২৫ | ২৫ |
| পাটমাই বুট | ১ | ৩১০ | ৩১০ |
| অবধি আবি | ১ | ৩১১ | ৩১১ |
| উত্তমগারেভু | ১ | ২৫ | ২৫ |
| মধ্যম হুত | ১ | ১৫ | ১৫ |
| উত্তম হুত | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মধ্যম উত্তম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| বীজ উত্তম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| অবধি পুকার | ১ | ১৫ | ১৫ |
| বীজ | ১ | ১৫ | ১৫ |
| গোরা উত্তম | ১ | ১ | ১৫ |
| মধ্যম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| চিনী কাপার | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মধ্যম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| খার চিনী | ১ | ১৫ | ১৫ |
| ভেতুল | ১ | ১৫ | ১৫ |
| ডামাকু | ১ | ১৫ | ১৫ |
| চন্দ | ১ | ১৫ | ১৫ |

এই সম্বাদ রাজার শ্বশপরিমিত সুবর্ণের বীজ
করিয়া নিয়ম মত মৃতিকাং বুলিলে এক
হালি ঐ বীজ বহু ওল্লিবে ও ডাইতে
এক পল শ্বশ হইবে মহারাজ আপনি
ধেয়ালেই জানিতে পারিবেন। রাজা সে
কথাতে বিশ্বাস করিয়া তাহা করিতে
অনুগ্রহিত হিলেন। চৌর স্বপকারদ্বারা

সমাচার দর্পণ

৯০ নং খণ্ড।

শনিবার।

৫ জিহ্বাতি সন ১৮৭০। ১৪ মাঘ সন ১৮৮০।

দর্পণে মুখ পৌষ্যদিবস কার্যবিবরণ।

বৃত্তান্তমিহ ক্রমতঃ সমাচার্য্য দর্পণে ॥

কোল্লানির কার্য।

কোল্লানির শতকরা জয় চাকার নুবের
কাণ্ডি কয় করিতে হইলে শতকরা
বার আনা ডিকৌণ্ড। বিকয় করিতে
হইলে শতকরা এক টাকা দুই আনা
ডিকৌণ্ড।

সম্রাটের পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|----------|-------------|----|-----|
| ৫ | জিহ্বাতি | শনিবার | ১৪ | মাঘ |
| ৬ | ২ | রবিবার | ১৫ | ২ |
| ৭ | ৩ | সোমবার | ১৬ | ৩ |
| ৮ | ৪ | মঙ্গলবার | ১৭ | ৪ |
| ৯ | ৫ | বুধবার | ১৮ | ৫ |
| ১০ | ৬ | বৃহস্পতিবার | ১৯ | ৬ |
| ১১ | ৭ | শুকবার | ২০ | ৭ |

ইস্রাহার।

১৪ দিনের ভাট্রিমে হলিকাতার আখী
ম দস্তার হইতে এক ইস্রাহার বাহির হই
য়াছে যে বোনার মাঠ ভাট্রিমে এগার
ঘণ্টার সময়ে একশেষ ঘরে বেহোরের
১৩৭১ শিক্কর আখীম ও বানারসের ৩৩১
শিক্কর আখীম বিকয় হইবেক।

সমাচার দর্পণ।

সিংহলদ্বীপ।

সম্রাট তাহা সিংহলদ্বীপ ইংল্যান্ডের

বের হস্তগত হইয়াছে এবং মেখালকার
লোকেরা ক্রমে ইংল্যান্ডেরদের রাজ্য
মনে এখন সম্মত হইতেছে যেহেতুক
যাহারা সিংহলদ্বীপের অধিক তাহার
অধিকারি নামে খ্যাত তাহারদের দৌ
রাড্রাহইতে সিংহলদ্বীপের লোকেরা এ
খন রক্ষা পাইয়াছে সেখানে ঐ অধিকারি
দেরদের এমন পরামর্শ পুর্বে ছিল যে সে
খানকার পুত্রদের অধীন ও মরণ তা
হারদের অধীন ছিল তাহার যখন যে
মন ইচ্ছা করিত তখন তেমন করিত।
সেখানে ইংল্যান্ডের অধিকার হইলে যি
নি সেখানে বড় সাহেব হইয়া গোলেন
তিনি এক দিন সেই সকল অধিকারিদি
গকে আপন নিকটে ডাহিলেন ও তলে
কে তাহার নিকটে ডাহিলে আইল এক
অধিকারী কিংস বিলম্ব আইল পরে
তাঁহাকে জিজ্ঞাসা করা গেল যে কেন
তোমার এত বিলম্ব হইল। সে তাহার
ওতর করিল যে আমার চারি জন বেহারা
আনিতে বিলম্ব করিয়াছিল তৎপুত্র
বিলম্ব হইল কিন্তু পুর্বে এমত ছিল না
পুর্বে আমি এক অঙ্কলিমাশ্র বটাইল এক
শত লোক তৎক্ষণাৎ হত্যাশ্র হইয়া
সম্মুখে ওপহিত হইত কিন্তু এখন চারি
বেহারা আনিতেও বিলম্ব করে মায়া
কি। ঐ অধিকারিরা পুর্বে দেশের সু
গণেরদের অধিক ব্যাঘাত দিত সে
দেশে কেবল ঐ অধিকারিদেরমাত্র
সুখ ছিল কিন্তু পুত্র লোকেরদের অর্পণ
দুঃখ। এখন ইংল্যান্ডেরদের সেখা
নে অধিকার হওয়াতে ঐ অধিকারিদের

নিতান্ত সুখহীন হইয়াছে এবং পুত্রার
দের অত্যন্ত দুঃখহীন হইয়াছে। সে
খানে শহর ভিন্ন পল্লীগামে চাকার কার
বার প্রায় নাই যখন কোন দুখ হয়
করিতে হয় তখন এক দুখা দিয়া অন্য দু
খ লয় এবং তৎক্ষণাৎ লোকেরা সেখা
কার ওপরে এমত সুখ শিল্প কর্ম করিতে
পারে যে তেমন লক্ষ্যনৌ ও বিল্লীর লোকে
রা করিতে পারে না এবং সেখানে এই
সকল শিল্পকর্মের মজুরি তৎক্ষণাৎ লবণ
কিন্তু এক আখিমান করত। সেখান
কার রাজা ইংল্যান্ডেরদের পুত্রলুলে
আনেক হস্ত নর্থ করিয়াছিল তৎপুত্র
তাঁহাকে মাদ্রাজের নিকটে বেঙ্গল নামে
খানে কবর দিয়াছিল ও তাহার মর্শা
হরা পুত্রমান পাঁচ ছাত্রের চাকানিকল
করিয়া দিয়াছেন।

সেখানকার হস্তী সকল দেশের হস্তী
হইতে বড়। এবং সে দেশে দস্তুর
হস্তী পাওয়া ভার ও পুর্বে কালে এমত লি
খ ছিল যে যদি কখনও সম্রাট হস্তী পাওয়া
মাইত তবে তৎক্ষণাৎ রাজার নিকটে
দাখিল হইত রাজামাত্র তাহার ওপরে
আরোহণ করিতেও কোন পুত্র তাহার
ওপরে চড়িতে পারিত না। এবং রাজা ঐ
কন হস্তী পাইলে বৃদ্ধ বৈষকে সমর্থন
করেন এবং মহলহইতে বড় যে হস্তী
তাঁহাকে রাজা আপন রাখেন এবং সে
খানে রাজা যখন হস্তীর ওপরে আরোহণ
করেন তখন মাছ হুত তাহার ওপরে চড়িতে
পারে না। রাজার অগ্রে চাকর কি কন
বসিতে পারে রাজা আননিই হস্তীকে চা

সমাচার দর্পণ।

লাল এবং অন্য দেশে হস্তীরা পুষ্ট দেশে
কর্তা বনে ও তাহার মস্তকের ওপরে
মাইত বনে কিন্তু মিহলহরণে তাহার
বিশেষত মস্তকের ওপরে রাজা বসেন ও
পুষ্ট দেশে জালা চাকর বসে ও তাহার
দেহে ধান্য সামগ্রী থাকে।

তাকাইতি।

ইউরোপ দেশস্থিত ইতালি দেশে এক
আশ্চর্যকর তাকাইতি হইয়াছে। এক
ব্যক্তি ভাগ্যবান সাহেব আপন ঘরে বসি
য়া সাধারণকালে আপন পুত্র ও এক জন
জরিওয়াল সাহেবের সহিত কথোপকথন
করিতেছিল ইত্যবসরে এক ব্যক্তি তাহার
ইত শিষ্ট লোকের মত পোশাক পরিধান
করিয়া ও ইষ্টিতে কখন শাল তড়াইয়া
অকস্মাৎ তিন জনের সম্মুখে ওপস্থিত
হইয়া নিজামা করিল যে এই ঘরের বসতি
কে। তাহাতে ঐ ভাগ্যবান সাহেব
তাহার অভিভূত বুদ্ধিয়া কহিল যে আমি
তাহাকে তাকিয়া আছি। ইহা কহিয়া
সে পলাইল। ঐ তাকাইতি তাহাকে চিনি
তে পারিল না। ঐ ভাগ্যবান পলাইয়া
মাইতে আর চারি জন তাকাইতি
দেখিল। ঐ তাকাইতি ঐ ভাগ্যবা
নের পুত্রকে ও জরিওয়াল সাহেবকে
কিছু লইয়া এক অঙ্গলে গেল। পরে
ঐ দুই জন সেই অঙ্গলে পক্ষীজন তাকা
ইত অর্থাৎ ইয়াইতে দেখিল এবং তাহার
দেহে যথো বিশ বৎসরের অধিক বয়স
সম কাহারো নহে ও তাহারদের পোশাক
প্রকৃত সাহেব লোকেরদের মত ও স্বর্ণ ও
হীরারে সজ্জিত ও এক অঙ্গুরি তাহার
দেহে অঙ্গুলিতে এবং তাহারদের সর
দ্বারের গলাতে অতিমুদ্রের সোনার
মালা আছে। ঐ তাকাইতির সরদার

ঐ ভাগ্যবানের নিজের পুত্র দিখিল যে
তোমার পুত্রকে আমি কএক করিয়াছি
তুমি ছয় হাজার টাকা পাঠাইলে তবে
তাহাকে খালাম করিয়া দিব নতুবা তো
মার পুত্রকে ছাড়িব না কিন্তু ঐ জরিওয়া
কে পক্ষী টাকা পাঠিলে খালাম করিয়া
দিবেক এমন দিখিল। পরে ঐ ভাগ্য
বান তাহারদিগকে অনেক বিনয়পূর্বক
দুই হাজার টাকা পাঠাইয়া দিয়া আপন
পুত্রকে খালাম করিয়া আনাইল।

আম্রহতা।

কলিকাতার বহুভাঙ্গরে আনন্দ না
যে এক জন পৌরুষাঙ্গি আপন আপন
গালাতে ছুরি দিয়া মরিয়াছে তাহার তদা
রক করিবার কারণ গত সোমবারে পুল
সের শঙ্করমল্ল নামের জুড়িরা বিবেচনা
করিলেন ও তাহাতে এই প্রমাণ হইল
যে ঐ মৃত ব্যক্তি পূর্বে মোহন কলিকাতার
চাকরদের কোঠা জিল গত বন্দোবস্তে
তাহার কর্ম দ্রুত হওয়াতে দুখী হইয়া
মান্দ্রাজে গিয়াছিল সেখানেও আপন
চাকরি না হওয়াতে পুনর্বার আপন পুত্র
পালনার্থ মোহন কলিকাতাতে আসিয়াছিল
তাহাতে ঐ ব্যক্তি কিংবা ওয়াতনায় হই
য়াছিল তৎপুত্রকে সে আপন গালায় ছুরি
দিয়াছে।

কুস্তীর।

পুলিশিনার শব্দে ও জানুয়ারি সোম
বার শেষ রাতেই এক ঘোড়ার আশ্রমে
এক কুস্তীর প্রবিষ্ট হইয়াছিল তাহাকে
দেখিয়া তাহার ঘায়স্থ কুকুর শব্দ করিতে
লাগিল তাহাতে সকলের নিদ্রা ভঙ্গ হ
ইয়া গিয়া কুস্তীরকে দেখিল ও তাহাকে

অনেক পরিশ্রম করিয়া ধরিল। ঐ কুস্তীর
দশ হাত লম্বা ও তিন হাত চোড়া। ঐ
আশ্রম লম্বা হইতে পুষ্ট এক হাজার
হাত দূর কিন্তু লম্বীতে সম্পূর্ণ এক লম্বা
মা আশ্রমের লিফটে আছে অলম্বান
হয় যে ঐ লম্বা দিয়া আসিয়াছিল।
এবং জানুয়ারি তারিখে ঐ লম্বীতে এক
তোমার ওপরে হইতে এক জনকে কুস্তীরে
লইয়া গিয়াছে। ঐ মাসের ও তারিখে
বৈকাল বেলা আর এক জনকে কুস্তীরে
ধরিয়াছে।

বানিত্য।

এই বৎসর নীল অন্য দেশে অনেক
গিয়াছে। কতক দিন হইল সম্রাটের
পাওয়া গেল যে ইংলণ্ডে নীলের মূল্য
অধিক হইয়াছে এখান যে নীল অন্য
আছে তাহা কমে অন্য দেশে রপ্তানি
হইতেছে। আদ্য ও অন্য শস্য বাজারে
কিছু কম আছে এবং কাপড়ের বাজার
মঙ্গ হইয়াছে বিলাতি জিনিসের মধ্যে
কোন জিনিস ভিন্ন পুষ্ট মঙ্গল জিনি
সের মূল্য অল্প।

ভাগ্যপুত্র।

সম্প্রতি সম্রাটের পাওয়া গেল যে
ভাগ্যপুত্র পুত্রের পুত্র অধিক বয়স
হইয়াছিল। কিন্তু তাহাতে তৎপুত্র দশ
কোন শস্যাদির অঞ্চল হইতে পাঁচ
নাই এবং সেখানে যে পুত্রের শস্য এই
বার তৎপুত্র হইয়াছে এই পুত্রের শস্য
গত তিন চারি বৎসর হয় নাই কিন্তু শ
মোর মূল্য অযোগ্য লুপ্ত হয় নাই। অ
ন্য পুত্রের সম্রাটের পাওয়া মাইতে
ইহা যথেষ্ট শস্য শস্য অতিমুদ্রের তদ্বি
য়াছে কিন্তু তাহাতে কোন দ্রব্য সুদৃশ্য

সম্রাটের দর্শন।

নহে এবং অন্য বৎসর যদি হয় এক দুবা দুখুলা থাকে গুণ অন্য মকল দুবা মূলত হয় এই বৎসর স্থির গতিক যে মকল দুবাই দুখুলা। কিন্তু এই বৎসর নানা পুণ্যে যে কল শনাদি অনিয়মে ইহাতে অনুভব হয় যে আশিষ বৎসরে অতিসুখি হইবেক।

ওলাগুণ।

মহিষ্যস্বরূপীহতে সম্রাটের আনিয়াছে যে সেই দেশে এলাগা রোগ পুনরুত্থার বলবান হইয়াছে কিন্তু ইতর লোকের দেহ মধ্যে অধিক এবং তাহার তদারক করিবার কারণ মরকারহতে শুক্য হইয়াছে তাহাতে সে বিয়্যুর অনেক তদারক হইতেছে।

হরিবারের যাত্রা।

হরিবারে কুন্তকাংলা নামে এক যাত্রা আশিষ কুন্তন-কান্তিতে হইবেক। সে যাত্রা বার বৎসর অন্তরে একবার হয় তা হার কারণ এই যে যে বৎসর সূর্য্য ও বৃষ্টি কুন্তরাশিত হন সেই বৎসর কুন্ত যাত্রা মেখানে হয় যেহেতুক বৃষ্টিতে বার বৎসর অন্তরে কুন্তরাশিতে গমন করেন সেই যাত্রাতে হিন্দুধর্মের অনেক লোক মেখানে একত্র হয় অনুমান হয় যে দশ লক্ষ লোকের অধিক লোক মেখানে অমা হইয়া থাকে কিন্তু ১৮০৮ সালের যাত্রার মত যদি লোক সমাগ্য হয় তবে নিঃসন্দেহে আমরা বুঝিতে পারি যে মেখানে বিশলক্ষ লোক এইবার অমা হইবেক। এই বার যে মত লোক হইবে তাহার কারণ এই যে শ্রীশ্রীপুত্র বড় সাহেব সিংহল দ্বীপ হইতে কাশ্মীরের পর্যটনপথ্য এবং সিদ্ধ লবীর ভীরহইতে গীল দেশপর্যন্ত তাবৎ

দস্যু পুণ্ডির ভয় দূর করিয়াছেন তাহাতে বোধ হয় যে যাহারা অন্য বৎসরে আ ইমে নাই তাহার অংশ এই বৎসর আশিষে।

এই যাত্রাতে দুই পুণ্যজনের নিমিত্ত লোকেরা যায় পুণ্য বানিজ্যাহারা বিন লাভ দ্বিতীয় উপদর্শন। তাহার মধ্যে অধিক লোক বানিজ্যের জন্য অনেক দূর দেশহইতে আইসে। গত যাত্রাতে ওত্তর দিকস্থ কথিয়া দেশহইতে মহাজনের আনিয়াছিল এ গীল এ তাহার দেশের মহাজনেরা হিমালয় পর্বত দিয়া তা পুণ্ডি বিক্রয় করিবার নিমিত্তে আনিয়াছিল অধিক কি লিখিব এমন কোন দুবা নাই যে সেই যাত্রাতে বিক্রয় না হয় যেহেতুক ঐ স্থান আনিয়ার মহাবর্ষি মেখানে হাজির দেখে হাজার মহাজনেরা মকল দেশহইতে আনিয়া মহাবাজারের মত দুবা কয় বিক্রয় করে।

হস্তকলমে।

মোং সিংহলবীণে হস্তকলমে লোকেরা অধিক দোহাওয়া করিতেছে সেই কারণে মেখানকার বড় সাহেবের ইংগুণ্ডে যাওনের পুণ্য জয় মাস দেখি হইল। ইংগুণ্ড হইতে অনেক জাপান স্বর্গের কাগজ আনিয়াছিল কিন্তু সেই কাগজে লম্বর ও টাকার অঙ্ক ও মহা ইত্যাদি কিছু ছিল না সেই মকল পুর্বান সেক্টারির দস্তর খানায় রাখা গিয়াছিল মেখানহইতে সে মকল চুরি করিয়া চোরেরা সেই স্বর্গতে আশ্রয় ইচ্ছানুসারে টাকার অঙ্ক খেলিয়াছে ও বড় সাহেব এ রোজের সাহেবের মহা করিয়াছে এবং এই মকল স্বর্গ দিয়া টাকা লইয়াছে এবং যাহারা এই মিথ্যা স্বর্গে মত

আল গুয়া করিয়াছে তাহারদের অনেক কষ্ট ও ক্ষতি হইবেক। সেই স্বর্গতে তাহার মালের ভুল করিয়াছে ১৮১২ সালকে ১৮০১২ সাল করিয়াছে এবং এক স্থানে যে নাম মহা করিতে হয় তাহা অন্য স্থানে মহা করিয়াছে এই ভুলক্রমে সে মিথ্যা স্বর্গে বীরা পতিয়াছে।

আশ্চর্য্য চলন।

ইংগুণ্ডে এক ব্যক্তি নাচে পশ্চাত্ত কোণ চর্চিন ঘণ্টায় চলিতে বাজা রাখিয়াছিল তাহাতে সে ব্যক্তি নয় মিনিট কয় চর্চিন ঘণ্টায় ঐ পথ চলিয়া বাজিতে অগ্নি হইয়াছে।

গীল দেশ।

কথক দিন হইল গীল দেশে এক ভাণ্ডার বাল লোকের স্ত্রী মরিল এবং সে দেশের সম্রাটের পত্নে সেই স্ত্রীর মরন বিষয়ে এই মত লিখা গিয়াছে যে স্বল্পযুত ত্রুণের স্ত্রী অমর লোকের সহিত বেড়াইতে গিয়াছেন।

হয়দরাবাদ।

হয়দরাবাদের পত্নহারা জানা গোল যে মহারাজ গোমস্ত বন্ধ আপন রাজা না গিয়া হয়দরাবাদহইতে ফিরিয়া আনিয়াছেন তাহার রাজা না পাওয়াতে সেই দেশীয় পুজারা বড় আনন্দিত হইয়াছে যেহেতুক ঐ রাজা অতিদুরাশ্য।

গত ১৭ দিসেম্বর তারিখে শ্রীযুত মহা রাজ চন্দ্রনাথ লবাব নিজামের নীচ হাজার সৈন্যের ইস্তাহাম লইলেন ও নীচ হাজার টাকা তাহারদিকে পাঠি ডোবিক দিলেন।

এক ভীল নামে এক আতিথ্যের সহিত ইংগুণ্ডেরদের যে এক ঘর হই

সমাচার দর্পণ।

ডেভিল তাহা আদ্যপি লিখ্ত হয় নাই
কিন্তু তাহারদের পক্ষীয় অনেক সরদার
যত ইংলণ্ডীয়দের অধীন হইয়াছে
কথক স্বাধীনও আছে।

পশ্চিমীয়া কথা।

বীর নামে এক রাজনীতিতে বিরুদ্ধ
পক্ষীয় নামে এক ব্রাহ্মণের পুত্র নির্বিক
নাম্য ব্রাহ্মণ হইতে করে। সে অধ্যয়ন
ও শিক্ষার জন্য ইংল্যান্ডে গিয়াছিলেন
হিত মন্থিয়া করিতে প্রবৃত্ত হইল। এক
সময় এক বেবলিয়ের গার্ডের মধ্যে কখন
তের শব্দ শুনিয়া চিত্তা করিল যে এই
বেবলিয়ের গার্ডের গুপ্তিরা কখনও সকল
বিরুদ্ধা আসি। শাস্ত্র লিখিত আছে যে
কামুক লোক বাতিরের আর কোন
বস্ত্রই সূচী হয় না। এবং খল লোক
খলতা ব্যতিরেকে সূচী হইতে পারে
না কিন্তু লোক হিন্দা না করিয়া স্বল্প
যাক্তিতে পারে না। অনন্তর ঐ ব্রাহ্মণ
কখনও লইবার নিমিত্তে বেবলিয়ের
গুপ্তিরা গর্তে হাত দিয়া কখনও আল
গর্তের মর্মে বহিল। তাহাতে ঐ ব্রাহ্মণ
মর্মে সেই ব্রাহ্মণের হস্ত বেধন করিল।
তখন ঐ ব্রাহ্মণ এই চিত্তা করিল যে যদি
আমি মর্মে ভাগ্য লা করি তবে এক হস্তে
বেবলিয়হইতে নামিতে পারি না যদি
ভাগ্য করি তবে মর্মে আমাকে মর্মেণন ক
রিবে মর্মেণন কি করি এইজন বিবাহান্ত
হইয়া গুপ্তিরা কহিতে লাগিল যে হে
সকল লোক আমাকে রক্ষা কর। শাস্ত্র
এক পুমান আছে যে লোক আনন্দ

দ্বোয় গুহন না করে এবং মর্মেণন কামলে
তে প্রবৃত্ত হয় সেই মূল্য ঐ ব্রাহ্মণ অন্য
জনগণ হইয়া অবশ্য কাতর হয়। অন
ন্তর ঐ ব্রাহ্মণের কথা শুনিয়া সেখানে
অনেক লোক আইল এবং রাজা ভোক্তা
এই সম্মান শুনিয়া ব্রাহ্মণের রক্ষার্থে সে
খানে আইলেন কিন্তু ব্রাহ্মণের ভ্রাতার
গণ্য কেহ কিছু শির করিতে পারিল না।
পরে রাজা ভোক্তা পণ্ডিত শিখরের নায়
বেবলিয়ের মর্মে এক হস্তাবলম্বী অন্য
হস্ত মর্মেতে বেধিত ব্রাহ্মণকে দেখিয়া
সকলকে কহিলেন যে হে মূল্য সকল
ভোমিরদের মধ্যে এমন কেহ আছে যে
কোন গণ্য করিয়া অন্যরূপে এই বিব্রক
মর্মেহইতে নীচে নামাইতে পারে তবে
আমি অবশ্য তাহাকে এক লক্ষ মোহর
দিব। ভোক্তার আর এই বাক্য শুনিয়া রাজা
পুতজাতি নিম্ন হন নামে এক পুত্র বিনু
বিবাহেতে তত্ত্বাবধান সে কহিল যে হে
মহারাজ অতঃপুত্র্যাসেনতে আমি এই বি
ব্রক নীচে আসিব কিন্তু ব্রাহ্মণ নরবেধিত
ত হস্ত আমাকে মর্মেণন। তাহাতে বিব্র
সেই জন করিলে ঐ রাজপুত্র পুত্র্যাসেন
বান যোগ্য করিয়া কর্মসুখার্থে আর্হণ
করিয়া ভাগ্য করিল এবং মর্মেণন মর্মে
দেহন করিল। তাহাতে মর্মেণন পণ্ডিত ব্রা
হ্মণের হস্ত ভাগ্য করিয়া মর্মেণন পণ্ডিত
পক্ষীয় ব্রাহ্মণ মর্মেণন ভাগ্য করিয়া
লিকহেণে বেবলিয়হইতে নীচে নামিল।
রাজা ভোক্তা তাহা দেখিয়া পরমাত্রা
দিত হইয়া ঐ রাজপুত্রকে স্বীকৃত লক্ষ
মোহর ও আরো পুকার বস্ত্রাদি দিয়া
সুন্দর করিলেন।

বাহার ভাগ্য

| ভিনিম | নাম | আব | পর্দা |
|--------------|-----|------|-------|
| সুপরি | ১ | ৪ | ৪৮ |
| ভেরগা উল | ১ | ২০ | ৩২ |
| গাহ মরিচ | ১ | ৪১৮ | ৬ |
| নারিকেল উল | ১ | ১৬ | ১৭ |
| হুগা কাহোয়া | ১ | ১১১০ | ১৮ |
| আবা রঙ্গপুর | ১ | ২৫০ | ৩ |
| পাটনাই কাবা | ১ | ২১১০ | ৩৬ |
| চালু পাটনাই | ১ | ৩১১৮ | ৩৬ |
| পাছকি উকম | ১ | ২৫০ | ৩ |
| পাছকি মধ্যম | ১ | ২১০ | ২১০ |
| মুগী উকম | ১ | ২৫০ | ৩ |
| মুগী মধ্যম | ১ | ২৫০ | ৩ |
| বাল্যম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মুগা ধান | ১ | ২০ | ২০ |
| পাটনাই বট | ১ | ৩১৮ | ৩৬ |
| আছকি তালি | ১ | ৩১১ | ৩৬ |
| উকমগাহেহুত | ১ | ২০ | ২০ |
| মধ্যম হুত | ১ | ১১ | ১১ |
| উকম হুত | ১ | ১১ | ১১ |
| মধ্যম উকম | ১ | ১১ | ১১ |
| নীল উকম | ১ | ১১০ | ১১০ |
| অন্য গুহার | | | |
| নীল | ১ | ১১০ | ১১০ |
| লোরা উকম | ১ | ৭ | ৭৮ |
| মধ্যম | ১ | ৬১০ | ৬১০ |
| চিনি কাশীর | ১ | ১০ | ১০৬ |
| মধ্যম | ১ | ৮১১ | ১০ |
| খার চিনি | ১ | ৪১০ | ৪১০ |
| ভেতুল | ১ | ৬০ | ৬০ |
| তামাক | ১ | ৪১০ | ৪১০ |
| চন্দন | ১ | ১৪ | ১৪ |

এই সম্মান দর্পণ পুরামপুরের ছাপাখানাতে পুস্তকভাবে প্রসিদ্ধ ছাপা হয়। বাহার লগনের আশ্রয়ক হয় তিনি পুরামপুরের ছাপাখানাতে
আপন নাম পাঠাইলে সন্মানে কাম্য তাহার নিকটে পাঠান হইবেক তাহার মূল্য নামে এক টাকা বিনি আশ্রয় করিয়াছেন যদি তাহার নিকটে
কাম্য না পাইলে তবে তিনি পুরামপুরের ছাপাখানাতে সম্মান দিবানন্দ তাহার নিকটে পাঠান হইবেক।

সমাচার দর্পণ

৯৯ নং খণ্ড।

শনিবার। ১২ ফ্রিভুতারি মন ১৮৭০। ৪ ফাল্গুন মন ১২১৩।

দর্পণদ্রষ্টা নোন্দারিবি কার্যবিবরণঃ।

বৃদ্ধান্তিহ জানক সমাচারদর্পণে॥

কোম্পানির কাগজ।

কোম্পানির শতকরা। চন্দ্র টাকার মূলের
কাগজ কয় করিতে হইলে শতকরা
চৌদ্দ আনা ভিজকৌণ্ড। বিক্রয় করিতে
হইলে শতকরা এক টাকা দুই আনা
ভিজকৌণ্ড।

মস্তাহার পরিকল্পনা।

| ১৮ | শনিবার | ১ | মঙ্গল |
|----|--------|---|-------|
| ১০ | ২ | ২ | ২ |
| ১৪ | ২ | ২ | ২ |
| ১৮ | ২ | ২ | ২ |
| ২২ | ২ | ২ | ২ |
| ২৬ | ২ | ২ | ২ |
| ৩০ | ২ | ২ | ২ |

ইস্তাহার।

১৪ দিসেম্বর তারিখে কলিকাতার আফ্রী
দপ্তর হইতে এক ইস্তাহার বাহির হই
য়াছে যে ২ বেসিরা মার্চ তারিখে এগার
ঘণ্টার সময়ে একশত গরু বেহাওর
১৬৭৭ নম্বরে আফ্রী ও বানারসের ৩৩৭
নম্বরে আফ্রী বিক্রয় হইবেক।

মঙ্গলার ইস্তাহার।

১৪ জানুয়ারি তারিখে শ্রীশ্রীযুত এই
ইস্তাহার দিয়াছেন যে ইংল্যান্ডের
অবিকৃত দেশোপলবধি ও বৈজ্ঞানিক
আয়ুজ্ঞ এই ভিত্তি দ্বারা যে কোন ব্যক্তি
লিঙ্গভাঙে আমদানি করিলে সে বিলা
মঙ্গল আমদানি করিতে পারিলে এক
যে দেশে ৪ দিন দ্বারা জন্মে ও সেখানে

আইজ বোকাই হয় সেই ভিত্তির ওপ
রে বড় সাহেবের কিম্বা অন্য কোন পুণ্ডি
সাহেবের সহী থাকিলে এক ২ দিন
দ্বারা যদি ইংল্যান্ডের ভিত্তি স্থান হই
তে কেহ আমদানি করে তবে তাহার মা
মূল লাগিলে।

বিবাহের ইস্তাহার।

৭ ফেব্রুয়ারি শ্রীযুত বাবু রায়দলালদে
সরকার গবর্নরমেণ্ড গোটেই ইস্তাহার
দিয়াছেন যে তিনি আপন দুই পুত্রের
বিবাহ ৭ ও ১১ ফাল্গুন তারিখে দিলেন
তাহাতে ইংল্যান্ড সাহেবেরদের কারন
১১ ফাল্গুন এই দুই দিন নির্ধারণ করি
য়াছেন যে তাহার ১ দুই দিনে তাহার
শিমলের বাড়িতে গিয়া লাভকৃত্তি দেখে
ন ও থান করিল। এবং আরও
যোগল ও হিন্দু ভাগ্যবান লোকেরদের
কারন ১৩। ১৪। ১৫। ১৬ তারিখে নির
লিত হইয়াছে তাহার ৩ ও ৪ মত
আমোদ প্রমোদ করিলেন।

সমাচার দর্পণ।

সহমরণ।

১৭ জানুয়ারি তারিখে মোক্ষ লক্ষ্মণো
আশঙ্ক্যক সহমরণ হইয়াছে এই দিন
এক স্ত্রী সহমরণ করিতে ওদাতা হইলে
বিকাল বেলা তিন ঘণ্টার সময়ে অনেক
লোক সহমরণ দেখিতে সেখানে ওপস্থিত

হইল সে স্ত্রীকে চিতাতে শয়ন করাইলে
অনেক শব্দ কাঠ ও চন্দন ও ধূপ পুত্রিত
তাহার ওপরে দিল তখন সে স্ত্রী এমত
অজ্ঞান ছিল যে তাহার নিকরে বাঁশ প্রভৃ
তি কিছু দিয়াছিল না। চিতাতে অগ্নি
সংযোগ করিলে ঐ স্ত্রী চিতাহইতে
ওগিয়া চিতার কাঠের ওপরে পা দিয়া বল
সুখে লজ্জ দিয়া লাগিল। এবং অতিশয়
হৌতিল। তৎক্ষণাৎ এক জন মিছাই

দৌড়িয়া তাহারে বলসমে ধরিয়া আনিয়া
পুলবারী কুলত চিতাতে নিক্ষেপ করিল পুন
রার সে চিতাহইতে লজ্জ দিয়া পলাইল।
পুলবারী সেই মিছাই তাহারে ধরিয়া
আনিয়া তাহারে চিতাতে ফেলিয়া দিল।
পুলবারী সে স্ত্রী পলাইল। পুলবারী ঐ মিছ
ই তাহারে ধরিতে যাইতে ভিল চারি
জন সাহেব লোক বিবেচনা করিল যে
ঐ স্ত্রীর নিত্য সহমরণ যাইতে বসান
নাই কেবল ঐ মিছাই তাহারে ধুক করি
তে ওদাতা হইয়াছে। এই বিবেচনা করিয়া
তাহার এক সাহেব ঐ মিছাইকে ধুক
মারিয়া মূরে ফেলিল ও আপনাতা ও অন্য

মিছাইরা সকল সে স্ত্রীকে ধরিলে অত্যন্ত
লইয়া তাহারে বাঁচাইল। ইহাতে অন্য
হিন্দু মিছাইরা কেহই অসম্মত হইল
না বরং তাহার রক্ষণে সকলে প্ররুণ
হইল। সপ্তমুতি সে স্ত্রী জাতিভ্রষ্ট হই
য়াছে তাহার কারন মোক্ষলক্ষ্মণ সাহেব
লোকেরা ঐ স্ত্রীর যাবজ্জীবন খরচের কারন
আপনাতা চাকি করিয়া টাকার সংস্থান
করিয়া দিয়াছেন।

গত ২৭ তারিখ এই দেশে এক সহমরণে অ

সমাচার দর্পণ ।

তিব্ৰিভূট হইয়াছিল একতী মহাশয়ন করি
তে ওদুতা হইয়া গিয়াতীরে বসিয়াছিল
তাহার আলালের কাঞ্চ এক দোকানহই
তে থাট্রি করিয়া আনিয়াছিল সে দোকান
লীর কাঞ্চের দরুন চারি আনা বাধী ছিল
তৎপুত্র সে দোকানী আনিয়া কহিল
যাও চারি আনা দিবা তাবৎ আমি
সহমরন ঘাইতে দিব না। এই বিরোধে
অবিবন্ধা কালক্ষেপন হইল। সে ক্ষী
অত্যন্ত দুঃখিনী হইয়া গীংকার করিতে
লাগিল ও কহিল যে আমাকে ত
লোয়ার দিয়া খুন কর কিংবা অন্য কোন
পুকারে মারিয়া যেন কিন্তু কিন্তু করিও
না। পরে ঐ চারি আনা তাহাকে দিয়া ঐ
বিবাহ মিটাইলে সে স্নানকে চিত্তারোহণ
করাইল ও সে অন্যায়নে মতী হইল।

আহাংদাহ।

মোং কলিকাতার চান্দপালের ঘাটের
লিকটে এক আহাং বাহিরে ঘাইবার
কারণ বোঝাই হইয়া গিয়া পুস্তত হইয়া
ছিল অল্প জিনিস বোঝাইর অপেক্ষা ছিল
সমুত্তি গড় সোমবারে ঐ আহাং
অগ্নি লাগিয়া বৃহৎকার্য্য তাবৎ আ
হাং পুড়িয়াছে তাহাতে অগ্নি লাগিলে
তাহার লিকটে কোন আহাং ও বজরা
নিমিন পুড়িত অগ্নির গুণানে থাকিতে
পারে নাই সে আহাংয়ের মূল্য আশী হা
তার টাকা এবং তাহাতে অনেক লক্ষ
টাকার জিনিস বোঝাই হইয়াছিল মোরা
ও তিনি ও রেশম ইত্যাদি অনেক দ্রব্য
বোঝাই হইয়াছিল।

মাথাভারি খাল।

মাথাভারি খালে অনেক অল্পতাপু
ত্র পুকে নৌকার গমনাগমনে লোকের

দের অতিকষ্ট হইত সন্তুতি সেখানকার
সমাচার আনিয়াছে যে কতক দিন হইল
কাঠীকাঠা খালহইতে সমুদ্রিয়া ঘাট
খাল সেই খালের তল মাশ করা গিয়া
ছে অতএব পুর্বে বৎসরে যে খানে নৌ
কাহিরে বাধা আশ্রিত সেই খানে অনেক
গাছখোঁ দেয়া গেল। মোং লতীভারি
তে দুই হাত জন ও মোং জাতিখানতে
দেখ হাত ও মোং ররপুর মওয়া হাত
এবং মুদেখানিতে দেখ হাত ও মোং
বোয়ালিয়ারি দেখ হাত ও মোং শিয়াল
মারি দেখ হাত ও মোং ময়ূপুরে দুই
হাত ও মোং আনুক্রদের ঘাটে দুই হাত।
এই সমাচারে নৌকা বাহনায় মহাজ
নেরদের অনেক গুণ্কার হইবেক ঐ খা
লে নৌকার গমনাগমনের জন্য মোং
কুণ্গাঞ্জে মাসুল দিতে পুর্বে হইত যথো
মান কথক তাহা গিয়াছিল কিন্তু পুন
র্বার সেখানে সেই এম মাসুল বসিয়াছে
এবং সে ঘাটে মাসুল দাখিল করিয়া গি
য়া আশে নৌকা না চলিলে পুনর্বার ফি
রিয়া আসিতে হইলে ঐ কুণ্গাঞ্জে পুন
র্বার মাসুল দিতে হয়।

ইষ্টকলমে।

আমরা গড় মস্তাহে লিখিলাম যে
সিংহলদীপে একটা মহাইষ্টকলমে হই
য়াছে এই মস্তাহে শুনা গেল যে মরিচ
গুণদানে সেইকল ইষ্টকলমে হইয়াছে
সেখানকার রাজার দস্তুরখানাত কেব
ল জাপানব্র লোটে থাকে তাহাতে টা
কার অঙ্ক নাই ও মসী নাই সে সকল
লোটে চোরেরা চুরি করিয়া তাহাতে টীক
মসী করিয়া ও টাকার অঙ্ক ফেলিয়া লুণ্ঠ
ক বাজারে বেচিয়া টাকা লইয়াছে। ইহা
তে সেখানকার বড় সাহেব এই ইষ্টকা

র দিয়াছেন যে যে ব্যক্তি এই ইষ্টকলমে
চোরের লিঙ্গ সন্ধান করিতে পারে সে তা
হি হাজার টাকা ব্রহ্মণী পাইবেক।

দুর্মূল্য

মোং মোংহইতে ৪৪ আলুআরি তারি
খের সমাচার আনিয়াছে যে বারিাল
মধ্যে সে দেশে গুণ্য পান্যাদি দুর্মূল্য
হয় না ও সেখানে যথেষ্ট শস্যোৎপত্তি
হয় কিন্তু এই বৎসর সে দেশে ও এমত
দুর্মূল্য হইয়াছে যে এক টাকায় ৪৪ শের
গুণ্য বিক্রয় হইতেছে।

ভাগিনপুর।

ভাগিনপুরহইতে সমাচার আনিয়াছে
যে সেখানে যথেষ্ট শস্য ওৎপন্ন হই
য়াছে কিন্তু মূল্যের দুলতা হয় নাই।

বিবাহ।

গড় শ্রবণ ৩০ মাস ৪৪ ফেব্রুয়ারি
তারিখে শ্রীযুত বাবুরায়ত মল্লিক আশ
ন পুত্রের বিবাহ যেহন দিয়াছেন এমন
বিবাহ শহর কলিকাতায় কেহ কখনও
নেল নাই। এই বিবাহে যে বন সমারাহ
হইয়াছে ইহাতে অনুমান হয় যে সাত
আট লক্ষ টাকার ব্যয় ব্যতিরেকে এমত
মহাঘট্ট হইতে পারে না। ইহার বিবরণ
বিবরণ পরে জানান ঘাইবেক।

সন ১৮৮১ মালে মোং দিল্লীতে এই টীকা
র শ্রীযুত মহাশয় মহারাজ ও হোলকা
রের বকসী ভবানীকিররও নামে এক জন
মহারাজের বিবাহ হইয়াছিল তাহাতে
এগার লক্ষ টাকা ব্যয় হইয়াছিল সে
বিবাহের অধিক পুথান ইংগরীয় মাঠে
বেরা ছিলন। এই বিবাহও তাহাই
তে নুল বড় নহে যেহেতুক সকল লো

সমাচার দর্পণ।

কেই এ বিবাহের পুণ্যসা করিতেছে ও
কহিতেছে যে এমন বিবাহ আমরা দেখি
নাই।

মান্দরাজের নৃতন বত সাহেব।

শ্রীশ্রীমত মর তামস মনরো সাহেব ইং-
গ্লানের স্বকীয়ানুসারে মান্দরাজের বত সা
হেবী কর্মে অভিসিক্ত হইয়াছেন কিন্তু
যে মানের পূর্বে তিনি মোং মান্দরাজে
পঁছজিতে পারিবেন না তিনি এখন দক্ষিণে
আছেন। এখন যিনি মান্দরাজের বত
সাহেব কর্ম করিতেছেন ইনি কলিকাতা
তার পূর্বে বত সাহেব লর্ডম্যন্তো সাহে
বের ভাতা। নৃতন বত সাহেব আসিয়া
পঁছজিলে তিনি ইংগলে ঘাইবেন।

ঘোড়কের কোণামন।

পাঁচ মান হইল ইংগল দেশে ঘোড়মো
ক হইয়াছিল তাহাতে এক ঘোড়া তারি
ঘণ্টার মধ্যে বিশৃংখা না করিয়া চাষি
কোশ পথ চলিয়াছিল।

আশ্চর্য ইন্দুদ্রক।

কতক দিন হইল ইংগল দেশে তিন ই
ন্দুদ্রক এক কালে আকাশে দেখা গিয়া
ছিল বরং কোন্ সময়ে আকাশে দুইটা
ইন্দুদ্রক দেখা যায় কিন্তু তিন ইন্দুদ্রক
কণায় কখনও দেখা যায় নাই। এক শত
বাইশ বৎসর পূর্বে একবার এই প্রকার
তিন ইন্দুদ্রক দেখা গিয়াছিল তারপর
এই যাত্রা দেখা গেল।

কাঞ্চের মীকো।

ইংগলে মল্লতি ঢালা লোহার মীকো
করিতে লোকেরদের অতি আবেশিক। কিন্তু
আমেরিকাতে পুয়া কাঞ্চের মীকো করে
ঐ মীকোতে অত্যশ্চর্য কারিগরি

করে এবং তাহা ওত্তরামেরিকাতে কাঞ্চ
অতিমূল্যে বিক্রয় তাঁহা পুস্তক করিতে
মস্তুরিতে অধিক ব্যয় এই নিমিত্তে সেখা
নে কাঞ্চের মীকো নির্মাণ করে আমেরি
কা দেশে এক নবীতে এক কাঞ্চনির্মিত
মীকোতে এক লক্ষ মাতাশি হাজার মুঠ
কাঞ্চ লাগিয়াছে এই কাঞ্চমীকো নি
র্মাণ করিতে বাহুরি জন লোক নয়
মান কর্ম করিয়াছিল।

লোহার মীকো।

মল্লতি ইংগল দেশে বিশ হাজার টাকার
ধরতে এক লোহার মীকো পুস্তক হইয়া
ছে সে বৎকাল স্থায়ী ডেমন মীকো যদি
ইচ্ছা করিয়া পুস্তক পুস্তক করা যাইত
তবে তাহাতে দেক লক্ষ টাকার ব্যয় হইত।

এলাঙা।

সংপুতি শুনা ঘাইতেছে যে এলাঙা
রোগী তাহা হিন্দুস্থান ভ্রমণ করিয়া মরিত
ওপদীর্ণ ও পুললিনাক্ষ ওপদীর্ণ আক্রমণ
করিয়াছে। মরিত ওপদীর্ণে এলাঙা
রোগীর এমন পুণ্ডরীর হইয়াছে যে সে
খানকার পুত্র লোকেরা ঐ এলাঙা রো
গীর ওপদীর্ণের কারণ ও তাহার নিবারণ
পের ওপায় ইত্যাদি বিবেচনা করিয়া সেখা
নকার বত সাহেবের নিকটে রিপোর্ট
দিয়াছে। সেখানে ঐ রোগীতে পুতিদিল
মস্তুরি আশী জন লোক মরিতেছে কিন্তু
ঐ পুজারা তাহার পুতিকারের পথ বত
সাহেবকে জ্ঞাত করিয়াছে অনুমান হয়
যে তাহাতে সেই মস্তুরিদের নিবারণ
হইতে পারে।

পূর্বাধিকের ওপদীর্ণ।

পূর্বাধিক ওপদীর্ণের মধ্যে পাঁচশতা
নামে বত রাজা। সেখানকার লোকেরা

এলদোজেরদের রাজসীমানে অসম্ভব
আছে সেখানে এলদোজেরা এক জন
ওকীল পাঠাইয়াছিল সেখানকার পুজারা
সেই ওকীলের মস্তুরি দুইদন করিয়া আশ
নারদের তদ্বিধি পালেম্বা রাজার নি
কটে ভেট পাঠাইয়াছিল। পরে এলদো
জেরা তাহার দমনার্থে বহু সৈন্য ও যুদ্ধ
মরজামে সেখানে পাঠাইল। সে সৈন্য
রা পঁচ শত গোঁড়া নিহত ঐ মানাই
লোকের হাতে মারা গেল তৎপুত্র তব
শিষ্য কথক সৈন্য জিরিয়া আসিল দেশে
আসিয়াছে ততএব এলদোজেরা এই
বৎসর সেখানকার যুদ্ধ ফাস্ত করিয়াছে
কিন্তু আশা মি বৎসরে যুদ্ধ করিবেক।

বাগিয়া।

মল্লতি এই মন্তাহে এক আবেশিক মন
তার ইংগল হইতে মোং কলিকাতাতে ঐ
স্বত্বিয়ায় পূর্বে কোল্লানি বাহাদুর বাণ
জের কারণ বহু আহাজ ফেরা করিয়া
তাহাতে তিনিম বোকাই করিয়া এই দে
শে পাঠাইতে। এখন শুনা গেল যে
ডেমন বত আহাজ ভাতা না লইয়া অল্প
দায়ে ফুন্ড আহাজ ফেরা করিয়া এখানে
পাঠাইবেন এবং যে বত আহাজ এই
দেশেতে আসিত সে মকল আহাজ এ
খান ঠান দেশে পাঠাইবেন।

এক যখন কোল্লানির সহিত শ্রীশ্রীমত
ইংগলের বাদশাহের বদোবস্ত হইল
তখন এইকণ নিরুণিত হইল যে ঠান
দেশের ওপদীর্ণ দুখা মায়ালা লোক সে
খান হইতে আসিয়া ভারতবর্ষের কোন
স্থানে বাগিয়া করিতে পারিবেক কিন্তু
ভারতবর্ষের আর কোন দেশে কোল্লানি
নি বাজিবেক আর কেহ বাগিয়া করিতে
পারিবেক না।

সংপুতি শুনা ঘাইতেছে যে কোল্লানি

সমাচার দর্পণ।

সেই হীন্দি অসখ্য করিয়া সকল লোকের
দ্বিগতক এই মত যত্ন দিতে স্বীকার ক
রিয়াছেন যে ব্যক্তির ইচ্ছা হয় সে গীন
দেশে গিয়া সেখানকার কোন দুখ আনি
য়া ইংলণ্ড ব্যতিরেকে সর্বত্র বিক্রয় করি
তে পারে অতএব কোম্পানি গীন দেশ ও
ইংলণ্ড দেশ কেবল এই ওভয় দেশের
বানিজ্য আশ্রয়দেব অধীন রাখিতে
চাহে।

কলিকাতার বানিজ্য।

গত তালুত্বারি মাসে চয় হাজার নী
লের সিঙ্ক ইংলণ্ডে গিয়াছে। এবং
পূর্বে দেশের ওপহীলইতে সমাচার আ
নিয়াছে সেই স্থানে আর্মীমের মুখ্য কি
ষ্টিং অধিক ইয়াছে তৎপুত্র মোং
কলিকাতাতে আর্মীম অধিক হায়ে বিক্র
য় হইতেছে।

নিংহুপুর।

আবাওপহীলের লিকটবর্তি নিংহুপুর
নামে এক ওপহীল সেখানে সংস্থিত ইংল
ণ্ডেরদের অধিকার ইয়াছে তৎপুত্র
সে স্থানে এক নুতন জিল্লা করিতে ইংলণ্ডী
য় সাহেবেরা মতেরে হইয়াছেন ও সে কি
ল্লার ভিত করবার কার্যে মৃত্যুকা যদি
লে কথক পুটিন টাকার পাওয়া গিয়াছে
তাহার মধ্যে এক টাকার মাত শত বৎস
রের পুটিন সে টাকার সনের অঙ্কে
দেখা গেল।

মলম্ভাব।

এক ব্যক্তি অতিমল ছিল সে তিরকাল

সংসারানুযে থাকিয়া আপন মাঝান
সারের পরের অপকার ও হিংসা নানা
পুকারে করিয়া কালক্ষেপণ করিত। প
রের ওপকার স্বপ্নেও করিত না। পরে
অধিক বয়স্ক হয় এখানে বেলের স্থান হই
তে লাগিল তখন পুত্রমত পরের অপকার
ও কুসংসার করণে অমনক ইয়া মনে
বিরেচনা করিল যে যদাশি আমার পুত্রি
বানী ব্যক্তিরদের হিংসা করিতে পারি না
কিন্তু তাহারদিগের অমঙ্গল লুপ্তনিমিত্ত
করি কিন্তু আমি মগিলে ইহাও হইবেক
না অতএব কর্তব্য হয় যে তিরকাল যাঁহা
তে ইহারদিগের অপকার হয় এমত কোন
চেষ্টা করা গুণিত। এই বিরেচনা
করিয়া সংসার আশ্রয়ইতে ব্যাপ্ত তালু
কাধিবাস্ত নিষিদ্ধ বনে ব্রহ্মণ করিল।
তথায় এক ঘরীর থাকে সে ঘরীর
মলম্ভা দেখিয়া আশ্চর্য্য বোধ করিয়া তা
হাকে জিজ্ঞাসা করিল যে অহে ভ্রাতা
তুমি কে। সে কহিল যে আমি মলম্ভা
আমার শরীর ব্যাপ্তকে ভোজন করাইব
এই অভিপ্রায়ে আসিয়াছি আমার বৃত্তা
ন্ত শুনি আমি তিরকাল লোকের মন ও
হিংসা করিয়াছি তাহাতে আপন ইচ্ছা
বন্ধু বৃষ্ট্র সহোদর ভ্রাতৃপরিচয় কাহা
কেও ক্ষমা করি নাই। এই মনে অরপ্ত
ইয়াছি কিন্তু সত্যের বিমুখিত্তি নানার্থ
বিরেচনা করিয়াছি যে এই বলে আমার
মাংস ব্যাদি অন্তকে দিয়া ভোজন করা
ইব তাহার কারণ এই যে ঐ ব্যাদি আ
মার মাংস ভোজন করিয়া মাংসার্থী
হইবেক পরে গুণেরে ভিতরইতে মলম্ভা
বিদ্যা হইবেক।

বাজার কাণ্ড

| চিনি | মোন | অবধি | পার্স |
|--------------|-----|------|-------|
| সুপরি | ১ | ৪ | ৪০ |
| ভেরা উল | ১ | ২০ | ৩২ |
| গাছ মরিচ | ১ | ৪০ | ৬ |
| মারিকেল উল | ১ | ১০ | ১১ |
| জ্বা কাহোড়া | ১ | ১০ | ১০ |
| আবা রঙ্গপুর | ১ | ২০ | ০ |
| পাটনাই আবা | ১ | ২০ | |
| চালু পাটনাই | ১ | ৩০ | ৩৫ |
| পাছ উত্তম | ১ | ২০ | ০ |
| পাছ মধ্যম | ১ | ২০ | ১০ |
| মুগা উত্তম | ১ | ২০ | |
| মুগা মধ্যম | ১ | ২০ | |
| বালান | ১ | ২০ | ১৫ |
| মুগা ধান | ১ | ২০ | |
| পাটনাই দুট | ১ | ৩০ | ৩০ |
| অভর তালি | ১ | ৪০ | |
| উত্তম মধ্যম | ১ | ২০ | |
| মধ্যম দুট | ১ | ১০ | ১০ |
| উত্তম দুট | ১ | ১০ | ১১ |
| মধ্যম উত্তম | ১ | ১২ | |
| নীল উত্তম | ১ | ১০ | |
| অনং পুরার | | | |
| নীল | ১ | ১০ | ১০ |
| পোড়া উত্তম | ১ | ৭ | ১০ |
| মধ্যম | ১ | ৬০ | ৬০ |
| চিনি কাণী | ১ | ১০ | ১০ |
| মধ্যম | ১ | ৮০ | ১০ |
| খার চিনি | ১ | ৪০ | |
| ভেতুল | ১ | ৬০ | ৬০ |
| জামাক | ১ | ৩ | ৪০ |
| চন্দন | ১ | ১৫ | ১০ |

এই সমাচার দর্পণ পুরীমল্লের ছাপাখানাতে পুস্তিগ্ৰাহ্যে শনিবারে ছাপা হয়। যাঁহার লগনের আবশ্যক হয় তিনি পুরীমল্লের ছাপাখানাতে
আপন নাম পাঠাইলে সমগ্র বৎসর তাঁহার নিকটে পাঠান হইবেক তাঁহার মূল্য মানে। এক টাকা যদি স্বাক্ষর করিয়াছেন যদি তাঁহার নিকটে
কাজ না পড়ে তবে তিনি পুরীমল্লের ছাপাখানাতে সমগ্র বিবামান তাঁহার নিকটে পাঠান হইবেক।

সমাচারদর্পণ

৯৭ নং পৃষ্ঠা।

পলিবার।

৪৯ ফ্রেব্রুয়ারি মাস ৪৮-৯০। চ : ১৩০১ মাস ৪১ ১৩।

দর্পণমুখ পৌরস্বত্বের কার্যবিবরণী।

বৃহত্তারিখের সমাচারদর্পণে ৥

কোলালির কাগজ।

কোলালির শতকরা ছয় টাকা মূল্যের কাগজ ক্রয় করিতে হইলে শতকরা দ্বার আনা ডিম্বকোষ্ঠ। বিক্রয় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা ডিম্বকোষ্ঠ।

মস্তাহের পঞ্জিকা।

| ১১ | জ্যৈষ্ঠ | পশ্চিম | ৮ | চাঁদ |
|----|---------|--------|----|------|
| ১০ | ২ | ৪ | ১ | ২ |
| ১১ | ২ | ৫ | ১০ | ২ |
| ১২ | ২ | ৬ | ১১ | ২ |
| ১৩ | ২ | ৭ | ১২ | ২ |
| ১৪ | ২ | ৮ | ১৩ | ২ |
| ১৫ | ২ | ৯ | ১৪ | ২ |

ইস্তাহার

১৪ দিসেম্বর তারিখে কলিকাতার আদালত দপ্তর হইতে এক ইস্তাহার বাহির হইয়াছে যে ১২ বৈশাখ মাস তারিখে এগার ঘণ্টার সময়ে একশেষ ঘরে বেহারের ৪০৭১ নিম্নলিখিত আদালত ও বানারসের ৩৩৭১ নিম্নলিখিত আদালত বিক্রয় হইবেক

মসলার ইস্তাহার

১৫ জানুয়ারি তারিখে শ্রীশ্রীযুত এই ইস্তাহার দিয়াছেন যে ইংল্যান্ডেরদের অধিকৃত দেশোপলবন ও ইতরী ও আয়ল্যান্ড এই ভিল দুই যে কোন ব্যক্তি কলিকাতাতে আমদানি করিলে ক সে বিলায়ত আমদানি করিতে পারিলে এক্ষণে যে দেশে ৪ ভিল দুই জন্মে ও সেখানে

আজি বেংকোই হয় সেই জিনিসের ওপরে বড় মাহেরের কিনা অন্য কোন পুথানি মাহেরের সহী থাকিলে এক্ষণে ৪ ভিল দুই যদি ইংল্যান্ডেরদের ভিল দুই হইতে কেহ আমদানি করে তবে তাহার মূল লাগিবেক।

সমাচার দর্পণ।

রাজকর্মের নিয়োগ।

৪ ফ্রেব্রুয়ারি শ্রীযুত ডবলিউ ডবলিউ মাহের জিলা কটকের কমিশনের হইয়াছেন।

শ্রীযুত আর ওইল মাহের চাকার কোর্ট আদালতের ডিউটি বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত ডি মরিসন মাহের জিলা মুর শেদাবাদের কোর্ট আদালতের ডিউটি বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত জে এলিট মাহের মুরশেদাবাদের কোর্ট আদালতের ডিউটি বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত এল জে হালহেদ মাহের মুরশেদাবাদের বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত জি মক্কেল মাহের মোংগারের বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত ডবলিউ এম ডির্ক মাহের মোংগারের বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত ডবলিউ লোথর মাহের মোংগারের বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত আর ব্রৌন মাহের মোংগারের জিলা বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত আর এম বর্ড মাহের মোংগারের জিলা বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত এচ ওলকিনসন মাহের মোংগারের জিলা বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত টি নিরবের্ট মাহের মোংগারের জিলা বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত এন মাকলোহ মাহের মোংগারের জিলা বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত জে এম বনবারো মাহের মোংগারের জিলা বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত ডবলিউ ল. মাহের মোংগারের জিলা বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত ডবলিউ ল. মাহের মোংগারের জিলা বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত ডবলিউ ল. মাহের মোংগারের জিলা বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত ডবলিউ ল. মাহের মোংগারের জিলা বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত ডবলিউ ল. মাহের মোংগারের জিলা বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত ডবলিউ ল. মাহের মোংগারের জিলা বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত ডবলিউ ল. মাহের মোংগারের জিলা বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত ডবলিউ ল. মাহের মোংগারের জিলা বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত ডবলিউ ল. মাহের মোংগারের জিলা বিচারকর্তা হইয়াছেন।

শ্রীযুত ডবলিউ ল. মাহের মোংগারের জিলা বিচারকর্তা হইয়াছেন।

সমাচার দর্পণ।

পুৰোহিত পুণ্ডিকের পুৰীল সাহেবের আশী
ষষ্ঠ।

ঐযুত এচ টি এল সাহেব চহিণশর
গাঁৱৰ ৰেজেষ্টাৰ।

ঐযুত মৱৰ জি বি ফ্ৰান্সোইস বৱনেটে
সাহেব জিলা গাঁৱীপুৱৰ ৰেজেষ্টাৰ।

ঐযুত জে সি ব্ৰৌন সাহেব বাণাৱসেৱ
আশীলৈৱ ৰেজেষ্টাৰ এবাং বাৱসায়্যেৱ
ৰেজেষ্টাৰ।

ঐযুত ডবলিউ টি ৱৰেটমণ সাহেব
ফৰকুবাৱেৱ ৰেজেষ্টাৰ।

ঐযুত এচ লিনবেট সাহেব পাটনাৱ
ৰেজেষ্টাৰ।

ঐযুত এ ডিক সাহেব ডীৱহুজ জিলাৱ
ৰেজেষ্টাৰ।

ঐযুত জে জে বোম্বাৰ্ডে সাহেব মূৱা
দ্বাবাৱেৱ জিলা কোৰ্টেৱ ৰেজেষ্টাৰ।

ঐযুত আৰ সি গ্লিন সাহেব বীণাবাৱে
লিৱ ৰেজেষ্টাৰ।

ঐযুত ডবলিউ আৰ ক্লার্ক সাহেব বীণ
বৱেলিৱ দক্ষিণ পুৰোহিত কোৰ্ট আশীলৈৱ
এ কোৰ্ট সৰকাৰেৱ ৰেজেষ্টাৰ।

ঐযুত এচ ৱয়েল সাহেব মোং ইণ্টে
গ্ৰাৱ জিলা কোৰ্টেৱ ৰেজেষ্টাৰ।

ঐযুত এচ ডায়ম সাহেব মোং কাল
পুৱেৱ ৰেজেষ্টাৰ।

ঐযুত জে ৱাৰ্ড সাহেব দিল্লীপুৱেৱ
এ মালদহেৱ বিচাৰকৰ্ত্তা এ ৰেজেষ্টাৰ।

শ্ৰীযুত ৱৰেট বোৰ্ণ সাহেব চাকৰ কোৰ্ট
আশীল এ কোৰ্ট সৰকাৰেৱ ৰেজেষ্টাৰ।

শ্ৰীযুত নি কৰ্ভিও সাহেব এলাহাবাদেৱ
বিচাৰকৰ্ত্তা আশীষষ্ঠ।

৮ ফেব্ৰুৱাৰি। শ্ৰীযুত এন এম বোলদে
অল সাহেব নুতনবুৰ পুৰোহিত ৱোৰ্ড কমি
সনেৱ সেক্ৰেটাৰি।

ভাৰতীতি।

গত সম্ভাৱেৰ শুকবাৱ চানকেৱ নি
কটে সোনা গ্ৰামে এক গৃহদেৱ বাৰ্ভীতে
এগাঁৱৰ ঘৰ। ৱাৱিৱ সময়য়ে কতক গুলি
ভাৰতীতি একত্ৰ আনিয়া পুথিমাতে বাহিৱ
শুভাৱে নিম্ৰ দিয়া বাৰ্ভীৰ মৰ্ভা পুৰিষ
হইল। পৰে ঘৰে নিম্ৰ দিয়া দুই জন
ভাৰতীতি ঘৰেৰ মৰ্ভা গোল অল্য লোক
বাহিৰে থাকিল। ঐ গৃহস্থ কোল পুকাৱে
আগুং হইয়া ঘৰে চোৱ আনিয়াছে নি
কয় আনিয়া গুলি এ আশল পৰিভূৱেৱ
দিগন্তে আগাইয়া ঘৰেৰ দাৱ গুলিয়া বা
হিৱে আইল। ইতাৱসৱে বাহিৰে যে
ভাৰতীতিৱ জিল তাহাৱা তৎকাল
ঐ গৃহস্থক বহিয়া বজল কৰিয়া লোৱ
লা কৰেৱ কাৱল অলেক তত্ৰ দেখাৱেতে
লাগিল এ আলো ডালিয়া দৃশ্য সমগ্ৰী
যেথানে যেছিল সে সৰল লইল। পৰে
ঐ গৃহস্থক তহমাল কৰিতে লাগিল এ
অন্ত গুণাইয়া তাহাকে কাৰ্ভিতে গুৰাত
হইল। গৃহস্থ কহিল যে আমাৰ আৱ
কোনথানে কিছু লাই আমাৰ যে কিছু
সে সৰল ঐ নিম্ৰকে, যাজে। পৰে নিম্ৰক
বীৱাবিৱ কৰিয়া বাহিৰে আনিয়া কুতালি
দাৱ কাৰ্ভিয়া তাৱদন্ত লইয়া পলাইল।
পৰে গৃহস্থ কোলাইল কৰিলে গ্ৰামস্থ লো
ক সৰল আইল কিন্তু তাৰতীতিৱেৱে
অনুদখাল পাইল না।

আশীলৈৱ ৱাজা।

গত মোমবাৱেৰ জৰ্জৱানা তাহাজ
আশীল মোমহইতে পৰ্ভজিয়াছে তাহাতে
সমাচাৰ পাণ্ডা গোল যে সম্ৰল আনয়
নামে আশীল দেশেৱ সলতাল ঐঐযুত
গাৰ্ভেৰ জেনেৱাল বাহাদুৱেৱেৰ সহিত
সাফল্য কৰেৱেৰ অনো মোকাম কলি
তাতে আনিয়াছেল কিন্তু তাহাৱ মানো

গত কি আজি তাহা কেইই অৰণ্ড হ
নাই।

আহাজ আয়দানী।

৪৬ ফেব্ৰুৱাৰি তাৰিখে সমাচাৰ আনি
য়াছে যে পৈত আহাজ মোং থেজিৱ
মোহনাৱ মৰ্ভা পুৰিষ হইয়াছে কিন্তু
সে সৰল আহাজ কোন দানহইতে আ
নিয়াছে তাহা জানা যায় নাই। শুনা
যাইতেছে যে তাহাৱ মৰ্ভা এক আহাজ
আৰুচোৱেৰ মাসেৰ ৪ তাৰিখে মোং
মাদোৱা জাতিয়াছে সে আহাজ পৰ্ভজিলে
সমাচাৰ দেখা যাইবেক।

বোম্ৰাতিয়াৱেৰে সমাচাৰ।

৪ জানুৱাৰি তাৰিখে বোম্ৰাইৰ লিৰট
বৰ্ভি ৱসংগ্ৰাৱিয় নামে দানহইতে
পাৰ্ভা নামে আহাজেৱ দাৱা সমাচাৰ
আনিয়াছে যে সেই দান ইংগ্ৰাভীয়ে
সৈন্যকৃতকাৰ্য হইতেছে যেহেতুক ৱদনী
এ জিনীয়া নামে দুই গত ইংগ্ৰাভীয়েৱে
হস্তগত হইয়াছে এক সমাচাৰ শহৰে
আহাজ আশীল সৰল দিল্লী বিনা যুদ্ধে
ইংগ্ৰাভীয়েৱেদিগন্তে অৰ্ণল কৰিতে সম্মত
হইয়াছে। এবাং অন্য পত্ৰেৱ দাৱা
শুনা গিয়াছে যে ঐ ৱসংগ্ৰাৱিয় গত
ৱকাৰ্থে কোল্লানি বাহাদুৱেৱেৰ এক যুদ্ধ
আহাজ এ বাৱ শত ইন্যা দেখান গি
যাৱা হইবে সেই দানে যে যুদ্ধ পূৰ্ণ
হইয়াছিল তাহাতে ৱপুণ্ডেৱেৱেৰ মৰ্ভা
দুই জন পুৰা ৱক্তি পাণ্ডা গোল তাহাৰ
দুই ৱৎসৱ পূৰ্ণ যেৰি নামে আহাজে
বীৱা গিয়াছিল। ঐ দুই ৱক্তিৱ ৱম্মাং
ইংগ্ৰাভীয়েৱা বোম্ৰাতিয়াৱেৰে বৃত্ত
জাত হইয়াছেল যে সময়য়ে বোম্ৰাতিয়া
ঐ যেৰি নামে আহাজ বহিয়াছিল তৎ
কালে ঐ আহাজেৰ এক জন সুবহাৱ

সমাচার দর্পণ।

এবং এক জন কাষ্ট্রান ও তিন জন খান্দা নিরদ্বিগ্ধে মারিয়া। ফেলিয়াছিল অশিশু ঘাহারা ইঁটিলি ও ফলন। তাহারদের মুনশমান হইতে হইল। তাহারদের মধ্যে এক জন মরিয়াকে সে দেশে আঁহা রাহির অভাবপুত্রকে সে বোম্বাট্রিয়ারা তাহারদিক্কে অনেক দিনের পর ছাড়িয়া দিলেক। তাহারা ফিরিয়া আসিবার সময়ে পথ মাফোটেই নৈনোরা তাহার ঘের বন্দাদি ছাড়িয়া লইয়া কহিল যে তোমারা ইংগুতীয়েরদের অধিকারে পশ ছিলে পুনর্বার আর বন্দ পাইতে পারিবা।

ইংগুতীয় নৈনোরা তাহারদিক্কে জিজ্ঞাসা করিল যে রমস্ত্রাকিয়িয়েতে কত বোম্বাট্রিয়া যোদ্ধা আছে। তাহার কহিল যে দুই হাজার তাহারদের পুত্ৰীল এক জন পথে মনিতা যোদ্ধার ওন্দর আরোহণ করিয়া ও আঁপনার এক বালক কোল লইয়া আঁপন লোকেরদের সাঁহস জন্মাইত। ওন্দর ইংগুতীয়েরা জিজ্ঞাসা করিল যে ইংগুতীয় নৈনোরা হাতে বোম্বা ট্রিয়ারদের কত লোক মারা পড়িয়াছে। তাহার ওন্দর করিল যে এক জন অধাফ ও যেত শত পুরুষ ও কুটি জন স্ত্রী লোক মরিয়াকে এবং দুই শত লোকের অধিক আঘাত হইয়াছে তাহারদের মধ্যে অধিক ভাগ পুত্র আঁহাতের গুলিঘারা মারা পড়িয়াছে এবং বোম্বাট্রিয়ারদের নিজের তোন দাগাতে তাহারদের এক জন মারা পড়িয়াছে ও তিন জন আঘাত হইয়াছে। বোম্বাট্রিয়ারা বন্ধন ও আঁহা রায় দুবা নিরা নামে এক হানহইতে আসিল। যখন তাহারা কোল হান শূট করে তখন তাহারা সেই লুটত বন্ধ মকলে ভাঙা করিয়া লয় সে দেশে জন অভিযুক্ত ও পুত্র এক বাটী জন তিন পয়নার কয়ে পাঁচা যায় না

তাঁহারদের ভক্ষা দুবা শুদ্ধ মন্য ও পিত্রী খাজুর। সে দেশে যোদ্ধা ও ভট্ট ও গক ও যোদ্ধাভূতি পশু জাতি অত্যন্ত এবং তাহারও অতিক্রম যেহেতুক সে দেশে ঘাসপুত্রি অতি অনু অলো।

মুজরদেও পুত্র।

করকশুর নামে পুত্রিতে মুসুর এক আতি আছে তাহার দেওহর নামে পুরোহিতের অতিশয় সম্মান করে যখন তাহার মুজরদেওর পুত্র করে তখন সে পুরোহিত একস্থান পরিষ্কার করিয়া মৃগন করে ও অন্য লোকেরা অল্প বাঙলাদি পাঁক করে। ওন্দর পুরোহিত ঐ পরিষ্কৃত হাল, বনে ও লোকেরা অল্প বাঙলাদি ছিঙ্কি-১ লইয়া বৃক্ষের পত্রে করিয়া তাহার সাফাতে রাখে এবং তাহার সম্মুখে এক পুত্ৰী জ্বালাইয়া রাখে ওন্দর ঐ পুরোহিত জুরিঘারা আঁপন বামঙক দ্বে দল করিয়া ছিঙ্কি-২ রক্ত বাহির করে ও দেওর পুসদার্থে সেই রক্ত অগ্নিতে আঁহতে দেয়। অনন্তর দেওহর নামে পুত্রোহিত এক পাঁয়ে দাঁড়াইয়া মস্ত্র জপে। সেই সময়ে আর এক ঘুবা ব্যক্তি আসিয়া অগ্নিতে বুন দেয় তাহাতে ঐ পুরোহিতের শরীর বুঝেতে আঁদ্ধা দিত হয়। শেষে ঐ পুরোহিত অতিব্যথাযুক্ত মনুষ্যের মত আঁপন মাথা ঘুরায়। তাহাতে লোকেরা ভাবে যে পুরোহিতের ওন্দর দেও চড়িয়াছে। ওন্দর ফলো জিহা বাহির করে ও অল্প কথ্য করে এবং লোকেরা যে তাহার কাজে পুত্রের সামগ্ৰী আসে এইকন মনকে করে। তাহাতে লোকেরা ঐ দেওর অনুগ্রহ পুসদার্থে শূকর ও মুরগী ও ছাগল ও ভিন্ন ভিন্ন পুত্রি দুবা আনিয়া ঐ পুরোহিতের পুত্রা করে। ঐ পুরোহিত আঁহতির চালু ছিঙ্কি-১ লইয়া

মরলকে আঁশীর্ষ দেয় তাহার কারণ এই যে ঐ পুত্রীয় লোকেরা যখন কাষ্ট্রা দি আঁহনের কারণ বলে যায় তখন কোন অমরল না ঘটে।

শুণ্ডিত মর জেদ্দ কোলবুক সাঁহেব।

অনেক কালপর্যন্ত শুণ্ডিত মর জেদ্দ কোলবুক সাঁহেব পক্ষিমা অঙ্কল যেতহাওঁত মোকামে থাকিয়া মজ্জিপুত্রি ও অল্পপুত্রি দেশের পুত্ৰান অধাফতা পাইয়া আঁপন মোজনাদি নির্মাণ ওঁহারা ততক্ষণের লোকেরদিক্কে অতিশয় আঁপনিত করি য়াছিলেন। তিনি যখন সেই কর্মজাতি করিয়া কোঁলিশের কর্মে নিযুক্ত হইবার কারণ যেতহাওঁতহইতে মোকামে কলিকা তায় আইমেন তখন ততপুদেশীয় সমুদয় লোক রাজা অহরি পুত্রাপর্যন্ত নানা স্থানহইতে মোকামে যেতহাওঁতে আসিয়া তাঁহার সহিত সাফা করিয়া আঁপনিত হইল এবং তাহার স্থানান্তর পাওয়াতে সকলেই দুঃখী হইল। তাহার ঐ সাঁহেবকে এমন সুহ করিত যে তাঁহার স্মরণের কারণ তাঁহার হস্তাক্ষর সকলে আগু হ করিয়া লইল। এবং তাহার অনেক কন্যায় দুবা সাঁহেবকে দিত ওদ্যত হইয়াজিল কিন্তু তাহা সাঁহেব গৃহন করিলেন না।

লুতন বিদ্যালয়।

ইংগুতীয় বাদশাহের যে পৌত্রী তিন বৎসর হইল মরিয়াজেন তাহার নাম স্মরণার্থে ইংগুতীয় লোকেরা ইংগুত এক মহাবিদ্যালয় স্থাপন করিয়াছেন সে বিদ্যালয়ে ব্যয়ের কারণ সেখানে ভাগ্যবান লোকেরা প্রতিজন আট টাকা করিয়া দিতেছেন এবং এই দেশে ইংগুতীয়েরা কুটি টাকা করিয়া দিতেছেন সে

সমাচার দর্পণ।

বিদ্যালয়ে সেখানকার দুগ্ধী সেনাপতির
ঘর বালকেরা বিনা মূল্যে বিদ্যা শিক্ষা
করিতেছে।

গীর্জাগোবিন্দ সিংহের দেবালয়।
মোঃ নবাবের গুপ্তর পারে রামচন্দ্র
পুরে দেওয়ান গীর্জাগোবিন্দ সিংহ যে
দেবালয় করিয়া দেব মন্স্থাপন করিয়া
জিলেন সৎপুত্র সে দেবালয়ের মন্দির
সকল ভগ্নাবস্থায় হইয়াছে অতএব সে সকল
ধ্বংসকৃত হইয়াছে নবাবের রাধিয়া
সেবা করিতেছেন ও মন্দির মেরামত করি
তেছে মন্দির মেরামত হইলে সে সকল
দেববিগ্রহেরদিকে স্বাধ্বস্থানে রাখা
হইবে।

মরন।

কলিকাতার পাথুরেঘাটার রামলোচন
যেথ সুযোগ্যজিমান লোক জিলেন সৎ
পুত্র নীতান্ত্র হইয়া গাত রবিবারে গীর্জা
যাত্রা করিয়া গথ আপন বিভবানুসারে
হীন হয়ে করিয়াজিলেন পরে পরলোক
প্রাপ্ত হইয়াছেন।

চুরি।

মোঃ বাশবাড়িয়াতে লসিংহের রাধ
হংসেশ্বর প্রতিম সৎস্থাপন করিয়াছি
লেন এবং তাহার অলকার দুই ডিন হা
আর টাকার স্বর্ণকাণি ঘড়ি বিক্রয়
লেন এবং পুত্র আম্রাবাদ্য প্রাপ্তি হই
হার পুত্র হইয়া থাকে সৎপুত্র গাত
আম্রাবাদ্য প্রাপ্তি পুত্রাবদান কালে
তাহার সমুদয় অলকার ও আঙ্গা হাথ
হারিক দুই চুরি গিয়াছে তাহার গুদারক
অনেক হইতেছে।

সংসারমুচুর কথা।

বুদ্ধিমান কিম্বা সামান্য লোক নীচ
সংসারেতে থাকিয়া বুদ্ধিহীন হন যেহেতু
গোপেরা গোমকলের সংসারে থাকিয়া
মুগ্ধ হয়। তাহার ওয়াহরন এই।
গাভরী নদীর তীরে গুপ্তম ভূগতে পরি
পূর্ণ এক স্থান দেখানে অনেক গোপ স
পরিবারে বাস করে। তাহার মধ্যে
এক গোপালের শিশু নামে এক পুত্র অ
নিল। এবং সেই পুত্র এই স্থানে থাকিয়া
গোপালনাদি কার্য শিখিল কিন্তু গাভর
লোকের কোনহ বাহ্যিক জানিতে পারিল
না। এক সময়ে এই পুত্র গোপালকে
শীতিতা দেখিয়া সেই শলভকে কহিল
যে হে পুত্র তের জননী অত্যন্ত শীতিতা
এবং অতিদুঃখী তুমি ওপক্ষ পুত্র হইয়া
তাহার শুকনা করিস না কেবল তোর
শারিরিক চেষ্টাও তাহার শুকনা হইতে
পারে অতএব মনোযোগপূর্বক তাহার
শুকনা কর। পরে শলভ শীতিতা কথাকে
মাথ শুকনাতে গুরুত্ব হইয়া গোমকলার
নামে শুকনা পরিচালিয়া কথকগুলি ল
ওন ঘাস আনিয়া এবং গোপুতুর লো
য়েতে নির্মিত রজু এবং শল মন্ত্ররচিত
রক্ততে এই শীতিতা মাড়কে ইন্ধিয়া তাহা
র লিকটে বঁটা ও তুলের ধূম করিয়া
সেই ঘাসহাট দিল। গোপী রোহিতে
অতিদুঃখী ছিল পরে কষ্টগত শুন হই
য়া ওইরূপের কহিতে লাগিল যে হে
গোপ সকল আমাকে রক্ষা কর। অনন্তর
পুত্রবানি গোমকলেরা আনিয়া ও গো
পীর বন্ধন মূলিয়া দিল এবং তাহার পুত্র
শলভকে ঘোষিত তিরস্কার করিল।

বাহার তালিকা

| জিহব | মোদ | অবধি | পার্থ |
|-------------|-----|------|-------|
| মুগারি | ১ | ৪৮ | ৪৮ |
| ভেরগা তেল | ১ | ২০ | ০২ |
| গাছ মরিচ | ১ | ৪৮ | ০ |
| নারিকেল তেল | ১ | ১০ | ১১ |
| তুলা কাহোকা | ১ | ১৮০ | ১৮ |
| আদা রসপুর | ১ | ২৫০ | ০ |
| পাটমাই আদা | ১ | ২৮ | |
| চালু পাটমাই | ১ | ০৮৮ | ০৮ |
| পাছতি উত্তম | ১ | ২৫০ | ০ |
| পাছতি মধ্যম | ১ | ২৮ | ২৮ |
| মুগী উত্তম | ১ | ১৮৮ | |
| মুগী মধ্যম | ১ | ১৮ | |
| বাল্যম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| দুগা ধান | ১ | ২৮ | |
| পাটমাই দুট | ১ | ০৮৮ | ০৮ |
| অক্ষর ডালি | ১ | ৪ | |
| উত্তমগারেলু | ১ | ২০ | |
| মধ্যম দুত | ১ | ১০ | ১৮ |
| ঠেঁসা দুত | ১ | ১০ | ১১ |
| মধ্যম ঠেঁসা | ১ | ১৮ | |
| মীল ইত্যম | ১ | ১০০ | |
| অন্য পুকার | | | |
| নীল | ১ | ১১০ | ১১০ |
| সোরা উত্তম | ১ | ৭ | ৭৮ |
| মধ্যম | ১ | ৬৮ | ৬৮ |
| চিনি কাণী | ১ | ১০ | |
| মধ্যম | ১ | ৮৮ | ৮৮ |
| খার চিনি | ১ | ০৫০ | |
| ভেতুল | ১ | ৫০ | ৫০ |
| তামাক | ১ | ০ | ৫০ |
| চন্দন | ১ | ১৮ | ১৮ |

এই সমাচার দর্পণ পুরীমপুরের ছাপাখানাতে প্রিন্টপ্রাণে পরিবারে ছাপা হয়। যাহার লগনের আবশ্যক হয় তিনি পুরীমপুরের ছাপাখানাতে
আপন নাম পাঠাইলে সপ্তাহে কয়েক তাঁহার নিকটে পাঠান হইবেক তাহার মূল্য মাসে এক টাকা যদি স্বাক্ষর করিয়াছেন যদি তাহার নিকট
কাগজ না পাইবে তবে তিনি পুরীমপুরের ছাপাখানাতে সমাচার দিবানাহ তাহার নিকটে পাঠান হইবেক।

সমাচারদর্পণ

৯৩ নং-খ্যা।

শনিবার। ২৬ ফেব্রুয়ারি সন ১৮৭০। ৪৪ ফাল্গুন সন ১২২৩।

দর্পণেস্থ বৌদ্ধধর্মের কার্যবিবরণঃ।

বৃত্তান্তনিহ্ন জানকী সমাচারের দর্পণে।

কোন্নানির কাণ্ডজ।

কোন্নানির শতকরা। জয় চাঁকর মনের
কাণ্ডজ কয় করিতে হইলে শতকরা
এক আন। তির্যকোণ। বিক্রয় করিতে
হইলে শতকরা চারি আন। তির্যকোণ।

সম্ভাতির পঞ্জিকা।

| | | |
|----------------|-------------|------------|
| ১৬ ফেব্রুয়ারি | শনিবার | ১৬ ফাল্গুন |
| ১৭ ২ | রবিবার | ১৬ ২ |
| ১৮ ৩ | সোমবার | ১৭ ৩ |
| ১৯ ৪ | মঙ্গলবার | ১৮ ৪ |
| ২০ ৫ | বুধবার | ১৯ ৫ |
| ২১ ৬ | বৃহস্পতিবার | ২০ ৬ |
| ২২ ৭ | শুক্রবার | ২১ ৭ |

কোন্নানির ইস্তাহার।

ইস্তাহার দেওয়া ঘাইতেছে যে মোক্ষ
আশীষের কার্যারিতে ১৮ মার্চ ১৮৭০
মাসে চব্বিশ পরগনার কালেক্টর সাহেব
এই গোলের লাট ভূমি বিক্রয় করিবেন।
কোন্নানি বাহাদুর আপন এখানে পাঁচালি
হস্তনির্ভাল করিবার কারণ এই ভূমি পরি
ষ্কার করিয়াছিলেন।

| লাট | বিঘা |
|-----|---------|
| ১ | ১০/ |
| ২ | ১০/ |
| ৩ | ১০/ |
| ৪ | ১০/ |
| ৫ | ১০/ |
| ৬ | ৫ ১০ ১০ |

লাট

বিঘা

| | |
|----|-----|
| ৭ | ১০/ |
| ৮ | ১০/ |
| ৯ | ১০/ |
| ১০ | ১০/ |
| ১১ | ১০/ |
| ১২ | ১০/ |
| ১৩ | ১০/ |
| ১৪ | ১০/ |
| ১৫ | ১০/ |

সমাচার দর্পণ।

রাজকর্মের নিয়োগ।

৮ ফেব্রুয়ারি ঐযুত এডভোকেট সাহেব
পশ্চিম্যে নূতনলঙ্ঘ দেশের অধিকার পুণ্য
আশীষিত।
ঐযুত ডি ক্লার্ক সাহেব কলিকাতার পর
মিট কালেক্টরের আশীষিত হইয়াছেন।

নূতন রাষ্ট্র।

মোক্ষ কলিকাতাতে এক নূতন রাষ্ট্র
হইতেছে সে রাষ্ট্র মোক্ষ চন্দ্রনী বাজা
রের পূর্বে বাপারিটোলাতে আরম্ভ হইয়া
দক্ষিণ হইতে উত্তর দিকে আসিতেছে এবং
শহরের বড় রাস্তার পূর্বে ও বাহির রাস্তার
পশ্চিম্যে। এই রাষ্ট্র চন্দ্রকের রাস্তার সহিত
সংলগ্ন হইবে সে রাষ্ট্রের সম্মুখে যে
লোকেরদের বাড়ী ও বাগান ও পুকুরি

পাড়িতেছে কোন্নানি বাহাদুর তাহারদি
গিকে বাড়ী পুষ্টিভির ওপযুক্ত মূল্যদিয়ে সে
সকল ভাঙ্গিয়া শোভা রাখা করিতেছেন
ইহাতে অনেক বাড়ী ভাঙ্গা গিয়াছে
এবং অনেক ভাঙ্গা ঘাইবে ইতিমধ্যে
বড়বাজারপর্যন্ত আসিয়াছে অনুমান
দুই হাজার লোক সেই কর্মে পুষ্টিভির
নিযুক্ত আছে।

পুণ্য।

বৎসর নানা দেশেইতে যাত্রিকেরা
পুণ্য গীর্থে মাধ্যম্যে গমন করে সে
সময় এখন গাত হইয়াছে। অন্য বৎসর
হইতে এই বৎসরে পুণ্যে অল্প লোক
ভাণ্ড করিতে গিয়াছিল এবং পূর্বে বৎসর
অপেক্ষায় এই বৎসরে সেখানে গিয়া
যমুনা নদীয়ে অল্প লোক পুণ্ড্রাণী করি
য়াছে। এবং সেখানে কোন লোক
উপাসনারদের শরীর কাটিয়া বিনবান
লোকের নিকটে গেল তাহারা তাহার
দ্বিগিকে জিজ্ঞাসা বিন দেয় এমত ব্যবহার
আছে এই বৎসর এই বৎসর দুই জন লোক
পরস্পর কাটা কাটি করিয়া ওভয়ের হাতে
ওভয় মারা পড়িয়াছে। এবং এই বৎ
সর মহারাজেন্দ্রেশ্বরী এক জন রাজা পু
ণ্যে ভাণ্ড করিতে আসিয়াছিল তাহার
সহিত অনেক লোক আসিয়াছিল সে অ
নেক বিনবান করিয়াছে।

জাহাজ পুস্তক।

গত বহনভিবার মোক্ষ হাবড়াতে
পুষ্টিভির রিটেমেন্টের সাহেবের কার
খানাতে চারি শত আটান ইনের এক

সমাচার দর্পণ।

আহাৎ নুতন প্রস্তুত হইয়া আসে ভানস
গিয়াছে (সে আহাৎজ নাম হইবে) অম
মোনো অর্থাৎ মোনো দেশে যাওয়া।
শ্রুতি মর বেদি আক্রমণী সাহেবের
সমুদ্রে যের কারণ এই আহাৎজ নাম
সেই বন রাখা গিয়াছে।

নুতন প্রকার নৌকা।

আমরা শুনিতে পাই যে মোং কলি
কান্ডার জিনিসপুত্র মোং কান্ড সাহে
বের কারখানাতে কোর্সানি বাহাদুর ল
ক্সাবের নবাব গণ্ডুদীনহয়দর বাহা
দুরের কারন দুই নৌকা প্রস্তুত করিতে
ছেন তাহার এক নৌকা কেবল রোহিত
মৎস্যের আকার তাহার মতো বাহার
আরোহণ করে তাহার দিগকে এবং দী
তি জাহাজের দিগকে বাহির হইতে কেই
দেখিতে যায় না এবং তাহাতে কাছ
নির্দিষ্ট এক ঘর আছে সে ঘরে কত
বাসে সেখান হইতে নৌকার দীর্ঘ দিগ
কে দেখা যায় না যেহেতুক সে ঘর পূ
র্বার দ্বারা আবৃত্তি সে পূর্বার লাল মথ
মলে নির্দিষ্ট এবং তাহার চারি দিকে
কলসের বর্ণের কল আছে এবং সেই ঘর
কেবল লাল মথমলে বেষ্টিত ও তাহার
কাছের গোলা গুলু ভারি স্বর্ণেতে ঝটিত
সেই ঘরের মধ্যে দুই কৌণ্ড আছে তাহার
পাশা পুত্রি স্বর্ণেতে মাটি ও সেই দুই
কৌণ্ডের দুই হাতাতে দুই স্বর্ণময়
সিংহ আছে হাত রাখিতে হইলে সিং
হের পৃষ্ঠের ওপরে হাত রাখা যায় এবং
হসিবার গাধী ও পৃষ্ঠের গাধী মথমলে
এ মথমলে নির্দিষ্ট সে ঘরের চারিদিকে
এক স্বর্ণময় দারা আছে ও সে ঘরের মে
জোও মথমলে বেষ্টিত। সে ঘরের দুই
পাশে আট কৌণ্ড আছে তাহার পাশ

লিলে বাহির হইতে আলা যায় না যে
কৌণ্ডা আছে। এবং দীর্ঘ দিগকে
কেই দেখিতে যায় না কেবল দীর্ঘ দেখা
যায় তাহাতে বাহিরে অনুভব হয়
যে বৃহৎ মৎস্য আপন পিঠার দ্বারা যা
ইতেছে। যখন বাতাস যায় ও পালি
ওড়াইতে চায় তখন এই নৌকার মধ্যে এ
মন এক কল আছে তাহা ঘুরাইলে আপন
পালি ওঠে তাহাতেই বাহিরে হয় তখন
হয় যে মৎস্য পাখীরা ওড়িতেছে।
যখন সেই কল ওঠে ঘুরায় তখন এই
পালি আপনিত তত হইয়া আপন স্থানে
থাকে। সে নৌকা লম্বা অনুমান
পঞ্চাশ হাত ও তেঁকা আট হাত তাহাতে
বার দীর্ঘ।

দ্বিতীয় নৌকা। সে নৌকা সামান্য নৌ
কার মত আকার কিন্তু সম্মুখে দুই সমু
দ্রের ঘোড়ার অর্ধেক শরীর এবং আর
অর্ধেক শরীর মৎস্যেতে ঢিলিত এবং
মধ্য দেশে এক চান্দোয়া তাহার ওপরে
ই-প্রাণী বাহাদুরের মুকুট আছে আর
সরঞ্জাম সকল পূর্বে নৌকার মত এই নৌ
কাতেও বার দীর্ঘ। এই দুই নৌকাতে এক
লক্ষ টাকার অধিক ব্যয় হইবেক এবং
শ্রুনা যাইতেছে। যে ব্যক্তি নৌকাতে
সোনার কল ঘুরিয়া লইয়াছে তাহার
নাম লিস্‌মস সাহেব তাহার বাড়ী মোং
কসাই টোলা।

তাকাইতি।

৩ ফাল্গুন ১৭ খ্রিঃ তারিখে মোং
নপাড়া গ্রামে এক ব্রাহ্মণের বাড়ীতে তা
কহিতি করিয়া তাহার অনেক সন্তান
লইয়াছে। এই কল তাকহিতি পূর্বে এত
হইত না কিন্তু সম্প্রতি মধ্যে হইতেছে।

বিবাদভঞ্জন।

মোং লেপাল দেশের অধঃপাতি কা
মুং নগরের দরবারের সহিত লক্ষ্য
য়ের নবাব সাহেবের যে বিবাদ ওপরি
হইয়াছিল শ্রুতি লোকেন্দ্র পি ভবনি
গুণ্ড সাহেব ওভয় সম্মতিতে সে বিবাদ
ভঞ্জন করিয়াছেন।

মাগীর শহর।

লক্ষ্য নদীর তীরবর্তী মাগীর শহরের
সমাচার আনিয়াছে যে গত লক্সের মা
সে তৎ পুর্বেশে এবং শীত হইয়াছিল যে
আলার অলে এক অঙ্গুলী পরিমিত বরফ
জমিয়াছিল আরো সমাচার পাওয়া গিয়া
ছে যে শম্বর লবন বোকাই এক হাজার
বলদ আজমের শহর হইতে মোং মীর
আলুর আনিতেছে তাহার প্রতিবন্দ
তিন মোন বোকাই। তাহার আ
মের হইতে মাগীর শহরে তিন মাসে
হজিয়াছে এই লবন আজমের শহরে প্রতি
মোন তিন টাকার দরে খরিদ হইয়াছে
কিন্তু মাগীর তাহার মূল্য পাঁচ টাকার
টাকা।

ময়ীত ওপলী।

পূর্বে শ্রুনা গিয়াছিল যে শ্রুতি রিক্ত
সাহেব ময়ীত ওপলীর বড় সাহেব হ
ইয়া আসিতেছেন সে সমাচার এখন
থাকি বৈই হইল। এখন শ্রুনা যাইতেছে
যে পূর্বে যে শ্রুতি জরকুর সাহেব বড়
সাহেব ছিলেন তিনি পুনর্বার সেই কর্ম
আসিতেছেন। এবং এই ময়ীত শহরে
পূর্বে অগ্নি হওয়াতে যত লোক মারা
পড়িয়াছে তাহা হইতেও অধিক লোক এই
বার মরবেত মারা পড়িয়াছে।

সমাচার দর্পণ।

বিগ্নহ চুরি।

সমাচার পাওয়া গেল যে মোঃ ভেলেনি
খাঁতার প্রযুক্ত কাশীনাথ বন্দুপাখিয়ারের
বাটীতে স্থানিত অধঃস্থায়ী এক অন্ন
পূর্ণা মূর্তি ও শিব ছিলেন। সপ্তমুখি ও
জালভন ৪৭ ছেদআরি তারিখে হস্তান্তর
বার রাতি জয় দ্বয়ের সময়ে দেওলা দর
আল অনেক আশু-খাতিতে ও সেই অন্ন
পূর্ণা মূর্তি ও শিব চুরি গিয়াছে। ইহার
অনুমজান কিছুই পাওয়া যায় নাই
তাঁহার জন্য বন্দুপাখিয়ারের বাটীর
মকলে অত্যন্ত ওড়িয়া আছেন কিন্তু বিগ্ন
হের অলঙ্কারাদি ও তৈজস পত্রাদি কিছু
লয় নাই তাঁহার কারণ এই যে তাঁহারদের
মাগ্ন-কালীন আরত্যা ও শীতল ভোগদি
দিয়া উভয় পত্ন ও অলঙ্কারাদি মুলিয়া
লইয়া স্থানান্তরে নিম্নকরে মাঝবীন পুঁক
রাখিয়া বিগ্নহেরদিককে শয়ন করাইয়া
জিল ইত্যবসরে চুরি হইয়াছে।

বারান বাঁকি লোভ হারান।

মোঃ হুমায়ূর এক সাহেবের দুই
বারান বাঁকি লোভ চুরি গিয়াছে।
নম্বর তারিখ টাকা
২১০৭ ১৪ এপ্রিল ৪৮০৮ ১০০
৪৫৭৩ ১৬ আগস্ট ৪৮১০ ১০০

হীরার অলঙ্কারের সূত্রি।

মোঃ কলিকাতার লালমিয়ার লিকটে
প্রযুক্ত টাওয়ারনকো সাহেবের বাটী
তে পরিল হাজার টাকার হীরার অল
ঙ্কারের সূত্রি হইবেক তাহাতে আড়াই
শত টিনীট হইয়াছে পুতাকা টিকট এক
শত টাকার। তাঁহার মধ্যে মকলহই
তে ওয়ম এক হীরার আন্তরী তাঁহার
মুখা পাঁচ হাজার টাকা। এবং তাঁহার

মধ্যে মকলহইতে লালমুখা মাতে চুরি
শত টাকা।

অগ্নিবাহ।

দিন পাঁচকে হইল মোঃ অগ্নিপুরের
তারিখ গঞ্জ গোলা ও গৃহদেব বাতী ও
ঘর পুজতি দিলে হইয়াছে তাহাতে মহা
অল লোকের অত্যন্ত ক্ষতি হইয়াছে ইহা
তে তাঁহারদের পুতি লোকেরদের অধিক
বয়া অলো নাই যেহেতুক ঐমহাআলেরা
হিগন মূল্যে দুবা বিক্রয় করিত।

মিঃ হলদীপ।

সপ্তমুখি শুনা গেল যে মিঃ হলদীপে
এক জন লুতল রাজা ওপস্থিত হইয়াছে।
সেখানকার পুত রাজা যে জিল তাহাকে
ইংগ্ৰাজেরা বেপূর শহরে কএব করিয়া
রাখিয়াছেন। এখন ঐ ব্যক্তি কহিতেছিল
যে মিঃ হলদীপের রাজা আছি। ও পক্ষপ
বাতি অল লোক অমাইয়া কোল দ্বানে
লুও দোরাআ করিতেছিল পরে ইংগ্ৰাজী
য়েরা লোক পাঠাইয়া তাঁহাকে বহিয়াছে
সে ব্যক্তির পরিচয় পাওয়া গেল যে সে
এক জন সেই দেশের পণ্ডিত।

প্রযুক্ত আশীনাহেব।

মোঃ নাগপুরের সমাচার আনিয়াছে
যে পুর্বে যেমত প্রযুক্ত পেশোয়া মহারাজ
ইংগ্ৰাজী সৈন্যেরদিককে অনেক পুকার
লোভ দেখাইয়া আপন পক্ষ আলিতে
চেষ্টা পাইয়াছিলেন সেইমত নাগপুরের
প্রযুক্ত আশীনাহেব ইংগ্ৰাজী সৈন্য আ
পন বশীভূত করিতে চেষ্টা পাইতেছেন যে
হেতুক আশীনাহেবের চাকরেরা তাঁহাকে
পত্র লিখিয়াছিল যে হিন্দুস্থানীয় অনেক
সৈন্যকে লোভ দেখাইয়া তোমার পক্ষ

আনিয়াছি। এইক পত্র পাওয়াতে আশী
নাহেব দুখিলেন যে এইক ইংগ্ৰাজী
সৈন্যও আলিতে পারিব কিন্তু তাহাতে
কিছুই হইল না কোলানির ডাব-নিং
খাচী সে শোভ প্রদর্শন হেয়জান করিল।
আশীনাহেবের পক্ষীয় লোকেরা ঐমত ও
যোগ এক দিন করিয়াছিল যে তাঁহার
রাগিয়াগে অনেক লোক জমা করিয়া
ইংগ্ৰাজী জাঙনিত পড়িয়া পুখম গোরা
সিয়ারীদিককে বহি করে পরে তারিখ
বিশ্বকরদিককে লম্ব করে এই নিমিত্ত
তাঁহার অনেক লোকেরদিককে অনেক
টাকা বেতন দিয়াছিল এবং কর্মসিদ্ধির
বত ভরনা করিয়াছিল। যে দিন রাগি
তে এই কণ করিতে কল্প করিয়াছিল সেই
দিন ইংগ্ৰাজী সৈন্যের সুবেদার এক জন
এই মজান পাইয়া আপন সেনাপতিকে
সমাচার দিল। তাহাতে সেনাপতি অতি
শতকণে জাঙনির চৌকি বির করিল ও
যে লোক এই পরামর্শে ছিল তাঁহারদিগ
কে বহিয়া কএব করিল। এবং যে রাত্রি
ইংগ্ৰাজীয়েদের অমরল করিতে তাঁহার
ওমত ছিল সে রাত্রিতে ইংগ্ৰাজীয়েরা
পরমসুখে কালক্ষেপন করিল। পর দিন
এই বিষয় মুখ্য বিচার করিয়া দেখা গেল
যে এই কুপরামর্শে অনেক লোক ছিল
না কিন্তু আশী নাহেবের নিজ চাকর
লোকেরামাত্র ছিল এখন আশী নাহেব
কোন মোকাবে নুত্বাতিত হইয়া আছেন
তাঁহা জানা যায় না।

দুখুলা।

মোঃ গৌরকপুর হইতে সমাচার আ
নিয়াছে যে সেখানকার খায়া মাফিয়া মক
ল দুখুলা বিদ্যেবত হুট এক টাকায় পাণ
র শের পুর্বে বসন্তে সেখানকার টাকায় জ
হিস শেষ ছিল। কিন্তু কাশীতে খায়া

সমাচার দর্পণ।

দুই কয়েক শতা হইতেছে এবং সেখানে
ইহা মন্দির নামে যথেষ্ট ওৎপন্ন হইয়াছে
ইহার পর আরো শতা হইবেক।

বুর্জ শাণাল।

এক বনে এক বাঘু ও শাণাল ও বেজী
ও গুপ্তক পরস্পর মিত্রতা পূর্বক বাস করে
তাহার মধ্যে শাণাল স্বভাভে বুদ্ধ।
এক দিন সেই বনে অরক্ষাৎ আশিত
হস্ত পুষ্ট হরিণকে দেখিয়া শাণালের ঐ
হরিণ মাংস ভোগেনে অভিলাষ বাসনা
হইল কিন্তু শাণালের এমত ক্ষমতা নাই
যে তাহাকে আশ্রয় নষ্ট করে। অতএব
ঐ দিন মিত্রের দ্বিধাকে ভাঙিয়া এই পরা
মর্শ করিল যে যে মিত্র বাঘু তুমি ঐ
হরিণকে বনে ডাকাইবা তাহাতে হরিণ
শুভ হইয়া অরশ্য কোনহ স্থানে শয়ন
করিলে পরে ওন্দুহ মিত্র মৃতিকা কাড়িয়া
সেই স্থানে গিয়া হরিণের পায়ের সির
কাটিবে তাহাতে হরিণ গণ্ডিনাক্ত হইল
অরশ্য হইবে তখন তুমি অন্যায়সে তা
হাকে মারিতে পারিবা। এই পরামর্শ সর্ষ
সম্মত হইয়া দ্বির হইল পরে বাঘু সেই
কন হরিণকে বই করিয়া আহার করি
তে ওয়াত হইলে বুর্জ শাণাল একাকী
সকল মাংস ভোজন করিতে ইচ্ছা ক
রিয়া কহিল যে যে মিত্র বাঘু এই অল্প
মুণ মাংস পাওয়া গিয়াছে ইহাতে পিতৃ
মাতৃ শ্রদ্ধা না করিয়া অণু আশ্রয়দের
আহার করা কর্তব্য নহে অতএব শ্রান
করিয়া আইস এবং এই সুদূর মাংস
দ্বারা পিতৃ মাতৃ শ্রদ্ধা কর পরে আমরা
আহার করিব। ইহাতে বাঘু সম্মত

হইয়া শ্রানার্থে গেল এবং বেজী ও
গুপ্তকও গেল। শাণাল কেবল হরিণের
রক্ষার্থে থাকিল। বাঘু শ্রী শ্রান করিয়া
আমিয়া বেহিল যে শাণাল রোদন করি
তেছে। বাঘু তাহাকে জিজ্ঞাসা করিল
যে হে মিত্র শাণাল তুমি কি কারণ
রোদন করিতেছ। শাণাল কান্দিতে ক
হিল যে সে কথা কহিতে আমার শ্রান বি
দান হয় তেম্বর যে দুই পুত্র তমুক বনে
জিল তাহার এক জনকে রাজা নষ্ট কর
য়াছে আর এক জনকে বীরিয়া লইয়া যা
ইতেছে এখন ঘৃণে প্রদোষী করিলেও
এক জনকে বীচাই ত পার। বাঘু ইহা
শুনিয়া মিত্র শ্রী শ্রী শ্রী শ্রী শ্রী শ্রী
হইয়া অন্য পুত্র রক্ষার্থে গেল। পরে
বেজী ও গুপ্তক শ্রান করিয়া হরিণ মাংস
ভোজন করিতে আইল শাণাল ক্রিয়
কৌশল পূর্বক করিয়া কহিল যে অরে সুদূর
অন্তরা ভোরদের ঐত আশ্রয় যে আমরা
সহিত এই মাংস সমান ভাগে খাইতে
বাসনা করিম দেখা বাঘু এত বত পরাক্ষ
ত আশ্রয় আরও উত্তম ভীত হইয়া পলা
ইল তেরা আমাকে ভয় করিম না তুবে
থাক অণু আমি ভোজন করি যদি পুত্র
বশিষ্ট কিছু থাকে তবে ক্রিষ্ট পাইবি।
ইহা কহিয়া সমুদায় হরিণ মাংস ঐ
বুর্জ শাণাল ভোজন করিল ও বেজী ও
গুপ্তককে নিরাশ করিল।

ইহার তাৎপর্য এই যে আত্মভর
অথচ বুদ্ধবাক্তি পরের দুঃখ ও পরিশ্রম
বিবেচনা করে না এবং আশ্রয় কোন
পরিশ্রম না করিয়া সুভারনা পূর্বক সর্ষ
গৃহন করে।

| বাজার ভাণ্ডা | | | |
|----------------|-----|------|------|
| বিশিষ্ট | মোদ | অবধি | পন্য |
| শুশানি | ১ | ৪১০ | ৪১০ |
| ভেরণা উতল | ১ | ২০ | ৩২ |
| গাছ মরিচ | ১ | ৪১০ | ৬ |
| নারিকেল উতল | ১ | ১৬ | ১১ |
| তুলা কাছোকা | ১ | ১১১০ | ১৮ |
| আদা: কপূর | ১ | ২৫০ | ৩ |
| পাটনাই আদা | ১ | ২১০ | |
| চাল পাটনাই | ১ | ৩১০ | ৩৫ |
| পাটনাই উতল | ১ | ২৫০ | ৩ |
| পাছাতি মধ্যম | ১ | ২১০ | ২১০ |
| মুণী উতল | ১ | ১৫০ | |
| মুণী মধ্যম | ১ | ১৫০ | |
| বালাম | ১ | ১৫ | ১৫০ |
| মুণা ধান | ১ | ২ | ১/ |
| পাটনাই দুট | ১ | ৩১০ | ৫১০ |
| অজুর তালি | ১ | ৩১০ | ৫১০ |
| উত্তমগাড়ে লুত | ১ | ২০ | |
| মধ্যম লুত | ১ | ১১ | ১১০ |
| উত্তম লুত | ১ | ১১ | ১১ |
| মধ্যম উত্তম | ১ | ১১ | |
| নীল উতল | ১ | ১৬০ | |
| অন্য পুকার | | | |
| নীল | ১ | ১১০ | ১১০ |
| গোরা উতল | ১ | ১ | ৫১০ |
| মধ্যম | ১ | ৬১০ | ৬১০ |
| চিনি কানী | ১ | ১০ | |
| মধ্যম | ১ | ১১১০ | ২১০ |
| গার চিনি | ১ | ৫১০ | |
| তেতুল | ১ | ৫০ | ৫০ |
| তামাক | ১ | ৩ | ৫১০ |
| চন্দন | ১ | ১৫ | ১১ |

এই সমাচার দর্পণ পুরানমপুরের ছাপাখানাত পুতিনদ্বায়ে পরিবারে ছাপা হয়। বাহার লগনের আবশ্যক হইলে তিনি পুরানমপুরের ছাপাখানাত
আপন বাস পাঠাইলে লগনবে কাগজ তাঁহার নিকটে পাঠান হইবেক তাহার মূল্য মানে এক টাকা যিনি বাজর করিয়াছেন যদি তাহার নিকট
কাগজ না পাইবে তবে তিনি পুরানমপুরের ছাপাখানাত সমাচার দিব্যমাত্র তাহার নিকটে পাঠান হইবেক।

সমাচার দর্পণ

৯৪ নং পৃষ্ঠা।

শনিবার। ৪ মার্চ সন ১৮৭০। ১১ ফাল্গুন সন ১৯১১।

দর্পণে পুণ্য পৌদ্ঘ্যনিব কার্যবিবরণঃ।

ব্রাহ্মানিহ আনন্দ সমাচার দর্পণে॥

কোল্লানির কাণ্ড।

কোল্লানির শতকরা জয় টাকার সুবের
কাণ্ড প্রস্তুত করিতে হইলে শতকরা
এক আনা তির্যকোণ। বিক্রয় করিতে
হইলে শতকরা চারি আনা তির্যকোণ।

মস্তাহার পঞ্জিকা।

| ক. ক. | নাম | ১০ | ১১ | ১২ |
|-------|-----|----|----|----|
| ১ | ১ | ১০ | ১১ | ১২ |
| ২ | ২ | ১০ | ১১ | ১২ |
| ৩ | ৩ | ১০ | ১১ | ১২ |
| ৪ | ৪ | ১০ | ১১ | ১২ |
| ৫ | ৫ | ১০ | ১১ | ১২ |
| ৬ | ৬ | ১০ | ১১ | ১২ |
| ৭ | ৭ | ১০ | ১১ | ১২ |

লাট

৭
৮
৯
১০
১১
১২
১৩
১৪
১৫

বিঘা

১০/
১০/
১০/
১০/
১০/
১০/
১০/
১০/
১০/

কলিকাতাহইতে মান্দরাজে পুতুল করি
য়াছে।

যুদ্ধের নতুন হায়াই।

যুদ্ধের কারণ এক পুকার নতুন হায়াই
ইংগলে মুক্তি হইয়াছে সে গোল ও লম্বা
টোকাতে এক হাত পরিমিত তাহার মত
বাহুরেতে পরিপূর্ণ। যুদ্ধকালে সেই হায়াই
লিফট করিলে সে আকাশে ওঠে পরে
শত্রু সৈন্যের মতই অভিরোধে পড়িয়া
মানুষ বার হাত মৃত্যুর মতই পুড়ি
হইয়া আট তাহাতে অনেক লোক
মারা পড়ে। এই হায়াই ১৮৪১ সালের
জুন মাসে মোকাম মেদমাতে তাহার
পরীক্ষা করিবার কারণ লিফট করিয়া
যেথা গিয়াছিল যে তাহার এক পুকার
দেখা গিয়াছিল। কিন্তু মনুষ্য ১০ তালুয়ারি
তাহায়ে ঐ হায়াই জাতি গিয়াছিল তা
হাতে যেথা গেল যে সে অতিমুদ্র ও
নির্বাকরণ গঠিত হইয়াছে।

সমাচার দর্পণ।

আহাজ আমদানী।

জনটোহিন নামে আহাজ কাশান
লিসন ঐ আহাজ ১৮ সেপ্টেম্বর ইংগলে
জাতিয়া ১৫ ফেব্রুয়ারি তারিখে কলিকাতা
তে পৌঁছিয়াছে। এবং সেদরব নামে
আহাজ ১১ নবেম্বর তারিখে ইংগলে জাতি
য়া ১৮ ফেব্রুয়ারি মোকাম কলিকাতাতে
আনিয়াছে ঐ আহাজ মাতে তিন
মাসে পৌঁছিয়াছে এত শীঘ্র অত্যা আহাজ
ক্যাতিং আইসে। এই আহাজ যে
সমাচার আনিয়াছে তাহা পল্লী-জাশান
হাইবেক।

আহাজ রজ্জানী।

বেঙ্গল নামে এক আহাজ কাশান
এলফিন ঐ আহাজ ১৩ ফেব্রুয়ারি মোকাম

কোল্লানির ইস্তাহার।

ইস্তাহার দেওয়া যায় যে যে মোকাম
আলীপুরের কালচারিতে ১৮ মার্চ ১৮৭০
সালে চতুর্থ পরগনার কালচারের মত
ঐ পোনের লাট ভূমি বিক্রয় করিবেন।
কোল্লানি বাহাদুর আলি খায়ে পাশা
হস্তান্তর করিবার কারণ ঐ ভূমি পরি
হার করিয়াছিলেন।

লাট

১
২
৩
৪
৫
৬

বিঘা

১০/
১০/
১০/
১০/
১০/
১০/

ঐশ্বর্য আশা মাহেব।

দক্ষিণ দেশ হইতে সমাচার আনিয়াছে
যে ইংগলে সৈন্যেরা মোকাম অহাজ না
যে স্থানে কয়দারাবাদ নামে কল্লিতে
ঐশ্বর্য আশা মাহেবকে অনেক আনন্দ
করিতেছে যেহেতু শুনা গিয়াছে যে
তিনি সেই-কিছাতে পুকাইয়া আসেন।
এবং আশা মাহেবের যে স্ত্রী লোকের
ইংগলে যুদ্ধের মতই যুদ্ধতা করি
ছিল তাহার বরা পড়িয়াছে এবং সীত
বলদী শহরে কদম হইয়াছে তাহারদের

সমাচার দপ্তর

মধ্যে পুৰান আশানাহেবের ভ্রাতা অত
এব তাহাকে মোং নাপানুয়ে পৃথক কএব
করিয়াছে প্রযুক্ত জেনেরাল দস্তন সাহেব
আশানাহেবের অনুরোধে এই কয়দরা
বাহে গিয়া কথক ঘোড়ামোয়ার মিথ্য
হীরদের দ্বারা এই কিল্লা ঘোড়াইলেন ও
কথক পয়দন মিথ্যাহীরদিকে তাহার
মধ্যে পাঠাইলেন। তাহার কিল্লার মধ্যে
প্রবিশ্ব হইলে আশানাহেবের এক জন
আত্মীয় লোক তাহারদের পুতি অনেক
পুতরাণ করিতে লাগিল তাহাতে তাহার
পুতি সন্দেহ করিয়া ইংলণ্ডীয় মিথ্যাহীরা
তাহাকে খুন করিল। পরে পুমান পাওয়া
গেল যে এই ব্যক্তি আশানাহেবকে দুই
মাস আশন ঘরে লুকাইয়া রাখিয়াছিল
যখন ইংলণ্ডীয়ের তাহার অনুরোধ করি
তেছিল তখন সে কোন কথা মুকাশ করে
নাই। এখন আশানাহেবকে ধরিবার
কারণ অনেক চেষ্টা হইতেছে পরে কি হয়
বলা যায় না।

লাণাপুরাধোণাতা আলাদা গুহা।

আলাদা গুহাহইতে সমাচার আসি
যাছে যে শ্রুতিযুক্ত জেনেরাল দস্তন সাহে
বের নিকটে অঙ্গশায়ী ভাগ্যবান এক
জন কহিল যে আমাকে এত টাকা ও
এত অগ্রগণ্য যদি তুমি দেও তবে আমি
শ্রুতিযুক্ত আশানাহেবকে বরিয়া দি। সে
যত টাকা চাহিল এই সাহেব তাহাইতে
অল্প দিতে স্বীকার করিলেন সে ব্যক্তি
তাহাতে সম্মত হইল না। পরে দস্তন
সাহেব সেই ব্যক্তিকে কএব করিলেন
এক কয়দরাবাহে সৈন্য পাঠাইলেন ও
তাহাকে আশানাহেবের বিধবা অনেক
জিআনা করিলেন সে কিছুই কবুল
করিল না।

এলাউগা।

মোং মান্দরাঅহইতে সমাচার আসি
যাছে যে সেখানে এলাউগারোগের ব্যক্তি
অতিশয় হইয়াছে মোং কিলন অনেক
সৈন্য ঘাইতেছিল তাহারদের দুই তিন
শত মিথ্যাহী এলাউগারোগে মারা পড়ি
য়াছে এক এলাউগারোগে এমত সাহসী
যে গোঁরা মিত্যাহীরদিকে বরিয়াছে।

সুপ্তি।

মোং কলিকাভায় এক জন দালাল
কলুং দেহিয়াছিল যে অমুক লম্বরের চি
কটি কিলিলে লক্ষ টাকা দ্বারা বাকী ওঠবে।
সে তাহার পর দিন মহাফদ্দ হইয়া আ
পনার জিনিস শত্রু বিক্রয় করিয়া এক শত
টাকাতে সেই লম্বরের চিকটি কিলিল।
পর আর এক জন ভাগ্যবান বাগদিল
লোক সেও এই লক্ষ লবুং দেহিয়াছিল তৎ
পুত্রকে সে চিকটি আনিমে গিয়া এই চিকটি
কিলিতে চেষ্টা করিল কিন্তু স্ত্রিল যে সে
চিকটি সেই দালাল কিলিয়াছে। শেষে
এই ভাগ্যবান এই দালালকে অনেক স্বর
বিনয় করিয়া এক দুই হাজার টাকা দিয়া
এই চিকটি কিলিল। পরে এই চিকটি চন্দন
নগরের এক জরানি সাহেব কিছু অধিক
মূল্য দিয়া তাহার স্থানে কিলিয়া লইল।
পরে শেষ দিনে এই চিকটি জরানী ওঠিল।
আমরা শুনিতে পাই যে এই জরানিরকে
পণ্ডিত হাজার টাকা দিতে অস্বীকার এক জন
স্বীকার করিয়াছিল জরানি সাহেব
দেখ নাই। ইহাতে জরানি সাহেবের
অনেক লোভ ও দালাল ও বিতর্ক ব্যক্তির
লাভাভু মুকাশ হইল।

কালিগুর।

আমরা পূর্বে জাংগিা জিলায় যে কালি
গুরের কিল্লা লক্ষ করিতে কোয়ান বাহা

দূরের বকুম হইয়াছিল নং পুতি সমাচার
পাওয়া গেল যে শ্রুতিযুক্ত আশন ইল্লা
করে তৎপুদেশীয় অধীক্ষকদিগকে লিখি
য়াছেন যে এমত পুতীন হিন্দুমানের ব্রু
কুণ ও কালিগুরের কিল্লা লক্ষ করা ওণ
যুক্ত নয়।

সেখানহইতে আরো সমাচার আসি
যাছে যে সেখানে অসম্মান কালি লভার
বিশ্রুত হইয়াছে যেহেতুক তৎপুদেশে
শতকালে গুপ্ত কালের মত হইতি হই
য়াছিল এক সেখানে এক পুত্রলীতে
সহাং মুক্তি নিগত হইত নং পুতি তাহা
তে জন পরিচয় হইয়া তাহার জন আত
মিচ্ছ হইয়াছে তাহাতে সেখানকার হা
জরানী কছেন যে বনহইতে খণ্ডন পক্ষ
দেখা বিয়াছেন তৎপুত্র এমত নোভায়া
হইয়াছে।

শাহশুজা।

কারোলের পূর্ব বাহাশ শাহশুজা মি
লু দেশের অন্তর্গত হইয়াবাহদের অধী
শের নিকটে লক্ষ টাকা পাইয়া তদন্তই
মিকারপুর নামে গুহা বান করিতেছেন।

নর্নাটকের নবাব।

আমরা পূর্বে জাংগিা জিলায় যে নর্না
টকের শেষ নবাব মরিয়াছেন। এখন
সমাচার পাওয়া গেল যে ও হেব্রুজার
তারিখে প্রযুক্ত মান্দরাঅহ বৎ সাহেব
কলিকাভায় প্রযুক্ত জেনেরাল আফানসার
নর্নাটক নবাবের পুত্র আজম শাহ বাহা
দুরূহে তাঁহার নিজস্ব স্থাপিত করিয়া
ছেন। এই দিন ওগাকার বৎ সাহেব ও
অজ সাহেব পুত্র পুমান সাহেবেরা এই
নবাবের রাজত্বকে গৌলেন ও সেই রাজ
ত্বের পুমান কুতুর্দার দ্বারা ইলুতন নবাব
এই সাহেব লোকদেরদের সেলাম লইলেন

সম্রাটের দপণা

পরে মাদ্রাজের বড় সাহেব খাঁদাত ও জায়া নবাবী চিহ্ন তাহাকে পরিত্যাগ করা হইলেন ও মিঃ হামিলের নিকটে তিনি দাঁড়াইলেন তখন বড় সাহেব তাহাকে কহিলেন যে শ্রীশ্রীমত কলিকাতার বড় সাহেবের আঁজাতে তোমাকে তোমার পিতৃ মিঃ হামিলে বনাইলাম তোমার পিতার সহিত আমার যে স্বপ্ন মোহুরা ছিল সেই স্বপ্ন মোহুরা আমি তোমার পুত্র করিব। এবং ১৮০১ সালে নবাব আজমদ্দৌলার সহিত আমারদের যে সন্ধিগ্রন্থ হইয়াছিল সেই সন্ধিগ্রন্থে তখন নবাবের দক্ষিণা থাকিবেক। অতএব আজি আমি আপনকারে কর্তৃত্ব নবাবের মূখে দাঁড় আন মেলায় করি।

অনর ঐ নবাব পারসী ভাষাতে তাহার পুত্রুত্তর করিলেন যে আজি আমি পরমেষ্মণের ইচ্ছাতে ও শ্রীশ্রীমতের অনুগৃহেতে খলন পিতৃবদপুত্র হইয়া কর্তৃত্ব নবাব হইলাম তুমি যে আমার সহিত ইচ্ছাশাপ করিতে আনিয়াছ ইচ্ছাতে আমি তোমাকে মেলায় করি।

যে সন্ধিগ্রন্থ আপন পুত্র পরমেশ্বর কোয়া নি বাহাদুরের সহিত করিয়াছেন তাহা আমি কবচ বিস্মৃত হইব না এবং আপন ও কলিকাতার শ্রীশ্রীমত যে আশুকুল্য লিখা আমার বংশের ওপরে করিয়াছেন তাহা আমার মনহইতে কখনও ঘাইবে না।

ইহারপর ডাক্তার বড় সাহেব ঐ নবাবকে লইয়া মিঃ হামিলে বনাইলেন ও তখন মেলায় এবং কিল্লাতে তখন হইল। পরে বড় সাহেব তাহাকে মেলায় করিয়া বিদায় হইয়া স্বদানে প্রস্থান করিলেন।

মহাবলিহ।

সংস্কৃতি শ্রুতি গিয়াছে যে ইংল্যান্ডের বড় নগরে বুজালোকরা ঘিহরী লোকেরদের ওপরে অত্যন্ত দৌরাভা করি তেজ তাহারদিকে ঘাইতেছে ও তাহারদের ঘর পোতাঁইতেছে ইত্যাদি অনেক ওংশিত করিতেছে। তাহাতে সেই বুজালোকের রাজারা ঘিহরী লোকেরদের বের করিয়া সৈন্য লইয়া আপন প্রজার দিকে দমন করিতেছে। তাহার কারণ এই যে ইংল্যান্ড অনেক নগরে ঘিহরী লোকেরা মহাশক্তি করে তাহাতে সেই বুজালোকের রাজারা ঘিহরী লোকেরদের নিকটে টাকা কর্তৃক করে এবং মূদ দেয় সেই মূদ রাজারা রাজকরের সহিত প্রচারের ওপরে অগ্রিক করিয়া লয়। তাহা যে বুজারা ঘিহরী লোকের ওপরে অত্যন্ত দ্বিষ্ট হইয়াছে। তাহাতে রথ সৌদ নামে এক জন ঘিহরী মহাজন আছে তাহার মত মহাজন ইংল্যান্ডে নাই দুই বংশের হইল যে সময়ে ইংল্যান্ডের বন্দোবস্তের কারণ সেখানকার রাজারা একত্র হইয়াছিল তখন তাহার ঘরে যত টাকার পুয়োজন তত টাকার নরবরাহ পরিবার কারণ ঐ মহাজন সেখানে গিয়াছিল। ঐ ব্যক্তি প্রত্যন্ত বির করিয়াছে যে যে নগরে ঘিহরী লোকেরদের ওপরে দৌরাভা হইয়াছে সেখানকার ওপরে যে হতাপুত্রি আইনে তাহার টাকা দেয় না। ইহাতে সেই বান বানিয়ার কিছু লণ্ডাঘটি হইয়াছে।

—

মরমেদ অর্থাৎ নর মংসা।
ইংল্যান্ডীয় লোকেরদের মধ্যে কেহ মরমেদ নামে এক সমুদ্রের অত্র মাংসে কিছু মে পুণ্য অধিষ্টমণী তাহার আ

কার নাতির ওল্ড্রী লোকের মত ও তাহার নীচে মংসোর আকার ১০-১২ সমুদ্রের মাংস থাকে এবং লোকের যে ঐ অত্র মাংস সমুদ্রহইতে উত্তীর্ণ পরিত্তের ওপরে বনিয়া ভতিমুদ্র হইয়া করে। সংস্কৃতি নামে মংস হইল কটনিত ঘেঁষে তিন শত সাহেব লোকের সাক্ষ্য করে ঐ অত্র সমুদ্রহইতে উত্তীর্ণ এক শত তের ওপরে চড়িয়া অধিনবায়ী জাহাজ নব নব করিতেছিল ও দেখা গেল যে তাহার দুই শত ঘোড়া বর্ষীয় পুত্রের স্থানের মত।

দীর্ঘদেশের বাহাদুরের পুত্রপালিন।
চীন দেশের বাহাদুরের গাত আন দিল অনেক ওমরা লোক ও অমির লোক ও চাকর লোক ও বাহাদুরের পুত্রপালিন বাহাদুরের মজলিসে আনিয়া দ্রাশ্যমাণ। আদ্যের পুত্রপালিন ভোজন পুত্রপালিনে করিয়াছিলেন কিন্তু বাহাদুরের পুত্রপালিনে আনিয়া আইলেন না ও আপন পুত্রপালিনে কোল লোকের ও পাঠাইলেন নাই। তাহাতে বাহাদুর ক্রুদ্ধ হইয়া এই কহিলেন যে এই আদ্যের পুত্রপালিনের বয়সক বার বংশের অগ্রিক কিন্তু তাহার মন অতি নিরংসাহ ও তাহার স্বভাব মূঢ়ের মত। এই নিমিত্তে তাহার শাসনাতন তাহার জয় মাদের মশাহরা দত্ত করা গেল কিন্তু তাহা জয় ক্রান্তিতে লইতে হইলক এবং তাহার পারিষদ লোকেরদিক্কা আপন পরহইতে ন্যূন পদে স্থানিত করে তাহে হইবেক। ইহা কহিয়া সেই বন দত্ত করিলেন।

বাগু।

নগালের পাঁচাত্তর নিকটে তিহরী নামে এক স্থানে বিবি বলর ওমর ইক্কী লোক হাতীর ওপরে আরোহণ করিয়া দিক্কা করিতে গিয়াছিলেন।

সমাচার দর্পণ।

দ্বারা অনুগ্রহের মাধ্যমে হইল। অনেক
করিভেন্সন এই কালে অসম্মান এক
ব্যক্তি লম্বা দিয়া হাতী র ওপরে ওঠিল পরে
এ বিবীরা অভিসান করিয়া কি অসম্মান
এ ব্যক্তি দূর করিল তাহা জালা গেল
না সে হানে অনেক করিতে। দুই
ব্যক্তির বাহা পাওয়া গেল তাহাতে অনু-
মান হইল যে এ বাহুর পানের ভয়ে
বাগী হাতীর ওপরে আসমান করিয়া
ছিল।

শূণালির বৃত্তান্ত।

এক মহাবলে এক বাঘু ও এক মহিষ
জিরকাল বসতি করে কিন্তু এ ওয়ের পর
কুরকালও সাক্ষাৎ হয় না। ইতোমধ্যে
এক বৃদ্ধ শূণাল সেই বনে বাসিয়াছিল
এক ঐ বনের চতুর্দিকে ভ্রমণ করিয়া ঐ
বনের দুই প্রদর্শন ঐ দুই মহাবলকে
অন্ধুর দেখিল তাহাতে সে মনে ভাবিল
যে এই দুই ভয়ঙ্কর অন্ধুর এই বনহইতে
দূর না করিলে আমার নিকটদূরে বাস
করা হয় না আমি ক্ষুদ্র অন্ধুর দেখি জলা
কোনই ওয়াগরার কর্মনিদ্ধি করিব।
এই মনে নিষ্কণ্ড করিয়া পুণ্য বাঘুর
নিকটে গিয়া পূণ্য করিয়া কহিল যে
মামা আমাকে কিনিতে পার। বাঘু আপন
ভক্তিরদ্বারা জান করিয়া অনেক সময়ের
পূর্বক বাঘুর ইচ্ছাশ্রম করিল। পরে
শূণাল কহিল যে মামা এই বনের পূর্ব
ভাগে একটা ক্ষুদ্র মহিষ আছে তাহার
নিকটে তোমার কথা জিজ্ঞাসা করিল।
তাহাতে সে তোমাকে অনেক কষ্ট করিয়া

তিরকার করিল আর কহিল যে থাক
আজি তোর মামাকে এই বনহইতে দূর
করিবো। ইহাতে আমায় মনে অতি
শয় দুঃখ ও সোদা জন্মিল। ইহা শুনিয়া
বাঘু অত্যন্ত কৌতুহিত হইয়া মহিষের
সংস্কারার্থ যাইতে লাগিল। শূণাল
কহিল যে মামা আজি ক্ষান্ত হও দেখি
সে যেটা কি করে। শূণাল ইহা কহিয়া
বাঘুকে থামাইয়া মহিষের নিকটে গেল
ও তাহার সহিত ঐ কল মামা সন্দর্ভ করি-
য়া কহিল যে মামা আমি তোমার নিকটে
আসিতে পথে এক ক্ষুদ্র বাঘু তোমাকে
গালি দিল ও কহিল যে তোর মামাকে
আমাই বধ করিভেছি। ইহা শুনিয়া মহিষ
কহিল যে সে কোথায়। শূণাল কহিল
যে মামা আইস তাহাকে দেখাইয়া দি।
ইহা কহিয়া শূণাল ঐ বাগীক্ষ মহিষকে
সম্মুখ করিয়া লইয়া গেল ও এক দানে
মহিষ মামাকে রাখিয়া বাঘু মামাকে
সমাচার দিল যে মামা বাহির হও ঐ দুই
মহিষ তোমাকে লক্ষ্য করিতে আসিয়াছে।
ইহা শুনিবামাত্র বাঘু মহাবলের শত্রু
করিয়া মহিষের ওপরে আসমান করিল
মহিষও সাধনপাথর আপন শত্রুদ্বারা বাঘু
কে আঘাত করিতে লাগিল এই কল
ওয়ের যোগে যুদ্ধ বৃদ্ধ হইল। ঐ
বৃদ্ধ শূণাল তখন তাহারদের চতুর্দিকে
করতালি দিয়া দ্রিষ্টিতে লাগিল ও মামার
অয় এই কথা বারং বারং কহিতে কহিয়া
ওয়ের মন রক্ষা করিল। পরে ঐ যুদ্ধে
মহিষ ও বাঘু ওভয়েই মরিল। বৃদ্ধ শূণাল
আপন বুদ্ধিপ্রভাবে ঐ বনে নিকটদূরে বাস
করিতে লাগিল।

| বাজার ভাণ্ডা | | | |
|--------------|-----|------|-----|
| জিনিস | মান | অবধি | মহা |
| সুগারি | ১ | ৪৮ | ৪৮ |
| ভেরণ্ডা তৈল | ১ | ২০ | ৩২ |
| গাছ মরিচ | ১ | ৪৮ | ৬ |
| নারিকেল তৈল | ১ | ১২ | ১৬ |
| চুলা কাহোরা | ১ | ১৮ | ১৮ |
| আমার মল্লপু | ১ | ২৬ | ৩ |
| পাটনাই আমা | ১ | ২৮ | ২৮ |
| চালু পাটনাই | ১ | ৩৮ | ৩৬ |
| পাছড়ি উত্তর | ১ | ৩ | ৩৮ |
| পাছড়ি মধ্যম | ১ | ২৮ | ২৮ |
| মুগা উত্তর | ১ | ১৮ | ১৮ |
| মুগা মধ্যম | ১ | ১৮ | ১৮ |
| বাল্যম | ১ | ১৮ | ১৮ |
| দুধা ধান | ১ | ২৮ | ২৮ |
| পাটনাই দুট | ১ | ৩৬ | ২৮ |
| অন্ধুর তালি | ১ | ৩৮ | ৩৮ |
| উত্তরভাণ্ডার | ১ | ২৮ | ২৮ |
| মধ্যম দুট | ১ | ১৮ | ১৮ |
| তৈলা দুট | ১ | ১৮ | ১৮ |
| মধ্যম তৈলা | ১ | ১৮ | ১৮ |
| নীল উত্তর | ১ | ১৮ | ১৮ |
| অন্য পুকার | | | |
| নীল | ১ | ১৮ | ১৮ |
| নোরা উত্তর | ১ | ১ | ১৮ |
| মধ্যম | ১ | ৩৮ | ৩৮ |
| চিনি কাগরি | ১ | ২ | ১৮ |
| মধ্যম | ১ | ১ | ১৮ |
| ধার চিনি | ১ | ৩৮ | ১৮ |
| তেতুল | ১ | ১৮ | ১৮ |
| জামাক | ১ | ৮ | ৮ |
| চন্দন | ১ | ১৮ | ১৮ |

এই সমাচার দর্পণ পুরানপুরের, দোপাখানাতে পুতিন্দায়ে শনিবারে ছাপা হয়। যাহার লগনে আবশ্যক হয় তিনি পুরানপুরের ছাপাখানাতে
আপন নাম পাঠাইলে সন্ধ্যায় কাগর তীব্র নিকটে পাঠান হইবেক তাহার মূল্য মানে এক টাকা মিনি ছাপার করিয়াছেন যিনি তাহার নিকট
কাগর বাগীছে জর তিনি পুরানপুরের ছাপাখানাতে সমাচার বিবামাত্র তাহার নিকটে পাঠান হইবেক।

সমাচার দর্পণ

১০২ সংখ্যা।

পরিবার। ১২ এপ্রিল সন ১৮৭০। ১৮ বৈশাখ সন ১১৭৭।

দর্পণে মুখ লৌক্যমিত কার্যবিতরণাঃ।

বৃত্তান্তবিহ জনক সমাচারদ্য দর্পণে॥

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির শতকরা জয় টাকার মূল্যের কাণ্ড করিতে হইলে শতকরা এক টাকা বার আনা প্রিমিয়ম। বিক্রয় করি হইলে শতকরা দুই টাকা চারি আনা প্রিমিয়ম।

সস্তাহার শুল্ক।

| ১৬ এপ্রিল | লগ্নিয়ার | ১৮ বৈশাখ |
|-----------|-----------|----------|
| ৮ ৬ | ১১৫০০ | ১১ ৬ |
| ১ মে | ১১৫০০ | ১১ ৬ |
| ২ ৬ | ১১৫০০ | ১১ ৬ |
| ৩ ৬ | ১১৫০০ | ১১ ৬ |
| ৪ ৬ | ১১৫০০ | ১১ ৬ |
| ৫ ৬ | ১১৫০০ | ১১ ৬ |

ইস্তার দেওয়া যাইতেছে।

সন ১৮৭০ সাল ইং ১১ মে মতাবক সন ১১৭৭ সাল বাঙ্গালা ৩ বৈশাখ রোজ বৃহস্পতিবার এবং তাহারপর যেতক সকল নমক বিক্রয় হয় মোকাম কলিকাতা তা একশতশতকমে নিলামে বিক্রয় হইবে অণ্ডাণ্ডি ১১০০০০ বারলক মোন তফ শীল নাচে বেথা যাইতেছে জিলাটি ১০০০ মনের হইবেক সের টীক ৮৭ ওজন জি লাট ১ টাকা। বায়ল দিয়া সওয়া পাণ্ডা করিবেক যে মোকামে বিক্রয় হইবেক সেখান হইতে খরিদারান নমক চালানি করিলেক সে মোকামের নাম বড় ইস্তা ইর সবার নমক হস্তরে লটকান গোল তাহাতে লেখা আছে।

নিলাম বিক্রয়ের নিয়মিত মরত তন

| শীল। | নাম | ১৮৭০ সালের ১০০০ | ১৮৭০ সালের ১০০০ |
|-------------|-------|-----------------|-----------------|
| হিজলী | ১৭০০০ | ১৭০০০ | ১৭০০০ |
| ডামোলাক | ১৫০০০ | ১৫০০০ | ১৫০০০ |
| চরিশ পরগাণা | ১৫০০০ | ১৫০০০ | ১৫০০০ |
| পুন্ড্রিয়া | ১৫০০০ | ১৫০০০ | ১৫০০০ |
| পলিমার | ১৫০০০ | ১৫০০০ | ১৫০০০ |
| জুগুয়া | ১৫০০০ | ১৫০০০ | ১৫০০০ |
| চাটগাম | ১৫০০০ | ১৫০০০ | ১৫০০০ |
| পাশিমা | ১৫০০০ | ১৫০০০ | ১৫০০০ |
| কটক পাণ্ডা | ১৫০০০ | ১৫০০০ | ১৫০০০ |
| মামদার | ১৫০০০ | ১৫০০০ | ১৫০০০ |
| পরগাট | ১৫০০০ | ১৫০০০ | ১৫০০০ |

যেখানে মত টাকা দাখিল না করিলে নগর বিক্রয়ের ইস্তাহার দেওয়া যাইবেক তাহাতে যে নৌকমান হইবেক তাহা পুণ্য খরিদারানের দাখিলবেক কেজাত হয় মরকারের হইবেক।

মার্ত মাহার নিলামে ১১ জিহুয়ারি ইস্তাহার খাতিয়াম সকলকে দেওয়া গিয়াছে তাহা পুন্ড্রিয়ার নীচে লিখা যাইতেছে ও সকলকে সিদ্ধান্ত করা যাইতেছে যে ১১০০০০ মোনির বেশী নমক ইয়া সন ১৮৭০ সালের চারি নিলামে বিক্রয় হইবে না কিন্তু যদি এই নিমকের কম করি বার আশংক্য বুঝেন কম্য করিতে পারি বেন। নীচের তপশীল মাফিক মার্ত ও মে মাহার নমক বিক্রয় হইবেক এবং জু লাই ও সেক্ষমের নমক খান বিক্রয়

হইবেক তাহা সেই সময়ে পুন্ড্রিয়া হার দেওয়া যাইবেক।

চারি নিলামের তপশীল।
১ পুণ্য মত সন ১৮৭০ ৯ মার্ত ১১০০০০
২ দ্বিতীয় মত ১ ১১ মে ১১০০০০
৩ তৃতীয় মত ১ ১০ জুলাই
৪ চতুর্থ মত ১ ১০ সেপ্টেম্বর ১১০০০০
১১০০০০

নিয়ম করা যাইতেছে লাটহায়ের নমক এক বৎসরের মত। মোকাম হইতে খালান করিয়া লইতে যাইতে হইবেক নতুবা মোদার ওভারের অবধি গোলা ভাঙা বাবুদিয়ান হাজার মোন ও লাট টাকার হিসাবে দিতে হইবেক এবং পুন্ড্রিয়ার শির্শতায় মোন হিসাবে কমতি যাইবেক।

নিলামে খরিদা লাট হায়ের যে নমক ১ এক বৎসর মোদার মত। খালান না হইবেক গোলা ভাঙা না গিলে ও ওভারের লিখিত কমতি বাদ না গেল নমক দেওয়া যাইবেক না বিমোজিমকম্বু হার্ডনিরমিট ও নমক ও জাঞ্জির মস্তুর কলিকাতা ইতি। সন ১৮৭০ সাল ১১ এপ্রিল মোকামে বাঙ্গালা সন ১১৭৭ সন ১৮ বৈশাখ।

সমাচার দর্পণ।

নীল।

গত সপ্তাহে নীলের সমাচার পাওয়া

সমাচার দপণ।

গিয়াছে তাহাতে অন্যাবস্থিত মুক্ত নীলের
ওপরি বিষয় সন্দেহ ছিল কিন্তু সৎপু
তি সুবৃদ্ধি হওয়াতে অনেক ভরোনা হই
য়াছে। বৃষ্টি কৈল মূল্যে দুয়াংলেনের অ
ধিক ও কৈল মূল্যে দুয়াংলেনের মত ও
কৈল মূল্যে স্পন্দ। ইহার তথা সমা
চার মোং কলগারের ১৭ তারিখের পত্র
দ্বারা এই আত হইয়াছিল।

মোং ম্যাংদুং ও ম্যাংহর ও চাকোতে
মহাবৃষ্টি হইয়াছে এবং জিলা বহুমান
গত সমস্তেই সুন্দর বৃষ্টি হইয়াছে তা
হাতে কৃষকেরা ওপুঙ্ক সময়ে বাজ বলা
দি করিতেছে।

পু-লিয়া

মোং পু-লিয়াই হইতে ১৩ তারিখের পত্র
পাওয়া গিয়াছে তাহাতে জানা গেল যে
সেখানে দুইবার ও-কৃষ্ণ বৃষ্টি হইয়া
ছে তাহাতে সে দেশের লোকদের
ওপুঙ্ক ভূমিতে কৃষি নিম্ন হইয়াছে এবং
সেইকণ আর একবার বৃষ্টি হইলে ওপু
ভূমিতে শস্যাদি জন্মানের কোন ভয়ে
ক্ষা থাকিবেক না। এবং যে নীচের ভূমি
তে নীল ও-পুঙ্ক হয় তাহার বিষয় কোন
ভতরনা নাই। যম্মাণ পুংগু বায়ু যে
কণ এখন বহিতেছে একন বহে ও
নদীতে বলা বৃষ্টি না হয় তাহে এই বৎ
সর অত্যুৎকৃষ্ট নীল জন্মিবে।

শিভারি।

শেখদুলা নামে মহাদুরস্ত শিভারি পুঙ্ক
ই-গুপ্তায়েরদের লিখিত হইতে পলাইয়া
ছিল ইহা পুঙ্ক জানা গিয়াছে সৎপুতি
তাহার সমাচার পাওয়া গেল যে সেই
দুখ শিভারি পুঙ্কর দেয়া বিয়াছে এবং
তাহাকে বড়িবার কারণ ই-গুপ্তায়েরা
ই শত ঘোড়সোয়ার ও পাঁচ শত সিঁথার

পাঠাইয়াছিলেন পরে এক স্থানে রাশি
যোগে সেই শিভারিদের সহিত যুদ্ধ
হওয়াতে শিভারিরা পরাস্ত হইলে সেখ
দুলা ও আর তাহার সঙ্গি তিন জন পলা
ইয়াছে তাহারদের মাত জন মুল হই
য়াছে তিন জন আঘাতী হইয়াছে এবং
পাঁচ পুঙ্ক ও দুই বালক ও দুই স্ত্রী ও
ছোল ঘোড়া এবং তাহারদের আর
অনেক সঙ্গ ও ই-গুপ্তায়েরা বড়িয়া আনি
য়াছেন। ঐ মেমদুরার সহিত যে সকল
সৈন্য মিলিয়াছিল তাহারাও তাকাইত
ছিল ঐ সৈন্যর সৈন্যদুলার সহিত মিলি
য়া ম বৈঃ তাকাইতি করিতছিল কিন্তু
শেষে তাহার প্রতিফল পাইয়া পলাইল।

লোকাত্তিবি।

গত শুক্লবার ১০ বৈশাখ এক ব্যক্তি
খুশ্চালয়ই হইতে জাপন স্বীকে লোকা
যোগে জাপন বটী আনিতেছিল পরে
মোং ভাটপাড়ার নীচে গলিতে তাতি
বক তখনপুঙ্ক ঐ লোকা তুলিলে
অন্য লোক লোকা লইয়া আসিয়া তা
হারদের অনুসন্ধান করিতে লাগিল
তাহাতে সেই স্বীকেমাগ্ন সত্যিহনা পা
ইল আর লোক মৃত দেখিল।

ই-গুপ্ত দেশ।

ই-গুপ্ত দেশে মুটরা পুতি ইতর
লোকেরা তৃতক জন দুই মৌল বত্রিশ
শেরের বোরা বহে এবং হিন্দুমানের
মুটিয়া দুই মৌল পর্যন্ত বহিতে পারে
এবং বোধহইতে স্বা লোকেরা তেত্রিশ
মের ওজনের মিশ্রিত দিল্লুক বহে এবং
জনের মুটিয়া দুই মৌল পর্যন্ত বহে।
কিন্তু আমরা শুনিয়াছি যে ই-গুপ্তে ওড
নামে এক ব্যক্তি মাতক জয় মৌলি বোকা
তাতি সহঅনেক বহিতে পারে। মোং
বজরাতে মুটিয়া একলা এক লিগা মদিরা

সমস্ত লীখে ওঠাইয়া লইয়া যায়। এবং
অন্য বনের কর্ম্ম এক জন সাহেবকে
দেখিয়াছি সে পুণ্ডি মাতক চাচি মৌলি
কামান গাভীই হইতে ওঠাইয়া লয়।

এলাঙা।

এলাঙারোগ অনেক স্থানে অনেক
ক্ষতি করিয়া খিরতেছেন কিন্তু মোং
শ্রীরাযপুরে গত রবিবারে তাঁহার এই
এক আশ্চর্য্য ক্ষতি। সমস্ত বৎসর ব
রক্ষা এক তাঁতীর কলার পুঙ্ক রাখিতে বি
বাহ হইয়াছিল পর দিন পুঙ্কটকাল ঐ
কলাকে পাঠানের ওযোগ হইতেছিল
অন্য স্ত্রীলোকেরা ব্যবহারানুসারে বর
কলা একত্র করিয়া বরন করিল পরে পান
কাঁতে আত্মাহন করিতে যাইবে ইতার
কালে এলাঙা রোগ ঐ কলাকে ধরিল।
ঐ কলা কহিল যে আমি একবার বহি
দেখিঁ যাইব। পরে একবার তাহার ও
বুজ হইয়াতেই নাড়ীর ওপলি হইল
না। অনন্তর ঘণেক পরে তাহার পুঙ্ক
ঢাণ হইল। এলাঙা রোগ ঐ কলাকে
কহিলার মত হরন করিল সে বরশিষ্ট
পালের মত হত্যা হইয়া খিরিয়া গেল।

এবং এই কণ গত সমস্তেই মোং কলি
কাঁতে এক বুদ্ধি ন বালকের যজ্ঞপত্রী
ত হইয়া দণ্ড কমপু লইয়া ঘরে যাইবে
ইতোমধ্যে ঐ অশিবাধি রোগগুপ্ত হইয়া
সে বুদ্ধি ন বালক লোকান্তরগত হইল।
ইত্যাদি পুঙ্ক এলাঙা অনেক স্থানে
খেলিতেছেন।

এলাঙা রোগ কলিকাতার এই
ভাগ্যবান লোক করিয়াছেন। বাবু সূর্য্য
কুমার ঠাকুর ও বাবু মোহানীমোহন ঠাকু
র ও কোম্পানির প্রেসবির মাঝারি ও
দ্বাঃ কন ও কলিকাতার এককোণ্ড ঘরের
কর্ম্মকারী শিবচন্দ্র বন্দ্য। এবং ই-গুপ্ত
য় মাত জন সাহেব মরিয়াছেন।

সমীচীর দর্পণ।

যেহা কলিকাতার পুলিশের রিপোর্ট
চারি আনা যায় যে সেখানে পূর্বেই হইতে
একাত্তর গোঁড়ের কিঞ্চিৎ স্থান হইয়াছে।

| তারিখ | হিন্দু | মুসলমান |
|-----------|--------|---------|
| ১৫ এপ্রিল | ১১ | ১ |
| ১৬ রোজ | ১৭ | ৩ |
| ১৭ রোজ | ১৭ | ৬ |
| ১৮ রোজ | ১৬ | ১১ |
| ১৯ রোজ | ৩৪ | ৯ |
| ২০ রোজ | ১৯ | ৯ |
| ২১ রোজ | ১৯ | ৩ |

একুশ
১৮৪

বৈটল।

বৈটল শহরের নিকটবর্তী পরগুনি নামে
স্থান বৎসর, এক মেলা হইয়া থাকে
সেই মেলাতে লোকেরা স্বাভাবিক
পর্বেই হইত পড়িয়া পুনঃপাণি নগরে ইহা
পূর্বে জানান চিয়াছে। সেখানকার
সমীচীর আনিয়াছে যে সেই মেলাতে
এই বৎসর দুই শ্রী লোক মরিবার কারণ
আনিয়াছিল।

তাঁহার এক শ্রী গড় গোয়ালিয়ের পূর্বে
পহইতে আনিয়াছিল। সেই শ্রী তিন
বৎসর পূর্বে অর্থাৎ এক লোকের সহিত
আপন বিবাহের সম্বন্ধ করিয়াছিল এবং
সেই ব্যক্তি বিবাহার্থে যেদিন তাহার
নিকট গড় গোয়ালিয়েরে আইল সেই
দিন ঐ পুঁজ মরিল। পরে স্বীর আঁড়ি
কুটুম্বারা তাহাকে কহিল যে বাহার সহিত
তোমার সম্বন্ধ নির্ণয় হইয়াছিল সে
জাতি এখন মরিয়াছে অতএব তুমিও
না মরিলে অপবিত্রা হইয়া থাকিবা সেই
যেতুক তোমার মরন কর্তব্য। ইহাতে

ঐ শ্রী স্বীকার করিয়াছিল যে আমি বৈ
টল মোকামে পরগুনি জীর্থে পুনঃপাণি
করিব।

সেই কারণ ঐ শ্রী সেখানে মরিতে
আনিয়াছিল পরে অনেক লোক মরিবার
কারণ বুঝি অস্বাভাবিক লাগিল কিন্তু ইং
লণ্ডারের মের ওকাল শ্রীযুক্ত মঞ্চগায়ের
নাহেব সেখানে আসিলে তিনি সে স্বীকে
অনেক প্রকার প্রবোধ দিলেন ও স্বীকার
করিলেন যে তুমি যদি এই প্রকারে না
যর তবে যাবজ্জীবন অন্ন বস্ত্রের কারণ
টাকা গড় গোয়ালিয়েরে বহাও করিয়া
দিব তুমি কখনও দুঃখ পাইবা না। তা
হাতে সে স্বী স্বীকৃতি হইয়া পুনর্বার তা
পন স্থান গোয়ালিয়েরে গেল ও নাহেব
তাহার বৃত্তি নিরূপণ করিয়া দিলেন।

আর এক বৃদ্ধা স্বীকে তাহার আঁড়ি
ভরন পোষণ করিবার ভয়ে সেখানে যার
বার কারণ আনিয়াছিল এবং তনেক
বৃত্ত লওয়াইয়াছিল কিন্তু ঐ নাহেব এই
সকল সম্বন্ধ পাইয়া ঐ বৃদ্ধা স্বীকে কহি
লেন যে যদি তোমার আঁড়ি তোমার
ভরন পোষণ করিতে না চাহে তবে তা
মার ভরন পোষণার্থে কে স্থানি যান তা
মাঝে টাকা দিলেন কহাৎ তুমি মরিও
না। ইহা কহিয়া ঐ স্বীকে রক্ষা করিয়া
মান্য তাহার শরতের কারণ টাকা দি
তেছেন।

বৈটল পমর্দাদি মন্ডর বন হইয়াছে
পূর্বে যে ঢালু টাকায় পাঁচ জয় শের বিক
য় হইত তাহা এখন টাকায় আঠার শের
বিক্রয় হইতেছে এবং যে গোয় টাকায়
মাত আট শের বিক্রয় হইত এবং কখন
নাওয়া ঘাইত না মনুত সে টাকায় আ
টার শের পাওয়া ঘাইতেছে। এবং
আট টাকায় বোল শের বিক্রয় হয় ও
অন্য দুই মকলি মূল্য আছে।

এবং তৎ প্রদর্শনে গোঁড়জাতিরা পূ
র্বার পুজারের ওপরে দোরাক্য করি
তেছে। কতক দিন পূর্বে লেডেনহ
মার্জেড নাহেব মোং যোলতাইহই
তে কতক দিন লইয়া তাহারের পাঁচ
নাথে গিয়াছিল সে সময়ে তাহার
দের দুই শত লোক সেই অঞ্চলে লুট ক
রিতে আনিয়াছিল কিন্তু তাহারা এই মা
হেবের সম্বন্ধ পাইয়া নাহেবের ওপরে
পলাইল।

ভূমিকল্প।

কত দেশে ১৪ মার্চ দিনে দুই পুর্ষ দুই
টার সময়ে আঁড়িয়ারের ভূমিকল্প হই
য়াছিল। সে সময়ে সেখানকার তাবৎ
লোক আঁপন ঘর জাতিয়া পলাইয়াছিল
এবং তাহারা এখন মনে করিয়াছিল যে
১৩ জুন তারিখ পুনর্বার আনিয়াছে।
১৮ জানুয়ারি তারিখ অবধি ক্ষুদ্র ভূমি
বল্ল পুর্নিমা ও অমাবাস্যার ঘোণে পূর্ণ
সেখানে হইতেছে তাহাতে লোকেরা
পূর্ণমা ও অমাবাস্যার ঘোষ কহে। সেই
ভূমিকল্পে ক্ষুদ্র দুই এক খান ঘর পড়
য়াছিল কিন্তু অতিশু ওপদ্রব জন্মাই নাই
তৎপ্রদর্শনে তুলুপি জতাজ দুর্ঘা তা
হাতে সেখানকার রাকার এমত আঁড়া
হইয়াছে যে সেখানহইতে এক দানাও
তুলুপি বাহির হইবে না।

ইংলণ্ড দেশের বাদশাহ।

ইংলণ্ড দেশের বাদশাহ এখন একাশী
বৎসর বয়স হইয়া আসিল এবং তা
হার যে পুত্রি ব্যতীত ছিল তাহা ওস্তুর
স্তর ওপশম হইতেছে তাহাতে লোকেরা
আশঙ্কা করিতেছে যেহেতু ঐ শীর্ষা
যুক্ত লোকেরদের শেখ কাল ওপশিত হ
ইলে আন জন্মে।

সমাচার দপণ।

সুস্থি।

সিদ্ধান্তিরা পশ্চাদ্ গেল যে মোক্ষ যন্ত্রাস
জ্ঞান অধিক ভুতর আশ্রয়ী পর্যন্ত গত
সিদ্ধান্তে অতিসুস্থি হইয়াছে এবং
মহোদী হুই হইতেছে ও কৃষ্ণ নন্দ সুন্দর
চলিতেছে কিন্তু এত পুণ্যে বিস্ম
পাত্ত হয় না।

আত্মরাত্রি ২৫ মার্চ।

দশ দিন হইল নাগপুরের রাজার
এক সেবাশ্রিত শ্রীযুত জেজর সাহেব
শ্রীত জন মিষ্টিয়াহীরা নগর করিয়া
নাগপুরে ঘাইতেছিলেন ইতোমধ্যে
নিজারদের সহকারী শেখ দুলা ঘটি
অন যোদ্ধা যোদ্ধারদের সম্মুখে তাঁহার
গুণের আশ্রয় করিল তৎক্ষণাৎ সাহেব
এক আশ্রয় তোলে গেলেন ও সেখানে
উভয় পক্ষের যুদ্ধ আরম্ভ হইল তাহাতে
জেজর সাহেবের এক লোক মূল হইল
এবং সাহেবের ঘোড়া লইয়া সেখ দুলা
পলাইল এবং সেখ দুলা রাত জনয়ার
পড়িল ও অনেক লোক আঘাত হইল।

আমারোত্তী শহর।

কতক মান হইল মোক্ষ আমারোত্তী
তে কান্তীন ভেদিত সাহেবের ঘোড়ার
রেজের মধ্যে দুই জন মিষ্টিয়াহীরা স্থানে
এক জন বাগিয়া তিন পত টোকা কর্ত
লইল ও এই কর্ত করিল যে এই তিন
পত টোকা তোমারদের পরিজনেরদের
নিকটে দিয়া তিন মাসের মধ্যে রসিদ
আদিয়া দিব নতুবা তিন মাসের মধ্যে
টোকা দিয়া দিব। এই কর্তের মত

লিখিয়া দিল। অনন্তর মাত্রে চারি মাস
গত হইলে এই দুই মিষ্টিয়াহীরা সে বাগিয়া
স্থানে টোকা দিয়া রসিদ তুলন করিল।
তাহাতে সে বাগিয়া অনেক আশ্রয়
করিয়া যুরাইল। এই মিষ্টিয়াহীরা তাহাকে
অতিশয় কণে ধরিলে সে বাগিয়া আপ
নারদের মধ্যে বিনবান এক জন বিন
রাজ নামে বাগিয়াকে আমিন দিল।

এ বিনরাজ মিষ্টিয়াহীরা একে ইমকুইয়া
কহিল যে যদি এই রসিদ না আইমান্য
ত পুতীকা না করি তব তোরদিগকে
অসমুদ্র করিব। সে মিষ্টিয়াহীরা তাহা
না মানিলে এই বিনরাজ আপন চাকর
হারা তাহারদিগকে জুতা মারিল। পরে
এই বিষয় কান্তীন শের সাহেবের নিকটে
সমাচার পৌছিয়া মাত্র তিনি আশ্রয় করি
লেন যে সেই বিনরাজকে শহরের মধ্যে
পুশান স্থানে বাগিয়া এই দুই মিষ্টিয়াহীরা জুতা
মারুক। পরে এই মিষ্টিয়াহীরা এই আশ্রয়
সাধে সেই বাগিয়াকে আরো শত্রু করণ
সেই মত পুহার করিল। এই শাসনেতে
সেখানে এমত শাসন হইল যে তাহা
বাগিয়া বহাদুর আপন হার বন্ধ করিল।
তাহাতে বিনরাজের এমত অসমুদ্র
হইল যে এই সমাচার আত্মরাত্রি
এক বাগিয়া পাইয়া এই বিনরাজের চক্ষিণ
হাজার টোকার তিন মাসের করিল না
কিন্তু সেখানে বিনরাজের এক জন বন্ধু
জিল সে তিন মাসের করিল। বিনরাজ
পুর্বে এই মিষ্টিয়াহীরা একে দশ হাজার
টোকা দিতে কহুল করিয়াছিল তথাপি
তাহার শাস্তি বারন হইল না।

বাজার তাল।

| বিশিষ্ট | মোট | অবধি | পারস |
|--------------|-----|------|------|
| মুগার | ১০ | ৩০ | ৩০ |
| কোরকা তেল | ১০ | ২৫ | ২৫ |
| গাছ রসিদ | ১ | ২০ | ২০ |
| নারিকেল তেল | ১ | ২০ | ২০ |
| কুলা কাহোলা | ১ | ২২ | ২২ |
| আধা রসপূর | ১ | ২০ | ২০ |
| পাটমাকি আধা | ১ | ২ | ২০ |
| চাল পাটমাকি | ১ | ৩০ | ৩০ |
| পাছড়ি উত্তম | ১ | ২৫ | ২৫ |
| পাছড়ি মধ্যম | ১ | ২০ | ২০ |
| মুগা উত্তম | ১ | ২ | ২ |
| মুগা মধ্যম | ১ | ২০ | ২০ |
| বালার | ১ | ২৫ | ২৫ |
| মুগা পান | ১ | ২০ | ২০ |
| পাটমাকি হুট | ১ | ২০ | ২০ |
| অবধি তালি | ১ | ২৫ | ২৫ |
| উত্তমগার হুট | ১ | ২৫ | ২৫ |
| মধ্যম হুট | ১ | ২৫ | ২৫ |
| তৈলা হুট | ১ | ২৫ | ২৫ |
| মধ্যম তৈলা | ১ | ২৫ | ২৫ |
| নীল উত্তম | ১ | ২৫ | ২৫ |
| অবধি পুকার | ১ | ২৫ | ২৫ |
| নীল | ১ | ২৫ | ২৫ |
| সোরা উত্তম | ১ | ২৫ | ২৫ |
| মধ্যম | ১ | ২৫ | ২৫ |
| চিলি কাপরি | ১ | ২৫ | ২৫ |
| মধ্যম | ১ | ২৫ | ২৫ |
| ধার চিলি | ১ | ২৫ | ২৫ |
| তেতুল | ১ | ২৫ | ২৫ |
| তামাক | ১ | ২৫ | ২৫ |
| চন্দা | ১ | ২৫ | ২৫ |

এই সমাচার বর্ণন শ্রীরামপুরের ছাপাখানাতে পুসিকভাবে পনিবারে ছাপা হয়। বাহার দপণের আবশ্যক হয় তিনি শ্রীরামপুরের ছাপাখানাতে
আপন নাম পাঠানলে সম্বোধন করণ তাহার নিকটে পাঠান যাইবেক তাহার মূল্য মাসে এক টাকা দ্বি বাছুর করিয়াছেন যদি তাহার দি
কারণ না পড়ে তবে তিনি শ্রীরামপুরের ছাপাখানাতে সমাচার বিবরণ তাহার নিকটে পাঠান যাইবেক।

সমাচার দর্পণ

১০৩ সংখ্যা।

পরিবার।

৩ মে সন ১৮৭০।

১৫ ইশাখ সন ১২৭১।

দর্পণে মুখ সৌন্দর্যের কার্যবিবরণ।

বৃত্তান্তনিহ্ন আলঙ্কার সমাচার দর্পণে ॥

কোম্পানির কার্য।

কোম্পানির শতকরা জয় টাকার মূলের কার্য। কয় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা বার আনা প্রিমিয়াম। বিকয় করি হইলে শতকরা দুই টাকা চারি আনা প্রিমিয়াম।

সম্ভারের পঞ্জিকা।

| | | |
|------|--------|---------|
| ৬ মে | পরিবার | ১৫ ইশাখ |
| ৭ ৬ | পরিবার | ১৬ ৬ |
| ৮ ৬ | পরিবার | ১৭ ৬ |
| ৯ ৬ | পরিবার | ১৮ ৬ |
| ১০ ৬ | পরিবার | ১৯ ৬ |
| ১১ ৬ | পরিবার | ২০ ৬ |
| ১২ ৬ | পরিবার | ২১ ৬ |

সমাচার দর্পণ।

নতুন পুস্তক।

কতক দিন হইল ইংগ্রেসে শ্রীযুত ব্রুকিংস সাহেব মহাভারতের অন্তর্গত নল ধর্ম্যস্তর উপাখ্যান এক দিকে নাগর অক্ষরে সংস্কৃত অন্য দিকে লাতীন ভাষা তত্ত্বা করিয়া গ্রন্থ রূপে করিয়াছেন সেই গ্রন্থ জেলদরজ হইয়া এই দেশে আসি য়াছে। যে সাহেব এই গ্রন্থ পুস্তক করিয়া জেন জিন হিন্দুস্থানে কখনও আইসেন নাই কেবল সেখানে তাহার সংস্কৃত বিদ্যোভাস হইয়াছে ইহাতে অতিশয়

আশ্চর্য্য বোধ হয় যেহেতুক হিন্দুস্থানে সংস্কৃত বিদ্যা যেমন ডেমন ইণ্ডোনে লাতীন বিদ্যা ই সাহেবের এই দুই কঠিন বিদ্যাতে সমান কৃষ্ণপ্তি অন্নিয়াছে।

রত্নপুখানা।

রত্নপুস্তকের দেশ সময়ে ওস্তম হইতে সে খোমানকার পুস্তারদের পুতি ইংল প্রায়েরদের যে য়ে তাহা প্রায় এতদে শীঘ্র লোক বুঝিতে পারে না যেহেতুক সে দেশে শূণ্য ওঙ্কিত হইয়াছিল এমন কোম্পানি বাহাদুরের অধিকার হওয়াতে ও পিতারিদের বিলাপ হওয়াতে ওস্তরা ওর সত্ত্ব হইতেছে। তদে শীঘ্র মুখি পুস্তারা যে কোম্পানির মুখি গান করিতেছে সে খোমানস্টাই নহে কিন্তু সে যথার্থ। সংপুতি খোমানকার পুস্তারা অকুতায় হইয়া যাতে ও ওরলে স্বল্পে কৃষিপুস্তক করিয়া পরমসুখে কালক্ষেপণ করিতেছে। মোং ওয়পুস্তরও সেই কন। খোমানকার পুস্তারিহিকে যদি জিজ্ঞাসা করা যায় যে তোমরা সাহায্য পুস্তা তবে তাহারা ওস্তর করে যে আমরা শ্রীযুত ওয় সাহেবের পুস্তা। যেহেতুক ই সাহেব ওয়পুস্তর অধিক।

চান্দা শহর।

১৫ মার্চ তারিখে মোং চান্দা শহরে এক বায়ু সকল লোককে ভয় দেখাইল। সে শহরে পুবেশ করিবার অণু নয় জনকে আঘাত করিয়াছিল ও শহরের মধ্যে পুবিষ্ট হইয়া এক কালকে মারি

য়া জেলিল ও আর পাঁচ জনকে আঘাত করিল। পরে শহরের অনেক লোক তা হাকে তাড়াইলে সে অস্ত্র বায়ু এক বুদ্ধের বাড়িতে ত্রিটি হইল কিন্তু জাগো বুদ্ধের সে সময়ে ঘরে ছিল না নতুবা বায়ু মূদের আঙিনা লইয়া ঘাইত। পরে বায়ু বুদ্ধের বাড়ীর এক ঘরেতে লুকাইয়া রহিলে দুই দিন সাহেব লোক খোমানের গিয়া ই ঘরের দেওয়ানে জিমু করিয়া তাহা দিয়া গুলি মারিয়া সে বায়ু কে নষ্ট করিলেন। সে মৃত বায়ু ওজন করিয়া দেখা গেল যে তাহার শরীর দুই মৌল চারি শের সে লম্বা হয় হাত।

চুরি।

কতক দিন হইল শ্রীযুত পায়র কোম্পানির গদামে এক আশ্চর্য্য পুস্তার চুরি হইয়াছে। ই গদামে এক দিন দুই চারি লোক আসিয়া আপনাদের চাহি দিয়া ই গদামে খুলিল তখন অন্য লোকেরা বোধ করিল যে কৃষি সাহেবের চাকর লোকেরা গদামে খুলিতেছে। পরে তা হারা ই গদামে খুলিয়া দুই লিপি খেদের সন্ধান বাহির করিয়া মুটে চাকিয়া তাহার ঘের মস্তক ওঠাইয়া দিয়া স্বল্পে ঘাই তে লাগিল। অন্যর পায় তাহারা বিরা পড়িল।

লোকা ভুরি।

গত শুক্রবার এক গদামার লোকা মোং কলিকাতা হইতে অনেক লোক বোকাই করিয়া পর হইতেছিল ইতোমধ্যে হঠাৎ

সমাচার দর্পণ।

কারে মহাব্রত আনিয়া একবার ঐ শো কা ওলটাইয়া খেলিল। সে নোকাতে যত লোক ছিল তাহার প্রায় সকল মরি য়াছে।

লেটেরা।

পাঁচ জয় জন কোল্লানির মিয়ারী এখা নে পল্লনে বিহায় হইয়া কোল্লানির বাক্সা হাঙ্গা হিয়া পল্লনে বেগে আপনং বাটী যাইতেছিল তাহারদের সহিত একা বোকা ছিল একিহা অর্থাৎ ছিল। পথে মোং রাজবলহাটের নিকটবর্তী রাণা বাজ নামে স্থানে তাহারদের এক সিন্ধ হী বাহাণীভাষুক্র অপ্রণামী হইয়া আনিয়া আপন বোকা ও আরং আন বাব কহিহু দুই রাধিয়া এক পুলের লীতে বহির্দেগে বসিল। ইতারকালে চারি জন লেটেরা আনিয়া পুলের ওপরে থাকা হইয়া ওপরাহইতে সে মিয়ারীকে তরবাল মারিল তাহাতে সে ও-ফলং ময়িল পরে পল্লনাগামি মিয়ারী তর বাল ওঠাইবার কালে তাহার অণুভাগ দে খিবায়াত্র দৌড়িয়া আনিয়া দেখিল যে মিয়ারী বাটা গিয়াছে এবং জিনিস পত্র লেটেরার লইতেছে। এই সময়ে তাহা রা তিন জন লেটেরাকে ধরিল এক জন পলাইল পরে গুমে থানাদারের নিবটে দাখিল করিয়া দিল ও-ফলং তাহার। সন্দের চালান হইল।

এই কণ দমুভয় পল্লনে অষ্টল অখিক হইয়াছে যেরূপ এইকণ অনেক সমাচার পাওয়া যাইতেছে।

শেখদুল্লা।

শেখ দুলা মহাখাত লুটেরা সে এখন নার গুম্বুস্তি লুট না করিয়া কেবল পথিক লোকদেরের প্রতি ঘোরাক্ষ প্রকাশ

করিতেছে ও-পুত্র সে আপন বিপক্ষের ঘরে ভয়ে সন্ধ্যা পলায়ন করে। সে পুর্বে ইলিচপুরের নবাবের নিকটে বোত সোয়ারের আফ্রাতে নিযুক্ত ছিল। পরে কোন কৌশলক্রমে তাহার চাকরি ত্যাগ করিয়া হুমুস্তি করিতে আরম্ভ করিয়াছিল প্রায় দুশ বার ব-সরপর্যন্ত বিরটি দেশে থাকিয়া এই দুকর্ম নির্ভর কাণ করিত।

ঐ শেখের নিম্নিত বসতি স্থান নাই বর্ষাকালে জালপীর দক্ষিণে পাছতে ই লিচপুরের নবাবের এক কিল্লাতে থাকিত সে স্থানে থাকিয়া বিরটি দেশে লুট করি য়া পুনর্বার সেইখানে যাইত।

তাহাকে ধরবার কারণ অনেক সৈন্য পাঠান গিয়াছিল কিন্তু ঐ সৈন্যেরা ১৯ মার্চপর্যন্ত এক স্থানে ছিল। পরে তাহার পলায়ন সমাচার আইলে লেফেণ্টান্ট ডর নর সাহেব কতক বোতসোয়ার ও ব্রিগ জন মিয়ারী লইয়া এগার ফোশপর্যন্ত তাহার পক্ষাৎ দৌড়িলেন শেষে দেখি লেন যে অনেক লোক তাহার সহিত যি লিয়াছে ও-পুত্র তরুর সাহেব দফা দার মেজর ও চব্বিশ বোতসোয়ারকে আ পন পক্ষাতে আনিতে আঁকা করিলেন। এই অভিস্কু সৈন্য লইয়া পরের ওপরে কোশপুত্র হইয়া পৌনের বেশ ভূয়ন ক রিয়া পরে ১০ মার্চ দিনে দুই নুহর দুই ঘ ণ্ডার সময়ে তাহারদের সহিত সাক্ষাৎ হইলে শেখের পক্ষীয় চব্বিশ জন লোক মুন ও আঘাতী হইল। পরে ঐ সাহেব তাহারদের বোকা ও যুদ্ধসম্পত্তি ও আরং সত্ত্বিত যুদ্ধে পাইলেন। শেষ এই যুদ্ধে আপন পায়ে আঘাত পাইয়া বার জন শো ক মরে করিয়া পলায়ন করিল। পুর্ব তাহার মরে বীরত্বিন মিয়ারী ও আট

চব্বিশ জন বোতসোয়ার ছিল। তাহার সন্ধান করিতে আসিরাগড় ও হিম্মাণ্য বাহ ও মাদ্দরাজ ও বোহাইহইতে অ নেক সৈন্য পাঠান গিয়াছে। অশ্রুযুক্ত বত সাহেব এই আঁকা প্রকাশ করিয়াছে ন যে ঐ শেখদুল্লাকে যে করিয়া আনিতে পারে কিম্বা তাহার বিধয় তথা সমাচার দেয় তাহাকে মরকারহইতে পাঁচ হাজার টাকা বখশিশ দেওয়া যাইবেক।

পুনর্বার শেখদুল্লার এই সমাচার আই ল যে সে একাকী এক চাকর ও তাহার সহিত নাই এক বনহইতে অন্য বনে পন্থক পলাইয়া যাইতেছে এক বোকা ও তাহার নাই। তাহার জামাতা ও তা হার সঙ্গি সকল লোক আপনানাই আ নিয়া ই-গুণ্ডায়েরদের হাতে বিরা দিয়া ছে।

ওলাঙরা।

ওলাঙরা রোণ এডমন্স কতক পরা ক্রম সম্বরণ করিয়াছে যেহেতুক তাহার ঘেরে ঐ দুজয় রোণ হইতেছে তাহার ঘের মধ্যে অনেক রক্ষা পাইতেছে কিন্তু সমাচার পাওয়া গেল যে মোং ঘোশাহর পুর্বেশে তাহার পরাক্রম অতিশয়। সেখা নে কোন গুম্বা ঐ রোণে গুরুত্ব হই য়াছে তাহাতে মুসলমান লোক মারিল লোকভবিষ্যুক্র তাহারদের গৌর হওয়া তার এবং হিন্দুলোকের গুম্বা স-কার হয় ন। একবার নাগে একবার ওঠে ইহা তেই নাকি বনিয়া গিয়া ফলক কাল পর মরে।

ই-গুণ্ডা ঘেরের বাহাণী।

কলা মোং কলিকাতাতে বোম্বাইহই তে সমাচার পাইবল যে সেখানে ই-গুণ্ড হইতে মুনকী পথে ৭ জানুআরি তারি

সমাচার দর্পণ।

যের সমাচার আনিয়াছে যে শিশুশ্রমিত ইংলণ্ডের বাদশাহ একেবারে ভাল হই য়াছেন এবং বাদশাহের যে পুত্র বাদশাহ বের শ্বহরদ্বারিতে নিযুক্ত ছিলেন তিনি বাদশাহের পাঁজা শাঙি দেখিয়া সে কথ্য ভাণি করিয়াছেন।

হরিহারের মেলা।

মহারিদুর মঙ্গলকান্দির দিবসে যোগে হরিহারের গির্জাবাসী হানে বৎসর আতি বড় মেলা হইয়া থাকে ও অনেক দেশ হইতে যাত্রিকেরা আসিয়া মূল্যদি করে মঙ্গলকান্দি মহারিদুর মঙ্গলকান্দি পূর্বে গিল করে গাণিয়া কহিয়াছিল যে এইহার মেলাতে লোকেরদের অনেক কষ্ট ও এলাঙার ভয় হইবেক। ইহাতেও যাত্রি করে ভীত না হইয়া অনেক মেলালে গিয়াছিল। এবং এমত জনরব হইয়া জিল যে বেগম সম্বন্ধ ও শ্রুতিও রক্তিশি-ব বাদশাহের মেলাতে আসিবেন কিন্তু তাহারাই কেহই আসেন নাই। অনেক বৈরাগী ও নগণ লোক আনিয়াছিল মেলালে গিলার ঘাট অতম-কর্ণ মাং হাত চোড়া অতএব মেলালে অনেক মনঃ সী ও বৈরাগী লোকেরা আসি মূল্য করিবার কারণ পররর টোনাটলি করিল তাহাতে লোকের চাঞ্চালি হওয়াতে দিনে দুই পুহর তিনটার সময়ে চারি শত ত্রিশ লোক চাঞ্চা পড়িয়াছিল তাহার মধ্যে আধিক ভাগ বৈরাগী ও মনঃসী এবং তাহার মধ্যে গৌরবান্বিতের চারি মি ষাধী জিল তাহার তিন জন মরিয়াছে। ইহার মধ্যে আশ্চর্য এই যে সেই সকল লোকের নীচে এক ঘরতি স্বী চাঞ্চা পড়িয়া ছিল সে রক্ষা পাইয়াছে। পরে চাঞ্চা পাঁজা লোকের মধ্যে মিলাহারি গিয়া চারি শত ত্রিশ জনের মধ্যে ত্রিশ জন

মাত্র জীবৎ পাইল ও আর সকল নিভাঙ মরিয়াছে দেখিল। এবং এক মহন্ত আঁপনার অনেক শিষ্যের সহিত মরিয়া ভাসিয়া ঘাইডেজিল তাহাতে বাকিহ লোকেরা তাহারদিকে ডাইয়া তাহার ঘের অন্তর্ভুক্তি ফিয়া করাইল।

হরিহারের মেলাতে মহমরনা।

হরিহারের মেলায় মেলালে এক স্বী লোক মহমরনা করিয়াছে। যোগে হরিহারের যে অধিকারি দুই হাজার ব্রাহ্মণ আছে তাহারদের এক জন ঐ স্বীকে বহরিকান্দুয়ইতে আনিয়া আঁপনার ওপক্কা করিয়া ঘরে রাখিয়াছিল সে তাহার বিবাহিতা স্বী নহে। ঐ অধিকারি ব্রাহ্মণ মরিবার পূর্বে ঐ স্বীর ভরন পোষ ধারি আটটার হাজার টাকা রাখিয়া দুই শত টাকামাত্র বিতরণ করিয়া মরিয়াছিল। অনেক ঐ ব্রাহ্মণের জুতাপুত্র ভাইল যে যদি এই স্বী না মরে তবে ঐ টাকা এই ভাণি করবে। ইহা ভাবিয়া অতি কুইমেরদের সহিত পরামর্শ করিয়া ঐ স্বীর মহমরনা বিষয়ে পুণ্ডিত জমাইল এবং সেও ঐ ওপক্কা সহিত মহমরনা করিল কিন্তু মেলায়কার অনেক শিষ্য লোক ই হাতে অসম্মত যেহেতুক সে বিবাহিতা নহে মহমরনা তাহার অধিকার শাঙ্ক সিদ্ধ নহে এই নিমিত্ত ঐ মহমরনা বার ধারি মেলায়কার শিষ্য লোকেরা এক ইংলণ্ডীয় সাহেবকে যত্নপূর্বক আঁপনার ঘের মধ্যে বহিয়া গিল পাঠ করিয়া লইয়াছিল কিন্তু সাহেব ঘাইতেই সে চিতাতে মর্যো হইয়াছে। ইহাতে মেলা নে লোকেরা আশ্চর্য বোধ করিল যে ঐ মহমরনের পূর্বে ঐ মেলা দুই দিন মস্তাহরণান্ত হইতেছিল, কিন্তু তখন কোন ওপক্কা হয় নাই। যে দিন ঐ

স্বী মহমরনা হইল সেই দিন সেই স্থানে অট্টালিকায়া অনেক ব্রাহ্মণ কন্যা মরিল এবং দুই দিন লোক বোকাই লোক ভবিয়া মরিল এবং অত্যন্ত শিলাবৃষ্টি হইল।

হরিহারের মেলাতে ঘণ্টা বাজান।

হরিহারের এক বৃন্দে ঘের মন্দির আছে সেই মন্দিরে কুণাল এক মহাঘণ্টা থাকে তাহাতে যাত্রিক লোকেরা আস করে যে এই ঘণ্টা না বাজাইলে কিয় নিক হুয় না। ওপক্কা অনেক লোকেরদের বাজানতে সেই ঘণ্টার নাদ গত বৎসর জিৎখা পড়িয়াছিল তাহাতে অধিকারি ব্রাহ্মণেরদের এই বৎসর এক জন সেই ঘণ্টার দতি বৈদ্যা বসিয়াছে এবং এই পু তন নিয়ম করিয়াছে যে একবার যে ব্যক্তি ঘণ্টা বাজাইবে সে এক গয়না দিবে। ইহাতে মহমরনা পরমা পুত্ৰদিন তাহার ঘের লাভ হইয়াছে। এবং যে যাত্রিক কৃপণ স্বভাব অততো সেই ঘণ্টার দতি স্বর্ণ করে ও কহে যে রাজাকে দান পূজা কে আনন।

মেলায়কার চমৎকার এই দেখা গিল যে শিলাবৃষ্টি হইলে সে শিলা গিলাজলে ভাসিতে লাগিল। মেলালে এই মেলা তে অনুমান বিশ লক্ষ লোক এই বৎসর জমা হইয়াছিল। ওপক্কা ইন্সাম শজ্জত বারনের কারন কোল্লানি অনেক মিলাই মেলালে পাঠাইয়াছিলেন। পরে তাহারদের মধ্যে এলাঙা রোগ পুরেণ করিল তাহাতে অনেক মিলাই মারা পড়িল সে কারন কোল্লানি মিলাইহারদি গকে স্বস্থস্থানে শিশু বিদ্যা করিলেন তা হাতে শিশু মেলা ভাঙ্গিল।

বাকি।

তলা। এই দেশের খরচের কারন

সমাচার দর্পণ।

গত সপ্তাহে অনেক তুলা খরিদ করা গিয়াছে এবং তাহার দাম কিছু অধিক হইয়াছে যেহেতু গারি শত গাঁইট ও লা পচিশ টাকা মোল বিক্রয় হইয়াছে।

কাপড়ের দাম কমো নাই কিন্তু তাহার বাজার মন্দা।

নীল বাজারে কম আছে কিন্তু যে আছে তাহার দাম সম্যক কিঞ্চিৎ অধিক হইতেছে।

রেশম বাজারে অতি কম ওখালি তাহার দাম নিত্যা কমিতেছে।

পাণাল রাজ্য।

যাহার পরাক্রম অধিক থাকে সে লোকের অহভুত বায়ু প্রায় ওপহিত হয়। লোকে তাহাকে পাণাল বলে কিন্তু সে পরাক্রমের পাণাল্যমি।

এক শত বৎসর গত হইল পুণিয়া দেশের এক রাজা এমন পাণাল ছিল যে তাহার তুলা দুর্লভ। সে রাজা কখনও ঘৃণ করিত না ওখালি সত্তরি হাজার সৈন্য পুস্তত রাখিত এবং প্রাণ্ডকাল অহবি সজ্জাপর্যন্ত তাহার সৈন্যের ডায়রক বিনা আর কোন কর্ম ছিল না। এবং তাহার এমন বায়ু ওপহিত হইল যে পৌনে পাঁচ হাত লম্বা লোক সমুদ্র করিয়া এক হাজার সিপাহী পুস্তত করে তাহাতে আপনাদের দেশের সর্বত্র যেখানে যত লম্বা লোক পাইল তাহারিগণকে আনিয়া সিংহাসী কর্মাশিাইল এবং আপন দেশে সেই জন লোক ঘুরাইলে অন্য দেশ হইতে সেই জন লম্বা লোক

দিনে দেখিয়া দ্বির করিয়া রাতিযোগে দ্বির করিয়া আনিতে লাগিল। এবং যদি কোন লম্বা স্বীকে দেখিত ওখালি তাহাকে আপন সৈন্যের জাউনিতে পাঠাইত ও লম্বা সন্তান ও পুত্র হইবার জন্য জোর করিয়া কোন সিংহাসীর সহিত বিবাহ দিত। সে রাজা যখন মরিল ওখাল আপন পুত্রকে তৎকাল অন্য রাজকীয় কর্ম বিষয়ে কিছু না করিয়া কেবল এই করিল যে হে পুত্র সার্ববীন দেখিও এই লম্বা সৈন্য কোন পুরুষের জিম ভিন্ন না হয় বরং তুমি ইহা হইতে অধিক করিবার চেষ্টা করিবা নুল না হয়। সে রাজা লম্বা সিংহাসীতে এমন পুত্র ছিল যে আপন মরল কালেও আপন ঘরের নীচে সিংহাসীরিগণকে আনিয়া সিংহাসী দেখিত। যখন আসন হইতে ওঠিত না পারিত ওখালও আসনে শয়ন করিয়া সিংহাসীরদের কাঁচা দেখিত। সে রাজা আপন ভোজ নাহিসনে আপন স্ত্রী ও সন্তানদিগকে লইয়া গৃহীকালে দুই পুত্র বেলার সময়ে জাতের ওপরে শয়ন করিত ও আপন পরিকলনেরিগণকে নিম্না ঘাইতে আজ্ঞা করিত। এবং সে এক দিন আন ইচ্ছাতে আপন গলাতে রস্নী দিয়া মরিতে ওদ্যে হইয়াছিল কিন্তু তাহার স্ত্রী এই সন্তান পাইয়া তৎক্ষণাৎ তাহার গলার রস্নী কাটিয়া দিল। এই বিষয়ে এক কাব্যকর্তা কহিয়াছেন যে এমন লম্বার গলার রস্নী যে কাটি যাক জাল হয় যে সে স্ত্রী অতিবুদ্ধি হিন্দী।

বাজার ভাও।

| কিষিন | মোন | অবধি | পয়স |
|----------------|-----|------|------|
| নুপারি | ১ | ৩১ | ৩১৮ |
| ভেরণা তৈল | ১ | ২৮ | ৩০ |
| গাছ মরিচ | ১ | ৩১ | ৪১ |
| নারিকেল তৈল | ১ | ১৫ | ১৩১ |
| তুলা কাচোফা | ১ | ২২ | |
| আদা রসপূর | ১ | ২১০ | ২১৪ |
| পাটনাই আদা | ১ | ২ | ২১০ |
| চাল পাটনাই | ১ | ৩১ | ৩১৮ |
| পাছবি উত্তম | ১ | ২৬ | ২৬৮ |
| পাছবি মধ্যম | ১ | ২১ | ২১৮ |
| মুগী উত্তম | ১ | ১৬৮ | |
| মুগী মধ্যম | ১ | ১০৮ | |
| বালার | ১ | ১৬৮ | ১৬৮ |
| মুগা ধান | ১ | ২৮ | ২১০ |
| পাটনাই নট | ১ | ২১০ | |
| অবধর জালি | ১ | ২৬ | ২৬৮ |
| উত্তময়ারে দূত | ১ | ২০ | |
| মধ্যম দূত | ১ | ১৭ | ১৮ |
| উর্ভা দূত | ১ | ১৬১০ | ১১ |
| মধ্যম উর্ভা | ১ | ১৫ | |
| নীল উত্তম | ১ | ১৬০ | |
| অন্য পুকার | | | |
| নীল | ১ | ১৪০ | ১৪০ |
| মোরা উত্তম | ১ | ৬১০ | ৬৬ |
| মধ্যম | ১ | ৬ | ৬০ |
| চিনি কাশী | ১ | ১০১ | |
| মধ্যম | ১ | ৮ | ৯ |
| খার চিনি | ১ | ৪ | ৪১৮ |
| তেলুল | ১ | ১১৮ | ১১৮ |
| তামাক | ১ | ৪ | ৪ |
| চন্দন | ১ | ১৫ | ১৫ |

এই সমাচার বর্ণন শুরামপুরের ছাপাখানাতে পুস্তকভাবে পনিবারে ছাপা হয়। যাহার লগনের আবশ্যক হয় তিনি শুরামপুরের ছাপাখানাতে আপন নাম পাঠাইলে সত্তাহেৎ কাগজ ওঁহার নিকটে পাঠান হইবেক তাহার মূল্য মাল্যে এক টাকা। যিনি ছাপার করিয়াছেন যদি তাহার দ্বিগুণ বা তদধিক করে তিনি শুরামপুরের ছাপাখানাতে সমাচার দিব্যমান তাহার নিকটে পাঠান হইবেক।

সমাচার দর্পণ

৪০৪ সংখ্যা।

শনিবার।

১৩ মে সন ১৮৭০।

৪ টোন্ড সন ১৮৭৭।

দর্পণে মুখ পৌষ্যর্ষির কার্যবিবরণ।

বৃত্তান্তবিহ কানন্ড সমাচারলা দর্পণে ॥

কোল্লানির কাণ্ড।

কোল্লানির শতকরা। জয় টাকার মূলের কাণ্ড। জয় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা চারি আনা প্রিমিয়ম। বিফল করিতে হইলে শতকরা এক টাকা আট আনা প্রিমিয়ম।

সম্ভারের পঞ্জিকা।

| | | |
|-------|-------------|---------|
| ১০ মে | শনিবার | ১ টোন্ড |
| ১১ ৩ | রবিবার | ১ ৩ |
| ১২ ৩ | সোমবার | ০ ৩ |
| ১৩ ৩ | মঙ্গলবার | ০ ৩ |
| ১৪ ৩ | বুধবার | ০ ৩ |
| ১৫ ৩ | বৃহস্পতিবার | ০ ৩ |
| ১৬ ৩ | শনিবার | ০ ৩ |

সমাচার দর্পণ।

বাক্সেলিট হারান।

মোক্ষম কলিকাতার ডিউরুর জীব কৃষিক্রমের বাণীহইতে এই কএক খান বাক্সেলিট হারান গিয়াছে।

| নোট | লম্বুর | টাকা |
|-----------------|--------|------|
| কমরমল বাক্স | ৪৫৮ | ১০০ |
| হিন্দুমান বাক্স | ৪৭২৫ | ১০০ |
| ১ | ১০৮৭৩ | ১০০ |
| ১ | ৮৭১০ | ১০০ |
| ১ | ১৭২৫৭ | ১০০ |

হার যেওয়া ঘাইতেছে যে কেহ

ইহার সম্ভান করিতে পারিবে সে ব্যক্তি এসপেনেড রান্ডায় যে হেনরি কুক সাহেবের নিকট গেলেন দুই শত টাকা বন্ড শিম পাইবেক।

রাজকর্ম নিয়োগ।

৩ মে ১৮৭০ সাল। জুড়ু বি এইচ হাডমেন সাহেব নেনালের রাজবানী কাণ্ড মায়ু নগরে ইন্সপেক্টরেরদের ওকালের পেকুর।

টাকিট হারান।

ইস্তাহার যেওয়া ঘাইতেছে যে জীবেরা নাথ সাহাব ২৭৪ লম্বুরের স্ত্রীর এক টাকিট ডাকঘর হইতে হারান গিয়াছে।

চতালগাঁও।

চতালগাঁওর সমাচার পত্রের হারা শুনা গেল যে সেখানে সকল ধর্ম স্বনামে বহিভেদে তাহাতে উদ্দেশ্যেরা অনেক ভরসা করিতেছে পূর্বে তাহার প্রায় এমন ভরোনা পাওয়া নাই এবং বৃদ্ধদেরা বহিভেদে যে এই বৎসর সমান বহি হইবেক এবং শীতও সমান হইবেক।

সেখানে তবুল মূল্য হইয়াছে গণ্ড বৎসর এই সময় চারি পাঁচ টাকা মূল্য যে তবুলের মোদ বিফল হইতেছিল এ বৎসর সেই তবুল দুই টাকা মোদ হইয়াছে।

তুলা।

বোম্বাইতে সম্প্রতি তুলা অতিশয় দু

মূল্য হইতেছে সেখানে যখন তুলা ওপযুক্ত মূল্য তখন এক শত বিন টাক করিয়া একই কাণ্ড বিফল হইত। চারি মাস হইল সেখানকার রাজাপুর নামে স্থানেতে এক কাণ্ড তুলা দুই শত মূল্য টাকায় বিফল হইয়াছে ইহাতে বোধ হয় যে সেখানে তুলায় কি পর্যন্ত মূল্য হইয়াছে।

গাঁও।

সকলে অবগত হইয়াছে যে ইন্সপেক্টর প্রায় তাহা লোক গাঁওবানী গমনাগমন কর এক গাঁও সেখানে আছে যে প্রায় সে অধিবাসীরা এবং এখানে যে জন গাঁওনা লোক সেখানে তবুল গাঁও। ও যেমন এখানে যেখানেই চলে তেমন সেখানেও। রতক দিন হইল দুই গাঁওবানী বিবাদ করিয়া প্রায় রাত্রি কহিল আমার গাঁওতে বাহিরে কিবা ভিতরে যাঁহারা ঘাইবেক তাহাদের যাঁহা ইচ্ছা তাহা হিবে। অন্য তাহার প্রশ্নের জা কোণ করিয়া কহিল যে আমার গাঁওতে যত লোক ঘাইবেক তাহাদের কিছু লাগিবেক না বরং আমি একই বোতল মেয়েরা সরান তাহাদের পুতাক অন কে হিবে।

নুতন মীকো।

জুড়ু বৎ সাহেবের ক্রিপার্ড মূল্য তি এডল্ফে বাসিয়াছে তাহা এই মীকো হারা আনা যায় দিন বৎসর হইল যখন জুড়ু বৎ নিষ্প্রতিরিত্যাক নাম করিত

অন্য গমন করিলেন তখন ইংল্যান্ডের
দেয় পুঁতিতে যে সকল ক্ষুদ্র রাজ্য
ছিল তাহারা আন্দারদের সৈন্য সকল
পাঠাইল। ইহার মধ্যে হাকোতি দেশের
রাজা আলম সিন্ধু আপন সৈন্য পাঠাই
য়া করিয়া। এ বংশ মহম্মদ এই দুই শিতা
রিরদের অবাকর ওঁর আশ্রয় করিয়া
তাহারদিগকে নষ্ট করিল। ও তাহারদের
তখন লুণ্ঠিত বস্তু লইল। ইহাতে সে
অনেক দিন পাইল পরে সে খ্রীষ্টপুত্রের
নিকট এই যাত্রা করিল যে আমি এই
শিতারিরদিগকে নষ্ট করিয়া যে অর্থ লাভ
করিয়াছি যদি আপনকার অভিমত হয়
তবে এই অর্থ দিয়া বর্কটি নামে নদীতে
এক নীকো গাঁথি এবং আপনকার নাম
তাহাতে দি। ইহাতে খ্রীষ্টপুত্র সম্মত হই
লেন এখন শূণ্ডিত আলমসিন্ধু সেই
নীকো পুণ্ড অর্থে নুস্ত করিয়া তাহা
র নাম হেফ্টিস নীকো রাখিয়াছেন।
এই নীকোদ্বারা তাবৎ হাকোতি দেশের
অভিমুখ ওনকার হইবেক যেহেতু বর্ক
কোন এই নদীর পুরলতা প্রকৃত উভয় তীর
স্থ লোকেরদের পরস্পর কোন কর্ম্মদি
শুণ্য হইতে পারে না কিন্তু এই নীকো
হস্তা বর্ককালেও তাহারা অন্যায়সে
গমনাগমন করিতে পারিবে। সে নীকো
তাবৎ পুত্ররতে গৃহিত এবং ভারতবর্ষ
পুণ্ড প্রায় নীকো নাই। সে লম্বা
সাত শত হাত চৌতা কোন বাত এবং
আলমসিন্ধু তাহা শক্ত ও দৃঢ় করি
তে কিছু ব্যয় কর লানতা করেন নাই।

ইহাতে এই আশ্চর্য যে শিতারিরা যে
দিন উদ্দেশ্য হইতে লুণ্ঠ করিয়া লইয়াছিল
সেই দিন দ্বারা তদ্রূপ লোকেরদের অতি
শয় মূঢ়া হইল এবং যাহার চাড়া এই
মহাকীর্তি হইল তাহার নাম ওখা
খ্রীষ্টপুত্রের নাম উদ্দেশ্য চিত্রদ্বার

ইইয়া রছিল এবং এই নীকো দিয়া গমনা
গমনকারি লোকেরা সর্বদা মনে করিবে
যে আমরা কি বিবাদে পতিয়াছিলাম এবং
তাহাতে ওস্তান ইইয়া কত মূঢ় আছি।

হৃত।

যেমন এই পুস্তকে হৃত রহিত ডেমন
চাকা শহরে হৃত পুৰল হইতেছে সাত
আট দিবস হইল শহর চাকার এক মহা
হৃত ইইয়াছিল সে অল্পকাল ছিল কিন্তু
তাহার সহিত অতিশয় বৃদ্ধি এবং আল
ক বস্ত্রাবৃত হইল তাহাতে এক হস্তী
এক জন মনুষ্য সহিত এবং তাহার
নিকট একটা গাভী ছিল এই তিন জীব
হুতা ইইয়াছে তারপর দিন এই মত আর
এক হৃত বৃদ্ধি হইল।

এলাষ্টা।

শহর কলিকাতায় অন্য বৎসর এ
সময়ে যে জন এলাষ্টা রোগ পুৰল হই
য়া থাকে এ বৎসর তাহাই হইতে অনেক
লোক আছে।

ওস্তর হিন্দুস্থান।

ওস্তর হিন্দুস্থানের লোকেরা অতি
মুদ্রি আঁজ যোগ দানাপুরের গোঁরা
পঞ্চনতে এলাষ্টা রোগের কিঞ্চিৎ প্রা
ভাব ইইয়াছিল তদুপায় আর্য্য সকলেই
স্বাস্থ্যে আছে এবং গতি রিপোর্ট দ্বারা শুনা
গেল যে মীরকাশুর কাশী শাহারনুর
ন টোনা বেহার শাহাবাদ ভাগলপুর ত্রি
পু চতুর্গুণ্য জলময়ল ময়মনসিংহ
নবাবী স্থানী ও দিল্লী পুণ্ডিত স্থানে
তে প্রায় এলাষ্টা রোগ নিবৃত্ত ইইয়াছে
কেবল মুরশাবাদ ও মেদিনীপুরে অল্প

ইইয়াছিল কিন্তু গত দেড় মাসের মধ্যে
যশোহর ও বাঁকড়াগঞ্জ ও কুমারগঞ্জ ও
চাকা ও চাকাজিলাপুর্ন এই রোগ অতি
শয় বৃদ্ধ ইইয়াছে কিন্তু পুণ্ড দশ বার দি
বস হইল এই একই স্থানের সম্মতি না
পাএল আমরা অনুমান করি যে কতক
হাস ইইয় থাকিবেক।

হরিদ্বার।

হরিদ্বারের মেলাতে এই বৎসর যে জন
মুদ্র হইয়াছে তাহা পূর্বে লেখা গিয়াছে
সে সময়ে যে সকল সিংহাঙ্গী যাত্রিক
লোকেরদের প্রাণদ্বার্থে আপনারা ব্রা
হ্মণ স্ত্রিয় ইইয়া ও অন্য আতিথ শব্দ ব
হিয়াছিল ও অনেক যত্ন করিয়াছিল তাহা
দের পুতি লেপটলেক্ষ করণ পাটন না
হেব যে খকুম দিয়াছেন সে এই যোগ
হরিদ্বার ২২ এপ্রিল ১৮৮০ সাল লেপটলেক্ষ
করণ পাটন সাহেব হরিদ্বারে গীতপাটে
সৈন্যদের অত্যাচার করিয়া তুল
হইলেন এবং তাহারা যে আপনাদের
ছেদ্যদ্বারা সন্ততি আশী লোকের প্রাণ
রক্ষা করিয়াছে এই জন্য তিনি তাহার
দিগকে পুদান পদে নিযুক্ত করিয়াছেন তা
হার ভরাসা এই যে শ্রীশ্রীযুত বড় সা
হেব এই বিষয়ে কোন মতে অসন্তুষ্ট হই
বেন না। কাপুরুওয়ান নামে এক ব্যক্তি
শিরমুর পল্লভের আদার এই বিষয়ে
তাহার ওস্তান আপন চক্ষুদ্বারা দেখিয়া
স্বাকার করিয়াছেন এবং তাহাকে অধিক
মন্তব্য দিবার কারণ শ্রীশ্রীযুত বড় সাহে
বের নিকট সুপারিশ করিতেছেন এবং
এই সিংহাঙ্গীরদিগকে লায়ক পদে অর্থাৎ
সিংহাঙ্গীর পুদান পদে নিযুক্ত করিয়া
গণিমাশ্রু ও ওলআরসিংহ পর্যন্ত
দ্বিতীয় ভাগীহ ভবানী সিন্ধু
সিন্ধু মাতাইশ পল্লভের

সমাচারদর্পণ

হিমালয়স্থিত এ মন্দিরাদি শিরমুর
পলটনে। এই প্রকৃষ্ণনা পুণ্ডে পলটনে
পুষ্কান হইবেক।

মহামহিম পুণ্ডিত গবর্নর আলিয়েল বাহা
দুর এই মন্দির স্থাপনা সম্বন্ধে ইইয়াছেন
অমাবীর কালকুণ্ডায়ানকে সেই পলটনে
র সুবদারের একটিনী কর্ম্ম নিযুক্ত ক
রিয়াছেন যে পর্যন্ত তাহাকে স্বয়ং-পুর্বীন
করিবার অবকাশ না হয়।

ভারতবর্ষে পুণ্ডম ইং-গুণ্ডায়ের
আগমন।

কোন বিবরণের মাধ্যমে ইং-গুণ্ডায় লো
কেরদের ভারতবর্ষে পুণ্ডম বসতির নির্ণয়
লিখিত নাই এবং অতিশুণীয় লোকের
দিক্কে জিজ্ঞাসা করিলেও এ বিষয় কিছু
শেষ জানা যায় না কিন্তু অনেক লুত
আছেন যে কোন ব্যবসায়ী লোক আনি
য়া গিয়াতীরে পুণ্ডম বসতি করে অনু
মান হয় যে এই বিষয় বহেনিয়ন নাহে
বের লিখিত বিবরণেতে হতক পাওয়া
গাইতে পারে হিন্দু-মণ্ডিত তিনটা কব
রের পুস্তরেতে তিন জন নাহেবের
মৃত্যুর তারিখ লেখা আছে জর্জ এণ্ডাই
নাহেব ও বর্নবার নাহেব ও ওলিয়ম
বার্টন নাহেব এই তিন জন ভারতবর্ষে
১৬৩৭ সালে মৃত্যুপ্রাপ্ত। ইহাতে বোধ
হয় যে ইহার মন্দিরের পূর্ব ভারতবর্ষে
আসিয়াছিলেন ইং-গুণ্ডাইতে যে পুণ্ডম
আহা ভারতবর্ষে আইল সে ১৬০৭
সালে তাহারপূর্ব ইহার আসিয়াছিল
এমন অনুমান হয়।

ময়ূরের আশ্রয় নিবন্ধন।

সে অল্প গ্রাম জল রাখিয়া
র মন্দির গুণ্ডেতে এক টোকা

বন্ধন করিয়া এ গ্রামে অলের ওপর মন্দির
ভাবে রাখিতে হয় যেন জলেতে টোকা
বন্ধ না হয় পরে ই টোকা ক্রমাৎ দোলায়
মান হইয়া যত ঘণ্টা বেলা হয় তত বার
ই গ্রামে লাক্ষ্য পরে অল্প দোলায়। দ্বি
ভাবে থাকে যে দ্বিভূতে টোকা বন্ধা যায়
সে দ্বিভূত নাট আট ইঞ্চির অধিক লম্বা
নহে তন্মুখান হয় যে অল্পলিতে সেই
মুতা বন্ধিয়া রাখা যায় সেই অল্পলির
ধাতুর গুণ্ডিতে টোকা দোলায়মান হয়।

লুতন হল।

লুতন নগরে এক জন নাহেব এক
পুকার বীনা ভালিবার হল সৃষ্টি করিয়া
বাহাশাহইতে এই পাণ্ডিত্যধিক পাই
য়াছে যে সে হল অন্য কেহ করিতে
পারিবে না। সে হল এই মত পিতলের
এক চালনী আছে পুণ্ডম বীনা তাহাতে
ফেলিলে বীনা মন্দির নাচে পড়ে ও
ওগারি তাহাতে থাকে পরে ই বাজ
বীনা জীভাতে পড়িয়া তুল হয় এবং
তাহার নাচে এক স্থানে রাখা আছে সেই
পাখার বাতাসের দ্বারা তুল ও ওতুল
পৃথক হয় তাহারপূর্ব এক পুকার চাল
নাচে পড়িয়া মূর ও ভারী চাল ও গোটা
চাল এবং বানী মন্দির পৃথক হয় পরে
ই অবশিষ্ট বীনা লইয়া পুর্নবার জীভায়
ফেলিয়া ই পুকার করে এবং কলে চাল
কীড়িবার কারণ এক পুকার ওতুল মূনা
ল আছে তাহার এই ওল যে চাল তাহার
না অথচ কাঁচা হয় এই মন্দির ব্যাণীর
কেবল এক লোকের দ্বারা হয়।

বালিকা।

কলিকাতার বাজারে এখন কেবল
কাঁচোকা তুল আছে এবং সেই তুল

এই দেশের বায়ের কারণ পঁচিশ টোকা
করিয়া যোল বিক্রয় হইতেছে এ অমরত
নহে যেহেতুক মোক্ষ মরিআপুর মন্দির
নাটাইন টোকা করিয়া মোক্ষ বিক্রয় হই
তেছে এবং ভারিান গো ভাটতে ভাইন
টোকা দশ আনা যোল নি ৩০ পায়েছে।

গত সপ্তাহে আফ্রিকা দেশের কয়
বিক্রয় হয় নাই তথাপি কয় ১০ টোকা
টোকা নুন হইয়াছে গত সপ্তাহে কয়
মধ্যে এই দীর্ঘকমে কয় ১০
বৎসরের আফ্রিকা দেশের কয়
গিয়াছে।

| | | |
|---------------|------|--------|
| মুলনিবাস | ৩৮৬ | মন্দির |
| যাদা ওগারি | ৪৭৬ | ১ |
| মুনাগ্র ওগারি | ৮০ | ১ |
| চীন দেশ | ১৩৭৪ | ১ |
| অন্য স্থানে | ৬৯ | ১ |
| | ১৩৮৩ | |

মুন্সীমকোর্ট।

৮ মে তারিখে শ্রীমত মুন্সীমকোর্টের
মান্তর নাহেব ইভাহার দিয়াছেন যে
বন্দাবন বন্ম ওগারিহে অরিয়াদি ও ওক
পুনাগ্র বন্ম ওগারি আনামী ও ওকপুনাগ্র
অরিয়াদি ও শিবচন্দ্র বন্ম ওগারি আনামী
হইয়া যে তালকের বিষয়ে মোকদ্দমা
এখন মুন্সীমকোর্টে করিতেছে সে তাল
কে বন্দাবন বন্ম ও নীলমারি বন্ম ও
শিবচন্দ্র বন্ম ও নবীচন্দ্র বন্ম এই চারি
জনের ভাগ ৪৮ মে তারিখে দুই পুহ
য়ের সময়ে ইভাহার দেওয়া গাইবে।

লোভের হল।

এক ব্যক্তি বুকের বাটীতে একটা চাল
তা গাঁজ জিল সে অতিদ্রব্যী হইয়া বিবে
চনা করিল যে আর দুইখান মন্দির করিতে
পারি না। পরে ভাবিল যে কিছু টোকা

কর্তৃ করিয়া এই চালতার ফুলের মাথো
নিকি পুরিয়া দিব। তাহাতে লোকেরা ঐ
গাঁজ শুদ্ধ কিনিয়া লইবে। এই অভি
পায় সে পুতোক ফুলের মাথো একই নিকি
পুরিয়া দিল। যখন চালতা মূগন্ধ হইল
ন হাতীর বিস্ময় করিতে লইয়া গেল
অন্য চালতা যে মূল্যে বিস্ময় হই
ল সেই মূল্যে ঐ চালতা বিস্ময় করিল
১১১ কিলিন তাহার ঘরে গিয়া বে
যে পুতোক চালতার মাথো একই
! ইহাতে পরদিন তাহার চালতা অ
মূল্যে অভিপায় বিস্ময় হইয়া গেল।
তাহাতেও নিকি দেখিয়া লোকেরা চমক
কৃত হইল এবং সেই কথা পরস্পরান্তে
সেখানকার অমীরের স্ত্রিনিয়া তাহার বাটী
হইতে কতক চালতা আনাইয়া দেখিল
যে পুতোক চালতাতে একই নিকি পরে
সে তাহাকে তাকাইয়া কহিল তোমার
চালতা গাঁজ আমাকে বিস্ময় কর তাহা
তে সে কহিল আমি দুঃখী কোল হতে
চালতা বিস্ময় করিয়া কালদান করি
ইহাতে তোমার কিলান অমীরের কহিল
যত টাকায় তুমি কয় করিয়াছ তাহার
বিপণ মূল্য লইয়া আমাকে দেহ তাহা
তে সে অসম্মত হইলে সহস্র মুদ্রা
দিতে স্বীকার করিল তাহাতে সে ক
হিল তুমি এক গাঁজের কারণ সহস্র
মুদ্রা আমাকে দিতে চাহিতেছ ততএব
এগাঁজের কোন গুণ থাকিলে আমি এগাঁ
জ কখন দিব না পরে অমীরের তেজ করি
য়া পাঁচ হাতীর টাকা দিয়া গাঁজ লইল
এক শেয়ে তাহাকে কহিল যে তোমার
গাঁজের চালতাতে নিকি ফলে ইহা শুনি

য়া সে ব্যক্তি কহিল এমন গাঁজ পাঁচ হা
আর টাকায় আমি দিব না অমীরের ক
হিল যে তুমি বিস্ময় করিয়াছ আর কখন
দেখিলে না পরে সে ব্যক্তি কহিল তবে
আমাকে ঐ গাঁজের মানিচারি কর্ষে
চকর রাখহ। সে অমীরের তাহাকে
মানির কর্ষে নিযুক্ত করিল। পর ২৭
সর ঐ পুতোক চালতার ফুলের মাথো
এক অমূল্য পুরিয়া দিল। পরে চালতা
মূগন্ধ হইলে অমীরের লোক আনিয়া
তা চালতা পড়িয়া লইয়া গেল। এবং
দেখিল যে পুতোকের মাথো একই আদুনি
ফলিয়াছে। তাহাতে সে অমীরের আ
কর্ষ্য বেই করিয়া ঐ বিপক্ষে আর কতক
টাকা বকশিশ দিল। পর ২৭ সর ঐ বিপ্ত
মানি পুতোক ফুলে একই টাকা দিল এবং
অমীরের টাকা দেখিয়া অভিমানবিত্ত হ
ইল ও তাহাকে আর অধিক বকশিশ
দিল। আর ১ মকল লোকে কহিতে লা
গিল যে মহাশয়ের কাণো ফলিয়াছে।
পরে ঐ বিপ্ত কতক টাকা সংগ্রহ করিয়া
ঐ মানবের তন্মুখিত লইয়া অন্য দেশে
গিয়া বসতি করিল। তাহার পর ২৭ সর
গাঁজের নিকট শত চৌদী রাখিল এবং
চালতা মূগন্ধ হইলে পাড়িয়া দিল যে তা
হার মাথো লিচুমান নাই। পরে লোকে
রা কহিল যে মানির কর্ষে ফলিত সেই
মানিকে পাশাইয়া ঐ কর্ষে চকর রাখ।
পরে ঐ বিপ্ত মানিকে আনিতে লোক
পঠাইলে সে কহিল যে আমি দশ
হাতীর টাকা দ্বমাহার কক্ষ থাকিব না।
ঐ কথা অমীরের স্ত্রিনিয়া অভিপায় দুঃখী
হইল।

| বাজার ভাণ্ড। | | | |
|------------------|-----|------|-----|
| কিনি | মোন | অবধি | পদ |
| সুপারি | ১ | ৩৮ | ৫ |
| ভেরণা তৈল | ১ | ২৮ | ৫০ |
| গাছ মরিচ | ১ | ৩১ | ৫১ |
| নারকেল তৈল | ১ | ১৫ | ১২ |
| জুলা কাছোড়া | ১ | ২৫ | |
| আখা মঙ্গলপুর | ১ | ২১০ | ১৬ |
| পাটনাই আল | ১ | ২ | ১১ |
| চালু পাটনাই | ১ | ৩১ | ৫৬ |
| পাছড়ি উত্তম | ১ | ২৫ | ২৫ |
| পাছড়ি মধ্যম | ১ | ২১ | ২৮ |
| মুদী উত্তম | ১ | ১৫৬ | |
| মুদী মধ্যম | ১ | ১৫৬ | |
| বাল্যম | ১ | ১৫৬ | ১৫৮ |
| দুধা ধান | ১ | ২ | ১৫ |
| পাটনাই বৃষ্টি | ১ | ২১০ | |
| অফুর জালি | ১ | ২১০ | ২১ |
| উত্তমহারে বৃষ্টি | ১ | ২৩ | |
| মধ্যম বৃষ্টি | ১ | ১৭ | ১৭ |
| উত্তম বৃষ্টি | ১ | ১৫১০ | ১৮ |
| মধ্যম উত্তম | ১ | ১৬ | |
| নীল উত্তম | ১ | ০ | |
| অন্য গুকার | | | |
| নীল | ১ | ১০ | ১০ |
| মোড়া উত্তম | ১ | ৩১০ | ৩১ |
| মধ্যম | ১ | ৬ | ৬ |
| চিনি কালী | ১ | ১০৫ | ১০৫ |
| মধ্যম | ১ | ৮ | ৮ |
| খার চিনি | ১ | ৮ | ৮ |
| তেল | ১ | ১১৮ | ১১৮ |
| ডামাক | ১ | ৮ | ৮ |
| চন্দন | ১ | ১৮ | ১৮ |

এই সমস্তের লবণ পুরামপুরের ছাপাখানাতে পুস্তিকায়ে শব্দকারে ছাপা হয়। বাহার লগনের আবশ্যক হয় তিনি পুরামপুরের ছাপাখানাতে
আপন মান পাঠাইলে লগনে কাগজ তাঁহার নিকটে পাঠান হইবেক তাহার মূল্য মাসে এক টাকা খিনি বাধক করিছেন যদি তাহার টি
কাগজ বা লগনে তবে তিনি পুরামপুরের ছাপাখানাতে লগনের বিবাহার তাহার নিকটে পাঠান হইবেক।

সমাচার দর্পণ

৮৫ সংখ্যা।

শনিবার।

১০ মে সন ১৮৭০।

৮ জ্যৈষ্ঠ সন ১২৭১।

দর্পণে মুদ্রণ পৌরস্বামির কার্যবিবরণী।

ব্রাহ্মসমিতি জনক সমাচারমা দর্পণে।

কোল্লানির কাণ্ড।

কোল্লানির শতকরা জয় চাকার সুন্দর কাণ্ড কয় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা চারি আনা প্রিমিয়াম। বিক্রয় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা আট আনা প্রিমিয়াম।

সন্তোহের পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|---|------------|----|------|
| ১০ | ৫ | শনিবার | ৮ | ইজাড |
| ১১ | ৫ | রবিবার | ৯ | ৫ |
| ১২ | ৫ | সোমবার | ১০ | ৫ |
| ১৩ | ৫ | মঙ্গলবার | ১১ | ৫ |
| ১৪ | ৫ | বুধবার | ১২ | ৫ |
| ১৫ | ৫ | বৃহসপতিবার | ১৩ | ৫ |
| ১৬ | ৫ | শুক্রবার | ১৪ | ৫ |

বাঙ্কিনাট হারান।

মোকায়ে কলিকাতার চিত্রপুরের জীবন কৃষ্ণ মিত্রের বাড়ী হইতে এই একশ খান বাঙ্কিনাট হারান গিয়াছে।

| নোট | নম্বর | টাকা |
|-------------------|-------|------|
| কমরমল বাঙ্ক | ৪৫৮ | ১০০ |
| হিন্দুস্থান বাঙ্ক | ৪৭৯৫ | ১০০ |
| ঐ | ১৩৮৭৩ | ১০০ |
| ঐ | ৮৭১৩ | ১০০ |
| ঐ | ৪৭৯৫৭ | ১০০ |

ইস্তাহার দেওয়া যাইতেছে যে কেহ ইহার সন্ধান করিতে পারিলে সে ব্যক্তি এসোসিয়েট ব্যাঙ্কায় মেসেজরিজ সাহেবের নিকট গৌনে দুই পাত টাকা বাখশীস পাইবে।

ইস্তাহার।

ইস্তাহার দেওয়া যাইতেছে যে শ্রীযুক্ত ওলিয়াম এইনসিলি সাহেব কোল্লানি বা হাঙ্গুরের ডাক্তারি কর্মে লিয়ুজু জিলেন ডিলি এখন ১ মে তারিখে অহবি শ্রীযুক্ত কালবিন বাসেট কোল্লানির এক অংশী হইয়াছেন।

ঐ তারিখে শ্রীযুক্ত হিও জার্মান সাহেব হটন কোল্লানির এক অংশী হইয়াছেন। এবৎ চলিল বোঙ্ক সাহেব শ্রীযুক্ত এড বোনাফি সাহেবের সহিত এক অংশী হইয়াছেন। পরে ইহার বোনাফি কোল্লানি নামে খ্যাত হইবে।

এবৎ শ্রীযুক্ত ডালি কোল্লানির এক অংশী শ্রীযুক্ত অর্জুতিকমন সাহেব জিলেন ডিলি ১ মে তারিখে অহবি সে কর্মগ্রহণ হইয়াছেন।

ইস্তাহার দেওয়া যাইতেছে যে বাবু সূর্যকুমার ঠাকুর লোকান্তর গমন কালে শ্রীযুক্ত বাবু চন্দ্রকুমার ঠাকুরকে আঁপলার ডাবৎ বিষয় সমর্পণ করিয়া গিয়াছেন। এসম্বে শ্রীযুক্ত বাবু চন্দ্রকুমার ঠাকুর ঐ কর্মে লিয়ুজু হইয়াছেন। অতএব সূর্যকুমার ঠাকুরের সহিত যাঁহারদের দোলা পাওনা ছিল তাঁহার। এসম্বে শ্রীযুক্ত বাবু চন্দ্রকুমার ঠাকুরের লিহট যাইবেন।

বড় আদালত।

ইস্তাহার দেওয়া যাইতেছে যে ১৮৭০ সাল ১৫ জুন বৃহত্তি বার নয় ঘণ্টার সময় বাবুশাহী আদালত খোলা যাইবেক।

সমাচার দর্পণ।

শ্রীযুক্ত লর্ড ময়রা সাহেব।

শ্রীযুক্ত বড় সাহেব বঙ্গদেশের প্রথম সন্তোহের এক্ষেত্রে যেমন প্রকাশ পাইল। এই ৫০-কোটি স্বতন্ত্র কর্মের সহিত মিলিত হইয়া শ্রীযুক্তকে বর্জিত করিয়াছে। এ শ্রীযুক্ত এসম্বে জলবান যে ইংলণ্ডে মহাসভাতে থাকিয়া পদার্থ দিলে দেশের অনেক ওপকার হইতে পারিত হিও ডিলি তাহাতে অলিয়ুজু হইয়া আদালত কর্মচারী স্বদেশের ওপকার করিলেন। এ পর্যন্ত লিখা হয় নাই যে তাঁহার কোন কর্মচারী দেশের অধিক ওপকার হইত। তাঁহার জ্ঞান যখন কলিকাতার জিল তৎকালীন তাঁহার বিরুদ্ধে যদি লিখা যায় তবে প্রচলিত হইলে যে বিপর্যয় হইতে তাহা লিখনের অবকাশ থাকে না। তাহার কর্মে দেখিয়া অনুভব হয় যে যে লোকেরা তাঁহাকে শিক্ষা দিয়াছেন তাঁহার। কোনক্রমে ত্রুটি করেন নাই। শ্রীযুক্ত বড় সাহেব যে বিবাহ করিয়াছেন তাহাতে প্রবর্তন কাহিনী সন্তোহের লুনাখিকা হয় নাই যেহেতু ওভ ঘোঁড় লুনা বংশজাত।

এমন তাঁহার প্রকাশিত কর্মের বিবরণ বড়কল লিখা যাইতেছে। পূর্বে শ্রীযুক্তের নাম লর্ড রায়ন জিল ১৭৭৫ সালে যখন আমেরিকা দেশীয়দের সহিত

সমাচার দর্পণ।

নগরে ইংল্যান্ডেরদের যুদ্ধ হইল দুই বৎসর পূর্বে তিনি পল্লনের ক্ষুদ্র পদ নিযুক্ত ছিলেন। কিন্তু ঐ যুদ্ধে তিনি সমুদ্রবর্তি পল্লনেতে থাকিয়া আপন সাহস ও জ্ঞান এমন প্রকাশ করিলেন যে তাহাতে পল্লনের অধিক দুই জন কেবল তাঁহাকে প্রশংসা করিল সে নহে কিন্তু কহিল যে তুমি কাল ক্রমে অভিশ্রুতি পদে নিযুক্ত হইবা এই যে ভবিষ্যৎকালে তাহা এখন পূর্ণ হইয়াছে। তিনি যে যুদ্ধেতে যে সাহস ও জ্ঞান প্রকাশ করিলেন তাহাতে ঐ পল্লনের অধিকের মৌলোহেদী কর্মে নিযুক্ত হইলেন। সেই অবধি ১৭৭৮ সাল পর্যন্ত শ্রীশ্রীযুক্ত ফল মাত্র নিযুক্ত রহেন নাই। শ্রীশ্রীযুক্ত চ দ্বিশ বৎসর বয়সের কালে আমেরিকা দেশের তাবৎ পল্লনের পুঁহীন কর্মে নিযুক্ত হইলেন তাঁহার বয়স তখন ছিল বড় কিন্তু জ্ঞান অধিক ছিল তৎপুত্রক তিনি একবারে স্বপ্নহইতে ওদ্বর্তন চক্ষুপায়ের ওপরি পদ প্রাপ্ত হইলেন এবং এই সময়ে তাঁহার জ্ঞান প্রকাশ করণের অধিক আর প্রকাশ ছিল তিনি লোকেরদ্বিগিকে প্রিয় ছিলেন যে শত্রু বিদ্যা শিক্ষাতে মনুষ্যের হস্ত আবদ্ধ ও শিল্পবিদ্যাহইতে হস্ত ভাল এবং শত্রু বিদ্যাহারা কি কর্তব্য ও কিংবদন্তি করা যায় তাহা লোকেরদ্বিগিকে দেখাইতে লাগিলেন। ১৭৭৮ সালে যখন আমেরিকা দেশের মহাপ্রাণ্ড যুদ্ধ হইতে লাগিল তখন তিনি এমন জ্ঞানের কর্ম করিতে লাগিলেন যে তাহাতে পুঁহীন, পুঁহীন লোকেরা তাহার অনেক সুখ্যাতি করিল।

তিনি জিলাবেলজিয়া নগরে থাকিয়া ঐ লর্ড ওপারীন্দ্র লোক সংগ্রহ করিয়া এক পল্লন প্রস্তুত করিলেন ঐ লোকেরা অতি

বলবান ছিল ইহারদের দ্বারা ইংল্যান্ড দেশের অধিক ওপকার হইল। এই সকল লোকেরা যে কি করণ ঐ লর্ড ওপারীন্দ্র হইতে আইল এবং কি পুকারে আইল তিনি এই সকল জিজ্ঞাসা না করিয়া এই বিষয়ে কেবল আপন অহঙ্করণে আনন্দিত হইলেন যে তাহার বলবান ছিল ও শত্রু যুদ্ধ কর্মে নিযুক্ত। তাহারদের মাঝে এক ঘোষ ছিল যে তাহার পুঁহী সত্ত্বা পলায়ন করিত। কিন্তু লর্ড রাতন অর্থাৎ শ্রীশ্রীযুক্ত ঐ পলায়নশীল মৈনোর দত্ত দিতে তাহারদ্বিগিকেই পরাক্রম দিলেন ইহাতে শত্রু সে ঘোষ নাপ হইল। তিনি সর্দার বিপ্লবেরদের অগ্রে প্রথম যুদ্ধে ঐ পল্লন পঠাইতেই হইতে এই পল্লন শত্রু নাপ হইল এবং যুদ্ধের শেষ না হইতে তাহার এক জনও জীবৎ থাকিল না।

১৭৭৯ সালে আমেরিকা দেশীয়েরা কলেক্টর গভ অভিযায়ী দূত করিয়া মৈনো সংগ্রহ করিল ও এই প্রতিজ্ঞা করিল যে এই গভ আমরা কোন মতে দিব না। ইহাতে ইংল্যান্ডীয় অধিক ঐ গভ লইতে প্রতিজ্ঞা করিলেন। যখন ইংল্যান্ডীয়েরা ঐ গভ আক্রমণ করিতে গেলেন তখন শ্রীশ্রীযুক্ত লর্ড রাতন ও সে সমস্তবিষাহার গিয়া স্বকৃত কর্মদ্বারা প্রত্যয় যত পরামর্শদ্বারা আপন সাহস ও জ্ঞান প্রকাশ করিলেন শেষে ঐ গভ ইংল্যান্ডীয়েরা স্বাধীন করিয়া নবল বিঘ্ন অবধারিত করিলেন এবং শ্রীযুক্ত মর হেনরি ক্রিগ্টন সাহেব ভারতবর্ষের পূর্বে বড় সাহেব যে লর্ড কলিগ্রাফিল তাহাকে দক্ষিণের পল্লনের অধিক সন্মানে নিযুক্ত করিয়া আপন নব কর্ম নগরে প্রথম করিলেন।

কিন্তু লর্ড বর্নেগ্রেস সাহেবের সে বর্ষ ভাগ করিয়া অন্য কর্মে বাসিয়া

দেশে যাওনের আবশ্যক হইল তাহাতে আমায়ের বর্নীয় ব্যক্তি যে স্বাধীন লর্ড রাতন সাহেব তিনি ঐ পদে নিযুক্ত হইলেন। তৎকালে ইংল্যান্ডীয় মৈনোর দ্বিগিকে আমেরিকা দেশীয় মৈনোরদের সহিত তুলনা করিতে হইলে দেখা যায় যে তাহারদেরইহাতে ইংল্যান্ডীয় মৈনোরদের কৌশল ও সাহস ও বল অধিক কিন্তু মৈনো ন্যূন ছিল। এই সময়ে গোটম ও গুলি নামে দুই জন মাতা আমেরিকা দেশীয়েরদের অধিক স্বাধীন রাতন সাহেবকে মৈনো ন্যূন করিতে ওযোগ্য করিল কিন্তু সে ওযোগ্য মুক্তি হইল না যেহেতু স্বাধীন লর্ড রাতন সাহেব করনল টার্লটন ও অন্য মৈনো বিপ্লবের সহিত যোগ্য করিয়া দেখানো বিপ্লব মৈনোরদের সহিত সাফা হইল সেইখানে তাহারদ্বিগিকে আর করিলেন শেষে তাহার নিবন্ধায় দেখিয়া নিবর্তন আশু করিল।

রোমু বর্কে হওয়া ও জল ভোজ এবং পিশিরে নিরাবরণ থাকা ও অনিদ্রা এই সকল পরিশ্রম করিয়া ও দুর্গম যানে গমন করিতে লর্ড সাহেবের স্বাস্থ্য নাপ হইল এই নিমিত্ত তাহার ইংল্যান্ডে গমন করিতে আবশ্যক হইল। যে জাহাজে আরোহণ করিয়া তিনি ইংল্যান্ডে যাঁতেছিলেন পথিমধ্যে ঐ জাহাজ দুর্ভাগ্যে নৃত করিয়া লইল এবং তিনি তাহারদের অধীন হইলেন। কিন্তু তখন দেশীয় এক জন কাব্যকর্তা লিখিয়াছেন যে যে লোক অনেককে স্বহস্তগত করিতে বাসনা করে তাহাকে একবার পরহস্তগত হওনের আবশ্যক আছে। এবং শ্রীশ্রীযুক্ত আমিতে পাইল যে তাহার কে স্বাধীন করিয়াছে। এই

দিন গত হইলে লর্ড রাতন সাহেব ঘাট ইংগ্রেজ পুত্ৰাণিমন করিলেন তখন ন মকল লোক তাহার কর্ম আত ছিল এই কারণ তিনি ইংগ্রেজ পুত্রজিলে তাহা লোক অতিশয় আনন্দিত হইল এবং ইংগ্রেজের বাদশাহ ও মহাসভা কেবল তাহার পুত্র তুখ হইলেন তাহা নয় কিন্তু শীঘ্র তাহার কর্মের পারিভোজিক দিতে চেষ্টা করিলেন অতএব বাদশাহ তাহাকে আপন মোশাহিবি কর্মে নিযুক্ত করিলেন।

এইক্ষণে এ বিষয় মকল বর্ণনা করা হইল না অতএব পক্ষ-অবকাশ ক্রমে ইহার শেষ কথা দেওয়া যাইবে।

হারদোর।

৪৮ মে ৩ জ্যৈষ্ঠ বৃহত্তিথার এক পুহর বেলা থাকিতে মোঃ ষ্ট্রামপুরের কামার ঘাটে এক বেহারা গরিতে বড়শী ঘেলিয়া মৎস্য বহিতেছিল পরে এক হাদির তাহার নিকটে আস্ত্র আসে আশিয়া স্থাপিতা মারিল। তাহাতে ঐ বেহারা ডাল করিল যে আমার বরশীতে বৃহৎ মৎস্য বরা গিয়াছে। ইহা ভাবিয়া সে অধিক লাভাকাঙ্ক্ষাতে যত্ন হইয়া বড়শির সূতা আকারণ করিতে আইত্রে অলপদ্বন্দ্ব গেল। অনন্তর তাহার অধিক লাভ পূরে থাকুক ঐ হাদিরে তাহার পায়ের মাংস কাটিয়া লইল। পরে অনেক লোক অয়া হইয়া তাহাকে ভীরে ধাইল তাহার সেই ক্ষতহইতে এত রক্ত নির্গত হইল যে আল হয়ে যে তাহার শরীরে এত রক্তজিল না।

গুপ্তদ্বার।

এ লেটোর অতিশয়

পুণ্ডুর্ভাব হইয়াছে লেটোর ভয়ে পথ গমনাগমন করা অতিদুষ্কর এবং চোর ও ডাকাইতের ভয়ে ইনবান লোকেরা রাশ্রিতে সূখে নিদ্রা ঘাইতে পারেন না। এবং হানো পঞ্জীগুণ্যম ডাকাইতি ও শিক হুরি হইতেছে এমত সমাচার সম্রাট আসিতেছে। অন্যো পরে কা কথা শহর কলিকাতার মধ্যে এ দুই দিন ভাগ্যবান লোকের বাটীতে মনুপুতি গুণ্য ডাকাইতি হইয়াছে।

মান্দরাজের হাড।

কতক দিন হইল মোঃ মান্দরাজে এক মহাশয় হইয়াছিল তাহার বিষয় পূর্বে লিখা গিয়াছিল মনুপুতি শুনা গেল যে ঐ হাডে একদরশীজ নামে একখান দ্বিগা অর্থাৎ সুদুর্জাহাজ মারা গিয়াছিল এই আহাজ খালি ছিল এই কারণ জলেতে পল হইল কিন্তু অহিল না। ঐ আহাজের কাঙাল ও লোকেরা আহাজের এক পাখি গিয়া দুই দিন এ দুই রাশ্রিপদন্ত অনাহা রে জিল দ্বিতীয় দিবসে তিনখান আহাজ সেই পথ আইল কিন্তু কেহ তাহারদের নিকটে দিয়া গেল না পরে আহাজের তের জন লোকেরা একটা কাঙ্কের ভেলা নি ম্যান করিয়া তাহাতে আরোহন করিল এবং কোথায় গেল তাহার কিছু অনুসন্ধান পাওয়া গেল না। আর তিন জন কলিকাতায় ঘাইতে বাসনা করিয়া মাংচার দিতে লাগিল কিন্তু অনেক দূরস্থানযুক্ত অপরূক হইলে দুই জন তুচ্ছনে ভাসিয়া গেল ও এক জন ঐ আহাজে আইল অ বশিষ্ট যে সাত জন আহাজে জিল মান্দরাজহইতে আর এক আহাজ আশিয়া তাহারদিকে লইয়া গেল এবং মান্দরাজের এক নগরের সম্মুখে এক গুণ্যে

তাহারদিকে ধাইয়া দিল ও পুত্ৰাণি কার কালেকর সাহেব তাহা হার হাড ওপকার করিলেন।

নুতন গাঁড়ী।

ইংগ্রেজ এক পুকার নুতন গাঁড়ী মিলি হইয়াছে তাহাতে চারি জন গাঁড়ী হইতে পারে সে এক ঘণ্টার মধ্যে পঁচিশ কোশ চলে সে গাঁড়ী কেবল এক জন লোকের চারা চলে।

বোম্বাই।

বোম্বাইহইতে সমাচার আশিয়াছে যে শ্রীযুত করন বারকু সাহেবের ম হিত খোনা আভিরদের এক মহাশয় হইয়াছিল তাহাতে বারকু সাহেব অয়া হইয়াছেন কিন্তু সাহেবের গাভ্রিতে বন্ধু ছের গুলি অতিশয়করনে লাগিয়াছে। এগুলি শ্রীযুত করন বারকু সাহেব নগর পুরুহইতে এক শত কুচি অন ঘোড়সোয়ার ও দেহ শত পদাতিক সৈন্য লইয়া দেশ ভ্রমণ করিতে ঘাইতে জিলেন এমত কালে শুনিলেন যে এখান হইতে তের কোশ অন্তরে খোমরা আ তিরা আছে তাহাতে তিনি বড় বিস্ময় করিলেন না যেহেতু ইহার পূর্বে অনেক বার তিনি এক মিথ্যা কথা শুনিয়া জিলেন কিন্তু তিনি সাত কোশ গিয়া সম্মাংকালে শুনিলেন যে সে সমাচার যথার্থ তাহাতে হাড বৃদ্ধির কারণ কিছু কাল মুক্তি হইলেন। পরে ঘটন দুই পুহর রাশ্রির সময় সেখানে হাড বৃদ্ধি নিবৃতি হইল তখন সেখানহইতে পু স্থান করিলেন এবং শ্রুতকালে গিয়া সেখানে পহুজিলেন ও সূর্যোদয়ে হইলে

সমাচার দর্পণ।

তাহারদের পরর মুকোদোশ্য হইল। শ্রী
মুত করলন বারক্কে সাহেব শুম্য আপন
পরাভিক মৈনোরদিগকে তাহারদের ও
পর আক্রমণ করিতে আত্মা দিলেন তাহা
তে বিপক্ষেরাও শীঘ্র পুস্ত হইল। পরে
ইংলণ্ডীয় মৈনোর শুম্য একবার বন্ধক
জাফিল (যোনা আতিরা) নির্ভয়ে তাহার
দেহ সম্মুখে আইল। তাহাতে ইংলণ্ডীয়
মৈনোর তাহারদের বন্ধক ও মঙ্গলের
জন্য বাঁচিল অল্প যুদ্ধের পরেই (যোনা
আতিরা) পলায়ন করিতে উদ্যত হইল।
ইহা দেখিয়া সাহেব আপন ঘোড়সও
মারের দিগে তাহারদের পক্ষাৎ ঘাই
তে আত্মা দিলেন। তাহারা ইংলণ্ডীয়
ঘোড়সওয়ারদিগকে আপনাদের পর
ক্ষাৎ দেখিয়া পুনরায় যুদ্ধ করিতে আর
ম্ভ করিল। তাহাতে ইংলণ্ডীয়েরা শুম্য
কৃত্রিম হইয়াছিল কিন্তু ইংলণ্ডীয় মৈনোর
রা আতিমহা-বলক বন্ধক জাফিয়া এক
শত কৃতি জন বিশক মৈনোরদিগকে মা
রিল ও কতক আঘাত করিল তাহাতে
তাহারা পলায়ন করিল। কিন্তু (যোনা
আতিরা) এই বার যেমন সাহসের কর্ম
করিয়াছে এমন কর্ম তাহারদের মধ্যে
কখন হয় নাই যেহেতু তাহারদের
এক জন দিন জন ঘোড়সওয়ারের
মহিড় যুদ্ধ করিল এবং বহিল যে এক
জন লোকের ওপর দিন জন আক্রমণ
করা অন্তি কিন্তু এই সাহসী ব্যক্তিকে
ইব করণের আবশ্যক হইল। আয়রা
অনুমান করি যে এমন সাহসী লোক সে
হানে আর পাওয়া যাইবে না।

| মূল। | | |
|--|--------|---------|
| যোনা চাকরদের উত্তর পুরুষোনে গাঁওনা
পুরে গাত সমস্তই দুই জন রাহাণির
লোককে লেঠেরা মাগিয়া তাহারদের
হাল ঘাটা ছিল তাহা নইয়া গিয়াছে।
গোয়িকার দ্বারা এই সমাচার পাওয়া
জানার পরগণার দোহাশ্য গিয়া অনু
সন্ধান করিয়া দেখিল যে এই দুই লাম
পুরুষের মধ্যে। দুই লাম এক রকমে
বাঁধিয়া অলের মধ্যে এক বাঁধ পুতিয়া
তাহাকে বাঁধিয়া রাখিয়াছে। পরে
মাঠা করিয়া এই দুই লাম তাহার উপর
উঠিয়া রাখা গিয়াছে। উভার অনেক
হইতডে অদ্যাপি দুই লোক বীরা পড়ে
নাই। | | |
| এলাউ। | | |
| শহর কলিকাতায় যত লোক এলাউ
রোগে মরিডে তাহারদের পুতিদিলের
রিপোর্ট এই। | | |
| তারিখ | হিন্দু | মুসলমান |
| ৬ মে | ৯ | ৪ |
| ৭ রোজ | ১৪ | ৭ |
| ৮ রোজ | ৪৪ | ৪ |
| ৯ রোজ | ৪১ | ২ |
| ১০ রোজ | ৪০ | ৪ |
| ১১ রোজ | ৪৬ | ৩ |
| ১২ রোজ | ৪৪ | ৩ |
| | ৯৩ | ২০ |
| একুলে | | ৪৪৬ |

| বাজার ভাণ্ড। | | | |
|------------------|-----|------|--------|
| কিমিন | মোন | অবধি | পরিমিত |
| শুণারি | ১ | ৩৮ | ৩৬ |
| জেরা তৈল | ১ | ১৮ | ২০ |
| গাছ মরিচ | ১ | ৩০ | ৪০ |
| নারিল তৈল | ১ | ১৪ | ১৪ |
| কুলা কাহোরা | ১ | ২৫ | |
| আবারুপু | ১ | ২১০ | ২১০ |
| পাটনাই খানা | ১ | ২ | ২১০ |
| চালু পাটনাই | ১ | ৩০ | ৩০ |
| পাছড়ি উত্তম | ১ | ২৬ | ২৬ |
| পাছড়ি মধ্যম | ১ | ২১ | ২১ |
| মুগা উত্তম | ১ | ১৬ | ০ |
| মুগা মধ্যম | ১ | ০ | ০ |
| বাগাম | ১ | ১৬ | ১৬ |
| দুগা গোম | ১ | ২৮ | ২৮ |
| পাটনাই দুট | ১ | ২৮ | |
| অফুর তালি | ১ | ২১৬ | ২৬ |
| উত্তম পাটনাই দুট | ১ | ২৪ | |
| মধ্যম দুট | ১ | ২৭ | ২৮ |
| উত্তম দুট | ১ | ২৬ | ২৭ |
| মধ্যম তৈল | ১ | ১৬ | |
| নীল উত্তম | ১ | ০ | ০ |
| অনার পুলা | | | |
| নীল | ১ | ১৪ | ১৪ |
| সোরা উত্তম | ১ | ৩০ | ৩৬ |
| মধ্যম | ১ | ৬ | ৩০ |
| চিনি কাশী | ১ | ১০৬ | ১১ |
| মধ্যম | ১ | ৮ | ১ |
| খার চিনি | ১ | ৪ | ৪০ |
| তেতুল | ১ | ১৮ | ১৮ |
| ভাষাক | ১ | ৪ | ৬ |
| চন্দন | ১ | ১৪ | ১৬ |

এই সমাচার দর্পণ শ্রী রামপুরের ছাপাখানাতে পুতিনতাবে প্রিন্টার ছাপা হয়। বাহার লগনের আবশ্যক হয় তিনি শ্রী রামপুরের ছাপাখানাতে
গণন নাম পাঠাইলে সন্ধ্যা ২ বাগক তাহার বিকট পাঠান হইবে তাহার মূল্য মাসে এক টাকা যিনি ছাপক করিয়াছেন যদি তাহার বিকট
দ্রষ্টব্য নাই তবে তিনি শ্রী রামপুরের ছাপাখানাতে সমাচার বিবরণ তাহার বিকট পাঠান হইবে।

সমাচার দর্পণ

১৩৩ সপ্তাহ।

শনিবার। ১৭ মে সন ১৮৭০। ৪৫ খ্রিষ্টাব্দ সন ১৯১৭

দর্পণে মুখ লেখকের কার্যবিবরণ। ব্রাহ্মসমাজ সমাচার দর্পণে।

কোয়ানির কাণ্ড।

কোয়ানির শতকরা চন্দ্র টাকার মূদ্রে কাণ্ড করিতে হইলে শতকরা এক টাকা চারি আনা প্রিমিয়ম। বিস্ময় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা আট আনা প্রিমিয়ম।

সপ্তাহের পঞ্জিকা।

| | | |
|-------|-------------|-------|
| ১১ মে | শনিবার | ১৪ মে |
| ১২ মে | রবিবার | ১৫ মে |
| ১৩ মে | সোমবার | ১৬ মে |
| ১৪ মে | মঙ্গলবার | ১৭ মে |
| ১৫ মে | বুধবার | ১৮ মে |
| ১৬ মে | বৃহস্পতিবার | ১৯ মে |
| ১৭ মে | শুক্রবার | ২০ মে |

সমাচার দর্পণ।

রাজকর্মের নিয়োগ।

১৮৭০ সাল ১০ মে।

মিল্লি পুর্বেণ ও তাহার চতুর্বিধ পুর্বেণ যে খাল কাটা ঘাইতেছে প্রযুক্ত কান্তন ব্লেন সাহেব তাহার অধীক্ষ হইয়াছেন।

এত মর ত্রৈল্ল কোলবুধ সাহেব পলি অফিসের পুর্ধান অজ

সুশ্রীমহোমিল।

ইংলণ্ডে প্রাপ্ত কোয়ানির অধ্যক্ষ সাহেবেরা প্রযুক্ত জ্যোতি সাহেবকে কলিকাতার সুশ্রীমহোমিলে নিযুক্ত করিয়াছেন। অতএব প্রাপ্ত বত সাহেব প্রযুক্ত মর ত্রৈল্ল কোলবুধ সাহেবকে যে কতক দিনের কার্য এই কর্মে নিযুক্ত করিয়াছিলেন তিনি এখন সুশ্রীমহোমিলের মে কর্ম পরিচালনা করিয়া সমরদেওয়ানি অফিসের পুর্ধান অজ হইয়াছেন। গত শনিবারের প্রযুক্ত জ্যোতি সাহেব সমরদেওয়ানি অফিসে হইতে সুশ্রীমহোমিলে গেলেন এবং প্রযুক্ত মর ত্রৈল্ল কোলবুধ সাহেব সুশ্রীমহোমিল হইতে সমরদেওয়ানি অফিসে গেলেন।

এই আশঙ্ক্য যে ইহার কলিকাতা এডম্বেসিয়াত হেনরি কোলবুধ সাহেব সমরদেওয়ানির পুর্ধান অজের কর্ম ও সুশ্রীমহোমিলের কর্ম ফরমা করিয়া ছিলেন ইনিও সেই দুই কর্ম করিলেন।

গণসামাগর।

অনেক লোক আস্ত নহেন যে শ্রীশ্রী যুক্ত আচার্য করিবর কার্য গণসামাগর গুণবান ভাগী করিয়া এতদ্দেশীয়েরদিগকে ডিয়াছিলেন তাহাতে তাহার গণসামাগরের বন কাটাইয়া আবাদ করিতে ও যোগ্য না করিলে শ্রীশ্রী যুক্ত তাহারদের মে দানব্র অধ্যক্ষ করিয়াছেন এবং এখন গণসামাগরের বন কাটাইতে যে এতদ্দেশীয় ও ইংল্যান্ডের লোকেরদের

মিলিত সম্প্রদায় দ্বির হইয়াছে তাহার এখন এই বন কাটাইতেছেন।

যে ভূমি বন কাটাইয়া পরিত্ত হইয়াছিল তাহাতে গত বৎসর ধান বোজ রোপন করা গিয়াছিল। এখন সে ভূমিতে তামাক ও তুলা ও গাঁজ মরিচ ও বার্লি ও তরমুজ ও রামতরাই পুত্রি-সুন্দর অগ্নিতেছে। এবং নারিকেল বৃক্ষ অনেক ওৎপন্ন হইতেছে। মেখানে লবণাশু বাড়িরকে মিষ্ট অন্ন দুর্লভ ছিল তৎপুত্র মেখানে অনেক পুত্রলীলা টান গিয়াছে তাহাতে এই বর্ষা পুত্রাশু মিষ্ট অন্নের অভাব থাকিবে না। এতদ্দেশীয় এক কাকি মেখানে বন কাটাইয়া দান পরিত্ত করিয়াছে এবং তাহাতে যম্ম দেশীয়েরদিগকে বসতি করাইয়াছে যেহেতু ময়রা অধিক পরিণাম করিতে পারে ও তাহারদের আতি বিবেচনাকারি অতএব তাহারদেরহইতে অধিক দুর্ভিক্ষ কর্ম হইতে পারে।

মরসুন্স গণসামাগরে এক লক্ষ আশী হাজার বিঘা ভূমি আছে তাহার ইংল্যান্ডের হাজার বিঘা ভূমি পরিত্ত হইয়াছে অর্থাৎ বিশপতি অংশের এক অংশ তাহার স্বতন্ত্র ভূমি লইয়া বন কাটাইতে তাহারদের কর্ম শ্রী করিতে।

সি-হুজি।

মোং যেদিন পুর্বেণ পশ্চিম সি নামে এক ক্ষুদ্র পুর্বেণ আছে তাহার আশঙ্ক্য সমাচার ডানিরদে

সমাচার দর্পণ।

সেখানে লতকা নামে এক পুকার আঁতি
আছে তাহার স্বাধীন কাছকেও রাখ
কর দেয় না। ঘাতি বৎসর হইল এক
রাত্রা তাহারদের ওপরে আক্রমণ করি
য়াছিল তাহাতে তাহার ঐ রাত্রাকে
অতিবিস্মৃত করিয়াছে তবধি তাহারদের
নিকটে ভয় কেহই যায় না। তাহারদের
রাজধানীর নাম লতকাকোন। ঐ সিংহ
জ্বিতে ইংল্যান্ডেরদের পক্ষীয় যে শ্রীযুত
মোরে রমসেজ সাহেব আসেন তিনি ১০
মার্চ তারিখে ঐ লতকাকোনে গেলেন ও
দেখিলেন যে সে পুর্ব পশ্চিম গুয়েতে
পরিপূর্ণ ও নানা শস্যেতে শোভিত অত
এব ঐ সাহেব সেখানে থাকিয়া ব্যবহার
করিতে লাগিলেন ও বুঝলেন যে কোন
বাঁহী নাই সকল সুন্দর ফল চসিতেছে
কিন্তু ১৫ তারিখে ঐ রমসেজ সাহেবের
জাতিগির নিকটে এক গুমের লোকেরা ঐ
সাহেবের চাকর লোকেরদিকে খুন
করিল ও আপনারা অস্ত্রবাহী হইয়া মুক্ত
যে পুস্ত হইল। তাহা দেখিয়া রমসেজ
সাহেব অন্য কোন পথ না দেখিয়া আ
পন সৈন্য লইয়া তাহারদের ওপরে আক্র
মণ করিলেন তাহার তিন শত লোক
এক পাছাত পলায়ন করিল এবং স্বাধীন
শ্রীযুত গিল্ডার সাহেব রোহিলার ঘোড়
সওয়ার লইয়া তাহারদের পক্ষাভিগে
গেল। তাহার আশ্রিতদের বিপক্ষ
সৈন্য পক্ষাভিগে আসিতে দেখিয়া পুখম
বালকেন করিল তাহাতে কিছুকরিতে না
পারিয়া এক কুঠার লইয়া রমসেজ হইয়া
ঘোড়সওয়ারদের নিকটে গিয়া কতক
লোককে কাটিল তাহারদের মধ্যে ঘাতি
অন্যদের ওপরে দাঁড়াইয়া অতিমার
করেন মুক্ত করিল পরে তাহার ঐ শব্দ হইয়া
গেল। এই বর অনেক ফলপার্থী মুক্ত
করিল পরে যখন তাহারদের আশ্রিত

লোক যারা পড়িল তখন অবশিষ্ট লোক
পলায়ন করিল।

পরে রমসেজ সাহেব শ্রমিলেন যে তা
হার তৎপুত্রের কোলালির ডাক বন্ধ
করিয়াজে এবং ঐ সাহেবের মাথা মাটি
গুী আসিতেছিল তাহাও তাহার রোহি
করিয়াজে। পরে রমসেজ সাহেব ঐ গুম
যেদিলেন। তাহাতে তাহার অশ্রু
লইয়া পুস্ত হইয়া রহিল এবং ইং
ল্যান্ড সৈন্যের ওপরে দান ও ইটে ও পাথর
পুড়িতে লাগিল। তাহাতে মা
হেব ঐ গুম দাহ করিতে আঁজা করি
লেন। তাহারদের বালক হইল তাহা
রা কেবল এক কুঠার লইয়া ইংল্যান্ড
সৈন্যের ওপরে আঘাত করিতে লাগিল
তাহাতে তাহারদের সৈন্যের তিন ভাগ
নাশ হওয়াপার্থী মুক্তজ্বিতে দাঁড়াইয়া
মুক্ত করিয়াজিল এবং আপনাদের এমন
বিপক্ষকোনে পেরোপন্ন হইয়া ফরাচাই
ল না কিন্তু তাহারদের যে ফরাচাই
ল তাহা এক সাহেব ফরা করিয়া আপন
জাতিগিরে তখন পঠাইলেন।

এই মুক্ত সমাপ্ত হইল ঐ সাহেব তা
হারদের অস্ত্রনাশ দেখিয়া দয়া করিয়া
এবং তাহারদের সাহন দেখিয়া তুচ্ছ
হইয়া তাহারদিকে ক্রমলকেন করি
লেন যে তোমরা আর দুঃখতা করিল
নিঃশেষ হইরা ততএব আমারদের যে
ডাকের চিঠিপুস্ত লইয়া তাহা দেও
ও আমারদের সহিত শর্তে ভাগ
কর। ইহাতে তাহার সম্মত হইল ঐ
সাহেব তাহারদের সহিত এক মজিব
করিলেন।

ইহাতে ঐ আশ্রিত বাঁহী হয় যে
কোলালী বাঁহীদুদের রাজধানীর সিংহ
হারের সম্মুখে এমন মুক্ত লোক অসংখ্য
কিল।

শ্রীযুত রিকেলস সাহেব।

শ্রীযুত রিকেলস সাহেব এডমন্ড
অনেক কাল ছিলেন ও কলিকাতার
মুণ্ডিয়াকৌন্সিলের অধ্যক্ষপাতি ছিলেন
এবং সে কর্ম ভাগ করিয়া ইংল্যান্ডে গি
য়াছেন ইহা পূর্বে জানা গিয়াছে। এখন
শ্রুতি গেল যে তিনি ইংল্যান্ডে মহানভার
অন্তঃপাতি এক জন হইয়াছেন।

আকাশীয় বস্ত্র।

মান পাঁকে হইল ইংল্যান্ড দেশে এক
সাহেব জল মীতর দিয়ার কালে লোক
না ভবে এই কারণ এক পুকার বস্ত্র মণ্ডি
করিয়াজে তাহার মধ্যে খুঁ দিয়া তাহা
আকাশ পূর্ণ করিলেন সে দ্রুত হয় তাহা
আপুয় করিয়া জল অনায়াসে গমন
করিতে পারা যায়। সে বস্ত্র পরি
ধান করিয়া জলের মধ্যে এমন ঢলা যায়
যে যেমন মৃত্তিকার ওপরে হস্ত বাঁধার
না করিয়া লোক হাঁটয়া যায়।

হঠাৎ মৃত্যু।

পূর্ববর্তী গুমের ডাকবাহীরা রায়
মোচী চাকর পরমিটের ঘরে মুখরিগি
কয়ে নিযুক্ত ছিলেন কতক দিন হইল
নি আশ্রিতদের অসংখ্য সমাচার শুনি
য়া তাহা হইতে বিদায় হইয়া বাঁহী আঁ
য়াছিল পরে তাহার মাতার আরাগী
হইলে কতক দিন পরে বৈশাখ মাসে
শবে এক দিন তিনি মোচী কপি
আপন আশ্রিত লোকের পি
বার জন্য পত্র লিখিয়া
করিতে লাগিলেন

সমাচার দর্পণ।

ওরাইয়া দিতে লাগিল। এক লোটা তল
আপন মস্তকে ঢালিয়া দিবার লোটা লই
হার কালে সে স্থানে মূর্তিপূজা হইয়া পড়ি
লেন। পরে আর ২ লোক আসিয়া তাহা
কে মৃত দেখিল। ইহার পূর্বে তাহার
কোন পাঁতা হয় নাই। পরে তাঁহার লি
খিত পত্র তাহার মৃত্যু সম্বন্ধে লিখিয়া
তাহার বন্ধু লোকেরা কলিকাতায় পাঠা
ইল।

মরণ।

লবহীনের শিবনাথ বিদ্যাভ্যাস্ত্রিত ভট্টা
চার্য্য কতকদিন হইল পরলোকগুস্তি হইয়া
ছেন তিনি বালাবাহি ব্যাকরণাদি পাশ্চা
দীয়ায়ন করিয়া অনেক পাশ্চৈ বিদ্যোপা
র্জন করিয়াছিলেন পরন্তু তাঁহার তর্ক
শাস্ত্রীয় বিদ্যার ক্ষতি অসামান্য হইয়া
বহুদেশবাসিনী ছিল। এবং তিনি
স্বনিজ শঙ্করচর্য্যাদি ভট্টাচার্য্য সম
কালে পুণ্ড্র ভীতে নিবর্ত দুরদেশে
গত নিযেয়দিককে তর্ক শাস্ত্রাবাপনা
করিয়া এতাবৎ কালক্ষেপ করিয়াছিলেন
এবং তাহারদেয় পিতাপুত্রের জন্ম বিহা
নুওব করিয়া রিত লোকেরা ওভয়ের
দুঃখদুঃখবৎ ওভয়ে বর্ণনা করি
তেন এবং কতক বৎসর হইল তর্ক
বাস্তবিক ভট্টাচার্য্য পরলোক গমন করিলে
তাঁহার শিষ্যেরদের পাঠকৃত ও যের
জিল না যেহেতু তাহার ই হার নিবর্তে
অবায়ন করিয়া জন্ম সঙ্কটগুস্তি হই

ওদানীল লোকেরদের ও কিছু
জিল না ই হার বিদ্যাবাখ্যা
না তর্কবাস্তবিক ভট্টা
বিল।

লোকগুস্তি হওয়া

দানীল লোকের

যের মনে সে ওভয়ের কার্য্য যের এক
কালে পুণ্ড্র হইয়াছে এই যেরদানয়ন
অন্যারা হয় এমত বুঝাশাও নাই।

লোটার মৃত্যু।

প্রতিপাতার দক্ষিণ যো- কামারতাপ্তির
থানে অনেক কাশাবাহি বনুভয় আছে
তাহা অনেক জাত আছেন মণ্ডুতি
মেথানে এক আশ্চর্য্য হইয়াছে। এক
জন রতনুত কিছু টাঙ্কা লইয়া এক বীক
গোপের সহিত একত্র ঘাইতেছিল পথ
মধ্যে তাহার দুই পুহরের মময় এখা
লে পথচলে দুই জন লোটার আসিয়া
এ রতনুতের পায়েতে লাগি মারিল।
রতনুত লাগি গাইয়া বীকির স্থানে বীক
কড়িয়া লইল এবং বীকের এক দিগের
লিকা মুলিয়া অন্য দিগের লিকা বরি
য়া বীক ঘুরাইতে লাগিল পরে লোটার
দিককে হইল যে তোর মময় মারিতে
আসিল না তোর কত লোক আসিস
আমু আমায় হাতে মকল মারিবি ইহা
কহিয়া এ বীকের বাড়ি এক জনকে
মারিল সে অচেতন হইল পরে তাহার
লাগি কড়িয়া লইয়া অন্য লোটারকে
মারিল তাহারদিককে প্রায় মূল করিয়া
আপনারা বুঝান করিল। এ অতি আ
শ্চর্য্য।

শেখ দুলাপিটারি।

শেখ দুলাপি বিষ্ণু এই শ্রুনা গেল যে
সে একাকী এক চাকর তাহার সঙ্গে বস
হইল ও অস্বহীন হইয়া পলহিতেছে।
ইগুণীয়ের সহিত তাহার মুন্সের শেষ
বিবরণ এই। যখন সে ইগুণীয় ইমলা
হইতে চলিগ কোণ দূর ছিল তখন তা

হার মজান পাওয়া গেল
গুণীয় মেশপতি তাহার লোকেরদিক
বিন দিয়া তাহারদের দ্বারা তল
মজান পাইলেন ও অস্বহীন
ওপরে আক্রমণ করিলেন।
এ ত হার চাকররা দুঃখ হইল
ও ভাবিয়াছিল যে কেহ এখানে আসিলে
পাড়িবে না এবং আপনাদের বাস
নের চতুর্দিকে চৌকী রাখিয়াছিল কিন্তু
দৈব এক স্থানে চৌকী জিল না সেই
পথ দিয়া ইগুণীয় ইমলা পুবেশ করিল।
শেখদুলা ও তাহার অতীল লোকেরা
আপনাদেরর অন্য শব্দ শ্রুয়া পুহুতি মক
ল জাড়িয়া পলহিল এবং শেখদুলা আ
পন গিলার কবচ বর্জিত জাড়িয়া গেল।
সে স্থানে বড় লনবন জিল তপুজ
কেহই দিরা পড়িল না।

শেখদুলা পুন্সের বার লোক মূল হ
ইল ও তত লোক আঘাত হইল এবং
তাহার পোষ পুশ মৃত বহুদেশবাসিনী
বালক অন্যায়তী এক ঘরে পাওয়া গেল।

সে বালকের দশা আশ্চর্য্য। শি
লক হইয়াও এই আগতের দ্বাধারিত
দুঃখ সহিয়াছে। প্রিজ্ঞাপি নামে এক ল
কাইতেরা ইহালককে তাহার পিতা
ঘরে চুর করিয়া এক গেলের মধ্যে
রাখিয়াছিল দৈব এই শেখদুলা ই
তিরদের ঘরলু করিতে এ গেল পাইল
তাহা মুলিয়া এ বালককে দেখিল তখন
ফরাসী সে বালককে আপনি পোষ
রাখিল। স্বাধারিতের সে বালক এ
ইগুণীয়েরদের পোষ পুশ হইতে
সে বালক যে মাতাবেব হস্তে আসিলে
তিল কহিল যে এই বালক তল
ও মূলিক্তি ও আনবাদ।

পুলক আসির গড়হইতে
আসিয়াছে যে শেখদুলা আসিল

সম্ভার দর্শন।

আজ্ঞান সাহেবের হস্ত সমর্পিত হইতে
হাসিনা করিয়া ঘাইতেছিল ইতোমধ্যে
পথে তাঁহার এক আত্মীয় লোক তাঁহাকে
ধারণ করিয়া কহিল যে তুমি ঘাইবামাত্র
ই-প্লাতীয়া তোমাকে জ্ঞানি দিবেক।
তাহা শুনিয়া শোমদ্বারা কহিল যে কি
জ্ঞানি দিবে কি জ্ঞানি দিবে এই কথা
ধারণ কহিতেছি জিহ্বা গোল।

আওর সাহাব।

যে আওর সাহাব হইতে আখবার
আসিয়াছে তাহাতে আলা গোল যে সে
খালফার রাজা গোবিন্দবজ্র সেই নহরে
এক জন অভিষ্টবান কীনাতির পুত্রের
লহিত আশ্রয় করায় বিবাহ দিয়াছে।
সে বিবাহের ঘটা অতিশয় এবং তৎপু
য়েশীয় তাবৎ ই-প্লাতীয়া সাহেবেরদের
মালা হইয়াছিল এবং লাও ও অন্য
ভাষিনী ও বাঁজী ও বাঁজী (হাঙ্গা) হই
রাছিল এমন মূল্য অসংখ্য হয় নাই।

বানিজ্য।

এই সম্ভারের বানিজ্যের বিশেষত্ব
আলা গোল যে এই সম্ভারে তুলার
আমদানী ও রপ্তানী ও কয় বিস্ময়ের
মূল্য অনাখ্য হয় নাই। এবং বিলাতি
জিনিসের বিক্রয় এমন ভরোনা ছিল যে
কোন আহাজ না আইলে বিলাতি জিন
সের দাম কিছু চড়কে সে ভরোনা হি
খা হইল যেহেতু যে জিনিসের যে
দাম সেইরূপ আছে আর ইহা হইতে
যে কিছু ভাল হইবেক সে ভরোনা
নাই।

কলিকাতার নরদ্বারা।

কলিকাতা নহরের খবরদারিতে যে
সকল সাহেবেরা নিযুক্ত আছেন তাহা
রা অনুমান করিয়াছেন যে কলিকাতায়
অনেক গভীর নরদ্বারা আছে তাহা
তে অন্য কোন দুরা নভিলে তাহা নটি
য়া অত্যন্ত দুঃখ নির্গত হয় তাহাতে
লোকেরদের মতত রোণী আছে। অত
এব সে সকল নরদ্বারা বন্দ করিয়া কি
কি গভীর নরদ্বারা করা যাউক।

তাহাতে সেই নরদ্বারা বানি ও দুরা
আঁলারদের স্থান জুড় ভয়ে শ্রীশ্রীভেদে
নিকটে এই বিষয় দরখাস্ত করিয়াছে।
যে এই নরদ্বারা বন্দ করিতে তোমারদের
লাভ আছে বটে কিন্তু আমায়দের মরণ।
আমরা কোথাও বান করিব আমরা পুঁ
কলিহি এখানে বান করিতেছি এবং
যনে এমন পুতাশী করি যে আমায়দের
পুঁ শৌশ্রুজি এখানেই বান করিবে
এব যদি এই গভীর নরদ্বারা বন্দ করিয়া
ও নরদ্বারা করিয়া যেও তবে আমরা
কি পুকারে সেখানে বান করিব যেহেতু
সেখানে বানক ও কাক ও কুকুরপু
ভিরা দিলে আমায়দের মন হার করিবে
ও রহিতে দুঃখ বিলাসেরা আমায়দিকে
লিখা ঘাইতে দিবে না। অতঃ এই
নরদ্বারা বন্দ করিবার অংশ সাহেব
লোকেরদের এই বিবেচনা করা অভিকর্ত
বা যেহেতু এমন পুতান পুজারদিকে
তাঁহারা যেওনা করত।

এক রসিক লোক কোঁড় করিয়া এই
কি দরখাস্ত শ্রীশ্রীভেদে নিকটে মত
দিয়াছে।

বাহার খাত।

| জিনিস | মোদ | অবধি | পার্স |
|---------------|-----|------|-------|
| নুপারি | ১ | ৫৮ | ৫৮ |
| কেরা তেল | ১ | ১৪ | ৫০ |
| গাছ ঘরিত | ১ | ৩ | ৪৮ |
| নারিকেল তেল | ১ | ১৪ | ১৪ |
| তুলা কাছাকা | ১ | ১৪ | |
| আলা রসপু | ১ | ১৮ | ১৮ |
| পাটনাই আলা | ১ | ১ | ১৮ |
| চাল পাটনাই | ১ | ৩৮ | ৩৮ |
| পাছতি উত্তর | ১ | ১৮ | ৩ |
| পাছতি মধ্য | ১ | ১৮ | ১৮ |
| মুগী উত্তর | ১ | ১৮ | ০ |
| মুগী মধ্য | ১ | ০ | ০ |
| বাগার | ১ | ১৮ | ১৮ |
| দুধা মোদ | ১ | ১৮ | ১৮ |
| পাটনাই হুত | ১ | ১ | ১ |
| অভির জালি | ১ | ১৮ | ১৮ |
| উত্তরমারা হুত | ১ | ১৮ | ১৮ |
| মধ্যম হুত | ১ | ১৮ | ১৮ |
| উঁসা হুত | ১ | ১৮ | ১৮ |
| মধ্যম উঁসা | ১ | ১৮ | ১৮ |
| নীল উত্তর | ১ | ০ | ০ |
| অবধ পুকার | | | |
| নীল | ১ | ১৮ | ১৮ |
| মোরা উত্তর | ১ | ৩৮ | |
| মধ্যম | ১ | ৬ | ৬ |
| চিনি কাণী | ১ | ১৮ | |
| মধ্যম | ১ | ৮ | ৮ |
| ধার চিনি | ১ | ৪ | ৪৮ |
| তেতুল | ১ | ১৮ | ১৮ |
| তামাক | ১ | ৪৮ | ৪৮ |
| চন্দন | ১ | ১৪ | ১৪ |

এই সম্ভারের দর্শন পুরানপুরের ছাপাখানাতে পুস্তকভাবে লিখা হইয়াছে। বাহার লভনের আবশ্যক হইলে তিনি পুরানপুরের ছাপা
খানায় নাম পাঠাইলে লভনের কারণ তাঁহার নিকটে পাঠান হইবেক তাহার মূল্য মাসে এক টাকা যদি ছাপার করিবারে যদি
কারণেরা নহে তবে তিনি পুরানপুরের ছাপাখানাতে কলার বিবাহের তাহার নিকটে পাঠান হইবেক।

সমাচার দর্পণ

১১ সংখ্যা।

শনিবার। ১৪ জুন সন ১২৮০ ১১ আশ্বিন সন ১৯১৭

দর্পণে ঘূষ বৌদ্ধধর্মের কার্যবিবরণ।

বৃত্তান্তিক আনন্দ সমাচারের দর্পণে।

কোলালির কাণ্ড।

কোলালির শতকরা ছয় টাকা মূল্যের কাণ্ড করিতে হইলে শতকরা এক টাকা চারি আনা প্রিমিয়াম বিস্ময় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা আট আনা প্রিমিয়াম।

সম্ভাষের পঞ্জিকা।

| ক্র. ক্র. | শ্রমিক | মূল্য |
|-----------|--------|-------|
| ১৬ | শ্রমিক | ১০ |
| ১৭ | শ্রমিক | ১০ |
| ১৮ | শ্রমিক | ১০ |
| ১৯ | শ্রমিক | ১০ |
| ২০ | শ্রমিক | ১০ |
| ২১ | শ্রমিক | ১০ |
| ২২ | শ্রমিক | ১০ |
| ২৩ | শ্রমিক | ১০ |
| ২৪ | শ্রমিক | ১০ |
| ২৫ | শ্রমিক | ১০ |

ইস্তাহার।

ইস্তাহার দিওয়া ঘাইতেছে যে সন ১৮ ১০ মাসের ১০ জুলাই মতাবক সন ১৯ ১১ বাবীলা ৩ আশ্বিন রোজ বুধবারের এবং তাহার পর যেতক মকল বিকয় হয় মোকাম কলিকাতার একশেষকমে ১১০০০ মোল নবন মিলানো বিস্ময় হইবে ঐমুত কোলালি বাহাদুরের সন্মতিকারের নবন ডায়েরি উপনীল নীচে লেখা ঘাই তেছে ফিল্মটি ১০০০ মলের হইবেক মি সের গ্রীক ৮২ সিক্কার এজন ফিল্মটি ৪ টাকা বাবান্দা দিয়া ঐক্সিট্রাল সন্মাদা পাক্সিট্রিক ৩ নবন প্রাকামহইতে চাকান, কুয়িক মোকামকর, উপনীল

বত ইস্তাহার নামা নদর নয়ক বস্তুরে নটকান গোল জাহাতে মকল আট হই বেক যে ১১০০০ বার লক্ষ মোল নবন বিস্ময় হইবেক তাহার নিম্নলিখিত সন্মত সহিত উপনীল।

| নাম | নবন আমানত নবন টাকা |
|---------------|--------------------|
| কোলা | লেনবা লেনবা মুলত |
| হিজলী | ১৭০০০ |
| ডায়েরাল | ১০০০০ |
| ১৪ পরনগীনা | |
| পূর্ণিমা | ১৮০০০ |
| ঐ পাক্সিট্রিক | ১১০০০ |
| হুদা | ১১০০০ |
| চাক্সিট্রিক | ১০০০০ |
| শালিমা | |
| কটক নামা | ১৮১০০ |
| কটক কলক | ১০০০ |
| মানদরাজ | ১০০০০ |
| মকুদি | ১০০ |
| সৈনজব | ১০০ |
| সেকী | ১০০ |

সমাচার দর্পণ।

সি-হলদীপের ওপূর।

সি-হলদীপহইতে মো-মানদরাজ সমাচার আমিনাডিল সেই সমাচার সে মানদরহইতে এখানে পাক্সিট্রিক যে মা

নাই লোকেরা সি-হলদীপের লোকেরা যেই সমিতি ঘিদিয়া ই-পূরীয়েদের রিপ রিপে গুটিয়া কলহ করিতেছে তাহার দিগিকে রয়ান, করিতে বতক ই-পূরীয়ে সৈন্য সেখানে গিয়াছে কিন্তু আল হয় যে তাহার মল কিছু হইবেক না সে এমত তুহ বিবরণ।

সিদ্ধি।

বোধই হইতে সমাচার আমিনাডিল যে সিদ্ধিয়ার বত বেশ আশ্রয়ন করিয়া রে। সে সমাচার গুনিয়া বোধইয়ের অই। ক তাহার দিগিকে দূর করিবার কারণ জয় হাজার সৈন্য সেখানে পাক্সিট্রিক।

হলুৎ দেশ।

পত জামুজারি মাসে সমুদ্রে আল অমিলিয়া পাহাৎ অতিফল করিয়া যেকের মরো আল আশিরা লোকের ঘর বার কোটা ইয়াহুত গারিয়া দেশ জামুজারি হই য়াকে এবং অনেক লোক এ অনেক গরি যোকা ভোকা জাণালবুত্তি মাদা পতি য়াকে।

তকা নান।

মো-শ্রামপুতের লিহটবতি বস্ত পুর গুয়োর সম্মুখে গারিতে অতি ইহ- এক তকা অনেক দিনপাক হইয়াছে তা হাতে লোকা পুত্তির গমনাগমনে জ তাহে কহ হয় আতএব সেই তকা দূর করি বার করন ঐঐমুত গিরলর বইমুতের

সমাজের দর্শন।

কিন্তু যখন হইয়াছে তখন এক জনের
পুত্রের মৃত্যু হইয়াছে তখন পুত্রের
মৃত্যু হইয়াছে তখন পুত্রের মৃত্যু হইয়াছে
তখন পুত্রের মৃত্যু হইয়াছে তখন পুত্রের
মৃত্যু হইয়াছে তখন পুত্রের মৃত্যু হইয়াছে
তখন পুত্রের মৃত্যু হইয়াছে তখন পুত্রের
মৃত্যু হইয়াছে তখন পুত্রের মৃত্যু হইয়াছে
তখন পুত্রের মৃত্যু হইয়াছে তখন পুত্রের
মৃত্যু হইয়াছে তখন পুত্রের মৃত্যু হইয়াছে

মোক্ষলাভ।

এক জনের তরলি নগরে এক জন
সাহেব এক সন্তান হাজার টাকা দান
করিয়াছেন সে সমস্ত হাজার টাকা গর্তবর্তী
কিন। মরনের পূর্বেই টাকাগুলি এই মত
ব্যয় হইয়াছে কিয়দংশ যে হাজার মরনের
পূর্বেই হাজার টাকা পাইবে এ কথা
কিছই হাজার টাকা পাইবে যদি কল্যা
কল্যা করে তখন হাজার কল্যা পাইবে
আর হাজার টাকা পাইবে। পরে
সেই এক পুত্র এক কল্যা কল্যা অশ্লীল
এমন হাজার পুত্র আশী হাজার পাইবে
ও কল্যা কল্যা হাজার পাইবে তাহার
হাজার মাতা কিছু পাইবে কিনা। এমত
মোক্ষলাভ ই-প্রভৃতির রত আশাতে হই
কেন।

বিশ্বদর্শন।

ই-প্রভৃতি এক বিবি ই-প্রভৃতি হইতে স্থান
যেই যাইতে সন্তান যাইতে অভিনয় পু
কাল বিবাহিত হইয়া কল্যাণকে সন্তান
কল্যাণ মিলিল যে যদি এ বিবাহ হইতে রক্ত
পাই তবে এই মত বিবাহ মুক্ত পুত্র জন
কে চাহি নত টাকা দিব। পরে আশি
রক্ত পাইয়া কলিল যে মারকুরি তাহার
কল্যাণকিন তাহাতে এক পুত্র নী রক্ত
পাইয়াছে তাহার সিকটে চাহি নত টাকা
পাইয়াছেন।

রক্তবৃত্তি।

গত সিন্দুর মনে এক নগরে বেকি
যু য়েণে অশ্লীল হই চাহি যখন যাইতে
অভিজান্য রক্তবৃত্তি হইল এক-যে
পাত্র সে বৃত্তি পড়িল সে সকল পাত্র
রক্তবর্ণ হইল। এ তাহার সিকটে আর
এক নগরেও এই মত রক্তবৃত্তি হইল। এ
এলমেণে য়েণ এক নগরে এ পুত্রের বৃত্তি
হইল তাহাতে সেখানকার এক লোক
এক পাত্র করিয়া সেই বৃত্তিধারা হইয়া
এক গ্লান শিশিতে চাঙ্গিয়া যেখান যে
রক্তবর্ণ অশ্লীল হইল হইল এক-যে
হাল সে জন বাহিল সে হালও অশ্লী
তব হইল এ সে জন ত্রিহুতে আশ্বাস
করিয়া যেখান যে তাহাতে সৌহার ও
জ্বরে রস সন্তান হইল। সে বৃত্তির
অল শিশিতে পুত্রের তাহার কারন ও গ্ল
অলিতে গৌণভীতে আনদান লোকের
যে সিকটে পাত্র গেল।

এলাঙা।

এলাঙা রোগ এডমেণের যমজ ভাগ
করিতে পারে সেই সমস্তের পাওয়া গেল
যে এলাঙারের পুত্র মোক্ষলাভ পাপপুত্র
হাল এলাঙা রোগের অভিনয় বিকল
পুত্র হইয়াছে। এক-যে জিনা
বীজভাঙেও অত্যন্ত পুত্রের যমজ ই
রোগে বীরভেদে সে পুত্র রক্ত পাত্র না।

ভাঙাতি।

গত বিবাহের রাশিতে মোক্ষ বীণাই
নগরকার নগরী গুলি এক কল্যাণের
বাগিতে ভাঙাতি পাত্র এক বিবাহ নী
কে খল করিয়া আর এক কল্যাণের বাগী
তে যমজক পাইয়া মিলিল। পর দিন
পুত্রজনক বাগীপাত্র ভরল লোক গিয়া
অশ্লীল সকল কল্যাণ তাহারের বীর

অশ্লীল পাত্র করিয়াছে। এক-যে
কল্যাণ হইতেছে।

নগর।

শেষ সমস্তের বাগী আলা গেল যে
ই-প্রভৃতির বাগীপাত্রের ভাঙাতি আশি
যে যাইতে এক অশ্লীল বাগিতে নিমজিত
হইয়া ভাঙাতি করিতে গেলেন। এই
সমস্ত পাইয়া রাশি অশ্লীল বীণ
অল লোক তাহারের সকলকে এক কা
লে নষ্ট করিতে একশ্লীল হইল। ও
আরো এই অশ্লীল পাইয়া তাহার
গিকে বীরতে লোক পাইলেন। এ বীণকে
রা এক অশ্লীল যুগে যুগে বসিয়া
কিন এ সমস্তে বাগি ভুলিভেলি ও
বীরিতে ও কল্যাণ য়েণের ওপরে কল্যা
ভাঙাতিবীরের লোকেরা এই যুগে পুত্র হই
হামরা এক অশ্লীল তাহার এক গ্ল
মাত্র তাহাতে সে মিলিল। পরে যৌ
মোরেরা গিয়া সেই ঘর যেখানে তা
হারা ঘরে আশি লাগাইল। তাহাতে
বীণের কল্যাণে অশ্লীল পলাইল বীর
নয় অশ্লীল বীণ পড়িল কিন্তু মরবার
পলাইল। দুই পুত্র কল্যাণ রাশির
কাল ভাঙাতি ইচ্ছার সন্তান মিল যে
এই বাগিকে যে বীরতে পাইবে সে
আই হাজার টাকা কল্যাণ পাইবে।
পুত্রের সে আশি ঘরে বীণ পড়িল।

ই-প্রভৃতি মৃত বাগী।

ই-প্রভৃতি মৃত বাগীপাত্র অভিনয় বাগী
কিনেন কল্যাণ পাত্র পাত্র হইল তাহার
ভাঙাতি করিতে করিতে করিতে
এক লোক পাত্র হইয়াছিল তাহাতে তা
হার কল্যাণ কল্যাণ কল্যাণ কল্যাণ

মার্চ মাসের শেষে গায়কবাড়ী রাজাবাড়ী
এক অমোদ্যর ও গণেশ জল মিলারহী হার
কাজীরা হুগলি করিতে যাইতেছিল নথি
যাইতে বোম্বাইভিত্তিক। তাহারদের স্থানে যে
কিঞ্চিৎ নলুগু জিন দফার হুগলি করিয়া
কাজীরা নলুগু ও মিলারহী তাহারদের
ওপরে আশ্রয় করিতে তাহার। তাহারদের
তাহার। কেবল এক জনকে যাত্রা করিয়া
বীরবাণ গতে লইয়া গেল। তাহার
জিজ্ঞাসা করিলে সে কহিল যে যাত্রা
তাকাতির মাঝে এক জন আমি এখন ও
কামতলের মহাবীর রাজাবাড়ী স্থানে
অবস্থিত তাকাতির। তাহার। ইহা শুনে
নাহবের মুনসী মহাযহ আতা নলুগু
ন বোম্বাইয়ের নগরে করিয়া এ রাজাবাড়ী
গেল। এখন এ তাকাতিরদের অনুসরণ
করিতে লাগিল। তাহার। রাজাবাড়ী
মাঝে পুথিই হইলে সেখানকার লোকের
না সেই গুণে যোগিল। পরে মহাযহ
আতা এ গুণের লোকদের লিখিত
তাকাতিরদের নলুগু করিয়া যাত্রা গুণের
লোকেরা গুণি মারিল তাহাতে মহাযহ
আতা গুণি মারিল, তাহারদের অনেক
লোক নলু হুগলিতে তাহার। ক্রমা গুণ
না করিল তখনই যোগিল সে যে তাকাতির
হইতে পুথিবী হইয়া বিশেষ লোক
আসিতেছে। তাহার। যোগিয়া মহাযহ আতা
পলায়ন করিল।

সমস্যাচার দর্পণ।

ভাটতে তাহার নাম দিয়া সে আট
সেনাপতিকে সম্মান করিল। এই বোম্বা
দ্বারা ইহাতে অনন্যদেয় হইয়া বরফ
ও চিনি ও বাট নামে সমুদ্রের যাত্রাবর্তি
এক বীন এই ভিত্তি গড় লইল। ইহাতে
অনুমান হয় যে সেই গড়ের অধীক্ষক
ইহারদের সহিত একতর হইয়াছিল
যেহেতু হারকার অতীত বাট ওপাশে
বাইবার কারণ তাহারদিকের লোক
হইয়াছিল।

এক-কি ভিত্তিতে গড়েরদিক রাজার
স্বাক্ষর অনেক দিয়াছিল তাহার।
বোম্বাটিকারদের পুত্র এক গুলি মামিল
কর অতঃপর তাহার কল্যাণে গড় লইল।

সমুদ্রি ত-পুত্রের বীরবান্ধব ভিত্তি
জান-একামত, তাহার অধিকার
করিয়াছে। এক-তাহার বীরবান্ধব গড়
ফেলি ও করিল যে, যখন হাতল
মুদ্রিত এই গড়ের দ্বারা তখন এক
গড় অধিকার করিয়া সকল লোককে
মূল করিব। পরে এই গড়ের সীমাহারা
আট জন নির্যাসীর পুত্র-মৃত্যু হইয়া
বোম্বাটিকারদের সহিত যুদ্ধ করিতে স
ক্ষম হইল না তাহাতে হাতল সারহ
সে গড় না থাকিয়া বোম্বাটিকারদের
সমুদ্র দিয়া ক্ষমের বাহিরে গেলেন তা
হারা তাহারে কিছু বলিল না।

মুদ্রণ।

মো-শিখিপুরের রাজস্বায়সন প্রমাণ
পাঠায় অনেক কালপর্যন্ত প্রযুক্ত হুজির

সাহেবের হেতুনি কথ্য নিযুক্ত হই
য়া, অনেক লোকের সাহায্য ও সা-
ক্য করিয়া মোজিল্যকন এতাব-কাল
কেন করিয়াছেন সমুদ্রি তাহার পর
লোক শান্তি হইয়াছে। এক-সাহেব
তাহার কল্যাণ ভাটকে সেই কথ্যনিযুক্ত
করিয়াছেন তিনিও প্রযুক্ত মত কথ্য
করিতেছেন।

সাগিন্দ

মো-সাগিন্দ ই-প্রতীক্ষারদের বশত
পর ইয়াতে কলিকাতাহইতে লিখ্য
লিখ্য সাগিন্দপার্যন্ত এক ভাল রাহা
করিবার কারণ ই-প্রতীক্ষার অলক
চেষ্টা করিয়াছিলেন সমুদ্রি সে রাহা
অতিমুদ্রকণে সম্বন্ধ হইয়াছে সেই
রাহা দিয়া তাক চলিতেছে আরও লোক
পুত্রিও চলিতেছে। এখন বাগানাই
তে সাগিন্দ আতাই শত কোণ প্রত-এ
এখন সাগিন্দ অতি লিখ্য জান হয়
পুত্র এখনইহাতে সাগিন্দ যাইতে হই
লে কালী দিয়া যাইতে হইতে কিরা
গজায় বেশ দিয়া যাইতে হইতে তাহাতে
খিলম্ব হইতে। এখন লুডন পথ অল্প
কালে সমস্ত গমলে সাগিন্দ প্রত্যা
যাইবেক।

ইহাতে মো-সাগিন্দ কলিকাতা ও
বোম্বাই শহর এই দুয়ের যাত্রাবন্দ সাগ
পুত্র ত-পুত্র সাগিন্দহইতে বোম্বাই প
মাত্র এক নবীন রাহা করিতে ই-প্রতীক্ষার
দের উদ্যোগ আরে তাহা নিরীহ হইলে
কলিকাতা ও বোম্বাইর পুত্র সমস্যাচার আ
নিতে যাইতে পারি।

বাকার ভণ্ড।

| বিনিয় | মোল | অবধি | পারি |
|---------------|-----|------|------|
| সুপারি | ১ | ১০ | ০৫ |
| জেলকাইল | ১ | ১০ | ০৫ |
| গাছ মরিচ | ১ | ০ | ৪০ |
| নারিকেল তৈল | ১ | ১৫ | ১০ |
| কলা কাঁহারা | ১ | ০ | ১০ |
| আব্বা রসপুর | ১ | ১৫ | ১৫ |
| পাটনাই আলা | ১ | ১ | ১০ |
| চন্দ্র পাটনাই | ১ | ১০ | ১০ |
| পাছড়ি উত্তম | ১ | ১৫ | ০ |
| পাছড়ি মধ্যম | ১ | ১০ | ১৫ |
| মুগা উত্তম | ১ | ১ | ১০ |
| মুগা মধ্যম | ১ | ১৫ | ০ |
| বালান | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মুগা গেম | ১ | ১০ | ১৫ |
| পাটনাই বুট | ১ | ১ | ১০ |
| অফুর ভালি | ১ | ১০ | ১৫ |
| উত্তমপারা বুট | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মধ্যম বুট | ১ | ১০ | ১৫ |
| উত্তম বুট | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মধ্যম তৈলা | ১ | ১৫ | ১০ |
| বীল উত্তম | ১ | ০ | ০ |
| অব্বা পুকার | ১ | ০ | ০ |
| বীল | ১ | ০ | ০ |
| কোরা উত্তম | ১ | ০ | ০ |
| মধ্যম | ১ | ৪৫ | ০ |
| চিনি কালী | ১ | ১০ | ০ |
| মধ্যম | ১ | ১৫ | ০ |
| খার চিনি | ১ | ০৫ | ০ |
| কোল | ১ | ১৫ | ১৫ |
| জামাক | ১ | ৪৫ | ৪৫ |
| সুদন | ১ | ১৫ | ১৫ |

এই সমস্যাচার দর্পণ পুরানপুরের জাপানবান্ধব পলিয়ারে পাঠায় হয়। বাহির লগনের জাপানবান্ধব কিলি পুরানপুরের জাপানবান্ধব
জাপানবান্ধবপাশেই লগনের জাপানবান্ধব কিলি পুরানপুরের জাপানবান্ধব কিলি পুরানপুরের জাপানবান্ধব কিলি পুরানপুরের জাপানবান্ধব
কিলি পুরানপুরের জাপানবান্ধব কিলি পুরানপুরের জাপানবান্ধব কিলি পুরানপুরের জাপানবান্ধব কিলি পুরানপুরের জাপানবান্ধব কিলি পুরানপুরের জাপানবান্ধব

दुष्टाङ्गिनिह जानह नमोऽङ्गिका रजद्वय ॥

... ..

সমাচার দর্পণ

সাহেবের জিল এইফল তাহার যৌত
হইয়াছে।

এ ভালুক জোট বটে কিন্তু সং-গুতি খ
দ্বিধ করিয়া ই সাহেবের যৌত হইলে ই
ভালুকের বক্সা বাকী মরশণে তাহার
আধায় এক তাহার কিছাভের বোধিধি
করণ মরশণ বক্সে আদার ব হয় নাই
ভাষিত অনেক পুষ্টি হইবে এ কারন ইহার
ভালুকের তহবিল এখানে ও তহবিল ক
দিলে অবিক মূল্য হইতে পারে। অত
এব তাহারিগের প্রমত্ত কিছাভের ভালু
ক বরকার হয় তাহারিগের ওভিত যে
এই সময় খরিদ করেন মো- কল এক
মিল সাহেবের নিকটে এ ভালুকের আর
বিস্তারিত এখানে হইলেন কাগজপত্র
বুখি করিবেন।

প্রিয়ানা জিলা কমিটি।

এক ভালুক প্রিয়ানা বুগিয়া চক মুখ
বাহাত এবং চক মজার কুকাভ বিকি
সেলের ১৮৪৩ বর্ষ আনা ভের গাভা হি
স্যা ও আর এক ভালুক ই পরগণার চক
অধিকা কমলনাগায়নের ১০ টালি আনা
হিসাব।

এব আর এক ভালুক মোস খরিদ
পরগণা ওলাদাবী বাহাদুরী।

সমাচার দর্পণ।

রাজকল্যাণ নিয়োগ।

ঐযুত জে এচ বার্ন সাহেব কলিক
তার বেটি আপনাদের রেজকর হইয়া
ছেন।

ঐযুত মি কারিও সাহেব জিলা বাকর
গঞ্জের আবদুল রেজকর হইয়াছেন।

ই-গুণের মহানভা।

ই-গুণে ১৮ খিষ্ণুআরি ডারিয়ে মহা
সভা পের বার বসিয়াছিল ১৪ মার্চ ডারি
যে ডারিকার বাহশাহের আভাতে তাহা
ওঠিয়া পুন্নারি লুণ মহানভা বসাইবার
কারন বাহশাহের কাজ হইয়াছে। এই
কারন ই-গুণে দেশের নানাপ্রদেশে মহা
বটা হইবেক।

তুরহী দেশ।

তুরহী দেশ হইতে সমাচার আসিয়া
ছে যে তুরহী দেশের সুবাদ ওজীর আপন
ওজীর কমা হইতে বিদায় হইয়াছেন
যেহেতুক ডিলি বাহকাপুদু কয়েক
অফিস হইয়াছিলেন। এবং আশী আশী
পাকাল নামে নুতন ওজীর তৎপরাতিথিক
হইয়াছেন তাহার বয়স ২৮ বর্ষ বস
দের লুল।

কলিগ দেশ।

কলিগ দেশে টে নদীর তীরে এক
অন ভ্রমণ করিতেছিল ইতোমধ্যে ই নদী
তে এক শিগা দেখিল ও বহুদূর দূর
আস করিয়া তাহা তীরে ওঠাইল। পরে
সে শিগা কেবল জায়গ ভেঙেই পরিত
দেখিল। এবং চমৎকার আন হই
য়াছে।

বাজী।

লণ্ডন শহরে টারি অল সাহেব বাজী
কামিয়া যেতিয়েছিল তাহার মধ্যে এক
খল এক মিলিট কল আই-কলার মধ্যে
আড়াই হাজার টালি তাহাভের লোকা

তে অর্থাৎ হইয়া দুই শত বারি টালি
পাইল।

লসিকা দেশ।

লসিকা দেশে ওপদীনে কতক গোরা চান
লোক আত্মীয় লোকের বাড়িতে অসিল
করিবার কারণ গেল। এবং সেখানে
এক ঘর খীও মিলিল তাহাতে ই যুতী
খীর পুতি দুই জন পুন্নারি মলোকার
হওয়াতে পরের জীর্ষ অসিল ইহাতে
ই দুই জনের বিরোধ হইলে এক জন
অভিযোগ করিয়া অন্য জনের ওপরে আ
হয়ন পুন্নারি তাহার লসিকাতে দেশ
করিয়া গুণি জিজিয়া দেখিল। পরে সে
পলাইয়া বনে গেল ও-ফলান বিচার
কর্তার লোকের তাহাকে ও সেই খীকে
জেলখানাতে বন্দী রাখিল। পরে বিচার
দিলে হইল যে সে খী আপন কামীকে
পরিভাষা করিয়া এই পুন্নারি সহিত মি
লিয়াছিল। এই আঘাতে ই পুন্নারি এক
ইন্দিয়ালি হওয়াতে সে জন কুশলিত
হইল।

পাগাল।

লণ্ডন নদীর গাভ দিলেবুর মাসে এক
অন খী লোক মরিলে তাহার কবরের
কারন অন্য এক খী সেই ঘরে গেল ও
আর কমা করিয়া অসল কুরীতে হাত
প্রকাশ করিতে গেল ও সেখানে অত
আত বহু শব্দ শুনি ও এক চমৎক
কল দেখিয়া ভীত হইয়া অন্য লোক
সে ভাঙিল। পরে অন্য লোকের ঘরে
চতুর্বিধ খেলিল কিন্তু ই ঘরের মধ্যে
কিছা বিদ্যা ঘর বহু লোক অন্য লোক
কোমর হইয়াছিল। পরে লোক
আসিয়া আসিয়া চাকি মিলিয়া লোক

সমাজের দর্পণ।

হাটের চীৎকার যেদিন যে এক লোক সিঁড়ির কাছে বসিয়া আসে এবং তাহার না যেখানে জিজ্ঞাসা করা হয় আসে। ও তাহারে অতিশয় মজিল দেখিয়া জিজ্ঞাসা যে সে অনেক দূরদেশ পর্যন্ত যাত্রা করি করে কলিকাতায় তাহার বিধান। তাই ও নিচিনা এ. পরীক্ষা হানে হয়ত হইয়া থাকে যেখানে গারিভের দেরি চিহ্নসমূহ লইয়া গেল সেখানে তাহারে ওতম বিচারা করিয়া ছিল। তাহা দেখিয়া সে চমকিত হইয়াছিল যে এ কি আমার কার্যের পর যেষ্টর তোমাকে মননে রাখুন। সে এই মত অনেক কথা কহিল কিন্তু সে আসন্ন হইল এবং সে অতিশয় ইহা যে তাহারে পাগল বোধ হইল। তাহার পিতাকে আহ্বানতে আসিয়া তাহার কর্তব্য জিজ্ঞাসা করা গেল। সে ওতম করিল যে আমায় অজ্ঞানতা শুধু পাগল হইয়াছে ও পুরুষ তাহারে বাস্তবিক রূপে মজিল। কিন্তু সে লোকও মন ছিল না যে অতিশয় মজিল কিন্তু আসন্ন পুত্রের প্রতি মত বহুবার তাহারে ভাল কথা যায় না ওখান আইন ইয়া তাহার দোষ গুণা করা যায় না। পরে অন্য লোক যখন তাহাকে গেল ওখন তাহারে খালাস ছিল।

শ্রীমতী যাত্রা।

গত সোমবার ১৪ জ্যৈষ্ঠ মাসে ইংল্যান্ডে জাহাজে যেষ্টর শ্রীমতী যাত্রা ইয়াছিল তাহাতে লোক যাত্রা এইরকম হয় ইয়াছিল পূর্বে বঙ্গের যখন লোক শ্রমজীবী হইয়া থাকে তাহা হইতে এবার অনেক ভিন্ন। মননে অনুমান করিলে যে পূর্বে হইতে ইংল্যান্ড লোকের কদর হইয়াছে।

চক্কা।

গত সাতাহার বঙ্গতন্ত্রের চক্কা চাকিরের বিষয় জাণিল চীৎকারিল এবং আমায় দেরি মত অন্যান্য ছিল যে বাহকে অতি ছিলে চক্কা ওটরা যাইবেক ও তাহার পরীক্ষা করিবার কার্যে গতি শনিবার ও যোগ্য হইয়াছিল কিন্তু সে সকল বিষয় হইল তাহার কার্য এই যে নিম্নলিখিত বা কং পূর্ণ করা গিয়াছিল সে নিম্নলিখিত চুক্তিতে পুস্তক হইয়াছিল চুক্তির কার্যের পুস্তক সকল অরণ্যে আসিল সে নিম্নলিখিতের জোড়ের নিকটে ছিল বন হইয়াছিল না। এই ছিল বঙ্গা নিম্নলিখিতের মধ্যে অল পু বর্ণ করিয়া সমুদয় বাক্য আদ্য করিয়া ছিল পরে তাহারে অতি দেওয়া গেল যে অতির ব্যাঘ্র অল ওপকর কি হইতে পারে সে আসিল নির্বাণীকৃত হইল।

বঙ্গসাহেব পরীক্ষা।

গত জয় মাসের মাহী বারিলা চাকির বোম্বাই ও মাদ্রাস ও পুলাশিনার এই ডিন দ্বারের বঙ্গ সাহেবের বদলী হইয়াছে। পুথ্য জগুত এলকিন্ডল সাহেব বোম্বাইর বঙ্গ সাহেবী কর্মে নিযুক্ত হইয়াছেন এবং এই সাতাহার শুভা গেল যে মাদ্রাসার বঙ্গ সাহেব জগুত সর্গ ভদ্রম মনো সাহেব মাদ্রাসায় নিযুক্ত হইয়া কর্মে নিযুক্ত হইয়াছেন এবং শুভা গেল ইংল্যান্ডের কোম্পানীর অধিক শ্রমিত জিজ্ঞাসা সাহেব পুলাশিনার বঙ্গ সাহেব বী কর্মে নিযুক্ত হইয়াছেন।

ইংল্যান্ডের চাকরি।

ইংল্যান্ডের মত বাহকদের কল্যাণের লক্ষ্যে ইংল্যান্ডের চাকরি হইয়া থাকে।

আপনার ইতিহাস ভরোনা আর না দেখিলেন ওখন ডিন আপনায় বহুমান পুস্তক বহির করিয়া তাহা দিয়া এক অনুরোধ পুস্তক করাইলেন। পরে বাহকই কে তাহা করাইলেন যে শিতা আসি আর ইতিহাস ভরোনা করি না ওতম আমায় স্মরণার্থ এই অনুরোধ আপন হস্তে রাখুন। ইহাতে বাহকই হইলার পুথ্য দেখিয়া কিন্তু হইলেন এবং অনেক অনুমান করেন যে বাহকই হইলার পুথ্য হইয়াছিল তাহার কার্য এই।

পুস্তকের বহু মজান।

১৩ জানুয়ারি তারিখে ইংল্যান্ড এক জন সাহেবের ঘরে এক পুস্তকের জাহাজী টা বাহা হইয়াছে পূর্বে পুথ্য মত শুভা যায় নাই।

পারিণ ন্যায়।

শ্রীমতী যেষ্টর রাজধানী পারিণ ন্যায় হইতে সমাজের আনিয়ারে যে সেখানে এক বঙ্গসাহেব মাহী এগার জাহাজ মার্ত শত বাম্বাই বালক ও এগার জাহাজ ছিল শত শৌলের বালিকা অজিয়াছে। ইহার মধ্যে চৌদ্দ জাহাজ নয় শত আটই ওর মজান বিবাহিতা দ্বার গর্তে অগ্নি ও আট ইজার ওলনই মজান অবিবাহিতা দ্বার গর্তে অগ্নি। এই হিসাবই দেখা যায় যে জিন মজান অজিলে দুই বিবাহিতা ও এক অবিবাহিতা দ্বার গর্তে অগ্নি।

কলিকাতার কোম্পানির কলোজ।

এই সাহেব লোকের গতি ইজাভার ওজন হইয়াছেন এবং বোম্বাইর কর্ম বাহির ওপুস্তক হইয়াছেন।

সমাচার দর্পণ

১১১ সংখ্যা।

শনিবার।

১ জুলাই সন ১৮৭০। ১৩ আষাঢ় সন ১২৭৭

দর্পণে মুখ্য বৌদ্ধবিহার কার্যবিবরণঃ।

বুদ্ধাচার্য্য আনন্দ সমাচারদ্য দর্পণে ॥

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির শতকরা জমি টাকার মূদরে কাণ্ড কয় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা চারি আনা প্রিমিয়মে বিক্রয় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা আট আনা প্রিমিয়মে।

সম্পত্তির পঞ্জিকা।

| | | | |
|---|-------|-------------|----------|
| ১ | জুলাই | শনিবার | ১৬ আষাঢ় |
| ২ | ১ | রবিবার | ১৭ ১ |
| ৩ | ২ | সোমবার | ১৮ ১ |
| ৪ | ৩ | মঙ্গলবার | ১৯ ১ |
| ৫ | ৪ | বুধবার | ২০ ১ |
| ৬ | ৫ | বৃহস্পতিবার | ২১ ১ |
| ৭ | ৬ | শুক্রবার | ২২ ১ |

বাগী বিকয়ের ইস্তাহার।

ইস্তাহার দেওয়া যাইতেছে ১০ জুলাই শনিবারে ভেবিটল সাহেবের ঐরাশপ্পের কতক বাগী লিপায়ে বিক্রয় হইবেক।

১ দফা। শহর ঐরাশপ্পুরের লিপাল ঘাটের ওপর এক বাগী তাহাতে দুই ও বাম ও বাবচিখানা ও গা বোবার ঘর ও আর ২ ঘরওয়ানেরদিকের কুঠারী ও এক বড় ঘোড়ানা ঘর যেখানে পুরে করলল মাইসল্‌বোণা থাকিতেন অম্মী মওয়াজী ১১০ এক বিঘা ভের কাঠা ঘোড়ানা ঘর অনেক মারত করিয়া লুপ্তল মেরাত্ত করি গিয়াছে।

২ দফা। ২ ঘোড়ানা ঘরের নিশাচ পক্ষি ম আর এক ঘোড়ানা ঘর আছে নীচের তালা বড় ওদাম ঘর ও বাবচিখানা ও বাতলখানা আছে অম্মী মওয়াজী ১১০ দশ কাঠামাত্র।

৩ দফা। ২ ঘোড়ানা ঘরের পক্ষিমে আর এক ঘোড়ানা ঘর আছে তাহা শ্রীযুত ছিলিরস সাহেবের জিন্দা আছে তাহাতে গাভীর ঘর ও ওদাম আছে বাবচিখানা ও গা বোবার ঘর ও ঘরওয়ানের ঘর ও বেহারার ঘর আছে অম্মী মওয়াজী ১১০ এক বিঘা পোলে এগার কাঠ।

৪ দফা। গরার বীর পুনের লিকট ১৬০ এক বিঘা আটার কাঠা অম্মী আছে তাহা তে এক পাঁকা বাগী আছে পূর্বে সে বাগী তে তলা কলনের কল জিল তাহাতে দুই ওদামপুত্ৰ অনেক আছে। ইতি সন ১৮৭০ সাল ১৩ জুন শ্রীরাশপ্পুর।

সমাচার দর্পণ।

রাজকর্মে নিয়োগ।

৩০ জুন।

শ্রীযুত জে সি স্ট্রোভেন সাহেব তা গিলিয়া ও চম্পায়ামে লিয়কমহলের অধিক ইষ্টাছিলেন।

৪ জুনহি।

শ্রীযুত স্যার সি বি আই বণা সাহেব মাতবার ও হাতোতি দেশে ইংল্যান্ডের ঘের ওকালের পেকার হইয়াছেন।

শ্রীযুত জে ইউজর সাহেব পেকিয়ে পৈ শের লিয়কমহলের অধিক হইয়াছেন। শ্রীযুত এচ সি বারবল সাহেব পূর্ব দেশে লিয়কমহলের অধিক হইয়াছেন।

শ্রীযুত জি কাক সাহেব কলিকাতার পর মিটের কালেকটরের বিতীয় পেকার হই য়াছেন।

বাগিচা।

সম্পত্তি মাধ্যমভারিট মোহনা খোলা গিয়াছে তাহাতে নৌকাঘির গমনাগ মন অনায়াসে হইতেছে এবং জুলাই আ মদানি যথেষ্ট হইতেছে কিন্তু বাগীরে তাহার মূল্য কিছু নানাবিক হয় নাই। কুঁ জোতা জুলা পুয় ১১ এলুশ টাকা করিয়া মোন বিক্রয় হইতেছে।

সর্বর মূল্য সমভাব আছে। জাতি ম কিছু দুখীলা হইয়াছে যেহেতুক বা জারে অভাব আছে। বস্ত্রের মূল্য অ তান্ন নুল হইয়াছে। সোঁরার মূল্য কিছু অলাথ হয় নাই। তিলির আমদানি কম হইয়াছে তাহাশি তাহার মূল্য অত্যাশিও সমভাব আছে।

চাল নিম্ন।

শ্রীবোঁর ওপর মোঁ বোঁকুর কয়মক

সমাচার দর্পণ।

যেখি নামে কতক সন্ন্যাস এক গৃহস্থ বান
করে সে আপন ঘরে বসি করিয়া তাহা।
তে কথক বীণা সঙ্কর করিয়া রাখিয়াছিল।
কথক দিন হইল সেই গৃহস্থ ঐ ঘরে ঢা-
ব্ব করিয়া গৃহস্থপুত্র বাহিরে নিকায়
পয়ন করিয়াছিল। কথক রাতিতে চো-
রেরা আসিয়া সেই ঘরের দেওয়ালে মিল
দিবার সরতি না পাওয়া চাঁদের ওপরে
ওঠিয়া চাল কাটিয়া মিল করিল এবং
সেই পথ দিয়া ঘরের মধ্যে পুৰিষ্ট হইয়া
কপাটের মিল খন্ড করিয়া ঐমত দিন যে
বাহিরের লোক ঘরে আসিতে না পারে।
পরে ঐ মহাশয়ের বীণা ও ওক সমুদায়
ঐ ওপরের পথ দিয়া চুরি করিল। প্রত্যু-
ত হইলে গৃহস্থ ঘরের ঢা-ব্ব খুলিল কিন্তু ঘর
খোলা গেল না পরে সে চমকিত হইয়া
কপাট কাটিয়া মধ্যে গেল ও দেখিল যে
বীণা ও ওক মাথা ছিন্ন তাহা কিছুই
নাই।

কোমিটী।

ঐযুত বিদ্যুর কোমিটীর যে ডেপুটি
কর্ম ছিল তাহা ভর হইয়াছে তাহার
লুপ্তা বাহী যে সকল স্থানে আছে
তাঁহার আদায়ের কার্য ৮ জুলাই পনি
বার তাহা সাহেব লোক ঐযুত কুটিন
ডল মেকালান কোমিটীর বাটতে একত্র
হইয়া কোমিটী করিবেন।

খীয়েন দেশ।

খীয়েন দেশের সমাচার আপা গোল
যে যে লোকেরা খরানিকার ও অনেক
সংকল্প করিয়াছেন এমন যে খ্রীষ্টমত
ও সন্ধ্যাত এক শত লোকের জমি সোনা
ও রূপা ও তাঁহাতে নির্দায় করিবার কার্য

খীয়েন দেশের বাহশাহি আজ করিয়া
ছেন।

ভ্রান্ত দেশ।

মহাশিখ ঘরের বাহশাহের ভ্রাতৃ
পুত্র এক জন পুতীন লোকের বাটীতে
নিমন্ত্রিত হইয়া আপন স্বাক্ষরে সঙ্গে করি-
য়া রাতিযোগে ভোজনার্থে গিয়াছিলেন
সেখানেইতে খ্রিষ্টা আইসন কালে
পথের মধ্যে এক জন মহাশিখ তাঁহার
পেটে ছোঁরা মারিল তাহাতে তিনি
মরিলেন কিন্তু সে দুষ্ঠ পলায়ন করি-
তে পারিল না যেহেতুক বাহশাহের
ভ্রাতৃ পুত্রের পাঁচঘর লোকেরা তাহাকে
ওৎসর্গনা করিল এবং তাহাকে অবা-
ল তে লইয়া জিহাদা করা গেল যে বাহ
শাহের ভ্রাতৃপুত্রকে মারিতে ভোমার
সরী কেহ ছিল কিনা। তাহাতে ওতর
করিল যে এই সমুদয়ের জন ভোগী
করিতে কে আমার সরী হইবেক আমি
চারি বৎসর সন্ধান করিয়া এ কর্ম করি-
য়াছি যে ব্যক্তি ঐ দুষ্ঠকে বহিয়া জিল
তাহাকে ঐ স্বী ওৎসর্গনা হইয়া দিয়া
ছিলেন পরে বাহশাহ তাহাকে ও আর
এক জনকে যাবজ্জীবন আহারোপকৃত
বৃত্তিনিকরন করিয়া দিলেন।

যে লোকের বাটতে ভোজনার্থে গিয়া
ছিলেন সে ব্যক্তি এই সমুদায় শুনিয়া
অনেক শোঁক করিল এবং তাহার বর
হইয়া পর দিবস সে মরিল।

মিসর দেশ।

মিসর দেশের ওট ভাগের লোকেরা
মহিষকার মধ্যে পাঁচজক ও লোহ ও সীসা
অনেক পাইতেছে তাহার মধ্যে ও অধি-
ক সীসা পাইতেছে। তাহার কার্য

ইজাহার দিয়াছেন যে যেব্যক্তি কল্যা-
আকরের সন্ধান করিতে পারিলে ৫
দুই লক্ষ টাকা হইয়াশ পাইবেক।

সিংহের সহিত মনুষ্যের আনুগত্য।

রোম নগরের অধীন আফ্রিকা দেশে
রোম নগরহইতে এক জন বড় সাহে-
ব গিয়াছিলেন তাহার এক চাকর বহিযোগে
অন্যত্রি করিয়াছিল তৎপুত্র তাহাতে
বই করিতে প্রবৃত্ত হইলে সে ভীত হইয়া
কোন সন্নিকটে পলাইয়া বন পুবে
করিয়াছিল। সে বনে অনেক দিন
থাকে তৎপুত্র সে ভীত হইয়া
পুত্রের ওহা আশুর করিয়া রহিল
কিন্তু কাল পরে আশুর পরামর্শে
সিংহ আসিয়া সে ওহার ঘরে ওপদিত
হইল। তাহাতে সে ব্যক্তি আতঙ্ক ভীত
হইয়া মনে করিল যে এই সিংহ যদি
আমাকে বই করিবেক। কিন্তু সিংহ
আভীরে তাহার নিকটে গিয়া তাহার
কোলে আপন পা রাখিয়া আরম্ভ করিল
তে সেহ আনাইয়া তাহার হাত চাপিত
নাগিল। তাহাতে সে আশ্চর্য হইয়া
যিল যে কথক বিদ্ধ হওয়াতে সিংহের
পা খুলিয়াছে। পরে সে কথক খুলিয়া
গিষ্টা পুত্র ও বড় বাহির করিল। ইহা
তে সিংহ অনেক স্বাধু পাইয়া সেখান
হইতে গিয়া এক হরিণ মারিল এক
ঐ ব্যক্তির পায়ে নিকটে আসিয়া রাখি-
ল। সে লোক ঐ হরিণের মাংস সূর্য
পুত্র করিয়া এক দিন আহার করিল
তাহা শেষ হইলে ঐ সিংহ অন্য কথক
আহারের দুরা আসিয়া ছিল। ঐ
কথক কথক দিন গত হইলে ঐ ব্যক্তি
পত্নীর সহিত বাসেতে বিরক্ত হইয়া
সন্ন্যাসীর কোষে জন ভোগী ব্যক্তি

সম্পাদার দর্পণ।

করিয়া সেখানহইতে বাহির হইল যে
বেতুক সে ভাবিল যে পত্নীর সহিত বাস
হইতে বরং মৃত্যু ভাল।

তাহার মূর্খার সে ঘেরের অধিক তিনি
প্রত্যয় যত নিঃস্বপাইডেন তাহা রোম
নগরে পাঠাইডেন যখন ঐ ঘোষী চাকর
করিয়া আইল তখন তাহাকে দণ্ড দিবার
কারণ এই আভা ছিলেন যে যত নিঃস্ব
রোম নগরে পাঠান যাইডেনে তাহার
সহিত এই ব্যক্তি যুদ্ধ করিবেক। পরে
রোম নগরে পশ্চিমা মরল পুস্তক হই
লে সহস্র লোক তামান্না বেগিতে আই
ল এবং পুরুষ বিবস মরল নিঃস্বকে অ
জ্ঞুত রাখিয়াছিল। পরে সেই দিন ঐ
ঘোষী চাকরকে নিঃস্বের সম্মুখে ছেল
িয়া দিযামাত্র নিঃস্ব দুই চক্ষু আরক্ত ক
রিয়া তাহার ওপরে আক্রমণ করিল কিন্তু
তাহার লিষ্ঠতবত্তী হইলে পুরুষের বনের
মিত্রতা স্মরণ করিয়া তাহার পাঁয়ের নি
কটে গিয়া পুণ্ডি পুলাশ করিতে লাগিল।
তাছাড়া সেও নিঃস্বের গায়ে হস্ত দিয়া
পুণ্ডি করিল। এই রূপ তাহারদের পর
স্পর পুণ্ডি বেগিয়া মরল লোক চমৎকৃত
হইল। পরে বিংশ বৃত্তান্ত শুনিয়া তা
হার অন্তরাধ ক্ষমা করিয়া সে নিঃস্বকে
তাহার জিন্দাত রাখিতে হুকুম হইল।
আশ্চর্য্য হলে ঐ নিঃস্ব হইতে যে ওসকা
র ঐ চাকর পাঠিয়াছিল সেইজন নিঃস্বের
পুত্ৰপুত্র এই হালে সে চাকর করিল।

এই বিষয়ের বিবরণকর্তা কহিয়াছেন
যে তিনি রোম নগরের রাস্তার মাঝে ঐ
চাকরকে নিঃস্ব লইয়া বেড়াইতে দেখি
য়াছেন।

তৃত্বীয় মন্ত।

কতক গোঁরা নৌকাযোগে বাইডেনি

ও তুলাই মোমবার বৈকালে মোঃ চাট
রার পশ্চিম কানাইদেওয়ান শিরের আভা
নার লিষ্ঠত তাহার নৌকা নোদীর করি
য়া রাখিল। তাহার লিষ্ঠত এক দহ ছিল
সেই দহে ঘুরা অলগে একটা কাঁটাল
ভাসিতেছিল বেগিয়া এক জন গোঁরা
তাঁহা ধরিবার কারণ অশে ছাপ দিল
তাছাড়া অলের পুৰল তরঙ্গযুক্ত এবং
তাছার বন্ধাদি ভিজিয়া অতিভারি হও
য়াতে সে অবসন্ন হইয়া শীঘ্র ডুবিয়া
গেল কিন্তু কাল পর একবার ওঠিল
কিন্তু অন্য লোকেরা তাহার লিষ্ঠত না
যাইতে সে পুনর্বার ডুবিয়া গেল পরে
অনেক অনুসন্ধান করিয়াও আর পাও
য়া গেল না।

কৃষিকর্মাদি বিষয়ে সমাজ নিযুক্ত
হওনের সমাচার।

সম্প্রতি কৃষিপুত্তি বিষয়ে সাহেব
লোকেরা এক সমাজ নিযুক্ত করণের
চেষ্টায় আরম্ভ করিয়াছেন এক পত্র জানা
হইয়া সর্বত্র পুলাশ হইয়াছে তাহার ফ
লের বিষয় ও ধারার বিষয় মরলকে
জ্ঞাত করান যাইডেনে।

সম্প্রতি এতদ্রূপে কৃষিকর্মাদি সমাজ
নিযুক্ত হইলে অন্য মরল বিষয়ের মাঝে
তাহারা ভূমি ও কৃষ্ণ করণবিষয়ে ওয়াল
যোগ করিবেন অর্থাৎ যে প্রতি প্রত্যয়
তাছাড়া গৃহন করিবেন এবং ভূমিতে কি
পুকার মার ভাল এবং সে মার কি পুকার
ভূমিতে কি পুকার দিলে ভাল হয়
তাছাড়া স্থির করিবেন এবং কৃষিবিষয়ে
প্রথম কৃষকেরদের পাঠ্যভিত্তিক দিবেন
এবং জনযুক্ত বালককে পুত্র করিয়া অ
ন তাছাড়া পুত্রের পুত্র না হয় এই

মরল ওপায় করিবেন এবং এক ভূমি
তে বারং মরল যাছাড়া ওপায় হয়
তদুপযোগ্য করিবেন এবং পশ্চাতির আভি
বন্ধনার্থ এবং সুরক্ষার্থে যলোয়ার
করিবেন এই রূপ তাহার আশনার
বের সম্প্রদিত আনানুসারে কর্মকার্য
করিবেন। অন্য কোনো ঘেরের কৃষি
বিষয় যে পুত্রপেক্ষা অধিক প্রত্যয় হইতে
পারে না ইহা কখন অত্যন্তরত যেহেতুক
মলুমের মাঝে প্রমত্ত কোনো বিঘা নাই
যে প্রত্যয়তর বন্ধিতা হইতে না পারে
এবং যে ঘেরেতে শত বৎসরাদৃষ্টি কৃষি
কর্ম একই রূপে আছে তদ্রূপ ঘেরে তাছা
রত অধিক বা প্রত্যয়িত না হইতে পারে
অতএব আমরা ইহা নির্দ্বয় কহিতে
পারি যে এতদ্রূপে কৃষিকর্মাবিষয়ে মরল
পুত্র প্রত্যয় করণীয়।

অপর বিধানেরা সম্মিলিত হইয়া তাহি
সমাজের কোনো এক সমাজ নির্ধারণ
করিয়া কৃষিবিষয় এবং আত্মবিঘা
বন্ধনার্থে এতদ্রূপে যে এক সমাজ নি
যুক্ত করেন ঐ বিষয় অতিবাঞ্ছনীয়। অ
তএব তৎকার্যনিমিত্ত যে লোক তিন
মাসে অষ্ট চৌকা যত দিনপর্যন্ত বাস
করিয়া দেন তত দিনপর্যন্ত তিনি সে ল
মাজ হইতে পারিবেন এবং যিনি এক
বারে তার পঁচ চৌকা দেন তিনি ঘাফল
বল ও সমাজ হইতে পারিবেন। ঐ সমা
জের দ্বারা এইকণ হইলে ভাল হয় যে তা
হাতে এক জন পুত্ৰীন এবং অধীন লো
কবয় নিযুক্ত হয় এবং সামান্য সমাজ
লোকেরদিগের বৎসর নিযুক্তকরণ ও
প্রমত্ত হইলে অপর যে সমাজেরা নি
যুক্ত হইবেন তাহার এক মোহির করি
য়া সেলাম্য দিবেন। অন্য এই সমাজ
যে এতদ্রূপে তাগাদিল লোকেরা নিযুক্ত

अभ्यासार्थं कर्तव्यम् ।

হল এ বিষয়ও অতিরাঞ্জনীয় যেহেতুক
সমাজের প্রধান কার্য তাঁহারদ্বিধের অ-
বিকারের এবং পুত্রাদির মঙ্গল জানি-
বেন অতএব তাঁহারা যে সমাজ হইতে
পান্দিবেন ইহা কেবল না কিন্তু অন্য
জগতিয়ান ইহা তাঁহাদের ন্যায় সমাজ
তে মঙ্গল পূকার পদম্ব হইতে পান্দিবেন
ইহা অতিরাঞ্জনীয়।

आह! सौंदर्य बांधणीह!

অনানুদীন মহামার অকবর হাদিশ
 হের পুত্র নুরুদ্দীন মহামার জাহান্নার
 হাদিশাই হইয়াছিলে উহার অনেক
 কীর্তি আছে তাহার মাঝে কিছিন্নি
 হইতেছে।

আহা! আরও বাদশাহ যথার্থ মায়া কর
 তেন তাহাতে কাহারও ওপরেই করি
 তেন না। এক দিবস তাহার পুত্র শাহ
 জাহা ঘোড়ার ওপর আরোহণ করিয়া
 হুঁশী করিতে গিয়াছিলেন তাহার
 আশিবার কালে একশূণ্য বৃদ্ধ এক জীর
 শূণ্য তাহার অগ্রে পদাঘাতে নষ্ট হই
 য়াছিল। তাহাতে ই বৃদ্ধ ক্রীড়াশন
 ষড় পুত্রকে কোঁচ করিয়া রোহণ করি
 হইয়া বাদশাহের নিকটে আসিয়া পুত্র
 এক বাদশাহের সাক্ষাৎ প্রেরিয়া দিয়া
 সিবদনে করিল যে জাম্বীর পুত্রকে কে
 হুঁশিল ইহা বিবেচনা করিয়া যথার্থ দ্রও
 ষক। ইহাতে বাদশাহ বিবেচনা করিয়া
 যুগলেন যে শাহজাহা বাদশাহের
 ঘোড়ার পদাঘাতে মরিয়াছে অতএব
 বাদশাহজাহাকে আনাইয়া ই বৃদ্ধ জী
 কে ছিলেন ও আঁজা করিলেন যে জাম্বীর

পুণ্য ইহা হইতেও নম্র হইয়াছে অতঃপর
ইহাকে আশ্রি ডোম্বীকে দিল্যম বাঁহা।
মলে স্রু তাহা কর। ইহাতে এই ব্রহ্ম
স্বী-স্বামী ও আত্ম বোধোদয়ের নানা
পুঙ্খর লেভি মুদ্রণ নো মানিয়া ক্রান্ত
কুদুরি নিকটে মুরে রঙার ডবরে বারি
নাহাজারি দৈ আশ্রিয়া বসাইল। বাহি
জিহীও এমত বিতৃক্ট জিলেন যে বিতৃ
আত্মর রক্ষণ এই ব্রহ্ম স্বী যেমন করিল
তাহাই স্বীকার করিলেন। উদলন্তর
এই ব্রহ্ম স্বী আশ্রন মৃত পুণ্যর তারি দিলে
নাহাজার হাত বৈরা নাহ বারি দিয়া
ইয়া করিল যে যা আশ্রার এই মৃত
পুণ্যর নিচিল করিয়া তোকে ভোর
পুল দিল্যম।

পারে যে নুরজাহাঁ বেগম্ময়ে বাদশাঁহ
 অডাড আমির জিলেন এক দিবসে ই নুর
 আই। বেগম্মের মহাবীর ভ্রাতা কোনহ
 এক স্নানো লগাংকার করিয়াছিল। বাদ
 শাঁহ বিচারামনে বসিয়া ই বিষয়ের নাম
 করিয়া নুরজাহাঁ। বেগম্মের ভ্রাতার পেট
 হক করিয়া শেরবজ হাতে লইয়া নুর
 আই। বেগম্মের নিরন্তে গিয়া হইল
 লেন। নুর আই। বেগম্ম নজর হাতে লইয়া
 বাদশাঁহের শাফাৎ আশিয়া দাঁড়াইলেন।
 বাদশাঁহ আশা করিলেন যে ই কিসর
 নজর। নুরজাহাঁ। বেগম্ম নিবেদন করিলেন
 আপনি যে যথার্থ নাম করিয়াছেন তাহা
 ঐ তোমার যে আনক হইয়াছে তাহারি
 নজর। বাদশাঁহ আশা করিলেন যে ভাল
 কাজ যদি তোমার এই আনক না হইত
 তবে আজ তোমাকেও তোমার ভ্রাতার
 মর্য্য করতাম।

| জিলা | সংখ্যা | আবহি | পাঠ্য |
|----------------|--------|------|-------|
| কুশারি | ১ | ২৫০ | ৩৫ |
| ভেরঙা টেল | ১ | ২০ | ২০ |
| গাং মরিচ | ১ | ৩ | ৪৫ |
| নারিকেল টেল | ১ | ২৩৫ | ২৩ |
| তুলা কাহাজা | ১ | ০ | ০ |
| আবা হকপুর্ | ১ | ২৫ | ২৫ |
| পাটনাই আবা | ১ | ২ | ২৫ |
| চানু পাটনাই | ১ | ৩ | ৩০ |
| পাছড়ি উত্তম | ১ | ২৫ | ২৫ |
| পাছড়ি মধ্যম | ১ | ২৫ | ২৫ |
| মুণী উত্তম | ১ | ২৫ | ২ |
| মুণী মধ্যম | ১ | ২৫ | ০ |
| বাল্যম | ১ | ২৫ | ২৫ |
| বুধা গোম | ১ | ২৫ | ২৫ |
| পাটনাই বুট | ১ | ২৫ | ২৫ |
| অবহর ডালি | ১ | ২৫ | ২৫ |
| উত্তমগাড়া বুট | ১ | ২১ | ২৫ |
| মধ্যম বুট | ১ | ২১ | ২১ |
| তৈনা বুট | ১ | ২১ | ২৫ |
| মধ্যম তৈনা | ১ | ২৫ | ২০ |
| নীল উত্তম | ১ | ০ | ০ |
| মিছড়ি উত্তম | ১ | ২১ | ৫ |
| মধ্যম | ১ | ২০ | ২৫ |
| সোরা উত্তম | ১ | ৫৫ | ৬ |
| মধ্যম | ১ | ৫৫ | ৫৫ |
| চিনি কাশির | ১ | ২৫ | ০ |
| মধ্যম | ১ | ৫ | ৫৫ |
| খার চিনি | ১ | ৫৫ | ৫৫ |
| ডেডুল | ১ | ২৫ | ২৫ |
| ভাঙ্গাক | ১ | ৫৫ | ৫৫ |
| কন্দন | ১ | ২৫ | ২৫ |

এই সমাজসংস্কার শ্রীরাধাপুরের ছাপাখানাতে মুদ্রিতভাবে প্রিন্টারের ছাপা হয়। যাহার লভের আয়তক হয় তিনি শ্রীরাধাপুরের ছাপাখানাতে ছাপান নাম পাঠাইলে লভ্যের কাগজ তীব্রের বিকট পাঠান যাইবে তহার দ্বারা যখন, এক টাকা তিনি প্রাপ্ত করিয়াছেন যদি তহার বিকট প্রাপ্ত না গইবে তবে তিনি শ্রীরাধাপুরের ছাপাখানাতে লভ্যের বিরাজন তহার বিকট পাঠান যাইবে।

সমাচার দর্পণ

১১১ নং পৃষ্ঠা।

পঞ্জিকা।

১৪ জুলাই সন ১৮৭০। ৪ জুলাই সন ১১৭

দর্পণে দুই সৌন্দর্যের কার্যবিরুদ্ধতা।

বৃহত্তারিহ কান্ড সমাচার দর্পণে।

কোলালির কাণ্ড।

কোলালির শতকরা অল্প টাকার সুদের কাণ্ড। কয় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা চুরি আনা প্রিয়ম। বিক্রয় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা আট আনা প্রিয়ম।

সস্তাহের পঞ্জিকা।

| | | | |
|------|-------|---------|---|
| ১৮৭০ | জুলাই | পঞ্জিকা | ১ |
| ১৮৭০ | ২ | জুলাই | ২ |
| ১৮৭০ | ৩ | জুলাই | ৩ |
| ১৮৭০ | ৪ | জুলাই | ৪ |
| ১৮৭০ | ৫ | জুলাই | ৫ |
| ১৮৭০ | ৬ | জুলাই | ৬ |
| ১৮৭০ | ৭ | জুলাই | ৭ |
| ১৮৭০ | ৮ | জুলাই | ৮ |

ইস্তাহার।

ইস্তাহার দেওয়া যাইতেছে এই সকল নীতির লিখিত গবর্নরমেণ্ট নোটে যে-সময় এল নিম্নলিখিত সাহেবের লিফটাইটে চোরে গিয়াছে।

সন ১৮৭১। ১২ জুলাই নোটে।

সন ১৮৭১ ও সন ১৮৭০ ও সন ১৮৭১ সিন্ডি ২০০০ টাকা।

সন ১৮৭১ ও সন ১৮৭০ সিন্ডি ১২০০ টাকা এই নোটে।

তাহার আশনার নামে সকলকে সমাচার দেওয়া যাইতেছে যদি এই সমস্ত নোটে কেহ বিক্রয় করিতে চাহে তবে যে-

অর্জ ফটেওন সাহেবকে ধর না দিয়া কিনিবে না। ইতি ডাঃ ১০ জুলাই কনি কান্ড।

সমাচার দর্পণ।

রাজকর্ম নিয়োগ।

তারিখ ৩০ জুন সন ১৮৭০।

ঐযুত জে কাহিল সাহেব জিলা রুর পুরের অফিসের রেজিষ্টার।

ঐযুত এল স্মিথ সাহেব মুরশেদাবাদের অফিসের রেজিষ্টার।

ঐযুত জি আর ক্লার্ক সাহেব জিলা লবলিপের অফিসের রেজিষ্টার।

ঐযুত জন লিও সাহেব মোকাম কান পুরের অফিসের রেজিষ্টার হইয়াছেন।

রথযাত্রা।

গত ৩০ আষাঢ় বুধবার রথযাত্রা হইয়া জিলা তাহাতে মোকাম হাফেজের রথ যে-কন লোক সমাগিয়া হইয়া থাকে এবং নয় দশ দিনযাত্রা লান দুবজাত কয় বিক্রয় অনেক হয় এইকন অত্যন্ত কোথাও হয় না। কিন্তু এই বৎসর পুণ্য রথ কোল ঘেব দুর্যোগসিদ্ধি বিঘ্ন হয় নাই ওখানি লোক সমাগিয়া অল্প সকলে আনুমান করিলেন যে দুই বৎসর হইতে অল্প লোক আসি হইয়াছিল।

এক মোকাম বেলচরিয়া গায়ে দুই খান রথ চলিয়া থাকে এইবার তাহার নীচে তিন জন লোক পড়িয়াছিল তাহার মধ্যে এক জন ব্রাহ্মণ আর দুই শূদ্র তাহার এক জন ব্রাহ্মণ ও এক শূদ্র মরিয়াছে কিন্তু অপর দুই শূদ্র ব্যক্তির মস্তক ভগ্ন হইয়াছে অথচ পুণ্ড্র ভাগ্য হইয়াছে নাহি পরে কি হয় বলা যায় নাই।

সিংহলী।

গত সন্তাহ কলম্বু হইতে ১০ জুলাই তাহা হইতে সমাগার ইতিহাসে যে ১৮৭০ সালে সিংহলীশের যুদ্ধের মধ্যে যে-এক শূদ্র সন্ন্যাসীর কন হইয়া পরে পলাইয়াছিল এবং তাহার সন্তান মালাই লোক তিন জন ও সিংহলীশ কনি ওন ছিল তাহার মধ্যে কন হইতে গিয়াছিল কিন্তু সিদ্ধ করিতে পারিলেন কেবল ইঞ্জিনিয়ার শ্রীম জায়াবত এক জন লোককে খুল করিয়াছিল। এখন সে শূদ্র সন্ন্যাসীর বীরা গিয়াছে মালাই ছিল ওন বীরা পক্ষ নাই তাহার দেশের ডাক বন্দ করিয়া চিঠি পত্র ইতিহাসে তাহার কেবল নাই গিয়াছে। তাহার দ্বিগুণে বীরা করণ যে ইঞ্জিনিয়ার লোক গিয়াছিল তাহার বনের মধ্যে একখান চিঠি পাইয়াছিল।

বন্যা।

১০ জুন অর্থাৎ গঙ্গার অল্প পুতিদিন দশ বার অধীল করিয়া বাড়িতেছে ইহাতে অনুমান হয় যে এইকন বৃষ্টি হইলে অ-

সম্রাটের দর্পণ।

সেক নীল ও লম্ব হইবেক গিও মাসের মূল বৃদ্ধিতে নীল গিও বৃদ্ধি হয় নাই যে নীল অণু বৃদ্ধি গিয়াছিল তাহা এখন কাটিতেছে। আরো সম্রাটের পাওয়া গেল যে অন্য বহু-সংখ্যক বীজাদির পতন ভাল হইতেছে।

লক্ষ্যণোয়ের মূল।

লক্ষ্যণো নগরে এক সাহেবের এক বেহারী নীচের কুঠরীতে বসিয়া শয়ন করিয়া ছিল। শূভকালে সাহেব ওঠিয়া বেহারীকে অনেক তাকিল তাহাতে ওঠর না পাওয়া তাহার শরল হানপাখা আপনি গিয়া অনেক তাকিল তথাপি ওঠর পাইল না কিন্তু দেখিল যে চারের গায়ে দিয়া শুয়ে আছে। পরে তাকিতে চ'হর ওঠাইয়া দেখিল যে এক কন্যামূল আরক্ত বিজয় কন্যামূল পাখা গলা কাটিয়া মরিয়া আছে। ইহার তদারক সাহেব অনেক করিতেছে কিন্তু পূর্বে এক লোকের সহিত তাহার বিবাদ হইয়াছিল সে লোক কহি য়াছিল যে তোকে আমি ইহার সমুচিত ফল দিব। সে লোককে সন্দেহ করিয়া বিক্রিয়া আনা গিয়াছে। অনুমান হয় যে ঐ লোকের কর্ম এবং কবুলও করিতে পারে। লক্ষ্যণোয়ের বাবশাহ ইহার অনেক তদারক করিতেছেন।

বানিজ্য।

নীল। ৯ মার্চের লণ্ডনের টিটী আদিনিয়াতে তাহার হারা-সম্রাটের আলা গেল যে সীলের কারণ লোকেরদিগের অতি আশংকা হইয়াছে দর সন্ধ্যা বৃদ্ধি হইতেছে। আগামী কোলানির নিলামে অধিক হবে না ইহাতে অনুমান হয় যে অতিশয় দুর্ভাগ্য হইবেক।

তুলা। আমেরিকা দেশহইতে লণ্ডনে অনেক তুলার আশংকা হইতেছে ইহাতে বাদীলার মূল্যের দর যে সেই হইল কিছু বৃদ্ধি হয় এমন ভরসা নাই।

হাওয়া। আমেরিকা দেশের কাওয়া দর কমী হইয়াছে ইহাতে আবা ওপহীনের কাওয়াও অল্প আছে ইহাতে দর বেশী হইয়াছে।

চিলী। লণ্ডনে চিলী সমুহ আছে ইহাতে যে কিছু মন্দ রকম চিলী আছে তাহা ওঠর ভরসা নাই অতিশয় উত্তম চিলী ওঠে এমন আশঙ্কা আছে।

গৌলমরিচ। লণ্ডন দেশে গৌলমরিচের অনেক আশংকা হইয়াছে ইহাতে বুকা যায় যে মরিচের দর বৃদ্ধি হইতে পারে।

সোরা। গিও নিলামে কোলানির মক ল সোরা বিক্রয় হয় নাই তথাপি তাহার আশংকা আছে ইহাতে অনুমান হয় যে তাহার দর অধিক হইবেক।

চাওল। গিও জিহুআরি মাসে তপু লের দর কিছু অধিক হইয়াছে কিন্তু লণ্ডনে তপু ল অনেক আছে তথাপি অনুমান হয় যে দর আরও অধিক হইতে পারে।

সাহসিকা স্ত্রী।

ওয়েলিংটন দেশে এক স্ত্রী লোকের সাহসের বিষয় এই সম্রাটের আদিনিয়াতে যে এক দিন তাহার পিতা ও আর পরিবার সকলেই চিত্তা ঘরে গেল এবং কেবল সে একলা ঘরে থাকিল এই সময়ে অতিশয় শীতের এক পুণীন লোক তাহার ঘরে আদিনিয়া ওপহিত হইল। তাহাকে দেখিয়া ঐ স্ত্রী অত্যন্ত ঐশ্বর্যবান হইয়া তাহাকে ঘরে আনিতে গেল ও অন্য কুঠরীতে গিয়া

তাহার কারণ যৌন পুস্তক করিতে লাগিল। পরে গিওকী দিয়া দেখিল যে সে ব্যক্তি আপন মুখের কৃত্রিম দাঁড়ি ফেলিয়া দিয়াছে ও পূর্বে যেমন বৃদ্ধ দেখা গিয়াছিল তাহাই হইতে সত্যের ও একখান জোড়া হস্তে করিয়া কুঠরীর মধ্যে ভ্রমণ করিতেছে। ইহা দেখিয়া ঐ স্ত্রী আপন নার পলায়নের আর কোন ওপহীনা দেখিয়া একখান কুতালি ও ঐ ওক যৌন নইয়া বাহিরে আইল এবং ঐ ওক যৌন তাহার মুখে ফেলিয়া দিল ও কুঠরী দিয়া তাহার গলাতে এমন আখাত করিল যে তাহাতে সে ভূমিতে পতিত হইল। সেই সময়ে আর এক জন লোক আদিনিয়া তাহার ঘরে বা মারিতে লাগিল। তাহাতে ঐ স্ত্রী ওপহী গিয়া দেখিল যে আর এক লোক ভিতরে আসিতে ওয়াত হইয়াছে। সে কহিল যদি হার মুলিয়া না যেও তবে হার ভাঙ্গিয়া পুঙ্খ করিব। পরে এখন হার ভাঙিতে পুঙ্খ হইল ও এখন সে আপন পিতার বন্ধু লইয়া তাহার ক্ষেত্র গুলি মারিল তাহাতে সে পলায়ন করিল। এক ঘরের পর আর এক জন আদিনিয়া ঐ পুণীন লোকের কথা জিজ্ঞাসা করিল। তাহাতে ঐ স্ত্রী বলিল যে তাহার বিষয় আমি কিছু জানি না। তাহাতে ঐ লোক তাহাকে হার মুলিয়ার কারণ অনেক বয়সকাল হইতে লাগিল। পরে সে হার না মুলিলে ঐ লোক হার ভাঙিতে ওয়াত হইল। তাহাতে ঐ স্ত্রী বন্ধু লইয়া গুলি মারিয়া তাহাকে মারিয়া ফেলিল এবং তাহার মূল ভাঙিয়া পাগলের লাগে বন্ধু ভাঙিতে লাগিল এবং অনেক লোক আইলেও হার মুলিল না কিন্তু তাহার পিতা আইলে হার মুলিল।

সমীচারণ।

আহাঁজ আয়দান।

ফিলিপ নামে আহাঁজ ১৩ মার্চ তারিখে ইংল্যান্ড দেশে ছাড়িয়া ১৮ জুন তারিখে কলিকাতা পৌঁছিয়াছিল।

গ্যাপ্পেস নামে এক আহাঁজ ১৩ নভেম্বরে ১৪ ডিসেম্বরে রাহী হইয়া ৮ জুলাই তারিখে কলিকাতা পৌঁছিয়াছে। তাহার দ্বারা সমীচারণ আনা গেল যে ঐশ্বর্যের নিকটে ছিদ্দারি মাসের দ্বায়ে এক পণ্ড আহাঁজের অধিক মারা পড়িয়াছে এবং অন্য এক আহাঁজ মাদরাজ হইতে ৩ জুলাই তারিখে রাহী হইয়া ৮ জুলাইতে পৌঁছিয়াছে। এবং যেখানের নামে এক আহাঁজ ১৭ জুন পুনোপিনারি ছাড়িয়া ৯ জুলাইতে পৌঁছিয়াছে। এবং আর এক আহাঁজ ১১ মে বোম্বয়ের নিকট হইতে রাহী হইয়া ৭ জুলাইতে কলিকাতা পৌঁছিয়াছে।

বিবাহ।

ইংল্যান্ডে এক জন আশী ২৭-সর বয়স্ক অতিবৃদ্ধ মে এক ইং ২৭-সর বয়স্ক এক স্ত্রীকে বিবাহ করিয়াছে মে পুত্রের পুত্র ও পৌত্র আটগুণি জন বিবাহসময় ম রেটিয়াছিল তাহার ব্যবসা। করাতা গিরি তাহার পুত্র্য বিবাহিতা স্ত্রীতে ৪৪ মন্তন অনিয়মিতল তাহার। সকল বর্তমান তাহার মর্যে তাহার জেট কন্যার বয়সকম ৩৩শ ২৭-সর। সে বাকি এমত বৃদ্ধ ও অরোগ্যে লম্বাশীর ওখানি পোশা করিয়া লাল রসাতের ইষ্টী মন্তকে দিয়া বিবাহ করিতে গিয়াছার গোল তাহাকে দেখিয়া কোকেয়া অতিশয় হাসিতে লাগিল।

শুভ।

কলিকাতার জীবন্ত মহারাজ গোপী মোহন দেবের মাতৃ শ্রীম ১৮ আবার সোমবার হইয়াছে তাহাতে যেমত বিবি বোম্বিতরন অক্সিম মমন্ত সামগ্ৰী ম মরদীন সমারোহ পুরক শ্রীম মল্লম হইয়াছে এমত অন্যত্র মন্তর পুণ্ড হয় না। পুরে নানা দেশীয় ব্রাহ্মণ পণ্ডিতেরদের নিমন্ত্রণ পত্র লোকদ্বারা ও অতিদূরে দেশে তাহারা পুরে করিয়াছিলেন তাহাতে এত দূর দেশে নিমন্ত্রণপত্র পাঠাইয়াছেন যে তাহার অধাপি আসিয়া পৌঁছিতে পারেন নাই। এবং দেশে দেশান্তরীয় ব্রাহ্মণ পণ্ডিত ও ভাগ্যবন্ত লোক পৌঁছিতে মনোহর বান্দা ও উত্তম খাদ্য সামগ্রী এমত দিয়াছেন যে তাঁহার মনোবদিকিলেও তাহার শেষ করিতে পারেন না। এবং তাবৎ সামাজিকেরদের দ্বিধা ওপকৃত মত দিয়াছেন।

সভার মোস্তর অধ্যক্ষের্য পুত্র ভাগে ওপরে নানা দেশীয় নিমন্ত্রিত মন্তর অধ্যাপকগণ এবং ওত্তর ভাগে নানা দেশীয় বিষয়ী ভাগ্যবন্ত ব্রাহ্মণগণ। পক্ষি ম ভাগে ওপরে সামাজিক ডাবৎ ব্রাহ্মণ বর্ণ নীচে পক্ষি ভাগে ডাবৎ ভাগ্যবন্ত বিশিষ্ট পুত্রমুহঃ। সভার মর্য ভাগে মর্যময় দান সাগরের মাগি গুণি। তাহার ওত্তরে রাশীকৃত কাময় গাঁছু। ঈশান কোণে শিশুরের এক রাশি গাঁছু। দান সাগরের দক্ষিণে রাশীকৃত কাময় মতা ও অগ্নিকোণে শিশুরের মতা এক রাশি মন্তর পুত্র ভাগে কাময় মতা। ১৭ খান তাহার আসনাদি সমুদয় শরীর বন্ধুতে মোনা কাময় মতা ও কাময় দেওয়া। তাহার পুত্র ভাগে মর্যময় ও মন্তরী মোস্তর বিনু। এই বংশ সভা

হইয়া মোস্তর দানীয় দুবা পুত্রকে ও মর্য করিয়া পুত্রকে দানের দক্ষিণা এবং মর্য মর্য ময়েত সাক্ষাৎকারে অপর বোম্বিয়ায় পক্ষি দেশে ব্রাহ্মণ হস্তে দান করিয়াছেন। পরে ওত্তম মোল মোতা শাল ও দুই বান্দা ও কৃত্ত বন্য ও নগ্ন দেশ হাজার টোকা কাময় খালে করিয়া ও মর্য করিয়াছেন এবং বিনক্ষণ দান করণ হিজদরতী পক্ষি দেশে হইতে আনাইয়া দুই হাজার টোকার অক্লি ও বন্ধুতে স্ত্রীকৃত করিয়া অপর শাখা দি ও দক্ষিণা স্বর্ণ মোহর দিয়াছেন। পরে মুস্তর মুস্তর মোস্তর ও বৃহৎ হস্তী ও বজ্র ও ও কৃত্ত মোস্তরমুস্তর গাঁজী ও ওত্তম মহাপুত্র পুত্রি ও মর্য করিয়া সাক্ষাৎ ব্রাহ্মণগণকে আরোহণ করাইয়াছেন।

এবং বরাহুত ব্রাহ্মণ ও কামিগিপুত্রি অনুমান এক লক্ষ আশিয়াছিল তাহার দ্বিগুণে যথার্থ্যে দানদ্বারা মন্তর করিয়া বিদায় করিয়াছেন। এবং ব্রাহ্মণ পণ্ডিতেরদের বিদায়ের যে হার করিয়াছেন শুনা যাইতেছে সেও ওত্তম হিরেচলপুত্র হইয়াছে। আর বিষয় লিখিতে হইলে অতিবাহত হয় ওপুত্রক মূল্য বিবরণমাত্র সকলকে আনাইবার কারণ লিখা গেল।

নৌকায় ভাঙতি।

পক্ষি দেশীয় এক জন মহাপুত্র পুত্র মুরশেদাবাদ হইতে নৌকা মোস্তর কলিকাতায় আনিতেছিল তাহার সহিত নগ্ন দেশ হাজার টোকা আর জিনিস পত্র অনেক ছিল সম্প্রতি গত মন্তাহে মোস্তর শান্তিপুত্রের নিকটবর্তি ময়ূরপুর গুণায়ের নীচে গরীর খালের মধ্যে নৌকা

সমাচার দর্পণ।

লাগিয়া করিয়া তাঁরে পাঁচদি করিয়া
আহার করিতেছিল। ইত্যাদি বসত
তাকাইতি ঐ লোকাতঃ পড়িয়া। সে মকল
টাকা ও আরো জিনিস পত্র লইয়া গিয়া
ছে ওয়ার্শীপে অনেক করিয়াছে তাহা
তোই শোকার এক জন লোক অনুদ্রষ্ট
হইয়াছে পরে পাতিপুরে খানাদারে আ
নিয়াঃ অনেক তদারক করিতেছে সে
অনুদ্রষ্ট ব্যক্তির অনুসন্ধান পায় নাই
অনুমান হয় যে ঐ তাকড়িরা তাহাকে
খুন করিয়াছে অথবা আশঙ্কিতে আসে
ভুক্তিা মরিয়াছে কিন্তু তাহার কিছু বিব
হয় নাই তদারক নাশপূরক হইতেছে।
এইরূপ সমাচার পাওয়া গেল।

ইংলণ্ড দেশের মহাসভা।

ইংলণ্ড এই বীরা পূর্ণির আসে
যে এক বাহাদুরের মরনের পর পুত্রকালীন
মহাসভা অন্যথা হইয়া পুনর্বার নতুন
বাহাদুরের আসলে নতুন মহাসভা
লিখিত হয় এই প্রাচীন বীরানুসারে স
পুতি ইংলণ্ডের বাহাদুরের পর লোকান
স্তর ঐ মহাসভার মত বাহাদুরের কারণ
শৌকিন্ত নতুন বাহাদুরকে জাতি করা
ইয়া এবং নতুন বাহাদুরের কারণ আসদ
পত্র জাতি করাইয়া ও অস্বাভাবিক
কথা সমাজ করিয়া নকসে বিদায় হ
ইয়া স্বা স্বানে গিয়াছেন। এখন নতুন
মহাসভা লিখিত হইবার কারণ ঐ দে
শের মধ্যে বীরবাহিক গৌলমান জন
স্বিত হইয়াছে।

ইংলণ্ডের বাহাদুরের ভ্রাতা।

এখন তিনি বাহাদুর হইয়াছেন ইনি
যখন আপন পিতৃসঙ্গে যুবরাজ ছিলেন
তখন ইহার এক কনিষ্ঠ ভ্রাতার সহিত
সংপুতি জিল না তাহাতে পরেই আসা
পও হইত না পরে ইহার দিগ্‌হাননা
রোহন হালে অনেক আক্রমণ ও ভ্রাতা
এ স্বজন ইহার সাক্ষাৎ করিতে আই
লেন তখন ইহার সে ভ্রাতাও আইলেন
কিন্তু আরো লোহ যোনে আপন মর্যাদা
পূরক নতুন বাহাদুরের সহিত আসাশা
দি করিলেন তিনি তাহা না করিয়া অন্য
পুজার মত ব্যবহার করিলেন। দুই তিন
দিন পরে ঐ বাহাদুর আপনার সেই ভ্রা
তাকে ডারিয়াঃ প্রায় ভাঙিতে করিলেন
যে হে ভ্রাতা আমার। যে অবস্থায় পিত
ভ্রাতা এখন জাতি তাহারদের পরের অ
পুতি ওপুতকনহে। তদবধি দুই ভ্রাতার
পরপর সৌহার্দ হইয়াছে।

অন্যমনস্ক।

দুই জন সাহেব যেনে কনিয়াঃ খান।
খাইতেছিল তাহার মধ্যে এক সাহেবের
ভাগিনীও সেখানে ছিল। তাহার করি
তোই ঐ স্বী লোক মুদ্রাশন হইয়া পড়িল
ইহাতে এক সাহেব ঐ স্বী ভ্রাতাকে কহিল
যে তোমার ভাগিনীর বুদ্ধি গতি হইয়া
থাকিলেক। তাহাতে ঐ স্বী ভ্রাতাকে কহি
ল যে না আমার ভাগিনী বিধবা। ঐ
সাহেব কহিল যে কি ইনি বিধবা আমি
বুদ্ধিমানসম্মত যে ইনি অবিবাহিত।

বাকার ভাও।

| কিরিমা | জোম | অজিমা | পয়সা |
|----------------|-----|-------|-------|
| মুগারি | ১ | ৩।৫ | ৩৫ |
| ভেরগা ভৈল | ১ | ১৩ | ২০ |
| গাহ মরিচ | ১ | ০ | ৪।০ |
| বারিকেল ভৈল | ১ | ১৫।০ | ১৫ |
| বুলা কাহোরা | ১ | ০ | |
| আদা রমপুর | ১ | ১।০ | ১৫ |
| পাটনাই আদা | ১ | ১ | ১।০ |
| চামু পাটনাই | ১ | ১৫ | ০ |
| পাটনাই উত্তম | ১ | ১।৫ | ১৫ |
| পাটনাই মধ্যম | ১ | ১।৩ | ১।১ |
| মুগী উত্তম | ১ | ০ | ০ |
| মুগী মধ্যম | ১ | ০ | ০ |
| বালার | ১ | ১৫। | ১৫।০ |
| বুলা গোম | ১ | ১।০ | ১।৫ |
| পাটনাই দুই | ১ | ১।৫ | ১।৫ |
| অজহর জালি | ১ | ১।৩ | ১।১ |
| উত্তময়ারা দুই | ১ | ১০ | ১১ |
| মধ্যম দুই | ১ | ১৫ | ১১ |
| উত্তম দুই | ১ | ১৫ | ১১।১ |
| মধ্যম উত্তম | ১ | ০ | ০ |
| বীল উত্তম | ১ | ০ | ০ |
| মিছরি উত্তম | ১ | ১৫ | ০ |
| মধ্যম | ১ | ১০ | ১৫ |
| সোরা উত্তম | ১ | ০৫ | ০ |
| মধ্যম | ১ | ০।১ | ০৫ |
| চিনি কাপার | ১ | ১৫ | |
| মধ্যম | ১ | ৮ | ১৫ |
| খার চিনি | ১ | ০৫ | ০৮ |
| ভেতুল | ১ | ১।৩ | ১।৫ |
| জামাক | ১ | ৪ | ৫ |
| চন্দন | ১ | ১৫ | ১৫।১ |

এই সমাচার দর্পণ শ্রীরামপুরের ছাপাখানাতে পুতনজায়ে শানবারে ছাপা হয়। বাহার লখনুর আবশ্যক হয় তিনি শ্রীরামপুরের ছাপাখানার
আপন নাম পাঠাইলে লখনুর বাগদ ওঁহার বিক্রেতা পাঠান হইবেক তাহার দ্বারা মানে এক টাকা তিনি বাহার করিতেছেন যদি তাহার নি
লাগে বা পঁছন্দ করে তিনি শ্রীরামপুরের ছাপাখানাতে সমাগর দিবামাত্র তাহার বিক্রেতা পাঠাই হইবেক।

সমাচার দর্পণ

১১ জুলাই ১৯১০

শনিবার

১১ জুলাই ১৯১০

১১ জুলাই ১৯১০

১১ জুলাই ১৯১০

১১ জুলাই ১৯১০

কোম্পানির কার্য।

কোম্পানির পুঁজুরা। জয় চাঁকর মুরর
কার্য করিতে ইহা পুঁজুরা এক
টাকা চারি আনা প্রিমিয়াম। বিক্রেত করিতে
ইহা পুঁজুরা এক টাকা আট আনা
প্রিমিয়াম।

সন্ধ্যার পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|-------|----------|----|-------|
| ১১ | জুলাই | শনিবার | ১১ | জুলাই |
| ১২ | ২ | রবিবার | ১২ | ২ |
| ১৩ | ৩ | সোমবার | ১৩ | ৩ |
| ১৪ | ৪ | মঙ্গলবার | ১৪ | ৪ |
| ১৫ | ৫ | বুধবার | ১৫ | ৫ |
| ১৬ | ৬ | বৃহস্পতি | ১৬ | ৬ |
| ১৭ | ৭ | শনিবার | ১৭ | ৭ |
| ১৮ | ৮ | রবিবার | ১৮ | ৮ |

ইস্তাহার।

ইস্তাহার দেওয়া যাইতেছে যে শ্রীমুত.
হেনরি উলিয়াম হরহোম সাহেব ইংগ
উইয়েট পুরানোতে বৈজ্ঞানিকেন ও
শ্রীমুত পায়র কোম্পানির কর্মে অংশী
দার হইয়াছেন।

ইস্তাহার।

আল্ফ্রেডের রাজ্য কার্ভালিয়ার বহা
টিকারী নারালক পুত্র জ্যাকব রাজ্য
পারীয়ায় ডিল শিবচন্দ্র রায়ের বহা

বিকারী ভারতীয় রাষ্ট্রের নামে সানিষ
করাতে মন ১৮১৯ সালের ১০ বিদেশে
মুন্সীমকোটের অধিনে যে ডিকরি হই
যাচ্ছে সেই টাকার আদায় করলে শীতের
উৎসর্গে ছুটি ও বর্ষাসন ও অমী ও
বাটী পুঁজিসন ১৮১০ সালের ৫ অক্টো
ভারিমে সানিবার মুন্সীমকোট বিক্রয় হই
বেক এবং এই বিক্রয়ের নির্ণয় মান্তর
আপিসে তত্ত্ব করিলে আলা যাইবক।

উপনীল।

১ নম্বর জেলা বহুমান পরগণা বিত
শিবচন্দ্রায়ের হিন্দা চারি আনা বাট
কালিগঞ্জ ও জগদীশপুর ও যমুবেত ও
মিখাডা ও আলিপুরিয়া ও কুশবে
তা ও হালি ডোলা ও গারারিমপুর ও
শিবপুর ও দুলা ও সিলা ও নতিবপুর।

পরগণা বোরোজিলা এই কোম্পানী ও
কোম্পানী বিপুলপীতা ও বেনাকা পরগণা
আমিন হুজিলায়রপুর ও বিপুলী ও
বাইশি ও বারবকপুর।

২ নম্বর কিসমত হুগলীর পাইলার
চারি আনা হিন্দা যে গুণ্য সম্মিল বহু
মান এক কেতা পাঁচ বাটী এক কেতা
অমী হুগলী।

৩ নম্বর ৪ হিন্দা পাইবাটী ও বালা
প্রাণ কুলিয়া জেলা যমবহর।

৪ নম্বর ৪ হিন্দা মহাউরাল গুণ্য
জোড়হাট ও আকাফা ও পরগণা ও রা
জোড় জেলা বহুমান জেলা চাইপক

গীতা দুটা মহাউরাল ৫০ বিয়া ১০ আনা
হিন্দা।

৫ নম্বর বসন্তবাটী সম্মিল অমী চারি
আনা হিন্দা পাঁচুরে বাটী এক তালিপাচা
বাটী ও এক বাগান মোকাম ভবাপী
পুর চারি আনা হিন্দা। আর একতাল
পাচা বাটী ও বাগান মোকাম শিবপুর
১০ হিন্দা। সম্মিল অমী বসন্ত বাটী
এক আনা বাগান ও পুতুলী এই দুটা
বি কলকাতা ১৫ বিয়া মোকাম আশুল
পাইলার মোকাম জেলা বহুমান।
ইতি উক্ত ৫ জুলাই।

সমাচার দর্পণ।

রূপান্তর।

৬ শ্রীমত বৃহত্তরার মে রূপান্তর
যাচ্ছে যে মহাশয়ের জন্মদিন
শেষ রূপান্তরে প্রথম রূপান্তর
অবিক লেখিত হইয়াছিল সকল
অনুমান করিলেন যে চারি পাঁচ বৎসর
এমত লোক আসিলে নাই। তাহাতেও
পুত্রহইতে স্বী লোক অবিক বোধ হই
ল। কিন্তু এক স্থানে এমত অন্তর্ভুক্ত
কাহিনী কোন ব্যক্তি হয় নাই এবং
আলা বৎসর অনেকের বালকাদি হইয়া
ও দুবাড়ি অণ্ডয় ও ইন্দ্রিয় ইত্যাদি
কিন্তু এই বার কাহিনী কোন আশ্চর্য
কতি হয় নাই।

সম্মাচার দর্পণ।

আহাঁজ মারা।

১৩ জুন তারিখে জগন্নাথ ফ্রেডের উত্তরে বাহুর দেশে অস্তরে ইংল্যান্ডের বাহুশাহের দুইয়ের আহাঁজ এক ভয়াবহ লাগিয়া মারা। পড়িয়াছে। তাহাতে এক শত দিন লোক ছিল তাহার মধ্যে এক শত লোক রক্তা পাইয়াছে বিশ জন মারা। পড়িয়াছে ইহার মধ্যে এক জন আহাঁজের গোঁড়া ও এক জন ইংরেজ ইংল ও যাইতেছিল। আহাঁজের জিনিস পত্র কিছু রক্তা পায় লাই কেবল কতক ওলা কয়ল ভাঙ্গিয়া ভোরের দিকটে লাগি।

বহুকাণ রাআশানন।
ইংল্যান্ডে সকল বাহুশাহের মধ্যে এই দিন বাহুশাহ বহুকাণ-রাআশানন করি য়াছেন। তাহারদের প্রত্যেকের নাম জুড়ী বাহুশাহ ছিল তাহার মধ্যে জুড়ী হু বেল্লর ৬০ বৎসর এবং জুড়ী এডুর্ড ৬০ বৎসর ও জুড়ী অর্ড গণ্ড বাহুশাহ ৬০ বৎসর বাহুশাহ করিয়াছেন।

পতরা।

১৩ জুন তারিখে হানাপুরে পতরসমূহ অর্থাৎ পতরাংশ আকাশ আচ্ছাদিত করি রা আনিয়াছিল কিন্তু সেখানে না বসিয়া ওত্তর পাশ্বে থিকে ওড়িয়া গেল। এই পতরাংশ আইলে সম্মাচারিগণ করে এবং

পাশ্বে ও তাহা অমরসমূহ বহুকাণ সিদ্ধ করিয়াছেন।

এক সেখানকার বন্যার সম্মাচার পাওয়া গেল যে বন্যার জন অভিপন্ন হুই পাইতেছে এবং কলিকাতাহইতে অনেক লোক পাতিয়াত করিতেছে। পুর্বে যে ব্রাহ্মা দ্বিরা লোক ও গাভী গমনা গমন করিত এখন সেখানে লোকের নগর করিতেছে হানাপুরে আসিয়া রোগ হয় ইয়াছে পাটনা ও বীজপুরে কিছু মাত্র নাই।

দীর্ঘজীবী।

আমেরিকা দেশে এক শ্রী এক শত বিশ বৎসর বয়স্কা ইয়া মরিয়াছে।

আশ্চর্য্য জন্ম ও মৃত্যু।

লণ্ডন শহরের নিকটে এক গৃহে এক সাহেব বিরাশী বৎসর বয়স্কা ইয়া মরিয়াছেন সেই বৎসরে সেই দিনে সেই ঘরে গণ্ড বাহুশাহ মরিয়াছেন সে সাহেব যে ৪ জুন তারিখে অমিয়াছিল বাহুশাহ ও ৪ জুন তারিখে অমিয়া ছিলেন এবং যে দিনে সেই সাহেবের বিবাহ ইয়াছিল সেই দিন বাহুশাহ রও বিবাহ ইয়াছিল অতএব এই বিষয়ে আশ্চর্য্য বোধ হয়।

লোকজুহি।

যোঁ কোনলগার গুটির এক জন কথিব আপন ভগিনীকে তাহার শতর বাটী রাখিতে লোকচাফাফা যাইতেছিল পথিমধ্যে যোঁ দুমতির টেকে চড়া তে লোক লাগিয়া পুন বাপুতে ঐ লোক জুহিয়া গেল জুহিবার প্রস্থানে ঐ

যক্তি লোকের পাশ্বে দিগে যোঁনে লোক বনে তাহার গীতে কালপুত্রের মত তহুরার মধ্যে গিয়া পুথি হইল ও লক দ্বিরা লোকের ওঁকা বিন্দু তাহা তে লোক ওলাইলে সে আর বাহির হইবার কোন ওলাই না পাইয়া মরিল। সে লোক অত্যন্ত অল জুহিয়াছিল এবং তাহাতে স্বী লোক পুত্রিত আর। যত লোক ছিল সে সকলেই বীচিল কিন্তু তাহার এমত কাল পুত্রিত হইল যে বীচিবার ক্ষেত্র করিও সে বীচিতে পারিল না বরঞ্চ সে ক্ষেত্রে তাহার আরো মন্দ হইল।

জুয়াচোরী।

৬ জুয়াচারি তারিখে লণ্ডন শহর এক জন অন্য এক সাহেবের বাড়িতে গিয়া তাহার কীকে সম্মাচার ছিল যে তোমার বামীর এক কথ জরিয়াছে ও এক নাজের তিনখান হাট বাহির ইয়াছে তাহাতে ডাক্তর সাহেব আসি যা তাহার অনেক ওলা করিয়াছে তৎপুত্র তোমার বামী ও ডাক্তরকে পারিতোষিক যোল টাকা দিবেন। ইহা কহিয়া এক চিঠিও দিল ও কহিল যে আমাকে যোল টাকা পাত্রে দেও আমার অভিভায়া যাইতে ইবেক। ইহা শুনি যা সে স্বী অত্যন্ত বস্তু হইয়া চিঠি পত্র বাহি অহকাণ না পাইয়া তদ্রূপে ঐ টাকা তাহাকে দিবামাত্র ঐ জুয়াচোরি পলায়ন করিল। ঐ স্বী জীন বামির নিকটে গিয়া দেখিল যে সে সকল মিথ্যা তাহার বা মির লীন বামিহ হয় লাই কেবল ঐ দুই লোক জন করিয়া টাকা লইল। সে যক্তি এই কথ করিয়া অনেক লোকের টা কা লইয়াছে।

সমাচার দর্শন।

করিয়া।

স্বদেশেইতে আশুআরি মাসির সমাচার আনিয়াছে তাহাতে আশা গেল যে সেখানে কেন্দ্রিয়া বাঘের পৌরাণ্ড অতি ক্ষুদ্র হইয়াছে চারি পাঠ শত কেন্দ্রিয়া বাঘ একত্র মিলিয়া ঘর ভুমান করিতেছে এবং অনেক স্থলভাষে বহিষ্কাইয়া গিয়াছে। এক দিবসে এক ঘোঁড়ানের মাথা সম্মুখের ওপরে আক্ষয়ন করিয়া ছিল তাহাতে কেবল একটা ইরা গিয়াছে।

দেখাও।

দিতমারেয়া আশনারদের ঘোষণা এই মত এক আশ্চর্য্য হইয়াই সৃষ্টি করিয়াছে যে তাহাতে অগ্নি সন্ধ্যোগ করিয়া গা ভিয়া ছিল যে পর্যন্ত ওরিবার বিষয় সে পর্যন্ত ওই এ সেখানে আটটি পড়ে তা হাতে তাহার আলো ও ফোঁপাধ্যস্ত যায়।

পুণ্ডের চন্দন।

ইলভদেশে পড়ত যে চলে এ বিষয় পুণ্ড জাপান গিয়াছে সপ্তম সমাচার পাওয়া গেল যে ও আশুআরি তারিখে রাষ্ট্রিতে সে পর্যন্ত এক কালে মাতে চারি হাত চলিয়াছে তাহাতে সে দেশের এক নগর ইহতে স্থানান্তরিত রাজবিনী নগরে যা ইহতে যে নয় দিন তাহা বৃষ্টি হইয়াছে।

কলিকাতা।

গত মঙ্গলবার বুধবার রাতে মোং কলিকাতাতে স্ক্রল কোলাসির বাড়ীতে এক জন ঘরওয়াল বাড়ীতে শয়ন করিয়া শিয়া ঘাইতেছিল অকস্মাৎ এক জন আনিয়া তাহার বাথখালে ছোঁয়া মাড়িল সে

ছোঁয়া এক বৃদ্ধ চোঁয়া হইয়া দুই বৃদ্ধ পর্যন্ত বিদ্ধ হইল তাহাতে সে মরিল না। কোন ব্যক্তি এই কর্ম করিয়াছে তা হা দ্বির আনা যায় নাই অনুমান হয় যে আছাভী লোকেরা সেই পথে গমনাগমন করিয়া থাকে তাহারদের মধ্যে কাহাকে সে রাষ্ট্রিকালে গমনাগমন করিতে বারণ করিয়া থাকিবেন সেই লোক ফেদি করিয়া এ কর্ম করিয়াছে।

সেই দিনের পূর্ব রাষ্ট্রিতে তাহাতে অগ্নি দিবার কারণ কোন লোক উদ্যোগ করিয়া ছিল তাহাতে চৌকীর মিমায়া মালিমকে করিল যে তাহাতে অগ্নির গন্ধ পাওয়া যাইতেছে। তাহাতে মালিম তাহাজের মধ্যে গিয়া দেখিল যে কতক কোঁঠাতে অগ্নিযোগ করিয়া গিয়াছে। পরে তাহার নোর করিল অন্য দুই আছাভীতে লোকেরা আনিয়া অগ্নি নিরান করিল। পর দিন বিচার করবার কারণ পুলিশে সমাচার দিল। তাহাতে বিচার দপ্তর এই লোককে বরিবার কারণ অনেক বয় শীল দিলে করুন করিয়াছে।

বাংলা।

তুলার মহাজনেরা তুলার দাম অধিক চাহে এবং গত মঙ্গলবার ১৪ টাকা মোন দামে তুলার অল্প বিক্রয় হইয়াছে কাজেই তুলার বাজারে কম আছে মোং ময়াজ পুণ্ডহইতে সমাচার আনিয়াছে যে সে মোকামে তুলার দর কিছু অধিক হইয়াছে ও ভগীবানপুরের গোলায় গত দুই মঙ্গলবার মধ্যে পুণ্ড কারবারহইতে যে মোন দুই টাকা অধিক হইয়াছে।

সাহিত্য।

যাচা ওপঠন এক নী আশনার মন্তন

কে মনে করিয়া আশির স্বামির সঙ্গে ফাতে এক নদী তীরে বসিয়াছিল তাহার চোটে বালক ইতস্ততঃ খেলা করিয়া কে তাইডেছিল এ মনন পক্ষিরদ্বীপে তাই ইয়া বলের লিটে পর্যন্ত গিয়াছিল। তখন কালে এক ব্যাঘু আনিয়া ঐ বালককে ধরিল। তাহাতে সে চোঁচাইতে লাগিল। পরে তাহার মাতা অকস্মাৎ বালকের ফলনবীন শুনিয়া শিশু বলের মধ্যে গিয়া দেখিল যে ব্যাঘু তাহার ওপর পা দিয়া রহিয়াছে। তাহাতে সে আপন পুত্রের ঐ কন হনা দেখিয়া অজ্ঞান হইয়া ব্যাঘুর লিকটে গেল ও ব্যাঘুর পাঁতা করিয়া বিহীন ও কহিতে লাগিল যে আমার বালক জাতিয়া দে। তাহাতে ব্যাঘু ভীত হইয়া পলায়ন করিল কিন্তু বালক মরিয়া গেল।

কুড়ীর।

সমাচার পাওয়া গেল যে বন্য বৃষ্টি হওয়াতে মোং শিবপুরের মোহনা অধিক ইচ্ছামতী নদী পর্যন্ত তুরিখ থাকের মধ্যে কুড়ীরের ভয় অতিশয় ওপড়িত হইয়াছে এমত দিন নাই যে তাহাতে ওপুদেখী নানা গুল্মের পাঁচ মাতে লোক কুড়ীরে না গিরিতেছে।

সময় মৃত্যু।

ইংলণ্ডের পুণ্ড বাহাদুর বিজয়ী জর্জ মলি বারের পরলোকগত হইলেন ও রবিবারের মহামান্য বসিল এবং গত বাহাদুর জর্জী জর্জ ঐ পুকার মলিবাবের লোকী জর্জগত হইলেন ও রবিবারের মহামান্য বসিল।

রবিবারের ঐশ্বর্য্যবান ব্যক্তিরেই ইংলণ্ডেরদের অন্য মনন কর্ম অত্যন্ত নিষিদ্ধ তথানি অগত্য মহামান্য রবিবার

সমাচার দর্শন।

সমিতির প্রেরিত মহানন্দা বাঁড়িরকে
স্বাক্ষরিত হয় না।

বহির বিবরণ।

ইংল্যান্ডে এক সপ্তাহ এক সপ্তাহের বহির
জিন্স জমা এক সপ্তাহের ডাহারক এই
এইকি করিয়া দিল যে অতিশয় কড়া
ডাহারক স্বাক্ষরনাথিয়া পূর্ণাঙ্গ শক্তিতে
কিনারা বীরমুখ্যরূপে হইলে আপন শক্ত
কিনার নাথিয়া এ প্রার্থনা করিলে সে
কিনার পুষ্টি হইলে কর্ণে চিটপট
হইয়া কর্ণের পরে কর্ণ খোলাই হইবে
ডাহারক ডাহার বহিরক যোগ দুর হইবে
এইকি ওকির ওপরে আনিয়া ভয়ক
করিয়া এই বহির সাহেব আপন বহিরক
হইয়া দুর করিয়াছে।

পুষ্টিয়া দেশ।

ইংল্যান্ডের বাহাদুরের পরলোক পুষ্টি
হওয়াতে ডাহার সন্তান করণ পুষ্টিয়া
দেশের বাহাদুরের আমলা লোক লোক
সুতক কাল পোশাক পরিধান করিয়াছে।

পুষ্টিয়া দেশের বাহাদুর কোল বিষয়ে
কিহিন্দনপুত্র এক জন পুষ্টিয়া চাকরকে
পুষ্টিয়া করিয়া ডাহার অবলা বন্দের
পুষ্টি ইচ্ছার হয় শুভ টীকা বৃত্তি লিখন
করিতে চাইলে এই পুষ্টি চাকর কহিল যে
যদি আমাকে বিবাহ না করিলেন তবে
কামার এই বৃত্তি কি পুষ্টিজন। ইহা ক
কহিল সে ডাহা লইতে স্বীকার করিল
না।

ইহাতে সে ভেতরী কথ্য মানী লো
কর স্বাক্ষর প্রকাশ করিল।

পুষ্টিয়া দুর লোকের স্বাক্ষর।

এক ভেতরী বহাদুর একটা কোলাশী
পুষ্টিয়া অত্যন্ত আমলা হইয়া আপন
গর্ভের মধ্যে রাখিল এবং বহিরে মান
স্বাক্ষর যে ডাহারক এই ভেতরীক অহ
কৃত করিল। এক বাহাদুরের হস্ত
মহান ডাহার গর্ভের লিখনকৃত পুষ্টি হইয়া
দুর ডাহার এই ভেতরী আপন গর্ভেই
বহির হইয়া এই হস্তকে পুষ্টিয়া করে।
এই সপ্তাহক দিন করিলে এক দিন হস্ত
কৃত ডাহা মেলি কিন্তু কিছু দুর করিতে
পারিল না। পর দুই দিন দিন ভেতর
এই বাহাদুর হইয়া বাহাদুরকে কহিল।
ইহাতে বাহাদুর আশ্চর্য জ্ঞান করিয়া
আপনি এক দিন এই হস্তকে আনোহর
কিয়া গিয়া পুষ্টি ১৪ নেইকন দেখিলেন
এ বিবেচনা করিয়া মস্তিষ্ককে কহিলেন
যে এই ভেতরী অংশ কিহিন্দন আর সব
তি থাকিবে সেই অহাদুর মত হইয়া
আপনার স্বাক্ষর না আনিয়া হস্তকে পুষ্টি
হাত করে।

ডাহাদুর এই ভেতরী গর্ভে রাখিল করিয়া
পুষ্টিয়া দেখিলেন যে সে একটা মো
আশী হইল করিয়া হইয়াছে। ইহা যে
খিয়া বাহাদুর কহিলেন যে ডাহার মো
আশী কহিয়া লও এবং গর্ভে যেন জিন
ডেমিল করিয়া রাখ। পরে সেই স্বাক্ষর
করিল দুই দিন দিনের পর দেখা গেল
যে এই ভেতরী লোক হইল করিয়াছে।

অতএব দুর লোক বহিরে মত
অহাদুর হয় এ সেই বহি নাথ হইল আ
পনার পুষ্টিয়া হইয়া।

বাহার জগৎ।

| বিবরণ | মোট | অর্থ | পয়সা |
|----------------|-----|------|-------|
| সুপারি | ১ | ৫০ | ৫০ |
| কোলাশী | ১ | ১০ | ১০ |
| বাহার মরিচ | ১ | ০ | ১০ |
| নারিকেল তৈল | ১ | ১৫০ | ১৫ |
| মুলা কাছোকা | ১ | ০ | ১০ |
| আগার মরিচ | ১ | ১০ | ১৫ |
| পাটনাই আনা | ১ | ১ | ১০ |
| কুল পাটনাই | ১ | ১৫ | ০ |
| পাছরি উত্তম | ১ | ১০ | ১৫ |
| পাছরি মধ্যম | ১ | ১০ | ১৫ |
| মুগা উত্তম | ১ | ১০ | ১ |
| মুগা মধ্যম | ১ | ১০ | ০ |
| বালার | ১ | ১০ | ১০ |
| মুগা লোম | ১ | ১ | ১ |
| পাটনাই কট | ১ | ১০ | ১০ |
| অজর তালি | ১ | ১০ | ১৫ |
| উত্তম বাগা দূত | ১ | ১০ | ১৫ |
| মধ্যম দূত | ১ | ১০ | ১৫ |
| উত্তম দূত | ১ | ১০ | ১৫ |
| মধ্যম উত্তম | ১ | ০ | ০ |
| বীল উত্তম | ১ | ০ | ০ |
| মিছরি উত্তম | ১ | ১০ | ১৫ |
| মধ্যম | ১ | ১০ | ১৫ |
| মোরা উত্তম | ১ | ১০ | ১৫ |
| মধ্যম | ১ | ১০ | ১৫ |
| শিলী লপা | ১ | ১০ | ১৫ |
| মধ্যম | ১ | ১০ | ১৫ |
| বাহার মরিচ | ১ | ১০ | ১৫ |
| ভেতল | ১ | ১০ | ১৫ |
| ভালার | ১ | ১ | ০ |
| সব | ১ | ১০ | ১৫ |

এই সমস্ত বর্ণন পুষ্টিয়া দেশের বাহাদুরের পুষ্টিয়া দেশের বাহাদুরের
আপন বাস পুষ্টিয়া দেশের বাহাদুরের পুষ্টিয়া দেশের বাহাদুরের
কিনারা বীরমুখ্যরূপে হইলে আপন শক্ত
কিনার নাথিয়া এ প্রার্থনা করিলে সে
কিনার পুষ্টি হইলে কর্ণে চিটপট
হইয়া কর্ণের পরে কর্ণ খোলাই হইবে
ডাহারক ডাহার বহিরক যোগ দুর হইবে
এইকি ওকির ওপরে আনিয়া ভয়ক
করিয়া এই বহির সাহেব আপন বহিরক
হইয়া দুর করিয়াছে।

সমাচার দর্পণ

১১৪ নং পৃষ্ঠা।

শনিবার।

১৯ জুলাই মল ১৮৭০। ১৪ শ্রাবণ মল ১২৭৭

দর্পণে মুদ্রিত সৌম্যবিনোদ কার্যবিবরণ।

ব্রাহ্মসমাজে প্রকাশিত সমাচার দর্পণে ॥

কোম্পানির কাগজ।

কোম্পানির শতকরা চতুর্থাংশের মূল্যের কাগজ করা করিতে হইলে শতকরা এক টাকা ও তিন আনা প্রিমিয়াম। বিক্রয় করিতে হইলে শতকরা এক টাকা আট আনা প্রিমিয়াম।

মস্তাহারের বিবরণ।

| ১০ | ২০ | ৩০ | ৪০ | ৫০ | ৬০ | ৭০ | ৮০ | ৯০ | ১০০ |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| ১ | ২ | ৩ | ৪ | ৫ | ৬ | ৭ | ৮ | ৯ | ১০ |
| ১১ | ১২ | ১৩ | ১৪ | ১৫ | ১৬ | ১৭ | ১৮ | ১৯ | ২০ |
| ২১ | ২২ | ২৩ | ২৪ | ২৫ | ২৬ | ২৭ | ২৮ | ২৯ | ৩০ |
| ৩১ | ৩২ | ৩৩ | ৩৪ | ৩৫ | ৩৬ | ৩৭ | ৩৮ | ৩৯ | ৪০ |
| ৪১ | ৪২ | ৪৩ | ৪৪ | ৪৫ | ৪৬ | ৪৭ | ৪৮ | ৪৯ | ৫০ |
| ৫১ | ৫২ | ৫৩ | ৫৪ | ৫৫ | ৫৬ | ৫৭ | ৫৮ | ৫৯ | ৬০ |
| ৬১ | ৬২ | ৬৩ | ৬৪ | ৬৫ | ৬৬ | ৬৭ | ৬৮ | ৬৯ | ৭০ |
| ৭১ | ৭২ | ৭৩ | ৭৪ | ৭৫ | ৭৬ | ৭৭ | ৭৮ | ৭৯ | ৮০ |
| ৮১ | ৮২ | ৮৩ | ৮৪ | ৮৫ | ৮৬ | ৮৭ | ৮৮ | ৮৯ | ৯০ |
| ৯১ | ৯২ | ৯৩ | ৯৪ | ৯৫ | ৯৬ | ৯৭ | ৯৮ | ৯৯ | ১০০ |

ইস্তাহার।

আমাদের রাজ্য কালীনাথের স্বর্গাধিকারী নারায়ণ চন্দ্র স্বর্গাধিকারী রাজ্য নারায়ণের জিনি শিবচন্দ্র রায়েব স্বর্গাধিকারী তারারাজ্য রায়েব নামে নামিষ করিতে মূল ১৮৭০ সালের ১০ হিসেবেরে মুন্সীমকোর্টের অর্ডার দিতে যে ডিক্রি হইয়াছে সেই টীকা আদায় কারেন নীচের ডকমেন্ড মত গিয়া ও বাণাল ও অমী ও বাণী মুন্সী মল ১৮৭০ সালের ৫ আগস্ট তারিখে শিবচন্দ্র মুন্সীমকোর্টে বিক্রয় হইবে একই এই বিক্রয়ের নির্দিষ্ট মানের আদায়ের তত্ত্ব করিলে আদায় হইবেক।

উপদেশ।

১ নম্বর জেলা বর্ধমান পরগণে বিত শিচেন্দ্ররায়ের হিন্দা চারি আনা ছাট কালিগঞ্জ ও অগ্নিশিখর ও যদুবেত ও নিজবাড়ী ও আলিমুখিয়া ও কুশবেতা ও বাণি ডোবালা ও গঙ্গারামপুর ও শিবপুর ও দুলা ও সিমলা ও নতিবপুর।

পরগণে বোকা জিলা ১ কালিগঞ্জ ও বোকা বিপুলশাড়া ও বোকা পরগণে আমান্দ দক্ষিণদিকারামপুর ও শিবপুর ও বাণি ও বাবরহপুর।

২ নম্বর কিসমত অগ্নিশিখর মাধারন চারি আনা হিন্দা যে গুয়া মাধারন বর্ধমান এক কেতা পাঁকা বাণী এক কেতা অমী অগ্নিশিখর।

৩ নম্বর ৬ হিন্দা পাঁকা বাণী ও বালা ও কুলিয়া জেলা ঘনহর।

৪ নম্বর ৬ হিন্দা মহোত্তরান গুয়া অগ্নিশিখর ও অগ্নিশিখর ও পরগণে ও রা অগ্নিশিখর জেলা বর্ধমান জেলা চিশিখর গালা চুট। মহোত্তরান ৫০০ বিঘা ১০ আনা হিন্দা।

৫ নম্বর বনডবাড়ী সময়ে অমী চারি আনা হিন্দা পাঁকা বাণী এক ডালানাল বাণী ও এক বাণাল মোকাম ভবানী পুর চারি আনা হিন্দা। আর একডাল পাঁকা বাণী ও বাণাল মোকাম শিবপুর ১ হিন্দা। সময়ে অমী বনড বাণী ও এক ডালানাল ও পুরিলা এই দুয়া বিক্রয় ১৫ বিঘা মোকাম আমান্দ

পরগণে মোকাম জেলা বর্ধমান। ইতি তাং ৫ জুলাই।

সমাচার দর্পণ।

লবন বিক্রয়।

১৩। ১৪ জুলাই তারিখে কালিগঞ্জের এককোণ্ডে ঘরে কোম্পানীর বার লবন যোন লবন বিক্রয় হইয়াছে তাহাতে গড়ে এক শত যোন ডিন শত মাইত্রিশ টাকায় বিক্রয় হইয়াছে। ওসুলা চম্পাল লবন এককোণ্ডে হাজার নয় শত আটত্রিশ টাকায় বিক্রয় হইয়াছে।

কালেজ।

ঐশ্বর্য্য গবর্নর জেনারেল বাইহুর্ন লিফট করিয়ারেন যে অগ্নিশিখর মস্তাহে মোকামের কালেক্টর সাহেব লোকের ঘরে ইছামি হইকে সে সময়েরে বার লবনের তারে সাহেব লোক ও জাতি বান লোক ও কালেক্টর পণ্ডিত লোক সকল দর্শন করণ সময় ঐশ্বর্য্য গবর্নর সাহেবের ঘরে একত্র হইবেন।

পাটনা।

মোঃ পাটনা হইতে ১৮ জুলাই তারিখের যে পত্র আসিয়াছে তাহাতে আলম ফৌজ যে মেখারেন যোমত সুখি হইয়াছে ইহাতে বুঝা যায় যে জলা ২৭-সর আপেক্ষায় এই ২৭-সর অতিশয় শস্যাদি

সমাচার দর্পণ।

অগ্নিবৎ সেখানে তিন দিবস যমত
বৃষ্টি হইয়াছে যে তাহাতে বৃষ্টি বীরা
বিরতি জিল না সে তিন দিন ঘরহইতে
বাহিরে যাওয়া তাঁর হইয়াছিল।

এখন তত্ত্ববিহীন সমাচার আনি
ডেকে যে এইবার সর্বত্র বৃষ্টিমানুষের
যত হইতেছে এখন যেখানে আশ্রম
বীল্যের বৃষ্টি আছে সেখানে গুণ অতু
তম বন বীনা অগ্নিয়ারে।

ইংল্যান্ডে যোদ্ধা।

ইংল্যান্ডে দুই পুত্র লোক ভূমি নইয়া
বিরোধ করিতেছিল তাহারদের যোদ্ধা
স্বাধীনতা প্রদান বাহাদুরের আশ্রমের
শেষে আরম্ভ হইয়া পুণ্য অতু বাশা
হের আমলে এক শত দিন বন্দরের
পরে নিবৃত্তি হইল।

মানবদাস।

যোদ্ধা মানবদাস হইতে সমাচার আনি
যাকে তাহার দ্বারা জানা গেল যে যোদ্ধা
হয়দরবার শহরে এক দ্বারা হইয়া অ
নেক লোক দ্বারা পড়িয়াছে কিন্তু তাহার
বিশেষ জানা যায় নাই।

দ্রাবিড়।

পূর্বে জাপান গিয়াছে যে দ্রাবিড় দেশের
বাহাদুরের ভ্রাতৃপুত্রকে কোন লোক বধ
করিয়াছে। এখন তাহার সমাচার পা
ওয়া গেল যে সে লোক বীরা পড়িয়াছে
তাহার ভাষা শরীর ভিজিয়াছে বন্ধ আ
ছে হাঁড়ির নীচে ও গুরুদেশে এমনিদেশে
ও হস্ত ও বাহুদুল ও গুরুদেশে পুতকে
হুসন পৌছো তিরিহেরতে যমত বন্ধ
আছে যে সে যমতকে হেট করিতে পারে
না এখন পৌছো তাহার বীরা বৈজ্ঞানিক

বন্ধ এখন তাহার দুই তিন মিনিট অ
ন্তরে এক বার শয়ন করিতে দেয় দুই
তিন মিনিট অন্তরে পুনর্বার উঠে যেহে
তুক সে শীঘ্র না মরে এখন শরীরের
নির কাটিয়া রক্ত নির্গত করা হইতেছে
এই বণ ঘরনা হিতেছে।

অন জতি।

ইংল্যান্ড দেশে এখন এক পুন্নিহিত জন
কতি আছে যে যখন বাটার ময়ুর শব্দ
মরে তখন বাটার ময়ুর শব্দ
পড়ে। এই কথা শ্রুত হইয়াছে যে
বাহাদুরের বড় পুত্রের বাটারে অনেক
ময়ুর জিল তাহার অতি শীতপুত্র
ময়ুর তাহার পরে বাহাদুর ময়ুরলেন।

অতিশীত।

দ্রাবিড় দেশে মারসেলস নগরে গতি শীত
কালে অতিশয় শীত পড়িয়াছিল তাহা
তে বনের বড় বৃক্ষ শীততে কাটিয়া
গিয়াছে ও অনেক বৃক্ষ মরিয়াছে এখন
কাঁকড়ি লোকেরা ও চাষা লোক অনেক
মরিয়াছে এখন আফ্রিকা দেশের এক
কাল লোকের শ্রম অবশ্য হইয়াছে।

অর্থনি দেশ।

অর্থনি দেশে এক নগরে এক জন অম
বধি মূক ও বহির জিল সে এক দিন কুটু
কের বাটারে ভোজনে গিয়াছিল সেখা
নে অধিক মদ্যপান করিয়া বাটারে আই
মন কালে অতিশয় শীত হইল। পরে
এক কবিরাজ আনিয়া তাহাকে ওষধি
দিল কিন্তু তাহাতে তাহার শীতাবশ্য
হইল না। অশুভ পক্ষ সে ময়ুর যমত
বোধ হইল তাহার অধিকের চিহ্ন দিল

খাছিল না। তাহার পর দিবসে ইংল্যান্ড
তাঁহার কবরের সকল আয়োজন পুস্তক
হইল এখন গুণা ঘরলইয়া ময়ুর কালীন
পুণ্যনাথি করিয়া গৌরবানল নইয়া যাও
নমাত্রে নিম্নকরে মাঝে নতত শব্দ ও নি
শ্বাস শব্দ শুনা গেল। পরে পৌরাত
লোকেরা ভীত হইয়া নিম্নকরে নামিয়া
শুলিয়া দেখিল যে সে লোক ওগিয়া বসি
য়াছে। তৎক্ষণে কবিরাজকে ডাকাইয়া
দেখান গেল কিন্তু সে বাঁচিল না। ইহা
তে অনুমান হয় যে তাহারে নিম্নকরে বন্ধ
না করিলে সে বাঁচিতে যেহেতুক নিম্নকরে
বন্ধ হইয়াত তাহার মাঝে বায়ু পূর
ন হইল না তাহাতে মৃত্যু হইল সে নিশ্বাস
বন্ধ হইয়াত মরিয়াছে।

কয়ে বাহাদুর।

ইংল্যান্ড দেশে এক নামে খ্যাত কয়ে
চারি বাহাদুর পূর্বে কখনও হল নাই
কিন্তু এখন যিনি বাহাদুর হইয়াছেন
ইনি ও ইহার পূর্বে তিন বাহাদুর তর্ক
নামে খ্যাত। অর্থনি পুণ্য অর্জ ও
তীয় তর্ক ও তৃতীয় তর্ক এই তিন গতি
বর্তমান তর্ক তর্ক এখন বাহাদুর হইয়া
ছেন।

নাথিকের সাহস।

১৬ মে তারিখে মাদ্রাজের লিট
বর্তি সম্মুখে অতিশয় ঘোরতর তুমুল হ
ইয়াছিল তাহাতে অনেক আহাজ দ্বারা
পড়িয়াছিল। সে সময়ে সেখান দ্বারের
নাম এক কুটু আহাজ ও তুমুলের মাঝে
পড়িয়াছিল কিন্তু তৎকালে এক জন
গৌরা মানিয়ারাহ তাহাতে জিল ফল
গৌরা কান্তানপুত্তি সকল লোক তা
দ্বারা গিয়াছিল। তুমুলের আর সে

সমাচার দর্পণ।

আহাযের তাহব মাশুল ভাঙ্গিয়া গেল এবং সমুদ্রের ভেতর আহাযের গুপ্ত দিয়া গেল তাহাতে ওপরিষ তাহব দুই সপ্তক ভাঙ্গিয়া গেল এবং এমত দুর্ভাগ্য গুণ দ্বিত হইল যে একটা কাষ্ঠ গোঁড়া মালি যের গুপ্তের পতিল তাহাতে সে মরিল। পরে আবদুল্লাহির ভাই নামে এক জন বীণী ছিল তাহাকে আহাযের সকলে আহাযের শবদগন্ধি করিতে ভার দিলে সে ডাখিল ছোট লুতন মাশুল তুষা নের কালে আহাযে ওঠিয়া কয়েক আঁহা গু কিলারায় আনিয়া দিল। যখন ঐ সাহসী লোক কলিকাতা পঁহছিল তখন আহাযের অধিক তাহার পুতি অত্যন্ত দুঃ হইলেন এবং কলিকাতার মারিল রেজকরি দস্তুরের সাহেবেরা এই কয়েক বিখ্য মোহর পুস্তক করিলেন সে যো হরে আবদুল্লাহির ভাইর নাম সুবর্ণ ৯ টিৎ এবং ১৮৭১ সালের ১৩মে তারিখে হেলেন নামে আঁহা ব্রুকা করিয়াছে এই বয়ান লিখিয়া হামশিশ সুবর্ণ মোহর তাহাকে দেওয়া গিয়াছে এবং সে আঁহা যে আঁহা যে খালাসী ছিল তাহারদিগে কেও হামশিশ স্বপার মোহর দিয়াছে।

বন্যা।

সমাচার পাওয়া গেল যে গরীর ঊন প্রতিদিন অতিশয় বৃষ্টি পাইতেছে যে যামের পুষ্ক ইত্বক সম্ভবপর্যন্ত দিনা লাতে বার বৃষ্ণ করিয়া থাকিয়াছে ইহা তে শোকেও অতিশয় ভীত হইতেছে এবং ১ জুলাই ইত্বক ১৫ তারিখ পর্যন্ত নাট হাত জন দিল্লয় বাঁকিয়াছে যদি এই বর্ষ ধরারহর জন বৃষ্টি হয় তবে নদী ভীষণ ভয়ীর নীল ও বাঁনা যে নাবি আর সে সপ্তক আঁহা দিনের মধ্যে ভরি

য়া পাইবেক। সে সপ্তক ভূমির শমা ও নীল অংশ বৎসরের জুলাইর শেষ ও আগস্টের পুণ্যমে কাটা গিয়া থাকে গত বৎসরে ১৩ আগস্ট তারিখে যে পর্যন্ত জন ওঠিয়াছিল এই বৎসর ১৫ জুলাই সে পর্যন্ত ওঠিয়াছে। এই বৎসর নীল সরস্র লাবি বৈশাখ আঁহা মাসে যে নীল বুলা গিয়াছে সে সপ্তক আখানি ভাল গঠে নাই। নীলকৃষকেরা ভতিশ্য তাড়া ভাতি করিয়া নীল কাঠিতেছে কিন্তু অখা নি নীল পঙ্ক হয় নাই তথানি যেমত জন বাড়িতেছে ওরপুনারে নীল কাঠি তেছে। নদীর ভীরে যে নীল ছিল সে পুষ্টি তুবিয়া গেল।

বেঁহাট।

কড়ক দিন হইল এক জন বাঁহিল লোক বেহাটের এক ভাঙ্গি কার্যে নিযুক্ত হইয়া ছিলেন তিনি অনেক দূরি করিয়াছিলেন এমত অনেক সম্ভেহ তাহার পুতি অনিয়া ছিল তাহাতে তাহার পুতি ওপুষ্ক আ মিল হাখিল করিবার বৃক্ক হইল। তা হাতে সে ব্যক্তি এক মার্তবর আমিল দিল। কিছুকাল পরে তাহার অনেক দায় গু নিয়া আমিলবার কহিল যে বে ভাই আমি তোমার আমিলী হইতে খালাস হইতে বাসনা করি। ইহা শুনিয়া সেই লোক যত টাকা তার মোকদ্দমার আমিল দিয়াছিল সেই টাকা বেবাক ও শরত দহ- বে বীণিশ হাআর টাকা আমিলবারের লি কহে পাঠাইয়া সেই রাষ্ট্রিত পলায়ন করি ল। ইহাতে ব্রুকাখ্য যে সে লোক যত টাকা দুরি করিয়াছে তাহার সন্ধ্যা জালা ভার।

আজকাল তুতি।

গত ৪ জুলাইর মাসে লুতন নগরে

এক জন সাহেব আশানার কুটীরে যে জের দেহাতে কড়ক নোট রাখিয়াছিল পর দিন চাকর শোকেহাটিকে ঘাঁহিয়ালা দিবার কারন যোজা খুলিয়া দেখিল যে ৮০ টাকার নোট নাই পরে তারিখে সেই ঘরের হারে আঁহাডের পদ্দ পাইয়া হার খুলিয়া দেখিল যে কোসহ লোক নাই কেবল ঘরের স্বনাটে এক টুকরা কাগজ বাঁধা আছে তাহার মধ্যে ৭০ টা কার এক নোট পাওয়া গেল এবং আর এক কাগজে এই লিখা পাওয়া গেল যে আমার সেলায় আমি আশী টাকা লই যা ৭০ টাকা দিল্যম বাকী দশ টাকা আমি লইলাম।

খুল ও গৃহদাহ।

ইংলণ্ডের এক নগরে গত মার্চ মাসে এক সাহেবের বাড়িতে দুই পুহর এক ঘণ্টা রাষ্ট্রির সময়ে ঘরের গুপ্তর বয় ওঠি তেছে ইহা এক জন শহরার নিম্নায়া দেখিল। পরে অন্য লোককে সমাচার দিয়া সে ঘরের নিকটে ওপকার করিতে যোঁকিয়া গেল এবং ঘরের হারে আঁহাড করিয়া তাকিল কিন্তু ওত্তর পাইল না। সে ঘরে এক বৃহ সাহেব ও এক হাসিয়াস্র থাকে। পরে অতি অতিশয় আঁহাড মাল হইল লোক ও অনেক একদ্র হইল এবং নিম্নায়া হার ভাঙ্গিয়া গিঁড়ি বিয়া ওপর ভন্ডায় ওঠিয়া দেখিল যে এক বিজালা কলিয়া গিয়াছে তথানি বয় ওঠিতেছে কিন্তু মালঘের চিহ্ন কিছু পাইল না। পরে ভোলাসার গুপ্তর গি যা দেখিল যে এক কুটীর পুতিতেছে কিন্তু সাহেব ও হাসীরা অনেক অসুস্থ করিল তাহারদিগে পাইল না। পরে ঘর যে কুটীর পুতিতেছিল তাহার

সম্রাটের দর্শন।

জাত ভাষিয়া অল ঢালিলে অগ্নি নিহিল
হইল। কিন্তু কাল পরে এক জন সেই
কুটরা মুগ্ধে করিয়া তুচ্ছিক দেখিতে না
গিল। পরে বারের নিকটে এক চিহ্নি দেখি
য়া তাহা তুলিল তাহার মতী। মনুষ্য শ
রীরের এক ভাগি দেখিল পরে অন্য লোক
কে তাকিয়া তল্লেণ করিতে একটা স্বীলো
কের শরীর কিছু দূরে পাইল। ইহাতে
ঐ মহিষের ও দানীর শরীর মকুল বি
ভক্ত করিল। পরে সন্মোহনপুত্র আরও
অন্যমান করিল যে অগ্নি বাহির হইতে
দেখা না যায় এই কারণে পুতিবারে কল
নইকাইয়াজিল আরা বিবেচনাতে আইল
যে নীরে ডানা ও খোড়ানা ও ডোড়ানা
ডিন হানে অগ্নি দিয়াছিল ইহাতে বোধ
হইল যে ঘরের মতী তড়িমন কর্ম হ
ইয়াছে। পরে মোহের ও দানীর শ
রীর উদ্যাক করা গেল মোহেরে কেবল
ইহুইর্থে পাশোক্তনহিত জিল বাকী
সাই ইহুয়াকে মন্তঃ পুত্রভাগি পুতিয়া
গিয়াছে পক্ষা- ভাগি যে জিল সেও
ভুগু বোধ হইল ও দানীর মতিভাতে মূখ
দিয়া ময়িরা হুহিয়াছে তাহার বস্তু কতক
পুতিয়াকে কেনে গণি পুতিয়াকে। পরে
তাহারি যোজে জীল গেল এবং তাহার
উকুত অকতিই টিই ও মন্তঃকর পক্ষা-
ভাগি ভিন হান কুইয়া গিল ইহাতে
জন্মদান হইল যে এই সন্মোহন অধীত ব
কুইক সন্মোহন করিয়াছে। এই বিষয়ে
কুই লোকের পুতি সন্মোহ হওয়াতে তা
হার কএম ইহুয়াকে তাহার এক জন সে
সন্মোহের দানী। এই লোককে বহিবার
জলো আট শত টোকা কলু করিয়াছে।

মুত বাহশাহের সৌজন্য।

ইহুগুতের গতি বাহশাহ এক সময়ে
আপন শহর ত্যাগি করিয়া কোচুকপুত্র
ভিন গুমে গিয়া কিছু দিন থাকিলেন।
পরে তখাকার লোকেরা ও তল্লিকটবর্তি
লোকেরা বাহশাহের শুভাগমনে বার্তা
শুনিয়া তাহার দর্শনার্থ আসিতে লাগি
ল। এক দিন বাহশাহ অশ্বারোহণ ক
রিয়া ভূমণার্থ একাদী মাঠে গেলেন ও
ঐ মাঠে শস্য ফোঁসে বসাইতে কেবল
এক স্ত্রীকে দেখিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন যে
আরও টানা লোকেরা শস্যাদির কর্ম না
করিয়া কোথা গিয়াছে। সে স্ত্রী বাহ
শাহকে না চিনিয়া ওত্তর করিল যে তা
হার বাহশাহকে দেখিতে গিয়াছে। বা
হশাহ কহিলেন যে তাহার মকুল বাহ
শাহকে দেখিতে গিয়াছে তুমি কেন
যাও নাহি। পুত্রই ঐ স্ত্রী ওত্তর করিল
যে বাহশাহকে দেখিলে কি ইহাবেক যা
হার গিয়াছে তাহার পাণাল নির্যাক
এক দিন সন্মোহনের কর্মকর্তা করিলে কি
ইহাবে আমার নীত পুত্র আছে তাহার
ঘের পুতিপালন আমার করিতে হয়। বা
হশাহ তাহার এই কলুণ কথা শুনিয়া
অস্ত্রধারণে তুচ্ছ হইয়া তাহার হস্তে কি
ফি- টোকা দিয়া কহিলেন যে যখন ডো
রানী সন্নি লোকেরা জিজ্ঞাসা আনিবে
তখন বলিও যে ডোয়রা বাহশাহকে যে
দিয়ে গিয়াছিল। কিন্তু বাহশাহ আমা
কে দেখিতে আনিয়াছিলেন। ইহা ক
হিয়া বাহশাহ আপন স্থানে গেলেন।
এই কণ তাঁহার সৌজন্যের কথা আ
লেক পুনিশ্ব আসিলে।

বাকার ভাণ্ড।

| সিনিগ | মোহ | আবহি | পরিঃ |
|---------------|-----|------|------|
| মুগারি | ১ | ৩৮ | ৩৮ |
| ডোকা ইকল | ১ | ১৮ | ১৮ |
| গাহ মরিচ | ১ | ৩ | ৩৮ |
| বারিকেল তেল | ১ | ১৪৪ | ১৮ |
| কুনা কাচোকা | ১ | ৩ | |
| আবা রলপু | ১ | ১৮ | ১৮ |
| পাটনাই জালা | ১ | ১ | ১৮ |
| চাল পাটনাই | ১ | ১৮ | ৩ |
| পাছরি উত্তম | ১ | ১৮ | ১৮ |
| পাছরি মধ্যম | ১ | ১৮ | ১ |
| মুগা উত্তম | ১ | ১৮ | ১৮ |
| মুগা মধ্যম | ১ | ১৮ | ৩ |
| বানার | ১ | ১৮ | ১৮ |
| মুগা গোম | ১ | ১৮ | ১৮ |
| পাটনাই হুই | ১ | ১৮ | ১৮ |
| অবহর তালি | ১ | ৩ | ৩৮ |
| উত্তমগারা হুত | ১ | ১৮ | ১৮ |
| মধ্যম হুত | ১ | ১৮ | ১৮ |
| ইকলা হুত | ১ | ১৮ | ১৮ |
| মধ্যম ইকলা | ১ | ৩ | ১৮ |
| বীল উত্তম | ১ | ৩ | ৩ |
| মিছরি উত্তম | ১ | ১৮ | ৩ |
| মধ্যম | ১ | ১৮ | ১৮ |
| মোরা উত্তম | ১ | ৩৮ | ৩ |
| মধ্যম | ১ | ৩৮ | ৩৮ |
| চিনি কাশরি | ১ | ১৮ | ১৮ |
| মধ্যম | ১ | ১৮ | ১৮ |
| খার চিনি | ১ | ৩৮ | ৩৮ |
| তেতুল | ১ | ৩ | ৩৮ |
| ডামাকু | ১ | ৩ | ৩ |
| চন্দর | ১ | ১৮ | ১৮ |

এই সম্রাটের দর্শন শুরামপুরের ছাপাখানাতে পুতিপালন করিবারে ছাপা হয়। বাহির মকুলে আবশ্যক হয় তিনি শুরামপুরের ছাপাখানার
নাম পাঠাইলে নতাবৎ কাগজ তাহার নিকটে পাঠান হইবে তাহার দুলা মালেক এক টোকা তিনি বাহর করিয়াছেন যদি তাহার দর্শন
করে তবে তিনি শুরামপুরের ছাপাখানাতে সম্রাটের দিব্যাক তাহার নিকটে পাঠান হইবেক।

সমাচার দর্পণ

১১০ সংখ্যা।

শনিবার।

৪ আশ্বিন, সন ১৩১০। ১১ শ্রবণ, সন ১২১১।

দর্পণে দুই পৌষ্যদিবস কাটাইয়াছিল।

বৃহত্তমিহ কলকাত্ত নগরান্তরিত।

কোলালির কাণ্ড।

কোলালির শতকরা চার টাকা মূল্যে
কাণ্ড করিতে হইলে শতকরা এক
টাকা চারি আনা পুণ্ডিয়া। বিকল্প করিতে
হইলে শতকরা এক টাকা আট আনা
পুণ্ডিয়া।

কারণ সেই স্মার হইলে দুই হাজার টাকা
নষ্ট হয়। তাহার চেড়া অনেক
করা গেল কিন্তু পাওয়া গেল না।

আক্ষর্য বিবাহ।

ই-গুণ্ডে ৮৩ তিরানী বংশবধূ
এক সাহেব ৭৩ ভৈরব বংশবধূ
এক স্মার সহিত তিন সন্তান পুতি ক
রিয়া বিবাহ করিয়াছে। সেই বিবাহে ৩৩
খানি ও বাবা ভাণ্ড ও নানা পুকার লাভ
হইয়াছিল।

ই-গুণ্ডে এক সাহেবের স্মারি ল
৩০-গুণ্ডে ৭৩ আশা-দুই হাজার কারণ
আশা-বংশবধূ এক স্মার করে ক
রিয়া অনেক স্মার সহিত ৩৩-গুণ্ডে
রিয়া অনেক স্মার সহিত ৩৩-গুণ্ডে
রিয়া অনেক স্মার সহিত ৩৩-গুণ্ডে

অন্য এক গুণ্ডে এক সাহেব এক স্মার
সহিত ১৭ বংশবধূ পুতি করিয়া
নানা পুকার লাভ করিয়াছে। সেই গুণ্ডে
৩৩-গুণ্ডে তিরানী বিবাহ করিয়াছে।

সাহেব।

ই-গুণ্ডে এক সাহেব এক স্মার
সহিত ১৭ বংশবধূ পুতি করিয়া
নানা পুকার লাভ করিয়াছে। সেই গুণ্ডে
৩৩-গুণ্ডে তিরানী বিবাহ করিয়াছে।

অন্য এক গুণ্ডে এক সাহেব এক স্মার

সহিত ১৭ বংশবধূ পুতি করিয়া

নানা পুকার লাভ করিয়াছে। সেই গুণ্ডে

৩৩-গুণ্ডে তিরানী বিবাহ করিয়াছে।

অন্য এক গুণ্ডে এক সাহেব এক স্মার

সহিত ১৭ বংশবধূ পুতি করিয়া

নানা পুকার লাভ করিয়াছে। সেই গুণ্ডে

নীয়া যেন এক জন কাছী এক স্মার
কল স্মার করিয়াছে সেই কলস্মার সে
খানি পুতি করিয়াছে এক কলস্মার
যেহে ও পুতি করিয়াছে এক কলস্মার
যেহে ও পুতি করিয়াছে এক কলস্মার

আক্ষর্য বিবাহ।

ই-গুণ্ডে এক সাহেব এক স্মার
সহিত ১৭ বংশবধূ পুতি করিয়া
নানা পুকার লাভ করিয়াছে। সেই গুণ্ডে
৩৩-গুণ্ডে তিরানী বিবাহ করিয়াছে।

অন্য এক গুণ্ডে এক সাহেব এক স্মার
সহিত ১৭ বংশবধূ পুতি করিয়া
নানা পুকার লাভ করিয়াছে। সেই গুণ্ডে
৩৩-গুণ্ডে তিরানী বিবাহ করিয়াছে।

ই-গুণ্ডে এক সাহেব এক স্মার
সহিত ১৭ বংশবধূ পুতি করিয়া
নানা পুকার লাভ করিয়াছে। সেই গুণ্ডে
৩৩-গুণ্ডে তিরানী বিবাহ করিয়াছে।

অন্য এক গুণ্ডে এক সাহেব এক স্মার
সহিত ১৭ বংশবধূ পুতি করিয়া
নানা পুকার লাভ করিয়াছে। সেই গুণ্ডে
৩৩-গুণ্ডে তিরানী বিবাহ করিয়াছে।

ই-গুণ্ডে এক সাহেব এক স্মার
সহিত ১৭ বংশবধূ পুতি করিয়া
নানা পুকার লাভ করিয়াছে। সেই গুণ্ডে
৩৩-গুণ্ডে তিরানী বিবাহ করিয়াছে।

অন্য এক গুণ্ডে এক সাহেব এক স্মার

সহিত ১৭ বংশবধূ পুতি করিয়া

নানা পুকার লাভ করিয়াছে। সেই গুণ্ডে

৩৩-গুণ্ডে তিরানী বিবাহ করিয়াছে।

সম্রাটের পুত্র।

| | | | |
|---|----|----|----|
| ১ | ১০ | ১১ | ১২ |
| ২ | ১১ | ১২ | ১৩ |
| ৩ | ১২ | ১৩ | ১৪ |
| ৪ | ১৩ | ১৪ | ১৫ |
| ৫ | ১৪ | ১৫ | ১৬ |
| ৬ | ১৫ | ১৬ | ১৭ |
| ৭ | ১৬ | ১৭ | ১৮ |
| ৮ | ১৭ | ১৮ | ১৯ |
| ৯ | ১৮ | ১৯ | ২০ |

সমাচার দর্পণ

কলিকাতার কলকাতা।

গত সোমবার ৩। কলকাতা তিরানী
সহিত পুতি করিয়া নানা পুকার লাভ
করিয়াছে। সেই গুণ্ডে ৩৩-গুণ্ডে

গত সোমবার ৩। কলকাতা তিরানী
সহিত পুতি করিয়া নানা পুকার লাভ
করিয়াছে। সেই গুণ্ডে ৩৩-গুণ্ডে

আক্ষর্য বিবাহ।

अष्टाष्टाई दर्शन ।

नृपुन शम्भु :

ক্ষুদ্র মুখী গোলায় হোসেন মো-
 বেদ্যাবতীর উত্তরে কোলাদির বাঁধা রা-
 হার পূর্বগীর পশ্চিম তীরে নুতন গি-
 ১ হাট বসাইতেছেন। সেখানে যেকোন
 ধর গিয়া বৎ বারধান পুস্তক ইহায্যে
 আরং আমক হইবেক এমত প্রদাণ
 অনেক হইতেছে এবং সেখানকার
 গীর শোভা বাজানি প্রাণের সেখানকার
 মুখা হইতেছিল। আমায় ঘর বাড়ীর
 মুখা দিয়া ডাওয়া দিগেলে কুয়াড়া
 তাহার উত্তর দ্বানবির দ্বার গিয়া বস-
 তি করিতেছি এবং আপন অধিকারস্থ
 আর দিগে ক এমত পানল করিয়া দিয়া
 মেন যে তাহার কোন ইকারে বৈরা বা-
 হীর পূরান হাটে না গিয়া ১ নুতন হাটে
 যায় এবং আপনার নুতন ২৫৫ ঘর কা-
 হারো দুবাখি বিকল্প না হয় তবে সে
 দুবা আপন মুখা দিয়া লইবার স্বাকর
 করিয়াছেন এবং কলিকাতার বাণেশ্বর
 কোলেকা ১৭ জিনিস পূরান হাটে অধিক
 করিয়া লোকা বোকাই করিত ৩ কলিকা-
 ত্রাতে নইয়া গিয়া বিকল্প করিয়া মুখা
 করিত তাহার। যদি পূরান হাটে না
 গিয়া নুতন হাটে যায় এবং সেখানে সে
 ৪ জিনিস লাগার তবে ৫ বাণেশ্বরদের
 যে মুখা তাহাতে হইত তাহা আপন
 লরকার হইতে দিবে। এবং যে লো-
 কেরা সেখানে যেকোন করিতেছে তাহার
 বিদিক তিন ৬ সরসে জোয়াহ বিলা নুতন
 জামিনায়া নইয়া যেকোনের কারন
 টাকার দিতেছেন। ইহার দুই জন নুতন
 গিহ বনল ৭ পূরান গিহ ৮ জন বস-
 ৮ এবং বোয়াখিদি অধিকার পূরান হাটে
 কলিকাতা বাণেশ্বর কারন অনেক মো-
 ৯ ক দিতেছেন।

• **अहमदशाह** ।

গত মেম্বার ৪৭ শ্রাবণ রাশ্রে মো-
মাংসের ঘাটে এক ব্রাহ্মণী মহাশয়
হইয়াছে তাহার বয়স অনুমান ৪০
বৎসর।

ডুগা ১

ই-প্রাণহরেতে মন্যাসার অসিদ্ধা- (যে
ই-প্রাণী মহাজনন গিত ব-স্বরের বার
মানস ভূবার বানিজ্যে ১৪-০০০০ দুই
কোটি চত্বিন লক্ষ টাকার লোকমান হই
যাইবে।

बाजी ।

ই-প্রাণে মন জন সাহেব পুর্বে বাজী
 হাথিয়াছিল যে পাঁচ নত ফোঁপথ পাঁচ
 নত ঘণ্টায় চমিরক। তাহাতে সে বা
 জি অথি হইয়া বাজী নত পাঁচিয়াছে।

ଆଉ ଏକ ହାତୀ କାମିଆରେ ଯେ କହିଲେ
ହେଲେ ହେଲେମାନ ଖିଆ କରନ୍ତା ଭୋଜନ କ
ଦିବେକ ଓ ହାକାନ ସବୁ ଧରଣ କରନ୍ତା କା
ନ ଧାମନ କହିବେକ।

আর দুই জন বাজী রাখিয়াছিল যে
 এক কোণ পথ দুই জন মধ্য কালে হৌকি
 বের যে হাকি অগ্নি নির্দিষ্ট স্থানে পঁঠ
 জিরেই সে অগ্নি হইবেক। এই বাজী
 রাখিয়া তাহার এক জন পুত্র গগার ঘি
 নিষ্ট অগ্নি এক কোণ হৌকিয়া নির্দিষ্ট
 স্থানে পঁঠিয়া বাজীতে অগ্নি হইয়াকে।

गुणवत्ता प्रमाण

ই-প্লগু দেশে এক নগরে এক পুরাতন
পুস্তকের নীচে লুপ্ত অক্ষর পাওয়া গেল
আমাদের ৯০ খ্রিঃ পূর্বের গিয়া

(କେ। ଏବଂ ପୁଣ୍ୟ ଶାନ୍ତି ବାଦନୀରେ ଆ
 ଯାତ୍ରା ଦିନ ଟୋକା ନାଟ୍ୟ ନିର୍ମାଣ।
 (ଏହି ବାଦନୀ ଏକ ନୂଆ ନୂଆ ହେବ
 ମନ ଯିବାରେ। ଏବଂ ପୁଣ୍ୟ ଶାନ୍ତି ବାଦ
 ନୀ ଏକ ନୂଆ ଏକ ହେବ ବ୍ୟୟ ଯିବା
 ଜେ।

हृदय ।

পশ্চিম ঘেঁষে এক সাহেব সান্নাতিজ
 রোগান্তর হইলেন এবং আশন মর
 শিষ্ণু ভান করিলেন। তাহার আ
 শন স্ত্রী সহিত আত্মস্থিক সন্-পুত্রি
 ছিল তৎ-পুত্রু তিনি আত্মীয় লোকের
 গৈক তাহারা কহিলেন যে এই রোগে
 ভাষার মৃত্যু হইবে তাহারা আমায় ক
 বরে দিও এবং আমায় স্ত্রী যখন মরিবে
 তখন তাহাকে অন্য কবরে নারায়ণ
 আমায় কবরে রাখিও। কিছু দিন পর
 ঐ সাহেব মরিলেন। অমন্তর তাহার স্ত্রী
 বামি গৌরো রোদন করিতে অসুখ
 হইয়া গেলেন হইলেন। এবং
 তাহার বামির পুত্র কখনো সাহেব
 বামির কবরে তাহাকে রাখি দিই। হইল।
 পরে সেই কবর খুঁড়িয়া কিছুকাল পরে
 তাহারা খোলা গেল এবং দেখা গেল যে
 ঐ কিছুকাল পুত্র মৃত ব্যক্তি শুষ্ক হইয়া
 শুইয়া আছে। কিন্তু এখন কবরে রাখা
 যাবে তখন মৃত ব্যক্তিকে গৌরো কহিয়া সি
 ক্ষুকে রাখি মন্তর কবরে রাখি। তাহা
 কে অনুমান করা গেল যে রোগের পুত্র
 স্যাপুত্রু ঐ ব্যক্তির স্ত্রী মৃত্যু হইয়াছিল
 তাহাকে লোকেরা ভুখপুত্রু মৃত ভান
 করিয়া তাহার শ্রাণজ্ঞান না হইতে
 তাহাকে কবরে দিয়াছিল। এবং ঐ মৃত্যু
 কর কাল সে আশন-পুত্রি-পুত্র
 স্ত্রী তাৎ-পুত্র হইয়া কহিয়া রাখিয়াছে।

সখাচার দর্শন।

ইহাতে বোধ হয় যে তাহাকে নিম্নতর
বহু না করিলে (সে রক্ষা পাইত।

ই-পক্ষে এই কল এক স্বী এমত অত্যন্ত
জম্মা হইল যে তাহাকে মৃত্যু আন করি
য়া সকলে কবর দিল। এই কবর যে বাড়ি
মুদিল সে যেখান যে এই মৃত স্বীর হস্তে
বহুমুখ্য এক অঙ্গুরী আছে। তাহাতে
সে যনে স্থির করিল যে আমি রাত্রি যো
গী আমিরা কবর মুদিয়া এই অঙ্গুরী লই
ব। পর রাত্রি হইলে এই বাড়ি একখান
কোঠালি লইয়া ও লণ্ঠন তুলিয়া এই কবর
খালে গেল এবং কবর মুদিয়া নিম্নতর
বাঁহির করিয়া ভাঙিল ও তাহার অঙ্গুরী
হইতে অঙ্গুরী মুদিলে লাগিল কিন্তু শীঘ্র
মুদিলে না পারিয়া অঙ্গুরী ভাঙিতে পু
ত হইয়া যায় এই মৃত স্বী আপন অঙ্গুরীর
বেলাতে গিয়া বসিল। ইহা দেখিয়া
এই চোর ভৃত্যবেশ আন করিয়া লণ্ঠন ধে
লিয়া চীৎকার শব্দ শব্দ করিল। পর
এ লণ্ঠন হাতে করিয়া সে স্বী আপন ঘরে
ধাউলি গেল। ঘরের দোরের তাহা
কে সেই কল পুত্ৰ আন করিয়া ভীত হ
ইয়া কতক ফল তাহাকে ঘরে আনিতে
দিল না। পরে সকল বুড়ী কহিলে
তাহারা বিবাহ করিয়া তাহাকে ঘরে ল
ইল। তাহার পর সেই স্বী অনেক কাল
বীড়িয়া অনেক সম্ভান কলাহিল।

বহু পক্ষী।

এক দেশে এক জন বহুবলকারী এক
বহু পক্ষীয়ারাল এবং সে পক্ষীর গিলায়
যেখা গেল যে কিছু এক বাল আন সে
বাল অন্য কোন দেশের নহে, কাপ্তান
কুল সাহেব সকল পক্ষীর ভ্রমণ করিয়া
সকল দেশের বিবরণ লিখিয়াছেন তাহা
তে পুনাভ নগরের ওপকরণ বহু লো

কোরের বীনের যেমত আঁকার লিখিয়া
জেন সেই মত এই বাল সে হাতের মত এক
পুকার কাঁচইয়া বিনা পোহাতে লিখিত।
সে বাল পুষ্কর্যানে আট বুলন তাহা
পক্ষীর গিলার যাবো চারি বুলন পুষ্কর
হইয়াছিল এবং সে গিলার ক্ষত শুষ্ক
হইয়া চতুর্দিকে শক্ত হইয়াছিল। ইহাতে
অনুমান হয় যে সে পক্ষী সেই দেশে
গিয়াছিল। ঈদৎ দেশে পুনাভ নগরের
ওপকরণ হইতে জয় মাসের পথের দাল
হইবেক না। ইহাতে এই আশ্চর্য্য
বোধ হয় যে পক্ষী এত দেশ ভ্রমণ করে।

কলিকাতার লুতন রাহা।

যোঃ কলিকাতাতে বিন্দুতলা হইতে বহু
বাজারে শীঘ্র গমনাগমনের কারণ
লুতন রাহা হইতেছে এই রাহা হইলে
অনেক লোকেরদের ওপকার হইবেক
ডেমন অন্য রাহাতে ওপকার হয় না
যেহেতুক পুর্বে বিন্দুতলা হইতে বহু বাজার
পথি গাঁড়ীপুত্ৰি গমনাগমন করি
বার লিখিত পুনাভ রাহা ছিল না পুর্বে
আসিতে হইলে ঘুরিয়া আসিতে হইত।
এবং তাহাতে আরো ওপকার এই যে
সে রাহার যাবো লাগদিকার মত এক
ওতম পুষ্করী কটা ঘাইতেছে এবং
তাহার চতুর্দিকে রাহা হইবেক স্বপ্ন
ডের নামানুসারে এই রাহার নাম হেখি
স রাহা খাতি হইবেক।

অপর আরা শুনিতে পাই যে যোঃ
কলিকাতাতে এই মত পুষ্করী ও তাহার
চতুর্দিকে ওপকার রাহা করা গাইবেক।

হাশিয়া।

যোঃ কলিকাতায় তুলার আমদানী
শুধু কিছু দিন না কিছু এই সময়েই অল্প

আমদানী হইয়াছে তাহাতে কলিকাতা
তুলার যোম ১১ একশ টাকা দামে
বিক্রয় হইতেছে। এবং ভাণ্ডার গোলা
তে কেবল পাঁচ শত পাঁচ মাস তুলার
আরে তাহার যোম মাতে বিনে টাকা
বিক্রয় হইতেছে। কাপ্তান বাজারের নরম
জিল কিন্তু পোষ্করী গিলার তাহাৎ আর
দানীপুত্ৰ কিছু ভুততা হইতেছে।

সেনাপাল।

ঈশ্বর কৌলানি বাহাদুর স্বপ্ন
তাকর বালিক সাহেবকে সেনাপাল দেশে
পাঠাইয়াছেন সেখানে তাহার কর্ম এই
যে এই দেশে যে বৃহ লাই সে সকল
সেনাপাল দেশের পক্ষে পাঁচটা ঘাট তাহা
তিনি লিখন করিবেন এবং সেই বৃহের
চারি কিশা বাঁচি এখানে আনিবেন সেই
কর্মের নিমিত্ত তাহার মনে অনেক
লোক গিয়াছে এবং অনেক ভাড়া দর
মাতে যানি লোক গিয়াছে এবং
পালের রাজার মন্তোলের কারণ স্বপ্নিত
কৌলানি বাহাদুর অনেক ওপকরণ
সমিগী পাঠাইয়াছেন। সে সকল বৃহ
আনিয়া কৌলানির বাগানে রোপন করা
গাইবেক।

অন্যতুল্য।

যোঃ গরুটীর বাগানের বড় লিট
ঘর অভিনুতন হইয়াছিল ও পুষ্কর
তাহা ভারিবার কারণ অনেক রাত্তি স্বপ্ন
বাগিয়াছে তাহাতে গত ১০ পুষ্কর বৃহ
লিটবার দুই জন লোকের ভিতর এই ঘরের
জাত ভাঙিয়া পুষ্কর তাহাতে লিটের জয়
অন লোক চান পুষ্কর মরিয়াছে তাহা
র যাবো পাঁচ জনের আর পুষ্কর ছিল

সমষ্টি দল

যেই কিছু এক জনের কোন সম্ভাবন পায়
যা কোন না এবং যে দুই জন ওদের ছিল
তাহারদের হাত পা ভাঙিয়েছে কিছু অ
কালি পৌঁছে আছেন।

ওপরিদৃষ্ট হইল।

ই-প্রথম নির্দেশ বাদশাহ মির্জার-চাপ
অতিশয় উল্লিখিত ছিলেন তিনি নির্ভর
হান্না হোতবে বাস করেন করিতেছেন এবং
তাহার এক ওজীর ছিলেন তিনিও বাদ
শাহের চুলায় বসিত। তৎপূর্বক এই ওজ
রের সম্বন্ধে কিছু লিখিত হইত।

এক দিন বাদশাহ এই ওজীরকে বহি
রেন যে আই ওজীর তুমি বড় দুঃ।
ওজীর ওজীর করিলেন যে এই আমি পুত্র
রের মতো বড় দুঃ বহি। এই ওপূর্বক
ওজীর ভাষিয়া বাদশাহ ওজীরের প্রতি
কৃত হইলেন।

মকরা।

ই-প্রথমের যে ওজীর অর্থাৎ বাদশাহ
কর্তৃক ইহার পাইয়াছিলেন কালে
এক ই-প্রথমের ওজীর বাদশাহের পালের
কর্তৃক পুত্রও করিত এবং তাহার পুত্র বাদ
শাহের অনুগ্রহ ছিল।

এক দিন বাদশাহ এই ওজীরকে করে
কর্তৃক মীকার করিতে গেলেন পরে বাদ
শাহের বোকা ক্রিষ্ণ অগুণী হইলে
বাদশাহের এক জন মোশাহেব এই ওজী
কে কালো বহিল যে অজ্ঞান ওজন বাদশাহ
রের সহিত কথা কহা ভুলন তুমি আপন
তিন কালো রাখিয়া কথা কহিও তুমি ক

খাঁর হস্তাৎ রাখিও না। ইহা শুনিয়া বাদ
শাহ এই ওজীরকে ডাকিয়া করিলেন যে
আমার মোশাহেব তোমাকে কি কথা
বহিল। ইহা শুনি করিল যে আপনকার
সংক্রান্ত কথা কহিবনি কালে আপন হুঁশী
শুলিতে ওজীর আমাকে কহিলেন কিছু
আমি-তাহা শ্রীনা দেহতক আমার
মকর-সহিত হুঁশী বাজা আস এক
বোকার সহিত তাহার শ্রী বাজা যাই
হুঁশী শুলি ওজীর যি মোশাহেবের পতি
ক হরি একজন আপনকার সম্মুখে হুঁশী
শুলিতে পারি না। বাদশাহ ইহা শুনিয়া
হাসিতে লাগিলেন।

সদ্বৃত্ত।

মহারাষ্ট্র কুন্তলায় বহাদুরের লি
কটে নিম্নলিখিত হইয়া লক্ষণাভার কাল
বিদ্যালয় কর্তৃক প্রচারিত গিঃ ছিলেন। এই
কণ বাদশাহর আঁচে যে নিম্নলিখিত হইল
পত্রিতরা কল সমাপনের পূর্বে বিদ্যালয়ের
টাকা পুত্রিত্র ও মাইবার কার্য লোকা স
রকার হইতে পাইয়া থাকেন। মহারা
জের লিখিত বিদ্যালয় ও লোকা পাইতে বি
লম্ব হইলে বিদ্যালয় কর্তৃক মহারাষ্ট্রের
নিম্নলিখিত পত্রিত্র হইলেন যে বিদ্যালয় পাইলেও
মাই না পাইলেও মাই। তাহা হইলে এই
মহারাষ্ট্র এই পত্র পাইয়াছেন তাহার অ
ভিমান বুঝি। এই পত্রের ওজীর নিম্নলিখিত
যে বিদ্যালয় লিখি নাও বিদ। এই ওপূর্বক
ওজীর পাইয়া বিদ্যালয় কর্তৃক প্রচারিত
কৃত হইলেন। ইহার স্মরণ পরে মহা
রাজ তাহার পুত্রপালার আবেদ বিদ্যালয়
এ লোকা পাইয়া ছিলেন।

বালার তাল।

| জিনিস | মোন | অবধি | পত্রিত্র |
|----------------|-----|------|----------|
| কুন্ডার | ১ | ৩৫ | ৩৫ |
| ভেড়া তৈল | ১ | ১০ | ১০ |
| গাছ মরিচ | ১ | ০ | ৩৫ |
| নারিকেল তৈল | ১ | ৩৫ | ৩৫ |
| কুন্ডা কাফোল | ১ | ০ | ৩৫ |
| আমোদ পুত্র | ১ | ১ | ১৫ |
| পাটনাই আদা | ১ | ১ | ১৫ |
| চন্দ্র পাটনাই | ১ | ১৫ | ০ |
| পাটনাই কুন্ডার | ১ | ১৫ | ১৫ |
| পাটনাই মফার | ১ | ১৫ | ১৫ |
| হুঁশী উজর | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মুন্ডা মফার | ১ | ১৫ | ০ |
| বাগাম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মুন্ডা মফার | ১ | ১৫ | ১৫ |
| পাটনাই হুঁশী | ১ | ১৫ | ১৫ |
| অজর তাল | ১ | ১৫ | ০ |
| উজরগায়া হুঁশী | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মফার হুঁশী | ১ | ১৫ | ১৫ |
| উজর হুঁশী | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মফার উজর | ১ | ০ | ০ |
| কাল উজর | ১ | ০ | ০ |
| মিছরি উজর | ১ | ১৫ | ০ |
| মফার | ১ | ১৫ | ১৫ |
| লোকা উজর | ১ | ০৫ | ০ |
| মফার | ১ | ০৫ | ১৫ |
| চিনি কাশী | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মফার | ১ | ১ | ১৫ |
| বাদ্য চিনি | ১ | ০৫ | ০৫ |
| ভেড়া | ১ | ৫ | ৫ |
| তামাক | ১ | ০ | ৫ |
| লম্ব | ১ | ১৫ | ১৫ |

এই কলার বর্ণনা পুত্রপালার কালোবালার ওজীর হইতে কলার কলার হইত। বাদশাহের কলার ওজীর হইতে কলার কলার হইত। পুত্রপালার কালোবালার
আপন বাদশাহের লক্ষণাভার কলার কলার হইতে কলার কলার হইত। বাদশাহের কলার ওজীর হইতে কলার কলার হইত। পুত্রপালার কালোবালার
আপন বাদশাহের লক্ষণাভার কলার কলার হইতে কলার কলার হইত। বাদশাহের কলার ওজীর হইতে কলার কলার হইত। পুত্রপালার কালোবালার

সমাচার দর্পণ

১১৭ নং-খণ্ড।

পরিবার। ১১ আশ্বিন মাস ১৮৮০। ১৯ শ্রাবণ মাস ১১৭৭

দর্পণে দৃষ্ট-সৌখ্যবির কর্তব্যিকণা।। স্বাভাবিক কলঙ্ক কল্যাণের বর্ধন।।

কোলালির কাণ্ড।

কোলালির শতকরা ছয় টাকা মূল্যের কাণ্ড কয় করিতে হইলে শতকরা দুই টাকা ছয় আশা প্রিয়ম। বিক্রয় করিতে হইলে শতকরা দুই টাকা দুই আশা প্রিয়ম।

সন্তানের পঞ্জিকা।

| | | | |
|----|--------|--------|-----------|
| ১১ | আশ্বিন | পরিবার | ১৯ শ্রাবণ |
| ১০ | ২ | ১১ | ০০ |
| ১১ | ২ | ১০ | ০১ |
| ১২ | ২ | ৯ | ০২ |
| ১৩ | ২ | ৮ | ০৩ |
| ১৪ | ২ | ৭ | ০৪ |
| ১৫ | ২ | ৬ | ০৫ |
| ১৬ | ২ | ৫ | ০৬ |
| ১৭ | ২ | ৪ | ০৭ |
| ১৮ | ২ | ৩ | ০৮ |

ইস্তাহার।

ইস্তাহার দেওয়া ঘাইডেকে যে শ্রুতি লাগলো। সাহেব ও শ্রুতি ব্রহ্ম রবট সাহেব। অগ্নি তদ্বিধা অবেধি কলিকাতার শ্রুতি যেকোন কোলালির অংশী হইয়াছেন। এবং এই দুই সাহেব কয়মাল বাবুজির ও অংশী হইয়াছেন।

সমাচার দর্পণ

রাজকল্যাণ নিয়োগ।

১ আশ্বিন ১৮৮০ সন।

কলিকাতা আই আর বেই সাহেব ময়র

দেওয়ানি আদালতের রেজিস্ট্রারের পেক্কার হইয়াছেন।

ঐযুত জি সি টিপ সাহেব ২।

ঐযুত এম লেন সাহেব চব্বিশ পরগণার জজের পেক্কার।

ঐযুত জি আর কামেল সাহেব গাজিপুরের জজের পেক্কার।

শ্রুতি এম করী সাহেব গৌরীকানুপুরের জজের পেক্কার।

ঐযুত বরলিও এইচ স্মিথ সাহেব সাহাবনগরের জজের পেক্কার।

ঐযুত এ থেলেন সাহেব কলিকাতার জজের পেক্কার।

কলিকাতার কোলালির কল্যাণ।

পূর্বে সমাচার দেওয়া গিয়াছে যে গত ৩১ জুলাই সোমবার মোং কলিকাতার ঐযুত বট সাহেবের বাটীতে কল্যাণের সাহেব লোকেরদের ইচ্ছা হয় এই ঘাটে। সেই ঘাটে এই সকল লোকেরা একত্র হইয়াছিলেন ঐযুত মর তেলু একত্র কোলকাতা সাহেব কল্যাণ সভার পুঙ্খিল এবং কল্যাণের আরও সকল আমলা লোকেরা এবং ঐযুত লার্ড রিড জুজিস ও ঐযুত লার্ড বিমস ও ঐযুত লুআর্ট সাহেব ও ঐযুত ফ্রেডারিক সাহেব ও ঐযুত মর জুজিস মেকলান্ড সাহেব ও ঐযুত জেসেরাল হার্ডি সাহেব ও অংশী সমস্ত ই-পুঙ্খিল লোকেরা ও

বাঙ্গালি সমস্ত লোকেরাও লোকেরা ছিলেন।

এই সাহেব লোকেরা কলিকাতার ইস্তাহার হইয়াছিলেন। ঐযুত লেফটেন্যান্ট জে এ টিপ সাহেব ও ঐযুত লেফটেন্যান্ট জি এল বেলস্টেরী সাহেব ও ঐযুত এইচ লেন সাহেব।

এই সাহেব লোকেরা হিন্দুস্থানি ইস্তাহার হইলেন। ঐযুত জি টিপ সাহেব ঐযুত এ থেলেন সাহেব ও ঐযুত জি এম এইচ সাহেব।

এই সাহেব লোকেরা বাঙ্গালি ইস্তাহার হইলেন। ঐযুত আই আর বেই সাহেব ও ঐযুত এইচ লেন সাহেব ও ঐযুত এইচ কামিল সাহেব।

ঐযুত আই আর বেই সাহেব সমস্ত ইস্তাহার হইয়াছেন।

এই ইস্তাহার হইতে যে সাহেব লোকেরা ও গুরুত্ব হইলেন তাঁহারা ঐযুতের নিকটে পারিতোষিক পাইলেন।

কেনে নুতন বসতি।

পূর্বে সমাচার দেওয়া গিয়াছে যে ই-পুঙ্খিল ওহাইতে যে লোক আসিয়া কেনে বসতি করিতে সে পারিতোষিক পাইলেন। তা হইতে সপ্ততি জন লোক যে ই-পুঙ্খিল ওহাইতে আসিয়াছেন তাঁহাদের লোকের পূর্বে ই-পুঙ্খিল কেনে বসতি করিবার কারণ আসিয়াছে। তাহার মধ্যে এক হাজার দুই শত একত্রিশ পুঙ্খিল ও নাট শত ত্রিশ জন। এক হাজার তিন শত একত্রিশ বালক এবং এক হাজার তিন শত সাতাশ

সম্পাদক দর্পণ।

সেইকালে আমিয়া নীচক্রিয়ায়। ইহাও আমিয়াবের আহার্যের করণ দেখা গেছে। ক্রিয়াকারী আরও করিয়াছে এবং আরও আহার্যক বস্তুও সৃষ্টি করিতেছে। আমিয়া অনুমান করি যে অল্প কালের মধ্যে ইহাওয়েরই হইতে এক নতুন দেশ উৎপন্ন হইবেক।

বাঁতাধি প্রদর্শন।

সম্পাদক পাঠ্য। গেল যে মোং পাঁতাধি রিত্তে অর্থাৎ বৎসরহইতে এই বৎসর বীণা অভিনয়ের অধিগ্রহণে এবং কাঁতাধি ও অর্থাৎ পুকার পদ্য মকলের যে কল আহার হইতেছে তাহাতে বোধ হয় যে সে মকলও অভিনয়ের মত হইবে। এবং মোং পাঁতাধি অভ্যুত্থয় বানিজ্য স্থান ইহাওয়ের যেহেতু সেখানে তিন চারি স্থান মারফিন আহার্য এবং বার বোকাই হইতেছে।

কলিকাতার আহার্য সম্প্রদায়।

৪ আগস্ট ১৮৭০ সাল।

কোলিকার চীনার আহার্য দুই স্থান। বিনাতি মতহাওরের আহার্য পোনেস। স্থান। ইংল্যান্ডে গমলাগামনের দেশী আহার্য চারিখান। চীনদেশে গমলাগাম প্রের দেশী আহার্য পাঁতাধি। অর্থাৎ স্থানে গমলাগামনের দেশী আহার্য ওল প্রদর্শন। স্থান আহার্য চৌত্রিশখান। তাহার মধ্যে কতক বিসময়ের কারণে ও কতক তাহার কারণে আরও প্রদর্শন আহার্য দুইখান। মারফিন আহার্য দুইখান পোত্রিশ আহার্য তিনখান মারফিন প্রদর্শনই আহার্য মোং কলিকাতার আরও।

মরন।

৩ জুলাই ইংল্যান্ডে মোং কলিকাতার বাবু কামিনীনাথ বর্মাণের পরলোক গুণ্ড হইয়াছেন তাহার বয়স অষ্টাধি বৎসর ছিল এবং তিনি অভিজ্ঞানবান লোক ছিলেন ও অনেকের প্রতিপালক ছিলেন তাহার কারণ অনেক লোক খেদ করিতেছে।

বন্য।

এই বৎসর যত শীঘ্র বন্যা হইয়াছে মন বার বৎসরের মধ্যে গুণ্য এত শীঘ্র বন্যা হয় নাই এই বৎসর যে শীঘ্র বন্যা হইয়াছে তাহাতে বানিজ্যের অনেক প্রকার হইয়াছে অর্থাৎ বৎসর মহাজন লোকেরা লোকা বোকাই করিয়া বন্যার অপেক্ষায় বসিয়া থাকিত কিন্তু এই বৎসর লোকা বোকাইর প্রচাণা না করিতে বন্যা আমিয়াতে তাহাতে মহাজন লোকেরদের অনেক প্রকার হইয়াছে। যদি এই বন্যা অধিক দিবস থাকে তবে অর্থাৎ বৎসর যে মকল লোকা দুই ফেল বহিতে সে এই বৎসর তিন চারি ফেল বহিবেক। ইহাও ভরাসা হয় যে দুইবার মুনুয়া হইতে পারিবেক।

সহমরন।

১১ শ্রাবণ শুক্রবার মোকাম পেনেলীর ঘাটে এক মুচ্ছন পরলোক গুণ্ড হইয়া ছিলেন তাহার দুই শত তাহার সহিত সহমরন করিয়াছেন।

বাণ্য।

বোম্বেই অকালের এক অমীয়ারের অধি কারে অর্জনে অকল্যাৎ এক বৃদ্ধ বাণ্য আমিয়া থাকিল এবং সেখানকার পুকার বের গেল ও মারফিন হইতে গুণ্য হইল এবং

এ অমীয়ারের পুত্রকে এক দিন আঘাত করিল। তাহাতে অমীয়ার ইংল্যান্ডে যেরদের সৈন্যের চাকরিতে থবর ছিল ও মকল হুত্ব হইল। তাহাতে প্রবৃত্ত লেণ্ডেনল্ড সাহেব আর একজন সাহেবকে সঙ্গে করিয়া ইন্ডার প্রবৃত্ত আরোহণ হুত্ব সেই জরনে প্রবৃত্ত করিলেন এবং আর্দ্র মরগুণ্য ও আর নাও হস্তাও সঙ্গে চলিল। পরে সেই জরনে পঁতাছিল বাণ্যের গায়ে হস্তা হুত্ব হিত শব্দ বহিল সেই শব্দ শুনিয়া বাণ্য ওগিয়া এক হস্তার গুণ্ডে হামিলা করিল। তাহা দেখিয়া জয় হস্তা গলিইল। সাহেব বেরা নানাপ্রকার চেষ্টা করিলেন কন্যাকে জয় হস্তা ফিরিল না কেবল যে হস্তা তে লেণ্ডেনল্ড সাহেব ছিলেন সেই হস্তা মারফিন হইল।

সেই হস্তার গুণ্ডর বাণ্য হামিলা করিল হস্তা মকল বাণ্ডিয়া বাণ্ডিতে জেলিল। পরে এই সাহেব দুই গুলি মারফিনে বাণ্য মৃতবৎ হইয়া পড়িল। কিন্তু কিছু কাল পরে বাণ্য পুত্রের প্রচাণ সাহেবের গুণ্ডে খাঁন ছিল সাহেব আশ্রয় রক্ষার নিমিত্ত হস্তার পক্ষাৎ দিয়া মারফিনে পড়িল। ইতোমধ্যে হস্তা বাণ্যের গুণ্ডে লাভিগ্রা গিল ও সাহেব পুত্রের আরও এক গুলি মারফিনে। বাণ্য এই দুই আঘাতে পুত্র হারি নিজীবের মত পড়িল। সাহেব বাণ্যের আর ওগিবার পড়ি নাই আদিয়া তাহার দিকটোবী হইয়া নিতল মারফিনে ওহাও ইহাওয়া বাণ্য ওগিয়া সাহেবের ঘাট বহিল তখনি সাহেব আরও এক গুলি চাকরিলে তাহা লাগিল না। পরে আশ্রয় বনবাণ্য বাণ্ডিকে চাকরিয়া এই নিতল বাহায়া বাণ্ডিকে মারফিনে বাণ্য গুলি লাগিল। অতঃপর এই সাহেবের পুত্রের অনেক আঘাতে মারফিনে অধিকার

সমাদার দপন।

ইয়া স্থানে গোলেন এসু হইলেন। এই বন তাঁহার পোষ্য ও সাহসবিদ্যক সমাদার ঐশ্বর্য কলিকাতার গিরদর জেনেরাল বাহাদুর ভূদিয়া তাহাকে পুনর্বার আর অধিক কর্মে অভিযুক্ত করিয়া দেন ও তাহার পুত্র অধিক ভৃত্য হইয়া দেন।

নুতন ইসানির ঘর।

যে কলিকাতায় গিরির তাঁর হাসীন রক্তের কারণ এক বড় বড় নুতন পুত্র হইতেছে সে ঘর এইজন বড় ও উচ্চ হইবে যে শূণ্যপুত্রের ঘর ব্যতিক্রম কলিকাতার মধ্যে ডোম ঘর আর গুণ্য হয় নাই। সেই ঘরের মধ্যে তাই মৃদুলের জিনিস ইতিবেক এবং রোদে অথবা বৃষ্টিতে লোকমান হইবে না এই মত ভবীর হইতেছে। এবং আমায় স্থানিতে পাই যে অনুমান বাইশ ডেইশ বৎসর হইল এই ঘরের মধ্যে জিনিসের মাসুল আদায় হইত না কে বল বাহিরে তাহাজহার। যে জিনিসের আদায়ের গুণানী হইত তাহারায় মাসুল আদায় হইত। এক গুণ্য হইতে অ লা গুণ্যে জিনিস যাইবার মাসুল ছিল না। এখন জিনিসের মাসুল কোলা নির অনেক টাকা আদায় হইতেছে।

চীন দেশের বানিজ্য।

শুধীর অর্থাৎ দেশীয়দেরের চীন দেশে সহিত বড় বানিজ্য চল তাহা শুনিতে লোকেরা গুণ্য বিশ্বাস করে না। যেহেতু তারা দেশীয় লোকেরা চীন দেশেই চা আনিয়া নষ্ট বানিজ্য করে ও পুত্র চীন দেশের ভাষা বলতে পারে না। তাহা হইলে চীনের লোকেরা

হা থাকে। ৪৮৪ শালে যখন ইংলণ্ডের বাদশাহ এই হিন্দুস্থানের বানিজ্য বিষয় হস্তোবহ করিলেন এবং কেবল কোলা নির অধীন না রাখিয়া অন্য লোকের দেরও হিন্দুস্থানের বানিজ্য করিতে আজ্ঞা করিলেন তখন কোলা নির লোক মান না হয় এই নিমিত্তে চীন দেশের বানিজ্য কেবল কোলা নির অধীন করিয়া দিলেন ইহাতে এই বিশেষ হইল যে হি ন্দুস্থান ও চীন দেশ এই উভয় দেশের যে বানিজ্য সে সকলই করিতে পারিবে কিন্তু শুধীর অর্থাৎ মুদ্রণে চীন দেশের কোন বানিজ্য ঘূষা কোলা নির দিলে কেহ নইয়া যাইতে পারিবে না। ইহাতে ইংলণ্ডের অনেক ক্ষতি হইয়াছে যেহেতু অন্য দেশীয়েরা চীন দেশেই উ জিনিস আনিয়া ইংলণ্ডেরদের দেশান্তর অ বিক্রয় বিষয় করিয়া অনেক মূল্য করিতেছে। এবং ইংলণ্ডীয়েরা এই বন বানিজ্য করিতে পুত্র হইলে কোলা নির পুত্রবাহী হইয়া দারন করেন। যদ্যপি কোলা নির ইহাতে পুত্রবাহী না হই তবে ইংলণ্ডের চীন চারি শত তাহাজের কর্ম অবরুত হইতে পারে।

তুয়াচুরি।

গত দুই সপ্তাহের মধ্যে তুয়াচুরির এক নী লোকের ঘরে এক জন তুয়াচুরি আনিয়া কহিল যে হাতা আমি বিদেশী লোক আমার মাঝে আশ্রয় নাই যদি আপনি অন্যত্র করিয়া আমাকে আহার দিয়া দান দেন তবে আমি আপ নকার আশ্রয়ে থাকিয়া কান্না চাকরি করি। এই তুয়াচুরি বাতীর খবর হইল। তাহার এই সকল কাহিনী

কিতে ঐ নী কহিল যে ভাল আমার বাতীর খাং। তাহাতে সে রাগিকরন আহারাদি করিয়া তাহার বাতীরে থাকি ন। পরদিন থানারদের লোক আনিয়া কহিল যে ঐ বিদেশী লোকের তুমি হি নকার দান দিয়াছ অতএব আমি ইহাকে অমিয়ার সাহেবের নিকটে লইয়া যাই। তাহাতে ঐ নী লোক কহিল যে আমি ইহার আমিন থাকিলাম তাহাতে তুমি রমের কোন মনেছ নাই। ইহা শুনিয়া সে চৌকিয়ার চিনিয়া গেল। পরে সেই নী ও তাহার চাকরানী ও ঐ বিদেশী এই তিন জন বসিয়া পরামর্শ করিতেছে ও নী কহিতেছে যে আমার কোন পুত্রের পুত্র হয় না ইহার কারণ কিছু বুঝিতে পারি না। তাহাতে জুয়াচুরি কহিল যে তোমার বনস্থান পলি আছে ও পুত্র জুয়াচুরি বন থাকে না কলা আমি তো হার গুণ কাটাচি।

পর দিন সে কহিল যে পবিত্র দান আমন কর ও গিরাডন আন আর এক খান নুতন মরা। এই সকল পুত্র হইলে সে পুত্র করিতে বসিয়া অনেক চেষ্টা করিয়া বান করিল। পরে কহিল যে তোমার গিহান মরন দেহ তাহারি দ্য পুত্র করি তবে তাহাজীর পুত্রাংশ হইবে পরে তোমার গিহান তোমার আছে। ইহাতে নীলোক ভাবিল যে তা মার ঘরের মধ্যে ও আমার নমুনা গি হান থাকিবে তাহাতে মনেহেব বিহ য় হি। পরে সে তুয়াচুরি গিহান লই দ্য গিরাডন দিয়া ইহা ও নমুনা রাখি দ্য দান করিতে লাগিল। পরে কহিল যে গিরাডন বড় তেঁতুলের বীঠি আন। তাহাতে তাহার দানী জলা বাতীরে তেঁ তুলের বীঠির ডোঁ করিতে গেল সেখা নে কেবল ঐ নীমান থাকিল। তাহার দি

সমাচার দর্পণ।

হিন্দু পদে কহিল যে কিছু চান্দ্রভাজা চাহি
পাইয়া তান। ইহা শুনিয়া এ পুত্র রজন
ঘরে গিয়া চান্দ্র ভাজিতে আতঙ্ক করিল
এই আকোশে তুয়াতির তাহা চাহিয়া
নইয়া পলায়ন করিল। কতক স্থান পরে
হাসী তেঁতুলের বিড়ী তালিল এ ঠাকুরাণী
চান্দ্রভাজা আনিব হিন্দু তাহার সাফা
হইলেন। পরে অনেক তলসুতালি করিয়া
পুত্রের আঁর কিছু চোলা পাওয়া গেল
পুত্র।

ইতিহাস।

পাহ অকবর ও তাঁহার সন্তানদিগে
কবর এই উভয়ের অনেক কথা পুস্তিক
আছে তাহার এক কথা নিম্নে যাইতেছে।
বীরবর মাধব ব্রাহ্মণ ছিলেন তিনি
বাহশীহের সভাতে মুসলমানদের
কর গুলি করিতেন তাহাতে ২ ওকণী
কর বাবপাহ অত্যধিক ক্রুদ্ধ হইতেন না
কিন্তু তাহার অন্য সন্তানগণের অত্য
ক ক্রুদ্ধ হইতে। ইহাতে এক দিন বীর
পাহ আশপাশে আসি ক্রুদ্ধ বীরবরের তলুরে
বীরবরের ক্রোধ অসম্বরণ করিলেন।
তাহাতে বীরবর বাহশীহের নিকটে গা
গী করিয়া বিদ্রোহের মর্মে এক ক্র
টি লোকের ঘরে গুপ্তভাবে রহিলেন-বা
হশীহের সহিত সাক্ষাৎ করিল না। বা
হশীহ তাহার অনুসন্ধান কোন ক্রমে
না পাইয়া মনে দুঃখী হইলেন এবং প্র
শ্ৰুতক্রমে এই ওপায় স্থির করিয়া পহ
রের সকল লোককে আশপাশে সাক্ষাৎ তা
কিয়া তাহারদিককে প্রত্যেক লোককে

একই মেঘ দিলেন ও ভাড়া করিলেন যে
এই একই মেঘ তোমাদিককে ওজন ক
রিয়া বিতেজি এক মাস পরে এই ওজনে
তোমাদের ঘৃণে এই সকল মেঘ চাহি ই
হাও মতো যাঁহার মেঘ এই ওজনহইতে
অধিক হইবে অথবা নুল হইবেক তা
হার সাক্ষাৎ হও করিব। এই কথা
কিয়া সকলকে একই মেঘদিলেন। তা
হারা আশপাশ ঘরে মেঘ নইয়া গেল যে
কালি মেঘক আঁহার দিল তাহার মেঘ
পরিমাণে অধিক হইল এবং যে আঁহার
নাছিল তাহার মেঘ নুল হইল। কিন্তু যা
হার ঘরে বীরবর গুপ্তভাবে ছিলেন সে
যাকি মেঘ নইয়া বীরবরকে সকল ব্রাহ্মণ
কহিলেন বীরবর তাহাকে পরামর্শ দিলেন যে
এক কাপের বাগা আনিয়া ঘরে রাখিয়া
রাত্রি ও তাহার সম্মুখে এই মেঘকে রাত্রি
এবং তাহার অগ্নি/হও। ২ গৃহস্থ এই
পরামর্শ মত করিলেন ২ মেঘ আঁহার ঘরা
যত গুলি হয় এবং বায়ুবাটার দ্রোম
ভুত কমে। ইহাতে ২ মেঘ স্পর্শাধিক হ
ইল না। এক মাস পরে বাহশীহের সাক্ষা
তে সকল আশপাশে মেঘ হইতে করিল
এবং তাহা ওজন করা গেল। তাহাতে
কাঁহারো মেঘ ওজন ভারী হইল ও কা
হারো ওজন কম হইল। কিন্তু ২ বাকির
মেঘ সমান ওজন হইল। ইহাতে বা
হশীহ মনে করিলেন যে এমত বুঝি
ভাব বীরবর ব্যতিরেকে অন্যের নহে।
ইহা ভাবিয়া ২ গৃহস্থকে জিজ্ঞাসা করিলে
সে সকল ব্রাহ্মণ কহিল। পরে বাহশীহ
অসকল সম্মানপূর্বক বীরবরকে আনা
ইয়া আশপাশে নিকটে পূর্বক রাখিলেন।

বাংলা ভাণ্ড।

| বিভিন্ন | মোদ | জবদি | পয়সা |
|----------------|-----|------|-------|
| চুপারি | ১ | ৩০ | ৩০ |
| ভেড়া তৈল | ১ | ২২ | ২০ |
| পাহ মরিচ | ১ | ০ | ৪০ |
| নারিকেল তৈল | ১ | ২০ | ১০ |
| চুলা কাচোরা | ১ | ৩ | |
| আবা রকপুর | ১ | ২১ | ২০ |
| পাটনাই কাবা | ১ | ২ | ২০ |
| চান্দ্র পাটনাই | ১ | ১০ | ০ |
| পাছরি উত্তর | ১ | ২১ | ২০ |
| পাছরি মধ্যম | ১ | ২০ | ২০ |
| মুগী উত্তর | ১ | ১৫ | ১০ |
| মুগী মধ্যম | ১ | ১৫ | ০ |
| বানান | ১ | ১৫ | ১০ |
| চুলা মোম | ১ | ৪০ | ৪০ |
| পাটনাই বৃত্ত | ১ | ১০ | ১০ |
| অকবর কালি | ১ | ৫০ | ২০ |
| উমামায়া বৃত্ত | ১ | ২০ | ২০ |
| মধ্যম বৃত্ত | ১ | ১০ | ১০ |
| উঁচা বৃত্ত | ১ | ১০ | ১০ |
| মধ্যম উঁচা | ১ | ০ | |
| নীল উত্তর | ১ | ০ | |
| বিছরি উত্তর | ১ | ১০ | ০ |
| মধ্যম | ১ | ১০ | ১০ |
| মোরা উত্তর | ১ | ০ | ১০ |
| মধ্যম | ১ | ০ | ১০ |
| চিনি কাপার | ১ | ২০ | ১০ |
| মধ্যম | ১ | ১০ | ১০ |
| খার চিনি | ১ | ০ | ১০ |
| ভেড়ল | ১ | ৫ | ৫ |
| তামাক | ১ | ০ | ৫ |
| চন্দন | ১ | ১০ | ১০ |

এই সমস্তের বর্ণন পুরানপুস্তকের ভাষাধারাতে পুস্তিকভাষে পরিবর্তে লিখা হয়। বাহর লগনের আশপাশে হর তিন পুরানপুস্তকের ভাষাধারাতে
আশপাশে পাহাইলে সভাতে লোক তাঁহার নিকটে পাঠাব হইবেক তাহার মধ্য খাশে একটা দিবি থাকে করিয়াছেন যদি তাহার নিকটে
কাঁধ না পড়ে তবে দিবি পুরানপুস্তকের ভাষাধারাতে লিখা হইবেক তাহার নিকটে পাঠাব হইবেক।

୫ ଭାଦ୍ର ମନ ୧୮୮୭

दृष्टान्तिह जानन्तु मयाचारुणां नर्पटय ॥

প্লাসীর কল্লের সূর্য্য আবেশিত ভারত
 হর্বের ভাষা অর্থাৎ ইঙ্গরা জীয়া আশন
 সন্তান তোমরা আত হইয়াছে । এখন
 তোমরা ইহা হইতে ভারত কল্ল নিষ্কৃত
 হইবা তোমরা যে মনন কল্ল নিষ্কৃত
 হইবা ইহা হইতে ভারত কল্ল মনন গো
 চর আইনে না কালক্রমে তোমরা অজা
 নু পৌক হইয়াও অনেক পোকের মাঝে
 লুপ্ত হইয়া যাইবে পুড়িতির হইবা এবং
 বশেষের সন্তান এ দেশের হইবা তোমরা
 দিগের হস্তে মনন করা যো। আমায়
 মর রাজা এ দেশের সূর্য্য কল্ল সূর্য্য
 কল্লাইবে সে তোমাদিগের হাত ।
 আমাদিগের অধীন পোক হইতে
 ইনামুক্ত হই কিবা সীমিত হই সে
 তোমাদিগের কল্লভায়া পুড়ন হই
 বেক এবং ভারতবর্ষ পোকভায়া হই
 পুড়িতির দেশে অমৃতাবি রাজ্য
 ইহার তথা পুড়িতির বিবরণের মাঝে অমৃত
 দ্রব্য বিদ্য নাই । এবং এই অমৃতময়
 রাজ্য ভারতবর্ষ ইহার মাঝে এই অমৃতাবি
 পুড়ন । হুড়িতির দেশে আমাদিগের
 কল্লভায়া কর হই এই অমৃতাবি মন কি
 এবং দেখে আমাদিগের হস্ত ভারত-ভার
 তবর্ষ পু পোকভায়া কি বন ভরনা হাচ
 এবং আমাদিগের শিকার ওনর ও শ্রম
 মের ওনর আমাদিগের পুড়ির ওনর
 ভারতভায়া কি নগর ভরনা । ও মদ্য
 হিন্দু-হালীয়েদের যেযকিও রাজা অর্থাৎ
 সূর্য্য সে আমাদিগের হস্ত এই মনন
 আমায় মনন বিবরণ । কল্লাই বই আমায়
 আশন

সমাচার দর্পণ।

কোরিয়োর উদ্যোগ ভিন্ন কি ইহা হইতে পারিত আরও এই শিক্রে বুকের একটি পাড়া অকর্তব্য কর্মধারা শুদ্ধ করিও না। কালক্রমে তোমারদিগের সকলকে এই চেষ্টা করিতে হইবে যাঁহাতে এই বুকের ভাণ্ড ও পাড়া সম্বন্ধাঙ্গিত থাকে। এ পর্যন্ত যে শিক্ষা করিয়াছ ইহাতেই স্বত্বার্থ্য হইয়াছে, এমত মনে করিও না যেহেতুক যে ভাষাধারা ভারতবর্ষীয় লোকেরদিগের মনের ওপরে যে অনুপ্রাণিত করিবা ইহার কিছু সংশয়া নাই। যে বিষয় তাহার দ্বিগিত জ্ঞাত করাইতে বাসনা করহ সে বিষয় দ্বির মনে ও কাঙ্ক্ষিত পূর্ণাঙ্গ ভিন্ন অন্যরূপে কখন পারিবা না। ভারত বর্ষীয় লোকেরদিগের কি মনে ওপকার হয় ও স্বদেশের সমুদয় বৃদ্ধি হয় অথিত কোল্লানির এতভিত্তর অন্য চেষ্টা নাই।

কিন্তু ইহাও স্মরণ করিও যে তোমারদিগের কতিক করিবে তোমারদিগের সার্বভৌমত্বের সর্বদা সন্মত থাক ইহাও তোমার বিনিময় আশ্রয়ক ছিল না যেহেতুক বালক কাল। যদি যে শিক্ষা পাইয়াছ ও যে সকল লোকের মতো সর্বদা রক্ষিয়াছ ইহাতে তোমার ভরসা হয় যে ইহা তোমার কছার আশ্রয়ক নাই তোমার সর্বদা সার্বভৌম থাক ও খোদামুখে লোকের পুতি বর্ন অধিক দিও না ও গীর্ষের পুতি বর্ন বদ করিও না যে সকল কর্ম তোমার দিগের হাতে সমর্থন কর। তখন তোমরা ইহা অন্যের হস্তে সমর্থন করিও না যেহেতুক তাহার কুসম্বন্ধ। তোমার দিগের অন্তঃস্থ অঙ্গাইতে পাইর আশ্রয় স্বত্বার্থ্য সার্বভৌম হও যাঁহাতে তোমার স্বাভিমান্য রাষ্ট্র হই আর বহুতর্য হইও না কিন্তু ইহাও স্মরণ করিও যে তোমার তাহার বশীকৃত হইবা এবং তোমার দায়িত্ব গীর্ষি লোকেরদের পুতি অন্তঃস্থ

করিয়া তোমারদিগের অন্তঃস্থ অঙ্গাই ইবেক ও শেষে সফলতাপ করিবেক ইহাও বদমানে গীর্ষের পুতি অন্তঃস্থ রাধিবা যদ্যপি গীর্ষি লোকেরা না। পুকার লোকের করে ও রোদন করে তথাপি তুমি কোবি করিবা না। যেহেতুক তাঁহার। অজ্ঞান এ কারণ তোমাকে ইহাও হইতে হইবেক তোমার সকল কর্মের মনে দয়া রাখিবা এ পুকার চলিলে এই ওপকার হইবেক আপন। ও স্বরাষ্ট্রের সন্মত বৃদ্ধি হইবেক ও রাজ্যশাসনের পুতি ও জননারদিগের পুতি নাইবা ও তোমার। ইহাও লোকের তোমার সন্মত রাখিবে ও প্রেম করিবে ও আপন অন্তঃস্থরূপে সর্বদা তুমি থাকিবা এই সকল হইতে অধিক আর কি।

আশীর্বাদ মৃত্যু।

জগৎসর্বদায়ের মতো বীরলগ্নর প্রাণে আশ্রয় ওলাগুয়ের শ্রীযুত গোবিন্দজী বদমুখোপাধ্যায় বহুজন মান্য ও কুলীন অতি সাম্প্রিক সম্বৎসরাত ও বীন মল্লভিতে ভাগ্যবন্ত তাঁহার এক সন্মত তাঁহাতে প্রাণ দুই কলা। অন্য পরে কয়ে চারি বৎসরের এক মাসমতে চারি পুত্র জন্মিয়া কয়ে এক মাসে পরলোক প্রাপ্ত হয় পুত্রের দুই কলায়ত্র অংশিত ছিল। তাঁহার। অতি সুন্দরী ও সুশীলা ও পিতৃ মাতৃ পুত্র। এইরূপে সন ১২৭৭ মালের ১৮ শ্রাবণ মাসের বার ইংরাজী সন ১৮৭৭ মাস ১ আগষ্ট তারিখে এই দুই কলার এক সময়ে তুমি ইয়া ১১ শ্রাবণ ১ আগষ্ট শনিবারে এক সময়ে মৃত্যু হইয়াছে এ অতি আশ্চর্য্য।

আহাজ।

ইংল্যান্ডের রাজার যে জার্মানি কর্তৃক

লিষ্ট মারা গিয়াছিল তাঁহাতে যে লোক রক্ষা পাইয়াছে তাঁহা। অন্য ভিন্ন আহাজে তিয়্য। গীত শনিবারে আজ রিতে হইয়াছে। রবিবারে মায়ানুর পঁচছিয়াছে সেখানে কোল্লানির খলুয়ে মরহাৎ প্রস্তুত হইয়াছিল ও সেইখানে তাঁহারদিগকে ভাল রূপে রাখিয়াছে। এই আহাজ মারা পড়াতে দুঃখ না হইয়া বরং ইহাতে আনন্দ হয় যে তাঁহার এক শ্রুণীও নারা পড়ে নাই।

অনুগ্রহ।

পত্নী ও ভায়ে বালিয়া পরগীনার ইজানুর গ্রামের এক চান্দাচোপার পীত বৎসর বয়স্ক এক বালক জন্মিত করিয়া পুত্রবধী তে আশ্রয় করিতে গিয়াছিল ইহা কেহ জানে না কিন্তু কাল পরে এই বালকের অশ্রুধন করিতে লাগিল তাঁহার আশ্রয়স্থান পাইল না। পরে রাশ্রি হইলে আসা লইয়া অবধন করিয়া বেতনুহর রাশ্রি "সময়ে সেই পুত্রবধী হিন্দুনাতে দেখিল যে এই বালক ময়ূরী ভাসিতেছে। পরে তাঁহাকে তুলিয়া রাখিল পর দিন মোক্ষ চণ্ডীলাস হারোণী আমিয়া তহকী করিয়া সন্মত করিতে খলুয়ে ছিলেন।

লোকা ভূবি।

মোক্ষ কলিকাতার কুমারহুসির ঘাট অন্যত্রের মহাজনের। এক লোককে চান বোকাই করিতেছিল লোকা ভাষায় কে যাইছিল একারণ তাঁহার। বুঝতে না পারি যা অধিক চান বোকাই করিল। বোকাই হইলে পর লোকা ভাষাতে চেষ্টা করিলে লোকা ভাষে না পরে অনেক লোক একত্র হইয়া গেলেন লোকা (যেহা বহিরে গেল ডেমন অধিক বোকাই প্রকৃত ভূবি

সমাচার দর্পণ।

গ্য গোল তাহাতে যে লোকেরা ছিল তা হারা সকলেই বাঁচিয়াছে কিন্তু অভিস্রুত প্রযুক্ত নৌকার তৈরীনা পাওয়া গেল না।

বারিডা।

তুলা এই সন্তাহের মাঝে বিস্তর স্রু হয় হয় নাই। ওতম কাজেচা। তুলা একই টোকা করিয়া বিস্রু করিতে মহাজন লোকেরা রাজী নহে। মারাত্মক পুরের তুলা বাঁচারে অত্যন্ত আঁচে কিছু তাহার মূল্যের কিছু অমাত্র। হয় নাই। যো- ভাবানগোনাতে কাজেচা তুলার মূল্য দি যোন আট আনা নান হইয়াছে এবং জালিল তুলার মূল্য দি যোন সাত নিকাশুল হইয়াছে। ওতম কাণ্ড পুরাশকা কিছু তুলুনা হইয়াছে কিন্তু যো টা কাণ্ড সমভাবে আছে। সোরা এই সন্তাহের মাঝে অধিক স্রু বিস্রু হই য়াছে এই কারণ তাহার মূল্য দি যোন চারি রুয় আনা অধিক হইয়াছে। চিনি যো- বালারসহইতে অনেক আমদানি হইয়াছে কিন্তু তাহার মূল্য কিছু অত্র। হয় নাই। গোলমরীচ বাঁচারে অ তল্প আছে গত সন্তাহহইতে তাহার মূল্য চারি আনা অধিক হইয়াছে।

জিনিস আমদানি।

গত সন্তাহের মাঝে পশ্চিম দেশ হ ইতে এই জিনিস আমদানি হইয়াছে।

| জিনিস | যোন |
|--------|------|
| তুলা | ১০০৪ |
| চিনি | ১১৩৯ |
| সোরা | ৪১৩৪ |
| মুপারি | ৩৪ |
| সেবানি | ১৬ |
| কিলাদল | ৪৮ |

বিবাহ বিয়য়।

গ্রীক রাজ্যের অষ্টপাতি কুটিন দেশে বিবাহের বিষয়ে এইরূপ ব্যবহার ছিল যে মেখানকার কোন লোক আপন ইচ্ছা তে বিবাহ করিতে পারিত না ও পিতা মাতার আশপন্নদের সন্তানেরদের বিবাহ দিতে পারিত না যদি কেহ বিবাহ করিতে ইচ্ছা করিত তবে সে বিচারকতার নিকটে গিয়া আপন অভিমান আত করাইতে তাহাতে বিচারকরা তাহার তুল্য বয়সে ও তুল্য লম্বা ও তুল্য বল ইত্যাদি দেখিয়া এমন এক স্ত্রী অনুঘন করিয়া তাহার স ম্বিত বিবাহ দিতেন। কুটিন রাজ্যের আশপন্নদের কারণ বিবাহ করিত না কিন্তু রাজ্যের কারণ কেননা এই পুকার বিবাহেতে যে সন্তান ওৎপন্ন হইত তা হারা অতিশয় বনবান ও স্বচ্ছন্দ হইত এবং তাহারদের ঘোঁরা রাজ্য রক্ষা হইত যেহেতুক বিনশেরা তাহারদের মুখ দেখিয়া ভীত হইয়া তাহারদের অধীন হইত। কুটিন দেশে যে সকল লোক ও অসহীদ বানকরা ওৎপন্ন হইত তাহার দিগন্তে তাহার প্রসিদ্ধি ছিল।

বাবিলোন দেশে এক ব্যবস্থা ছিল যে কে লোক বিবাহাশুভ হইলে নিশ্চিত হানে নিশ্চিত সময়ে ঘাইত এবং সেখানে ঘর পুরুষেরাও আসিত পরে এই স্থানে রাজ স ভাষ লোকেরা সেই কল্যারদ্বিগে নি লামে দিগিয়া ভাঙিত তাহার ডাক মন্তুর হইত সেই বিবাহ করিত তাহার মাঝে যে বৎ সুন্দরী তাহার নিদাম অণ্ড হইত তাহাহইতে লাল সুন্দরী তাহার পর নি লাম হইত এই রূপ প্রথা তাহা সুন্দরী কল্যারদের স্রমে নিলাম হইয়া বিবাহ হইত। পরে অসহীদা ও কল্যাণ কল্যাণ ডাক না হওয়াতে সুন্দরী কল্যারদ্বিগে

কল্যাণ করিয়া বৎ টোকা হইত সেই স কল টোকা দিয়া কল্যাণদ্বিগের বিবাহ হে এয়াইত তাহাযান লোকেরা টোকা দিয়া সুন্দরী স্ত্রী বিবাহ করিত এবং দুগ্ধী লো কেরা টোকা পাইয়া অসহীদা কল্যাণ স্ত্রী বিবাহ করিত। পিতা আপন কল্যাণে আ শন ইচ্ছাতে হান করিতে পারিত না এবং যে লোক নিলামে কল্যাণ স্রু করিত সে সেই কল্যাণ ঘরে আনিয়া বিবাহ করিত এই বিষয় রাজকীয় লোকেরদের নিকটে আমিল দিয়া আসিত এবং স্রয়ের পর যদি বিবাহে ওতম সম্মতি না হইত তবে কল্যাণ দিগিয়া দিলে টোকা দিগিয়া পাইত।

ই-গ্লাওর রাজ্যের অভিস্রুত।

ই-গ্লাওর দেশে রাজ্যের অভিস্রুত হই তে অধিক আশ্রয় কর্ম নাই যে রাজ্য এমন নি-হামনে বিনয়াজন অর্থ ও তত্ত্বাভ্যুতিনি এই আশা করিয়াছেন যে আশ্রয় দিয়া সেস্তুর মামনেত আশ্রি রাজ্যভিত্তিক হইব এই রূপে মা লের মাঝে অভিস্রুত ঘুরা আয়োজন কর।

চীনার কর্তা।

চীনার কর্তা যে পুরুষ প্রস্তুত হইয় তাহার বিশেষ কেহ আত হইতে পারিল নাই যেহেতুক সে দেশের মাঝে কেহ পুরুষ করিতে পারে নাই অতএব ই-গ্লাওর দেশের এক লোক-পুরুষ এই স্বকৃষ দিয়া কেন যে যে লোক সেই বিষয়ের বিশেষ আসিহিতে পারিত সে চারি শত টোকা পারিতোষিক পাইবেক কিন্তু এ টোকা যে কেহ শীঘ্র পাইবেক এমত ভরসা হয় না যেহেতুক চীন দেশেরেরা অল্প দেশেরদের বিষয়ে এমন ভীতি করে যে তাহারা কাহাকেও আশ্রয়দানের দেশের মাঝে পুরুষ করিতে ঘেয় না।

সমাচার দর্পণ।

ভেঁকু আর সাহুস ।

এত ক্রমান্বয়ে কথকল্পগুলি শুকনো
কল্পিত কাহিনী শুদ্ধ হইয়া বিরচনা ক
রিল যে পৃথিবীর সকলী মঙ্গলদি রাজ্য
আছে। অমায়িকদিগের এক ব্যক্তি পুতান
রাজ্যে স্বজন থাকি প্রভু হইয়াছেন। যখন ক
রিয়া পরমাশ্রয়ঃ হইলে স্বরাজ্যে পুত্রিক
পুতানী করিতে লাগিল এবং জগৎ-পতি
তোমার মঙ্গিতে মগন আভিতে রাজ্য
কিয়া পুতিনামক করিতে তোমার আমায়দিগ
কে এক জন পুত্র দেও। পরমাশ্রয়ঃ করি
লেন যে তোমার প্রভু অবস্থার আশ্রয়
আর আশ্রয়তা নাই কারণ অনবদী
অবস্থা তখন যে ধীরে করিয়া অবদী হ
ওয়া বড় দুঃখ তাহা না মানিয়া পুত্রার্থ
পুতানী করিতে লাগিল তাহাতে যেহেতু
পুতান পুত্র কালক্রমে করিলেন আর
কহিলেন যে এই তোমারদিগের রাজ্য। ই
হা করি যাগ্যতা করি। (ভেকের রাজ্য)
ই রাজ্য পাইয়া তৎকালে আশ্রয়হীন
হইয়া আশ্রয়দায়ক বিদ্রোহক ভূমিক
হইয়া কাল প্রায়ের পুতান করিল কিছু
কাল এই কল্যাণে হইল এক দিন তাহা
রাজ্যের মধ্যে এক ব্যক্তি আর। ভেকের
পিতৃক কহিলেন যে আর ভেক মগন
আমায়দিগের রাজ্য আশ্রয়দায়ক অবস্থি
করিয়া করলেন। ঐ ইহার নিকটে পাই
য়া দেখি ইহার বিদ্রোহ এই কথা করিয়া
কহিল। তাহার নিকটস্থ হইল তাহা
ভেকের। যে কাল করিয়া কিছু কহিলেন
না। পরে তাহার প্রভু আশ্রয়দায়ক
রা আশ্রয়দায়ক পুত্রিক ব্যয়রাজ প্রভু
প্রভু করিয়া কহিলেন এ রাজ্য কালক্রমে

[illegible]

তাপমাত্রা।

পৃথিবীতে এমন কোন পদ ও অবস্থা নাই
যে অসঙ্কেত মনকে সঙ্কেত করে মনকে
যখন ভাল অবস্থায় থাকে তখন তাহা
জানিতে পারে না। আর তাহার পরিচয়
আলোকে করে আর মনোহর সুবাস্তব হয়
তাহা পৃথি আপন স্বভাব যোগে হইতে
৩২ নং তাহারদিগের দৃষ্টিগোচর কারণ।

ବାମନ ଡାଃ

| কিনিস | সেবা | অবধি | পরিমাণ |
|-----------------|------|------|--------|
| মুপারি | ১ | ৩০ | ০। |
| ডেরজা টেন | ১ | ১১ | ০। |
| গাছ রসিক | ১ | ০ | ৪। |
| বারিকেন টেন | ১ | ১১। | ১০। |
| মুগা কাচোকা | ১ | ১১ | ০ |
| আবার রসিক | ১ | ১১ | ১। |
| পাটনাই আবা | ১ | ১ | ১। |
| চানু পাটনাই | ১ | ১৫। | ০ |
| পাছকি উত্তম | ১ | ১। | ১। |
| পাছকি মধ্যম | ১ | ১। | ১। |
| মুগা উত্তম | ১ | ১। | ১। |
| মুগা মধ্যম | ১ | ১। | ০ |
| বাপাম | ১ | ১। | ১। |
| মুগা গোম | ১ | ১। | ১। |
| পাটনাই বই | ১ | ১। | ১। |
| অছুর তালি | ১ | ১। | ১। |
| উত্তমগারা বৃত্ত | ১ | ১। | ১। |
| মধ্যম বৃত্ত | ১ | ১। | ১। |
| উত্তম বৃত্ত | ১ | ১। | ১। |
| মধ্যম উত্তম | ১ | ১। | ১। |
| নীল উত্তম | ১ | ১। | ১। |
| মিছরি উত্তম | ১ | ১। | ১। |
| মধ্যম | ১ | ১। | ১। |
| সোরা উত্তম | ১ | ১। | ১। |
| মধ্যম | ১ | ১। | ১। |
| চিনি কাপরি | ১ | ১। | ১। |
| মধ্যম | ১ | ১। | ১। |
| খার চিনি | ১ | ১। | ১। |
| তেতুল | ১ | ১। | ১। |
| জামানু | ১ | ১। | ১। |
| চন্দন | ১ | ১। | ১। |

[illegible]

সমাচার দর্পণ

[illegible]

अतिशय १

૧૭ ધ્યાનિત્વ મંત્ર ૪૮-૧૦ ।

आदि मूल ४२२९।४

ହର୍ମଣେ ଯଥା ଲୋକାର୍ଯ୍ୟାମିତ କାର୍ଯ୍ୟସାଧନାଃ

यस्यास्यैव भावः 'नमोऽस्तुते नमोऽस्तुते' ॥

কোয়ালিটি ব্যাংক।

কোম্পানির শতকরা ছয় টাকাই মুদ্রার
 মূল্য হয় করিতে হইলে শতকরা দুই
 টাকা হয় আদা শিমিয়ায়। কিন্তু করিতে
 হইলে শতকরা দুই টাকা দুই আদা
 শিমিয়ায়।

ଉତ୍କଳପ୍ରଦେଶ ସରକାର ।

| | | | |
|----|----------|----------|----|
| १७ | काठमाडौं | भोजपुर | २६ |
| १८ | " | इलाम | १० |
| १९ | " | सिराहा | ३० |
| २० | " | मकवानपुर | १८ |
| २१ | " | धनकुटा | १५ |
| २२ | " | सुनसरी | २४ |
| २३ | " | जहदा | २५ |
| २४ | " | कोशी | २५ |
| २५ | " | तेह्रथुम | २५ |

हेन्याहाव।

গঙ্গাসিঁগির ওপাড়ার অধিবাসিনী
 ণির কয়েকটি : সেতুপুত্র পুত্রার যো-
 কলিকাতার চৌনহাট জমি-সাহিবদ
 করে হইবেক।

लालबहादूर शास्त्री द्वारा

ইন্ডিয়ান মেট্রো মাইডেজ যে প্রযুক্ত
কোম্পানী বাইনারের জন ১৯৮৯ সালের
৮ নভেম্বর ভারতের শতভাষা জয় টীকা
স্বত্রে গোলাপিয়ায় বসিন বঙ্গালমের
প্রযুক্ত জনার্ন ও প্রযুক্ত বঙ্গালমের
৩ ১১ নভেম্বর ১৯৮৯ টীকা ১৯৮৯ নভেম্বর
১৯৮৯ টীকা ১৯৮৯ নভেম্বর ১৯৮৯ টীকা
১৯৮৯ টীকা ১৯৮৯ নভেম্বর ১৯৮৯ টীকা
১৯৮৯ টীকা ১৯৮৯ নভেম্বর ১৯৮৯ টীকা
১৯৮৯ টীকা ১৯৮৯ নভেম্বর ১৯৮৯ টীকা

दाइलोड हॉल

১৯৪১ সালের ১৪ আগস্ট তারিখে
 জাপানি সৈন্যরা ঢাকার ২২ নম্বর ১৫
 হেলিকপ্টার এক বাহিনীকে হারিয়েছিল এবং
 উহা ঢাকা থেকে বাকি বাকি হয়েছিল।

ਸਭਾਚਾਰਿ ਦਰਪਣ ।

राज्यस्य निष्पत्तिः ।

४ आशिष्ठमन १८२० ।

ଅଧିକତମ ୧୦୦ଟି ଅନୁବନ୍ଧ ଲାଗୁ କରାଯାଏ ।
 ନିମ୍ନଲିଖିତ ଅନୁବନ୍ଧ ଲାଗୁ କରାଯାଏ ।

ଅନୁଷ୍ଠାନ ଓ ଶାସିତ ମାତ୍ର ନୁହେଁ ନୁହେଁ ନୁହେଁ ।
ନିଜେ ଶାସିତ ମାତ୍ର ନୁହେଁ ନୁହେଁ ନୁହେଁ ।

ଆପଣଙ୍କ ଦାୟିତ୍ୱ ବୃଦ୍ଧି ନାହିଁ ବୋଲି

४४ आगिस्तु ।

अथैषां जल विगारि माहिर राजिमहीर
मार्गमाला इत्येवम् ।

४३ अङ्ग ॥

अध्यापक आर. कृष्णमूर्ति, आर. व. विष्णु
अधीनस्थ (अधीनस्थ)

३-आयुर्वेद शास्त्रम् ।

ই-১৩ (১) নতুন মহাসড়ক স্থাপনের
কাজে উক্ত মহাসড়ক পন্থা ইহা নিযুক্ত
হইবে।

अर्थ

ইতিহাসে যেসব কবিগুরু 'যে' কবি

କାହାରି ୧୦ ମୁଦ୍ରାରେ ଦୋ ଡିବିଡି ମାନ
 ଓଡ଼ିଆରେ ପଢ଼ାଉଁ ମନେ ଡୋକ ମନ ୧୨୧
 ଲୀନ ୧୦ ମେଢ଼ାର ମନିଆର ପାରିଆ
 ଦେ ଆଉଁସ ହୈଦେ । ମୋ ମିନ ଅବି
 ଡିବିଡିର କୁହୁଡ଼ା ୩ ମୁଦ୍ରା । ମୁଦ୍ରା
 ଗଢ଼ା ନାମ ବନା ଅବି ହୈ ମୁଦ୍ରା ମନ
 ବନା ବେନାମାହା ହାଉଁସ ଧାଉଁସା ଡିବିଡି
 ମନା କହିବେ ।

১৮৫৭ সালের এক শত টাকার টিকিট
 লিখাতার ক্ষুদ্র জেবেব (যেমন) সাইন
 মুদ্রাণ করণ হয় করিয়াছিল তাই
 হাকীম অম্বাবাদ হোসেন নামে এক মুন্সি
 সিন্দা হিজুতাল লুসিগিদি করিয়া এক
 বিবরণী দিষ্ট—এই ব্যবসার কর্তৃক অনেক
 লোকের অন্যান্য সুখের এক কর্তৃক
 দিষ্ট এক টিকিট হয় করিয়াছিল। তা
 হাতে সেই মাস তাহার নামে জাল
 যদি বিবরণ করিয়া এক শত টাকার
 ই জেবেব সাইন করণ এক শত টাকার
 টিকিট হয় করিয়াছিল। এই মাসে
 পূর্বেই ছিল লোকের কর্তৃক
 বার করণ আর্থিক টিকিটে
 করিয়াছিল তাহাতে সে ছিল। তাহার
 দুই ছিল যিহে পক্ষ যিহে মাস তাহার
 নাম। অতঃপর এই লোকের কর্তৃক
 করণ এক শত টাকার করণ।

५३

প্রতিজ্ঞা করে যে ই-প্রাণীর নিয়ন্ত্রণ
 কোন মুহূর্তে কোন রাজার হাতিয়াই হইবে
 নষ্টনষ্ট বসে ই-প্রাণীর রাজার ঘর জন্ম

সমাচার দর্পণ।

তাঁহাতে মল ১৮৬৫ সালে লক্‌সার রাঁজার সহিত যুদ্ধ হইয়া রাঁজার বাটী লুণ্ঠ করিয়া লুণ্ঠিতবস্তুর মধ্যে এক সিন্দুর পাইল তাঁহাতে অনেক পুকার থখুলা অলকাঁর জিল তাহার মধ্যে এক রাতমুকটে বৎ মূল্য পুস্তরে স্বর্ণ অতি ও ওজনবৎ পুস্ত পড়িবার এই সকল আনিয়া থখন ই-প্রের রাঁজার নিকটে দিল ওখন রাঁজা দেখিয়া সে সকল বিক্রয় করিয়া টাকা আনাহিয়া যুদ্ধের সৈন্যসরহিনীর মধ্যে ভাগ করিয়া দিতে আঁকা করিলেন।

চুরি।

যোঁ বীনবাড়িয়ায় কুড়ীর সাহেব এক দিন আপন ঘরহইতে কল্যাণের অন্যত্র গিয়াছিলেন ঘরে কেবল খানসামা ও দরওয়ান ছিল। সেই দিন কুড়ীতে মতের পত টোকা পড়ুক জিল নোবান খানসামার আঁত হইয়া ঐ টোকা কি পুকারে দরওয়ান লের সম্মুখ দিয়া চরি করিয়া বাহির হইবে ইহার আর ভণায় না দেখিয়া শেষে বাজারে গিয়া এক হাঁতি মিষ্টিমুস কয় করিয়া লইয়া কুড়ীর মধ্যে গেল দরওয়ান জিজ্ঞাসা করিলে কহিল আমি একবার বাটী ঘাইব সেকার মিষ্টিমুস আনিলাম। পরে সে মিষ্টিমুস অন্য কোন হারিয়া জেলিয়া ঐ মতের পত টোকা ঐ হাঁতি পুরিয়া ওয়ে মিষ্টিমুস বাঁরা চাকিয়া অতি কষ্টে সে হাঁতি ক্ষেত্র করিয়া দরওয়ানের সম্মুখ দিয়া আপন বাটী ঘাইয়া সেই টোকা আপন বাটীর নিকটে অনেক রাঁশর মধ্যে রাখিয়া আপন জীবে করিয়া পুনর্বার কুড়ীতে আইল। কিছু কাল পরে সাহেব কুড়ীতে আসিয়া কল্যাণে দেখিলেন যে টোকা নাই। পরে খানসামাকে জিজ্ঞাসা করিলে সে কহিল আমি কিছু আনি না দরওয়ানকে জিজ্ঞাসা করিলে সে কহিল

আমি কিছু আনি না পরে দরওয়ানকে জিজ্ঞাসা করিলে সে কহিল যে আমি আর কিছু আনি না কেবল খানসামা এক হাঁতি মিষ্টিমুস লইয়া বাটী গিয়াছিল সাহেব জিজ্ঞাসা করিলেন মিষ্টিমুসের হাঁতি কি পুকারে লইয়া গেল ঘরোয়ান কহিল ক্ষেত্র করিয়া ক্ষেত্রে লইয়া গেল তাহাতে কোন ভাঙ্গ বস্ত ছিল এমন বোধ হইল। সাহেব তাহাকে বিতর্ক করিয়া বাহির খানসামা লোক পাঠাইলে খানসামার ঐ খানসামার বাটীতে চারি জন বরকন্দাজ পাঠাইলে তাহারা তাহার বাটী ঘাইয়া কিছু সন্ধান না পাইয়া ফিরিয়া আইলে এই সময়ে ঐ খানসামার স্বী আর এক ঘিয়া ভন্ন লইয়া যেখানে টোকা জিল সেই স্থানে চাণিয়া দিল বরকন্দাজেরা তাহা দেখিয়া পুনর্বার ফিরিয়া গিয়া সেই ভন্নের মধ্যে ঐ মতের পত টোকা পাইয়া সাহেবকে সমাচার দিল পরে খানসামাকে খতুর চালান করিয়াছে তাহাতে সে কপূদ হইয়াছে শেষ কিছু জানা যায় নাই।

মূল।

দ্রাবু দেশে এক জন জীলোক কিছু টাকা লইয়া অন্য দেশে ঘাইতেছিল এক দিবস রাত্রিকালে এক স্থানে যজ্ঞিল করিল সে যজ্ঞিলের কথা এক স্বী ও তাহার দুই পুত্র। এই ভিল জল পত্রাঘন করিল যে দুই পুত্র রাত্রির সময়ে ইহা কে বই করিয়া টোকা লইব। সেই পথিকা স্বী ও ইহারহিনীর ভাব দেখিয়া সন্দেহ করিয়া কিছু ভাড়া হইল তাহা আনিয়া গৃহস্থ স্বী তাহাকে অভ্য দিয়া কহিল যে তুমি কিছু সন্ধান করিও না যদি সন্দেহ করহ তবে বরকন্দাজের নিকটে গ

মন করিব। পরে তাহারা তাহারহিনী করিয়া দুই জন স্বী লোক একত্র শয়ন করিল। যেখানে শয়ন করিল ঐ দুই পুত্র তাহা দেখিয়া লিঙ্ক করিয়া রাখিল পরে গৃহস্থ স্বীর সিন্দুর হইলে পথিকা স্বী ও টিয়া তাহাকে সরাইয়া আপনায় স্থানে রাখিয়া তাহার স্থানে আপনি শয়ন করিল। পরে দুই পুত্র রাত্রির সময়ে ঘোর অজ্ঞকারে ঐ দুই পুত্র ওটিয়া গৃহ মধ্যে ঘাইয়া পুত্রদ্বয় পথিকা স্বী জলে আপন মাটার বস্ত্রকে অস্ত্রাঘাত করিল তাহাতে সে দৌর করিয়া ওটয়া পুনর্বার ভাগি করিল। দৌর শুনিয়া নিকটে লোকেরা আইল ইহা দেখিয়া সে দুই জন পলাইল পরে তাহারহিনীর অস্ত্র ঘন করিয়া আনিয়া কএদ করিয়াছে।

কুড়ীর।

গিও ৪ ওগিও স্বকরার বাকীনা।

শিবন যোঁ হরিবপুর গুণায়র এক মদ দের স্বী অনুমান ত্রিশ বৎসর বয়স্ক গন্ধাসনে গিয়াছিল ও তাহার সহিত তার জীলোকও ছিল। ঐ মদকের স্বী গিওয়ার্জী করিয়া সুনিবে জল অলপ্য ত ঘাইতে কুড়ীতে ধিলন তাহাতে ঐ স্বী বৎ আত্মনাথ করিয়া অন্য জীলোকের দিগকে কহিল যে আমাকে কুড়ীতে বরিয়াছে। তাহারা বৎ দৌর করিয়া কহিতে লাগিল যে ফলানা মদকের জীলোক কুড়ীতে লইয়া যায় পরে কোন পুত্রকে ঘাটে না দেখিয়া তাহারা রোদিল করিতে লাগিল। পরে কুড়ীর পুত্র স্বী আপন পুত্রের কবচ গহনা লুণ্ঠিয়া শিব তাহার ঘেলিয়া দিল ও কহিল যে আমায় এইবৎ মৃত্যু বৃত্তান্ত বাটীতে কহিবা ঐ কথা কহিতেও জল মদ হইল। কিছু কাল পরে

সমাচার দর্পণ।

কুড়ীর পুনর্বার তাহাকে মুখ্য করিয়া তা
নিয়া গঠিত ইহা দেখিয়া লোকেরা বিরক্ত
গেলেন সে পুনর্বার জিলে যোগ্য হইল আর
ওড়ল না। তাহার পর দিবস পরে ঐ কু
ড়ীর তাহার পুর গ্যামের লিফটে গিয়াছিল
তাঁহা দেখিয়া সকল লোকেরা একত্র হইয়া
জিল খান পলয়ার নৌকা ও অল্প লইয়া
তাঁহার পল্কা ঘাইয়া কুড়ীরকে যারিয়া
তদীয় জিল তাহাতে রাখা গেল যে ঐ
কুড়ীর দীর্ঘ বর্ষ হস্ত।

ঐ সময়ে রানাবাটের ক্ষয় পাল চৌ
বিরিমা মোং কানলাইতে বাটী ঘাইতে
জিলেন তাহার ইহা দেখিয়া ক্ষয় হইয়া
ঐ কুড়ীর লোকের বিপাক পারিতোষিক
দিয়া মর্মে করিয়া লইয়া গেলেন।

ঐ হরিষপুরের এক জন হলু ঋণ্ডা
জয়ন্ত হইতে বাটী আসিয়া নুনে
গিয়াছিল তাহাকে লোকেরা কহিল যে
এখন নিরপেক্ষ হইয়া অল অধিকাল
থাকা ভাল নহে যেহেতু কতিপয় কুড়ী
রের ভয় হইয়াছে ইহা শুনিয়া হলু ইমিয়া
কহিল যে এত দুঃখ হাতা দিদিয়া আই
লাম তাহাতে মৃত্যু হইল না অতএব
কৃতি আমার মৃত্যু নাই। যদি কুড়ীর আ
মাকে লয় তবে আমি শিশু মুক্ত হই এই
কথা কহিতে কুড়ীর আসিয়া তাহাকে
মুক্ত করিল।

চুলা নদীর ধীরে রানাবাটের ওপর হা
লাপপুর গ্যামের এক স্থলোক স্থানার্থে
চুলা নদীতে গিয়াছিল। সে স্থি অল্প
অল বসিয়া গাভ্রমার্জনা করিতেছিল এই
সময়ে হস্তীর আসিয়া লাঙ্গুলে আঘাত
করিয়া তাহাকে অল খেলিয়া দিয়া তুব
দিল এইমাত্র লোকেরা দেখিল আর কিছু
দেখিতে পাইল না।

মোং আচ-ঘাটের নীচে চুলা নদীর
পূর্বদিকের ঘাটে এক জালিয়ার হলু

জল আনয়নে গিয়াছিল সে হলু
তে অল পুড়িতেছিল ঐ সময়ে পশ্চিম
পারে এক কুড়ীর তুব দিল তাঁহা দেখিয়া
ঘাটের সকল লোক মাঝবিল হইল। ক
ন্যাকেও তাঁহায় ওড়িতে কহিল তাঁহা সে
না শুনিয়া অল পুড়িতে লাগিল এই স
ময়ে অতিবেগো কুড়ীর আসিয়া তাহাকে
লইয়া গেল। এখন যে স্থানে পূর্বে তুব
দিয়াছিল সেইস্থানে একবারমাত্র ওড়িয়া
যে কুহিল আর কেহ দেখিতে পাইল না।

লোকা ভূরি।

৪৪ আগষ্ট মোম্বার বার ৩১ শ্রুত
মোং বলাগতের গাঙ্গের নীচে রাতি
কালে একখান ঘাসের লোকা ভূরিল পরে
অতিশয় দৌতে ঘাস ভাসিয়া চপিল
লোকের লোকেরা সেই ঘাস অবলম্বন
করিয়া তাঁহার দুই সোণ আর মোং
চাকরহণ্যন্ত আসিয়া কিনারা পাইয়া
পাল বাঁচাইল। লোক এক জনও মরে
নাই কিন্তু অতিশয় পুতু লোকের অল
লয় পাওয়া গেল না।

এ বৎসর বলাগত অতিশয় বেগে ই
মাকে তাহাতে লোকেরা নৌকাতে গায়া
গায়েল সহসা মাঝবিল হইতেছে। এক
বজ্রা পশ্চিমদেহ-হইতে কলিকাতা
আসিতেছিল পরে গড় ঝুসারের কলিকাতা
তার লিফটে একখান ভক্তের ওপরে পতি
য়া তুলা গেল বজ্রার মতো ই-গুণ্ডায় দু
ইটি হলু ছিল তাঁহারা অভিক্ষে সেই
ভক্ত ওড়িয়া পাল হস্তা করিল তাঁহার লি
ফটে এক তাঁহাও মাঝেব জিল সে দেখি
য়া ই দুই হলুকে আপন নৌকায় ওঠা
ইয়া আরমানীর ঘাটে পৌছাইয়া দিল।

পুলিল।

পূর্ব কলিকাতার পুলিসে এক লুট

ঘাবড়া হইয়াছে। পূর্ব পুলিসের যে
বিচারকর্তার আছেন তাঁহারা থাকিলেন
কিন্তু তাঁহাদের সহিত এই মাঝেব
লোকেরাও তৎক্ষণে নিযুক্ত হইলেন।
শ্রুতিতে মোং ইতোপূর্বে মাঝেব ও শ্রুতি
কাল হিগিন মাঝেব ও শ্রুতি কাল
পাঠন মাঝেব প্রভৃতি।

জিনিসপত্রাদি।

১ জুলাই অবধি ৩১ জুলাই পর্যন্ত এক
মাসের মধ্যে পূর্ব কলিকাতা হইতে
এই জিনিস লাল্য যেনে গিয়াছে।

| জিনিস | মোল |
|-------|--------|
| জুলা | ১১৮৪০ |
| জিলী | ৪৮৮০ |
| মোরা | ১১১৪০ |
| সুট | ১৯৮ |
| লল | ৪৮৮ |
| চাল | ১০০৪৮৮ |
| কালক | ১০০১১১ |

কণ ও স্বর্ণ অম্বাণী।

১ জালিয়ার অবধি ৩১ জুলাই পর্যন্ত
মাত মাসের মধ্যে এক কোটি আটত্রিশ
লক্ষ পঁচান্ন হই হাজার পাঁচ শত পঞ্চাশ
টাকার স্বর্ণ ও পোনের লক্ষ বাহাত্তরি হা
আর ময় পঁচ তের হাজার টাকার স্বর্ণ অম্ব
বাণী হইয়াছে।

জুয়া।

ই-গুণ্ডে এক স্থানে চারি পাঁচ জন হামি
য়া মতকের বিষয় গল্প করিতেছিল তা
হাতে তাঁহাদের মধ্যে এক জন ঐলও
ওপাশের লোক জিল সে কহিল যে আ
মাদের যেনে এবিষয় অতিশয় আশঙ্ক
যা যেহেতু রাতিবালে লোকেরা লুট

সমাচার দর্পণ।

শত্রুর শয়ন করিয়া পুণ্ড্রকালে মৃত
ওঁতি যেমন বাসিল। যেমন মর্যে ওলা
তেমন ইংলণ্ডের মর্যে ওঁতি।

আক্ষর্য সাহস।

ইংলণ্ডে আলেক্সান্দ্র নামে এক সাহসী
গাভিতে ঢকিয়া আসল ঘরে আনিতে
লেন রাহাতে এক ঘালে ঘোড়া ডিরাইতে
কৌশলে গাভিহাতে দুরে গড়িল পরে
এ দুরে ঘোড়া সাহসে কঁচা গাভি লইয়া
অতিবেগে ধোঁকিল। এই সময়ে তাহার
অণু এক ঘোড়ার আনিতেছিল সে ইহা
দেখিয়া আসল জাতা ডিরাইয়া ইরিয়া
জাতার ঘোড়ার লাগামে লাগাই
য়া দুরে গেল জাতা ধরিল। কিন্তু ঘোড়া
অতিবেগে ঘাইতে হাতখান্ড তাহার
টানিয়া লইয়া গাইয়া দিরাইল। তা
হাতে কাহারো কোন আঘাত হইল না।

এক বন্ধু মিঃ আর পশ্চাদ্গতি।

এক মিঃ মৌলানায়া অতিশয় দুঃখ
এ অপকারী এ নিষ্ঠুর ছিল বয়োবিক্র ২২
নে অত্যন্ত দুঃখ এ অপ্রাপ্ত হইয়া গিল
বাপ পড়িছিল হইয়া আসল কোঠের পড়ি
য়া থাকিল তাহার অভাবে অতিশয় হই
য়া বন্দ পশ্চাদ্গতির দ্বারা যাত্রা করেন
কিন্তু কেহ মেরল বরং অনেকে তাহার
পুত্র ব্যবহার করেন করত তাহার পুত্রি
হল যেওনাথে ইচ্ছায়ে মিঃ-হের তনয়ান
করে। মিঃ-হের আর কন্যাতা নাই যে তা
হার দিগে পুত্রিগোণিতা করেন সুতরাং

সহি ক্লেশ সহ্য করিয়া থাকিল এক দিন
এক দিল্লী তাহার দিকট ঘাইয়া মিঃ-হে
র পুত্র ব্যবহার জন্য দাখিল হইত।
করত তাহারে পদাঘাত করিল তাহাতে
মিঃ-হের পুত্রিগোণিতা হইল। মরনকালে
মিঃ-হে কহিতে লাগিল যে হায় আমি কেন
এমত দুঃখতা এ নিষ্ঠুরতা এ কুব্যবহার
করিয়াছিলম তাহার ফল পাইলাম যদি
নে পশ্চাদ্গতির সহিত ব্যবহার করি
তাম তবে এক্ষণে তাহার আমার রক্ষা
এ গুণকার করিত।

তানপত্র।

রাআ যদি তাল্প অম্বায় থাকি
পুত্রদিগের সহিত সহবহার এ প্রেম
দ্বারা তাহার দিকে বহি না করেন
আর ভাল করিবার ক্ষমতা থাকিতে পারে।
পত্র এমরা পুত্র না করেন তবে যখন
পত্র নে ক্ষমতা যায় তখন তাহার
কেহ আক্রমণ হয় না আর সেই পুত্র
বিশ্রুতি হয়। অতএব মনুষ্যের উচিত হয়
যে যেন সর্বদা বিবেচনা করে যে কালে
তে সকলের লয় হইবেক আর এ কালের
শকটের চাকা মনুষ্যের মস্তকের ওপর
ফিরিতেছে তৎকর্তৃক জোড় বস্ত্র সকলে
মস্তকেতে লীন হইবেক তখন সন্ধ্যার
বিশ্রুতির ব্যতীত কেহ ওপকারে সুন
বেক না। অতএব উচিত হয় তুমি অহ
ম্বায় থাকিতে সকলের মরল চিন্তা করে
ইহার বিশ্রুতিচরণ করিলেই সময়ে তা
হার পুত্রজনপুত্র হয় আর সে ব্যক্তি
পুত্রের অধিবেশনা কর্তৃক করল করিলেই
মহাসুখ হয়।

বাজার তাল।

| কিদ্দিস | মোন | অবধি | পত্র |
|----------------|-----|------|------|
| মুগারি | ১ | ০। | ২। |
| তেজগা তেল | ১ | ১২ | ২। |
| গাছ মরিচ | ১ | ০ | ৪। |
| বারিবেল তেল | ১ | ১৪। | ১০ |
| ভুনা কচোরা | ১ | ১২ | ১ |
| আদা রক্তপু | ১ | ১০ | ১১ |
| পাটনাই আদা | ১ | ২ | ১৭ |
| চাল পাটনাই | ১ | ১৬ | ০ |
| পাটরি উত্তর | ১ | ১। | ১৩ |
| পাছরি মধ্যম | ১ | ২। | ১৭ |
| মুগা উত্তর | ১ | ১। | ১৬ |
| মুগা মধ্যম | ১ | ১। | ১ |
| আদা | ১ | ১। | ১৬ |
| মুগা গোর | ১ | ১। | ১৭ |
| পাটনাই হুই | ১ | ১। | ১৬ |
| অহর তাল | ১ | ১। | ১৬ |
| উত্তরগায়া হুই | ১ | ২। | ১৭ |
| মধ্যম হুই | ১ | ১। | ১১ |
| ভৈলা হুই | ১ | ১। | ১১ |
| মধ্যম ভৈলা | ১ | ০ | ১ |
| মোমবাতি | ১ | ০ | ০৭ |
| মিছরি উত্তর | ১ | ১। | ১ |
| মিছরি মধ্যম | ১ | ১। | ১১ |
| মোগা উত্তর | ১ | ০ | ০৭ |
| মধ্যম | ১ | ০। | ০৭ |
| চিনি কানার | ১ | ১। | ১১ |
| মধ্যম | ১ | ১ | ১। |
| বার চিনি | ১ | ০। | ০৭ |
| তেজল | ১ | ০ | ০ |
| ডামাক | ১ | ০ | ০৭ |
| চন্দন | ১ | ১৪ | ১০। |

এই সমস্ত দর্পণ পুরানপুরে ছাপাখানাতে পুস্তিকায়ে লিখার ছাপা হয়। বাহার লগরে বাবশক হয় তিনি পুরানপুরে ছাপাখানাতে
ছাপন নাম পাঠাইলে লগরে কাম তাহার দিকট পাঠার হাইবেক তাহার মূল্য মানে এক টাকা। যিনি বাবল করিগাছেন যদি তাহার দিকট
কাম না পাইবে তবে তিনি পুরানপুরে ছাপাখানাতে সমস্ত দিবস তাহার দিকট পাঠার হাইবেক।

૨. જોડાણ મન ૪૦૨૦૧ ૬ ૪૦૦ હાથ મન ૪૨૨૫૧૧

মর্পণে মুখ সৌন্দর্য্যমিব কাৰ্য্যবিচক্ষণাঃ বজ্রাঙ্কানিহ জ্ঞানতু সমাচাৰণ্য মর্পণে ॥

কোল্লানির শতকরা জয় টাকার সুদের
কম্পন কয় করিতে হইলে শতকরা দুই
টাকা বার আনা বিমিয়ম। বিকয় করিতে
হইলে শতকরা দুই টাকা জয় আনা
বিমিয়ম।

| क्र.सं. | विवरण | प्रमाणित | प्रमाणित |
|---------|--------------|----------|----------|
| १ | म.प्र.प्र. | १० | १० |
| २ | प्र.प्र.प्र. | २० | २० |
| ३ | म.प्र.प्र. | ३० | ३० |
| ४ | प्र.प्र.प्र. | ४० | ४० |
| ५ | म.प्र.प्र. | ५० | ५० |
| ६ | प्र.प्र.प्र. | ६० | ६० |
| ७ | म.प्र.प्र. | ७० | ७० |
| ८ | प्र.प्र.प्र. | ८० | ८० |
| ९ | म.प्र.प्र. | ९० | ९० |
| १० | प्र.प्र.प्र. | १०० | १०० |

ইন্ডাস্ট্রিয়াল বেঙ্গল যাইতেছে যে শ্রুত
কেন্দ্রীণী বাহাদুরের জন ১৮৭৯ সালের
৪ নং লেখের তারিখের পক্ষের জাতি
করের শ্রেণীনিয়মের হিমমিত বারানসের
শ্রুত জুলহান ও ক্রুত হকরিয়ায়
৪৫ লক্ষের ১০০ টাকার ১১৫ লক্ষের
১০০ টাকার ১১১ লক্ষের ১০০ টাকার
মূল হাকরি টাকার জি.সি.সি. হাকরি
মূল

মস ১৮-১০ মাসের ১৪ আশ্বিন তারিখে
ঐযুত ভাণ্ডার প্রভুর ৯১২ নম্বরের ১৫
টাকার এক বাঁকোটে হারাইয়াছে। এনা
টের টোকা দিতে বাঁকি বন্ধ হইয়াছে।

[illegible]

যোঁক সানিক্কাঁতাং সৰোঁ পুৰিগৈ (পে)
 সাহেব কোঁক নিপুত হইলেন তাঁহা
 মৰুণ কোঁকৰ আঁকিৰিহিঁকাঁকিৰুঁ লিখ
 পুত বত সাহেব হইয়াঁহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁ
 অমৃত কৰ্ম সাহেব সাহেব
 অমৃত কোঁকিহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁ
 অমৃত হেঁহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁ
 অমৃত আঁকিহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁ
 অমৃত হইবত্ৰ হইবত্ৰ সাহেব
 অমৃত জল হিঁহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁ
 অমৃত কৰ্ম কোঁকিহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁহিঁ
 অমৃত হইবত্ৰ হইবত্ৰ সাহেব
 অমৃত হইবত্ৰ হইবত্ৰ হিঁহিঁহিঁহিঁহিঁ
 অমৃত হইবত্ৰ হইবত্ৰ হইবত্ৰ সাহেব
 অমৃত হইবত্ৰ হইবত্ৰ হইবত্ৰ সাহেব
 অমৃত হইবত্ৰ হইবত্ৰ হইবত্ৰ সাহেব
 অমৃত হইবত্ৰ হইবত্ৰ হইবত্ৰ সাহেব

অসুখ জন্ম যশিন মাদার
 অসুখ চালাই মাদার
 অসুখ রহিত রহত মন মাদার
 অসুখ আলোকায় রহত মন মাদার
 অসুখ ওয়াম্ অসুখ মা মাদার
 অসুখ হৃদয় কার্যকরিতা মাদার
 অসুখ হৃদয় মাদার
 অসুখের অভ্যাসমাদার এই মন মাদার
 শিত হইল

মন ১০ মাল ১০ সেতম্বর ময়োর
 বাগীচা মত ১১ ১৭ কাল ৩ আফিল
 দ্রোণ বৃহৎক এবং তাহার পর যেহে
 কল লবন বিক্রয় হয় মোঃ কলিকাতা
 একচেতন মত ১৩০০০ তের হাজার
 মন লবন প্রায় ৩ কোলাই বাহাদুর
 ময়োরকার বিক্রয় হইবে তাহার তুলনিক
 লেখা যাইতেছে। প্রিন্ট ১০০০
 আর্থ মন প্রায় ৮৭ মিককা ওয়ল প্রি
 নাইট ১ টোকা বায়লা প্রিয়া সফা প্রকা
 করিতে এবং মোকামের লবন বিক্রয়
 হইবেক সেখান হইতে যন্ত্রিগাণ প্রায়
 ১০ হাজার মন লবন মোকামের তুলনা
 লবন ইন্ডাহার নামা বোর্ড প্রিমিটে
 ও নম্বা আফিল মন্তের লটকা ১০ ল
 ১০০০০ মন লবন বিক্রয় হইবেক তাহার
 নিম্নিত সহস্র সহস্র তুলনা।

সমাচার দর্পণ।

| ক্রমিক | নাম | বাসিন্দা | পরিমাণ | বয়স | বিশেষ |
|--------|----------|----------|--------|------|-------|
| ১ | হিমালী | ১০০০০ | | | |
| ২ | সত্যনন্দ | ১১০০০ | | | |
| ৩ | সত্যনন্দ | ১০০০০ | | | |
| ৪ | সত্যনন্দ | ১০০০০ | | | |
| ৫ | সত্যনন্দ | ১০০০০ | | | |
| ৬ | সত্যনন্দ | ১০০০০ | | | |
| ৭ | সত্যনন্দ | ১০০০০ | | | |
| ৮ | সত্যনন্দ | ১০০০০ | | | |
| ৯ | সত্যনন্দ | ১০০০০ | | | |
| ১০ | সত্যনন্দ | ১০০০০ | | | |

আমাদের কাগজ কিনা হোক টাকার
দিলোয়ের শেষ দিবসের পর হাশিমের
মধ্যে স্থাপন করিতে হইবে যদি স্থাপন
না করে তবে ইন্দ্র নগর টোকাতে পুন
হীর দিলোয় বিক্রয় হইবেক তাহাতে যে
মূল্য হইবে সে সরকারেরও যে মূল্য
বৃত্ত হইবেক ও অন্য হইবেক সে মূল্য
মহিয়ারানের ন্যায্যবোধ। কিন্তু ই
কুম্ভ সাহেবান বোধ পরিষ্কৃত ও নরক
ও আশ্রয়প্রাপ্ত। ইতি সন ১৩০০ ই
১৩০১ ইং আশ্বিন মাসের বাঙ্গলা সন
১৩১৭ সন ১৪ ভাদ্র।

সমাচার দর্পণ।

বাংলা।

গত সপ্তাহে তুমি বিক্রয় করি হই

গ্যারে এবং সারবক মূল্য মূল্য করিতে
লোকেরা যিহের ক্ষেত্র হইতে গড় সপ্তাহ
হে আশ্রয় টোকা হায়ে কেবল দুই নত
গিহিট তুমি বিক্রয় হইয়াছে তাহান
গোলাতে হি মনে চারি আনা মূল্য
নান হইয়াছে এবং যিহআপুর্ন হি মন
বার আনা নান হইয়াছে।
হিন্দাতি জিনিসের যে মূল্য বহি হইয়া
জিন পুস্তক, আখি আমদানী হইয়াছে
তাহা হাম হইয়াছে এবং এত তনেক
রকম জিনিস আছে যে শুভকর। ত্রিশ
টোকা পোহমান দিলেও বিক্রয় হয় না।

ইংলণ্ড দেশের ব্যয়।

ইংলণ্ড দেশের ব্যয় এত যে স্কটিয়া
লোকেরা গৃহস্থ বিখ্যাস্ত কর না। ১৮৭৯
সালে ডি'মুন্ড কোর্ট বহি লক্ষ টোকা ব্যয়
হয়, ও তুমি আশ্রয় হইয়াছে সে ব্যয়
মুই অল্পহারে হইয়াছে।

রাজ্যের কর্তার ক্ষমতা সীমিত
যদি নরক টোকা বেওয়া ব্যয় মহারাজ্যের
পিতৃমাত ও প্রচারের অন্য ও নানা যে
শে ও কালের অন্য প্রয়োগেই লক্ষ টোকা।
যুক্ত আহারের অন্য পিচ কোটি বার
লক্ষ টোকা। ইন্দ্রের অন্য সাত কোটি
কুম্ভ লক্ষ টোকা। তাহাখানার অন্য প্রে-
য়োগেই লক্ষ টোকা বাস্তব্যত এক কোটি
হেই প্রেই লক্ষ টোকা। রাজ্যের সর্বত্র কতি
বার কতিপ দিন কোটি হোয়াশ্রিন লক্ষ টো-
কা এবং তাহাতে হা হাজার লাক নি
মুদ্র আছে। ইংলণ্ড দেশে বহু বস্তু নাই
যে তাহার অন্য প্রেই নাই মাথার ও
পল্ল মাথক কিবা মৃৎের মধ্যে মাথকি
নরকল থাকে কিবা ওর আশ্রিন ও
মহাৎ পৃথিবীতে ও প্রাণের মধ্যে যে বস্তু
আছে সে সকলের ওপর প্রেই আছে।

ইংলণ্ড দেশে স্কটিয়া ও পুষ্ক ও বান
কাহি যত লোক আছে আর যত প্রেই
অম্য হয় ইহা গড়ে বিবেচনা করিলে
তোক লোকের ওপর মূল্য মূল্য ১৮ টোকা
প্রেই হয়। পৃথিবীর মধ্যে এত দেশ
নাই যে এত টোকা আয় ও এত টোকা
ব্যয় ও এত টোকা প্রেই।

গারানাগীর ওপর।

গারানাগীর ওপর প্রেই অধিকাংশ বন
কাঠান ও লোক বসতি বহিবার কারণ
এত কম। প্রেই হাশিম আশ্রিন মাথানে
যার সকল একত্র হইয়া যেই বিষয়
হির বহিয়ার প্রেই তাহার প্রেই আনা যায়
নাই বিশেষ আশ্রিনে জাশান ঘাইবেক।
কিন্তু গড় ইংলণ্ডের যত টোকা ব্যয় হইয়া
ছে ও যত কম হইয়াছে তাহা আনা গি
গ্যারে সে সকল জাশান ঘাইতেক। গড়
১৩ জুনাই পর্যন্ত প্রেই দুই কোশ বন কা
প্রিয়া। পৃথিবীর হইয়াছে তাহাতে ওর
হাজার টোকা ব্যয় হইয়াছে একশে কোশ
গোশ যে সে হান অতিপরিহার প্রেই
সেতমর মান। তাহাতে গড় সেতমর
যে অধিক সাহেবেরা সেখানে জিলে
তাঁহারা প্রায় সকলেই পণ্ডিত হইয়া আ-
শ্রিয়াছেন ইহাতে তাহার প্রেই প্রেই
আলেক ক্ষতি হইয়াছে। পরে ওর
সাহেবেরা ও প্রেই প্রেই অম্য এক
কোশ ও প্রেই প্রেই বন ও কাঠাইতে আর
কতিপরিচিন তাহার ও প্রেই এই প্রেই
বড় সাহেব ও প্রেই প্রেই তাহার প্রেই
বন। এত এক সময়ে গড় হাশিম বন
কাঠান ঘাইতেক এক হাশিম পণ্ডিত বর
মহা আশ্রিন। বসতি করিয়াছে এবং আশ্রিন
আজি আরও সেখানে আইনে এত

সম্পাদিত দর্পণ ।

তেঁা আছে তাঁহাঁর। ভূমির দিবা হুঁত
 করিয়া নইয়া। বন কাটিতেছে।
 এখন সুশী। কলিমেদের আশ্রয়ের
 চতুর্দিকের বন কাটান হইয়াছে তাঁহা
 তে বাঘাদির ভয় নাই লোক স্বল্প
 হাইতে পারে।

अल दिष्यु !

সেখানে চ্যুড়িহেঁ সমুদ্রের তল অতি
শ্য নরুন ও ডাঙার মাথার জল ও নরুন
সে কারণে সাইহবেরা দুই নৌকা মিলে
জল আনা হইয়াছে। পাঁচদিহি বাপার ও জ
দ্বারা হইতেছে। সেখানে যে গুহা, অম
ও জল মালনে জল ওঠে সে জল নরুন
এবং যে জমি শক ও অধিক মালনে জল
ওঠে সে জল ভান।

[illegible]

दया !

ସେମାନଙ୍କ ଉପସ୍ଥିତିରେ ବନ୍ୟାନ୍ତ୍ର ଭାବେ ଓଡ଼ିଆ ମେ.

ମହର୍ଷି ତପସ୍ବିତ ବାହ୍ୟାଃ କାଞ୍ଚିଃ । ହସ୍ତାଃ ବିନିମି-
 ଷତଃ । ବ୍ୟସନଃ ବର୍ତ୍ତା ନାମ ଶ୍ରେଷ୍ଠ ଅପିତ୍ୟା-
 ହାରାତଃ ନିଳଦରୋଃ । ବାହ୍ୟାଃ କାଞ୍ଚିଃ ହସ୍ତାଃ ।
 ଏବଂ ନୀଳଂ ଯେ କାଞ୍ଚିତଃ ବର୍ତ୍ତେ ଆଦେଃ ମେଘ-
 ଶ୍ରେଷ୍ଠଃ ହସ୍ତଃ ନିଳଂ ନୀଳଂ ଶ୍ରେଷ୍ଠଃ । ବାହ୍ୟଃ
 ବର୍ତ୍ତା ଅପିତ୍ୟଃ ଶ୍ରେଷ୍ଠାଃ ପୁଣ୍ୟାଃ କାଞ୍ଚିତ୍ୟାଃ ।
 ଆଗନ୍ତୁଃ ପ୍ରାପ୍ତିଃ ଆଦିଃ । ଏ ଆଗନ୍ତୁଃ ପ୍ରାପ୍ତଃ
 ଅପିତ୍ୟଃ ବାହ୍ୟଃ ବର୍ତ୍ତା ହସ୍ତାଃ । ମନ୍ତ୍ରାତଃ
 ମୁନିଃ ମୁନିଃ ମୁନିଃ ଅପିତ୍ୟଃ ବାହ୍ୟଃ ମନ୍ତ୍ରାତଃ
 ବ୍ୟସନଃ । ମୁନିଃ ପ୍ରାପ୍ତିଃ ମନ୍ତ୍ରାତଃ । ମନ୍ତ୍ରାତଃ
 ବ୍ୟସନଃ ହସ୍ତାଃ । ଏବଂ ବ୍ୟସନଃ ହସ୍ତାଃ ।
 ଏବଂ ବ୍ୟସନଃ ହସ୍ତାଃ ।

যো- কলিকতায়া হুজুতগীলান খিরম
 দুলালদুখামির এক পুত্র ভদ্রপুত্র আছিল
 গাউ নজীরের দ্বারা এক গ্রামস্থ ভাণ্ডারকে
 দ্বিগুণ্য রায়গিরিয়ায় (সে ভাণ্ডার নীচের
 ইষ্টায়া মিষ্টাতি কলিয়া কলিন যে ভাণ্ডারকে
 আছিল যেও-বহন মুগিয়া (ইহ তাহার
 সখীয়া) হন কথ্য হুজুতগী তাহারে বহন
 হইতে মুক্ত করিয়া আদ্যাবদি ছিল। পরে
 আদ্যবি করিয়া দ্বিগুণ্য ইষ্টায়া সখ্যে করিয়া
 গিয়া নেক। তাহার কলিমাও যমিন গভ
 কলি কলিয়া নজীর মুগিয়া (ইষ্টায়া) আছিল
 বাসক নজীর। সেই গুরুত্বপূর্ণ কলিন আ
 ছিল একই প্রকারে উগিয়া আছিল যাহাকে
 যিহা নজীর নিরুপস্থল লমসে তন মজুত
 ছিল তাহা নজীর। যে স্বামী মজুত আছিল
 নজীর। আদ্যাবদি করিয়া। এমত আদ্যবি
 করিন যে নিরুপস্থল করিয়া মুগিয়া ইষ্টায়া
 পরে। পরে দ্বিগুণ্য লমসে মুগিয়া ভাণ্ডার
 মোহম্মদারত করিয়া আছিল বাসকের
 মুগ ইষ্টায়া মুগ করিয়া স্বামির আদ্যবি
 মানে আদ্যবি ছিল। এক স্বামী করিয়া (সে স্ব
 রিকমের) মুগ করিয়া স্বামির দ্বিগুণ্য

অন্য প্রতিদ্বন্দী লোক নিকটে আইন দি
কু ভরী ডাওয়া নিকটে (ক) পাঠিয়ে না
দিন না। পরে পুলিশের লোক আসিয়া
এক মাড়ো ডাহাকে বেরিয় প্রহা
পুলিশের লোকেরা এ অন্য (লোকেরা)
আসিয়া মিচির মধ্যে গিয়া দেখিয় যে
এখনই যুগের মুখ্য ইহাঘাত। ডাওয়া
মকল জীবন (ম) মন ডাওয়া। এখন
আইনকে বরখাস্ত রাখিয়াই ইহাও পর দি
হা কিছু জানা যায় নাই।

লৌকাডুবি।

জেলা রাজস্বের টক্সের সাক্ষ্যের
 শ্রী গৌরবের লেখণী ও শ্রী মায়াক্ষ্য সা
 হ। এই দুই জন ভাগে কলিকাতাইতে
 ৭০ আটহুত্তর মান লবণ খরিদ করিয়া
 ঐ চটময়রের মাধ্যমেই গোণী নৌকায় বে
 ছাই করিয়া ১৮ আণ্ডা তালিয়া ৪৩না
 পুরাইয়াছিল। সেই তারিখ্য বেলা দুই
 পুরুষের লক্ষণে সময়ে শূরায় পুরুষ লো
 কে সেই নৌকা তুলি পুরাইয়া লোক
 হারি জন ছিল তাহার এক জন হলো হা
 শিষ ও দুই জন দুইটা নৌকার চৌত
 অসমদান করিয়া পুনর তুলিল ময়গা
 রাই জাদিভজিল এই দুই নৌকা তাহার
 দিগন্ত দেখিয়া শূরায় পুরুষ মাংসহে
 নৌকা পাঠাইয়া সেই জিন অনেক আনাই
 য়া খাওয়াই ছিলেন এবং ঐ জিন অনেক
 হারিয়াছিল। তাহার দিগন্তে বিদ্যায়
 করিয়া দিলেন পরে তাঁর এক জনকে
 দেখা গেল যেন ময়গা রাই দিগন্তে।

ଅଞ୍ଜିମାହି ।

মোকাম জরায়পুরে এক কনুর বাটীতে
গড় তৈর্য মানসে এই দিহান এক ঘরে আর

সম্পাদক দপ্তর।

জাহাজে অতি সুখিয়া গঠিল পরে পৌক অ
 দিয়া অত্যাশ্রমে নির্বাণ করিল। পর
 পৌক শ্রুতবাহনে এই পথে পুনরায় অতি
 সুখিয়া গঠিলে তাইও নির্বাণ করিল এই
 পথে গায় যিলের মাঝে দুই দিনবার সুখি
 য়ে লাগিয়া সেই মাঝে লাগত হইয়া
 সেই বৈজ্ঞান্যে মাঝে হইল। গত
 নতুনই এক এক পথে গায় বৈজ্ঞান্য
 অতি লাগিয়া দুই দিন দিয়া সুখিয়া হই
 য়াছে। সেই বাটার লিখিত এক লিখিত
 করে বাটার এক মরে দুইবার গায়
 তে অতি লাগিতে আরম্ভ হইয়াছে অত
 যান হই এই গঠিত এই গঠিত
 এই গঠিত অত্যাশ্রমে নির্বাণ করিল।
 এই লিখিত লিখিত নির্বাণ না।

ईन्द्रयज्ञः ।

আমাদের দেশে দুই জন সাহাব ২৩
 হাট তালিমে পরস্পর শিকল মতোই করিল
 ভাষাতে এই জনের দক্ষিণ পাখি ভাঙি
 লাগিয়া পাশ্চাত্য গিয়াছিল খান
 যারিন চাহাতে সে তৎক্ষণাৎ মরিল।
 অন্যেরও এই পাখি ভাঙি লাগিয়াছিল
 কিন্তু সে মরিল না।

এই যুদ্ধে কি করণ হইল তাহার বিবরণ নিম্নোক্ত আনা যায় নহি। কিন্তু অপর ইয়োগে যে ৩ অবস্থায় যুদ্ধে কোন দেশের ভ্রমণ করিয়া আসিয়া থাকেন তাহা কিরিতকি গিয়া আসন পুনরায় যুদ্ধে যিনি তাহাতে অহেতর নিজে তাহার বিদ্যে যে এমন পুনরায় ইয়োগে যে (১) যুদ্ধে সময়ে তাঁহা পুনরায় তাহার আসিয়াছিল। ইহাতে অবশ্য তাহার পুত্র শিকার অনুভব।

করিলে সে এই মৃত কাকিরে আত্মন বিপ্লব
ক' আন করিয়া মনে দিল্লয় করিল ও
অভিশয় কোঁরাবিত হইয়া এই দিল্লয়
নতাই করিল ।

ବସୁନ୍ତର ବ୍ୟାଂସୀ ।

স্বপ্নের পটভূমি অগ্নি এবং

दशम पुत्रीका विपद ह्यस्य

ଆୟାତ୍ମକତାପରି ଏହା ଯେ କାହିଁକି ଗଢ଼ିବ
ତାହା ଏହାର ମହାପୁରୁଷ ଏବଂ ମହାନ
ମହାନାରୀ ହେବେ । ଏହି ନିୟମ ବୁଝାମୁଝି
ବଞ୍ଚି ଯେମିତି ଉପସନ୍ନ ହୋଇ ନାହିଁ ସାହେବ
ନାହିଁ ତେବେ ତାହା ଏକ ଖୁବ୍ ବଡ଼ କାଳ
ରେ ଯାଏ ତ ମନେନାହିଁ ହୋଇ ଖାଲି ତୁ
ହେବା ଯେଉଁ କରୁଛୁ ତାହା ଏହା ନାହିଁ ।
ଏକ କୁଳୀ ଏକ ବାଟ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ଏକ
ଲିଖନୀୟ ହେବା ପ୍ରକାରର ଏହାର ଗଢ଼ିବା
ସୂଚକର ମୁଖ୍ୟ ଗୁଣା ନିମ୍ନର ବାଟ ଗଢ଼ିବା
ହେବ । ତାହା ଆମିନୀ ତାହା ମଧ୍ୟ ଗୁଣ-
ଗୁଣା ହୋଇଥିବେ ନାହିଁ ଏବଂ ତାହାର ଗଢ଼ିବା
କରିବ ଏବଂ ତାହା ଗୁଣା ଗୁଣା ଗୁଣା ଗୁଣା
କରିବ, ଯେ କେବଳ ଗୁଣା ଗୁଣା ଗୁଣା ଗୁଣା
ଏବଂ ତାହାର ଗଢ଼ିବା ଗଢ଼ିବା ଗୁଣା ଗୁଣା
ହେବେ । ଏହା ଏକ ବଡ଼ ବଡ଼ ଗୁଣା ଗୁଣା

अथा उक्तं ब्रह्महोत्रं नमिष्यते

हिनम-ये हे बरखो। डानुलू लामाङ्गका
ला-दि कडिं मेने के काम। हिनम, ये
हेयमाङ्ग काय्या। इ नुकर लेककर महिर्त
हाम कर घाहाता। कोनपेर मयम वसुर
किावे जावैले योनिया गनावन देरे ।

हेतुना संशयः प्रहे ।

ମଜ୍ଞା ବସୁ-ତା ହସ୍ତେନେ ବିଜୁ ନୟା ହିନ୍ଦୁ

মতঃ বহুঃ কেবল বিপরীতঃ আনিঃ যায় ।

राजात्रि त्रि।

| ক্রমিক | নাম | স্বত্ব | মোট |
|--------|---------|--------|-----|
| ১ | বালু | ৩০ | ৩০ |
| ২ | কেন্দ্র | ১০ | ১০ |
| ৩ | গার | ১০ | ১০ |
| ৪ | নামিক | ১০ | ১০ |
| ৫ | কুলা | ১০ | ১০ |
| ৬ | কলা | ১০ | ১০ |
| ৭ | পাট | ১০ | ১০ |
| ৮ | পাট | ১০ | ১০ |
| ৯ | পাট | ১০ | ১০ |
| ১০ | পাট | ১০ | ১০ |
| ১১ | পাট | ১০ | ১০ |
| ১২ | পাট | ১০ | ১০ |
| ১৩ | পাট | ১০ | ১০ |
| ১৪ | পাট | ১০ | ১০ |
| ১৫ | পাট | ১০ | ১০ |
| ১৬ | পাট | ১০ | ১০ |
| ১৭ | পাট | ১০ | ১০ |
| ১৮ | পাট | ১০ | ১০ |
| ১৯ | পাট | ১০ | ১০ |
| ২০ | পাট | ১০ | ১০ |
| ২১ | পাট | ১০ | ১০ |
| ২২ | পাট | ১০ | ১০ |
| ২৩ | পাট | ১০ | ১০ |
| ২৪ | পাট | ১০ | ১০ |
| ২৫ | পাট | ১০ | ১০ |
| ২৬ | পাট | ১০ | ১০ |
| ২৭ | পাট | ১০ | ১০ |
| ২৮ | পাট | ১০ | ১০ |
| ২৯ | পাট | ১০ | ১০ |
| ৩০ | পাট | ১০ | ১০ |

[illegible]

সমাচার দর্শন।

সাক্ষাতে করিল যে এইখানে এক মৃত ঘোড়া দেখিয়া আইনাম ডাঃর উদ্দেশ্যের মধ্যে ভুত আছে। ক্রিষ্ণ-কাল পরে ঐ বর ঘোড়ার নিকটে আসিয়া দেখিল যে শ্রী নাই ও ঘোড়া মৃত। তাহাতে সে ইতস্তত ভাবিতেছে এই সময় ঐ ঘোড়ার ওমরের মধ্যে স্বীর শব্দ পাইল পরে ঘোড়ার ওমরের সেনাই মুলিয়া স্বীকে বাহির করিয়া নিকটস্থ এক ঘরে লইয়া গেল ও তাহার ক্রিষ্ণ-সার ওমরাণী করিতে লাগিল। বাহারা এই নতুন দুঃস্বপ্ন করিল পুলিশ ওমরাণী করিয়া তাহারদিকে বহিয়া আসিয়া ঐ স্বীর সহিত আদালতে একত্র নীত করাইল। তখন সে স্বী ঐ লোকের দিগের দুঃস্বপ্ন মকলকে আলাইয়া নীত হিন অন্তরে মরিল।

মূল।

মোঃ কলিকাতার বর্ডলার রাস্তার বার এক বাড়ীতে এক বিবি থাকিত। তাহার চাকরানী কাম্বু কিনিবার কারণে কতক দূরে বাজারে গিয়াছিল এই অবকাশে চোর আসিয়া তাহার গলা কাটিয়া ফাৎ বন্দুকাধি লইয়া গেল। অনুমান হয় যে মূল করিবার সময় তাহার মুখ বন্ধ করিয়াছিল যেহেতু তাহার নিকট বর্তি লোকেরা এ বিষয় কোন শব্দ শুনিত পায় নাই যদি মুখ বন্ধ না করিত তবে অবশ্য পুতিবাসি লোকেরা জানিতে পারিত। এই কর্মের দুই চারি ঘণ্টা পূর্বে সে অন্য বাড়ীতে গিয়া আরও লোকের ঘরে সহিত কয়েকজন করিয়া আসি য়াছে সমস্ত শ্রুনা গেল। ক্রিষ্ণ-কাল পরে তাহার চাকরানী বাড়ীতে আসিয়া দেখিল যে ঐ স্বীলোক মূল হইয়াছে ও ঘরের দুবাধি সকল লইয়া গিয়াছে।

পরে সে খানাত্তে সমাচার দিলে খানাহার আসিয়া অনেক তদারক করিল কিন্তু কিছু প্রকাশ করিতে পারিল না।

ক্রীমি।

পূর্বে সমাচার যেয়া গিয়াছে যে ইংল্যান্ড রাজদ্বারী এক জন বরা পতি য়াছে তাহাযুত সম্প্রতি সেখানেইহাতে সমাচার আসিয়াছে যে গত যে মাসে তাহারঘের পুতান ব্যক্তির ক্রীমি স্বকুম হইয়াছে।

মূল।

গত সপ্তাহের মধ্যে মোঃ বাঁসাই নওগাঁর শ্রী ভারতীয়া হালদার মহোদয় স্বকুম বৈদ্যবাণী বরকলাজের সহিত রাস্তাকালে চৌকি অধিতে গিয়াছিল। পরে রাস্তাবন্দান খানাত্তে গিয়া বিদায় হইয়া এক জন পাইক সঙ্গে করিয়া আপন বাড়ীতে আইল। তাহারপর দুই দিন পর্যাঙ্ক সে পাইকের অনুসন্ধান কেহ কিছু পাইল না। দুই দিবসের পর সেই পাইকের মৃত শরীর এক বাগানের মধ্যে পড়িয়া আছে দেখিয়া লোকেরা পূকাশ করিল। এখান তাহার নানা পুকার অনুসন্ধান হইতেছে কিন্তু কিছু পুকার মূল হইয়াছে তাহার নিকট কিছু আনা যায় নাই।

বক্তব্যাত।

গত বৃহস্পতিবারে আট ঘণ্টা প্রাঙ্গির সময়ে যে কত ও বৃষ্টি হইয়াছিল তাহাতে কলিকাতা মোকামে শুষ্ক লাভ বিস্ময় সাহেবের ঘোড়ালি ঘরের দ্রাউতর ওপর বক্তব্যাত হইয়াছিল। সে সময় সা

হেব লোকেরা ঐ ঘরে খানা খাইতেছি সেনে তাঁহার আন করিলেন যে লাগিয়া কুতীরী মধ্যে কেহ তোন ঢাকিল। ক্রিষ্ণ-কাল পরে তাঁহার বুম দেখিলেন ও গাঙ্গকের গাঙ্গ পাইলেন পরে জানিলেন যে বক্তব্যাত হইয়াছে। সেখানে অনেক লোক জন ছিল কিন্তু তাহারও কিছু ক্ষতি হয় নাই। কেবল ঘরের পশ্চিম দিগের ভিত দ্রাউতর ও চুনকাম ওয়া গিয়াছে।

ইংল্যান্ড মৃত বাদশাহের শৌক চিহ্ন।

শ্রুনা গেল যে ইংল্যান্ড বাদশাহের মরনের শৌক চিহ্ন করিল কলিকাতার যে সকল গির্জা ঘরে কাল বন্ধ মুক্ত গিয়াছিল সে সকল বন্ধ আগামী সময় বীরে খোলা যাইবেক।

আহায ঘণ্টা।

মোঃ কলিকাতাইহাতে এক আহায চীন দেশে ঘাইতেছিল মোঃ গরাসাণিরের নিকট নীতছিল ঐ আহাযের মধ্যে ক্রিষ্ণে অগ্নি লাগিয়া স্বতক জিলম ঘণ্টা হইলে পর আহাযের কাষ্ঠান পুড়তি সকলে জানিতে পারিয়া অতিশয় গিয়া নির্দাণ করিল পরে সে আহায আপন গাঙবদানে গমন করিল।

বিবাহনমুহুত ভর।

ইংল্যান্ড এক সাহেব এক স্বীর সহিত বিবাহ করণেরদ্বিতে পুতি করিয়া সিংহন পতন করিয়াছিল। কিছু দিন পরে সে কাকি বিবাহ করিতে আসমাত হইল তাহাতে ঐ স্বী তাহার নামে লাগিল করিয়া সেই মাতেকের পীঠ হাজার চার শত টাকা অধিমালি করিয়াছে।

সমীচারণপত্র।

ময়ন।

সংপূতি বহুি হল সাহেব নহর কলি
কাটা হইতে ইংগুতে ঘাইতেছিলেন
যো- কেশেতে বীক্ষিয়া তাহার অত্যন্ত
নীতা হইল তাহাতে যে দিবস তিনি
আহাজহইতে নামিলেন তাহার দুই দি
বসের পরে সেখানে তাহার পুনর্ভাণ্ডা
হইল। এই সাহেব পূর্বে কলিকাতার
ডাকঘরের অধীক্ষ ছিলেন।

বলা।

চীল দেশে এ বৎসর অভিশম্ভ বলা হই
য়াছে তাহাতে এত লোক মরিয়াছে যে
সে পঞ্চাশ হাজারের নুল লহে ও এক
লক্ষের অধিক নহে।

যো- কলিকাতার দক্ষিণ খানামোগীর
হাফ ভানিয়া অত্যন্ত জলপানন হইয়া
ডলিকটম্ পমা পুজি অনেক দুখ ক্ষতি
হইয়াছে।

এবং জেলা রাজসহীর মধ্যে পদ্মানদীর
ওপর পাঁচ অত্যন্ত ভানিল হইয়া অনেক
জুয়ি নান হইয়াছে ইহাতে তৎপ্রব লো
কেরা অভিশম্ভ জরিৎ হইয়াছে। এবং
জেলা নাটোরের ততুদিগে বলায় জল
আপসুতি হইয়া কোলাসির কুটির লিকট
পড়ি গিয়াছে।

আহাজ তুবি।

যাৰা ওপদীপহইতে সমাচার আনি
য়াছে যে সেখানে এক আহাজ মার
পড়িয়াছে তাহাতে দুই লক্ষ চত্বিশ হা
আর টাকা অপর্য হইয়াছে।

বলুন।

আমেরিকা দেশে গত ১৮ মার্চ তারিখে

পুণ্ডিত শিলোবেদ সাহেব বার হাত বেত
এক বলুন ও চত্বিশ হাত বেত এক বলুন
এই দুই বলুন ও তাহাতে ওঘোণা করিল
এই সময়েরে অভিশম্ভ জলতা হইল।
পরে পাঁচ ঘণ্টা বেলার সময়ে ঐ বারহাত
বলুন যখন কতকদূর ওঠিল ওখন বা
লকেরা ইচ্ছাকৃতি জেলিয়া মারিতে লাগিল
তাহাতে ইচ্ছাকৃতি বলনের মধ্যে পুৰেণ করি
ল ও সে বলুন নীচে পড়িয়া গেল। পরে
বালকেরা যে তাহা জিজিয়া জেলিল ইহা
তে সাহেব অভিশম্ভ দুখী হইল যেহেতুক
এই ব্যবসায় ভিন্ন তাহার অন্য কোন ও
পায় নাই। পরে চত্বিশ হাত বেত যে বলুন
তাহা ওঠিবার ওঘোণা করিতেছিল তৎ
কালে অভিশম্ভ বায়ু জলিয়া তাহার
জিজিয়া জেলিল ইহাতে ঐ সাহেব আর
ও অভিশম্ভ দুখী হইল। অপর আর
সাহেবেরদিগের সহিত পরামর্শ করিয়া
বার হাত দুই বলুন ও চত্বিশ হাত এক
বলুন পুস্তত করিতেছে ইহাতে তাহার ম
রিয়া যে হইবে এমত ভরসা হইতেছে।

অশম্ভুতা।

ইংগুত দেশে ময়রা পুস্তত করিবার
কারণ এক কল আছে সেই কলে যে স
কল লোকেরা কল করে তাহার শেত
বস্ত পড়িবার করে কখন কাল বস্ত পরি
বান করে না। ঐ কলের কর্মকারী এক
ব্যক্তি পুতি দিন নয় ঘণ্টা রাত্রির সময়ে
আপন বাসায় ঘাইত। ইহাতে আর
এক লোক দুই তিন দিন রাত্রিকালে তা
হাকে এই পুকার পথে ঘাইতে দেখিয়া আ
পন মনে লিঙ্ক করিল যে এ কখন মনুয়া
নহে অবশ্য ভুত হইবেক এই কল দ্বির
করিয়া অন্য এক জন সাহসীকে কল
যে আমি পুতিদিন নয় ঘণ্টা রাত্রির সময়

এক ভুতকে এই পথে ঘাইতে দেখি ইহা
কলিঙ্গ সে কলিল যে সে কেমন ভুত
আমি তাহাকে দেখিব। পরদিন ঐ
সাহসি ব্যক্তি আপন বন্ধুকে কলি পুরিয়া
সেই পথে বনিয়া থাকিল। এবং যখন
ঐ ব্যক্তি কলঘরহইতে আপন বাসায়
ঘাইতেছিল ওখন সে তাহাকে ভুত জল
করিয়া অকস্মাৎ কলি মারিল তাহাতে
সে তৎক্ষণাৎ মরিল। এমত ভুত
লোক পুণ্য দেখা যায় না।

চোরের বিপদ।

শহর জীরামপুরের প্রথম ঘাটের ওপর
এক কাছের গোলাতে এক জন গোল
মার থাকে গত পনিবার ১৯ তারি
খে ঐ গোলামার আপন ঘরে চাউ দিয়া
অন্য এক ঘরে শয়ন করিয়াছিল। সেই
দিবস রাত্রিকালে চোর আদিরা ঐ ঘরে
চাউ ভানিয়া সোনা ও কণা ও বামন ও
নগদ্য টাকা ও কাপড় পুজি অনেক
জিনিস লইল এবং একটা পেটেরা জিন
তাহার মধ্যহইতে দুবাখি মকল বাহির
করিয়া লইয়া পেটেরা বাহিরে জেলিয়া
রাখিয়া গিয়াছিল। পরদিবস রাত্রিবার
খানিতে খবর হইলে খানদার আমিয়া
ঐ পেটেরা খোলা পাইল তাহার লিকট
লোকেরদিগের পুতি সন্দেহ করিয়া তা
হারদের ঘর অনুসন্ধান করিতে আরম্ভ
করিল তাহাতে এক জনের ঘরে সেই
মকল জিনিসের কড়ক পড়িয়া গেল
পরে তাহাকে অনেক পুকার ভয় দেখাই
লে সে কবুল করিল। এখন সে কবুল
হইয়াছে।

আরব ময়ুরে যোনা।

যোনাধর মুনসমান অধীক্ষ কোলাসির
কুঠি দপ্তর করিয়াছে ও অনেক তাহাজ

সমাচার বর্ণন।

সম্মত করিয়াছেন এবং অনেক লোকের মন
কল্পিত হইয়াছে যেমতের শ্রীযুতের মত
নাহেব কলিকাতার শ্রীযুতের আভা
স্বপ্নের মত এই অকৃত্রিম দিল্লীতে যে তা
কল্পিতের সহিত যুক্ত হইবেক। এই
কল্পে সেখানে কোন আভাষ ঘাইবে না
এই ইংরেজের বন্দনাহের যে যুক্ত
আভাষ এই দেশে আছে তাহার অর্থাৎ
কতক যুক্ত আভাষ সেখানে পাঠাইয়া
ছেন।

বোম্বাই।

বোম্বাই হইতে সমাচার আনিয়াছে যে
এই সময়ের বিরর জিলাতে সকল প্রকার
শস্য ওষ্মকলপে অগ্নিতে প্রমত্ত হইয়া যাই
তেছে যেহেতুক সেখানে অতিসূক্ষ্মর আ
ভাষ হইয়াছে।

বোম্বাইতে রক্তাও নামে এক জন
দ্বন্দ্ব লোক আপন স্বীকৃত মন করিয়াছিল
জাহাংতে অমানত হইয়া তাহার জামি
হইয়াছে।

বালিক্তা।

ভুজার রাজ্যের এখন অতি নরমণ্ড
সম্রাটের মতো পুষ্ট কিন্তু বিকস হয়
সাই এবং মীরজাপুরে ও ভূবানগোলা
তে ভুজার মুখ্য সম্মান হইতেছে ই
হাতে ভরসা হয় যে ইহার পর ভুজা
অতি সুখী হইবে।

বালুর মুখ্য সম্রাটের আন্তে যেহেতুক
তাহার পর যিনি ইচ্ছন অধিক হয়
নাই। মোরার মুখ্য নান হইতেছে।

ইতিহাস।

ভুজারীর পথের মধ্যে এক পুষ্ক বহু
খানেক তাহাতে ইংস আর কক বাস
করে। গিয়া কালেতে এক দিন কোন
পথিক গৃহিত হইয়া তরুণেতে বিনু ও পর
রাখিয়া নিদ্রা গেল তাহাতে কিছুকাল
পর তাহার মুখ হইতে বহুস্রা গেল।
তখনকার সূর্য্য কিরণ বাস্ত তাহার মুখ
যেখিয়া এই কথকিতে ইংস প্রয়াতক প
ক্ষয় বিস্তার করিয়া পুনরার তাহার মুখে
তে জ্বালা করিল। তাহার পর সে অতি
শয় নিদ্রা গেল ও সুখেতে মৃত্যুবানক
হিল। তখনকার স্বতঃ পুজনতারতুক পর
সম্রাটসহস্রাণী এক সেই মুখেতে বিদ্যা
ভাগি করিয়া পলাইল। তখনকার যখন
এ পথিক গৃহিত ও প্রয়াত অবলোকন করিল
তখন তৎকর্তৃক সে ইংস নিদ্রাহীত হ
ইয়া বান করণক বিদ্য হইয়া বিনাশিত হ
ইল।

এক দিবস ভাংকর গিকের যাত্রা নান
রীতে সকল পথিক সমুদ্রতীরে গিয়া
তখনকার কাকের সন্দেশে কর্তৃক চলিল
তাহার পর যাইতেছিল যে গৌর তাহার
ভাঙ্গাইতে পুষ্ক সেই কাক দক্ষিণ হইতে
পাঠিল। তখনকার যখন এ গৌরান দ
কিভাঙ্গ হইতে বহুস্রা বহুতে নিদ্রা
স্থল করিল তখন তাহার কাক ও
কর্তৃক অধুনাগিত হইল। তখনকার তা
কর্তৃক বহুস্রা হইয়া কাক পলাইল
বর্তক স্বাভাবিক নিরপরাধ মুক্তগতি তাহা
কর্তৃক পুষ্ক হইয়া ভাগাধিক হইল। এই
কথিতে আমি বলি বহু লোকের সহিত
থাকিলে না ইতিহাস।

বাক্যর ক্রম।

| বিবিন | বোন | অর্থ | পরিচ |
|---------------|-----|------|------|
| বুগারি | ১ | ৩০ | ৩০ |
| ভেরেগা ইল | ১ | ১১ | ১০ |
| গাহ মরিচ | ১ | ০ | ৪০ |
| মারিকেল তৈল | ১ | ১৪০ | ১৪ |
| ভুজা কাকের | ১ | ০ | ০ |
| বান্য বহুস্রা | ১ | ১০ | ১৪ |
| পাটনাই বান্য | ১ | ২ | ১৪ |
| চাম্পাটনাই | ১ | ১৫০ | ০ |
| পাছরি উত্তর | ১ | ১১ | ১৪ |
| গেহরি মরম | ১ | ২৪ | ১৪ |
| মুচি উত্তর | ১ | ১৫০ | ১৫০ |
| মুচি মরম | ১ | ১৫০ | ০ |
| বান্য | ১ | ১৫০ | ১৫০ |
| মুচি মরম | ১ | ১১ | ১৪ |
| পাটনাই মুচি | ১ | ১৫০ | ১৪ |
| মরম কাক | ১ | ১১০ | ১৪ |
| উত্তরমারা হু | ১ | ১১ | ১১ |
| মরম হু | ১ | ১৫ | ১৫ |
| ভেজা হু | ১ | ১১ | ১৫ |
| মরম ভেজা | ১ | ০ | ০ |
| গোমবাতি | ১ | ৫১ | ৫১ |
| গিহরি উত্তর | ১ | ১৫ | ০ |
| গিহরি মরম | ১ | ১১০ | ১১ |
| মোরা উত্তর | ১ | ৫১ | ৫১ |
| মরম | ১ | ১১ | ৫১ |
| চিনি কাক | ১ | ১১০ | ১১ |
| মরম | ১ | ১১ | ১১ |
| মরম কাক | ১ | ৫১ | ৫১ |
| ভেজা | ১ | ৫১ | ৫১ |
| ভেজা | ১ | ৫১ | ৫১ |
| ভেজা | ১ | ৫১ | ৫১ |

এই সমাচার বর্ণন পুরাণের স্থাপনাতে পুস্তিকাতে পঠিত হইয়াছে। বাক্যর সন্দেশে বাক্যর বহু ভিদি পুস্তিকাতে স্থাপনাতে
আপন নাম পাঠাইলে পঠিত হইবে। বাক্যর তাহার বিকট পাঠন যাহাযে তাহার মুখ্য অর্থ এক টাকারি বাক্য করিয়াছেন যদি তাহার বিকট
কল্প বা পুষ্ক তদে তিনি পুস্তিকাতে স্থাপনাতে বাক্যর বিবরণ তাহার বিকট পাঠন হইবে।

গণ্ড সোমবারের অশ্রুত নবাব দিলাবর
 অরফাখান ও তাঁহার পুত্র আলেক সু-
 লতান। করিয়া অশ্রুত বক সন্ন্যাসে
 মহিউল মাকান। কঁরিতে গিয়াছিল যখন
 তাঁহারিহীন সমুদ্রায় অশ্রুতের ঘরের
 নিকট বসিছিল তখন অশ্রুতের ডাকান
 সারে নেবাবান লোকেরা সমুদ্রায় আনি-
 যা বাহাদি করিল ও দুই শাওর শৌলিখ
 হইয়া দাঁড়াইল। ও অশ্রুত অজ সুখল
 সাহেব ও অনা আলেক সাহেব তাঁহার
 সমুদ্র না পুর্ক অশ্রুতের মহিউল মাকান
 করাইলেন। পরে অশ্রুত কাশনি উঠিয়া
 নবাব বাহাদুরের ঘর দুই জনের হই
 হস্ত দীর্ঘ করিয়া উপযুক্ত হানে বসাই

সমাচার দর্পণ।

লেন এবং পরন্তর শিখারচরণ সম্বন্ধে
করিয়া ওড়ায় বসিলেন। পরে ঐযুগত
বাব বাহাদুর করিলেন যে-কামি আঁঠা
ইশ বৎসরপর্যন্ত এই চিতপুর মোল্লার
আছি এখন মুরশেদাবাদে ঘাইতে ইচ্ছা
করি ইহা জিনিয়া ঐযুগত তুচ্ছ হইয়া মুর
শেদাবাদে ঘাইতে অনুমতি দিলেন ও
লৌকিকতা অতিমুন্দর খোলাত ও পাণি ও
লালা অলকৌরদি ও বহুলতা চান ও
ডালমির ও এক হস্তী দিরা পরিভূক্ত ক
রিয়া বিদায় করিলেন এবং বিদায় সময়ে
হস্তে পান ও পুষ্ক ভবক ও আঁতর দিলেন।
এবং ঐযুগত কান্তান হেডরমন সাহেব ঐ
যুগত লবাব বাহাদুরের সঙ্গে সঙ্গীতপর্বত
আসিয়া সঙ্গীতরিতে প্রাইয়া দিলেন। এ
খন ওলা ঘাইতেছে যে ঐযুগত লবাব বাহা
দুর দুই তিন দিনের মধ্যে মুরশেদাবাদে
যাত্রা করিবেন।

ইংলণ্ড।

ইংলণ্ড দেশে এক বালক এক মেলাতে
এক গির বিষয় করিয়া টাকা লইয়া আ
লন গরে ঘাইতেছিল পথে এক জন ঘোড়া
সওয়ার তাঁকাইত আসিয়া টাকা চাহিল
তাঁহাতে বালক ভীত হইয়া ঘোড় দিল পরে
তাঁকাইতও ঘোড়া চাহিয়া দিয়া শীঘ্র তা
হাকে গেল। পরে বালক টাকা লইয়া
চতুর্দিকে ভ্রমাইয়া দিল তাঁকাইত ঘোড়া
হইতে নামিয়া এ টাকা কুড়াইতে লাগিল।
এই সময় বালক তাহার ঘোড়ায় ওঠিয়া
ঘোড়া সমেত পলাইয়া আসিল ঘরে গেল
ঘোড়ার জিনের মধ্যে লগ্ন ৪৮ টাকা
ও এক শিশুর জিন তাহা সময়ে ঘোড়া
পাইল।

মহাসভা।

১৭ এপ্রিল তারিখে ইংলণ্ডের লুডন

মহারাজা চতুর্থ জর্জ মহাসভাতে গিয়া
সকল কৃশীনের দিগের সহিত পুখা মা
ফ্রান্স করিয়াছেন সেখানে থাকেন পুখী
তাহার এক মোল্লারের অন্য লোক
সমভিরাহার করিয়া অনেক মশাল
জ্বালাইয়া মহাসভা ঘরের দিগের সকল
কুঠুরি অহলোকন করিয়াছিলেন। তাহার
কারণ এই যে দুই শত পোনের বৎসর
হইল তাঁহা মজুর নামে এক মুক্ত লোক ইং
লণ্ডীয় মহাসভা ও মহারাজার সর্বস্ব
এককালে লণ করিবার কারণ জিজ্ঞা
সিনা বাকব ই মহাসভা ঘরের দিগের
কুঠুরীতে একত্র করিয়া রাখিয়াছিল এই
টা মজুর কুঠুরীর মধ্যে বাকবের লণ রাখি
য়া রাখিবার সকল চাকিয়া কুঠুরির দিগ
দখিয়া রাখিয়াছিল। এই পরামর্শে যে
বেত শত লোক ছিল তাহার মধ্যে কেহ
আলোচনা ও জিজ্ঞাসা জিন ইত্যাদি সকল
রাজস্বসিনে বিরক্ত জিন। তাহার বেত
বৎসরপর্যন্ত যে এই প্রকারে করিয়াছিল
ইহার মধ্যে কেহ কিছু বুঝিতে পারে নাই
পরে যে দিবস সকলে মহাসভাতে একত্র
হইবেন সেই দিবস বাকবে আশি দিবে
এই লিখিয়া রাখিয়াছিল কিন্তু তাহার পুত্র
দিয়েস ই পরামর্শকারী বেত শত লোকের
মধ্যে এক লোকের আশ্রয় মহাসভার
কুঠুরীর মধ্যে এক জন ছিলেন তাহাতে
সে তাহারে বাকব করিবার কারণ অতি
সম্প্রদান এক শত্রু তাহার নিকটে পাঠাইল
সে শত্রু কেঁ দিছিল তাহার দিগ হইল না
যেহেতুক তাহার মধ্যে রাখিবার লম্ব
ছিল না শত্রুর মধ্যে কেবল ঐলিখিত
ছিল যে এই রাজ্য লম্ব করিবার কারণ
জিজ্ঞাস ও মনুষ্য ওড়ায় প্রবেশ করিয়াছে
অতএব তাহার কোন অন্তর্য লোক
তাঁহারকে জানাইল যে তুমি কল্যাণ মহা
সভাতে বহুত ঘাইবা না এবং এই শত্রু

পাঠ করিয়া চিত্রিয়া লিখি তাহে সকল
আশঙ্ক দূর হইবেক। জিন সেই শত্রু
লইয়া মহারাজার নিকটে দিলে তিনি
শত্রু পাঠ করিয়া বিবেচনা করিয়া কহিলেন
যে মহাসভা ঘরের দিগে কোন বিন্দ
সম্ভাবনা থাকিবে। এই দিগ করিয়া মহা
সভা ঘরের দিগের কুঠুরীতে ঘাইয়া দেখি
লেন যে এই ঐলিখিত এক মশাল হাতে করি
য়া সেই স্থানে বসিয়া আছে। পুত্র
কালে মহাসভাতে সকা পৌর একত্র
হইলে এখন বাকবে আশি দিবার প্রয়ো
গী ছিল তখন তাহাকে ইচ্ছিয়া জৈমি দিল
ও যে সকল লোক এই মজুর মর্শের
মধ্যে ছিল তাহারদের মধ্যে কেহ না পলা
ইল ও কেহ ইচ্ছা পড়িল যে লোক দিগ
দখিল তাহার দিগের জৈমি হইল। তাহ
বই এখন মহারাজা মহাসভাতে গমন
করেন তখন এই মর্শের দিগ হইল
শত্রু তাহে গমন করেন।

ইংলণ্ডের লুডন মহারাজ।

পূর্ব সমাচার বেতগী গিয়াছে যে ইং
লণ্ডের লুডন বালক ই এই সেতম্বর মাসে
রাজস্বকুঠুরীর নিকটবর্তন কিন্তু সম্প্রতি
শ্রুতি গেল যে গী ১৮ আগস্ট তারিখে
তাঁহার সম্মুখীন অতএব সেই তারিখে
রাজস্বকুঠুরীতে ইচ্ছা করিয়াছেন। সে দিবস
যে লুডন বালক তাহার করিয়াছিলেন তা
হার মূল্য এক লক্ষ আটশত হাজার টাকা।

ইংলণ্ডের চতুর্থ জর্জ।

অনুগ্রহনামে চতুর্থ জর্জে ১৮১৯ সালে
তিন হাজার নয় শত চৌরান্না বালক অ
ধীন করিতেছিল ১৮১০ সালে চারি হাজা
র এক শত বালক অধীন করিতেছে।
কেন্দ্র নামে চতুর্থ জর্জে ১৮১৯ সালে তিন
হাজার ছয় শত আটশত বালক অধীন

সমাচার দর্পণ।

মূল করিতেছিল এই ১৮৭১ সালে ১ চতু
দ্বিতীয়ে তিন হাজার তিন শত পঁচাত্তরই
হালক অধিগুন করিতেছে।

কলহারা রাধা পরিচর্য।

আমেরিকা দেশে নবম্বল নগরে এক
সাহেব রাধা মার্তন করিবার কারণে আ
শ্রম্য এক কল সৃষ্টি করিয়াছে। চত্বিশ
জন লোকহারা যত মার্কস হইত তাহা
এই কলতে দুই ঘণ্টা ও এক মনুষ্যহারা
হইতেছে। এখন এমত ভরসা হইতেছে
যে আমেরিকা দেশের সর্বত্র এক কল
কাণ হইবেক।

অলভারি বেওয়াল।

ই-প্লুও দেশের প্রিমোড নগরের কিছুটা
নাগরের মধ্যে একটা বেওয়াল গাধি
কত আরক্ত হইয়াছে সে বেওয়ালের কুলি
গাধ মাতে ঘণ হাত আলের নোতাইতে
ওঠিতেছে। তাহার গাধিখিল কেবল পুস্ত ও
মুরকীতে হইতেছে সে বেওয়াল চৌকা
মুখে জয় হাত। যে লোকেরা গাধিতেছে
তাঁহারদিগের নামিকাতে নল লগান
থাকে ও কাছের বত সিল্কের মধ্যে তা
হায়াগিকে বনাইয়া দাড়াদিয়া আলের
মধ্যে অন্য লোকেরা নামাইয়া দিয়া
সেই দাঁড়া ওপরে আনিবারের হাত
রাখে। তাহারদিগের সহিবে যেমন
কিছু থাকে সেই শব্দেত করিলে এই দাঁড়া
টানিয়া তাহারদিগকে ওপরে ওঠায়। এই
কল অনেক গাধিখিল হইয়াছে তাহার স
ময় যে পর্যন্ত জল থাকে সেই পর্যন্ত ওঠি
য়াই এখন অসংখ্যসংখ্যে যে ওঠিবেক এমত
ভরসা হইয়াছে।

আজহাওয়া।

ফ্রান্সের রাডাবীনা শান্তিন নগরে

গত বৎসরের মাসে সন্থন্বা তিন শত
ছইতিরি লোক আত্মহত্যা হইয়াছেন।

ফ্রান্সী।

ই-প্লুও দেশের এক নগরে চত্বিশ বর্গ
বৎসর ব্যয়ক হই অল লোক গর ও ভেতা
করিয়াছিল তাহা সাবু হইয়া অদা
লতের প্রকৃমে তাহারদিগের জীন্সী হই
য়াছে।

অন্য এক নগরের এক পুস্তক ঘর
ইয়া মৃত হইয়া হৃদয় হাতে লইয়া যাই
তেছিল রাধার কীরে এক সোলাক আ
পন গুরুত্ব করিতেছিল কিন্তু বাটার দার
মোলা ছিল এই মার্তোয়ান তাহা দেখিয়া
বন্ধুকে যে ওলা পোয়া ছিল সেই ওলা এই
জীকে মারিল তাহাতে সে স্বী ত-কণা
মরিল পরে তাহাকে হিরিয়া অদালতে
আনিয়া ফ্রান্সী ছিল।

নগর নগরের মধ্যে বৎসর ব্যয়ক এক
জন বত তের ছিল সে প্রকৃমে বৎসরের সম
য় সাহেব লোকেরদিগের অের আশন হা
তে লাগাইল পাইত সেই ব্যয়ক্যাবু হুই
করিতে আরক্ত করিয়াছে। এক দিবস অ
লেক অন্তরাত্ত মুকুর সাহেব লোকেরদের
প্রেরইয়া চত্বিশ-বর্গ ওচাফি হাজার
আট শত টাকার লোভে হুই করিয়াছিল তা
হাতে সেইরা পড়িয়া কল করিল ও অ
দালতে তাহার জীন্সী হইল এবং তাহা
র সন্নি কৃত বৎসর ব্যয়ক অন্য এক জন
ছিল তাহারও জীন্সী হইল।

নিজের নগরে এক পুস্তক এক জীকে ব
লাকার করিয়াছিল তাহাতে তাহার
জীন্সী হইয়াছে।

হলী-হাবাহ।

হলী-হাবাহ হইতে ১৬ আত্মহত্যা

টার আনিয়ার তাহাতে জালা গোল যে
সেখানে মূল্যে বৃদ্ধি হইয়াছে ও পসোয়
মূল্য অনেক জাম হইয়াছে বিপ্লবত
বৃদ্ধিলাই যো নাগাপুর টাকিতে ১৭
সিইলিগ দেব বিপ্লব হইতেছে।

মরীচ ওপারী।

মরীচ ওপারের বৎসরব্যয়ক প্রকৃমে আর
কোয়ার সাহেব ই-প্লুও হইতে মরীচ ওপ
রোপে পঁচজিয়াছেন ইহাতে সেখানেকার
লোকেরা বত আত্মহত্যা হইয়াছে।

বরম।

কলৈণ্ড দেশে এক সাহেব আশন
জীর সহিত একত্র হইয়া এক গাহাই
তে আশন গায়ে ঘাইতেছিল এই সময়ে
মাটের মধ্যে অতিশয় বরম পড়িত আ
রক্ত হইল তাহাতে সাহেব ভীত হইয়া
ফিরিয়া ঘাইতে ওপরে হইল কিন্তু জী
আশন ঘরে ঘাটের কারন অতিশয় বরম
হইয়া তাহা নাশিয়া কিছুমাত্র অগুই
গয়ল করিল। পরে আশন শরীরে বৈ
কল্য বৃদ্ধিয়া আশন কামির সহিত ফিরি
য়া চলিল কিন্তু কয়েক অবসন্ন হইয়া আ
র চলিতে অশক্ত হইল। পরে সাহেব
জীর পরীর গরম করিবার কারন আশন
বরম থামাইয়া তাহার গায়ে দিতে সে
অবসন্ন হইয়া মৃত্যুকাতে পড়িল। অ
পর সাহেব বিশপুস্ত হইয়া ওপকারের
কারন লিকটম লোকেরদিগকে তাহিল
তাহারা কলিয়া তাহারদিগকে লইতে
আনিতেছিল পথের মধ্যে অন্য এক পু
কন এই দশপাশ হইয়া পড়িয়াছিল তাহা
রা আনিয়া গায়ে তাহাকে লইয়া আশ
ন ঘরে রাখিল পরে এই জীকে লইতে আ
সিতে যেখান যে সে জী মরিয়াছে পরে

সমাচার দর্পণ।

সে পুরুষকে আর লইয়া গৌল ডাহাতে সে
ফেরা পাইল।

মুরশেদাবাদ।

মৌ-মুরশেদাবাদের ৭ সেতম্বর তারিখ
খের সমাচার পাওয়া গেল যে ডাহার
চতুর্থিগে ১ বৎসর যেমত বর্ষা হইয়াছে
তাঁহাতে ৭ ন্যাস্বর মত আয়াহিতে পাঁচের
কিন্তু এখন যদি পাঁচ সাত দিবস বৃষ্টি না
হয় তবে লোকেরা যেরূপ হাজার হাজার
হইবেক এবং মহাভুলস্বরূপ তুলসি মূলা
বৃষ্টি করিবেক। বারিলাসর দক্ষিণ দেশে
কুমিতে নীল আবার অধিক হয় নাই
যেহেতুক ১ বৎসর বর্ষা আগামী হইল
এবং বর্ষাও আগামী আইন হইতে
আগাম্যে নীল কটেতে হইল তৎপুরু
লোকের রূপ ভয় হইল না।

নিজামাদী ধর্ম

হয়ত রাব্বানের নিজামাদী ধর্ম। জ্ঞান ও
ভুক্তি দুই নদীর মাঝে ভ্রম এক বেশ ই-
জ্বীয়েরদিগকে মিয়াছেন এবং লাগি
পুত্রের মাঝে ইলানু শরম এক পুত্র
জাহির পুত্রের লইয়াছেন। নিজামাদীর
সহিত যে ই-জ্বীয়েরদের পুত্রের একটা
আলম হইয়াছে সেজন্য আলমবাসী।
কিন্তু সে আলমের কলন এই যে যেহেতু
ইজ্বীয়ের নৈমা সকল একত্র হইতেছে আল
জান হয় যে এই সকল নৈমা একত্র হই
লে তৌম শোনার হাজারের লোক হইবে
না। কত দেশেতে সাত হাজার নৈমা
একত্র আসিবে।

ই-জ্বীয়ের মরক।

সন ১৩৩৬ সনে নতুন নগরে অতি
শ্রম মরক হইয়াছিল তাহাতে আতঙ্কিত
হ আর লোক যত্ন নৈম সময়ের কষ্ট
নতর এক লোক নতুন নগরে গিল সে
অতি ভয়মকমে বাদী হাজারিতে নগরিত
এবং তাহার বাদী গিলিয়া লোকেরা প
য়সা দিত এক দিবস সে বাদী হাজারিয়া
অনেক পয়সা পাইল সে দিবস রাত্রে তা
হার বেশের খুঁইয়া আনিয়াছিল সে তা
হার সহিত রাত্রে ৩ পয়সা দিয়া মরণ
খরিদ করিয়া কবির মরণ খাইল এবং
অজানিতে হইয়া বাদী হাজারিয়া এক
হাজার হাজার পয়সা রাখিল। সে সময়
অতিশয় মরক ছিল লোকেরা গুটিতকাল
পহরের ডাহা মরা গাতিতে করিয়া যে
দিয়া দিত। ৩ দিন অনেক মরা গাতিতে
তুদিয়া লইয়া ঘাইতেছিল তাহাতে ৬
অজানিতে লোকেরা মরা জাল করিয়া
গাতিতে তুদিয়া লইল এবং হাজার এক কুর
ছিল সে ইহা যেদিয়া অতিশয় শেখ ক
রিয়া তাকিতে লাগিল গাতিতে কুর
গৌল সে চেতন পাইয়া পুস-জাহার
বাদী হাজারিতে লাগিল তাহা গিলিয়া
যেদিয়া হাজার গাতি লইয়া ঘাইতে
ছিল তাহারা ভুত আশ করিয়া পলাইল।
সে বাড়িতে হিক-জাল পরে বিলম্ব হে
তল পাইয়া সকল বিষয় বুঝিয়া গাতি
হইতে নামিয়া স্বহাসে গেল। এই ভূত
জাহার বেশের লোকেরা গিলিয়া ৩ ক
কুর ৩ বাদী সময়ে তাহার এক জাহ
ত পুত্রকে নির্দান করিয়া রাখিল সে
জাহ অজানিতে আসে।

বাংলা ডাউ।

| জিহন | মোন | অকরি | পরিচ |
|---------------|-----|------|------|
| মুপারি | ১ | ৩০ | ৩০ |
| ডেরেজা তেল | ১ | ২২ | ২০ |
| গাহ মরিচ | ১ | ৩০ | ০ |
| বারিকেন তেল | ১ | ১৪০ | ১৪ |
| জুলা কাছোরা | ১ | ০ | ০ |
| জল পুত্র | ১ | ২০ | ২০ |
| পাটনাই কাবা | ১ | ২ | ২০ |
| চাল পাটনাই | ১ | ২৫ | ২৫ |
| পাছরি উত্তর | ১ | ২১ | ২০ |
| পাছরি মধ্যম | ১ | ২০ | ২০ |
| মুগী উত্তর | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মুগী মধ্যম | ১ | ১৫ | ০ |
| বালান | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মুগা গোম | ১ | ১১ | ১১ |
| পাটনাই নই | ১ | ১৫ | ১৫ |
| জাহার তালি | ১ | ২০ | ২০ |
| উত্তরমারা ভুত | ১ | ২০ | ২০ |
| মধ্যম ভুত | ১ | ১৫ | ১৫ |
| কৈলা ভুত | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মধ্যম কৈলা | ১ | ০ | ০ |
| মোমবাজী | ১ | ৫৭ | ৫০ |
| মিহরি উত্তর | ১ | ১০ | ০ |
| মিহরি মধ্যম | ১ | ১২ | ১৪ |
| মোম উত্তর | ১ | ৫৫ | ৫৫ |
| জাহার | ১ | ৫০ | ৫০ |
| জিহা কাপরি | ১ | ২০ | ১০ |
| মধ্যম | ১ | ৮ | ১৫ |
| মধ্যম জিহা | ১ | ৫০ | ৫০ |
| জাহার | ১ | ৫০ | ৫০ |
| জাহার | ১ | ৫০ | ৫০ |
| জাহার | ১ | ৫০ | ৫০ |

এই সমাচার দর্পণ পুরানপুরে ছাপাখানাতে পুতিসকালে পনিবারে ছাপা হয়। এই সকল কার্যের হার তিনি পুরানপুরে ছাপাখানাতে
আপন নাম পাঠাইলে নতুন-কাল তাহার নিকটে পাঠান হইবেক তাহার দ্বারা প্রাপ্ত এক টাকা তিনি বাস করিয়াছেন যদি তাহার নিকটে
কাল বা পহলে তবে তিনি পুরানপুরে ছাপাখানাতে সমাচার বিবরণ তাহার নিকটে পাঠান হইবেক।

‘बुद्ध संस्था’ ।

अनिवार्य ।

२७/११/२०२३

ଅଧ୍ୟାୟ ୧୨୨

ବର୍ଣ୍ଣନା ଓ ଶୈଳୀଗ୍ରନ୍ଥର କାର୍ଯ୍ୟାଦିକ୍ରମାନ୍ତର, ବସନ୍ତାଦିହ ଜାନକ ନମାଚାରଣା ବର୍ଣ୍ଣନା ॥

कोशानिद्र हांगीज ।

কোঁকিলের শতকরা জয় টোকার সুখের
 লোভে ফুটিয়ে উঠেছে শতকরা দিন
 টোকা আট আনা শ্রুতিময়। বিস্ময় করি
 যে উঠেছে শতকরা দিন টোকা শ্রুতিময়।

અચાંદ્ર પશિકા ।

| क्र.सं. | विवरण | प्रमाणित | प्रमाणित |
|---------|----------|----------|----------|
| १ | प्रमाणित | १० | १० |
| २ | प्रमाणित | १० | १० |
| ३ | प्रमाणित | १० | १० |
| ४ | प्रमाणित | १० | १० |
| ५ | प्रमाणित | १० | १० |
| ६ | प्रमाणित | १० | १० |
| ७ | प्रमाणित | १० | १० |
| ८ | प्रमाणित | १० | १० |
| ९ | प्रमाणित | १० | १० |
| १० | प्रमाणित | १० | १० |

ইসলামের সৌন্দর্য্য সারিয়েচ্ছান।

[illegible]

इच्छाशत्रु ।

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

সমাচার দর্পণ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

१. श्री गणेशाय नमः
 २. श्री गणेशाय नमः
 ३. श्री गणेशाय नमः
 ४. श्री गणेशाय नमः
 ५. श्री गणेशाय नमः
 ६. श्री गणेशाय नमः
 ७. श्री गणेशाय नमः
 ८. श्री गणेशाय नमः
 ९. श्री गणेशाय नमः
 १०. श्री गणेशाय नमः

अधिक दया द्या नहि। दे-वापण ३ वने
मण्डप ३ दे-वापण मूर्तिपूजादि। मकरान्त
नियम ७ कुरियविधान।

ইহাঙ্গিৰ্ণে অ্যেট্টিংস্‌ য়েণ।

যেহিসের রাআ জবুত চিত্রায়ি রাও
ই-গুজিয়ে যিহেরে শাননে যেহিরক ইয়ত
চিহ দেধাইভেত্তে আশমান হয় যে কুজ
নদীর দক্ষিণে তাহার যে দেশ তাঁরে জা
হ। ই-গুজিয়ে নৈলবারা ই-গুজিয়াবীন
হাইবেক চিত্রা ই-গুজিয়েরবের আশুয়ে
খানিবেক।

‘ହହ ହେନ ।

কিছু মেনে যে হঠাৎ উদ্ভূত আবেগে
 ফাটল বহিঃস্থ হৃদয়কে চকুনা বোম্বার
 উল্লসিত মন চাপে আনিয়ে, সর্বত্র
 আর সেলাই সেলাই কিছু মেনে
 ছেলে!

विषयः ।

[illegible]

সমাজের দর্পণ

মারী অত্যাচার কখন কখনকার আকার হই
যায়।

সুপ্রা.

সন ১৮৭৮ সালের যে মাসে পেন্সো
হারদের এক গুহা ইংল্যান্ডেরা লুট করি
রাছিল তাহারে যে সকল লুণ্ঠিত বস্তু
পাওয়া গেল তাহার মধ্যে তাহারদের
কুলদেবতার মূর্তিও এক স্বর্ণময় পুত্তিমা পাও
য়া গিয়াছিল তাহার ওজন তিন পণ্ড স
উত্তর তোলা। সে মূর্তি নিঃসঙ্গ এবং
কিন্দারদের হৃদয়গ্রাহী হইতে লাগিল।
সকল মণ্ড ওটরা নীচ ফাটায় তাহার
মস্তকে প্রবেশ পোতা করিয়াছে। তিনি
কৃষ্ণ করণার্থে উত্তরীত এবং তাহার ম
স্তকে চতুর্ভুজ বুদ্ধা পদ্মস্তম্ভাধি দিত।
এই পুস্তক পুত্তিমা পাইয়া সেখানকার
অবাক ইংল্যান্ডে এ পুত্তিমা পাঠাইলেন
এখন সে পুত্তিমা লন্ডন কোলোনি বাহার
রেজিষ্টারে আছে।

আক্ষরিক হুসন।

কলকাতা ওপহাটন এক জেলাখানিতে
সিপাহী লোকেরা হুসন রেজিষ্টারের
সহিত এক জন সিপাহী এক হুসন পুত্তি
মালা করিয়াছে সে হুসন এ সিপাহীর
সঙ্গে চল যখন সে সেখান হীর্ষাচার ও
খন হুসন ইংল্যান্ডে প্রেরণ যখন সে যখন
তখন হুসন হুসন ও যখন সে যখন
করে তখন হুসন ওপহাটন করে এই বস
সে হুসন সহিত সিপাহীর অনুগামী
থাকে এ বস আক্ষরিক।

আবর সমুদ্রে যোথ।

পূর্ব সমাজের যেকা গিয়াছে যে বো

বের লুণ্ঠিত বস্তু নাইব কতক দুই আ
হাজ যোথ যোথের পক্ষিহিতে আঁকা
করিয়াছেন ইংল্যান্ডেরা করণ আসা
গেল যে সন ১৮৭৭ সালে এ যোথ
যোথের কাওয়া মূর্তি হইয়া বোলে
আসিবার কারণ আঁকা আঁকা করিয়া
কওয়া বোলাই হইবার উযোগ্য হই
তেছিল ইতোমধ্যে বোলের লুণ্ঠিত বস্তু
সাহেবের তত্ত্ব যে ওকাল যোথের
কিন সে ময়িল ও ক্রিষ্ণ-সক সাহেব এক
জন ময়িল তাহারে সেখানে যে এক জন
পল্টনের সাহেব কিন সে সকল বস্তু
তার আক্ষরিক ওপহাটন সেই আ
হাজ শীঘ্র বোলে পল্টাইতে উযোগ্য
করিল। এবং এক জন সাহেব এ বস্তু
সিপাহী সেই আঁকাই উইয়া দিল।
পূর্ব আরবীর কতক সৈন্য আসিয়া তা
হারদিকে এ আঁকাইতে তাড়াইয়া
দিল এবং সেখানকার কোলোনির কুটী
তে গিয়া এ পল্টনের সাহেবের নিকট না
দাখল পত্র রাখা করিতে লাগিল সে সা
হেব তখন পত্রিত হইয়া ময়িল করিয়া
কিন কিন্তু এই বস্তু সিপাহী তাহারদিকে
করাই করিতে ইচ্ছা দিলে সিপাহীরা তা
হারদিকে কড়া করিল। অপর যোথ
র অবাক এই সমাজের পাইয়া চারি পণ্ড
আরবীর সৈন্য পল্টাইয়া তাহারদিকে
খালাস করিয়া লইয়া গেল এবং কো
লোনির লুণ্ঠিত সিপাহী সেখান কিন তাহার
দিকে নানানকার ময়িল। এবং এ পল্ট
নীয় পত্রিত সাহেবের লুণ্ঠিত বস্তু
ও কুটা পুত্তি মায়া যোথের অবাকের
নিকট লইয়া গেল।

সেখানকার তাহার লুণ্ঠিত ওপহাটন
নীচে ওপহাটন জিন্দার লইয়া বেড়া
ইল পূর্ব জেলাখানায় বস করিল।
কিন হুসন পূর্ব পল্টনীর অবাকের নিকটে

আসিয়া তাহার দিকে গুহা দিয়া পূর্ব ও
কালক বসিয়া গেলিল এবং আসিয়া
বের পায়ের তুতা ময়িল তাহার ময়িল
খাড়া করিয়া দিল। অপর এ সাহেবকে
এ সিপাহীরদিকে পণ্ড বেতি দিয়া যেন
খালাস করা করিল। এবং কোলোনির
কুটী ও সাহেব লোকেরদিকে যে জিন
সপত্র সেখানে কিন সে সকল লুট করিল
এক ওকাল সাহেব ও ক্রিষ্ণ-সক সাহে
বের পণ্ড বস্তুইতে তাড়াইয়া নানানকার
অবাক করিল। এই সকল বোরাআর
কারণ পূর্ব আঁকাই সেখানে পল্টন গি
য়াছে।

আক্ষরিক চুরি।

বাগদাদীরা পল্টনীর কুছাটী গুহা হ
উকালি জানী লোক ইমতি করে সেই
গুহায় পুস্তকেরা বিবসন গুহা মরলই
আলম ফের গিয়া কুছাটী করে গু
য়ের মধ্যে কেবল ময়িলের পরল
থাকে। এক বিবসন এক পূর্ব বেলার স
য়া এ গুহায় ফেরের মায়া এক জন ক
কর আসিয়া ওপহাটন হইল পূর্ব সে যে
বাগদাদী কুছাটী পূর্ব করে সেই বাগদাদী
কী লোকেরদের সহিত কুছাটী হ
দিয়া কুছাটী লইয়া পোবে কোন এক দু
চুরি করিয়া লয়। কাহারো ঘরী কাহারো
কাণ্ড এই প্রকারে পুত্তি আর চুরি করিয়া
গুহাইতে চুরিয়া গেল। তাহার ক্রিষ্ণ
কাল পূর্ব সেই সকল গুহা লোকেরা তা
পল্টনীরে ক্রিষ্ণ-সক সাহেব যে কাহারো
ঘরী ও কাহারো কাণ্ড এই প্রকার গুহা স
কলকাতা কুছাটী হইয়া গেল। পোবে পূর্ব
বোলে আসিয়া তাহার কুছাটী কুছাটী
তাহার কুছাটী গুহা তাহারে অ
বাক করিল কিন্তু যোথ পাইল না।

সমীচারণ দর্শন।

অনুসূচ্য।

যো-১। সানিখাটে এক ভাগিহালি কুয়ার
খাট ১৮ ভায়ে তাহার ৩০ বালক পাঠ
পানহইতে দিখানপড়া করিয়া আসিয়া
আলিন চাকরকে সঙ্গে লইয়া গিরাশালিন
গৌলবাটীর ঘাটে গেল। বালক গিয়া
সুল করিতে তলে নামিল চাকর ভায়া
ভিয়া সেই সময়ে সেই ঘাটের ওপরে
যে বাজী হইতেছিল তাহারি। দেখিতে
আশঙ্ক হইল। ইতিমধ্যে গিয়াতে বান
আসিয়া। খোয়ার লোক। শুনিয়া ৩ বাল
কে ওপরে চাশিয়া পড়িল তাহাতে সেই
বালক মরিয়া সেই লোকের সীতে গিয়া
ল। পরে চাকর ঘাটে বালকের আশু
হল করিল কিন্তু সেখানে লা পাইয়া বাটা
গেল এবং সেখানেও পাইল না। পরে
বালকের পিতা ও ভ্রাতৃগণ মকলে বসন্ত হ
ইয়া অনেক কষ্টে লাগিল কিন্তু কাটা
নষ্টের ভাটার সময়ে ৩ খোয়ার লোকের
সীতে মৃত বালক সেই লোকের মাজী পাই
য়া মকলে আসাইল এবং দারোগা
আসিয়া বালকের পিতা ও ভ্রাতৃগণকে
আলিয়া সুবোধাল করিল পরে বাল
কের অলকাহি তাহার পিতাকে দিয়া
ভায়ে কলিহইতে হকুম দিয়া।

সময়রন।

গত পনিবার যো-১। কানীপুরে রাম
মুর বসুর কাল হইল সেই দিবস বেলা
নে তাহার স্ত্রী তাহার সহিত মহামিল
করিল।

মুর্শ খেলা।

পহর কনিচাডা আশীমী আশুআরি
মাস (যে মুর্শ খেলা হইবেক সে মুর্শির
ভায়ে ৮ টিকিট কনিচাডার বৌলহাল
আশী-সাইবিল বসে ৪৪ সেতবুর তারি

(৫) প্রযুক্ত কানেক্টর কানীমী রয় লক
খেল হাজার পাঁচ খণ্ড চোকাতে লিখায়ে
হয় করিয়াছে অতিব প্রথম অর্ধি ম
কল লোককে তাহার দিকটাইতে টি
কিট কয় করিতে হইবেক।

| | | |
|----------|-------|--------|
| ১ টিকিট | | ১০০০০ |
| ২ টিকিট | | ২০০০০ |
| ৩ টিকিট | | ৩০০০০ |
| ৪ টিকিট | | ৪০০০০ |
| ৫ টিকিট | | ৫০০০০ |
| ৬ টিকিট | | ৬০০০০ |
| ৭ টিকিট | | ৭০০০০ |
| ৮ টিকিট | | ৮০০০০ |
| ৯ টিকিট | | ৯০০০০ |
| ১০ টিকিট | | ১০০০০০ |
| ১১ টিকিট | | ১১০০০০ |
| ১২ টিকিট | | ১২০০০০ |
| ১৩ টিকিট | | ১৩০০০০ |
| ১৪ টিকিট | | ১৪০০০০ |
| ১৫ টিকিট | | ১৫০০০০ |

আশীমী মুর্শির যোগ এইরূপে দিহর হই
য়াছে।

ইকশী।

মুর্শ সমীচারণ দেখা গিয়াছে যে ই-
প্রায় হএক জন বিশ্বাসিযাডেকের বাশী
হের ওজিরেদিগকে বই করিতে দিহর
করিয়াছিল তাহারদের মধ্যে পুহাল পাঁচ
জনের মীমী হকুম হইয়াছে। এই হকুম
কনিয়া তাহার। করিল যে বিশেষণ যত
শীঘ্র খামারদের মীমী হয় সেই ভাল
পরে তাহারিগণের মিলকালের পুশির
কারণ পুরাহিত আলহিতে হকুম করি
লে তাহার। পাঁচ জনে ওভর করিল যে
আমরা লাভিকের মডাইলবনে ময়ির
পুরাহিত পুশোজন কি।

৪ যে মেমিয়ার সাত ঘণ্টা বেলায়
সময়ে জগদা আসিয়া আশীর আশোজন
করিল ও সেখানে করিডের ভীতা জতা
ইয়া দিল ও তাহারদের কবিরে করিল যে
সিদ্ধান্ত আলিন তাহার মধ্যেও প্রায়ের
ভীতা দিল তখনকার অতিবর্ণী পাঁচ মিলি

টির সময়ে মীমী চৌলাইয়া ওভার ওপরে
খাটা করিল। যে ওভার ওপরে তাহার।
মীমীয়াছিল জগদা চিকিহারা সেই ও
তা চৌলািন তাহাতে তৎকালে তাহার
দিগের মীমী হইল। তিন মিলিটের পরে
তাহারিগণের সানারীয় পুরাের শেষ হ
ইল। অর্ধ ঘণ্টার পরে তাহারিগণকে
মীমীহইতে নামাইয়া দিখকের মধ্যে
বনাইল ও তাহারিগণের মীমী বস্তু আ
জাদ দিয়া যন্তক জেল করিল ও
তিন যন্তক জগদা হাতে লইয়া চকুটি
ভেদন করিতে করিল যে এই বিশ্বাসি
যাডেকের যন্তক পরে তাহারিগণকে কই
রে দিল। এই বিশ্বাসিযাডেকেরদের মধ্যে
অনা পাঁচ জনকে মুখ্য কালকর্ষক বেশ
হইতে দূর করিয়া দিয়াছে।

আশীমী করিয়া।

গত বারপাহের হতে যে আশীমী ছিল
সে বহুশা পুরায়েতে অতিত। কইক ব-
সর হইল সে মকল হুয়ী আনা গিয়াছিল
মদুতি অধিকৃত নৃতন বারপাহের কারণ
পুরাতন রাজমুর্শি করিয়া নৃতন রাজ
মুর্শি পুস্ত হইতেছিল তাহাতে পুরা
ওল মুর্শির হারা ও বহুশা পুরা যে
ছিল তাহার মধ্যে অনেক কুয়ী প্রকাশ
হইয়াছে সে কেবল ময়রাহার পুস্ত
প্রতি আশীমী অন্যান্য হয় এক পতি
বাইট ব-সরপাশ্র এই কুয়ী প্রকাশ হয়
নাই।

দেবীশা।

হিন্দুধর্মের মধ্যে পুরুষ-কালীন দেবী
পূজা অনেক স্থানে হয় বিশেষত গর
মহার ওভর পাশে অধিক সমারোহ হয়
যদি কোন ভাগিহালি হিন্দু ৩ পূজা না করে
তবে রীতি আছে যে রাত্রিকালে পুতিয়া

সমাচার দর্পণ।

আমিরা পোকেরা মরোনিংন ডাহার
 টকিঅনং রাখিয়া বধে নগে বুকুং রাউচ
 আশা ইয়া তর-মিরা (দোক) উয়া যে
 ছেন হয় উহার নুঅ করে। ডাহারত
 গুতু অন্তহে ও আশিন মরানবার
 রাহে বেলগেদিয়া গিরাহ বসকেয়া
 ই যোমরা কৈল ভাগ্যবানির বসিগেত
 এক বোহাগিরা। মুতিয়া রাখিয়া আমিয়া
 জিন ও আশিন দুইবাহে মুতে সেই
 ভাগ্যবান আশিন বসিগেত ই বোহাগি
 রা। মুতিয়া বোখিয়া অঁত-মং বোহাগি
 ছইল ও আশিন বসহেতে হ। আশিয়া।
 মুতিয়াহে পতহা করিয়া আশিন মুতিয়া
 তে নিছেন করিয়া বসি ও কাহুকাং হ।
 আদিয়া রাখিল। যাহারা ই মুতিয়া
 রাখিয়া রাখিয়াছিল ডাহারা বসিহল যে
 যেখান মুতিয়া ছিল সেখান নাই নর
 অনুবন করিতে আশিন যে মুতিয়া কা
 হিয়া মুতিয়াতে নিছেন করিয়ারে অনু
 ডাহারা ই মুতিয়া মরকাহি বাসি আশ
 ন। নুঅ করিবেক শিখর করিয়া মু
 তিয়া মিহরা আশিনে গিরাহজিল ডাহা
 হতে সে ডাহায়া য়াং ডাহারখিগে
 ডাহা আশোয়ানহেত মু মিহা য়াহি মি
 হি করিয়া হিরাহ করিল।

ଦୁଇବିଧି ଥିବି ଗୋଟି ଚନ୍ଦ୍ରୀୟା କାମିନୀଦେବୀ
 କୋହୋତେ ସେଧାଣ ଥିବି କବନ ଓଁ ହାତର ଆ
 ଶିମିନ ହସ୍ତ ସେଧାଣ କୋନ ଗଡେ ଆସି ବନ୍ଧୁ
 ମୁଁ କୁହୁଡ଼ା ହେବୁ। ହାତର ଦିବନ ଆମ ମାୟୁ
 ହେବୁ। ଧାବନ ବିନ୍ଦୁ ଅଶିମିନ ଯାନ୍ତେ ପ୍ରବଳ
 ମୁଁ କୁହୁଡ଼ା ହେବୁ ଆମ ମାୟୁ। ହେତେ ବିନ୍ଦୁ
 କାଳର ଯାବି ବେହ ସେଠା ନାହିଁ ଓ ହାତର
 ନାହିଁ ।

‘करोकार’ नामतः ।

ਬੀਹਾਂ ਦੇ ਭਰ (ਜੇ ਕੁਥੀ ਕਰੇ ਪਾਹਾਂ)
 ਮੁੰਬਡਾਂ (ਜੇ ਮੁੰਥੀ ਕਰੇ) ॥
 ਤੀਬਰ ਧਿਆਨ !

এক রাতের পূর্বেই কোন দুঃখিহীন বালক
গানি বিদ্যামিন তাহাতে রাজপুত্র কা-
দিতো রাজার দিকে আসিয়া এই কথা
বলিলেন যে যে নিত অতঃপাশি যেন
করিতে গিয়াছিল তাহাতে অতঃপাশি
বালক যাহা ইচ্ছা তাহা বলিয়া আসিবে
গানি বিদ্যার রাজা তাঁহা শুনিয়া মস্তি-
সিকারিত ভাষা জিজ্ঞাসা করিলেন যে
আমার পুত্রকে যে গানি বিদ্যাকে তাহা
কে নিশ্চয় দেওয়া তোমারই বিচার
উচিত হয় ও হারদের মধ্যে কেহ বলি-
লেন কাহারা কোনও আশা করিব
করিলেন কাহাণিরে বন্ধ করিতে আসি-
বিলেন এই পুত্রের হাজার মনসে তাহা
তে গানিলেন। তখন রাজা আনন্দ পূ-
রবে ভাষিয়া এই কথা বলিলেন যে আমি
রাজা যদি এক বিচার করিয়া নাছি-
দিল দিতে নহি কিন্তু তাহাতে কে জান-
বে যাহা তাঁহা আশা যোগ্য না অতঃপাশি
যুগ্মি হইতে পারে তাহা ওইই কালার
যি কালার দিতে নাই কর তাহাকে
কর তাহা রাজপুত্র তাহাকে কমা করিয়া
এই কথা বলিলেন যে যেম যামর ন কি
বিচার করিয়া থাকিত তাহাকে কমা
করিলেন অতঃপাশি যুগ্মি আশা কাহাণিরে
গানি দিলেন এইম তোমাকে কেহ গানি
দিল ও এই কল তাহাকে কমা করিয়া
এইম তাহা যে বালকেরই হইবে বালক
কালাই না দিতে নাই কর তাহা করিয়া।

‘राजाहू काँठ’

| বিভিন্ন | যোগ | অবধি | মোট |
|-------------|-----|------|-------|
| মুগারি | ১ | ০।০ | ০।।০ |
| ভেড়শী ডৈর | ১ | ১। | ১.০০ |
| গাছ মাছ | ১ | ০।০ | ০.০০ |
| নারিকেল ডৈর | ১ | ১৪।০ | ১৪.০০ |
| কুলা কাছোকা | ১ | ০ | ০.০০ |
| খালি চুলপু | ১ | ২।০ | ২।।০ |
| লাঠিমাছ মাছ | ১ | ১ | ১.০০ |
| চানু পাটমাছ | ১ | ১.৫ | ১.৫০ |
| পাখি উর | ১ | ২।। | ২।।০ |
| পাখি মাছ | ১ | ১.৫ | ১.৫০ |
| মুগী উর | ১ | ১৫।০ | ১৫.০০ |
| মুগী মাছ | ১ | ১৫।০ | ১৫.০০ |
| বাগি | ১ | ১০।০ | ১০.০০ |
| মুগা গোম | ১ | ১৫।০ | ১৫.০০ |
| পাটমাছ দুই | ১ | ১৫।০ | ১৫.০০ |
| অফুর তামি | ১ | ১।০ | ১.০০ |
| উটমাছা দুই | ১ | ১০.০ | ১০.০০ |
| মধ্যম দুই | ১ | ১.৫ | ১.৫০ |
| উটমা দুই | ১ | ১১ | ১১.০০ |
| মধ্যম উটমা | ১ | ০ | ০.০০ |
| মোমবাড়ী | ১ | ০.০ | ০.০০ |
| মিছরি উর | ১ | ১.৫ | ১.৫০ |
| মিছরি মাছ | ১ | ১১.০ | ১১.০০ |
| মোড়া উর | ১ | ০.০ | ০.০০ |
| মধ্যম | ১ | ০.৫ | ০.৫০ |
| চিনি কাপড় | ১ | ১.০ | ১.০০ |
| মধ্যম | ১ | ১ | ১.০০ |
| ধার চিনি | ১ | ০.০ | ০.০০ |
| ভেড় | ১ | ৫.০ | ৫.০০ |
| ডামা | ১ | ০.০ | ০.০০ |
| চন্দ | ১ | ১৪।০ | ১৪.০০ |

• “কমিটির কোন প্রস্তাবের আলোচনায় মুক্তিগ্ৰহণবিষয়ের আলোচনা”। তাহার পূর্বের কার্যসমূহ হইতে প্রস্তাবগুলির আলোচনা-
কার্যসমূহ পৌরোহিত্য প্রভৃতি কলম উদ্ধার বিবরণে পঠিত হইবে তাহার স্থান থাকে। অন্যদিকে যিনি দায়িত্ব অর্হিত হইবেন তাহা তাহার নিজের
প্রাথমিক বা প্রথম প্রদত্ত প্রস্তাবগুলির আলোচনায় সমাপ্ত হইবে।

૪૭ આશ્રિત મત ૪૨૨૧૧

दण्डेन चैव लौकिकार्थैश्च कार्यादिभिः ॥ इत्युक्तानिह भानुः, नमोऽर्पयामास ॥

কোম্পানির শতকরা ত্রুটি হোকারা মুদ্রার
বদলান করা করিত হইলে শতকরা ত্রুটি
হোকা আট আনা নিমিত্ত। বিক্রয় করি
তে হইলে, শতকরা ত্রুটি হোকা নিমিত্ত।

| क्र. | वस्तु | प्रमाण | मूल्य | कुल |
|------|-------|--------|-------|-----|
| १. | आम्र | १० | १० | १० |
| २. | आम्र | २० | २० | २० |
| ३. | आम्र | ३० | ३० | ३० |
| ४. | आम्र | ४० | ४० | ४० |
| ५. | आम्र | ५० | ५० | ५० |
| ६. | आम्र | ६० | ६० | ६० |
| ७. | आम्र | ७० | ७० | ७० |
| ८. | आम्र | ८० | ८० | ८० |
| ९. | आम्र | ९० | ९० | ९० |
| १०. | आम्र | १०० | १०० | १०० |

যে যোঁকায় বাহার নিকটে এই
 সন্ধ্যাভরদীন নুতনকাল পলিন যাই
 তেজ মূহিতে পাই যে তাহারদেহে আ
 নুভাবনা কেহ নেই যোঁকায়হইতে
 অশ্রু ধরে বহিতে অভয় তাহার
 দিগন্ত তারিখ ভাঙিয়া অহবি কৈ
 ন তারিখপত্র কেঁদে যোঁকায় পাঠাই
 তে হইবে তাহার ত্রিবিধ বস সন্ধ্যাভর
 নইতকম আগামী নিকট যোঁকায়
 প্রায়শ্চুর জাপানিয়ার পাঠিয়ে
 ইহার দিগন্ত সন্ধ্যাভর ন পলিন
 যাহার ক্রান্তি-যোঁকায় পাঠাই যাই
 যেহে তাহার ক্রান্তি-যোঁকায় পলিন
 যাইবে ইতি ।

[illegible]

ତାରିଖ ୧ ଆଶ୍ୱିନ ମନ ୧୧୧୧ ମାଂ ୫୦
 ମନ ୧୦୧୦ ମାଂ ୧୦ ମେଘସୂତ ।

महाराष्ट्र (पृ. ३५) २ यशोवन्तः इव तेनि

१३. अर्थ: विधिदे मीकृत रडेग

কুইকলিঙ্গ প্রকৃত পদার্থের মিত্রের আদর্শ
 সে ভাগী আছে ঘাহার স্তর কবিবার
 হসিনা থাকে তিনি সেইখানে গেলেন না
 ইবনে।

| | |
|---------|----|
| आम | १० |
| आम आम | १० |
| मिमी | १० |
| मिमीमी | १० |
| मिमी आम | १० |

তাইন সূত্রের যে খোলাই হয়েছে তাহার
একটুকুই হারা হয়েছে সে টুকুটে যান
ওটিয়াছে এখন সে চোকা খুঁড় মেরিন
কোমারীর হাটতে বন্দ আছে।

अंश १० अक्षरेषु काव्यम् मन्त्रि
होर्षे अक्षरेषु (अंश) पादेषु ।

[illegible]

সমস্যাচার দর্শন।

চিরজীবী।

একত মনের এক নগরের ইনহুতা এক
দ্বী ১১ এক নত এনির বন্দরবন্দ্য হই
যা মরিয়াছে সে দ্বী লোক কয়ে রাহি বায়
নাহর অম মৃত্যু দেখিয়াছে এক পক্ষ
বায়নাহর অম দেখিয়াছে সে দ্বী
আপন মরনের দুই বন্দর হত আলা
হইয়াছিল।

অগ্নিকের পালনোনাগ।

ই-গুত যেন এই দ্বীতি আরে যে
গুণ্যে যত রোগী এ দ্বিধা ও বৃদ্ধ ও
অলপ লোক ও যত আরও সন্তান
আরে তাহারিগের পুতিনালনার্থ সেই
সকল গুণ্যহইতে কিছু টাকা এই সকল
লোকেরিগের অধিকের নিকটে জমা
হয় এবং এই সকল লোক অধিকের
নিকটে খোরাক ও পোশাক পাওয়াইতে
এক নগরের হিনাবহারা আলা গোল যে
কোথানে কেবল আরও সন্তানের পুতি
পালনার্থ পুতিসন্তান হই পত বামান
টাকা যায় হয় কিন্তু রেণি ও বৃদ্ধের
করন ইহা হইতে দুল যায় হয় এবং
কহিসারে আলা গোল যে এই আরও
সন্তানই পত চরিত্র হইহইতে অল্প
দুইয়।

বায়নাহ দর্শন।

ই-গুত বায়নাহ বায়নাহুতে বায়না
কহিতে যে রাহি দ্বী গিয়াছিল সে
রাহর উভয় পাশে অতিবহ দুই ঘর আ
সে সেই ঘরে থাকিয়া সকল লোকের
অজ্ঞাতের শিতি দেখিবার কারণ কোন
হাজার টকা করিয়া বাহিরা হাজার টাকা
কাজ করিয়াছিল।

দুতানীমী।

ই-গুত চৌদার ১১ মরবন্দ্য এক দ্বী
ক বাজী রাহিয়াছে যে আটার দিলে পাঁচ
নত কোশ চলিবক।

দ্বীম।

এক নগরে এক জন এক সন্তান কল
সৃষ্টি করিয়াছে অগ্নিহারা যে বীম নিয়তি
হয় সে বীম কলহারি বন্দ করিয়া রাহিয়ে
সে বীমে অগ্নির কার্য হইবে।

বৃদ্ধ হাত।

ই-গুত যেন কোন কন্ডের কারণ এক
নাহকের নীর মুইভেলি তাহাতে এক
টা মনুষ্যের হাত পাওয়া গেল কিন্তু তা
হার হাতের ও নহের হাত এত বহ যে
মনুষ্যের সন্তর হয় না লোকেরা অনু
মান করিয়াছে যে সে রাহসের হাত
এক তাহার নিকটে আর একটা মুতি
করি বহ আলা পাইল তাহাতেও বন্দ
বৃদ্ধ হাত দেখিল।

চৌদের চাভুরী।

ই-গুত যেন এক নগরের করণী
রে অনেক দুত লোক কয়ে আর তাহা
তে গিত ১১ একরেল ডারিয়ে এক চৌদের
মাতা আপন ইচ্ছায় পুত্রকে দেখিতে
কারণারিগের দ্বারে গিয়া অধিকের নিকটে
পুত্রনা করিলে সে তাহারে কারণারের
যত গিয়া পুত্র দেখিতে আঁকা দিল।
সে বাহনিক কারণারের দ্বী গিয়া পু
ত্রের সহিত কয়েককাল করিয়া আপন
বন্ধ পুত্রকে দিল। সে পুত্র বাহনিকের
নাম সে বন্ধ পরিচয় করিল হইয়া চ
লিয়া গেল। তাহার দুই পাইকরাস
মাতা গিয়া দিয়া শরন করিয়া থাকিল।

রাজদ্বার।

গত লজ্জাহ যে বিশালমাতক পাঁচ
অনের বীনের বিষয় জানান গিয়াছে তা
হার বিষয় অন্য যে সমস্যাচার আমিয়াছে
তাহাতে আলা গোল সে পাঁচ অনের বীনী
হইয়া কহর দিলে তাহারদের খলিলেকরা
এ মৃত বাহিরিগাকে কবরহইতে ওয়া
ইয়া পুত্রান স্থানে রাহিবার করন ওতা
রের নিকটে ঘরখান দিয়াছিল। তাহাতে
ওজীর আঁকা করিল যে তাহা হইবে না।
আর অন্য যে পাঁচ জনক জীবনমাত
দেখহইতে দুই করিয়া দিয়াছে তাহারি
গের দ্বারা আপন বাহী কারণারের জা
কে আনিয়া দেখিতে গিয়াছিল কারণা
রের অধিকের নিকটে নিকট সমস্যাচার
আনিয়া তাহার অনেক রোহন করিয়া
বাহানে গেল।

তিবু বিষয়।

প্রাণ যেন হইতে ই-গুত যেন এক
গুণ্যে দুই লক্ষ অগ্নিশী হাজার কু
টের তিবু বিষয় হইতে আইল। এই
তিবু নিদামে এক তজন দুই আলাতে
বিফর হইল।

দ্বী বিষয়।

ই-গুত যেন দ্বীতি আরে যে আপন
দ্বী বিষয় করিতে পাঁচ তাহাতে নতন
নগরে এক লোক আপন দ্বী গলায়
হকি দিয়া এক বহ হাতি লইয়া গিয়া
ছিল এবং পুত্র এক ইচ্ছার দ্বিগলি
তাহাতে এক জন কহাই তাহাতে ফ
বলিল।

ই-গুত যেন এক নগরের হাটে এক
অনু আলা দ্বী-গলায় হকি দিয়া দি
সহ করিতে আসিল এক জন তা
হাটে দুই হাজার কু কহিল পরে

সমাপ্তির দর্শন।

তিন জন এই দুই টাকায় মার কয় করিয়া
আইন। অপর তিন জন নইয়া আপন
বার গেল বিক্রেতা নী বিক্রয় করিয়া ময়
আইয়া আপন ঘরে গেল।

বাড়ি।

পঞ্চম ঘণ্টে দুইশতের মতবার্তা মার
নাম গায়ে এক জাগরণের বাতীর বে।
ডাল কুঠিরে একটা গুলি শুল কর
য়াছিল। খুঁতে বাতীর লোকেরা দেখিয়া
গুলি মকলকে আনাইল। তাহাতে কো
লাসির মিলাই দুই জন ও পুলিশের বরক
দাত এক জন আনিল এবং কুঠির দ্বার
খাতিয়া বরকদার এক গুলি মারিল তাহা
কে ছিড়ে হইল না। এই বন্দুকের শব্দ শুনিয়া
হাস্য নিম্নর তাঁরা করিয়া হাস্য করিত ইহারা
বসিল। পরে দুই জন মিলাই তাঁরা ও তর
য়ার নইয়া তাহার সম্মুখে যাইয়া গুলি ক
রিতে এক জনকে লম্বাঘাত ও বড়াঘাত আ
নেক করিল আর এক জন সে ব্যাঘ্রকে
মারিল।

পর তাহারা কহানে গেল ঘাইকে ন
খাতিয়া ও বড়াঘাত করিয়াছিল সে দুই জন
ন দিন পর মারিল কিন্তু ইহারিফের
আজ্ঞা নাহল। সে হানে কেমুয়া ও গ
লবাঘাতে ভয় অভিশ্য তাহাতে লোক
রা স্নেহ ও কলুর হানক পুজিত মর্যাদা সী
বদলে রাখে এক দিবস আট বৎসর হয়
ক এক বালককে বিরূপা নইয়া তখন
করিল এবং মিলাইর ঘরের সিকটে
এক বৃদ্ধ স্বীকে গুলিবাঘাতে বিরূপাছিল
কিন্তু সে এমত চিন্তার পদ করিল যে
তাঁহাকে ছাতিয়া পাইল কিন্তু যে আঘাত
করিয়াছে সে অধিক দিন গুলিবাঘাতে ভাল
হইতে পারে। এক দিন সাইবের এক
বৃদ্ধ নইয়া গেল পুত্র ছিল পুত্রকালে
ক বৃদ্ধ ও পরে ক বৃদ্ধ কলুর পাত্র

গেল। এই বন এক খোঁজ বাঁধা ও অনেক
ক কলুর ও নইয়া গিয়াছিল তাহাও
বৃদ্ধের ওপরে পাইয়া গেল। লোকেরা আ
নিত যে গুলিবাঘ বৃদ্ধ ওপরে পাঠ
না কিন্তু সেখানকার লোকেরা আপন
চক্ষুরা বৃদ্ধ ওপরে দেখিয়াছিল।

সহায়িন।

কলুরের গারাকান্ড অগ্নিবাধিবা তাহা
র বয়সকয় অন্যান্য চলিল বৎসর হইয়া
ছিল ও আশিন পুত্রের তাহার মৃত্যু
হইলেন কিন্তু বৎসরব্যয়ক তাহার নী
তাহার সহিত সহযোগিনী হইয়াছেন তা
হারিফের পাঠ বৎসরব্যয়ক এক কন্যা
ও যে বৎসরব্যয়ক এক পুত্র আছে।

বিবাহ।

ই-প্রথম ঘণ্টে এক সাইবের এক স্বীকে
বিবাহ করিয়া কারন পুত্রিত করিয়া সেই
স্বীর পিতা মাতার ঘরে কিছু দিন থাকিল
কিন্তু কোন কর্মসময় দুই দিন মাস বি
বাহ হইল না। পরে যখন বিবাহের
উযোগ্য করিল তখন এই কলার পিতা
স্বাতা জালিল যে কলার গর্ভ হইয়াছে
ইহাতে তাহারা তাহাকে ঘরহইতে বা
হির করিয়া দিল। কন্যা বাহির হইয়া
দুই দিন মাস পর্যন্ত অর্ধদুশ হইল। তা
হার পর এক দিন এই পুত্রিনীর বাইরে
বেধা গেল যে সে কন্যা মৃত্যু পাত্র
আছিল এবং যে সাইবের তাহাকে বিবাহ
করিতে বিরূপ করিয়াছিল সে তাহাকে
মৃত্যু দেখিয়া পাইল ইহাও।

ট্রি

কলার গেল যে কলুরাখিল ও ঘরনাহরের
মাক আনকা নানের কুঠিতে ছুটি হই

যাছে নদানপুরের নদ কুঠির মতো গিয়া
নীত আট পত নদ বড়ি ছুটি করিয়াছে।

ই-প্রথম পুত্র বাহনাহ।

ই-প্রথম পুত্র বাহনাহ রাজমুহুট
বীরন করিলেন মহাপ্রদেহের আশিন। পুত্র
পুত্রেরবের পর পুত্রিনী করিয়াছিলেন তা
হার বিবরণ এই। যখন যে কলন বাহ
নাহ রাজমুহুট বীরন করিতে যান তখন
পুত্রিন বীরাধিক ছুটি জন বাহনাহের
বন্ধিন ও হায়ে থাকেন। সেই গিন্নন ময়
যে চতুর্ভাষ ও ঘড়াপুত্র বয়সনা টাঁহারা
চারি জন পুত্রিন লোক বাহনাহের মন্তকে
বীরন করে এবং তাহারা সেই টাঁহারা
পায় এবং কলার বাসনে ভিক্ষা নই
য়া সে সময় ভিক্ষকেরদিগকে এক হইয়া
লোক ভিক্ষা দেয় সে এই ভিক্ষাপাত্র পায় ও
যে পুত্রম খালা পুত্রত করে সে সেই বর্ন
ময় খালাই পাঠ পায় ও যে যেত মন্ত
করে সে যেতের বর্ন পায় ও জুরি কাটা
পায় এইকর তলেকের অনেক ভাৱ আছে
তাহাতে অনেক অনেক পায়। লজন নার
রের বড় সাইবের পুত্রিনী করিয়াছেন যে তাঁ
হার পুত্র পুত্র লজন বাহনাহ হের খালাতে
বর্নপাত্র মরণ নইয়া বাহনাহের পুত্র
সে বর্নপাত্র ও ডিল পাইতেল অতঃ
ডিল ও পালা এক জন পুরোহিত ও
কেন পুত্র পুত্রের পর পুত্রিনী করিল
যে লুজন বাহনাহ যে বর্নপাত্র লুজন রাজ
মুহুট বীরন করিলেন সে সময় এই পুরা
হিত সাইবেরা পুত্রিত খোঁজার ভিত্তি। সে
খানে আশিনের কলারের ঘরক তাহার ম
মুখে তরুর বাঘ করিলেন পরে এই যে
তাঁহা খাতিয়া সরর পুত্রান করিয়া কহিবে
ক এই চতুর্ভাষ ই-প্রথমের মন্ত রাজ
নাহ নহল ইহা যে কের কহিবে সে লোক
সাইবের ও বিলাসিবাঘত ইহা আশিন

अथोक्तं दर्शयामि ।

যাধিহিব। এইকথিয়া মুকুন্দ হস্তর দ
স্তানা ভূমিতে নিঃশ্বস করিবেক সে চক
না যদি কেহ ঠাণ্ডি ঠরে তাহার সহিত
মুখ করিতে হয়। যদি কেহ না ঠাণ্ডি
ঠরে বর্ণনায়ে মরণ নাইয়া নুতন বস
নাহিব নাম করিয়া পান কর্ত। সেই বর্ণ
নাও যোহা ও সাভোহা সে যায়।

শৌভাগ্যবান হানিউ ।

শৌখিনী, গীতাঙ্গী, ভগ্নাঙ্গী, নন্দী, শঙ্কর, বাসিনী
 যা করিত তাহাতে ১৯৮৮ সনে ডাঙরিদিয়া
 গৌরী দুক আঁহা বার শত লোক সম্মতে
 দোস্তগোশের দেশ ছাড়িয়া গিয়াতে আসি
 জেলে। কিছু দিন পরে সে অত্যাচার
 মুক্ত হইতে গৈলি কামাল কাকাল আহা
 হইতে লোকা নামাঙ্কি ১০ জন লোক লো-
 কান্তে প্রেরিয়া অসহ্যে আসিতে দিহান।
 মোহারা আত্মবে যথিল বহারা সে
 ইয়াস হরিদ তাহার। লোকান্তর
 করিল ডাঙরিদিয়ার মতো কাকাল লো-
 গপুত্র হইয়া হরিদ পরে আর ১৬ জন
 লোকান্তর করিল। পরে ডাঙরিদিয়ার
 পিছাইতে গেল হইয়া মুন্সে ও গিড়ত হইলে
 আবারা মানত করিল যে কাকাল ও গি-
 রী ও দুইয় ১৫ দিন আর কিছু গিড়বৈ
 করিয়া যাহারকাল গিড়বে তাহাও অ-
 ন্য কিছুই করা নাহিলে। তাহারকাল
 গিড়ি হইয়া গেল অসহ্য। দুই ভাই মিল ও
 হারি আত্মের নামে জটন তাহারকাল

ହାର ଆଗରେ ନାହିଁ ଶ୍ରୀମନ ତୁମ୍ଭାଙ୍କର ଅନୁ
ନିରୁଦ୍ଧ କରିବେ ତୁମ୍ଭାଙ୍କର କଳ୍ପିତ ତୁମ୍ଭାଙ୍କର
କାହିଁକି କହିବି ଯେ ଆହୁରି ଯେଉଁ ଗୁଡ଼ା
ହେ ଗାୟିକା ଆହୁରି ଯେଉଁ ନିରୁଦ୍ଧ କରୁଛ
ଏହି କଥା ତୁମ୍ଭାଙ୍କର ଯେଉଁ ଗୁଡ଼ା ତୁମ୍ଭାଙ୍କର
କଲେକ୍ଟ ବାଣ୍ଟିବ କହିବି, ଆହୁରି

জন্মে নিজের কবিতা উপহার দিয়া হইয়াছে।
 যুদ্ধের জড়-বন্ধ অধিগাইয়া, ওপরে কলি
 ও শ্রুতি না মানিয়া আপন ভাষার পায়
 পড়িয়া আশ্রয় জন্মে পড়িয়া। কিছু কাল
 পরেই লোকের হাঙ্গামে বহির্জন পড়ে এক
 নিজস্বাণী সৌন্দর্যের ধারা সে হাত ধরে
 করিল ও অন্য হাতে হাঙ্গামে বহির্জন
 হস্ত রেখে করিল তখন জিন্ন হস্তে হইয়া
 অতি-পূর্ণ কান্তর হইলে লোকেরদের দয়া।
 হইয়া পুরাতন লোকের জ্বলিত উপহার
 ইচ্ছাতে সেই দিবস রাস্তার তাহালা বিলা
 রা পাইয়া বৈঠিল। সেই জিন্নহস্ত লোকের
 মাথায় কোঁচাইলে সেই রাস্তার একটা খালা
 খালাই শুধু বৈরিত পাইল। ❀

ଆହୁରି ଦେଖନ୍ତୁ

শ্রদ্ধাশ্রমের রাজধানী শরিম নগরে
 কালেতে প্রায় এক কোটি বাড়িঘরে সে
 কোটার জনা যায় যে শীঘ্রই নগর
 নগর হয়ে বড় শোভা আনু ওকত
 লোক যাবে ও যেখানে শ্রদ্ধাশ্রম
 গিয়ে যায় হু-এ নগর হিন্দাব জনা
 গিয়ে যে মাত মাত চৌদ্দ হাজার লোক
 সে নগর হিন্দাব জনা গিয়ে যে মাত
 মাত হু-এ নগর হিন্দাব জনা
 গিয়ে যে মাত মাত চৌদ্দ হাজার লোক
 সে নগর হিন্দাব জনা গিয়ে যে মাত
 মাত হু-এ নগর হিন্দাব জনা

| বাংলা কাল । | | | |
|--------------|-----|-------|-------|
| বিবিশ | মোন | অবধি | পারিত |
| নুসখা | ১ | ৫০ | ৫০।০ |
| ভেরেল টেল | ১ | ২২ | ২০ |
| গাছ মরিচ | ১ | ৩।০ | ০ |
| বারিকেল টেল | ১ | ১৪।০ | ১২ |
| তুলাকাছোড় | ২ | ০ | ০ |
| আখা কলপার | ২ | ২।০ | ২।৫০ |
| পাটমাই আনা | ১ | ২ | ১৫ |
| চাঙ্গোপটাই | ১ | ১।৫ | ১।৫০ |
| পাছড়ি উজর | ১ | ২।১/২ | ২।১০ |
| পাছড়ি মধ্যম | ১ | ২।৫ | ২।৫০ |
| মুণী উজর | ১ | ১।৫০ | ১।৫০ |
| মুণী মধ্যম | ১ | ১।৫ | ০ |
| বাগান | ১ | ১।৫০ | ১।৫ |
| মুখা ঘোম | ১ | ১।৫ | ১।৫ |
| পাটলাই কুঁ | ১ | ১।৫০ | ১।৫০ |
| আবুতর আদি | ১ | ২।৫০ | ২।৫০ |
| উজমারান মৃত | ১ | ১.০ | ১.০ |
| মধ্যম মৃত | ১ | ১.০ | ১.০ |
| উজলা মৃত | ১ | ১.৫ | ১.৫০ |
| মধ্যম উজলা | ১ | ০ | ০ |
| মোমলাই | ১ | ০.৫০ | ০.৫ |
| মিছড়ি উজর | ১ | ১.০ | ০ |
| মিছড়ি মধ্যম | ১ | ১.০ | ১.০ |
| মোহর উজর | ১ | ০.৫০ | ০.৫০ |
| মধ্যম | ১ | ০.৫ | ০.৫০ |
| মিট মধ্যম | ১ | ১.৫ | ১.৫০ |
| মধ্যম | ১ | ১ | ১.৫০ |
| কড়ি মিতা | ১ | ১.০ | ১ |
| ভেরেল | ১ | ১/৫ | ১/৫ |
| পাটলাই | ১ | ৩।০ | ৩।০ |
| মধ্যম | ১ | ১.৫ | ১.৫০ |

[illegible]

সমাচার দর্পণ

১১৫ সং-১৮৭১

শনিবার।

১ জানুয়ারি মঙ্গল ১৮৭১

১৩ আশ্বিন মঙ্গল ১২৭১

দর্পণে মূল্য পৌরস্বত্বের কার্যবিবরণঃ বৃত্তান্তনিবন্ধ নামক সমাচারে দর্পণে ॥

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির শতকরা জয় টাকার মূল্যের
কাণ্ডের ফল করিতে হইলে শতকরা তিন
টাকা আট আনা প্রিমিয়াম। বিস্ময় করি
তে হইলে শতকরা তিন টাকা প্রিমিয়াম।

সম্ভারের পঞ্জিকা।

| | | | | |
|---|---------|--------|-----|--------|
| ১ | আমেরিকা | পনিবার | ১.০ | আশ্বিন |
| ২ | ২ | ২ | ১.০ | ৩ |
| ৩ | ৩ | ৩ | ১.০ | ৪ |
| ৪ | ৪ | ৪ | ১.০ | ৫ |
| ৫ | ৫ | ৫ | ১.০ | ৬ |
| ৬ | ৬ | ৬ | ১.০ | ৭ |
| ৭ | ৭ | ৭ | ১.০ | ৮ |
| ৮ | ৮ | ৮ | ১.০ | ৯ |
| ৯ | ৯ | ৯ | ১.০ | ১০ |

ইস্তাহার বেয়া গাইতেছে।

যে যোকায়ে বাহার নিকটে এই
সম্ভারের পুস্তি সম্ভারে পাঠান যাই
তেছে বুঝিতে পারি যে তাহারদের মাঝে
পূজাযোগ্য কেহই নেই। যোকায়ে হইতে
আপন ঘরে যাইলে অতঃপর তাহার
দিগের কাজ কোন তারিখ অবধি কো
ন তারিখ পর্যন্ত কোন যোকায়ে পাঠাই
তে হইবেক তাহার তারিখ বহু সমাচার
সম্বন্ধিত্যে আশীষী সম্ভারে যোকায়ে
স্বায়মুন্দের জানানায় পাঠাইবেল
ইহার নিমিত্ত সমাচার না পাইলে
যাহার কাণ্ড যেখানে পাঠান যাই
তে তাহার কাণ্ড সেইখানে পাঠান
যাইবেক ইতি।

সমাচার দর্পণ।

বোম্বের নিকটবর্তি দেশে যুদ্ধ।

এই যুদ্ধ সম্ভাবনার বিষয় আমরা পূর্বে
নিখিয়াছি যে ইংল্যান্ডেরদের পক্ষীয়
তের হাজার সৈন্য যুদ্ধার্থে গিয়াছে।
এখন তাহার বৃত্তান্ত অরগত হওয়া
গেল যে এই সৈন্য ছিল ইহল যো
কাদের নিকটবর্তি পুরমণে পিত্তিরি স্বকণ
কতক তাহা হইতে উঠিল ইংল্যান্ডের
তাহারদের পক্ষীয় সৈন্য পাঠাইল।
পরে ইংল্যান্ডেরদের এক স্বাধীন রাজার
দেশ দিয়া যাওয়ার আশঙ্ক্য হইলে ঐ
স্বাধীন রাজা আপন দেশ দিয়া তাহার
দিগকে যাইতে অনুমতি করিলেন। ঐ
দেশ দিয়া যাইতে ইংল্যান্ড সৈন্যের
সম্মুখ কতক সৈন্য দেখিল ও তাহার
দিগকে সেই তাহা হইতে আন করিয়া
আনককে সম্ভার করিল। পরে আনা
জান যে ঐ স্বাধীন রাজার সৈন্য সকল
সৈন্য। পরে ইংল্যান্ড সৈন্যেরা ঐ
রাজার নিকটে আপসারেরে অপরাধ
স্বীকার করিল ও কহিল যে আমরা বিস্ম
য়িত্তে এই কথা করিয়াছি। ঐ রাজা
তাহা নীতিমত্যা আপসার আর সকল
সৈন্যকে স্বকণ দিয়া ইংল্যান্ডেরদের দশ
হাজার গুম্ব লুট করাইল। ও ইংল্যান্ড
ইংল্যান্ডেরদের দেখালে অনেক সৈন্য পাঠা
ইয়াছে।

সম্ভারের বিষয়।

কাশ্মীর হইতে সম্ভার আনিয়াছে যে
কাশ্মীর যোকায়ে এক জন মহারাজা দেশী
মুসলমান দুই লক্ষ টাকা দিয়া মুসল
মান বংশের মূল্যবানকা তাহার স্বী ম
হামানে ওয়োচী করিল তাহাতে সে
খানকার পতিতের দিগের ব্যবস্থাসমারে
তাহার সম্ভারন দ্বিগুন হইল না। ইহা
ক্রে সে মুক্ত শরীর দুই দিন দিবস পর্যন্ত
গৃহ হইয়াছিল না। পরে যে দিবস তা
হাকে বাহ করিল সে দিন সে স্বী তাহার
শরীরের অধি কতক রাখিল। ইহাতে
অনুমান হইল যে সে স্বী কানপুস্তি
হইলে ঐ অধি লইয়া অনুমারন করিবেক।
ইহা আনিয়া সেখানকার অধিক পতি
তের ব্যবস্থাসমারে তাহার অনুমারন ও
বাহন করিয়াছেন যে সে স্বী কামল ও ঐ
জন মহারাজে পারিবেক না।

সে স্বী বন্ধুকে তা ঐ দেশের পোতে
সম্ভারের আনকলে সে স্বী পোলের
বংশের ব্যয়সম কহে কিন্তু তাহার পক্ষ এ
গার বংশের ব্যয়সম কহে তাহার মাঝে
এ বিষয়ে কিছুই কহে নাই। কিন্তু ঐ পতি
দিবস কিছু তাহার ধরে নাই। এবং মহ
মারন বাহন হইলে কহিল যে আমি অন্য
হারে পুনর্ভাণ্ডী করিব।

নোকা।

ইংল্যান্ড দেশে এক নগরে প্রমত্ত নৌকা
পুস্ত হইতেছে যে তাহাতে কানপুস্তি

সমস্যা

ইতিহাস আরম্ভ নাই নো নো কোণে
কিন্তু পুরাতন ওন ওড়িতে পীর না।

বস্তুবাদ :

এক তাহাজ ১১ মে মাসে ই-গ্রুপ
আফ্রিকা ৫ সত্বেই নি-হুদারী নতরিল
এক মেম্বার দুই সাহেব ও এক বিবি
আফ্রিকার হাতে নাছিল। পর বিবন দুই
পূহর এক ঘণ্টার মধ্যে সে আফ্রিকা নি-
হুদারী আছিল সেই বিবন আট ঘণ্টা
সাত্রর কালে অতিশয় ভয় ও ব্যক্তি ও
বিদ্যুৎ আটক হইয়া সেই তাহাজে
বস্তু পড়িল। দুই জন গোঁরা লোক তখন
লি মরিল। তাহাজের মধ্যে দুইটি ও
একটি হইল যে তাহাজের মধ্যে দুইটি ও
একটি পুত্রিকি কিছু বাহির করিতে পারিল
না। পর তাহাজের মধ্যে দুই লোক নাই
ইয়া যে দুই জন লোক তাহা নাই
এক লোক সেই লোকের ওড়িল। পর
দশ ঘণ্টা রাশির মধ্যে তাহাজের বিড়ায়
ও তৃতীয় মাস্তুল পুড়িয়া পড়িল তাহাজ
অবধি ঘণ্টার পর দুই মাস্তুল পুড়িয়া
পড়িল। তখনকার লোকের লোকের
মকল রাশি হইত বাহিয়া পর বিবন দশ
ঘণ্টার মধ্যে সেই হেণ্ডর এক লোক
পাইয়া তাহাজে ওড়িল গিয়া পড়িল।
কোন লোক সাহেব লোকের তাহাজ
বিবনের আলক ওড়িল করিল।

পারিশ পহর :

কিন্তু যখন ৮ মে তারিখে রাতে তা
কর হরকরা তাহাজের পারিশ পহরে
বাহিরেছিল তাহাজের মধ্যে মারের মধ্যে
অবধি আফ্রিকা দুই গোলা পড়িয়া
একজন মৃত ওড়িল করিল কিন্তু কাল পরে

অতিশয় দুঃখের মধ্যে এক-একটি পহর
কর গাছ পাইল দুই ঘণ্টার নিখোঁস বস
হইল।

গোলা :

গাও যে মাসে লতন নগরে এক রাশিতে
যে লোক পুরাতন (মদা) হইয়াছিল তাহা
তে লোকের বিবনের মধ্যে গাছ লক টাকা
নাও ও অপর হইয়াছে।

গোলাতে দুই :

ই-গ্রুপ যখন এক ঘণ্টা আটক যে
গোলাতে এক দিনের মধ্যে এক পত
হাটি টাকা লাভ করিতে পারিল কিন্তু
ইহার অধিক যদি কেহ লাভ করে তবে
তাহাজের লাভের হও হিতে হয়।

বিবরপুল গোলায় এক জন গোলাতে
এক বিবন এক পত হাটি টাকা লাভ কর
কিন তাহাজের আট পত টাকা হও নাছিল।
সেই লোক তাহাজের পর বিবনে যেছিল তা
হাতে অতি পত টাকা লাভ করিল তাহা
তে তাহাজের গাছ তাহাজের টাকা হও হইল।

লতন পহর :

লতন পহরে এক পুখ অর্থাৎ কীক
কর রাশিয়া অন্য এক ঘণ্টা হাওয়া মদা
নালাগি করিতেছিল তাহাজের কীক
হইয়া তাহাজের নিকট হাওয়া আসক
মদা হইতে নাছিল। পর সেই পুখ
কোলাতে হইয়া এক ঘণ্টা পাইল করিল
তখনই কীক মদা হইতে নাছিল।
পুখ অর্থাৎ লতন পহর মদা হইতে
করিল তাহাজে সে কী তাহাজের হাওয়ার
অবধি দশ পত করিল। পর তাহাজের
বিবনের বিবনের আলক আসিয়া মকল আট
হইল।

পুখ :

মদা ১৭৯৪ মনে ক্রান্তিদের আফ্রিকা
কর সহিত পুখ করিতে গেল এক
অফ্রিকার লোক ও মদা হইয়া দশ ঘণ্টা
রাশি মদা আছিল। পরে ওড়িল মদা
মদা হইলে ক্রান্তিদের মদার তুরী
বাহির অফ্রিকার মদা গোলায় আফ্রিকা
কর মদার মধ্যে মিলিল। আফ্রিকা
কর আছিল না যে সে অন্য পহর তুরী
বাহির ১. পর সে আফ্রিকা মদার
কর পহর মদার তুরী করিল। ইহা
তে আফ্রিকা মদার মদার পহা হইল। এই
পুরাতনকে অন্য গোলায় ক্রান্তিদের আ
পুখ হইল।

ওড়িল :

ই-গ্রুপের এক নগর এক সাহেব আছিল
নর তিন মাসের মধ্যে এক পুখ ও তেজ
মাসের মধ্যে এক পুখ এই দুই পুখকে মোট
এক গাভিতে ওড়িয়া গাভির বাহিরে
এক গাভির মধ্যে লইয়া এই দুই পুখের
গাভির ছুরি দিয়া মারিল ও আন গাভির
ছুরি দিয়া পড়িল। এই সময় লোকের
কোয়া তাহাজে বিবনের আলক আসিয়া
বিবনের করিয়া আছিল যে ওড়িল হইয়া
এক কথ করিয়াছে। কিন্তু সে সাহেব
কীক এক ওড়িল হইতেছিল।

মদা :

লতন পহর পারিশ ও গোলা লোকের
কি-মদার করণ যে কি-মদার মদার
আটক তাহাজের মধ্যে এক জন পারিশ ও
এক গোলা এই দুই জন মধ্যে পরের
হানা কীক ও বাহির করিতে ওড়িল
তারিখে কি-মদার মদার মদার
যে দান আটক সেইখানে পারিশ ও

সমীচীন দল।

রোগীকে মাটিতে ফেলিয়া শরীরে আ-
ঘাত অনেক করিল ও নাক মুখ কাটিয়া
অন্য গলার মতো অল্প দিন ডাখল তা-
হার শব্দ শোনা যায় হাতে রক্তক দূই জন
আনিয়া তাহা দেখিল ও পাগলকে বহি-
র করিয়া ফেলিল কিন্তু বহিতে পারিল না
এবং অন্য এক পাগল আনিয়া তাহার
শরীরে বাইয়া দূই হাত সময়ে শরীর
থেলন করিয়া বহিল। পরে রক্তকরা
তাহার হাতহাতে অল্প ক্ষণে বহন
আখাতি লোককে বহরর মতো পাইয়া যে
ছিল যে তাহার সাত হাতে অশ্রাব্যত
করিয়াছে এবং অধিরত রক্ত পড়িতেছে।
পরে চিকিৎসার ওষোণী করিতে শৈলনর
মিটিত অন্তরে সে মারিল। পরে তাহার
বিচার হইল তাহাতে হকুম আছে যে
কোন পাগলের হাতে অল্প থাকিলে না।
ইহাতে রক্তক অন্তরীক্ষণে ডাখল তা-
হার অন্তরীক্ষ হইল না যেহেতু পাগল
কে অল্প কেহ দেয় নাই চিকিৎসার
সম্মুখে যে স্থানে তাহাকে রাখিল সেই
স্থানে নতুন বস্ত্র দেওয়াতে তাহার মতো
পুঁতাডন এক ছোঁড়া ও আর কীট পাইল
ডাখল সেই বস্ত্রের গিয়া ডাক্তার
করিয়া তাহার হাত। রোগীকে মের করি-
ল। বিচারকর্তারা সে পাগলকে জিজ্ঞাসা
করিল সে অনাশ্রিত কথা নহিতে লাগিল
তাহাতে তাহাকে প্রকৃত বহর করিল।

আত্মহত্যা।

এই সমাজে যো- সূত্রাকর্ষী গোত্রের
এক বিশিষ্ট ব্যক্তির স্বী আশ্রিত বাটার
অন্য স্বী লোকের সহিত বিবাহ করিয়া
কিন তাহাতে সৌভাগ্য প্রাপ্ত বিবাহ
হইল ইহা অন্য এক স্থানে কহিল এই
আমি চিয়া জনে কহিয়া মরি। ইহা

কহিয়া অন্য দিগের রক্ত উল্লাসি মরন
করিয়া শূন্য করিতে কহি নহিতে গেল।
পরে অলে পুষ্টি হইয়া একবার ভাগি-
য়া ওঠিয়াছিল তাহাতে একবার লোকেরা
দেখিল কিন্তু পুষ্টির আর যেথা গেল
না। পরে তাহার বাটার লোকেরা অলে
ক অনুসন্ধান করিল যেথা পাইল না।
অন্য দিগে গিলের পর বেড়ি আলের
মতো তাহার শরীর পাওয়া গেল।

চোরের বৃত্তান্ত।

শ্রীমদপুর হইতে এক সাহেব আশ্রিত
বিবী ও রেপালা লোকের করিয়া এক
বস্ত্রহাতে ওঠিয়া উত্তর দিকে কোন কর্মে
যাইতেছিলেন তাহাতে পাটুর মোকা
যেই সাহেব দূই দিন দিন থাকিলেন।
ইতমবসর এক জন আতিথ্য লোক সু
আশ্রিতের কুণ্ডে বাইয়া সেই সাহেবের
আজ্ঞার এক সাহেবের লিফট অতি দুখী
ভাবে কহিল যে অমূল সাহেব তোমার
এখানে আশ্রিত ছিলেন পথে বজরা কু-
য়া। সে সাহেব ও তাহার দুই চাকর
মোকা পড়িয়াছে জ্বল অগ্নি বীভৎস
আর সাহেবের বিবকে বাঁচাইয়া দিয়া
কীটার বস্ত্রাতি করি নাই এবং এখান
আশ্রিতের কথা কিম্বা শ্রীমদপুর পাওয়ার
লোক ভাঙা রাস্তার মতই নাই।
ইহা শুনিয়া কুণ্ড সাহেবের বিলফল
জাতি জমিল যেহেতু সে সাহেব মারিয়া
আনিয়া থাকিল এবং আইনুলের কড়
ছিল। ইহাতে কুণ্ড সাহেব অশ্রিত
দুখী হইয়া সেই লোকের নগর ১০ মণ
চোকা ও দুই পুন্ড বিবাহালা বস্ত্র দিলেন
এবং কহিলেন যে যোগ যদি এখার
আইনেন তবে এখানে আশ্রিত কিম্বা
শ্রীমদপুর যাইতে বাসনা করেন তবে

শ্রীমদপুর নাইয়া যাইবা। এই কহিয়া
তাহাকে বিবাহ করিলেন। তাহার দুই
বিবস পরে সেই সাহেব বিবী সময়ে সু
আশ্রিত পড়িলেন কুণ্ড সাহেব তাহাকে
দেখিয়া পরমাশ্রিত বোধ করিয়া পরমা
দুখিত হইলেন ও সকল বস্ত্র সাহে
বকে কহিলেন। পরে তাহার সে লোক
বিবাহের নানা চেষ্টা করিলেন কিন্তু কিছু
সময়ান কোনখানে পাইলেন না।

বস্ত্রের দুর্ভাগ্য।

কটন ও যেন এক নারের বস্ত্র শিমুলের
এমত তত্ত্ব লিখিয়াছে যে তাহাতে
আশ্রিত পুষ্টি অল্প এবং যেখানে
বোঁহা বস্ত্র ও বোঁহায়ের জিহ্বা ও তত্ত্ব
অল্প এবং আশ্রিত সাহেব ও তত্ত্ব
লিখিয়াছে এবং তাহার নামের কড়
অল্প ও সেই আশ্রিতের বস্ত্রমূল ও
তত্ত্বহা হইতে ইহাতে সূত্রের লক্ষ
নাই।

চিরজীবী।

শ্রীমদপুর নগর ১০ জন লোকের
আছে তাহার অনুসন্ধান ও যেন ১০ জন
মলে তাহার অন্য হইয়া অশ্রিত বস্ত্র
মান আলে দিভ্য অর্থাৎ ও তত্ত্ব অর্থাৎ
ও তত্ত্ব অর্থাৎ আশ্রিতের আশ্রিত সময়ে পুষ্টি
কে কারণ পুষ্টি তত্ত্ব করিয়াছে তা-
হার বয়স ১০ বৎসর হইল।

অশ্রুত্যা।

শ্রীমদপুর লোকের আশ্রিত গোত্র
বাসন হাম নামে এক জন বৈবক আ-
শ্রিত লোকের ব্যক্তিগত আশ্রিত কিন্তু এক
দিন পুষ্টি অল্প দেখিয়া তাহার সহিত
কনহ করিল। ইহাতে তাহার আশ্রিত
কোই জমিয়া সেও বৈবক লোক নগর

সমস্ত চরিত্র নষ্ট।

কম দেখা হৈতে লাগিল তুমিতে বৈকুণ্ঠ
আগিল অস্তঃকরণে অতিশয় মেদাপন্ন
হইয়া। এক দ্বারে বাহিরে অপমানিত হই
য়া আত্মনি অলে তবুয়া মরিয়াছে।

॥ मां दुष्टां ना ।

যোদ্ধা কলৌষ শব্দইহঁতে বুঝায়
মিথ্যে ভাবাবেগ গত জ্ঞান যাহার
স্বার্থ হুতা এই জ্ঞান যেহেতু তখন
কায় বশ শব্দ ও গোচর কোন শ্রেণ ঘটে
নিহি এবং এত কড়াই যোগ শের ও বৃত্ত
সত্ত্ব শব্দ ও অজ্ঞানের আভাস শের। সে
যোগে এই জন শমন দুখটা কিছু কাহার
পূর্ন ভাগী হয়ত দুখাল গবে। ইহার
কাৰণ এই যে কলৌষ পুনরশ শৌর বি
স্তর এবং তাহারপর রামোষ্ট্রভাস
শনা মেখানে ও-শব্দ হয় সে যোগেই
তে অন্য যোগে শনা চানালইলে নৃত
নে যোগে দুখটা হয় এবং অন্য
যোগেইলে সে যোগে শনা অব্যাহালী
হয় না।

खाद्यः ।

কড়ক দিন হইল নবাবের ক্ষয়
যৌ- হাতিও নী পায় এক বাণু আসি
যা আসল লোক ও কী মারিত লালি।
ইহাতে পুণ্যের মকল লোক ভগ্নপূর্ণ
কোঁকিলের বরহেতে বাহির হইত না।
বিরাম এক মার্গহরের বস্ত্রা ও পুণ্যের
পায় এক মকল ছিল। ডাহাও ও পু
নয়ন মকল লোক হইয়া পরামর্শ
কিয়া মকল (যে অস্ত্র) মকল ও ইহা
হবেব নিকটে যাওয়া বাণুপূর্ণ বিদ্যুত

[illegible]

कलकत्ता १५/१२/२०

বলম্বন যখন প্রথম আশ্চর্যকর কথার
 করিয়া বেশে সম্মিলিত - তখন বার
 সারি তাহারে যথেষ্ট সম্মান করিলেন।
 জাহাজে সেখানকার জাহাজদার
 ইচ্ছাকরিয়া বহিল যে বলম্বন হি আশ্চর্য
 কবির করিয়া লোকেরা ঘোষণা - যাহা
 কবির তাহার কিছু অবিকল বুঝিয়াছেন।
 ইহা শুনিয়া বলম্বন কহেই তিনি 'নয়'।
 কহিলেন যে এই ভিন্ন ভাষার কবুজার
 পুর করহ। তাহা কেহ সাধিল না। পক্ষ
 বলম্বন সেই কবুজার। এই কবুজার
 দিয়া তাহার এক খণ্ডে কবির - কবির
 কবিলেন এই অশ্রুপূর্ণ পুর কবিল - তাহা
 যেখান কবিল কবিল। কবির তাহা
 যাহা কবিল কবিল। কবির তাহা
 লেন যে এই কবির কবিলম্বন মনে
 কবিল কবিল।

राज्य का :

| क्र.सं. | विवरण | प्रमाण | मूल्य | कुल |
|---------|--------------|--------|-------|-----|
| १ | गुणवति | १ | ०।० | ०।० |
| २ | कलकत्ता टिकन | १ | १२ | १२ |
| ३ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| ४ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| ५ | गुणवति | १ | ० | ० |
| ६ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| ७ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| ८ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| ९ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| १० | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| ११ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| १२ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| १३ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| १४ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| १५ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| १६ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| १७ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| १८ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| १९ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| २० | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| २१ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| २२ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| २३ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| २४ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| २५ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| २६ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| २७ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| २८ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| २९ | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |
| ३० | गोखल टिकन | १ | १।० | १।० |

ଏହି ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ନିମ୍ନଲିଖିତ ପ୍ରଶ୍ନାବଳୀର ଉତ୍ତର ଦିଆଯାଇଛି ।

ପ୍ରଶ୍ନ ୧୫ :- ମୁଖ୍ୟମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ନାମରେ ଗୋଟିଏ ଲେଖା ଥାଏ ଯେଉଁଥିରେ ଗୋଟିଏ ଲେଖକ ଗୋଟିଏ ଲେଖନୀଙ୍କ ନାମରେ ଲେଖିଛନ୍ତି । ଏହି ଲେଖକ ଲେଖନୀଙ୍କ ନାମ କିଏ ? ଏହି ଲେଖକ ଲେଖନୀଙ୍କ ନାମ କିଏ ? ଏହି ଲେଖକ ଲେଖନୀଙ୍କ ନାମ କିଏ ?

ଉତ୍ତର :- ଲେଖକ ଲେଖନୀଙ୍କ ନାମ କିଏ ? ଏହି ଲେଖକ ଲେଖନୀଙ୍କ ନାମ କିଏ ? ଏହି ଲେଖକ ଲେଖନୀଙ୍କ ନାମ କିଏ ?

গতি ৪ জনে ইংরেজের রাণী প্রতিনিধিত্ব
 নাইতে ইংরেজের জোবর লগাল দিহরি
 লেন যখন তিনি পুণ্য ইংল্যান্ডে আহা
 হইতে নামিলেন তখন ইংল্যান্ডে লোক

সমীচীর দর্পণ।

১৮৮৩-৮৪ ইয়া এই কথা কহিয়া অতিশয়
 কোলাহল করিতে লক্ষণ যে ঈশ্বর
 রানীকে দীর্ঘ কাল বাঁচাইয়া রাখিল।
 অপর তিনি রাজবাণী নগর গমনে যাই
 তে গাভিতে রক্তিমেন তাহাতে লোক
 তা আশিয়া তাহার গাভিহইতে ঘোড়া
 মারিয়া দিয়া আশনার গাভি টানিয়া
 মাণিল। পর তাহারে পথিকালয়ে
 নাইয়া গেল এবং সেখানকার রত
 সাহুর ও আত্র পুহাল সাহেব লোক
 তা একত্র হইয়া ঐ রানীকে এক পুশ-মা
 পুশ লিখিয়া তাহার দিকট নাইয়া গেল।
 তাহাতে রানী অত্যন্ত সন্তুষ্ট হইয়া
 তাহার ওপযুক্ত ওতর লিখিয়া দিলেন
 এবং ঐ সকল সাহেব লোকের সন্তু
 করবার কারন আপন হাত তাহার দিগ
 এক হুসন করিতে দিলেন। পর তিনি
 কাছের দিগে নামে নগর যাইতে ঘোড়া
 করিলেন তাহাতে তিনি যে পথের নগর
 মধ্যে গেলেন সে পথের নগরই লো
 কেরা তাহার গাভি টানিয়া নাইয়া গেল
 নাইহইতে বাহির গিয়া তাহার গাভি
 তে ঘোড়া ঘোড়া গেল। পরে অল্প
 দূর হইলে সেই কারহইতে এক পত
 লোক মশাল আনিয়া তাহাকে নগর
 মধ্যে নাইয়া গেল এবং অনেক লোক
 কোলাহল করিয়া পুশ মত পুশ করিতে
 লক্ষণ ও আশনার গাভি টানিয়া নাইয়া
 গেল এবং ঐমত এক পুশ-মাশপত্র তাহার
 দিকট আনিব এই কথা বলন নগরপথ
 দিকটিলে তিনি যে সকল গুম্য দিয়া
 গেলেন সবই এই বন বহবার করিল।
 পর যখন তিনি লখন নগরে পৌছিলেন
 তখন ইহার গাভি ও ঘোড়া চকিয়া
 লোকেরা নগরে বাহিরে তাহার অন্তর
 দিয়া আনিতে গেল। পরে তিনি লখন নগ
 রে এক পুহাল পুহাল বাহিতে গুম্য ও

দিতো হইয়া! বাঁহিরে বারমধ্যে দাঁড়াইয়া
 লোনেবুদ্বিগকে দীর্ঘকাল ছিলেন ওমান অস
 তা এই কথা কহিল যে ঈশ্বর দানীকে
 রক্ষা কলন এবং দানী চিরজীবিত হইল।
 এবং ঈশ্বর দানীকে আশীর্বাদ করত এই
 কথা না কহিয়া এবং তাহাকে সোলায় না
 বদ্বিয়া ডা. পরিচালক কহি কোণ পড়িল
 কেও মাইতে ছিল না।

বেরা ভাষিন ।

১৪) সেজোর বাগিচার মূলম্যানের
মের (কো) ডাঙার গিলাছে তাইতে মূল
ম্যানের দেহের নেতৃত্ব আনুক সম্মান
পূর্বক বিষ্ণুর রোমনায় করিয়াছেন এবং
তদ্রূপ কোমলি সম্মানই সাধবে কোনের
দ্বিগত নিমন্ত করিয়াছিলেন এবং
১৫) শ্রীশ্যাম ডাঙার মূলক করিয়াছিলেন
এবং লয় বড় শ্রীশ্রী সম্মান ভোগ করি-
তাম ও গৌরব ও গৌরব আলোক দ্বারা
একময়িতর মত দেখা গেল যে অতি
মুখ্য এবং সেখানকার আর ডাঙা
মের (কো) লোনা পুকার রোমনায়
করিয়াছিলেন কিন্তু গভ বসন্তের মত
হয় নাই।

ভূমিকমল !

১৯ মেম্বর শুকবার রাতি শু ঘণ্টার
ময় মাঝামাঝি মুরশীদাবাদি অঞ্চলে ভূমি
কম্বু হইয়াছিল।

माहसिखा श्री ।

ଦେଖିଲେ ଏକ ସ୍ତ୍ରୀ ଆମନ ମୁଣ୍ଡରେ
 ବସି ଥିଲେ ନୟା ମୁଣ୍ଡରେ ପାରିଦେଇ
 ମଧ୍ୟାସାୟ ଏକ ଡାକରୁ ଆସିଲା ଡାହା
 ଡାହାଣ ଡାହାଣ ଦିଗରେ ନିଶ୍ଚୟ

রাখিয়া তাহার হৃদয়ে ঢাকা চাহিল। তা-
হাতে ঐ দুইটুকি নাখিয়া তাহার মনিত
লড়াই করিতে লাগিল। পরে কোন কোন
লক্ষ্যে তাহা হইতে হাত হইতে তাহার
বন্ধুর কাড়িয়া লইল। এই সময়ে ব্রহ্মান-
সিদ্ধি তাহা মনুষ্যের নিকট আসিয়া গৈ-
লি তাহা দেখিয়া জগদীশ্বর পশ্চাদ্ধ-
করিল। সে বী ঐ শিশু লইয়া আসিল
বহুরে চলিয়া গেল।

इति॥ अथा॥

গীত যে মোসে ই-ধ্রুবে এক স্বী যেহান
 পুণ্ডিন শব্দন করিত সেইজন হাফ্রত
 আঁদন কুণ্ডিতে গিয়া শয়ন করিল পরে
 শূণ্ডিহাল হইলে ডাণ্ডি পরিহার লোক
 গিয়া দেখিল যে সে এক তৌদির
 ওপর বসিয়া মরিয়া : হিয়ারত কেই বড়
 নজান করিতে পারিল না কেই তু-
 মোন করে যে ঐ দানিত হাও এ বিদু-
 ও অভিমুখে গর্তা হুয়-জিল ডাটা
 তে ডহার কুণ্ডিতে বজ্রাণত হইয়া ডা
 হার মুখ হইয়াছে ঐই ধর্মবিহার নয়
 মাস মুখ ডহার স্বাক্ষর কাল হইয়াছিল
 এমন ডাহর এগুণ নজান আছে।

श्री विष्णु !

[illegible]

সমাজের দর্পণ।

অপ্যাকোহি।

মহাশি বেসাইতে সমাজের আশ্রয়
যে মেথানকার রাজা নিম্নলিখিত
এক পৌত্র হইয়া এক মান পেরে মরিয়া।
ইহাতে সকলে অতিশয় কাতর হইয়া বা
বহাঙ্গনাদিরে কর দিল। দুই তিন দিনের
পর এক বৃষ্টি ঝড়র এই নগরে আনিয়া
প্রাণল যে রাজার পৌত্র মরিয়াছে ইহা
তে রাজা পৌত্রাঙ্কল আনেন। অকর
নগরমধ্যে ক্ষুদ্র বালকের মত
করিয়া এক গৌরালার বাটতে দেখিল যে
তাহার এক মানের এক বালক আছে।
ইহাতে সে গুরুতর তাহার বাটের নি
কটে রাখিল। পরে অনুমান দ্বয়ে দুই-বে
নার সময়ে এই গৌরালার স্ত্রী আপন
ঘরে বালক রাখিয়া এবং এই বালকের চো
কোর কারণ আর এক পঞ্চম বয়সি বালক
কে রাখিয়া আপন মাঠে আপন বামির
নিপটে খায়া দুয়া লইয়া গেল। এই
অবকাশে এই বৃষ্টি অকর তাহার বালকে
চুর করিয়া লইয়া রাজবাটীতে গিয়া
কহিল যে পীত ত্বিন্ন হইল। মহারাজের
পৌত্রের কাল হইয়াছিল আমি তাহাকে
বাটাইয়াছি। ইহা শুনিয়া রাজা ও আর
সকল লোক চমকিত হইল। এবং
বালকে দেখিতে আইল তাহাতে কেহ
কিছু ক্রিয় অস্তর করিতে পারিল না।
নগরমধ্যে এই কথা প্রচার হইলে এই
গৌরালার স্ত্রীও তাহা দেখিতে রাজবা
টীতে গেল এবং বালক দেখিয়া কহিল
যে এই বালক আমার ইহাতে সকল লো
ক তাহাকে ধমকাইতে লাগিল। পরে সে
আপন সম্বানের স্নেহে নিতরুণ (চো
ইয়া কহিতে লাগিল যে আমার সম্বান
কে চুর করিয়া আনিয়াছে। পরে রাজা ও
সিয়া এই গৌরালার স্ত্রীকে তাৎক্ষণিক কহি
লেন যে আমার পৌত্র মরিয়াছিল এই

অকর অকর করিয়া তাহাকে বাটাইয়া
লেন তুমি তাহাকে কি প্রকারে আপন
সম্বান করিতেছ। তাহাতে এই স্ত্রী কহিল
যে মহারাজ আপন কণ্ডা আমি নিম্নলিখিত
চিন্তিয়াছি যে এই বালক আমার আপন
বিচার করল। রাজা কহিলেন যে
তাল আমার পৌত্রকে কবর দেওয়া গি
য়াছে সেই কবর দেখিলে পুত্র হই
বেক। ইহা কহিয়া কবর খনন করিতে
আজা দিলেন ও চাকর করিয়া তাহা
খনন করিয়া দেখিল যে বালক তাহার
মতী আছে। পরে রাজা এই অকরের পর
তা দেখিয়া এবং প্রিয়পাত্র তাহাকে
কবর রাখিতে আজা দিলেন।

হারা।

সম্প্রতি পৌত্রাঙ্কল সহিত যে ই-প্রতী
য়েরের মুখ হইয়াছিল তাহাতে ই-প্র
তীরের আদ্র হইয়া তাহারের মুখাধি
লুট করিয়াছিল সেই সকল লুটিত ব
স্তুর মধ্যে এক হারা পাওয়া গিয়াছিল
তাহার মূল্য এক লক্ষ ঘাতি হাজার টাকা
সেই হারা এখন লণ্ডন নগরে কোয়ার্টার
খাজাখী ঘরে বিক্রয়ের কারণ পুস্তক আছে
বিক্রয় হইলে এই তাব টাকা সেই সকল
অগ্নি সৈন্যেরের মধ্যে অংশ করিয়া
দেওয়া যাইবেক।

সি-হলসী।

গত ১২ মার্চ তারিখে ভারতবর্ষেইতে
এক নিম্নলিখিত লণ্ডন নগরের বাই ঘরে
পাইছিল সেই নিম্নলিখিত মতী নানা
পুকার দুখাধি ছিল বিশেষতঃ ১৮৪৪ সালে
যে সি-হলসীনের রাজার সম্বন্ধ ই-প্র
তীরেরের মুখ হইয়াছিল তাহাতে লক্ষ
এক ঘরের রাজাকৃষ্ণ ও ঘরের মুখাধি
লক্ষ ২৫০ বহুমূল্য পুস্তকাদিতে মুখাধিত

এক লক্ষ। এবং বাংলা ও কবজ ইত্যাদি
নানা পকার অলঙ্কার ও মণি মুক্তা পুস্তক
অনেক ছিল তাহা দেখিয়া ই-প্রতীর
বাহিনীই সকল দুখা বিক্রয় করিয়া অগ্নি
সৈন্যেরাধিকে দিতে আজা করিয়া
লেন।

বৃহৎ ভেড়া।

ই-প্রতীতে এক লোক বিক্রয় করিবার
কারণ এক ভেড়া পুত্রাঙ্কল করিয়া অতি
বড় করিয়াছিল। সেই ভেড়া এখন
কম্বাইর লিফট বিক্রয় করিল তখন কম্বাই
ওজন করিয়া দেখিল যে সে তিন মোল
বার পের।

লণ্ডন চুরি।

ই-প্রতীতে এক সাহেব এক পুকার চুরি
পুস্তক করিয়াছে তাহাতে এক শতখান
চুরি আছে এবং যত পুকার চুরির গড়ন
হয় সে সকল রকম তাহাতে আছে এই
চুরির মূল্য আট শত টাকা।

সোনা রপার আয়দানী।

১ নেম্বর অর্থাৎ ৩০ ব্রহ্মপুত্র
এক মানের মতী নানা বেসাইতে ন
হর কলিকাতায় ৪৯৬৩০ টারি লক্ষ ওলি
হাজার পাঁচ শত ঘোণ টাকার স্বর্ণ ও
১০৪৭৩ ঘোণ লক্ষ টারি হাজার তের
টাকার স্বর্ণ আয়দানী হইয়াছে সমস্ত স্বর্ণ
২০৩৫১২ বিশ লক্ষ ডেইন হাজার পাঁচ
শত ওলি টাকার স্বর্ণ আয়দানী হই
য়াছে।

বানিজ্য।

পঞ্চর কলিকাতায় তাবৎ দুই বহুমূল্য
গত সম্ভাব্য হইতে দুই লক্ষ আনা হয়

अनादिनाम जन्म

[illegible]

॥ अथ शिवसंज्ञा ॥

১-১৩ যোদ্ধা এক পুৰীষ বিদ্যালয়
 অতী হইয়াছে যে তাঁরা নবজাগ্রিত
 নবী এক যক্ষির গায়ে। যাহিবেক তাহার
 শত্রুত জাহা হইয়াছে হেঁকা তাহার যাহা
 হইয়াছে হেঁকা তাহার যাহা হইয়াছে
 হেঁকা তাহার যাহা হইয়াছে হেঁকা
 তাহার যাহা হইয়াছে হেঁকা

九、

কি-প্রাণে বহিঃ-হাস্য করিতে এই নাট্য-বর্গে
 লোহারি করি দিয়াছিল কিন্তু সে ঘরের
 মেজাজে বড় পক্ষ ছিল না ত-পু যুক্ত
 লোহারি করিও অভিনয় ভারি ইচ্ছাতে

হেণ্ডেল ভাটিকাটি রচিত পাড়ার সুরের প্রথম
ই বছরের বর্ষাবোধী তাহিল জল শোক
জিল তাহারিহের প্রাধা তমু জন মিলিল
ও বিন জন অস্বাদী হইল । ই মকল
আবাজী শোভিত্বিহাঙ্কে এল হাম্বাভা
নে লইয়া কিয়া ডিবিচনা করিতেহে অল
মাল হু তাহারি মকলে ইতিহিহ ল ।

20

[illegible]

ଆକର୍ଷକ ମୋହା :

ଅନାମିତ ହୋଇ ଏକ ବିଷୟ କହୁଅଛି ଏହି
 କବିତାମୟ ଆକର୍ଷଣ କରୁଥିବା ମୌଳିକ ସୃଷ୍ଟି
 କବିତାରେ ଉଦ୍ଭାବନା ହୋଇଛି ଏବଂ ଏହା ଏକ
 ହୋଇ ଗଢ଼ନ କରାଯାଇଛି । ସିଏ ଏକ ମୌଳିକ
 ଭିନ୍ନ ହାତ ଏବଂ ଉଦ୍ଭାବନା ଏବଂ ଉଦ୍ଭାବନା ମେ
 ଯେଉଁ ଅବିକଳ ନୟନ ଏହି ଉଦ୍ଭାବନା
 ଯେଉଁମାନେ ମୋହନ ନାହିଁ ଏବଂ ଏହି

बिनादि ७३५

| বিভাগ | ক্রম | কর্ম | মূল্য |
|----------|------|------|-------|
| মুদ্রা | ১ | ০.০০ | ০.০০ |
| কোম্পানি | ২ | ১.১ | ০.০ |
| গাছ | ৩ | ২.৫০ | ০.০ |
| বাগিচা | ৪ | ১.০০ | ১.০ |
| মুদ্রা | ৫ | ১.০০ | ১.০ |
| কোম্পানি | ৬ | ১.১ | ১.০ |
| গাছ | ৭ | ১.১ | ১.০ |
| বাগিচা | ৮ | ১.১ | ১.০ |
| মুদ্রা | ৯ | ১.১ | ১.০ |
| কোম্পানি | ১০ | ১.১ | ১.০ |
| গাছ | ১১ | ১.১ | ১.০ |
| বাগিচা | ১২ | ১.১ | ১.০ |
| মুদ্রা | ১৩ | ১.১ | ১.০ |
| কোম্পানি | ১৪ | ১.১ | ১.০ |
| গাছ | ১৫ | ১.১ | ১.০ |
| বাগিচা | ১৬ | ১.১ | ১.০ |
| মুদ্রা | ১৭ | ১.১ | ১.০ |
| কোম্পানি | ১৮ | ১.১ | ১.০ |
| গাছ | ১৯ | ১.১ | ১.০ |
| বাগিচা | ২০ | ১.১ | ১.০ |
| মুদ্রা | ২১ | ১.১ | ১.০ |
| কোম্পানি | ২২ | ১.১ | ১.০ |
| গাছ | ২৩ | ১.১ | ১.০ |
| বাগিচা | ২৪ | ১.১ | ১.০ |
| মুদ্রা | ২৫ | ১.১ | ১.০ |
| কোম্পানি | ২৬ | ১.১ | ১.০ |
| গাছ | ২৭ | ১.১ | ১.০ |
| বাগিচা | ২৮ | ১.১ | ১.০ |
| মুদ্রা | ২৯ | ১.১ | ১.০ |
| কোম্পানি | ৩০ | ১.১ | ১.০ |
| গাছ | ৩১ | ১.১ | ১.০ |
| বাগিচা | ৩২ | ১.১ | ১.০ |
| মুদ্রা | ৩৩ | ১.১ | ১.০ |
| কোম্পানি | ৩৪ | ১.১ | ১.০ |
| গাছ | ৩৫ | ১.১ | ১.০ |
| বাগিচা | ৩৬ | ১.১ | ১.০ |
| মুদ্রা | ৩৭ | ১.১ | ১.০ |
| কোম্পানি | ৩৮ | ১.১ | ১.০ |
| গাছ | ৩৯ | ১.১ | ১.০ |
| বাগিচা | ৪০ | ১.১ | ১.০ |
| মুদ্রা | ৪১ | ১.১ | ১.০ |
| কোম্পানি | ৪২ | ১.১ | ১.০ |
| গাছ | ৪৩ | ১.১ | ১.০ |
| বাগিচা | ৪৪ | ১.১ | ১.০ |
| মুদ্রা | ৪৫ | ১.১ | ১.০ |
| কোম্পানি | ৪৬ | ১.১ | ১.০ |
| গাছ | ৪৭ | ১.১ | ১.০ |
| বাগিচা | ৪৮ | ১.১ | ১.০ |
| মুদ্রা | ৪৯ | ১.১ | ১.০ |
| কোম্পানি | ৫০ | ১.১ | ১.০ |

এই সময়ের মধ্যে গুরুত্বপূর্ণ ভাষাভাষাতত্ত্ব গবেষণার ফল প্রকাশিত হয়েছে। এই সময়ের মধ্যে গুরুত্বপূর্ণ ভাষাভাষাতত্ত্ব গবেষণার ফল প্রকাশিত হয়েছে।

সমাচার দর্পণ

১৭ নং-৫৭।

শনিবার।

১৭ আক্টোবর মল ১৮৭১।

৩ খ্রিষ্টাব্দ মল ১৮৭১।

দর্পণে দুই সৌন্দর্য্যের কার্যনির্বাহনা ব্রাহ্মসমিতি ব্রাহ্মসমিতি দপ্তরে ॥

কোলালির কাণ্ড।

কোলালির শতকরা অর্ধ টাকার সুদ
কাণ্ড কত লিখেই হইলে শতকরা তিন
টাকা আট আনা প্রিমিয়াম। বিস্ময় করি
তে হইলে শতকরা তিন টাকা প্রিমিয়াম।

সত্যের পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|---------|-------------|---|-------------|
| ১১ | আক্টোবর | শনিবার | ৩ | খ্রিষ্টাব্দ |
| ১২ | ক | রবিবার | ৪ | ক |
| ১৩ | ক | সোমবার | ৫ | ক |
| ১৪ | ক | মঙ্গলবার | ৬ | ক |
| ১৫ | ক | বুধবার | ৭ | ক |
| ১৬ | ক | বৃহস্পতিবার | ৮ | ক |
| ১৭ | ক | শুক্রবার | ৯ | ক |

ইস্তাহার।

সকলকে সমাজের যেওনা গঠিতের
যে মোকাম কুমারমাণিক্য কুণ্ডির নিকট
পাঁচুগিরি কুণ্ডিহইতে ১৩ সেপ্টেম্বর তা
দিয়ে এক হাজার দুই শত তের বকী অ
র্থ্য-মাতে গারি মোল নীল তুলি গিয়াছে
যদি কেহ কলিকাতার অরেনেল আলিনে
কিবা কুমারমাণিক্য নিকট হল নগরে যে
লিসাহেবের নিকট প্রিয়তম সমাজের
দিয়ে পারে যে তাহাতে চোর থানা পড়ে
ডবে সে বাড়ি পাঁচ শত টাকা বখসিস
পাইলেক ইতি তারিখ ১৩ আক্টোবর।

সমাচার দর্পণ।

ব্রাহ্মসমিতি শিখোণ।

১৩ সেপ্টেম্বর ১৮৭১ সাল।

শ্রুত চার্লস মেক্সিম সাহেব জেলা
রাজসাহীর কালভর হইয়াছেন।

শ্রুত জেসস দি জ্যাক সাহেব হিজ
দির নমকদস্তুরের অধ্যক্ষের পেকার।

শ্রুত জে এলিনার্থ সাহেব পূর্ব
নমক চৌকির অধ্যক্ষের পেকার হই
য়াছেন।

শ্রুত এড নিলিন সাহেব ইটোয়া ও
কালপির বালিকার কুণ্ডির অধ্যক্ষের পে
কার হইয়াছেন।

আমিষ্য রক্ষা।

ইংলণ্ডে বৃন্দল নগরে এক ইয়র্কশায়ার
শালা আছে তাহার নাম কোল্ডন পাট
শালা যেহেতুক কোল্ডন সাহেব সে পাট
শালা স্থাপন করিয়াছিলেন সেখানে যে
বালক বিদ্যা শিক্ষা করে তাহারদের গণি
য়ে এক মৎস্যের জরি বোলটম্যান
থাকে তাহার কারণ এই ঐ কোল্ডন সা
হেব আমেরিকা দেশে ওপলীনে বড় এক
মহাজন ছিল সেখানেইহাতে যেখানে ছিল
নইয়া আহাজ বোকাই করিয়া ইংলণ্ডে
যাইতে ছিল ইতিমধ্যে মধ্যে তাহার জা
হাজের শীতহইতে জন ওপলীনে লগিল
তাহাতে গুণি আহাজ মারা পড়ে এবং
আপনার ১০ ঘাঘাশরক সময়ে সমুদ্রে
মরা হয়। ইত্যমের স্মরণার্থে গুণিক ই
আহাজের শীতে যেখানে জন ওপলীনে
সেখানে এমন এক মৎস্য সংরক্ষণ স্থান
যে তাহাতে আহাজের নীরের চিহ্ন রোদ
হওয়াতে জন ওপলীনে বিরত হইল। পর

সাহেব ঐ বিশদুস্তীর্ণ হইয়া স্বদেশে আ
নিয়া গিয়াছেন এবং বিদ্যার্থে এক পাঠশা
লা স্থাপন করিল ও আপনাদিগকে আশ্রয়
রক্ষার ক্ষমতের কারণ মৎস্য চিহ্ন বাদ
করেদের গলে দিতে সন্মত করিল।

বৈদ্যক।

দিল্লীর রাজহীলী শহর কোয়েল-
হাচেনে নগরী জন লোক এক পরামর্শ
হইয়া আল বাকিলোট করিতেছিল তাহা
সাবুদ হইলে তাহারদের মধ্যে এগার
জনের অধিকানবাই পুণ্ডিক মৎস্য রত
যিহ বইল দিল্লীর রাজহীলী শহর
আলমুহ পুণ্ডিক করিয়া তাহারদিকে
হরিনবাড়ীতে স্বশ্রী থাকিতে আতা দিয়া
জেন আর অরশিষ্ট অন্তরীক্ষকের আবু
দুত দিহীন করিয়াছেন।

লীলগিরি পর্যটন।

প্রবচন স্থানহইতে এক ভ্রমণশীল সা
হেব লীলগিরি শহরের দিগন্ত আলিতে
সেখানে গিয়াছিল এবং সে পর্যটনের
সকল ব্যক্তি আলিয়া তাহার বিবরণ লি
খিয়াছেন তাহা সকল লিখিলে বিস্তারিত
হয় তৎপুণ্ডিক মুদ্রা লিখা যাইতেছে। সে
পর্যটন পুণ্ডিক লিখিলে লিখিলে দিহীন
হইলেন সাহেব সাহেব কোণ অরশিষ্ট সাহেব
বাতো কোণ পর্যটক যোডা।

আলমুহ।

একটি বৈদ্যক এত ক্ষণে পুণ্ডিক মর্শ করি
দিয়ে তাহাতে দিল্লী ঐ কোণে আলমুহ

সম্বাচার দর্পণ

শেখের মরিতোকে। কামিয়ায়হয়ন খান্সা
 করি শূন্যায় ও মরন দুই ছাড়া দুর্গা-
 নকর মো- শ্রীয়াশূন্য খান্সা করিতে আ
 নিয়ামিল ভাইতে লম্বা দুই নুইন দিন দুই
 পুহরমময়ে শূন্যায় শ্রীয়াগি হঠা- মরি
 যাক ২৪- তাহার পুই রাখিতে ২ মন
 যারায় ২৪ কালক মরিয়ামিল ২৪ই কল
 শোকে ২ দ্রোণাশুভ বরোমায় মরিতোকে
 কিছু কামিয়নন হয় না।

সম্রাটের আশ্রিত্যে যে মোকামে বসে
 তে ১১ সেপ্টেম্বর অবধি ১৮ সেপ্টেম্বর
 পর্যন্ত লাভ দিলের মতো ১৮ পুষ্প ও ১১
 কী ৩৪ কালক সবুজ ৩১ একদিন মোক
 ওলাইয়া গেছে। মরিয়ান।

६.५.५७ ८.११ मंरमद्रवः

১৩ আকটোবর : কলিকতা সোমবার
 মের পক্ষ সোচন বন্ধি-পাখি-এলাওয়া
 রোণী মরিয়াছেন এবং তাহার পত্নী
 মহাম্মদ করিমুল্লাহ ইন্টার ব্যাকস
 আম্মান-আটার বন্দর তাহার একই
 বিধি দানক আছে।

এসময় ৩ তারিখে মোঃ আতিয়াহের
শ্রদ্ধা কবরস্থানবাসীর লোকান্তর গ
মনে জাহার স্বাঃ ও সনহাঃ হিনী ইই
হায়েন।

ਬੁਝਾਏ ੩ ਤਿਥਿਓਂ ਪਾਏ ।

ই-প্রাণের এক গুণে এক সাহসের
 বাণীতে এক কুটী ও বিস্তারি পক্ষী এক
 হানে তিম্র হানে যাহান কুটী তিম্র
 পুনের করে তাম্র ভিত্তির পুরে দীবাং
 থাকে পরে কুটীর তিম্র পুনের হইলে
 ভিত্তির দেইহানে তিম্র পুনের করে তা
 হাতে দেই এক হানে কুটীর বায় তিম্র

ও তিনটির ডের তিন: এক কামাডে
 দেখা গিয়াছে।

ਮੁਨ :

বোম্বের নিকটবর্তী মাদ্রাসা নামে গিয়ে
 এক ছিন্দ্ৰ গভরগাড়ি ও মাদারি ব্যবসা
 য় করিত এবং এই ব্রাহ্মণ ডাছার নি
 কট মস্কা গমনাচলন করিত। এক
 রবিবার এই ব্রাহ্মণ ডাছার ডাছার মা
 ছিল এক যিকে মস্কা দেখিল এবং অন্যত্র
 গমন করিল। পরে ডাছার করিয়া দেখা
 গেল যে ডাছার ইহাও অনুসরণ ও ন
 যের দাঁড়া লাগিয়াছে। ইহাও অনুসরণ
 হইলে যে কোন লোক ডাছার গিয়াছিল
 তা নিশ্চয় বন্ধ করিয়া মাদ্রাসা খেলি
 য়াছে। এবং সেই ধর একটা নিম্ন
 ছিল ডাছার ও তাঁরা ডাছার নিম্ন
 আশ্রিতগণের ডাছার দেখা গেল কিন্তু
 কোন মুসলিম হরহর করিল।

अंशुभा सुतः

[illegible]

দু' অভিনয়কার এখন সে বিষয় বাহারা
আসে তাহারা শূন্যহস্তে সে পথ বিহীন
যায় না কিন্তু অজ্ঞাত লোকেরা যায় ও
হাঁটরের পায়ের তপাল হয়। এইজন্য
কত অনেক লোকের হইয়াছে ইহা
কাজে নিজই আঁনা যায় না। কেহ
কহে যে এ হস্তকে অভিনয়কার সর্পে মগ-
ন করিয়াছিল তাহাতে তাহার অক্ষমতা-
মুখ্য হইয়াছে এবং সে বিষয়ে যোগ্য
হাঁট মাংসাদিতেও আসে তৎপূরক ও
মাংসের বর্ষণে বাহারা গায়ে লাগে তা
হার ক্ষত হয়।

ਦੁਰਯੋਧਿ ਸਬ ।

এইবার মোঃ কলিকাতাতে মুন্সীম
হে নাট প্রায় কাহারো বাণীতে হয় নাই
তাঁহার কারণ এই মুন্সলমান লোকেরদের
মহত্ব প্রায় মুন্সলমান বাই লোক প্রায়
নাট পুড়তি করে নাই।

এবং এইবার হিন্দু ও মুসলমানের পাঁচ
এক কালীন হওয়াতে অনেক স্থানে মুস-
লমানেরা দোদারিত্ব করিয়াছে তাহাঁর বি-
শেষ বিবরণ আগামি মন্তব্যেই সমাচার
দেওয়া যাইবেক।

ଭ୍ରାତୃ ଯେନା :

ই-প্রশ্নে এক জন ভেটিয়ারী আপন
ঘরে পথিক লোকেরা দ্বারা তুমি খেল
করিতে দিয়াছিল তাহাতে ১০ ঘোল টাকা
দণ্ড হইয়াছে।

नूतन प्रकार रचि ।

୧-ପ୍ରଥମ ଏକ ଜନ ବାଣିଜ୍ୟାଳୀ ଗୁଡ଼ିକ
 ବାଣିଜ୍ୟାଳୀ ଅତିରାମ ମୋହ ବାଣିଜ୍ୟାଳୀ ହାତ
 ଲାଗି ଦାଖଲ କରାଯାଇ ଯାଏ ଏବଂ ଏକ ଜନ
 ବାଣିଜ୍ୟାଳୀ ହାତର ନିକଟରେ ଲାଗିଯିବ ।

সমাজের দর্পণ।

কনসার কর। ইহাতে ঐ বিবী অতি
জরুর হইয়া তাহাকে কহিল যে তুমি
আমার বাটার নিকটে এ পুকার নোহ
কর। তাহা সে না শুনিবে পুনর্ব্বার
কহিল যে আমি তোমাকে পুতিমস্তা
হে এক টোকা করিয়া দিব আমার বাটার
নিকটে নোহ করি না। তাহাতে সে
কাজ হইয়াছিল এইক্ষণে ওলা গেল যে
সে এইকণ অনন্ত স্থানে হুতি কর
গায়ে।

হয়ানু সৈন্যাবাহক।

ই-গ্লাওসর জিগিল মিজন নামে এক
জন সৈন্যাবাহক ছিল সে অতিশয় সাহ
সী এবং তাহার হয়ানু সাহসের তুল্য।
যে মুহূর্ত্ত তাহার পরশোক পাণ্ড হইল
সেই মুহূর্ত্তের শেষ আঘাতে তাহার
শরীরের ভাব-রক্ত নির্গত হইয়াছে
সে অতিশয় ত্রস্ত হইয়া কিছু শালীয়
দ্রব্য চাহিল। তাহাতে তাহার নিকটে
অল আলিলে পর অন্য এক জন আঘাতী
যোদ্ধার তাহার নিকট দিয়া নইয়া যাই
তেছিল সেও অতিত্রস্ত হইয়া ঐ
পান পানের পুতি আপন মুখনিভ করিল
তাহাতে ঐ হয়ানু সৈন্যাবাহক তাহার
ইয়া দ্বিগুণ আপন পান করিতে যথেষ্ট
তুসিয়াছিল যে জন তাহা তাহাতে ছিল
এ কহিল যে আমাহইতে এ আস ভো
য়ার অধিক আশংক্যক।

সলাসী।

গত মস্তীহ সমাচার দেখা গিয়া
ছিল যে এক সলাসী অন্যহার এক
মাসুলের ওপর দিয়া আসে তাহার

বিধা পুনরিত সমাচার আনিয়াছে যে
তথাকার থানার তাহাকে থানাতে
নইয়া গিয়াছে পরে তাহার বিচার হই
বেক।

সোহর।

নওন নগরে রাইটে সাহেব নামে এক
ব্যক্তির হাঁদে রাষ্ট্রকালে এক ছী সোহর
করিতেছিল। পরে ঐ সাহেব তাহাকে আ
পন নিকটে তাকাইয়া জিজ্ঞাসা করিল যে
তুমি কি কারন এত রাষ্ট্রিতে সোহর করি
তেছ এবং তুমি কে। সে উত্তর করিল
যে তুমি আমার ছায়া। পরে তাহাকে
ধিগিয়া আনিলে নইয়া গেল এ তাহাকে
জিজ্ঞাসা করা গেল যে রাইটে সাহেব কি
কণে তোমার ছায়া-মে কহিল যে না
তিনি-হেয় সফর রাইটে সাহেবকে ১৭৭৪
সত্তর শত চৌহত্তরি সফর বিবাহ করিয়া
ছিলেন এবং তাহাহইতে এক পুত্র সন্তান
পাইয়াছি। পরে ঐ সাহেব আমার নিক
টহইতে পলাইয়াছে। অনন্তর চৌদ্দ
বৎসরপর্যন্ত তাহার সমাচার না পাইয়া
অলা এক সাহেবকে বিবাহ করিয়ায় এ
তাহাহইতে এক কন্যা পাইলাম পরে সেই
সাহেব মরিয়াছে। সে অবধি আমি
জীল পুত্রের বাটারে আছি। রাইটে
সাহেব উত্তর করিল যে ঐ ছী পূর্বে রাষ্ট্র
আমাকে ছায়া আসে এক পুত্র লিখিয়া
ছিল তাহাতে আমি পান্য জন করি
য়া তাহা দি নাই পুত্রদে আসিল আ
মিরা নোহ করিতেছিল আমার ছায়া
রে এ সন্তানও অনেক গুলি আমার আর
ছোতে পড়াইয়াছি। আমি নাতি-হেয়
নগরে কখন ছিলি না এবং সত্তর শত
চৌহত্তর সালে আমি কেবল চয় বৎসর
ব্যতী ছিলি এবং আমার জন্ম পর

দেখ যে আমার কেবল বাটার বৎসর
হয়ল। ইহাতে বিচারকর্তা ঐ ব্যক্তিক
অনন্ত ব্রাহ্মিন তথাকার ছী ঐ হাওয়া
করিতে লাগিল। পরে তাহাকে পান্য
জন করিয়া বিদায় করিল।

হুগি।

মো-প্রিবেনী গায়ে জরায়র গুলির
বাটারে পুত্রা হইয়াছিল তাহাতে নবমী
পুত্র মিলে শেষ রাষ্ট্রিতে বাড়ি এ গুলি
পুত্রিতে মাল্য পুত্র রোশনাই ছিল
তালি তাহার চৌয়ত্তর পুত্র বানস
এ বহু এ অন্য সাধুগণি যাহা ছিল সে
সমুদায় চোর নইয়া গিয়াছে। ইহার
কিহু অনুমান কেহ করিতে পারে
নাই।

কুলবুর্ক সোমদিটী।

আকটোবির বুদবার কলিকাতার
কুলবুর্ক সোমদিটীর বুড়ার বৎসর
মিলিল হইয়াছে এবং ঐ সোমদিটী অতি
সুন্দর বণ চলিতেছে। ঐ সোমদিটীর
অন্তঃপাতি লোকেরা নুতন পুত্র-পুত্র
পুত্র করেন এ বালিকা পাঠশালার
বিতরণ করেন। তাহাও লক্ষ্যোপরে ল
বাব সাহেব কৌশলির ওলী সাহেব
বরা কুলবুর্ক সোমদিটীর বাবর কারন
এক হাওয়া টোকা কলিকাতা পাঠাইয়া দি
য়াছেন। অতঃপর মস্তী সাহেব এ পুত্র
তাতিচরণ যিহাজর কথা কয়ে যুগান্ত
বিদ্যালকারের পুত্র অতঃপর রামজর তাল
কার ঐ সোমদিটীর কোথিটেতে আপন
পিতার ভাঁদ পাইয়াছেন এবং পুত্র বাব
উমালদ টোকা এ ঐ সোমদিটীর অতঃ

সমীচারণ নগণ।

শান্তি হইয়াছেন এবং যেনও করায় কো
সেন পুণ্ড্র লোকসহ দুইস সাহসর ও
কাজে আদর প্রদানের কথা সম্মত
হইল। সেসময়কার অধিকাংশই হইয়া
ছেন।

বানিজ্য।

দুর্গেশ্বর ও মহারম এক কালে হও
য়াতে তাঁহা লোক বিদ্যা কর্ম পুণ্ড্র বঙ্গ
কিয়ামতে তাহাতে বাজার দুবোর মূল্য
কিছু লানবিক হয় নাই এবং অসামর্থ্য
সকল বানিজ্য বন্ধ আর নীর অহা পুণ্ড্র
সকল দস্তুরখানা খোলা ঘাইবেক এবং
বানিজ্য আরম্ভ হইবেক।

অন্য-বাক্য হও।

ইণ্ডোরার এক দেশে এক কতিভাগি
বান কাকার ছিল তাহার গাধার বন
সমুদ্র জিল কিছু কাল পরে তাহার দেশ
জয়গো হইল তাহাতে এক বিংশত ভূত
কে মারে করিয়া এবং অনেক কয়লা
পুন্ড্র ও বনবি লইয়া অখারোহনপুন্ড্র
জাপন বাটীহাতে পুন্ড্র করিল অসমুদ্র
বীত সাং যিলের পক্ষ অতিক্রম করিয়া
ছিল। এক দিন পথে ঘাইতেকে ইত্যর
সরে ঐ বনবিহার কোর কার্যার্থ তথ্যই
সে নামিয়াছিল দুইর ঘাইতে ঐ চাকর
আখের জীবনহাতে নিম্নল বহির করিয়া
জাপন মুনীরকে হারিল তাহাতেই সে
তু-কথা-যাইল। পরে চাকর জাপন মুনী
বেরে লায় পায়ন বাকিয়া তাহাকে জলে

নিষ্ক্ষেপ করিল। ও সে সকল বনবিলাকী
হইয়া সেই অখারোহন করিয়া এক নগ
রে উপস্থিত হইল এবং সেখানে বাটী
ফোলা লইয়া অন্য বানিজ্য করিতে লা
গিল তাহার পরে বানিজ্যের লোভে ও
কয়েক জনসহ যিলের পুন্ড্র করিতে আ
তিশয় ভাগ্যবান ও ঐ শহরে অতিমজ্জিত
ও বিশিষ্ট হইল। এবং এক সম-ভূত
রূপে রিবার করিল। কিন্তু জাল পরে
সেই শহরে এক কুমার সন্ধ্যাত হ
ইল যে সকলে তাহার ঐ শহরের বি
চারবর্ত্ত করিল। সে বিচারকর্তা হইলে
যখন যে মাকসুমা তাইসে তামিল তা
হার যথার্থ নাম করিয়া দূত বিধান করে
এই ক্রমে অনেক যথার্থ নাম
আরো মুখ্যতাপ্ত হইল।

অন্য এক ব্যক্তি জাপন মুনীরকে লক্ষ
কিয়ামতিল সেই মাকসুমা এক দিন ঐ
জম্বালতে উপস্থিত হইল। তাহাতে ঐ
ব্যক্তি তাহার সুর্য্যচিত্র করিয়া তাহাকে
দোষী নিশ্চয় করিল এবং ঐ পুন্ড্রাতী তা
কির পুনঃ বিধান হইলে যখন তাহা
কে বই করিতে লইয়া যথ্য তখন ঐ বি
চারবর্ত্তকি অনুমতি চাইল। তাহাতে
বিচারবর্ত্তকি মুখ বিবল হইল ও পুন্ড্র
কীমতি করিল। পরে বিচারকর্তা ঐ
দোষী লোকের নিম্নে গিয়া কীমাইল-ও
অমলা লোকের বিচারে করিল যে ঘর
এই জনস্বার এই বনবিহার বানিজ্য হ
ইল তাকে আদ্যকে আদ্য বই কর। ইহা
করিয়া সে পুন্ড্র বৃত্তান্ত মাকসুমা পরে
জাপন মুনীরের জাপনমতে বই ক
রিল।

সংস্করণ ১৭৪০।

| খ্রিস্ট | মোন | খ্রিস্ট | পুন্ড্র |
|-------------|-----|---------|---------|
| মুগারি | ১ | ৩১০ | ৩৫০ |
| ভেড়োকা ইতল | ১ | ১১ | ৩০ |
| গাং মরিচ | ১ | ১৫০ | ৪১ |
| মারিকল ইতল | ১ | ১৪১ | ১৪ |
| জুলা কাছারা | ১ | ০ | ০ |
| জাং ইকপু | ১ | ১/১ | ১/১০ |
| পাটনাই জালা | ১ | ১ | ১/১ |
| চাল পাটনাই | ১ | ১/৫ | ১/৫০ |
| পাছবি ইতম | ১ | ১/১১ | ১/১০ |
| পাছবি ময়াম | ১ | ১/১ | ১/১০ |
| মুগী উতম | ১ | ১/৫০ | ১/৫০ |
| মুগী ময়াম | ১ | ১/৫ | ০ |
| বালান | ১ | ১/৫০ | ১/৫ |
| মুগা গোম | ১ | ১/১ | ১/১০ |
| পাটনাই বই | ১ | ১/১০ | ১/১০ |
| জাহর তালি | ১ | ১/১০ | ১/১০ |
| উতমগারা ভূত | ১ | ১ | ১/১ |
| ময়াম ভূত | ১ | ১/৫ | ১/১ |
| ইতলা ভূত | ১ | ১/৫ | ১/১০ |
| ময়াম ইতলা | ১ | ১/৫ | ১/১ |
| মোমবাটী | ১ | ৫০ | ৫১ |
| মিছরি উতম | ১ | ১/১ | ০ |
| মিছরি ময়াম | ১ | ১/১ | ১/১ |
| মোরা উতম | ১ | ৫০ | ০ |
| ময়াম | ১ | ৫০ | ৫১০ |
| চিনী কাপার | ১ | ১/৫ | ১/৫ |
| চিনী | ১ | ১ | ১/১০ |
| খাঁর চিনী | ১ | ৩০ | ৪ |
| ভেড়ুল | ১ | ৫/ | ৫/১ |
| ভালাক | ১ | ৩০ | ৫১ |
| চন্দন | ১ | ১৪ | ১৫০ |

এই সমীচারণ নগণ পুরানপুর বাণেশ্বরতে পুণ্ড্রকাবে পমিয়ারে জাপন কর। তাহার লগনের কার্যকর হয় তিনি পুরানপুরের জাপনকার
জাপন নাম পাটনাইল, বড়োকা জাপন তাহার দিকট। পাটনাইলকে তাহার মূল্য মনে ঐ একটা খিলি বাছল করিয়াছেন তাঁর তর দিকট
জাপন নাম পমিয়ার তর দিকি পুণ্ড্রমপরে জাপনকার নগর পুরানপুর তাহার দিকট। পাটনাইল তাহাকে।

গাওঁ দুৰ্গামাৰ দেৱী বিমুখা। সন্তোষ
 নত। দিবসে শান্তহালি নবশিকি। মূল
 কৰ্মীতে গতিতঃ আনিয়াছিল পৰ
 মূল কৰ্মীহী। বাখাৰি সন্মত হাৰি গাই
 তেজিল যথান ভাৱা। চক্ৰাৱৰ্তীতে গৈ
 তিল তখন অলেক মূলগায়ন দেৱী
 একমুখ হৈছে। তাৰি দিগোৰ মণ্ডিত কলি
 কৰি। ওভাৰি দিগোৰ মণ্ডিত কলি

সম্রাটের মর্শন।

এক চৌদ্দশতাব্দীতে মঙ্গল ভাঙ্গিল ও সব
পশ্চিমকার কল্যাণ গেল কাটিল অমল হিং
লোকটার খণ্ডিতে সম্রাটের ছিল সেখান
কার বরকন্দাজ আনিয়া যত্ন মুসল
মানের দিগন্তে পাইল সে মঙ্গলকে বাঁধি
য়া পুলিসে চালাল করিল। সেখানকার
বিতারে অপরাধ বিপক্ষে কাহারো তিন
মান কাহারো পাঁচ মান মেয়াদে কয়ে
দের আডা হইল এবং সশ্রুতি মুসল
মান যে ছিল তাহারিগণের ভাঙি অধি-
শাস হইল এবং সেই সময়ে আঁকা হ
ইল যে কলিকাতার গোঁড়ারা বাহিরে
যাইতে পারিবেন। এবং বাহিরের গোঁ-
ড়ারা কলিকাতার মধ্যে আনিতে পারিবে
না।

পরে কতদূর রাষ্ট্রিতে বাহিরের এক
গোঁড়ারা কলিকাতার মধ্যে আনিতেছিল
অন্যতঃ চৌদ্দশতাব্দীর কার্য করিলেন গোঁ-
ড়ারা ওয়ালা শহরের মধ্যে গোঁড়ারা আ-
নিবার কার্যে যত্ন করিয়াছিলেন। সে
খানে যত্ন হইল যে গোঁড়ারা কলিকা-
তার মধ্যে কদাচিৎ আনিতে পারিবার না।
মুসলমানের এই অধার পাইয়া ফরাসি
কর্তৃক গোঁড়ারা কলিকাতার মধ্যে আনি-
তে চেষ্টা করিল। ইহাতে চৌদ্দশতাব্দীর
দিগন্তে মুসলমানেরদের ভাঙি
দিগন্তে হইল। পরে মুসলমানেরা
সেই করিয়া কছিল যে যদি কেহ মুসল
মান খাঁহে তবে হোসেনের নামে আমার
দিগন্তে গুণকার করহ। ইহা শুনিয়া
অনেক আরে লোক আনিয়া মুসলমানে
র পক্ষ হইল ও মিলিত হইয়া তাহার এক
কোন হাতে করিয়া চৌদ্দশতাব্দীর দিগন্তে
মানিগাঁও করিল। পরে চৌদ্দশতাব্দীর
গোঁড়ার সম্রাটের দিবার কার্যে বাহিরে
পাঠাইল মুসলমানেরা সে লোককে দি-

হার এক রাষ্ট্রিণ। পরে আদি গোঁড়ার
এক লোক পাঠাইয়া কলিকাতার দিল। তা-
হাতে অনেক লোকের আনিয়া। পরে মুস-
লমানেরা বিস্ময় আনিয়া ইহা দণ্ড
ইয়া যত্ন করিল। শেষে ওত্নয় পরে
অনেক লোক আনিয়া ইহা দিগন্তে কেহ
ময়িল না। পরে নিম্নোক্ত লোকেরা আ-
নেক কোম্পানি যত্ন পক্ষীয় ঘাটিল অন্য
দর লোকের দিগন্তে দিগন্ত। তাহার
মধ্যে জেটী লোক পাঠাইয়া জিল ও
হারিগণের যত্ন করিয়া যত্ন চালাল
করিল। মহাজন লোক পাঠাইয়া জিল
তাহার দিগন্তে কারবানিতে কএক রাষ্ট্রি-
ণ। পরে দিবার করিয়া আনিয়া লইয়া
আনিয়া দিল। সে মোকদ্দমা যত্ন
চালাল ইহা দিগন্তে শেষ আনিয়া যায় নাই।

ই মহারমের সময়ে কলিকাতার এক
শিক্ষণীয় সাহেব পাঠাইতে আনিয়া
করিয়া গিয়া কলিকাতায় ইতোমধ্যে
এক ছানি অনেক মুসলমান দিগন্তে
ছিল সেইখানে সাহেব আনি যোঁড়ারে
চালাইয়া দিগন্তে দিগন্ত। এক মুসলমানের
পর দিগন্তে চালাইতে মুসলমানেরা
কলিকাতায় ইহা দিগন্তে গাঁড়ী
ইতে নামিয়া কলিকাতায় লিখিয়া করিল।
এখন তাহার মঙ্গল কএক আছে শেষ
যে হয় সম্রাটের দেওয়া যাইবেক।
আর এক জন সাহেব পরেও গিয়া
কলিকাতায় তাহার দিগন্তে একটা কলার
ভাঙি জিল সে ভাঙি পিলে দুই তিন শিল
ভাঙি যোঁড়ার জিল এবং জেবেতে চালাই
টাকা জিল তাহার কোন মুসলমান আদি
জিল সেই সাহেব কত দূর গিয়া করি-
লে তাহার পরামর্শ দিগন্তে দিগন্তে বিদার
করিল পরে ই সাহেবকে ভূমিতে জেলা
ইহা দিগন্তে আনিয়া লইয়াছে।

কল।

১৬ সেতম্বরের কল মেসের পরামর্শ ন
মাটার আনি গেল যে তাহাতে এক জন
সাহেব একটা পুরাতন ষ্ট্র কল দিগন্তে
জোঁড় করিল যত্ন লোহারে তাহার ম
যোঁড় যাইতে দিগন্ত করিল না ও করিল
যে কলের মধ্যে কল মর্শন আছে। পরে
এক জন বেহারী পরামর্শ দিল যে বড়নী
হার মর্শন মারা যাইবেক। ইহা শুনিয়া
সাহেব বড়নীতে জেল গাঁড়িয়া মর্শন
মারিল। পরে এক মর্শন সে বড়নী ভাঙল
করিল জেটী দিগন্তে দিগন্ত যে দিগন্তে হাত
দিগন্তে আদি মর্শন তখন তাহাকে মারিল।
পরামর্শ বড়নী জেল তাহাতেও কলি-
জেটী আদি মর্শন দিগন্ত তাহাকে মারি-
য়া দিগন্তে দিগন্ত এক লোককে নামাইল
সে দিগন্তে দিগন্তে আনি যোঁড়
মর্শন আছে তাহাতে ও দিগন্ত লোকের
দিগন্তে আনিয়া করিল তাহার দিগন্ত
দিগন্ত তাহাকে জেটী। পরে বড়নী জে-
দিগন্ত সে মর্শন জেটী মারিল পরামর্শ
লোক পাঠাইয়া আনি যোঁড় মর্শন নাই
তখন লোকেরা সে কল কাটিয়া মর্শন
করিল।

মূল।

বন্দোবস্তে ১১ আগস্ট তারিখের পত্র
আমিনগারে তাহাতে শুনা গেল যে
সেখান দিগন্তের আরহো অক্ষয়
জোঁড় করিয়া অনেক লোক মূল করিয়া
সে পর দিগন্ত করিয়াছে। ও তুরকের
বাহাদুরের এক সৈন্যদিগন্তে মূল করি-
য়াছে। ইহাতে এখন লোকেরা সে শহ-
রের মধ্যে আশ্চর্য করিয়া দিগন্তে
ও সেখানকার অধিক বড়ী হইতে বাহির
হইল না এবং সেখানকার লোকেরা এ
মত ভীত হইয়াছে যে যদি লোকের

সমীচারণ দপ্তর।

হয় তবে সকল লোক শলায়ন করিবেন।
ও সেখানকার অধীক্ষ আশন পদত্যাগ
করিয়া শলায়ন করিতে ওয়াই ইয়াও।

মজুর বৃক্ষের নাম। ৪৪।

অন্য দিন হইল যেকোন বন্ধমানের
কালীবাড়ীর এক মজুর গাছের নাম।
ওই দেখিয়া অনেক লোক তাহার বিস্তা
রিত বৃদ্ধিতে না পারিয়া অনেক পুকার
গোলমাল করিয়াছে কিন্তু তাহা। সে
বৃক্ষের নাম। ওটার কাঠন লক্ষ্য করিতে
পারে নাই। কিন্তু তাহার ঘণ্টা/বিবরণ
এই।

সে গাছ হেলান কখন মোজা জিল না
এবং শিকড় মাটির ভিতরে বিস্তর যায়
নাই এ নিম্নিত্তে জোর না পাইয়া ভূমিতে
কয়েক পাঁড় যখন পুষ্যমত সেই মত
নামি। জিল তখন যদি তাহার মা
থায় মাটির টেন শীঘ্র না পাইত তবে
মৃত পড়িত যে কখন ওগিতে পারিত
না এই রকম গাছ বড় রমাল তাহার
শিকড় কৌতু। এই হেতু কয়েক নামি
বার সময় নেকসাল হওনের পুরে মুখ্য
টেন পাওয়াতে রাত্রিকালে শিশিরাধি রস
থায়। আরো ইয়া। স্বভাবানুসারে
ওক ৪৪৪ এবং পলবার দিনে গৌড় পাই
য়া রস কম হেতু ম্যান হইয়া নামিতে প
তে যদি বাবলগাছ পুছত হইত তবে
নামিল আর কখন ওগিতে পারিত না।

এইবিধের দেখানকার সাহেব লোকেরা
ই বিবেচনা করিয়াছেন।

পরিষদের মৌরাদ।

১১ আক্টোবর বসিকাতাইতে এক
জন বিবী পতিতা ইয়া। তিনটা বালক
নিত করিয়া চন্দনবাদের গিয়াছিল সে

খানহইতে কলিকাতা যাঈ কাল বাণীর
চৌবীর পানসী আসিয়া তাহার নোকা
ইছিল এ কহিল যে নোকাতে কি। জিনিস
আছে দেখিবা। তাহা শুনিয়া ঐ বিবী আ
পনার তাবৎ জিনিস তাহারদিকে দে
খাইল। তাহা দেখে লুতন চারি খান মো
টা কাপড় ৬০ করিয়া চৌদ্দ মিরা দামে
আশন খরচের কারন লইয়া ঘাইতেজিল
তাহা দেখিয়া ঐ পানসীওয়ালারা অনেক
মন্দ কহিয়া বিবী সম্মত নোকা লইয়া
বাণীর ঘাটে গেল এবং দাঁড়াগিকে স
মীচারণ দিল। দাঁড়াগী সমীচারণ পাইয়া
আপনি মাল ভোজনাদি মার করিয়া
দুই ঘণ্টার পর নোকায়া আইল এ ঐ লু
তন বন্ধ দেখিয়া অনেক ডম্বি করিল এবং
বন্ধ চারি খান কোরক করিয়া বিবীকে
তখন খানসন্দিয়া কহিল যে যদি তোমার
কোন নাগিষ থাকে তবে হাবকা। মো
কামে শ্রুতি/তালস সাহেবের লিখত
যাইবা। ইহা শুনিয়া সে বিবী কলিক
তাতে ঘরে আসিয়া আশন সাহেব
কে সকল বৃত্ত কহিল। তাহা শুনি
য়া ঐ ঘটান সাহেব মররে এক চিঠি
দিয়াযাও। ইহাতে বুজা যায় যে ইহা
তহার ক হইতে পারে।

ইংলণ্ডে ভাওবের কৌশলির সভা।

ইংলণ্ডে ঐযুত কোর্টলির তরফ ভার
তবের বন্দোবস্তের নিমিত্ত এক সভা
আছে সেই সভায় মর জন আকসন
সাহেবের পরলোক হইয়াছে তাহাতে
এ কার্য নিযুক্ত হওনহাতে এই চারি
সাহেব ওপস্থিত হইয়াছেন ঐযুত জো সই
য়ান ডুই আসক্লান্ড সাহেব তিনি
বাংলা বান্ধের পুর অধীক্ষ ছিলেন এ
মৃত ২ন বি এইমলকন সাহেব তিনি পু

কলিকাতার ডিবিটী বড় সাহেব ছিলেন
ঐযুত কান্ডান চান্দ্র পেসবট সাহেব ও
ঐযুত ওশান সাহেব। ইহারদের মতো
কর্ম কে পাইবেন তাহা এ কল ভাত হও
য়া যায় নাই।

মুখ্যমন্ত্রী।

১৫ আক্টোবর মুখ্যমন্ত্রীর তর
লতে এই লোকের বিচার হইয়াছে মো
কলিকাতার শ্রীকমলী বোশা মুন্সীল্যে
এক খানসন্দিকে লইয়া রা.ত্র শরল করিয়া
জিল স্বতক রাজিগিতে এক চৌর আসিয়া
তাহার কার্ণের তুলন খানসইতেজিল ইহা
তে সে বোশা আসিয়া ঐ চৌরের তুল বি
রিয় মোর করিল তাহাতে মুন্সী ওয়াই
রিল ও পুতিবানী লোক ও আইল। তখন
আলা বাসিয়া দেখিল সে চৌরের নাম
নেয়ামত ও বোশার একছটা লম্বা বিজা
নার লিখত পড়িয়াছিল তাহা পাইল। পরে
নেয়ামতকে জহালতে দাখিল করিয়া
তজিজ হইল তাহাতে কয়লা যে কপ
নাগিষ করিয়াছিল মুন্সী ও দিবা করিয়া
সেই কপ সাফা দিল টেডন চৌকীকর
সাফা দিল যে আমি সোঁর শুনিয়া বৈ
শ্যার বাটী ঘাইয়া দেখিলাম কয়লা ও
মুন্সী দুই জন নেয়ামতকে ধরিয়া রাতি
য়াছে তখন আমি নেয়ামতকে পাছড়া
করিয়া আসিয়াছিল কিন্তু তখন নেয়ামত
কিছু মাতোয়াল জিল ময়ত যেই হইল
পরে নেয়ামত কহিল ঐ বোশার সহিত
সম্মান সময় আমার কথা লিখত
হইয়া জিল যে এক টোকা বোশাকে দিয়া
তাহার সহিত রাত্রিবাস করিব সে কারন
আমি আসিয়াছিলাম তাহাতে ঐ বোশা
ও মুন্সী কারমাজী করিয়া আমাকে কোঁর
কহিয়াছে। পরে তজিজ হইয়া নেয়ামত
মত খানসইল।

ਸ਼ਬਦਾਨੁਸਾਰ ਦਰਸ਼ਨ।

যেহিন্দীঘাট :

যেহি নোবাট হইবে ও আকৌ বাহার নুমা
 চার আশিয়ারে তাহাও জানা গেল
 ১৫। ১৭ নুসুকার তাহিমে মোদোন অতি
 আদরই হইয়াছে তাহাও জানা গেল
 ও নীল পুস্তির বক ও নীল হইয়াছে
 ১৬। নীল ও মুগা কাঠি হইয়াছে
 প্রবীণত্ব হইবে আর জ্ঞান হইবে
 পুস্তি যেহেতু অতরবি কাঠি নীল
 আলে।

डयिक्का ।

১২ মে মাসে প্রাণত্যাগে দিল্লী যোগে
হামে অভিশয় ভূমিকল্প হইয়াছে।

श्रील १

খিচিইহইত মযাঠাৰ আনিমুখত তাহা
তে আনা গৈল যেমথানে যে মুন্সিফ
ওপকাৰি এই থাল আভে সে থাল মণ-
তি শুভ হইয়াছে ত হাৰ কাণ এই যে
মুখা নবীৰ আশল ওপতি হালহইতে
মুখাজল থথ ঢাণি কৰিয়া নতল থথ
কিয়া স্নোত বহিছে। এই এ থালেনেৰ
যেহেলাও বালক পৰিয়া স্নোত বদ হই
হুকে।

पुस्तकालय गुरु !

গত কতক বৎসরের পূর্বে যখন ইং-
প্রাচীরদের সহিত ব্রহ্মিন্দ্র (দেশীয়) হায়দরা-
বাদীর চিন্মুলতানের যুদ্ধ হইয়াছিল
তখন ঐ চিন্মুল যোদ্ধার গৌতম মাহেব ও
অন্য ইং-প্রাচীর সৈন্যাবাহিনীর
স্বাধীন করিয়া তাহাদের অর্থ ও বস্তু
সুত্রে তাহা কাছিয়া লইয়া তাহার

দ্বিগুণকে কারাগারবদ্ধ করিল। এ নানী
 পুকার ওঠল। দিল। যেখানে তাহার
 বন্ধ ছিল সেই কারাগার এক জন
 ককাই পুড়ি বরম যান্দু বিবর করিত
 পাউড। ই-গুপ্তীয় সৈন্যগাহেদের
 ক্রেন যেখিয়া তাহার মনে অভিগর যের
 অনিল কিছু যদি এই খেদ উজ্জ্বলিত
 নিকটে পুকার এইত তবে তাহার শি
 ধোনে হইত। এই বন্ধ লোকেরা
 গিরন্যে পুড়ি দিল এক যের ডুগ
 একটা পদমান্দ্র পাউড হইতে তাহার
 দেহ ওদর পূর্ণ হইলার বিধি কি। পরে
 ককাই তাহার দেহ দুখ নিবারন্যে
 ওগার করিল যে ভেদার মুখ সে
 ককাই কোকোরের নিকটে বিস্ম করি
 তাহার মাথা এই স্বর্গ মিলি বিত্ত
 তদশীয় লোকেরা সফল না পাও এক
 রন তাহার দেহ সম্মুখে এই বন্ধ লোকে
 দ্বিগুণকে গালাগালি দিত ও বাহির হইত
 ত্রৈনা যেখিয়া দ্বিগুণ সেই জেন
 মাথা টোকা দুইয়া দিত বর ই-গুপ্তীয়
 বন্ধ লোকেরা সেই জেন ভাঙ্গিয়া
 হার মই হইতে টোকা পাউড। এই
 কতক দিন গত হইলে যখন ই-গুপ্তীয়
 রাই চিনুইত ওয় করিল তখন মে
 গৌড়িমাঝে তোনাকার গায়ে রেখা
 ভাঙ্গিয়া পুবেল করিল এবং ই-গুপ্তীয়
 ই-গুপ্তীয়কে যে খাণ্ড তাহার সন্ধি
 নিক করিয়া যান্দু ই-গুপ্তীয়কে
 সেম যে এই লোককে কেউ সফল
 করি ও না। পর মুখের ই-গুপ্তীয়
 ওয় গৌড়ি মাঝে তাহার সন্ধি
 করি করিল।

ਬਾਗੀਚ ਡਾਓ

| কিনিস | যোগ | অবধি | পরিমাণ |
|----------------|-----|-------|--------|
| সুপারি | ১ | ৩৭।০ | ৫৬০ |
| ফেদেতা তৈল | ১ | ১১ | ৫০ |
| গাছ মরিচ | ১ | ২৬০ | ৪১১ |
| মসরিচক-তৈল | ১ | ১৪৭।০ | ১৫ |
| কুম্ভা-কাছোকা | ১ | ০ | |
| আলু কুছোকা | ১ | ২।১ | ২১৮ |
| গামিনাই অধা | ১ | ২ | ২২ |
| চাচু পাটাই | ১ | ২৬ | ২৬০ |
| পাছুরি উত্তম | ১ | ২৭।৫ | ২১০ |
| পাছুরি মধ্যম | ১ | ২৮ | ২১০ |
| সুগা উত্তম | ১ | ১৬০ | ১৬০ |
| সুগা মধ্যম | ১ | ১৬ | ০ |
| বাণাম | ১ | ১৬০ | ১৬০ |
| সুগা গোম | ১ | ১৬ | ১৬০ |
| পাটাই ইউ | ১ | ১১২ | ১১৬ |
| অভর-ভাণি | ১ | ১১০ | ১৬০ |
| উত্তরপাড়া পুত | ১ | ১০ | ১১ |
| মধ্যম পুত | ১ | ১০ | ১১ |
| উত্তম পুত | ১ | ১৬ | ১৬।১ |
| মধ্যম উত্তম | ১ | ১১ | ১১ |
| মোমবাতি | ১ | ০০ | ০২ |
| মিছুরি উত্তম | ১ | ১৭ | ০ |
| মিছুরি মধ্যম | ১ | ১১ | ১৫ |
| মোম উত্তম | ১ | ০ | ০।১ |
| মধ্যম | ১ | ৪৭।০ | ৫৬ |
| চিনি কাশির | ১ | ২৭।০ | ১০০ |
| মধ্যম | ১ | ০ | ০ |
| খারি চিনি | ১ | ৩।০ | ৪ |
| তেতল | ১ | ৪৭ | ৪৭ |
| তামাক | ১ | ৪৭ | ৫৬ |
| চন্দর | ১ | ১৪ | ১০।০ |

[illegible]

१०. वार्षिक मूल ४१२९।

ब्रह्मसंहिता. श्रीमद् भगवद्गीता दर्शन ॥

কোম্পানির শতকরা ছয় টাকা মূল্যের
 কাজ করা করিতে ইহলে শতকরা তিন
 টাকা আট আনা প্রিমিয়াম। বিক্রয় করি
 তে ইহলে শতকরা তিন টাকা প্রিমিয়াম।

| | | | | |
|----|---------|----------|----|---------|
| ४ | शरद्वार | पनिवार | २० | काष्ठिक |
| ५ | श | शिववार | २१ | श |
| ६ | श | सोमवार | २२ | श |
| ७ | श | मंगलवार | २३ | श |
| ८ | श | बुधवार | २४ | श |
| ९ | श | गुरुवार | २५ | श |
| १० | श | शुक्रवार | २६ | श |

ইছাহাৰ দেওৱা ঘাইভেজৰে যে এনৱ
সমূহ ১৫ মুই নত পঞ্চাশ টাহাৰ কয়ৰ
সলবাহাৰ এক শোণ হাৰাইয়াহাৰ মে
শোণ যে কেহ পাইবহে মে ডাৰ্শি খুৰুত
ঘাতিও কিং সাহাৰহাৰ নিৰুটী কৰাটাহাৰ
নিৰুটী এ শোণেৰ টাহাৰ বাঁক কৰ হাইৰী
হে।

ইহাঙ্গি (২৫) ঘাটভাঙ্গা (২৬) জিলা
 তার তালিকাভুক্ত ১০ আফগানিস্তান
 ইহাঙ্গি (২৭) ঘাটভাঙ্গা (২৮) জিলা
 তার তালিকাভুক্ত ১০ আফগানিস্তান
 ইহাঙ্গি (২৯) ঘাটভাঙ্গা (৩০) জিলা
 তার তালিকাভুক্ত ১০ আফগানিস্তান

দুর্গত ও বিলিভলি এই সকল স্থানের চিঠি
ছিল যে সকল চিঠি ইনজুরা ও কালনার
চৌকীর মধ্যে গুপ্ত হইয়াছে।

সম্ভাটার বেড়া ঘিরেডেকে যে দিওঁর
 ঘেউর কিয়া কার্যসিমন নামে এক জন
 নাহবে মো—খোঁসান পুরের কালেক্তর
 নাহবেবর নামে এক শ্রিয়া হস্তা করিয়া
 মোকাম বানারশের প্রস্রিহইতে আসে
 ক টাকা পৌর দিয়া পলাইল সে ঘাঁট
 অখানি বরাংক ঘায় নাই। অতঃপর
 লকলে নাইদীন করা ঘাইডেকে যেন
 সেই পৌর আর কাঁহকেও না টোকা।
 এব—ভাইর হোয়াঁদু শিয়া ঘাইডেকে
 সে গৌরকর অতঃ এই ঘেনে আঁক লয়া
 তিন হাত বন বুলান ভাইর মাগুর দুদ
 বগা ও কৌকা এব—ভাইর ঘাঁট
 হস্তের ডানুয়তে একটা বারিঁর মাগি
 আরে ৯ আঁকটাইর ডারিয়ে সে মো—
 পাটগোতে ছিল। বোই হয় যে মোমা
 হক্টে করুকটা অকল আনিয়ায়
 ঘাই কেই এই লোকের লম্বান পাও তলে
 তৎক্ষণা ভাইরশিকটাইব ঝিটারকট
 নাহবেবর লিক সম্ভাটার বিয়া ভাইর
 আটক করিয়া।

জেলা জিয়াবানপুর ১৪ আক্টোবর ১৮৭০
মান।

इदमिदं प्रकाशं विचार्यतु ।

নোট ইত্যাদি।

ইস্টার্ন পিওর যাইতেছে যে মো-

কলিকাতার জমিদার কালীনাথ মিত্র ২০৬
নম্বরের ভাড়াই শত টাকা এক হেণ্ডা
বাংলি বার্কেনেট লম্বা ডাকদার।
কলি মুরবোদোবের জমিদার লম্বা
বের দিকট পণ্ডাভেডেনিগন পণি মারি
মো- ইনজুরাতে ঐ ডাক মারা গিয়া সে
নোট খোয়া গিয়াছে অতএব ঐ নো
টের টাকা দিতে বাধি বন্ধ হইয়াছে।

মকরীক জ্ঞানান যাইতেছে যে যো
কায় কলিকাতার শ্রীযুত গিলাশ্বার কোঁ
দ্রানির এক অংশ যে শ্রীযুত মি
কোঁদ্রার অবস্থি উক্ত কায় হইয়াছেন।

१४-आवृत्ति-१०-माला ।

ମୁମୂକ (ସେଭର ହେଲି ମାହେବ ଡାମ୍) ।
 (ହେଲି ମୁମୂକ ବଡ଼ ମାହେବର ଗୁରୁ)
 ଡାମ୍ ହେଉଛନ୍ତି ।

३-३३३ ३३३३३३ ३३३३३३ ३३३३३३
 ३३ ३३३३ ३३३३३३ ३३३३ ३३३३३३
 ३३ ३३३३ ३३३३३३ ३३३३ ३३३३३३
 ३३३३३३३ ३३३३३३३ ३३३३३३३

মুখ্য লোক ।

অ-শুভি মর্যাদাঃ আমিস্রাজে যে যিনি
অধিক নোহের মনোনিউ হন, তিনি
অ-কর্যার্থো। এই ই-শ্রুতের ব্যবহার
করারে শ্রুত হাতিান চারু পুমানই
সাহস ত-পাতিভিঃ ইহোদ্রেন।

ସବୁ ମୁହ ।

১৮ আশ্বিন ১৩০৮ চন্দ্রাব্দ ১১ মেঘের
 পক্ষ মং-সোমবারিখিত রবি-মরন ইহী বৃহ
 দ্বিতীয়া পক্ষি মং বৃহৎ ইহী মৌলি রাশিতে
 একত্র হইবে। ইহাচক্কে বহর গোঁঠ
 ঘোণি কহে সে কিছু নাই। কিছু গোঁঠ
 চন্দ্রাব্দ ১৩০৮ মেঘের পক্ষ ১১ চন্দ্র মঙ্গল
 পক্ষ ১৩৮ চন্দ্রাব্দ চন্দ্র ১ মৌলি রাশিতে
 দ্বিতীয়া পক্ষি মং বৃহৎ ইহী মৌলি রাশিতে
 একত্র হইবে। ইহাচক্কে বহর গোঁঠ
 ঘোণি কহে সে কিছু নাই। কিছু গোঁঠ
 চন্দ্রাব্দ ১৩০৮ মেঘের পক্ষ ১১ চন্দ্র মঙ্গল
 পক্ষ ১৩৮ চন্দ্রাব্দ চন্দ্র ১ মৌলি রাশিতে
 দ্বিতীয়া পক্ষি মং বৃহৎ ইহী মৌলি রাশিতে
 একত্র হইবে। ইহাচক্কে বহর গোঁঠ
 ঘোণি কহে সে কিছু নাই। কিছু গোঁঠ

ଆଉଁ ନାମ ଚାହୁଁ ।

শুশোষিতাবাদী শহরের এক বাড়ির এক
কুঠুরের বাড়ী হইয়াছিল। এক দিবসের
বাড়ী লোকেরা দেখিল যে তাহার চারি
পাশে কুঠুরের মত ৩৭খানার দুই পাশে দুই
পাশে এক বাড়ির জন্তে দুই পাশে এইরূপে
আট পাশ হইয়াছিল। গিলে যে দুই পাশ
সে, অপর পাশের মত। বাড়ির জন্তে
দুই পাশ সে পাশের পাশের মত, কিন্তু
এই ঘনিষ্ঠ থাকিবার সে কুঠুর মত।

ই-মুখে এক স্তম্ভেরেব চাকর দুই জন
এক গাঁজিত জিহ্বা (বাঁকাই করিয়া) অ-
স্থির হুস্তিতে এক গায়াম ঘাইতেছিল।
মাস্তে মাথোঁ হেলিয়া যে এক লোক এক
টা কবর খনন করিতেছে। গুণে তাহা-
কে জিজ্ঞাসা করিল যে কে তুমি কি কারণ
এত রাত্রে এই মাঠে কবর খনন করি-
তেছ। ইহা শুনিয়া সে লোক তুরু কহিয়া
মদম ভাঙিতে উত্তর করিল। গুণ গাঁজি-
হইতে যে লোক বহু ভাষা জানিয়া তা-
হাকে আশ্রয়ন করিতে প্রয়াস হইল সে-
লোক কহাইল। তাহাতে গাঁজিওয়াল
ভাংহর কবুতী ও কোলিল গাঁজিতে, অ-
ইয়াং ইয়াং গিলিল। কতকদূর গাইতে
এক জুরে মাটি মাফাং হইল ও স্বীক-
জিজ্ঞাসা করিল যে কে তুমি কি কারণ
এত রাত্রে এই মাঠে কবর খনন করি-
তেছ। ইহা শুনিয়া সে লোক তুরু কহিয়া
মদম ভাঙিতে উত্তর করিল। গুণ গাঁজি-
হইতে যে লোক বহু ভাষা জানিয়া তা-
হাকে আশ্রয়ন করিতে প্রয়াস হইল সে-
লোক কহাইল। তাহাতে গাঁজিওয়াল
ভাংহর কবুতী ও কোলিল গাঁজিতে, অ-
ইয়াং ইয়াং গিলিল। কতকদূর গাইতে
এক জুরে মাটি মাফাং হইল ও স্বীক-

পুণ্যের মহিড় আমায় অতিশয় গুণ
 যেন আমার ডাড়াইহয়ে আমায় গর্ভ
 হইয়াছে ডাকার নিভে যাইতেছি। ইহা
 ক্রিয়ায়ই গাঢ়িতমান কলম যেই
 সজা আসিলিহি কিন্তু সে কানে যাইও না।
 গৌল বিন্দু বটিবেন সে পুণ্য ডোয়ার
 কাণে বহর মুখিতকলি কিন্তু আমায়
 গিঁদে দেখিয়া পলাইল ডাকার দুখান
 ডাকার হুড়া ৩ ছোলাপি এই দেখে।
 তখন ডাড়া দেখিয়া সে ছাঁ সিজাত পূর
 তি অমিয়া ক্রিয়ায় ঘরে গেল। পর
 দিবসে দিবসে ক্রিয়ায় অসহ শোকে
 সে বহর দেখিল।

ਭੂਮਿ।

ମହାରାଜାଙ୍କୁ ଶ୍ରଦ୍ଧାଘାତ ହେଉଛି ଏବଂ ସେ
 ମହାରାଜାଙ୍କୁ ଶ୍ରଦ୍ଧାଘାତ ହେଉଛି ଏବଂ ସେ

[illegible]

পুঁচিয়ের অম্বারি শজীকর সিং-এ
 রাভে ডোবর পুঁচিয়ের জন বরকদার
 মরক করিয়া রাভাত ডোবাইডেলিন মে
 রাভাত ডোবাইডে এ রাভাইয়েই নীচেই
 জন চারকর কার্পকর ডিডেই পুঁচিয়ে
 বরাই করিয়া শররকর বরাই করিতে যে
 যি জিলাই করিয়ে যে ডোবাইর কে
 কি করণপদান করিয়ে । ডোবাই
 ডোবাইয়ে করিয়ে যে অম্বারি এক না
 হাবর চাকর মজুর মোকর মাইয়ান
 হিবর কারন চাকা নাইয়। কলবর যাই
 ডোবাই । পর অম্বারি নিকট গিয়া
 রামবরর শিরর কাপ ডোবাইয়ে
 যে নিজেই বেডের দাঁপ । ডোবাই
 মে ডোবাইর লিম্বর দাঁপ আস করিয়া
 চাকর পুঁচিয়ে মরক মজুর বেইলিন
 এক পুঁচিয়ের মরক মজুর মোকর
 এ অম্বারি এক পুঁচিয়ের মরক

সমাপ্ত

প্রকার গাছের ও নগর দুই শত আটাল
 এই টোকা। উল্লিখিত এবং রায়মোহনের
 দ্বারা নগর প্রিন্স টোকা ও গিরি খান
 প্রাপ্ত। অমাবার তাহার বিচারক
 জানা করিল যে ডায়েরী এ সকল গাছ
 লেখায় পাওয়ায়। তাহাতে রায়মোহন
 করিল যে আমি বিচারক হইলেই বা
 রেক কাহাকেও ওভার দিব না। পরে
 তাহার মুকদ্দী যে বিচারক নইয়া থাকে
 তাহার নিষ্পত্তি করিল যে আমরা ডায়েরী
 বিচার করিয়া এ সকল টোকা সংগ্রহ করিয়া
 ঐ নজীফ প্রাণের ঘর। বেগম সময়
 পুলিশ সমুদায় দিতে আনিয়া এ সকল
 গাছ ও টোকা দেখিয়া দিয়া করিয়া
 করিল যে এই সকল জিনিস আমার ঘর
 হইতে গণ্ড হস্তে হস্তি গিয়াছে। ইহা
 শুনিয়া পুলিশের বিচারক ডায়েরী এই
 মোকদ্দমা বড় অজ্ঞানত্রে পাঠাইলেন যে
 খান বিচার হইলে পর রায়মোহন আপন
 মোকদ্দম করিল যে আমি শান্তিপুরের এক
 মোকদ্দম হইলে এই টোকা কর্তব্য করিয়া
 আনিয়াছি নথি কেবল দুই জন বরক
 দায়েরা আমাকে করিয়া টোকা তাহিল
 আমি টোকা না দিলে তাহার। এই সকল
 গাছ আমার ওভার লেখায় দিয়া করিল
 যে দুই টোকা। অতঃপর আমি আর কিছু
 আনি না। কিন্তু তাহার এই মিথ্যা নথি
 দিতে কোন ওভার হইল না। তাহার
 ইচ্ছা তাহার নিষ্পত্তি হইয়াছে।

ଅନ୍ତରାଳ :

[illegible]

এনাট্টা।
এনাট্টারোগি, হোতঃ স্থানে অধিক
প্ৰায় প্ৰকাশ করিতেছে।

ਸੁਨ. 1

৫ শেতুম্বর মৌ- বহরমপুরের কাঁচিল
 হতেম্ মাহের জাশিন মাহি নর (ধোঁ)
 হোয়ার করিতে বকু দিলেন তাহাতে
 মাহি- জাশিন মনে বসিতে নাগিল সে
 আছি কিছু খাই নাই আমার মাগি বুরি
 করে হি পুখুরি আছি যেতা ডোয়ার
 ডোরে। ইহা শুনিয়া মাহে তাহাকে
 জিজ্ঞাসা করিলেন যে তুই কি বলিতে
 ছিন। তাহাতে সে বলিল কিছু না। পর
 মাহের রাগান্বিত হইয়া কবির হাতে
 নরিলে মাহিন পলাইল। পর মাহের তা
 বৃত জেলিয়া ডোয়ার পলা- বৌদিয়া
 গিয়া তাহাকে কিল এ নাগি বনা মাগি
 তে সে অজান হইয়া গড়িল ডোয়ার
 এক বকী পরে সে মরিল। জাশির চিন-
 নক মাহের আশিয়া ডোয়ার শহর জিহ
 গা দেখিল যে বুনাতে ডোয়ার শহর ভি
 দ্য কত কমিয়া গিয়াছে সে প্রিয়াস
 ই হোক দয়া করিলে জাশি মাহি
 মোপর হইয়াছে।

निर्माण उपवर्ग १

পিনারের শুলভান যখন এসেছে তখন
মৈনোর দিকে আসি অধিহা হইতে
ভাটীয়া দিলেন ও কালে এই বিষয়
হইল শুলভান এসেছে তখন
বিশ্রান্ত যে মকল নৌকা পুত্র হইয়া
গিলেন সেই মকল নৌকা পানর মল
ও হইয়া এক ভাট ভেলি ২০ আ
কালীয়া এক মোল কুড়ি নৌ ও
অন্য নৌকা কলকাতা পানার দিকে

শহর ঘাই হইল। তাহারও অনুমান
উল্লিখ হইয়াছে বরং উল্লিখ হইল।
বন্য।

[illegible]

সমাচার দর্পণ

১৩ নং পৃষ্ঠা।

শনিবার।

১১ নবেম্বর মঙ্গল ১৮৭০।

১৭ ক্রিষ্টাব্দ ১৯৭১।

দর্পণে মুদ্রণ দৌলখানির কার্যবিভাগে।

বুখারিহ আনন্দ সমাচারের দর্পণে ॥

কোলাণির কাণ্ড।

কোলাণির শতকরা জয় টাকার সুদের কাণ্ড কয় করিতে হইলে শতকরা তিন টাকা আট আনা প্রিমিয়াম। বিক্রয় করি তে হইলে শতকরা তিন টাকা প্রিমিয়াম।

সপ্তাহের পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|---------|-------------|----|-------------|
| ১৪ | নবেম্বর | শনিবার | ১৭ | ক্রিষ্টাব্দ |
| ১৫ | ৫ | রবিবার | ১৮ | ৫ |
| ১৬ | ৬ | সোমবার | ১৯ | ৫ |
| ১৭ | ৭ | মঙ্গলবার | ২০ | ৫ |
| ১৮ | ৮ | বুধবার | ২১ | ৫ |
| ১৯ | ৯ | বৃহস্পতিবার | ২২ | ৫ |
| ২০ | ১০ | শুক্রবার | ২৩ | ৫ |

ইস্তাহার।

ইস্তাহার দেওয়া যাইতেছে যে ১৫ নবে ম্বর শনিবারে ঐশ্বর্য ও গুণের সমূহে বের নিলামে এই ১৫ নবমের কুড়ি বিক্রয় হইবে।

ঐকাল

নহাওয়া

ইস্তাহার

বীশ বাড়িয়া

কামার পাঁজ

কামায়া

আমদান

এই সকল কুড়ির কাণ্ডজাত নিলামে বের পুস্তক আবেদনকারি যোগদান করিবেন যার তিনি গেলে যে দিতে পাইবেন।

ইস্তাহার।

ঐশ্বর্য মোং এডালান কোলাণী মলকার সাহেব ইস্তাহার দিতেছেন যে হারা ও বখশুলা পুস্তক ও আলকীরাদি সুবর্ণ দ্বিত্ব এক শত পঁচিশ টাকা করিয়া তিন শত পঞ্চাশ টিকিট হইয়াছে এই টিকিটের সমুদায় টাকা আদায় হইলে ওড়বার নির্দিষ্ট দিনের সমাচার সহস্রকে দেওয়া যাইবেক।

সমাচার দর্পণ।

ঐশ্বর্য বত সাহেব।

ঐশ্বর্য বত সাহেব আশাশীল সমাচার ব্যাপ্ত ও গণিতের দিক্তার করিতে রাখিয়া বুল পুস্তক করিবেন এবং তাহার সহিত সিগারী ও অন্য সরঞ্জাম অনেক যাইবেক।

ঐশ্বর্য কোড়ির ইরিনাথ রায়।

কাশীয় রাজারের ঐশ্বর্য কোড়ির হারি নাথ রায় বাইকুন্দের এনাগিহ নাবালগী পুস্তক তাহার অধিদিক্তি সরবরাহকারের তথ্যে ছিল এই বৎসর তিনি ওপুস্তক বহুপুস্তক হইয়া আপন অধিদিক্তির মোহি বন্দোবস্ত করিতেছেন। ইহাতে তথ্যই সুখ্যাতি হইয়াছে।

নুতন খাল।

যোগ্য কলিকাতার বাসিন্দা

হইতে কলিকাতার মহা বিদ্যা খাল কাটিয়া গাঁৱর সহিত মিলন করিয়া দেওনের পূর্বে যে কল হইয়াছিল তাহা। বারন হইয়াছে। তাহার কারণ এই যে কলিকাতার মহা খাল কাটিলে অনেকের দেওতেও দুই বুল ভারিয়া শহরের ক্ষতি হইবে।

নুতন পুস্তক।

মোং কলিকাতার বাসিন্দা ঐশ্বর্য মোং সাহেবের যে খাল ছিল সে সকল শূণ্য পুস্তক কোলাণী বাহাদুর খারি করিয়াছেন যেহেতু সে খাল নীচ জুমি হইয়া কালে তাহারি জল হইয়া অনেক লোকের ক্ষতি হয় ১৮৭০ কোলাণী সাহেবের তাহাতে মৃত্তিকা ওড়িয়া মহাখাল রচনা করিয়া রাখিয়া এক পুস্তকী ও বাণী করিবেন এবং তৎপক্ষে খাল খুঁড়ি ভাঙা করিয়া বিক্রয় করিবেন। ইহাতে কোলাণির লাভ হইবেক এবং লোকের গণিতও ওপুস্তক হইবেক ও শহরের সৌন্দর্য হইবেক।

ঐশ্বর্য মহারাজ পুস্তক

রাজ বাহাদুর।

আমরা প্রসিদ্ধি যে বর্তমানের মহা রাজপুত্র ঐশ্বর্য মহারাজ পুস্তক পুস্তক রাজ বাহাদুর মোং মুদ্রণকারের ঐশ্বর্য নবাব সাহেবের সহিত মোং করণা নানাদিক ঐশ্বর্য করিয়াছেন।

অন্তিম

পূর্ব সমাচার দেওয়া গিয়াছে যে প্রজা

সম্পাদন দর্শন

প্রেমের বাধাশেষে ভ্রাতৃত্বপূরক এক লোক
 মূল করিয়াছিল তাহার আর এক সমা-
 চার এখন পাওয়া গেল যে সে লোক
 বীরা পতিয়াছে এবং ৭ জনের জ্ঞানভাণ্ডে
 ৮ জনে তাহার মন্তব্য তুলেদল দণ্ড
 অক্ষয় হইলে তাহাকে যখন কারিতে
 লইয়া যায় তখন এখন মহাবিশ্ব কা-
 লেও তাহার স্বভাবের ঐশ্বর্যকর্ম দেখা
 গেল না যেমত অন্য লোক দেখিতে
 গেল সেও সেই মত সুস্থির ভাবে গেল
 এবং সে ব্যক্তি মূল করিয়া অর্থাৎ আপন
 মরণ কাল পর্যন্ত মনে চিন্তা করিত যে
 আমি বাধাশেষে ভ্রাতৃত্বপূরক মূল করি-
 য়া দেশের মরল করিয়াছি। এইজন
 চিন্তা করণপুঙ্খ সে কখন বিষয় হইল
 না এবং সে আপন মন্তব্য জেমনই এদের
 পুঙ্খ রক্ষিত এমত সুনিশ্চিত হইল যে
 এক নিম্নেতে রাহি পুঙ্খ করিল এবং যে
 হারদের ক্ষতি এক অনেকে সে মূল পুঙ্খ
 কালে ওয়া জিজ্ঞাসা করিল যে তুমি রা-
 খিতে কি কলিলা। সে কহিল যেতো
 মাঝে মূল করিতে অক্ষয় হইয়াছে এই
 ওয়েও আমার পুঙ্খ রক্ষিতে নিশ্চয়
 নাই। পরে সে মূল হানিয়া কহিল যে
 ক্ষমি কল দৃষ্টি করিয়া থাকিবা ত্রাহা
 তেই তোমার ধর্ম ইহাচারে। এবং সে
 ব্যক্তি মুগ্ধ করিয়া কহিল যে আমি এই
 বাধাশেষের গোষ্ঠী বহি করবার কারণ
 অনেক কালপর্যন্ত চেষ্টা করিতেছি এবং
 ইহারদের পক্ষা নরা খিরিতেছি এবং
 চিত্তে অধরপাশ ইহারদের বর্ধাৎ ন
 কলি ১১ গিয়াছিল।

পরে ৮ জনে ভ্রাতৃত্বপূরক তাহার মন্তব্য
 তুলে দর্শনার্থে প্রেরণ অন্যত আইনে
 বিচারকর্তা মন্তব্য অন্য কোন ওপন্থের
 আশঙ্কা করিয়া অনেক ইমকা মেমাল

আলাইয়া হানে ২ রাখাইলেন। পরে
 বৈকালে জয়পথের সন্ধ্যায় তাহার মন্তব্য
 তুলেদল হইল।

সূর্য্যি কোই।

মোকাই গোজীপুত্র এক পল্টনের গো-
 রা ১৭ জনাই ভ্রাতৃত্বপূরক সময়ের
 আশ্রয় ঘরে চিন্তা দেখিল যে আপন স্বা-
 অন্য এক গোঁরাই সহিত হানিয়া হানিয়া
 কৌতুক করিতেছে এবং সেই গোঁরা ঐ
 স্বীর গালা বহিয়া হানিয়া আছে। ইহা
 দেখিয়া তাহার স্বামী ঐ দুই জনের পাঁজ
 হইতে দুই জনের মন্তব্য দুই হাতে বহি-
 য়া চালন দিতে ইচ্ছা করিল কিন্তু পারিল
 না। পরে অন্য গোঁরাকে কহিল যে তুমি
 আপন ঘরে যাও আমার ঘরে আর আ-
 মিও না যদি পুঙ্খ হারি আসিবা তবে জো-
 মাঝে অন্য কোন ওপন্থা হারন ক-
 রিব। ইহা শুনিয়া সে গোঁরা আপন
 ঘরে গেল। ঐ ব্যক্তি আপন স্বীকে মন
 করিতে লাগিল। তাহাতে স্বী কহিল
 যে তুমি কি হানিয়া কৌতুক করিতে দেখি
 না ইহার সহিত ইতোবিক ইহা মাঝে
 তোমার সহিত বিবাহের পরে ইহার স-
 হিত আমার মত ভাব আছে কিন্তু তুমি
 জল না। ইহাতে ঐ গোঁরা কোই আ-
 দো বহিচ্ছিল। পরে অভিমান বিবাহ
 করিয়া পুঙ্খ বন্ধু লইয়া ঐ স্বীকে
 গলি মারিল। তাহাতে স্বী ভ্রাতৃত্বপূরক
 মরিল। পরে ঐ বন্ধুরের পক্ষ হানিয়া
 নিম্নেতে এক গোঁরা আসিয়া তাহার
 বহিল সে কহিল যে আমি পারিল নাই
 আমি বহিয়া মূল করিয়াছি আমার মন
 হইতে আমি পলিহ না। পরে কলি
 কভার সূর্য্যমোকাইর জ্ঞানভাণ্ডে আদি
 সে তাহার মনো অক্ষয় ইহাচারে।

মান্দ্রাজের সূর্য্যমোকাই।
 বেরপুত্র প্রিয়ে এক জল পল্টনের গোঁরা
 মাতাল হইয়া বন্ধুরের সীরালাহা ২
 জন বেহালাকে মূল করিয়াছে।

পরে অন্য দুই জন পল্টনের গোঁরা
 বাধাশেষে মুগ্ধা মুগ্ধ করিয়া এক জন
 মরিয়াছে কিন্তু যে না মরিয়াছে অনুমান
 হয় যে তাহার মন হইবে না।
 আর এক পল্টনের গোঁরা এক গা
 ডোয়াকে বন্ধুত্বার্থে মূল করিয়াছে।

মান্দ্রাজের রাধাতে পরমাণিল ও
 বেহীনা মাই এই দুই জনে এক লোক মূল
 করিয়াছে।

এক পল্টনের গোঁরা এক মিররীর স্বী
 কে মূল করিয়াছে।

তিন জন পল্টনের গোঁরা এক জন
 পল্টনের গোঁরাকে মুগ্ধা মুগ্ধিতে মূল
 করিয়াছে।

আর এক জন পল্টনের গোঁরা বন্ধু
 হারা এক জনকে মূল করিয়াছে।

এক জন গোঁরা বিচারকর্তার অক্ষয়
 এক নাহবকে ধরিতে যাইতেছিল পথের
 মাঝে ঐ নাহবের সহিত দেখা হইয়া
 বিচারকর্তার লোককে মূল করিয়াছে।

এক জন পল্টনের গোঁরা মোকাই সে
 কল্লাহায়ে অন্য এক পল্টনের গোঁরাকে
 বন্ধুত্বার্থে মারিতে ওয়াগা করিয়াছিল
 কিন্তু বন্ধুকে আঁগ না হওয়ায় পারিল
 না।

আমিয়ারা নামে গোঁরা ২০ জনের
 কা এক স্বীকে সোলাম মাহমদ নামে
 এক জন বলাকার করিয়াছে।

এই সকল লোক এবং আরও অনেক
 লোক অনেক পক্ষের দোষী আছে মন
 রাখে সূর্য্যমোকাই তাহাদের বিচার
 হইবে।

সমস্যাচার দর্পণ।

মার্ক লোক।

ইংল্যান্ডের এক পর্যায়েতে জন্ম হইত মার্ক
এক লোক ছিল জন্ম মার্ক হইল তাহার
মৃত্যু হইয়াছে যে দেশে তাহারকে মরলে
গ্রাহম করিত।

মং-মা।

আমেরিকা দেশে ১৭ নম্বর ওজনের এক
মং-মা বেরিয়াছিল সে মং-মা যখন
কটিল তাহার পেটের মধ্যে শরাস মনিত
এক বোতল পাওয়া গেল। ইহাতে অনু
মান হয় যে কোন আত্মহত্যেতে কোন
পুলকে শরাসের বোতল ভলে পড়িয়াছিল
তাহাই মং-মা ভোজন করিয়াছিল।

গোবন্ধু।

ইংল্যান্ডের রাজস্বদারী গোবন্ধুর বিবরণ
পুত্র জাশান গিয়াছে ওরফে ইংল্যান্ডে
৬ নম্বরের গোবন্ধুর পুত্রমুখি করিয়া
যাশান দিয়া পোড়ান গিয়া থাকে এবং
তাঁহাতে নানাপ্রকার রাজস্ব ইয়া থাকে
সেই রাজস্বের আয়মপত্রের কুলের ইংল
জয় বালকেরা করে। এই বৎসর ৫ নম
বর রবিবার পুত্র তাহা না ইয়া ৬
নম্বরের সোমবার মোকাম প্ররামপুর
আট বন্ধু রাশির সময়ে আরক্ত হইয়া
৬ বন্ধু রাশিরকর্তৃক অনেক পুকার বা
জির ভাঙ্গান হইয়াছিল। ইহা দেখিতে
সিকটের বারান্দা লোক এ মাঝের লোক
এ বিধি লোক অনেক আসিয়াছিল।

মুন্সীমকোট।

হলিকাতার হাতিবাগানের প্রায়মতন
জাহাঙ্গীর আশন স্বী পুত্রকে ধন করিয়া
ছিল তাহা পুত্র সমস্যাচার বেয়া গিয়া
ছে সে পুত্রকে সে আশনেতে বসাই হই
য়াছিল। এখন শুনা গেল যে ৩ নম্বরের

তাঁহার বিচার হইয়াছে। তাহাতে তা
হার পিতা করিল যে এই প্রায়মতন বিবাহ
আবদি দ্বন্দ্ব মং-মা পর্যন্ত পাশান হইয়াছে
ইহার মধ্যে। অতিশয় পাশান হইতে
ওখন ইহার হাতি পায়ে গুলি দিয়া বাকি
য়া রাখা যায়। কখনও ওজন হইতে
এ আশন ভোজনের দ্বারা নষ্ট করিত
এবং এই কয়েকবার এক কুটুম্বের বাড়ী
গিয়াছিল সেখানেও অনেক ঘোরাওয়া
এ মারিগিট করিয়াছিল। এই কথা শুনি
রা প্রায়মতন অসম্মত হইতে করিল যে এ
পাশানের কথা শুনিও না আমার পিতা
অনেক পিতলের বড় রাবারাণীতে পাঠ
য়া মাটা করিয়া রাখিয়াছিল তাহাতে বি
রালে ওম্বুর ডাকছিল তাহাতে এই কথা
পড়লে তাহার আশাতে আমার স্বী পুত্র
মরিয়াছে। এই সকল কথা বিচারকর্তারা
শুনিয়া তাহারকে পাশান দিই করিলেন।

গুন্সজতি।

মুন্সীমকোটের শেষ মাসিনে শ্রুতি
গুন্সজতির মাছেরেরা শ্রুত পুত্রান অত
মাছেরেরা অনুমতিতে বনিকাতা হইলে
যাশা তাহারক করিল এবং দেখিল যে
মরল জেলখানা ঘরে বাধু রাই নাই।
এবং জোজহারি ও বেওয়াশি মোকদমা
তে বসাই লোকেরা কোন পুকার কহ
পায় না। তাহারো আরো এই অস
হইতে করিল যে এই বসাই আশীমারা
বসাই হইতে মাসিন হইবার কালে যে
শ্রোমশানির মরয়ানকে কিছু হামশিন
স্বকর যেরূপ সে ওপযুক্ত নীচে ওতপুত্র সে
পুকার কহ আর না হয় এইকর মর
শান অযুত পুত্রান অসম্মত হইবার সিকট
তাঁহারে করিল। এবং জোটে আশনের
মোকদমাতে যে মোকদমা তাহারদিকে

বসাই করিলে তাহার বসাই লোকের
দিককে শ্রুতিমিন জন্ম পুত্রান করিয়া বি
কে এইকর বসাইবস। মং-মা হইয়াছে
ওপযুক্ত এখন অনু লোক বসাই হয়।

নাল।

গড় সজাই হইতে এ সজাই লোক
অধিক বিদ্য হইয়াছে। আরবীয় লো
কো অনেক মারি করিয়াছে এবং এখন
পর্যন্ত এ করিয়াছে ও আমেরিকা দেশীয়
রাও অনেক নাল মারি করিতে আরম্ভ
করিয়াছে।

মং-মুত ভালা।

ইংল্যান্ডের জাশান দেশের বৎসর এক
মার্কের অনেক পরিশ্রম পুত্রক মং-মুত বি
দ্যা ব্যবসায় করিয়া তাহাতে অতিশয়
হইয়াছেন তিনি এ দেশে কখনও আসি
মেন নাই। ও তিনি এক জাহাজ
জাহাজ করিয়াছেন তাহাতে মং-মুত
ওপযুক্ত ভালা এই দুয়ের ভালা পুত্র
করিয়াছেন। ইহাতে দেখা যায় যে এই
দুই ভালা এক স্থানে ওপযুক্ত কিছু কো
কালেও কোন স্থানে হইল তাহা আশা
যায় না।

কোলাসির বালিকার কুঠী।

আমরা শুনিয়াছি যে শ্রীশ্রীপুত্র কোলাসি
বাহাদুরের বালিকার কুঠীতে এই বৎস
বসন হইবেক। রামপুর বোহাগিনার
কুঠী দুই খণ্ড হইবেক তাহার এক খণ্ড
পারমাতে হইবেক অন্য খণ্ড রামপুর বো
হাগিনাতে থাকিবেক। এবং পশ্চিম
ও গৌড়া গড়ে এক কুঠী হইবেক।

সমস্কার বর্ণন।

জিহিন আমদানী।
ইউক ১৬ আকটোবর নাগাঁও ১ নং
হর কলিকাতার মধ্যে এই সকল দেশী
জিহিন আমদানী হইয়াছে।

| | |
|----------|---------------|
| তুলা | ৪০৫ মন |
| চিনি | ১৫৩৭ মন |
| সোণা | ১৪০৫ মন |
| কুড় আদা | ২৩৬ মন |
| রেশম | ৪৬৪ মন |
| কুমারি | ৪১৩৮ মন |
| মসিলা | ১৮৩ মন |
| বহু | ৪৫৮১৩ মন |
| লবণ | ৪০১১ কুঠীর মন |

আহাশি জিহিন আমদানী।

| | |
|-----------|---------|
| লোহা | ৩৩৩ মন |
| ইরাত | ৪১৩ মন |
| গড়ন ওঁবা | ৪৩০ মন |
| চিনি | ১৩৪ মন |
| গোলায়িত | ৬৭৩ মন |
| কুমারি | ৪২১২ মন |
| আমদান | ৩৪ মন |

মোকাম কলিকাতাতে বর্তমান আহাশ।

চীন দেশের কারন কোম্পানীর ১৩ আহাশ
কোম্পানির ভারত ৩। ইপায়ে ঘাই
তে পুস্তক ইপায়ে সওয়াবের ১০। এবং
ইপায়ে ঘাইতে প্রত্যেক ১ দেশীয় সওয়াবের
৪। অতঃপর লানসাইনের বাজিয়ার
কারন ৩১। বিকর ও ভাড়া কারন পুস্তক

১৩। আকটোবর ১। অক্টোবর ১।
নুগিশের ৪। অক্টোবর ১৫।

শিউড়ি।

কোমেন দেশে এক সাহেব গুপ্ত পাই
য়া অনেক হালনাগাদ বখার মধ্যে থাকি
রা শেষে কিছু অর্থার্থ বন্ধ করিলে বিতা
রে তাহার শুল্ক দত্ত করিতে আসি হইল।
তৎকালে অধ্যাপন করিতে তাহার পুত্র
এই সমস্কারে স্তম্ভিত হইয়া বিচারকর্তার নি
কটে গিয়া তাহার পদাবলত হইয়া নি
তার পরীক্ষাতে কাল বই প্রকাশ করিল ও
কহিল যে আমায় নিতার মুক্ত হইলে
আমায় জীবন দীর্ঘ কখনও হইবে না।
ইহাতে বিচারকর্তার চম্ভাক হইল
এক- এই বিচার সভা জিনিয়া সনিকের
সমস্কারে লিখিয়া ভাঙ্গেশের বাহুপাছের
নিম্নে এক জন হরকরা পাঠাইল। বাহু
পাছ সেই পত্র পাইয়া সমস্কারে আসি
হইয়া বিচারকর্তার নিকটে নিতার দত্ত
করা ও পুস্তকের অতিশয় সন্মত হইল
নাম দিতে ১ হরকরা দিয়া লিখিয়া পা
ঠাইলেন। পরে পুত্র রাজদত্ত সন্মত হইল
করিতে কবির করিল না। এবং বিশেষ
কহিল যে আমায় গোলায়িতের নগায়
ভুলে ইহাতে যদি আমায় এইকাল নাম হয়
তবে আমার নিজের মন করবার চিন্তা এই
নাম থাকিবেক। এই অতিশয় আশার
কথ্য শুনিয়া বাহুপাছের অধ্যাপন হইল
এক- তাহা কলিকাতার কারন আসিল নি
কটে আসিছিল। এক- তাহা কলিকাতার
নিকটে দেখা করিয়া রাখিলেন।

বাজার বাণী

| জিহিন | মোন | অবধি | পার্থ |
|----------------|-----|------|-------|
| নুগারি | ১ | ৩৫০ | ৩৫০ |
| ভেড়েরা ইতল | ১ | ১২ | ৩০ |
| গাছ মরিচ | ১ | ২ | ০ |
| সারিকল ইতল | ১ | ১৯ | ১৪০ |
| তুলা কাছোকা | ১ | ০ | ০ |
| কাণা রঙ্গপুর | ১ | ২। | ২। |
| গাউনাই কাণা | ১ | ২ | ২ |
| চাম্পাটনাই | ১ | ১৫ | ১৫ |
| পাছি উত্তম | ১ | ২। | ২। |
| পাছি মধ্যম | ১ | ২ | ২ |
| মুখী উত্তম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মুখী মধ্যম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| বানাম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মুখা গোম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| গাউনাই বুট | ১ | ১৫ | ১৫ |
| অবধি জালি | ১ | ২ | ২ |
| উত্তমগারা দত্ত | ১ | ২ | ২ |
| মধ্যম দত্ত | ১ | ১৫ | ১৫ |
| উত্তম দত্ত | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মধ্যম উত্তম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| সোমবাজী | ১ | ৫ | ৫ |
| বিহার উত্তম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| বিহার মধ্যম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মোহর উত্তম | ১ | ৫ | ৫ |
| মধ্যম | ১ | ৫ | ৫ |
| চিনি কাণি | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মধ্যম | ১ | ৫ | ৫ |
| গার চিনি | ১ | ১৫ | ১৫ |
| উত্তম | ১ | ৫ | ৫ |
| তাম্র | ১ | ৫ | ৫ |
| চমক | ১ | ১৫ | ১৫ |

এই সমস্কার বর্ণন পুরানপুরে প্রাপ্যমানের পুস্তক আছে পরিবারে রাখা হয়। বাহার লগনের আশ্রয় হয় তিনি পুস্তকগুলিরে প্রাপ্যমানের
আপন বাস পাঠাইলে লগনের আশ্রয় রাখা হয়। পুস্তক বাহিরের কাছারি দিয়া লগনের এক টাকার চিনি বাহির করিয়াছেন যদি তাহার নিকটে
কালম না পাইলে তবে তিনি পুস্তকগুলিরে প্রাপ্যমানের লগনের আশ্রয় রাখা হয়।

१ अर्थाशायन मतः ॥११॥

দর্পণে মুখ-বৌদ্ধব্যাসিহ কার্যবিচক্ষণ্য বজ্রহানিহ আনন্দ সমাচারকা দর্পণে ॥

द्वितीयोऽपि काण्डः ।

কোম্পানির শতকরা ছয় টাকা মূল্যের
স্টক ফর করিতে হইলে শতকরা তিন
টাকা আট আনা প্রিমিয়ম। বিক্রয় করি
তে হইলে শতকরা তিন টাকা প্রিমিয়ম।

महोदय पश्चिमा ।

| ১৮ | নবম | পরিবার | ৪ জন |
|----|-----|--------|------|
| ১৯ | ৫ | পরিবার | ৫ |
| ২০ | ৫ | পরিবার | ৫ |
| ২১ | ৫ | পরিবার | ৫ |
| ২২ | ৫ | পরিবার | ৫ |
| ২৩ | ৫ | পরিবার | ৫ |
| ২৪ | ৫ | পরিবার | ৫ |
| ২৫ | ৫ | পরিবার | ৫ |
| ২৬ | ৫ | পরিবার | ৫ |
| ২৭ | ৫ | পরিবার | ৫ |

इत्यादि।

ନାୟାବିର ବିଠୁଆ ବାହାରିବେକେ ସେ ହୁଏ
 ହିନ୍ଦେ ଜାଣିବି ତିଜୁନ ନାୟା ଆହାଜ ଓ
 ତାହା ବୋହାଁ ବିଷୟ ବହଳ ଗିରି ଡିରି
 ଗିନି ନାହାରିବେ ହୁଏ ନାଆଁବିହାରୀ
 କେ ହୋଇବାର କାଳିନ ଗିରିବି ଏ ଗିରିନି ଆ
 ଗିରିବେ ଗିରିଆବି ନାହାରିବେ ନାହିଁବାର
 ଗିରିବି ନାହାରିବି ନାହିଁବାର ଗିରିବି ନାହିଁବାର
 ଗିରିବି ନାହିଁବାର ଗିରିବି ନାହିଁବାର ଗିରିବି ନାହିଁବାର
 ଗିରିବି ନାହିଁବାର ଗିରିବି ନାହିଁବାର ଗିରିବି ନାହିଁବାର

সম্পাদক দপ্তর।

विष्णु पत्र :

स्वातंत्र्य-समितीतर्फे देवकामानंदराव

দশরি নিমেষে একদন্তন গীতা ঘর হইতে
 রে তাহারে দুইন ইহাবিক্রম জড়িত লভ
 বিকশ সাহেব ও অলা পাখির সাহেব
 রা একত্র হইয়া গড় ময়নাবার এক পুস্তক
 তাহার মাঝে শিল্পের নক্স তাহমতে
 কর ডাফিই এক যেন ও তাহালাহারে লম্বা
 নিমিষে সুখানি প্রাণে গুণিত করিয়া
 জেন সেই গীতা ঘর. সেই গুণে পায়ে
 খাতি হইবেক এখান. সেই গীতা ঘরের
 এক গুণে বহির্দু লোকের হাসকোহি
 গো বিদ্যাভাসময় এক শতশালা পুস্ত
 ত হইবেক তাহা গীতারে কখন এক
 সাহেব চারি হাজার টাকা জড়িত লভ
 বিকশ সাহেবের নিমেষে দুখানি গীতা
 যেন।

इष्टुष्टुवावाप्रः ।

[illegible]

अर्द्ध प्राण ।

४१. अथवा प्रमाणित करने पर २० अंक

কিছু মোকাম ভাঙুবারে বারমুন্সীর জা
বান্দা পুড়িয়া এ মোকাম গোরহাটির
বারমুন্সীর জাবান্দা পুড়িয়া বিমলনের
কোথুর দেখিচু গিটইর ডাব- লোক
এব- ভাঙুবারে লিচুর ডাব- মহাজন
এ মোকামে আনান। এর সঙ্গে কলিঙ্গা গিরা
ওরে আশিয়াছিল। এই সময়ে এক মহা
জনের গৌনধর ভূগিয়া এলিল। ইহা
দেখিয়া অলস লোক ইন্তু হইয়া ভাণ
লির্নে চোঁড় করিল কিন্তু কিছু হইল না।
সে মহাজনকে ভিন্ন ভাগিআল বর হইল
হইয়া উলিচইর দী-সেউল শ্রবণের
পুড়ি ঘরু হইল কিন্তু সে ভগিনী জাউ
লিচই একইআলিআল জিল সে চালাখালি
অউবুর করিয়া এক চীয়াচণে গডি
লগিয়া গুহা ঘরে করিল কিন্তু ই চালা
খালি এক গাউলি আরও লম্ব হইল না জা
হইল ইহা জল অরুদ খাবিচিউ লোক
থাকে ইহা বিয়া জিগিয়াছিল।

[illegible]

সমাচার কলম।

সূর্য্যকোষ।

মোকাম কলিকাতার রায়মোহন হাট ইজামদী নামে এক বাড়ির ওপর সূর্য্যকোষ স্থাপন করিল যে ইজামদী। মোকামের বাড়িতে জগৎ দিতে ওয়াদা করিয়াছিল তাহাতে সাক্ষিরা উপস্থিত হইলে রায়মোহনের পুত্র বাসি লোকেরা সাক্ষ্য দিল যে সূর্য্যকোষ কেন্দ্র। সাহেব রায়মোহনের বাড়িতে জগৎ দিতে ইজামদীকে শিখাইয়া দিয়াছিল যেহেতু এই সাহেব পূর্বে রায়মোহনের বাসি খরিদ করিতে তাহিয়াছিল কিন্তু ঘরে না পোষাইলে সাহেবকে এই স্থান যেন লাই ও-পুত্র এই সাহেব হুজ্ব হইয়াছিল। এই সাক্ষীরদের অনুমোদন হওয়াতে ইজামদী স্থাপন পাইল। ইজামদীর ওলী সূর্য্যকোষ করিল সাহেবের অজ সাহেবেরদের নিকটে বহুদায় করিল যে এই ঠিক অন্য সাক্ষী বিদায় না হয় যেহেতু ইহারদের নামে কেন্দ্র সাহেব আসিল বহুদায়ের সম্মুখে নাগিল করিলেন। পরে জে সাহেব তাহার দিগন্তে নতরকমী কর করিলেন এবং কহিলেন যে ইহারদের মোকামদা এখনি হইতে যদি গৃহভুক্তরা এখনি হাজির থাকিত।

মূল।

গত ৩ আকটের তারিখে মোকাম কলিকাতার টোলহাউস অর্থাৎ সাধারণ ঘরে মলার বহু নামে এক জন মুসলমানের দ্বারা মূল বিষয়ে বিচার হইল। জাহার সাক্ষীর সাক্ষ্য দিল যে এই দী মিথ্যাতী নামে এক মোকামদারের সহিত ছিল কিন্তু জাহার সহিত যাবদা বিবাদে হইতে। তাহাতে মিথ্যাতী কহিত যে আমি তবকে মূল করিব। পরে জাহারের

পুত্র মলারের বয়স প্রায় এক দিন এই কালে বিচারে করিয়া থাকিল। পরে ১১ আকটের মোকামের প্রত্যয় মোকামে তারিখ বর্ণনা সময়ে এই মিথ্যাতীরের নিকট লোকেরা গলায় চিহ্নিত মূল সূর্য্যকোষ দেখান। মিথ্যাতী দেখিল যে মিথ্যাতী ও বহু দুই জনের গলা-কোমর হইয়াছে ও বহু মূর্তি যাহা ও মিথ্যাতী সাক্ষী আছে। পরে তাহার নিকটে এক ছুর ও তাহার খাল পাওয়া গেল। পরে বিচারে এই সাক্ষ্য শুদ্ধ তাহার মূলীয় সূর্য্যকোষ তাহার খাল সাহেবের সাধুর হইল। ইহার পুত্র দিনে এই সাক্ষ্য সাহেব মিথ্যাতীকে দিয়া তা নব সাক্ষ্যে যাইতে আত্ম করিয়াছিল কিন্তু সে গেল না। ও সাহেব হুজ্ব আসে ঘন করিল কিন্তু তাহা পাইল না। ইহা তে বিচারকর্তার নিকট করিলেন যে মিথ্যাতী আসিল ইহাতে ও আসিল হইতে বহুকে মূল করিয়াছে কিন্তু সে আসিল গলা এমত করিয়াছে যে সে কথা কহিতে পারে না এবং যেনো তাহার গলা ভাল না হয় সেরিয়া তাহার হুজ্ব কহি হইবেক না।

যে প্রমাণ।

দক্ষিণ দেশে এই এক অনবর হইয়াছে যে স্থান লতার হস্তিগণ লিখামান্যাদি দেশে ই-প্রজাতীয়াদি আরবী ও আফ্রিকা দেশের সহিত বিলিয়া হইবেক। ইহা লতা ও তুরুলতা নদীর মধ্যস্থিত যে দিগন্ত মালাদীর সূর্য্যকোষ আসে সে অভিজ্ঞতা এবং দেখান উৎসাহিত হয়।

হুজ্ব।

যে প্রমাণ হইতে সমাচার আসিল যাহা যে গণ্ডি মূল সাহেব সময়ে সে খালিকার হিন্দু লোকেরা এই সূর্য্যকোষ

পুত্র মূল পুত্রদের নিমিত্ত রাম ও লক্ষ্মণ ও হনুমানের মূর্তি পুস্তক করিয়াছিল এবং সাহেবের কারণ মূল সাহেবের মূর্তি নানা পুত্রের বাকবাহারা পুস্তক করিয়া অনেক মোকামদারের এক মূল সাহেব তাহাতে যাইতেছিল। এইকালে মোকামদার মুসলমানেরা অনেক এক হইয়া সেই সাহেবের মূর্তি ভাঙিল। তাহাতে হিন্দুরা বের সহিত অভিযন্ত্র মার মার হইল। হিন্দু লোকেরা কহিল যে যখন মূল লম্বানদের গোপীরা বাহির হইবেক তখন আমারাও এইকণ করিয়া ভাঙিব। ইহা শুনিয়া মোকামদার বিচারকর্তা সাহেব ওভর পক্ষীয় লোকের দিগন্তে আসিয়া বিচারকর্তার করিয়া দিলেন।

এক মোকামদার হইতে পোলের কোণে জাহার সাহেবের গায়ে এইকণ দু গোলাব ও মধ্যম এক কালে হওয়াতে হিন্দু লোকের সহিত মুসলমানদের অস্ত্রাশয় ঘূষ হইয়া পাঁচ জন মুসলমান মরিয়াছে ও অনেক লোক আঘাত হইয়াছে, যখন সে সাক্ষ্য লোকের দিগন্তে সে গায়ে হইতে পুত্রের কাছারিতে আসিল তখন সেই বিচারকর্তা সাহেব যে দিনে যে আঘাত ৯ জন তাহার মতে কহে। শুনিতে কহিল। আঘাতী লোকের দিগন্তে তাহার খালিকার দিগন্তে আসিলেন। পরে বিচারকর্তা মুসলমানেরা কহিল যে অস্ত্রাশয় তাহার কহি যে কিছু অন্য লোকেরা হুজ্ব যে মূল লম্বানদের আত্ম জাহার করিয়াছে।

জাহার হইতে সমাচার আসিল যাহা যে মোকাম এইকণ হিন্দু মুসলমানের বিবাদে হইয়াছে। ও মিথ্যাতী হইতে সমাচার আসিল যে মোকাম এইকণ হিন্দু ও মুসলমানের বিবাদে হইয়াছে তাহা

সমস্যা দর্শন।

তে নেপালকার শ্রীযুত সমস্যা দর্শন
রয়ে, সহিত কোম্পানীর নিয়মাবলি
যুক্ত হইয়াছে।

কালপূর মোকামের অধীকৃত পূজার
পূর্ব বিবরণ। করিয়া সকল দ্বন্দ্ব নিবাহী
নিযুক্ত করিয়াছিল। এ কারণ সেই দ্বন্দ্ব
কেন বিবেচিত হয় নাই।

পূর্ণাঙ্গী দিল্লীর শ্রীযুত বাহাদুর
আজম তিনি যে বিচারকতা নাহবের
সাক্ষ্যে করিয়াছেন যে এই মুসলমান
রা যথেষ্ট এইকল নরকীয় কর কিন্তু
ইহা আমায় শিতার মত নহে যেহেতু
কোনো কিছা অন্য কোন কেভাবে এমন
কর্তব্য লিখে নাই।

আহাৎ তুবি।

আরব দেশের লিখিত মক্কাট নগরের
লোভে ব্যারান্স নামে আহাৎ চণ্ডী না
গিয়া যাত্রা পতিয়াছিল এবং আহাৎের
পণিতে অভিশপ্ত বাতাস পাইয়া অতি
যেণে আহাৎ ভাগতছিল। কাঁড়াল
নাহব দ্বন্দ্ব নির্ণয় করিতে পারিল না তা
হাতে কাঁড়াল ও মকল মালিয়া ও অন্য
এগার জন মারা পড়িল। এবং চতুর্দশ
এক নাহব ও অশ্লিষ্ট আহাৎীয় লোক
অতিক্রমে সেই চণ্ডীর ওপর উঠিল ও
তাঁহারা তিন মাসেরও অধিক ও গুঁড়না
ও মোটে মক্কা আইয়া ইতিয়াছিল।
তিন মাসের পর এক আহাৎ পাইয়া
মক্কাট নগরে উঠিল যখন তাহারা আ
হাৎ পাইয়া আহাৎ ও গুঁড়না মারা তাহা
রা গুঁড় ও গুঁড় ও অতিক্রমে ও মরণপন
ইতিয়াছিল পর তাহারা নগর ওঠিয়া
করাই পারিলেন কেহন।

শিল্প।

আমেরিকা দেশে কুসুম মাসে চণ্ডী
এক বোশ নইয়া শিল্প পড়িল এক শিল্প

এক বাহাদুরের কুসুম মাসে শিল্প হক
পড়িল সে হকের জালপাঠ করিয়া
গেল। ইহাতে অজ্ঞান নানা মন্ত হই
য়াছে ও অজ্ঞান পণ্ড ও পণ্ডী মরিয়াছে।

ভূতাক্ষ

আমেরিকা দেশে এক জন বাসক য
না গিরিতে এক নদীতে বহনী যেদিন
তাঁহার ভূতাক্ষকমে বহনীমুখেতে এক
ভোতা বাহিয়া উঠিল। তাঁহা মালিয়া যে
খিল যে তাঁহার মরো গিল পড় তাঁহার।

কুসুমাবলি

আমেরিকা দেশে এক ছীর তিনটা কুসুম
বালক ছিল। সে ছীর বিবেচনা করিল যে
এই বাসকেরা অযোগ্য নিদ্রা আসে এখন
ময়িলে পরকালে উত্তম গতি হইবেক এক
বত হইলে পার করিবে ওখন ময়িলে
আগাগতি হইবে। অতএব এই ক্ষণে
ইহার বিবেচনা মরিয়া কর্তব্য ইহাতে ঈশ
র আমায়ো ভাষা করিবেন। এই বিব
চনা করিয়া এক দিন রবিবার তাহার
স্বামী গিয়াতে গেলে ঐ তিনটা বালক
নইয়া পুষ্টিপাতিতে জুবায়া ময়িল।

কৃত্রিম ভূত।

আমেরিকা দেশে এক গায়ের এক
জন চান্স লোক রাষ্ট্রকালে আশল ঘরের
মধ্যে বসিয়া লাস্সারিক ভাবনা করি
তেছিল ও অগির ওড়ান নাইতেছিল।
এই সময়ে এক অকবুত কুসুম পরায় ও
কুসুম ও মক্কা বস্ত্রি দুই শ্রু ও এক
নাগল আশল পরায় দিয়া ঐ চান্স
সম্মুখে ওপস্থিত হইল। তাহার আহাৎ
যেখিয়া ভয়েতে চান্সর বোহাখি লোশ
হইল যেহেতু সে যেনে পুর ও দাবিল
বিশিষ্ট ভূত মকল লোকে আসে। পর

সে ভূত কহিল যে আমি নরকহইতে
কান্সিয়াছি তোকে নইয়া বাইবে। চান্স
কাতর হইয়া অশ্ল পূর করিল যে
আমাকে এক দিবসের কারন মাজিক কর।
পর ভূত কহিল তুই যদি আমাকে মাজিক
টাকা দিতে পারিল তবে তোকে অশ্ল
বাসরের কারন এখন রাখিয়া দাখি।
চান্স গুলভয়ে আশল ঘরহইতে বাজার
টাকার এক বাউনোট বাহির করিয়া
দিল। ভূত কহিল আমি লোভ নইব
না আমায় হস্তে অগি আর হস্ত
করিলে দহই হইবেক। চান্স কহিল
আমি কলা টাকা আশিয়া রাখিব আশল
আশিয়া নইবেন। ভূত তাহাই মাজিক
করিয়া গেল। পর দিবস চান্স লোভে কলা
ইয়া টাকা পুষ্টি করিয়া রাষ্ট্রিক সজ্জা
সময়ে এক জন বোকাশী বোকাশ মক্কা
এ চান্সর বাড়ীতে ওপস্থিত হইল মকল
বুঝে ক্রমিল ও কিছু ভীত না হইয়া ঐ
চান্সর বাড়ীতে থাকিয়া আহাৎদি করি
ল ও বত হক্কে করিয়া ঘরের এক ঘিণে
পুষ্টিয়া থাকিল। কিছু রাষ্ট্রিতে ঐ ভূত
চান্সর লিখিত ওপস্থিত হইয়া কহিল যে
আমায় টাকা দে। চান্স হাজার টাকা
একদ করিয়া ভূতের লিখিত রাখিয়া আশ
লি ভূতের শরীরের অগির ভয়ে কিছু
দূর থাকিল। ভূত টাকা আশল কাগজে
ওড়িতে লাগিল। এই সময়ে ঐ বোকাশী
এক লাগি নইয়া ঐ ভূতের মক্কা পুষ্টি
আহাৎ করিল তাহাতে ভূতের শ্রু ভা
বিল ও ভূত পড়িল। পূরার এক নদী
ময়িল তাহাতে ভূত অতিক্রমে নইয়া
গেল। বিচার হইয়া সে কই থাকিল।

অজ্ঞান নগরের চণ্ডী।

নিম্ন দর্শন এক লোক অজ্ঞান

সমাচার দর্শন।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥

ବୃକ୍ଷେଷୁ ପଞ୍ଚମେ ।

হাসিয়া দেখে এক নগরে বৈষ্ণব
 বুকের খুঁজ দেখিতে অনেক লোক একত্র
 হইয়াছিল বৈষ্ণব তাহার এক দ্বিগের
 হেয়াল পড়িয়া কহায়ে গারি পাত লোক
 আরাতি হইয়াছে বিশেষত এক পাত
 লোক অধিক আরাতি হইয়াছে আর
 হুণ জল এখন হইয়াছে।

इष्टकमया ।

বৈষ্ণবের বাতাবী কৌশলহাণ্ডেস
 কারে হস্তকমবৃত্ত হুঁসি মোট চারি
 গাতি বৈষ্ণব পঞ্চম্যাজিন তাহা অধিকার
 আত্মতে পোতান চিয়াছে।

ଆର୍ଥ ନାଟି ।

এক নগরীর এক সারহর আশান পুত্র।
কল কাটী তারিহা দুর্দশার প্রাইতেছিল।
এক দিনে সারহর মোহাম্মদ শাহ নামে
এক ভদ্র লোকেরা সে মুক্তিবার জ্ঞা
বিশ্বদুঃখী টাঙ্গা পরিয়া বিক্রয় করিয়া
করিয়া পুত্র আশানকে পাইল। পর
সারহর আশানকে ভাই। পাইয়া পুত্রকে
কল কাটী প্রাইতেছিল।
কল কাটী তারিহা দুর্দশার প্রাইতেছিল।
এক দিনে সারহর মোহাম্মদ শাহ নামে
এক ভদ্র লোকেরা সে মুক্তিবার জ্ঞা
বিশ্বদুঃখী টাঙ্গা পরিয়া বিক্রয় করিয়া
করিয়া পুত্র আশানকে পাইল। পর
সারহর আশানকে ভাই। পাইয়া পুত্রকে
কল কাটী প্রাইতেছিল।

টাকা পোলায় নতু কুটি স্বপ্নমতের রেখা
 গোল। সে মঞ্চের টাকা বিকল্প করিয়া
 তিন হাজার দুই শত টাকা মূল্য হইল।

॥ कर्मणि कृत् ॥

[illegible]

ଆହାତ୍ତ ତାତ୍ତ୍ୱ :

[illegible]

श्री आचार्य दामि पुत्रिबन्धुन बाणाधरचन्द्र मुक्तिआर्य निर्वाहक भण्डा रह । बाह्यर नमस्कर बाह्यचक्र हस्त विनि मुक्तिआचार्य बाणाधरचन्द्र
 बाणाधर चन्द्र निर्वाहक भण्डा रह । बाह्यर नमस्कर बाह्यचक्र हस्त विनि मुक्तिआचार्य बाणाधरचन्द्र
 बाणाधर चन्द्र निर्वाहक भण्डा रह । बाह्यर नमस्कर बाह्यचक्र हस्त विनि मुक्तिआचार्य बाणाधरचन्द्र

সমাচার দর্পণ

১০৭ নং-১৮৮।

শনিবার।

১৫ নবেম্বর সন ১৮৮০।

১১ আগস্ট সন ১৮৭৭।

দপ্তরে দুই সৌন্দর্যের কার্যবিবরণ।

বৃহত্তমিহ মানব সমাজের দর্পণ ॥

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির শতকরা ছয় টাকার সুদের
কাজ হয় করিতে হইলে শতকরা তিন
টাকা অষ্ট আনা প্রিমিয়ম। কিন্তু কর
তে হইলে শতকরা তিন টাকা প্রিমিয়ম।

সপ্তাহের শক্তি।

| | | | |
|------------|-------------|----------|----|
| ১৫ নবেম্বর | শনিবার | ১১ আগস্ট | ১৫ |
| ১৬ | রবিবার | ১২ | ১৬ |
| ১৭ | সোমবার | ১৩ | ১৭ |
| ১৮ | মঙ্গলবার | ১৪ | ১৮ |
| ১৯ | বুধবার | ১৫ | ১৯ |
| ২০ | বৃহস্পতিবার | ১৬ | ২০ |
| ২১ | শনিবার | ১৭ | ২১ |

ইস্তাহার।

ইস্তাহার দেওয়া যাইতেছে ১০ দিনে
যে শনিবার প্রথম ওল কেবল সাহেবের
যে আলোচনা করি আরও সাহেবের যত
ওয়ার নিউট পূর্ণা নবীর পূর্বের এশিয়া
বীর এই নীল কুর্চী দুই দাঁড় হইয়া
দিয়ে হইবে।

পূর্ণা নবীর পূর্ণ দাঁড়।

| | | |
|--------|----|-------------|
| ১০ইয়া | ১৪ | ১৪ জোড়া টন |
| ১১ইয়া | ১৫ | ১৫ জোড়া |
| ১২ইয়া | ১৬ | ১৬ জোড়া |
| ১৩ইয়া | ১৭ | ১৭ জোড়া |
| ১৪ইয়া | ১৮ | ১৮ জোড়া |
| ১৫ইয়া | ১৯ | ১৯ জোড়া |
| ১৬ইয়া | ২০ | ২০ জোড়া |
| ১৭ইয়া | ২১ | ২১ জোড়া |

পূর্ণা নবীর পূর্ণ দাঁড়।

| | | |
|--------------|----|-------------|
| মদনপুর | ১৪ | ১৪ জোড়া টন |
| দক্ষিণাবাড়ি | ১৫ | ১৫ জোড়া |
| জামুন্ট | ১৬ | ১৬ জোড়া |
| বরগাঁও | ১৭ | ১৭ জোড়া |
| দুরকী | ১৮ | ১৮ জোড়া |
| বড়িডিয়া | ১৯ | ১৯ জোড়া |

এ ডের কুর্চী সর্ব প্রকারেই করণ
শুদ্ধত আরে এবং-বাদন রেঞ্জার চিহ্নের
এখলও দেওয়া যাইতেছে।

পশ্চিম লাটের সাত কুর্চীতে আট
ইশ হাজার তিন শত সাতশতাব্দী টোকা
বাকী আছে তাহার মধ্যে দশ হাজার
টোকা অলাগানে আদায় হইতেক্ ফার
নিজ জোতে সাত শত বস্ত্র শ্রমী অর্থা
আবদ আছে আর দশ হাজার বিয়া
অবদ নীল প্রত্যক্ষনে পাওয়া গাইবেক।

পূর্ণা নবীর প্রথম কুর্চীতে প্রাইমারিয়ার
কুর্চী টোকা বাকী আছে তাহার মধ্যে
প্রত্যেক কুর্চীতেই টোকা অলাগানে
আদায় হইবেক্ আর নিজ জোতে এক
শত বস্ত্র শ্রমী আবদ আছে ও প্রত্যেক
কুর্চীতেই প্রাইমারিয়ার নীল পাওয়া
গাইবেক।

এ প্রকারেই প্রত্যেক কুর্চীতেই
প্রাইমারিয়ার নীল ও সেওয়া নীল ও পূর্ণা
নবীর প্রথম কুর্চীতেই প্রাইমারিয়ার
নীল প্রত্যেক কুর্চীতেই প্রাইমারিয়ার
নীল পাওয়া গাইবেক্ আর নিজ জোতে এক
শত বস্ত্র শ্রমী আবদ আছে ও প্রত্যেক
কুর্চীতেই প্রাইমারিয়ার নীল পাওয়া
গাইবেক।

প্রাই ও পূর্ণত ওল কেবল সাহেবের নিজ
টোকা দিলে বিক্রয়িত আদিয়ে পারিবেক।

সমাচার দর্পণ।

প্রায় কুর্চীয়াগা।

১২ নবেম্বর।

প্রায় অর্থাৎ ইশল কুর্চীয়াগা রাত
শনিবার ও অলাগা বাতাবিয়ার সেকুর্চীয়া
পূর্ণা নবীর।

প্রায় অর্থাৎ ইশল কুর্চীয়াগা রাত
কুর্চীয়াগা কোলাসির প্রাইমারিয়ার অর্থাৎ
কুর্চীয়াগা।

প্রায় অর্থাৎ ইশল কুর্চীয়াগা রাত
কুর্চীয়াগা কোলাসির প্রাইমারিয়ার অর্থাৎ
কুর্চীয়াগা।

প্রায় অর্থাৎ ইশল কুর্চীয়াগা রাত
কুর্চীয়াগা কোলাসির প্রাইমারিয়ার অর্থাৎ
কুর্চীয়াগা।

প্রায় অর্থাৎ ইশল কুর্চীয়াগা রাত
কুর্চীয়াগা কোলাসির প্রাইমারিয়ার অর্থাৎ
কুর্চীয়াগা।

প্রায় অর্থাৎ ইশল কুর্চীয়াগা রাত
কুর্চীয়াগা কোলাসির প্রাইমারিয়ার অর্থাৎ
কুর্চীয়াগা।

প্রায় অর্থাৎ ইশল কুর্চীয়াগা রাত
কুর্চীয়াগা কোলাসির প্রাইমারিয়ার অর্থাৎ
কুর্চীয়াগা।

প্রায় অর্থাৎ ইশল কুর্চীয়াগা রাত
কুর্চীয়াগা কোলাসির প্রাইমারিয়ার অর্থাৎ
কুর্চীয়াগা।

সম্রাটের দর্শন

মোক্ষারের বিজয় ওকালের পুনির (৭) কার হইয়াছেন।

যাহা হইল।

জিলা অরনমহলের নগর বাঁকুড়া হইতে দুই দিগে অনুমান যের ফোণ অষ্ট রে দাক্ষিণ্যের নদী তীরে উপোদন নামে এক স্থান সুমিহ আছে সেখানে পুত্রি বর্ষার বিজয়া বর্ষায়ের দিনে রত্ননাথ দেবের রথ হইয়া থাকে তাহাতে অনেক লোক যাত্রা হয়। এবং নানা দেশহইতে অনেক বোকারী পনারীরা গিয়া দানাদা পুত্রি দুবা হয় বিক্রয় করে। তাহাতে গড় বিজয়া বর্ষায়ের দিনে সেখানকার জন এক লোক একবাকি হইয়া পরামর্শদির করিল যে উপোদনের বাজারে যে দুবা বিক্রয় হইবেক তাহাতে আমরা জান মোহর না করিলে কোন বাকি দুবা নাই যা হইতে পারিবে না। এই পরামর্শমতে বাজারের মধ্যে এক স্থানে এক থানা করিয়া সে স্থান বসিল। এবং বাজারের চতুর্দিকে স্থানে চৌকি বসাইল। এই কণ অসেক লোকের স্থান সকল দুবায়ের মাসুল প্রকৃত লইতে লাগিল। পক্ষা এই কথা শুখাকার জন সাহেব গুলিয়া সেই সকল লোকেরদিগকে বন্দ করিয়াছেন ইহার মূল উদ্যাক হইবেক।

চিহ্ন

মোক্ষার কলিকাতার শ্রীযুত কাঞ্চাল গুলি সাহেবের বাড়ীহইতে ১৫ নবেম্বর রাতি কালে এক বাঙ্ক দুই গিয়াছে। সে বাড়ীর বাহিরে দিগা হিন্দুর দ্বাড ও ভিতর দিগা চন্দন কাঠেতে স্নিগ্ধিত তাহার মধ্যে কতক টোকা ও মোহর ও বস্ত্রপুত্রিত অনেক দুবা ছিল। এবং মোহর তাহার ও আদর লোকের অনেক হইয়া গিয়াছে। যে কেহ

এ বিষয়ে কথা সম্রাটের দিতে পারিবে যে তাহাতে তোর দীর্ঘ পক্ষে সে দুই শত টোকা বংশীয় পাইবেক।

এ তারিখে কলিকাতার শ্রীযুত সি বর নিও জোন সাহেবের বাড়ীহইতে অনেক জিনিস তোর গিয়াছে। পর দিন প্রাতঃ কালে দেখা গেল যে ঘরের খিচরীর জিঞ্জির ওখা দিয়া কাচিয়া ঘরের মধ্যে প্রবেশ করিয়াছিল এবং বাঁচালে অনেক সিন্দূর ও বাঙ্ক ভরি পড়িয়া রহিয়াছে। তাহার পর দিন ৩ নবেম্বর রাতি ৩ বাটার তে ঘোড়ার আন্তরনের নিকট এক জন লোক বেড়াইতেছিল আশাশু রাতি প্রকৃত চৌকিয়ার তাহাকে দেখিয়া বহিল সে এক জন মধ্য বাবুটি।

চিহ্ন

পরে কাঞ্চাল গিয়াছে যে মোক্ষার কলিকাতার ইন্ডালার রাহির বাড়ী এক তোর এক বিবাকে মূল করিয়াছে। সে বিবী মূল হইয়াছে অবধি সে বাড়ীতে ভুত আনিয়াছে এই জ বহুগ্যতে সে ঘরে থাকিয়া লোকেরা মৃতিকার মধ্যে খুঁ পল গুলিল এবং ঘরের বাহিরে থাকিয়া ঘরের মধ্যে টকা শত গুলিল। ইহাতে সে স্থান লোকেরদের অতিভয়ানক হই য়াছে। এক দিন-টারি জন কোরাণী মোক্ষার এক হইয়া-কহিল যে সে ঘরের মধ্যে আমরা এক রাতি বাস করিয়া বহু রাজত্ব। পর তাহার ৫ ঘরের মধ্যে বাড়ী আগাইয়া বিজয়া করিল এবং এ তারি জন এক হইয়া সেখানে কোরাণী পড়িতে আরম্ভ করিল। এই পুত্র রাতি সময়ে অকস্মাৎ একটা ভয়ানক শব্দ শুনিয়া তাহার অতিভয়ানক হইয়া পলাই ল। সে ঘরের মধ্যে যে শব্দ হয় তাহা ভয়ানক লোকেরা দিলক্ষ্য গুলিয়াছে।

হিন্দু ও মুসলমানের বিরোধ।

বোজারহইতে সম্রাটের আনিয়াছে যে গড় পারদায় দেবী পুজাতে যে কল এত দেশে হিন্দু ও মুসলমানেরদের বিরোধ হইয়াছিল সেই কণ বোজারও হইয়াছে এখানে যেমত মুসলমানেরা হিন্দুর ওন রে মুখ্য বোজার করিয়াছিল সেখানে ও সেই কণ। ও প্রকৃত সেখানকার শ্রীযুত জন সাহেব ইমনা মহিত সেখা নে গিয়া সকল মুহুর করিয়াছেন এবং অন্য এক স্থানে ৩ কণ হইয়া ওপড়িত হই য়াছিল সেখানে জন সাহেবের তরফ এক জন আলবান লোক গিয়া বিটাই ভঞ্জন করিয়াছে।

পারসী দেশ।

সম্রাটের আনিয়াছে যে পারসী দেশের যে ওকাল মুক্সার দেশ আছে সে পারসী দেশীয় দুই ওকাল ঘোড়ক ছান দেশের বাঁদশাহকে দিয়াছে।

তাহাইত।

পাশুস নামে ইংল্যান্ডের এক জাহাজ বানিজ্য করিতে মালাই দেশের বাঁকা ওন যিশ গিয়াছিল। তাহাতে বিশাখান লোক পরিশ্রম মালাই তাহাইত তাহাতের দুই দিহ হইতে আনিয়া কয়েক লোকেরা হইতে লাগিল। তখন তাহাতের লোকেরা তাহাতের দুই পাখ হইতে তাঁ গড়িতে লাগিল। জাহাজের তোল চা ওলতে অতিহি ছোল বাক মদত হইল পর তাহাজেদেরা ভীত হইয়া নৌকা পাশি নামাইয়া পলাইল।

অপর।

গড় মজারের মধ্যে চিহ্নপদার্থ।

সত্যসত্যি নন্দন।

তি শ্রদ্ধামুখ ও ভিলজনা মোকামে খি
মুত মো- জনকিন সাহেবের বাঁহির নি
কটন মোকামে অভির্শণ ভীত হইয়াছিল
তাঁহার কারণ এই যে কোন এক পুর্বনি
তাকহিত চাইশনগণনার অজ স্বর্গত বার
বেল সাহেবকে চিঠি লিখিয়াছিল যে আমি
সর্বত্র তাকহিত করিয়া থাকি। এরূপ
তোমার সন্তুষ্টের মাঝে একবার ভ্রম
করিব। এই মিথ্যা অনুরব হওয়াতে হক
গায়ের লোক সর্বত্র সন্দেহ ও সন্ধ্যা
সময়ে চৌকীদাররা ও গুম্ফা লোকেরা
তাঁহ- সমস্ত হইয়া সমুদায় রাতি আঁ
রন করিলেন। ও ই-প্রাণীর লোকেরা
তাঁহ- রাতি বন্দুকের শব্দ করিলেন।

বৈদ্য মৃত্যু।

জিলা জিল মহলের মাঝে থানা কো
উনপুরের নিকটে এক ব্যক্তি বৈদ্য মহা
ব্যক্তি ছিল সে ব্যক্তির যন্ত্রণাতে
সর্বত্র অত্যন্ত দুঃখ পাইত। সম্প্রতি
গত আশ্বিন মাসেতে সেই বৈদ্য যোগী
যন্ত্রণা সহিতে না পারিয়া বৈদ্যগুরু
শ্রীমন্তাণী করিয়াছেন। আশ্বিন মাসের
শুরু নিকটবর্তী তাহ- বৈদ্যগী বৈদ্য
এ হুজুর অনুমান তিন শত লোকের
গিহ নানাবিধ বিধিগণ ভোজি করাই
য়া এবং আশ্বিন শুক্রে আশ্বিন তাহ-
সম্প্রতি দিন এবং দুই হইত এক কুত
রা তাঁহার মাঝে অনেক কাঙ্ক্ষার আঁ
প্রতিভিত করিল। পর চতুর্দিকে ইহা বহু
লোকেরা খোদ করতাল লইয়া হিন্দু
কর্তন করিতে লাগিল। এই সময়ে ঐ
বৈদ্য ঐ অগ্নিকূলের মাঝে খাঁন দিয়া
পড়িয়া শ্রীমন্তাণী করিল।

এই সমাচার পরব্রতর তাহার অজ
সাহেব করিয়া ও পুর্বশ্রদ্ধাধারিত

তদন দিয়া নিকটে আনা হইয়া বৃত্তান্ত
জিহ্বা করিলেন। ও তাহাতে হারাগণ
কহিল যে আমি ইহার কিছুই জানি না
কিন্তু পক্ষাৎ এই কথা লোকের হারা শুনি
য়াছি। অজ সাহেব কহিলেন যে থানা
হইতে সে ব্যক্তির হাটী অভিলিষ্ট
যাত্রাঘোষা-সবের অনুরব হইয়াছে তুমি
ইহার কিছুই জান না ইহাতে বুঝা যায়
যে তোমার কার্যসাজী থাকিবেক। অজ
সাহেব এই সন্দেহ করিয়া হারাগণকে
কহ করিয়াছেন।

দুয়কতু।

গত জুন মাসের ৭ তারিখে আমেরিকা
দেশে আফগান দুয়কতুর মাদুলের নাম
হুজুর হইয়াছিল যখন গুম্ফা হুজুর
তখন ককট রাশিভ জিল কিয় তাহার
পর দিন যখন হুজুর তখন মিলুন
রাশিভ দেখা গেল।

পত্নী।

আমি দেশের অন্তর্গত এক গুম্ফা
এক পত্নী কয়ে মৃত্যুর মাঝে পুর্ব
হইতেছে। সে পত্নী অনেক পত্ন
সহিত সম্প্রতি তাঁহার পুত্র দিবস ১০
মাস কাহিখে দুই পুত্র রাশিকালে অক
ম্য- এক হুজুর পত্ন হইল। তাহাতে
লোকেরা জান করিল যে পত্নী ফাটল।
পুত্র দিবস দশ বছর রাশিকালে এক বছর
হেওলা অকম্য- পত্ন ও কয়ে
বর সকল দশ দিন হাত অকর গিয়া
পত্ন ১০ দুই গুম্ফা পত্ন বিধ
ইহাতে শ্রীম হুজুর হয় নাই।

আফগান।

ই-প্রাণে এক অজ অত্যন্ত সাহসী এক
লোক কহিবে যে এক অজ অত্যন্ত

মার কিছুই করিতে পারে না। কিছু দিন
পর বৈদ্য এক রাশিভে সন্দেহান গা
কিতে চিঠি গুম্ফা হুজুর যাইতেছিল।
পথি মাঝে এক অজ তাকহিত আমিয়া
তাঁহার গাতির বরাগীজা মিয়া ঐ সাহে
বের বুক নিকট নিকট রাখিয়া কহি
যে তুমি কহিতা যে এক অজ তাকহিত আ
মার কিছুই করিতে পারে না এখন আমি
তোমাকে কহ করিয়াছি আমাকে টোকা
হে। তাহাতে সাহেব আর কোন প্রশ্ন
না দেখিয়া আশ্বিন জেবের টোকাতে
হাত দিয়া তাহাকে মিয়া কহিলেন যদি
তুমি একা আসিতা তবে আমি কখন
তোমাকে টোকা দিতাম না কিন্তু দেখে
তোমার পক্ষাৎ আর কয়েক অজ তাকহি
ত আসিতেছে অতএব আমি তোমাকে
টোকা দিতেছি। ইহা শুনিয়া ঐ তাকহিত
আশ্বিন পক্ষাৎ দৃষ্টি করিল এই অক
কর্ণ সাহেব আশ্বিন নিকট ব্যক্তি করি
য়া তাহাকেই মিয়া জিল।

মহাকতু।

আমেরিকা দেশেই অতুত কতন বেল
সাহেব আমেরিকা দেশে এক মহাকতু
আনিয়াকে সে কতন তিন হাত নয়া ও
দেহ হাত চোতা তাঁহার ওজন সাড়ে
তিন মোন। আমেরিকাইতে আমেরিকা
আসিতে বেশ মান পাগিয়াছিল ইহার
মাঝে সে কতন এক হাতের তিন প্রসব
করিয়াছে তাঁহার তিন রাজহ-সের
কিষের মত।

মারগণ।

আমেরিকা দেশে ইহা নাম এক মহা
সম্রাটর আরে তাঁহার মধ্য আমেরিকা

সমাচার দপণ।

হারা বাকিয়া করে। সে সময়েরের
মহো তীরহইতে দেখে কোন অন্তরে এক
আত্মা ঘহিতোছিল সেখানে জাহাজ
হইতে অনু দূরে এক মহানন্দ ভানিয়া
ওঠিল। সে মন অনুমান সাভাশ
হুত নন্দা এ তাহার মাথা মুঠম হাত
তোতা তাহার ঘন গুণ কাল।

পুতিবিধি।

ই-প্রতে পলটনের এক ঘূষা সাইব
আনন করে আয়নার সম্মুখে দাঁড়াই
কিহতে নইয়া মেলা দাঁড়াইল। পরে
সে আনন ঘূষাশীল স্বভাবশূন্য এ আয়
নাতে পতিত আনন শরীরের পুতিবিধিকে
কহিল যেহা কি কহিব আমি তুমি আমার
পুতিবাণী হইতুম তবু ইহকালে তোকে
খুল করিলাম। পরে সে খোলিতে এ
মত রূপা ওপাতিত হইল যে সে আনন
পুতিবিধের পুতি এ কিহতে মায়িল তাহা
তে আয়না সন্নিবিষ্ট হইল। অস্তরে ইহ
সমাচার সহ প্রকাশ হইলে বালকেরা
এ ব্যক্তিকে দেখেছিলে নহে। কথা ক
হিয়া তাহাকে বিবরণ করে ইহাতে সে
অত্যন্ত দুঃখ হয়।

কৃত।

অজান কোন দাঁড়াইল নদীর ঘূষ
অন ঘূষাশীলভবিতর তেহাতে কলপা
মন হইল এক এক ঘূষা আনন শরীর
কিন্তু করিতোছিল সেখানে তাহার এক
অন গিয়া বসিল এক অনর ব্যক্তি
অভিকাতর হইয়া মিথ্যা জাহাজ ও

শব্দ করিতে তাহার লিফটে এক আতি
মিলাপাতে গিয়া ঘূষা হইয়া পড়িল।
লোকেরা তাহার কিসাসা করিল যে
তোমার কি হইয়াছে। তাহাতে সে আতি
কাতর কহিল যে আমার বহুদোষ হইয়া
আমি কৈতর হইয়াছি। পরে তাহাকে
পলি কহিতে কিছু মদিরা দিল। সে কলিট
কলোগী তাহা মুখে দিয়া খাইতে না পাকি
য়া দেখিয়া দিল। এই সকল দুঃখিত সঁজা
ঘরের লোকেরা শুধু তাহাকে দেখি
তে আইল। একদমিলা হুত তাহা
কে কহিল যে আমি এক ওষধি আনি পাঠ
গ্রন্থিটের মারা তোমার বেধনা দূর
করিব। ইহা কহিয়া হরিদুর্গম একটু
কাঙ তাহাকে দিল। সে ব্যক্তি এ কাঙ
টুকু মুখের মাঝে কিছু কাল সন্নিবিষ্ট ক
হিল যে তাই যে প্রায় ক্ষুরের ওষধি যে
কি নাই আমার রোগ ভাল হইল। পরে
সে আননার মিথ্যা জাহাজা শুধিল
কহিয়া কহিল যে যে তাই আমাকে আর
কিছু ওষধি দেও। সে কহিল যে এ আ
মার অনেক অস্তুর ওষধি সন্নিবিষ্ট যোগেন।
পলিয়ার সে কহিল যে আমাকে এ ওষধি
দিত্তেই হইবেক তুমি যে কথা কলিট ওষধি
দিয়া সে কথা কলিট আমি তোমাকে দিব।
ইহা শুনিয়া দিল ইকরা ওষধি নইয়া দিল
কলিট দিল। ইহা দেখিয়া অনেকেই
মত তাঁল দিয়া ওষধি নইল এক আতি
শ্রীমদার হুত অনর কলিট দিয়া অনর
ওষধি নইল যেহেতু তাহার নি
কলিট অনর লোকের মিলনানি তাঁল।
এই কলিট হুত এক শ্রীমদার কহিয়া
মিথ্যা কাঙ বিবরণ করিয়া তাঁল নইল।

সংখ্যা ৩১০।

| বিবিন | মোন | অবধি | পার্থ |
|---------------|-----|------|-------|
| নুপারি | ১ | ৫৫০ | ৩৫০ |
| ভেড়া ইল | ১ | ১০ | ৫ |
| গাহ মরিচ | ১ | ২ | ৩ |
| মারিকেল ইল | ১ | ১০০ | ১০ |
| তুলা কাছোড়া | ১ | ০ | ০ |
| আনা রসপূর | ১ | ২০ | ১০০ |
| পাটনাই আনা | ১ | ২ | ১০ |
| চাল পাটনাই | ১ | ২৫ | ২৫০ |
| পাছতি উত্তম | ১ | ২০ | ১০ |
| পাছতি মধ্যম | ১ | ২০ | ১০ |
| মুগা উত্তম | ১ | ১৫ | ১৫০ |
| মুগা মধ্যম | ১ | ০ | ০ |
| বাল্যম | ১ | ০ | ০ |
| মুগা গোম | ১ | ১ | ১০ |
| পাটনাই হুত | ১ | ১০ | ১০০ |
| অস্তুর তালি | ১ | ১৫০ | ১৫০ |
| উত্তমারাজ হুত | ১ | ১০ | ১০ |
| মধ্যম হুত | ১ | ১৫ | ১৫ |
| ইলা হুত | ১ | ১০ | ১০ |
| মধ্যম উত্তম | ১ | ১০০ | ১০ |
| মৌরবাজী | ১ | ৫০ | ৫০ |
| মিছরি উত্তম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মিছরি মধ্যম | ১ | ১০ | ১০ |
| মৌর উত্তম | ১ | ৫ | ৫০ |
| মধ্যম | ১ | ৫০ | ৫০ |
| মিলা কাপার | ১ | ১০ | ১০ |
| মধ্যম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| বার মিলা | ১ | ১০ | ৫ |
| ভেড়াল | ১ | ৫ | ৫ |
| জাহাজ | ১ | ৫৫০ | ৫৫০ |
| চন্দন | ১ | ১৫ | ১৫০ |

এই সমাচার লিখিত পুরানসমূহে ভাষাভাষ্যতে পুতিবাণীতে পরিবর্তন হওয়া হয়। বাহর লগনের আনন্দক হর তিনি পুরানসমূহের ভাষাভাষ্যতে
আনন বায় পাঠাইলে লোকেরা কাম তাহার বিকট পুতিবাণীতে কলপা মন হইল এক এক ঘূষা আনন শরীর
কিন্তু করিতোছিল সেখানে তাহার এক অন গিয়া বসিল এক অনর ব্যক্তি
অভিকাতর হইয়া মিথ্যা জাহাজ ও

সমাচার দর্পণ

১০৩ নং-১৮৮।

শনিবার। ১ ডিসেম্বর সন ১৮৭৮। ৪৮ আশ্বিনীয় সন ১৯৭৮।

দর্পণে দুই পৌরস্বত্বের কার্যবিবরণী- বৃত্তান্তাদিহ কলিকতা মহানগর দপ্তরে।

কোলাসির কার্য।

কোলাসির শতকরা জয় টাকার সুধর
কাজে ক্রয় করিতে হইলে শতকরা তিন
টাকা আট আনা প্রিমিয়ামে। বিসয় কর
তে হইলে শতকরা তিন টাকা প্রিমিয়াম।

সন্তাহের পঞ্জিকা।

| | | | | |
|---|----------|-------------|----|-----------|
| ১ | ডিসেম্বর | শনিবার | ১৯ | আশ্বিনীয় |
| ২ | ২ | রবিবার | ২০ | ২ |
| ৩ | ৩ | সোমবার | ২১ | ৩ |
| ৪ | ৪ | মঙ্গলবার | ২২ | ৪ |
| ৫ | ৫ | বুধবার | ২৩ | ৫ |
| ৬ | ৬ | বৃহস্পতিবার | ২৪ | ৬ |
| ৭ | ৭ | শুক্রবার | ২৫ | ৭ |

আজিমের ইস্তাহার।

ঐশ্বর্য কোলাসি বাহাদুর ইস্তাহার
জিহাজেল যে ৩০ ডিসেম্বর শনিবার পূর্বাহ্নে
এগার বার্ষিক সময়ে মোকাম কলিকতা
কার একশতকরা হারে বেহারের আজিমের
সত্তর শত পাঁচ সিদ্ধক। এবং বাসির
সের চারি শত আটটি সিদ্ধক। অতঃপর
দুই হাজার এক শত ডেইশ সিদ্ধক
আজিম বিক্রয় হইবেক।

সমাচার দর্পণ।

শ্রীযুত সর এমর্সন কলিকতায় সাহেব।
শ্রীযুত সর এমর্সন কলিকতায় সাহেব।

গুণে যাইতেছেন তাহাতে তাঁহার আত্মা
য় সাহেব মোকাম মোকাম কলিকাতাতে
একত্র হইয়া চান্দা করিয়া গিত মোকামের
অভিব্যক্তি প্রত্যক্ষ আলো করিয়াছেন এবং
কলিকাতায় তাৎ- ভাণ্ডারান একত্রে
শ্রীযুত ২ সাহেবের এক পুণ-সমগ্র
পুস্তক করিয়া সকলের নাম স্বাক্ষর করি
য়া তাহার নিকটে পাঠিয়া দিলেন।
তাঁহা পাঠিয়া সাহেব সমুদ্র হইয়া সে
পত্রের পুস্তকের এই লিখিলেন যে আমি
আজির বৎসর বহরমুখ সময়ে এই বার
না যে-সে আশ্রয়ার্থি এবং ঐশ্বর্য হে
খিন-স সাহেব বহরমুখ আমাকে কো
লাসি বাহাদুরের কর্মে নিযুক্ত করিয়াছি
লেন তৎকালে তিনি বৎসর পর্যন্ত তাহার
ঘরে নিকটে থাকিয়া আপন বুদ্ধি সাধিলা
কর কর্ম করিয়া এখন স্বদেশে যাত্রা করি
তেছি। ইহাতে আপনকার আমান পুতি
সমুদ্র হইয়া। এক পুণ-সমগ্র লিখিয়া
ছেন এ আমানকারের জন্য। সে যে
হুজুর জামি যাবৎ অবস্থানেতে থাকি
করিবৎ আপনকার আমাকে মনে রাখি
বেন আমানক হইবে আপনকার সত্তর
খারিলেন এবং যে পত্র আমাকে আপনা
রা লিখিয়াছেন ইহাও আমার মনে
থাকিল আমানহইতে আমানকারদিগের
যে ওপকার হইতে পাঁচ তাহাও হই
বেক।

ঐশ্বর্যের ঘাট।

১৮ নবেম্বর ১৫ আশ্বিনীয় বৃত্তান্তাদিহ

ঐশ্বর্য গবর্নর জেনারেল বাহাদুর যো
কাম রাজমহাশয় নিকার করিবার কারণ
যো- চানকের বাটীহইতে পুখান করিয়া
ছেন তাঁহার সহিত এক শত হাজী ও
খোঁতা পুখতি অনেক গিয়াছেন।

এক- তিনি মোকাম পাণ্ডিত্যপূর্ণ
মোকামে যাইবেন ও সেখানেহইতে মো
কাম বহরমুখপুখতি গাঁতীতে যাইবেন
পথের মধ্যে যেখানে যেখানে জোন ছিল
তাহাতে সীকা করা গিয়াছে ও যেখানে
কর্ম্য থা ছিল তাহা পরিষ্কৃত হইয়াছে।
এক মাস অবধি এই সকল তদারক হই
তেছে।

জাঞ্জোর রাজা।

দুই ওপদানের নিকটবর্তি জাঞ্জোর
দেশের রাজা কাশী মর্শ্বাখ যাইতেছেন
তাহাতে ঐশ্বর্য মান্দরাজের হত না
হেব হকুম দিয়াছেন যে জাঞ্জোরের মহা
রাজ খালস ১-প্রদীয়েদেরের অবিকার দি
য়া যাইবেন তখন উদ্দেশের জর ও কা
লেক্তর ও রাজা ও জমিদারপুত্র সন্ত
ল ১ মহারাজের সমুদায় অধোপকৃত
সেলামপুত্র বক্তন ও তাঁহার ওপকৃত
মুখ্যগণ করেন। এতদ্রূপে মান্দরাজের
নিকটবর্তি নগর মোকাম ১ রাজার পুত্র
জিয়ার পুত্র ছিল সেই পুত্রদের তত্ত সা
হেব ও কালেক্তর সাহেব যেত ফোন
আগে গমন করিয়া ১ রাজার সহিত মি
লিলেন। সেখানে রাজা আপনি হাজী
হইতে নামিয়া তাঁহারদিকে আপন তা

সমস্যা

মুখে লইয়া পান ও আঁড়র পুনঃমানা দি
ইয়া সম্মান করিলেন। সেখানে এত
লোক সমাগম হইয়াছিল যে ইহার পূর্বে
এত জনতা একত্র সেখানে হয় নাই।

তাহাই বৈরা।

সিআমালী খাঁয়ের ঘোঁষে বলভি নামে
এক গুণ্যে মহুসনা নামে এক অতি
পুন্ডি প্রবীন তাহাই ছিল সে নিজা
মালীর ঘোঁষে নিয়ত থাকিত কিন্তু মবী।
ইংল্যান্ডবিকারেও আসিত। সপ্ত
শতাব্দীর এক মাহে ১৯ আকটোবরে
তাহার বিরুদ্ধে তাহার শেষ বিদ্
জানা যায় নাই।

মহাম্মদ।

মোঃ সমাশায়ের নিকটে এক ইয়া
আতি মনো পাকির জলহইতে কিঞ্চি
অল্পের ভায়ে উঠিয়াছিল। তাহা দেখিয়া
লোকেরা গুণ্য কৃত্যর আন করিয়া তাহার
নিকটে গেল এবং দেখিল যে কৃত্যর লম্বা
কিন্তু তৎসম্পন্ন বাবা আতি মনো তখন
ভাবিতে কিঞ্চি রোগীর মত আঁপ
হইল। তাহাতে লোকেরা লাগি ও তেনা
দ্বারা তাহাকে মারিল এবং তাহার মার
করিয়া দেখিল যে সে লম্বা দিন হাত ও
কোজা বোলে ছুই হাত এবং ওজন করা
গেল তাহাতে দিন যেন এতল হইল।

কাণী খাড়া।

গত সমস্যা মোকাম বনিকাতার
শ্রুত রাজা বননটান ইংল্যান্ডের কাণী
পুন্ডি করিয়াছেন তিনি ইংল্যান্ড
যান এত বাসনা করিয়াছেন।
এই তাহার দিন দিবস পরে মোঃ

ভেনেদিগাতার শ্রুত যাহু রামবীন বনো
পাণ্ডায় কাণী খাড়া করিয়াছেন।

অলকার গোপন।

সন ১৮৮৮ সালে এক মুখে পুন্ডি
মহারাণ্য বাকিরাও পেশবার কৃত্যর গোপন
বায়ের তাহা অলকার ইংল্যান্ড ইংল্যান্ড
অলকার ইংল্যান্ড আনু নইয়াছিল। কিন্তু
দিন পরে সে অলকার মারিল সে সকল
অলকার কি হইল তাহার আনু বনু ও
গা যায় না।

হঠাৎ চোখ।

এক জন ইংল্যান্ড পতি মোকাম কলি
কাতাহইতে এক স্ত্রী বিন টোকা প্রণালিন
করিয়া লইয়া লোকা থেকে আনন বাটী
তে ঘাইতেছিল। পরে পথেতে তাহার
উপযোগে মোকাম কলিগাতারে লোকা
হইতে লামিয়া মালারি উপযোগে করিতে
ছিল। ব্রাহ্মন এক শক্ত কৃতি টোকা মুখ
এই কাণ্ডের বোকা আঁপন চাকরের
বানে হামিয়া বাজার গেল। চাকর
এ টোকা সময়ে বোকা হাতে করিয়া
তলবার নিকটে বালিয়া রাখিল। এই সকল
সম্মান আনিয়া এক ইংল্যান্ডের আনিয়া
এ চাকরের শক্ত অল্প-কলি-কলি-
বিদ্ভা দেখিয়া দিল। চাকর এই বিদ্ভা
গাছে গাছে ফেলিতে লাগিল। এ কাণ্ডের
বোকা মুখ এ টোকা তলবার নিকটে রা
খিয়া অন্য এক মরি ইংল্যান্ডের বোকা দি
কটে গালাত মুখ করিতে লাগিল। তখন
চোর এই কলি আর এক বোকা কাণ্ডের
বোকা সেখানে রাখিতে টোকা মুখ এই বো
কা টোকা লইয়া পদবিল। ইংল্যান্ড
কাণী ব্রাহ্মন আনিয়া কলি মালি বালি
কলি পুন্ডায় টোকা রাখিতে পাঁচিল না।

X কলিকাতা।

মোকাম বনিকাতার ইংল্যান্ডের
রাগা বাজার পর্যন্ত যে রাগা ও পুন্ডি
হইতেছিল তাহা কলি দিলের রাগা
সমস্যা হইবেক। এই আরও শুনা যায়
তেছে যে কলি টোকার মাঝখানে অধিক
বৈকল্যাদি পর্যন্ত এক বত রাগা হই
বেক।

শ্রুত অগাধাহার।

লাগি পুন্ডার রাজা পুন্ডি মুখ মহারাণ্য
আঁপা নাহে অনেক দিন পর্যন্ত অল্প
হইয়া ভ্রম করিতেছেন। ইংল্যান্ডের
তাঁহার সম্মান অনেক করিতেছেন স
পুন্ডি শুনা গেল যে তাঁহার এক চাকরের
মারি তাঁহার এক আনিয়া পাওয়া গি
য়াছে তাহা কোলানি বাহাদুরের মোতা
পুন্ডি আনিয়া তাঁহার খাড়া মাল
সকল আনুমান করিলেন সন্তু হাজার
টোকা হইল। তাহাতে নানা পুন্ডার
মুখ ও পুন্ডার আনি।

এলগী।

কলিগাতার ভায়ে লামিয়া মোকামের
৪৪ নবেম্বরের পত্রে হারা সমস্যা আনি
য়াছে যে সেই গুণ্যে আনিয়া রোগে এক
দিবস পুন্ডাকালে ১০ জন লোক মারিয়া
এই বন ও আনি রোগে হইয়াছে।

আহাৎ হাৎ।

মোকাম মানদাজের নিকটে বৈরা মার
লাগিয়া মোকামে গত ১৫ সেপ্টেম্বর
নামে এক আহাৎ আনি লাগিয়াছিল।
তাহাতে রাগি পুন্ডাকালে সমস্যা তাহা
এক লোক এ আহাৎ বৈরা উঠিতে
খিরা শ্রুত দ্বিতীয় আনিগাতার মাল

সমস্যাটার দর্শন।

যের নিকটে সমস্যাটার দিল এবং সাহসে
পাঁচ মাসলোকা সময়ে ঐ তাহাতে গিয়া
আহাৎয়ের তাহাৎ লোকের বিচারে বাহি
রে আসিলেন। পরে দুই পুত্র বেলার
মধ্যে সে আহাৎয়ের সোপানতে অগ্নি
দাগিয়া তাহাৎ আহাৎ অলপকাল পরে
হইয়া জলের মধ্যে পড়িল।

বিশ্বাসযোগ্য।

দুই দিনে এক জন এক প্রথম পুত্রকে
পুত্র করিয়া জাণাখানাতে জাণা করি
বার কারণ দিয়াছিল। সে পুত্রকে জাণা
হইলে অনেক লাভ হইতে পারে ইহা
আশিয়া জাণাওয়ানা সময়ে তাহার নকল
নাই। কিছু দিন আহারে সে পুত্রকে জিরা
ইয়া দিন এ কহিল যে এই পুত্রকে জিরা
ইতে পারিব না। ইহা কহিয়া তাহারকে
দিয়াই করিল। কিছু দিন পরে অন্য এক
জনের নামে ঐ পুত্রকে জাণাইয়া বিক্রয়
করিয়া অনেক টাকা লাভ করিল। ঐ পুত্র
কর্তা ইহা শুনিয়া সে আশালায় যান
মিক খেদে পানডগার করিল। ইহাতে
বুঝা গেল যে ঐ জাণাওয়ানা অতি বিশ্বাস
যোগ্য।

গোড়িতে গিয়া।

ই-প্রথম দেশে গোড়িয়ারা তাঁর গলে
তাহাতে এক হালে ঐ গোড়ির বার মুলি
য় এক পুন্ডা ওয়াইয়া বিয়া আর এক
পুন্ডা আশিয়া ওয়াইয়া দিবার কালে
যেহা গেল যে গোড়ির দ্বিতীয় বার যো
না ঐ এক পুন্ডা নাই। পরে বিচার
করিয়া যোহা গেল যে সে পুন্ডাতে
এক লক্ষ বার হাজার আট শত টাকার
পোড় ছিল পরে অনেক চেষ্টাতে সে পুন্ডা
কাঁ পাওয়া গেল।

কর্ণরোগীর ঔষধ।

মান্দ্রাজ যোহাৎ এক সাহসে
বাগীতে অনেক কর্ণরোগী হইয়াছিল।
তাহাতে এক জন আশিয়া এক ডোল।
জাণা মাস-স মসুরে হারি করিয়া সেই মাস-
সের রস কর্ণের মধ্যে দিল তাহাতে কর্ণ
রোগী পুড়িবার হইল। এই রস পুড়াক
জলের এক বার ঐ রস দেওয়াতে ভাল
হইল তাহারদের আর কখনও হইল না।

রোমের বিশ্ববিদ্যালয়।

এক প্রকার এক দুখী লোক অনেক
জান ও পরিপূর্ণক বিশ্ববিদ্যালয় গুলি
হইল তাহাতে আশা গুলি লোকেরা
তাহার নিকটে আসিয়া কহিল যে যে
শিতা আশালায় পুড়ি নিষি আশালা
মকল করিতে পারেন আশালায় গুলি
যে আশালায় আশালায়গিতে এই বার যেন
যে আশালায়দের বসন্তের দুই মাস
হয়। বিশ্ববিদ্যালয় কহিলেন যে ভাল তাহা
হইলে এক চাই মাসে এক বসন্ত
করিলায়।

কুইজিকা।

ই-প্রথম দ্বিতীয় চান্স বারশাহের
অধিকার ছিল অনেক পণ্ডিত লোক স
মানিত হইয়া আশালা শীতাবিধান ও অধ্যা
পনা করিতেন। বারশাহ তাহাতে বড়
পণ্ডিত থাকিতেন। এক দিন বারশাহ
সেই পণ্ডিত লোকেরদের সাহিত বসিয়া
আশালা আশালা করিয়া কহিলেন যে যে
পণ্ডিতেরা সমান দুই কলম অলপ
করিয়া দুই কলম কহিলেন সমান তার
থাকে এবং তাহার এক কলমের মধ্যে
একটা মাসের মধ্যে সমান তার থাকে
ইহাতে অধিক ভাড়া দি কহিল না হয়।

এই কথা শুনিয়া সকল পণ্ডিত তাহাতে
লগিলেন কিন্তু নিষ্ফল ওভর কহাই করি
তে পারিলেন না। পরে এক পণ্ডিত ঐ
কথা কহিয়া কহিয়া দেখিলেন যে মাস
যে কলমে যেহা গেল সে কলম অধি
ক ভাড়া হইল। তখন বারশাহকে কহিল
যে মাসের মধ্যে অধিক ভাড়া হয়। বার
শাহ কহিলেন যে আমি তাহা আট
আছি।

কীর বৃত্তা।

এক জন রোমের কাউন্সিলের মধ্যে স
ময়ে আশালা কহে এক যোহা ও এক বি
জান দিল ও কহিল যে এই যোহা কিস
করিয়া আশালায় পরকালার্থ হয়ে কহিও
এবং এই বিজান কিস করিয়া আশালা
নাই। পরে ঐ দুই জন ঐ যোহা ও ঐ
বিজান বিক্রয় এক লোকেরা হাতে পা
ঠাইল ও তাহারে কহিল যে এই যোহার
মাম এক টাকা ও এই বিজানের মাম আট
শত টাকা। যদি কেহ এই মাম দিয়া গুলি
তবে বিক্রয় করিয়া মাম আসিও। পরে
ঐ যোহা ও বিজান হাতে ওপণ্ডিত করিলে
ঐ প্রথম যোহা আট শত টাকায় বিক্রয়
হইল এবং এক টাকায় বিজান বিক্রয় হ
ইল। ঐ দুই আট শত এক টাকা পা
ইয়া আশালায় পরকালার্থ এক টাকা
ব্যয় করিল ও আশালা আট শত টাকা হা
জিল।

পণ্ডিত পণ্ডিত।

দুই দিনের এক লগরে বিশ্ববিদ্যালয়
পুন্ডা লোকেরদের পরকাল রক্ষার্থে গুলি
দিয়ে পুন্ডা কর। তাহাতে এক জন

সম্মানিত দর্শন।

কাজ শ্রমের দোকান বাপু যোগে গাঁওর
হস্ত এ পদ এ মস্তক সর্বত্র বহন হয়
এক শব্দ বহিরাগত এক অঙ্গের মতো করি
য়া ই শ্রুতানের দিকটো আইন এ ডাকের
শব্দটা শব্দক ভিত্তিমা করিম যে ডাকের
পদার্থকর্মী অঙ্গের বাহ্যে এ শব্দক ব্যক্তি
আমাদের ছিল। এই বন ভিত্তিমা করি
তে ই বস্তুর স্বভাবতা অঙ্গের দিতে ডাক।
এই বস্তুর স্বভাবের বৃত্তান্ত আশ্রয় আশ্রয়
সর্বত্র দোকান দোকান করিম। এ ডাকের
দ্বারা লিখাইয়া দইন। পর ই শ্রুতানের
শব্দক অঙ্গিমা বৃত্তান্ত আশ্রয় হইয়া
আশ্রয় শব্দক ভিত্তিমা করিম যে এই
দুই দোকান দিতে বহিরা বহিরা করিম।
আহাতে বহন মস্তক বহন স্বভাব
করিয়া দুই অঙ্গের দিতে বহিরা বহিরা
হইয়া ছিল।

ग्रहचरणाः ।

পুত্র সমাজের জেআর গিয়ারের যে হল
 বেঁচে জড়িত রমা! হইয়া! অনেক লে
 কের অনেক অর্থাৎ হইয়াছে। এইরকম
 জার্মান অর্থ সমাজের জার্মানদের যে সে
 সমাজের দুটি লোকেরই এই রমায়
 যাইবে যে লোক হইয়াছে জার্মান লোক
 লোকের অর্থের সাহায্য (সেই) বুঝা লোক
 কোথাও জার্মান লোক হইতে বিচ্ছিন্ন।
 হইয়াছে জার্মানদের রমা! অর্থ অর্থ
 অর্থ লোক হইয়াছে।

इतिहासं ।

এক ছাতি কানথুয়েতে আপন মজ'ব

[illegible]

ସାକ୍ଷୀଙ୍କ ଡାଓ !

| বিভিন্ন | মোট | অর্থ | পরিমাণ |
|-------------------|-----|------|--------|
| নুপারি | ১ | ০.৫০ | ০.৫০ |
| কোরোডা ডেল | ১ | ১০ | ১০ |
| গাছ প্রসিদ্ধ | ১ | ১ | ১ |
| নাইকেন ডেল | ১ | ১০ | ১০ |
| কুলা কাছোয়া | ১ | ০ | ০ |
| কাছা কলপন | ১ | ১১ | ১১ |
| পাটিনাই কাছা | ১ | ১১ | ১১ |
| চাখ পাটিনাই | ১ | ১১ | ১১ |
| পাছি উত্তম | ১ | ১১ | ১১ |
| পাছি অধ্যম | ১ | ১০ | ১০ |
| মুখী উত্তম | ১ | ১০ | ১০ |
| মুখী অধ্যম | ১ | ০ | ০ |
| মাকাম | ১ | ০ | ০ |
| মুখা মোম | ১ | ১১ | ১১ |
| পাটিনাই বই | ১ | ১১ | ১১ |
| অবহর জালি | ১ | ১৫ | ১৫ |
| উত্তমপাটিনা বৃত্ত | ১ | ১১ | ১১ |
| অধ্যম বৃত্ত | ১ | ১০ | ১০ |
| উত্তম বৃত্ত | ১ | ১০ | ১০ |
| অধ্যম উত্তম | ১ | ১০ | ১০ |
| মোমকাছা | ১ | ০ | ০ |
| মিছরি উত্তম | ১ | ১০ | ১০ |
| মিছরি অধ্যম | ১ | ১০ | ১০ |
| মোহা উত্তম | ১ | ০ | ০ |
| অধ্যম | ১ | ১০ | ১০ |
| চিবি কাপার | ১ | ১০ | ১০ |
| অধ্যম | ১ | ১ | ১ |
| বর্গ চিবি | ১ | ১০ | ১০ |
| ডেফল | ১ | ১০ | ১০ |
| ডাফল | ১ | ১০ | ১০ |
| ডফল | ১ | ১০ | ১০ |

এই ক্ষাভার বর্ণন পুস্তিকাতে ছাণগাণাত্যে পুস্তিকাতে বর্ণিত হইল। ইহার মতের আশ্রয় হইল তিনি পুস্তিকাতে ছাণগাণাত্যে
 ১০০০ জন পণ্ডিতের সম্মিলিত কাম ভাষার নিকট গাণন্য হইতে পারিলে যখন একটাক্ষর যিনি ছাণন্য বর্ণিত হইল বর্ণিত হইল
 কামন বা নীচের ভাবে তিনি পুস্তিকাতে ছাণগাণাত্যে কামন হইল। নিকট গাণন্য হইতে পারিলে।

ମିତ ନିଜାହ (ଯା) ନାହ ଧାରାନ୍ତ
ନାମ ଏକ ବାନ୍ତି ଏକ ପୁରାଣି ଦେଖାବର

সমাজের দর্পণ।

কল্যাণ আশ্রম ভগিনীর হঠাৎ অতিশয় শীত হওয়াতে আশ্রমিই কবিরাজ ডাকি ডে খাটতেছিল। ইহা দেখিয়া বল রায় নামে এক ব্যক্তি লুপ্ত আশ্রমি চৌকি ঘরের বেশ বারান করিয়া তাহার সম্মুখে গিয়া কহিল যে এত রাত্রিতে তুমি একাকি শ্রী লোক কোথায় ঘাইতেছ আমি বুঝি যে তুমি অন্য কোন পুরুষের সহিত পলাইয়া ঘাইবা অন্যএব আমি খানার বরকন্দাজ এ পুকার তোমাকে ডাকিয়া দিতে পারি না। তাহাতে ঐ শ্রী সন্নিহিত হইয়া তাহার নিকটেই এক ঘোকারিকে আশ্রিয়া জিহাসা করিল যে এ লোক খানার বরকন্দাজ বটে কি না। সে হো কালী ঐ বলরায়ের ভাগিনীআমিই অন্য সে সে মিথ্যা কহিল যে এ লোক খানার বরকন্দাজ বটে। পরে ঐ শ্রী কহিল যে আমার ভগিনীর অতিশয় শীত হইয়াছে আর লোক না থাকিতে আশ্রমিই কবিরাজ ডাকিতে ঘাইতেছি যদি তোমার সন্দেহ হয় তবে আমার সহিত আইন। তাহা সে না মানিয়া আশ্রম কুসিত হইয়া পুনঃ কবিরাজ কারন তাহাকে গুণ সমুদায় রাত্রি দুইখা দিয়া আশ্রম মরে লইয়া বেড়াইল। অতঃপর থাকিতে সে যে ছিল যে আশ্রম ইহা সিদ্ধ কোন মতেই হইতে পারে না অন্যএব তাহাকে ঐ পহরের এক নাপিতের জিম্মায় রাখিয়া আশ্রম ভগিনী গেল। পুত্রকাল হইলে ঐ নাপিত সৈন্যকে লইয়া খানার হাজির করিয়া খানাদ্বারকে কহিল যে তোমার তরফ বরকন্দাজ গত রাত্রিতে ঐ শ্রীলোককে আমার জিম্মায় রাখিয়াছিল আশ্রমিই লও। পরে খানাদ্বার আশ্রম সকল বরকন্দাজকে ডাকিয়া তদারক করিল তাহা তে কোন বরকন্দাজ এই কথ্য করে গাই। পরে তদারক করিতে সেই বলরায়

বরা পড়িল। খানাদ্বার এই সকল বিষয় অজ্ঞ নাহেবের নিকটে রিপোর্ট করিলে অজ্ঞ তাহাকে আশ্রিয়া দশ জুতা মারি লেন ও দশ দিন মজোরে বন্দ করিলেন এবং ঐ মিয়াদাবদি ঘোকারিকে তিন জুতা মারিয়া তিন দিন বন্দ করিলেন। বলরায়ের ইহা সিদ্ধ না হইয়া বরকন্দাজ মধ্যমোচিত হইল।

বন্য মছিব।

মোঃ মুহাম্মাদুল হকের পুত্র কোঁলে বেগম নামে এক পুত্রের মাঠে অন্য দিন হইল কোঁলেইতে পীঠ সাড়টানো মছিব আসিয়া তৎপুত্রের বান করিতে ছেলে মাঠে যে রাহা আছে তাহাতে সর্দিয়া লোক গমনাগমন করিতে কিছু এখন সেই মছিবের ভয়ে অন্য পথ দিয়া লোকরা গমনাগমন করিতেছে। সে পথে গেলে পূর্ণ বায়ল সুশ্রুত পুত্রের অনেক লোক তাহাতে ঘাইল হইবারে এবং সে মাঠে কৃষিকর্ম বন্দ হইয়াছে তৎপুত্র তৎপুত্রের বন্ধিও লোকরা সে মছিব মারিতে কিছু মোধানহইতে দুই করিতে ওপায় মেধা করিতেছেন তাহাতে অধ্যাপি কিছু হয় নাই কিন্তু মোধানকার এক জন মুসলমান ঐ মছিব সকলকে এক মাঠহইতে অন্য মাঠে ডাকিয়া দিতে পারে এই শক্তি তাহার আছে। ইহাতে লোকে কহে যে ঐ মুসলমান কোন মত জানে। সে মুসলমান নিজের হইয়া ঐ মছিব সকলের নিকটে গিয়া এক পুকার শব্দ করে তাহাতে তাহার তৎক্ষণাৎ পলাইয়া অন্য মাঠে যায় কিন্তু সে পুত্রের জাতি না। ঐ মুসলমান ব্যক্তিরকে এই কণ করিতে অন্যের সাহস হয় না।

ডাকহিঙা

লওয়া সুরাইয়ের পক্ষি

রের এক ব্যক্তি অনেক কাল পর্যন্ত ওস্তুর রাত্রে থাকিয়া ডাকহিঙা করিয়া অনুমান হাজার জয়েক টাকা সম্ভব করিয়া আনিয়া ছিল। এবং বাটতে আসিয়া পাকা বাটী করিবার ওয়োগে তারি লক্ষ ইষ্টে পুস্তক করিতেছিল। এই সময়ে পাইয়া গত সম্ভায়ে অনেক ডাকহিঙা রাত্রিযোগে তাহার বাটীতে পড়িয়া অন্য কোন দুখ না লইয়া কেবল হাজার পাঁচক টাকা লইয়া গিয়াছে। ইহাতে তৎপুত্রের ওস্তুরের পুলিশের দায়োগীরা ডাকহিঙা অনেক ডাকহিঙা করিতে ডাকহিঙা ডাকহিঙা ডাকহিঙা পড়ে নাই।

বারিলাক।

ঐযুত আলেক্সান্ডার হলবিল মাইর এঞ্জিনিয়ার হোম সাহেব বারিলাকির অধীক্ষ ছিলেন তাহার দুই জন তাল পদাধ্যক্ষ করিয়াছেন। সেই পদে তাল দুই জন নিযুক্ত হইবার কারণ ১০ দিনে মাত্র শুকবারে সকল অংশ একত্র হইয়া দশ ঘণ্টার সময় ইলুক দুই পুহর তিন ঘণ্টা পর্যন্ত গলিবাঁধি হইবেক।

আহাজ আমদানী।

দুই আহাজ ১৪ জু ও ৪৪ জুলাই তারিখে লখনৌর জাতিয়া গত সম্ভায়ে মরো কলিকাতায় পৌঁছিয়াছে। এবং অন্য এক আহাজ ৪ জুলাই তারিখে লিবরুল জাতিয়া কলিকাতা পৌঁছিয়াছে এবং মুল দেশহইতে দুই আহাজ কলিকাতা আসিয়াছে এই আহাজদ্বারা সম্ভায়ে পাওয়া গেলে যে তেরদিনকোঁরি নির এক আহাজ মুল দেশহইতে আসিবে।

সমাচার দর্পণ!

ওপঃদর্শক।

ইপ্সুত দেশে এক জন ওপঃদর্শক এই
বৎসর মরিয়াছেন তাহার মানিক বেতন
পুখা আট টাকা জিল পরে বারো টাকা
হইল। সে এক ঘাসে ঘাটি বৎসরপর্য্য
জ্ঞান করিল। সে বিবাহ করিয়া চারি
সন্তান জন্মাইল ও সে আশন মাটাকে
কর দেওয়াইল। অন্যর আশন পিতাকে
পুস্কীর বিবাহ দিল পরে আশন পিতাকে
কর দিল সে আশন স্বীর জন্য নময়ে
আশনি সেই ঘরে ছিল এবং সে আশন
চারি সন্তানকে আশনি বিবাহ দিল। ও
জিহ্নসহই বৎসর বয়সের সময়ে মরিয়া
আট হাজার টাকা রাখিয়া গেল।

আত্মজের অধায়।

ইংগ্ৰাজ বাদশাহের ডাঃ আত্ম
জের অধায় ক্ষুদ্র মর হেনরি ব্রাকহর
মাছের গিড বহরতিবারে কলিকাতা গৈত
জিয়াছেন। এবং তাঁহার সন্তানের
কারণ গিডে ভোগ হইয়াছে। তিনি
ঐশ্বর্য্যুত্তর সহিত সাক্ষাৎ করিতে গিড
পনিবারে বহরমপুর পুহান করিয়াছেন।
বাদশাহের আত্মজের অধায় পুখা কখন
বাদশাহ দেশে আইসে না। তাহার
নিযুক্ত হান মরদার যেহেতুক যুদ্ধ জা
হাজের হান মোহালে। এই অধায় মা
বেব কেবল শূণীযুত্তর সহিত সাক্ষাৎ
করিবার নিমিত্ত এই দেশে আনিয়াছেন।

বাতি।

মোকাম কলিকাতায় এক মাছের বাতি
রাখিয়াছিলেন যে পাঁচ ঘোড়ার তাকে প
চিৎ সোশ নথ চারি ঘণ্টাতে চলিবক।
তাছাড়া গিড মোমবারে চাকর ও কলি
কাতার রাখাতে সেই মাছের বাত ঘি

লিট কক চারি ঘণ্টাতে পচিৎ সোশ নথ
চলিয়াছে।

ঘোড়া হারাণ।

কলিকাতার আনবাজারে এক মাছের
গিড ১৭ নবেম্বর তারিখে এক ঘোড়া
ইরিয়াছেন তববহি সে ঘোড়া আশন
হাসে রাখিয়া ঘোড়াক দিতেছেন অতএব
সে ঘোড়া ঘাটার হয় তিনি তাহার মুখান
দিয়া ইস্তাহাদের খরচ ও এলাচিদের
খোড়াকী ও সহিসের মাছিয়া দিয়া
পইয়া যাবেন।

ইংগ্ৰাজের রানী।

চারিয়ার গিড মাসের ইংগ্ৰাজের সমা
চার পত্র পড়িয়াছেন তাঁহার অগণিত
আজেন যে ইংগ্ৰাজ দেশের ঐশ্বর্য্যমতী রা
নীর বিরহনে সে পত্র পরিপূর্ণ। মরুলের
জাতি দূর করিবার নিমিত্ত আমরা তাহা
ব্রত করিয়া লিখিতেছি।

জুতার অর্জর মরুলের পুত্র পাঁচ বৎসর
এই রানী যুররাজের ভার্যা হইয়া আশন
দেশ ভাগিন্দরক ইতালি দেশে বাস
করিতে গেলেন। ইতালি দেশের
লোকেরা স্বাভাবিক ও বিবর্ত ও কুফিয়া
রত কিন্তু যুররাজের ভার্যা তাহারদের
দেশে বাস করণ সময়ে সুতরাং তাহার
দের জল কককে চাকর রাখিয়াছিল
লেন। তাহার কলি বিষয়ে রানীর প্রতি
কোবি করিয়া তাহার অধায় করিয়াছে
গিড ১০ আনিয়াছে জুতার অর্জর মরি

লেন। এবং এই যুররাজ হাজা হইলেন
ও তাহার ভার্যা সুতরাং রানী হইলেন।
পরে এই মরুল অনবার শুনিয়া রাজা ও
তাহার ওজীরেরা রানীকে তাহার পরে
স্বাক্ষর করিলেন না এবং পুতাকে গিয়া
যায়েত রানীর সাক্ষাৎ যে শূণ্য হইয়া তাহা

রাজা আশনি নিবারণ করিলেন। ইহা
শুনিয়া রানী ইতালি দেশহইতে ইং
গ্ৰাজ দেশে আনিতে নিষ্পন্ন করিলেন
কিন্তু স্বদেশে যে আশিয়াতি ইয়াজিল তা
হাতে যে দেশ দিয়া আইলেন সে মরুল
দেশে তিনি আশিয়াতি পাইলেন। রানী
মরুল দেশে গৈতছিলে তাহার ওজীরেরা
তাহার নিকটে ওজীর হারা করিয়া পাঠাই
লেন যে তুমি ইংগ্ৰাজে না আশিয়া যদি
অনা দেশে বাস কর তবে তোমার যথেষ্ট
মরুল হারা দেওয়া যায়। রানী সে কথা হেরে
আশন করিয়া ইংগ্ৰাজে আইলেন ও কহি
লেন যে যদি আমি নির্দোষী হই তবে আ
মাঝে আশন পদ দেও যদি তাছাড়া সে
দেহ থাকে তবে এই বিষয়ে মোকদ্দমা
কর। ইহাতে ওজীরেরা মোকদ্দমাতে
পুত হইয়া কলিদেরের সভাতে রানীর
নামে লালিস করিল কিন্তু লোকেরদের
সভার ইচ্ছা হইল যে কোন পুকার এই
মোকদ্দমা না হয় কেবল আশনে এই
বিবোধে নিযুক্ত হয়। এই নিমিত্ত এই
বিষয়ে এক মরুলক তাহার রানীর লিখ
টে পাঠাইল। রানী আশনার তরফ দুই
ওজীর পত্র করিলেন ও রাজা ও আশ
নার তরফ দুই জন ওজীর পত্র করিলেন
এই চারি জন ওজীরের পত্রের মধ্যে
১০ জনক দিনপর্য্যন্ত হইল কিন্তু মরুল
নিযুক্ত। তাখনি লোকেরদের সভা আশ
নারদের ইচ্ছা জািল না। এবং পুস্কীর
রানীর নিকটে ১ জন মরুলক করিল তা
হাতেও কিছু সিদ্ধ হইল না।

গিড বহরতি যে আত্ম ইংগ্ৰাজহইতে
আইল তাহার হাজা ১০ তুলানর্থেরের
সমাচার জালা গিয়াছে সে সমাচার
হাজা বোবি হয় যে এক মোকদ্দমা হাজি
রেক এক কলি নিশিত হইবে না। রানী
করেন যে আমি এ বিষয়ের কিছুই জািল

ଓଡ଼ିଆ ଇତ୍ୟାସ ୫୧୨୧

कृताहमिह आसक्त मयांजीतुमी मर्नतेन ।

[illegible]

সম্রাটের দর্পণ।

কত আবার নিজেই আইন আমি বিবেচনা করিয়া বুঝি যে উপযুক্ত পাত্র হইবে সে অবশ্য বৃত্তি পাইবেক।

সেইই বৃত্তিগাহক লোকেরদের মাঝে অনেক মুসলমান কিন্তু ব্রাহ্মণ অল্প তাহার মাঝে যে ব্রাহ্মণ বিদ্যাবান ও শিক্ষার দ্বিগুণ অধ্যাপনা করেন ও অধ্যাপনার ব্যয়বিকা করেন তাহারদের বৃত্তি বিবেচনা করিয়া খানসান দিয়াছেন।

এবং শ্রুতিয় ব্রাহ্মণ-সি-হের মাতা মাতৃভৃত্য দর্শনার্থে গিয়াছিলেন তাহাতে কাশ্মীর দেশে যত ব্রাহ্মণ আছেন তাহারদের পুত্রদের পঞ্চাশ টাকা করিয়া বিতরণ করিয়াছেন। কাশ্মীর দেশে অনুমান দুই লক্ষ ব্রাহ্মণ আছেন।

আরো সম্রাটের আনিয়ারে যে পুরুষ কাশ্মীর দেশে অনেক লোকের তুর ও প্রবুল হইয়াছিল তাহাতে কোন লোকের ব্যাঘাত হয় নাই কিন্তু তাহার পর গত চৈত্র ও বৈশাখ ও আশ্বিন এই তিন মাস সেখানে ওলাড্যা রোগি হইয়া তথাকার অনেক লোক মারা পড়িয়াছে।

মুরশেদাবাদ।

ও দিগম্বর তারিখের পত্রের দ্বারা সম্রাটের আনা গেল যে মোঃ মুরশেদাবাদে অনেক রোগি বৃদ্ধি হইয়াছে এবং পুষ্করি ওলাড্যার দাবুর্ভাব হইয়াছে এমন সে কম হইয়াছে কিন্তু এতদেশীয় লোকেরদের মাঝে তুর অজ্ঞাপি আছে।

হিন্দ-হাবাদ।

গত ১৮ আশ্বিনের তারিখে যখন মঙ্গল নৈমিত্ত্য হিন্দ-হাবাদে ছিল তখন

ইমামবন্ধ ও শেখ নেওয়ামতুল্লা হাওল হার ও মহম্মদ আলী এই তিন জন মুসলমান দিয়াহী আসা মুসলমান দিহা হারদের মহারাজা পাঁচিয়া হিন্দু লোকের দের অস-ভ্রম করিবার নিমিত্তে ঐ তা গ্রিখে মহম্মদ কালে আশনারদের মুসলমানের চাঙিনিতে এক গজ অবধি করিয়া ছিল। এবং ইমামবন্ধ এই সিন্ধার কতক দিন পরে অর্পন সেনাপতি এইত সেজে লেভ কায়েল-মহিহের লিহটে গিয়া গজ মারিবার নিমিত্ত নিবেদন করিয়াছিল কিন্তু হি নিমিত্ত ও কোন্ সময়ে গজ মারিবেক তাহা কিছু মোহরের লিহটে লেহ নাই। ইহাতে মোহর বিশেষ না আসি গা আপনি সম্মতি দিয়াছিলেন। শেখ নেওয়ামতুল্লা গজ কিনিয়াছিল ও মহম্মদ আলী এই সকল অস-ভ্রম ক্রিয়াতে তুর না হইয়া ঐ গৌরু এক বন্দুকের ওপরে লাগাইয়াছিল। এই সকল বৃত্তান্ত যখন ঐশ্বর্যের নিকটে পহছিল তখন মোকাম হিন্দ-হাবাদে এই বিষয় মোকদ্দমা করিতে সেখানকার অধীক্ষের দ্বারা কে আজা দিলেন এবং মোকদ্দমা হইলে সেই তিন জন মুসলমান দোষী নির্দয় হইল এবং ঐশ্বর্যের আজালুসারে তাহারদের এই শাস্তা হইল যে ইমামবন্ধ ও শেখ নেওয়ামতুল্লা কোন্সিলির চাকরি হইতে অত্যন্ত অস-ভ্রম করিবেক বিদায় হইল। এবং মহম্মদ আলী যে বন্দুকের ওপরে গৌরু দিয়াছিল সেই বন্দুকের ওপরে তাহারকে হাঙ্গিয়া গাঁও বৈত মারিয়া কোন্সিলির চাকরি হইতে দূর করিয়া দিল।

বাজারে পাঁচ মাত জন কবজ একত্র হইয়া খেলা করিতেছিল তাহার মাঝে দুই বালকের ভালো খেলাকি আর বালকেরদের গাঁওবের মত খেলাকি। ইহা এক বিবি কোন মহা করিবার কারণ ঐ বাজরে আইল এবং খেলাকি হইতে লাগিয়া জিনিস দেখিয়া বেতাইতেছে এই সময়ে ঐ বৃত্ত বালকেরা আপনা আপনি মাতামারি করিতে লাগিল। পরে এক গাঁওব বালক মারি খাইয়া দৌড়িয়া বিবির এক পাশে লুকাইয়া রহিল।

তাহাতে বিবি দয়াপুঙ্কু ঐ ক্ষুদ্র বালককে দূর করিয়া না দিয়া ফলক আশুর দিয়া অন্য বালকের দিগন্তে থাকাইয়া কহিল যে তোমারদের এইক্ষণ পুলিশে পাঠাইতেছি। ইহা শুনিয়া ঐ সকল বালকেরা পলাইয়া গেল। জন ভর ঐ তুরাত্তর বালক আশনার কোমর হইতে কাঁটী লইয়া ঐ বিবির কাপড়ে যে টাকার টপেল ছিল তাহা কাটিয়া বেতাক টাকা লইয়া বিবিরে কহিল যে তাহার কাঁটা গেল যদি তাহার আমায় দেখে তবে আমাকে পুনর্বার মারিবে। বিবি কহিল যে তাহা হইয়া এখন হইতে গিয়াছে তুমি অন্য পথ যাও। পরে ঐ বৃত্ত বালক ঐ বন্দুকের দিয়া টাকা লইয়া পলাইল। জন ভর বিবি জিনিস খরিদ করিয়া টাকা দিবার সময় আপন জেবে হাত দিয়া দেখিল যে টাকা নাই এবং আঁল কের কাঁটা। ইহাতে অনুমান করিল যে ঐ বালক তুরাত্তর করিয়াছে।

তাকিতি।

মোঃ মুহাম্মাদগরের ওপর পুঃ কোন গৌতপতি নামে গিয়া গত সন্ধ্যা

সমাচার দর্শন !

অকস্মিৎ হইয়াছিল তাহার মধ্যে এক জন বীরা পতিয়ালে আর তাহাতিরদের ডাকার হইতেছে।

যে স্থানটির নিম্ন পশ্চিম এক কোণে অন্ধরে বসনা বাজার নামে গ্রামে এক যোদ্ধার বাটীতে গড় মস্তাহে তাঁকাতি পতিয়া অনেক জিনিস পত্র ও নগদ টাকা লইয়া গিয়াছে সেই অন্ধলের দ্বারা গাঁ আসিয়া তাহার ডাকার করিতেছে নিশ্চয় কিছুই হয় নাই।

যাচা ওপনিপ।

আমরা জানিতে পাইতেছি যে যাচা ওপনিপের ওপরে ঘড় আশ্রয়ের ক্ষেত্র আছে সে সকল এক জন আরম্ভাণী নবী হাজার টাকা মানে ইজারা করিয়া লইয়াছে। সে ব্যক্তি দুই মন্ডান পাইয়া ছিল যে এই বন্দুর আশ্রয়ের দিগন্ত অতিক্রম হইবেক কিন্তু সে গ্রামে এই অনুমান হয় যে তাহার লোকমান হইবেক এবং আশ্রয়ের বিষয় আরো জ্ঞান ঘাইতেছে যে মালোয়া দেশে যে আজিম আলী তাহার পরিচয়ের বিষয় সে দেশের অধিবাস্ত শ্রীশ্রীযুত সিদ্ধিয়া মহারাজ কলিকাতার শ্রীশ্রীযুত বড় সাহেবের সহিত বন্দোবস্ত করিয়াছেন।

নবাব জিলাবতর।

১৯ নবেম্বর তারিখে মুর্শেদাবাদের মধ্যে মোকাম নাওপাঠে ময়মিলন মূলক নবাব দিলাবতর বাহাদুর ময়রাজেন তিনি মোকাম কলিকাতাতে চিত্তপুরের নবাব নামে খ্যাত ছিলেন। তাহার পিতার নাম মহম্মদ রেজাখান মুজিবউর রহিম হইল। নবাবের আশ্রয়ে বাস

না ও বেহার ও উত্তর ভারত নামে নামীয় ছিলেন। এক নবাব মুহারকদৌলার নামেও ছিলেন।

হাফিজ।

ইঙ্গ্রাজ দেশের এক কবরদ্বারের এক অলস কবরের ওপরে এই খোদা আছে যে তিনি নাডালই বন্দুরবরক হইয়া ময়লেন তাহার পুত্র্য জীতে আটা ইন মন্ডান হইয়াছিল এবং তাহার দি তার জীতে মন্ডর মন্ডান হইয়াছিল তাহার মরণ সময়ে তাহার পুত্র্যজাতি মন্ডান ছিল। এবং তাহার পৌত্র ও পৌত্রী নাডালই ছিল এবং পুত্র্য ও পৌত্রীতে মিলিয়া সর্বমুখ দুই শত পুত্র মন্ডান হইয়া ময়রাজেন।

ইঙ্গ্রাজ দেশের পাঠশালা।

ইঙ্গ্রাজ দেশে গড় বন্দুরে নামে পাঠশালাতে বালক বালিকাতে নয় লক্ষ জন পড়িয়াছে। ইঙ্গ্রাজের লোকসংখ্যা নৈ তাহাই লক্ষ তাহার মধ্যে দ্বিগুণ লোক সাতে আট লক্ষ।

টান দেশ।

শেষ সম্রাটরাহারা জানা গেল যে টান দেশের বাহাদুর ময়রাজেন এখন তাহার পদে কে বসিবে তাহার নিশ্চয় নাই তাহার দ্বিতীয় কিম্বা তাহার তৃতীয় পুত্র বসিবেক।

খুন বীরা।

ইঙ্গ্রাজ দেশে এক জন ওপদেশে যে গ্রামে ওপদেশে দিবক সেই গ্রামে পুত্র্য

পাইলেন সে কবর দ্বার গেল এবং সেখানে বেছিল যে কবরখানক ব্যক্তি এক নতুন গড় করবার নিমিত্ত মৃত্যুকা তুলিতেছে ও এই মৃত্যুকার সহিত একটা মনুষ্যের মাথা ওঠিল। ওপদেশে বেছিল যে তাহার মধ্যে একটা পুরু আছে। পরে এই কথা পুকাশ না করিয়া এই পুরু জানি থলিতে রাখিল অপর এই মৃত্যুকা খনক ব্যক্তিকে জিজ্ঞাসা করিল যে এই ঘর ভূমি তিন। মৃত্যুকাখনক কহিল যে হাঁ এই ব্যক্তি আমার এক মিত্র ছিল। ওপদেশে জিজ্ঞাসা করিল যে এই ব্যক্তি কি পুকারে ময়িল। সে কহিল যে প্রান্ত্রিতে ভালোবাসে শ্রম করিল কিন্তু পুত্র্যকালে তাহার মৃত পুত্র্য গেল আর কোন দি শেষ নাই। পরে ওপদেশে জিজ্ঞাসা করিল যে ইহাতে কাহারো মনে কিছু সন্দেহ হইয়াছিল। তাহাতে সে কহিল যে না সন্দেহের বিষয় কি কিন্তু তাহার পর দিলে তাহার জী মরণের দিবাৎ করিল ইহাতে আমায়ের মনে বড় ভাব না গিল না। পরে কিছু দিলের পর ওপরে শ্রী জীর ঘরে গেল ও অনেক কথোপ-বথনের পর আপন থলীহইতে এই পুরু বাহির করিয়া এই জীকে দেখাইল। তাহাতে এই জী ওপদেশের লোকের আশ্রয়ে দেখ সকল জীকার করিল ও অনেক পুকার বিনয়পূর্বক ক্ষমা চাহিল। এই ক্রিয়া গ্রন্থ বন্দুরের পর পুকাশ হইল।

ঘড়ি চুরির সাখা।

যখন ইংল্যান্ডের ইমেলোরা হোনাগির্দে কে জয় করিয়া মুক্ত দেশে এক বন্দুর বসতি করিল তখন এক জন ইংল্যান্ডের নিমাই এই কথোপবথনের ঘড়ি চুরি করিল সে তখন লালিন করিয়া তাহার দোষ

सर्वाङ्गान् दर्शय ।

[illegible]

ଯାନ ହାନି ଡାକେଇ ଡାକିଲା 'ଆଜୁ କଣ' ଡାକି ଲେଖି ।

इतिहासः ।

[illegible][illegible]

কোনো প্রকারেই প্রাথমিক শিক্ষার পরিচালনা করা হবে। বার্ষিক পরীক্ষার ফলাফল প্রকাশিত হওয়ার পরে প্রাথমিক শিক্ষার পরিচালনা করা হবে।

সমাচার দর্পণ

১৩ নং-১৮৭।

শনিবার।

১৩ দিসেম্বর সন ১৮৭০।

১০ পৌষ সন ১২২৭।।

দর্পণে দুই পৌষবার্ষিক কাব্যচিত্রকথা।

বৃত্তান্তবিহীন সত্যসত্য দর্পণে ॥

কোম্পানির কাণ্ড।

কোম্পানির শতকরা জয় টাকার সুদের কাণ্ড করা করিতে হইলে শতকরা তিন টাকা আট আনা প্রিমিয়াম। বিসয় করি ও হইলে শতকরা তিন টাকা প্রিমিয়াম।

সন্তোহের পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|----------|-------------|----|-----|
| ১৩ | দিসেম্বর | শনিবার | ১০ | পৌষ |
| ১৪ | ১ | রবিবার | ১১ | ১ |
| ১৫ | ২ | সোমবার | ১২ | ২ |
| ১৬ | ৩ | মঙ্গলবার | ১৩ | ৩ |
| ১৭ | ৪ | বুধবার | ১৪ | ৪ |
| ১৮ | ৫ | বৃহস্পতিবার | ১৫ | ৫ |
| ১৯ | ৬ | শুক্রবার | ১৬ | ৬ |

বাকিনোট হারান।

ইস্তাহার দেওয়া যাইতেছে ৩৩৬৭ নম্বর দুই শত টাকার এক কেতা বাকিনোট ইস্তাহার দেওয়া হইয়াছে সে নোটের টোকা বাকি হইয়াছে অতএব সে নোট যে কেহ পাইবেক সে পণ্ডিত মস্তুর এত গুলিয়ম সাইবের মস্তুর বেওয়ানী নেজামত অদা তে ন্যায়াল করিবক ও বাধ্যশীপ পাই বক।

সমাচার দর্পণ।

রাজকর্মে লিপ্যেণ।

১৪ নবেম্বর সন ১৮৭০ সাল।

ঐযুত জি জে মরিশ সাহেব সররদেও রাণী ও নেজামত অদালতের মুখ্য নে কার হইয়াছেন এবং ট্রিপোর্ট প্রস্তুত করিবার অধীক্ষ হইয়াছেন।

ঐযুত ই বরিশ সাহেব ইকশনের দ্বিতীয় বেকার হইয়াছেন।

৮ দিসেম্বর সন ১৮৭০ সাল।

ঐযুত মহবতি লক্ষ্মী সাহেব সরর দেওয়ানী ও নেজামত অদালতের পুর্বান জজ হইয়াছেন।

ঐযুত সিম্ব সাহেব সরর দেওয়ানী ও নেজামত অদালতের মোট জজ হই য়াছেন।

ঐযুত এফ সাহেব বরিশারসের কোর্ট আর্দীল ও হায়দারাবাদের দ্বিতীয় জজ হই য়াছেন।

শ্রীযুত মহবতি সাদ্দস সাহেব বা নারসের কোর্ট আর্দীল ও হায়দারাবাদের তৃতীয় জজ হইয়াছেন।

বহু অদালত।

সম্রাটের পাওয়া গেল যে শহর হলি কাতার বহু অদালত সন ১৮৭১ সালের ৮ জানুয়ারি তারিখে সোমবারে খোলা যাইবেক।

লুণ্ডন কলেজ।

ঐযুত লর্ড রিশ সাহেব মোং. হলি কাতার পশ্চিম পায়ে কোম্পানির বাণী নের লিহটে এক কলেজ বনাইবেন তা

হার হারান ১৫ দিসেম্বর শুক্রবারে সে খালে অনেক ভাগিহাল লোক ও ঐযুত জে. ট্র্যাট সাহেব ও ঐযুত জে. আদম সাহেব ও শ্রীযুত মেজর জেনারেল হার্ডিঙ্ক সাহেব ও শ্রীযুত অডনি সাহেব ও ডাক্তার পট্টু ও আর. ডাফ বাল সাহেবেরদের বিবি লোক ও কলিকাতার সত্যক ওপদে- শাক সাহেব এই মদল লোক এসব ইষ্টা জিলেন ওৎকালে শ্রীযুত লর্ড রিশ সাহেব যে লোক এই কলেজের অধ্যাপনা হইবেন ডাক্তারদের হারান শ্রীযুত/বাল পুর্ণিমা করিলেন। পরে এক খিলের লর্ড মন ও ডাক্তার ও রাজের নাম ও আর. বিঘর মদল খদিরা এক পুস্তকের দীর্ঘে পুণ্যম ইষ্টক পুঁজিলেন।

-ভাগ্যবর্ধি।

এই বৎসর ভাগ্যবর্ধিতে অল্প বৎসর হইতে অধিক জন আছে যেহেতুক এ সময়ে অন্য বৎসরে যেখানে বহু নৌ কা ও বজরাগুহিত যাইতে পারিত না এ বৎসর অন্যখানে যাইতেছে।

নৌকা ভুই।

ঐযুত ক্রি. সাহেব ও ঐযুত লি সাহেব এই দুই সাহেব একত্র হইয়া কাহাজ অরোহন করিয়া সাগরে যাইতেছিলেন। গত রবিবারে এক নৌকারোহন করিয়া কিনারা আসিতেছিলেন এই সময় ই নৌকা বহন পত্রিকা ওলাট্টা পড়িল তা হাতে দুই সাহেব মারা পড়িয়াছেন।

১১
মূল।
১৩ ৩ নবেম্বর তারিখে মোঃ কলি
কাতার এং নাবাবের চাকর মোদাব্বজ
নামে সে আশন মূলবের দিকটাইতে
হাফিহলা লইয়া রাসে আশন দূরে আসি
তেছিল। মোহাম্ম কলিয়ার বাঁধার
রুম্বতে নামে এক জন আশিয়া তাহার
মুখকে এক হস্তের আঘাত করিল তাহা
তে সে অতিশয় কাতর হইয়া নিকটে
দুই জন বাহুর পানির মোকান ঠাইতে
ছিল তাহারদিকে তাকিল পর তাহার
নিকটে আইল ঐ রুম্বত তাহারদিকে
মর্হতে এত হইল তাহারও পলাইল।
পরঃ ঐ মোদাব্বজ ঐ মূলে কাতর হইয়া
পাড়াখা থাকিল। এগার বর্ষা তারিখের
নামে সে কাতারের আশিয়া জিআনা কর
ল যে সে তাহাকে মরল বুড়াই কছিল এ
তাহার বাটীতে সমাচার দিতে বলিল।
পরে মোকাদার তাহার বাটীতে সমাচার
দিলে বাটীর লোক আশিয়া তাহাকে
বাটী লইয়া গেল। তাহারপর দিবস তা
হার মৃত্যু হইল ৪ দিসেম্বরে তাহার
আদালত হইয়া রুম্বত দোষী হইল।
এইমু তাহাকে মরুর আদালতে তালিম
করিয়াছে।

ଆର୍ଜ୍ଜୁନ !

মোঃ বাকিয়ারের শাশুরাচল বন্ধুর পুত্র
হরিশ্চন্দ্র বসু তাহার বয়স্ক অসুস্থ
সত্তর বৎসর বয়স্ক মোঃ শাহাবুজ্জামান
বিবাহ হইয়াছিল তৎপুত্রকে সে আপন
শস্ত্রাশ্রমে কিছু দিন ছিল পরে আঁঠুহা
য়ল মাসের শেষে তাহার সেইখানায় পুর
হইয়াছিল সে পুর সময়ে বৃদ্ধি পাইলে
সে পুত্র মন্ডলব্রত হইল তাহাতে তা
হার আত্মীয় লোকেরা তাহাকে মোঃ

ଠାଡ଼ାଡ଼ା ମିଥ୍ୟା ମିନିଷତାରେ ଆମିନ ମୋହନ
 ଏକ ଦିନସାରା ଧାନ୍ଧିଆ ଡାହାର ପଲେନେ
 ଲୁଗୁଡ଼ି ହୁଏନ ଏବଂ ଡାହାର ଦାହାଦି ମିଥ୍ୟା
 କହିଲା ମହଲେ ଆମିନ ଏ ଶାଢ଼ୀରେ ଗୋଳ
 ଏବଂ ଡାହାର ସ୍ବଚ୍ଛତ ବାଢ଼ିତେ ଯମାତାର ମା
 ଟାହିନ । ମୋହନ ଡାହାର ନୋହେଉ ଖା
 ଖିନିଆ ଅନେକ ଯେନେ ହରିମ ବିଷ୍ଣୁ ଡାହାର
 କୁହେ ବିଷ୍ଣୁ ବୁଦିନ ନା । ଡାହାର କ୍ଷୀର ବୟା
 ହୟ ଡେର ବଂଶନ ମେ ଆମିନ ଯାହାକେ
 କହିନ ଯେ ଆମାର ମୁଖ ବିହମ କରିଡେଇ
 ଡାହା ଆଦି ବହିଡେ ମାରି ନା ଆମାର କ୍ଷା
 ଯି ଡାହା ହିସ୍ତା ଆମିନ ବାଢ଼ିତେ ମିଆଇଜେ
 ଆଦିତେ ମୋହନ ଡାହାର ଡାହାର ମେନେ କ
 ନ୍ଦିର ଅତର ଡାହାକେ ମାଧୁ ମୋହନ ମାଠୀ
 ଏ ଆଦି ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ବୁଦ୍ଧିଭେଦି ଯେ ଆମାର
 ମହନୀମ ହିସ୍ତାଜେ । ଇହା ବହିସା ମେ
 କ୍ଷୀ ବହାମୁସେ ଆମିସା ବୁଦ୍ଧିନ ଯେ ଡାହାର
 କ୍ଷାସିମ ମିର ଦାହାଦି ହିସ୍ତାଜେ । ଡାହାତ
 ଯେ ଯେନାନ୍ତା ହିସ୍ତା ମର ମେ ଆମିନ କ୍ଷା
 ସିର ଏକାମିନ ରେଆ ଲୟା ଏ ମୋସ କ
 ନିବାର ଅନ୍ୟମର କହିୟାଜେ ।

সিদ্ধ চরিত্র।

মোক্ষায় নৈকুন্স গুম্বে এক ঘর বহিষ্কৃত
মুদলমাল বাস করে গাত মাসে তাহার
বঠিতে তিল অলংকার আনিয়া এক
ঘরে নিদ্রা দিয়া এক অল ঘরের মাঝে
পাশের করিল দুই জন শিশু মোহনানন্দ
রহিল। ইচ্ছাশ্রী ইদম সে বঠীর পুরু
ধোরা গুম্ভাঘরে গিয়াছিল সে রাতিতে
কেহ ঘরে ছিল না। ই তাঁর ঘরের মাঝে
হইতে কতক জিনিস পুণ বাহির করিয়া
বাহিরের দুই ঘরের দ্বারে নিঃক্ষেপ
এই সময়ে ই তাঁর এক শ্রী সিদ্ধান্ত হই
য়া তাঁদের সম্মুখ পাঁচজন আনিল প্রতী
য়া ই ঘরের কোণে এক কুতালি ছিল

তাহা লইয়া ই চোরের গুপের আখ্যাত
করিতে লাগিল। চোর তিন চারি আখ্যাত
লাইয়া তাহাৎ আতন প্রাণ লইয়া পলা
ইল অধিক জিনিস লইতে পারিল না
পরে ই মকল চোর জিনিস এক বাণিজ্যের
লিকচ রাখিয়া পর দিন পুণ্ড্রকালে এক
গিহর গাভী ভাড়া করিয়া তাহার গুপের
আপনি দেখায়ে ইল ই হাশিচ তাপন
শরীর চাহিয়া আসিতেছিল। পরে তথা
হইতে এক কোশান্তরে মোকাম খানাবের
হাটখোলাতে গৈছিল। সেখানে এক
জন খানার বরকজাত তাহার মন্তকে
হুগীর লীচ রক্তের দাগ দেখিয়া তাহা
কে ডিকান্না করিল। তাহাৎ তাহার
কথার অন্যায় বুঝিয়া তাহার শরীরের
সম্বন্ধ খুলিয়া দেখিল যে তাহার শরীর
বুজাখনি আখ্যাতের দাগ ই রক্ত। পরে
তাহাকে ই গাভীচোর দোষে তুলিয়া
এই করিয়া মন্তকে ঢালান করিয়াছে।

ବାଲିଆ :

গীত মণ্ডাওহের মধ্যে শুনা এইশ
টাকা দামে কিছু বিক্রয় হইয়াছে। এবং
আবার তিন টাকা দামে কম হইয়াছে
মুজার দেহ টাকা বেশী হইয়াছে ও
বিক্রয় অনেক হইয়াছে সেখানকার অম
দান লাগি। ৪৩ ডিসেম্বর ১৩৩৭ মস
হইয়াছে গীত বঙ্গের প্রমত্ত হয় ন
গীত বঙ্গের লাগি কিছু আবিষ্ক
আমাদানী হইয়াছিল।

नीज १

ନିଳ ଏଥନ ଯୋକାୟ ବଳିକାତାଡ଼େ
 ଅଭିଷୟ ବିକ୍ରୟ ହୁଏତେରେ ଆୟମାନୀ ହୁଏ
 ଲେ ମୁହଁମିଳଓ ଥାବେ ନା, ଯେଉଁ ଆମିତେ

সমাচার দর্শন !

সে নেই দশেই বিপর্যয় হইতেছে দ্বায়ও
বিশেষ বৃদ্ধি হইতেছে এখন এক শত পঞ্চা
শী টকা দ্বায় হইয়াছে লগায় ৪৩ দি
নেশ্বর এক চল্লিশ হাজার এক শত তিরিশ
এক আশ্রয়ালী হইয়াছিল গত বৎসরে
এমানখি ৩৪ হাজার মন আশ্রয়ালী
হইয়াছিল।

কারণ! অন্যত্র কারণ গত সপ্তাহে
সমান বসে আছে কিন্তু এলাহাবাদের
সাধারণ কুতিতে গঠিত দ্বায় বৃদ্ধি হই
যুতছে।

চিনি ও মোহা। গত সপ্তাহের মধ্যে
চিনি ও মোহা সমান মূল্য আছে বিপর্য
ও অনেক হইতেছে।

শ্রীশ্রীযুত বড় সাহেব।

সম্প্রদায় হইতে ৪১ দিনমুখের এক পত্র
আমদ্রাজ্যে তাহাতে আলা গোম যে প্রকৃ
যুত বড় সাহেব ২২ দিনমুখের ওলালার
অঙ্কল স্বাক্ষরে গিয়াছেন। ৪১ দিনে
মুদ্রণার্থে সেইখানে ছিলেন। ৩ তারিখে
অনেক পক্ষী স্বাক্ষর করিলেন। এবং
মেখান হইতে সরকুণ্ডাতে গেলেন। পরে
বহরতিবাদের দিন মহারাজার অঙ্কল
ঘাটেতে এক ঘাঘলে দুই গাভীর দেখি
লেন তাহার একটাকে শ্রুত করলান লি
কল সাহেব এক গুলি মারিলেন সে পড়িল
কিন্তু কিছু স্থানান্তরে গিয়া পলাইল
আর একটাকে শ্রুত কান্ডান বুক সাহেব
এক গুলি মারিলেন তাহার গল ঘেঁসে লা
গিয়া গাভীর পক্ষী মারিল। সে গাভীর
কে ডিন হস্তাতে টালিয়া তাঁহার নিকট
আনিল। প্রকৃতির দিবস সন্ধ্যাভিতে
থরিলেন পরে পলিবারের দিবস সে
খান হইতে ঘাইলেন। ৩ গাভীর ভিন্ন
অন্য কোন জন্তু স্বাক্ষর হয় নাই। বা

যুর আলোচন করিতেছেন কিন্তু এমত
নিষিদ্ধ হন যে তাহার মধ্যে যাওয়া যায়
না।

চীন দেশের বাদশাহ।

সম্রাটর পাওয়া গিয়াছে যে চীন দে
শের বাদশাহ মরিয়াছেন তাঁহার দিওয়
ও তৃতীয় পুত্র আরজেন কিন্তু তাহার মধ্যে
এ মহারাজাবিকার তাহার ভাগে
হইয়াছে তাহার লিখ্য সম্রাটর পাওয়া
যায় নাই।

দত্ত।

লজন নগরে এক জন দ্বিঘরী লোক
শ্রুত ওয়াইট সাহেবের এক বদনামার
মর্যাদা অদালতে দিয়াছিল তাহার কা
রন দ্বিঘরী লোকের তারি হাজার টাকা
দত্ত হইয়াছে।

ইংলণ্ডের রানী।

ইংলণ্ডের রাজার সহিত তাঁহার রানীর
পুত্রবি বিবাহ আছে। তাহাতে
রাজা রানীকে দুকুম্বিন্দিতা করিয়া তা
হাকে রানী করিতে সম্মত হন না। রানী
কহেন যদি আমি দুকুম্ব করিয়া থাকি
তবে অদালত করিয়া আমার শিরদ্বন্দন
করহ নতুবা রানী করহ। কিন্তু দেশে
অনেক লোক রানীকে দোষদিতা আনি
য়া রানীর শত্রু আছে। লোকদের মর্মে
স্বকরকর্মেই মর্মে চোখ যে রানী কোন
মতে রাজ্যের রানী থাকেন। তাহাতে
রাজা কহেন যে আপনি স্বীর দোষের অ
দালত প্রকাশ করিব না এবং যখন
রানী দেশান্তরে ছিলেন তখন ৩ রাজা
লোকদ্বারা চোকা দিবার প্রসঙ্গ করিয়া

ছিলেন যে রানী চোকা নইয়া ফল্গা থা
কেন এবং তিনি রানী হইতে চোখী না
করেন। তাহাতে রানী কহিলেন যে
আমি চোকা নইয়া আপন দোষ মজা
করিয়া আবাদপুত্র হইয়া থাকিব ইহা
কখন হইবে না আমার কোন দোষ
থাকে প্রকাশ করণ তদানন্ত হইয়া মাজা
হবেক। যখন রানী নগরের মধ্যে আ
ইলেন তখন নগরস্থ তাহা লোক একত্র
হইয়া তাঁহাকে এক পত্র লিখিল যে
আপনি গিরে পুত্রাশ্রয়ন করিয়াছেন
ইহাতে আমায়দিগের মৃতদেহ ত্রি
নাম দোষ হইল এবং আপনি এরাজের
রানী আশ্রয় পাওয়াছেন ইহাতে আমায়দি
অভিশপ্ত আকুর্ষিত হইয়া দিষ্ট এই
আকুর্ষদের মধ্যে এই শোক হইতেছে যে
আপনার শত্রুর আমায়দিগের পুত্রান
রাজার মৃত্যু হইয়াছে এবং আপনার ক
নার মৃত্যু হইয়াছে তাঁহার রাজ্যের ভ
রানী ছিল যে হক এইকালে আপনার যে
বিশ্ব গুণদিত হওয়াতে আপনি যেদিতা
আছেন ইহাতে আমায়দিগে অভিশপ্ত যে
দিত আছি কিন্তু এই বিশ্ব আমায়দিগের
হইতে গুণদিত হয় নাই ইহাতেই আম
রা দ্বির আছি এবং এমত বিশেষ আপনি
সাহসে থাকিয়া অদালতে পুস্তত আছেন
ইহাতে ভরসা হইতেছে স্বীয় আশ্রয়
ইতে আপনাকে ওদ্ধার করিবেন আমায়দি
গের এই পুত্রান যে আপনি এরাজের
যেহেতু রানী হইয়া থাকেন সেমত
আমায়দিগের মরণোত্তর রানী হইয়া
থাকেন তবে আপনার পুত্র আমায়দিগের
যেহেতু মন তাহাও আনিতে পারেন।
এবং লোকেরা আকুর্ষিত হইয়া নানা
পুকার রোণনাই করিল এখন তাহার
এই চোখী করিতেছে যে রানী নির্দোষ
হইয়া রাজ্যের রানীকল থাকেন।

সম্মাচার দর্পণ ।

महाविर्भु ।

শান্তিনুর নিবাসী শ্রীমত ৩ গোপেশ্বর
নামে দুই হুঁত বাহন পরপুত্রনা করি
গ্রাই কাল যাপন করিতে।

এক সময় গোবিন্দর দ্ব্যস্ততারীর বেশ
ধীরে করিয়া আসিল তঁাহারই শ্রুতিবাক্য
সম্বন্ধ করিয়া পশ্চিম দেশে গেলেন এবং
সেখানে নিবদ্ধ হইয়া যথার্থ এক পুস্তকে
উদ্ধৃত্তে আনিয়া থাকিলেন ও শ্রুতিবাক্য
তাঁহার আশ্রিতের মাধ্যমে অসম্ভব সময়
প্রায়স্ফূর্তে লিখিত হইল। এই কল কিছু
দিন গেল ঐ শ্রুতিবাক্য উদ্দেশ্যের রাজার
নিকটে গিয়া কহিল যে হে মহারাজ
এই পুস্তকে আমার এক ভদ্রনাথ করিতে
জিহ্না অসিৎ তৎকালে তাঁহার নিকটে
বিদায় হইয়া তাঁহঁ দর্শন করিয়াছিল
নে অনেক কাল হইল। এই ভদ্রনে অনু
সন্ধান করিলম্ তঁহার সন্ধান পাঠ
লভ্য না অনুমান করি যে তঁহার ওপর
মুক্তিকারি দর্শন হইয়া থাকিলে। আর
হে মহারাজ যখন দেখিয়া করিয়া কহত
সেই কাল আমার পোঁদে। তবু তঁহার
অনুসন্ধান করিতে পারি। উভয় রাজা
অতিবিস্ময় জান করিয়া ও তাঁহঁ দেশে
মহাপ্রভুত্বের বারেন্দ আনতকে দিয়া ভাবেন
তৎকালে তঁাহঁকে অনেক লোক প্রভুত্ব
হইলেন। ঐ পুস্তক শ্রুতিবাক্য বহন করিয়া
যেখানে ও গুহ্য ও স্তম্ভ্য পাঠ্য
যেখানে দেখাওনি এমন কর। এই কল
দর্শন পোঁদর দিন গেল গেল। পদে এক
দিন সেই নিবদ্ধ হইল গেল ও সেই
তঁহার এক বিবেচনা করিতে পারি।

এ অনেক স্থান পরে দ্বিতীয় দ্বীপ দেখা গেল তখন রাজার দিকটে সমাচার গেল এ রাজা আপন পরিবার সুলভ তৎক্ষণাৎ আসিয়া দেখিলেন যে সে দ্বীপ চক্ষুদ্বারা করিয়া নিশ্চয়ই বসিয়া আছে । পরে শিগ্গহ তথ্যই আনিবিত হইয়া গেল যে দ্বীপই মঙ্গল্যে রাজ্যের বারং নহিতে নাছিল যে হে শূভা চক্ষু প্রকাশ কর তোমার সেই শিগ্গহ আশ্রয় করুর আভাতে তাহা উপদ্রব করিয়া আসিয়াছে । ইহাতে অনেক স্থান পরে সে চক্ষু প্রকাশ করিয়া জিজ্ঞাসা করিল যে আমি কি মিত্রা পাইয়াছেন । সে উত্তর করিল যে হে শূভা সে মিত্রাণী এখন কলিকাতা আসিত । ইহা শুনিয়া সে কহিল যে হা মিত্রাণী আসিয়াছেন এখন তে থাক । কর্তব্য নহে আমি কোথা যাইব । রাজা শুনিবারে ঐ উত্তর শুভাচার শুনিয়া চক্ষুদ্বারা ইয়া অনেক শূনিয়াত আপন বড়ীতে তথাকৈ আনিবিত এ তাহাকে বন গৃহস্থ করাইতে অনেক শূনিয়া করিল ঐ দ্বীপ কহিল যে হে মহাশয় তুমি কলিকাতা পরে যখন তোমার স্থানে কিছু কলিকাতা উত্তর যাই নিত্যকাল তবু একটা টোকায়াত নাই । রাজা ইহা শুনিয়া একটা টোকা আসিয়া দিল ঐ মহা দ্বীপ কহিল যে হায় কলিকাতার টোকা ইহা আমি যখন মঙ্গল্যে উপভোজ্য বসিয়াছিলম তখন ইহার পটন রাজ্যের টোকা হইত । রাজা ইহা শুনিয়া কহিল তুমি পটন ইহার টোকা হইতে দিল । দ্বীপ দ্বীপ ইহা হইতে ঐ মরণ রাজ্যকে ভূমিহারা অনেক টোকা করিয়া গেল ।

ব:জান্নি তাও !

| কিনিস | মেন | অবধি | পার্থক্য |
|---------------|-----|-------|----------|
| মুপারি | ১ | ৩১০ | ৩১১/২ |
| ভেবেগা তৈল | ১ | ১৯ | ২০ |
| গাছ মরিচ | ১ | ৩ | ৪১০ |
| নারিকেল তৈল | ১ | ১৪ | ১৪১/২ |
| জুলা কছোরা | ১ | ০ | " |
| আধা হুগলুর | ১ | ২১০ | ২১০ |
| পাটনাকৈ আধা | ১ | ২ | ২১/২ |
| চালু পুটাই | ১ | ২১১/২ | ২১২ |
| পাছড়ি উত্তম | ১ | ২১১/২ | ২১২/২ |
| পাছড়ি মধ্যম | ১ | ২১/২ | ২১০ |
| মুগু উত্তম | ১ | ১৪১/২ | ১৪২/২ |
| মুগু মধ্যম | ১ | ০ | " |
| বাগাম | ১ | ০ | " |
| মুগা গোম | ১ | ১১ | ১১/২ |
| গুটিমাই বুট | ১ | ১১১ | ১১২ |
| অকুহর ডালি | ১ | ১১১/২ | ১১২/২ |
| উত্তমমারী লুত | ১ | ২০ | ২১ |
| মধ্যম লুত | ১ | ১৬ | ১৬ |
| তৈলা লুত | ১ | ১৭ | ১৭১/২ |
| মধ্যম তৈলা | ১ | ১১১ | ১১২ |
| মোমবতী | ১ | ৫২ | ৫৩ |
| মিছরি উত্তম | ১ | ১৬ | ১৬ |
| মিছরি মধ্যম | ১ | ১০ | ১০ |
| মোরা উত্তম | ১ | ৫ | ৫১/২ |
| মধ্যম | ১ | ৫১ | ৫১/২ |
| চিনি কাণীশ | ১ | ২১০ | ২১০ |
| মধ্যম | ১ | ৮ | ৮১১/২ |
| গার চিনি | ১ | ৩১০ | ৩১ |
| তেতুল | ১ | ৫০ | ৫১/২ |
| ডামাক | ১ | ৫ | ৫১/২ |
| চন্দন | ১ | ১৪ | ১৪১১/২ |

[illegible]

ਅਨਿਵਾਰ: ੭ ਦਿਸੰਬਰ ਸਨ ੧੮੨੦। ੨੧ ਜੂਨ ਸਨ ੧੮੨੧।

१७१ मन्त्रः ।

ଦର୍ଶନେ ଯାଏ ନୌନ୍ୟାସିବ କାର୍ଯ୍ୟାବିଚକ୍ଷଣାଃ ବୁଝାନ୍ତାନିହ ଜାନନ୍ତ ମମାଚାରନ୍ତା ଦର୍ଶନେ ॥

কোম্পানির কাজ ।

কোলাসির শতকরা জয় টোকাই মুদ্র
 কাঁচ ফল করিতে হইলে শতকরা তিন
 টোকা আট আনা নিম্নমুদ্র। বিফল করি
 ত হইলে শতকরা তিন টোকা নিম্ন
 মুদ্র।

ଅନ୍ତଃହେତୁ ପଞ୍ଜିକା ।

| | | | | |
|----|-------------|--------|----|-----|
| ১০ | বিশেষজ্ঞ | পরিবার | ১১ | পৌর |
| ০১ | ই | পরিবার | ১৮ | |
| ১ | জায়েদুল রী | পোষক | ১২ | |
| ২ | ই | পরিবার | ২০ | |
| ৬ | ই | পরিবার | ২১ | |
| ৮ | ই | পরিবার | ২২ | |
| ৯ | ই | পরিবার | ২৩ | |

इन्द्रादि ।

ইন্ডিয়ায় যেখানে ঘাইতেছে সে এক
স্বয়ং হিরাতে অতিশয় চিত্তোত্তর হয়
বর্ণভূষণ হয় তাহা হারিয়েছে
কেহ পায় তবে জ্যুত হামিনটন
নী মোনার সাহিবের লিঙ্কে
করিলে ৩০ চন্দ্র শত টাকা পরিভোজ
পাইবেক।

ਸਥਾਪਨਾ ਦਰਖਾਸਤ

ব্রাহ্মসম্মিতি

१ दि.अश्व मत १८२० मांज ।

অযুত তি নি রসন মাহেব জিলা পা
হারন দুব্বের হাণ্ডের পেকার হইয়া
জেন।

४३ दिग्गम्बुद मल ४८ १० माल ।

স্বপ্নত জর্জ ওয়াৰ্ড মাহেৰ জিলা এলা
হাৰামেৰ কালেক্টৰ হইয়াছেন।

ঐযুগ্ত আৰু হৰ্ষৰ সাহেব বোভাৰিব
নব মেৰুটোৰি হইয়াছেন।

१२. शिष्टमश्रयः ।

ঈশুও আর জে টেলর মাহের জিলা
বসিরাবের হালাতের পেশার ইহুদ
হেল !

आइव्या

এই মন্তব্যে মোহন কলিকাতায়
মহাত্মার আমন্ত্রণে যে ওলামুলের
অবস্থানটি মহাত্মা দ্বান হারবার
ই-গী মারবর হকাতা ইইয়াছে।

১৪ নবম্বর তাতিখ পুতু কলন.
কলিহোল সাহেব ডাকি ১২ প্রায় ই
না সাহেব মরগা হারকার পুতু গায়েল করি
লেন। ১৫ই হারকাইডেত কলিহ বুর জহ
হে হারকার হারকার ডাকি ১১ সাহেবের
পুতু সাহেব কলিহ বুর প্রাণে সাহেব মরগা
বহি ১৬ই কলিহ বুর জহেত কলন সাহেব
কলিহ বুর হারকার হারকার পুতু মূল
হাফিলা কলন বুর ও নবম্বর পুতু
কলিহ বুর কলন কলন জহে ডাকি
পুতু কলিহ না নবম্বর জহে কলিহ
পুতু হারকাইডেত কলিহ বুর জহে কলন হারকাই

କହିଲା ମଣିଆଇଲମ୍‌ସେ ଯେ ଯୋଗ୍ୟ ତାହା
 ଆସାର ବ୍ରାତା ଆଗେଲ ତାହାର ମହିତ
 ମହମ୍ମଦ କହିଲା ଯେ ବୁଝା ହୁଏ ତାହା ବରି
 ବ ବୁଝାବା କରଲମ୍ ମାତାବର ନିକଟେ ତା
 ନିନ୍ଦା । ଇହାତେ କରଲମ୍ ମାତାବର ଓଡ଼ର କରି
 ନେଲ ଯେ ତେୟାର ଯେତେ ଇହା ତାହା କର
 ବିନ୍ଦୁ ଆସି ପୁଣି ନିବୁତ କରିବ ନା । ଇହା
 ଚକିଳା ମହମ୍ମଦୁ ତାହା କର ଓଡ଼ର ହାତେ
 ଓଢ଼ି ଯାହିତେ ନାମିଲ । ଓ ଯୁକ୍ତି ମାତାବର ଓ
 ଓଢ଼ି ବୁଝି ହାତେ ନାମିଲ । ଇହା ଓ ମହମ୍ମଦ
 ଯାହାକି ହାତା ଆମ୍ଭାର ମୁସଲ ଆବିହାରି
 କେ ମନେ କହିଲା କରଲମ୍ ମାତାବର ମାତା
 ତେ ଆସିଲ । ଏବଂ ଚକିଳ ଯେ ଆସି
 ହେଉଁମାର ମହିତ ମହିତ କରି ଆମ୍ଭଙ୍କ ଓଢ଼ି
 କୁଳେ ଧାରିତେ ବେଢ଼ି ହାତର ଗକ
 ତାହାର ଆସି ଧାରିତେ । ଇହାତେ କରଲମ୍
 ମାତାବର କହାତ ମାତେ ଇହା ନେଲ ନା ଏବଂ
 ହାତର ଗକ ମହମ୍ମଦ ତାହାତେ ଓଢ଼ି ମୁ
 ବେଶ ଅତି ହୁକ୍ତ ଓ ମହମ୍ମଦ ଓ ଗକ ନିଜା
 ହାତର ଗକ ଦେଖିଲ ଏବଂ ମିଡ଼ିଆ ହାତା
 ମୁସଲ ଗକ ଓଢ଼ିଆ ଡିଜିଟର ମିଡ଼ି ହିଲ
 ନିୟାହାତା ଗକ ମୁସଲ କହିତେ ନିକଟ
 କରିଲ । ତାହାତେ ଯେମାନଙ୍କର ମୋହର
 ମୁଜିତର ଓଢ଼ି ଧାରିତା ଓଢ଼ି ଯାହିତେ
 ନାମିଲ । ଇହାତେ ମିନେରା ତାହା ନା
 ଧାରିତା ମୁଜିତର ଓଢ଼ି ଓଢ଼ିଲ । ମହ
 ତାହାତା ଓଢ଼ିହାତା ବିନାହେନାମିତେ
 କାହିତେ ନାମିଲ ଇହାତେ ମିନେରା ମହ
 କହେ ତାହା ଓଢ଼ି ଓଢ଼ିହାତା ତାହା
 ମୁଜିତର ହାତେ ଓଢ଼ିଲ । ମହ ଇହା
 ଗାମ୍ ମିନେ ମେ ଗକ ମୁସଲ କରିଲ । ଓ
 ଗାକାହାତା ଓଢ଼ିହାତା ମୁସଲ ଯାହି

গত ৬ ডিসেম্বর তারিখে মোকাম
কলিকাতার শ্যামপুরিয়ার মুন্সীমাণ
তার মতে পদ্বীপী নামে এক স্থির মত

সমোচার দর্শন।

পরের পাওয়া গেল ও তাহা আদালতে
দুর্ভাগ্য হইল। ২৬ই মাসের তারিখে শো
করা তাহাকে যখন সমাজে দেখিয়াছিল
তখন সে পদ্মিনী আশ্রম দানিকে তাহা
বলে ঘাইতে করিল। তাহাতে হানী
দের গেল। পরে দিবস দানী সাত ঘ
কীর সময় ঐ পদ্মিনীর ঘরে আসিয়া
দেখিল যে দুইবাকী চাউর বন্দ। তাহা
তে সে মনে করিল যে গরলহাটীতে ঐ
পদ্মিনীর ভণিনী আছে সে বুঝে তাহা
কে দেখিতে চিন্তা থাকিবেক। পরে
হানী ইতস্তত করিয়া আসন ঘরে গেল।
পর দিবস ঐ হানী সাত ঘণ্টার সময়
আসিয়া ঐ ক্রী দুইবাকী বন্দ দেখিয়া
কিয়া আসন বন্দ গেল পুনর্বার বৈকা
ল পীত ঘণ্টার সময় তাহা তাহাতে
ঐ ক্রী দুইবাকী বন্দ দেখিয়া বাটীর খিট
কীত ঘাইয়া দেখিল যে খিটকী দুই
আর কলাটের নিকল ছড়ির হারা বৈকা
আছে। ইহা দেখিয়া তাহা না খুসিয়া
গরলহাটীতে পদ্মিনীর ভণিনীর নিকট
গিয়া সকল ব্যক্তি হইল।

পরে তাহার ভণিনী ঐ বন্দকে সন্নি
করিয়া আসিয়া বাটীর হার খুলিয়া
ঘরে ঘাইয়া দেখিল যে সে নিরানবতে
মৃত্যু পড়িয়া আছে ও গলা কাটিয়াছে
তাহাতে নিরানব রক্তে অধু হইয়া
ছে। এই বৃদ্ধ দেখিয়া ভণিনী খালাত
সমোচার দিলে খানার লোক আসিয়া
দেখিল যে তাহার শরীরের অঙ্গকীর
মায় নাই এবং তাহার বালিসের পাতে
এক চাউর পাইল তাহাতে এক মিলুক
খুসিয়া দেখিল যে মিলুকদের তাল। তা
হা ও তাহাতে মৃত্যুবান বস্তু কিছু নাই
কিন্তু পুতিবান লোকেরা আসিত যে তা
হা দুই পত আকাই পত টাকার সমুদ

ছিল। পরে তাহার ঘিরে আসিত
সময় তাহার ভণিনীকে জিজ্ঞাসা করিলে
সে করিল যদি আমার ভণিনীর বন কিছু
থাকিত তবে আমি পাইতাম যেহেতু
আমি ভিন্ন তাহার অন্য কেহই নাই
তবে ইহাৎক যে খুশ করিয়াছে ইহা কা
হারও পুতি আমার সম্বন্ধ নাই এবং
ইহার তাহারকে আমার কিছু আশংক
নাই। ইহা শুনিয়া বিচারকতা অনেক
তদারক করিয়া আসিল যে ঐ পদ্মিনীর
প্রপতি যে হুজুর সে পদ্মিনীর ভণিনী
রও প্রপতি ছিল কিন্তু পদ্মিনী অনেক
ইহাৎকই অধিক পুতি ছিল ইহাতে সে
হুজুর ও পদ্মিনীর ভণিনী ও হানী এই
তিন জনের প্রপতি সম্বন্ধ করিয়া সমরে
চলান করিয়াছে এখন আদালতে যে হয়
তাহা হইবেক।

মহাবান সিংহ ডাকাইত।

ঐ ডাকাইতের বিষয় প্রায় শুনা গেল
যে সে অনেক দিন অতর্কি পক্ষিমা ঘেঁপের
মধ্যে অনেক ঘোরাফাড়া করতেন সে
নিজে অতি সাহসী ও আশ্রম কীর্ত্তিক
করা ও তাহার সহিত ঐ ইকবিন্দ
নভাবি লোক ছিল। গত ফেব্রুয়ারি
মাসে পাটনা শহরের বৈদ্যনাথসিংহ
লোক এক মহাজনের এক লক্ষ টাকা এই
কেন লইয়াছিল।

ঐ মহাবান সিংহ টাকা রত্নাশ্রমের
কিন পাইয়া আসন বেরোয়াবিরহিত
ঐ টাকার পক্ষিমা প্রায়মুখ হইতে মু
গিষ্টের নিকট মোহ মরকিন্দ পঠাই
রাখিল। পরে আসন সেই মোকামে
গেল সেই স্থানে তাহার দুই ভাণ্ডা ই
যা লোকের প্রপতি কিন্তু সেই লো

কার খোঁসানখোঁস নাম এক ব্যক্তি তাহার
ঘিরে নিবারণ করিল। ইহাতে মহা
বানসিংহ আসন বেরোয়াবিরহিত এক
কোঠা করিল যে কোঠার এই সাহস
দেখ আমি কি করি। ইহা করিয়া বন্ধ
নইয়া ঐ খোঁসানখোঁসের পুতি এক গুলি
মাগিলে সে তখন মৃত্যু হইল। পরে সি
জুর তাহার সকল টাকা লইল। এবং
আশ্রমের চাকর মোল জন বেরোয়াবির
ও আসন বেরোয়াবিরদের মাগিয়া সেই
টাকার মোট দিয়া এবং মোকাম প্রায়
পূর শাশিরাহইতে অন্য বেরোয়াবির
গকে আসিয়া তাহারদের হারা আ
শ্রম করি পাশকী বহায়া আসন স্থানে
স্থল করিল। সেই কক্ষমিতি করাত সে
উপাভিলাই ইহা আসন তার বেরো
য়াবির লইয়া পুনর্বার ডাকাইত করিতে
বাহির হইল। এই সমোচার বেরো
য়াবির সাহসী ছিলেন কিন্তু সে ডাকাইত
কোন কোথায় গেল তাহা জানিলেন না।
তখন পুত্র স্থানে ও ঘাটে গোঁড়িকা
লোক রাখিলেন। অনন্তর তাহার
জিলাগাভীরা পুনর্বার করিল তাহাতে
এই জন গোঁড়িকা তাহারদের পক্ষিমা
গিয়া মোকাম নিরঘাটীতে তাহারদের
সহিত মিলিল।

পরে তখন পুত্রের এক গোঁড়িকা লোক
ঐ মহাবান সিংহকে করিল যে আমার
বত এক জন ডাকাইতের অনেক করি
তেজ। ইহাতে তাহার মোহনহইতে
হিটরা নিরঘাটীর এক মহাজনের দুই
দিন রাহিল পরে তাহাতে কিছু মিল
হইয়া বেরোয়াবির এক পত বিন জন ও আ
শ্রমের শাশিরাহি গ্রন জনকে দুই ভাণ্ডা
করিয়া তার্থ দল জন মোহ গিয়াতে
আশ্রম ঘরে পাঠাইল এবং গ্রন জন বেরো

সমাচার দর্পণ।

দ্বিবিদ্যায় সঙ্গী লইল তাহার বার জন
 কে কোম্পানির নিয়মাদি মত পোশাক
 পরাইল। কল্লিহীন ও আশলি মহারাজের
 মত পালনীও আয়োজন করিয়া চলিল।
 প্রথম যদি কেহ তিনশত ক্রুর যুগে যাই
 তেজ। তাহাত ঐ দ্বিবিদ্যার গুণের
 কারণে মহারাজ যাইতেছেন। এই ক
 ৭৭ নিরবধি হুঁমায় ভজ কলিহরের
 বাজীর দিকের ঐরাও তাহার যাইতেছিল
 তৎকালে এক গোয়াল। অত্র সাহেবকে
 সম্বোধন দিবায়াগ্নি অত্র সাহেব তাহার
 ক্ষেত্রে মল্লকে কতব করিয়া যোণ গাড়াতে
 পরাইলেন এক গাড়াতে তাহার যো
 ছিল সে মল্লকে দ্বিবিদ্য ক্রিয় করিলেন
 তাহারদের মধ্য কেলি ছিল অত পদা
 যাইছিল যোণ দিল পর তাহার ঐরা
 পাড়িল। যোণ দিল কলিহরাদিহতে গলিয়া
 যোণ এক লক্ষ গ্রিণ হাজার টাকার যো
 হর যাইতেছিল সে টাকার পক্ষাৎ ২ ম
 হাবান দিন-হর চাকি অত্র গোয়ালদা
 যাইতেছিল পর যোণ জাহানাবাদ সেই
 টোলা পর্যন্ত গেল সেই সম্বন্ধে মহারাজ
 দিন-হর শিল্প প্রভে সেই চাকি অত্র গা
 য়িল। যাইতেছিল তাহারদে ব্রাহ্ম পতি
 প্রভে।

ଆହୁରଥାଁ ।

১৬ আগস্ট (মোঃ ইমদাদুল হক) গিয়ে
একজন আপন পরিজনকে সহিত কলকাতা
করিয়া এক মাস আপন মাঝে মাঝে
দুখানায় করিয়াছিল তাহার আট দিন

পরে সেম্বা এই ফতেতেই ময়িলি পরে সে
 আনকার দারোগা। সন্যাসীর পাইয়া এই
 মৃত্যু ছাড়া পরিত্রাণ নাহি। কেহি মনে
 হৃদয়গার চানিত করিয়াছি শেষ প্রাণ
 যায় নাই।

৩ শের মোঃ একতলা গৃহে এক গীতা
রেক্স নী আশল পুঃবীর সহিত বিবাহ
করিয়া গলায় দ্বি দিয়া ময়িতাকে তাঁরা
কে মোঃ পুঃবীর দ্ব রোনা তাঁহার
গকে বহুমান চালান করিয়াছেন।

/ महनीय

গত শুভকাল যেকাল দেয়া নিগাহে
গঙ্গার তীরেতে এহ দ্বীপ মহাগামিনী
যাহে ।

ଏହି ଗୀତ ମୋହନାଦେ ଯୋଗ ଦ୍ଵିବେନ
ତେ ଏକ ଶ୍ରୀ ମହାୟନେ ବଢ଼ିଯାଉ ।

‘বৈবৈব মাতা’

১৭ তিনিস্তর তারিখের মানসরাজ
পত্রিকা সমাচার জানে সেই যে মানস
রাজের সত্যের আলোকের দীপ্তি দেখে
যে কোন্‌র মুখ হইয়াছে তাঁহার
প্রকৃত বাহ্যিক বৎসর। তাহাও বাক্য
হইয়া পিতৃর শঙ্কর করান সেইদে।
যে কৈ মানসরাজ পিতৃর মানস হইয়া
এক তাঁহার বাক্যই বৎসর।
যে কৈ মানস বাহ্যিক তাহা হইয়াছে

ସାକ୍ଷୀମାନଙ୍କ ଦାବୀ ।

| বিবরণ | কোম | অর্থ | মোট |
|--------------|-----|------|------|
| নুগারি | ১ | ৩।০ | ৩।০ |
| ভেড়গা ভেড় | ১ | ১০ | ১০ |
| গাছ মরিচ | ১ | ৬ | ৬।০ |
| মারিকম ভেড় | ১ | ১৪ | ১৪ |
| কুলা কাঁচাকা | ১ | ০ | ০ |
| আলা রসগুলা | ১ | ১।০ | ১।০ |
| পাটনাই কাঁচা | ১ | ২ | ২।০ |
| চাম্পাটনাই | ১ | ১।১০ | ১।১০ |
| পাছাটি উষম | ১ | ১।১/ | ১।১০ |
| পাছাটি মধ্যম | ১ | ১.৬ | ১।১০ |
| মুগী উষম | ১ | ১০০ | ১০০ |
| মুগী মধ্যম | ১ | ০ | ০ |
| খাদ্যাম | ১ | ০ | ০ |
| মুগা গোম | ১ | ১। | ১।০ |
| পাটনাই মুগী | ১ | ১০০ | ১০০ |
| অড়হর আলি | ১ | ১।১/ | ১।১০ |
| উষমগাড়া দূত | ১ | ১.০ | ১.০ |
| মধ্যম দূত | ১ | ১০ | ১০ |
| ভেড়া দূত | ১ | ১৭ | ১৭ |
| মধ্যম ভেড়া | ১ | ১০।। | ১০।। |
| মৌমবাড়ী | ১ | ০। | ০। |
| মিছরি উষম | ১ | ১০ | ১০ |
| মিছরি মধ্যম | ১ | ১০ | ১০ |
| মৌরি উষম | ১ | ০ | ০ |
| মধ্যম | ১ | ০।০ | ০।০ |
| চিনি কাঁচা | ১ | ১০ | ১০ |
| মধ্যম | ১ | ৮ | ৮ |
| খার চিনি | ১ | ০।০ | ০।০ |
| ভেড়ম | ১ | ৬ | ৬ |
| কাঁচা | ১ | ৩।। | ৩।। |
| চন্দন | ১ | ১১ | ১১ |

বাহারের চৌদ্দ নত মাতালই মিন্দুক
ও কানীর তিন নত জেলি মিন্দুক বিস্ম
হইল। বাহারের আখ্যায়ি দুই হাজার
চারি নত পঁয়ত্রিশ টাকা মিন্দুক। এহ

সমীচারণপত্র

১৩ জুন দুই হাজার তিন শত
১৩ টানা। তাহার মধ্যে তিন শত
দুই আশী বন্দোবস্তসমার প্রত্নীয়
স্বাধীনতার রাশিয়া গেল। এতখানি
রকম অশিক্ষিত যোগ্যতার শত তেইশ সি
দ্ধ বিদ্যুৎ হইল তাহার মূল্য ত্রিশটি
লক্ষ ওলন্দাজ হাজার দীর্ঘ শত তিন
টানা।

বিব্রী।

বিব্রীহইতে সম্রাটের আনিয়ার যে
উপস্থাপন এই বৎসর শীত ঋতু পূর্ব
হইয়াছে যে রাষ্ট্রপালে তিন বর্ষ
স্বাধীন দিলেও শীত দিব্যায় করা যায় না।
যদি এক দিন রেং দা হয় তাহা লোকের
অতঃকাল পায়। সেখানেকার জোতি
বিনোদক হইবে যত দিনের কালে দৃষ্টি
অবশ্য হইবেক।

জুয়িক্স।

গত রবিবার সাত লক্ষ ঘণ্টা রাষ্ট্র
সময় জুয়িক্স হইয়াছে অধিক রাষ্ট্র
পুণ্ড্র অলেকের ওলন্দাজ হয় নাই এবং
বিব্রী অলেক লোকের ওলন্দাজ হইয়াছে।

পত্রিকা।

প্রায়শ্চুতর পুণ্ড্র সাহেবের (যে
কক্ষীয় পাঠশালা যেকোন কলিকাতার
বহরাজের আরে সেখানে বালকেরদের
পত্রিকা বৎসর হইয়া যতকাল গত ১০
দিনের তারিখে সেখানে বালকের
হয় পত্রিকা হইয়াছে তাহাতে অলেক
জানিবার ইংল্যান্ড সাহেব ও অলেক
বিবি লোক আনিয়ারসেন তাহাতে
ইংরেজী ব্যাকরণ শীত ও লিখা ও

বালিকা লিখা পত্রিকার যে পত্রিকা হইল
তাহাতে সবলে তৃত্ব হইলেন।

সহস্রাব্দ।

পত্রিকা গায়ের ওলন্দাজ বন্দোবস্তসমার
নামে এক জন কলীন কলীন তাহার বহর
কম আলুয়ান ঘাট বৎসর তিন স্থানে
এটির বিবাহ করিয়াছিলেন তাহাতে
বড় গুম্বা এক বিবাহ করিয়া সেইখানে
বহরসময়ে বাস করিতেন। পরে রোগী
হইয়াই মৃত্যুবরণ হইলে তাহার
আত্মীয় লোকেরা গন্ধারীর চাঁদর
ঘাটে তাহারে আনিয় এক জন কলীন
প্রিয় বৎসরবৎসর তাহার এক জন ও পুত্র
সহ আনিয়ার। পরে ১৫ পৌষ
রবিবার সেই বন্দোবস্তসমার মৃত্যু
হইল। ইহকালে সেই দিবসে ১১ দুই হাজার
মধ্যে এক হাজার দ্বিগুণ ওপস্থিত হইয়াছে
সেই মৃত্যুর তিন দিবস রাশিয়া চতুর্থ
দিবস ১০ পৌষ রবিবার তাহারে ঘাট
করিল ১১ দুই হাজার সহিত সহস্রাব্দ
করিল।

ওলাডা।

সম্রাটের আনিয়ার যে নামলকাঠি
হইতে মোং হুয়রকায়ে এক কলীন সি
জাহী ঘাইতেছিল পুণ্ড্র হুয়র। পোলের
দিবসে তাহার আশী জন সহস্রাব্দ ওলা
ডা রোহিয়ারগর।

মালিকা ওপদী।

গত সপ্তাহে সম্রাটের (যে রাষ্ট্রপাল) নামে
যে মোং মালিকা ওপদী নামেই লো
কেরা এক জন সাহেবের দ্বিগুণে মরি
গার। তাহার দ্বিগুণ সম্রাটের ওপদ

পাওয়া গেল যে সে মালিকা ওপদী নামে
নিয়ারদের আদিকার। সেখানে মালিকা
লোকেরা যে এই কলীন করিয়াছে সে
নিয়ারদের পত্রিকা ব্যক্তিকের করে নাই
যেহতুক অন্য। দেশীয় লোকেরা সেখানে
সেখানি বালিকাওয়ার মুদ্রার লভ করে
ইহাতে মালিকারদের প্রার্থী আনিয়ার
ওপদী তাহার মালিকা লোকেরদের
হারা এই কলীন করিয়াছে সেখানে
সে কলিকাতার এক তাহারের কলীন
লোকের সাহেব ও অন্য এটির জন সা
হেব মূল হইল ও এটির জন অশ্বশিস
সাহেব ও মালিকার মালিকা ইচ্ছা সাহেব
ও ওলন্দাজ সাহেব ইংল্যান্ডে দ্বিগুণ
কলিনারীর অংশী ও আনিয়ার জাহ
জের এক সাহেব ও কলীন মালিকার
আশী জন ও অন্য দেশীয় মালিকার
অন্য মূল হইয়াছে কলিন ইহা মালিকার
কলিনারী দেশীয় এক জন ও মালিকা
জীবুত দ্বিগুণ সাহেব সে দেশে আসে
দিন আসেন ও ওলন্দাজ লোকেরদের
সহিত তাহার মধ্যে গুটি হইয়াছে ও
পত্রিকা বিব্রী আসে ওপদী সে দিবস
তিন ও গুম্বাওয়ার মাঝে পলিয়া পুণ্ড্র
বাইতিলেন। তাহার অংশী মালিকা ই
চ্ছা সাহেবের মূলক হুয়র করিয়া এক
শের ওলন্দাজ ওলাডা মালিকার
করিয়া দ্বিগুণ ও অন্য মৃত সাহেবের
যের শীত গুটিতে ওলাডা রাষ্ট্র। দ্বিগুণ
হইল।

মূল।

মোং কলিনারের পুণ্ড্র রবিবার
রবি চৌধুরী অম্বাভারী গোলকটীয়া
যে আরে এবং সেই অলেক মোং কল
রবিবার পুণ্ড্র রাষ্ট্রের ওলাডা আর

সমীচারণ দর্পণ।

ভাংতে যেসময়ানর আলিফ অমীলার
 তিরাস ছিল। সেই অমীতে চৌবুটার
 ভায়া বীনা কুশিয়ার ছিল। পরে সে বীনা সু
 পুর হইল। এই পুকার। বীনা কুশিয়া আ
 পন সরহদে আসিলে পরে ভুয়ারহরের
 প্রমুত ব'বুয়া এই সমীচারণ কুশিয়া আপন
 অধিকারস্থ হতক লোক লইয়া সেই বী
 না ভায়া আপন সরহদে ফালিলেন।
 এই সমীচারণ চৌবুটার কুশিয়া পাঁচ সাত
 দিন পরে আপন অধিকারস্থ লোক ও আ
 পন চাকর লোক পাঠাইয়া বীনা ভায়া
 আসিলেন। ভায়াতে ভ'হার। মুজাহেদ
 হইল অতিপূর মারিগাট হইল। শুনা
 ঘাইতেছে যে ভায়াতে এক জন লোক
 মুন হইয়াছে ও দুই চারি জন অমী
 হইয়াছে। এই মোকদ্দমা তিনা চৌবু
 তারপার কাছাতে চালাই হইয়াছে
 অবশেষে কি হয় জানা যায় নাই।

লীল।

আটার পত ব'ন মাল তরবি তরা
 পর্যন্ত এই ব'ন ব'নসরের মাঝা লীল এত
 কম ও ব'নসর কোন ব'নসর হয় নাই যে
 মন গাও ব'নসর হইয়াছে। ব'ন ভায়া
 জব্বির বায়া বিসুর হইতেছে। গাও
 ব'নসরের এই সময়ে ব'ন লীল আমহালী
 হইয়াছিল এই ব'নসর সেই সময়ে ভায়া
 হইতে ব্রিণ হাজার মেল লীল কম আয়া
 বানী হইয়াছে।

আম্ফা বুড়তা।

কতক দিন হইল মোকাম কলিকাতার
 কত হাজারের এক জন মহাজন ব'নসর
 প্রমুত হইল সাহেবের নিকটে গিয়া
 কহিল যে আমাকে কতক অল্প দেও যে

আমার মুজার খেলী বিবাহনো ঘাট
 গায়েতে পঞ্চাশক ভায়া ভায়া ভায়া
 দেয় এবং ভায়াবকের কারণ ভায়া
 ভায়াভলক লোক মনে দেও। ইহাতে
 এই সাহেবের অল্প অল্প ভায়া এই খে
 লী প্রাইল ও মহাজনকে দিল। মহাজন
 এই খেলী মুজার ভায়া মাঝে কেবল কত
 ক সিনার কুত। গুলি ও মটর দেখিল।
 ভায়াব বুড়তা শুন। এক জন গুলি
 দেশীয় লোক এই মহাজনের নিকটে
 এক খেলী মুজার বন্ধক রাখিয়া কতক টাকা
 কর্ত করিয়াছিল। কিছু দিন পরে এই গুলি
 লোক ভায়াব নিকটে আসিয়া কহিল যে
 আমায় টাকা দেওনের এখন যোক্ত হইল
 না অতএব এই মুজার খেলী দেও ভায়া
 বিসুর করিয়া ভায়াব কর্ত পোদি করি।
 ইহাতে এই মহাজন স্বীকৃত হইয়া বন্ধকের
 মুজা সময়ে খেলী গুলি লোককে দিল
 এবং বিসুর অধিবাসনপুত্র আপন ভ্রাত
 ভলক লোক ভায়াব সহিত দিল। এই
 গুলি লোক আপন হাটী ও গোল ও পু
 কার এক খেলী নিম্নাও দিলে ও মটর
 পুর করিয়া আপন ঘরে পুর রাখিয়াছিল
 পরে আমন মুজার খেলী ঘরে রাখিয়া
 এই খিয়া মুজার খেলী লইয়া গেল।
 পথ গিয়া এই মহাজনের লোককে কহিল
 যে এই পথে বিসুর করি ব'ন ওপারে গিয়া
 বিসুর করি। ইহা কহিয়া এক লোকায়
 চড়িল ও বিসুর দূরে গিয়া এই মহাজনের
 লোককে কহিল যে ভায়াব মুলীর
 আমাতে এত অধিবাসন যে এক জনকে
 আমায় সহিত বিসুরে এই ব'ন রাখিয়া
 বিসুরেতে খিয়া রাগা পুকার করিয়া
 এই খিয়া খেলী অল্প জেলিয়া দিল।

সেই খেলী এই পুকার এই মহাজন
 ভায়াব সকল শর্তা আসিল এবং ভা

হার নাহে মুজার কাটে লালিন করিব
 এই মত শুনা ঘাইতেছে।

ভায়াবিত।

ইংলণ্ডের এক ন্যায়ের মণিণ জন তা
 কাইত একত্ব হইয়া আপন। মুখে কালি
 মাখিয়া ও কাল। পতহার। অর্ধেক মুখ
 চিয়া বেল। দুই পুর কাল এক মাই
 বের বটীতে গিয়া মদর মরবা। ভায়া
 বটী মাঝে পুর্বে করিল। ভায়াতে এক
 জন বানী ঘোড়ার। প্রথম ঘাইয়া মোর
 করিতে লাগিল। ভায়া দেখিয়া ভায়া
 ভেয়া এই মনোকে ইয়াকিয়া কহিল যে
 মোর বরিন না যদি মোর কহিতি তব
 গুলি করিয়া ভোকে মুন করিব ইহা ক
 হিয়া বন্ধক ভায়া। ভায়াতে বানী ভায়া
 নিরস্ত হইল পরে কোঁরা মাঝে সাহেবের
 নিকটে যাওয়া নিম্নকরে চবি চাইল।
 সাহেব চবি দিতে বিসুর কহিল ভায়া
 ভায়া নিম্নক ভায়াব কিছু ভায়াতে
 কিছুই পাইল না। পরে সাহেবকে ব্রি
 গা এক ঘড়া ও এক পাওয়া ও নগার
 ব্রিণ টাকা ও খায়া বস্তু কিছু লইল।
 অলা এক জলিক শয়ল করিয়াছিল ভা
 হার গায়ের বহাদি জেলিল ও নিম্নক
 ভায়াতে লাগিল। পরে সে বানী নিম্ন
 কের চবি দিল সে নিম্নক মুজার ভায়া
 তে কেবল পুকার অটটা টাকা পাইল
 ভায়া লইয়া এই সকল খায়া বস্তু খায়া
 লাগিল। পরে দুই জন বন্ধক হস্ত লইয়া
 ও চারি জনকর্তার হস্তে করিয়া সাহেবকে
 ইয়াকিতে লাগিল ও কহিল যে যদি ভু
 কাহারেও ভায়া তব ভায়াতে খায়া
 দিব। পরে ভায়াব অকৃত্যে ভায়া
 হইয়া চলিয়া গেল।

সম্রাটের দর্পণ।

सुप्रसन्नः ।

যুদ্ধ। দেশের নৃত্যন রাজ্য শত্রু দেশের
 রাজ্যের সহিত যুদ্ধ করিতে লিপ্ত
 থাকে। ১৮৭৩-৭৪ সালে যুদ্ধ আরম্ভের
 পূর্বেই তাহার নানা প্রচেষ্টা করিতে
 ছিলেন। যুদ্ধের সময়ও তাঁহার
 মন ভাঙিয়া পড়িল না। তিনি
 লোকের অশান্তি দূর করিতে
 চেষ্টা করিয়াছিলেন। তাঁহার
 রাজ্যের মধ্যে যুদ্ধের সময়ও
 তাঁহার মন ভাঙিয়া পড়িল না।

संन्यासः ।

মহাশয় বিস্ময়িত। নিজ সামান্য
সময়ে আঁদ নগর শোভার নিমিত্ত
এক দিন আঁজা করিলেন যে যে বাড়ির
এক কোঠির নল সন্নতি হয় সে আয়ার
ব্রাহ্মণী নগর বাস করিতে পারিবেক
না। ই আঁজানোর এক কোঠির নল
সন্নতি লোকেরা অন্যত্র গিয়া বসতি
করিতে থাকিল। ই নগর এক ভগ্ন
গৃহ মহাকবি এক ব্রাহ্মণ বাস করি
লেন তিনি প্রত্য সন্ধ্যা যে অন্যত্র
গিয়া নৃত্য গৃহ করিয়া বাস করতেন
অসুখ্য। ই ব্রাহ্মণের প্রব্রিধি কথন
হাটখুয়েরা বাই প্রব্রজনা করিতে

পাণিল: তাহাতে ঐ বুদ্ধিমান অত্যন্ত উদ্ভিগ্ন
হইলেন ও ওপায়ান্তর না দেখিয়া আপন
এক শ্রোত্র রচনা করিয়া মহারাাজ বিষ্ণু
মাহিত্যের নিকটে কোন পুস্তকে গিয়া ঐ
শ্রোত্র পাঠ করিলেন।

বাট্যাং বাট্যাংকোটি, কুশিঠর তরৈ
মলিকানাং কোটি, কোটিগুণ্ণীনাং সম
নৃনটলে হুকোটি, কব্যাং : পায়ে
বিস্কোটকোটি, কটিতবিলসংকপেত গুহি
কোটিভো, বটিকোটিখরো হুং, তমসি বস
কংগ পদ্মনাথ রাজন ।।

ইহার অর্থ এই। যে মেহরানকার অন্যান্য
বাগীচে এক কে ডি (কোঁটার বৃক্ষ আছে
এবং) আমাদের কুশিত জোলা পাশে
এক কে ডি মফিকা বাস করে ও আমাদের
গিহের গুল্ল ভাগে এক কে ডি জেক শব্দ
করে এবং আমাদের কোশে এক কে ডি
ডুলু আছে ও আমাদের শরীরে এক কে
ডি বিকোটক আছে এবং আমাদের কো
মরের জিম বস্তু এক কে ডি গুল্লি আছে।
অতএব যে মেহরানকার কার্ণবকার কার্ণানু
সময় এক কে ডির লানসম্প্রদিক ব্যক্তির
কল্যাণ ঘাইতে হয়, দেখে আশীর্বাদ এই কব
জয় কোঁটার কর্ণবত ডুখান কেন আ
মাকে অশান্ত ঘাইতে আঁকা করিতে

অতিশয় গণগোহক মহাদ্রাও বিক্রয়
দিতা এই বাহিনীর দারিদ্র্য ও বহির্ভাষিক
মেথিয়া দয়া ও মল্লোৎসাহ হইলেন ও তাঁ
হাকে কোটা টাকার সমস্ত পুমান করিয়া
নিজ আত্মা হুণ মেই রাজধানীতেই
রাখিলেন।

ਦੀਤੀ: ਭੀੜ !

[illegible][illegible]

সমীচারণ দর্পণ !

আজ্ঞাবাহী।

গত সোমবার যোকাইয় কলিকাতাতে
এক জন মুসলিম রাহি নামে পোতু গিণের
ও মুতারিয়ার নাম এক ব্যক্তি হিন্দুর
মরদে কয়লাচীর পাওয়া গেল। তাহার
বিবরণ এই। মুসলিম রাহি নামে ছিরা
দ্বী আম্রভাণ্ডার গণিতে এক খাভো
ঘরের অভ্যন্তর স্থানল পাওয়া গেল।
চৌহান-ন অধ্যক্ষ সাধারণ ঘরে তাহার
আবলগে সাক্ষ্যকারী জালা গেল যে
সেই ঘরে কীলনের দ্বার ছিল এবং সে
কীল ঘরের মধ্যে বীজা ছিল যে লোক
মুখ্য সে ঘরে গেল সে লোক সে ঘর
পের হইত। ঘরে প্রবিষ্ট হইয়া তা
হা ঘরে গেল ও বাহিরে প্রকাশ করিল।
পরে বিচারকতা সাংঘবেরা যো-
কামুদ্রমতে বালাখানার গণিতে মুসলিম
কায়দারের বাড়িতে গিয়া উহা হক
গিয়া দেখিলেন যে ঘরের মধ্যে মুসলিম
দান পড়িয়া আছে এবং তাহার গালা
তে এক পেট দ্বি আক্রে ও ঘরের আভা
তেও এক পেট দ্বি আক্রে ইহাতে বোধ
হইল যে গালায় দ্বি গিয়া ময়দার
কিছু দ্বি অশক্ত সে কারন মরদে মৃত
শরীর ভাঙ্গি হইয়া দ্বি ভিত্তিয়া পড়িয়াছে
এইহা অনেক বিষয়ে আজ্ঞাবাহী প্রি
হইল।

গত ২০-সর বাহিন্যের তত্ত্ব।

একজন আর অধিক ও হিসেবের তারি
কলকাতা গত বারের মরদে যোকাইয় কল
কাতাতে ২০-সর দুই কোর আটার
লক্ষ একত্রি হাজার আট শত একত্রি
চৌকার কণা এই-১০০০ লক্ষ চতু
হাজার শত শত পঞ্চাশ চৌকার সোনা।

তুলনা। দুই কোর চৌকার লক্ষ সাত
হাজার চারি শত ত্রিশ চৌকা অম
দানি হইয়াছে।

যোকাইয় কলিকাতাহইতে এই-১০০০
গত ২০-সর রক্ত হইয়াছে।

তুলনা চৌকারি হাজার সাত শত
চতুশ পাট।

চিনি তিন লক্ষ ত্রিশাশী হাজার
দুই শত চতুশ যেন বাহিরে গিয়াছে।
সোরা দুই লক্ষ চতুশ হাজার যেন।

আজ্ঞা তিন হাজার আট শত ত্রিশ
নিম্বক।

তুলনা চারি লক্ষ চৌকারি হাজার
এক শত চতুশ বাজা। পুতাকা বাজাতে
প্রায় দুই যেন।

আদা বারো হাজার দুই শত শত
যেন।

কালু চতুশ লক্ষ একাশী হাজার থল।
শেখার জয় হাজার চার শত বিলানই
যেন।

লীল চতুশ হাজার চারি শত দশ
যেন।

এই তারি বস্তু দ্বি আর এই-১০০
বস্তুর রক্তাশী।

ভেরতাই তিন শত হাজার এক শত
ত্রিশ যেন।

১০০০ শীল হাজার আট শত চতু
তরি যেন।

তৈতুন পাট শত বিলাসী যেন।

কুইল তুল দুই হাজার এক শত
যেন।

কাম্বাক মস্তর শত ত্রিশ যেন।

গাচ ঘড়ি তিন শত একই যেন।
কতিবস্ত এক শত এক যেন।
এক দুই হাজার এক শত চৌশ

যোকা।

যোকা চারি হাজার চার শত
দুই যেন।

মস্তর নয় শত সাত যেন।
কপূর দুই শত আট যেন।

হিন্দু এক শত যেন যেন।
ইজরা একত্রিশ যেন।

লবঙ্গ এক শত ত্রিশাশী যেন।
আবলুস কাঞ্চ সাত শত চতু যেন।

কাঞ্জা দুই হাজার আট শত চৌশ
যেন।

চরবি নয় শত চৌশ যেন।
গাছ বিরাট এক শত তেতাল্লিশ

যেন।

মেঘদানা চারি হাজার চারি শত
ত্রিশ যেন।

বকর কাঞ্চ চার শত পঞ্চাশ যেন।
কাম্বাক তিন দুই শত ত্রিশ যেন।

লীল চৌশ চারি হাজার তিন
শত চৌশ যেন।

শীল আট শত সাত যেন।
মহিষের শর দুই লক্ষ আটাইন হা

জার তিন শত পঞ্চাশ হা।
গোষ্ঠা সাত হাজার চারি শত সাত

বস্তু যেন।
চৌশাশী পাট হাজার দুই শত দশ

যেন।
বেত জয় হাজার বাট।

অক্সা-১০০০।

হিন্দু কোপা নগরে গিয়া ঘরের মধ্যে
একর রেল বেরা বারো চতুর্ভুজ ছিল
তাতে অনেক লোক বসিয়াছিল অক
ক্স-১০০০ বারো চতুর্ভুজ পড়া
তে অনেক লোক লিখে চাপা পড়িল তা
হার মধ্যে কলিম জন ময়দার আর দুই
শত সাতাইনই জন আঘাত হইয়াছে।

সম্মানস্বরূপ।

আমেরিকা দেশ।

আমেরিকা দেশে এক সাহেব দুই শত টাকার নোট ডাকাইতাবার কারণ আশ্রয় কল্যাতে লিপ্ত হইয়া এক শহরে পাঠাইয়া ছিল সে নী নোট লইয়া আসন ঘোড়ায় চড়িয়া বাঁকি ঘরের গিয়া দেখিল যে বাঁকি বন্ধ হইয়াছে। পরে অন্য ঘোড়ানে ডাকাইতে চড়া করিল কিন্তু টাকা না পাইয়া নোট ফিরাইয়া লইয়া আসন ঘরে আসিতে লাগিল। পথিমধ্যে অন্য এক ঘোড়াসওয়ার সাহেবের সহিত সাক্ষাৎ হইয়া শিষ্টাচারপূর্বক লাক্ষ্যপূর্বক সম্ভাষ হইলে ঐ নী ডাহাক মল্লোহ জ্ঞান করিয়া তাহার সহিত এক কোণপর্জ এক পথে একত্র গেল। পরে এক গোপনীয় স্থানে ওপকিত হইলে ঐ সাহেব স্বীকৃত করিল যে উল্লিখিত স্থানে দুই শত টাকার নোট আর তাহা আশ্রিতে দেহ নতুবা তাহারকে মৃত করিব। ইহা করিয়া বন্দুক হস্তে লইলে স্বী ভীতা হইয়া ঐ নোট বা ফির করিয়া তাহারকে দিতেকে এই সময় ঘৈল। সে নোট সাহেবের হস্তে না পড়িয়া বাতানে কতক দূর ডুতিয়া গিয়া নাচে পড়িল। সাহেব ঘোড়াহইতে না থিরা নোট লইতে গৌলে স্বী আসন ঘোড়া ছুটিয়া দিল সাহেবের ঘোড়া তাহার পক্ষাৎ হেঁড়িতে লাগিল। তাহাতে সাহেব অতিশয় ব্যস্ত হইয়া এক গুলি মারিল। সে গুলি তাহারদের শরীরে না লাগিয়া এক পাশে গিয়া গেল কিন্তু শব্দ শুনিয়া দুই হোড়াই অতি বেগে ছালাল। পরে স্বী আসন ঘরে আসিয়া ঐ দুই সাহেবের কোল হইয়া। তাই মারি মারি মারি কতক দূর হইয়া নোট না পড়িয়া তাহার টাকার এককোণ মতে থাকা পাইল।

ডাকাইতি।

একদা দেশে এক সাহেবের বাড়ীতে বসে গৌলের জন ডাকাইত অনুমান গণির বড়ী রশ্মির সম্মুখে আসিয়া ধানঘরের দ্বার ডাকিয়া ঘরের মধ্যে প্রবেশ হইল। সাহেব তাহার নিকটে আসা ঘরে থাকিয়া ঐ বিষয় জামিতে পাইয়া আসন বিচলিত হইতে উঠিয়া অস্ত্র অঙ্গুল করিতে লাগিল। সে ঘরে কোন অস্ত্র না পাইয়া মনে বিচলণ করিল যে ধানঘরে যে অস্ত্র ওপরে ছুটি আর তাহা আসি। পরে সাহেব ঘোর অস্ত্রের মধ্য গমন করিয়া ঐ ধানঘরহইতে ছুটি লইয়া আসন ঘরে আইল ও মতক হইয়া ডাকাইতেরদের স্বর দেখিতে লাগিল। পরে এক জন ডাকাইত ধানঘরহইতে সাহেবের ঘরে আসিয়া সাহেব তাহার পেটে ছুটি মারিল তাহাতে সে আঘাত হইয়া পক্ষাৎ ঘিয়া গিয়া পথে আর এক জন আইল তাহার এক ঐ রূপ মারিল সেও গিয়া গৌলে ডাকাইতের সাহেবের ঘরে যাওনে ফাঁদ হইয়া কহিল যে ঘরের দ্বারহইতে গুলি মারা গড়িত। পরে এক ডাকাইত বন্দুক লইয়া এক ঘরে গিয়া গুলি মারি তে ওঘোণে করিলে সাহেব আশ্রিত এক জন ছিল যে গুলি তাহার শরীরে না লাগিয়া বন্ধের নিকটে গিয়া গিয়া বেগে ছালাল লাগিল। পরে সাহেব অস্ত্রবেগে মারিয়া সেই ডাকাইতের হাতে দুই গুলি মারি ছুটি মারিল। তাহাতে সে আঘাত হইয়া অস্ত্র ডাকাইতেরদের নিকটে গেল। তখন সকল ডাকাইতের একত্র হইয়া সাহেবের ঘরের মধ্যে গৌলে সাহেব আসন মৃত্যু লিপ্ত করিল কিন্তু তাহার জীত না হইয়া চতুর্দিক ডাকাইতের ছুটি মারিল। তাহাতে ঐ ডাকাই

ইত তাহার মস্তকে এক আঘাত করিল। তাহাতে সাহেব সেই ডাকাইতকে পূর্ণ দ্বার ছুটি মারিতে অধিক শক্ত আসন হইয়া দেখিল যে ডাকাইতের শরীর ভেদ হইয়া ছুটির অস্ত্রাঙ্গা মুক্তিতে লাগিয়া বন্ধ হইয়া গিয়াছে এবং ভূমি রক্তে পিল্লা হইয়াছে। পরে সাহেব অন্য এক ডাকাইতের সহিত মস্তক করিতে ওত ঘেঁষি মুক্তিতে পড়িল। এই সময়ে সাহেব আসন ছুটির অস্ত্রাঙ্গা মুক্তিতে মোড়া করিতে ওত হইলে তাহার সহিত যে যুদ্ধ করিতেছিল সে তাহারে মারিল। ইহাতে তাহার হাত দিয়া যে সাহেবের শরীর শক্ত করণ বন্ধ ছিল তাহার কতক শিথিল হইল। ইত্যবসানে সাহেব ভয়ে আসন পাইয়া গুলি এক ডাকাইতের হস্তে এক ডাকাইতের পাইল। ইহা দেখিয়া ডাকাইতেরা অতিশয় ভীত হইয়া আশ্রিতাঙ্গিণের মৃত শরীর দিকে ছুটিয়া লইতে আরম্ভ করিল। তখন সাহেব বহু হইতে বাহির হইয়া অন্য এক স্থানে থাকিল। পরে ডাকাইতেরা বাহির হইয়া গৌলে আসন চাকর লোকের সহিতকে ডাকিয়া ঘর সাবধান করিল।

শ্রীর পুমান।

অতীত দেশে এক কতিক আসন ওপ পড়িতে কোন ঘোড়ের করণ বন্ধ করিয়া এক কুণ্ডে লিপ্ত করিয়াছিল পরে তাহার আশ্রয় করিয়া ঐ কুণ্ড মৃত শরীর পাওয়া গেল। তাহার শরীরের মস্তক মতে দেখিল তাহাতে তাহার হস্তে এক বুদ্ধের কান্ড পাওয়া গেল সে কান্ড তাহার উপর হইতে অস্ত্রাঙ্গা লাগিয়া ইল টিক মিলিল। এই পুমান তাহার জীবা হইয়াছে।

ଅଧ୍ୟାପକ ଦର୍ଶନ ।

- ଡୋର +

লগন নগরে এই চোর এক নাইবেইক
 মারপিট করিয়া টাকা নইয়ে। এক অতি
 ঘিনালাতে চলিয়া গেল। তাহা যে
 দিয়া তথাকার চৌকীদার সেই চোরকেই
 হিহিতে অতিঘিনালাতে লাইতেছিল। পথ
 দিয়া আরা দিল ত্রিশ জন চোর। এক
 ইহা পনের ক্রিয় যুদ্ধ করিতেছে তা
 হার কারণ এই যে লোকেরা যুদ্ধ দর্শনে
 যথ চিত্ত হইলে অন্যদিকে তাহাদের
 গাফিলি করিয়া টাকা নইয়ে। পরে চৌ
 কীদার তাহারদের যুদ্ধ নিবারণ কর্তা হার
 যের মধ্যবর্তী হইলে এক অক্ষ অজ্ঞান
 বে চৌকীদারকে ধুমা মারিয়া অতিঘিনা
 লাতে পলাইল। পরে চৌকীদার পক্ষাৎ
 এক ব্যক্তর মর্যে গেলেন এই মকল চৌররা
 আনিয়া এক ব্যক্তর মর্যে যে ঘাড়া হস্তে
 পাইল তাহার দ্বারা চৌকীদারকে মারিতে
 লাগিল এক জন শিশুর (বোলদ্বারা
 যন্তর মারিল তাহাতে চৌকীদারের য
 ন্তর ফাটিয়া রক্ত স্রোত বহিতে লাগিল
 কিছুদূর গেরে সে মৃত্যু হুলা ইহা পাইল।
 পরে এক চোর আনয়ন হইলে চৌকীদার
 হিহিতে অন্য চৌকীদারকে এই সমাচার
 করিল সেই চৌকীদার তৎক্ষণাৎ পদেই
 লোক নইয়া তাহারদিকে বহিবার কা
 রন সে স্থানে গেল কিন্তু তখন সকলে
 পলাইয়াছে কাহারও হিহিতে পাইল না।
 তৎক্ষণাৎ সে মকল চৌরর নাম লিখিয়া
 ইহা দিতে এই তাহারদিকে বহিবার
 কারণ আগুন ইহা দিতে সে চৌকীদার
 মৃত্যু হইয়াছিল তাহারক প্রাণী তা

কণ্ঠের দ্বারে লইয়া গেল কিন্তু তাহার
অবিল মংগল।

ইং-প্রাণ

ইংল্যান্ড হইতে সম্রাটের আশ্রিত্যে
যে ফ্রান্স দেশে ইংল্যান্ডের বাদশাহের
জ্যেষ্ঠ ভ্রাতার পত্নীর পরলোক গুণ্টি হই
যাচ্ছে।

ਅੰਤਰਰਾਸ਼ਟਰੀ ਭੈੜੀ ਗੱਲਾਂ ਨੂੰ ਫਿਰਾਕੇ ਵਿਚ ਰੱਖੋ ।

पुरै मयांतरा येअत्ता रिगोळ येअई
 मुळ हे-प्रायेर बावनाई आनिळ यांम
 राजाकडे वीठन करिबेत। बिण्डु यान
 मयांतरा अयात्ता गिण येअईपुळ आन
 नि आनिळ अहीन शोकरेद्विरे निमळे म
 ईअन राजागिरीयेन येअन राजाकडे
 वीठन करिबे मां यान कर्ण हावेर तां
 वीर करिया मईअ मयांतरा येअया यारि
 वेर।

नूतन मौखिका :

কষ্টপ্রপ্লব হইতে নবীতে সমাপ্ত
এক সীলনা হইয়াছে এই শবীর ভদ্রায় শারীরে
দুই বৃহৎ স্তম্ভ করিয়া তাহার ওপর
সৌর জিহ্মের দ্বারা এই জিহ্মের ওপর
কাজের তত্ত্বা দিয়া সুকল রশ্মির মত করিয়া
হইতে তাহার নীচে দিয়া সৌর এ জাহা
জানুভূতি মিলানামের করে ও গুণের দ্বারা
গীর্জা বোকা মন্থনশুভি শিতপ্রাভ
করে।

दांजान्न उ०००

| ক্রমিক | বিবরণ | মোট | অর্থ | মোট |
|--------|---------------|-----|------|-----|
| ১ | পানি | ১ | ০।০ | ০।০ |
| ২ | ডেউকা টেল | ১ | ১০ | ১০ |
| ৩ | গাছ রস | ১ | ০ | ০।০ |
| ৪ | বাগিচা টেল | ১ | ১০। | ১০ |
| ৫ | জুলা কাছাকা | ১ | ০ | ০ |
| ৬ | কাঁচা কুপার | ১ | ১।০ | ১।০ |
| ৭ | পানি আই | ১ | ১ | ১।০ |
| ৮ | চালা শাটাই | ১ | ১।০ | ১।০ |
| ৯ | পাছি উত্তর | ১ | ১।০ | ১।০ |
| ১০ | পাছি মধ্য | ১ | ১।০ | ১।০ |
| ১১ | মুণী উত্তর | ১ | ১।০ | ১।০ |
| ১২ | মুণী মধ্য | ১ | ০ | ০ |
| ১৩ | বালার | ১ | ০ | ০ |
| ১৪ | পানি গাছ | ১ | ১।০ | ১।০ |
| ১৫ | পাটাই হুট | ১ | ১।০ | ১।০ |
| ১৬ | অকর ডালি | ১ | ১।০ | ১।০ |
| ১৭ | উত্তরগাছা হুট | ১ | ১।০ | ১।০ |
| ১৮ | মধ্য হুট | ১ | ১।০ | ১।০ |
| ১৯ | উত্তর হুট | ১ | ১।০ | ১।০ |
| ২০ | মধ্য উত্তর | ১ | ১।০ | ১।০ |
| ২১ | মধ্য উত্তর | ১ | ১।০ | ১।০ |
| ২২ | মধ্য উত্তর | ১ | ১।০ | ১।০ |
| ২৩ | মধ্য উত্তর | ১ | ১।০ | ১।০ |
| ২৪ | মধ্য উত্তর | ১ | ১।০ | ১।০ |
| ২৫ | মধ্য উত্তর | ১ | ১।০ | ১।০ |
| ২৬ | মধ্য উত্তর | ১ | ১।০ | ১।০ |
| ২৭ | মধ্য উত্তর | ১ | ১।০ | ১।০ |
| ২৮ | মধ্য উত্তর | ১ | ১।০ | ১।০ |
| ২৯ | মধ্য উত্তর | ১ | ১।০ | ১।০ |
| ৩০ | মধ্য উত্তর | ১ | ১।০ | ১।০ |

[illegible]

সমাচার দর্পণ

১০ নং পৃষ্ঠা।

পরিবার।

২০ জানুয়ারি মঙ্গল ১৮৭১।

৩ মাঘ মঙ্গল ১২৭১।

ফরাসি যুদ্ধ বৌদ্ধবোধের কার্যবিবরণ।

বুদ্ধাভাসিক জানকী দাসগোত্রা-দর্পণ ॥

কোরাণির কাণ্ডি।

কোরাণির পতকরা ছয় টাকার সুদের
চাঁদ কয় করিতে হইলে পতকরা তিন
টাকা আট আনা প্রিমিয়াম। বিক্রয় করি
ত হইলে পতকরা তিন টাকা প্রিমি
য়াম।

সংক্রান্ত পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|-----------|-------------|----|-----|
| ১০ | জানুয়ারি | পরিবার | ২ | মাঘ |
| ১১ | ৬ | পরিবার | ১০ | ৬ |
| ১২ | ৬ | শোমবার | ১১ | ৬ |
| ১৩ | ৬ | মঙ্গলবার | ১২ | ৬ |
| ১৪ | ৬ | বুধবার | ১৩ | ৬ |
| ১৫ | ৬ | বৃহস্পতিবার | ১৪ | ৬ |
| ১৬ | ৬ | শুক্রবার | ১৫ | ৬ |

ইস্তাহার।

আলমেন ডেভনরী।

নরক লোককে অরণ্যে করা যাইতে
যে যে ই-রাওঁ ও বারীলা ভাষাতে না
না পুকার ডেভনরী পুস্তক হইতেও
ই-রাওঁতে কিছু অধিক মূল্যপূর্ণক অল
কে তাহা লইতে অনর্থক ও পুস্তক সহ
সাহাবান গৃহের কারন আলমেন ডেভ
নরী যে কেতার পুস্তিক আছে সেই
কেতার অনুসারে এক দিকে ই-রাওঁ
পদ সাহেব যত থাকিবক এর তা
হার পুস্তিকক বারীলা শু জন্ম দিতে
দিলান করা যাইবে। ই-রাওঁ দিদি
ই-রাওঁ শিখিতে ইচ্ছা করেন ও দিদি

বারীলা শিখিতে বাসনা করেন সে ও
প্রতি যথেষ্ট উপকার হইবেক। এই কে
তার অনুমান তিন শত শুল্ক হইবেক
ইহার পুস্তিকোবের মূল্য সাফরকারীঃ
৮ আট টাকতে কেতার পাইবেন তদ্বি
লোকেরা ১২ বার টাকার মূল্যে পাইবেন
না। অতএব যিনি তাহা গৃহন করিতে
ইচ্ছা করেন তিনি আশা কার এবং
কোন যোকায়ে কাহার নিকটে কেতার
পাঠান যাইবে তাহাও লিখিয়া যোকায়ে
শ্রীমামদুর জাশাখানাতে স্বজন যে
মিস সাহেবের নিকটে পাঠাইবেন যেহে
তুহ দুই মশে কেতার ভার পাঠাইতে
তাহারদের অনেক ব্যয় হইবেক এবং
কি পুকার বা টোকা পাইবিক অতএব তা
হার বেড়া করিয়া লিখিবেন। পরে কে
তার পুস্তক হইলে তাহারদের নিকটে
পাঠাইয়া টোকা আদায় করা যাইবেক
ইতি।

ইস্তাহার।

সমাচার বেওয়া যাইতেছে যে যো
কল্লোহইতে মঙ্গল ১৮৭১ সালের ১ নম্বর
কর ডারিখের ৪০০ পাঁচ হাজার টাকার
এক কেতা ও মঙ্গল ১৮৭১ সালের ২ দিসে
কর ডারিখের ৫০০ পাঁচ হাজার টাকার
এক কেতা এই দুই কেতা পতকরা ছয়
টাকা সুদের মবলগী ১০০০০ দশ হাজার
টাকার কোরাণির কাণ্ডি যোকায়ে কলি
কাতা স্বরূপকীয় ও ই-রাওঁ দিদি পুনায়ে
কল্লোহইতে ১৮৭১ সালের ১৮ নম্বর

মাসা ই-রাওঁকি সে কাণ্ডি হারাইয়াছে
সে কাণ্ডি তাহার হাক আমেরেন দ্বৈর
দ্বিতে বদল হইয়াছে।*

সমাচার দর্পণ।

মহারাজ পুতালকদুরায় বাহাদুর।

বর্তমানাব্দে খ্রীষ্টাব্দে ১৮৭১ সালের
মহারাজ পুতালকদুরায় বাহাদুর ও জানু
আরি ১৩ শৌর দুইবার যোকায়ে কলি
নাটে গির্দাভারে পাঠকৌতিক পরীর পর
ডাণী করিয়াছেন। তাহার এই সা-
ধাতিহ রোণ ওপস্থিত হইলে বর্তমান
হইতে কালনাতে আনিয়াছিলেন এবং
সেখানে আরোপিত করন অনেক দস্তা
য়ল পুস্তক করিয়াছিলেন তাহাতে সন্না
য়ত অনেক হইয়াছে। তাহার কারন যের
সহনোব সাবিরন তাহার অনেক সৌ
জনা সহস্র বিখ্যাত আছে। তাহার পিতা
শ্রীমদ্রাজ মহারাজ ডেবানন্দদুরায় বাহাদুর
কলিকাতার জরুলেন সমাচার দিয়াছেন
যে বর্তমানের রাজা পুতালকদুরায় বাহা
দুর আশপার দুর্ভাগ্য দুই স্বী ও ভাগ্য
হীন পিতা ও গৌরী কুটুম্বারি মরলকে
গৌরবমণ্ডির মণি করিয়া ১৩ ওপস্থিত
বৎসর দুই মাস দশ দিনব্যয়ক ইচ্ছা ও
জানুয়ারি দুইবার যোকায়ে কলি নাটে
পুস্তক পুস্তক হইয়াছেন।

সম্পাদকের দর্পণ ।

পাশ্চাত্যদেরাশিরেপ (সোমসিট্রি) ।
 গারানানার ওনশিরেপ কহিট্রি এই
 ন্যাতার লোককহিট্রিক আনাইচরেন
 যে গারানানার মদ্যে যে অঙ্গন এখন
 আছে তাহা যে লোকেরা কহিট্রি আবার
 করিতে গিরিবক সে গুণী নাবক মস্তুর
 মতে তাহাট্রিক যেম্মা ঘাইবক ।
 ইতি মোকক কহিট্রি। মন ৪৮৩ নাল
 যে আনাই ।

ਟੀਚਾ ਚਿਹਰਾ ਵੀਰਾਨਾ L

পূর্ব সম্রাটের দেওয়া গিয়াছে যে প্রশস্ত
মৃত ইন্দ্রাণী বাদশাহের আত্ম ভ্রাতার
স্মৃতি স্থাপন করিয়াছে। তাহাতে বাদশাহ
অত্যন্ত করিয়াছেন যে লোকেরা শৌক
চিহ্ন স্থাপন শৌকীয় পরিধান করিবেন।

महामातुल !

যোকেয় জার্মানভাষার কল্যাণার্থে
 ডে. এন. এন. মুরারী কাল হইয়াছে গণ
 পরিষদের ডায়েরীতে প্রকাশিত হইয়াছে।
 জী. ডা. হার. সহিত সহায়ান করিয়াছে।
 বিশিষ্ট/সেবকের দ্বারা জী. ডা. হার. সহায়ান
 করিল। কিন্তু অত্যাচারের
 দ্বারা সহায়ান স্থায়ী দেখা যায় না। এ অতি
 আশঙ্ক্য।

•

ਦਾਂਤੀ ਭੁਭੁਕੇ।

বাতা ওপাশে এক পর্বত আরে ভূমি
 কল্ল সময়ে তাহাই হইতে অগ্নি নির্গত হয়।
 গিত ৩৯ জন দ্বিবিদ্যে ভূমিকল্ল হইয়া অ-
 কস্মাৎ মেঘ গর্জনের জ্বলা শব্দ হইয়া
 পর্বতের গর্ভ হইতে অতিশয় বৃষ্টি নির্গত
 হইল। তাহা শুনিয়া নিকটবর্তী লোকেরা

ভীত হইয়া সর্বত্র গিয়াছিল। হস্তিতে
 দ্বাৰিণি এ ঘণ্টা কাটাইয়া সর্বত্র সম্ভ্রমের
 আশাইল। পরে সেই পৰ্বতই কেজ্জিয়া
 হইয়া পায়ল হস্তিতে গিয়াছিল।
 রাষ্ট্রাধিপতি কেবল অধীর হইয়া শুভ
 বোধে হইল এবং যেরূপে গঠিল শব্দ এ
 স্তম্ভের পুনরুৎপন্ন হইয়া গঠিল।
 হস্তি-নাগর গঠিত গঠিল সে হস্তি
 কিছু ঘোষণা ছিল। ১১ তুল্য শোষণের
 অর্থ ১৫ তুল্যপৰ্যন্ত আশা পুনর
 খোলাশা হইল সে অধি চৌদ্দ হস্তি
 পৰ্যন্ত এক ক্রি গঠি তাহার পরে হস্তি
 নির্দিষ্ট হইল হস্তি তাহার নিবন্ধ বর্ধ
 ই এ পদ্ধতি দ্বারা গঠা হইল।

ସିନ୍ଧୁତ ଡେଇଁ କୁପାଟି ଯାହେବ ।

অশ্রুপূর্ণ তেমু ঘুমাইত কাহেব রিখি-
নীড়িত হয়ে। বেড়াইতে গন্ত শানিদার
কে? শূন্য করিয়াছেন তিলি যখন
কলিকাতার গন্তের লিফট হয়ে। যাইতে
ছিলেন তখন তাঁহার সঙ্গের, কারও
ডোপ হয়ে।

અપુત્ર નર્તકિણી માટે:

এই দেশের ইংরাজীয় বিচারিক জুড
মন্ট বিশপ্‌ সাহেব বিন্দুবিষয়ক ডক্টর
করিবার কার্যে যো-বোম্বে এ সিংহদী
পে গিয়ানার্থ গিড সঙ্কট পূর্বক করিয়া
ছেন। তাঁহার সঙ্কটের কার্যে ভেদ হ
ইয়াছে।

মৈন্যাংখিষ্ক মাংস

ਸੋਮਵਾਰੀਕ ਅਪ੍ਰਤ ਸੋਮਵਾਰੀਕ ਸਮਾ

ওলায় গ্রাহকের মাধ্যমে দুই দিন দিনের
মধ্যে ই-গ্রুপে পুস্তান করিবেন।

हानिपूर्व ।

আমরা শুনিমুখি যে উদ্ভটবাহীতে
এক জন উদ্ভটবাহী গোল মোঃ কানকুর
বিশিষ্ট যোদ্ধা কণ আর্জি সে উদ্ভট
বাহীতে লুকা ও বর্ষ ও উদ্ভটবাহী
মোঃ কানকুর করিয়াছে উদ্ভটবাহী সে মোঃ
যে লুকা ও বর্ষমি করা বহরার ছিল না
তাহাও সে মোঃ কানকুর করিয়াছে সমুদ্র
আগামীতে মোঃ কানকুর উদ্ভটবাহী
মোঃ কানকুর মোঃ কানকুর ও উদ্ভটবাহী
এ মোঃ কানকুর উদ্ভটবাহী।

ইসন্য প্রবণ।

পূর্বে জাতিপন গিয়াছিল যে ইংল্যান্ড ক
 াক দেশনা আদরবোধের সাহিত মুখ
 যাদা পড়িয়াছিল যেহেতু আদরবোধ জাতি
 হাবার দেশনা ছিল ইংল্যান্ড দেশনা (কলক
 াতা) পড়া ছিল তাহাও ও তাহার। অক
 াক ইংল্যান্ড দেশনাও ওদর আদরবোধ
 করিয়াছিল। এখান তাহাও সমাচার না
 ায়। গৌণ যে কোমর বড় সাহেব ওদর
 কোমর পড়িয়াছিল। নীচ হাবার দেশনা
 ও তাহার। এত সমাচার পড়িয়াছিল
 তাহাও, দেশনাও, হাবার ওদর। ায়
 সাহেব, ইতিপাশ্বে হাবার এই
 দেশনা ইতিপাশ্বে

औद्योगिक :

ই-গুণ দেশের এক নগরে এক প্রাচীন
মৌলোক্তিক হিন্দু জে-খানো, গুহ ইয়া
কিনী গুহ ১৫ জুন তারিখে সেই মৌলো
জোয়াত হরিবার, হারান হাও যজ্ঞ না

ই-গানের এক নম্বরে গিট তুলেহাসেন
অক্লিশয় মেঘারক্ত-হইল তাহারে রক্তা
দাঁতে রাখিলি ভোকা স্রবিল ইষ্টকেত আঁ
রাখ্যা এই ঘুমে এক যাত্রা করুন উনখাতি
ভোকা মিলি অলা হানে ডিম ভোকা মিলি

এই অধ্যায়ের লক্ষ্য হলো, শিক্ষার্থীদেরকে একটি নির্দিষ্ট বিষয়ের উপর গভীরভাবে চিন্তা করতে এবং তার উপর ভিত্তি করে একটি প্রকল্প বা প্রোগ্রাম তৈরি করতে।

४७ याचि मज ४१, ४२ ।

दक्षःशान्तिह कामह नमोऽर्चयामास ॥

[illegible]

সমস্যা দর্শন।

একখানি পরিবেষ্টিত বস্তু তাহার পাইল ও
রক্ত দেখিল। সেই রক্ত চিহ্ন দেখি

তেও অরণের মাঝে আন্দোলন করিতে। সে
চিহ্ন হাঁটাইল পরে সাইকেলের ইতস্তত
দেখিতে। দেখিল যে সে বায়ু মলমলের
গাছ পাইয়া আঁপনি পুস্তক হইয়া বসিয়া
আছে। তাহা দেখিয়া এক সাংঘের
গুলি মারিল সে গুলি বায়ুর সান্নিধ্য
হাঁটু পূরণ করিল। অন্য এক সাংঘের
আর ৩৭ গুলি মারিল এই দুই গুলি পাই
য়া তথানি বায়ু পলাইবার চেষ্টা করিতে
লাগিল। এক জন সিঁচাই ভয়েতে
বৃক্ষের ওপরে ছিল সাংঘের তাহার হাত
হইতে বন্ধন লইয়া বায়ুর পক্ষাৎ
নিয়া তাহার পরীরের মাঝে বন্ধনের স
রীতি মারিল কিন্তু সরীরা বাহির করিল না
তাঁহাতেও বায়ু বর্ণ করিয়া সাংঘের
পুষ্টি আকর্ষণ করিতে ওয়াত হইল কিন্তু
সাংঘের অতিশয় বন্ধন বন্ধন বিরিয়া
হইল ইহাতে বায়ু ফিরিতে কহাৎ পা
রিল না।

পরে বায়ু সেখানে হইতে অভিরোধে দুই
শত হাত দৌড়িল সাংঘের সেই বন্ধন
হস্তে বারণ করিয়া অতিক্রম পক্ষাৎ
চলিল। পরে সাংঘের পক্ষাৎে ফিরিয়া
দেখিল যে আঁপনার চাকর এক বন্ধন
লইয়া আঁপনকে সাংঘের তাহা দেখি
য়া হাতের বন্ধন ভাঙিয়া ঐ চাকরের
হাল হইতে বন্ধন লইয়া এক গুলি মারিল
বায়ু পক্ষাৎে পুনর্জাগ্রিত করিল। সে বায়ু
লয় হাত ঘাঁড়ীকে বারো জন লোক
কয়েক করিয়া অরণের বাহিরে আঁপন।
সে সাংঘেরের ঐ পক্ষি পুষ্টি দুই দিন
ওপাশে গেল ছিল না কিন্তু যে সাংঘের
এ পক্ষি করিয়াছে সে সাংঘেরের কহি
য়াছে যে সময় বায়ু দেখিয়া সিঁচাইয়া
পলাইয়াছে এ আন্দোলন লয়ে কিছু

বায়ুকে যদি বৃত্ত দেখিত তাহে লেও
পলাইত।

বেশ্যচক্র।

সমস্যা দর্শন যৌগে গাও মাইল
বার ১১ মাঘ উল্লিখে এক চক্রাৎ পদার্থ
যেহা হৈ তাহা পুত্তি খিনিস যৌগে হাঁ
কাড়াইতে যৌগে মুরশের বাহিরে হাঁ
ভেলিল পরে বস্তুর গুরুতর নীচে ঐ
তরিতে দুই পুর হাঁটির সময়ে বস্ত
বেশ্যচক্রাৎ আসিয়া ঐ লোকের ওপরে
পতিয়া কথর খিনিস লইয়া গিয়াছে
তাঁহাতে বারোখিনিস আসিয়া সে বিদ্য
অতিশয় তাহার করিতেছে।

ঋতু আলোকানু সাংঘের।

ঋতু আলোকানু সাংঘের।
হেব যৌগে কনিষ্ঠার হিন্দুস্থানি বা
কৈ পুর্বাঙ্গ অষ্টক ছিলেন তিনি এখান
হইতে ইংল্যান্ডে গিয়াছেন। এবং সর
যেহিত কই সাংঘের ইংল্যান্ডে কোল্লিগির
এক অষ্টক ছিলেন তিনি পুর্বাঙ্গ পুষ্টি
হইয়াছেন অতএব ঐ আলোকানু সা
হেব তাঁহার পদাভিভুক্ত হইয়াছেন এবং
ঋতু এই মনস্তন সাংঘের যৌগাৎ কল
কাড়ায় ঋতুগুণ বস্ত সাংঘেরের নীচে পদ
ছিলেন তাঁহার এ কয়েক নিয়ুক্ত হইবার
কল্প ছিল তাঁহাতে আলোকানু সাংঘেরের
পক্ষে এক হাজার ওনম্বটি লোকের অন্য
তি ছিল। তাঁহাৎ পক্ষে তেবন তিন শত
বিশ লোকের অন্যতম ছিল ইহাতে অতি
ক লোকের অন্যতম পুষ্টি হাঁটর না হই
য়া আলোকানু সাংঘের নিয়ুক্ত হইয়াছেন।

৪. জুলা।

জুলা গাও সমস্যাৎে যেত ছিল ২১

সমস্যাৎে সেইজন আরে কিন্তু নৃতন
জুলা যৌগে পক্ষি পুষ্টি হাঁটে বিস্ময় হই
তেছে গাও সমস্যাৎের মাঝে মজাপুরের
দুই হাজার এক শত সাড় হাঁটর যৌগে
জুলা আঁপনানী হইয়াছে অন্য সমস্যাৎে
যেহাত আঁপনানী হয় তাঁহা হাঁটে অতি
পুল হইয়াছে।

পক্ষি আঁপনানী।

গাও সমস্যাৎে মাঝে যৌগে কলিহাটার
আঁপনানী খিনিস।

| | | |
|--------|------|-----|
| জুলা | ৭৩৮ | যৌগ |
| চিনী | ৬৩৭ | |
| কোরা | ১০৯ | |
| মুই | ৩৭ | |
| রেশম | ৬৬ | |
| সোহাগী | ১৮ | |
| মজিকা | ১১১ | |
| নাল | ১৫৯ | |
| বস্ত | ৫৯৭৬ | খাল |

আঁপনানী আঁপনানী।

| | | |
|----------|-----|-----|
| লোহা | ১৯৯ | যৌগ |
| পীরা | ১৩৭ | |
| উঁপাতি | ৪০ | |
| হাটা | ৩১৯ | |
| গোলামরাট | ৬৬ | |
| বৈরা | ১৮ | |
| উঁপাতি | ১৮ | খাল |

কাল গোলা।

পুর্বে গোলা গিয়াছে যে ইংল্যান্ডে
বায়ু সাংঘের কুপারের পরলোক পুষ্টি
হইয়াছে তাঁহাতে ঋতুগুণ তাহা

সমস্যাঃ কখন !

জানির চাকর ই প্রচুরের দ্বিতীয় কোল সে
শাক পরিধান করিতে আঁকা করিয়াছেন

আজ্ঞাও কুরি।

সন ১৮৮১ সালের ৮ জানুয়ারি তারি
খের সমস্যাঃ জানিৎ জহেতে আশিয়া
রে তাহাতে আল গোল যে দলের দ্বারা
সংবাদগী এক আঁহাও ১৭ দিনের
মানদ্রাজের দ্বারা ই প্রচুরে যাইতে জল ১২
দিনের দ্বারা ই প্রচুরে এক কুণ্ড গোল সে
সমত অমতর কাত তুলান হইল যে আ
হাও ওলিয়া পনের অংকিতঃ মান্দ্রাজ
ন করিয়া দিল পর তাহাজের নীচেই
তে অস গতিতে লালিল এই কখন ৩০ দি
নেন্দ্র মোকায় মানদ্রাজে পুঁতল
মোখাল পুঁতল আঁহাও তুলিল তাহা
তে পুঁতল কাঁড়র বাকি সাহেব পুঁতল
আঁহাও ভাগ করিয়া নোকাতে গিয়া
মানদ্রাজে গুণিত হইয়া দ্বি দ্বিগুণ
হল। সে আঁহাও অলেক সাংগরের
অলেক জিনিস ছিল সেমকল নান হই
য়াছে কিন্তু পুঁতল নান হয় নাই।

বিষয়টি জমা।

মানদ্রাজের লিফটে বসহা নগরে
এক পুঁতলের চাকরি বাগ। অমিয়াছিল
তাহার মধ্যে তিন বাগ। পুঁতলের মত হই
য়াছে এক বাগ হস্তি সাংগ অমিয়াছিল
কিন্তু সে বাগ তুলান দিল।

মানদ্রাজ।

মানদ্রাজের স্মৃত নদার সাহেব আ
শি সিং হাসনে বসিয়াছেন তৎপুঁতল
১৭ দিনের তারিখে বত খান হইতে
তাহাতে ভাগ্যাকার জুত বত সাহেব পু
কতি অলেক ই প্রচুরে ভাগ্যাকার গী
জিনিস এবং নদার বাকি সাংগের বাগ

হইতে অলেক সাংগের বাকি সাংগের বাগ
থিকে যেমিহাও তাহা নানা পুঁতল জহি অ
র্থি মান্দ্রাজ ও পলি ও মান্দ্রাজ পুঁতল নিয়া
ন করিয়াছিল তাহাতে হোঁ নাই অতি
শয় হইয়াছিল এবং নদারের সাংগের যে
কন মুপাতিত হইয়াছিল তাহা কত দি
খি। এক ই সাংগেরের পক্ষাৎ থিকে
অলেক পুঁতল জুত সাহী হইলে পরে
সাহেব নোকাহের ওতম খান হইল
পরে নদার সাহেব ও তাহার পরিবার
নোকাহা ই সাহেব নোকাহাথিকে আ
তর ও গোলাপ ও ওতম পুঁতলি বাগ
কন শিখাচার করিয়া বিহার করিলেন।

নতল জানা পুঁতল।

জানির কন পুঁতল ই প্রচুরে যেন হইতে
নানা যেনে হইয়াছে তাহাতে গুঁতলি
জানা করিলে সে গুঁতল অলেক হয় ও
কখনও লুপ্ত হয় না ইত্যাদি জানা কন
জনের পরিনীয়া নাই। মলুতি সমস্যাঃ
আমিয়াছে যে অমিয়া যেনে এক পুঁতল
নতল জানা সৃষ্টি হইয়াছে সে অতি
আমিয়া তাহার বিবরণ এই।

এক পুঁতল লালি করিয়াছে সেই কালি
হারা কাগজে দিয়াছিল এক পুঁতল কোঁদল
পাথরের ওপরে তাঁপ দিলে তাহা অলেক
কাগজ হইতে গিয়া ই পাথর লাগে
কিহি কাল পরে সেই সলল অলেক
পাথরের ওপরে কিহি স্ত্রীত হইয়া গতে
তাহাতে অল কালি দিয়া কাগজ জ
পাইলে ওতম জানা হয় এবং এক লক্ষ
লক্ষ জানা হইলেও কিছু মনে হয় না
আবহে সমান জানা হয়। এই কন
যে জানা হইতেছে সে জানির কাগজ
আমিয়াপুরে জানিখানাতে আমিয়াছে
এবং সে কন ই প্রচুরে যেনে গিয়াছে

এবং আমিয়াপুরে জানিখানাতে পুঁতল আ
মিহেব।

নানা ভাষা।

কিয়া যেনে এক কালি জিনিস এক
নতল গুঁতল সৃষ্টি করিয়া জানাইয়াছে তা
হাতে এক শত তিনুপা পুঁতল আছে। পুঁতল
বীর চারি ভাগে যত ভাষা আছে তাহা
র বিবরণ ই প্রচুরে যেনে করিয়া দিয়া
যাছে।

আমিয়াতে নয় শত সাংগী ভাষা
ও ই প্রচুরে শত শত সাংগী ভাষা ও
আমিয়াতে দুই শত জহেতঃ ভাষা এবং
আমিয়াতে বার শত জহেতঃ ভাষা
এই ভিন হাজার এক শত চৌদ্দ ভাষা
পুঁতলি চারি ভাগেতে চলিতেছে।

নতল গুঁতল।

ই প্রচুরে জানিখানা আভিকরণের
এক গুঁতল করিয়াছেন সে গুঁতল
বিহয় হইতেছে তাহা নোকা কন করি
তেছে।

লিফট জমা।

ই প্রচুরে এক নোকাতে কতক নোকা
যাইতেই তাহার মধ্যে এক নোকা
ই প্রচুরে জানির লিফট করিয়াছিল তৎ
পুঁতল এক অল খানসি সেই নোকাতে
অল জেনিয়া দিল। পরে ই কালি অল
জানিয়া নোকা ই প্রচুরে চলি কিহি
কাল পরে বাগপুঁতল অলেক তাহাতে
নোকাও গুঁতল।

হিভোৎবেশ।

অমিয়া নগরীতে এক বিহারী হাফ
খানসি ও খানসি এক মুল্লী বসতি

মহাভারত

কর্তা এই দুইজন এক পরামর্শ হইয়া
 বাসিন্দা করিতে আসিল চোকা ও মোহই
 লইয়া বিদ্যেপথ ঘাইতে মনস্থ করিল । পরে
 এই দুই ব্রাহ্মণকে জিজ্ঞাসা করিল যে তুমি
 কিরূপে ব্রাহ্মণ্য করিয়াছ । ব্রাহ্মণ্য করি
 লেন যে তাঁহাদের পিতা পিতামহ দুই
 ব্রাহ্মণের ন্যায় পুত্রের পুত্র বিক্রম জন
 ব্রাহ্মণ্য করিল । এবং ব্রাহ্মণ্য এই
 কীরূপে জিজ্ঞাসা করিলেন যে তুমি কি
 সেৱা ব্যবসায় করি । মোহনর ক্রাহ্মণ
 যে জ্ঞান-সংকল্প প্রাপ্ত ও ব্রাহ্মণ্য প্রাপ্ত ও
 জ্ঞানীভূত হইয়া উভয়ই সংকল্প প্রাপ্ত
 হইয়াছে করিল । উভয়ে এই পরামর্শ করি
 য়া ব্রাহ্মণ্যপ্রাপ্ত পুত্রসমি প্রাপ্ত । পরে
 পিতার ব্রাহ্মণ্য সংকল্প এক পুত্রের দ্বা
 রাইতে এই ব্রাহ্মণ্য প্রাপ্ত । জনকর এই
 পুত্র দুই জনের মধ্যে ব্রাহ্মণ্যক অতি
 সম্মান্যরূপে ভোজন পূর্ণাদি করাইল
 কিন্তু এই মুহূর্ত্তে ব্রাহ্মণ্যককে আহার
 নিষিদ্ধ করাইল । এইজন্য দুই জন
 উভয়ে সেই ব্রাহ্মণ্য পুত্রসমি করিয়া আন
 নারদের গিহ্ম হোল পর দিন গোল ও
 ব্রাহ্মণ্য বিনা পলাই নন্দা আসিল নয়
 করিল নয় মুখীও আসিল প্রচারি নয়
 করিল । পরে দুই জন এক লোক ভাড়া
 করিয়া উভয়কে দুই লোকের বৈতালি
 করিয়া আসিতে দািল ।

এইদম্ কথ্যে দুই লোকের এই বৈতালি
 করিতে ৫ দুই জন লোকের আদিত
 হইয়া এই দুইজন উভয়কে সংকল্প
 উভয় করিয়া হইল এবং এই মুহূর্ত্তে এই
 সম্মান্যরূপে প্রাপ্ত ভোজনীয় করিল
 পলাই ব্রাহ্মণ্যক অদভ্যন্তর নাও

হইল । ইহাতে এই ব্রাহ্মণ্যক হইয়া
 এই ব্রাহ্মণ্যক জিজ্ঞাসা করিল যে তুমি
 কিরূপে ব্রাহ্মণ্য করিয়াছ । ব্রাহ্মণ্য করি
 লেন যে তাঁহাদের পিতা পিতামহ দুই
 ব্রাহ্মণের ন্যায় পুত্রের পুত্র বিক্রম জন
 ব্রাহ্মণ্য করিল । এবং ব্রাহ্মণ্য এই
 কীরূপে জিজ্ঞাসা করিলেন যে তুমি কি
 সেৱা ব্যবসায় করি । মোহনর ক্রাহ্মণ
 যে জ্ঞান-সংকল্প প্রাপ্ত ও ব্রাহ্মণ্য প্রাপ্ত ও
 জ্ঞানীভূত হইয়া উভয়ই সংকল্প প্রাপ্ত
 হইয়াছে করিল । উভয়ে এই পরামর্শ করি
 য়া ব্রাহ্মণ্যপ্রাপ্ত পুত্রসমি প্রাপ্ত । পরে
 পিতার ব্রাহ্মণ্য সংকল্প এক পুত্রের দ্বা
 রাইতে এই ব্রাহ্মণ্য প্রাপ্ত । জনকর এই
 পুত্র দুই জনের মধ্যে ব্রাহ্মণ্যক অতি
 সম্মান্যরূপে ভোজন পূর্ণাদি করাইল
 কিন্তু এই মুহূর্ত্তে ব্রাহ্মণ্যককে আহার
 নিষিদ্ধ করাইল । এইজন্য দুই জন
 উভয়ে সেই ব্রাহ্মণ্য পুত্রসমি করিয়া আন
 নারদের গিহ্ম হোল পর দিন গোল ও
 ব্রাহ্মণ্য বিনা পলাই নন্দা আসিল নয়
 করিল নয় মুখীও আসিল প্রচারি নয়
 করিল । পরে দুই জন এক লোক ভাড়া
 করিয়া উভয়কে দুই লোকের বৈতালি
 করিয়া আসিতে দািল ।

| সংখ্যা ক্রমঃ | | | |
|--------------|------|--------|-----|
| বিবরণ | ক্রম | সংখ্যা | মোট |
| মুখ্য | ১ | ১০০ | ১০০ |
| অন্যান্য | ২ | ১০ | ১০ |
| মুখ্য | ৩ | ১০ | ১০ |
| অন্যান্য | ৪ | ১০ | ১০ |
| মুখ্য | ৫ | ১০ | ১০ |
| অন্যান্য | ৬ | ১০ | ১০ |
| মুখ্য | ৭ | ১০ | ১০ |
| অন্যান্য | ৮ | ১০ | ১০ |
| মুখ্য | ৯ | ১০ | ১০ |
| অন্যান্য | ১০ | ১০ | ১০ |
| মুখ্য | ১১ | ১০ | ১০ |
| অন্যান্য | ১২ | ১০ | ১০ |
| মুখ্য | ১৩ | ১০ | ১০ |
| অন্যান্য | ১৪ | ১০ | ১০ |
| মুখ্য | ১৫ | ১০ | ১০ |
| অন্যান্য | ১৬ | ১০ | ১০ |
| মুখ্য | ১৭ | ১০ | ১০ |
| অন্যান্য | ১৮ | ১০ | ১০ |
| মুখ্য | ১৯ | ১০ | ১০ |
| অন্যান্য | ২০ | ১০ | ১০ |
| মুখ্য | ২১ | ১০ | ১০ |
| অন্যান্য | ২২ | ১০ | ১০ |
| মুখ্য | ২৩ | ১০ | ১০ |
| অন্যান্য | ২৪ | ১০ | ১০ |
| মুখ্য | ২৫ | ১০ | ১০ |
| অন্যান্য | ২৬ | ১০ | ১০ |
| মুখ্য | ২৭ | ১০ | ১০ |
| অন্যান্য | ২৮ | ১০ | ১০ |
| মুখ্য | ২৯ | ১০ | ১০ |
| অন্যান্য | ৩০ | ১০ | ১০ |

এই ব্রাহ্মণ্যক এই ব্রাহ্মণ্যক জিজ্ঞাসা করিল যে তুমি
 কিরূপে ব্রাহ্মণ্য করিয়াছ । ব্রাহ্মণ্য করি
 লেন যে তাঁহাদের পিতা পিতামহ দুই
 ব্রাহ্মণের ন্যায় পুত্রের পুত্র বিক্রম জন
 ব্রাহ্মণ্য করিল । এবং ব্রাহ্মণ্য এই
 কীরূপে জিজ্ঞাসা করিলেন যে তুমি কি
 সেৱা ব্যবসায় করি । মোহনর ক্রাহ্মণ
 যে জ্ঞান-সংকল্প প্রাপ্ত ও ব্রাহ্মণ্য প্রাপ্ত ও
 জ্ঞানীভূত হইয়া উভয়ই সংকল্প প্রাপ্ত
 হইয়াছে করিল । উভয়ে এই পরামর্শ করি
 য়া ব্রাহ্মণ্যপ্রাপ্ত পুত্রসমি প্রাপ্ত । পরে
 পিতার ব্রাহ্মণ্য সংকল্প এক পুত্রের দ্বা
 রাইতে এই ব্রাহ্মণ্য প্রাপ্ত । জনকর এই
 পুত্র দুই জনের মধ্যে ব্রাহ্মণ্যক অতি
 সম্মান্যরূপে ভোজন পূর্ণাদি করাইল
 কিন্তু এই মুহূর্ত্তে ব্রাহ্মণ্যককে আহার
 নিষিদ্ধ করাইল । এইজন্য দুই জন
 উভয়ে সেই ব্রাহ্মণ্য পুত্রসমি করিয়া আন
 নারদের গিহ্ম হোল পর দিন গোল ও
 ব্রাহ্মণ্য বিনা পলাই নন্দা আসিল নয়
 করিল নয় মুখীও আসিল প্রচারি নয়
 করিল । পরে দুই জন এক লোক ভাড়া
 করিয়া উভয়কে দুই লোকের বৈতালি
 করিয়া আসিতে দািল ।

সমাচার দর্পণ

১২২ নং পৃষ্ঠা।

শনিবার।

০ জ্যৈষ্ঠাব্দ ১৩১১।

১৩ মাস মল ১১১১।

দর্পণে দুই দৈনিক্যের কার্যবিবরণ। বৃদ্ধাস্থিহ্ন মানস নগরানা দর্পণে ॥

কোলাসির কাগজ।

কোলাসির শতকরা জমি টাকার মূল্যের
কাগজ কয় করিতে ইহাশৈ শতকরা ডিন
টাকা আট আশি প্রিয়ম। বিকল্প করি
তে ইহাশৈ শতকরা ডিন টাকা প্রিয়
ম।

সপ্তাহের পঞ্জিকা।

| ক্রিকারি | শনিবার | ১৩ | ১৪ |
|----------|--------|----|----|
| ১ | ১৩ | ১৪ | ১৫ |
| ২ | ১৫ | ১৬ | ১৭ |
| ৩ | ১৭ | ১৮ | ১৯ |
| ৪ | ১৯ | ২০ | ২১ |
| ৫ | ২১ | ২২ | ২৩ |
| ৬ | ২৩ | ২৪ | ২৫ |
| ৭ | ২৫ | ২৬ | ২৭ |
| ৮ | ২৭ | ২৮ | ২৯ |
| ৯ | ২৯ | ৩০ | ৩১ |

ইভাহার।

ইভাহার বেঙ্গল যাইতেছে পুস্তক
টাকা কোলাসির পুস্তক-১১ যে সাহেব
জিলে তাহার মল ১০-১০ মালদে ৩
মিল ডায়মে ৫ কোলাসি জাতিয়াছেন
ক-পুতি সেই সাহেবেরা এই বর্তমান
কোলাসির নিকটে গিয়া পাঠাইয়াছেন যে
তাহারদের টাকা যে সকল লোকের দ্বারা
পাওয়া আছে তাহা আদায় করিয়া পণ্ডল
অত্র বর্তমান টাকা কোলাসির সাহে
বেরা সকল লোকের অনুরোধেছেন যে
যে লোকের দ্বারা তাহারদের টাকা

পাওয়া আছে তাহারি পাঠাইবে ১ যে
তারিখের দ্বারা আশনং টাকা দামিল
করেন ইহাতে যে কেহ টাকা দামিল না
করিবেন তাহারদের নামে খণ্ড ও বিল
ও রসিদ দর্শাইয়া অদায়ত দাখিল হই
বেক।

ইভাহার।

জামেন ডেকলার।

সকল লোকের অগতি করা যাইতে
ছে যে ই-রাজি ও ই-রাজি ভাষাতে না
না পুস্তক ডেকলার প্রস্তুত হইতেছে ও
হইয়াছে কেহ আবেদন করিয়া পুস্তক
কে তাহার নিকটে আসিয়া উ-পুস্তক
সাহাবের পুস্তকের কারণ জামেন ডেক
লার যে কেতার পুস্তক আছে সেই
কেতার অনুসারে এক দিকে ই-রাজি
পুস্তক সাহেব খণ্ড থাকিবেক এবং তা
হার পুস্তককে বাবিল পুস্তক আছে
দিলান করা যাইবে। ইহাতে যিনি
ই-রাজি লিখিতে ইচ্ছা করেন ও যিনি
বাবিল লিখিতে বাসনা করেন সেই
যেই যথেষ্ট ওপকার হইবেক। এই
তার অনুসারে ডিন শত শত হইবেক।
ইহার পুস্তকেতারের মূল্য বাবিলকারী
৮ আট টাকাতে কেতার পাইবেন তাহার
লোকেরা ১১ মাস তাহার মূল্য পাইবেন
না। অত্র যে যিনি তাহার পুস্তক করিতে
ইচ্ছা করেন তিনি আশনং মাল ১১
কোলাসি মোকামে তাহার নিকটে কেতার
পাঠান যাইবে তাহা ১৩ লিখিয়া মোকাম
কোলাসির তাহার দাখিল হইবে যে

যিনি সাহেবের নিকটে পাঠাইবেন যেহে
তুহ দুই দিনে কেতার তাহে পাঠাইতে
তাহারদের অনেক ব্যয় হইবেক এবং
কি পুস্তক বা টাকা নষ্ট হইবে অত্র তা
হার বেঙ্গল করিয়া লিখিবেন। পরে
তার পুস্তক ইহাশৈ তাহারদের নিকটে
পাঠাইয়া টাকা আদায় করা যাইবেক
ইতি।

সমাচার দর্পণ

রাজকর্তৃক নিয়োগ।

মল ১৮-১১ মাল।

তারিখ ১৩ জানুয়ারি।

অত্র বেঙ্গলিয়া সাহেব জিলা বাসা
রমের বাবিলের অধিকার পেশকার হই
য়াছেন।

মূল।

অত্র থেক সাহেবের মোকামে ১১
মালদার মোকামে ১১ আদুকারি
তারিখ ১৩ জানুয়ারি হইয়াছে
তাহারে হিরন নামে এক ব্যক্তি মোকাম
দিল যে মোকামে কলিকাতা দাখিল
মুস্তফা হাটতে আমি রাতিয়াতা পণ্ডল
করিয়াছিলাম সেই রাতিতে ১১ মালদার
মূল আদায় করিল যে মোকামে ১১

যৌবন কলিকাতাতে আঁতুৰ অন
একম সাহেব তিনি এখন পায় মত্তি
বন্দৰবন্দ। তিনি এক স্বীকৃতি দিহা

করিবার কারণ উল্লিখিত হইল পর্যাঙ্ক
 চেষ্টা করিয়া সম্পূর্ণ গাও. ৯ আন.
 আরিতে সেই জ্বীকে বিবাহ করিয়া যান।
 ভিলায় পূর্ণ করিয়াছেন।

বোম্বাটিক্স।

যোঁ বহুত দুইয়ের নীচে গিয়েছে যে
বোধোদয়িতা নোঁকোঁ মাতিয়াছিল গড়
মস্তাহে ইহা জানান কিয়ন্তে তাহারি
শেখ এই। সে নোঁহাতে অসাদিমুখ
অগ্রদ্যমুখ এই দুই যাহাজনের জিনিস
ছিল তাঁ নোঁকার জিনিসের প্রভেদ অমুখ
হাওাড়িমুখ ও শূণ্ণিত বোঁহাঙ্গিনালবের বিমুখ
ছিল এবং বস্তাও নিম্নতর ও গোঁস যন্ত্রিত
রওনতে ৪৪০৭ চারি হাজার নীচ শত
মস্তুরি হোঁকার জিনিস বোঁহাওঁ ছিল।
দুর্গা জাহের শূঁ নোঁকার মাতিয়াওঁপ্রাণাল
জাহি করিতে বহুত দুইয়ের বাঁহেওঁ নোঁকার
গড়িতে অমুখ ও প্রভেদেওঁ নোঁকার

নান দিলে পরে ২ মাসী কহিল যে আমি
 হাত্রে নৌকা এই বাটে রাখিতে বাসনা
 করি। হারোণী কহিল যে ঘাটে থাকিতে
 পারিবা না বাটে ছাড়িয়া থাকহ তাহাতে
 বাটে ছাড়িয়া অনুগ্রহ এক শত হাত
 অন্তরে নৌকা রাখিল। অলম্বুর দুই
 পুত্র রাণি কহিল এক জন দ্বন্দ্ব অনিয়া
 নৌকার হুঁড় কাটাই দিল তাহাতে
 কা কথক দুই ভাসিয়া গেলে নৌকার
 লোকেরা অনিয়া তাপনা দাঁড় পুনরু
 ত্তরিতে এই সময়ে দুই নৌকাতে অনেক
 লোক লগ্নী হাতে করিয়া নৌকার ওপরে
 পড়িয়া মরু অত লোককে বলে ছেলিয়া
 দিল কেহল মাত্রী ও এক বালকমাত্র
 নৌকাতে পারিল বোহারি বলে ডাকিল
 তাহারি আসে লোক করিল বিদ্রোহ
 হারোণী কেহ খবর নৌক না আসা রাণি
 তে চৌধুরী গাঙ্গী মিলনামল করে নৌকা

৯। প্রকৃতি তাহাদের অবেশন পাওয়া গেল
 না। সে লোকেরা যখন দিনকটপর্ষদ
 ভাঙ্গিয়া গেল তাহাদের মধ্যে দুই
 জন মুগ্ধ হইল, ইহাখিনি পরে হিম
 কাণ্ড নামে তাহাদের ভাঙ্গনিয়ার লোকেরা;
 তাহাদেরই একজন বৃদ্ধ লোকের
 পলায়ের লোকায় গেল ও যখন বহি
 র্কাণ্ডে মহাজনক সমাধার ঘিল। হি
 মাংগুলাদ লোকেরা। লোকেরা ভাঙ্গিয়া
 তাহার কহিয়া দেখিল যে তিনি
 অশ্রের একাশ্রের ও কিছু অধিক গি
 য়াছে।

शान्द्राज ।

১৪ জানুয়ারি রবিবার নেপ্তেনেড
সেরান বোএর সাহেব মোকাম মক
রাইইতে মহামুর দেশের অধিকা
দা দান করিয়াছেন।

পাণ্ডিত্যেরি ।

মোক্ষার্থ পাতিচরিত্রে ও দ্বিমেস্বর
ও ১১২ আনুআরি এই তিন দিনে অতি
শীঘ্র হইয়াছে তাহারে লিপ্যনের
কিঞ্চিৎখণ্ড সমুদ্রে তরঙ্গের ভাঙিতে
আরক্ত হইয়াছিল বসুপুত্রেরা অনেক
বাক্যে ও আহারে দুঃখ দিয়া বাঁচিল
কিন্তু নিষ্ঠুর করিতে পানিল না। সে
খানকিঃ নৌকাখা করহ যে ১৩৪২ সাল
তৎকাল উপাধিঃ বৎসরের মধ্যে এমন
বহিঃ পাপকথন হয় নাই।

इयमद्राविमः ।

ও আলুআরি ডারিওর পত্র মোকাম
হয়দরাবাদহইতে আমিয়াতে তাহাতে
আলা গোল যে মেধানহইতে মতরি
ফোন অন্তরে এক স্থানে গোআল নামে

সম্মাচার দর্পণ!

এক পুষ্কার ডাকহাউসেরা আশিয়া। বসন্ত
করিতঃ ও লোকেরদের উপর আশিয়া
বোঝা কঠিনতর তাহাতে প্রযুক্ত লে
ও লক্ষ সহস্রজন সাহেব এক শত গ্রিন
জন ঘোড়সোয়ার লইয়া মোকাম হুয়
রাবাহ হইতে গিয়া ডাকহাউসকে প্রদ্রু
করিয়াছেন। যাঁহারা পলায়ন করিল তা
হারা একটা কুৎসিতের মতো পুৰণ করি
য়া রহিল মেখানে তাঁহার ঘোড়সোয়া
বোঝা ঘাইতে পারিল না তাহাতে তিনি
কিষ্টেরা আশিয়া পাঁচ শত সিপাহী ও দুই
বৃহৎ সামান্য একতর ক্ষুদ্র কামান তা
হারদের নানার্থ পাঠাইয়া দিয়াছেন শেষ
স্তান যায় নাই।

সূত্র।

মোঃ হুসাইন হাউসে সম্মাচার গিল
যে কোল্লির সূত্রিতে ১৮৬৩ দুই আশ
আট আশি বছরের চিত্রিত ও
আশিয়া ডাকহাউসে পক্ষাৎ হাওয়া চাকার
মাল গঠিয়াছে। এই চিত্রটি প্রায় জো
সেই সময় সাহেবের তিনি জি ফ্র
কোলাসির অন্তঃপাতী।

জোনপুর।

মোঃ জোনপুর হাউসে ১৩ আশিয়া
ডাকহাউস সম্মাচার আশিয়াতে তাহাতে
আলা গেল যে মেখানে সম্প্রতি বৃষ্টি
হইয়াছে তাহাতে কৃষিকারের অনেক ওণ
কার হইয়াছে। এবং তরকারী প্রভৃতি
সকল দ্বারা সমৃদ্ধ হইয়াছে তাহাতে সে
খানকার লোকেরা সুখির আসে।

পুলেপিনাস।

পুলেপিনাস ওণহাউসে ৩০ হিসেম্বর
ডাকহাউস সম্মাচার আশিয়াতে তাহাতে
আলা গেল যে ঠান দেশ হইতে এক

আহাৎ ৪ হিসেম্বর ও আশ এক আহাৎ
১০ হিসেম্বর আশিয়া পুলেপিনাস ওণ
হাউস নীতিয়াতে তাঁহার বারা সম্মাচার
পাওয়া গেল যে ঠান দেশে ওয়াসু নগরে
এক সম্মাচারি ইশ্লামীকে ঠান দেশীয়েরা
খুন করিয়াছিল তাহাতে বামিজা বদ
এ অভিযন্ত্র প্রযুক্ত হওনের সম্ভাবনা হই
য়াছিল সে সকল খাতি হইয়া বামিজা
চলিতেছে।

এলাউ।

সম্মাচার পাওয়া গেল যে মোঃ নাসি
পুর হইতে এক আহাৎ ইশ্লামী সৈন্য
মোঃ হুয়রাবাহ ঘাইতেছিল পথের
মধ্যে তাঁহার তিন জন অধীক সাহেব ও
দুই শতের অধিক সৈন্য এলাউ রোণে
হরিয়াছে।

পুরগ।

৪৯ আশিয়া ডাকহাউসে পত্র আশিয়া
জে তাঁহার বারা সম্মাচার আলা গেল
যে মেখানে তিন চারি দিন অভিযন্ত্র বৃষ্টি
এ বজ্রাঘাত প্রভৃতি হইয়াছে ইহাতে বোহি
হয় যে ঘর ও গোঁমের অনেক ক্ষতি
হইয়াছে যেহেতু সে সকল শস্যের
ধানা ক্ষয় হয় নাই সেই দুয়োণে এমত
যোড়মুর হইয়াছিল যে দিবা রাত্রি
তেম করা অতি কঠিন ছিল। বিশেষতঃ
৪৮ আশিয়া ডাকহাউসে ইকালে চারি
ঘণ্টার মধ্যে এমত অজ্ঞকার হইয়াছিল
যে পুরান দিনা ঘরে কিছু দেখা ঘাইত
না।

আফজ-ভুরি।

বুলমুর নামে যে আহাৎ মোঃ সাই
রাতে বারা পক্ষিয়াছিল গণ সম্ভাভ

সামান্য গিয়াছে এখন তাঁহার বিশেষ স
ম্মাচার পাওয়া গেল যে আশানীরা আহা
জের অনেক গুলি রক্ষা করবার কারণ
দুই দিবস অধিক পরিশ্রম করিয়াছিল তা
হাতে তাহারা আশানীরা চন্দা করিয়া
৫০ নীচ শত নব্বই টাকা আশানীর দি
দিয়াছে।

কল্যাণবীর।

মোঃ কল্যাণবীর হইতে ৩ আশিয়া গু
রিখের সম্মাচার আশিয়াতে যে গুত ও
হিসেম্বর ডাকহাউসে মাত আট ঘণ্টা রাত্রির
মধ্যে অশ্রুপাত সময়ে চতুর্দশ জন ডাকা
ইত পুষ্কা ওলর হইয়া বিতীয় ভাগ ইশ্লাম
গায় তুর্কসোয়ারের বাজারে আশিয়া
পতিল এবং ঘোড়সোয়ার ও পুষ্কা দুই
জন পোতদারের আশ্রয় করিল ও তা
বাবরের বর্তীতে পতিকা সকল সন্মতি
লুপ্ত করিয়া গৃহে আশি দিল। তখন
পোতদারেরা আশি গোঁমী ও জিনিস
পত্র ঘরা লইতে পারিল তাহা লইয়া ন
লহিল। এবং অন্য২ ঘোঁকানদারেরা
জন্মেত অভিযন্ত্র হওকাল হইল। পর
ডাকহাউসেরা লুপ্ত করিয়া ও বন্ধ করিয়া
আট ঘণ্টা রাত্রি পত্রে চলিয়া গেল কিন্তু
টাকা কত লইয়াছে তাহা নির্ণয় নাই।
এক জন খুন হইয়াছে আর দুই বার
জন আঘাত হইয়াছে। ডাকহাউসেরা
বাস্তবমে যে বন্দ না লইতে পারিল তাহা
অভিযুক্ত বন্ধ করিল। ইহাও লোকেরা
বত দুখী হইল তৎপুত্র সে বাজারের
কর্তা বিতীয় ভাগ তুর্কসোয়ারের মধ্যে
চন্দা করিয়া সে সকল লোকে কিছু
টাকা দিল ও ডাকহাউসেরের বিরুদ্ধে তে
ধা করিল কিন্তু বিরক্ত পারেন নাই ইহা
অনুসন্ধান করিতেছে। সে ডাকহাউসেরা

সমাচার দর্শন।

কোথায়ইতে আইন ও কোণ গোল তাহা
অদ্বাণ নিশ্চয় হয় নাই।

পার্লিমেণ্ট।

বঙ্গরাইতে ১৮ নবেম্বর তারিখের
পত্র আদিয়েছে তাহাতে জানা গেল যে
ইংল্যান্ডীয় ওকাল জুজুত চির সাহেব
মোঃ বাগদাদহইতে বঙ্গরায় কংজান
টেলর সাহেবের নিকটে এই পত্র লিখি
য়াছেন যে এখানকার কোল্লানির কু
তে যে কলক জিনিস জিন তাহা বাগদাদ
দেহ রাস্তা অস্বা করিয়া লইয়াছে অত
এব তুতকী দেশীয়দের সহিতে বানিজ্য
বাহার কর্ত্ত না। তাহাতে কংজান
টেলর সাহেব তাহারদের সহিতে বানিজ্য
বাহার্য বন্ধ করিয়াছে ইহাতে বোধ
হয় যে একবার কোন ব্যতিক্রম হইবেক।

চীনের রাজ্য।

চীন দেশের পুণ্ডল রাজ্যের কল হই
লে তাঁহার পিতায় পুত্র রাজ্যভাষক হই
য়াছিলেন তাহাতে দেশের পুত্রাতা তাহা
র রাজত্ব অসম্মত হইয়া তাহাকে বান
চার্থ লন করিয়া পুণ্ডল রাজ্যের বলিষ্ঠ
জুতা অভিধানক তাহাকে রাজ্য করি
য়াছে।

এক চীন দেশের অস্ত্রপাতি ফ্যাঞ্চল
লগরে ওলাডা রোগের অভিশপ্ত দ্রু
হইয়াছে।

আমি শেখ না হইলে মুক্ত হই না
তাহার কথা।

এক বুজ্জনী পাকের কারন পেটারা

হইতে শব্দ হরিদুর্গি ব্রহ্মালা লইয়া বা
স্তুতাপুর্ক ঐ পেটারা বন্ধ না করিয়া পা
কে গেল ইত্যবসরে এই ওলুক মর্প ভয়ে
ভিত্ত হইয়া ঐ পেটারা মাঝে পুখি হই
ল এবং মর্প ও ভল্লপায়ে তাহাতে
সজ্জাইল। দৈবাক এই সময়ে বুজ্জনী
আসিয়া পেটারা বন্ধ করিন ওলুক ও
মর্প দুই জন বন্ধ থাকিল। ওল্ল মর্প
মলে বিবেচনা করিতেছেন যে যদি আমি
এখান মুখিকতে গাই তবে আমার পেটারা
হইতে বাহির হইলে গুণীয় হয় না যখন
বুজ্জনী পেটারা খলিবে ওখান আমি
রাগা পতিব যদি এই ওলুককে না গাই
তবে ওলুক পেটারা কণ্ঠিয়া পা করিয়া
আপনি নির্গত হইবে আমিও সেই পথে
বাহির হইব যদি কলানে থাকে তবে
ওলুককে গাইতেও পড়িব অতএব এই
কলনে ইহাৎক শব্দ বলা পরামর্শ লে।
ইহা ভাবিয়া মর্প ওলুককে কহিল যে হে
মিত্র মুখিক আমিহইতে তোমার ভয় নাই
আমি তোমার সহিত মিত্রতা করিবাম
তুমি পেটারা কাটিয়া পা করিয়া নির্গত
হও আমিও তোমার পুনায়ে রহা পাই।
ওলুক ঐ ওল্ল মর্পের বিনয় বাক্যেতে মনে
বিশ্বাস না করিয়া পেটার গুণি কলনে
বাহিয়া ওটরা এক ক্ষুদ্র চিত্ত করিয়া দুরে
লম্ব দিয়া পতিয়া পলায়ন করিল। মর্প
ওলুক ভল্লন পুত্ৰাণীতে সেই পথে
শিথি নির্গত হইতে না পারিয়া ক্রিষ্ণি
বিষয়ে নির্গত হইবামাত্র ঐ বুজ্জনীর
লগত পুত্রার পুণ রক্ষণার্থে যাহি মুখি
কের পুণবি-সান্তিলায়ের পুত্ৰাক মল
পাইল।

বঙ্গের লগ।

| বিশিষ্ট | মোল | খবরি | পয়স |
|---------------|-----|------|------|
| বুপারি | ১ | ৫৫ | ৫০৮ |
| ভেলেগা তেল | ১ | ১১ | ১০ |
| গাছ মরিচ | ১ | ৩ | ৪১০ |
| মারিকেল তেল | ১ | ১০ | ১০১ |
| বুনা কাছোরা | ১ | ০ | ০ |
| আনা বঙ্গপু | ১ | ১০ | ১৫০ |
| পাটমাই কালা | ১ | ১ | ১০ |
| চান্দাচান্দাই | ১ | ১১০ | ১৫ |
| পাছরি উত্তর | ১ | ১১ | ১১০ |
| পাছরি মধ্য | ১ | ১০ | ১১০ |
| চুণী তৈল | ১ | ১০ | ১ |
| চুণী মায় | ১ | ১০ | |
| বাল্য | ১ | ১০ | ১০ |
| বুনা খে | ১ | ১০ | ১০ |
| পাটমাই হুট | ১ | ১০ | ১০ |
| জুহুরালি | ১ | ১০ | ১০ |
| উত্তরমণী দূত | ১ | ১১ | ১১১ |
| মধ্যমত | ১ | ১১ | ১১ |
| উত্তরমণী | ১ | ১১ | ১১ |
| মধ্যম তৈল | ১ | ১১ | ১১ |
| মোমোজী | ১ | ১১ | ১১ |
| মিছরি উত্তর | ১ | ১১ | ১১ |
| মিছরি উত্তর | ১ | ১১ | ১১ |
| মোমো উত্তর | ১ | ১১ | ১১ |
| মধ্যম | ১ | ১১ | ১১ |
| চিনি কাপার | ১ | ১১ | ১১ |
| মধ্যম | ১ | ১১ | ১১ |
| মধ্যম | ১ | ১১ | ১১ |
| তেলুল | ১ | ১১ | ১১ |
| জামাক | ১ | ১১ | ১১ |
| চন্দন | ১ | ১১ | ১১১ |

এই সমাচার বঙ্গ পুরানপুরে ছাপাখানাতে পুণ্ডলভায়ে পলিবারে ছাপা হই। বাহর লগের কারখানা হই তিনি পুরানপুরের ছাপাখানাতে
আপন নাম পাঠাইলে লগার কাল তাহার নিকটে পুণ্ডল ভাইকে তাহাৎ মুখা মানে এক টকা বিশি বাছক করিছেন বহি তাহার নিকটে
কাল না পাইলে তবে তিনি পুরানপুরের ছাপাখানাতে লগার বিবামান তাহার নিকটে পাঠাই হইবেক।

সমাচার দর্পণ

১১৭ সংখ্যা।

শনিবার।

১০ ফ্রেব্রুয়ারি সন ১৮৭৭।

৩০ বাই সন ১৩৩৭।

দর্পণে দৃষ্ট বৌদ্ধধর্মের কার্যবিবরণঃ বুদ্ধাচার্য্য কানক সমাচারদ্য দর্পণে ৭।

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির শতকরা, জয় টমিকার মূহুরে।
কাণ্ড কয় কয়তে হইল শতকরা তিন
টাকা আট আনা পিঁয়স। বিক্রয় করি
তে হইল শতকরা তিন টাকা পিঁয়স
হয়।

সম্ভারের শক্তি।

| | | | | |
|----|---------------|-------------|----|----|
| ১০ | ফ্রেব্রুয়ারি | শনিবার | ৩০ | ১৮ |
| ১১ | ১ | রবিবার | ১ | ১৯ |
| ১২ | ২ | সোমবার | ২ | ২০ |
| ১৩ | ৩ | মঙ্গলবার | ৩ | ২১ |
| ১৪ | ৪ | বুধবার | ৪ | ২২ |
| ১৫ | ৫ | বৃহস্পতিবার | ৫ | ২৩ |
| ১৬ | ৬ | শুক্রবার | ৬ | ২৪ |

ইন্ডাচার।

১৮ ফ্রেব্রুয়ারি ১৮ জানুয়ারি তারিখে
ইন্ডাচার জমীর মালিক মোঃ নসির
জার একশেষ কয় আনা ১৮ বাইর
জার পণ্ডিত কোলাসির বাইচুরের সন ১৮
১০। ১০ মাসের খাস পরওয়ানো আশ্রয়
বেহারের ১০৮ মিস্ত্রী ও বাগানের
১১ মিস্ত্রীক লিখায় বিক্রয় হইবেক।

পুন্ডিলাটে পাঁচ মিস্ত্রীকে হইবেক পিঁয়স
বারানলিলদের মাল্যে একটাকা বালা
দিয়া পাঁচ দ্বিয়ারের মতো পুন্ডিলাটের বি
ক্রেতার অমর দ্বিতীয় দর্পণ টীকা, দায়

কিন্দা। কোলাসির কাণ্ডাখামিল করিবেক
যে কেহ খামিল না করে তাহার পাঠ পুণ
হারি লিখায় বিক্রয় হইবেক তাহারি সো
কমল হয় পুণ্য খামিলদারদের লিখায়
মুদ্রায়া হয় মেরকের খামিলকে হইতি।

ইন্ডাচার।

ইন্ডাচার বেওয়া ঘাইতে যে যে পণ্ডিত
সেবনবারানলিলদের খামিলজানী লায়
তাৎক উপহারদের হায়েতে সন ১৮৭৭
মাস ১১ ফ্রেব্রুয়ারি তারিখে মোঃ দুই
শুকের মাল্যে পণ্ডিত হরমট ক্রমটন না
হইক কলিকাতার পুণ্ডিত মোঃ কায় হত
উদারভেদে হাইকৃত পিঁয়স কহিবেক।

কিন্দা ঘোষার প্রতিক্রিয়া।

জানিল জমী

তাৎক জমী আশ্রয়ানী।

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির কাণ্ড।

কোলাসির কাণ্ড।

বারানসির কলেক্টরের পেকার হইয়া
হল।

১০ জানুয়ারি।

ঐযুত এ আশ্রয়ী মোঃ কায়
বাইচুরের কলেক্টর হইয়াছেন।

ঐযুত জে এ কায় মোঃ বেহা
রের মোঃ কায়ের অধিকার মোঃ কায়ের
পেকার হইয়াছেন।

ঐযুত জে এ কায় মোঃ বেহা
রের মোঃ কায়ের অধিকার মোঃ কায়ের
পেকার হইয়াছেন।

নুতন আশ্রয়।

কোলাসির কাণ্ড তাৎক পাঠানের বি
য়ে ঐযুত হত মোঃ নুতন এক
আশ্রয় করিয়াছেন।

পুণ্য। যে কাণ্ড সম্ভারের মতো এক
বার জমা হয় সে কাণ্ড পাঠাইতে হই
লে তাহার তিন টাকা পাঠাই
কিন্তু তাৎকর দায় দিতে হইবেক।

লিভার। যে কাণ্ড সম্ভারের মতো
দুই তিনবার জমা হয় সে কাণ্ড পাঠাই
তে হইলে তাৎকই কোলাসির এক
হাটা চিঠির দ্বারা তিন কাণ্ডের দুই
তাৎক দিতে হইবেক।

জুড়িয়। যে কাণ্ড সম্ভারের মতো
তিনবারের আশ্রয় জমা হয় এ পাঠাই
যার সে কাণ্ড দুই টাকা পাঠাই
হাটা চিঠির অধিক দায় দিতে হইবেক।
চুড়িয়। যে কাণ্ড সম্ভারের কাণ্ড

সমাচার দর্পণ।

বাক্যে নিম্নোক্ত।

১১ মিস্ত্রীর।

ঐযুত আর জে টেলর মোঃ কায়ের জিন

সমাচার দর্পণ।

উদ্ভবের নিমিত্তের অধিক ওজন হইবেই
তাহার ওজনদ্বারা মূল্য দিতে হইবেক।
সন ১৮১৩ খ্রীস্টাব্দে যোঁ-হানি
কাজ।

নুতন গুরু।

যোঁহানি কাশীর প্রযুক্ত কোল্লানি বাহা
গুরুর পাঠশালাতে এক সাহেব অনেক
পণ্ডিত লোক লইয়া এক অভিযাত্রা
ভিধান প্রস্তুত করিয়াছেন। সে নবম
শব্দে অর্থাৎ স-কৃত ও ই-রাজীতে হই
কাজ সে গুরু গৌর পদ পূজা।

পাঠশালা।

০ ১৫ জানুয়ারি তারিখে যোঁ-পৌতারা
আর প্রযুক্ত রাজা মৌলানায়েন দেশের
বর্ণনাতে স্কুলের মোনাইটার পরীক্ষা হই
কাজ তাহাতে কলিকাতার অনেক ভাণ্ডার
হান ইংলীশ সাহেব এ বিধি লেখি এ
পাহরের অনেক ভাণ্ডার হানু ও মীন
লমান একত্র হইয়াছিলেন। এক দুই
গুরুর দুই ঘণ্টা বেলায় সমস্ত আরম্ভ হই
য়া নীচ বর্ণার সময় সার হইয়াছে। অ
তএব পুণ্য ভাণ্ডার বালকদিগের পাঠ
পরীক্ষা হইল। বিভিন্ন ভাণ্ডার গোলদ্বারা
ও জোড়িহ ও হিন্দু দেশের বিবরণ পরী
ক্ষা হইল চতুর্ভাণ্ডার গণিত ও লিখানের
পরীক্ষা হইল।

পরে হিন্দু কালজে যে বালকেরা ই-
রাজী পাঠ করিতেছে তাহারদিগের পরী
ক্ষাও সেইখানে সেই দিনে হইল।

সি-হামদীন।

ই-গ্লাহ দেশহইতে পুত্র আসিয়াছে
তাহাতে আনা গেল যে প্রযুক্ত জনরন
সহ একশতটি সাহেব সি-হামদীন

ব্রহ্ম সাহেবী কর্মে নিযুক্ত হইয়াছেন
এক গজআলুআরি খাস ই-গ্লাহ জাতিয়া
আনিবেন প্রায় বহু শুনা যাঁহাতে।

জামায়ে দেশ।

জামায়ে দেশের পুত্র রাজা গৌরীকান্ত
সি-হ ড্রিলি সিন্ধুন হইয়া যুগ্মে
দুইদান রাজ্যের ই রাজার জাতি পুত্র
কমল সিংহকে সিংহাসনে অভিষিক্ত করি
য়াছিলেন পরে ই রাজার অন্য জাতি বুজ
নাথ সিংহ আসিল যুগ্মে রাজা কুরি
বার কারন অনেক চেষ্টা করিয়াছিল
লেন তাহাতে কিছু করিতে না পারিয়া
কিছু দিন সপ্তাহ পূর্ব দেশান্তরী হই
য়া ই দেশের রাজা অনেক সৈন্য স-গ্লাহ
করিয়া যোঁ-গৌরানপাড়াতে জাতি
করিয়াছিলেন পরে রাজা কমল সিংহের
মন্ত্রীদ্বয়ের সহিত সন্ধিভা করিয়া তাহা
কে সিংহাসনভুক্ত করিয়া আসিল পুত্র
প্রযুক্ত চন্দ্রকান্ত সিংহকে রাজাভিষিক্ত ক
রিলেন। অল্প দিন পরে ই বুজনাপি সিংহ
পরলোকগমিত হইলেন ই কমল সিংহের
ভ্রাতা যান দেশহইতে কথক সৈন্য স-
গ্লাহ করিয়া ই রাজা চন্দ্রকান্ত সিংহের
সহিত যুদ্ধ করিয়া তাহাকে দেশহইতে
দূর করিয়া আসিল রাজ্য হইয়াছেন।
চন্দ্রকান্ত সিংহ এখন যোঁ-গৌরানপাড়াতে
আছেন এক পদস্থার রাজ্য লাভের
বাহন অনেক চেষ্টা করিতেছেন।

একাদশী।

সমাচার পাঠ্য গেল যে জামায়ে
শের দক্ষিণ দিকস্থ আসানিয়ায় ক্ষুদ্র ও
বন্যদেশে অভিযাত্রা একাদশী রোগের প্রা
ভব হইয়াছে।

অজ্ঞাত মৃত্যু।

গজ বুইয়ার ৭ খ্রীস্টাব্দে সন ১৮১৩
সাল বাগিচা সন ১১১৩ সাল ৩ মাস এক
জন গৌরী মল্লিকা গৌরতে জামিয়া প্রা
মপুরের ঘাটে লাগিয়াছিল। তাহাতে
এক জন সাহেব তাহাকে পুণ্য দেখিয়া
মানার মতর দিন খানার লোক আনিতে
বিলম্ব হইল একজন সাহেব আপনি
ই মৃত্যুর সময় ঘড়ি দিয়া বন্ধ করিয়া রা
খিল যে জোয়ারে ভাসিয়া লইতে না
পারিল সে সময়ে অন্য আর তিন জন সা
হেব আসিয়া একত্র হইয়া সে মৃত্যু গারে
তুলিল। তাহার পরিদ্রবের দ্বারা আন হ
ইল যে সে লোক ই-গ্লাহের কামান পল
টনের যোদ্ধা। পরে তাঁহাকে গৌরীনা
হেব লোকেরা সেই স্থানে গৌর দিন
যখন সাহেবেরা তাহাকে গৌর দিতে
জিল ডায়াল চাকের সৈন্যাবিক্রম দুই জন
সাহেব পার হইয়া যাঁহাতেজিল তাহারা
ইহা দেখিয়া সেখানে আসিয়া সাহেবের
বের সন্মত করিল। অনুমান হয় যে
প্রব্রহ্মইতে যে সৈন্য তিন চারি দিন ন
খজিয়াতে তাহারদের ঘাটে এক জন হ
ইল। এখনি তমারকের কারন যোঁ-হাম
দ্বারা সৈন্যাবিক্রম সাহেবের নিকট সন্ম
তার লেখা গিয়াছে তাহার প্রত্যুত্তর অ
দ্যাকি আইনে লাই।

বাগিচা।

যোঁ-বাগিচায় পুণ্ড্রিযুক্ত কোল্লানি
হাটের এক ওলী আসেন তাহার আ
শ্রয় ভাণ্ডার এক ভাণ্ডার লোক জিল
ইহাতে তুলকেরা আসিয়া সেই লোকের
ভাণ্ডার আশ্রয় করিয়া তাহার সর্বস্বদুর্ভ
করিয়াছে ২০ এই বৌরাজ্য দেখিয়া

সমীচরণ দপণ!

নেই ওহান তুকের অধিকার বসরা
যেখানে মৃত পুত্রের কান্ডান ফের মা
যেহে মেহান জাগা করিতে পত্র লিখি
যায়ে এক ই-প্রণয় লোকেরদের তুকের
দের সহিত যে পুত্রের জন আছে তাহা ও
তাহারদের জিহ্বা ই-প্রণয় আহাজে
বোকাই করিতে পারেন লিখিয়াছে। ই
হাতে তুকের লোকেরা ই-প্রণয়েরদের সহি
ত পুত্রের মিলনার্থে দোহা করিতেছে।

আহাজ।

পারস্ত্র নামে আহাজ গণ্ড ১০ দিনে
মর ডায়ে কলিকাতা হইতে ই-প্রণে
যাইতেছিল তাহাতে ১১ দিনের ডায়ে
যে স্থান ঘণ্টা রাষ্ট্রের সময়ে গাওয়ার
পাহাড় দেখিয়া ভ্রম্যতে এক গুহা
খান করিয়া নিবসে আহাজ ঢালি
ডেছিল। ইহার মধ্যে সেই আহাজ চ
ভায় লাগিল। ইহাতে আহাজ লো
করা অতিশয় ভীত হইল যাহেবুর আ
হাজে দুইখান লোকায়ত্র ছিল তাহাতে
মক্কা লোক রক্ষা হইতে পারে না। পরে
আহাজের মায়ের আহাজের গাভী ও
বোতা মক্কা আসে দেখিয়া দিয়া আহাজ
পাতল করিয়া অনেক ক্রোধে অধিক
অসে আহাজ নামাযিত্র নরত করিয়া রা
খিল। এখন কোম্পানির উরম লোক যা
ইয়া যেমত অক্স মনে সেইমত হইবেক।
যেই হয় যে এই আহাজ বাহির হইতে
অক্স হইবে গাভী ডায়ে অক্স হ
ইবেক।

মক্কা।

যো মক্কাতে সমীচরণ যো বোয়ে
আমিরা জিল সেই সমীচরণ বাসের পত্র
হারা আনা গেল যে পুত্রের করল আ

রিল সাহেব যো মক্কাতে বৈজিয়া ডায়া
কার পুত্রের মায়ের সহিত মক্কা ক
রিয়া ওরম মত মিলিয়াছেন এক এমাম
সাহেব ই-প্রণয়েরদের ওরকার করিতে
স্বীকার করিয়াছেন।

ই-প্রণয়ের রানী।

ই-প্রণয়েরের অশ্রুত মহারাজের
সহিত যে ই-প্রণয় রানীর বিবাহ হইয়া
আদালত হইতেছে তাহা পূর্বে জানিল
চীরাতে এই স্থানে ঈশা যাইতেছে যে
সে আদালতে যোগদান চোকা ব্যয় হই
বেক তাহা ব্যতিরেকে রানীর তারি লক্ষ
চোকা ব্যয় হইবেক।

ইতালী দেশের যে লোকেরা মাক্কা
যিতে আসিবের এ মক্কা চোকা পুত্র
তাহারদিগের পুত্র ব্যয় হইবেক।

পুণ্ড্র কনু হইয়াছিল যে রানীর মোক
দমা নয় রানী ছিলর যাবে সার ই
বেক এখন ডেমন লক্ষণ বুরা মায় না
রানীর বিশেষ এক পত্র ব্যক্তি জন মাক্কা
আছে ইহারদের যাবে ডিন অদের
অধিক কোন দিন দিকান হয় না ইহা
রত কনুমান হয় যে ওরম দিকের মাহার
কনুপ নিতে ও ওরম পক্ষীয় ওকলের
বক্ততা স্থাপিত সাত আট মাসের কমে
এ মোকদমা নিষ্পত্তি হইবে না। ইহার
শেষ কি হইবে তাহা কেহই অনুমান
করিতে পারে নাহি কিন্তু এমত ভাষি
মোকদমা আজিও শত বৎসরের যাবে
ই-প্রণয়ে হয় নাই।

বানিয়া।

তুলা। গত বৎসরে পুণ্ড্র তুলা অক্স
নাই গত বৎসর এই সময়পাশ কেবল
শোল হাজার গাঁট তুলা আমদানী

হইয়াছিল এই বৎসরে কেবল হাজার
গাঁট তুলা আমদানী হইয়াছে। মো
মুরশিদাবাদে তুলার মৌল শতিন চোকা
তে বিক্রয় হইতেছে কিন্তু মো কলিকাতা
তাহতে গণ্ড মক্কাহে মৌল বিশ চোকা বি
ক্রয় হইয়াছে।

লৌ। গত বৎসরের পুণ্ড্র বৎসরে
জিয়ানহই হাজার মৌল শৌল ওরম
হইয়াছিল। গত বৎসরে কেবল চো
কা হাজার মৌল ওরম হইল।

চিত্তর।

ই-প্রণয়ে দুই জন চিত্তর বাজি রাখিয়া
ছিল তাহাতে অনেক লোক মান জিন
এক জন চিত্তর উরম মূল্য ক্রিয়ার
মূল পুস্তত করিয়া বাহির রাখিল। তাহা
যথার্থ জান করিয়া পক্ষী আসিয়া ১২ জন
জোজনোমত হইল ইহা দেখিয়া মল
দোকের আশ্চর্য্য বোধ হইল। চিত্তর
চিত্তর আশ্রয় মায়ের দেওয়ান এ পর
মা চিত্তর রাখিল। পরে পুণ্ড্র চি
কর অত্যা লোক মনে করিয়া আশ্রিয়া
কহিল যে তোমার চিত্তি কোথায় তাহা
তে সে কহিল যে আমি যে চিত্তি করি
য়াছি সে চিত্তি এই পরমার নীচে আছে প
রমা ওঠাইলে দেখিতে পাইবা। ইহা
কহিয়া পুণ্ড্র চিত্তর এই পরমা ওঠাইতে
কেন্দ্র করিয়া ক্রিয় পরমা দেখিয়া আপন
পরায় স্বীকার করিল এখন কহিল যে
আমি পক্ষকে কুশিয়ায়িত্র ক্রিয় আহাজ
কুশিয়া।

নতুন লোকা।

ই-প্রণয়ে এক পুত্রের নতুন লোকা
ওরকার বাদশাহের কারন পুস্তত হই
য়াছে সমীচরণ পাওয়া গেল যে সে লো
কা কাম্বার বাদশাহকে ওরকার দি
বেল।

সমীচীর দর্পণ।

মীকো।

ইংলণ্ড দেশে গীত বৎসরে এক নতুন পুরস্কার মীকো সৃষ্টি হইয়াছে সামান্য মীকো দুই দিকে নীচ হইয়া যথ্য দেশ ওই হইল কিন্তু এই নতুন মীকো ডাহার দুই দিকে ওই যথ্য দেশ নীচ ওয়াশি সে জনহইতে ওরু হাত ওয়।

বীত।

আন্তার্য্য মায়ে মো' কলিকাতার যথ্য বিন লক্ষ টাকার বণ্য এবং এক লক্ষ শতাব্দী হাজার টাকার স্বর্ণ আয়াদাদী হইয়াছে।

বারংবারি নুত।

মো-ওকশণিতে এক বারংবারি নুত হইবেক ওয়াশি পুতিয়া হইতেছে। যেহেতু আকস্মিক শুল্ক বহিতেছে ইহাতে অনেক বর যে এয়াত নুত। হয় নাই। যে দিন পুতিয়ার হইল সে দিন অনেক পণ্ডিতের নিয়ন্ত্রণ নৈরিক সভা হইয়া বিবাহ দিয়াছে ও তদবধি নওর বহিতেছে কিন্তু অত্যা নি নুত।র দিন দিহ হয় নাই।

পতাকারক্ষক।

হলও দেশে প্রাণিদেরেরে মহিও ইংলণ্ডেরেরে যুদ্ধে ইংলণ্ডীয় এক জন নিশান বদিয়াছিল সে এই যুদ্ধে করিলে তা হার হস্তে এয়াত দুঃকণে নিশান বরা জি ন। যে কোন নিমাই ডাহার হাতহইতে ডাহা নইতে পারিল না। ওয়াশি বিশেষ নিকটে আইকে নিশান সম্বন্ধে ইংল্ড

লোককে কহে করিয়া বিশেষ সৈন্যসমূহ দিয়া আপন সৈন্যে পুনিশ করিল কিন্তু ডাহার সাহস দেখিয়া বিশ্বকরা ডাহা কে মারিল না। ওয়াশি সৈন্যের সৈন্যে জইলে ডাহার অনেক সন্তুষ্ট হইল।

বীনা চোর।

সেহালাবীর নিকটে এক পুনিশ এক গহ্বের বাটতে ঘরের যথ্য এক পুনিশ না স্বা পুনিশ করিয়াছিল। সে ঘরের যথ্য অনেক বীনা থাকে সেই বীনা চুরি করিতে এক চোর ঘরের দার খসা ইয়া ঘরে গেল। পরে সেই পুনিশ না জাগিয়া জালিল যে ঘরে চোর আসি যাকে ডাহার ওয়াশি কিছু না জইয়া আ পল পওয়াতে বসিয়া ভাবিতে লগিল। চোর এই পদার্থ নিকটে আসিল ওয়াশি পদ বস্তু খসাইয়া হস্তিকতে পাতিয়া বীনা নইবার চেন। করিতে লগিল। এই পুনিশ না এই পদ বস্তু ওয়াশি আপন হস্তে রাখিল ডাহা চোর আসিতে পাইল না। পরে বীনা লওয়া হইলে বস্তুকে করিল বস্তুকে কোন কাষেইন করিয়া কিছু না পাইয়া জািল যে বীনাতে সন্তুষ্ট হইল চাইয়াছে। স্বহস্তেইন আবেশন করিয়া ওয়াশি পাইল না ওয়াশি চোর অপুতি হইল ও ওয়াশি সন্তুষ্ট হইয়াছে ভাবিয়া পদমল্লন করিল। ওয়াশি সেই পুনিশ না সের করিয়া করিল যে আশির সর্বক চোরের লইল। চোর কিছু ঘরে চাইয়া ওইকালেরে করিল যে আশি চোর সর্বক লইল। ডুই আয়ার সর্বক লইল। ইহা বসিয়া চোর পদমল্লন।

বাহার ভাণ্ড।

| বিনিম | মো | অবধি | পার্য |
|--------------|----|------|-------|
| নুগরি | ১ | ৫৫ | ০৫০ |
| ভেরেজা উল | ১ | ১০ | ১০ |
| গ্লাহ মরিচ | ১ | ১১ | ৫ |
| বারিকেন উল | ১ | ৫০ | ১০১ |
| মুলা কাছোরা | ১ | ০ | ০ |
| জাদা রঙ্গপুর | ১ | ১১০ | ১৫০ |
| পাটনাই আদা | ১ | ১ | ১০ |
| চান্দ পাটনাই | ১ | ১১০ | ১৫ |
| পাখরি উত্তর | ১ | ১১ | ১১১ |
| পাখরি মধ্যম | ১ | ১০ | ১১০ |
| মুগী উত্তর | ১ | ১৫০ | ১ |
| মুগী মধ্যম | ১ | ১৫০ | ১৫০ |
| বলার | ১ | ১৫০ | ১৫০ |
| মুখা মোম | ১ | ১১০ | ১১০ |
| পাটনাই ইট | ১ | ১১০ | ১১ |
| অরুণ জাল | ১ | ১১০ | ১১০ |
| উত্তমোত্তর | ১ | ১১ | ১১১ |
| মধ্যম ইট | ১ | ১০ | ১০ |
| উত্তম ইট | ১ | ১০ | ১১ |
| মধ্যম উত্তম | ১ | ১১১ | ১১ |
| মোমবাতি | ১ | ০১ | ০১ |
| মিছরি উত্তম | ১ | ১০ | ১০ |
| মিছরি মধ্যম | ১ | ১০ | ১০ |
| মোরা উত্তম | ১ | ০ | ০১ |
| মধ্যম | ১ | ০১০ | ০১ |
| চিনি কাগরি | ১ | ০ | ০১০ |
| মধ্যম | ১ | ০ | ০১১ |
| বার বিনি | ১ | ০১ | ০ |
| ভেতুল | ১ | ১১০ | ১৫ |
| জাম্বু | ১ | ০১ | ০১ |
| চন্দন | ১ | ১০ | ১০১১ |

এই পদার্থের বর্ণনা পুরানপুরে ছাপাখানাতে পুতিয়াছে। পদার্থের ছাপা হইল। বাহার লগনের আশীক হইল। পুরানপুরের ছাপাখানাতে আপন নাম পাঠাইলে সন্তুষ্ট। বাহার সন্তুষ্ট। পদার্থ বহিতেছে ডাহার মূল্য অনেক এক টাক। বিনি বারক করিয়াছেন বিনি ডাহার নিকটে করিল না পহেছে তবে তিনি পুরানপুরের ছাপাখানাতে সন্তুষ্ট। বাহার ডাহার নিকটে পদার্থ বহিতেছে।

সমাচার দর্পণ

১৪৪ সংখ্যা।

শনিবার।

১৭ ফেব্রুয়ারি মঙ্গল ১৮৭১।

১ ফাল্গুন মঙ্গল ১২৭১।

দর্পণ দুই সৌন্দর্যের কার্যবিবরণী: বৃত্তান্তিহ কান্ড সমাচার দর্পণ ১।

কোলালির কাণ্ড।

কোলালির শতকরা জয় টাকার সুখের
কাণ্ড জয় করিতে হইলে শতকরা তিন
টাকা আট আনা প্রিমিয়াম। বিস্ময় করি
তে হইলে শতকরা তিন টাকা প্রিমি
য়াম।

সমস্তের সজ্জা।

| | | | | |
|----|---------|-------------|----|---------|
| ১৭ | কিছুআরি | শনিবার | ১ | ফাল্গুন |
| ১৮ | ৫ | রবিবার | ৮ | ৫ |
| ১৯ | ৫ | সোমবার | ৯ | ৫ |
| ২০ | ৫ | মঙ্গলবার | ১০ | ৫ |
| ২১ | ৫ | বুধবার | ১১ | ৫ |
| ২২ | ৫ | বৃহস্পতিবার | ১২ | ৫ |
| ২৩ | ৫ | শুকবার | ১৩ | ৫ |

ইন্ডাস্ট্রি।

অভ্যুত্থি।

মোঃ কলিকাতার সদর ডাক ঘর হই
তে ৯ ফেব্রুয়ারি তারিখে এই সমাচার
দেওয়া যাইতেছে যে মোঃ কলিকাতা ও
মন্দিপুর ও হাওড়াগাঁও ও কানপুর ও মিল
পুরি ও কানপুর ও ইটোয়ায় পাণ্ডাইবার কা
রখাটির পুলিস ১৪ ফাল্গুনের তারিখে
আলীগড়ের ডাক ঘর হইতে রাহী হইয়া
কণি গজ মোকামে গেলেন গিয়াছে।

বাটী বিক্রয়।

ইন্ডাস্ট্রি দেওয়া যাইতেছে যে বাগিচা

আরের ঐহরদাল মিত্রের এক ডালা বাটী

১১ ফেব্রুয়ারি বৃহস্পতিবার তারিখে মসী
য়ের দিলায়ে বিক্রয় হইবেক।

সমাচার দর্পণ।

ব্রাহ্মসম্মিলন।

৯ আশ্বিন।

ঐযুত জেয়ু অম্মোঃ সাহেব অম্ম
দালী গুদামের অধীকৃত পেশকার হইয়া
গায়েল।

১ ফেব্রুয়ারি।

ঐযুত জার ওদার সাহেব জিলা রাজ
সহীর অফিসের রেজিষ্টার হইয়াছেন।
ঐযুত জে বিলকো সাহেব জিলা বীরজ
মির অফিসের রেজিষ্টার হইয়াছেন।
ঐযুত এম্ঃ করি সাহেব জিলা গৌরক
পুরের অফিসের রেজিষ্টার হইয়াছেন।

পুলিস।

মোঃ কলিকাতার পুলিস মোতালাকের
সাহেবেরদের ১০ মার্চ তারিখে তোলহালে
অর্থাৎ সাধারণ ঘরে মিলিল হইবেক।

সরীষ আশান।

সরীষ আশান হইতে সমাচার দেওয়া
গিয়াছে যে ১০ মার্চ তারিখে নর বণ্ডার
সময়ের সুলিমকোটের অফিসে খোদা
যাইবেক।

মুখ।

বোম্বে হইতে সমাচার আসিয়াছে যে
ঐযুত জেজেন্ড সফলদীন সাহেব লিঙ্কা
মার্লির বোম্বে সম্মেলনের সহিত ১৪
দিনের মধ্যে সুলিয়ান গজ আফ্রান করি
য়াছেন। এখন ১৪ তারিখে গুজরাট
লে গভের লিকটে গেলেন ডামল বিশেষ
রা অতিশয় গজ রুকা করিয়াছিলেন।
ডামল সাহেব তাহার কিছু দূরে আ
সিয়া আশানদের সৈন্যের অর্ধেক পুকা
ইয়া রাখিয়া অর্ধেক সৈন্য সময়ে পূ
র্বার গভের লিকটে গিয়া গভের সৈন্য
বাহির করিবার ওপায় করিলেন। গভের
ই-গুণ্ডার সৈন্য ওদু দেওয়ী গভের
মহাই হইতে কতক পদাতিক সৈন্য বাহিরে
আইল তারিখ ১০ বেলায় সময়ে সাহেব
তাহারদের ওপরে আক্রমণ করিয়া বর্ষা
ও ডোলাকুরদারা তাহারদের অলেক দণ্ড
করিলেন এবং গভের গুণ্ডারের ওপরে যে
সকল লোক ছিল তাহারদিগকেও বন্দুক
বারা সাহায্য করিলেন ইহাতে তাহার
ঘের কামিল সকল বন্দ হইল।

এবং সাহেব লিখিয়াছেন যে তাহার
সরী সেনা সকল মুক্তাঙ্কে অতিশয় সা
হসবৎ বৃদ্ধ করিয়াছে। এবং সাহেব
পুণ্য বৃদ্ধ না করিয়া এক কালে গভের
মধ্যে খোদার ওদোণী করিয়াছিলেন
কিন্তু দণ্ড গজ দণ্ড দিচ্চ না হইলে না
য়েল না ও গভের মধ্যে এক শত সৈন্য
আছে ইহা আসিয়া এক কালে আক্রমণ
করিলেন না। সে গভের অধ্যাক সুলি
নাম এক কাকি জে-সা রাখিতে গজ

সমাচার দর্পণ।

হইতে পলাইল। সাহেব তাহাকে আটক করিতে পারিলেন না। কিন্তু কাগজ পত্র অনেক রাখিয়া গিয়াছে তাহাতে তাহার অংশীরদিগের সন্ধান জানা যাইবেক। তাহাঙ্ক নিম্নে অন্য দুই গড় আছে সে গড়ের সমস্ত শক্তি নাই কিন্তু সাহেব লিখিয়াছেন যে ঐ অপর ত্রাহার এক গড়ে লুকাইয়া রাখিবে। সাহেবও তাহার পর দিবস সেখানে যাইবেন এবং সাহেব যে গড় লইয়াছেন সে গড় সেখানকার ডাকঘরকে দিয়াছেন ও সে গড় নান করিতে আঁকা দিয়াছেন।

মোঃ বোম্বে।

মোঃ বোম্বেহইতে সমাচার আসিয়াছে যে এই বৎসর সেখানে বালিকা অভিযন্ত হইয়াছে ১৮১৮ সালে দুই লক্ষ আট হাজার লক্ষ শত ম্যান ভুল বিক্রয় হইয়াছে। এবং ১৮১৯ সালে এক লক্ষ সাত হাজার তিন শত চল্লিশ ম্যান বিক্রয় হইয়াছে। এবং ১৮২০ সালে কেবল বিশ হাজার এক শত মস্তুরি ম্যান বিক্রয় হইয়াছে। এবং ১৮১৮ সালে ইংল্যান্ডীয় স্বেচ্ছাসিদ্ধি আহার শ্রমত্মান আসিয়াছিল এবং ১৮১৯ সালে চল্লিশ ম্যান আসিয়াছিল। ১৮২০ সালে কেবল বিশ ম্যান আসিয়াছিল।

মুরশেদাবাদ।

মোঃ মুরশেদাবাদহইতে ৭ খ্রিষ্টাব্দে তাহিমে সমাচার আসিয়াছে তাহাতে জানা গেল যে আলুআরি মুসে ঘাৎ বিক্ষিপ্ত হইয়াছিল কিন্তু এখন অলাভাবে উদ্দেশ্যের শস্যাদি লক্ষ হইতেছে ইহাতে বুঝা লোকেরা অনেক পুথি লইয়াছে।

নুতন জাহাজ।

৩ খ্রিষ্টাব্দে তাহিমে মোঃ কলিকাতাতে দুই কোম্পানীর এক নুতন জাহাজ আসিয়াছে এবং কলিকাতার এক পুথি ন ওকীল ফরাসিস সাহেবের সম্মুখে কার্জন তাহার নামানুসারে ঐ জাহাজের ফরাসিস নাম রাখা গিয়াছে। এবং মোঃ সাহেব লোক তাহা দেখিতে গিয়াছিলেন দুই কোম্পানী তাহারদিকে নিয়ন্ত্রণ করিয়া গুপ্তকরণে থাকা করিয়াছেন।

নুতন ব্যবস্থা।

যে লোক যিখা বাঙ্কলোট পুস্তক করি ত তাহার বস্তু মীনে হইতে সমস্ত ব্যবস্থা পুথি জিল তাহাতে ইংল্যান্ড অনেক লোক মহানভার নিম্নে অনেক পুথি লিখিল যে এ অপরাধে পুণি বস্তু হয়। তৎপুস্তক মহানভার আঁকা করিয়াছেন যে হস্ত লক্ষ্যে লেখি যে লোক পুস্তক করিলে তাহা পুথি হইলে সে লোকের দেশে বন্দী হইবেক।

কিন্তু অনুমান হয় যে মহানভার ঐ বিষয় বিবেচনা করিয়া অন্য কোন বস্তু দিই করিলেন যেহেতুক দেশে বন্দী হইতে লোকেরদের তাহাঙ্ক ভয় নাই।

দ্বিতীয় রাজধানী পাশি।

গত ৩ আগস্ট তাহিমে পাশি শহরের একভাগে অতিলাগিয়া আদি কোম্পানিগত ঘর ও গরাম পুস্তি তাহাঙ্ক হইয়াছে ইহার মধ্যে পঞ্চাশ হাজার ম দিয়ার শিখা দক্ষ হইয়াছে ইহাতে অনুমান হয় অনেক লক্ষ টাকা দিয়ার দুখা লক্ষ হইয়াছে সে আদিগণের ঘর রাখিরা সম

যে আরম্ভ হইয়া পরদিন সূর্য যক্ষাণ্যাক্ত জিল তাহাঙ্ক নির্দেশের কারণ পল্টনের অনেক গোরা গিয়া পুস্তি হইয়াছিল তাহারা দক্ষ মদিরার গাঙ্গে অনেক মস্ত হইয়া পুস্তি তাহাতে অনেক লোক ম দিল। সেই অধিদায়ে আশী জন আ ঘাণী হইয়াছিল তাহার মধ্যে বহুত ম দিল ও কতক চিহ্নমানয়ে পাঠান গেল। দুই জন কেহারা এক ঘরে বসিয়াছিল তাহারদের তৎপুস্তি অধি ব্যস্ত হইলে বাহির হইলে পথ না পাইয়া সেই ঘরে দক্ষ হইয়া ম দিল। ইহাতে তথাকার লোকেরা কহে যে দুই লোকে অধি দি য়াছে যেহেতুক এক কালে তিন মানে অধি লাগিয়াছিল।

আশ্বাষ চিহ্নমা।

ইংল্যান্ড দেশের এক নগরে এক স্বা পাণ্ডুরোগে অনেক দিনপর্যন্ত পতিত। জিল পরে লণ্ডন শহরে গুপ্ত চিহ্নমানের নিম্নে সে চিহ্নমানের নিম্নে গেল সেখানেও রোগ পুতীকার না হওয়াতে পুনরায় আশি ঘরে আইল। গত ৩ আগস্ট অনেক চিহ্নমানের একত্র পরামর্শ করিল যে শরীর কাটিয়া অল দিগ ত করিলে পুতীকার হইবে। এইকণ চিহ্নমা অনেক মানে করিয়া থাকে। পরে দুই চিহ্নমানের অভিমানবীনে ঐ ক্ষীর ওদর কাটিয়া তাহার লাণীহইতে বৃক্ষের আটার মত ঘন অল ক্রমে নির্গত করিয়া সে সন্ধান উত্তর করিল তাহাতে ১৪০ সাত পোনের শেষ অল হইল সে ক্ষীর ব্যয়কর্ম গম্মিগ্রন্থ বৎসর সে ক্ষীর এমত সহিষ্ণুতা যে এই পর্যন্ত করিল হইতেও সে কোন শয় করিল না আশি স্বভাবে থাকিল। ওদর কাটিবার সময়

সমাচার দপণ!

সে মৃত্যুলা জিল পের সে মরনা হইল
সময় ঐ ওহি দারা সে মৃত শুকু হইয়া
সে অপ্রাণী হইল।

চীন দেশ।

চীন দেশের মাঝাও শহরইহাতে সমা
চার আদিয়াছে যে চীন দেশে ইংল
ণ্ডের এক জন চীনায়ে এক লোককে বধ
করিয়াছে ও পুত্রকে ওধাতে ইংলণ্ডীয়ের
দেয় বানিজ্য বন্দ হইয়াছে তাহার বিশেষ
জানা গেল।

আহাতির এক সাহেব খ্রিষ্ট জলের
কারণ এক নোকারোহণ করিয়া তাহার
হইতে এক নদীতে গিয়াছিল সে নদীর
তীরে অনেক চীনায়ে লোক ছিল তাহা
রা ঐ সাহেবকে অনেক বড়ু করিল।
তাহার সে আশন বন্ধুকে মটর গুরিয়া
তাহার দ্বারা পুত জাতিল তাহাতে
তাহারা ফল হইল না পরে এক গুলি
গুরিয়া বন্ধুকে জাতিল এক জন চীনায়ে
লোক মারা গেল। পরে সাহেব সেখান
হইতে ইংলণ্ডীয় যুদ্ধ তাহার আশ্রয়
করিয়া আপন পান রক্ষা করিল। চীনায়ে
বিভারক্তা যখন ঐ সাহেবকে বিবিরবার
দিয়া ঐ আহাতি আছিল তাহার কিছু
পুত্র বৈবান সেই আহাতি এক লোক
আজ্ঞাও হইয়া মরিয়াছিল আহাতির
লোকেরা চীনায়ে বিভারক্তার হাতে সেই
লোকের দিয়া করিল যে এই লোক তো
মারদের লোককে খুঁ করিয়াছে। চীনায়ে
যে লোক মনু হইয়াছিল তাহার লোকে
রা করিল যে সে লোক এই লোক নহে
ইহাকে লইব না। পরে আহাতি লোক
রা ঐ বিভারক্তার সহিত যোগ করিয়া
যিয়া লিখিত করিল।

আশ্বর্ষ্য ঘটনাসমূহ।

ইংলণ্ড দেশে এক শহরে এক স্ত্রীর মাত
সম্ভান বর্তমান আছে। এক গাত ১০
জুলাই তারিখে ঐ স্ত্রীর এক সময়ে তিন
পুত্র যমজ আদিয়াছে।

তাহার অন্য এক শহরে এক চিকিৎসক
আছে সেই শহরে দুই স্ত্রীর পুনর বেদনা
হইয়াছিল তাহাতে ঐ চিকিৎসক সময়ে
দুই স্থল গিয়া পুনর করাইল তাহাতে
দুই স্ত্রীর গর্ভে পাঁচ সন্তান হইল।

ঐশ্বর্য্য ইংলণ্ডীয় বাবশাহ।

ইংলণ্ড দেশে এই জলুনা হইয়াছে যে
ইংলণ্ডের ঐশ্বর্য্য বাবশাহ জমিদার দেশা
ভুক্ত হালের শহরে ভূমি করিতে যা
ইব ন এক সেখানকার লোকেরা তাহার
কারণ নানা পুকার আয়োজন করিতেছে।

আশ্বর্ষ্য গোমুখ।

ইংলণ্ড দেশের এক গুহা এক সাহেব
হুনিয়া দেশ হইতে কিছু গোম আনিয়া
আপন ভাগানে বুনিয়াছিল তাহার মধ্যে
এক বীজতে সত্তর বৃক হইল ও সে বৃক
সকল তারিখ হাত দৌর এবং তাহার
জলের রস। আট অর্ধ বার আঙ্গুল
পর্ন্ত দৌর হইয়াছিল।

বোলতা।

গাত ২০-মারে ইংলণ্ড দেশে অতিশয়
বোলতা হইয়াছিল তাহার দংশনে অ
লেক লোক মৃত্যু পাইত। তাহাতে এক
ওষধ সৃষ্টি হইয়াছে যে বলাভের খনি
মার মধ্যে নীল দিয়া অলেক ভিজাইয়া দা
শনবানে ঘষিয়া জালা নিব্র্ত হয়।

লোকেরা যখন বোলতার দংশন জালা
তে তুলিত হইত তখন ঐ বলা ভিজাইয়া
জালা নিব্র্ত করিত।

শিনাব্রুটি।

ইংলণ্ড দেশে গত ১৪ জুলাই তারি
খে অতিশয় শিনাব্রুটি হইয়াছিল তাহা
তে লিবরুল শহরের নিকটে অনেক ক্ষয়
মারা পড়িয়াছে ও বহু বাড়ি হইয়া এক
গো ও এক কুর মরিয়াছে ও নগর ও
গুহা অলময় হইয়াছিল ও নীচ পোতা
ঘরের মরিয়াছে অল ওষ্ট্রিয়াছিল এবং
হালে অলের মোড়ের দারা দাঁহার পা
থর পর্যন্ত ওষ্ট্রিয়াছিল এবং বৈকাল বেলা
জের শহরের লোকেরা কেবল নদীর
নাম দেখিল।

ভূত্ব দেশ।

ফ্রান্স দেশে গত ১০ জুলাই তারিখে
অতিশয় ভূত্ব ও বৃষ্টি ও বজ্রপাত হইয়া
ছিল তাহাতে অনেক পাঁকার ঘর পড়িয়াছে
ও দুই শত বৃক বৃক সময়ে ওধাত হ
ইয়াছে। অনুমান হয় যে সেই সময়ে
ভূমির ভূত্ব ও ইয়া থাকিবে। এক ঘরে
চারি বালক ছিল সে ঘর পড়িয়া দুই বা
লক তখন মরিয়াছিল ও এক বালক আ
দাতী হইয়াছিল অবশিষ্ট বালকের কোন
প্রাণত হয় নাই যেহেতু ঘরে দুই
আদাত তাহার দুই দিকে পড়িয়াছিল সকল
ভার সেই দুই আদার ওপরই ছিল ই
হাতে সে বালক রক্ষা পাইয়াছে।

ভূকতি বেরি সাহেব।

ফ্রান্স দেশীয় বাবশাহের ভ্রাতৃ পুত্র যে
ভূকতি বেরি সাহেব মন হইয়াছিলেন
তাহার অরোগ্যে তাহার এক পুত্রমুখ

সমীচারণ দপণ।

করিয়া রাখা যাইবেক তাহাযে গরুরে
কালীন চান্দা হইতেকে তাহাতে বাদেন
বেশের ঈশ্বরী মহারানী ১০০ দুই লত
পঞ্চাশ টাকার সহী করিয়াছেন।

ইংগণের ঈশ্বরী মহারানী।

ইংগণের ঈশ্বরী মহারানী
যে শ্রীযুত মহারাজের সহিত ঈশ্বরী
মহারানীর বিবাদের বিচার হইতেছিল
তাহাতে শ্রীযুত মহারানীর বিশেষ সাফীর
বের অরাদবদী সার হইয়াছে গত ৩ সে
প্তম্বরে দিন সভাহের বারান বিচার বন্দ
হইয়াছে এবং মহারানীর ওকালকে ব
নন্দ সাফী প্রস্তুত করিবার কারন বিচার
কর্তার দিন সমুদাই যেমুদা বিয়াছেন।

ইংগণীয় বিশিষ্ট কলীশ সাহেব ও বিক্রী
এই সভর জন ঈশ্বরী মহারানীর পক্ষ
সাক্ষী দিতে উপস্থিত হইয়াছেন।

কৌতুকোপাখ্যান।

এক ব্যক্তি বিহ লোক প্রদুরকল এক
কৌতুকের ওপাখ্যান সমাচার দর্শনে তা
পরিবার কারন পাঠাইয়াছেন তাহা আ
গামি সম্ভারে জ্ঞান যাইবেক।

আজ্ঞা করা য়।

ইংগণের ঈশ্বরী মহারানী
শ্রীযুত লণ্ডন শহরের এক জনের স্বপ্নের বি
ষয় জ্ঞানিয়াছেন। লণ্ডন শহরে এক ব্যক্তি
পূরান বস্ত্র কল পরিচালিত করিয়া বিক্রয়

করিত সে সকল বস্ত্র উত্তর করিবার কারন
আপন বাড়ীর সমুদায় ওয় এক কাঞ্চ টা
বিল গিল সেই কাঞ্চ আঁপনার ঘোড়ালী
ঘরের ঘরের সহিত মলগণ। এই লোক
এক বিহন যোগ্যদু। রাশিতে বস্তু দেখিয়া
উপিয়া এই কাঞ্চের ওপার আনিয়া বসিল।
তাহার নিকটস্থ লোকেরা তাহা দেখিয়া
ওগ্নি হইল যে সে পায়ে দেখান হইতে
পড়িয়া যাবে। তাহার আনন্দ বিবেচ
নার পর তাহার এই ঘোড়ালী ঘরে বাইরা
অতিদীরে এই কাঞ্চ টালিয়া আঁপনার ঘরের
নিকটে আনিয়া দেখিল যে সে নিরুদ্ভূত।
তখন তাহাকে জ্ঞান হইল এবং সে তা
গিয়া দেখিল যে আপন এই কাঞ্চের ওপার
বসিয়া আছিল। তাহাতে অশ্রুত মৃত
তুল্য অচেতন হইল।

পর সে সময়েই হইয়া আঁপনার বস্তু
বৃত্তি কহিল যে আমি বস্তু দেখিতেছি
লাম যে আমার ভ্রাতা ও আমার স্ত্রী দে
শান্তরে আছে তাহারা আমাকে দেখা
নৈ ঘাইতে নিমিয়াছে এ এক ছোকা পাঠ
ইয়াছে তাহাতে আমি এই ঘোড়ালী ও
দুই দেখানে ঘাইতেছিল।

এই লোকেরা শুনিয়া থাকিতে শুনিলাম
যে আমার ভ্রাতার মৃত্যু হইয়াছে। এই
সময়ে ভেয়রা আমাকে জ্ঞান হইল।
ইহা শুনিয়া সবলে হাসিতে লাগিল এ
জন্য লোক সেই সময় নিমিয়া রাগিল।
পর দিবস তাহার ভ্রাতার নিকট হইতে
এক পত্র আইল তাহাতে আছিল যে যে
সময়ে কাঞ্চ টালিয়া ঘোড়ালীর ওপার
আনিয়াছিল সেই সময়ে তাহার ভ্রাতার
মৃত্যু হইয়াছে।

বাণীর তার।

| তারিখ | মোম | অর্থ | পণ্ডিত |
|----------------|-----|------|--------|
| নুপারি | ১ | ৫৫ | ৩৫০ |
| ভেড়ো উল | ১ | ১০ | ১০ |
| গাছ মরিচ | ১ | ১১ | ৩ |
| মারিকেল উল | ১ | ১০ | ১০১ |
| তুলা কাছোকা | ১ | ০ | ০ |
| কাচা চপ্পুর | ১ | ১০ | ১৫০ |
| পটমাই আঁরা | ১ | ২ | ২০ |
| চাল পাটমাই | ১ | ১১০ | ১৫ |
| পাছুর উল | ১ | ১১ | ১১০ |
| পাছুর মধ্যম | ১ | ১০ | ১০ |
| মুগী উল | ১ | ১৫০ | ১ |
| মুগী মধ্যম | ১ | ১৫০ | ১ |
| বসিমা | ১ | ১০০ | ১০ |
| মুগা গোম | ১ | ১০০ | ১০ |
| পটমাই বুট | ১ | ১১০ | ১০ |
| অঁপার কাচি | ১ | ১১০ | ১০০ |
| উত্তমপাড়া পুত | ১ | ১১ | ১১ |
| মধ্যম পুত | ১ | ১১ | ১১ |
| ভেড়া বুট | ১ | ১১১ | ১০ |
| মধ্যম উল | ১ | ১১১ | ১১ |
| মোমবাড়ী | ১ | ৩১ | ১১ |
| মিছুর উল | ১ | ১০ | ১ |
| মিছুর মধ্যম | ১ | ১০ | ১১ |
| মোটা উল | ১ | ৬ | ৬৫ |
| মধ্যম | ১ | ৩১০ | ৩১ |
| চিনি কাচি | ১ | ১ | ১০ |
| মধ্যম | ১ | ১ | ১১০ |
| খার চিনি | ১ | ৩১০ | ১ |
| ভেড়ল | ১ | ১১০ | ১ |
| তামাক | ১ | ৩১০ | ১ |
| চন্দর | ১ | ১১ | ১০১০ |

এই সমাচার দপণ শ্রীমঙ্গলপুরে ছাপাখানায় প্রস্তুতকৃত পরিবারে ছাপা হয়। ইহার লগনের অবশ্যক হইলে তিনি শ্রীমঙ্গলপুরে ছাপাখানায়
আপন নাম পাঠাইলে লগন হইবে। কাঞ্চ তাহার নিকটে পাঠান যাইবেক তাহার মূল্য মানে এক টাকা। যিনি কাঞ্চ করিতেছেন যদি তাহার
কাঞ্চ পঁহছে তবে তিনি শ্রীমঙ্গলপুরে ছাপাখানায় সমাচার দিব্যাক তাহার নিকটে পাঠান যাইবেক।

সমাচার দর্পণ

১৪৪ সংখ্যা।

পরিবার।

১৪ ফেব্রুয়ারি মঙ্গল ১৮৭১।

৪৪ ফাল্গুন মঙ্গল ১৩৭৭।

বঙ্গের দুই দেশীয়ের কার্যবিবরণ। বৃত্তান্তনিহিত কাম সমাচারস্বরূপে ॥

কোম্পানির কাণ্ড।

কোম্পানির শতকরা জয় টাকার সুদের কাণ্ড কয় করিতে হইলে শতকরা তিন টাকা আট আশ পয়সায়। বিস্ময় করিতে হইলে শতকরা তিন টাকা পয়সায়।

সমুদ্রের পক্ষিকা।

| | | | | |
|----|-----------|-------------|----|---------|
| ১৪ | ফিল্ডজারি | পরিবার | ১৪ | কালুগুণ |
| ১৫ | ই | রবিবার | ১৫ | ই |
| ১৬ | ই | সোমবার | ১৬ | ই |
| ১৭ | ই | মঙ্গলবার | ১৭ | ই |
| ১৮ | ই | বুধবার | ১৮ | ই |
| ১৯ | মার্চ | বৃহস্পতিবার | ১৯ | ই |
| ২০ | ই | শুক্রবার | ২০ | ই |

ইস্তাহার।

ইস্তাহার দেওয়া ঘাইতে যে ইন্দুসক কোম্পানী আংশি আংশ মানে ভাঙ হইবে ও তাহার হিন্দব লিফাং হইবেক যদি কাহারো এই আংশে পাওনা থাকে তবে মোহাৎ মরো হাজীর হইয়া আসন পাওনা সুকিয়া লইবেক মোহাৎ গত হইলে কাহারো কথা গুহা হইবে না।

অপহৃত পল্লভাট।

সাক্ষর যে ডিওর গিয়াছিল পুর্বে জাপান গিয়াছে এখন তাঁহার সমাচার পাইয়া গেল যে সে সকল গিয়া পাওয়া

গিয়াছে এবং তাহাতে ঘাহারি চিঠি জিল তাহারি নিবটে পাঠান গিয়াছে।

সমাচার দর্পণ।

রাজকর্মে নিয়োগ।

১ ফিল্ডজারি।

ঐযুত জেম্ ডাইমন্ড সাহেব মোঃ কলিপুরের কালেক্টর হইয়াছেন।

ঐযুত মি প্যাটেনসন সাহেব মোঃ পাটনার পরিসিট পঞ্চদশের কালেক্টর হইয়াছেন।

ঐযুত এল কেলেরি সাহেব মোঃ মারপের কালেক্টর।

ঐযুত হেলিয়ার্ড সাহেব বেহারের আর্মীয়ে অধীক্ষক পেকার।

ঐযুত জে আর দেবদাস সাহেব মজিহা ও আলফ বেপের অধীক্ষক সেন্ট টারি পেকার।

১০ ফিল্ডজারি।

ঐযুত ডায়মন্ড হারবট ম্যাক সাহেব মজিহা শহরে ও লক্ষ্মী নদীর ওয়ডগার্ড বর্ডে মেশে ঐযুতের লাইবের পেকার হইয়াছেন।

ঐযুত এয়ার ওয়াম কালেক্টর সাহেব ই কয়ে লিয়ু হইয়াছেন।

ঐযুত এয়ার জর্জ সাহেব

ঐযুত টার্নি ট্রুজর সাহেব
ঐযুত ট্রুজর হালান সাহেব
ঐযুত ওলাম রেক্স হার্ব সাহেব
ঐযুত লেফ ক মেবিন সাহেব
ঐযুত লেফ ক ডায়মন্ড ওয়ার্লো সাহেব ই।

১০ ফিল্ডজারি।

ঐযুত এ হালু বোই সাহেব বঙ্গের ম্যেজর ওয়র ডায়ের অজের পেকার হইয়াছেন।

ঐযুত জি এ বুনি সাহেব কলিকাতার চতুর্দশ পুন্ডের অজের পেকার হইয়াছেন।

ঐযুত এচ লিঙ্গল সাহেব সদরদেওয়ানী ও লেজিসলেচার রেজিস্ট্রারের পেকার হইয়াছেন।

ঐযুত জে এচ জি কুল সাহেব জিলা লাইব্রার অজের পেকার হইয়াছেন।

বহুদূর পুন্ডের গণেশ।

কাশী অফিসের এক রাজা বহুদূর নির্মিত এক গণেশ দেবের মূর্তি বহুদূর যাত্রা করিলেন সে মূর্তি পুন্ডের তিব্ব হইতে অফিস পৌঁছিতে নাহে। পরে তাহা বিক্রয় করিতে ওহুত হইয়া তাহার মূল্য মাত্র হাজার টাকা কহিয়াছিল এবং সে মূর্তি মোঃ কলিকাতাতে আনা যাই ইহুতিবার বিক্রয় হইবেক।

সম্রাট।

মোঃ কলিকাতার চিঠি ৭ লাটারির মাল

সমাচার দর্পণ !

১০ খ্রিস্টাব্দি তারিখে ওয়াশিংটন তাহার শেষ দিবসে যে ওয়িল তাহাতে এক লোক এক লক্ষ ব্যক্তি হাজার টাকা পাইয়াছে। ও অন্য জন এক লক্ষ টাকা। আর এক জন দশ হাজার টাকা। আর তিন জন পাঁচ শত টাকা। আর তেইশ জন দুই শত পঞ্চাশ টাকা পাইয়াছে।

আশঙ্কা করি।

গত পৌষ মাসে জিলা ঘোঁষাহরের ম বো ভালাইপুর গুমের জন কএক ভাগ্য বান মুসলমান চারি শত টাকা লইয়া নি কটক বজরাপুর ও রঘুনাথপুরের জুপিয়ারদের চারি নোকা ভাড়া করিয়া বাহা অঞ্চলে হানা খরিদ করিতে গিয়াছিল পথের মধ্যে অন্য এক নোকাতে নয় দশ জন মুসলমান ঘাইতেছিল তাহারা ভালাইপুরের মুসলমানদের সহিত অতি শয়লিচারনুর্ক যথোচিত পুণ্য করিল ও কহিল যে আমরাও দুই হাজার টাকা হানা খরিদ করিব অতএব একত্র এক দ্বাদশেই খরিদ করিব। পরে এক দিবস ভালাইপুরের মুসলমানেরা এই মুসলমান লেরদিগকে লিখতন করিয়া অন্ন ব্যঞ্জন খাওয়াইল। অন্য এক দিবসে জন্ম মো কামে এই মুসলমানেরা ভালাইপুরের মুসলমানেরদিগকে কহিল যে ভাই তোমাদের বের মনে আট দশ জন হিন্দু লোক আছে অন্ন ব্যঞ্জন করিলে সকলের হইবে না। একজন আশ্রয় জলপানের সাম্য গুণ পুস্ত্ত করিয়াছিল। ইহা কহিয়া সকলকে নিমন্ত্রণ করিল। পরে মহাশয় সময়ে ভালাইপুরের চারি নোকার হিন্দু ও মুসলমান দেহু জন ছিল সকলকে এক স্থানে পাতি দিয়া বসাইল এবং দুগি ও

চিটা স্বল্পেদ দিন ইহারাও আমোদে খাই ইতে আরম্ভ করিল ও সন্দেশ পুতাক জনকে আদি শের দেউ পোয়া বরাওদে দিন সেই সন্দেশ খাইবামাত্র ভাব লোক ক্ষিপ্ত হইয়া ওলঙ্গ হইল পরে তাহারদিগের টাকা ও বস্ত্রাদি যে ছিল তাহা লইয়া সেই মুসলমানেরা গমল করিল। যাহারাও ক্ষিপ্ত হইয়াছিল তাহারদের দুই চারি জন সেইখানে মরিল তাহারা হাঁগিয়া আনিয়াছে তাহারদের অঘ্যানি সন্দেহ কোন হয় নাই ও বাক্যের অভ্যুত দুই হয় নাই।

মুন।

মুরশেদাবাদহইতে ৭ খ্রিস্টাব্দি তা তারিখের সমাচার আনিয়াছে যে মোহরমপুরের গোঁরা পল্লীর এক জন সার্জন অর্থাৎ হাজরার পুত্রদিন রাত্রি আপন পুহরিতে থাকিত। তাহার স্ত্রী পুত্রদিন তাহার রাত্রি খাওয়া বস্তু আনি দিত। এক দিন ঐ স্ত্রী আপন স্বামীর খাওয়া বস্তু আনিয়া দিয়া জিভাভাঙ্গা করিল যে কাজি ভুগি ঘরে ঘাইবা। তাহাতে সার্জন ওত্তর করিল না কিন্তু তাহার মনে সন্দেহ জন্মিল। পরে সার্জন তা পন নিত্য কর্ম ন্যাস্ত করিয়া অধিক রাত্রিতে আপন ঘরে গিয়া দেখিল যে তাহার স্ত্রী অন্য এক গোঁরার সহিত একত্র এক খাটে নিদ্রিতা আছে। ইহা শুনি সার্জন ক্রোধী হইয়া আপন স্ত্রীর হাতে বন্ধুর সরালের খোঁচা মারিল তাহাতে সে স্ত্রী চীৎকার শব্দ করিল সেই শব্দ শুনিয়া নিদ্রিত গোঁরা জাগ্রত হইয়া উঠিল। না জন তাহার পক্ষাৎ গিয়া তাহার পক্ষ ঘেঁষে সরালের খোঁচা মারিল সে সরাল তাহার ওদর ভেদ করিয়া বাহির হইল

তাহাতে সে ডাখিল মরিল। পরে তাহা কে যখন আদালতে আনিল তখন সা জন যথার্থ কহিল। এমন তাহারা দুই স্ত্রী পুত্র অদালতে কএম আছে কি শুক্ল হয় আশা যায় নাই।

সিংহলদ্বীপ।

ঐযুত মর এম্বার পক্ষেট সাহেব সিংহলদ্বীপের বড় সাহেব হইয়া ইংলণ্ডহইতে আসিতেছেন ইহা পূর্বে জানান গিয়াছে এইকালে সমাচার পাওয়া গেল যে তিনি সিংহলদ্বীপের নিকটবর্তী হইয়াছেন মোকামে অভিশ্রম পাইছেন।

আহাঃ।

ইংলণ্ডহইতে মোঃ বোম্ব এক জাহাজ পঁয়ত্রিশকে তাহাতে সমাচার আনা গেল যে ইতালি দেশে অতিশয় রেশম জন্মিয়াছে সে রেশম ইংলণ্ডে গিয়াছে সেই কারণে বাঙ্গালার ও এল দেশের রেশমের মূল্য অতিশয় হইয়াছে। এবং কাওয়া ও গৌলমরিচের মূল্য ন্যূন হইয়াছে।

এই জাহাজ ইংলণ্ডহইতে আইনন কাশে এক ওনদ্বীপের নিকটে সমুদ্রের মধ্যে এক রেটে নৌকাতে সঞ্চিত কতক ধনি লোকের সহিত সাক্ষাৎ হইলে তাহার দিগন্তে ঐ জাহাজে ওঠাইয়া লইল। তাহারা কহিল যে অন্য এক জাহাজে আম্রা জিলায় কার্যক্রমে কিলারা ঘাইবার কারণে আহাজহইতে নোকা নামাইয়া তাহাতে আরোহণ করিয়া নিজ জাহাজে আসিয়াছি এই সময়ে অতিশয় বাদ্য ওপখিত হইয়া আম্রাদিগকে নোকা দমেত কিলারা হইতে সমুদ্রে মর্যো আনিলা তাহাতেই আম্রা আপন জাহাজ

সমাচার দর্শন।

হুগাইলম। তাহারদের এই কথা শুনে
গা এতাহারের লোকেরা তাহারিগণের
যোঁ বোম্বুতে নামাইয়া দিল যদি এই
আহাজার সন্নি বোম্বা না হইত তবে তা
হারা অসম্মত হইত।

রক্তক্ষালা।

যোঁ আভায়ের শহরহইতে সমাচার
আনিয়াছে যে তৎপুত্রের ম্যিন নামে
পাহাড়ীর এক প্রকার আতি ভাঙ্ক তাহা
রা আনিয়া অনেক গুম্ব লুট করিয়া বি
বিক্র করিয়াছে তাহাতে প্রাপ্ত কান্তিন
যেক্স ওআল মাহের বোতলওয়ার ও পদা
তিস সৈন্য সময়ে তাহারদের পক্ষা
পাহাড়ে গিয়াছেন তাহার। পাহাড়র
ওপরে রামপুর নামে এক গুম্ব আছে
সে পাহাড়ে বোতলওয়ার কাল চলি
তে পাঁচের না।

শিবরাত্রি।

১ মার্চ শুক্রবার ও তৎপরে দিন এই দুই
দিবস হিন্দু লোকের পক্ষ শিবরাত্রি বুত
হইবেক তৎপুত্র কোল্লানির খাআনা
ঘর বদ খাতিবেক।

সারজানী।

ইতালি দেশের এক জন ধর্মাত্মিক আতি
দুখী তিনি আতি ক্লেশ বহন করেন
তাহা বেদিয়া তাহার অন্তরী এক লোক
জিজ্ঞাসা করিল যে হে ভাই তুমি আতি
দুখী কোন ভাল চেষ্টা কর না কি হইবে
নিশ্চিন্ত থাক। তিনি ইহা শুনিয়া ওতর
করিলেন যে আমি যে যোম্ম আনিয়াছি
আমার ইন্দিয়া সকল উৎ কল্মে নিয়ুক্ত
আম। আত্ম দিলের কারণ অধিক ভাল
ও অধিকস্থান চেষ্টা করিতে কি সুযোগ

দেখ গরি হাতি মালের আশংকতা
আছে তাই আমাইতেও অনেক
অধিক দুখী লোককে দেখিতেছি ইহা
তাই আমি নিশ্চিন্ত থাক।

শুশুমতী মহারানী।

ইংরাজের শুশুমতী মহারানীর যে
মৌকদীয়া হইতেছে তাহাতে লোকেরা
সন্দেহ করিয়াছিল যে মহারাজ মহারা
নীরে ভাণী করিবেন। তাহার সমাচার
এখন জানা গেল যে মহারাজের ওজীর
সকল লোককে জালিয়াছেন যে মহা
রাজ মহারানীরে ভাণী করিয়া অন্য
বিবাহ করিবার কারণ বারম্বা লইতে কথ
নও বাসনা করিবেন না।

নুতন কল।

ইংলণ্ডে এক নুতন কল সৃষ্টি হইয়াছে
তাহাতে যেক্ষের কোষের সূত্র অন্যো পূর্ব
যে পূর্বকার যেক্ষের লোমের সূত্র অন্যত
তাহাইহইতে এখান আতিসূক্ষ্ম সূত্র অন্যো
এ তাহাইহইতে আতিসূক্ষ্ম হয়। তাহার
আবিষ্কারের সূত্র প্রকৃতিশ হাজার দুই শত
গজ দীর্ঘ হয়।

চাণ্ডীঘর লোক।

কটলও দেশে এক মহিষ মহাজনি
কর্ম্য করিতেছিল তাহাতে কোন দোষে
কর্মের ব্যাঘাত হইয়া অনেক দৈন্য হইল
তাহাতে সে ভাণনি সকলের নিকটে
গিয়া অনুগ্রহ বিদ্যু করিয়া যাঁহার যে
টাকা তাহার চতুর্গুণ দিয়া আপনি দ্রিক
হস্তে সেখানহইতে আমেরিকাদেশে
গেল ও সেখানে বাইনাম্য করিয়া ঈশ
রের অনুগ্রহে সুখি হইল বন সন্ত্য
করিব। পরে চৌদ্দ বৎসরের পর ৮৮

৮৮ মাসে পুত্র মহাজনের দিকিছে যাঁহার
যে পাঁচনা জিল তাহা বেবাক পাঠাইয়া
দিয়াছে।

বাকার ভাণ।

| ভিগিন | জোন | জবরি | পার্বত |
|--------------|-----|------|--------|
| মুগারি | ১ | ৫৮ | ০৮৮ |
| কেলেজা ভৈল | ১ | ১৬ | ১০ |
| গাহ মরিচ | ১ | ১৮ | ৫ |
| মারিকেল ভৈল | ১ | ১০ | ১০৮ |
| কুলা কছোয়া | ১ | ০ | ০ |
| আলা রঙ্গপুর | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| পাটনাই আলা | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| চান্দপাটনাই | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| পাছতি উত্তম | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| পাছতি মধ্যম | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| মুগী উত্তম | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| মুগী মধ্যম | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| বালার | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| মুগী গোম | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| পাটনাই কুট | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| অকর ভাণি | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| উত্তমগার দূত | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| মধ্যম দূত | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| ভৈলা দূত | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| মধ্যম ভৈলা | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| মোহরভাণী | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| মিছরি উত্তম | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| মিছরি মধ্যম | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| মোহা উত্তম | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| মধ্যম | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| ভিগী কাশীর | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| মধ্যম | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| খার ভিগী | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| ভৈলা | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| ভৈলা | ১ | ১৮ | ১৮০ |
| ভৈলা | ১ | ১৮ | ১৮০ |

সমীচীর দর্পণ।

হাবুর ওপাখ্যান।

অসহায়তা নগর হাত ফেরতী নামে এক জন অতিবড় বিনবান কুলীন বাহিন ছিলেন। ফেরতী যুগ্মাৎমায় রাতমায় ও অমীহারী সন্যাস্ত কানাপ্রকার বড় কথ্য সক্রিয়া বিনোদন করিয়াছিলেন।

তিনি বড় বিজ্ঞ মন্ত্রী বৃহস্পতি অমাল ডোং হাতিত এবং বড় চাকরিয়া পুটর ছান বাজ হইয়াতে সুলতান অমায় খানীক ভাংবোরে খাপক মনুজান তা হাতে তাহায়া আখীয়ার কুটীর দেওয়া নি বন্ধে পুটর করিলেন। আখীয়ার মহলের কথ্য বড় ওপাখ্যান নামা নাই।

অতঃপু য়াচে আখীয়ার পুটর হইয়া গীন মেয়ে যায় মেখালে বিকর হইয়া সুলতান খানীয়ার মধ্যে লাভ হয়। যেও য়ান ফেরতী দেখিলেন যে আখীয়ার বিনবান হয় না। অতএব ক্রিয়ম অক্রিয়ম আখীয়ার পুটর কিতে লাগিলেন। তাহা তেই তিনি অমায় বিনবালা হইলেন। কিন্তু ফেরতী নিমজ্ঞান করিয়া দুখী করেন যে তাহার এত বড় নাম তুলিলে নিম্নেই হইলময় সজ্ঞান নাই। গীন কাহা কে দিয়া ঘাইব। ওপুটর করিয়া ঘাই দান করেন।

পরে এক চন্দ্রকলা ওয়ম পুণ্ড্র অখিল। তারে সন্যাস্ত আখীয়ার সীমা নাই দেওয়ানতার পুণ্ড্র হইয়াছে। ফেরতী আখীয়ার পুটর হইতে য়াচে দান। বি করিলেন এ বড়ীত চিত্তবিকার লাগে ও জেকর গাল ইত্যাদি মারিলিক কথ্য কুরাইলেন। এযে পুণ্ড্রের ব্যয়ম জয় মান হইল অল্পশ্রমণ কাল ওপাখিত

নাম করণ হইবেক। ফেরতী সত্যময় পণ্ডিত লোককে পুণ্ড্র করিলেন যে ভো ভো পণ্ডিতেরা আমার পুণ্ড্রের নাম কি হইবেক। পুহান পণ্ডিত যিনি নিয়ত সভায় থাকেন এবং কুলার্ধ্য করিলেন যে দেওয়ানতী আপনকার পুণ্ড্রের আসনক সুলক্ষণ আছে যাহা কথিতে পুণ্ড্র মন্তবে না যদি সীমার ইচ্ছা ইনি বীচেন তবে পুণ্ড্র মনুজ হইবেন না ইনি কুলীনের ওরসে জাত আর কুলীনের নবগণের লক্ষণ আছে সে কি কি।

আখীয়ার বিনবো বিদ্যা পুটরী ওপাখি পলি। নিম্না কুটিলোদানক নবরী কুলক্ষণক।

ইহার তাহেতিরি চিত্র আছে ইনি আপনকার বংশের তিলক হইবেন অতএব ইহার নাম কুলীনচন্দ্র কিম্বা তিলকচন্দ্র রাখুন। দ্বিতীয় আল করিলেন যে দেওয়ানতী আপনকার যে পুণ্ড্র ইনি বড় কাল তপস্যা করিয়াছেন সেই বরে তোমার ঘরে অগ্নিয়ারেই ইনি অতি বড় সূর্য ময়মাবু হইবেন। ইহার তপস কামলিতা নাম আর দেখি না বরং ময়মাবুকার চাকলাশক বাবু নাম রাখাই।

জয়ী করিলেন যে দেওয়ানতী বিদ্যা লক্ষ্য ওয়ম করিয়াছেন আপনকার এক ঈশ্বর্যে এ সজ্ঞান হইয়াছেন ইনি বাবু হইবেন অল্প নন্দেহানিচি আর বাবুর চিত্র গালনার দান। কিঞ্চিৎ তপস্বত্ব হইয়াছে সে কি।

যুতী তুতীজম দান আখীয়া বুলবুলি মলিয়া গাল। অখীয়ে বন ভোজন এই কর্তব্য বাবুর লক্ষণ। অতএব ইহার

নাম তিলকচন্দ্র বাবু রাখুন। পরে অনেক ক্রিষ্টোলাতে তিলকচন্দ্র বাবু নাম দ্বির হইল। তিলকচন্দ্র বাবু ফোতে বসন্ত মৃগীকাত পদার্শ করেন নাম। আখীয়া বড় লোক তাহাকে কোণ বরি ডেইল্লা করে। দেওয়ানতী পুণ্ড্রের পদারী ঘত বীরে তত সর্গালক্ষ্যে তাহাকে জুড়িত করিলেন দেওয়ানতীর ইচ্ছা যে ঘনের ইচ্ছক পুণ্ড্রের গিলে দোলায়মান কর্তে আপন ঈশ্বর্য পুশার করে।

এযে পুণ্ড্র বড় হইতে লাগিলেন বা কাপ্তিক হইল তিলকচন্দ্র মনুলকেই বড় বাক্য করেন এ য়াচেন তাহাতে দমন না করিয়া বরং মনুলকেই তাহাতে অত্যাচার করল তিলকচন্দ্র বাবু কোন আখীয়ার লে তাহা বড় না করিয়া ফেরতী নেও য়ান শিমিয়া দিল যে তুখিম কথ্য আমি করি নাই। এইকথ্য বাবুকে লয়ে মার ঘাই আমোদ হয় ওয়ম বাবু নামে খ্যাত হইলেন তিলকচন্দ্র নাম কে ওয়ময় করে। দেওয়ান এত ঈশ্বর্য থাকিতে পুণ্ড্রকে বি দোজ্ঞান করাইলেন না করেন বুহু বের অল্যা গাখীয়া শিমিলেই হয় কলা নে থাকে বিদ্যা হবে অখি যাহা রাখি য়া ঘাইব যদি বক্ষ্য করিয়া খাইতে পারেন কথল দুখ পাইলেন না। পুণ্ড্রের কথ্য যাহা থাকে তাহাই হবে আমি দেখিতে আদিক না। বাবু যেখানে ঘাস সেই খানেই আখীয়া এ য়ান দেওয়ানতী পুণ্ড্র অনেক অত্যাচার আছে। বাবু কুলী বুলবুলি পুটতি খেলাতে নদা মায় থাকেন দেখা পকার দোকা। আছে কিন্তু করেন না। অখী-ও কায়দার খোশমায় হিয়া

এই সমীচীর দর্পণ পুরাতনপুরে ছাপাখানায় পুস্তকভাণ্ডার শরিবারে ছাপা হয়। হাবুর লগনের অপরক ছকু ক্রিষ্টোলায় ছাপাখানায় আপন নাম পাঠাইলে লগ্নেই কাল তাহার নিমিত্ত পাঠান হইবেক ছাড়া দুল মাসে এক টাকায় নিম্ন বাছ্য করিয়াছেন বরি তাহার চিত্র কাল নথ্যে তবে তিনি পুরাতনপুরে ছাপাখানায় সমীচীর দিব্যময় হাবুর নিমিত্ত পাঠান হইবেক।

মুখ্যোক্তক ওলি দেওয়ানজীর পাণ্ডিত্য
লোক বাবুর লালবিহি ও-এ বিদ্যাসুন্দর
সুন্দরী করে।

এমতে বাবুর যেতন বর্ষ বয়সকয় ইহা
সুতরাং বিদ্যে বোধি ও আনন্দময়
কেন বাবুর স্থানে ব্রাহ্মণ লয়েন কেহবা
কোন বিদ্যেয় বিবেচনা বাবুরে লইয়া
করেন শাস্ত্রার্থ বাহ্য অন্য বিষয়ও পণ্ডিত
লোক হইতে নিহত হয় না বাবুরে জিজ্ঞা
সা করিলে তাহার পের হয়। বৃত্তিভে
দী তদানন্তর মহাশয়েরা দর্শন শাস্ত্রাদির
বিভিন্ন স্থলে বাবুরে মধ্যম মানেন বাবু
জাহা বুঝেন এমত ফলতঃ কি নিম্ন পেন
করিয়া দেন ইহাতে পণ্ডিত চাকররা কেহন
যে বাবুরি দেহানুযায়ী মনুষ্য এমত
ওষম বুদ্ধি বিবেচনা আর নাই বলা গুত
স্থলে ভারতবর্ষে আনিয়াছেন বাবুর যে
মত শিষ্টতা ও নম্রবীর্য ও ধর্ম্মবীর্য
বৃত্তি ওন এমত বৃত্তি দেখি না। কে
হা আশীষ্যাদানি এ পরবর অমত বাবুর
সম্মুখে কেহন যে দেখে ইহার আনন্দ
দিত নাই ই-রাজী পারশী আরহী লাপ
হী ক্রিয়ারী আরমানি ইত্যাদি তাহ-না
যে ও-পর ই-রাজী বাবু এক মাস দেখি
বাকিলেন ইহাতে চিঠি ওলান দেখিব
মাত্রই বৃত্তিতে পারেন ও তাহার ওতর
কৃত করিয়া লিখিয়া বেন বিশেষতঃ সন্
কৃত পাশ্র্বে কোন কালে দেখিলেন জাত
নহি কিছু তাহার বাবুর করিতে পারেন
যাহা হুতক বাবু না পণ্ডিত পণ্ডিত না হবে
কি হেন দেওয়ানজীর পুত্র সুকৃত মনুষ্য
নহেন ফলতঃ ইত্যাদি করিত হব ও প্র
শ-সৌভাগ্য বাবু অজ্ঞতকালে নীত ইহা
মানে করেন যে আশীষ্য আদি আশ্রিত
কিন্তু মনুষ্যের আশ্রিত বিধ ও পণ্ডিত
কাজ বাবুর আশীষ্য আশীষ্যাদানি ও বোধ

হয় যে আশ্রিত পণ্ডিত বড়ি তব কি নিম্ন
যে অন্য লোকের মত ক্রম নয়ে বিদ্যা
শিক্ষা করিব আমি মুহুরি কিন্না-মুনসী
আমরা কোরাণী গিরি করিব না আমায়
দানাদিহারা যথেষ্ট পুণ্য ইহায়েত ও-
পুণ্যক আশুপাণ্ডিত বিদ্যাও ইহায়েত অত
এব এ আশ্রিত সন্মানে কেহন পারিগিক
সুখ ভোগাই নত্যা কোন দিন মরিয়া যা
ইব যত সুখ করিয়া লইতে পারি সেই
কর্তব্য এই মতে পুণ্ডিত বাবুর নব ওন
অন্য দর্শনপ্রতিপালনপুণ্ডিক আমোদে কা
লক্ষেপ করেন।

অলঙ্কার চাকরী দেওয়ানের মত ইহা
বাবু স্বয়ং তাহ-না বনাস্থিতি ইহা কর্তা
হইলেন কেন কর্তা বেন কেন বাবুরে
কর্তা বাবু বড় লোক কতক ওলি নির্ভর
দারদ্রু যোগ্যমুদ্র ঘাওয়াত করে। কা
হাচক বন বেন কাহাচক চাকর বেন
ওলান বাবুর পুণ্ডিত নামের অর্থ পুণ্ডিত
করিতে লাগিলেন অর্থ-যেমত মনুষ্য
কিহা নানবিধ পুণ্ডিত হইতে কন্যাস্র
মদু আহরণ করিয়া বৎ কালে চাক বন্ধ
করিয়া অধিক মদু সন্মুখ করেন পরে
কোন ব্যক্তি ঐ চাক অধি লুতা দিয়া পো
তা ইয়া মদু ভাগিয়া লয়ে বি-পণ্ডিত পের
হিনাবে চাকায় বিকৃত করে। সেই মত
বাবুর পিতা বৎকালে বৎ পুণ্ডি কিং-
করিয়া বিন সন্মুখ করিয়াছিলেন বাবু সেই
বিন হাজার চাকার নানী পুণ্ডির মত
করিতে লাগিলেন। কিছু কাল পরে
বাবু মনে ডারিলেন যে আমায় পিতা
চাকরি করিয়া এত বিঘর করিয়াছিলেন
তাহাতে আমি মাল্য অজ্ঞতঃ আমায়
চাকরি কর্তব্য চাকরি না করিলে লোক
মানে না ও মন জন পুণ্ডি থাকে হয় না।

ইহা নরহী যত করাত ও কোন নাহব
কোন স্থানে কোন কর্ম্ম-সিদ্ধ হইল
ইহার অনুমোদন করাত আনন্দের
পুণ্ডিত হইল যে বাবু চাকরি করিলেন
ইহাতে কতক ওলি বিদেশে কর্ম্মোক্ত
বিদ্যাকারী ওমোদওয়ার লোক বাবুর নি
কটে ঘাওয়াত আরছিল ইহার কর্তক
দোষাদিশিখার কর্তক স্বয়ং পণ্ডিত ইহা
য়া পুণ্ডি বৈকাল রাষ্ট্রিত বাবুর নিকটে
আনন্দের হাজার থাকে। বাবুর পুণ্ডিত
বিদ্যার কোন অংশই ওন নাই কেহন
কতক ওলি অর্থ জীয়ে কিছু আত্মা ভি
মানে পুণ্ডিত-বিদ্যে কর্ম্ম হয় না
ইহার সভাবনা নাই ওমোদওয়ারদি
গিকে এমত আশান্বিতা পরিভুক্ত রাখেন
যে বাবুর হস্তে নানা কর্ম্ম সুকৃত জাত
বিলের মতো তাহ-নাও ওষম কর্ম্ম
বেন। ইহার বাবুর নম্রতা পুণ্ডি করি
আশীষ্য মজান ও পরিবারকে ঐ মত
আশীষ্যমাত্রের সমাচার লিখ। বাবু
মনে জালেন যে তাহা কর্ম্ম হইবে না
সুতরাং অন্যেরা কর্ম্ম হিতে পারিলেন
এই কল পুণ্ডি না করিলে কোন
আশ্রিতক না অতঃ সভাবনক
সন্মুখ আশ্রিতক। ওমোদওয়ার মন
পুণ্ডি ও সন্মুখ আশ্রিতক পরে ঐ
আশ্রিত আশ্রিতা থাকেন বাবু আশ্রিত
ক্রে তাহতে অভিসম্মানপুণ্ডি যথেষ্ট
শিষ্টতার কর্ত অভ্যর্থনা করিয়া বাবুর
নিয়মিত কিন্না-মুনসী মনস্ক
নয়ে বনাস্থিতি পরে বাবু পুণ্ডিতকে জি
জান করেন যে আশ্রিত কি লয়া
চাক। ওমোদওয়ার মহাশয়ের কয়ে
যে বাহা ওষম বিদেশের মতো ওষম
অন্য অসম্ভব কথা শুনিয়া থাকেন
আনন্দময় করেন কেন ই-রাজী

তাহা কখনে পর ভুল তাড়াইত মর্শ
বুড়ের দ্বন্দ্ব স্বাভাবিক বিষয়ে কখন
কখন হান্সা পরিহাসে অধিক রাগিত হয়
পরে বাবু গোষ্ঠীতে আসেন করেন। ডঃমদও
মারেরা স্বাভাবিক যান তাহার। কেহ
কখনে যে এবার আমার কথা হইলে
বাঁধি নাই আমার শব্দ শেব হইয়াছে
আমার পুত্র বাবুর বড় অনুগ্রহ। কে
হরা দৈবতের স্থানে গীতনা করিয়া ত
বিষয় প্রভাবিত হইলেন। কেহ বলেন
যে বাবু গোষ্ঠীগণের নবাব হইলেন
কেহ বলেন যে বাবুর এবার বড় নর্থ
হইলেন কুন্দরন তার-ই আচার্য করিলেন
কোন দ্বিধা বাবু মজলিসে পদাধীন করি
কামাত্রই চক্রে কয়েক করেন পুত্র
আমার আশা তোতা পাণ্ডা ইত্যাদি পৌর
ইত্যদ্য রাগ কলা দরবার ঘাইব। ইহা
শ্রুতিতেই কয়েক নিমিত্ত বাবু বাজিরা ম
নে করে যে মারা অনুভব করিয়াছিল তাহা
কুর্খি মতা হইয়াছে ইহা বলিয়া কেহ
কলিমাতে পুত্রা মানে কেহ মতা পুত্রের
পরিচিতি দিতে চাহে কেহবা আসন ইহা
বৈচিত্র্য দ্বৈত বাবুর মর্শন পুর্নান করে।
সকলেই কখনে মুনমুন করে ও পরের
কিছুর করে যে বাবু কলা কোথা ঘাই
বৈল কেহ-কেহ যে চুন কর সে দ্বিধা
আমি যাহা করিয়াছি সেই বটে বাবু স
করবনের বেয়াদব হইলেন যেমত আ
দীপ্তরী ইষ্টা কিন্তু কেহ মহা অভা
জা করিতে পারেন না। তাহার মধ্যে এক
জন আশ্রয়দায়ী নোংরা লোক অধিক
শ্রুতি ছিল সে জিতামা করিল যে বাবু
এই কলা কোথা ঘাইলেন। বাবু স্রুত
হাসিয়া করিলেন। যে স্রুত পুত্র ক
কন পক্ষী-করিব দৈবতার নিকট পুর্নান
কহ। বাবু পর দিনে দুঃখের হইলেন
অতএব মজলিস অনুষ্ঠান করিয়াছি ইহা

ন। বিদায় কালে বাবু করিলেন যে তো
মরা কলা গুতে আসিও না।
পরদিনে বাবুর তার-লোক বড়
কয়েক ভিতর মীমা নাই বাবু কুর্খা ঘাই
লেন। বাবু গুতে মুন করিলেন কিন্তু
অলপোচি করিয়া ওতম আশা তোতা
বহুকালে পরিচীন করিয়া বেশ বিলান
পুর্নক অশ্রুত ওতম গীতিতে আরোহণ
করিলেন মারি চারি জন দুঃখমী দান
পাণ্ডা হইল। বাবু হামরা চলিল গীত
মরা শব্দে দুর্ধি বাজারে নৈজিল সে
খানে হাজী হাদী মাহেবের খেজুর
দোকানে ওতম হইলেন হাদী মাহেব
বড় লোক বাবুর সহিত বড় পুণ্য বাবুকে
বসিতে চেকি ছিলেন পরে ওতম অ্যা
ভাষায় আলাপ হইল বাবুর বাস্পাশিত
তাৎকালিক তাৎকালিক বড় লোক গীতমিষ্ট
করিয়া করিলেন। হাদী মাহেব বাবুর
পুত্র করিলেন যে অ্যা বড় গিরমী তুমি
বড় মোটা হইয়াছে তোমার কত টাক
আছে টাকার কি দর মনে মনে বাজারে
টাকার অনুভব কেন হইল বাবু হামরা
ইহার কি বলে। বাবু জিতামা করিলেন
যে মাহেব এবেশ আর এক জন কাজী
আসিলেন শ্রম মতা ছিল। লড়াইয়ের
হি মাহেব এত আহাৎ আসিতেছে কেন
ইত্যাদি আলাপ হইয়া বাবু দুঃখমী
দ্বিগত করিয়া অহু হইলেন যে এক
জন দেখে মৌলি মিরাজ ঘরে আসিলেন
কিনা আন ওমি হুদিও মাহেব ঘরে
হাসিয়া আসিল কি না দ্বিগত আসকে কা
লেন যে মৌলি মিরাজ মাহেব সিদ্ধি বসি
য়া আসিলেন কিনা আসিয়া আইস ওবে
আমি ঘাইব ইহা করিয়া গীতিতে ম
চার হইলেন ও লিপ্যন্তর ঘর হইয়া বাজার
বিয়া বাবু বাজী আইলেন বাবুর লোক
সকলে-বড় বড় গিরমি বাবু অশ্রুত কুর্খা

গিয়াছিল আহার হইলে হয় মৃত্যু
সকলেই অতিবাস্ত, পরিশ্রম হইয়াছে
শিরশীল ও হইল আহাৎ মুদ্রাধনে
করিতে পারিলেন না অশ্রুতি-মাহি
শ্রম করিলেন।
এখানে ডঃমদমদ মাহেশ্বরের মর্শ
দেখিতেছেন কতক ফল মজা হইবে
বাবুর নিকটে গিয়া মর্শন মাহেব স্রুত
মজাধির বাবু ওতম মজলিসে আসি
য়া বসিলেন ও ওতম আলাপ করিলেন
যে অ্যা বড় লোক হইয়াছে দরবার হইতে
আসিতে গৌণ হইয়াছে শিরশীল হ
ইয়া শ্রম করিয়াছিল। বিধু কয়েক
কথা বাবু কহিত হইলেন না। ডঃমদও
মারেরা বাবুর মর্শন মজাধির মুন
যে যাহা স্রুতিয়াছিল দেখিয়াছিল
অথবা রচনা করিয়াছিল ফলে মাহে
বন করিলেন। পরে কোল ই-আ
কোন কয়েক নিমিত্ত হইল অনুগ্রহ মিন
বাক করিলেন কোন মাহেবের কে না
কর হইল। এই পুত্রের পুত্র পুত্রি মন
লিস হয় আশা ডঃমদও মারেরা যে ওত
টাকা আসিয়াছিল তাহা মাহেব করিলেন
পরে কর্তা করিয়া বাবু মাহেব চান
লেন যখন কর্তা পাইলেন তখন কুর্খ
কাজের বাজীতে থাকিয়া বাবু ওত
মনা করিলেন কিন্তু বাবুর অমমতা পুর্ন
ইহারেও ওতম করিলেন না অথবা ও
লেন না বড় মতা মাহেবের অনুভব হই
লে কহেন যে অ্যা মাহেশ্বর আসি কো
থা গিয়াছিল এক কয়েক ওতম হই
য়াছিল। তোমার কতক ছিল না আইনা
দে সে কয়েক অলপ হইয়াছে। এই পুত্র
দে বাবু কাল ফল করিল। ইতি বাবু
ওতম।
এই উপাখ্যান পুঙ্খরূপে কোন মজা
লোক পাঠাইয়াছেন কতক ফল মন।

সমাচার দর্পণ

১৯৩০ সন-১৩৮১

পত্রিকা

৩ মাঘ সন ১৩৮১

১১ ফাল্গুন সন ১৩৮১

বঙ্গের দুই পৌরস্বত্বের কার্যবিবরণ

বৃত্তান্তবিহীন কানন কল্যাণের দর্পণ

কোলালির কার্য

কোলালির শতকরা ছয় টাকা কর সুদের
কাজ করা করিতে হইলে শতকরা তিন
টাকা আট আনা প্রিমিয়াম। বিস্ময় কবি
তে হইলে শতকরা তিন টাকা প্রিমি
য়াম।

সন্তানের পঞ্জিকা

| ০ | মাঘ | পরিবার | ১১ | ফাল্গুন |
|---|-----|--------|----|---------|
| ১ | ৫ | পরিবার | ১১ | ৫ |
| ২ | ৫ | পরিবার | ১০ | ৫ |
| ৩ | ৫ | পরিবার | ১০ | ৫ |
| ৪ | ৫ | পরিবার | ১০ | ৫ |
| ৫ | ৫ | পরিবার | ১০ | ৫ |
| ৬ | ৫ | পরিবার | ১০ | ৫ |
| ৭ | ৫ | পরিবার | ১০ | ৫ |
| ৮ | ৫ | পরিবার | ১০ | ৫ |
| ৯ | ৫ | পরিবার | ১০ | ৫ |

ইস্তাহার

ইস্তাহার দেওয়া যাঁহাতে যে ইসলামের
কোলালি আশাশুনি আশুনি মানে ভয় হই
বেক ও তাহার হিন্দব লিখন হইবেক
যদি কারোরা এই আশাশুনি পাওনা থাকে
তবে মেয়াদ মাঝে হাজার হইয়া আশন
পাওনা হইয়া লইবেক মেয়াদ গত হই
লে কারোরা কথা গুণ্য হইবে না।

ইস্তাহার

কলিকাতা মোকাদ্দার শোভাবাজারের
শ্রীমতী আশবাজারী গরহইতে

এই রূপ পত্র প্রকাশের নোটি পুতাক
দশ হাজার টাকার চোরে গিয়াছে।

১৯৩০ লব্ধ

১৯৩০ লব্ধ

সন ১৩৮১ ও সন ১৩৮১ সালের ৩ জুন
তারিখে দস্তখত নোটি মোরজা মজবুর
নামে হইয়াছে এ দস্তখত নোটি টাকা
ক্রেপ্তারিতে বন্দ হইয়াছে এ কাজ যে
খাইয়া দাখিল করিবেক সে এক শত
টাকা বখশিশ পাঠিবেক।

সমাচার দর্পণ

কাজকর্মসিদ্ধি

৭ ফিল্ডজারি

কমুত ওলাম হিরাব য় সাহেব রাজ
কর্মবিষয়ক দস্তখতের দেক্টারির বিজয়
শেকার হইয়াছেন।

কমুত মেজর দবলু আর গিলবর্ত
সাহেব কিস্তিলতালের পুস্তকের দখল
রক করিবার কারণ মোজিবর হইয়া
ছেন।

কমুত আশাশুনি

মোকাদ্দারের শহর মেজর আল
বর হইয়াছে যে শ্রীমতী মল্লিকার

রাজা আশাশুনি শিখারদের মতাব
লম্বা হইতে জেলা করিতেছেন।

মোহাম্মদ

বৃত্তান্তবিহীন কানন কল্যাণের দর্পণ
জে যে মোহাম্মদ শ্রীমত নবাব নবাব
দৌলতকে বিবাহ করিবেন এমত খির
করিয়াছেন। তাহাতে শ্রীশ্রীমত দিল্লীর
বাহাদুর আফা করিয়াছেন যে এই ওলাম
জনের পুত্র জামিল তাহাকে পাঁচ হাজার
তোমস আবার ওপার আবার করিব।

নুতন রাষ্ট্র

মোহাম্মদ কানন কল্যাণের দর্পণ
লাই এইরকম স্তন্য যাঁহাতে শ্রীশ্রীমত
কোলালি বাহাদুর সেই রাষ্ট্র করিতে
কুম দিয়াছেন। এই রাষ্ট্র হইলে শহর
শোভা ওস্তম হইবেক। কিন্তু সেখান
কার যে ভাগিহান লোকেরিগের অমী
এ বাটী গারদার আরে তাহারিগের
অনেক অশ্রুত হইতে পারি এবং বাহির
রাস্তা ও বক রাষ্ট্রার মাঝে যে রাষ্ট্র আর
হইয়া বহুতারা পত্র জামিল
সে রাষ্ট্র এইরকম হইয়াছে।

তাকবিত্ত ইরা

মোহাম্মদ হুদায়াবাহইতে ৮ ফিল্ডজারি
তারিখের সম্রাট জামিলজার যে মোহাম্মদ
নাগপুর ও হুদায়াবাহইতে মতাব রাষ্ট্র
তে অনেক মোহাম্মদ লোকের একত্ব হইয়া
অনেক ছিল পাঠ্য তাহা হিচ করিতেছেন।

ସମାଚାର-ଦ୍ଵାର !

তাঁহাঁইয়ের ভয়ে সেই খণ্ড লোক গিয়া।
 গমন করিতে পারিত না ইহাতে শূন্য
 দেশেস্তাও রিসেট সাহেব এই কোমল
 নিয়মী সময়ে ও শূন্য দেশেস্তাও
 ভক্ত নবাবের নতক গোঁহা সিঁকাই সময়ে
 ও তাঁহাদের লানশি গোঁহা সিঁকাই
 তেন নর পরশি গোঁহা গমন করিয়া
 পাচ লও গোঁহাদের সহিত সাফা-ই-স
 তাহাঁইদিকে লানশি করিয়াছেন। এ
 যত দেশেস্তাও সাহেব ভক্ত
 তেনসও গোঁহা সাহেব করিয়া গিয়া অংশি
 বক্ত গোঁহা লোকহদের লান করিয়া
 তেন ইহাতে ভেরিয়া হায়ে নবাব সি
 জামায়া গিয়ায় আকরা তাঁহাঁই
 হাতহাতে ও তাঁহাঁই পাইল।

हयक वृद्धि ।

[illegible]

ବ୍ରଜକୁଣ୍ଡ ଶ୍ରେଣୀ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

করা জিল। এক দিবস ঐ নদীর ঘেঁষে য়
চ'তারা অনেক কুঙ্কর সঙ্গে লইয়া নদীতীরে
যাইতেছিলেম তখনই ঐ হরকরা সন্ধ্যা
স্না ব'তারা ইকান ঐ কুঙ্কর জাতিয়া
মিয়ছিল। ওইইদিনেই কুঙ্কর ইকান
আশ্রয় হইতে তখনই কুঙ্কর জাতিয়া
হরকরা ওদয়ে আসল। কৌশলইহইত
জোরা যনাইয়া সাইইকৈ কলিষ যে
জোয়ার নিম্নক অনেক মাছিয়াছি এবং
যে ইহুতে আঁপনি পুতিপালন করিযাচেন
সে হস্ত আশলকর পুতি কলনও ততি
পুস্তক। এই আশ্রয়ও মনস্ত কলন
কুঙ্কর ইকান তখন অনেক মনস্ত কলন।
ইহা কলিয়া সে আসল ওদয়ে ও ততি
যাতিয়া মনিস।

ਭਾਂਡਾਵੈਲ :

[illegible]

বস ই ঈশ্বাহীকো পুণিলে প্রাণিতা তথা।
রক কপিলে মে কহিল যে আশিষ ভাষিত
বক্তৃতা-হবে বোধীর ঠিকার পর্যাণ্ডে
দিলিখ আশিষ মুকার আশন স্থানক।
কুঁড়ি কোণ্ডে করি। এই পাঠে নে
বাধা মুক্ত হইল। গীত পুণিলে লুতন
সুখম হইয়াছে যে লয় ফল। দ্বায়িত পরে
কোন নাহবে পরদুখে ঘাইতে পারিবেন
না যদি অংশমুক মুক্ত্যন্ত নিমিত্ত কাহা
রোঁ পাঠিতে হয় তবে পুণিলে আশনার
সদৃশ্যায় আনিয়াই প্রকৃত পাইয়াতে
পারিবেন।

ইহা দ্বিগুণ শ্রুতি। গিল যে এই ভ'বাই
 তের অন্তরঃ কেবল শিখা। সন্দেহ হয়
 যে যে বাঁকু অন্তরঃ করিল সেই এই
 কৰ্ম্ম করিয়াছে।

গৌলামি বৃদ্ধ।

মোঃ লায়লুন কীরা জাতি এই ব্যক্তি
গৃহস্থ বাস করিত তাহার কিছু ভান্ডার
ছিল সে ব্যক্তি অত্যন্ত মূল্যবত্বে এক গো
লাম ক্রয় করিয়া আনন ব্যতীতে রাখিয়া
ছিল। কিছু দিন পরে এক জী ক্রয় করি
য়া তাহার সহিত বিবাহ দ্বিগাছিল। পরে
ইহাঙ্গের ঘড় সন্ধান ৩৮-পর হয় তা
হয় তাহার সন্ধানের সাধন হয়। এইরূপ
তাঁহার ইচ্ছামতে বিবাহ দিলে ক্রয়
ব্যাখ্যাই হইতে লাগিল।

[illegible]

সম্রাটের দর্শন।

তাহার মর্মে। পুত্রজন আশ্রয় গ্রহণ।
কহিতে ঐ মূর্খের মাস এক চোকা করি
রা-বের তাহারি সে পুত্রিয়াম গৌণীয়
হইতে হাজার চোকা নষ্টিয়েছে।

তৃত্বর্ধ।

১০ খ্রিষ্টাব্দে ৩ ফাল্গুন তারিখ শুক্র
বারে তৃত্বর্ধের মহারাজ ঐশ্বর্য্যুত নর
মাজী বাহাদুর আশ্রয় দেশ হইতে যোগ
কলিকাতা আনিয়াছেন। তিনি ঐ তারি
খে যোগ কলিকাতার নিকটে পৌঁছিয়াছেন
তাহার পরদিনে অজ্ঞাত বরংবেল মা
য়েব তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ করিতে
গেলেন এবং যোগ পালিয়াতে ঐ রাজা
আর কাল যোগ স্থান ঐশ্বর্য্যুত বড় না
য়েব পুস্তক করিয়াছেন সেই স্থান তাঁ
থাকে আনিয়াছেন এবং কোম্পানির পার
শি দস্তারের অর্ধেক শূণ্যত প্রিন্সেপ না
য়েবের রেশমী লোক সেই যোগায়ে
রাজার সহিত সাক্ষাৎ করিল। ঐশ্বর্য্যু
ত বড় সাংহেব ঐ রাজার আরাধনার
কারণ আশ্রয় দ্বি ভাঙ্গিয়া পিছুত রা
খিয়াছেন। এবং ঐশ্বর্য্যুতের সহিত
ঐ রাজার সাক্ষাৎ করিবার কারণ দিন
সোমবারের দিন হইলে ঐ প্রিন্সেপ সাংহেব
চাম্পানের ঘাটে রাজার সহিত মিলিলে
ন। এবং ঐ রাজা এখন মৃত্যুকালে পঁচা
শন করিলেন তখন বিজ্ঞাতে সত্তর তোল
ইহা। পরে শূণ্যতের তারিখ যোড়ার
গাভী-ত রাজা ও ঐ প্রিন্সেপ সাংহেব আ
গৌণ করিয়া শূণ্যতের নিকটে ঘনি
তে গিয়াছেন ও অন্য গাভীতে তাঁহার
পরিষদ লোকেরা আরাধন করিল। অ
পর তাহারি বড় সাংহেবের তুচ্ছমর্গ্য
য়েতে খেঁচিৎ ইহা শূণ্যতের নিকটে
গেলেন। সম্মানে পৌঁছিয়া শূণ্যত কো

ম্মান পুত্রজন লোকেরি সাংহেব ও অন্য
বক্তার লোকেরি সাংহেব বড় সাংহেবের
মিত্রের ওপরে তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ ক
রিলেন। রাজা এখন বড় সাংহেবের ঘরের
মধ্যে গেলেন তখন বড় সাংহেব অগ্নি
গোম্বী ইহা রাজার সহিত কোলাকোলি
করিলেন। অস্তুর রাজা ও তাহার সর্গী
কেল পাঁচ জন লোক ভৌকিতে বসিলেন
রাজা কানী ও পুত্রাণি ঘাইলেন এবং শূ
ঐশ্বর্য্যুতের সহিত সাক্ষাৎ করিয়া কেল
এখানে আনিয়াছেন। ঐশ্বর্য্যুত ঐ রাজা
কে যোগ চানকে কামিতে আনুগোহ করি
য়াছেন। রাজার সহিত দুই হাজার
লোক আছে।

সি-ইলহাবের নিকটে তৃত্বর্ধের দেশে
যোগ মান্দ্যাজ হইতে দক্ষিণ অলম্যান
দশ বারোদিনের পথ। রাজা বাহাদুর
কিন্তু ইংল্যান্ডের নিকটে ঘনত্ব পুত্রি
রখিলেন ইনি তলজাতী মহারাজের লো
ক পুত্র।

কৃত তৃত্বর্ধ।

গত সোমবার সন্ধ্যার পর কৃত তৃত্বর্ধ
ইহা ছিল তাহাতে কতক লোক পূর্ণ এক
নৌকা কলিকাতা হইতে বেগোরে তা
জিতেছিল যোগ মৃত্যুর পরে লোকের তে
ঐ নৌকা ভুলিল। পরদিন এক কালক মৃত
এক খিচক মরা ঐ নৌকার মর্মে পাওয়া
গেল আর দিন তারিখ অপর সন্ধ্যা পা
ওয়া যায় নাই তথ্যটিও আর লোক
রকা পাইয়াছে। এবং এক জন ভণী
বাস লোকের শ্রী লোকাতে প্রিয়ায়ই
তে অর্ধশতাধিক পাইয়াছেন মরে দুই
জন বরংকাজ ছিল ঐ তথ্যে যোগ
কোলমারের নিকট লোকেরি হওয়াতে
ঐ শ্রী করিয়ার ত-পাণি-তাহার বা

মী আনিয়া তাহাকে মরা পাইল কিন্তু
দুই বরংকাজের অস্ত্র লক্ষ্য আছে তা
হারদের সন্ধ্যা পাওয়া যায় নাই। এবং
চানকের পুত্র এক কোণ গেল শূণ্যতের
এক কালক মুলম্যান চানক হইতে তাহাতে
ছিল এই সময়ে বতুর্গাত ইহা। তাহার
মন্তক ওকাইয়া নইয়া গেল নিম্নস্থক
শরীরে পাওয়া গেল।

বাহাদুরের পুত্র।

৬ ফাল্গুন ১০ খ্রিষ্টাব্দে শুক্রবার যোগ
কালনার গেল বারোয়ারের পুত্র ইহা
তে তাহাতে ঐ গেলের তাহা লোক এক
বাহা ইহা অতি সম্মানজনক নানা
পুকার বার করিয়াছে এই পুকার সম্মা
রোহপুত্র পুত্রা পুত্র হয় নাই। গান এ
বার ও কোণসাই ইত্যাদির বিবরণ বড়
খিলা ব্যাহিরে অতি সুন্দরকণ হইয়া
ছিল পুত্রিয়া এবং অসম্পূর্ণ পুত্র মিত্র
এমত নির্মাণ করিয়া জন যে ভাড়া দেহা
নে ক্রিয় আস হয় না।

বাহিনী।

তুলা। এই সময়ে যোগ কলিকাতা
তে গিয়া তুলা কিছু বিক্রয় হয় নাই।
গত সম্রাট যোগ মাইজাপুরে জয় হা
জার পাঁচ শত জেহাউ গাও বাজার
আমদানি ইহা ছিল। শূণ্যতের
তে গত বৎসরে বাট হাজার গাভী তুলা
বেশী আমদানি ইহা ছিল।

কোম্পানির আর্মি।

গত বুধবার এক শ্রেণীর ১৮০
মানের বেহারের আর্মির অন্তর্গত

সমীচীর দর্পণ।

সাত দিনের এবং কাশীর চারি পাত
নিম্নের বিদ্যুৎ হইয়াছে মোঃ পাটনীর
আজ্ঞাধি নিম্নের গতে দুই হাজার পাঁচ
শত সাতচল্লিশ টাকাতো বিদ্যুৎ হইয়াছে
এবং কাশীর আশীম দুই হাজার চারি
শত তিরিশুই টাকাতো খিনিন্দুত। সর্ব
মুদ্র তিনশ্রু লক্ষ আশী হাজার টাকার
আশীম এক দিনে বিদ্যুৎ হইল।

শ্রীশ্রীযুক্ত মাদানি-হরো পাণ্ডুর।

শ্রীযুক্ত তত্ত্বের তেতলর মাহের রাজা
বিদ্যাদিত্য ও রাজা পাণিহাঙ্গের বিদ্যুৎ
এক শ্রুত করিয়াছেন তাহাতে শ্রীযুক্ত
মাদানি-হরো পাণ্ডুর ওজ্জ্বলীর অধী
ক্ৰ এমত তত্ত্ব হইয়াছেন যে আশীম পতি
ও সমাজের মধ্যে ঐ মাহের এক ওশা
বি দিতে হকুম করিয়াছেন তাহাতে পতি
ডেরা তাহাকে মায়াপতি ওশাবি দিয়া
ছেন।

দিক্শুপাত্রে লিখিত আছে যে পুরাণী
অহবি বিদ্যাদিত্য-তার ওজ্জ্বলীর্ণাঙ্ক মুক্তি-
কার মধ্যে নয় আছে যে বাহ্য ঐ নয়
দিয়া ওজ্জ্বলীতে ওঠিতে পারে তাহার
শরীর অক্লমবীষভের মল এ এক হুজুত
এ তিন কামদেব দানের জন হয়।

ঐশ্বর্য্য মহারানী।

ই-প্লগের মহারানী এক দিন আশ্রম
লগ্নরহীতে নৌকারোহন করিয়া ওলবিড
লগ্নের ঘাইতেছিলেন সেখানে মহারানী

জের নৌকা ও আহাজ ইত্যাদির কার
খানা আছে তাহারদিকে মহারানী আ
জি করিয়াছিলেন যদি মহারানী আই
সেন ওখানি তোমরা কর্ম জাতিরা না
এ তাঁহার দিকে দৃষ্টিপাত করিবা না
পরে যখন মহারানী সে স্থানে পৌছিলেন
তখন তাবৎ লোকেরা তাহার আগমন
বাস্তি শুনিয়া কর্ম জাতিরা অগণ্যগণী হ
ইয়া সেলাম পুজু করিল।

বহুপত্না!

লক্ষী লগ্নের হসপাতালে এক জন
স্বী পুনর হইল তাহাতে এক কাল তা
হার তিন পুত্র জন্মিল।

ইদ্রু মাদানী!

ই-প্লগে স্বী লোকেরা বিবি লোকের
মন্তকর টুপী নির্মাণ করিয়া বিদ্যুৎ করে
তাহাতে এক স্থানে কএক স্বী টুপী পুস্তত
কঠিতেছিল। তাহার মধ্যে এক স্বী
কহিল যে লোক মাদানীতে কিহনে মার
আছি দেখিবা। তাহাতে অন্য স্বী সে
কহে এক দ্বিত আনিয়া নিরুচক-বৃক্ষের
তালে বাজিয়া মাদানী করিয়া ঐ স্বীকে দুই
তলে কক্ষে করিয়া ওঠিয়া মাদানী
দিয়া জাতিয়া তাহার আশ্রম কক্ষ
গেল। কিহি-পরে আশ্রিয়া দেখিল
যে তাহার মুখ-বিবর্ণ হইয়াছে তখন
তাহারো অভিশ্রু দ্বিত করিয়া দিয়া
অনেক শ্রুতপটে তাহারে রীতিহইল।

বাহার ভাগ।

| জিহিব | মোন | অবধি | পত্র |
|---------------|-----|------|------|
| মুপারি | ১ | ৩৫ | ৩৫ |
| ভেরোজা তেল | ১ | ১০ | ১০ |
| গাহ মরিচ | ১ | ১১ | ১ |
| মারিকেন তেল | ১ | ১০ | ১০ |
| মুলা কাছোকা | ১ | ০ | ০ |
| আধা রসপূর | ১ | ১০ | ১০ |
| পাটনাই আদা | ১ | ১ | ১ |
| চালু পাটনাই | ১ | ১১ | ১১ |
| পাহাড়ি উত্তম | ১ | ১১ | ১১ |
| পাহাড়ি মধ্যম | ১ | ১০ | ১০ |
| মুগী উত্তম | ১ | ১০ | ১০ |
| মুগী মধ্যম | ১ | ১০ | ১০ |
| বাল্যম | ১ | ১০ | ১০ |
| মুগা পোম | ১ | ১১ | ১১ |
| পাটনাই কুই | ১ | ১০ | ১০ |
| অফহু তালি | ১ | ১১ | ১১ |
| উত্তমসারী হুত | ১ | ১১ | ১১ |
| মধ্যম হুত | ১ | ১০ | ১০ |
| ভেলা হুত | ১ | ১০ | ১০ |
| মধ্যম ভেলা | ১ | ১০ | ১০ |
| মোমবাতি | ১ | ০১ | ০১ |
| মিছরি উত্তম | ১ | ১০ | ১০ |
| মিছরি মধ্যম | ১ | ১০ | ১০ |
| মোরা উত্তম | ১ | ০১ | ০১ |
| মধ্যম | ১ | ০১ | ০১ |
| চিনি কাশীর | ১ | ০ | ০ |
| মধ্যম | ১ | ১ | ১ |
| খার চিনি | ১ | ০১ | ০১ |
| তেতুল | ১ | ১০ | ১০ |
| তামাক | ১ | ০ | ০ |
| চন্দর | ১ | ১০ | ১০ |

এই সমাজের লগ্ন পুরানপুর ছাপাখানাতে পুস্তকভাবে পত্রবারে ছাপা হয়। বাহার লগ্নের আশ্রম হুত তিন শ্রীমাদেশের ছাপাখানাতে

আশ্রম নাম পাঠাইলে লগ্নের কাল তাহার বিকট-পাঠার ঘাইবেক তাহা মুগা মাল এক টাকার মিনি হাফে কঠিতাবেক যদি তাহা বিকট
কাল পছন্দ তবে তিনি শ্রীমাদেশের ছাপাখানাতে লগ্নের দিমা মাল তাহা লগ্নের মালিক হইবে।

সমাচার দর্পণ

৪৪৭ সংখ্যা

শনিবার

১০ মার্চ মূল ১৮৭১

১৮ ফাল্গুন মূল ১২৭৮

দর্পণে দুই বৈদ্যের কার্যবিবরণঃ

বৃহাদ্ভানিহ জানকী সমাচার দর্পণে ॥

কোলাসির কণিজ।

কোলাসির শতকরা জমি টাকার যুদ্ধের
কণিজ হইতে হইলে শতকরা তিন
টাকা তাই আনা যিহিয়ে। বিজয় কর
তে হইলে শতকরা তিন টাকা যিহি
যম।

সন্তোষের পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|-------|-------------|----|---------|
| ১০ | মার্চ | শনিবার | ১৮ | ফাল্গুন |
| ১১ | ১ | রবিবার | ১৯ | ১ |
| ১২ | ২ | সোমবার | ২০ | ২ |
| ১৩ | ৩ | মঙ্গলবার | ২১ | ৩ |
| ১৪ | ৪ | বুধবার | ২২ | ৪ |
| ১৫ | ৫ | বৃহস্পতিবার | ২৩ | ৫ |
| ১৬ | ৬ | শুক্রবার | ২৪ | ৬ |

সমাচার দর্পণ।

রাজকর্মনিয়োগ।

১৭ ফিফ্টিয়ার।

অমৃত জেটি মেজদার সাহেব মমর
মেয়াদি এ মেয়াদে আদালতের এক
অজ হইয়াছেন।

অমৃত হেনু মেজদার সাহেব মে

কলিকাতা ও ঢাকা ও মগধেশবাব ও
পাটনার পুলিশের অধীক্ষ এবং শহর
কলিকাতার পুলিশ অজ হইয়াছেন।

অমৃত এ জি থিওডোর সাহেব এনা
বাবু লুডন বোডের পুলিশ অধীক্ষ হই
য়াছেন।

অমৃত দবলু দবলু বব সাহেব ঐ বো
ডের দ্বিতীয় অধীক্ষ হইয়াছেন।

অমৃত দবলু আর জেরিমন সাহেব
মোন্ট্রাস্ট্রের কালেক্টর হইয়াছেন।

৪ মার্চ।

অমৃত কলিন মেজদার সাহেব শতক
কলিকাতার তাকবরের পুলিশ অধীক্ষ হই
য়াছেন।

কোলাসির কর্মকারিদের সংখ্যা।

লাগিয়া ১৮৭০ মালের ৩০ ডিসেম্বর
পর্যন্ত এ হিসাব আনা গিয়াছে যে এই
দেশে অমৃত কোলাসি বাহাদুরের কর্ম
৪৭৮ চরি শত আটহুত্তরি জন ইঙ্গরেজ
নিযুক্ত আছেন ইহার মধ্যে কেহ নাতিত
হইয়া বায়ু মেবনারে বিদেশ গমন করি
য়াছেন এবং গড় বৎসরের মধ্যে ১৫
পোলের জন সাহেব কর্ম ত্যাগ করিয়া
ছেন এবং ১৫ পোলের জন পরলোক
প্রাপ্ত হইয়াছেন।

এবং অমৃত কোলাসি বাহাদুর ও জি
অমৃত বাহাদুরের পলিটনের মধ্যে ১৪৭৮
চরিশ শত আটহুত্তরি জন ইঙ্গরেজ
নিযুক্ত আছেন তাহার মধ্যে গড় বৎ
সরে ৩১০ তিন শত বিশ জন বায়ু মেবনা

যে ইংলণ্ডে গিয়াছেন এবং কর্ম ত্যাগ
করিয়া ১৫ পোলের জন সাহেব ইংলণ্ডে
গিয়াছেন এবং গড় বৎসরের মধ্যে
৩৯ জনের জন সাহেব পরলোকপ্রাপ্ত
হইয়াছেন।

বনটন থিওডোর পুলিশ দ্বান এই
কলিকাতার গড় ও ময়দাম ও চানক ও
কটক ও জায়ায় মেবের লুই ও মেবিনী
বুর ও ঢাকা ও চম্পাণী ও বহরমপুর ও
ও দানাপুর ও মালিই ও মুর্শিদাবাদ ও
কলিকাতা ও তেহরান ও চম্পাণী ও
গৌরখপুর ও হুনারগড় ও গাজাপুর ও
কলিকাতা ও মেডনগড় ও কিম্বাউল জেলা
ও লম্বাও ও মুতালাগড় ও এলাহাবাদ
ও বেনগাল ও বরেনী ও মিহট ও সাহ
বরেনী ও ময়দাম ও আশিরা ও আশিগড়
ও মিহা ও কলনাল লুইয়ান ও হানসী
ও মাদার ও অরলপুর জেলা ও নমোরাবার
ও ইন্ডি-হাবাদ ও আশিগড় ও মগ ও
লিমচ ও বকসর।

অমৃত বাহাদুরের তরফ সুপ্রীমকোর্টে
তিন জন সাহেব ও কলিন্সে আট জন
সাহেব ও জলি ৩০ জন নিযুক্ত আছে।

কোলাসি বাহাদুরের পুলিশ থিওডোর
সুপ্রীম লার্ক বিনন সাহেব আছেন এবং
ইহা তিন জন ওপারেশন আছেন।

ইন্দুর।

মায়দাম দেশে জনরব এমত করে
মেয়াদে অনেক তাইল আছে এবং এ

সমাচার দপণ !

মত কোন নী নাই যে সমগ্র ইংলসর হয়
করা হইল তাহাকে তাইন সন্দেহ না করা
হয়। সেখানে তাহার তাইনের পরীক্ষা
এইমত করে যে স্বীয় পুত্র তাইন সন্দেহ
হয় তাহাকে এক জনার মতো ভরসা
অনেক নিশ্চয় করে তাহাতে সে নী যদি
অনেক ভবে তবে সে নিশ্চয় নিশ্চয় হয়
যদি সে না ভুগিয়া ভাসে তবে তাহাকে
সত্য তাইন আন করিয়া মারিয়া ফেল।
ইহাতে কোর্টবন্দির রাজা প্রমত্ত মহা
রাজ আশ্রয় দিবে বাহাদুর মহারাজ
দেখেন যথোক্ত অতিবিক্রম তিনটি এই বি
ষয়ে ভুক্ত হইয়াছেন যেহেতু তাহার
কী মরিলে পরে তাহার আন ইহন যে
আমার স্বকে তাইন মারিয়া ফেল
গারে এই মিথ্যা কানে তিনি ক্ষুব্ধ হইয়া
তিন চারি শত বৃদ্ধ নী লোককে তাইন
ফেল দিলেন তাইন সন্দেহ না করা
যেনকল ইংলসর সাহেবের আছেন
তাহার অনেক চেষ্টাতে এই অফান
তাহারদের মনহইতে কতক দূর করিয়া
ছেন ইহাতে সে কৃষকহার কিছু লুন
হইয়াছে।

আহাজ।

যোঁ মাহারাজহইতে সমগ্রের আ
সিয়াতে তাহাতে আনা গেল যে ময়ূর
নামে আহাজ কলিকাতাহইতে ইংল্ডে
মাইতেজিল তাহাতে ১৭ আশুয়ারি তা
রিখে সিংহলদেশের দক্ষিণে এক ক্ষুদ্র
চত্বর লাগিয়া পুনর্বার অধিক অল আ
ইন কিছু তাহাতে এমত হইল। লাগিয়া
ছিল যে ইহাতে আহাজের হালি তথালি
ভা হইল ও তৎক্ষণাৎ সেই স্থানে দর
করিল সে সময় বাতাস কম ছিল ও

সময়ে পলি তোলা ছিল লাগিয়া চত্বর
লাগিয়া বলা পাইল পরে নতুন হালি
পুস্তক করিয়া ও আশুয়ারিতে পালি ও
ঠাইল কিছু নতুন হালি লাগিল না ও
পুস্তক দিতীয়বার চত্বর লাগিল। কিন্তু
কিঞ্চিৎ অনুকূল বায়ু ছিল ইহাতে আ
হাজ পুনর্বার অধিক তলে আসিয়া বলা
পাইল তৎক্ষণাৎ হালি পুনর্বার ওপুস্ত
মত করিয়া ও অধিকারি ডারিখে পুনর্বার
পালি ওঠাইয়া চলিল সেই দিবস বেলা
চারি ঘণ্টার সময়ে এক আহাজের সহিত
যেথা হইল সে আহাজ চল দেশহইতে
বোম্বে ঘাইতেছিল সেই আহাজ দেখিয়া
ময়ূর আহাজের লোকেরা দুঃখ চিহ্ন
তোষণ করিল তাহারাও আশুয়ারি তাহারা
তাহার পুস্তক করিল। পরে সাংক
হইয়া তাহারদের ওপরের কারন সেই
আহাজ বোম্বে গেল ময়ূর আহাজ নি
হলহানে গেল সেখানেহইতে বোম্বে পূ
জিয়া আহাজ মারিয়া লইয়া ইংল্ডে যা
ইবেক।

অধিপুত্র মহারাজ মরফোজী বাহাদুর।

উজ্জ্বল দেশবিশিষ্ট অধিপুত্র মহারাজ
যোঁ কলিকাতার মদী ওড় করখানা
তাহা পুণ্য সকলি দেখিয়াছেন বিশেষ
যোঁ গিদিরপুরে কীর সাহেবের আহাজ
পুস্তক করিবার কারণে লাগিয়াছিল
ও সেখানে তাবৎ বিষয় দেখিলেন ও
আপনার রাজধানী শহর উজ্জ্বল আ
হাজ নিয়ন্ত্রণের কারণে কতবার কারন
তৎক্ষণাৎ এক সাহেবকে চাকর
রাখিলেন ও আহাজের তাবৎ মরফোজী
খদ্দির করিতে লাগিল করিলেন।

পর যোঁ আনবাজারে বর্জ্যার্থী
পালিতে গিয়া সেখানকার বাসকরের
ইন্ডাম লইলেন তাহাতে লক্ষ্য হইয়া
সেই পাঠশালাতে গিয়াই বার শত
টাকা ছিলেন।

পরে ৬ মার্চ ১৪ ফালগুন ময়ূরবার ১
মহারাজ যোঁমা পাশালাহইতে পুণ্য
করিয়া সাংকালে যোঁ মাহারাজে পথ
লাগিলেন ৭ রোজ দুইবার প্রাতঃকালে
সেখানহইতে যোঁমা বৈদ্যবাজারে নি
কট চাপদারিয়ার মাঠে আসিয়া ইহ
কালে প্রাপ্ত বৎ সাহেবের অনুরোধে
যোঁ চানকে গিয়া সেখানে প্রাপ্তবৃত্তের
সহিত অনেক আয়োজন করিবার ভ্রম
নাথি করিয়া সে দিবস থাকিলেন পরদিন
৮ রোজ বৃহত্তিবার বেলা এগির ঘণ্টার
সময়ে যোঁ মাহারাজের প্রাপ্ত বেরি
সহেবের বর্তীতে আসিবার কারন
চানকহইতে লোকেরা হইল করিলেন মহা
রাজের লোক মফোজীয়া থাকিতে পু
পুস্তক সাহেবেরা আশুয়ারদের আশ্রয়
মত ও শ্রীরামপুর জেলা সাহেবেরদের
সহিত গিরি জীরে গেলেন ও মহারাজ
তারে আশুয়ার তাহার সহিত সাক্ষাৎ
করিলেন ও পরের শিখ মন্ত্রালা যথেন
দূর হইল। পরে মহারাজ চাপখানা ও
হরখানা ও লাইব্রেরি অর্থাৎ পুস্তকা
লয় ও কালেক্টর ও কলিকাতার কল
তাহা দুই ঘণ্টা পর্যন্ত দেখিয়া পুনর্বার
লোকেরা হইল করিয়া যোঁ চানকে
গেলেন।

মহারাজের ব্যয়সময় অনুমান পঞ্চাশ
হংসর। মহারাজ আপন পুত্র মহারাজ
অধিপুত্র শিবজী বাহাদুরকে সিংহাসনে
পঠিও করিয়া আপন জীবদ্দশা পর্যন্ত

সমাচার দর্শন।

করিয়াছেন। মহারাজ সন্তোষ ও পা
সিন ও ইংল্যান্ড বিদ্যাতে তুল্যবিদ্যা
এবং মহারাজগির্জা টারি ভাষা কবিতা
পারেন এবং পান বিদ্যাতে নিপুণ ও তি
নি নিজে মহারাজগির্জা দেখায়। **কল্যাণ**
বত সাহেব মহারাজের সহিত উত্তম
জনক নির্মাণী ও দুই জন সাহেব
লোক বিদ্যাছেন। মহারাজের সহিত তা
হার নিজের দুই হাজার লোক আদি
গাজে এবং শতাবধি বৈশম্যওয়ার ও
দশ পেনরটা ওট ও হাজী ও বলর ও
দুর্ভবতা গো ইত্যাদি ও বিশ পশুশাখান
নোয়াড়ি ও স্ত্রী লোক পরস্পর অনেক
ও ওপমুম্যত রেশালা লোক তাহার
সাত ঘাইতেছে। অনেক সৈন্য মরে
আদিগাজিল তাহারদিকে যোগ কর্তক
হইতে বিদায় করিয়াছেন এখন কেবল
চাষ ঘাসিক বেশ ঘাইতেছেন। যে
বলবিলম্ব নথ হইতেছে তাহাতে অনু
মান হয় যে দুই তিন মাসের মধ্যে কা
শীক্সে পথজিতে পারিবেন না।

হুত।

শু জাপান গিয়াছে যে যোগ বহরম
পুর এক জন পণ্ডিত গোঁরা আনল স্ত্রীর
সহিত এক পথ্যাতে অন্য এক গোঁরাতে
যেখিয়া তাহাকে মৃত করিয়াছিল। গত
উষবার তাহার আঙ্গাদ হইয়া এক
টাকা হত হইয়াছে।

বাণিজ্য।

বুখ। গত সপ্তাহে তুসার কিছুকয়
বিক্রয় পুর হইয়াছে। মোকাম মীরজা
পুর খেল হাজার দুই শত পয়গাজিল

গাঁটি আমদানী হইয়াছে সেইখান
কি যোগে দুই টাকা অধিক আড়াই
টাকা পর্যন্ত মাম কম হইয়াছে। কিন্তু
মোকাম কলিকাতাতে মতর টাকা যোগ
বিক্রয় হইতে পারি মোকাম মুরশদাবা
যে কি যোগে টারি টাকা মূল্য কম হই
য়াছে। গত জয় বঙ্গমরের মধ্যে এ বেশ
হইতে এই পুরকার তুসার রক্তানি হইয়া
ছে। ৪৮৪৫ সালে ৮৩৭১ গাঁটি রক্তানি
হয় ৪৮১৩ সালে ৪৯০০ গাঁটি। ৪৮১৭
সালে ২৯০৩৮ গাঁটি। ৪৮৪৮ সালে ৩১৬
৮৩৬ গাঁটি। ৪৮৪৯ সালে ৮৫৩৯১
গাঁটি। ৪৮৫০ সালে ৫৮৩৮ গাঁটি।

মীনা।

মীনা নামে পাঁচাজির এক জাতি তা
হারদের বিদ্যে যোগ পল্লীভাষা ২১৬
এই সমাচার আদিগাজে যে ৪১ তিফুজা
রি তারিখে মীনারদের সমলার্থ যে সকল
সৈন্য গিয়াছিল তাহার কৃতকার্য হ
ইয়া তিফিয়া আদিগাজে। যৌবপুর ও
কলিনুর এই দুই বেশের মধ্যবর্তি পথিতে
তাহারা বসতি করে। তাহার কথক
দিন হইল ইংল্যান্ড পলিশের লোকের
হের ওপরে যৌবজা করিয়াছিল তাহাতে
তাহারদের সমলার্থ ইংল্যান্ড সৈন্য গি
য়াছিল। ইংল্যান্ডীয় সৈন্য লয় যথার
মধ্যে তাহারদের বসতি স্থানে পুষ্টি হ
ইয়া সেখানে তাহারদের সকল সরদার
পুষ্টির দেখা পাইল ও আফ্রন করিল
তাহাতে তাহারদের পুষ্টি সকলের লাল
হইয়া অল্প লোক অধিক আছে। তাহার
বের মধ্যে এক জন দামশাহ নামে খ্যাত
ছিল সেও মৃত হইয়াছে এই পুষ্টি ব্যক্তি
যখন মরিল তখন লসকল মীনার ইংল

গীয়েদের শরণার্থ হইল ও অত্যন্ত
ছিল। তাহাতে তাহার যোগ লয় করিয়া
লইয়াছিল তাহার যাবৎ তাহা লা দিল
তাহা ইংল্যান্ডের তাহারদিকে আ
ভর হইল না। মীনারা অধিক মূল্য
লম্বানের ও অধিক হিন্দুর আভার করে
এবং তাহারদের মধ্যে কোন পুষ্টি
বাহার দেখা গেল না। তাহার পুষ্টি
অনেক গীয়ে তা পুষ্টি করাই ত কত
তাহারা এখন যে কল পাঠি পাঠিয়াছে
তাহাতে অনুমান হয় যে তাহারদের
দুর্ভবতার দূর হইতে পারে।

মুর্তি।

১ তুলাই তারিখে যে মুর্তি হইবে
তাহার পাণ্ডুলেখ এখন পুরান হইয়াছে
তাহার মধ্যে পুরান পুষ্টি দশ হাজার
বল যোগে। তিফি পুষ্টি জয় হাজার
যোগে। তৃতীয় তিন হাজার যোগে
তুলাই দুই হাজার যোগে। আর তিফি
পুষ্টিতে এক হাজার যোগে। আর পুষ্টি
পুষ্টিতে পাঁচ শত যোগে। আর বাল
এক শত যোগে। আর মতর শত
বারো তাহার এক টা দেত শত টাকা
করিয়া। সন্তোষ সাত লক্ষ টাকার পুষ্টি
এই মুর্তি ৪৫ মার তারিখে দুই পুর ব
লার সময়ে একলেক্সের লিলাই হইবে
এবং সেই সময়ে যে ব্যক্তি সাত লক্ষ
টাকার ওক তাকিবে সেই পাইবেক।

কলিয়ার লোক সংখ্যা।

কলিয়ার বেশের সমাচার আদিগাজে তা
হাতে আন গেল যে সে বেশ বেশ
গলনাতে ৪০৫২৭৭ পাঁচ কোটি তেল্লস

সমাচার দর্শন।

যেমন হাজার মাত শত মাত লোক সন্ধ্যা হইয়াছে ও তাহার অন্তর্যাসিত পৌলও দেশে ১৭৩১৩৪ মাতাইন লক্ষ বহুশ হাজার তিন শত চারি শ লোকসন্ধ্যা হইয়াছে।

দ্বিতীয়ঃ

দ্বিতীয়দেশের বাদশাহের প্রত্যক্ষ প্রত্যক্ষ হইয়াছেন ইহা দুই দশ জনান গিয়াছে এই ফলে সেখানহইতে সমাচার জানি য়াছে তাহাতে জানা গেল যে তাঁহার স্মার গর্ত ছিল ইহাতে সে দেশীয় লোকে রা স্মারের নিষ্ঠে তাহার পুত্র মন্ডান বওলের কারন অনেক পুণ্যনি করিতেছিল যেহেতুক সে দেশে স্বী লোক নিঃস্বা মনে কখনও বনে নাই অতএব পরমেশ্বরের ইচ্ছাতে গার ৩০ মেসখর ওগিরেই সেই গর্তে পুত্র মন্ডান হইয়াছে ইহাতে সেখানকার লোকেরদের আলমের সীমা নাই তাঁহার নাম প্রখ্যাত হইয়াছিল ঘরিনাও দিওবাস। দিওবাস অর্থঃ প্রখরদত্ত।

হিতোপদেশঃ

এক কালে শরীরের পুত্রে অকস্মৎ অর্থাৎ চকু ও হস্ত ও চরন পুত্ৰিতা ওদের পুত্ৰিকুল মন্ত্রণা করিল এবং পরের বহিল যে দেখে আমিও নিকল দ্বিবারি পরিণয় করি ও নানা বেশ ভূষণ ও নানা সজ্জা রোহিণীক ওগাজন করি ওর কোন কর্ম করন না কেবল আমারদের ওগা

অন যম ভোগ্য করিয়া মুখে কালক্ষেপ করেন ও নিষ্কিন্তুতা স্বপ্নে সন্ধ্যাভোগ্য করা তে পুত্ৰিতন কর্তৃক হন। অতএব ও আত্ম ভরি স্বাধীনতার ওদের ওগাজন আম রা আর করিব না। চরন বহিলেন যে আমি ওদেরকে বহিব না ও তাহার বারন পর্যটন করিব না। হস্ত বহিলেন যে আমি তাহার ভোজন সাহায্য করিব না। দন্ত বহিলেন যে আমি তাহার কা রন ভক্ষা দুষ্য চরন করিব না। এই কর্ণ মকল অবয়ব ওদের ওগাজন করনই নিবৃত্ত হইলেন। ইহাতে ওদের কুল হইয়া বিবেচনা করিলেন যে যদি আমার চির অনুগত ওদেরদের আমার পুত্র স্মার করিয়া স্বার্থম্যে বিরত হইল তবে আ মার থাকিতে কি পুণ্যজন এবং তাহা রাও দেখুক যে কাহার বলে ওগাজনের এত বস্তুম। ইহা বিবেচনা করিয়া ওদের চণিতে লাগিলেন। তাহাতে কেহ কহিতে লাগিল যে শিট চলে এবং অন্য কেহ কহিল যে ওদের ভয় হইতেছে। কতজন পরে চকু মশনশক্তিরহিত ও হস্ত নিব্বদ ও চরন গতিশক্তি হীন হই লেন এই কর্ণ মকল অবয়ব পুণ্য বিনা শোণিয়া হইয়া জালিলেন যে যাঁহার যত শক্তি সে মকলের মূল ওদের। এবং বিবে চনা করিলেন যে ওদের সহিত অশী তি করিয়া আমারদের থাকা দুহর। ইহা করিয়া ওদেরকে বিনয় স্তব করিয়া পুস্প করিলেন তাহাতে আশ্রয়না মকল হইলেন। এই হিতোপদেশের তাৎপর্য মকল বৃত্তিতে পৌরেল।

বাহার ভাগ।

| বিনিম | মোন | অবধি | পত্র |
|---------------|-----|------|------|
| সুপারি | ১ | ৫৬ | ৩৮ |
| ভেজো ভেল | ১ | ১৩ | ১৮ |
| গাহ মটি | ১ | ৩ | ১ |
| মারিকল উল | ১ | ১৩ | ১৩ |
| ভুনা কাছোকা | ১ | ০ | ৮ |
| আশা রহপু | ১ | ১৮ | ১৮ |
| পাটনাই আশা | ১ | ১ | ১৮ |
| চান্দ পাটনাই | ১ | ১৮ | ১৮ |
| পাহরি উত্তম | ১ | ১৮ | ১৮ |
| পাহরি মধ্যম | ১ | ১৮ | ১৮ |
| মুখা উত্তম | ১ | ১৮ | ১ |
| মুখা মধ্যম | ১ | ১৮ | ১ |
| বলিাম | ১ | ১৮ | ১৮ |
| মুখা গোম | ১ | ১৮ | ১৮ |
| পাটনাই হুই | ১ | ১৮ | ১৮ |
| অফর ডাল | ১ | ১৮ | ১৮ |
| উত্তমগারা হুত | ১ | ১৮ | ১৮ |
| মধ্যম হুত | ১ | ১৮ | ১৮ |
| ভেলা হুত | ১ | ১৮ | ১৮ |
| মধ্যম ভেলা | ১ | ১৮ | ১৮ |
| মোনবাজী | ১ | ৫৮ | ৫৮ |
| মিছরি উত্তম | ১ | ১৮ | ১৮ |
| মিছরি মধ্যম | ১ | ১৮ | ১৮ |
| মোরা উত্তম | ১ | ৫৮ | ৫৮ |
| মধ্যম | ১ | ৫৮ | ৫৮ |
| চিবি কাশী | ১ | ১ | ১৮ |
| মধ্যম | ১ | ১ | ১৮ |
| খার চিনি | ১ | ৩৮ | ১ |
| তেতুল | ১ | ১৮ | ১ |
| ডামাক | ১ | ৩ | ৫৮ |
| চন্দর | ১ | ১৮ | ১৮ |

এই সমাচার দর্শন পুরানপুরে কাশাখানায় পুত্ৰিতন কর্তৃক শনিবারে জাণা হয়। বাহার লগনের আশাশ কর্তৃক তিনি পুরানপুরের জাণাখানায় আপন মাতা পাঠাইলে কখনো কখনো তাহার নিষ্ঠে পাঠান যাইরেক তাহার মূল্য মাত্র এক টাকা। যিনি স্বাক্ষর করিয়াছেন যদি তাহার নিষ্ঠে কাশাখানায় গেল তবে তিনি পুরানপুরের জাণাখানায় সমাচার দ্বিবারে তাহার নিষ্ঠে পাঠান যাই

সমাচার দৰ্পণ

১৪৮ সংখ্যা।

শনিবার।

১৭ মার্চ সন ১৮৭৪।

৫১২২ সন ১২৭৭।

দৰ্পণে দুই বোধদায়ক কাৰ্য্যকৰণ।

বৃত্তান্তিক জানক সমাচারে দৰ্পণে ॥

কোলাসিৰ কাণ্ড।

কোলাসিৰ শতকরা জয় টোকাৰ সুখের
কাণ্ডি কয় কহিতে হইলে শতকরা জয়
টোকা আট আনা শিখিয়ে। বিজয় কহি
তে হইলে শতকরা জয় টোকা শিখি
য়ে।

সপ্তাহের নতিফল।

| | | | | |
|----|-------|-------------|----|-----|
| ১৭ | মার্চ | শনিবার | ৫ | ১৮২ |
| ১৮ | ৫ | রবিবার | ৬ | ৫ |
| ১৯ | ৫ | সোমবার | ৭ | ৫ |
| ২০ | ৫ | মঙ্গলবার | ৮ | ৫ |
| ২১ | ৫ | বুধবার | ৯ | ৫ |
| ২২ | ৫ | বৃহস্পতিবার | ১০ | ৫ |
| ২৩ | ৫ | শুক্রবার | ১১ | ৫ |

নোট হারান।

মোহাম্মদ কলিকাতার শ্রমবদ্ধ মস্তুর
১৮৭১ সপ্তাহের ১০ এক শত টোকাৰ এক
খারিদবাধি নোটি হারাইয়াছে তাহার
টোকা দিতে বাধি বন্দ হইয়াছে যদি সে
নোটি কেহ পায় তবে গবৰ্ণমেণ্ট নোভেড
আগিলে হাখিল কৰিবেক।

নোট হারান।

মোহাম্মদ কলিকাতার শ্রমবদ্ধ মস্তুর
১৮৭১ সপ্তাহের ১০ এক শত টোকাৰ এক
খারিদবাধি নোটি হারাইয়াছে তাহার
টোকা দিতে বাধি বন্দ হইয়াছে যদি সে
নোটি কেহ পায় তবে গবৰ্ণমেণ্ট নোভেড
আগিলে হাখিল কৰিবেক।

ইয়া কুলবাড়িয়া যৌন যাইতেছিল সেই
নোটি পথের মধ্যে হারাইয়াছে। সে কা
রন তাহার টোকা বাধি বন্দ হইয়াছে।
তাহার নম্বর নীচের তালিকায় আট হই
য়া।

| নম্বর | টোকা |
|-------|------|
| ১০১৫ | ১০০ |
| ৮৫৮৩ | ১৫০ |
| ৭১৩২ | ১৫০ |
| ১০৭৪৪ | ১৫০ |
| ১০৭৮০ | ১৫০ |

মহলগো দুই হাজার টোকা ১০০

সমাচার দৰ্পণ।

রাজকম্বোনিয়োগ।

১৮৭৪ সন।

ঐযুত মহলগো দুই হাজার টোকা আ
গিলে অধিক হইয়াছে।

মেক্সিকান কোলাসি।

ঐযুত মেক্সিকান কোলাসি সকলকে
আলাইডেছেন যে ঐযুত ওলিয়াম মটন
সাহেব ও ঐযুত হেনরি হামিলটন বেল
সাহেব এই কোলাসি অংশী নিযুক্ত হই

যাচ্ছেন তৎপুত্র মেক্সিকান মটন কোলা
সি নামে সে আশিনের খ্যাতি হইবেক।

কলহিন কোলাসি।

ঐযুত দেবির কলহিন সাহেব ও ঐযুত
রিচার্ড কাম্বেল বাজেট সাহেব কলি
কাতার আশিন কোলাসি বাধী জাতিয়া
লতন নগরে এই কোলাসি বাধীতে গিয়া
খাছিলেন। ঐযুত জেমিস কলহিন ও
ঐযুত আলেক্সান্দ্র কলহিন ও ঐযুত ওলি
য়াম এইশি সাহেবেরা এখানকার কল
চালাইছেন এবং কলহিন কোলাসি
নামে বাধী খ্যাতি হইবেক।

আজবাতী।

মোহাম্মদ আনিসাতার এক জন ভিন্দার
শ্রী আনিসাত বিন বাইশ বন্দর বয়স্কা
১১ মার্চ রবিবার সুন কহিতে গিরার
বাধি গিয়া আশিন হাতের কপার টোকা
এক জড়া বাধাইয়াছিল তাহাতে তাহার
কামি যথোচিত গাণি দিয়ছিল ইহাতে
মোহী হইয়া তৎপুত্র দেবির খাখিল বেল
বন্দানময়মে অন্য দুই টারি অল শ্রী
লোকেরদিগের সহিত গিরজিল আশি
তে চন্দননগরের ডেপুটীমার বাধি
গেল অন্য শ্রীলোকেরা অল পুরিয়া নই
য়া বাধী গমলোয়ডা হইলে এই ভিন্দার শ্রী
অল লামিলে তাহার জিকান। কলহিন
খি কলহিন অল খাইডেড তাহাতে কলহিন
আশি বন্দ কলহিন ও গাইহি ইহাতে শ্রী
লোকেরা মার্চ টোকাইল ও বুক অল

সম্রাটের দর্পণ।

শ্যামল গৌরব স্নানোক্তে অসুখ্যোগি করি
 কামন আইন অঙ্গ যাহার আশপরি
 হি তাহাতে লেওত্তর করিল যে আশি প
 নতমণে মায়ায় গাউরই ইহা করিয়া গ
 নতমণে মায়ায় গাউরই ইহা করিয়া গ
 অঙ্গল শ্যামল গৌরব স্নানোক্তে অসুখ্যোগি করি
 কামন আইন অঙ্গ যাহার আশপরি
 হি তাহাতে লেওত্তর করিল যে আশি প
 নতমণে মায়ায় গাউরই ইহা করিয়া গ
 নতমণে মায়ায় গাউরই ইহা করিয়া গ

ਟੈਂਡਰ ਘਾਟਾ !

জিনা ঘোষারহরর মরো মো- কুমার
গিঞ্জর মলকুজোত জগাধন ব্রাহ্মণাং সা
হেব ১০ বিশেষরর রনুক জাতিভেজিলেন
কংক পূর্ণ বন্ধুর মুখে আপন হস্ত
দিয়া জিলন । দেবো- কোন কমে কল
কুজিয়া তাঁহার হস্ত লাগিয়া হাত জিন
হইল ঐ আঘাতে জিনি শ্রানত্যাগ করি
লেন ।

ଆବ ୧ :

[illegible]

বৃষ্টি আকুল হইয়া শীলি বারন হইল।
 পরে দুইপুহর রাশির সন্ধ্যা আকাশ
 ঘোলাসা হইল যে ঈশ শীলি হইল তন্দ্রে
 শায় শীলি শোকেরা শ্রমত শীলিহইতে
 মেখে নাই। সে দিবস কলিহীরাতে যে
 বৃষ্টি হইলোঁসি তাহাতেও তন্দ্রা শীলি
 পড়িয়াছিল। ..

গোঁধী

যোঁ তৈলমুহুরহইত এক সাহেব পত্র
 দিখিযায়েল যে ভিত্তি বিনাভী গোঁড়য়ে
 বীজ আনিয়া তৈলমুহুর যোঁকায় সফ
 চারি বৎসর আঁধার করিতেছিল সে
 শমনের শীৰ চারি হাত পর্যন্ত ঘাঁহ হই
 য়া এক বৎসর অভিশূন্য পূৰ্ণা বৎসর হই
 য়া। দেব বৎসর শূন্য এক শমন
 টাঁকায়ে মাড়ে মাড় নৈর করিয়া বিকল্প
 হইয়াছিল এখন তাহা টাঁকায়ে গুণ এক
 মোদ বিকয় হইতেছে ইহাত তখন
 শোকেয়া মত মত হইয়াছে যে তাহারা
 যথ দিষ্টন যাহিলা ব্যতিয়েকৈ কৰ্ম করে
 নাহক শমন মুখু পানি তখন ইহা
 লক্ষ্যে যাহিলা কৰ্ম করত।

सुनवन्ति ।

এছাড়াও জালজারি ও ফিলজারি
মাসিক একাদশ নক্ষত্র হাজার এক নত
বার হাজার বর্ণ কলিকাতার মাদ্রাসা
মাদ্রাসা হইয়াছে এছাড়া নক্ষত্র হাজার
র মাস নত তিন হাজার বর্ণ আশ্রয়
হইয়াছে অনেক সময়ের তিন নক্ষত্র
চলিত হাজার আট নত (শোনা হাজার
বার ছবি হইয়াছে আশ্রয় হইয়াছে।

• **आवृत्ति** ।

নমস্তু ভূবান্বে স্যোক্তব্য ইতি কামবুভে

তিহী আদ্যায়ক যে ১৫ তিহুগরি তাকি
 যে তিহিগর নামে আহায নশণিগর
 দিকত এক চকতে লাগিয়া তারিয়াক
 ডাহতে মৌনালায়ে শূণ্ডত কোণশরি ব
 নিত্যের অহর শূণ্ডত ষ্টেশর সাহেব আ
 জেন আহাযব লোকেরা তীহার আশুর
 তে আরে হীর আহাযে অধিক বোঝাই
 নাই যে আহাযে তাহাওঁরকা হয় এমন
 রহস্যনি আছে। নশণিগর নামাওঁর
 হতেওঁ হুজির ১৭ নংত কোণ।

निर्द्धुः ।

ভুক্ত দেশের বিভিন্ন মহাম্মদ আশ্রম
 তহি করণার্থ ইতালী দেশ হইতে বিলিনী
 নামক এক ভ্রমিককে আনিয়া তাঁহার
 রাখিল পরে সেই ভ্রমিকর এক জেদ্দ
 স্তরের তহি করিয়া মহাম্মদকে দেখাইল।
 মহাম্মদ তাহা দেখিয়া তুম্ব হইলেন
 কিন্তু ভ্রমিক যেরূপকি হইলেন
 শির কিছু ভ্রম্য হইয়াছিল ইহা ভ্রমিককে
 দেখানোর কারণ আপন এক গোলামকে
 আনিয়া তাহার মস্তকভ্রমণ করিতে
 প্রবৃত্ত হইলেন ভ্রমিক তাহাকে বাঁধাইবার
 কার্যে অনেক সূক্ষ্মতা করিল। পরে মহ
 ম্মদের এই মস্তক হ্রাস দেখিয়া সে বিবে
 চনা করিল যে যদি আরা ভ্রমিকর আনা
 হইল কোন দিবসে আমার মস্তকভ্রমণ
 করে এই দেখিয়া সে পলায়ন করিল।

••• ଅନ୍ୟା

এতদ্ব্যন্থে কলিকাতার অস্থগণাতি হান
হিত ইংল্যান্ডের লোকের দৃষ্টিতে মন ১৮৭০
মানের মধ্যে ১৮৭০-এক নত আর্থিক
১৮৭০ ও ১৮৭০-এক নত লোক কল্যাণ ও হিত
১৮৭০-এক নত লোক কল্যাণ ও হিত
১৮৭০-এক নত লোক কল্যাণ ও হিত
১৮৭০-এক নত লোক কল্যাণ ও হিত

সম্বাচার-দর্পণ।

द्वितीय ।

২৩মেম্বে-কলিকাতার অধ্যাপনাতি যো-
দানে ই-প্রতিম লোক আছেন তাঁহার
দ্বিতীয় সন ১৮২৭ সালের ইন্ডস আনু
অরি ল্যাগিএদ হিসেবের এই বার মাসের
মহা ১৩। এই শত একত্রিংশ বিবাহ হই
যাচ্ছে।

যুঁজু।

এতদ্বন্দ্বলি কলিকাতার অধ্যক্ষাতি স্থান
 বিত ২০০০০০ লোকের সংখ্যার মধ্যে ৮০
 তিরিশী স্থান নোং ৩ ১৯৩ ২৫ নত উন
 আশী পুরুষ মহল্ল মধ্যে ১০১ দুই নত
 বাসস্থি লোক-সংখ্যা ১৮২০০ লোকের মধ্যে মরি
 থাকে।

श्रीमद्राजेश्वर मूर्ति ।

ସାମନ୍ତାନ୍ତର ମୂର୍ତ୍ତିତେ ୧୦ ଛିଦ୍ରମାରି ଓ
 ୧୧ ଛିଦ୍ରମାରି ତାରିଧେ ଯେ ୧ ଛିଦ୍ରଟି ନାମ
 ଚନ୍ଦ୍ରାକ୍ଷେ ତାହା ନୀଳେର ଉର୍ଦ୍ଧମାନେ ଆତ ହ
 ଯେନ ।

| सम्वत् | क्रि.श. | उत्था |
|--------|---------|-------|
| २०१६ | | ३००० |
| ७००८ | | ४००० |
| २००९ | | ५००० |
| २०१० | | ६००० |
| २०११ | | ७००० |
| २०१२ | | ८००० |
| २०१३ | | ९००० |
| २०१४ | | १००० |

મર્ચ ૧૦

শ্রী জ্ঞানানন্দিত্যাজে যে ১৫ মার্চ তারিখ
 (৭) আশাখী মূর্তি বিক্রয় হইবে এইরূপে
 সম্বন্ধিত জানা গেল যে ১৫ মার্চ তারিখ
 (৮) মূর্তি বিক্রয় হইয়াছে এবং প্রাপ্ত

পাঠান, যিনি কোল্লারী সাত নক্ষ আট
ত্রিশ হাজার, তাঁকেও ডাকিয়া লইয়াছেন
এবং সেই সকল টিকটে বিক্রয়ার্থে হিন্দু
স্থানবাড়ি ও কবরসমূহকে বিক্রয় করিল।
যে পর্যন্ত নূতন সম্রাটের দেওয়া যায়
সেই পর্যন্ত এক শত বৎসর টিকটের
মূল্য হইয়াছে।

उत्तर १।

তু। গিও সন্ধ্যাবে পূর্ণিমা। কলিক।
 ভাতে অল্প আখ্যাদানি ইয়ায়। এই-
 নাত্রে আঁঠুর টোকা মুন্স। বিক্রম ইয়ায়।
 জে। গিও বৎসরে যোকায়া য়রআপুইয়ায়।
 ১৩ ৩৪৬ এক লক্ষ তিনশ তু। আর। গিন।
 ১৩ ৩৪৭ একশ গিইটে তু। আখ্যাদানি।
 ইয়ায়। সেখানে পূর্ণিমাতে ঝারোআনা।
 মুন্স। নু। ইয়ায়। মরুপদাবাদে। এই-
 টোকা মুন্স। নু। ইয়ায়। ও কলোতা।
 তু। আর। মুন্স। শেয়ার টোকা। চারি। আনা।
 আর। শেয়ার টোকা। আট আনা পর্যন্ত।
 বিক্রি।

५. **हरीणः**

ନୀଳ ଏ ସମୟେ ହାଜାର ଆଡାଳୁ ଆସେ
 ଏହି ବ୍ୟବସାୟ ନୀଳ ନାମୀମାନଙ୍କ ଯାତ୍ରା ୧୯୩୫
 ଓକ୍ଟୋବର ମାସର ତିନି ଶହ ଚୋରାସି
 ଯୋଗ ଆସିଥାନ୍ତି ବୋଲି କୁହାଯାଏ । ଗତ ବ୍ୟବସାୟ
 ଏହି ତାରିଖଯାଏଳେ ୧୯୩୫ ଏକ ଲକ୍ଷ ଦିନ
 ହାଜାର ଚୋରାସି ଯୋଗ ନୀଳ ଆସିଥାନ୍ତି
 ବୋଲି କୁହାଯାଏ ।

શ્રી શ્યામ સંપ્રદાય મંદિરો

সম্রাটের জালা চোপে যে প্রস্থিত নর
জুজী মহারাজ গতি সুবিধার অগুণী
পেছিয়াছেন। এক-কল-মাইতে
যে হা-নী ব্যর্থ-দর্শন-হরি-দুর্গা-ইই

কিন্তু মাল দশনপুত্র হরিহারপাণ্ডিত সি
মাতৃহত্যারাজ্যের দেশে দিয়া পুনঃস্থায় য
ইয়া আপন দেশে গাইবেল।

अङ्गिराह ।

১৫ মাঠ বহরতিবার মোঃ কলিকাতার ব
খবাজের অগ্নি শাখায় ডেরেটির বাজার
পাখি মনে হইয়াছে। ইহাতে অনেক
লোকের অনেক দুখাদি লক্ষ হইয়াছে
এ অনেক জীবহত্যা হইয়াছে। এ বৎ
সর দক্ষিণে গুণমারত এই হইল।

विद्युत् ।

মুন্সিংগের আর ন্যায়ের নিবটে এক
পুস্তকের খাতিয়েইতে এক পুস্তক আনিয়া
জব করিলে তাঁহার মধ্যাহ্নেইতে একখানি
শিশুর বাহির হইল । ইহাতে বোধ হয়
যে পুস্তকালের শিশুর জন্ম মাস্তুল
সেইখানত পুস্তক আনিয়া চতুর্দিকে বে
ধিও হইয়াছে ।

आभार्यः वर्त्मनः ।

ভাঙ্গা দেশের এক ক্ষুদ্র গুণ্ডা এক ভক্তি
এক বৃক্ষ জেদন করিয়া কয়তাবার মৃত্যু
করিতেছিল তাহাতে বৃক্ষের মর্যে পদ
পেই কোব নিরু সাঁত বার স্থানে দেখিয়া
তাহা ভাঙ্গা দেশের আশ্রয়ালয়ে আনিয়া
রাখিয়াছে।

गिद्धायाय १

সম্রাটের পাওয়া গেল যে মোকাম খান
রাওজেক্টলভের হত্যাকাণ্ডের এক গিরজা।
যদি প্রস্তুত হয়ে থাকে সে ঘরে ১৫ শতাব্দী
খ্রিস্টাব্দে ইতিহাসে লুপ্ত গিরজা হয়ে
যাক।

সংবাদ দর্পণ।

माँदेवा :

କଟକର ଯେଉଁ ଡୁହର ନଦୀର ନଦୀର
 ମୁକାର ନୀଳା ହେଉଥିଲେ ତାହାର ବିଷୟ
 ମୁଁ ଜାଣିଲି ଗିନାରେ ତାହାର ବିଷୟ ଏହି
 ହେଲା ଗିନାର ଆନା ଗିନ ଡୁହର ନଦୀ ୧୫
 ହୁଏ ଏବଂ ଏକାନ୍ତରେ ହାତ ମୁହ ଏକାନ୍ତରେ
 କେବଳ ନୌକା ଗିନାରେ ନୀଳା ମୁକ୍ତ
 ହେଉଛି ଏ ମେଣ୍ଡର ଗିନାରେ ଗିନା ଗି
 ନାରେ ତହାବି ଗିନା ଗିନା ମୁକ୍ତ ଗିନା
 ଗିନା ଗିନାରେ । ଏବଂ ତାହାର ନୀଳ
 ହେଉଛି ନୌକା ଗିନାରେ ଗିନା ଗିନା
 ଗିନାରେ ।

অসভ্যতা !

গাত ব'সেই ইংগুত বেঁধে এক উত্তম
সুখ্যাঁহুল হইয়াছিল তাহাতে বরমি-
হয় নগ্নত্বের এক সাদরে সম্মার্চনের
কাণ্ডে এ গুণবান জ্ঞানসিদ্ধিলাভে যে গু-
হন এখানে সুক্লর দর্শন হইবে ইহাও
সেই নগ্নত্বের সিকিষ্টই স্বতঃ অঙ্গভা শো-
ভের। এ গুণবানগর্ভে বরমি-হয় নগ্ন
ত্ব সেই দিবসে সেই সময় আনিয়াওণ
জিৎ হইল।

आभार्यन्ति ।

ইংল্যান্ড ও অন্য পুঁজি বর্গের এই
ক্রোধিত আক্রমণে যে পুঁজিবীর হান্ধা যত আক
র্ষ্য বস্তু পাওয়া যায় সে সব একত্র রা
খা। তাহাতে নতুন নগরের আঁকখ্যা
নিয়ে এক জন আলবান আকর্ষ্য যেহেতু
শিয়া নানা পুঁজির যেহেতু একজন পুঁজির

মুখের প্রাণিলেন তাইতে হস্তহইতে সে
 পুস্তক পড়িয়া দুই তিন হইল তাহার দুই
 মধ্যেতে মনুষ্যের মনের ছবি দৃষ্ট হইল
 ই-প্রভেত পূর্ণ কাব্যভার যে ছবি পুস্তক
 ইহাছিল সেই ছবির মনের লক্ষ-
 দেখিল।

આભાર્ય! શિશુચારુ !

কঠোর দেনে কর্তৃক মাহেব এক নদী
পার হইতেছিল সেই নদীতে খেওর
এক শিল্পীর গঠন তাহার সে নৌকার
ভাৰ নৌকেই তাহা দেখিল।

୧୦. ସ୍ତ୍ରୀମାନଙ୍କର ସ୍ୱାଧୀନତା ।

ই-প্রাপ্তে প্রস্তুত মহারাষ্ট্রের সমিতি
 জীবন্তমহারাষ্ট্রীয় (যে বিবাহ ঘাইতে
 তাহাতে ই-প্রাপ্তে এক গার্লের) স্ত্রী
 রাষ্ট্রীয় আর্থের ক্রয় প্রসিদ্ধি আনয়ন
 বিবেচনা করিয়া অতি-ক্লেশ সহিত জন-
 নস্বৰ্গ আদি নত হোকা নহিয়া এক ডি-
 গিয়া মহারাষ্ট্রীয় নিকটে পাঠাইয়া দি-
 ইয়া মহারাষ্ট্রীয় শরমভয়ে ইয়া (সে
 স্ত্রীসহ) আনয়ন নিকটে আনাইয়া
 যথোচিত সমিতি করিলেন এ আদি নত
 হোকা প্রিয়াইয়া নির্দেশ এ আনয়ন
 এক বর্ষ হইয়া তাহাকে প্রিয়া করিলেন (যে
 আশ্রমে বসন্ত) এ বর্ষ প্রিয়াইয়া
 শ্রম ক্রয় কোন বিষয়ে প্রিয়া হইয়া না
 স্ত্রীর আশ্রমের বিষয়ে অবশ্য মনন করি-
 লেন এই-কণ বর্ষিয়া তাহাকে বিয়া
 করিলেন

‘ਬਾਜ਼ਾਰ ਚੀਜ਼ ਹੈ’

| ক্রমিক | নাম | বয়স | পরিচয় |
|--------|-----------------|------|--------|
| ১ | মুন্সারি | ১ | ৩৫ |
| ২ | কৈলাশ চৈতন | ১ | ২০ |
| ৩ | গাই মরিচ | ১ | ৩ |
| ৪ | নারিকেল চৈতন | ১ | ১০৫ |
| ৫ | কুলা কাছোলা | ১ | ০ |
| ৬ | আরা ব্রহ্মপুত্র | ১ | ১১০ |
| ৭ | পাটনাই আরা | ১ | ১ |
| ৮ | চান্দ পাটনাই | ১ | ১১১ |
| ৯ | পাছুরি উত্তম | ১ | ১১১ |
| ১০ | পাছুরি মধ্যম | ১ | ১১১ |
| ১১ | মুণী উত্তম | ১ | ১১১ |
| ১২ | মুণী মধ্যম | ১ | ১১১ |
| ১৩ | আনার | ১ | ১১১ |
| ১৪ | মুখা গোম | ১ | ১১১ |
| ১৫ | পাটনাই বুট | ১ | ১১১ |
| ১৬ | অধর তালি | ১ | ১১১ |
| ১৭ | উত্তমপাড়া বুট | ১ | ১১১ |
| ১৮ | মধ্যম বুট | ১ | ১১১ |
| ১৯ | চৈতন বুট | ১ | ১১১ |
| ২০ | মধ্যম চৈতন | ১ | ১১১ |
| ২১ | মোমবাণী | ১ | ১১১ |
| ২২ | মিছুরি উত্তম | ১ | ১১১ |
| ২৩ | মিছুরি মধ্যম | ১ | ১১১ |
| ২৪ | মোহা উত্তম | ১ | ১১১ |
| ২৫ | মধ্যম | ১ | ১১১ |
| ২৬ | চিনি আনার | ১ | ১১১ |
| ২৭ | মধ্যম | ১ | ১১১ |
| ২৮ | বার চিনি | ১ | ১১১ |
| ২৯ | কৈলাশ | ১ | ১১১ |
| ৩০ | আনার | ১ | ১১১ |

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुदेव श्यामाक्षाय नमः ॥ श्रीगुरुदेव श्यामाक्षाय नमः ॥ श्रीगुरुदेव श्यामाक्षाय नमः ॥ श्रीगुरुदेव श्यामाक्षाय नमः ॥

সমাচার দর্পণ

৪৪০ নং-৪৪১।

শনিবার।

১৪ মার্চ ১৯১১।

খ্রীষ্টাব্দ ১৯১১।

বাংলায় প্রথম প্রকাশিত কাগজ।

বঙ্গদেশের প্রথম প্রকাশিত কাগজ।

কোলাসির কাগজ।

কোলাসির শতকরা জয় টাকার মূল্য
কাগজ কয় করিতে হইলে শতকরা জয়
টাকা আট আনা পুথিয়ায়। বিস্ময় করি
তে হইলে শতকরা জয় টাকা পুথিয়ায়
হয়।

সমস্তের নজর।

| ১৪ | মার্চ | শনিবার | ১২ | চৈত্র |
|----|-------|-------------|----|-------|
| ১৫ | ৫ | রবিবার | ১৩ | ৫ |
| ১৬ | ৫ | সোমবার | ১৪ | ৫ |
| ১৭ | ৫ | মঙ্গলবার | ১৫ | ৫ |
| ১৮ | ৫ | বুধবার | ১৬ | ৫ |
| ১৯ | ৫ | বৃহস্পতিবার | ১৭ | ৫ |
| ২০ | ৫ | শুক্রবার | ১৮ | ৫ |

বাংলায় হারান।

ঐযুত চন্দ্রমোহন ঠাকুরের জেমন
মাকদিক্তিক বৃত্ত ১০০ নম্বরের এক মণ
ঘড়ী তেঁহার ঘর ভিত্তির সহিত ও ঘর
দুশ মণ্ডির সময়ে ১৩ মার্চ শুক্রবার সাত
ঘণ্টা রাশির সময়ে হারাইয়াছে যে লোক
এঘড়ীর সমাচার দিতে পারে কিনা ঘড়ী
কিট পারবে সে লোক ওনয়কু নাগিতোদিক
পাইবেক।

নোট হারান।

মোঃ বাবুলসীতে ৫০০ কোলাসির

ঘাইতে ৩ মার্চ তারিখে রাশিতে পাঁচ
খান নোটের টাকাকে তাহার টাকা
বাইক বদল হইয়াছে যদি কোন লোক
ইহার আনুমানিক করিয়া দিতে পারে
তবে সে বাধ্যশীল নাইবেক নোটের টাকা
ও নম্বর নীচের উপনীলে খাঁত হইবে।

| নম্বর | টাকা | বাইক |
|-------|------|-----------|
| ৪৯৪ | ১০০ | বয়সমান |
| ৪৯৯ | ১০০ | ৫ |
| ১৭৫২ | ১০০ | ৫ |
| ১১১৩৪ | ১০০ | হিন্দুমান |
| ১১১৩৬ | ১০০ | ৫ |

সমাচার দর্পণ

ঐযুত কোলাসির বাহাদুর।

ঐযুত কোলাসির বাহাদুরের এক অসীম
সর আসলকান্দু আশ্রয় সাহেবের মৃত্যু
হইয়াছে ওনয়কু নিযুক্ত হওয়ার কারণ
ঐযুত ২১ বি এডমন্ডসন সাহেব ও ঐ
যুত ওয়াগন সাহেব ও ঐযুত আসলকান্দু
রাষ্ট্রসন সাহেব ঐযুত জে পি মন্সফোর্ট
সাহেব ওপস্থিত আছেন। ইহার মধ্যে
যাহার দ্বারা অধিক লোক সম্মত হই
বেক তিনি পদাধিকার হইবেন। কিন্তু
কমমান হয় যে ঐযুত এডমন্ডসন সা

হেব ওনয়কু অধিক হইতে পারেন
যেহতুক তিনি ওপস্থিত হইলে অন্য
তিন সাহেব ওপস্থিত হইবেন না এবং
তিনি নানা প্রকারে বিবে।

ঐযুত মহারাজ সরমস্বর্তী।

মুরশিদাবাদহইতে সমাচার আসিয়া
ছে যে ঐযুত মহারাজ সরমস্বর্তী মোঃ
বকুয়া গুমহাইতে ১৩ মার্চ তারিখে দৈন্য
জিহবেন এমত উদ্যোগি আছেন সেখানহই
তে নীচ কোণ ওতরে বহরমপুর সেখা
নেও আয়োজন হইতেছে।

অগ্নিদহ।

গত সন্ধ্যায় কাশান গাতিতে যে ১৪ মার্চ
বৃহস্পতিবার কলিকাতার বহরমপুরে যে
অগ্নি লাগিয়াছিল তাহার বিস্তারিত তথ্য
আলা গেল না কেহ কহে তুলা গলিতে
এক ঘরোর বাটতে পুখুম অগ্নি লাগে
ইহাতে সে ঘরোর কারাগারে বন্ধ হই
যায়ে। কেহ কহে এক মোকরা মলার
তে এক চিকিৎসকের বাটতে অগ্নি আ
নিতো গিয়াছিল তদুপায় অগ্নি লাগিয়া
ছে। ইকালে নীচ ঘড়ীর সময়ে তুলা
গলিতে অগ্নি পুজুলি হইয়া কলোটা
ও তেঁতৌর বাজার ও বহরমপুর ঘর
হইয়া আট ঘণ্টা রাশির সময়ে অগ্নি
নির্বাণ হইল।

মূল।

জিলা বহরমপুরের মধ্যে নীচী গুমের

সমাচার দর্পণ

এক বুড়ুলি ই জিয়ার মাঝে। গোঁপালপুর
গুহায়ে বিবাহ করিয়াছিল বিজুলেশ্বর
গড় ১৫ শালশ্রবণ শুক্লাব্দে আসিল স্বীকৃত
লয় গিয়াছিল। এক বিবস জাহার শাল
কোঁঞ জাহার স্বকৃত এ গুহায়ে ডাল
দায় পুজি সকলে একত্রে ইহা। মায়শ
গয়ে-আলোড়ন করিয়াছিল। দেবো-
ই বুড়ুলি একই ভাগে ওপড়িই হইলে ভাষা
কে বহনমায়ার করিয়া বিশেষ করিল।

ତାହାତେ ମେ ଅନ୍ଧାବୁତ ହିଲ ମରେ ତାହାର
 ଅନ୍ତର ତାହାକେ ମେ ହାଲହାତେ ଯାଉତେ
 କହିଲ କିନ୍ତୁ ତାହାର ମ୍ୟାନକ ଯାକିହିଲ
 ମ୍ୟା ନୟା ତାହାର କମାଲେ ଦିଲକ ଦିଲ ।

ইহাতে সে দুই এক কুখ্যাত বাগিয়া নৃপা
করিয়া সম্মান-সম্মান করি ইহা ক্রিয়া
তাহার শাস্ত্রী আপন পুণ্য-কীর্তি
যথোচিত মান করিল। পরে ব্রাহ্মণ ও
ব্রাহ্মণ আহারাদি না করিয়া আপন
কৃত্যে কহিল আমি মুণ্ডকালে বাঁধী
যাইয়া দুই দিন খিৰসের মাথো বেছিয়া
পাঠাইব তুমি এঘরিত তাহাতে তাহার
স্বীকার করিল। এই সকল কথা ই
স্বীকার করিয়া আসে ব্রাহ্মণ করিল
এক তাহার স্বামী ও আনন্দ পুত্রকে
অনেক দুঃখিতা করিল। পরে তাহার
বিবেচনা করিল যে এলোককে রাখি
কর্তব্য নহে ইহাতে পীঠসংগত জন একত্র
হইয়া তাহার ব্যস্ত ব্যস্ত বাঁধিয়া করিল
হার শোণ তাহার নইব। তাহাতে তা
হার ব্যস্ত হইয়া হার মুখিয়া গিল পরে
কেহ ই স্বীকার বন্ধ করিয়া রাখিল এবং
কেহ ই ব্রাহ্মণের পদে দক্ষতা ও
মুখোবাতিয়া হইয়া আসে কীর্তি
করিয়া তাহার দ্বন্দ্ব করিল।

ନବେ ଏ ମୁଦ୍ରାର ଚୌକିଦାର ଏହି ମନ୍ତ୍ରଣ
 କୁନିଆ ବାଣୀର ମନ୍ତ୍ରଣ ଆମିଆ ଧୁନ ସେମିଆ
 ନବେ ତାଳିକରାର ଡାହାକେ ୦୦ ଡାହା ଦିଆ

মূল ভাষার জিন্মা কল্লিয়ার-বিল টোবিয়ার
সে মূল নইয়া ২৩ শায়ের অফারাত
এক বৃদ্ধ জাইয়া রাফিন ৩ অল্প রাফিন থা
কিলে-অফীর মূল (মোহিরা) ৩ টোবিয়ার
কে-৩ টোকা-জিয়া অল্প গুয়ে টোকাইল।
সে গুয়ের টোবিয়ার নুতুয়ে ২ মূল নে
মিরা এক নুতুনেতে নুতুয়া রাফিল
নুতুনে মূল হুতুনে ৩ হুতুনে শব্দর
অমাতকে আনিয়ে কানুনিক এক নত
বিদ্যা-অফারাত বারীতে পাঠাইল। নত
পাইয়া অফারাত শিতা বাক হইয়া গো
পালশুর চলিল নথের মঠো আশা শাল
কের বটো ঘাইয়া সকল কলিল ৩ নুতুয়ে
মুজা ময়াদর সেইখানে স্থলিল। সে
মালইহ-ই-নৈত নাও জন একত হইয়া
গোপালশুর গুয় ঘাইয়া নুতুয়ে শব্দর
নয় গিয়া স্থলিল য সে শব্দর অফা
নামে গুয়ে কলিল কিয়া ময়াদর। এক
নামে গোয়ে মুহম্মদের কীরামিন করি
য়া আপল শব্দরের লিভে সকল বৃত্তান্ত
কলিল ইহাও ভাষায় সে হুতুনেকে
মূল করিতে ওয়াও হইলে ভাষায় মরী
লোকো মোর করিল ইহাও টোবিয়ার
৩ গুয়াক লোকে ৩ হারাগো নুতু আদি
গানকলে ইব্বিন ৩ যয়ে মূল হুতুকে
ইহাও অফীর বরা পলিল ৩ অফীরের কথা
তে টোবিয়ার বরা পলিল ৩ টোবিয়ারের
কথাতে অল্প গুয়ের টোবিয়ার বরা
পলিয়া মূল ওয়াইয়া মিল। পরে সে হুতু
কো গোমী ময়েও ৩ ডালুকবার ৩ টো
বিয়ার ৩ মরী নুতু অয়েল লোক
কর হইয়া হুতুনে চালিল ইহায়ে
নত অফারাতে য়েও হই।

অন্যথা !
 ওলাগিয়ের এক ব্রাহ্মণ বলিহাডায়
 চাকরি করে সে বাটী পাঁচনের কলু করি

যা বাণী অন্যাকার দ্বিগতিল যৈবা- কোন
 কমে যাঞা হইল না। পরে কোন দুহ
 লোকে গুণের যবী গ্রিণা জলর বহিল
 যে সে এলাঙা। রোণে ময়িতাজে ইহা
 গুণিয়া তাহার বুজ্বানী গালয় হাতি যিয়া
 ময়িতাজে।

ਲਾਟ ।

কালটি দেশের বলহরী মুন্সীর বাজারে
২৪ ছিদ্দুআরি তারিখে অনেক তাহাইত
আমিয়া লুট করিয়া এক মহাজিনকে খুন
করিয়া ও অন্য তিন জনকে আঘাত
করিয়া গিয়াছে।

बज्रुशिउ ।

১৩ মার্চ মনীনবার বলিষ্ঠা অরুণে
যে তালুক বন্ধি হইয়াছিল তাহাতে এক
আহাজের মাস্তুলের ওপরে এক বজ্রাঘাত
হইয়া মাস্তুলের জিঞ্জির বাহিয়া সে বজ্র
ভুলে পড়িয়াছে।

গিহজা :

যে এক গিরিজা ঘর পশ্চত হয়েছিল সে
ঘর গাভ উজবাড়ি খোলা গিয়াছে।

পারিস সর্গের লোহম-১৫।

ফ্রান্স দেশের রাজধানী প্যারিস নগরের
লোক হুজি ইহা ৩৫৭৭৭ ছয় লক্ষ
সাতাশ হাজার এক শত বাঁহতরি লোক
হইয়াছে ইহার মধ্যে তিন ভাগ খ্রী
স্টীয় ভাগ পুরুষ ।

ଆଦିହ ସେନ ।

୧୭ ଡିସୁଆରି ତାରିଖେର ଶଙ୍କାଟେର ଡିନୀ

সমাচার দর্পণ।

বোম্বের তাকে ১৯ মার্চ মোকাম কলি
ক্রান্তিও আসিয়াছে তাহাতে জানা গেল
ন যে বোম্বের হইতে ইংল্যান্ডের সৈন্য আ
রব দেশের জোয়ার নগরে যেখানে নথি
ন সেইখানে ১০ থিয়ুআরি রাষ্ট্রতে দুই
শত আরবীয় সৈন্য আসিয়া অগ্নিগামী
ইংল্যান্ডের সৈন্যের ওপর আক্রমণ করিয়া
৪০ জনকে মৃত ও আঘাত করিল। ইহার
মধ্যে এক জন সর্নেল ও এক ক্যাপ্টান ও
অন্য তিন জন সর্নেলসর অধীক্ষক মাহেব
মৃত হইয়াছে। এখন আরবীয় সৈন্য
সকল সময়ে পোলের হাওয়ার আছে ইং
ল্যান্ডের সৈন্য কেবল পাঁচ হাজার আছে।
বোম্বের হইতে যে আহাজে ইংল্যান্ডের সৈ
ন্য জোয়ার নগরে গিয়াছিল সেই আহা
জের এক মাহেব আরবীয় এক সৈন্যের
নাহমের বিষয় লিখিয়াছে যেখানে ইং
ল্যান্ডের এক গোঁরা সৈন্য এক আরবের পে
টের মধ্যে সন্নীল বসাইল তখন সেই আ
রবীয় সৈন্য আপন পেটের সন্নীল আপন
হস্তদ্বারা বন্ধুরে মুখহইতে ছিড়িয়া বা
হির করিয়া ফেলিয়া গোঁরা সর্নেল
পড়িয়া সেই গোঁরার দুই হস্ত ছেদন
করিল।

মালিলা ওপদীপ।

মালিলা ওপদীপ হইতে মাকদারত আ
হাজ নৈজিয়ায় তাহাতে জানা গেল যে
ইংল্যান্ডের বানিজ্য অধিকারী যে পুর্বা
নাহের ডিলি মিথিয়া আসিয়াছেন এবং
তাঁহার অংশী দুই মাহেব মৃত হই
য়াছে তাহা পুর্বে জানা গিয়াছে। এই
মৃতের অঙ্গদন্তে অনেক লোক মদ্যম
হইয়াছে তাহার মধ্যে এক জনের স্ত্রী
হইয়াছে ও অন্য দুই শত পঞ্চাশ লোক
কাগাণের বন্ধ হইয়াছে।

ইয়াকুপ।

১৯ মার্চ জারিমের এক সমাচার মাকদারত
হইতে আসিয়াছে তাহাতে লিখিয়াছে
যে গত রাতি পাঁচ রাষ্ট্রিতে পশ্চিম দিক
ইয়াকুপ ওস্তান হিন্দু কয়েক জনের
হাস হইতেছে।

সি-হলদীপ।

সি-হলদীপের সমাচার পুর্নহারি আ
না গেল যে গত বৎসরের মধ্যে ৩৪৪৯
গোত্রি হাজার চাটি শত বিরানহই লো
কেহু চীকা হইয়াছে।

আকুফা ওবহি।

বারীলাহইতে ইংল্যান্ডে এক আহাজি মা
ইতেছিল পথ লবণামুপুক্ষু বিয়া কোন
মায়া দুখামুপুক্ষু বিয়া পিতৃজনা সেই আ
হাজি তাব-লোকের স্ত্রীর চাকার
হইল ইহাতে তাহার অতিশয় ভয়
হইল। ইহা-সেই আহাজে হতক
গুলি কোলা জিল তাহাতে অল লাগিয়া
তাহার অঙ্গুর হইয়াছিল। আহাজি
লোকের তাহা দেখিয়া সেই কোলা লক্ষ
না হওনের কারণ সকলে ভয় করিতে
লাগিল কিন্তু এক জন তাহা ভয় করি
ল না। পরে ঘাইয়া ভয় করিল তা
হার সকলেই অগ্নিগামী হইল ইহা যে
খিয়া যে ব্যক্তি ভয় না করিয়াছিল
সেও এই কোলায় ওল দিল্লি আসিয়া ভ
য় করিয়া অগ্নিগামী হইল।

তাকাইতি।

মোকাম পুরাতন কালনাগারে ১৯
ফাল্গুন পলিবার দুই পুহর রাষ্ট্রির সম
য়ে কুলানটীতে আকুফা গ্রাম পশ্চিম অ
তাকাইতি পক্ষীয় অনেক দুখাই লইল

এ সেই গাঁয়ের মধ্যে এক বিবাহী স্ত্রী লোক
লিখিয়া জিল সে আশুয়াহ আস করিয়া
বাহিরে আসিয়া তাকাইতি দেখিল। ও
তাহার দিক দিয়া অনুযোগ বিবাহে
বাহন করিল তাহাতে দুই জন তাকাইতি
বর্জাচার সে স্ত্রীলোককে মৃত করিল
ও এই লোক দুই জন পুঙ্খক মৃত করিয়াছে
সে তাকাইতির লোক অন্যান্য হইতেছে।

ওয়াত।

চীন দেশে চা-খির নামে এক ব্যক্তির
পুত্র চা-খির নামে সে ওয়াত হইয়াছি
ল। তাহার এক পুত্র রাজ্যের রীতি ক্রমে
তাহাকে কাগাণের বন্ধ রাষ্ট্রিতে হয় এই
কারণ অন্য কাহাকেও আনিয়া নাই। এক
দিবস এই ওয়াত এক কুরকা হস্তে করি
য়া নৃত্য করিতেছিল এই সময় তাহার
পিতা তাহাকে ডাকিল তাহাতে সে দিল
টে আসিয়া এই কুরকা দ্বারা আপন পিতা
কে বধ করিল। পরে হাফিমের লোক
আসিয়া আদানত করিয়া তাহার দুই
চক্ষু বন্ধ হইয়াছিল। হাটের মধ্যে লই
য়া তাহার মস্তক ছেদন করিল। এবং
লোকের দ্বারা তাহাকে তাহাকে পুর্কান
মানে পুর্ন দিয়া রাখিল।

ওলবাধা।

মুখল দেশের এক ভাগে অনেক ওলবাধা
আছে তাহার কয়েক দুই হইতেছে
তাঁহার লিষ্ট দিয়া লোক ঘাইতে আক
মন করে। এবং লিষ্টের এক গোয়র এক
বালককে অনেক লোকের ঘাই হইতে বহি
রা লইয়াছিল। পরে তাহার পক্ষা-২
লোক গিয়া তাহাকে ধরিয়া পড়িল না।
পরদিবস সে বালকের হাফমাত্র শাইল
একারণ এই সকল ওলবাধা মারিতে যত্ন
হইয়াছে।

সম্রাটের দর্পণ।

চীন দেশ।

সম্রাটের আশা কোন যে গ্রীন দেশের
শুভকৃত মহাদ্রাঘীর ভ্রাতা রাজ্য নামে
খ্যাত ছিলেন তিনি তিন মাস রোগগ্রস্ত
থাকিয়া পরিশেষে মৃত্যু হইয়াছেন। তিনি
কখন কখন ছিলেন ওখন তাঁহার ভোগ
ভ্রাতা তাঁহারই মনু করবার করণ এ
তাঁহারই মনু রাধিকার করণ তাহার
মুতি দিন মৃত্যু খ্যাতি ছিলেন। এবং
এ রাজ্য অমূল্য হইলেও পূর্বে আশ্চর্যের
গৌরব শিবুশিতাময়ের কবরস্থান যেখা
তে বাসিন্দা করিয়াছিলেন এখন এককালে
সেই স্থানেই তাঁহারই ঘাইতে হইল।

আমেরিকা যাত্রার।

আমেরিকা দেশে গমনের এজন্য এক
যাত্রার হুঁস বাসের সময়ের চারি পাঁচ
কুহুরের সহিত যুক্ত করিয়া আঁই হইয়া
ছে। এক কুহুরের গলবেশে হস্তাঘাত
করিবামাত্র কুহুরের পূর্ণভাগে করে এই
কি চারি পাঁচ কুহুর বহি করিয়াছে।

শিবলমকাই।

আমেরিকা দেশে ১০ জন ডার্মিমে দুই
জন সাহেব কুহুরবন্দ্যে বিরোধি করিয়া
পরস্পর নিতুনদকাই করিয়া এই সাহেব
অগ্নি ময়িল অন্য সাহেব কিছু পরে
ময়িল এই দুই সাহেবের পরস্পর অভিযা
মুতি দিন কুহুরমুতাও ছিল।

আমেরিকা কুহুর লাভ।

ইংলণ্ড দেশে গতি বৎসরের যে সূর্য

গৃহনে অসম্ভব লোকেরিগের বিষয় গতি
সম্রাটের জাশান ট্রাফারে সেই গৃহনে যে
মিডে বায় কুহুরীন এক জন সাহেব বা
হিরে থাকিয়া থাকিলে চক্ৰবর্তী হইল রা
খিয়া গৃহনে যেখাডারিলে বৈরাগ্য সেই
বয়সে তৎকালে হুঁস হইয়া দুই চক্ৰ
সময় মতি হইল।

রাজমুখ।

কটকট দেশে শুভি- নগরে বোর্ড
সাহেব এ হুঁস সাহেব রাজমুখের হইয়া
ছিলেন সেই অন্যরাই তৎকালে ডার্মিমে
সম্রাটের গতি ৮ মেডমুর ডার্মিমে তাঁহার
হিরে দুই জনের ক্রীন্দা হইয়াছে। এক
বয়সে ক্রীন্দা হইল পরে দাম্যিয়া
জীন্দা থাকিতে পুর্বার মধ্যমাতে
মন্তক জেবন করিয়া গুল্লাই এই মতে
মন্তক হস্তে করিয়া দুই জনের অন্যরাই
সর্বত্র পুর্কান করিয়া লোকেরিগেরে দেখা
হল।

সেঞ্চপাটরিক অর্থাৎ মহাপুঙ্ক।

ঈশ্বর দেশে পূর্বে সেঞ্চপাটরিক নামে
অতিবাহিত এক লোক ছিল তাঁহার
উদ্দেশ্য লোকেরা বিশ্বাসবশ বোধ ক
রিত তাহার জন্ম দিন গতি ১৭ মন্তক শনি
বার হইয়াছে তাহারে উদ্দেশ্য জন্ম
নর শুভম্ মাইলান সাহেব মুক্তি
অনন্তে চৌলহালে অর্থাৎ সাধারণ বার
এক হইয়া অতিশয় আশা করিয়াছেন
এই কলিকাতার গতি উদ্দেশ্য যে
সৈন্যের আশে তাঁহার ১১ ডার্মিমে এই
গতি আশা করিয়াছে।

বাজার কাণ্ড।

| খ্রিস্টাব্দ | মাস | তারিখ | পট |
|---------------|-----|-------|----|
| সুয়ার | ১ | ৩৫ | ৩৫ |
| ভেডো ডেল | ১ | ১০ | ১৫ |
| গাছ মরিচ | ১ | ৫ | ৫ |
| নারিকেল ডেল | ১ | ১৫ | ১০ |
| কুলা কাম্বোজা | ১ | ৫ | ৫ |
| জামা চকপু | ১ | ১০ | ১৫ |
| পাটনাই আশা | ১ | ১ | ১৫ |
| চালু পাটনাই | ১ | ১৫ | ১৫ |
| পাছতি উত্তর | ১ | ১৫ | ১৫ |
| পাছতি মধ্যম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মুগা উত্তর | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মুগা মধ্যম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| বাল্যম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মুগা গোম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| পাটনাই দুই | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মুগুর তালি | ১ | ১৫ | ১৫ |
| উত্তরমারা মৃত | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মধ্যম মৃত | ১ | ১৫ | ১৫ |
| ভৈলা মৃত | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মধ্যম ভৈলা | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মোম্বালী | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মিছরি উত্তর | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মিছরি মধ্যম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মোরা উত্তর | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মধ্যম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| চিরা কাশী | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মধ্যম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| খার চিরা | ১ | ১৫ | ১৫ |
| ভেডো | ১ | ১৫ | ১৫ |
| ভায়া | ১ | ১৫ | ১৫ |
| চকর | ১ | ১৫ | ১৫ |

এই সম্রাটের বর্ণন পুরাণপুরে জাপানদেশে পশ্চিমবঙ্গে হস্তা হইল। যাহার মতের আশ্চর্য্য হইল তিনি পুরাণপুরের জাপানদেশে
জাপান বার পাঠাইলে লক্ষ্যে জাপান তাঁহার সিকট পুরাণ হাইকোজার মত মনে একটাক বিধি হাইকো করিয়াছেন যদি তাহার বিধি
জাপান না পড়ে তবে তিনি পুরাণপুরের জাপানদেশে পশ্চিমবঙ্গে হস্তা হইল।

সমাচার দর্পণ

১০০ নং পৃষ্ঠা।

শনিবার।

৩০ মার্চ সন ১৩২১।

১৯ প্রৈশ্ব সন ১২২৫।

দর্পণে মুখ পোষণীয় কার্যসিদ্ধি প্রকাশ। বৃত্তান্তনিধি কালক সমাচারে দর্পণ।

কেল্লিগিরি কাণ্ড।

কেল্লিগিরি শতকরা অন্ন টাকার মূল্যের
প্রাণিজ হয় করিতে হইলে শতকরা আট
টাকা আট আনা প্রিমিয়াম। বিক্রয় করি
তে হইলে শতকরা আট টাকা প্রিমিয়াম।

সম্মানিত পণ্ডিত

| | | | | |
|----|--------|-------------|----|------|
| ৩১ | মার্চ | শনিবার | ১৯ | টাকা |
| ১ | এপ্রিল | রবিবার | ২০ | এ |
| ২ | এ | সোমবার | ২১ | এ |
| ৩ | এ | মঙ্গলবার | ২২ | এ |
| ৪ | এ | বুধবার | ২৩ | এ |
| ৫ | এ | বৃহস্পতিবার | ২৪ | এ |
| ৬ | এ | শুক্রবার | ২৫ | এ |

ইস্তাফার।

সন ১৩২১ শনি ৩০ মার্চ তারিখ শনিবার
এই আশ্বিনের ৩০ কেল্লিগিরি কলিকাতা
বিষয়ে প্রৌদ্রাচল্য বিবেচনাতে নির্দিষ্ট
করিয়াছেন যে বর্ষাস্তম অর্থাৎ শনি
মঙ্গলবার বাণী ও ইমারত ও অম্বী ম
পক্ষ ও মধ্য অক্ষি হইয়াছে ইহাতে
বিস্তারিত কলিগিরি যে স্থান বন্দোবস্তের
পুতি পুষ্কার দৃষ্টি করা যাউক এবং শ
হরমতালিকের বাটী ইমারত ও অম্বী ম
করে মালিকানা যোগ্য ও বন্দোবস্ত এক
ইশ্ব আশ্বিনের পুতি লুণ বন্দোবস্ত হই
বেক। অতএব কোট হইতে স্বকুম হইল
যে শ মঙ্গলের মূল্য নির্ণয় কারন অম্বী
লো অধিনন্দে উচ্চকিত করে ও বাটী
ইমারত ও অম্বীনের মালিকেরা মাকে
উপস্থিত স্বকুম ও পুষ্কার বিবেচন করিয়া

কেন্দ্রের বিষয় বারং সমাচারে দিব্যক। অত
এব ইস্তাফার দেখা যাউতে যে এই মক
ন মালিকানা স্বকুমের পুতি ও লুণ
বন্দোবস্তের পুতি কোন আশ্বিন থাকে ও
ব পুতি ইস্তাফার তদ্বিধিতে বন্দোবস্ত
নের মাঝে আরও দৃষ্টিপন দেখিলে
তাহা আত হইয়া বিবেচনা করিতে যা
লুণ ও ইমারত তাহার সমাচারে প্রা
মধ্য প্রাচ্যে ইস্তাফার দেখা যাউতে
ইতি তারিখ ২৪ মার্চ ১৩২১ সন।

সমাচার দর্পণ

রাজস্বের নিয়ম।

১০ মার্চ।

ঐযুক্ত ডি কামেল সাহেব যন্ত্রপাতি
দেয় পরামর্শের অধীক্ষ এক ডিনি বাসিন্দা
দস্তুরের প্রচিন্ প্রতীয় অধীক্ষ।
ঐযুক্ত ডি কামেল সাহেব খাজানা দস্ত
রের পুণিল অধীক্ষ।
ঐযুক্ত দরলিও ও সামান সাহেব বে
হার ও বাস্তবসের কমিশন দস্তুরের পু
দিল অধীক্ষ।
ঐযুক্ত মর চান্দ্র দরলি সাহেব বেহারের
আফগের অধীক্ষ।
ঐযুক্ত দরলিও বি মার্চিন সাহেব মা
আনা দস্তুরের বিতীয় অধীক্ষ।
ঐযুক্ত ডি মার্চিন সাহেব আশ্বিনার
পরামর্শের অধীক্ষ।
ঐযুক্ত সি আর লিজে সাহেব কলিকাতা
ডা। পরামর্শের অধীক্ষ।

ঐযুক্ত দরলিও জে হার্মি সাহেব আ
লিগিভের কামেলের।
ঐযুক্ত জে এম মাকি সাহেব কলি
কাতার টাকালিগিরি অধীক্ষ।
ঐযুক্ত এম এম বেনেদিক সাহেব আ
গারার কামেলের।
ঐযুক্ত জে দুই সাহেব চট্টোপাধ্যায়
লিগিভের কামেলের পেকার।
ঐযুক্ত এই এলবার্ট সাহেব চট্টোপাধ্যায়
লিগিভের কামেলের।
ঐযুক্ত ডি বেল সাহেব চট্টোপাধ্যায়
অধীক্ষ।
ঐযুক্ত দরলিও এই বাসিন্দা সাহেব অর
লত ও লিগিভের কামেলের অধীক্ষের
বিতীয় প্রচিন্ প্রতীয় অধীক্ষ।
ঐযুক্ত ডি কামেল সাহেব হিমালয়লিগি
ভের অধীক্ষের পেকার।

✓ ইংরেজি বাসিন্দা অধীক্ষ।

ঐযুক্ত ডি কামেল সাহেব ও ঐযুক্ত রাম
কামেল সাহেব ইংরেজি ও বাসিন্দা তা
মতে এক অধীক্ষ ও ঐযুক্ত ইয়া অধ্য
পুণিল জাখানাত জাখা হইতে নে
পুণিল প্রু অধীক্ষ দুই বাসিন্দে কামেল
হাজার পুণিল হইবেক। যে ব্যক্তি সহী
কামেলের ডিনি পুণিল টাকালিগিরি
ডিনিগ লোকের বিবেচন লইতে হইলে স
তদ্বি টাকালিগিরি কামেলের কামেল
কামেলের বাসিন্দা থাকে তাহার বিস্ত
বাসিন্দে প্রু ঐযুক্ত পেরের
বের লিগিভে কামেল মোকামের
আর ঐযুক্ত কামেল সাহেব

সমীচারণ দর্পণ !

কিন্তু শূঁরাশ্রমের শ্রুতি মিলিত করে
মাহেবের নিকটে আপন নাম পাঠাই
বেক ।

—

কালেজ ।

যোকাং কাশীতে শ্রুশ্রুত দনকিন
মাহেব য় কালেজ বসাইয়াছেন তাহার
ব্যয় পুতিবৎসর বিশ হাজার টাকা বহা
এক করিয়া দিয়াছেন । কিছু দিন পরে
সে কালেজ শ্রুশ্রুত কল্লানী বাহাদুরের
অধিকারে আসিয়াছে উদবেদি সে অধিক
মুখ্যত হইয়াছে । সে কালেজ পোনের
সংস্কার আছে তারি বেদ ৪ । বোধ ৪ ।
ও মায়াম ৪ । ও মায়া ৪ । ও
নাগ ৪ । ও বৈদ্য ৪ । ও স্মৃতি ৪ ।
ও বাবালঙ্কার ৪ । ও বাকরন দুই ।
চলিত ও জোতিষ দুই সংস্কার । গায়
এক শত ছাত্র সেখানে আহার পাইয়া
অধিগত করে ও এতদিন অনেকে ছা
বয় করিয়া অধিগত করিতেছে । এই
কন ছাত্র দিলে বৃদ্ধি পাইতেছে । ইহার
মধ্যে দৃষ্টিতে তৈলসীরাহি ওতরে লেপাল
পর্যন্ত ভাব্য দেশীয় ছাত্র বিশেষতঃ বা
কালি ব্রাহ্মণ ছাত্র অধিক ইচ্ছা বাদন
বৎসরব্যক লাগিদি অধ্যাপন বৎসর
বয়স্ক বালকেরা অধিগত করিতে আই
সে । যখন বালকেরা আইসে তখন
তাহারদিগের বাকরনের পরীক্ষামাত্র
লইয়া অধ্যাপন করান যায় এবং
তাহার ব্যবস্থা এই যে আরজাবদি বাদন
বৎসরের মধ্যে ভাব্য বিদ্যাভাস কর
তে হইবেক ইহার অধিক কাল কালেজে
থাকিতে পারিবেক না । এবং প্রতিবৎ
সরে তারিবার ক্ষুদ্র পরীক্ষা হইবেক এবং
একবার পুৰান পরীক্ষা হইবেক ।
কাল পুরান পরীক্ষা গড় আলুআরি

মাসের পুণ্য দিবসে শ্রুত বর মাহে
বের বাড়ীতে হইয়াছে । তাহাতে কল্লানী
নাগ পলটনীয় মাহেব লোক এ জিনাদার
মাহেব লোক এ অন্য মাহেব লোক অ
নেক আসিয়াছিলেন তাহাতে পুণ্য
বাকরন দুই সংস্কার ও নাগ এক । ও
মায়াম এক । ও বৈদ্য এক । ও
স্মৃতি এক সংস্কারের মধ্যে দুই জন
বিচার হইল অধিকারের মধ্য থাক
লেন মাহেব লোকেরা শুনিতে লাগিলেন
পাঁচ সংস্কারের পরীক্ষা হইলে স্মৃতি
কান্তান জাল মাহেব সংস্কার ও নানা
কণে জোনবান তিনি শুনিয়া তুষ্ট হইয়া
সকলকে সান্বিত করিলেন ও ওপক্ষে
মত পারিভোগিক দিলেন ।

আশ্চর্য্য মূল ।

যোকাং কলনগরের ওতর পুরানী গায়ের
এক বৃদ্ধ কলিকাডাইতে বাড়ী ঘাই
তেছিল । ১৬ জাম্বুন মোমবার ওলা যো
কায়ে মাইক দিয়া সমাপন করিয়া বাড়ী
ঘাইতেছিল তাহাতে ঘুরনীর পুত্র পাঁচবা
ড়িয়া গায়ের আশু ব্যাধির মধ্যে তা
হার লিঙ্গ ছেদন করিয়া মৃত করিয়া গ
লায় গায়েরা বিয় আসিতে লাগিয়া
রাখিয়াছিল । পর দিবস লোকেরা দেখি
য়া দারোগার নিকটে ময়াদার দিল ও
জিনার মাহেব লোকেরা আসিয়া গায়
লের অনেক উদাহর করিতেছেন তা
হার কিছু দিগ হয় নাই পক্ষাৎ যে হয়
জানি যায়বে ।

—

ভাড়াইতি ।

যোকাং নবদীপে এক জন মহাত্মন কলি
কাতাইতে তাঁরা ও দস্তা এক নোকা
বোঝাই করিয়া নবদীপে আসিতেছিল ।

১১ জাম্বুন রবিবার যোকাং ওতরির ঘাটে
নোকা রাখিল রাতি এক পুহর সময়ে
তারি নোকা ভাড়াইতি আসিয়া একজন
তাঁরা ও দস্তা পুত্র করিয়া লইল । পরে
নোকাহ লোকেরা নোর করিলে ডেঘরি
ও নবদীপের চৌকীদার ও গুম্বা লোক
অনেক আইল কিছু পরে দারোগাও
আইল তখন ভাড়াইতেরা নোকা লই
য়া গায়ের পুত্র পাঁচবাড়িয়া তিন নোকা
র লোক ওতরা পলায়ন করিল । পরে
এক নোকার কতক লোক বঁ তাঁরা দস্তা ল
ইয়া ঘাইতে বিশম্ব হইল ইহাতে দারো
গা আসিয়া সে নোকার ভাব্য লোককে
বহিরা বহান করিল এবং তাঁরা দস্তা ভাব্য
পাইল । সেই লোকেরা ওতরি ও গদ
মালি ও মহিমতড়া ও নিকারপুর এই কয়
গায়ের অনেক লোকের নাম লিখিয়া দি
য়াছে । সে সকল লোকের তলপ হইয়া
কল্লানীর চালান হইয়াছে আদানতে যে
হয় পক্ষাৎ জানি যায়বেক ।

অগ্নিমাছ ।

১৭ মার্চ মঙ্গলবার দুই পুহর রাতি
সময়ে যোকাং কলিকাডার চৌকীর
রাবার দীরে বিহি মাঝের অমীত বায়ন
বসতিতে অগ্নি লাগিয়া গুহারি দগ্ধ
হইতে লাগিল তাহাতে তথাকার অধিক
শ্রুত বিলর মাহেব দগ্ধ । দয়কল আনি
য়া অগ্নি নির্বান করিলেন এক বিঘা আয়
মধ্যে । যোলখান গুম্বামাত্র দগ্ধ হইল । এ
অগ্নি পুণ্য শ্রুত অর্জ এতদি মাহেবের
এক চাকরের বাড়ীতে হইয়াছিল তাহা
কে জিআনা করা গেল । তাহাতে সে
কহিল যে আমি দিগ্ধিত জিনাম অগ্নি
দাহের শ্রু শুনিয়া ওতরা দেখিলাম যে
আমার গৃহ দগ্ধ হইতেছে যে হত

সমাচার দর্পণ।

কিহনে অগ্নি হইল তাহার কিছু কিছু হইল না।

শুধু জাপান গিয়াছে যে ব্যবসায়ীর পুত্র হুতি ঘনে অগ্নিহই হইয়া অনেক লোকের অন্তর হইয়াছে কিন্তু এই ঘনে আনা গেল যে কলিকাতার তাবৎ সাহেব লোকেরা সেই সকল লোকেরিগণের ওপরে রার্থে চান্দা করিয়া টাকা সঞ্চয় করিতে ছেল।

মোক্ষদ্রব্য।

অন্যুত টাট্টী সাহেবের ঘোরদীতে অনেক ঘনি ঘান থাকি করিয়া গৃহাদি নির্মাণ করিয়াছেন তাহার নিকটে এক হালানি খোরের টাট্টী পুর্ক হইতে আছে এমন ঐ সাহেব তাহাকে ওঠাইবার কারন লাপিশ করিয়াছেন যে এ ঘানে হালানি খোরের টাট্টী থাকিলে অনেক লোকের ব্যামুহ হয়। তাহাতে হালানি খোরের ওলন অবাধ দিল যে অন্ত্রুত টাট্টী সাহেব টাট্টীর নামে লাপিশ করিয়াছেন কিন্তু ঘৎকালীন সাহেব ঘান খরদ করিয়া ছেল তৎকালীন এ টাট্টী না থাকিলে যে ঘোলা খরদ করিয়াছেন তাহার তিন ওন মন্থা দাণিত অতএব এ টাট্টী থাকি সে অনেকের ওপকার আছে কেবল সাহেবের অনুপকার বোধই। এই অবার শুনিয়া বিচারকর্তারা সাহেবকে অবাধ দিলেন যে এ টাট্টী ওঠান হইবে না।

অশ্ব।

আরব দেশ হইতে প্রালের বাবশাহের কারন ছয় ঘোড়া আনিয়াছে ওদুদুদু তাবৎ ঘোড়ার বংশাবলী সুন্দর আছে। এয়া ঘোড়ার যে বংশাবলী নিম্নিয়াছে তাহার মধ্যে এক ঘোড়া মহম্মদের সোয়াগিরি ঘোড়ার বংশ সে ঘোড়া

যেহত বংশাবলী তদনুক্রমে বংশ ও ওনে মুদ।

আরব দেশ।

আরবেরদিগের সহিত ইংলণ্ডীয় টৈন লোর ১০ খিছুয়ারি ডারিখে যে যুদ্ধ হইয়া ছিল তাহা গত সপ্তাহে জাপান গিয়াছে। তাহার পর ১৪ তারিখে বাস্তান নগর সাহেব আরবেরদিগের সহিত যুদ্ধ করিলেন তাহাতে সাহেব একাকী পাঁচ জন আরবের সহিত অনেক ঘন যুদ্ধ করি যাজিলেন এবং অগ্নাঘাতে তাহার শরীর জিন্নভিন্ন হইয়াজিল পরে ততি শর দুইল হইয়া পড়িলে আশন লোকেরা আনিয়া অনেক চিকিৎসা করিল কিন্তু দেক ঘণ্টার পরে তাহার শ্বশ্বরিগণি হইল। এ যুদ্ধে আরবীয় টৈনরা এগির জন ঘন হইল এ বার জন আবার হইল এবং আরবীয় যে টৈনরা মজর গেরা গেল তাহার দিগকে শ্রীযুত এয়ায় সাহেব জাঁমী দিতে অকুয় করিলেন। আরবী গেরা ইংলণ্ডীয় টৈনদের অনেক ঘোড়া ছাট্টিয়াছে।

দস্তা।

লগুন নগর নিকটে টৈময় নদীতে নারিকেরা আশানগরদিগের লোকের লোর অনেক করিতেছিল তাহাতে এক জন একখান স্তম্ভাকৃতি দস্তা পাইল। পরে চেষ্টা করিতে অনেক অনেক দস্তা পাইল। তাহার গায়ে যে লিখিত আছে তাহাতে দুই তিন শত বৎসরের পুস্তত আন হইল কিন্তু লোকেরা ইহার বিশেষ জানিতে অনেক চেষ্টা করিল কেহ কিছু জানিতে পারিল না দুই চারি শত বৎসরের মধ্যে সেখান কোন আর্থাভ জুবে নাই।

এগিল ঘুল।

ইংলণ্ড দেশে এগিল মাসের পুণ্য তৗ রিখে সকলকে সকলেই পরমর ঠাকর এমত ব্যবহার আছে তাহাতে গত বর্ষের এগিল মাসের পুণ্য দিনে এক জন এক চিকিৎসকের নিকটে ঘাইয়া কহিল যে অমুক বাটীর অমুক বিধি সাহেব বড় পাতি ত। ইহা শুনিয়া ঐ চিকিৎসক ওহি লইয়া ঐ বাটী গিয়া সে বিধি সাহেবকে মুরা দেখিয়া কিছু বুঝাশ না করিয়া ফি রিয়া আনিতেছে এই সময়ে তাহার পেছার চিকিৎসককে ঐ লোকেরা কহিল যে তোমার মূর্খ্য অনেক ওহি লইয়া তেমাংকে ঘাইতে কহিয়াছেন। ইহা শুনিয়া সেও ঘাইতেছিল শেষে মধ্যে দুই জন মাফাং হইয়া ফি রিয়া পরে ঘর এই অকস্মেৎ সেই লোক জুতার মধ্যে ও রাঅেন্দ্রী ও দরজীদুত ব্যবসায়ী যে সকল লোককে দেখিল তাহারদের মাফাং তে পুডাকে কহিল যে চিকিৎসক সাহেবের বাটীতে কল হইবক তোমারদিগি কে ত ফিরাছেন। ইহা শুনিয়া সে সকল লোক চিকিৎসক সাহেবের বাটীতে আনিয়া বাসিয়া আছে। পরে চিকিৎসক সাহেব ঘর আসিয়া তাবৎ লোককে জিজ্ঞাসা করিয়া বুঝাশ আনিয়া বুঝিলেন যে অরা এগিল ঘুল ইহাতে আমাকে এইবন পরিহান করিয়াছে।

আশঙ্ক্য সন্তান।

ইংলণ্ড দেশে অবিহাতি এক স্বীর গর্ভে এক সন্তান গত আগষ্ট মাসে অগ্নিয়াজিল সে বালকের দুই মস্তক ও দুই মুখ ও পৃষ্ঠের তিন দাঁড়া এবং অন্য সকল অঙ্গের স্বভাবমত ছিল অঙ্গের পর দুই ঘণ্টা পর সে মরিল।

সম্মাচার-দর্পণ ।

ਤਰਿ ।

ইংরেজে এক জন চোর লবন ওষায়ের
 গুপ্তে জাত কাটিয়া ঘরে বাইরা আঁঠি
 ইশ শেরে লবন চুর করিয়া লইয়া ঐ খা
 ঘাইতেছিল কিন্তু তাহার মনে যে ঘড়ী
 জিন সে ঘড়ী জাতে লাগিয়া ঐ ওষায়
 পড়িয়াছিল তাহা চোর জানিতে পারিল
 না। ও মুতরকলে মহাত্মন আপন
 ওষায়ে বাইরা রাখিল যে চোর লবন
 লইয়া যে ঘরে এক ঘড়ী খেলিয়া গিরেছে
 ইহাতে ঘেঁষে যে লবনইহাতে তাহার
 অধিক মূল্য লাভ হইয়াছে।

શ્રીચિત્રાંકી મહાદેવ !

৩। আফগানিস্তানের তালিবান যে ই-গণের সম
মাত্রার আমেরিকা দেশে আনিয়া সেখানে
হইতে আহাজারা নিবাহি ওপদাঁই
ইয়া মানদাজে আনিয়াজিল সেই সমা
চাও তাক ১৮ মাতে কবিতাও পঁছ
মাজ তাহাও আনা গৌ যে ই-গণ
অকিউত মহারাজের সহিত জুশিয়াও
নী যে মোদমা হইতেজিল তাহা
শুশিয়াও রাণীর তদাইয়া তিনি মদ
ইয়াছেন। পরে মহারাজ ভিন্ন তাহ
রাজনব্বকু লোক মহারাজের নিচে
আনিয়া। অতঃপর কদাচন সন্ধ্য বসি
হারি এবং মহারাজীরা আয়াত তাঁ
হাদের সন্তানকে করিতে আইন ও
নাহক আনিয়াও করিল।

ଆହାଁଜ ଶ୍ରୀରାମ ।

અમેરિકાએ તે દે.માં એક આજી

তামিত্তেজিল মে দিবস রক্ষাসময়ের আভি
শয় কুচুটিকা হইল তাহাতে জাহাতহ
লোকেরা তাহাজের মালিকের গুণের
এক বৎ কুণিয়া দিল পরে ততিশয়
বাহাদুর জাহাজ জরিবেগে ঘাইতে
ছিল এই জাহাজের মালিক এক মনসা
বীর হু দু জাহাজ ছিল সে তাহ জরিবি
পাত হইতেই তাহার গুণের দ্বিত্যচরণ
গেল সে জাহাজ লোক সম্মতে এই কা
লে মমুদু হু হু হু হু পরে বৎ তাহাতহ
লোকেরা জাহাজ জরিবি তাগ করিল
এবং তাহা হইল কিছু কাহারো কলহ
পাটিল না

इन्द्रः ।

কলিগ দেশে গাত দে জুই তরি
যে এস মার সজিত জিলে তাহার মরি।
কইতে এক হস্তির দন্ত ওলিল সে দরি
যেত হাত এর তাপি হাত বেত এ অতি
অকর্ণা যেহেতুক ইন্দ্র দেশে হস্তি
কমান দাই।
এই মত ইহার পুর্বেও এরাই হস্তির
দন্ত পাওয়া গিয়াছিল।

पुष्पाङ्गुलं यद्वा ।

ইংগ্ৰাণ দেশে এক গুায়ের নিকটে
এক টোকা পাওয়া গিয়াছে যে টোকা আ
খর বাদশাহের আমলের সেই বাদশা
হের নামের আদর্শ দুই তফর আ-র
সেই টোকাতে লিখা আছে এং তিল
৫৮ পাঁচ শত আট ইংরাজী মনে বাদ
শাহ ছিলেন।

ବିଶ୍ୱାସୀ ଭାବେ ।

| ক্রমিক | নাম | বয়স | পরিচিতি |
|--------|-----------|------|---------|
| ১ | মৃণালি | ১ | ৫৫ |
| ২ | জ্যোতিষ | ১০ | ১০ |
| ৩ | মাহাশক্তি | ৩৫ | ৫৫ |
| ৪ | মাহাশক্তি | ১০ | ১০ |
| ৫ | মাহাশক্তি | ১ | ০ |
| ৬ | মাহাশক্তি | ১০ | ১০ |
| ৭ | মাহাশক্তি | ১ | ১ |
| ৮ | মাহাশক্তি | ১০ | ১০ |
| ৯ | মাহাশক্তি | ১ | ১ |
| ১০ | মাহাশক্তি | ১ | ০ |
| ১১ | মাহাশক্তি | ১ | ০ |
| ১২ | মাহাশক্তি | ১ | ১০ |
| ১৩ | মাহাশক্তি | ১ | ১০ |
| ১৪ | মাহাশক্তি | ১ | ১০ |
| ১৫ | মাহাশক্তি | ১ | ১০ |
| ১৬ | মাহাশক্তি | ১ | ১০ |
| ১৭ | মাহাশক্তি | ১ | ১০ |
| ১৮ | মাহাশক্তি | ১ | ১০ |
| ১৯ | মাহাশক্তি | ১ | ১০ |
| ২০ | মাহাশক্তি | ১ | ১০ |
| ২১ | মাহাশক্তি | ১ | ১০ |
| ২২ | মাহাশক্তি | ১ | ১০ |
| ২৩ | মাহাশক্তি | ১ | ১০ |
| ২৪ | মাহাশক্তি | ১ | ১০ |
| ২৫ | মাহাশক্তি | ১ | ১০ |
| ২৬ | মাহাশক্তি | ১ | ১০ |
| ২৭ | মাহাশক্তি | ১ | ১০ |
| ২৮ | মাহাশক্তি | ১ | ১০ |
| ২৯ | মাহাশক্তি | ১ | ১০ |
| ৩০ | মাহাশক্তি | ১ | ১০ |

এই সময়কার দর্পণ পুরীমঙ্গলের ছাপাখানাতে মুদ্রিত হুছে শনিবারে ছাপা হয়। যাহার লগনের আবশ্যক হয় তিনি শ্রীরাধাপুত্রের ছাপাখানাতে আসিয়া নাম পরোষ্টমে সম্বোধ্য কণ্ঠ ভাঁহার নিকটে পাঠ মাইবেক তাহার দুলা মাসে এক টাকা, তিনি বাস্তব করিবাচ্ছেন যদি তাহার নিজে কণ্ঠ না গঁজকে তবে তিনি পুরীমঙ্গলের ছাপাখানাতে সমাগার দিবামায় তাহার নিকটে পাঠান যায়।

ମହାଶୟୀ ଏବଂ ଶୈଳ ଯେ ଯୋଗ କରନ୍ତି
 ଗୋଟି ଗୁଣେ ଏକ କାହାଣୀର ବାଣୀରେ ଗୀତ
 ୧୫ଟିର ଉପାଦେୟ ବାଣୀର ଡାକାଣି ହେଉ
 ଯାହା ଦେଖିଲେ ମୋର ଗୁଣେର ଅନେକ
 ମହାଶୟୀ ଏବଂ ଶୈଳ ଯେ ଯୋଗ କରନ୍ତି

সমীচীর দপণ !

করিয়াছে এবং তাকাইতেদের অনেক ঘাইল হইয়াছে ও ইরা পত্রিকাতে এবং ঐ সকল তাকাইতে। নানা মাসীমের অনেক লোকের নাম লিখাইয়া দিয়াছে তাহাতে দারোগার সর্বত্র ভ্রমণ করিয়া সেই তাকাইতেদিগকে ধরিতেছে।

মান্দাজ।

মান্দাজের পুতল অজ কুড়ত জন নিও বোম্ব সাহেব ইংলণ্ডে গিয়াছেন তাহার পর্যায়ে শ্রীযুত সর ভবমণ্ডল সাহেব বদলী হইয়া আসিয়াছেন তাহা মান্দাজের উদ্বিগ্নে নিবৃত্ত হইয়াছেন।

মহামহাবান্ধবী।

গত শনিবারে মহামহাবান্ধবীর যোগে গিয়া মানে অনেক দেশীয় লোক আসিয়াছিল তাহাতে মোকাম বৈদ্যবাটীতে ও-কল দেশীয় অনেক লোক আসিয়াছিল তাহার অধিক নয় গমনেতে ঘুরল হইয়া অভিশপ্ত গুণে যৌদুর ওতা পেতে ওতন্ত জন পান করিয়া ওলাওগা রোগে অনেক লোক পথ ও মোকাম বৈদ্যবাটীতে মরিয়াছে এবং তদনন্ত লোকেরা অতিশয় নির্দয় ঐ বৈদ্যবাটীতে যে লোকের ওলাওগা রোগে হইয়াছিল তাহার অহমম হইল তাহার সর্গী লোকেরা তাগা করিয়া পলাইল। ইহাতে গরীর তারে যে অহমম লোক জিল তাহার মর্যে অনেক জোয়ার সময়ে সর্গীর গরী পাইয়াছে। তাগাকার দারোগা অনেক লোককে ওঠাইয়া ছোল ও দধিভুক্ত খাওয়াইয়াছিল তাহার মর্যে অনেক মরিল বৃত্তি কেহ বাঁচিয়াছে। মোকাম দ্বিবাণ্ডে মহামহাবান্ধবীতে

জেমসি লোক মরে ইহার মর্যে ওলাওগা রোগে ও-ক্রিশ জন ও লোকের চাপাটান তে ওক্রিশ জন মর্যে ইহার মর্যে বৃত্তি ও তার জন ও বাক ৭ সাত জন অবশিষ্ট মরিল ঘর। এই সকল লোক গুণে ওতম পুত্রবীর্য মর্যে দেখা অল্প। ঐ মোকামে দারোগার অনেক আদিয়া ওদারক করিয়া ছিল কিন্তু কিছুই হইল না কারন লোকের হার্যে লোক মর্যে পত্রিকাতে।

অগ্নিবাহু।

গত মঙ্গলবারে মোকাম সাহেবের দুই পুত্র বেলার সময়ে বাজারে অগ্নি পাইয়া তাহা গন্ধ গোলা ও বাজার ও তিনি পত্র মর্যে হইয়াছে ইহাতে অনেক লোকের অনেক ক্রটি হইয়াছে এবং মনুষ্য ও অনেকগুলি ভন্ন হইয়াছে গন্ধ ও তাগা মেঘ মুক্ত অনেক বর্যে হইয়াছে।

মুন্সি।

গত শনিবারে শ্রীযুত কলিকাতার সী মার্বট এক সাহেবের এক মহীম খুন হইয়াছে। মুন্সিফ হাউসে দোখিল যে তাহার মস্তক তথ ও রক্তেতে শরীর মথ কিন্তু কিছুকালের খুন হইল তাহার নিশ্চয় হয় নাই।

সহমরন।

গত মহামহাবান্ধবী গোষ্ঠে ওক্রিয়া পুত্রের অনেক লোক গিয়াছেন আদিয়া জিল তাহার মর্যে মোকাম বদলী হইয়াছে এক ব্যক্তি আসন স্ত্রী মুক্ত পরিজন সময়ে রহিয়াছিল বৈদ্য শলি বারো গিয়াছিল করিয়া সেই পাত্রিতে

তাহার খাঁজ হইয়া পুত্র তাগা হইল। পর দিন রবিবার তাহার স্ত্রী সহমরনে ঘাইতে নিশ্চয় করিয়া ঐ মোকামে গিয়া তীরে তারি দিকে তারি হস্ত প্রদানে এক রক্ত কাটাইল ও ঐ রক্ত কাট ও চন্দন কাট ও বুন ও আর্যে সৃগন্ধি মনালী তে পুত্র করিয়া তাহাতে অগ্নি সন্দেহ পত্রিল। পরে ঐ রক্তের অগ্নি অত্যন্ত পুত্র নিত হইল যেহেতু আসন মৃত ব্যতির পাত্র ঐ পুত্রকে রক্তে নিবেদন করিল। অনেক ঐ ছা গিয়াছেন করিয়া ও মর্যে চা বিয়া এক হাতী দূত কয়দেখ করিয়া ঐ অগ্নি রক্তে রক্ত বিয়া পাত্রিল এবং তৎক্ষণাৎ ভয়ানক হইল তাহার আত্মা গোপেরা হরপুনি করিতে লাগিল।

এতদ্বন্দ্ব সহমরন বাহ্যর এতদ্বন্দ্ব নাই তৎক্ষণে বিশেষ করিয়া লিখা গেল।

মালিনা ওলাওগা।

মালিনা ওলাওগার ১০ জালুয়ারি এক দ্বিী আসিয়াছে তাহাতে অন্য গোল যে সেখানকার যে মালিনা লোকেরা পুত্র রক্তক সাহেব লোকের দিকে খুন করিয়া জিল তাহা পুত্র সর্গীর গিয়াছে তাহার এখন ঘির হইয়াছে যেহেতু সেই অগ্নি রাসি লোকের মর্যে এক অনেক ১০ জালুয়ারি তাগা পুত্রবৎ হইয়াছে এবং যে অগ্নীমারের বাটীতে এই লোকে রা খুন করিয়াছিল সেই বাটীর সম্মুখে লোকের দিগের দর্শনাৎ তাহাকে টালা ইয়া রাখিয়াছে এতদ্বিগ্ন অন্য তারি অনেক ঐ রক্ত মৃত হইবেক।

আহাজ তুখ।

গত আকটোবর মাসে ইংলণ্ড হইতে

সমস্যাচার দর্পণ।

দুই আশ্রয় প্রার্থনা হইয়া আমিতোজি
ন এবং সেনাপতি হইতে তাহারদের এক
তাহার নাম প্রত্যেক মনুষ্য গণ্ডিত আল
আর মনে একদোষ স্বত্ব সেনার নি
কটে ঐ দিন আহাজ তুইয়াতে তাহার
মকর লোক রক্ষা নাইয়াছে কিন্তু তিনি
কিছু রক্ষা পায় নাই।

জিনিস আয়দানী

| | |
|----------------------------------|---------|
| ইস্ক্র ১ আশ্রয় লীগার ১৮ মার্চ | |
| তারিখের মধ্যে মোকাম কলিকাতায় এই | |
| মকর জিনিস আয়দানী হইয়াছে। | |
| ক্রিয়ান | মোন |
| জুয়া | ৪৪৪০ |
| চিনি | ৪৪০০৮ |
| বেঙ্গল | ৪৭১০ |
| মসিলা | ৫৭ |
| ইস্ক্র ২ আশ্রয় লীগার ১৯ মার্চ | ৭৪০০ |
| চৌহ | ৪৭৭১ |
| শীতা | ২২৫০ |
| ইস্ক্র ৩ আশ্রয় লীগার ২০ মার্চ | ৩২১০ |
| গড়ন তুইয়া | ২২০০ |
| গোমার | ৪৭১৫ |
| লবঙ্গ | ৪৭২০ |
| মোরা | ৫৮৫০ |
| মুইট | ৩৫২ |
| দেশী প্রাপ্তি | ৭৪৫ |
| আহাজ প্রাপ্তি | ৪০০ |
| আয়দান | ৮৭ |
| মুদ্র | ২০১৮৭৭৭ |

মুদ্র।

আরও বেশের মোকাম আশ্রয় হইতে বা
যে মোকামে আশ্রয় লীগার চিত্র আশ্রয়
দে তাহার সমস্যাচার এখনে পৃথক, তা

হাতে জানা গেল যে মোখালকার ইঙ্গ
প্রায় ইন্দোরা আরও বেশের মধ্যে গমন
করিতে পারে নাই। যেহেতু লতুয়া
জিয়া জিনিস ওই বাড়ির লোক নাই। তা
হা মোখাল মিলে নাই ইহাতে অনুমান
হয় যে লীগার ১৫ মিহুসারি মধ্যে
দৈন্য মোখাল হইতে প্রাপ্তে পারিলে
না।

১০ মিহুসারিতে আশ্রয় যে এক দল
দৈন্য ইঙ্গার দৈন্যের ওপরে আশ্রয়
করিয়াছিল লীগার লীগার তাহার
পাঁচ শত দৈন্যের অধিক জর পাঁচ দৈ
ন্যের মধ্যে। তাহার মধ্যে এশার তল
মুখ ও বাঁহ তল আশ্রয় হইয়াছে আ
তীর মধ্যে এক জন লীগার ছিল। তাহার
দিশের তল ও তাহার দুই দিশে দ্বার ও অতি
শয় দ্বার তাহার দুই হস্তাচার আঘাত ক
রে এক আঘাতে এক অস্ত্রের দ্বার করি
তে পারে। ইঙ্গার দৈন্য মুদ্র যে আঘাত
হইয়াছিল মুদ্রের পর তাহার কতক ম
রিয়াছে এবং আশ্রয় সময়ে ইঙ্গার দৈ
ন্যের আশ্রয় লীগার লীগার ছিল।
শ্রীযুত কর্ণেল সাহেব তিন জন আ
রও বেশের দ্বিতীয় অনেক জন মুদ্র করিয়া
জিলে পেরে তাহার তলোয়ার দ্বারা তা
হার মুখে আঘাত করিল এবং কয়েক এক
তলোয়ার আঘাত ও প্রাপ্তে এক তলোয়ার
ও মুদ্র এক বর্ষের আঘাত করিয়াছিল।
ইহাতে তিনি রক্ষা পাইলেন এবং ভরসা
জিল না কিন্তু এখন কুমার তাহার মক
ল পাঁচ দুই হইয়াছে। কাশান পার মা
হের কমা তল আরও লোক বিক্রিয়া
মকল পাঁচ আশ্রয় আঘাত করিল এবং
আশ্রয় মকল আঘাত করিয়া মকল পাঁচ
প্রিয় আঘাত করিল তাহাতে তিনি তিন
বর্ষা পরে মকলেন। আর দুই সাহেব
আঘাত হইয়াছিল কিন্তু তাহার

লীগার হইয়াছে এখন মকল আশ্রয়
অনেক দৈন্যের পাঁচ হইয়াছে এবং অ
নেক মকলেন।

আহাজ।

লীগার ১ এশির মোকাম কলিকাতায়
বর্তমান আহাজ।
কোমলার তাহার আহাজ ৩
ইঙ্গার মকলার আহাজ ৫
ভারত মকলার বানিজ্যের আহাজ ১৭
আমেরিকার আহাজ ২
প্রাণীর আহাজ ৫
শৌভাগ্যের আহাজ ২
হানীর আহাজ ৪
বিশি ও তাহার কারন ১০
গত বর্ষের এতদ্বিধে ইঙ্গার মকল
গরি তাহার তৌদখান জিল এ বন্দর
পাঁচ খান মকল আশ্রয় ইহাতে জানা যায়
যে ইঙ্গারের বানিজ্য লীগার হইয়াছে।

আশ্রয় লীগার।

আশ্রয় লীগার কতক লোক মকল
করিতে বৈল গিয়াছিল এক মকল দুইট
মিহুসার বাহা আশ্রয় তাহারদের নি
কটে দ্বিতীয় করিতে লাগিল। তাহা
দেখিয়া ঐ বক্তার মনে লীগার করিল
যে এই মকল মিহুসার ও মিহুসারী অবশ্য
আশ্রয় লীগার তাহার দ্বিগুণে বহ
করিব। এই দ্বিগুণ করিয়া বন্দুক পুষ্টি
অন্য পুষ্টি করিয়া রাখিল এবং কুইর
ময়মে আশ্রয় লীগার করিতে লাগিল ও
কিঞ্চি ভল্ল দ্বারা মিহুসার দুই বাহা
কো দিল তাহার ও ভল্ল করিতে লা
গিল। এই ময়মে মিহুসার ও মিহুসারী
মকল মকল হটাই আশ্রয়। তাহা
দেখিয়া ঐ লোকের মকল হইল কিন্তু

সমীচীর দর্পণ।

যে আশ্রিত দুই ব্যক্তিকে মায়া দুখা বিচারে
ও তাহারাই নিমিত্তে ইহা-দেখিয়া ই নি-
হত নিম্ন-হী নিমিত্তে বনে থাকিল। পরে
নিম্ন-হী বনের মধ্যে গিয়া একটা মেঘ আ-
নিয়া ই লোকেরদের পাশের নিকটে রাখি-
ল। তাহারাই মাংস পাক করিয়া আ-
হার করিল ও নিম্ন-হীরদিককে দিল নি-
ম্ন-হীও ভক্ষণ করিল। এবং ই হত নি-
ম্ন-হীর সমস্ত আশ্রিত্য স্বভাব দেখিয়া তা-
হারাই মনস্ক নিম্ন-হীর ওপরে আশ্রিত্য
করিল না। পরে ই লোকেরা যখন বন
হইতে বের যাইতে লাগিল তখন ইক
য়েক নিম্ন-হী বনের বাহিরে হওয়া পর্যন্ত
তাহারদের মনেও চলিল পরে তাহারাই
গুমের নিকটেবর্তী হইল ই পশুরা তা-
পন বন গেল। তদবধি সে লোকেরা
নিষ্কণ্ট করিল যে সমস্ত মন্দর পশু কখনও
বই করিব না।

হিত করিলে বিপরীত।

এক মহাবনের মধ্যে এক বাঘ কোন
লোককেও আশ্রিত্য বহু ছিল। বৈব-
এক বুজ্ঞান যাইতেছিল তাহাকে দেখিয়া
বাঘ হইল যে যে বিপদ আমি বিপত্তি
আমাকে বিবরহইতে মুক্ত কর। চিত্র
কহিলেন যে তুমি স্বভাবতো হিংস্র
আতি তোমাকে মুক্ত করিলে তুমি আমায়
হিংসা অশ্রয় করিয়া। বাঘ হইল যে
হে বুজ্ঞান তুমি আমাকে মুক্ত কর আমি
তোমাকে কহত নহ করিব না। মতা
করিতেছি। ইহা শুনিয়া মরল স্বভাব
ই বিপদ বাঘের বক্ষন অসহিষ্ণুতা বাঘ
বুজ্ঞানের ওপরে আশ্রয় করিল। তখন
বুজ্ঞান কহিল যে তোমার এ কি স্বভাব

তুমি মতা করিয়া তুমি আমায়
তোমার ওপকর্ত করিল। বাঘ ওপরে
করিল যে ওর মুখের ওপরে আমি যে
তুমি আমায় মায়া বস্তু এবং কাল
বর্ষ হিত করিলে বিপরীত হয় অতএব
আমি মহাবনের নিকটে যাই। ইহা
কহিয়া ওপরে সমুদ্রতে হুস ও পুণ্ডলকে
মহাবন মনিয়া ওপরে অন পুণ্ডল বন্ধুর
নিকটে গেল। ও তাহাকে এই বিষয়
তজ্ঞান করিল। তাহাতে বহু কহিল
যে বুজ্ঞানকে তুমি অশ্রয় নহ করিতে
পার যেহেতু নথ শূন্য নৈক লুম্বা আ-
মার জায়াতে হিম্মা শ্রুতি দুই নর
কথা আমায় পাশে পশু জেবন করিয়া
যায়। ইহাতে বাঘ ওপরে বহু
কাতর হইল। পরে ই দুই জন এক
পালের নিকটে গেল ও তাহাকে সমুদ্র
বৃত্তান্ত আত করিল। পুণ্ডল শুনিয়া ও
ওর করিল যে আমি এখানে ইহার দিক
কহতে পড়ি না। যে দানে তোমাদের বি-
ব হইয়াছে সেই দানে চল। ইহা শু-
নিয়া ই তিন জন সেই দানে গেল এবং
চতুঃ পুণ্ডল বাঘকে কহিল যে তুমি বি-
বনে আসি বহু জিনা ও বুজ্ঞান। তো-
মাকে দিকনে মুক্ত করিল তজ্ঞা আমি যে
খিলে ওভয়ের বিবাহভঞ্জন করিতে পারি।
ইহা শুনিয়া ই নিম্ন-হী বাঘ পুণ্ডলর তল
বহু হইল। পুণ্ডল বুজ্ঞানকে কহিল যে
হে বুজ্ঞান তুমি এই দুখা আত দুখ বাঘকে
আত্যা হত বক্ষন করিয়া স্বহৃদে পুণ্ডল ক-
রহ। ইহা কহিয়া পুণ্ডল ও বুজ্ঞান তা-
পন হাটন গেল বাঘ ওচিৎ মল পাইয়া
বহু থাকিল।

সংখ্যা

| ক্রমিক | নং | কর | পরিমাণ |
|--------|----|----|--------|
| কল্যাণ | ১ | ১০ | ১০০ |
| কল্যাণ | ২ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ৩ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ৪ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ৫ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ৬ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ৭ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ৮ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ৯ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ১০ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ১১ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ১২ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ১৩ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ১৪ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ১৫ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ১৬ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ১৭ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ১৮ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ১৯ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ২০ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ২১ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ২২ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ২৩ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ২৪ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ২৫ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ২৬ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ২৭ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ২৮ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ২৯ | ১০ | ১০ |
| কল্যাণ | ৩০ | ১০ | ১০ |

এক সমীচীর দর্পণ, পুণ্ডলকে ছাপাখানাতে পুণ্ডলকে পনিবারে ছাপা হয়। বাঘর লগ্নের আশ্রয় হয় তিনি পুণ্ডলকে ছাপাখানাতে
আশ্রয় পাঠাইল পুণ্ডলকে ছাপা, তাহার নিকটে পাঠান যাহকে তাহার দ্বারা কোন এক কাল, তিনি ছাপা করিয়া দিলেন তাহার নিকটে
কাগজ পাইলে তবে তিনি পুণ্ডলকে ছাপাখানাতে সমীচীর দর্পণে তাহার নিকটে পাঠান দিলেন।

সমাচার দর্পণ

১৫৭ সংখ্যা।

শনিবার।

১৪ এপ্রিল সন ১২৮১।

৩ ইংলিশ সন ১৮৬৮।

দর্পণ মুদ্রণের কার্যবিবরণ।

মুদ্রাক্ষরিক কার্যবিবরণ।

কেন্দ্রবিশিষ্ট কাগজ।

কেন্দ্রবিশিষ্ট পত্রিকা জয় চাঁদার মতো
কাগজ জয় করিতে হইলে পত্রিকা জয়
চাঁদার প্রিয়তম। বিজয় করিতে হইলে
পত্রিকা জয় চাঁদার মতো আন প্রিয়
মুদ্র।

বঙ্গদেশের পত্রিকা

| | | | | |
|----|---------|---------|---|------|
| ১৪ | বঙ্গদেশ | পত্রিকা | ০ | ১২৮১ |
| ১৫ | ৫ | ১২৮১ | ১ | ৫ |
| ১৬ | ৫ | ১২৮১ | ১ | ৫ |
| ১৭ | ৫ | ১২৮১ | ১ | ৫ |
| ১৮ | ৫ | ১২৮১ | ১ | ৫ |
| ১৯ | ৫ | ১২৮১ | ১ | ৫ |
| ২০ | ৫ | ১২৮১ | ১ | ৫ |

ইতিহাস।

অন্যি মান্যকার এই মান্যকার, মুখ্য
পত্রিকা কলিকাতার ইতিহাসের আদ্য
তাহার পরলোক প্রাপ্তি হইয়াছে তাহার
অমর্যাদার পুত্র জয় চাঁদার যে আদ্য সে
মর্যাদা অমর্যাদার মান্যকার মুখ্যকার
নামে ওইন কলিকাতার অমর্যাদার মর্যাদার
আদ্য তাহা হইয়াছে তাহার মান্যকার
কেন্দ্রবিশিষ্ট।

সুখানি।

চন্দ্রবিশিষ্ট মান্যকার চিত্রের মান্যকার
যে মান্যকার নামে এক মান্যকার বেশী
লোক মান্যকার তাহার মান্যকার হইয়াছে।

তাহার মান্যকার মান্যকার
ইতিহাস হইয়াছে অমর্যাদার মর্যাদার
আদ্য তাহা হইয়াছে তাহার মান্যকার
অমর্যাদার মান্যকার মান্যকার মান্যকার
অমর্যাদার মান্যকার মান্যকার মান্যকার

সমাচার দর্পণ

রাজকর্ম নিয়োগ।

অমর্যাদার মান্যকার মান্যকার
রাজকর্ম নিয়োগ।

অমর্যাদার মান্যকার

সমাচার দর্পণ।

অমর্যাদার মান্যকার মান্যকার
অমর্যাদার মান্যকার মান্যকার মান্যকার
অমর্যাদার মান্যকার মান্যকার মান্যকার

অমর্যাদার মান্যকার

অমর্যাদার মান্যকার মান্যকার
অমর্যাদার মান্যকার মান্যকার মান্যকার
অমর্যাদার মান্যকার মান্যকার মান্যকার
অমর্যাদার মান্যকার মান্যকার মান্যকার

অমর্যাদার মান্যকার মান্যকার
অমর্যাদার মান্যকার মান্যকার মান্যকার
অমর্যাদার মান্যকার মান্যকার মান্যকার
অমর্যাদার মান্যকার মান্যকার মান্যকার

অমর্যাদার মান্যকার

অমর্যাদার মান্যকার মান্যকার
অমর্যাদার মান্যকার মান্যকার মান্যকার
অমর্যাদার মান্যকার মান্যকার মান্যকার
অমর্যাদার মান্যকার মান্যকার মান্যকার

সমাচার দর্পণ!

তে লাগিল এক ঐ গ্রামের ডাঙর চৌকী
দাঁড়কে চোর বীরিবার জলে ফেলে বাজি
য়া এম কলিল ইত্যাদি ফিয়া করিতে
রাখি দুই পুহর হইল। তখন স্বল্পমে ঐ
গ্রামে তাকাইতি করিয়া পুন্ডাল করিল।
চৌকীবারের বাজা থাকিল ডাঙারদের
দিবারান জরি কে করিতে পারে।

मृडनं द्राष्टुम् ।

কলিকতা শহরের যে সম্মান পুষ্টি
 ছিল তাহারইতে এইজন্য রাধা পুষ্টি
 রাগা অভিনয়ের সম্মান হইতেছে তাহা
 বেশীমাত্রি বিব্র হইয়া পুষ্টি হইতে
 ছে। এইজন্য যে রাধা অভিনয় হইয়া
 সে জনতার আর অল্পই হইয়া ইচ্ছা
 পর্যন্ত মিলিত হইবে। আরও এক রাধা
 পুষ্টি কৃত্তির নিজের জীবন নিয়ে সাহেব
 বের বংশের নিজের হইয়া গিয়াতীর
 পর্যন্ত মিলিত হইয়াছে। সেইজন্য
 মনোরম এক রাগি হইয়াছে তাহাতে যা
 নিকা ইন্দুর আশ্রয় কর্ত্তাণিতে আসে
 রাগা হইবে কৃত্তির পুষ্টি হইয়া পুষ্টি
 কৃত্তির নিজের নাম পুষ্টির উত্তর পক্ষ
 হইবে যে এক পুষ্টি নিজের কৃত্ত
 তাহা তারি হইতেছে তাহার কারণ এই
 যে পুষ্টি কৃত্তি তারি। যে পুষ্টি নিজের
 বর পুষ্টি হইয়াছে তাহা কৃত্তি। পুষ্টি
 কৃত্তি তারি আশ্রয় থাকে তাহা পুষ্টি
 কৃত্তি তারি পুষ্টি হইবে সম্মান যোগ্য
 তাহা হইবে। আরও এক কৃত্তির
 পুষ্টি তারি আশ্রয় সম্মান হইয়া পুষ্টি
 এক নাম পুষ্টি দুই রাগ আর
 পুষ্টি হইবে যে এক রাগ হইবে। এক
 যোগ্য আশ্রয় হইয়াছে রাগ। নবাবের
 রাগ হইতেছে উত্তর যে রাগ
 পুষ্টি কৃত্তি তারি তারি
 পুষ্টি কৃত্তি তারি তারি
 পুষ্টি কৃত্তি তারি তারি

একটা গোখানা। ইহাতে বখরজাওর (যে গোখানা ছিল সে গোখানা ভাঙিয়া গিয়াছে)। মাঝে গোখানা ভাঙিয়াই কাঠখণ্ডে যে নখর মুখা নী হয়। এই নখর বিচলিত। এখানে কলিকাতা নখর (মোম) ইহাও আছে। ইহাও আনুমানিক বিন্দু-পল্লী-কলিকাতা-মধ্যস্থিত। ইহাও আনুমানিক নখর ইহাও।

अग्निंदाह ।

৭. এপ্রিল তারিখ শনিবারে নবাব বা
জাদে মোমেনআলী হুসাইন দখিলে এক
হুকুমখারী বাইততে মুখ্য জাতি নাগিয়া
কলিতা অর্থাৎ ধর্মীর মাঝে বেলে শাহার
হাট বাজারপর্যন্ত গোপ ইহার মাঝে
তিন চারি শত ঘর খাঁর হইল। তাহার
কলনেছার অনেক দ্রুতি ইহারকি কিছু
খাঁর মধ্য হইল নাই। সে আখির লিখিত
এক শুভির মোকদ্দা ও তাহার পরমাণ্ডে
এক ডাকীর মোকদ্দা জিল ডাকীর মো
কদানের দুই ঘর ভোকা এক ঘরে জাতি
নাগিয়াখিলে সেই সময়ে এক জন সাইহর
অনেক ইয়াত্বীও দোকান নইয়া ডাকীর
মোকদ্দা ও তাহার লিখতবর্তি দুই ঘর
ভাঙ্গিয়া দিল তাহারে শুভির মোকদ্দা
রুকা খাঁর যদি শুভির মোকদ্দা জাতি
নাগিভি ওবে মহাপ্রাণ খাঁর আখিয়া অনেক
ক মনুষ্য মর্ত্য প্রাণি। কলিতাডাকীর
মাঝে কলিতা মুখ্য শুভিখিলে আখিয়াই
হইতেছে।

যেহাঙ্গীর হাজার নামের ইচ্ছাশূন্য
 হাজারে হাজার হাজার নামের
 এক জন হাজারের বাহিনীতে জাতি নাগিয়া
 ছিল সে অতি নির্ভরকারী হাজারে হাজারে
 ভিত্তি ও প্রকল্প নামের আলফ মোক
 আইন হিন্দু হাজার ও হাজারের নামের

কল গ্রাহ্যের যথেষ্ট ব্যয়িতে পারিল না।
 শ্রম তাবৎ স্বেচ্ছা অভিলাষ অস্তু (যেহি)
 দ্বা। গীতীর যথেষ্ট পাইয়া ভাল। যার তল
 নির্দেশ করিতে লাগিল। ঐ বসতির
 যথেষ্ট এক নী। সুসুতা। ইহয়াজিল তাহার
 সম্ভবতঃ লাভ। যেহেতু কহিতে সেই অম
 য় এক ইহাও আদিশ্যাজিল যে ইহা
 অস্তু (যেহি) সম্ভবতঃ পাইয়া এক বীশ বনে
 াল ও সুসুতা নী। (সেই মার গৌন
 তার তাহার বহু অস্তু। ষাটিয়া যার বহু
 হইল। সেই মার কাম্য। কাম্যের গিরা
 জিল সে আদিশ্যাজিল যেহেতু যার বহু
 ইহয়াজিল। অতএব সে কল্যাণ করিল
 যে আদিশ্যাজিল নী। সুসুতা পাইতে হইল ইহা
 জে ইহাও সে অনেক যোগ্য করিয়া ও
 স্থানে অনেক করিয়া। বীশ বনে আদিশ্য
 নী। সুসুতা সম্ভবতঃ হইল ও সেই বনে
 এক কুৎসিদ্ধ্যাজিল করিয়া তাহারদিগকে
 হইল।

ହୁବି ।

কলিকাতার ওতরে কাশীপুরের ঐশ্বর্য
মোজর ফেঁদুল সাহেবের বাটাইহাতে
আনকা বসু চোর লইয়াছে তাহার
মাথা কটা গন্ধুরে সে সাহেবের কৃত
যোছনার এক স্বর্ণ ঘড়ি লইয়াছে এ ঘড়ির
সন্ধান যদি কেহ করিয়া দিতে পারে
তবে সে পঞ্চাশ হাজার টাকা হবে।
ইচ্ছা করিলে জানুন ।

रामायणम् ३

যোঃ হানাপুরহীতে এক সাহেব নি
খিয়াজেন যে গিওর নদীর তীর ভূমি
রাই গুল্মে আঁকুরায় নামে চাষিরা
সহরবাক দুই হাত ও দুই অঙ্গুলি দ্বি
এক ষষ্ঠ দোকানারে তাহার দাতা ও
নাই গোয়ায় উদ্বিগ্নে ১৬১৩

সমীচারণপত্র

সুপ্রতি ও সর্বত্র সম্মান এবং ওৎপূরক
মন্তব্য সে লোককে ওজন করিয়া দেখা
গেল যে মোড়ে বার শের ওজন হইল।

এলাঙা।

সর্বত্রকার সমীচারণ পাওয়া ব্যতিরেকে
যে এলাঙা রোগী সর্বত্র অনিবার্যকরণ
করুন করিতেছে কিন্তু কোন স্থানে বাহ্য
মাত্রের আর কোন স্থানে ইখিলাকরণ
সর্বত্র করিতেছে।

বিলিহুআলী গাঁও।

বিলিহুআলী গাঁও নইবার ওয়াগে
যে ইঞ্জিনিয়ার সৈন্য আরও বেশে গিয়া
ছিল তাহার খোরতর যুদ্ধ করিয়া ১০ মার
ডাফিয়ে সে গাঁও নইয়াছে। তাহাতে
আরওয়েরা অতিশয় যুদ্ধ করিয়াছিল
কিন্তু ইঞ্জিনিয়ারের এক হাজার
সৈন্যের মধ্যে গাঁও নত সৈন্য নষ্ট ও আ
ঘাত হইয়াছে তাহার অবশিষ্ট সৈন্য
ও তাহারদের স্বীকৃতি সর্বত্র সম্মত
বার শের মোক ইঞ্জিনিয়ার সৈন্যের হস্ত
গত হইয়াছে। ইঞ্জিনিয়ার সৈন্যের মধ্যে
১০ মার ১০ মিটার আঘাত। সর্বত্র
মধ্যে ১০ লোক নষ্ট ও আঘাত হই
য়াছে। মেথলকার অধিক শিঙা পুণ্ড হই
অনেক ইঞ্জিনিয়ারের হস্তগত করিয়া যো
বোধে আনিতেছিল।

মুর্শা।

কলিকাতার মুর্শাবাহাতিতে পারশী
দেখার এক জন জাগিরাহা মহাজন সে
যদ সাহস নাহি নতুন বন্দরবরক
ছিল সে আউলিগি। লোক ও অনেক
তাহার সম্মুখ করিত। সপ্ত ৭ মিল
পাওয়ার তাহার মৃত্যু হইয়াছে সে গৌ

কের গৌর তাহার নিজ দেশে হইবেক
ওৎপূরক তাহার মৃত শরীর মুখি দ্বারা
হাটা মৃত্যু করিয়া আনিয়ে ওয়াইয়া
নইয়া গিয়াছে।

বানিয়া।

গত সপ্তাহে সপ্তাহি ও জয়মানবায়ী
ও চক ইত্যাদি মুখিহুসুপূরক বানি
আর সর্বত্র বন্দ হইয়াছে ইহাতে তুলার
কিছু কম বিক্রয় হয় নাই। মো মুখিহুসুপূর
তুলার মূল্য সাধারণ মত আছে। ৩০
বানি গোল্ড সাধারণ মূল্যের ওপর বার
খানা অধিক মূল্য হইয়াছে। কাজকা
তুলার মূল্য পৌনে চৌদ্দ ও চৌদ্দ টাকা
হইয়াছে। দিন দেশের বানিহুসুপূর কা
রুন কল্লি গিটি ১৫ ১৫ মোড়ে পৌনে টাকা
মূল্যে আদিত হইয়াছে।

ইঞ্জিনিয়ারের দিবরগুন শহরহইতে
এক সপ্তাহের সাহেব মো কলিকাতাতে
আশন আশকে সমীচারণ দিখিয়াছে যে
দুই বন্দরের মধ্যে বিলুপ্ত হইতে
তুলার নাশিগার যেহেতু আমেরিকা হই
তে নীচ লক্ষ্যগিটি তুলার ইঞ্জিনিয়ার আশিত
কৈ। এবং গত বন্দরহইতে এক লক্ষ
গিটি তুলার ইঞ্জিনিয়ার অধিক আমদানী হই
য়াছে। এবং বিলুপ্ত হওয়ার তুলার ইহা
আমেরিকা দেশের তুলার অত্যুৎক। কিন্তু
মো কলিকাতা শহরে দুই চারি দিবরের
মধ্যে যে মূল্য তুলার বিক্রয় হইয়াছে তাই
সমীচারণ মুর্শাবাহাতিতে তাহারহইতে
অল্প মূল্যে বিক্রয় হইতে।

জিলিম রঙালী।

মো কলিকাতাহইতে মার সামের
মুখ্য দিল অধিক ৫০ রোজখাছে এই
দুই ব্যাহরে গিয়াছে।

| | |
|-----------------------|------------|
| তুলা | ১৭০ গাঁইট |
| চিনি | ৩৪০৭০ মোন |
| শোরা | ১৪০৫ ১ |
| আলু | ১৮৭৫ ১ |
| চাল | ১০০ ১ |
| মুর্শাই | ১৮০০ ১ |
| রেশম | ১৪০ ১ |
| ভেরতা তেল | ৪১ ১ |
| গাজ রক্ত | ১০ ১ |
| গোচর | ৩০ ১ |
| দীপ কুটির মোন | ৩৪৩০ ১ |
| বস্ত্র | ১০৫২৫০ মোন |
| সাল | ৫৫ মোন |
| আমলী কলিকাতা ই ই না ১ | |
| টুকু দুবা | ৩৮১ |
| মুখ | ৫০০০ |
| কলা | ১৮৮১০৫ |

আজি ভাষান।

জুড়ে কাট কোম্পানীর কারখানার
এক আঘাত গত মাসের মধ্যে মো বহু
কাজকারী নিহত হইতে আশিষ্ট।

চুঁচুড়ি মন।

গত সপ্তাহে মোকাম চুঁচুড়িতে অনেক
কা আশ্চর্য্য দা করিয়াছিল। তাহার
মধ্যে জুঁজুরিমাঝের রাজা করিয়াছিল ও
জমজী রাবিকে রাজা করিয়াছিল ৩০ ম
দর লোকহাতে লোকহাতে যাত্রা হইয়াছিল
এক শর কালীন বন্দুজা মৃত্তি এবং
মৃত লোকের যুদ্ধ এই জন অনেক
তুলার মন হইয়াছিল ইহার অধিক চুঁচু
কালিহরবানী সর্বত্র ও কলিকাতা
অনেক কিছু দুই ভাগে দুই কলিকাতা
এক অনেক লোক খোঁজা নবু বিজয় কোর
নবু এবং মন ১ মন ১ মোজা নবু জুড়

সমাচার দর্পণ

১৪৩ সংখ্যা।

শনিবার ১৪ এপ্রিল ১৮৮৩। ৪০ বৈশাখ ১৩১০।

দপন মুখ যোগাযোগ করিতেছেন। দপনমুখ যোগাযোগ করিতেছেন।

কেন্দ্রের কথা।

১৮৮১ ও ১৮৮২ সালের কেন্দ্রের কথা
করা জাতিগত মতের কথা জানা
তে ইচ্ছা পড়িলে জাতিগত তত্ত্ব জানা
কিছুমাত্র। বিশেষ করিতে হইলে পড়িলে
জাতিগত তত্ত্ব জানা কিছুমাত্র।

তাহার পরেই মতের কথা জানা
করা করিতে হইলে জাতিগত তত্ত্ব জানা
কিছুমাত্র। বিশেষ করিতে হইলে পড়িলে
জাতিগত তত্ত্ব জানা কিছুমাত্র।

নগরের কথা।

| | | | | |
|----|--------|-------------|----|-------|
| ১১ | এপ্রিল | শনিবার | ১১ | বৈশাখ |
| ১২ | ৫ | রবিবার | ১২ | ৫ |
| ১৩ | ৫ | সোমবার | ১৩ | ৫ |
| ১৪ | ৫ | মঙ্গলবার | ১৪ | ৫ |
| ১৫ | ৫ | বুধবার | ১৫ | ৫ |
| ১৬ | ৫ | বৃহস্পতিবার | ১৬ | ৫ |
| ১৭ | ৫ | শুক্রবার | ১৭ | ৫ |

সমাচার দর্পণ

কলিকাতার কথা।

কলিকাতার কথা জানা
করা করিতে হইলে জাতিগত তত্ত্ব জানা
কিছুমাত্র। বিশেষ করিতে হইলে পড়িলে
জাতিগত তত্ত্ব জানা কিছুমাত্র।

তত্ত্বের কথা জানা
করা করিতে হইলে জাতিগত তত্ত্ব জানা
কিছুমাত্র। বিশেষ করিতে হইলে পড়িলে
জাতিগত তত্ত্ব জানা কিছুমাত্র।

কলিকাতার কথা জানা
করা করিতে হইলে জাতিগত তত্ত্ব জানা
কিছুমাত্র। বিশেষ করিতে হইলে পড়িলে
জাতিগত তত্ত্ব জানা কিছুমাত্র।

সমস্যাচার দর্পণ !

সাহেবকে লিখিয়াছেন তাহার বিবরণ এই।

চতুর্ভুজ ঈশ্বরের অনুগ্রহেতে ইংলণ্ড ও কটেলও ও বর্নডের বাদশাহী খ্রীষ্টিয়ান ধর্ম্মশীলক হেনোবর দেশের বাদশাহী। শ্রীযুত নবাব আজমজা ওমদুল-এমরা মহম্মদ মুন্সেরখাঁ বাহাদুর কনট দেশের নবাব সুবেদার সুদুরারদারগুহু।

তোমার পিতা নবাব আজমজাখান মৃত্যু সমাচারে বড় খেদিত হইল। যাহার মতাতা ও সূখ্যতি গুরুতে তোমার দেয় যথোচিত বিশ্বাস ও শ্রুতি ছিল। আহার লিখ পরিজনেরদের ও মৃত্যু হওয়াতে দুঃখী আছি বিশেষত তোমার পিতা অল্প দিন আমায়দিকিতে ত্যাগ করিয়া স্বর্গে আপন মনঃ কর্ম্মে চলি ত্যাগ করিতেছেন যে মনঃ কর্ম্মের ফলশ্রুতি শেষ বংশপর্যন্ত দৃষ্টি। আমি এই শোকে মৃত্যু আমায়র সমুদয়দিক দুঃখ আমি জানিতেছি কিন্তু সর্বশক্তিমান ব্রহ্মের চেলের বিপরীতে চলি বিষম। আমায়দের গুণিত যে স্বর্গগতি পূর্ব পূর্ব ধেরদিকের চলন আদর্শ দৃষ্টিতে চলি। আপনি মিছ বংশ আত স্বর্গগতি অভিজিত হইয়াছেন ইহাতে আমায় যথোচিত আশ্রয়। শ্রীযুত মরতামস মনরো না হেবের কর্ম্মচারি ক্রমগতীতে মাদুরাকের বড় সাহেবী কর্ম্ম হইয়াছে। তাহাতে যে আপনি আশ্রয়িত হইলেন ইহাতে আমায়দের সকলই নাই এবং আমায়দিকের মনে নিশ্চয় আছে যে শ্রীযুত বড় সাহেবের সহিত আপনকার যে কর্ম্ম ওপস্থিত হইবেক তাহাতে যেহেতু আপনকার ভাল হইবেক তিনি সেইমত করিবেন এবং তাহার বুদ্ধি ও তাহার মিত্রতার মধো আপনি থাকিবেন ও তাহার অভিমতে চলিবেন এবং আমায়দের ভরসা আছে ও কনট দেশের নবাব আপনকার পিতার

সহিত আমায়দের যে মিত্রতা আছে ইহাতে তাহার বন্ধন দৃঢ় হইবে নিশ্চয় জানিবেন। এবং আমায়দের এই বাসনা যে বর্তমান মন্ত্রমোচিণ্ড পর ভোগ করিতে অস্বিক বল আপনকার শরীর আশ্রয় থাকে। এবং আপনকার অতিশয় আশ্রয় কর্তব্যবাহী জানিবেন। আমায়দের রাজধানী বাকী কালটন হোম মন ৪৮১০ মাল ২২ যে আমায়দিকের রাজধানীর মন্ত্রমোচন করিতে দেওয়া গেল। ইতি।

অশ্রুচিহ্ন।

গত ২৮ তৈত্র তারিখে এক জাহাজের বালির হাটখোলায় নৌকানী এক ময়রার নিকটে আসিয়াছিল যে আমায়র খালি কটনি বিক্রেতা আসে কিন্তু আমি মন্ত্রমোচন বিক্রয় করিতে পারিলাম। ইহা শুনিয়া ময়রা অস্তরকরণে কিছুকাল ইহা মনসে দেখিয়া অল্প মূল্যে দান করিল। পরে রাজ্যে এক নৌকাতে ই ময়রা ই চোরকে মর্মে করিয়া ময়রারদিকে গিয়া ই চোরকে নৌকার নিকটে ওপস্থিত হইল। পরে চোর আপন নৌকাতে গিয়া তিন বস্তা দেখা ইল ও এক বস্তা খসাইয়া এক প্রুঙ্গহইতে আদ্যাক আদি পের তিন বাহির করিয়া দেখাইল। তিন বস্তাতে বর্ণিত মোল আদ্যাক করিয়া ময়রা ১০ দশ টাকার দিয়া বস্তা আপন নৌকাতে ওঠাইয়া ঘাটে আসিয়া দোকানে রাখিল। পরে দিবস পুণ্ডে বস্তা খুলিয়া দেখিল তিন বস্তাতে কে বল মৃত্যুকা ভরা ছিল। তাহা দেখিয়া সকল লোককে আনাইল ও সে লোকের অবেশন করিল কিন্তু পারিল না।

অশ্রুচিহ্ন।

এই শ্রীযুত বড়বীর সামান্যকালে মোকাম

কলিতার লালবাড়ীর এক মেহালয়ে সমুখ্যে চট্টের পরদা টাঙান ছিল তাহার নীচে দুলা পোড়াইতে ই অশ্রু চটে লাগিয়া মধ্য বায়ুসংসর্গে অতিশয়ল হইয়া অনেক খড়ের পর ভস্মসাৎ করিল। পরে জীযুত তিরুম্বী সাহেবের মদের গদা যে অশ্রু প্রকৃত হইল তাহার নিকটে আহাঁজ গোরা অনেক ছিল তাহার দেখিয়া আপন শরীরের বস্ত ত্যাগ করিয়া ময়রার কর্ম্মে রাখিল এবং অশ্রুর মধো পুবিয় হইয়া ওঠামের চাল ভারিল পরে দমকল আনাইয়া গোরাবের গায়ে ও অশ্রুতে জল দিতে লাগিল। তথাপি ই সাহেবের অনেক অশ্রু হইয়াছে জো অনুমান হয় পঞ্চাশ হাজার টাকার হইয়াছে। ই অশ্রুর নিকটে এক চোরের দোকানে অনেক বস্তারের লিখা ছিল মৈবাহ যদি ই অশ্রু নির্বাহ না হইয়া সে বাকবে লাগিত তবে সে অশ্রু ওড়িয়া যাউত ও অনেক গোমালুমাদি ও অন্য অনেক তাই নাপ হইত। এবং ই অশ্রুর অতিশয়ত এই বাকবে আছে ইহা জানিলেও ই অশ্রু নির্বাহ করণার্থে লোক যাউত না।

পুণ্ডিন পদ্যন।

মোকাম বহুমান এক ভুক্তিপুণ্ডিন অনুমান এক পণ্ড বৎসরের এক ময়রার মৃত্যু তাহা গেল তাহাতে যে কতিকাল বিয়াজিল তাহার দুই মুক্তিতে বাকলের মধো পদ্যর পাণ্ড ওঠাইয়া দিয়াছিল। এত কালের পর সেই কতি কাল দেখা গেল যে তাহাতে পদ্যর পাণ্ড অদ্যপি আছে ও কতিকাল অশ্রু হয় নাই।

অশ্রুচিহ্নের নরবলির তরানবনী।
বিভারিখ ১০ এপ্রিল মন ৪৮১১ মাল

সমাচার দর্পণ।

মৃত্যুকে ১৯ চৈত্র মাস ১২৭৭ সাল রোজ মরনবার রাত্রি সময়ে মৃত্যু বরণের এল দে শেখ আল শাহীন যোজা তিতর খল মতালক অয়তীপুর এয়রুম অলু মান ৩০ বৎসর যাবনায় কৃষি কর্ম হা তির আইলেক। সওয়াল। মাং তেলি খালেত মনু ইকরাধীকে কি কারন থিরিয়া ছিল। অর্থাৎ অয়তীপুরের রাজা রাম দিনের ভাণীকতি ওরবরকী হৌওর কারীর নিকটে বহিমান করণার্থ এক জন মনুষ্য থিরিতে আমায়দের তিন জন কে পাঠাইয়াছিলেন তাহাতে আমরা অর্থাৎ আলী ও গাজী ও রহিম আলি হা মনু মুন্সাইকে থিরিয়াছিলম তাহাতে সে মোহাই ই ফেরার করিলে মোতার মকল লোক আদিয়া আমায়দিকে থিরিয়া আলিলেক। সওয়াল। হৌওর মজকুর কেবল তোমায়দিকে পাঠাইয়া রে কি অন্য লোককেও পাঠাইয়াছে। অর্থাৎ তোমায়দের তিন জনকে পাঠাইলেক অন্য কাহাকে পাঠাইল কি না তা হা আলি না। সওয়াল। ইহার পূর্বে কোন লোককে থিরিয়া হৌওরের নিকটে থিয়ার। অর্থাৎ না। সওয়াল। তোমরা মনুষ্যকে যে থিরিয়া লও ইহাতে কো উর মজকুর তোমায়দিকে কিজু দেয়। অর্থাৎ আমরা তাহার খুশা হই যদি আমরা তাহার আভা না মালি তবে আমায়দের খুশির রক্ষা নাই অতএব থিরি গলই ইহাতে কিজুলভের মন্তাবনা আ যারদের নাই।

তাহারপর কাশকের দুই গাঁটনা যে আনিমিআলহইতে পাওয়া গিয়াছিল তাহা দেখাইয়া জিআসা করা গেল যে তোমরা ইহা দিয়া কি কর্ম করহ। অর্থাৎ মনুষ্যের মুখে টিপ্তে দিয়া তাহার বাস্য রোধ করি। সওয়াল। তোমরা কোটির

আজতে মনুষ্য থিরিয়া যে লও তাহা রাজা রামদিনের আনেন। অর্থাৎ রাজা রামদিনের তাহা আনেন না। সওয়াল। কখনো তোমরা নরবলি দেখিয়াছ। অর্থাৎ ব। বটে দেখিয়াছি মনুষ্যের এই হৌ উর নরবলি দেন। সওয়াল। গণ্ড মনে কোন দেশীয় মনুষ্য লইয়া নরবলি দিয়া ছিল। অর্থাৎ আমি তাহা জানি না। সওয়াল। কত বৎসর কত জনকে বলি দিয়াছে দেখিয়াছ। অর্থাৎ অনুরা ন দশ বৎসর হইল যে অরবি রামদিনের ভাণীককে বিবাহ করিয়াছে তদ ববি নরবলি দেন। সওয়াল। প্রতি বৎসর কত জনকে বলি দেয়। অর্থাৎ ইহার তায়দাব পুস্তক কহিতে পারি না। কাণী ও অয়তী ও দুর্গাঠাকুরাণীর নিকটে ইন্স মাহ মাঘ লাগু বৈশাখ এই চারি মাসে বলি দেন। সওয়াল। কি পুকারে বলি দেয়। অর্থাৎ মনুষ্যকে মূল করা ইয়া তাহার গলেতে পটু মালা দিয়া বলি দেয় দিয়া গৌননেতে বলি দেয়। সওয়াল। তোমাকে কোটির কোদানির ধা আহইতে লোক থিরিয়া নিতে স্বকুম দিয়া জে কি না। অর্থাৎ এমত দেশের ত্রা ইল আমাকে কখনে নাই যে মদনে নিয়া কোদানির দেশে নিয়া কাজাক অথবা অন্য স্থানে পাঠালে লইয়া যাইব। সওয়াল রাজা রামদিনের এ বিষয় কিছু মালা ক রেল। অর্থাৎ রামদিনের রাজা লিখেই করেন এরো আপন খুশা মকলকে আজা দিয়াছেন যে যাঁহারা বলির কারণ লোক থিরে তাহায়দিকে কাটয়া যেন। সওয়াল। এই কথা শুনিয়া রামদিনের কোটির মজকুরের ওপরে কোণ করেন কি না। অর্থাৎ ইহা বিধি করেন। সওয়াল। কোটির মজকুর কোণীয় থাকেন। অর্থাৎ রাজা রামদিনের এক বাড়িতে কোটির মজকুর

থাকেন। সওয়াল। মনুষ্যকে বলি দিয়া কি কর্ম করে। অর্থাৎ আমি শুনিয়াছি যে মনুষ্যের রক্ত দিয়া মূল করে মাত্র চক্কুত দেখি নাই। সওয়াল। রক্ত দিতা কে মূল করে। অর্থাৎ কোটির স্বী মূল করে। সওয়াল। কোটির স্বী বলি দেওনের সময় সাফা হয় কি না। অর্থাৎ বটে সাফা হইয়া থাকে শু নিয়াছি। সওয়াল। তুমি যখন নরবলি দেখিয়াছ তাহাতে কোটির স্বীকে দেখিয়াছিল কি না। অর্থাৎ দেখি নাই। সওয়াল। তোমরা আলিতে পাও যে কো উর মজকুর এই কর্ম আপন ইচ্ছাতে করে কি আপন স্বীর কথা মত। অর্থাৎ কো উর গর্ভ রক্ষার কারন দুই জনের পরা মর্শে বলি দেন। সওয়াল। তোমরা কত জন খোঁজ করিতে আসিয়াছে ও তোমায়দের সহিত আর কে আছে। অর্থাৎ অন্য লোকেরাও খোঁজ করিতে আসিয়াছে এইমাত্র কিন্তু তাহার দের নাম কহিতে পারি না ও আমায়ের স গি গাজী ও রহিম এই তিন জন আমি য়ারি। সওয়াল। অন্য লোক যে খোঁজ করিতে আসিয়াছে তাহারদের নাম জানহ। অর্থাৎ আমি তাহার দের নাম জানি না। সওয়াল। কত লোক থিরিবার কারন তোমায়দের পুতি স্বকুম ছিল। অর্থাৎ এক জনকে থিরিতে স্বকুম ছিল।

পর তাহারদের টিপা দেখিয়া জিআসা করা গেল যে এমত কত টিপা আনি য়াছ আর এই টিপা কে দিয়াছে। অর্থাৎ এই দুই টিপা যে আনিয়াছি তাহা কো উর দিয়াছিল। সওয়াল। যখন কোটির নর বলি দেয় সে দিবা কি রাত্রি ও মকল লোককে আজা করিয়া কি না। অর্থাৎ রাত্রি দিবার নিকল নাই যখন তাহার

সম্রাটের দর্শন।

ইচ্ছা হয় তখন গৌতমে বলি দেয়। সুও
গুন। যদি ভোমরা মনুষ্যকে বিদ্রোহ কো
উত্তর দিকট লইয়া তবে কোন সময়ে
বলি দিতে। তাহা। আত্মদত্ত বীররা
দেই মাত্র কোন সময়ে বলি দেন কহি
তে পারি না।

নৃতন গিরাধর।

মোকাম কলিকাতার ষোল্লতলাতে শ্রীযুত
টোলনা সাহেব এক নৃতন গিরাধর প্রস্তু
ত করিয়াছেন সে গিরাধর গড় বুধবার
খোলা গিয়াছে।

আশ্চর্য্য ময়ূ।

গড় রবিবারে মোকাম ঈরাধাপুরে এক
সেবরার ঘোষণা বৎসরব্যয়কা অস্থায়
মান গড়িতে এক ছবি ময়ূর সময়ে কো
অনারিকিয়া ওড়িয়া দিগন্তা করিয়া হস্ত
পদাদি পুঙ্কলন করিয়া বটীর বাহির হই
তে আতশ হানিতে বটীর মধ্যে আ
ইল। তাহা দেখিয়া তাহার শাশুভী
জিহ্বা করিল তাহাতে সে উত্তর করিল
না এত তাহার আরো হাসবন্ধি হইল।
এই বৎসর যে কেহ জিহ্বা করে কাহানেও
সদুত্তর না করিয়া বটীর করেন এইকল
কিছু কাল করিয়া পরে কতকগুলি বটীর
দেখিল করিল। পরে দশ বটীর রাত্রি
মধ্যে মুখ ঘনিয়া লাল পড়িয়া তাহার
মৃত্যু হইল। তাহার রোগ কেহ দিল্লম
করিতে পারিল না কেহ কহে ভৌতিক
কেহ কহে ডাকিল ঘাইয়াছিল। কেহ
কহে সন্তানিতিক পুঙ্ক হইয়াছিল।

আত্মঘাতী।

কলিকাতার বৈদ্যনাথ মন্দিরের আশ
মৃত্যু হইয়াছে তাহার বিদায় গড় মোম
বারে তত্ত্বিত হইল বৈদ্যনাথ মন্দির
অনেক লোকের অনেক টাকা বিক্রিত
এবং আপনি রোগিন্দ্র জিল পরিশোধীর
কোন ওলং না দেখিয়া আপনি গদা
হস্ত হইয়া মরিয়াছে।

এবং এক মনুষ্যমান ভূরিমরিয়াছিল
তাহার বিচারে ৩ দিবস হইল তাহার
নাথী কিছু পাওয়া গেল না কিন্তু লোক
রা কহিল যে সে মাতাল জিল ইহাতে
অন্যায় হইল যে সে আপনি ভূরিয়া মরি
য়াছে।

ওপদিত বক্তা।

এক সময় যুগ্ম দেশের বাহাদুর হই
যের পুলাল ইমতিয়াজের দিকট এক ঘুরা
লক্ষ্যকে আশ্রয় ওলিল করিয়া পাঠাইলেন।
হকীম ইমতিয়াজের দিকট গিয়া মাফা
করিল ও যোগাযোগ স্থাপন করিল। এই
তাশী ইমতিয়াজ কোবিদ্রিক যুগ্ম ওলিল
কে কহিলেন যে তোমার বাহাদুর কি আ
মার সাহিত ওলান হইল দেখে যাহার
দাশী ওলি নাই এমন বালককে আমায়
লিখতে পাঠাইয়াছিল। ইহা শুনিয়া
ওলিল উত্তর করিল যে যদি আমায় বাহ
দাশী পাঠাইতে যেন আন ও বিদ্যা মনলি
দাশীর মতে। আরও তবে এক ছাগলকে
পাঠাইলেই ওলিল হইত। ইহাতে বিদ্যা
বাক আশ্রয়িক তত্ত্ব হইলেন।

বাংলার ভাণ্ডার।

| জিনিস | ফোন | অবশি | পাণ্ডার |
|----------------|-----|------|---------|
| সুপারি | ১ | ৫৫ | ৫৫ |
| ভেলেগা তেল | ১ | ১০ | ১০ |
| গাছ মরিচ | ১ | ৩০ | ৩০ |
| নারিকেল তেল | ১ | ১০ | ১০ |
| তুলা বাহাওয়া | ১ | ০ | ০ |
| কামা চন্দ্রপুর | ১ | ১০ | ১০ |
| পাটমাই আদা | ১ | ১ | ১ |
| চাল পাটমাই | ১ | ১০ | ১০ |
| পাটমাই উত্তর | ১ | ১০ | ১০ |
| পাটমাই মধ্যম | ১ | ১ | ১ |
| বালান | ১ | ১০ | ১০ |
| চট্টা | ১ | ১০ | ১০ |
| মুখা গোম | ১ | ১০ | ১০ |
| পাটমাই কুই | ১ | ১০ | ১০ |
| কামা চন্দ্রপুর | ১ | ১০ | ১০ |
| মটর | ১ | ১০ | ১০ |
| উত্তরমুখা মটর | ১ | ১০ | ১০ |
| মধ্যম মটর | ১ | ১০ | ১০ |
| জৈবা মটর | ১ | ১০ | ১০ |
| মধ্যম তৈলা | ১ | ১০ | ১০ |
| মোমবাতি | ১ | ১০ | ১০ |
| বিহর উত্তর | ১ | ১০ | ১০ |
| বিহর মধ্যম | ১ | ১০ | ১০ |
| কোটা উত্তর | ১ | ১০ | ১০ |
| মধ্যম | ১ | ১০ | ১০ |
| চিনা কাপার | ১ | ১০ | ১০ |
| মধ্যম | ১ | ১০ | ১০ |
| বার চিনা | ১ | ১০ | ১০ |
| ভেতল | ১ | ১০ | ১০ |
| ডামাক | ১ | ১০ | ১০ |
| চন্দন | ১ | ১০ | ১০ |

এই সম্রাটের দর্শন শ্রীমন্দির স্থাপনাতে পুজিগাহে পনিবারে ঘোলা হয়। যাচার লগনের খাচরক হয় তিনি শ্রীমন্দির স্থাপনাতে
আপন নাম পাঠাইলে লগনে কীল তাহার দিকট পাঠান কাহাকে তাহার লগন মনে এক টাকা তিনি দাখত করিয়াছেন যদি তাহার দিকট
কাম না পাইলে তবে তিনি শ্রীমন্দির স্থাপনাতে লগনার দিকট তাহার দিকট পাঠান হইবে।

সমাচার দর্পণ

১৫৪ ১৮৭৭।

শনিবার।

১৮ এপ্রিল সন ১৮৭৭।

৪৭ বৈশাখ সন ১২২৮।

দর্পণে দুই সৌন্দর্যমিহ কার্যবিভরণ্য।

বৃত্তান্তমিহ কামন্য সত্যচর্য্য দর্পণে।

কোম্পানির কাণ্ড।

১৮৪১ ও ১৮৪২ সালের কোম্পানির শত করা জয় টাকার মূদ্রের কাণ্ড হয় করি ডেইলি শতকরা জয় টাকার প্রিমিয়ম। বিক্রয় করিতে হইলে শতকরা পাঁচ টাকা বার আনা প্রিমিয়ম।

তাহার পরেই মূদ্রের কাণ্ড হয় করিতে হইলে বার টাকা বার আনা প্রিমিয়ম বিক্রয় করিতে হইলে দশ টাকা আট আনা প্রিমিয়ম।

মহাশয়ের গণিকা।

| | | |
|-----------|-------------|----------|
| ১৮ এপ্রিল | শনিবার | ১৭ বৈশাখ |
| ১৯ | রবিবার | ১৮ |
| ২০ | সোমবার | ১৯ |
| ১ | মঙ্গলবার | ২০ |
| ২ | বুধবার | ২১ |
| ৩ | বৃহস্পতিবার | ২২ |
| ৪ | শুক্রবার | ২৩ |

বিক্রয়ের ইস্তাহার।

এক বাসীলি বিবির এক বোতাল। ঘর তিন বিঘা বাস্তু ও চন্দ্রকর সময়ে মোশ শিবপুর চান্দালের ঘাটের সম্মুখে আছে তাহা আগামী ৩ মে বৃহস্পতি বার শ্রীযুত টালা কোম্পানী মোহেবের লিখ্যি ঘরে বিক্রয় হইবেক সে বাটীর কাণ্ডাত যে মেথিতে বাসনা করেন সেই টালা মোহেবের ঘরে গৌলে মেথিতে গাইবেক। মোশ ঘনভাণ্ডে যে ভুলা চাণীর কনয়

আছে সেই কনয় ও দুই ধরায় আট বিঘা অমী সময়ে ৩ মে বৃহস্পতি বার শ্রী যুত টালা কোম্পানীর লিখ্যি বিক্রয় হই বেহা।

বিজ্ঞাপন।

সকলকে সমাধির ঘোড়া গাইতেছে যে শ্রীযুত কার্যবিভরণ্য মোহেবের কলিকাতার ভেঁমুদলাটে ৫০০০ রের ঘরে লিখ্যি বাস করিয়াছেন। যা হার কাটরা খিলিম ও মাদ ও ঘোড়া ও গাভীপুত্রি বিক্রয় থাকে তাহারাই ঘানে আনিয়া দিলে বিক্রয় হইবেক এবং বাহিরের লোকেরদিগের ঘাটার যে জি নিমের আশায্য হইবেক এই মোহেবের লিখিলে শুভম জিনিস তত্ত্বমুল্যে গাই করিয়া আনিয়া যে সকল লোকের নি কষ্ট পাটাইবেক এবং আপন কমিসন লই বেহা।

সমাচার দর্পণ

রাসকর্ম নিয়োগ।

৪০ মার্চ।

শ্রীযুত সি এম ফার্মন মোহেবের বাহর ও বাহালমের বোর্ড কমিসনের দ্বিতীয় অফিস হইয়াছেন।

৪০ এপ্রিল।

শ্রীযুত অলবরণ জে আর এলফিন্স্টন

মোহেব কলিকাতার কোট আশায্য ও কোট মরকটের পুহান জা।

শ্রীযুত জে সি মানফর্ড মোহেব পাটনার কোট আশায্য ও কোট মরকটের দ্বিতীয় জা হইয়াছেন।

শ্রীযুত জে সি মানফর্ড মোহেব পাটনার ১ কর্মের তৃতীয় জা।

শ্রীযুত দ্বলিও এম ফ্রেমিং মোহেব ৪২ কর্মের তৃতীয় জা।

শ্রীযুত দ্বলিও লক্ষ মোহেব তীরহুতের জা ও মাজিস্ত্র হইয়াছেন।

শ্রীযুত এম এলিআল মোহেব মুরলি দাবারের জা ও মাজিস্ত্র।

শ্রীযুত এম ফেল্ড মোহেব বাবালি মের জা ও মাজিস্ত্র।

শ্রীযুত দ্বলিও দৌহর মোহেব শীর গের জা ও মাজিস্ত্র।

শ্রীযুত এ জে কলবিল মোহেব এলাহা বাহের জা ও মাজিস্ত্র।

শ্রীযুত দ্বলিও এ চাপুর মোহেব অরল মহালের জা ও মাজিস্ত্র।

শ্রীযুত জি ফ্রেঙ্ক মোহেব ম্যাকগুর জা ও মাজিস্ত্র।

শ্রীযুত এন টি কথবর্দ মোহেব রায় গাভের জা ও মাজিস্ত্র।

শ্রীযুত সার এচ কট মোহেব মুরলি বাহের রেজেক্টর ও ভুলা জা ও মাজিস্ত্র।

শ্রীযুত জে সি ডিক মোহেব মারকটের দ্বিতীয় রেজেক্টর।

সমাচার দর্পণ !

ঐযুত এম এফ সাহেব আলী
গভের জেলা কোর্টের রেজিস্ট্রার হইয়া
যাচ্ছেন।

—ঐযুত জি এম মুন্সী সাহেব মীর
টের জেলা কোর্টের ডায়রী রেজিস্ট্রার হই
যাচ্ছেন।

ঐযুত জন নিব সাহেব কানপুরের
জেলা কোর্টের রেজিস্ট্রার।

ঐযুত এ এম সাহেব মুন্সীপুরের
জেলা কোর্টের ডায়রী রেজিস্ট্রার।

ঐযুত জে সি ব্রৌন সাহেব বাগান
মের লর্ডার কোর্টের ডায়রী রেজিস্ট্রার হই
যাচ্ছেন।

ঐযুত এম লিনবের্ট সাহেব মুন্সীপুরের
জেলা কোর্টের রেজিস্ট্রার।

ঐযুত ডে ববলিও টেম্পার সাহেব পট
লার লর্ডার কোর্টের রেজিস্ট্রার।

ঐযুত এম ব্রুস সাহেব রাজমহীর
সিবা কোর্টের অন্য মাজিস্ট্রেট ও রাজ
মহী ও রটপু ও দিনাজপুরের জেলা
মাজিস্ট্রেট।

ঐযুত ববলিও এ পুর্ন সাহেব দিন
অপুরের ডায়রী রেজিস্ট্রার।

ঐযুত জি বৈবার্ট সাহেব চব্বিশ পর
গনার রেজিস্ট্রার ও বাগানের জেলা মাজি
স্ট্রেট।

ঐযুত এম এম ডাম সাহেব মেদিনী
পুরের জেলা কোর্টের রেজিস্ট্রার।

ঐযুত সার বালী সাহেব নদিয়ার জি
লা কোর্টের রেজিস্ট্রার।

—
পূর্ণিমা নতুন বৎ সাহেব।

পূর্ণিমা নতুন বৎ সাহেব এ দে

শের বৎ সাহেব হইয়া আসিবেন পূর্বে
এমত জানান গিয়াছে। এই স্থানে সম্মা
টার জন্য গৌন যে মহামানভার পরাম
শের সময় উপস্থিত হইলে তিনি কহিলেন
যে সকল লোক কই বাঙ্গালীর বৎ
সাহেব হইয়া তাহি ঘাইব কিন্তু এবিষয়
ডায়ারী মনে কখন ইচ্ছা আসে নাই।
ইহাতে বোধ হয় যে পূর্বে যে জানান
গিয়াছিল সে মিথ্যা হইল।

—
অনাবৃষ্টি।

মোঃ মুহাম্মাদুল উত্তর অঞ্চলে
বহিলা হওয়াতে লোকেরদের কৃষিকর্ম
বাধ্যত হইতেছে। এম যে প্রায় কোন
নদীর নিকটস্থ নহে সে প্রায় শুষ্ক
পীড়িত যে আজ সেও শুষ্ক হইয়া ক
দ্রম্ম শেষ হইয়াছে সেই প্রায়ের লোক
রাই নদীর জলশন করিতে অসিধ্য
পাইতেছে। এমই মুদ্রেশ ওনাডটা রো
গেরও অধিক প্রাচুর্যর শ্রুতা ঘাইতেছে
ও যেখানে অধিক জল কক্ষ সেখানে
অধিক লোক ওনাডটা রোগে মরিতে
ছে। ইহাতে লোক কহে যে এই কদ্রম
জলশনে বাক অধিক মরিতেছে।

—
তাহিতি।

মোঃ শিহুজিতে অনেক দুষ্ক লোক
একতাক হইয়া প্রায় তাহিতি করি
তেছিল তাহাদের দৌরাত্যেও তথা
কার লোকেরা তত্পর ভীত হইয়াছিল।
এই সম্বন্ধ মোঃ কলিকাতাতে পৌছিলে
ঐযুত বৎ সাহেবের সন্নী যোড়নয়ার
এক ঘর লইয়া পুণ্ডিত কান্ডান থল
সাহেব তাহাদের সম্মান্য সেই মো
কামে গিয়াছিলেন। পরে ১০ এপ্রিল
তারিখের পত্রবারা জালা গেল যে কান্ডান

সাহেব আগুন পুরস্কৃত্যে তাহাই
তাদের দ্বারা আফ্রান করিয়া পক্ষী
বাতি অনেক কাটিয়া গুল করিয়াছেন।
সাহেবের পক্ষে দুই জন যোড়নয়ার
আঘাত হইয়াছে আর এক জন মরীম
এ এক অ-বাঙ্গালি কবিবাজ গুল হইয়া
ছে এবং তারিখ বোকা আঘাত হইয়াছে
ও এক বোকা হইয়াছে।

মোঃ করাল ও দিল্লীর মর্দে যে রাহা
আছে তাহাতে অনেক তাহাইত তথা
হইয়াছে। এক দিবস এক সাহেব
আগুন স্রুপ্ত সন্নী করিয়া ঘাইতেছিল
সেই মোকামে সাহেব হইলে সেই
রাহার নিকটে সাহেব তথ্য থাকা করিয়া
সেইখানেই রাতি থাকিল। পরে অধিক
রাতি হইলে সকল নিদ্রিত হইল তখন
ঐ তাহাইতরা আসিয়া সাহেবের পুশর
দায়র আলফার লইবার চেষ্টা করিল
এম তাহার গালা বিড়িয়া তামুর বাহরে
লইয়া ঘাইতেছিল ইতেমধ্যে ঐ দুই
মোর নরিন। সাহেব তাহা শুনিয়া
অতিশয় খট্টা সেখানে গেল। সা
হেবকে দেখিয়া তাহাইতে পলায়ন ক
রিয়া নিকটে দুই মের মর্দে গেল। পর
দিবস তদারক করিতে কতক তাহাইত
বিগা পতিন আর কতক তাহাইত সে
স্থান হইতে পলায়ন করিল।

—
মুরশিদাবাদ।

মোঃ মুশেদাবাদের ১০ এপ্রিল তারি
খের পত্র জানা গেল যে ১০ এপ্রিল তা
রিখের বৈকালে অতিশয় মেঘ হইয়া
কত বৃষ্টি হইয়াছে এবং কণোতর তি
ম্বাকার শিলাবৃষ্টিও অধিক হইয়াছে
ইহাতে লোকেরদের অধিক ওপকার ও
কৃষিকর্ম সুন্দর চলিতেছে তাহাতে সে
দেশে দ্বিগ হইয়াছে।

সমাচার দর্পণ।

সংখ্যে।

গত মোমবারে বৈকালে মোকাম কলিকাতার গভের মাষ্টার রাহাভে যে দ্বাদশ পুতি দ্বাদশ মোমবার লোকেরা গাঁড়ী ও ঘোড়াতে ঘাড়াগাত করেন সেই স্থানে এক গাঁড়ীতে দুই সাহেব আসিতেছিল। অন্য এক গাঁড়ীতে এক সাহেব ও এক বিবি ঘাইতেছিলেন বৈকালে দুই গাঁড়ীর চাকাতোৎ সন্মিলন হইয়া অতি শরৎ হইল। লাগিয়া দুই গাঁড়ী বন্ধ হইল সেই বৈকালে দুই গাঁড়ীর সাহেবেরা আশ্রয় গাঁড়ীর সম্মুখে থকিলেন। তাহা দেখিয়া লিকটেক সাহেবেরা আসিয়া ঐ সাহেবেরা দ্বিগুণে উল্লসিত হইয়া বহিঃস্থে আত্মিক বহন লাগে নাই।

মহামতঃ।

গত মঙ্গলবারে সন্ধ্যা সময়ে মোকাম কলিকাতার পুলিশের ঘাটে এক জোঁকরা আহারের চতুঃদিকে শীতের দিয়া জল খেলা করিতেছিল। পরে আহাভে ওড়িয়ার কার্ণ আহারের দৃশ্যে বিরল। ঐ সময়ে এক বৃহৎ মৎস্য তাহার পাখি ও পাখির মাংস কাটিয়া লইল। ঐ সময়ে এক ডিহী নৌকা সেখানে হইতে ঘাইতেছিল তাহার সে জোঁকরাকে নৌকাতে ওড়াইল। যদি তাহাকে না ওড়াইত তবে ঐ মৎস্য ঐ মাংস ভক্ষণ করিয়া পুনঃ বৈত। পরে সে যে আহাভের লোক সেই আহাভে ওড়াইয়া দিল।

আহাভ ভাসিল।

১০ মার্চ মোমবারে বেলা দুই পুহর লিখকীর সময় মোকাম কলিকাতার পুহর হিন্দু কল্লারীর কারখানা হইতে এক আহাভ ভাসিয়াছে তাহা দেখিতে

অনেক ভাণ্ডার লোক ও অনেক সাহেব লোক আসিয়াছিলেন তাহাতে অনুমান দুই শত সাহেব লোকের দ্বিগুণে নিমন্ত্রণ করিয়া বিন বোলানী অতিবহন হইয়াছিল।

হট্টাৎ মৃত্যু।

গত মঙ্গলবারে পুহর কালে মোকাম কলিকাতার পুহর ঘাটে মহিমেরা ঘোড়া বোয়াইতে আসিয়াছিল। তাহাতে এক মহিম আসল ঘোড়ার পশ্চাতে থাকিয়া তাহার গা বোয়াইতেছিল বৈকালে ঘোড়া ঐ মহিমের পেটে লাগি মারিল তাহাতে সে ডাখলি মরিল।

চান্দ।

পূর্বে বহরাজদিগের যে জমিদারি আদান গিয়াছে তাহাতে যে মঙ্গল লোকের অন্তর হইয়াছিল তাহার কার্ণ কর্তৃক সাহেব লোকেরা চান্দ করিয়াছিল। তাহাতে সাত শত টাকা মজুর হইয়াছিল ঐ সাহেবেরা সেখানে ঘাইয়া ঘোড়ার ঘোড় আশ্রয় হইয়াছে সেই মত বিবেচনা করিয়া টাকা দিয়াছেন।

অন্য দিবস।

ইঙ্গুরের জমিদার বদশাহের অন্য দিন গত মোমবারে হইয়াছিল তাহাতে মোকাম কলিকাতাতে জমিদার বদশাহের বাগীতে বহন হইয়া ও নাচ হইয়াছে তাহাতে জমিদার বদশাহ ও তাহার পত্নী ও অন্য সাহেবেরা ও বাদশাহের তত্ত্ব অন্য চাকরদের ও কোলালীর চাকরদের আসিয়াছিলেন সেই দিবস পুহর কালে ১৪ একশ গোলা হইয়াছিল ও আহাভে মঙ্গল শিশান ওড়িয়া কেহ ওড়ান করিয়াছিল ও গভের মঙ্গল বৈকালে

কাঁচা করিয়াছিল ও বন্ধু জাতিয়া ছিল।

অজাত মৃত্যু।

গত আক্টোবর মাসে ইঙ্গুর দেশে এক বলের মধৌ এক মল্লবার মৃত শত্রুর পত্নী গিয়াছিল তখন লোকেরা অনুমান করিয়াছিল ১০ মেষের তরিতে সে মরিয়াছে যেহেতু সেই বাক্ত ঐ তরিতে আসনার এই বিবরণ এক জন লোককে কহিয়াছিল যে আমি লণ্ডন নগরে ঘাইতেছিল তাহাতে প্রিন্স নগরে অভিমুখীভাবে এক দিবস জিলায় তাহাতে সেখানে তার এক লোক অলপ শুষ্ক হইয়া লইয়া আসারবাবে ঘাইতেছিল বৈকালে সেই জল আশ্রয় ঘাটে তাহা জল তৎপূর্ণ সেই ঘাটে গিয়া বাকিয়াছে। পরে ইঙ্গুর তরিতে সাগরে ও বাকিয়াছে তাহাতে পাত্র গেল না। সে এই বহরাজদিগের বলের পথে পুহর করিয়াছিল। ইহাতে অনুমান হয় যে সেই ক্ষত রোগে ঐ বলের মধৌ সে মরিয়াছে। এবং যখন তাহাকে মৃত পাত্র গেল তখন তাহার সেই ক্ষতের মধৌ গারি নীচের বাক্ত রক্ত গাইল সেই কীটরা তাহার মস্তক পূর্ণ হইয়া মরিয়াছে।

ডাকহাতি।

ইঙ্গুরদেশে এক সাহেব দেশ ভ্রমণ করিতেছিল। হল লগর হইতে তিন কোশ অস্তরে এক স্থানে এক জন ডাকহাতি আসিয়া ঐ সাহেবকে ধরিয়া তাহার বস্ত্রহইতে ১০ খান মোহর লইল। পরে সাহেব সেখানে হইতে এক কোশ চলিয়া এক অভিমুখীভাবে থাকিল এক অভিমুখী

সমোচার দর্পণ।

শালার তদ্বক্ষকে আত্মবিরহে মগ্ন
কহিল যে তোরে আমার ১০ খান মোহর
লইয়াছে তাহার পুত্রকে মোহরে আ
ম্মির চিহ্ন আছে অনুমান করি যে সে
চোর বীরা ঘাইতে পারে। পরে সাংহরের
আইরাছি হইলে ঐ অতিশিশালাধিক
ঐ সাংহরকে কহিল যে তোমার চোর
আমি বিক্রিয়া বিতে পারি আমার এক চাক
রের পুত্র আমার সঙ্গেই আছে আমি
সেই চাকরকে বৈকালে একখান মোহর
ভাঙ্গিয়া দিয়াছিলাম পরে রাত্রিতে
যখন তুমি আমার এখানে ভাঙ্গিয়া বসি
লা তখন সেই চাকর মোহর ভাঙ্গিয়া
লইয়া তাহা আমাকে ফিরাইয়া দিল।
আমি একালের টাকা ব্যয়িতাম সে মো
হর তাহাকেই দিয়াছি কিন্তু যে মোহর
ভাঙ্গিয়া দিয়াছিলাম ঐ সে মোহর
নহে যদি তোমার পুত্রকে আমি কণ্ঠে
স্থাপিতাম তবে সে মোহর রাখিতাম
এক সে চাকর মদ খাইয়া মাতাল হইয়া
ছে সে কাগজ আমি তাহাকে ঘরে বিদায়
করিয়াছি।

পরে দুই জন পরামর্শ দিই করিয়া
সেই চাকরের নিকট ঘাইয়া তাহাকে
নিম্নিত দেখিল এবং তাহার জেবের মধ্যে
হাত দিয়া এক খৈলী সমেত সেই শিশা
লা ১০ খান মোহর পাইল। তখন সা
ংহর দিয়া করিয়া সে সকল মোহর লইল
পরে চাকরকে আশীর্বাদ মঙ্গল কহিল।
সেও দিয়া করিয়া কহিল যে আমি মো
হর লই নাই। পরে আশীর্বাদ বিচারের
কারণ ঐ চাকরকে জেলখানিতে কয়েদ
রাখিল। ঐ চাকরের আত্মীয় লোক

রা তাহাকে নানাকার কহিল যে আপনি
স্বাক্ষর করিলে প্রাণদান পাইবা। সে
তাঁহা কথা স্বাক্ষর করিল না। পরে
বিচারে সমোচী হইয়া হলদারের তাহার
ঐশী হইল কিন্তু সে চাকর মৃত্যুকাল
পর্যন্তও আপনাকে সমোচী কহিল না।
আপনি তাৎপাঙ্কে নির্দোষী কহিতে
ঐশীতে মহিন। ঐ বৎসরের মধ্যে
ঐ অতিশিশালাতে অন্য এক সাংহর
আনিয়াছিল ঐ অধ্যক্ষ তাহার ওপর ত
কহিতি করিয়া বীরা পড়িল। যখন তাহার
বিচার হইল তখন আপন পরকাল ভয়ে
মৃত্যুকাল আপনাদর মঙ্গল পাপ পুণ্য
করিয়া কহিল তাহার মধ্যে ঐ চাক
রের ঐশীরা বিদায় কহিল যে আমি ঐ
সাংহরের মোহর ভাঙ্গিয়া দিয়াছি
আপন অতিশিশালাতে আছিল।
এই সালে আমার এক মহাজন আসি
য়া ওপরি হইলে ঐ ১০ খান মোহরের
মধ্যেইতে একখান মোহর তাহাকে
দিয়া বিদায় করিল। পরে ঐ সাংহর
আনিয়া যখন বিবরণ কহিল ও মোহরের
নির্ণাণ আরে স্থলিলাম তখন আমার
অতিশিশালা বারনা হইল ও যে ঐখান
মোহর পর হস্তগত হইয়াছে ইহাতে
আমার বীরা পড়িলের আটক নাই। এই
সকল বিবরণে করিয়া আপন চাকরের
ওপর দোষ দিয়া তাহাকে ঐশী দেয়াই
য়াছি। তাহাইতি করা এক মহাদোষ
তাহাইতেও মহাদোষ করিয়াছি যে
নির্দোষী লোকের প্রাণদণ্ড করিয়াছি।
পরে এই সকল বিবরণ শুনিয়া তাহাকে
ঐশী দিল।

সাক্ষর ডাঙা।

| জিনিস | খোর | জবদি | পরিমাণ |
|--------------|-----|------|--------|
| মুগারি | ১ | ৩৫ | ১০ |
| ভেড়া ঠেল | ১ | ১০ | ১০ |
| গাছ মরিচ | ১ | ৩০ | ৫ |
| নারিকেল ঠেল | ১ | ১২০ | ১০ |
| তুলা কাছোকা | ১ | ০ | ০ |
| আদা রসপু | ১ | ২০ | ২০ |
| পাটবাড়ি আদা | ১ | ২ | ১০ |
| চাল পাটবাড়ি | ১ | ২০ | ১০ |
| পাটবাড়ি তরল | ১ | ২০ | ১০ |
| পাছরি মধ্যম | ১ | ২ | ১০ |
| বাল্য | ১ | ১০ | ১০ |
| রাগি | ১ | ১০ | ১০ |
| মুগা গোম | ১ | ১০ | ১০ |
| পাটবাড়ি দুট | ১ | ১০ | ১০ |
| অচুড় তালি | ১ | ১০ | ১০ |
| মটর | ১ | ১ | ১০ |
| উত্তমগার মট | ১ | ২০ | ১০ |
| মধ্যম মট | ১ | ১০ | ১০ |
| ভেলা মট | ১ | ১০ | ১০ |
| মধ্যম ঠেলা | ১ | ১০ | ১০ |
| মোমবাড়ী | ১ | ০৭ | ০৭ |
| মিছরি উত্তম | ১ | ১০ | ১০ |
| মিছরি মধ্যম | ১ | ১০ | ১০ |
| মোরা উত্তম | ১ | ০১ | ০১ |
| মধ্যম | ১ | ০৫ | ০৫ |
| চিনি কাণার | ১ | ০১ | ০১ |
| মধ্যম | ১ | ০১০ | ০১০ |
| খাট চিনি | ১ | ০১০ | ০১০ |
| ভেড়া | ১ | ১০ | ১০ |
| তামাক | ১ | ০১০ | ০১০ |
| চন্দন | ১ | ১০ | ১০ |

এই সমোচার দর্পণ পুরানপুরে ছাপাখানাতে মুদ্রিত হইয়াছে পরিবারে ছাপা হয়। সাহায্য লওনের আবশ্যক হয় তিনি শ্রীচন্দ্রপুরের ছাপাখানা
আপন নাম পাঠাইলে সমোচারে আপন সাহায্যের নিকট পাঠান যাইবে তাহার মূল্য মানে এক টাকা। যিনি সাহায্য করিয়াছেন যদি তাহাৎ দিয়া
কাল না পূর্বে তবে তিনি শ্রীচন্দ্রপুরের ছাপাখানাতে সমোচার দিব্যমাত্র তাহার নিকট পাঠান যাইবে।

সমাচার দর্পণ

১৪৫ নং-১৮৭১।

শনিবার।

৫ মে মঙ্গল ১৮৭১।

১৪ বৈশাখ মঙ্গল ১৯২৮।

দর্পণে মুখ পৌষ্যায়ির কার্যনির্বাহণঃ। বৃদ্ধান্তানিহ কান্ড সমান্তরায় দর্পণে ॥

কোম্পানির কাণ্ড।

১৮৪১ ও ১৮৪২ সালের কোম্পানির শত
হাজার টাকা মূল্যের কাণ্ড হয় করি
তে হইলে শতকরা তিন টাকা প্রিমিয়াম।
বিক্রয় করিতে হইলে শতকরা তিন টাকা
প্রিমিয়াম।

তাহার পর ১৮৪৩ সালের ৫ মূদ্রের কাণ্ড
হয় করিতে হইলে বার টাকা প্রিমিয়াম
বিক্রয় করিতে হইলে এগার টাকা বাট
আলা প্রিমিয়াম।

সম্ভাব্যের পরিমাণ।

| | | | | |
|---|---|-------------|----|-------|
| ১ | ৫ | শনিবার | ১৪ | বৈশাখ |
| ২ | ৫ | রবিবার | ১৫ | ৫ |
| ৩ | ৫ | বোম্বাই | ১৬ | ৫ |
| ৪ | ৫ | মঙ্গলবার | ১৭ | ৫ |
| ৫ | ৫ | বুধবার | ১৮ | ৫ |
| ৬ | ৫ | বৃহস্পতিবার | ১৯ | ৫ |
| ৭ | ৫ | শুক্রবার | ২০ | ৫ |

ইস্তাহার।

সমাচার দেওয়া যাইতেছে যোহান্ন
জিহ্মায়ের সেবিম্ব বাঙ্কে যে লোকের
টাকা আছে তাহার সমস্ত মূল্যের আশ
না হিসাব যোহান্ন কলিকাতা জিহ্মত
আলেক্সান্দ্র কোম্পানীর বাটীতে গেলে
দেখিতে পাইবেক।

সকলকে জানান যাইতেছে যে জিহ্মত
হোয়া ডেবিডন কোম্পানী হইতে জিহ্মত

ওয়ালটের ডেবিডন সাহেবের দেনা
শাওনা ৩০ এপ্রিল পর্যন্ত বন্ধ হইয়াছে।

সকলকে জানান যাইতেছে যে জিহ্মত
বি রুপ্ত সাহেব ও জিহ্মত দলিও এ লি
কিংজন সাহেব জিহ্মত টালা কোম্পানীর
বাটীতে আশী হইয়াছেন।

এবং জিহ্মত ডামিস রুট সাহেব জিহ্মত
হোয়া কোম্পানীর এক আশী হইয়াছেন।

সমাচার দর্পণ

রাজস্বার্থ নিবেদন।

১৩ এপ্রিল জিহ্মত জে জে নি কোম্পানী সাহেব
ব্রহ্মপুত্র জিলা কোর্টের রেজেন্টর।

জিহ্মত জে আর হাট্টিং সন্ সাহেব
জিলা রাজসাহীর কোর্টের রেজেন্টর হই
য়াছেন।

জিহ্মত আর ওয়র্ন সাহেব চাউগামের
জিলা কোর্টের রেজেন্টর।

জিহ্মত এচ গিরনল সাহেব চরিশপনগ
নর রাজস্বার্থের পেকার।

১৩ এপ্রিল জিহ্মত জর্জ জেট অর্নি সা
হেব কলিকাতার রক্তানি বানিজ্যের আ
শীনের অবধিকার দ্বিতীয় পেকার।

কোম্পানির কাণ্ড।

৫ মে তারিখে জিহ্মত ইস্তাহার দিয়
জেল যে ১৮৪১ সালের ৩ জুন তারিখে
ল্যাগাএব এক নম্বর অবধি দশ হাজার

নম্বর পর্যন্ত মূল্য কোম্পানির কাণ্ডের
টাকা আশাশ্রয় ৩১ জুনই তারিখে
কোম্পানির প্রত্নর ঘর হইতে বেওয়া যাই
বেক। যদি কেহ কাণ্ড দাখিল করিয়া
টাকা না লয় তবে তাহার পর তারিখ
অবধি তাহার মূল বন্ধ হইবেক।

৫ তারিখের বিষয় ও জিহ্মত ইস্তাহার
দিয়েছেন যে কলিকাতা ও মুর্শিদাবাদ ও
বোম্বাইতে থাআজি দস্তুরে কোম্পানির নি
মিত টাকা কত করিতে হকুম হইয়াছে।
এবং যদি কেহ সাহেব ১৮৪১ সালের কা
ণ্ড পুনর্বার কোম্পানির এই নতুন কর্ত্ত
দাখিল করিতে বাসনা করে তবে ১২ মে
কালের থাআজি সাহেবের সেই নোকে
কে পুনর্বার কাণ্ড লইয়া নতুন কর্ত্তের
থত্ব দিবেন।

কলিকাতার থাআজি দস্তুরের অধিক
এবং লখনৌ ও দিল্লীর ওসীল এবং কান
জুর সাহেবেরা এবং কোম্পানির মৈন্যের
বন্ধীরা এই নতুন কর্ত্তের নিমিত্ত কো
ম্পানির নামে টাকা বিহীন সাহেব না
বের নোট লইয়া থত্ব দিবক কিন্তু টাকা
দাখিল করিতে হইলে থত্ব নিমিত্ত
টাকা হইতে শত করা তিন টাকা অধিক
দাখিল করিতে এক শত টাকার হিসাব
থত্ব পাইবেক। এক হাজারের কম টাকা
কোম্পানি লইবেন না।

এই নতুন কর্ত্তের মূল শতকরা ৫ মূল্যের
জয় টা ॥

এই নতুন কর্ত্তের হিসাব ১৮৭১ সালের
৩১ মার্চ তারিখে বন্ধ হইবে। সে সময়ে

সমাচার দর্পণ !

যত শত পুতাক জন পাইবেক সে সকল
শত জনকাতায় কোলাণীর খাতি
মস্তক আলিতে হইবেক এক ২১ শতের
হয়েন শ্রুত কোলাণীর খাতি
অবিক সাহেব কোলাণীর বীরবাহিক
সুদেব কাণ্ড তাহারদের পুতাক জন
কে দিবেন।

এই নতুন কর্তে লখনৌ ও চরখাবাদ ও
কাশীর এক পত মাতে চারি টাকা কলি
কাতার এক পত টাকা তুল্য হিসাবে
আদিবেক।

যখন এই কর্তের টাকা শোধ করিতে
কোলাণির বাসনা হইবেক তখন কোলা
লি ঘাতি দিন পূর্বে সকলকে খবর দিবেন
এক সে ঘাতি দিন গত হইলে তাহার
টাকার সুদ বদ হইবেক।

অরনাথ স্তম্ভ।

মোহাম্মদ কতিয়ামে মল ১৮৮৮ সালে
মহারাজপুরের সহিত যে মহাসম-
গ্রাম হইয়াছিল তাহাতে ইংরাজদের
অগ্রশক্তি হইয়াছেন তাহিরন অরনাথে
মোহাম্মদ বোম্বায়ে এক পুস্তকময় স্তম্ভ হই-
তে তাহার পুস্তক গত ১০ মার্চ তা-
রিখে প্রণীত হইয়াছে। সেই বিবস
বৈকাল মতে পঁচা ঘণ্টার সময়ে সকল
সাহেবেরা একত্র হইয়া সেই স্থানে পুতান
করিলেন তাহার। সেখানে গৈরিলেন
গোলেন্দাজের। বাহা করিল ও ভোপ দা
গিতে লাগিল এবং যে গোরা পক্ষীয়
যোদ্ধারা ঐ যুদ্ধে জয় হইয়াছিল তাহা
রাও বাহা করিল ও বন্ধু জাতিল এবং
যে পুস্তক পুখম গাঁথ গেল তাহার মধ্যে
এক নিতনের পরে এই কয় অক্ষর লিখিয়া
দিয়াছে যে কতিয়ামের যুদ্ধ অরনাথে
হিন্দুধর্মের পুরান বচ সাহেব শ্রীশ্রুত

মারকিম আল হুজি'স সাহেবের ও বা
মের বচ সাহেব শ্রীশ্রুত যুদ্ধে মৃত্যু
আলখিস্তান সাহেবের আমলে মল ১৮-
১৯ সালে এই স্তম্ভের পুখম পুস্তক দা-
ণিত হইল। এবং সে পুস্তকের মধ্যে লুনা
দেশীয় টাকা ও জাংলের পরিচ্ছন্ন চক্ষে
তদ্রূপিত তাৎসাহেবেরদের নাম লিখি-
য়া সেই পুস্তক শ্রুত করণ হমকিনেন
সাহেব আপন হস্তে করিয়া নিয়মকণ
স্থাপন করিলেন।

গাঁজাপুর।

১৮ এপ্রিল তারিখের পত্র জানা গেল
যে মোহাম্মদ গাঁজাপুরে ১৭ তারিখে দুই জন
মল্লয়া রোডের ওড়ানে পড়িয়া মরিয়াছে
তাঁহারা মরন কালে অধিক যত্ননা ভোগ
করিয়া মরিয়াছে তাহারদের শরীর স্থলি
য়াজিল ও মৃত্যু হওয়ারান্ত তাহারদের
শরীর পড়িয়া দুগ্ধ হইয়াছিল।

মুর্তি।

১৪ এপ্রিল তারিখে মকরানোর মুর্তি
পুখম যে ধরিল সে এই।

| | |
|----------------|------|
| ৪ টিকিট | ১০০০ |
| ৫ টিকিট | ৯০০০ |
| ৬ টিকিট | ৫০০ |
| ৪ টিকিট পুতাক | ১০০ |
| ১০ টিকিট পুতাক | ৫০ |
| ১১ টিকিট পুতাক | ১৫০ |
| ১২ টিকিট পুতাক | ১০০ |

বহু হস্তী।

দুই বৎসর হইল আমেরিকা দেশীয়
আহাজের এক কাশ্তান সাহেব মোহাম্মদ
বোম্বাইতে এক বহু হস্তী কয় করিয়া
আপন দেশে লইয়া এক ভক্তির দানে

বিত্য করিয়াছিল কিন্তু সে হস্তী সে
লোকের অনিবার্য হইল। তাহা শুনিয়া
কাশ্তান সাহেব তাহার ওপকারার্থে সেই
স্থানে গেল। সেই দিন সে হস্তী লইয়া
এক গুম্মাহইতে অন্য গুম্মাহ যাতে এক
নদী পার হইতে হইল। সে নদীর ওপ
রে কাছের মীকো ছিল।

পরে হস্তীর সঙ্গে এক সাহেব এক
ঘোড়াতে ও এক কাছির লোক এক ঘোড়া
তে চড়িয়া মীকো গুম্মাহ তাহা মীকোর
দ্বার খুলিতেছিল এবং হস্তীর পক্ষাভে
ঐ কাশ্তান সাহেব ও এক কাছির লোক এক
ঘোড়াতে যাঠিতেছিল। এই সময়ে ঐ
মীকো ভয় হইয়া পড়িল তাহাতে তা
স্তান সাহেবের ঘোড়া ও কাছির ঘোড়া
পড়িয়া উৎক্ষাণ মরিল। কাশ্তান সাহে-
বের পা ভাঙ্গিল ও তাহার মস্তকে অনেক
আঘাত লাগিল দুই দিন ঘণ্টার পর সা-
হেব মরিল ও কাছির এক পা ভাঙ্গিল ক
বিরাজ কাছির পা কাটিয়া দিয়া তাহাকে
বঁটাঠিল। হস্তী পড়িল লোকেরা অনু-
মান করিল যে হস্তী মরিয়াছে। পরে দি
বস কয় কলহার হস্তীকে ওঠাইল কিন্তু
সে ওঠিতে পারিল না তাহার পক্ষাদের
পায়ে আঘাত পক্ষ লাগিয়াছিল। পরে
এক ওড়াতে চাকা লাগাইয়া ১০ মাইল
দূরী টানিয়া লইয়া এক পিলখানাতে রা-
খিয়া চিহ্ন-মা করিল কিন্তু সে হস্তী বঁ-
টিল না। সে মীকো ১২ হাত ওড় ছিল।

ওলাঙী।

কাম্বুদী গুম্মাহ রামমঠ বঁটা নামে
এক গোয়ালার ওলাঙী হইলে তাহার
গোষ্ঠী সময়ে বন্ধ হইল কিন্তু পরে তা-
হার দ্বার ওলাঙী হইল ও দুই জনের
চিহ্ন-মা করিতে তাহার পুস্তর ওলাঙী

সমাচার দর্পণ।

হইল ও এই তিন জনের চিকিৎসা হইতে
কে ইহার মধ্যে তাহার কলার ওলাওতা
হইয়াছে সমাচার লইয়া তাহার আশা
তার বর্ধী হইতে লোক আিল। পরে
রুমচান মাল চিকিৎসাচার্য্য তাহার
দ্বী পুত্র রক্ষা পাইল তাহার কলার শেষ
সমাচার কিছু পাওয়া যায় নাই।

চতুর্থায়।

মোঃ চতুর্থমহম্মদ ১৩ এপ্রিল তারি
খের সমাচার আনিয়াছে তাহাতে জানা
গিল যে মোখালে অভিশয় অনবর হই
গাছে যে পল্টনীয় শ্রীযুত ফিরদ মাহেব
চতুর্থমহম্মদ অমী তবারকের কারন শ্রী
ধ্বর নীমাতে গিয়াছিলেন মোখালে
কতক বুঝায়েদীয় লোক আনিয়া উঠা
কে বহিয়া লইয়া কাজাত দেশে কএদ
রাগিয়াছে দুই বৎসর হইল বুঝায়েদী
য়েরা জয় হাজার ইলান সময়ে আনিয়া
মে দেশ পরাজিত করিয়া স্বাধীন করি
গাছে যে হুজর মোখালকার মাহেব
লোকেরা সেই মাহেবের বিষয়ে অভ্যস্ত
জিত হইয়াছে যেহেতু তৎকালীয় বায়ু
অতিশয় ইহাতে রোগাধি হইতে পরে
যাণ্ডিও রোগাধি না অন্যে তথানি বুঝা
বেশীয় লোকেরা অতিনিদ্রায় তাহার
শয় করিতে পারে। কিন্তু ভরসা আছে
যে এখানকার রাজাশীলনকরা মাহেব
বুঝায়েদীয় কাজাতের অধীক্ষকে এই
মাহেবের খালানসের কারন পত্র নিমিয়া
জিল ইহাতে ই মাহেবকে তাহারাজি
তে পারে যদি না লাভে তবে ইহাও আ
শা আছে তাহাকে খালানস করিয়া আনি
বে।

ঐযুত লর্ড বিশপ মাহেব।

মোঃ কাম বোম্বাইতে সমাচার আনি

গাছে যে ঐযুত লর্ড বিশপ মাহেব ১১
শ্রীল তাম্রিধ মোমবার মোকাম বোম্ব
হইতে নিঃসলবীণের রাজকীল মোকাম
কলম লগীরে পুমান করিয়াছেন মোখাল
হইতে কলিহাড়া আনিবেন।

শ্রীভেজদেব।

শ্রীভেজদেবের রাজেশ্বর নীতি অনেক
পুনিহ সঙ্কত কাব্যাদিতে পুনিহা আছে
কিন্তু তিনি কোন সময়ে ভ্রমণে অর
ভীন হইয়া এতদূর বহুতালস্থায়ি যশ
পভাক। ওড়ীয়ালা করিয়াছেন তাহার
কিছু নিবর্ণনা পাওয়াতে মকলের মনে
ওকণা আছে এবং এই বিষয়ে অনেকের
সন্দেহ আছে।

মে মদেহ দুই হইল যে মোঃ হসি
গোবাদের পুর্ব বিন্ধ কৌশ অস্তুর লক্ষ্য
নামীর বহিন তীরে মোহাজপুর গুয়ে
মানুজিত এক পুস্তর মৃত্তিকার মধ্যে পাওয়া
গিয়াছে তাহাতে ঐভোজ রাজের পিতৃ
বা মুক্ত রাজের নাম ও তাহার রাজত্ব ক
রনের সময় পিতৃপন আছে তাহার দ্বারা
জানা যায় যে ঐভোজদেব আট শত বৎ
সর হইল তৎপুত্রে দ্বারা লগীরে
রাজত্ব করিয়াছেন।

অণুরীণ।

গত বাকী যোগে মোঃ অণুরীণে
বভিলি নামে এক মরাশিন মাহেবের
মৃত পত্নীর পাওয়া গিয়াছিল তাহাতে
অনুমান হইল যে বাকী যোগে অনেক
যাত্রিক লোকের মেলা হইয়াছিল তাহা
তে দুই লোকেরা একত্র হইয়া ই মাহেব
কে মারিয়া থাকিবেন। কিন্তু তাহার
কোন নিষ্ঠুর সমাচার অদ্যাপি জানা
যায় নাই।

সমতার বিলম্ব।

অন্য ২২-সংর এই সময়ে ইঞ্জুওহই
তে সমাচার আনিতে এত বিলম্ব পায়
কখন হয় নাই। অন্য ২২-সংর এই
কালে মাতে তিন মাসে ইঞ্জুওর স
মতার পাওয়া যাইত কিন্তু এই বৎসর
জয় মাস পাঁচ দিন গত হইল তথানি
কোন সমাচার পাওয়া যায় নাই।

আকর্ষ্য বৃন্দর্শন।

যখন মরিত ওনহীন মরাশিনেরদে
অধীন জিল তখাল মোখালে এক জন
রাশিন মাহেব জিল মে ই ওনহীনের
এক ওক পুত্রের ওনহী ওড়ীয়া দেখিত।
এক যত তাহাজ তিন তারি দিনের পথ
আসিত তাহা দেখিয়া লোকেরদিগকে
কহিত। ২২-তার তারি তারি দিনে
পরে তাহার কথা যত তাহাজ আনিয়া
পঁজিত এই যত আকর্ষ্য বিদ্যা জিল।
সেই জন দেখিতে অনেক অনেক চোড়া
করিত কোনো পুকারে কেহই কোনো
কাল করিতে পারিত না এবং তাহা
জিজ্ঞাসা করিলে সে কাহাকেও সে বিদ্যা
শিক্ষা করাইত না। মোখালকার বহ
পাহ তাহাকে অনেক শরিতোষিক দিতে
দ্বিবার করিয়াছিলেন কিন্তু সে কোন পু
কারেই তাহার বিষয় কাহাকেও কহিল
না কিন্তু সে হাকি তদু দিন পরলোক প্রাপ্ত
হইয়াছে সে বিদ্যাও তাহার মতে লুপ্ত
হইয়াছে।

কত।

গত আকর্ষ্যের মাসে ইঞ্জুও দেশে
কয়ে পাঁচ জন দিন পর্যন্ত অভিশয় কত
হইয়াছিল তাহাতে অনেক তাহাজ নাম
হইয়াছে ও অনেক পুনিহতা হই
য়াছে।

সমীচারণ দর্পণ।

তাহার ভাষান।

গত ১১ আক্টোবর তারিখে ইংলণ্ড দেশের লিম্বোড নগরে ইংল্যান্ড নামে এক সম্মেলন হইতে এক তাহার ভাষান যাইবে।

ভাষান।

এক সময়ে সূর্য্য গৃহের কালে মোপারিশ শহরে অনেক লোক তাহা দেখিতে গেলেন ইহল এবং এক সাহেব আপন মারফিকের কবিন যে আমার গাভী পুস্তক কর আদি সূর্য্য গৃহের দেখিতে যাইব। পরে গাভী পুস্তক ইহল সাহেব গাভীতে আয়োজন করিয়া যাইতে লাগিল। অনেক লোক গাভী মারফিক জিজ্ঞাসা করিল যে আর কত দূর যাইব। সাহেব গুপ্ত করিল যে যত দিনটা ঘাইতে পড় তাহা যাও যেহেতু আমি আমার মৃত্যুর বস্তু দেখিতে ভাল পারি না।

স্বয়ংদায় পুস্তক।

ইংলণ্ড দেশে এক লোক অনেক পরিচয় কিম্বা সাক্ষর করিয়াছিল তাহার সম্মানে এক পুস্তক এহ কল্যাণ জিল। কিছু দিন পরে তাহার পুস্তক ইংল্যান্ডের পশ্চিম হওনের কারণ পিতার মৃত্যু পুস্তক করিত এবং মরদা সেই চেষ্টা করিত। এক দিবস ইংল্যান্ডের কল্যাণ কার্যক্রমে অন্য কল্যাণের বাটীতে এক রাশি জিল। সেই রাশি ইংল্যান্ডে আপন বাটীর কিছু শুদ্ধের আপন গোশালাতে গোদোহন করিতে গিয়াছিল সেই দানে সে মৃত ইহল। পর দিবস সাত্তরকালে তাহার কল্যাণ বাটী

আমিয়া দেখিল বাটীতে কেহ নাই।

পর পুস্তকসমীচারণে তাহা জিজ্ঞাসা করিয়া দুই চারি জন সময়ে করিয়া গাভী শালাতে গেল এবং সেখানে দেখিল যে পিতা মৃত ইহল পড়িয়া আছে। তাহা দেখিয়া তাহার ভ্রাতার পুত্র তাহার মনে জন্মিল এবং আপন বাটীতে গোশালাপুস্তক ঘাসের গুপ্তের লোকের পায়ে তুতার চিহ্ন পাইল। পরে তাহার ভ্রাতার পায়ে তুতা আমিয়া সেই চিহ্নের সহিত মিলাইয়া দেখিল যে সে নিশ্চয় মিলিল এবং সেই ভ্রাতার ঘরে যাইয়া অবশেষ করিয়া মেজের দেওয়ানের মধ্যে এক হাতুর পাইল তাহাতে রক্ত চিহ্ন দেখিল যখন আদালতে বিচার হইল তখন এই সকল প্রমাণদ্বারা ইংল্যান্ডের পুস্তক সেই হইয়া তাহার পুস্তক হইল। কিন্তু সে মৃত্যুকাল পর্যন্ত এক কল্যাণ জিল। কিন্তু তারি বৎসর পরে ইংল্যান্ডের কল্যাণ গোশাল হইয়া মৃত্যু হইল তখন সে কবিন যে আমার পিতা ও ভ্রাতার গুপ্ত আমার অতিশয় রাগি জিল তাহাতে তাহার দিগের দুই জনকে মৃত করিতে আমার চেষ্টা জিল আমার পিতা যে সময়ে গোদোহন করিতেছিল সেই সময় আমার ভ্রাতা বাটী জিল না আমি তাহার তুতা পায়ে যিয়া যাইয়া হাতুরর আঘাত পিতার মৃত্যুকে মারিয়া হাতুর ভ্রাতার ঘরে মেজের মধ্যে গাভী রাখিলাম। এই সকল বৃত্তান্ত শুনিয়া তাহাকে আদালতে কবির করিল কিন্তু বিচার হওনের পূর্বে সে পুস্তক রোগেই মরিল।

বাকার ভাগ।

| জিহন | মোন | জবরি | পরিচয় |
|---------------|-----|------|--------|
| কুপারি | ১ | ৩৫ | ৩৮ |
| ভেগো উল | ১ | ১০ | ১১ |
| গাং মরিচ | ১ | ৩০ | ১১ |
| নারিকেল তৈল | ১ | ১০ | ১১ |
| তুলা কাছোকা | ১ | ০ | ১ |
| আধা রত্নপু | ১ | ২০ | ২৮ |
| পাটনাই আদা | ১ | ২ | ২৮ |
| চাল পাটনাই | ১ | ২৮ | ২৮ |
| পাছড়ি উত্তম | ১ | ২৮ | ২৮ |
| পাছড়ি মধ্যম | ১ | ২ | ২৮ |
| বালার | ১ | ১০ | ২৮ |
| রাগী | ১ | ১০ | ২৮ |
| দুধা গোম | ১ | ১০ | ২৮ |
| পাটনাই নুট | ১ | ৮ | ২৮ |
| সহর ভাষি | ১ | ১০ | ২৮ |
| স্টার | ১ | ৮ | ২৮ |
| উত্তমগয়া হুত | ১ | ২০ | ২৮ |
| মধ্যম হুত | ১ | ১০ | ২৮ |
| তৈলা হুত | ১ | ৮ | ২৮ |
| মধ্যম তৈলা | ১ | ১০ | ২৮ |
| মোমবাড়ী | ১ | ৮ | ২৮ |
| মিহরি উত্তম | ১ | ১০ | ২৮ |
| মিহরি মধ্যম | ১ | ১০ | ২৮ |
| মোরা উত্তম | ১ | ৮ | ২৮ |
| মধ্যম | ১ | ৮ | ২৮ |
| মিহি কানার | ১ | ২০ | ২৮ |
| মধ্যম | ১ | ১০ | ২৮ |
| ধার সিনী | ১ | ৩০ | ২৮ |
| তেতুল | ১ | ১০ | ২৮ |
| তামাকু | ১ | ৩ | ২৮ |
| চন্দর | ১ | ৮ | ২৮ |

এই সমীচারণ দর্পণ পুরানপুরে ছাপাখানাতে পুস্তক হইবে পনিবারে ছাপা হয়। তাহার নগরের আশ্রয় হয় তিনি পুরানপুরের ছাপাখানা আপন নাম পাঠাইলে সত্যভাবে কারণ তাহার নিকট পাঠান যাবৎক তাহার মূল্য অনেক টাকা যদি থাকে করিতাছেন যদি তাহার নিকট কারণ না পড়ে তবে তিনি পুরানপুরের ছাপাখানাতে সমস্ত দিব্যমাত্র তাহার নিকট পাঠান যাইবে।

সমাচার দর্পণ

১৪৩ সংখ্যা।

শনিবার।

১২ মে মল ১৮৭১।

৩১ ইংলিশ মল ১৮৭১।

দর্পণে প্রথম পৌদ্ঘ্যমিহ কার্যবিবরণ।

বৃহত্তানিহ কানন সমাচারনা দর্পণে ॥

কোম্পানির কাগজ।

১৮৬১ ও ১৮৬২ সালের কোম্পানির শর্ত করা জর টাকার সুদের কাগজ কয় করি তে হইলে শর্তকরা মাতে ডিন টাকা প্রিমিয়াম। বিকয় করিতে হইলে শর্তকরা ডিন টাকা চারি আলা প্রিমিয়াম।

তাহার পঞ্চাশ মনের ই সুদের কাগজ কয় করিতে হইলে মাতে নয় টাকা প্রিমিয়াম বিকয় করিতে হইলে আট টাকা আট আলা প্রিমিয়াম।

সভাহের পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|----|-------------|----|-------|
| ১১ | মে | শনিবার | ৩১ | ইংলিশ |
| ১০ | ই | রবিবার | ১ | ইয়াত |
| ৯ | ই | সোমবার | ২ | ই |
| ৮ | ই | মঙ্গলবার | ৩ | ই |
| ৭ | ই | বুধবার | ৪ | ই |
| ৬ | ই | বৃহস্পতিবার | ৫ | ই |
| ৫ | ই | শুক্রবার | ৬ | ই |

চুরির ইস্তাহার।

সকলকে জানান ঘাইতাহে যে মোকাম কলিকাতার চৌরসীর পিক ডি.ই. রাহাতে এক মাছবের বাড়িতে ৩০ এপ্রিল তারিখের রাতিতে কয়েক জন চোর কানিয়া জুড়িয়া মোকামে ও জুড়িয়া ১০ মি. মাছবের ক'পুস্তত এক মুরন কৌ ও তাহার চারি ও শেত পুস্তর জুড়িয়া জিন্স এয়াট মাছবের নামে পারদী জুড়িয়া মাছবিত এক মোহর ও লালা পুস্ত

রে রটিত এক মোহর এই দুই মোহর সময়ে স্বর্ণ জিজির লইয়াছে। যদি কেহ তাহা আধেয়ন করিয়া দিতে পারে তবে সে এক শত টাকা বংশীল পাইবেক।

পত্রশালা।

পশ্চিম দেশের কয়েক পাঠশালাতে বাল কোরের শিক্ষার জন্যে অনুদানমান কিম্বা হিন্দু চারি জন লোক মকরর হইবেক। তাহার যদি বালকেরদিগকে ইংরেজী বীদাতে শিক্ষা দিতে পারে তবে তাহার দেয় কানিক ভাল হইবেক। তাহাচার বালক পুত্র হিন্দু। পুত্রের জন বিশ বালকের লাল শিক্ষািতে পারিবেক না। ইহার পরমাছ পুস্ততির দস্তাখিত যে কেহ জানিতে বাসনা করেন তিনি মোকাম কলিকাতার অরসেলের মাছবের লিফটে গৌলে বিশেষ জানিতে পারিবেক।

৩১ ইংলিশ মল ১৮৭১।

সমাচার দর্পণ

রাজকর্মের নিয়োগ।

৫ মে।

জুড়িত করলন মি. বুইন মাছব মোকাম লোকো ইন্সপেক্টরের ওকান হইয়াছেন।

সুদীমকোচ।

৩১ জুন শুক্রবার শ্রুতকালে নয় ঘণ্টার

নয়মে মোকাম কলিকাতার সুদীমকোচের অদালত মোকাম ঘাইবেক ইহা কলিকাতার সর্দার দস্তুরের অধিক জুড়িত জি ওয়ার্ড নাহের সর্দার সমাচার দিয়াছেন।

জনরল প্রেজুরি।

জনরল প্রেজুরির অধিক মাছবেরা আতা করিয়াছেন যে বেলনা দুই পুরতিল মাছবের অধিক হইলে প্রেজুরি ঘরে টাকা দাখিল হইবেক না এবং সেখানে টাকা নাইবেক না।

পরমিট।

মোকাম কলিকাতার গৌল পরমিটের এক কাগজের দুইজন বসিয়াছে তাহাতে তাহার পরমাছবেরা দুইজন করিয়া মোকাম সুদীমকোচের জিন্স জাইকটে। ইহাতে বুঝা যায় যে মোকাম ও জুড়িতের কাগজের বসিবেক।

মরন।

জুড়িত করলন মোকাম মাছবেরা জানী জিন্সে ডিন এই ভারতবর্ষের কোল মাছব কি আসে এক পুত্র কলের মোকাম আসিবে পুত্র পায়ে যায় এই সকল মাছব ও তাহার কারণ জুড়িত কোলালি বাহাদুরের উত্তম লিয়ুক জিন্সে পাত বুঝার তাহার মরন হইয়াছে।

সম্মাচার দর্পণ !

शील ।

এই বৎসর অলিম্পিক গেমসে পূর্ণাঙ্গ সফল
নৌদল বীজ রোপণ করিতে পারে নাই
কোন নদীর তীরে মজল স্থলে যে বীজ
বপন করিয়াছিল সে নীল নৃগম প্রস্তুত হ
ইয়াছে অন্যত্র বীজ বপনপর্যন্ত হইল না।
ইহাতে এই বৎসর নৌদল অত্যন্ত অ
ভিলম্ব জাল হয়।

ডাকাইতি ।

গাও শনিবারের রাত্রি দুই পুইয়ের সম
য়ে যোকাইয় ঝিমঝার বাজারে অলুয়ান
বিশ্ব দ্বিগ্ন অন ভাইউড নৌকা ঘোণে
আমিয়া ভাটের এগিয়া বাজারে পড়িল ও
আলক যোকাইন লুট করিল বিশেষতঃ
মাত জন, বগিকের যোকাইনহইতে খান
কক বন্ধ ও নগর টাকা ও শিকি আশুদী
ধুম্য পুজি হাজার টাকা লইল । হং
আর্য ময়রার যোকাইন চিকা মড়কী
সদেগ্ন পুজুত লইল ও কোন্য যোকা
নের কোদে কেহল দুই এক বাতী মায়িয়া
ছিল । পুং বাজারের পাঁচকোণ আট
জন একত্ব হইল কিন্তু ভাকাইতেরদের নি
কট ঘাইতে নাহিল নৃ। ভাকাইতের
লুটত তাহৎ বিন ও দুবাঈদ লইয়া পুন
রুইর নৌকারোহন করিয়া গেল । ইহার
শৌলের জিন পুংও এইকণ এক যোকাইন
পড়িয়া লুট করিয়াছিল তাহাৎ দারোগা
আমিয়া জিপুত অজ নাহেবের নিকট
সম্ভাটার না দিয়া হুণ্য রাখিয়াছিল
এবারের ভাকাইতিতে এইকণ চেষ্টা
করিয়াছিল সেই কারণ রানিবার স্থীর
নাহেব এই সম্ভাটার আশুদীয়ার কারণ
কলিকাডাতে সম্ভাটার দিয়াছেন ।

राशाजनि ।

মোক্ষায় বোড়াই গুণের অঙ্কে বা

পীরিয়া মোকামা সিন্ধুরে হাটে আলম্যান
 হাভার টেকার বন্ধু মদ্রিধ করিয়া লইয়া
 হর্শ হারো অন আশনং বাণীতে আসি
 উজিল । সমুদ্র সময়ে মাঠের মাঠে
 বর্শা নগ্নি অন তাঁকাইত আসিয়া তা
 হারদিকের মাঠি নীঠ করিয়া মে সকল
 বন্ধু লইয়া গিয়াছে তাহারদিকের দিবি
 বন্ধু লইয়া অনেক চেষ্টা হইতেছে কিন্তু
 আশাশিখিত ভদ্রসমুদ্র হইতে নাই ।

ଅଢ଼ିମାଠି ।

কএক দিবস হইল মোকাম মুর্শেদাবাদে আশুনাহ হইয়াছে। তাহাতে এক অল্প লোক আগমন করি জোত কন্যাকে রক্ষা করিবার নিমিত্ত ঘরে গুপ্ত বেষ করিয়া কন্যাকে ফেঁতে নইল কিন্তু বাহির হইতে না পারিয়া কন্যামধ্যে দরু হইয়া মরিয়া।

আহাজ ভাঙ্গনি।

গত ৪ মে শুক্রবার মোকাম শালিয়ার
জুড়ত মল্লুয়ারি সাহেবের কারখানা
হইতে তিন শত টোনের এক তাঁহাজ
জমিয়াছে। তাহা দেখিতে অনেক
সাহেব ও বিধি আনিয়াছিলেন। তাঁহাজ
ভানানের পরে ঐ সাহেব তাঁহাজদিগকে
উত্তমরূপে খাণা দিয়াছেন এবং নাট
গান অনেক হইয়াছে।

हाटसिंद ।

মোহাম্মদ কলিকাতায় বংশোদ্ভূত নমু
যে এক আহাতির পার্শ্ব গাঁও ৭ মে মো
মবার দুই পুত্র বেলার সময়ে এক
ভিন্নীর লোক গা দুইবার কারন আল
নামিয়া ৩ ভিন্নী শিরিয়া গা দুইতে
জিল এই সময়ে এক হারীর আমিয়া।

ডাচার এক পা গুঁম করিল। পরে সে
ঠাঁকর শব্দ করিতে লাগিল। ডাচারে
আলেক (লোক আসিয়া) ডাচার হাত
করিয়া টানটানি করিয়া ওঠাইল কিছু
যে পা গুঁম করিয়াছিল ডাচার ইচ্ছা
পর্যন্ত মমুয়া কাটিয়া লইয়াছে। সে
লোককে ডারে ডুলিল। পরে দুই পুহর
ভিত বন্ধার সময়ে ডাচার মৃত্যু হইল সে
বালি মূলমন্ডল ডাচন ডাচারে বহর
দেখা গেল।

पृष्ठ १

हिमालय पर्वत माल पर्वत हरेत ५५
 २५०० अना २ पर्वत पर्वत आले ताहारा
 माल २५ अक्षर हरेत दक्ष इय।

| পৰ্বত | ফোণ অভয় |
|----------------------------|----------|
| হিমালয় | ৪২২ |
| আম্বাৰী দেশ আৱাৰাট | ৪২০ |
| পুণ্ডৰীয়াগিৰি মৌলিগিৰী | ২০ |
| দক্ষিণামেৰিকা চিম্বৰ্বা.জ. | ৮০ |
| আতলাভিৰ মাগাৰি টেনেৰিফ | ৬৭৭ |
| আফ্ৰিকা নিকট আফোৱিম | ৬৩ |
| আফ্ৰিকা দেশ আফিম | ৫০ |
| নিং-হলদীল আদমের পৰ্বত | ৪৭৭ |
| ডেভিডেহি | ৪৭ |
| মুম্বা ও পৰ্বত মৌল | ৬৪৭ |
| মুম্বাহাৰি নিকট পুৰ্ণাৰা | ৬৭৭ |
| কুম্বাৰী অভৱাৰে পৰ্বত | ৩৩৭ |
| পুৰ্ণাশিৱাৰি ওপৰীয়ে পৰ্বত | ২৩৭ |

આનીયું નાંડ ।

মোকামি আশীর গড় হইতে ১৮ এপ্রিল
তারিখের নত্রে জানা গেল যে শেষ
দুই নায়ক এক ব্যক্তি আশীর গড়ের
নিচটস্থ দেশ লুট করিবার কারণে ত্রুণ
করিডেলে। যথী দশ বার দিন হইল

সমাদার দর্পণ।

মোঃ বুতাহানপুরহাইতে ইশ্রাতিয় মৈনোর এক জন বোডসওয়ার মোঃ আশীর গড় ঘাইতেছিল পথে তাহাকে বিদ্রোয়া ঐ শেষে দুই তিন বর্ষের খোঁচা মারিল একহিল যে আশীর গড়ের ইশ্রাতিয় সাহেবের দণ্ডকে আয়ার সেলাম দিত। সে এমত সাহসী ও অকুণ্ডিত। অতঃপর তাহাকে বিদ্রোয়ার কারণ ও তলিকট বণ্ডিয়া রক্ষা করিবার কারণ আশীর গড়ের এক জন পদাতিক মৈনো বুতাহানপুরের নিকটে আছে কিন্তু তাহার তাহার গণ্ডায় কিছুই করিতে পারেন না যেহেতু বিনিক্ষেপ। বোডসওয়ার ইহার কের পদাতিক মৈনোহারা কি করিতে পারে।

সেকুয়া।

মোঃ কাম কানপুরহাইতে ১০ এপ্রিল এক সাহেব পত্র লিখিয়াছেন যে সেখানে অতিশয় সেকুয়ার ভয় হইয়াছে যেহেতু তলিকট এমন এক রাস্তা নাই যাঁহাতে দুই তিন বালককে সেকুয়ায় না লইয়া যায় বিশেষত এই সকল বালকের মাতা অধিক অতিমুদু বালক এবং কতক তাঁর পিতা বন্দুর বয়স্ক ও আছে। তলিয়ারন অতিমুদু হইয়াছে যেহেতু পুষ্টির ঘেঁড়িত বাটীর মতী অনায়াসে পুষ্টির গুঞ্জন করিয়া পড়িয়া বালক লইয়া যায়। এই নিমিত্তে সেখানকার পল্লনে এই এক ঠা নিয়ম হইয়াছে যে যে লোক সেকুয়া মারিতে পারিলে সে লোক পুড়োক কে দুয়ার কাঁচের টারি টাকা রাখাশীল পাইবে। ইহাতে তিন চারটা সেকুয়া মারা গিয়াছে কিন্তু তখন কিছু লাভ হয় নাই। এই নিমিত্তে ঐ সাহেব এখান পত্র লিখিয়াছেন যে এখান হইতে যদি রাস্তাশীলকে ঠা কোনো গণ্ডায় করিয়া ঐ ভয় নিবারন করিতে পারেন।

বজ্রাঘাত।

গত ৮-মে ১৭ বৈশাখ মঙ্গলবার ঐরকালে মাঝে পাঁচ ঘণ্টার সময়ের মধ্যে হইয়া বৃষ্টি হইতে লাগিল তাহাতে মোঃ নবাবগঞ্জের কোঁদালির বাকমখানার বাটীর এক ঘরে বজ্রাঘাত হইয়া সেখানকার চারি জন লোক মৃত হইয়াছে। ঐ বজ্রাঘাত যদি পাঁচা বাকমের ঘরে হইত তবে অনুমান করি যে সে অকল বিলাপ পুণ্ড হইত কিন্তু রক্ষার হেতু এই যে কাঁচা বাকমের ঘরে বজ্রাঘাত হইয়াছিল।

এবং ঐ বজ্রাঘাতের পর অনেক দ্রব পণ্য বৃষ্টি সমকালীন ও বায়ু তখন বেশের দুই তিন সোশবর্ষান্ত মনঃপ্রবল ভব হইল। তাহার কারণ কেহ অনুমান করেন যে দিগ্গাহ হইয়াছে এবং কেহ বলেন যে ঐ বজ্রাঘাতের ওতানে বায়ুর ওতান্তিভব হইল। কেহ বলেন যে অনেক দিনের পর বৃষ্টি হওয়াতে পৃথিবীর ওতানপুণ্ড বায়ু ওতন্ত হইয়াছে।

এবং তখনই দিবস রাত্রি বর্ষা ঘড়ীর সময়েরও কিছুই মেঘাবৃত্ত হইয়া বিলুপিত হইতেই সেইজন ওক বায়ু এক ঘণ্টাবর্ষান্ত বহিল তাহাতে সকলের ব্যামোহ বোধ হইল ইহার নিম্নকারণ জানা গেল না।

দুই দিবসই এই অশ্রুদের লোকেরা বায়ুর ওতন্ততা অনুভব করিয়াছে কিন্তু অন্যত্র কিছুই হইয়াছে তাহা জানা যায় নাই।

এবং ঐ দিনে সন্ধ্যাকালে মোঃ কাম কলিকাতার চৌরসীর কামাক্সি গণিতে এক পাঁচা ঘরে বজ্রাঘাত হইয়াছে। কিন্তু সে বজ্রাঘাতেই না করিয়া বাহিরের তুলকাম-ভেদ করিয়া ঘরের কপাট ও চৌকাট ও গোলাস ঘন করিল। এক

মুই সেই ঘরে ছিল তাহার শরীরে বজ্র ওতান বোম হইয়াছিল কিন্তু বাহিরে আর কিছু ক্ষতি হয় নাই।

ভূমিকম্প।

গত জুলাই মাসে অম্বলী দেশে দিক লগারে অতিশয় ভূকম্প হইয়াছে কিনা ইহার আশঙ্কা এই যে পূর্বে মল ১৩৬০ সালে ঐ তাহাথে অতিশয় ভূকম্প লোকের বিদ্রোহ তখনক অশ্রুত হইয়াছিল তাহাতে ওদবধি লোকেরা ঐ দিনে ভূকম্প বারবার গিয়া ঘরে পুথিলা করিয়া তাহাতে ঐ বৎসরেও সেই দিন গিয়া ঘরে যখন লোকেরা ঐ ভূমিকম্প করিয়া পুথিলা করিতেছিল তখন ভূকম্প হইল।

বামন।

লক্ষ্মীপুর দেশে হইতে এক খর্ষ পুত্র ও এক খর্ষ স্ত্রী প্রব্রু বৈশ্যের এক নগরে আসিয়াছে সে পুত্র বিয়াল্লিশ বৎসরবয়স্ক ও দুই হাত দীর্ঘ ও তাহার ভগিনী বয়স বৎসরবয়স্ক ও দুই হাত হইতে কিছু নাল দীর্ঘ ও তাহারদের অঙ্গ সৌন্দর্য মনোহর তাহারাই তাহার দেশের ভাষা অতিমুদু করে।

দক্ষিণামেরিকা।

কলিকাতাহইতে এক বার্ষিকের হাজ দক্ষিণামেরিকার এক নগরে ছিল ঐ অজ্ঞান পাণ্ডিত্য সাহেব যুক্তা জিলেন তাহাতে তাহারের পাইবার কারণ ঐ নগরস্থ পাঁচ জনকে সাহেবকে মৃত করিল এই ঘটনা মতী এক জন ভয় দিবস পূর্বে এই নগরে ঐ সাহেবের নিকট চাকর ছা

সম্মতি দল।

জিল রাংগে শয়নের সময়ে এই চাকর সাং
হেবের পায়ের অর্থাৎ মূলিতেজিল সেই
সময়ে অন্য চাকর জন আশিয়া এককালে
সাহেবের ডাকর পড়িয়া মূল করিল। এই
সাহেবের শেখার সাহেব তলা কঠোরীতে
জিল তাহাকে মূল করিতে ওয়াত হইয়া
চিয়াং দেখিল যে হারের চাবি ইচ্ছা আছে।
তাহাতে চাবি চাহিল সাহেব চাবি দিল
না। অন্য লোকে আশিয়ার ভয়ে হার
ভাঙিল না। পরে মৃত সাং হার ঘরে
দুই ঘণ্টা থাকিয়া লুপ্ত করিয়া যে বন
পাইল তাহা লইয়া গেল। পরে অনেক
ঘণ্টাচার আট ঘণ্টার মধ্যে জিল জনকে
বিরল এবং যে দিবস পারবিল সাহে
বের কবর হইল সেই দিবস সে জিল
জনকেও বন্ধন দ্বারা মারিল ও তাহার
দিশের মন্তরভেদে করিয়া নীচ বীশে
লইকাইয়া লম্বাও মারা বানস করিল।
এই জিল জনের মধ্যে এক জন সাহেবের
লুপ্ত চাকর হইয়াছিল সে মন্তরের পুর্বে
কবুল করিয়াছিল যে সাহেবকে মূল করি
বার কারণ আমি চাকর হইয়াছিলাম।
পরে অন্য দুই জনকে বহিরাই ধৈর্য ইই
ভেঁকে মৃত বোধ হয় যে তাহার বীরা
মাইবেক।

অশিক্ষিত শিক্ষা।

পুষ্টিয়া দেশের ফেরুজ নামে বাদশা
হের মৃত হইতি জিল যে ঘটন ইতর
পলটনের মির্জাহার নিজ পলটনে নিযুক্ত
হইত তখন কেবল তাহাকে জিল কথা
জিজ্ঞাসা করিয়া তাহার উত্তর লইয়া তা

হাকে নিজ পলটনে নিযুক্ত করিলেন।
সে জিল জিজ্ঞাসা এই। পুষ্টিয়া ডোয়ার
বয়স কত। দ্বিতীয় তুমি কত দিন আ
মার প্রধান চাকর। তৃতীয় মাহিনাতে
এ চাকরিতে তুমি মুখ কিসা পরে এক জন
দুলাইর মির্জাহারিশ বাইশ বৎসর বয়স
অতি সুকুমার তাহাকে নিজ পলটনে বি
যুক্ত করিবার কল্প করিলেন। অধিগোটে
অম্মনি ভাষা চলে সে মির্জাহারি অম্মনি
ভাষা জানেন না। তাহাতে সেনাপতি এই
জিল জিজ্ঞাসার জিন ওত্তর কয়ে তাহাকে
অম্মনি ভাষাতে শিখাইল। পুষ্টিয়া একইশ
বৎসর। দ্বিতীয় এক বৎসর। তৃতীয় শুভ
সেই। এই জিন ওত্তর সে মির্জাহারি কয়ে
মনে রাখিল। পরে জিজ্ঞাসার সময়ে
বাদশাহ তাহাকে কতিপয়ে জিজ্ঞাসা
করিলেন। পুষ্টিয়া দ্বিতীয় কথ্য জিজ্ঞাসা
করিলেন অর্থাৎ তুমি কত দিন তাহার
সহকারী চাকর। তাহাতে সে ওত্তর
করিল যে বিশ বৎসর। ইহা বাদশাহ
মিথ্যা বোধ করিয়া পুনর্বার পুষ্টিয়া কথ্য
জিজ্ঞাসা করিলেন অর্থাৎ ডোয়ার বয়স
কত। তাহাতে সে পূর্ণ শিখিত মৃত ওত্তর
করিল যে এক বৎসর। ইহা শুনিয়া
বাদশাহ তাহাকে পাগল জ্ঞানে করিলেন
যে কে পাগল তুমি কি আমি। তাহা
তে সে ওত্তর করিল যে ওজুয়েই।

বাদশাহ অপর ঘাংহা জিজ্ঞাসা করি
লেন তাহা সে আপন ভাষাতে ওত্তর
করিল যে আমি অম্মনি ভাষা জানি না।
তাহাতে বাদশাহ মকল বৃত্তান্ত তাত
হইয়া তাহাকে নিজ পলটনে নিযুক্ত
করিলেন।

বাকর ভাও।

| জিহন | মোম | অবধি | প. ১৪ |
|---------------|-----|------|-------|
| মুশারি | ১ | ৩৫ | ৩৫ |
| ডেডো তেল | ১ | ১০ | ১০ |
| গাছ মরিচ | ১ | ৩ | ৩ |
| নারিকেল তৈল | ১ | ১৫ | ১৫ |
| তুলা কাছোকা | ১ | ০ | ০ |
| আদা বীজপু | ১ | ১৫ | ১৫ |
| পাটনাই খাঁদা | ১ | ২ | ২ |
| চামু পাটনাই | ১ | ১৫ | ১৫ |
| পাহারি উত্তম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| পাহারি মধ্যম | ১ | ২ | ২ |
| বাল্যম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| চাঁদা | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মুখা গোম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| পাটনাই লুট | ১ | ১৫ | ১৫ |
| জরুর তামি | ১ | ১৫ | ১৫ |
| চিটর | ১ | ১ | ১ |
| উকরাগোড়া হুট | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মধ্যম হুট | ১ | ১৫ | ১৫ |
| উকরা হুট | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মধ্যম উকরা | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মোমবাঁকী | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মিহরি উত্তম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মিহরি মধ্যম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মোরা উত্তম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মধ্যম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| চিনি কাশী | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মধ্যম | ১ | ১৫ | ১৫ |
| বার চিনি | ১ | ১৫ | ১৫ |
| তেঁতুল | ১ | ১৫ | ১৫ |
| ভাঙ্গা | ১ | ১৫ | ১৫ |
| মদন | ১ | ১৫ | ১৫ |

এই সম্মতির বর্ণনা পুরানপুরে ছাপাখানাতে পুস্তিকভাবে প্রস্তুতকারে ছাপা হইবে। যাহার লগনের আশ্রয়ক হইবে তিনি পুরানপুরের ছাপাখানাতে
আপন নাম পাঠাইলে পঞ্চায়ে কাল তাহার নিকটে পাঠান যাইবেক তাহার মূল্য মানে এক টাকা। যিনি তাহার কতিপয়ে ছাপা তাহার নিকটে
কালম না পছন্দ তবে তিনি পুরানপুরের ছাপাখানাতে সম্মতির বিবরণ্য তাহার নিকটে পাঠান হইবে।

সম্মান দর্পণ

169 210. 11.

ਅੰਤਿਮ ੧੩ :

ଏବଂ ସେ ଜନ : ୧ : ୧ ।

१ त्रि.क. नं. १२८।

ଯେଉଁ ଲୋକ ଶାନ୍ତିର ପ୍ରାପ୍ତି ପାଇଁ ଯତ୍ନ ନେଇଛନ୍ତି । ଦୁଇଦିନିଆଁ ଶାନ୍ତିର ପ୍ରାପ୍ତି ପାଇଁ ଯତ୍ନ ନେଇଛନ୍ତି ।

କେନ୍ଦ୍ରାବିନ୍ଦୁ କାମିଞ୍ଜ ।

১৯৩১ ও ১৯৩২ সালের কোম্পানির শত
করা হয় টাকার সুদের কাগজ প্রকাশ
যে দ্বারা শতকরা চারি টাকা বার আনা
হইবে। বিধায় শ্রুতিতে হইলে শতকরা
চার টাকা হইত অর্থাৎ শ্রুতিমত।

তাহারি নীতি অনুসরণে সুদেব কর্তৃক
কাজটিতে হইলে মাঝে না টোকা দি
য়া দিয়া কাজে হইলে আট টোকা
অট আট দিলাম।

| ক্র.সং. | নাম | পদ | বয়স |
|---------|------|----------|------|
| ১৯ | শ্রী | সহকারী | ৭ |
| ২০ | শ্রী | কলিকার | ৮ |
| ২১ | শ্রী | বোম্বার | ৯ |
| ২২ | শ্রী | মঙ্গলদার | ১০ |
| ২৩ | শ্রী | বুঝার | ১১ |
| ২৪ | শ্রী | কৃষ্ণদাস | ১২ |
| ২৫ | শ্রী | জগদীশ | ১৩ |

इन्द्राहाव !

৬ মে তারিখে মো' চুঁচুড়াতে বঙ্গ
মানবাধিকার ট্রাস্ট হাউসে অধ্যাপক
পট্টনায়ক সেন নরেন্দ্রনাথের নম্বর ও
টাকা নীচে লিখা ঘাইতেছে সে নরেন্দ্রনাথ
নামের টাকা ব্যক্তি এদ হইয়াছে।

| | | |
|------|----------|-----|
| ਨਮਰ | ਕਿ | ਟੋਲ |
| ੧੭੩ | ਹਿਮੂਹਾਨੀ | ੧੦੦ |
| ੭੭੧੭ | ੩ | ੧੦੦ |

| | | |
|-------|----------|-----|
| ১১০০ | ঈ | ১০০ |
| ১৮৮৯৩ | বাপ্পা | ১০০ |
| ৩৩৩৭ | সহ. রম্য | ১০০ |
| ৫ | | ৫০০ |

সংস্কার দর্পণ

ननु कथं ।

[illegible]

अद्वैतीयता ।

যে— কলিকাতার বহুভাষীরা এক জন
 চিকিৎসক ইহা বিঘটিত আশু
 ওষধি পুস্তক করিল ও তাহা বিক্রি
 দ্বারা বিধি পরে ও ঐষধি গণ পরস্পর
 অসংখ্য ক্রিষ্ণ আশি মনন করিয়া
 কলিকাতা পর শ্রীরাও আশি হওয়াতে
 শান করিল কিছু আর গুণিল না তাহা
 তে ওষধি গণ আশি তেই লুপ্ত হইল।
 তাহার আশি লোকের তাহার হইল
 মরান বিদ্যাপতি হইয়া তাহার কার্য
 দ্বান করিতে লাগিল মাঝে মাঝে
 হইল ও পূর্ন পাওয়া গেল যে

ওষধি বৃদ্ধত বহুদা নাল দিয়া শোধিত মা
করিয়া ওষধিতে দিয়া জিন দেই কক্ষের
এল ভোগি আশি নি করি।

যদি এই সুবাদি চিহ্নিতক এই নীচ
যদিও তবুও এই চিহ্নিতক
হওয়া কঠিন তাহা আলাদা

ਸੁਨਾਈ ਗਏ।"

মোঃ মনোজি তালুকডাংগী
 দ্বারা গৃহস্থ আছে গত সপ্তাহে
 সমীতে তাঁহারের তালুক
 তাহার নামের দ্বারা
 দে গৃহস্থ আদায় করা
 ইত্যাদি বিবরণ।

ਆਮਰੀ ਦਫ਼ !

জিন্দা ঘণ্টাধরের যৌ যমুনা নদী বি
কটবর্তি জঙ্গল নামে ক্ষুদ্র এছাড়া
নে ডাহাতে জামুয়ান গঙ্গার উপর
নৌক বসতি করে। মসজিদ খুলে গি
য়ে গত ১৫ মাসে এ গুয়ে অকস্মিক
ইলিশ মেঘাবৃত হইয়া অতিশয় বৃষ্টি
হইল তাহাতে এ গুয়ায় ঘর ও বস্তু
নিম্নলি করিয়াছে এবং এক জল
আনার বাটীতে ও এছাড়া
মানে ফেঁপিয়াছে ও ময়ূর ও গা
আলেক বিদ্রোহ করিয়াছে। ইহার
এই যে এ গুয়ামের অতিশয়
মোদনে কেবল অতিশয়
হইয়াছে।

সমাচার দপণ!

লুতন বন্ধু।

শহর কলিকাতাতে সন্ধ্যা এই বন্ধু
পুকাশ হইয়াছে যে দিবাভাগে শহরের
মুখ্য হালালখোররা শেতুখানা পরি
ষ্কার করিতে পারিবে না তাহার কারণ
এই যে দিবসে শহরের কি রাস্তা কি গলি
তে সর্বত্রই অলবরত লোক গমনাগমন
এক পলও বিরত হয় না তৎকালে হালাল
খোররা বিস্তার তার লইয়া রাস্তা দিয়া
যাইতে হইলে লোকেরদের সর্বত্র কষ্ট
ভাল হয়। এবং মলভার লইয়া নির্দয়
গলি অলি লিঙ্কন করে তাহাতে না
কোরদের মানাদির ব্যাঘাতও হয় অতএব
যদি পর্য্যন্ত লোকেরদের গমনাগমন রাস্তা
দ্বায়ে অধিক থাকে তাহা হালালখো
ররা স্বাভাবিক করিতে পারিবে না।

অতএব হালালখোররা রাস্তাতে আ
শান হইয়া করিতেছে।

কুড়ার।

ও বৈশাখ শনিবার মোঃ মনিয়াম
পুরের গাছীর ঘাটে পশ্চিম দেশীয়া এক
স্ত্রী অলি মুন করিতেছিল ইহাদের মধ্যে
তাহার কুড়ারের ধীরে সে আসন
রক্ষার কারণ অনেক চেষ্টা করিল তাহা
তে কিছু হইল না। কুড়ার তাহাকে
ধম্মে আহ্বান করিল।

পোষা হরিন।

ভরতপুরের নিকটে এক স্থান হইতে স
মাচার আসিয়াছে যে সেখানে এক না
হেব দুই ডিন হরিন পালাল করেন তা
হার মধ্যে একটা ছোট হরিনকে সাহেব
অধিক দ্রুত করেন ও তাহার খাদ্যাদি
দ্রব্য সাহেব আশ্রয় দেন। তাহাতে

এক দিন ই হরিনকে খাদ্যাদি দিয়া তাহার
গাত্র হস্ত দিত্তিভেদে এই সময়ে এক
টা বৃহৎ শূকর বড় হরিন হস্তে বড়
জিল সে হস্তে জিত্তি এইকাল সাহেব
বের ওপরে আক্রমণ করিলে সাহেব এক
কুঠুরীতে গেলেন তাহার পশ্চাতে ই হরিন
এমত বেগে গেল যে তাহার পশ্চ কুঠ
রীতে নাগিয়া দুই ডিন হাত পশ্চাতে
আসিয়া পড়িল। এই অবস্থানে সাহেব
আশ্রয় কুঠুরীতে ঘাইয়া বন্ধু লইয়া
গরিবরা ই হরিনকে বধ করিলেন।

সহযাত্রী বান্দী।

মোঃ বরেলির ওতর তেরদিল নামে
স্থান হইতে জীবুত কাস্তান গোয়াল সাহেব
১৯ এপ্রিল তারিখে পত্ন লিখিয়াছেন যে
নগর দেশের মোকাম ভাঙ্গিলের অধী
ক জীবুত জগৎ-সিংহের ভ্রাতার মৃত্যু হ
ইলে তাহার দুই স্ত্রী সহযাত্রী বান্দী
হইয়াছিল। ইহা শুনিয়া ও জগৎ-সিংহ
তাহারদিগকে বারণ করিল তাহারা বা
রন না মানিলে ই শবদাহের শেষ পর্য্যন্ত
ই দুই স্ত্রীকে এক কুঠুরীতে বদ্ধ করিয়া
রাখিল পরে শবদাহ হইলে তাহারদিগ
কে বাহির হইতে দিল।

রঙ্গীন।

মোঃ রঙ্গীন শহর হইতে ১০ এপ্রিল তা
রিখের সমাচার আসিয়াছে যে ওখাকার
জীবুত কাস্তান প্রেমো সাহেবের নিকটে
কলিকাতা হইতে আহাজহার বড় দুই
হরিন গিয়াছিল ই কাস্তান সাহেব তাহা
ন লইয়া বুচ্কা দেশের বাদশাহকে নজর
দিলেন। বাদশাহ তাহা পাইয়া বড় স
মুগ্ধ হইলেন ও যে জাহাজে হরিন গি
য়াছিল সে আহাজহার ঘাটগাড়ের পর

মিটে পঞ্চদশ প্রভৃতি খরচ মহত্ব করি
লেন।

এবং ই রঙ্গীন সমাচারে জানা গেল
যে ওখাকার বিশিষ্ট লোকের মধ্যে জন
রম হইয়াছে যে সেখানে কুঠুরেও ওলা
ওটা গোণ হইয়া মানুষ হইতে কুকুর অ
ধিক মারিতেছে। রঙ্গীন শহর বুচ্কা যে
শেখ অধীন সেখানকার লোকেরা তাহ
িনা কদাচ করে না এই প্রযুক্ত সেখানে
অ নর কুকুর তম্বা হইয়া লোকেরদের অ
ধিক ওপদ্রব করিত এখন ওলাওটা গো
ণের পুনর্দান সেখানকার লোকেরদের
সে ও দুর্বলপাতি হইয়াছে এখান প্রায়
সেখানে কুকুর দেখা যায় না।

এবং রঙ্গীনের আরো সমাচার জানি
য়াছে যে অন্য দেশে লোকালয়ে পুতিয়া
লিত যে হস্তী তাহার মস্তান হয় না কিন্তু
বুচ্কা দেশে পোষা হস্তীরা মস্তান আ
দেখিতে হইয়া থাকে তাহারদের রাস্তা
খালী অমরুরের অনেক স্থানী আছে
কিন্তু এমত হস্তিনী দেখা যায় না যে
খার মস্তি মস্তান লাই বিদ্যা গর্ভে ম
স্তান লাই এবং সেখানে হস্তির বান্দা
কানাবদি বান্দকপাখি মকল দশা দেখা
যায়। বুচ্কা দেশীয়া বান্দারের পোষা
হস্তীর মস্তান হয় না ইহা শুনিয়া আশ্চ
র্যবোধ করে। বুচ্কা দেশে হস্তী অ
নেক আছে কিন্তু তাহারদের আর কোন
পুণ্যজন লাই কেহল দেখিবার কারণ
হস্তী রাখে এবং মুগ্ধ কাল ওপহারে আ
ইসে।

মৃত্যু।

জীবুত লেগুনড এন যেমন সাহেব
পলটনে থাকিতেন তিনি মোকাম চন্দন
নগার অফ ও অতুর ও দুইটা অনেক
লোককে আহ্বার্য্য মানিক টোকা দি

সমোচার দর্পণ।

তেন ইহাতে অনেক লোকের প্রতিপালন হইত। মনুষ্যত্ব তিলি বস্ত্রিণ বৎসর যক্ষ হইয়া মোক্ষাৎ কলিকাতাতে পর লোকপুত্র হইয়াছেন।

ইশ্বরের রানী।

জয় মাস আঠার দিন হইল ইশ্বরের কোন আহাৎ এতদ্দেশে আইনে নাই তৎপুত্র কোন সম্রাটর পাওয়া গিয়াছিল না কিন্তু মনুষ্যত্ব ছাত্রদের হইতে প্রাপ্তিশেরদের এক আহাৎ মোক্ষ কলিকাতাতে আনিয়া পুত্রজিহ্নে তাহার হারা হরাপিশেরদের যে পুত্র আনিয়াছে তাহাতে আনিয়া গেল যে ইশ্বরের স্বামীত্ব রানীর যে মোক্ষদমা। সে মোক্ষদমা হইতেছিল তাহাতে জিম্মাতী রানীর অয় হইয়াছে। পরে ইশ্বরের আহাৎ মোক্ষদমা মান্দারাজে পুত্রজিহ্নে তাহার পত্রাধিত বুইবারে মোক্ষাৎ কলিকাতাতে আনিয়াছে তাহাতে সে সম্রাটদের সভ্যতা ও তাহার সকল বিবরণ পাওয়া গেল।

শ্রীমতী রানীর মোক্ষদমা সুলানের বের সভাতে হইতেছিল। ইশ্বরে বুই বেরের সভাতে ও লোকেরদের সভাতে এমত রাত্তি আছে যে কোন লুতন বিয় গুপ্তি হইলে তাহার বিচার বিয় অধ্যাপিত লোকেরদের সম্মতি অথবা অনমতি তিল বার লইতে হয়। মহা রানীর এই মোক্ষদমাকে দুই বারেই রানীর পুত্রকুলে অনেক লোকের সম্মতি কিন্তু তৃতীয় বার রানীর পুত্রকুলবাধী এক শত আঠি লোক ও রানীর অনুকুলে পালনহই লোক। ইহাতে ইশ্বরের রানীর গুণের গুণিতা করিলেন যে রানীর অনুকুল লোকহইতে অধিক কেবল নয় জন

পুত্রকুল হইল তাহার ও তাহার ও তাহার অতএব এই নয় জন বার দিলে রানীর পক্ষ অনুকুল পুত্রকুল সম্মান মাফক হইল। ততএব রানীর পক্ষ বাহিরের তাহা লোকের সম্মতি আনিয়া এবং লু নীরদের পুত্রতা জ্ঞাপ করিয়া আয়রা এ মোক্ষদমা ত্যাগ করিলাম। ইহাতে জিম্মাতী রানী নির্দোষ হইলেন।

মহারানীর অল্প শব্দ শ্রুত হইলে সে খানকার সকল লোকেরদের অত্যন্ত আনন্দ হইল এবং লগন নগরের পুত্র ঘরে ও পুত্র আহাৎ ও পুত্র লোক তে সেই রাত্রিতে ও তাহার পর রাত্রিতে এত বাজী তুলিল যে তাহাতে রাত্রিতে ও পুত্র দিবা আন হইল।

ইহার পর মহারানী লোকেরদের পুত্র এই পুত্র বিলিলেন যে রানীর ও তাহার আয়ার পুত্র এই মিশ্রাপনবৎ দিয়াছিল তাহাতে আমি নিঃসঙ্গ হইলাম কিন্তু এখন আমি তাহারদের স্থানে চোকা নই তে পারি না। ততএব তোমরা আমার পুত্র জলাশুনার চোকা দিবা। এই পুত্র পর করিতে ও তাহার চাকররা আনিয়া লোক সভাকে স্থাপন সভাতে তাকিল। সেখানে পুত্রজিহ্নে রানীর আশানুনার ও তাহার সভা দুই মাসের কারন বিদায় হইল। ইহার পর মহারানী পুত্রিণ গুণিতা ঘরে ঘাইতে ও তাহা হইলে নয় কোন বাবাৎ না অন্য এই কারন নগরের অনেক পুত্রারা বোতসওয়ার হইয়া রানীর নকী পুত্রান করিল। এ মহারানী গুণিতাঘরে পুত্রজিহ্নে আনি নির্দোষতা হেতু ইশ্বরের স্বব করিলেন।

অতি সুখী।

জয় দেশের বাহাশাহের ভ্রাতৃপুত্র খল হইয়াছিল এবং তৎকালে তাহার দ্বার

গত ছিল তাহাতে এক পুত্র আনিয়া তৎপুত্রকুলে তৎপুত্রকুল লোক কানিত হইয়াছে ইহা পুত্র জাপান পুত্রকুল মনুষ্যত্ব সেই বালককে মনুষ্যকরণ ত অনেক লোক যাচাচাত করে তাহার দেহ হইয়া এক শত ঘোল বৎসরহরক এক পুত্রিণ আনিয়া এই বালককে বোকা মনুষ্য হইল এ বালকের মাংসক দিবা যে আমি এই বালককে বহু দর্শন করি জয় পুত্রকুল দেখিলাম।

মহান শত্রু।

আমোকা গুণিতা হইতে এক আহাৎ আমেরিটা দেশের এক নগরে পুত্রজিহ্নে তাহাতে লোকেরা দেখিল যে এক বহু মনুষ্যের পুত্র এই আহাৎের জী অগুণিতা তৎকালে করিয়া তের তুলি বাহিরে নির্গত হইয়া ভয় হইয়া এই আহাৎ জিল। এবং আহাৎ লোকেরা অনুমান কিল যে দুই তিন দিন এই মনুষ্য কাহাজের তলে লাগিয়াছিল যেহেতু আইসন কালে দুই তিন দিন আহাৎের বোকা তুল হইয়াছিল। পরে যখন মনুষ্যের পুত্র ভ্রাতৃ হইয়া মনুষ্য আহাৎ জাতিল তখন আহাৎের বোকা মনুষ্য জলভ হইল। পরে সেযাত্রকার কো আশঙ্ক্য হুশনার এই পুত্রসম্মত আহাৎের চারি পাচামান তুলি কাহাজ লইয়া আশঙ্ক্যালয়ে রাখিল।

গুণপুত্র শোহী।

লগন নগরে এক অমতী নী এক পুত্রের নামে আমার দত্ত ভাষিয়াছে এই পুত্র নামিণ করিল। তাহাতে বিচারহইয়া এই পুত্রকে আনিয়া ততবার করিয়া এই পুত্রক হইল এ দেখাইল যে এই

সম্রাচার দর্পণ।

আমার বন্ধুগণ অতিশয় ক্রোধে দৃষ্টান্ত
করিয়া মিল তাহাতে আমি আশ্চর্যকর
হইয়াছি। মুখে মুখে ক্রোধে জ্বলিয়া
তাঁহাতে এই দার বন্ধ ভাঙ্গিয়া থাকিলেক
ইহা শুনিয়া বিচক্ষণতারা ওলটফোঁসি
হইয়াছেন ইহা কইরাই ওত্থকে বিবায়
করিয়াছেন।

বাজী।

নতুন দায়ের এক মাসির এক অতি
সুন্দর, সুন্দর ছিল সে মাসী এক বিবস
এক জনের সুখিত বাজি রাখিল যে এই
সকলকেই হইতে আমি ও আমার কপূর
এক কালে কাল দিয়া আসে পড়িয়া তমুক
দ্বারা এক কালে ওঠিব। পরে ই মাসি
যখন অসল হইল দিয়া পড়িল তখন
কপূর আসিল যে মাসী মুখের মিলিল।
পর কপূর তাহার পক্ষেরে দিয়া দিয়া
পড়িয়া মাসির পক্ষ করিয়া তখন ওঠা
ইল কিন্তু নিম্নে দ্বারা ঘাইতে বিল না।
এক মাসী সে বাজীতে হারিল।

বাজীকর।

এক ভা বাজীকর স্বপ্নদর্শনাৎ দেশে
বাহাদুরের দিকট ঘাইয়া বাজী দেখাই
বর সুখী করিল তাহাতে বাহাদুর ক
হিলেন যে বাজীকরেরা সকল মিথ্যা পু
বস্থা করিয়া সকল লোকের হতিনয়
অতএব আমি দেখিতে চাই না। বাজী
কর কহিল যে আমি পুত্রব্যা। জানি না
যথার্থ বাজী করি। এই কথা কহি
তে এক লম্ব দিয়া বাহাদুরকে ডিঙ্গা
ইল। ইহাতে বাহাদুর প্রত্যক্ষ দেখিয়া তা

হাকে তুচ্ছ করিয়া অন্য নানা সুন্দর
বাজী দেখিলেন ও পরিতোষিক দিলেন।

অপার্থ্য বন্ধক।

ইংগত দেশে এক সুন্দর নতুন বন্ধক
পুষ্পত হইয়াছে সে বন্ধকে এক কালে ৮
আট গলি পুড়িয়া এক বার কল টিপিলে
কোয় আট গলি নির্গত হয়। এ বন্ধ
করে নান্য এক রজ্জি-ঘরা আর লগেও
এইটা রজ্জি-ঘরা আছে।

ভাঙ্গারি অগ্নি।

মন চাও নান ঘন ঘন ঘোড়ার
গের সহিত ইংগিতেরে ঘুর ছিল
তখন তাহারি অতিশয় বাস্ত জল তাহা
তে মুখের দেশের নীচে নদীর বনাৎ জ
লোতে বনাৎ লুপ্ত করিয়া তৈল বিতে
হয় এই কাল এক জনের কল হইল
ত করিয়া জল ঘুর লুপ্ত করে ই ম
নের জাহা মাসে মসল বনাৎ এক অজ
করেতে রান্ধিয়া মসল দ্বারা ও আনালা
নি এমত বন্ধ করিল যে তাহার মাথা
বায়ু পুত্রণ বহিতে না পারে। পরে এক
মান অস্ত্রের আগিল্যমানে তাহার দ্বারা
আলিয়া হস্ত দিয়া দেখিল যে নরম ও আট
বোধ হইল পরে এক ব্যক্তি বাতি লইয়া
দেখিতে গেল তখন অগ্নি পুজ্বলিত হই
য়া ত বনাৎ দগ্ধ হইল। ইহাতে
বোধ হইল যে ই তৈলের সহিত বনাৎ
অতিশয় গুণিয়েতে অগ্নি হইয়া জল দ্বারা
ঘনাইলে বায়ু সহকারে আলিয়া ওঠল
কিন্তু সে কুঠরীতে অন্য রকম যে বন্ধাদি
জিল তাহা দগ্ধ হয় নাই।

বাজার তার।

| কিনি | মোন | তববি | লক্ষ |
|---------------|-----|------|------|
| সুগার | ১ | ৫৫ | ৫০০ |
| ভেড়ের তৈল | ১ | ১০ | ১০ |
| গাং মরিচ | ১ | ৩ | ৩০ |
| নারিঙ্গের তৈল | ১ | ১২। | ১০ |
| তুলা মাছোড়া | ১ | ০ | ০ |
| আমার রসপূর | ১ | ২ | ১০ |
| পাটেরি আদা | ১ | ৪৫ | ৫০ |
| চাল পাটেরি | ১ | ২।৫ | ২। |
| পাটেরি উত্তম | ১ | ২৫ | ৩০ |
| পাটেরি মধ্যম | ১ | ২ | ২০ |
| বনাম | ১ | ১০ | ১০ |
| হাতি | ১ | ৪। | ১০ |
| মুগেরি | ১ | ১।৫ | ১০ |
| পাটেরি | ১ | ১। | ১০ |
| পাটেরি | ১ | ১ | ১০ |
| মাস | ১ | ১ | ১০ |
| এক মাস | ১ | ২০। | ১০ |
| মধ্যম দ্বারা | ১ | ১০ | ১০ |
| ইন্দা দ্বারা | ১ | ১০ | ১০ |
| মধ্যম দ্বারা | ১ | ১০। | ১০ |
| মোমবাতি | ১ | ৫৭ | ১০ |
| কিরি উত্তম | ১ | ১০ | ১০ |
| কিরি মধ্যম | ১ | ১০ | ১০ |
| কোণা উত্তম | ১ | ৫ | ১০ |
| মধ্যম | ১ | ৪। | ১০ |
| চিনি কাণার | ১ | ২। | ১০ |
| মধ্যম | ১ | ৭।০ | ১০ |
| খার চিনি | ১ | ৩। | ১০ |
| তেল | ১ | ১।৫ | ১০ |
| তামাক | ১ | ২। | ১০ |
| দমন | ১ | ৪০ | ১০ |

এই সম্রাচার দর্পণ শ্রীমদ্রামপুর জাণাধামারে পুতিন্দ্রাঃ শনিবারে জাণা হয়। তাহার লগনের আবশ্যক হয় তিনি শ্রীমদ্রামপুরের জাণা-
আপন নাম পাঠাইলে লগ্নের কাল তাহার দিকটে পাঠান যাইবেক তাহার দ্বারা আসে পুতিন্দ্রাঃ তিনি দ্বারা কর্তাছেন যদি তাহার
কাল না পাইবে তবে তিনি শ্রীমদ্রামপুরের জাণাধামারে সম্রাচার দিব্যমাত্র তাহার দিকটে পাঠান যাইবে।

সম্মান দর্পণ

১৩৪৩ সাল

শনিবার

২৩ মে সন ১৩৭১

১৫ ইংলিস ১৯১৮

দর্পণে দুই সৌন্দর্যের কার্যবিবরণ।

বৃত্তান্তমিহ জানক সমাচারে দর্পণে।

কোম্পানির কাণ্ড।

১৮৭১ ও ১৮৭২ সালের কোম্পানির পত
করা হয় টাকার মূলের কাণ্ড হয় কবি
এই কবির পতকায় পিত টাকার প্রিয়ময়।
বিশ্ববাসিত হইয়া পতকায় টাকার টাকার
বার আলো প্রিয়ময়।
তাহার পতকায় সনের ৪ মূলের কাণ্ড
কর করিতে হইলে নয় টাকার বার আলো
প্রিয়ময় বিক্রয় করিতে হইলে নয় টাকার
টাকার আলো প্রিয়ময়।

নবাবের পত্নী।

| | | | | |
|----|----|-------------|----|------|
| ১১ | মে | শনিবার | ১৪ | ইংলি |
| ১২ | শু | রবিবার | ১৫ | ইংলি |
| ১৩ | শু | সোমবার | ১৬ | ইংলি |
| ১৪ | শু | মঙ্গলবার | ১৭ | ইংলি |
| ১৫ | শু | বুধবার | ১৮ | ইংলি |
| ১৬ | শু | বৃহস্পতিবার | ১৯ | ইংলি |
| ১৭ | শু | শুক্রবার | ২০ | ইংলি |

ইকুয়াডর।

জিব্যালিটাইন ব্রহ্ম সনকে আনাইতে
জেন যে তাহার এই তন চাকর এই ক-
একগান ব্রহ্ম নোট লইয়া পলাইয়াছে।
অতএব যে কেহ তাহার কথিরা দিতে
পারিলে সে পঞ্চাশ বহাগিশ পাইবেক।
সেইর বিস্তারিত নীচে লিখা যাই
ছে।

| নং | নোট | টাকা |
|-------|--------------|------|
| ৪৮৪ | কম্বোয়াল | ৫০০ |
| ৪৮৫ | ৫ | ৫০০ |
| ৪৮৬ | ৫ | ৫০০ |
| ৪৮৭ | ৫ | ৫০০ |
| ১১৫২ | হিন্দুস্থানী | ৫০০ |
| ১৮৩১২ | ৫ | ৫০০ |
| ১১৫৪ | ৫ | ৫০০ |

১১০০

সম্মান দর্পণ

রাজকর্ম লিখো।

১১ মে সন ১৮৭১ সাল।

ঐযুক্ত আর ওয়িম সাহেব নতুনল
দেশের বোর্ড কমিশনের সেক্রেটারির প
কার হইয়াছেন।

১৮ মে সন ১৮৭১।

ঐযুক্ত মেসার্স এম. এফ. সাহেব জিলা
কটকের সিমেন্ট মালের অফিসের সেক্রেটার
এবং বালেশ্বরের শঙ্করপুর কালেক্টর হই
য়াছেন।

শ্রীযুক্ত মহলিগুণি পায়র সাহেব কলি
কাতার বোর্ডারবুর অফিসের সেক্রেটার
হইয়াছেন।

আজ্ঞা।

শ্রীযুক্ত মেসার্স বারিলাল নামে এক আদালত
দ্রুত হইয়া কলিকাতায় আনিয়াছেন।

টপ।

পূর্বে জাপান গিয়াছে যে কলিকাতায়
কাশীনাথ বর্শাক পরলোকপ্রাপ্ত হইয়া
ছেন। তাহার সন্তান বিজয়ের পুত্রের
কাতার বত বাজারের শ্রীযুক্ত রায়চন্দ্র
বর্শাক টপ হইয়াছেন।

বত।

মোঃ বসন্ততে কোনক কারন
পূর্বে বানিজ্যের ব্যাঘাত হইয়াছিল
এখন সে সকল ব্যাঘাত দূর হইয়া ব
নিজা চলিতেছে।

সহায়ক।

মোঃ বীশাইনগাঁও গায়ের রাশি
নাথ বোর্ডের ভূমিচার্য্য নাম রাখা
নাথুর বিদ্যাবান ও কবি ও সন্তা
সমুদিত ১৪ মে ১৫ ইংলি বহাগিশ
মোকাম কোনকাতার বাটে গির
পর লোকগণ হইয়াছেন। এবং
পত্নী সহায়ক করিয়াছেন।

এবং ১ তারিখ ১১ সময়
মোকাম বালিয়া আদালতের
মুন্সিফারিয়ায় ও পরলোক
হইয়াছে তাহার স্ত্রী এসেইকন
করিয়াছেন।

সন্দেশ

লাহোর।

পশ্চিম দেশের আশবার হারা সমাচার
আমি গেল যে মোং লাহোর শহরে পুণ্ডি
বুড় রক্ত-নি-হ বাহাদুর আপন বসতি
বাড়ীর বাহিরে যে মকল পুরাতন ইয়া
রুত ছিল তাহা ভাঙিতে আসা করিয়া
জিলে তাহাতে তাহা ভাঙিতে হইল
ইহা তাহার মতে মুলমানের হের অভি
শক্ত এক কবর ছিল তাহা কোন পুরাতন
ভাঙা গেল না। তাহাতে এক বৈরাগী
ওকেশ করিল যে এই কবরের ওপর এক
নরবলি পুণ্ডি করিলে কবর অন্যদানে
ভাঙা যাইবেক। পরে পুণ্ডি রক্ত-
নি-হ বাহাদুর এই বৈরাগীর কথাকমে এক
নরবলি দিলে সে কবর অন্যদানে ভাঙা
গেল।

কিন্তু এই কথাতে আমারদের পায় বি
খাল হয় না যদি কেহ বিশ্বাস করেন
তবে কখন।

দিল্লী।

এ আশবার হারা দিল্লীর এই সমাচার
আমি দাখিল। এক কুপু মহাজনের প
তিপ বৎসরব্যক এক ওয় ও বৎসর
ব্যক এক কল্যা ছিল সে পুত্র অভিয
বুদ্ধবদিত হইয়া অধ্যায় অধিক করি
তে লাগিল তৎপুরু সে আশ-নিজার
সিক্তি অধ্যাত্ম করিল। তাহার পিতা তা
হাকে কিছু দিল না। সেই রাগিতে সেই
দিন রক্তিমোগে সে আপন সখী এক
ঘরা লোককে নব করিয়া আপন পিতা
কে বিন্দিয়া কাটিয়া মত্ত করিল এক
আশক বাড়ীর মধ্যে পুণ্ডি রাখিল ও
বীণ ও কলি ও অন্য অঙ্গল সেই বা
লের ওপর রাখিল। পর দিন পুণ্ডি
কালে মকলকে জানাইল যে আমার
নিজের সিক্তি আমি পুণ্ডি করি।

হারা করি তাহাতে আমার পিতা আমা
তে বিরক্ত হইয়া পলায়ন করিয়া মোং
নামনে গিয়াছেন। কিন্তু দিন পরে
এক দিবস তাহার মৃত্যু হইবার বাণীতে
আইল। তাহাতে সে বীণ পুণ্ডির
মধ্যে বীণ অস্ত্র করিয়া এই ভাব
পুণ্ডি জিজ্ঞাসা করিল। তাহাতে
সে ওর করিল যে বীণ লোকের
নহে বরহাতে আসিতেছে। এই ওর
করার সময়ে তাহার মুখের অনেক বৈল
কলা দেখা গেল তাহাতে তাহার মৃত্যু
মনে অতিশয় স্কন্ধ জন্মে সে পুণ্ডি
সে সমাচার দিল। পরে পুণ্ডির লোক
আমিয়া সে স্থান মুদ্রিয়া দেখিল যে এই
বাড়ির পিতা মত্ত হইয়া রহিয়াছে।
পর তৎক্ষণা তাহাকে জেলখানাতে
কেন করিল। ওরবী হইলে মকল
লোকের দর্শনা তাহার আশ্রয় মনে
হইবেক।

ডাকাইতি।

মোং রিসকতে যে ডাকাইতি হ
ইয়াছিল পূর্বে জানা গিয়াছে তাহার
ডাকার কারন মোং বাহাদুর খা
নার হারোগী ৭ যে রক্তিমোগে মোং
কামে আসিয়া সেই লোক বনিকেরের
যে মুদ্রা দিয়াছে তাহার কারন
তাহার দিগকে নষ্ট করাইয়া দিয়াছিল
লইল এই চৌকীয়ারকে আনিয়া ডাক
ক করিতে এক জন চৌকীয়ার চাঙ্গি জন
ডাকাইতের নাম দিয়াছিল। পরে
তাহার দিগকে আনিয়া তাহার দিগ
কে ও বনিকেরের এক দিন খানায়
রাখিয়া পর দিন খানায় রাখিল।
যাছে। সে চাঙ্গি জন ডাকাইতের ব্রহ্মা
কিছু হইল না ডাকাইতিও সাধু হইল
না তাহাতে সে চাঙ্গি জন খানায়

পাইল। ডাকাইতি হওয়ার কালে চৌ
কীয়ার পলাইয়াছিল এই আশাধি চৌ
কীয়ারের দ্বিত। বেত হইল ও জয় মান
মোং হইল।

লাহোর।

মোং লাহোর হইতে ৪ মে তারিখের
পত্র আমিয়াছে তাহাতে আমি গেল যে
মোং তিন বৎসর আট মাসের এক
কল্যা গর্ত হইয়াছে এবং তাহার কী
লক্ষ সমুদয় সর্ব্ব হইয়াছে কিছু ইহা
পুণ্ডি পুণ্ডি হয় না। যে লোক পত্র দি
য়াছে সে লোক মাতবর এবং দিগিয়া
ছে যে এই গর্তের বিষয় লাহোরের বা
বীণ মুলের ওপর করিতেছে ও এক
বাড়ী মত্ত করিয়া তাহাকে দিয়াছে
এক দুই চাঙ্গি জন লোক তাহার
সেবার কারন লিখে করিয়াছে ও তাহার
মত্তের কারন দ্বিত চাঙ্গি পুণ্ডি মনে দি
তেছে।

এই সমাচার ইংল্যান্ড সমাচার পত্র
যেহে জানা করিয়াছে আমার মেয়ত
জানাইলাম এ বিষয়ের আর কোন সমা
চার পাইলে পক্ষা জানা যাইবেক।

হয়দরাবাদ।

মোং হয়দরাবাদ হইতে সমাচার আমি
যাছে তাহাতে আমি গেল যে নিজা
মাণীর বেশে অভিয মুদ্রাজি হইয়া
ছিল তৎপুরু কীমুত কান্তন মদর্দ
নাহেব সে মোং মোং হইয়া সে বেশ
হইতে মদর্দ দিগকে দুর করিয়া বেশ
নির্ভর করিয়াছেন।

হারাণ।

গত সপ্তাহ মোং লাহোর

সম্মানসূচক দর্শন।

দিন হইল। বীরবাহু কংকণ জালিয়াই
গন্ধিতে জাল ফেলিয়াছিল তাহাতে
এক হাজারের ইজাল বন্ধ হইয়া পুর ন
লাইবার চেষ্টা করিতে জালিয়াই সজ্জান
লাইয়া তাহার গলায় ও লেজ উৎস
নাৎ দণ্ডা বাঁধিয়া তাহাকে ধরিল। এই
পুকারে তিনটা হাজারের মারা পড়িয়াছে।

পর্বতীয় অগ্নি।

অগ্নিহীন হইল একটা অনন্তর হইয়াছিল
যে মোং রাজমহালে পাহাড়ে যেতি
কর্ণার নিকটে এক পুকার অগ্নি উঠিয়াছে
কিন্তু তাগিলপুরের চিত্রিতে আনা গেল
যে শ্রীযুত ডাক্তার সাহেব দেশ ভ্রম
নার্থে সেখানে গিয়াছিলেন কিন্তু তাহার
অনুমাণে হইয়াছে যে সেখানে অগ্নি
কখনও উঠে নাই কিন্তু সে পাহাড়ের
আরক্ত দ্বান দেখিলে বোধ হয় যে অগ্নি
উঠিয়াছিল সে সুমুখ্য।

মাদুরাজ।

মাদুরাজের ১৮ এপ্রিল তারিখের চি
থিতে জানা গেল যে ডাক্তার সৈন্য
বাহিনী প্রভৃত মর ভ্রমণ হিন্দু সাহেব
যে মাসেতে ইংলণ্ডে ঘাইবেন। অত
এব যে পর্যন্ত ইংলণ্ডেই নুতন সৈন্য
বাহিনী গা আইসেন সে পর্যন্ত প্রভৃত
অনন্তর বাউন্স সাহেব সৈন্যবাহিনী থাকি
বেন।

রাজসাহী।

রাজসাহী হইতে সম্মানসূচক জালিয়া
যে সেখানকার কাছারির নিকট গুয়ে
অগ্নি লাগিয়া তাবৎ গুয়ে দগ্ধ হইয়া
ছে এবং মদর আমলের কাছারি ও এর
অন্যত্র কাছারি দগ্ধ হইয়াছে। তাহা

তে জিনিসের ব্যাপ্তি ও অনেক দগ্ধ হ
ইয়া অনেক দগ্ধ হইয়াছে।

হাওয়ায় বন্ধ ছিল।

১০ এপ্রিল তারিখে ইংলণ্ডের শ্রীযুত
বাহুর্শাহের অগ্নিহীন ছিল ও প্রভৃত
যের অগ্নির মোং বরফাতে শ্রীযুত নর
স সাহেবের বাড়ীতে উত্তম জোজ ও
নৃত্যাদি অনেক আয়োজ হইয়াছিল।

আর্থিক উক্ত।

আর্থিক দর্শনে এক আর্থিক অগ্নি
পাওয়া গিয়াছে তাহার নাম বনাসম
সেই অগ্নি আমেরিকা হইতে ইংলণ্ডে আ
নান গিয়াছে তাহাকে দেখিবার কারণ
ইংলণ্ডের অনেক লোক মরহা ঘাড়াঘাট
করে। তাহার বহুসম এক বনাসর দুই
মান কিন্তু সে ওজন ঘাট যেন।

প্রথমতী রাণী।

ইংলণ্ডের প্রথমতী রাণীর মোকদ্দমায়
আরু প্রভৃত অধিকার প্রভৃত পুজা
শোকেয়া আনন্দিত হইয়াছে। তাহার
আপনা মনের কাছারি এক দিবস রো
শনাই করিতে মকর একই হইয়া আয়ো
জন করিল কিন্তু প্রভৃতের আতা অনেক
ফা করিয়া রোশনাইতে অগ্নি দিতে বি
লম্ব হইল। তাহাতে কতক পুজা লোক
তানন্দে অগ্নি হইয়া সে অনেক লা
করিয়া রোশনাইতে অগ্নি দিল। তাহা
দেখিবারান্ত তাবৎ শহরের লোক এক
কাল তাবৎ রোশনাইতে অগ্নি দিয়া
শহর অতিশয় দীপ্ত করিল এবং যে
ঘরে রোশনাই না হইয়াছিল পুজারা
সেই ঘরের প্রভৃত ইট ভেঙা মারি
তে লাগিল তাহাতে তাহারও অতিশয়

বাস্ত হইয়া উৎসাহ রোশনাই
এবং যে লোক বিপদ ছিল তা
পুজারদের ভয়ে উৎসাহ মনস্ত
করিল ও আপনা ঘরে রোশনাই
করিল। পরে তাহার পুজার
পাইল ও অপর দিন পাইল ই
পুজার প্রভৃতি করিয়া তিন দিন
নালা পুজার রোশনাই করিল
কোন পুজার ঘরেতে প্রভৃতি
নাম লিখিল এবং কোন পুজার
তাঁহার চিহ্ন লিখিল করিল ও কোন
লিখিয়া ছিল যে আমেরিকার শ্রীযুত
রাণীর প্রতি যে মকল শোকেয়া ঘির্না
দেখি দিয়াছিল সে মকল শোকেয়া
এমত হইল। এই রোশনাই রোশ
বাহির গুমাতিহইতে যে লোকের
জীতে আসিয়াছিল সে মকল গা
আহুদে চিহ্ন দিল ও বোকার মকল
দুই চিহ্ন লাল বস্তুর ছেল দিল। এই
প যত আহুদ করিল সে মকল লিখিত
হইল এই কাগজে অন্য সম্মানসূচক
বান থাকে না।

চৈতন্য মরল গান শুরুর মন
অতিশয় দর্শন।

কোন দ্বান চৈতন্যমরল গান হইতে
জিল সেই দ্বান নিম্নস্থিত হইয়া অনেক
লোক শুরন করিতে গিয়াছিল বিশেষ
স্বী লোক অধিক। ইত্যমের গা
আপন ও পুজা অনেক দর্শিতে না
এবং অগ্নি ও হটাৎ নৃত্য অনেক
মাইল। তাহাতে কোন দ্বান বা
স্বী অতিশয় দর্শন। ও ওনবতী ই
দেখিয়া মুগ্ধ হইয়া আপন পুত্রের
গায়কের পো বিবার নিমিত্ত
টাকা দিলেন। সে বিশ দর্শন

সম্মান দপণা

লক বাবু গায়ককে পেন্সা দিলে গায়ক
আপন নাগরকমন্ডক যে পুণ্ড্রমালা পুষ্ট
হইয়াছিল তাহা বাবু গলে দেলায়
মান করিলেন এবং কানেক কি কহিয়া
দিলেন। পরে ঐ শিশু পুণ্ড্রমালি বাবু ঐ
মালা গলে দিয়া তাহার অন্তর লিকটে
ঘাইবামাত্র গনবতী ঐ মালা সন্তানের
গলহইতে আপন গলে দোলায়মান ক
রত কন ঐ বর্ষা মালাসহ পূজা করিতে
লাগিল। পরে কোন সুসমিলা বিধবা
স্ত্রী তিনি ও মহাদেবালা লোকের স্ত্রী তিনি
বিবেচনা করিলেন যে আমি সন্তান এই মা
লায় পাত্রী আলা কেহ লহে ইহাতে ঐ গন
বতীকে কহিলেন যে আমাকে মালা দেই।
গনবতী ওস্তর করিলেন যে কারন কি। সু
সমিলা কহিলেন লাগিন যে বিবেচনা কর
যদি বলের সম্মান্য করিন তবে বিবাহটা
হইয়া আমার ব্যামির লক্ষ্য হাত জিল
রাহ বহি কে না আনে যদি মোক্ষার্থ
বিবেচনা করিন তবে আমার বর্ষ দেথ
এক এই মতর কু পুঙ্খ সকলে দেখতে
রে আর ঐ গায়ককেও জিজ্ঞাসা কর যদি
ভাবিন যে তুই সইবা অনেক আলকায়
গীয়ে দিয়াছিল আমার গলে যে মুক্তার
মালা ও হস্তে যে হীরার আঙ্গুরী আছে
তোর সকল আলকায়ের মূলা হীরার মতের
তুয়া হইবেক না যদি বয়সের গরিমা
করিন তবে দেথ তোর বয়স পঁয়ত্রিশ বৎ
সরের অধিক লহে আমার বয়স চল্লিশ
বৎসর হইয়াছে যদি সন্তানের অভিমানে
করিন তোর তার পুণ্ড্র বিনা লহে আমার
পাঁচ পুণ্ড্র ও পেশ ও মোহিত হইয়াছে।
পরে গনবতী কহিলেন যে গায়ক ঠাকুর

এ মালা তামাকে দিয়াছেন আমার পু
ত্রের কানেক কহিয়াছেন এবং আট টাকা।
পেন্সা দিয়াছিল চকু মাগী তাহা কি দে
খিন নাই। পরে সুসমিলা কহিলেন তু
আট টাকা পেন্সা বই দিম নাই আমি
বিলতি হুতি চাকাই একলাই চলির
তোত মোনার হার হাকু দিয়াছিল আর
আমার মনে অনেক কালের আশা শুনা।
এই পুকার কথোপকথন দ্বারা হত গোল
হইলে গোলভর হইল শেষে দুই জনে
মারামারি করিয়া ঐ মালা জিতিয়া যে
দিলেন। সে ওস্তরের মোনার তরৈ
হায়কত লক্ষ্য হাতে ধত হইয়া আর ভর
পারি তরৈ ও রক্তপাত হইল যত লোক
বাইরে ছিল ঐ রক্তনীতিরের মায়া দেখি
তা তরে নলিয়াল করিল। শেষে দুই জনে
পুজিআ করিলেন যে তাঁর দেহা ঘাইবেক
গায়ককে কে কত টাকা দিতে পারি তাঁর
গায়ক ঠাকুরকে আপন বাটতে লইয়া
ঘাটতে পাঠে।

ইহাতে লোক লহে ওচিৎ হইয় বলা স
কলের মুখে চাই দিয়া কে বাপু পুত্রাই
তে পারি — দেথ সম্মানের বর্ষন কর্তা।
মহাশয় চৈতন্যময়ী গায়কের মল আর
শ্রুতির মল বিবেচনা করিলেন এবং পু
কার হইলে অনেক মহাশয় বিবেচনা
করিতে পারিল। ততএব — শুঁ নয়া
হরিদ্র বিজ গোল শিখ ছায়া করি। মোলায়
মতিব লুত পাঠে মৃদুসিদ্ধ তরি।
কোনই বিবেচন ব্যক্তি এই কথা সম্মা
তার বর্ষনে বিল্যাম করিতে পুণ্ড্রমণ্ডে পা
ঠাইয়াছেন ততএব তাহা করা গেল।

| বাকার তালিকা | | | |
|--------------|-----|------|--------|
| কিনিস | মোন | অবরি | পার্বত |
| কুণ্ডারি | ১ | ৫৬ | ৫৮৭ |
| ডেবেগা ইতল | ১ | ১২ | ১৬ |
| গাহ মরিচ | ১ | ৩ | ৪৮ |
| মারিকেন ইতল | ১ | ১১ | ১৩৮ |
| জুলা পাছোড়া | ১ | ০ | ০ |
| আলা রঙ্গপুর | ১ | ২ | ১৬ |
| পাশিআই আলা | ১ | ১৬ | ১৬৭ |
| চল পাটমাই | ১ | ১০ | ১৮ |
| পাছাই উত্তর | ১ | ১৭ | ৩৮ |
| পাছাই মধ্যম | ১ | ২ | ১৭ |
| বাগাম | ১ | ১৮ | ১৮ |
| রাগী | ১ | ৪৮ | ১৮ |
| লুয়া গেম | ১ | ১৮ | ১৮ |
| পাশিআই হুই | ১ | ১৭ | ১৮ |
| পাশিআই | ১ | ১৭ | ১৮ |
| মিচি | ১ | ১ | ১৮ |
| ভিতমারার পুত | ১ | ১০ | ১৮ |
| মরোম পুত | ১ | ১৬ | ১৮ |
| ভৈয়া পুত | ১ | ১৮ | ১৮ |
| মরোম ভৈয়া | ১ | ১৮ | ১৮ |
| মোমবাজী | ১ | ৫৭ | ৫৮ |
| মিছরি উত্তর | ১ | ১৬ | ০ |
| মিছরি মধ্যম | ১ | ১৬ | ১৮ |
| মোরা উত্তর | ১ | ৪৬ | ৫৮ |
| মরোম | ১ | ৪৮ | ৫৮ |
| চিরা কাশীর | ১ | ৮৮ | ৮ |
| মরোম | ১ | ৫৮ | ৫৮ |
| খার চিরা | ১ | ৩৮ | ৮ |
| তেতুল | ১ | ৮৮ | ৮ |
| ভাঙ্গি | ১ | ৫৮ | ৮ |
| চৈব | ১ | ৪৬ | ১৮ |

এই সম্মান বর্ষন শ্রীমদ্রামপুর জাণাধারিতে পুত্রস্বর্গ হৈ শ্রীমদ্রামপুর জাণা হই।
বাকার লগনের আশুপক হই তিনি শ্রীমদ্রামপুর জাণা হই।
আপন নাম পাঠাইলে লগনে কারন তাঁহার লিকটে পাঠান হইবেক তাহার দ্বারা কোন এক টাকা।
যিনি বাকার করিয়াছেন হই তাহার লিকটে
কারন তা শিহকে তবে তিনি শ্রীমদ্রামপুর জাণাধারিতে সম্মান দিবামাত্র তাহার লিকটে পাঠান হইবে।

নং-কৃত ভাষা জানাতে উদ্ভাষায়
 শিক্ষা অপেক্ষা কর সে ব্যক্তি
 বহু কাল বাধা ও বহু পরিশ্রমসাধ্য
 ইংগ্ৰাজী পানস শাস্ত্র দিল্লী বা

সমাচার দর্পণ !

যে সকল দেশে তাহারিগের ন্যাকুত পায়ে
বোধ হওয়া হইবে ঐশ্বর্য্য নামান্য কথোপকথনে
এ শিখনে বাক্যের ভয়ভা বর্ণনায় এবং অপর
ভাষা যে পুকার নির্গত হয় তাহা অস্বাভাবিক।
এ অন্য রূপে কথন ও ক্রমে বোধ হইলে
যদি কোন জ্ঞানের নির্মিত নিরতর ব্যাকুল
কৃত্যাকরণ ও অল্পসুখী ব্যক্তি এই ন্যাকুত
ভাষা-জ্ঞানে অভিলাষী হয় তাহার ব্যাখ্যাত
অনেক আদৌ অন্তর্ভাষ্যসম্বন্ধে সূক্ষ্ম উপায়
নাই দ্বিতীয় অধিক পরিপূর্ণ ও উপদেশকাতার
ইচ্ছায় কার্যনাশন তাহার্য্য কাত হয়।

এই সঙ্গল বিবেচনা করিয়া কোন বিজ্ঞ ভদ্র
লোক স্বপ্নোৎসাহে পূর্বোক্ত রীতিক্রমে সূত্র
বোধ ব্যাখ্যানে ও গণের গৌরবোপায় সাধু
তাহার গণ্যে অর্থ পূর্ণাঙ্গ করিয়াছিলেন তেঁ
হারা তা হারা এই পুস্তক ছাপা করিয়া পুস্তক
করণে অসিদ্ধ কিন্তু পরোপকারার্থ এই পুস্তক
জান্যে দিরাছেন তাহা আমি বহু পরিপূর্ণ
জ্ঞানক বুঝানো বিষয়াদিগণ রামতকণাদিগণ
পুস্তকের টীকানুসারে মূল ও তাহার স্বরূপ
বাহ্য্য্য করিয়া পুস্তক করিয়াছি ইহাতে ওর
পক্ষে ব্যতিক্রম অন্যান্যে ন্যাকুত পদ প
দ্বারা বোধ হইতে পারিবেক ন্যাকুত জ্ঞানে
ইচ্ছুক ব্যক্তির মহোপকার হইবে।

পুস্তকের পরিমাপ ছোট আকার পুস্তকের ৩০০
পাত ১৩ পৃষ্ঠা হইবেক ইচ্ছারী কাল্যে উত্তম
বাক্যে অক্ষর ছাপা হইবেক পুস্তিকপুস্তকের
মুদ্রা অপার ব্যয়ানুসারে পুণ্য বহু ব্যয়
এ পাত টীকা দ্বিতীয় ২৫০ পদ ১ এক টীকা
স্বতন্ত্র ৬ ছত্র টীকা। ছাপার ব্যয়ের ন্যাকুত
হইলে ছাপা করিতে উচ্চ হইতে পারি।
অতএব এতদেশীয় যদি ওনি বিলায়ী মহা
পরেদিগের পুতি বিবেচনা যদি এই পুস্তক
মুদ্রণোপায়ক বুঝেন আর ইহাতে উপকার
কোন হয় তবে আপন নাম নিকট পাঠাইবেন
কিন্তু আপনাদিগের স্বাক্ষরার্থে পত্র পাঠান

যাইবেক পুস্তক পাইলে মূল্য দিবেন ইতি।

জ্ঞানানন্দ শর্ম্মা।

কলিকাতা শিবপুর।

এই পুস্তক পুস্তক হইলে অনেকের উপকার হই
বেক যেহেতুক তিনি এই পুস্তক পুস্তক করিয়াছেন
তিনি অভিজ্ঞানবান্।

সমাচার দর্পণ।

রাজকর্ম্মে নিয়োগ।

ঐশ্বর্য্য কোলাসি বাহাদুরের তরফ
এই ভারতবর্ষের ডাফ্ দেশের নদী ও
নাশা ও খাল ও রাষ্ট্রপুস্তকের উদ্বারক
করণে নিযুক্ত ছিলেন যে করনল মাকি
জি সাহেব ও হার পরলোক পুণ্ডিত হই
য়াছে এই কারণ তাহার কর্ম্মে ঐশ্বর্য্য কা
স্তান যে এ হৃদয় সাহেব নিযুক্ত হই
য়াছেন।

ডাকাইতি।

যোঁ দময়মার পর যোঁ মণ্ডিগণজি
প্রিয় বাসুদেব রাগ নামে এক রতনপুত
জিল তাহার পরলোক হইয়াছে তাহার
স্ত্রী ও দুই শিশু পুত্র আছে। সম্প্রতি ৪০
জৈষ্ঠ রাশ্মিযোগে তাহার বাটীতে এই
কণ্ড ডাকাইতি হইয়াছিল। ডাকাইতেরা
পুণ্য বাটীর মধ্যে পুবেশ করণের পূর্বে
এ স্ত্রী তাহার সম্মান পাইয়া আপন কো
ঠার জায়ে ওপরহইতে ইট মাড়িতে লা
গিল। ইহাতে তিন টারি অন ডাকাইতি
আবাতি হইল তাহাতে তাহার্য্য সম্মুখ
দ্বার দিয়া পুবেশ করিতে না পারিয়া খড়
কোঁদার ডাকিয়া বাটীর মধ্যে পুবেশ করি

য়া পুণ্য ঐ মাহিমকা স্ত্রীকে মাহিবার
ওযোগ্য করিতে লাগিল কিন্তু তাহাকে
পুবেশমারিতে পারিল না কেবল দুই তিন
আঘাত করিয়া বহুত জিনিস পত্র টাকা
পুস্তক লইয়া পলাইল। ঐ স্ত্রী ডাকাই
তেদের বহুত লোককে টানিয়াছিল ও
পুণ্ডিত পর দিন রাজার হাটের খানাত
খবর দিয়া তাহারিগকে শাস্তা করিয়া
দিয়াছে।

ঐ স্ত্রী লোক একাকী আর বারেক দুই
বার আপন বাটীহইতে এইরূপে ডাকাই
তেদিগকে ডাকাইয়াছে কোনবার কিছু
নইতে পারে নাই কিন্তু এই বার কিঞ্চিৎ
নইয়াছে।

ঐশ্বর্য্য মর জন মালকম সাহেব।

যোঁ বোমবেত অনরব হইয়াছে যে
ঐশ্বর্য্য মর জন মালকম সাহেব দুই তিন
সাহেব লোকের সহিত ডাকি পদ্য ইঞ্জ
যে যাইতে দিরা করিয়াছেন।

খাল দেশ।

খাল দেশহইতে সমাচার আনিয়াছে
যে সেখানে ডাকিণ্য এক বিরাট হই
য়াছে ঐশ্বর্য্য কান্তান তুগিন সাহেব সে
খানে আছে তিন আনিয়াছিলেন যে
তিন লোকেরা আনিয়া ওদেশীয় ডাকাই
তেরা রাজদ্রোহী হইয়াছে সে কারণ
তিনি সৈন্য সঙ্ঘ করিতে ওয়াত হইয়া
লোক পাঠাইল সৈন্য আনিয়া ওপাতি
হইল। পর আনা গেল যে তাহার্য্য পূর্বে
কোলাসির চাকর ছিল কিন্তু বর্মান্য্য থাকা
যে স্ত্রীকোঁ কোলাসি তাহারিগকে চাক
রিহইতে বহুতরপ করিয়াছেন। ঐ মকল
লোক মিলিয়া রাগিপুস্তক ঐ সাহেবের ওহ
বীলে কোলাসির যে মকল টাকা জিল
তাহা নইতে ওয়াত হইয়াছিল। পর

সম্রাটের দর্শন।

সাহেব তাহারদিকে তাকাইয়া নৈনঃ
নকল স্বঃ স্থানে বিদায় করিলেন।

কর্ণাট দেশের নবাবঃ

ইংলণ্ডের প্রজাপুত্র তুর্কি তর্জ বাদ
শাহ কর্ণাট দেশের প্রাপ্ত নবাব সাহে
কে পত্র লিখিয়াছিলেন সে বিবরণ পূর্
রাশান গিয়াছে সেই পত্রের পুত্রপুত্র
নবাব সাহেব তৎপাতির প্রাপ্ত বৎ সাহে
বর সিকটে পাঠাইয়াছেন তৎপুত্র
সই কাল ১১ ডোণ হইয়াছিল।

জাহাজ আমদানী।

ইংলণ্ডহইতে দুই তিন মাস জাহাজ
আমদানী ছিল না কিন্তু গত দুই মাস
হের মধ্যে পাঁচ ডোণ জাহাজ ইংলণ্ডহইতে
মাংস কলিকাতা পৌঁছিয়াছে।

সেপ্টেম্বর।

গণ বৎসর হইল বোম্বেহইতে সেপ্টেম্বর
কাল নির্ধারিত হইয়া এক জাহাজ ইংলণ্ডে
গিয়াছিল গত বৎসরে সে জাহাজ ওঠা
ইয়া দেখা গেল যে তাহার কোমরখানে
কাঞ্চর দ্রুতি কিছু হয় নাই। ইংলণ্ড দেশে
এক প্রকার শত্রু কাঞ্চর আছে তাহার নাম
এক তাহা হইতে ওস্তম কাঞ্চর আর নাই
কিন্তু সে কাঞ্চর ও অন্তর দিনে পোকা লাগি
য়া নষ্ট হয়।

ভ্রমিকল্প।

মোঃ মুহাম্মদনিসহইতে সম্রাটের আশি
গায়ে যে ৭ মে নয় ঘণ্টা রাত্রি সময়ে সে
খানে জন্মিল হইয়াছে।

বহরমপুর।

১৩ মে মাহার সম্রাটের আশিয়াছে যে

মাংস বহরমপুরের চারি পাঁচ দিন পর্যন্ত
কৃত ও মাংস ও রাজহকমর ভিমুর নাম
শিল্পী কৃষ্ণি আভিষ্ম হইয়াছে।

এবং বহরমপুরের আভিপার এক বলা
শুকর এক নৌকে আঘাত করিয়াছিল
তাহাতে গুম্বাহ লোকেরা তাড়াতাড়ি ক
রিলে ঐ শুকর গঙ্গা পার হইয়া বহরমপু
রের গাভের মধ্যে পুবেশ করিল। দুই
তিন ঘর বেড়াইয়া গোঁরা পল্টনের মধ্যে
এক গোঁরা পহরা দিতেছিল তাহার ওপর
আক্রমণ করিলে গোঁরা মিছারী মরণ
করিলে শুকর আশ্রয় বেগে মরণীনের
ওপর পড়িল তাহাতে তাহার বেগে ম
রণীন বন্ধ হইল। পরে মৌর ভুলিয়া পল্ট
নের সাহেবেরা আসিয়া দুই তিন ঘর
মারিয়া শুকরকে মারিল।

শুণ্ডত জলর তামস সাহেব বহরম
পুরের শালীন ঘাইয়া গোঁরা পল্টনের ও
মিছারী পল্টনের কাছাকাছি দেখিয়া ক
ল্লের ওয়ার করিয়াছেন।

মহাভারত।

মানদ্রাজহইতে সম্রাটের পাঁচরা গোঁ
বে সেখানকার প্রাপ্ত বৎ সাহেবের বি
বি পাঁড়িত হইয়া ১১ মে ওড়িশা বেলুর
শহরে গিয়াছেন এবং প্রাপ্ত মর তামস
হিন্দুল সাহেবকে মানদ্রাজে আশ্রয় ক
রে রাখিয়া প্রাপ্ত বৎ সাহেব বিবির ম
হিত গিয়াছেন।

আক্ষর্য্য চাকু।

ইংলণ্ড দেশে সেজিল নামে এক নগরে
আবিল অন্ত ৬-৭ মিল হইল সেইখানকার
এক প্রবীণ সাহেব আশ্রয় কারখানাহই

তে ইংলণ্ডের জিঃমর্ডী রাশার কারন
চাকু পাঠাইয়াছেন তাহার আক্ষর্য্য ও
শ্রম যেহেতু এক চাকুর মধ্যে দুই হাজার
খোঁল ছুরি এবং তাহা রাখিবার স্থান
গোলামের এক খান আছে সে খান
ওপর খোঁহিত অসংখ্য অন্ত।

আক্ষর্য্য শাহ।

প্রাপ্ত ইংলণ্ডের বারশাহ ইংলণ্ডহই
তে এই দেশে ও গ্রীন দেশে গমনকার
নের কারণ ওস্তরকেদু দিয়া পাঁচ করিব
ওদোণি অনেক দিন অবধি করিতে
কিন্তু আভিপতিপুত্র তাহা অদ্বাদি
নাই মধ্যে দুই জাহাজ জিরিয়া আনি
য়াছে সে জাহাজের লোকেরা শীত
কালে সেইখানে ছিল তাহাতে তা
রা আশ্রয়বের স্থান এক রাখিবার জন্য
জাহাজের মধ্যে এক স্থানে দিবা রাত্রি
লব্ধ অবি রাখিত সেই অধির যে আশ্রয়
মহিত হইত তাহাতে দুই তিনটা শা
কের গাভ হইয়াছিল কিন্তু তাহার বৎ
ও পত্র ও শাধি মকল কিছু কাল বেত
ছিল পরে যখন শীত কাল গত হই
তখন ঘরের জানালা খোলা হইল তাহা
তে বাতাস লাগিয়া সেই হুস্তের পাঁড়
ও পাঁড় ক্রমে সবুজ বর্ণ হইল এবং শীত
কাল এমত শীত ছিল যে জাহাজে
লোকেরা দিবা রাত্রি আশ্রয়বের মকল
শারীর লেপেতে বেষ্টিত রাখিত কেবল
দুই চকুমাত্র অনাবৃত থাকিত এবং শীত
শরীরের রক্ত স্থানে তমাইত হইত
ও সে স্থানে হস্তবরা মৃদল করিলে শর
রের মধ্যে মিলাইত যদি সেইবদ না
করিত তবে ঐ মকল স্থান পড়িয়া মরণী
কৈ কৃত হইত।

সমাচার দর্পণ।

বাজী।

ইপ্সতে এক জন পাঁচ দিবসে ১৫০ হেড শত কোণ পথ পরদুখে চলিবার কার্যে বাজী রাখিয়াছিল সে ব্যক্তি অন্যায়সে ৩ জন ৩ পথ চলিয়া বাজীতে জয়ী হই য়াছে।

অন্য এক জন ৪ তারি দিবসে ১৭৪ এক শত চৌহতরি কোণ পথ পরদুখে চলি বার কার্যে বাজী রাখিয়াছিল তাহা পু থ্য দিবসে ১১ বাস ঘণ্টাতে ৩৩ ক্রত্ৰিণ কোণ চলিল হিত্যয় দিলে ২০ বিপ ঘণ্টা তে ৩২ ক্রত্ৰিণ কোণ জয়ী দিবসে ২০ বিপ ঘণ্টাতে ৩৪ ক্রত্ৰিণ কোণ চতুর্দি লে ১৪ একইশ ঘণ্টাতে ১৭। মাতে সা টাইশ কোণ চলিল কিন্তু সেই দিবসে তাহার পায়ের নীচে ঘেড়া হইল।

গুরুদ্বন্দ্বি।

ইপ্সতে মেশের এক নগরে এক পাঠশা লা আছে সেখানে কথিয়া দেশের বাদ সাহেব স্বী আপনার এক পোষা পুত্রকে দিয়াভাসের কার্যে পাঠাইয়াছিলেন পরে ঐ পোষা পুত্র সেখানে দিয়াভাস করিয়া আপন দেশে পুনর্ন কালে তিন জন পণ্ডিতে গুরুদ্বন্দ্বি দিয়াছেন তা হার যাবী এক জনকে ৮০ টাকার এক হী রার তদ্বারী দিয়াছেন এবং অন্য এক জন কে ৩ মূল্যের এক অঙ্গুরী এবং আর এক জনকে এক নমাবীলী দিয়াছেন তাহার মূল্য ৪০ টাকা ও নগর ১০ টাকা দি য়াছেন।

আহাজ দাহ।

লণ্ডন নগর হইতে এক আইজে আসে ক সাহেব লোক স্বী পুত্র সময়ে আদি কার অন্তর্যানে আনিতেছিলেন গত ১৩ ডাঙ্কটোর তারিখ দুই পুহর বেলায় সময়ে দৈবাৎ এক সাহেব কোন্স হ দুয়া বেগম করিবার কার্যে জুলন্ত বাজী লইয়া আইজের নীচে গেলেন সেই বাজীর কুলিই সে স্থানে গুড়িয়া পড়িল সাহেব তাহা আনিতে পারিলেন না। পরে সাহেব গুরের আইজে ঐ তথি ফরো পু বসিত হইল তখন আইজের মকল লো ক আসিল। সে আইজে তিনমাল জেট লোকা ও একখান বড় লোকা ছিল তাহাত লোকেরা অভিযান্ত হইয়া বড় লোকা নামাইতে পারিল না এবং জেটে তিন লোকা নামাইয়া ঘাইরা গুড়িতে পারিল তাহার গুড়িল কেই স্বী পুত্র আইজে রাখিয়া লোকাতে গুড়িয়া আপ ন পুণ্ডরো করিল কাহারো বা স্বামী আইজে থাকিল আপনি লোকাতে গুড়ি য়া আপন পুণ্ড রক্ষা করিল এবং জেটে লোকা ভুরিবার আশঙ্কাতে আপনা স্বী পুত্র গুড়াইতে পারিল না। পরে শের বিবরন আসিবার জন্য ঐ তিন লোকা আইজের নিকটে রাখিল। দৈবাৎ পোতুগীশের এক আহাজ সেখানে ও পহিত হইল। তাহার তাহারদিগের ঘোর বিপদ দেখিয়া তাবৎ লোককে আপনারদের আইজে গুড়াইয়া মকলের পুণ্ড দান করিল কিন্তু কালানন্তর সে আহাজ মরে হইয়া আসে প্রমাণিত।

বাজার ভাণ্ড।

| জিনিষ | মোন | অবধি | মোট |
|-----------------|-----|------|-----|
| মুগারি | ১ | ৫৬ | ৫৬ |
| তেরেগা ইটল | ১ | ১২ | ১২ |
| পাছ মরিচ | ১ | ১৭ | ১৭ |
| নারিকেল তেল | ১ | ১২ | ১২ |
| তুলা কাছাকা | ১ | ০ | ০ |
| আদা রঙ্গপুর | ১ | ২ | ২ |
| পাটলাই কালা | ১ | ৪৬ | ৪৬ |
| চালু পাটলাই | ১ | ২৩ | ২৩ |
| পাছতি উত্তম | ১ | ২৬ | ২৬ |
| পাছতি মধ্যম | ১ | ২ | ২ |
| বাপাম | ১ | ১১০ | ১১০ |
| রাষ্ট্রী | ১ | ৪১ | ৪১ |
| দুখা গোম | ১ | ১৬ | ১৬ |
| পাটলাই বট | ১ | ১০ | ১০ |
| অচহর কালি | ১ | ১১০ | ১১০ |
| মটর | ১ | ১ | ১ |
| উত্তমমাত্রা মটর | ১ | ১২ | ১২ |
| মধ্যম মটর | ১ | ১৮ | ১৮ |
| উচ্চা মটর | ১ | ০ | ০ |
| মধ্যম উচ্চা | ১ | ০ | ০ |
| মোঘবাজী | ১ | ৪৭ | ৪৭ |
| মিছরি উত্তম | ১ | ১৬ | ১৬ |
| মিছরি মধ্যম | ১ | ১০ | ১০ |
| মোঘা উত্তম | ১ | ৪৬ | ৪৬ |
| মধ্যম | ১ | ৪১ | ৪১ |
| চিনি কাপার | ১ | ৮১ | ৮১ |
| মধ্যম | ১ | ৭ | ৭ |
| খার চিনি | ১ | ৩১ | ৩১ |
| তেতল | ১ | ১৬ | ১৬ |
| তামাক | ১ | ২১ | ২১ |
| চন্দন | ১ | ৪০ | ৪০ |

ঐ সমাচার বর্ণন শ্রীহরিশঙ্কর জাপানবাসী পুস্তিকা হইতে লিখিত। হার শব্দের অর্থশব্দ হই তিনি শ্রীহরিশঙ্করের জাপানবাসী আপন নাম পাঠাইলে লক্ষ্যে কাল তাহার নিকটে পাঠান যাহাৎক তাহার ইচ্ছা মতে এক টাকা তিনি ব্যক্তি করিয়াছেন যদি তাহার বিদ্য কার্য না পছন্দে তবে তিনি শ্রীহরিশঙ্করের জাপানবাসী পুস্তিকা তাহার নিকটে পাঠান হইবে।

সংবাদ দর্পণ

১৩৬৬ খ্রিঃ ১৮৮৪ খ্রিঃ ১ জুন মাস ১৮৮৪ ১৪ জৈষ্ঠ মাস ১৩৮৪

দর্পণ মুখ সৌদামিনী কলিকাতা ১ দ্বিতীয় ভাগ সংবাদ দর্পণে ৥

কে স্পিনির কাণ্ড।

১৮৮৩ ও ১৮৮৪ সালের কোর্টনির শর্ত
করা তা টাকার সুদের কাণ্ড হুঁকারি
তে হইলে শতকরা দীর্ঘ টাকার প্রিয়ম।
বিস্তারিত হইলে শতকরা চারি টাকার
হাট আশা প্রিয়ম।

তাঁহার পক্ষীয় সুদের কাণ্ড
ফ্রয় করিতে হইলে শত টাকার প্রিয়ম বি
ক্রয় করিতে হইলে শত টাকার প্রিয়ম আশা
প্রিয়ম।

সংবাদ পত্রিকা।

| | | | | |
|---|-----|-------------|----|------|
| ১ | জুন | পরিবার | ১১ | ১৮৮৪ |
| ৩ | এ | পরিবার | ১১ | এ |
| ৪ | এ | পরিবার | ১৩ | এ |
| ৫ | এ | মঙ্গলবার | ১৪ | এ |
| ৬ | এ | বুধবার | ১৫ | এ |
| ৭ | এ | বৃহস্পতিবার | ১৬ | এ |
| ৮ | এ | শুক্রবার | ১৭ | এ |

ইচ্ছা।

মুদ্রণের কৌশল

অর্থ

সংস্কৃত ব্যাকরণ ও গণ।

প্রায় দ্বৈত সাধু ভাষার অর্থ।

জীবদেহের গোষ্ঠায়িত কৃত অর্থমন্ত পুস্তক
কলে চলিত কৃতদেহ ব্যাকরণ ও সংস্কৃত কবি
ইন্দ্রকানোদ গণের পঞ্চাং বাক্যগণ রীতি কলে

এতদেশীয় সাধুভাষার গণের তদুই খণ্ডে অর্থ
পুস্তক করা গিয়াছে।

পুস্তক খণ্ডের বিবরণ।

১ মুদ্রণের ব্যাকরণের পরিভাষা এবং
সাধু পুস্তকসংগ্রহের অর্থমন্তক অব্যাহত
সংস্করণের কলিতা অকার্য্যি কলে লেখা
গিয়াছে।

২ মুদ্রণের পুস্তক ইতে লেখকগণ একাদি
সংস্করণের অর্থিত হইয়াছে।

৩ মুদ্রণের তদুই লিখিত আশা অংশের
অকার্য্যি কলে সঙ্গীত লেখা গিয়াছে।

৪ পুস্তক আবেশ লোপ ও গণ ইত্যাদির
যে স্তরে বিধি আছে তৎসংস্করণের অর্থ লিখিত
তৎসং পুস্তকাদির অকার্য্যি কলে সঙ্গীত
করা গিয়াছে।

৫ মুদ্রণের বিজ্ঞপ্তি অর্থ লিখিত পুস্তক স্তরের
পুস্তক অংশ পঞ্চাং স্তর বিজ্ঞপ্তির অর্থ
লিখিত পুস্তক স্তর পঞ্চাং বৃত্তি পঞ্চাং ভাষার
সাধু ভাষার অর্থ।

৬ পুস্তক পদের অংশ পঞ্চাং তৎসং পদ
সাধুভাষার স্তর অর্থ এবং স্তরভাষা এই
সকল পদ সাধু হইয়াছে তাহার লগনের যথা
কলে অর্থ লিখিত পুস্তক পদ লেখা গিয়াছে।

দ্বিতীয় খণ্ডের বিবরণ।

১ গণের পরিভাষা।

২ অকার্য্যিকলে সাধু পঞ্চাং তাহার লগন
ভাষা পঞ্চাং সাধুভাষার অর্থ।

ভারতবর্ষে যত ভাষা আছে তাহার মধ্যে

সংস্কৃত অত্যন্ত বহু প্রচলিত আশা
ও মুদ্রণ এ ভাষা আশায় কাব্যশাস্ত্র এবং
যে এতদেশীয় লোকেরা রাজনীতি ভিত্তি
ও মোক্ষসাধনের শাস্ত্রি লোকই এই ভাষা
লিখিত ব্যাছে ব্যাধাণা ভাষার লাই
সুভাষা সংস্কৃত না জানিলে এতদেশীয়
ধর্ম কলব্যাকর্ষ এবং দ্বিতীয় ইত্যাদি
বিবরণ তৎসংস্করণ ব্যাক্তি উপদর্শন বর্ধিত
কলার হার না এবং লিখকের ও কলার তৎসং
তৎসং বিবেচনায় কলভা কল না। মুদ্রণের
লগনের বা স্বাভাবিক ভাষা না জানিলে
কল হইতে হই আর তৎসংস্করণের লগন
লগন লিখিত ভাষার লগনে সংস্কৃত
ব্যাক্তির লগনের উপদেশ অপেক্ষা করে তাহার
অভাবে লগনের মুদ্রণ হয় ভাষা লগনই
লগনের।

লগনের লগনের রীতি এই যে দ্বিতীয়
আশা স্বাভাবিক ও স্বাভাবিক ভাষা
লিখিত করে তাহারে সংস্করণ লগনের
লগনের ভাষা বা শাস্ত্র অধ্যয়ন করে লিখিত
লগনের ইহার বিপরীত।

লিখিত শাস্ত্র বা স্বাভাবিক কল ও লগন
লগন কলার লগন লগন লগন
ও লগন লগন লগন লগন
লগন লগন লগন লগন লগন
লগন লগন লগন লগন লগন
লগন লগন লগন লগন লগন

সংস্কৃত ভাষা লগনায় লগনায়
লিখিত অপেক্ষা করে লগনায় লগনায়
লগন লগনায় ও লগন লগনায়
লগনায় লগনায় লগনায় লগনায়

সম্রাটের দপণ !

এ সময় রস: ক্ষুভা ও শ্বেদ: বোধ হইলে
যদি কোন জ্বরের নিমিত্ত নিরন্তর ব্যাধু
ক্ষুভাশ্রয়ণ ও অশ্রুপূরি ব্যক্তি যে সংকৃত
জাবাধজ্ঞানে অজিলাখী হয় তাহার ব্যাঘাত
অনেক আদৌ অস্ত্রায়ানসাধ্য সুস্থ উপায়
নাই বিতায়: যদি গরিমুখ ও উপদেশভাভ
ইত্যাদি কারণাধীন তাহার ক্ষান্ত হয়।

[illegible]

এই গৃহ পুস্তক হইলে অনেকের উপকার হইবে
যেহেতুক যিনি এই গৃহ পুস্তক করিয়াছেন
তিনি অতিজ্ঞানবান্ ।

রাজকর্মের নিয়োগ।

डाकाईडि ।

১। মুখ্য ই কাহিনী স্বাধীন মারিয়ার
 ২। স্বাধীন কতিবে লগিনিন ৩। ১৯৬০ তারিখ
 ৪। মুখ্য কাহিনীতে পরিণত না হইলে দুই দিন
 ৫। জাতিতে বহিষ্কৃত হইলে জিনিস পত্র চোকা
 ৬। মুখ্য লগিনিন লগিনিন ৭। স্বাধীন তারিখ
 ৮। গুরুত্বের বহুত লোককে টিঙ্গিয়াছিল ৯।
 ১০। গুরুত্বের দিন লগিনিন হাইটের খানাত
 ১১। মতের দ্বিগুণ তারিখের দ্বিগুণ লগিনিন
 ১২। দ্বিগুণ ১৩।

ঐ শ্রী লোক একাকী আর বারেক দুই
বার আপন বাটাইহইতে এইকণে তাকাই
ডেরদিগকে তাকাইয়াছে কোনবার কিছু
লইতে পারে নাই কিন্তু এই বার স্থিতি-
লইয়াছে ।

अथुत मरुत जल मालक्य मांहेर।

যোঁ বোম্বেতে জনরব হইয়াছে যে
ঈশুত নর অন মালক্য সাহেব দুই তিন
সাহেব লোকের সহিত তাক্সা পথে ই-গ্ল
ও ঘাইতে নির করিয়াছেন।

১৫১নং দেশ ।

খান (দেখিইতে) মমতাচার আমিয়াজ
যে মেথানে অভিজ্ঞ এক বিদ্যাবি হই
যায়ে ঐযুক্ত কাঞ্চন ক্রিয়ান মাঝেমে
খানে আছেন তিনি আনিয়াজিনান (যে
জিলা লোকাল) অর্থাৎ উদ্দেশ্যীয় ডাকহি
ডোরা রাজদুহাই হইয়ায়ে মে কাঞ্চন
তিনি ইমানা মধ্য কায়ত ওয়াহই হইয়া
লোক পাঠাইলে ইমানা ওয়াহই ওয়াহই
হইল। পরে জানা গেল যে তাহারাই পুর্বে
কোলাসির চাকর ছিল কিন্তু বর্মানা থাকি
তে মৃত্যুর কোলাসি ডাকবাখিচ চাক
রিহইতে বসতেন করিয়াছেন। ই মকল
লোক খিলায় রাজা পুর্ক ই মাঝেহের উহ
হইল কোলাসির যে মকল চাকি ছিল
ডাকবাখিচ ওয়াহই হইয়াছিল। পরে

সমস্যাচার দর্পণ।

সাহেব তাহারদ্বিতীয় তৃতীয় ইত্যাদি
সকল স্থানে যত্নে বিদ্যা প্রাপ্ত।

কর্তাট দ্বৈত পরমস্বর

ইংলণ্ডের শ্রীমন্ত তৃতীয় জর্জ বার
শাহ কর্তৃক দেশের শ্রীমন্ত লবার সাহে
বক পত্র লিখিয়াছিলেন সে বিষয় পুর
প্রাপ্ত গিয়াছে সেই পত্রের পুস্তক
লবার সাহেব তৃতীয় জর্জ বার সাহে
বের সিকটে পাঠাইয়াছেন তৎপুস্তক
সেই কালে ১৩ বৎসর হইয়াছিল।

আহাজ আযদানী।

ইংলণ্ড হইতে দুই তিন মাস আহাজ
আযদানী ছিল না কিন্তু গত দুই মাস
হের মধ্যে নীচ জয় আহাজ ইংলণ্ড হইতে
যে স্থানিকাতা পৌঁছিয়াছে।

সেগন কাঙ্ক্ষ।

দুর্ন বৎসর হইল বোম্বে হইতে সেগন
কাঙ্ক্ষ নির্মিত হইয়া এক আহাজ ইংলণ্ডে
গিয়াছিল গত বৎসরে সে আহাজ ওঠা
ইয়া দেখা গেল যে তাহার কোনখানে
কাঙ্ক্ষের ক্ষতি কিছু হয় নাই। ইংলণ্ড দেশে
এক পুরান পত্র কাঙ্ক্ষ আছে তাহার নাম
এক তাহা হইতে ওতম কাঙ্ক্ষ আর নাই
কিন্তু সে কাঙ্ক্ষ এ অল্প দিনে নোকা লাগি
য়া নষ্ট হয়।

ভূমিকল্প।

মোঃ মুয়াম্মলিন-হইতে সমস্যাচার আদিত
গায়ে যে ৭ মে লয় ঘণ্টা রাত্রি সময়ে সে
খানে ভূমিকল্প হইয়াছে।

বহরমপুর।

১৭ মে মাহার সমস্যাচার আদিতগায়ে

মোঃ বহরমপুরের তৃতীয় নীচ দিন পর্যন্ত
কাক ও মাথ ও রক্তহংসের জিন্মের ন্যায়
শিলা বৃষ্টি আতিশয় হইয়াছে।

এক বহরমপুরের আত্মপারে এক বন্য
শূকর এক পোককে তপাত করিয়াছিল
তাহাতে গুম্বস্ত লোকেরা ভাতাভাতি ক
রিলে ঐ শূকর গরি পায় হইয়া বহরমপু
রের গাঁয়ের মধ্যে পুবেশ করিল। দুই
তিন ঘর বেড়াইয়া গোঁরা পল্লনের মধ্যে
এক গোঁরা পহরা দিওজিল তাহার ওপর
আক্রমণ করিল গোঁরা মিছা হী মক্কান
বহিলে শূকর আপন বেগে মক্কানের
ওপর পড়িল তাহাতে তাহার বেগে ম
ক্কান বক হইল। পরে সোঁর জলিয়া পল্ল
নের সাহেবেরা আদিতা দুই তিন বর্ষ
মাহিয়া শূকরকে মারিল।

শ্রীমন্ত জলর ডায়ম সাহেব বহরম
পুরের পল্লনে ঘাইয়া গোঁরা পল্লনের ও
মিছা হী পল্লনের কাবাজ দেখিয়া ক
ষ্মের তাহার করিয়াছেন।

মন্দির।

মন্দির হইতে সমস্যাচার পাওয়া গেল
যে সেখানকার শ্রীমন্ত বক সাহেবের বি
বি শিক্তি হইয়া ১১ মে তারিখে বহরমপু
র শহরে গিয়াছেন এবং শ্রীমন্ত মর ডায়ম
হিসল সাহেবকে মন্দিরগায়ে আপন ক
র্ম দিয়া শ্রীমন্ত বক সাহেব বিবির ম
হিত গিয়াছেন।

আকর্ষ্য চাঁক।

ইংলণ্ড দেশে সেজিল নামে এক নগরে
আবিস্কৃত অল্প ও-পদ হয় সেইখানকার
এক পুতুল সাহেব আপন কারখানায়

তে ইংলণ্ডের জীম্মতী রবার কাপন
চাকু পাঠাইয়াছেন তাহার আশঙ্ক্য আ
শয় যেহেতুক এক চাকুর মধ্যে দুই চাকুর
খোল ছুরি এক তাহা রাগিবার কার
গোলামের এক খাপ আছে সে খাপ
ওপরে খোদিত অসম্পূর্ণ অল্প।

অক্ষয় পাঁচ।

শ্রীমন্ত ইংলণ্ডের বারশাহ ইংলণ্ড
তে এই দেশে ও গ্রীস দেশে গমনাগম
নের কারন ওতরকেদু দিয়া পথ করিবার
জ্ঞানগণ অনেক দিন অহবি করিতেছেন
কিন্তু অতিশয় পুস্তক তাহা অজ্ঞানি হয়
নাই মধ্যে দুই আহাজ জিরিয়া আদিত
গায়ে সে আহাজের লোকেরা শীত
কালে সেইখানে ছিল তাহাতে তাহা
রা আপনাদের হাল ওক রাগিবার জন্য
আহাজের মধ্যে এক স্থানে দিবা রাত্রি
লক্ষ অবি রাগিত সেই অধির যে আদিত
মক্কিত হইত তাহাতে দুই তিনটা শ
কের গাঁক হইয়াছিল কিন্তু তাহার বক
ও পত্র ও শীত সকল কিছু কাল যেত ব
জিল পরে যখন শীত কাল গত হইল
তখন গল্পের আদানী খোলা গেল তাহ
তে হাতান লাগিয়া সেই বক্কের পাতি
ও শীত ক্রমে সবুজ বর্ণ হইল এবং পাতি
কাল এমত শীত ছিল যে আহাজের
লোকেরা দিবা রাত্রি আপনাদের সকল
শরীর লেপেতে বেজিত রাগিত কেবল
দুই চাকুর আলাভ থাকিত এবং পাতি
শরীরের রক্ত স্থানে তমাইত হইত
এ সে স্থানে হস্তচর্চা যত্ন করিলে শর
ীরের মধ্যে শিথলিত যদি সেইবর্ণ না
করিত তবে ২ মকল স্থান পটিয়া ম
দেহত হইত।

সম্রাচার দর্পণ।

রাজ্য।

ইশ্রাও এক জন নীচ দিবসে ১৫০ দেও
শক্ত কোশ পথ পদবৃত্তে চলিবার কারণ
রাজ্য রাধিয়াজিল সে ব্যক্তি অসামান্য
এ জন এই পথ চলিয়া রাজ্যে গিয়াই
যাচ্ছে।

অন্য এক জন ৪ টার দিবসে ১৭৪ এক
শক্ত চৌহুরি কোশ পথ পদবৃত্তে চলি
বার কারণ রাজ্য রাধিয়াজিল তাহা পু
থ্য দিবসে ১২ বার ঘণ্টাতে ৩০ চতুর্থা
কোশ চলি দিও দিবসে ২০ বিন ঘণ্টা
তে ৩২ বত্ৰিশ কোশ তৃতীয় দিবসে ২০
বিন ঘণ্টাতে ৩৪ চতুর্থা কোশ চতুর্থ দি
বে ২১ একই ঘণ্টাতে ২৭। সাতক সা
ত্ৰিশ কোশ চলি কিন্তু সেই দিবসে
তাহার পায়ের নীচে ফেঁকা হইল।

ওকরক্ষা।

ইশ্রাও দেশের এক নগর এক পাঠশা
লা জায়ে সেখানে কথিয়া দেশের বাদ
শাহের ছা আনবার এক পোষা পুত্রকে
বিদ্যাভ্যাসের কারণ পাঠাইয়াছিলেন
পরে এ পোষা পুত্র সেখানে বিদ্যাভ্যাস
করিয়া অসীম দেশে পুমান কালে তিন
জন পতিব্রত ওকরক্ষা দিয়াছেন তা
হার মধ্যে এক জনকে ৮০ টাকার এক হী
রার অঙ্গুরী দিয়াছেন এবং অন্য এক জন
কে ২ মনোর এক অঙ্গুরী এবং আর এক
জনকে এক নমাবীন্দী দিয়াছেন তাহার
মূল্য ৪০ টাকা ও নগদ ২০০ টাকা দি
য়াছেন।

আহাজ দাহ।

লণ্ডন নগর হইতে এক আহাজে অস
ক সাহেব যৌক স্ত্রী পুত্র সমেতে আদি
কার অঙ্গুরীকে আনিতেছিলেন তে ১৬
আক্টোবর তারিখে দুই পুত্র বেলার
সময়ে দেবান এক সাহেব কোন হুদা
খেল করিবার কারণ ক্রুদ্ধ বাণী লইয়া
জাহাজের নীচে গেলেন সেই বাণীর
কুলিঙ্গ সে স্থানে ওড়িয়া পড়িল সাহেব
তাঁহা জানিতে পারিলেন না। পরে
সাহেব ওপরে আইলে এ তথ্য সময়ে পু
ত্রলিত হইল তখন জাহাজের সকল লো
ক জানিল। সে তাহাজে তিনখান
মোট নৌকা ও একখান বড় নৌকা ছিল
তাঁহাতে লোকেরা অভিযান্ত্রিক হইয়া বড়
নৌকা নামাইতে পারিল না এবং ছোট
তিন নৌকা নামাইয়া যাঁহারা ওড়িত
পারিল তাঁহারা ওড়িল কেহই স্ত্রী পুত্র
আহাজে রাখিয়া নৌকাতে ওড়িয়া আন
ন পারিলেন করিল কাহারো বা স্ত্রী
আহাজে থাকিল আননি নৌকাতে ওড়ি
য়া আনল পূর্ণ রক্ষা করিল এবং ছোট
নৌকা তুবিব ৭২ জনকে ওড়াননি স্ত্রী
পুত্র ওড়িতে পারিল না। পরে শেষ
বিবরণ জানিবার জন্য ৩ দিন নৌকা
আহাজের নিকটে রাখিল। দেবান
পৌরোহিত্যের এক আহাজ সেখানে ও
পড়িত হইল। তাঁহারা তাঁহার দিগের
ঘোর বিপর দেখিয়া অতি লোককে
আশনারদের জাহাজে ওড়িয়া সকলের
পূর্ণ দান করিল কিন্তু কালানন্তর সে
আহাজ বড় হইয়া অলম গ্রিসাইল।

বাকার বাণী।

| কিমি | ফোন | অবধি | |
|------------------|-----|------|-----|
| মুগারি | ১ | ৫৬ | ৫৬ |
| ভেলেজা ভৈব | ১ | ২২ | ২২ |
| গায় মরিচ | ১ | ২৭ | ২৭ |
| মারিকেল তৈল | ১ | ১২ | ১২ |
| কুলা পাছাড়া | ১ | ০ | ০ |
| কামা রুপপুর | ১ | ২ | ২ |
| পাইনাক কামা | ১ | ৪৬ | ৪৬ |
| মাদু পাটাই | ১ | ২৩ | ২৩ |
| পাছি উত্তম | ১ | ২৪ | ২৪ |
| পাছি মধ্যম | ১ | ২ | ২ |
| বালান | ১ | ২৭৪ | ২৭৪ |
| রাষ্ট্র | ১ | ৪৭ | ৪৭ |
| মুগা গোম | ১ | ১৪ | ১৪ |
| পাইনাক কুট | ১ | ১০ | ১০ |
| কম্বল কালি | ১ | ১০২ | ১০২ |
| মটর | ১ | ১ | ১ |
| উন্নয়নাত্তা কুট | ১ | ২২ | ২২ |
| মধ্যম কুট | ১ | ১৮ | ১৮ |
| ইলা কুট | ১ | ০ | ০ |
| ব্রহ্ম ইলা | ১ | ০ | ০ |
| কামাবাতি | ১ | ৫৭ | ৫৭ |
| গিছির উত্তম | ১ | ১৬ | ১৬ |
| গিছির মধ্যম | ১ | ১৩ | ১৩ |
| মোড়া উত্তম | ১ | ৪৬ | ৪৬ |
| মধ্যম | ১ | ৪৭ | ৪৭ |
| চিনি কাণার | ১ | ৮৭ | ৮৭ |
| মধ্যম | ১ | ৭ | ৭ |
| খার মিনী | ১ | ৩৭ | ৩৭ |
| তেতুল | ১ | ৭৪ | ৭৪ |
| ডামাক | ১ | ১৭ | ১৭ |
| চন্দন | ১ | ৪৬ | ৪৬ |

এই সম্রাচার দর্পণ শ্রীমদপুরে ছাপাখানাতে পুণ্ডিতদ্বারা পরিবারে ছাপা হইল। বাহার লগরে আবশ্যক হই ত্রিপুরামপুরের ছাপাখানাতে
আপন বীর পাঠাইলে সম্রাচার কাগজ তাঁহার নিকটে পাঠান হইবেক তাহার মূল্য মানে এক হীক। যিনি থাকত করিয়াছেন যদি তাঁহার নিদা
কাল না পড়ে তবে তিনি শ্রীমদপুরের ছাপাখানাতে সম্রাচার ছাপাখানার নিকটে পাঠান হইবে।

১৬ যে তারিখের মোকাম :
পত্র জাতি গণ যে মোকাম

সমস্যা সমাধান

লাইসেন্সেট ও স্কলে ওলাউটা রোগের
বৃদ্ধি হইয়াছে।

গত, যে মাসে বোম্বের কংগ্রেস
ডিরলিই অন লোক বন্ধ জিল তাহার
মধ্যে আটকলিঅন দেলার দায়ের কএর
ডাইর মবো এক অম্মাশ গোরা। আর
অন্য দোষে পুত্রজিলিঅন কএর
ডাইর মবোও দুই অন গোরা লোক
ইহাতে বোবি হয় যে বোম্ব হান ওভয়
যেহেতুক সেখানে লোকসংখ্যা অসু
মান দুই লক্ষ ইহাতে কেবল ডিরলিই
লোকসংখ্যা কংগ্রেসের বন্ধ আছে।

মুর্শাবাদ দি।

মোঁ মুর্শাবাদবাদের ১৭ মে তারিখের
টিটীতে জানা গেল যে এই মোকামে ১৩
তারিখে অতিশয় বড় বৃষ্টি ও বজ্রপাত
হইয়াছে ইহাতে অনেক ঘর ভাঙ্গিয়া
ছে। এই বজ্রের বহরমপুরে অনেক ঘর
ভাঙ্গিয়াছে ও বারিকার দিকের কান্ধার
ওপর পাশে পুটলি বজ্রের ডাল ভা
গিয়া পড়িয়াছে একটা বজ্রের ডাল
ডাল ভাঙ্গিয়া কেবল গোড়া আছে।

ঐযুত কাশ্মির মুলতায় সাহেবের বা
টীতে এক বৃষ্টি এক কালে মকল সময়ে
কুড়িয়া গিয়াছে ও গোরা বাজারে বজ্র
পাতে দুই অন লোক মূল হইয়াছে তা
হার এক জন নিহত। আলসী বাজা
রে এক জন এই বজ্রপাতে মূল হইয়াছে।

মুর্শাবাদবাদের ও তরকট চতুর্দ
গৌর লোকেরা কহে যে ত্রিশ বৎসরের
মধ্যে এমত বড় হয় নাই পৃথি কোন ঘর
অগ্নয় নাই। ঐযুত রাজা ওয়াশুসিংহ
যে মূল মন্দির নির্মাণ করিয়াছিলেন
তাহাতে বজ্রপাত হইয়া এক লোক মূল
হইয়াছে ও দুই অন দল হইয়া আর

আছে ও মন্দিরের ওপরে দুইটা জিন্দু হই
য়াছে এবং এইখানে খানসাহেব এক নারি
কেল বজ্র পাত হইয়া বৃক্ষ-বল হই
য়াছে এবং শাহনগরের দিকটে এই বজ্র
পাতে এক অন স্কুলের মূল হইয়াছে
এবং ঐযুত নবাব সাহেবের চাবুক সওয়া
রের ঘরে বজ্রপাত হইয়া ঘর দল হই
য়াছে এবং অন্য অনেক ঘর দল হই
য়াছে।

মূল।

মোকামে জুড়েপাতে এক অন ডিলি
জিও ৩০ এপ্রিল তারিখে আপন স্ত্রী ও
দুই পুত্রকে মূল করিয়া ঘরে অগ্নি দিয়া
ও আপন গলা কাটিয়া মরিয়াছে। লো
কেরা ইহার কারণ অনুমান করিল যে
সে স্ত্রী ভুল জিল সেই রোগে এমত
করিল। এই মোকামমার বিশেষ আদল
কিছুই নাই ও পুত্র মকলের সমান
গতি হইল কিন্তু যদি এই মোকামে ইম
তে হইত তবে মৃত হয় আসল দহাই
হইত এবং মূল ব্যক্তিকে চোরাইতে
মাটি দিয়া তাহার বক্ষস্থল এক গোঁজ
মারিয়া রাখিত।

মুর্শা।

মোকাম বোম্বেরে মুর্শা ডার
টীকট ঐযুত মটল মালকম কোল্লাসী
খরিদ করিয়াছেন।

আহাজ কুবি।

লিঙ্গিহইতে পাশান নামে এক আহা
জ আনিয়াছে তাহাতে সমস্যাটার জানা
গেল যে কয়মতল নামে আহাজ যাবা
ওলাপের দিকটে অবস্থিত। এই আহা
জ পুত্রের বাক্য মোঁ বেঙ্গলে লোক

বোঝাই হইয়া ও শহর বাতানীতে ঘাইয়া
ডিল হাজার বোরা চাল ও নগদ পঞ্চাশ
হাজার টাকা বোঝাই হইয়া ঘাইতেছিল
তাহাতে জুবি হইয়া ডাব জিলিম লম্ব
হইল কিন্তু লিঙ্গিহায়া হয় নাই আহাজ
হু ডাব লোক গুটিয়া মোকাম লম্ব
রাগ ও লুকবায়াতে গমন করিল। আর
এক আহাজ সেই সময়ে মারা পড়িয়াছে
তাহাতে অনেক দুখানি জিল ও ডিন শত
লোক জিল তাহার মকল নাশ পাইয়াছে
কিন্তু এক অন জুতা ও অন্য দুই ডিন অন
লোক সময়ে ডানিতেছিল এই সময়ে
এই পাশান নামে আহাজ সেইখান হই
তে আনিতেছিল তাহার এই আহাজে
ওটিয়া রক্ষা পাইল।

পুত্রের বালিঅর যে সমস্যাটার আ
নিয়াছে তাহাতে অধিক ভরসা হই
য়াছে সেখানে বালিঅর ওভয় বন হই
তেছে।

মোঁ আর অর্থাৎ গরী ঘুমুরার

মহাবতী দেশ।

মোঁ আর হইতে যে টি আনিয়াছে
তাহাতে জানা গেল যে সেখানে অতি
শয় ফল আনিয়াছে ইহাতে পুত্রা লো
কেরা বড় ভাল আছে এবং অন্য বৎ
সরে গুটিয়া সময়ে যে কল গুটিয়া হয় এ
বৎসরে মেকন হয় নাই এবং দুই ডিন
দিবস বড় বৃষ্টি ও বজ্রপাত হইয়াছে
কিন্তু তাহাতে কিছু ক্ষতি হয় নাই।

মোকামে বিগুরের এক অন ডাণ্ডাবান
লোক ঐযুত মহারাজ বাজিরাও খেন্দা
য়াল পালাল করাইতে চেষ্টা করিয়াছিল
তাহাতে ইন্দুরেরা এই ব্যক্তি পুত্র মকল
হু করিয়া তাহারে পাকি করিয়াছে তা
হার দুই বড় এমত সন্তান আছে কিন্তু

সমাচার দপ্তর।

তাঁহাকে আশ্রিত ও ক্ষেত্রেতে রাখিতে সন্দেহশূন্য তাঁহাকে পক্ষিমা অঙ্কল বৃত্তি আশ্রিত। পাঠাইবেন এমন অনুমান হয় এবং তাঁহার পরে বেড়ি দিয়া পেশা গার লোকের সম্মুখে ঢালাইতে হকুম দিয়াছেন। এবং দেখা গেল যে ইহাতে শ্রমুত মহারাজ হাজিরাও পেশায়ায় কিছু অনুমতি ছিল না। ইঞ্জিনিয়ারদিগের বিপ্লবেরের গুণকার দেখা করিলে এই ক্ষণ লাভ হয়।

মৃত্যু।

সমাচার আমিয়াছে যেচাঁকার আশীশ কোর্টের অজ পি দরখাস্ত পিচিল সাহেব গত ১৫ মে ডারিংথে মরিয়াছেন।

মোঃ রামপুর বোয়ালিয়ার কুটির অফিস জাল এডিসন সাহেব অতিশুভান তিনি বারীলাতে ৪০-৮০ মরম করিয়াছেন মনুপতি তাঁহার মৃত্যু হইয়াছে।

এবং মোঃ গাঙ্গুর বি দেওয়ান সাহেব ছিলেন তাঁহার মৃত্যু হইয়াছে।

বোকা চুরি।

শ্রমুত মহারাজ হাজিরাও পেশায়ায় পাইয়া এক এমরার এক ঘুড়ী ও এক বোকার বাগা চোরে চুরি করিয়া লখ বোয়ের বাদশাহের অধিকার রাখিয়া ছিল। তাহাতে ক্ষেত্রেদের কোতোয়াল অনেক কোশল দুই বোকা আনিয়া তাঁহাকে দিয়াছে। এই কণে রক্ষকের সম্মুখ হইতে অনেক বোকা চোরে চুরি করে।

কুল শোমইটী।

গুম্মী জুন শনিবারে কুল শোমইটীর মুরাদি বিয়েদান। কুলের চৌতহালে আফ্রিকার ঘরে মুরাদি মুরাদি বিতায়

বার হামিয়ারিলেন তাহাতে দুবান জজ শ্রমুত ইম্মানাহেব ছিলেন তাহাতে রিপোর্ট জানা গেল যে কলিকাতার মরো বাজে কুল ১১১ দুই শত এগার আদে তাঁহার মরো চারি হাজার নয় শত বালক। ইহাতে শ্রমুত বাবু রাধাকান্ত দেব ও শ্রমুত গুমানক চাঁকুর ও শ্রমুত রামচন্দ্র ঘোষ ও শ্রমুত দুর্গাচরণ দত্ত এহার আশ্রিত নিকটস্থ কুলের ডব্বারক করিয়াছেন ইহা আনিয়া সাহেব লোকেরা তাহারি গের পুতি তত্ব হইয়াছেন।

এবং কুল শোমইটীর বারীলা কোম্পানীর মরো শ্রমুত মিরজা মাহমদ অক্ষরি নিযুক্ত হইয়াছেন।

দেপ্তরমণ।

শ্রমুত দেশের রাওদীলা পারিশ নগর হইতে এক সাহেব আমিয়াছে তাহার দ্বারা শুনা গেল যে শ্রমুত হাম্মানি না হেব অতিজানবান্ ডাবল ইন্ডোয়া ও আমেরিকা ভূমণ করিয়াছেন এখন পা রিশ নগরে থাকিয়া গুদোয়া করিতে জেন যে আরব ও ডাবার দেশ ও হিম্মা লয় শরত হইয়া ভোট ঘেপ দেখিয়া এখানে আসিবেন।

বাবুর উপাধ্যায় বাহা পূর্ন ছাপান গিয়াছিল তাহার বিভিন্ন পরিচ্ছেদ তিনি পুস্তক পাঠা ইয়াছেন।

বাবুর উপাধ্যায় দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ।

বাবু লেখা পড়া কিছু শিখিলেন বা অক্ষর লেখা অন্য এবং পড়িতেরা কহেন আপদি সব পাঠে বিচার করিতে পারেন এবং সন্তোষ বৃত্তি তে পারেন এই সকল কথা বার। বাবু মদা ভিমারী হইয়া মদে কহেন আমায় বারীলি

খার বাবহার বিদ্যা নিরম ইত্যাদি সব হইয়াছে এবং জনসাধারণ কহেও সন্তোষ হইয়াছে। এই কণে সাহেব লোকের হইব এবং বার। বাবহার পুস্তক রাধাকান্ত মোহন বিচারবাক্য সেই পুস্তক পুস্তক হইয়াছে কেবল বাবুর ভাতারের মৃত্যু হইয়াছে বিশেষ দেখ।

সাহেব লোকের দ্বারা একটা আদে কলম বিকালে গাড়িতে বিদ্যা যেটাকে আরোহণ করিয়া বেতান।

বাবু আশন চাকরকে হকুম দিয়া রাওদীলা কোর্টের পূর্বে নিযুক্ত ভাষাইয়া বিও পুস্তকালে বোয়ার নগরার হইয়া বেড়াইতে যাইব। পুস্তক নমত রাহি বেশ্যালে ছিলেন চারি দিব রাহি থাকিতে বাটীতে আনিয়া শরম করিয়া ছেন তাহার পরে চাকর নিযুক্ত ভাষাইলেক সুতরাং ইহাতেই হইল সেই শ্রমুতকে যে উপরে পুস্তক হইয়া যাইতেছিলেন যে কলম হইয়াছে এই কণে যে পথে সাহেব লোক গিয়াছে সে পথে গেলেন হজা পাইয়া তাহাকে অন্য গোন পরে যাইতেছিলেন তাহার নগরার ভাল চিনিতে পারে বাবু আসন বিবেচনা করি; পিছেইতে কুমিতে কেহা মিলেক বাবু ছাইগাশার পক্ষি হাতে মুখ কই মাখিয়া নহাদের কাক হাত দিয়া বাটা আইসেন শোরা বোকায়া যাইতেছিল কে সাহেব দেখিয়া আপন নহাসকে হকুম দিয়া বোকা ধরিত। আগরায় পাঠাইয়া দিল। সাহেব লোকের লাহহার এই যে বাহার নগরে যে কথা কহেন তাহা অন্যথা হয় না অর্থ মিথ্যা কহেন না।

বাবুর দিকটে অনেক লোক গমনাগমন করে তাহাতে বাবহার পুস্তক পুস্তক আছে যা কোন ভিকর বাবুর নিকটে যায় ও আপনদিত মৃত্যু বিবেচনাগদি বৃত্ত মানার তাহাকে কহেন আমি কিছু দিব না যাও আর নিব করিত ন

সমাচার দর্পণ।

ইহা ভবিষ্যৎ বাবুর কাছে মানা কোন লোক
সুপারিশ করে তাহাতে উত্তর করেন তোমরা
কি আমাকে বাবুর মত করিতে কহ একবার
বসিলাহি হিব না পুনরায় মিলে আমার কথা
মিথ্যা হইবে আমার পুণ্য থাকিতেও ইহা
হইবেক না মানবের একই কথা।

সাহেব লোক যদি তাহারো সঙ্গে বিবাদ ক
রেন তবে পুত্র হু করিয়া থাকেন হুনা কিহা
শিল্প ইত্যাদি মারিয়া থাকেন।

বাবুর অনুগ্রহ বুঝা কিহা অন্য পুত্রের হুইত
জ্ঞান হুনা বাবুর পুত্র যদি দ্রাঘ হু হু তবে সেই
লোকের ইচ্ছা হুনা মানেন এবং কহেন যে
হামিরা পুত্রের হুইত এই পুত্রের জ্ঞানক পদ
করেন তাহাতে এই পুত্রের পলায়ন করে।
বাবু সেই সময়ে আপন মনে পুত্রের বিবে
কনা করেন।

সাহেব লোক হিবকার পুত্রের গিয়া থাকেন
অন্য বার বিবর কর্তন করেন।

বাবু এই বিবেচনা করিয়া নতুন আখি
পুত্র হান তাবৎ পরিচয় করিয়া হিবকার
হামিরা গিয়া কহন যে হু গান কহন পকে
হামিরা পুত্রের গিয়া থাকেন।

সাহেব লোক পোজনা পুত্রের হিব
কোন লোক আপন হু হু তবে তাহার বাটতে
গিয়া নানা পুত্রের তাহার আপন হু হু হু
করেন।

বাবুর নিকটে যদি কোন লোক আসিয়া ক
হে যে অমুক লোক এই পুত্রের দায়বৃত্ত। বাবু
তৎক্ষণাৎ গাভী আরোহণ করিয়া তাহার বাটী
তে গিয়া কহেন যে এ তোমার কোন দায় আমি
নকল উদ্ধার করিব কিন্তু এইজন্য কিছু দিন
অবধি থাক হু আর বৈঠকখানার বেন বসি

হাছ বাটীর ভিতর চল সেইখানেই পরামর্শ
করিব। বাটীর ভিতর গিয়া মিথ্যা আখান
বাক্য আকাশের চন্দ্র হাতে গিয়া হু লোক
কোন নিকট থাকে তাহার অবস্থান করেন এ
চেঁটাতে পুত্র হু হু হু হু করেন।
সাহেব লোক অখানতইতে দানিশী হু কুম
হিব থাকেন।

বাবু দানিশী হুইলে পুত্র অখানত নকল
বুঝেন এবং ইচ্ছা দানিশী বুক দেখিয়া থাকেন
দানিশী হুইয়া হু হু হু হু হু হু হু হু হু
রেন না যদি অনেক উপাসনাতে হুই হিব বং
সরে বৈঠক হু হু তবে যে পক্ষে বাবুর হু হু
সেই পক্ষেই জর হু হু হু হু হু হু হু হু হু হু

সাহেব লোক দানিশী কহা কহেন তাহাতে
ত কার হু হু হু হু হু হু হু হু হু হু হু হু
করেন।

বাবুর হিব কেহ দানিশী করে তোমার
নাম কি ডাটাইয়ে গে.হ অখান হু হু হু হু
হু হু। এই নকল হু হু হু হু হু হু হু হু হু
হু হু হু হু হু হু হু হু হু হু হু হু হু হু

ইচ্ছা পুত্রের বেশ অনেক সমাচারের কায়ক
ছাপা হু হু তাহাতে অনেক লোক কৌতুহল
অথবা অপূরণীয় হু হু হু হু হু হু হু হু হু
হু হু হু ছাপা হু হু হু হু ছাপা হু হু হু
কর কিন্তু যদি কেহ কোন ব্যক্তি বিশেষের
দানিশী হু হু অখানত সমাচার পাঠার তাহা
কায় ছাপা করে না কিন্তু যদি কেহ সর্বসা
রন বোধহু সমাচার পরিব্রম হু হু পাঠার
তহা ছাপা করণে কিছু ক্ষতি নাই হু হু ইহা
তে সেই বোধের নিবারণ হুইতে পারে। এই
ধারাদ্বারা আমারদের চল উপস্থল।

বাক্য তালিকা

| ক্রমিক | মোট | অবধি | পার্থ |
|---------------|-----|------|-------|
| সুপারিশ | ১ | ৫৫ | ৫৫ |
| চেতনতা উত্তম | ১ | ১২ | ২০ |
| গাছ মরিচ | ১ | ১১ | ৪১ |
| নারিকেল উত্তম | ১ | ১২ | ১৪ |
| তুলা কাছোড়া | ১ | ০ | ০ |
| আদা রঙ্গপুর | ১ | ২ | ১০ |
| পাটনাই আদা | ১ | ১৫ | ১৫ |
| চালু পাটনাই | ১ | ২১ | ২১ |
| পাছড়ি উত্তম | ১ | ২০ | ১৫ |
| পাছড়ি মধ্যম | ১ | ২ | ২০ |
| বাল্যম | ১ | ১১ | ১৫ |
| রাষ্ট্র | ১ | ১১ | ১১ |
| হুনা গোম | ১ | ১১ | ১০ |
| পাটনাই হুই | ১ | ১০ | ১১ |
| অগ্রহর তালিকা | ১ | ১১ | ১১ |
| মটর | ১ | ১ | ১ |
| উত্তমগায়া হু | ১ | ১২ | ১০ |
| মধ্যম হু | ১ | ১৮ | ০ |
| উত্তম হু | ১ | ০ | ০ |
| মধ্যম উত্তম | ১ | ০ | ০ |
| মোমবাড়ী | ১ | ৫৭ | ৫৮ |
| মিছরি উত্তম | ১ | ১০ | ১৭ |
| মিছরি মধ্যম | ১ | ১০ | ১৪ |
| মোড়া উত্তম | ১ | ৪৫ | ৫১ |
| মধ্যম | ১ | ৪১ | ৪১ |
| চিনি কাশীর | ১ | ৮১ | ৮ |
| মধ্যম | ১ | ৭ | ৭ |
| খার শিলী | ১ | ০ | ৪ |
| চেতন | ১ | ১০ | ৫ |
| তামাক | ১ | ১১ | ৫১ |
| চন্দন | ১ | ১১ | ১৮ |

এই সমাচার দর্পণ প্রকাশের পাঠ্যক্রমে পুত্রের দানিশী হু হু হু হু হু হু হু হু হু হু হু হু
আপন নাম পাঠাইলে নতুন হু
কায় না শিবে তবে তিনি প্রকাশের পাঠ্যক্রমে সমাচার দানিশী হু হু হু হু হু হু হু হু হু
কায় না শিবে তবে তিনি প্রকাশের পাঠ্যক্রমে সমাচার দানিশী হু হু হু হু হু হু হু হু হু

সংবাদ দর্পণ

১৩২ সংখ্যা।

শনিবার।

১৩ জুন সন ১৩৭১।

১১ আগস্ট সন ১২৮৮।

দুইটি মাসের মধ্যে কার্যকরিত।

দুইটি মাসের মধ্যে কার্যকরিত।

বোম্বাইয়ের বাণিজ্য।

১৩১ ও ১৩১২ সালের বোম্বাই শত
করা হয় টাকার মূলের কমান হওয়া
হইলে শতকরা টাকার টাকার আনা
দিয়ে। বিক্রয় করিতে হইলে শতকরা
টাকার টাকার দিয়া।

তাঁহাদের মধ্যে মূলের কাণ্ড
হয় করিতে হইলে শতকরা টাকার দিয়া
করিয়া।

মজার পঞ্জিকা।

| | | | | |
|----|----|-------------|----|-------|
| ১০ | কু | শনিবার | ১১ | আগস্ট |
| ১১ | কু | রবিবার | ১২ | কু |
| ১২ | কু | সোমবার | ১৩ | কু |
| ১৩ | কু | মঙ্গলবার | ১৪ | কু |
| ১৪ | কু | বুধবার | ১৫ | কু |
| ১৫ | কু | বৃহস্পতিবার | ১৬ | কু |
| ১৬ | কু | শুক্রবার | ১৭ | কু |

সংবাদ দর্পণ।

রাজকর্ম নিয়োগ।

১৩ জুন ১২৮৮।

শ্রীযুক্ত জে. ই. ওলিফান্ট সাহেব জিলা
শালার কালেক্টর হইয়াছেন।

শ্রীযুক্ত মি. ডি. রুদ্র সাহেব বালারামের

হাসিন্দপুরের হিভারি কালেক্টর হইয়া
ছেন।

মুন্সীমকোর্ট।

গত ১৩ জুন প্রদ্বারে মুন্সীমকোর্টের
অদালত খোলা গিয়াছে।

মাদারের মুন্সীমকোর্ট।

মাদারের পারিআলা নামে এক গৃহ
দেয় বটীর কন্যাকে এক মৃত বালক তা
মিত্র জল তাহা দেখিয়া এই গৃহে আনা
বালককে গুলিয়া মুলিসে মৃত্যু দিন
তাহাতে নাহিল। জামাদার ও মৃতদায়ক
দুয়োটা ও বালকজনে ও মাদারের এক
না এই তিন বৎসরজা ইহারা একত্র হ
ইয়া এই পারিআলাকে ও তাহার চাকর
আরনাচেন্দ্রকে বৈরিতা ইয়াব কবুল কা
রন দান। গৃহের কলি মিত্রমিত্রারা
তাঁহাদের চাকর টাঙ্গিল ও হাত পায়ে
বঁটা লাগাইল ও মাদারের প্রত্যেক লোক
প্রাণে ঢুকিল ও বিজা ও বোম্বাইয়ের
বংশন কাইন ও লাইকাইয়া বৈরিতা
করাইল ওখানি তাহার কবুল করিল
না। পরে ঘটনা মোকদ্দমা তদারকতে
বিতর হইল ওখান পারিআলা ও আরনা
চেন্দ্রের ওপর কঠিন তহশীল সাধ
হইয়া দুয়োটা ও জামাদারের এক বংশ
মোয়দে কাইন হইল ও বরকদার তিন
জনের ওপর মাস মোয়দ হইল ও চাক
রিহইতে বরতরফ করিল।

মুরশেদাবাদ।

মৌকাম মুরশেদাবাদে ১৩ জুন
তাঁহাদের শ্রম আনিয়াতে তাহাদের
কোন বেচা মৃত তদ্রিমে মেখান হইল
আরত হইয়া হইল তিন দিন মাদার
হইয়াছে। ইহার পরে যে বৃদ্ধ তদ্রি
কুলিআলি তাহা। অন্যদিকে বৃদ্ধ হই
য়াছে এবং অতিশয় হুঁত হইয়াছে
কর্ম বদ হইয়াছিল কিন্তু তিন দিন
দের পরে বৃদ্ধ কর্ম মুরশেদাবাদে
এক মেখানে শ্রমদায়ি যে বৃদ্ধ হই
য়াছিল তাহাও হুঁত হইয়াছে।

কালিপুর।

কালিপুরের ময়দার আলা গেল
মেখানকার শ্রমদায়ি সাহেবের
অন্য এক কালেক্টর সাহেবের
চী করিয়া মেখান শ্রমদায়ি
কোরদার মাদার বালক গুলি
আজ তাহাদের মোকদ্দমা
বিদ্য শিকার এক মোকদ্দমা
তাঁহা মৃত পত্র দিতে জল বা
বিদ্য শিকার করিতেছে। এ বিদ্য
ক ইমৃত অনরল মুলি মেখান
তিন দিনে মৃত শত টাকার
এক শ্রম মাসে মোল টাক দিতে
করিয়াছেন মাদার গুলি
টাকা কলপুরে মদা হইয়াছে।

চুরি।

গত দুই মাসের মধ্যে মোক

সমাজের দর্পণ।

কলিকাতাতে অভিশয় ছুরি হইতেছে
অন্য দেশের সেক্টারি সাহেবের ঘরে
অন্য কএক টোরা গিয়া এক বাজু বাহির
করিয়া টোকা ও নোট যে ছিল তাহা লই
য়া গিয়াবাদের নিকটে বাজু ফেলিয়া গি
য়াছে। তাহাতে যে লোকের প্রতি
সন্দেহ হয় তাহারদিকে বিরুদ্ধাভি
ম্বা করিতেছেন যদি নোটের লম্বুর সাই
রে নিকটে থাকে তবে গের ইরা ঘাইতে
পারে। অন্য এক দিবস অমৃত দুইন
হো সাহেবের ঘরে অন কতক টোরা গি
য়া এক কপাল রান্নান কপাল রেকাব সময়ে
পড়িয়াছে কিন্তু মোঃ আনবাজারে এক
গের ইরা পড়িল তাহার ঘানে সেই বা
জলের রেকাব পাওয়া গেল তাহাতে তা
হাকে জেলখানাতে রাখিয়াছে।

মূল।

মোকাম কলিকাতার ডায়মন্ডসার
গলিতে লম্বুনামে এক হিন্দুদানীয়া ছা
মূল হইয়াছে ১১ জুন মোমবার তাহার
বিঠার হইল তাহাতে আনা গেল ৮
তারিখে এক জন পারসী দেশীয় ঘুরা লো
কের সহিত বিরোধ করিয়া বিবর্তন ক
রিয়াছিল। তাহা লোকেরা আশিয়া এক
জন ঠিকি-সংকে আলাইল কিন্তু সে
যে উত্তর ভুলন করাইল তাহাতে কোন
ফল আসিল না যেহেতু অনেক বিলম্ব
হইয়াছিল পরে বোনা দুই প্রহর এক ঘ
ণ্টার সময়ে তাহার মৃত্যু হইল।

মোঃ জলদা।

বিআপরের নিকটবর্তি মোঃ জলদা
হইতে ১০ মে তারিখের সমাচার আমি
দ্বারা প্রচারিত আনা গেল যে ১ মোকা
য়ে ওলাঙা রোগী অভিশয় বর্জিত হইয়া

ছে এবং সেখানকার ডাকঘরের অধিক
কান্তন ওয়াকির সাহেবের ওলাঙা রোগী
হইয়া দশ ঘণ্টার মধ্যে মৃত্যু হইয়াছে
এবং দেহ শত মৈদা ময়িয়াছে। ইহাতে
সেখানকার লোকেরা দ্বিষ্ট করিয়াছে
যে ঘটনা যেম হয় ওখান রোগীর বৃদ্ধি
হয় এবং বৃদ্ধি হইলে রোগী মূল হয়।

সেখানে আর এক জনের হইয়াছে
যে এক জন সাংদার ডিন শর্ট ঘোড়স
আর একজন করিয়াছে অনুমান হয় যে
তাহারা বিআপরের নিকটে তৎকাইতি ক
রিবেক তাহারদের দল ইয়েং বৃদ্ধি হই
তেছে।

ওলাঙা।

মোকাম বোম্বেতে ওলাঙা রোগী যে
কল বৃদ্ধি হইয়াছে তাহানী ৩১ হিন্দাব
জাত হইয়া।

| তারিখ | পুরুষ | স্ত্রী | বালক | ধর্ম |
|-------|-------|--------|------|------|
| ১০ মে | ১০ | ১ | ০ | ১৮ |
| ১১ মে | ১০ | ১১ | ১ | ২০ |
| ১২ মে | ১০ | ১১ | ০ | ২১ |
| ১৩ মে | ১১ | ১১ | ০ | ২২ |
| ১৪ মে | ১১ | ১০ | ১ | ২৩ |
| ১৫ মে | ১২ | ১১ | ০ | ২৪ |
| ১৬ মে | ১২ | ১১ | ০ | ২৫ |

ইহার মধ্যে ইতর লোক অধিক ঘা
রা রোগেতে অধিক থাকে ও অধিক বর্জ
করে।

ঘাড়া ওখানকার রাজধানী বাটেরিয়াতে
এমত ওলাঙা হইয়াছে যে প্রতিদিন দেহ
শত বর্জিত দুই শত পর্যন্ত লোক মরি
তেছে।

কলিকাতাহইতে ১০ জুন সমাচার আ
মিয়ারে তাহাতে আনা গেল যে সেখানে

ওলাঙা নবদ্বিয়াতে যেতমআর গোঁরা
পলটনের মধ্যে অনেক লোক ময়িয়াছে
পদাতিক গোঁরা পলটনের চারি অনেক
১১০ জন তারিখে মরার হইয়াছে ও হান
পাটনাল অনেক গোঁরা লোক পাড়িয়া
আছে।

জতেগাঁও।

মোঃ জতেগাঁওর ১৮ মে তারিখের
পত্রের আনা গেল যে লখনৌয়ের গাঁও ল
বাই ওজীর সাহেব আলা দী বাহাদুরের
পুত্র চাকর অমৃত মীরজা মৈদাআলা দী
মোঃ জতেগাঁও এক সাহেবের নিকটে এক
বড় বাড়ী লইয়া বোন করিয়াছেন তা
হার সাহেবেরা তাহার ঘোড়টি ২০
ভয় করুন এবং তাহার সহিত তাহার
দেহ অধিক আক্রমিত হইয়াছে। এবং
১ মীরজা সাহেব সেখানে থাকিয়া এক
বিবাহ করিয়াছেন তাহার পুত্র্য পান
পত্রের দিবস ১১ তারিখে তাহা সাহেব
লোককে নিয়ন্ত্রণ করিয়া ওস্তম আহার
দিয়েছেন তাহার পরে বাজী ও লুট ও
গাঁও ও ভক্ত্যম পুজতি অনেক ডামানা
আমোদ হইল এবং পাঁচ হাত ওয় আরীর
ওপরে ওঠিয়া এক লোক নানা কাব্য
করিল ইহাতে সাহেব লোকেরা অতি
সন্তুষ্ট হইলেন। পরে ১৪ তারিখে বিবা

হের দিবসেও ওখানকার তাহা সাহেব ও
বিবি লোকেরা আশিয়াছিলেন সে দিব
সেও অতিবহু খানা হইল ও বিবি সা
হেবেরা অনেক নৃত্য করিলেন কিন্তু
অভিশয় প্রায় পুণ্ড অধিক কাল দূর্য
হইল না। পরে নানা পুকার রোগীনা
এ বাজী হইল ইহাতে লোক লোক ডামা
না দেহিতে অধি হইয়াছিল। মীরজা
সাহেবের নাম ওলাঙা রোগের প্রভাব

সমাজের দর্পণ

দেব মত ইহাতে সাহেবেরা তাঁহার প্রতি অত্যন্ত ভক্ত হইয়াছেন।

মহিন।

পশ্চিমে অঞ্চলহইতে কোন ভাগ্যবান লোকের পুতি নালিত অনেক মহিম লইয়া রক্তকরা তপস্বী-বর্শে অজাতার পুণ্ড্র এতদেশে চোইবার কার্যে আসিয়াছিল পরে গিট বৃহবার মোঃ রিসভার ঘাটে গিয়া পার করিয়া পূর্ব অঞ্চল লইয়া যাইবার ওযোগ্য করিয়াছিল তাহার মর্যে এগার মহিষমান পার হইয়াছিল মোঃ মতদেহে অনেক লোক একত্র হইয়া তাহার পীঠ মহিষকে ঘেরিলে এক ভাগ্যবান লোক বাঁড়ার দরওয়ানকে মাতিয়া অত্যন্ত রাগান্বিত হইয়া পুনরাবর গিয়া পার হইল। পরে মোঃ কোতুও গিয়া এক স্ত্রী লোক আশ্রম পুত্রের কার্যে জলদানীয় লইয়া যাইতেছিল তৎকালে সে ঐ মহিষকে দৌড়িয়া আসিতে দেখিয়া চারি পীঠ জন পুরুষ ও ঐ স্ত্রী এক ইটের পাড়ার ওপরে উঠিল কিন্তু স্ত্রী ওটিতে ঐ মহিষ দৌড়িয়া ঐ স্ত্রীকে শূরবারা ভ্রমিতে ছে দিয়া তাহাকে মৃত্যু করিল এবং তৎকালে দৌড়িয়া দক্ষিণ দিকে গিয়া মোঃ জকালীতে এক মুরোর স্ত্রী জন আসিতে ছিল তাহাকেও ঐ জন মৃত্যু করিয়া মোঃ বলির খাল পর্যন্ত দৌড়িয়া গিয়া আর যাইতে পারি নাই পরায় বরাবর পশ্চিমে মুখ যাইতে গিয়া দৌড়িল। তাহার রক্তকরা তাহার দিগে হরিবার অনেক চেতী করিল কোন মতে থিরা গেল না।

পূর্বাংশে তাহার কার্যে জনা গেল যে গিয়া পার করিবার কালে রক্তকরা সে মহিষ মৃত্যুর দ্বারা পশ্চিমে গারে রাখিয়াছিল এবং তাহার পুত্র গারে গিয়া

আশ্রমারদের বাড়া না দেখিয়া কিন্তু পুত্র হইয়াছিল।

নৃতন পথ।

মান্দরাজের পল্লনের কাষ্ঠান জগত ক্ষুদ্র সাহেব এক ভয়ানক পথদ্বারা ইও যোগে যাইতে ওযোগ্য করিয়াছেন এবং অল্প দিন হইল এক নৃতন পথ দিয়া অতি দূরমে ইওযোগ্যহইতে ভারত বর্ষে আসিয়াছেন সে পথ কেহ কখনও দেখেন নাই।

মান্দরাজ।

মোঃ মান্দরাজের ১ জুন তারিখের পত্রে জনা গেল যে মান্দরাজের ইমদা বিক্ষ জগত মর ডায়ন হিসুন সাহেব ৩ মে বৃহবার সকালে কর্ণাট দেশের জঞ্জি মুত নবাব সাহেবের নিকটে আসনার ইংলণ্ডে গমনের কার্যে অনেক পুরাতন শিক্ষাচার্য্যকে বিদায় লইলেন এবং পর দিবসে জঞ্জি মুত নবাব সাহেব ও তাহার নিকটে আসিয়া অনেক শিক্ষাচার্য্য করিয়া গেলেন। পরে ৩ মে বৃহস্পতিবারে মান্দরাজের ডাক সাহেব লোক ও বিবি লোক আসনুমান দুই শত লোককে আশ্রম কাঠীতে নিমন্ত্রণদ্বারা আনিয়া ওতমকণে থানা করিয়াছেন। পর দিবস ১ জুন ঐ সাহেবের আহ্বানে রক্তকরা পুত্র গিটার ডাক সিদ্ধান্তী জঞ্জি মুত বত সাহেবের বাটী অবধি সমুদ্র তীরপর্যন্ত বৈদ্যারী দাঁতাইল সাহেব তাহার মর্যে দিয়া গিয়া আহ্বানে গেলেন এবং সেখানকার পুরান সাহেবেরা তাঁহার সহিত সমুদ্র তীর পর্যন্ত গেলেন সে সময়ে গিটে মৃত্যু ভোগ হইল ও আহ্বানে মৃত্যু ভোগ হইল।

মান্দরাজের বত সাহেব জঞ্জি মুত ডায়ন মনরো সাহেবের বিবি নীতি হইয়া মিত্র বায়ু মেহনত মোকাম বত লরে গিয়াছিলেন ইহা পূর্ব জানিয়া গিটে এই ক্ষণে তাহার সমাচার পাওয়া গেল যে বিবি সাহেবের শতাব্দীক অনেক হইয়াছে এবং ৩ জুন তারিখে মোকাম মান্দরাজে পৌঁছিবেন।

কবরী।

স্বীর্দেব দেশের রাজধানী নগরে এক ইতর লোক থাকে সে হল পশ্চ পুর্ণালী দির মস্তক কাটিয়া আনিয়া শহরে কখন বান লোকের দিগে দেখায় এবং তাঁরা তাহা দেখিয়া কিছু পয়সা দেয় কিছু কাল পরে ঐ লোকের স্ত্রী মরিল সে আপন স্বীর শব কবরে দিবার কার্যে মৃত্যু আনিয়া কিন্তু সে এমন কবরী যে শব নিকটে না পুড়িয়া কেবল কাঠা পুড়িয়া নিম্নক আঁটিয়া কবরে দিল এবং আপন স্বীর শব লইয়া জরনে রাখিল সেই শব ভক্ষণ করিতে শূণ্যলিঙ্গ আসে আইল সেই অশুর মস্তক কাটিয়া দিয়া শহরের অধিক্ষেত্র দিগে দেখা ইয়া পয়সা লয়। ইহা লোকেরা সম্মান পাইয়া তাহাকে ধরিয়া আনিয়া তাহাকে সে লজ্জিত না হইয়া শূণ্যলিঙ্গের মস্তক দেখানের পয়সার দাওয়া করিল।

মহানন্দোত্তে মরন।

স্বীর্দেব দেশের শাহর নগরে এক সাহেব আপনার মর সাহেব করিয়া মৃত্যুতে আপন নামে টীকাট দিয়াছিল পরে ঐ সাহেব তাহে তাহার নামে টাই হইল তাহা সে যখন সেই ঘরে গেল ও পুত্র দ্বারা আপন নাম লব্ধ দেখিয়া বাটার মর্যে গিয়া আপনার লাভের কথা লিখিয়া

এই নগরের পশ্চিম প্রান্তস্থিত হাণ্ডাখানিতে পুতিসমূহে শনিবারে জাপা হয়। যাচার লগনের অবশ্যক হয় তিনি শনিবারের হাণ্ডাখানিতে জাপান মার পাতিতলে সম্বাহিত করায় তাহার বিকটে পাঠান যাবতক তাহার চন্দা মাসে এক টাকা। তিনি দ্বায়ত করিয়াছেন যদি তাহার নিত্য গায়ত্রী পাঠেছ তবে তিনি শ্রীহরীপুরের হাণ্ডাখানিতে নগদার বিদ্যোতক তাহার বিকটে পাঠান যাবে।

সমাচার দপণ

বিশেষতঃ

সর্বহিতপুয়োজনক সর্বদেশীয় সর্ববিষয়সূচক সম্বাদ পত্র

১০০ সংখ্যা

শনিবার ৩ এপ্রিল সন ১৮৭৭। ২০ টোড সন ১২১৮ ॥

দপণে মুক্ত সৌন্দর্য্যমির কার্যবিবরণঃ ।

বক্তৃত্তাঃ মহা কামত সমাচার দপণে ॥

ইন্ডিয়ায়।

ইন্ডিয়ায় মেট্রিক্স কোল্লানী সকলকে জানাইতেহয় যে শ্রীযুত জার উলি
হুন্সলু ম্যুটিং সন ১৮৭৭ ৩০ এপ্রিল তারিখে শ্রীযুত মেট্রিক্স ফল্টন
কোল্লানীকে বেসে নিরুপী হইলেন এমন ইন্ডিয়া মেট্রিক্স কোল্লানী খ্যাত
হইল ।



কলিকাতা ১১। মোকাম কলিকাতায় ১১ টম ডক্কায়র সন্ধ্যা সমস্ত
অভিষেক কর বৃষ্টি হইয়াছে কিন্তু কাহারো কোন ক্ষতি হইয়াছে এমন
কথা যায় নাই কিন্তু যেমত মেঘগর্জন ব্যর্থ হইয়াছিল তাহাতে ক্ষতি হও
বের সম্ভাবনা বটে পুণম বৃষ্টি ছাড়াই তিষ্ঠায়ারে যে বৃষ্টি আরম্ভ হইল
সে মাতশয় বৃষ্টি আট ঘণ্টা দারি পর্যন্ত হইল ইহাতে নীল পুষ্কিতর আ
বাস্তব হইবেক এবং শনিবারেও সেইরূপ বৃষ্টি হইয়াছে ।

বিলী ১১। মোকাম দিল্লীতে ইন্ডিয়া কাস্তান রটেবুলী সাহেবের বাটী
মস্ত হইয়াছে গত সন্ধ্যাে ছাণান গিয়াছে এইখানে বিশেষ কান্দা গেল
যে তাঁহার দশ হাজার টাকার বিনিময় মস্ত হইয়াছে কিন্তু বাবু অল্প ছিল
ইহাতে অনেক রকম হইল নতুন অনেক মস্ত হইল । এবং বিলীর
ছাইনি দড় হইল । গত দিগেবর ও জানুয়ারি মাসে মনোঃ মেঘগর্জন হও
রাত্রে অনেক শস্যহানি বিশেষতঃ যব ও পেঁপেমের অনেক ক্ষতি এবং
বটপুষ্কিত শস্যের অল্পহানি হইয়াছে তথাপি শস্য সুলভ আছে বটে
টাকা মেনে গোদুয় টাকাত ৩২ সের বিক্রয় হইয়াছে ।

চুনার গড় ১১। মোকাম চুনারে ২২ মার্চের সমাচার আপিয়াছে যে গড়
৮ মার্চের সেবারে অভিষেক উক্ত বাবু পুণম হইয়াছিল কিন্তু তাহার পর শী
তম মাস বহিঃতঃ । পূর্বাঞ্চলে শীতাত্তর হর সাহেব পোকেরা এল
ধনের টাচি লাগাইয়াছেন কিন্তু অবাণি মল দিতে হয় নাই । এবং শ
স্যবি উত্তম জমিয়াছে সেখানে এক জন সাহেব পাঁচ সের আদু রোপণ ক
রিয়াছিলেন তাহাতে পাঁচ মেনে আদু পাইয়াছেন ।

দেও ভূমণ ১১। এক সাহেব অনেক বেশ ভূমণ করিয়া এই জনে
মৌহইতে উজ্জয়নীর বিবর এক পত্র লিখিয়াছেন তাহাতে লিখিয়া
যে উজ্জয়নী নদীর বিবর আরবুদ ফলন লিখিয়াছেন যে তাহার
উজ্জয়নীর নিকটস্থ লিখিয়া মনোঃ কখনং দূত বহিত । কিন্তু কখন
দূত দেখিয়া তিনি যেমত চমৎকৃত হইলেন এমনও তাঁহাকে যাহার
স্থান করে তাহাও তাৎ দেখিয়া সেইরূপ চমৎকৃত হয় ।

এবং উজ্জয়নীরইতে যোল মৌশ অস্তর ইগের শহর সে হৌদপার
প্রাশানী স্থান দিল্লীর রাজধানী গড় গোড়ালিরের সহিত তুল্য
হইলে ইগের অতিক্রম্য বোধ হয় । ইগেরের নাক্ত ছয় কোশ দূর
এই দেশের ছাউনি । ইগের গুস্তি কালে বড় সুখ বোধ হইল
লোকেরা কহে যে সেস্থান পৌরাণিক কিন্তু তাহার কারণ দেখি না
যাহার উত্তম গৃহে বাস করে তাহার সুখ থাকে ও সেখানে বাস
বৈরাহ্য এবং সুখ ও বটে সেখানে আট টাকাত ২৭ সের ভূমি
এক টাকা মেনে পাওয়া যায় কিন্তু সেখানে লোকেরা দিগের বেতন আঁকি ।

মাক্কি-বিশ্বক-মোনা ১১। আদিয়া ও ইউরোপের মধ্যবর্তী রবিবারী
ফিল নামে এক ক্ষুদ্র ভূমি আছে সেখানে পুতিবৎসর তুলাই মাসে
মেনা হই । ঋতে সে ভূমি অধিক লোক বসতি নাই তথাপি ঋত
সে ভূমি কাঠের দ্বারা মুক্ত হই পুষ্কিত হয় ও বৈষ্ণব নানা পুষ্কিত
দিয়া অতিক্রম্য করে এবং দৃশ্যশালা ও গতিশালা ও যাত্রাপাড়া
স্থানে পুষ্কিত হয় এবং ব্যাধি কারণ অনেক দেশীয় লোক সেখানে
হয় । রবিবারী ও তাহার দেশীয় ও আরবীয় ও পরগী ও হিন্দু
কন্নীয় ও পোলগীর ও জর্জীয় ও ক্যানীয় ও ই-গুগীর ও আমেরিক
পুষ্কিত নানা দেশীয় লোক নামা বিধ নামদী দিয়া ক্রয় বিক্রয়
সেখানে আইনে । এবং কানীর দেশইতে শাসনিকরণে অনেক
জন আদিয়া বেকান করে তাহার দালান আরবীয় লোক তাহার
অনেক বেশ ভাষা জানে । ঐরবার ও মহাকন উত্তরপক্ষীয় দৃশ্য
বের দ্বারা স্থির হইলে ঐরবারের হস্তে অসহন হস্ত দিলেই নগর
হয় এই রীতি আছে । এই সময়ে ঐ দালানো উভয়ের হস্ত ধরিয়া
টানি এসকলকে যে দুই তিন দিবস পর্যন্ত উভয়ের হস্তে বেধে
তাহাতে যাহার হস্তের বেধে অধিক দিবস না থাকে সে মেনে করে
বিক্রেয় আবার ক্ষতি হইয়াছে ।

নশিকানি চ্ছের। যোতান কলিকাতার হাটখোনার মাঝের বাণীয়ে
এক চাঁদুকানী বাস করে কোন দিন বালুকানী ঘরে ছিল না। সেখানে বারান
এক যতকাল তাহার ঘরে আনিয়া চাঁদুকানীর ভ্রীর সহিত কথোপকথন
করিতছিল এই সময়েই চাঁদুকানী পানন ঘরে আইন দেখিয়া তাহার
ভ্রী অন্তিমিলু তাহার নিকট আনিয়া কহিল যে এক অপরিচিত লোক ঘরে
কিছুনা আনিয়াছে। ইহা শুনিয়া চাঁদুকানী তাহার নিকট গিয়া খানক
কান্না কান্না কহি ইহাও শুনয় অন্তিমিলু বিরোধ হইল। পরে চাঁদুকানী
অতি কষ্টে বহুদলবাসে চাক্ষুসে বহুদিন গিয়া চাক্ষুসে হইত বাহিরকলম

সমাদার দর্শণ ॥

ইহাতে সে অত্যন্ত কাতর হইল পরে তাহার মানিক ও হেমন করি জন
গেল উভয় হৃদয় সানাই হইয়াছে শব্দ কহা যায় নাকি।

শ্রী শিক্ষা ॥

এতদেশীয় শ্রীগণের বিদ্যাবিচারক এক গুর পুৰুষ পুণ্যপন্থকহারে
প্রাকমণিগান্ধার ছাপা হইয়াছে তাহার ভিত্তি দেওয়া থাকিলে
এতদেশীয় শ্রীগণের ইদানীং বিদ্যাভ্যাস করেন না কিন্তু বিদ্যাভ্যাস
করেন যেরূপ নাই। যদ্যপি শাস্ত্রীয় ও ব্যবহারিক যেরূপ প্রকৃত করে
পুৰুষের শাস্ত্রী শ্রীগণের বিদ্যাশিক্ষাতে অবশ্য পরামর্শ হইতেন। তখন
যাক্ষরপুণ্ডরীক মৈত্রী অনুব্রত শ্রীগণের শ্রীগণের চিত্রলেখা লীলাবতী
কণ্ঠাটায়ারী নন্দুগণসেনের শ্রী ও এনা ইত্যাদি পুৰুষের শ্রী নরক অশ্বের
শাস্ত্রাধ্যয়ন করিয়া তখন শাস্ত্রের পারদর্শিত্ব বিদ্যাতে ছিলেন এবং ইয়া
দ্বীপের মহারানী ভবানী হুতী বিদ্যাগন্ধার শ্যামানন্দুরী ব্রাহ্মণী এনা দেখা
গন্ধা ও নানা শাস্ত্র ও দর্শন বিদ্যাতে অতিউৎপন্ন হইয়া অতিউৎপাদিত
পুণ্ডরীক হইয়াছেন। বিদ্যাশিক্ষাতে তাহাবিধের কোন অংশে মানবুটী
কিছা অপব্যয় হয় নাই বরং যশোবৃদ্ধি হইয়াছে।

এবং বহুসংখ্যকানিয়মে ব্রহ্ম দিগ্বিজয়েন অনেকের বাসের আগম
বে বুদ্ধজ্ঞান ভাষা যাক্ষরপুণ্ডরীক আশ্রম শ্রী মৈত্রীরূপে উপদেশ করিয়াছিলেন
তদ্বারা মৈত্রীর চিত্রলেখা হইয়াছেন তাহাতে তাঁহার কীর্তি অমাপ্য যাছে
এবং বুদ্ধার পুত্র অতি তাঁহার শ্রী অনুব্রত অশ্বের শাস্ত্র পাঠ করিয়া বিদ্যা
বতী হইয়া গন্ধাকে শাস্ত্রাধ্যয়ন করিয়াছেন এবং দুগন্ধারনন্দনা পাণ্ডব
পত্নীর পাণ্ডবা দিল্লিহালা। এবং রত্নপুত্র পুত্র দিল্লিহালা ন্যায় ব্রাহ্মণ
যারা জীকৃত দিকটে পুণ্ডরীক করিয়াছিলেন জীমদগ্ন্যতে গুহে ব্রহ্ম দিগ্বিজ
ছেন। এবং চিত্রলেখার শাস্ত্রী ও শিল্পবিদ্যা এই শ্রীমদগ্ন্যতে উয়া
হরন পুত্রের ব্রহ্ম দিগ্বিজয়েন। এবং উদয়নাচার্যের কন্যা লীলাবতী
এমত পণ্ডিতা ছিলেন যে তাঁহার যামির সহিত শরভাচার্যী যখননা বিচার
করিলেন তখন এই লীলাবতী উভয়ের মধ্যস্থ ছিলেন এবং তাঁহার চিত্র
অনেক গুহ পুণ্ডিত আছে। এবং দিক্‌ত্ৰিগোময় গুহকর্তা তাক্ষর
চার্যের কন্যা বিদ্যা লীলাবতী অজ্ঞানের তাঁহার ভুল্য ছিল না। এবং
কান্দি দেশের রাজগণী এমত পণ্ডিতা ছিলেন যে কাশ্মির পুণ্ডিতের কবিতা
কুহু করিয়াছেন। এবং লক্ষ্যণ সেনের শ্রী যেরূপ কবিতা করিয়াছেন গতি
ভেদে সে সকল পুণ্ডরীক জানীর দিকটে পুণ্ডিত হইয়াছেন। এবং
পশুপুণ্ডরীক দিক্‌ত্ৰিগোময় দিক্‌ত্ৰি আছে যে তালপুণ্ডরীক দিক্‌ত্ৰি
নামক রাজার পুত্র মাধব য সুদোহন্যতে বিবাহ করিতে দীর্ঘতী নগরে
গিয়া সুদোহন্যকে পুত্র দিগ্বিজয়েন তখন এই সুদোহন্য পুত্র পাঠ করিয়া
সমুদ্রের দিগ্বিজয়েন। এবং বীরশিংহ রাজার কন্যা বিদ্যা যাক্ষরপুণ্ডরীক
নানাপাশ্রয়াদয় করিয়াছিলেন। ও রাজলহরী রাজা মহারাজ রামকান্তার্যের
শ্রী মহারানী ভবানী বিদ্যাভ্যাস যারা চিত্রলেখা রাজেশ্বরী করিয়াছেন কানী
তে তাঁহার অপরূপাচার্য আছে অদ্যাপি পুণ্ডরীক উত্তরা লোকেরা
তাঁহার নামধারণ করে। এবং রাজ্যের ব্রাহ্মণ কন্যা হুতী বিদ্যাভ্যাস
নামে প্রাতী হইয়া ব্রাহ্মণ্যতে কানীতে অধ্যাপনা করিয়াছেন এবং সে
খানে তাঁহার সর্ব নিমগ্ন হইত। এবং কোটানী পাকানুয়ে শ্যামানন্দুরী
নামে এক ব্রাহ্মণ যাক্ষরপুণ্ডরীক যাক্ষর শরিয়ামনে।

জুগুপ্সু ॥ গত ৩ এশিষ্ট বৃষাব্দে প্রায় ১১ বৎসর কৃষি মিনিটের সময়ে
অতিশয় উৎপন্ন হইয়াছে এমন উৎপন্ন দুই বারি বৎসরের মধ্যে শুর হয়
সাই জুগুপ্সুর পরে বৃষাব্দে অর্ধমণ্ড পর্যন্ত অধিক ছিল।

পুণ্ডরীক ॥ মোকাম শ্রীমদগ্ন্যতে কাক্ষর শ্রীকান্ত হইয়াছে অগাধ
নগ্নাধে বিশেষ ছাপান হইবেক।

মোঃ বৈদ্যনাথ ॥ শ্রীমদ বৈদ্যনাথ চন্দ্রের অধিকারির পর
নৌক পুণ্ডিত হইয়াছে সে অধিকারির সোত পুত্র মহোদয়গুহে তপস্বী
সেবাতে সে অধিকারী হয় নাই এবং তাহার যে পুত্র আছে সে পুত্রবর
নহে তাহাতে মৃত অধিকারির কনিষ্ঠ পুত্র সেবাতে বিদ্যুৎ হইল তাহাতে
অপুত্রবরক এই মৃত অধিকারির সোতপুত্রের পুত্র মোঃ শৈবিত্তে হইল
কালকর সাহেবের দিকটে আপন শৈবিত্তে যোবার ধর্মবতে মানস করিলে
সাহেব তাহার কবিত্তে মঙ্গলম্বে গিয়া সকল বিদ্যাভ্যাস করিয়া আয়া করি
লেন যে অপুত্রবরক যাক্ষরবর ব্রহ্মপুত্র সাহেব তাহা তাহার পুত্রিনিবি
হণে ধর্মলিঙ্গার ব্যক্তি সেবা করিতে কিন্তু পুত্রবরক হইলে আপন সেবা
করিতেক। তাহাতে ধর্মলিঙ্গার উত্তর করিল যে এ সেবাতে যে বিদ্যুৎ হয়
সে সাংসারিক ভাববহুইতে বিরত হইয়া অতঃপর জামি তাহা পরিত্যাগ ক
রিয়া সেবাতে বিদ্যুৎ আছি জামি কিলে ত্যাগ করিব। এবং মঙ্গলম্বে
কপুত্রবরককে কহিল যে জামাকে অর্ধমণ্ড হিঙ্গা দেহ তখন কোন বিত্ত
হইবেক না। সে সমত হইল না পরে সাহেব এই সকল বিদ্যার ব্রহ্ম
বিশেষ করিয়াছেন সেখানহইতে যে লক্ষ্য হইল। ইহার পরে নয়া
চার কানী যাব নাই।

এই বিষয় জামরা বিশেষ জ্ঞাত নহি অতএব যদি কেহ ইহার বিস্তারিত
জ্ঞাত থাকেন তবে অনুগ্রহপূর্ণ শ্রীমদগ্ন্যতে ছাপান্যতে পাঠাইব
গণে অর্পণ করা হইবেক।

হাঁহজানি ॥ বিদ্যাপুত্রের জীমদগ্ন্য ১৩ টৈজ মোমবারে কতি
কতাহইতে হাঁহর টাকার হিঙ্গা নাই বৌত্র করিয়া নইয়া রাজগণ
১৩ সময়ে গাতিতে উত্তরা আপন বাকী থাকিছিল গাভের দাঁটে চৌরশ
পাক্ষিমে তন তনক গোরা আশ্রিত গাভি ছিল। তখন মণ্ডল বাহ হইল
তে নইয়া গাভির কোন গোপন করিয়া রাখিল। এই গোরা লোকের
মণ্ডলের ব্রহ্মণ্ড ও চিত্র পুণ্ডরীক নইয়া মোম পরে মণ্ডল বোত নইয়া গোরা
সমাদার দিল তাহারা গোরাগণিগণের অনেক অধেষণ করিল কিন্তু পাইল না।

পুত্রিত পুত্র ॥

শ্রীমদ সমাদার দর্শণ পুণ্ডরীক মহাপ্রবুৎ এই পত্নাবর্তী তনুক পণ্ডিত
ব্রহ্ম পুণ্ডরীক অর্পণ করিয়া অনেক মানসি দুর করিয়া উপসৃত করিয়ে।

ব্রহ্মপুণ্ডরীকানুসঙ্গ জন বিবর্তি ব্যক্তি পুত্রিত পুণ্ডরীক ॥

সংপুত্রিত ব্রহ্মপুণ্ডরীক নানা পুত্রার ব্রহ্মপুত্র কবাবহার বেত্তা ব্রহ্মপুত্র
পাশবর্তি মানসি অত্যন্ত গীত হইয়া পুণ্ডরীক করিতে ইহাতে কোন
ব্যক্তি দিয়া দিয়া যেরূপ উদ্দেশ্য নহে এবং বিশিষ্ট লোকের পাণ কহ
দিবার এবং তনুকপণ্ডরীক মোম দিগ্বিজয়েন তাহা অতঃপর ইহা পুণ্ডরীক
করিলে লোকহিত বাড়িতেক যেরূপ অধেষণ নাই।

সমাচার দপ্তর ॥

অথ পুত্রঃ । ইমানান ভাক তত্ত্বজানি পতিভাতিমানি যাকি হিমে
 বহু জনপদ অভিমনি তপস-সারি গচ্ছন্তি। বসিকাব গভান
 যজেক যমি লোকোক্তি কি বিগুণ শাস্ত্রাবলম্ব কঠরা স্বধরাস্ত্র
 পতিভাগানুগি তিক্যাব্যাপি পুত্রঃ পুত্রঃ ইত্যেকেরে প্রকাশ্য নধু
 পুত্রঃ ইতিপি নতান কলেরে নতিত কংসার যোগাবাপি বচনানুসারে
 পুত্রিকোক্তে অস্মাক কন্তব্য কি ন। যথা সঙ্গবিবাহাস্ত্রঃ বুজ্ঞা
 ইতি। ১১। অর্থব্রহ্মসংস্কৃতঃ তৎ পতিভাগঃ যথা। ১২।

[illegible]

১৭৮১ খৃঃ। ব্রাহ্মসংস্করের আরম্ভহিসাধারণ কোন খণ্ড বিশেষতা
 প্রদর্শিত হইত অধিন্যাসক পরন্যাসকগণ স্বাভাবিকভাৱিনিগণের আয়োজন
 প্রার্থ্য পঠনমন্ত্রে পুণ্ডা স্বাধ্যায়ানিচ্ছন কণে বি আর্ম্য এতদ্ব সাধু
 কবিরা মহাশয় সকলের কল্পপূরণবানানুলার দীকি গা:খিক পিকর
 দিয়া মন্দি। যো: কল্পনাস্বাধ্যায় হিন্তি জ্ঞানপুণিঃ। মুক্তায়া তসোহ
 দিগ্গায়ানি যো: কল্পি ॥

ত্রয়ো পুং:। অনেক বিপত্তি লয়ান যৌবন ধন পুত্রত অধিরেকতঃ
 ক কুল-নারদগু হইয়া সোত লজা ধর্ম তত পরিভাগ করিয়া বুধা বেশ
 ন সুগোমন বসোয়া গমনে পুত্র হইয়াছে ইহার শানন ব্যতিরেকে
 সকল দুঃখের উত্তরে বর দ্বি হইতেছে ততঃ কর্মসিদ্ধান্ত মহাপ্রসন্ন
 বর কলিকাতা পুংগবঃমহা মন্বন্তরমণি বর বজরা। যথা গায়ত্রী
 বর বর শিখোক্ত মন্বন্তর: বিবা। বুধা বিহিত য: কোশান তাহার বুদ্ধি
 । তদুচ। যে বুধোহাশ্যপুত্রোহ বসিঃ মোহাঃ সুরাঃ পাসতি
 বুদ্ধি। ভগবংশহা বুদ্ধহাঃব ন স্যাদ্বিন্ম নোকে বহিঃত স্যাৎ পরে চ।
 যত ব্যা কেরতঃ বুদ্ধ মনোনাশুবোকে নহৎ। সন্ধ্যা যোপতিঃ সিব্রাঃ
 বুদ্ধ ব গম্ভতি। তদুচ।। কালাসাত্যগ্রিণে গতা শুক্লা চ পৃথিগ্ভা চ
 ব্রহ্মজ্ঞানতো বিপ্লে জ্ঞানঃ স্যাম্যক্ত গম্ভতি। অস্তা য়েহবদ্যতঃ।
 তঃ কলকতঃ।

এই পত্র অবৈক বিশিষ্ট দোহের অনুবোধে বর্ণনে অঙ্গিত করিলাম কিং
করা পরা পরম নিরোধের সহকারী নহি এবং যদ্যপি কেহ ইহার উপযুক্ত
পাত্রের উত্তর পাঠান তাহাও আমার বর্ণনে স্থান দিব।

এই সমাচারদর্শন গ্রন্থের প্রাপ্যনাতে গুণিসত্ত্বাহে শনিবারে ছাত্র
সমর পাঠালে সত্ত্বাহে কাম্য তাঁহার নিকটে পাঠান হাইবেক তাহার
হয়ে তবে তিনি গ্রন্থপদের প্রাপ্যনাতে সমাচার দিব্যাম্য তাঁহার

कलितहंति आश्रयति
इ० ११ मा० वा० १५ मा०

| গাছাখী জিনিস । | ফের | দেশী ইলিশ । | ফের |
|----------------|-----|-------------|---------|
| পোহ | • | কুলা | ১০০ |
| নীরা | • | চিলী | ১০০ |
| ডাঁরাগজা | • | শোরা | ১০০-১০০ |
| ডাঁরাশুক | • | মুট | ১০০ |
| হররকম ডাঁরা | ১০০ | গোম | ১০০ |
| চাঁদ | ১ | মসুরি | ১০০ |
| দকা | • | মসুরি | ১০০ |
| মহাচ | • | বর | ১০০-১০০ |
| মরজ | ১০০ | | |
| কাফল | • | | |
| মসুরি | • | | |

বীণ ই• সেনগুপ্ত সান্না-এন ২৭ মার্চ পর্যন্ত

কর
১৪০। নতুনবা ছত্র টাকার নতুন নতুন বাগান

२७ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
महादेव पश्चिमा ॥

| | | | | | | | |
|---|------|----------|----|----|------|-------------|----|
| ১ | এপিল | শনিবার | ২৪ | ১০ | এপিল | বুধবার | ১০ |
| ২ | এ | রবিবার | ২৫ | ১১ | এ | বৃহস্পতিবার | ১১ |
| ৩ | এ | সোমবার | ২৬ | ১২ | এ | শনিবার | ১২ |
| ৪ | এ | মঙ্গলবার | ২৭ | | | | |

ਬਾਜ਼ਾਰ ਤਾਂ ॥

| ক্রিমিন | মোম | আবহি | পার্বত | ক্রিমিন | মোম | আবহি | পার্বত |
|---------------|-----|------|--------|--------------|-----|------|--------|
| মুলাতি | ১ | ৩১ | ৩৬ | মোম | ১ | ৩০ | ৩৩ |
| চেয়েডা উইল | ১ | ১২ | ১৪ | মহাবি উইল | ১ | ১৪ | ১৬ |
| গাং মরিচ | ১ | ৬ | ৭ | মহাবি মধ্যম | ১ | ১২ | ১৪ |
| নাবিলেন (উইল) | ১ | ৬ | ১২ | মোরা উইল | ১ | ১৬ | ১৮ |
| আলা রতনপু | ১ | ২ | ২১ | উইল | ১ | ১৬ | ১৮ |
| পাটাইল আলা | ১ | ২ | ০ | ক্রিমি কাশির | ১ | ১১ | ১৩ |
| মালু পাটাইল | ১ | ২ | ২০ | মধ্যম | ১ | ১১ | ১৩ |
| মুলা | ১ | ১০ | ১১ | ভেতুল | ১ | ৩ | ৪ |
| পাছবি উইল | ১ | ২১ | ২১ | ডামাক | ১ | ৩ | ৪ |
| পাছবি মধ্যম | ১ | ১৬ | ১৬ | ক্রিমিন | ১ | ১৩ | ১৬ |
| বাসা | ১ | ১১ | ১১ | মহাবি | ১ | ১০ | ১২ |
| দুলা গোম | ১ | ৬ | ৩০ | মধ্যম | ১ | ২ | ২ |
| পাটাইল বট | ১ | ৬ | ৬ | উইল মাল | ১ | ১৩ | ১৬ |
| আবহি জালি | ১ | ১১ | ১১ | মহাবি | ১ | ৩ | ৩ |
| উইলমালি বট | ১ | ১৪ | ১৪ | কাচকির | ১ | ১৬ | ১৮ |
| উইলা বট | ১ | ২০ | ২৪ | ক্রিমি | ১ | ১১ | ১৩ |

এই সমাচারবর্ণন গ্রীষ্মকালের ছাপাখানাতে পুস্তিকভাবে প্রসিদ্ধির ছাপা হয়। হাজার লগনের আবশ্যিক হয় তিনি গ্রীষ্মপূর্বের ছাপাখানাতে আপ-
নার পাঠালে সম্বাদে কানন তাঁহার দিকেট পাঠান থাকিলে তাহার মূল্য যাহো এক টাকা তিনি স্বাক্ষর করিয়াছেন যদি তাহার দিকেট লাগল না
হয়ে তবে তিনি গ্রীষ্মপূর্বের ছাপাখানাতে সমগ্রার বিবাসজ তাঁহার দিকেট পাঠান হইবে।

